संस्कृत-गुजराती विनीत कोश

संपादक गोपाळदास जीवाभाई पटेल



गूजरात विद्यापीठ अमदावाद-१४

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના અન્ય કોશ અને પરિભાષા

કૃષિ શબ્દકોશ	290.00
કચ્છી શબ્દાવલિ	8.00
ખિસ્સાકોશ	6.00
ચોધરીઓ અને ચોધરી શબ્દાવલિ	6.00
બીલી-ગુજરાતી શબ્દાવલિ	૧.૫૦
ગણિતની પરિભાપા	०.५०
વિજ્ઞાનની પરિભાષા	0.92
અર્થશાસ્ત્રની પરિભાપા	9.40
વિનીત જોડણીકોશ	90.00
હિંદી-ગુજરાતી કોશ	900.00
ગુજરાતી - હિંદી કોશ	(છપાય છે.)

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

गूजरात दिद्यापीठ ग्रंथावली : पु० १२५

संस्कृत-गुजराती

विनीत को श

संपादक गोपाळदास जीवाभाई पटेल



सो रूपिया

© सर्व इक गूजरात विद्यापीठने स्वाधीन छे

पहेली आवृत्ति, प्रत ५,०००, जुलाई, १९६२ प्रथम पुनर्मुद्रण, प्रत ५,०००, नवम्बर, १९९२

मुद्रक जितेन्द्र ठा. देसाई ृ नवजीवन मुद्रणालय, अमदावाद-३८००१४

प्रकाशक विनोद रेवाशंकर त्रिपाठी मंत्री, गूजरात विद्यापीठ मंडळ गूजरात विद्यापीठ, अमटाबाट-३८००१४

प्रकाशकर्नुं निवेदन	रामलाल परीख	ą
संपादकर्नुं निवेदन		8
संकेतोनी समज		१२
सं० गु० विनीत कोश		?
परिशिष्ट		
१ : विशेषनाम - सूची		५९७
२ : न्यायसंग्रह		६३०
३: संख्यावाचक शब्द		६३७
पूर्ति		६३९

प्रकाशकनुं निवेदन

विनोत कक्षाना विद्यार्थीओने संस्कृत भाषाना अभ्यासमां मददरूप थाय एवो संस्कृत-गुजराती शब्दकोप तैयार करवानुं गूजरात विद्यापीठे ठरावेलुं. आपणा समृद्ध प्राचीन साहित्य साथे ऊगती पेढोनो संबंध साव न कपाई जाय ते माटे संस्कृत भाषानो अभ्यास खूब जरूरी छे. ते अभ्यास करवा माटे विद्यार्थीओ अने सामान्य प्रजाजनोने उपयोगो एवा आधारभूत संस्कृत-गुजरातो शब्दकोशनी घणौ आवश्यकता हती. ते आवश्यकता आ प्रकाशनथी पूरी थशे एवी आशा राखुं छुं.

आ काम घणो जहेमत उठावोने करो आपवा माटे श्रो. गोपाळदास पटेलनो आभार मानुं छुं. कोश विभागना कार्यकरो अने अन्य सहु कोई जेमणे आ कार्यमां मदद करो छे, ते सहुनो आ तके आभार मानुं छुं.

आ ग्रंथना प्रकाशन-खर्च पेटे भारत सरकारना वैज्ञानिक-संशोधन अने सांस्कृतिक बाबतोना खाता तरफथी आर्थिक मदद मळी छे तेना उल्लेख करतां आनंद थाय छे.

ता. ६-७-'६२

संपादकनुं निवेदन

संस्कृत भाषा अने संस्कृति

भारतने पोतानुं अस्तित्व जाळवी राखवुं हशे, अने साची प्रगति साधवी हशे, तो संस्कृत भाषानुं आराधन चालु राख्या विना तेने चालवानुं नथी कारण के तेनी संस्कृति ते भाषाना ताणावाणामां वणायेली छे. अने प्रजाकीय अस्मिता जोखममां नाख्या सिवाय, पहेरवानां कपडांनी जोडनी जेम, संस्कृतिने बदली के फगावी दई शकाती नथी.

तेथी ज ज्यारे ज्यारे भारतना राष्ट्रीय उत्थान माटेनी कोई पण हिलचाल शरू थई छे, त्यारे संस्कृत भाषा अने भारतीय संस्कृति तरफ ते चळवळोना नेताओनी दृष्टि सहेजे गई छे.

भाषा ए आखरे तो अव्यक्त एवा मानव आत्माना आविर्भावनुं एक व्यक्त साधन छे; एटले गीताकारे चेतवणी आपी छे ते अहीं पण लागु पडे छे — 'अव्यक्तं व्यक्तिमापम्नं मन्यन्ते माम् अबुद्धयः'। व्यक्त एवा भाषा-साधनने आत्मा जेवुं के जेटलुं महत्त्व आपी देवानी भूल न करीए. परंतु आत्मा पण स्थूल शरीर विना आविर्भाव न पामी शके; एटले भाषारूपी स्थूल साधननुं महत्त्व ओछुं तो न ज आंकी शकाय. अलबत्त, ए भाषानो उत्तरोत्तर विकास – परिवर्तन थई जे नवी नवी लौकिक – प्राकृत भाषाओं रूढ थाय, ते पण भारतीय संस्कृतिना प्रवाहने वहन करती होय; एटले भारतना इतिहासना पुनरुत्थानना केटलाय तबक्काओं पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि अने ते बाद खीलेली अत्यारनी आपणी भाषाओंने आधारे पण प्रवर्त्या छे. परंतु ए बधी जुदी भाषाओंनी मणिमाळाना सूत्रात्मा रूपे मुख्यत्वे संस्कृत भाषानो प्राणतंतु रहे छे, ए भूलवुं न जोईए.

प्राकृत भाषाओ प्रथम हती के संस्कृत भाषा, ए एक जुदो ऐतिहासिक सवाल छे. परंतु एक वात नक्की के, भारतवर्षना आत्मारूप मूळ संस्कृति संस्कृत भाषामां जेवी सर्वतोभद्र भावे प्रगट थई, तेवी आ स्थानिक — लौकिक भाषाओमां सर्वतोभावे नथी प्रगट थई. स्थानिक — लौकिक भाषाओमां तेनां अमुक अमुक अंगो ज जाणे एकांगीपणे फूल्यां — फाल्यां. परंतु ए बघां एकांगी अंगोनो समन्वय के शुद्धीकरण मूळ स्रोतनी मदद द्वारा थतां ज रहेवां जोईए. एटले शरूआतमां कह्युं के, भारतवर्षने संस्कृत भाषानुं आराधन छोड्ये चालवानुं नथी.

आधुनिक बहेणनी विशा

उपर कहुचुं छे तेम, लौकिक – स्थानिक भाषाओ पण ए मूळ स्रोतने वहन करे ज छे एटले प्रजानो मोटो भाग ए लौकिक – स्थानिक देशी भाषाओ द्वारा ज पोताना लोकात्माने ओळखीने संस्कार-रस मेळवतो रहेवानो. परंतु समग्र देशनी संस्कृतिना धारण-पोषण-संशोधननी रीते विचारीए, तो प्रजाना अमुक वर्गनो पेला मूळ स्रोत साथेनो संपर्क चालु रहेवो ज जोईए.

तेथी ज स्वराजनी चळवळ वखते आपणी प्राचीन संस्कृति अने भाषा के भाषाओना स्रोतमां नाहीने शुद्ध – संस्कृत थवानो प्रयत्न विशेष तीव्र बन्यो हतो.

परंतु आजे स्वराज आव्या पछी, ए बाबतमां ओट ज आव्यानां, एटलुं ज निह पण, विपरीत वहेण शरू थयानां लक्षण वरताय छे. आजे ए मूळ संस्कृत भाषा तो शुं, पण आपणी लौकिक – देशी भाषाओनां मान पण छेक ज ओसरी गयां छे; अने केटलाक लोको समाजवादी संस्कृति साथे तेना वाहन रूपे अंग्रेजी भाषाने भारतवर्षमां कायम करवाना पोकार पाडे छे. अने ए अंग्रेजी भाषा द्वारा तेओ शुं जाळववा के लाववा मागे छे? थोडोक यांत्रिक कसब के थोडु भौतिक विज्ञान ए बे वीजोनो आपणे कशो उपयोग नथी एम न कहीए; तोपण ए बे विना जाणे भारतनो उद्धार निह थाय एम मानवामां आवे छे, ए तो केवळ अतिरेक छे.

भारतवर्षनो उत्कर्ष यात्रिक – भौतिक संस्कृतिथी साधवानो प्रयत्न अत्यारे ज पहेलवहेलो थाय छे, एम नथी. आपणो प्राचीन इतिहास ए प्रयत्नो अने तेमने मळेली निष्फळतानां प्रकरणोथी अकित छे. जूना ब्राह्मणग्रंथोथी मांडीने देव-असुर संग्रामना रूपकथी एवा प्रयत्नो वारवार आपणा इतिहासमां नोंधाया छे. अने छेक छेवटे गीताकारे पण 'आसुरी संपत्' उपर पोताना सचीट चाबखा लगाव्या छे. एटलुं ज निहं, पण ए आसुरी संपत् ज्यारे जोर पकडे छे, त्यारे त्यारे भगवान पोते अवतार लई तेनो विनाश करवा प्रवृत्त थाय छे, एम पण नोंध्युं छे.

भारतवर्षनी भौतिक साधनसंपत्ति एवी छे के, आवी आसुरी संस्कृतिओ त्यां झट प्रवर्ती शके. परंतु एवी आसुरी संस्कृतिओंने रवाडे चडी, केटलांय साम्राज्यो नामशेष थई गयां, ए पण भारतवर्षनो इतिहास कहे छे. आधुनिक युगमां पाछी विदेशोमांथी शरू थयेली प्रबळ भौतिक संस्कृतिनी संगठित चडाई सामे गांधीजीए सत्य, अहिसा, सत्याग्रह वगेरे बाबतोवाळी आध्यात्मिक-रचनात्मक संस्कृतिनुं जोर ऊभुं कर्युं हतुं. तेनी साथे ज राष्ट्रभाषा अने मातृभाषानो नारो पण बुलंद थयो. अने आपणी मूळ संस्कृति (अने तेना वाहन संस्कृत भाषा) तरफ पण वहेण वळ्युं हतुं.

परंतु, गांधोजीनी विदाय बाद हवे फरी पाछी इजनेरी-दाकतरी-यंत्रोद्योगी-विज्ञाननी प्रगति उपर भार मूकती समाजवादी संस्कृतिनी वातो जोर पकडवा लागो छे, अने राष्ट्रभाषा-मातृभाषाने स्थाने अंग्रेजी भाषाने मूकीने तेने सौ गुणोना, सौ प्रगतिना, सौ संस्कारना अरे भारतीय एकताना आधार तरीके रजू करवानुं शरू थयुं छे.

परिणामे, हवे अतिशयोक्तिनी रीते कहेवुं होय तो, ब्राह्मणनी छोकरीओ शाळा-महाशाळामां संस्कृत भाषाने बदले 'सायन्स'ने अभ्यासना विषय तरीके ले छे. अने राष्ट्रभाषा मातृभाषाने बदले अंग्रेजीमां ज उच्च शिक्षा मळे ए माटे अदालती हुकमो मेळववामां आवे छे. संस्कृत भाषाने अभ्यासना मुख्य विषय तरीके लेनारा तो गणित के विज्ञानमां न फावनारा 'बिचारा 'ओ ज गणाय छे, अने आधुनिक भारतमां तेमने माटे जूना काशी-पंडितो जेवी कंगाळ स्थिति ज निर्माण पण थवा लागी छे.

अलबत्त, अंग्रेजी भाषा भणनारे लांचिया, दारू डिया के व्यभिचारी थवुं, एवो कोई शाप तो नथी ज; के संस्कृत अने देशी भाषा भणनारा सौ दैवी संपत्वाळा ज थशे एवुं कोई वरदान पण नथी. परंतु संस्कृतिनो आत्मा ए एवी निरवयव, सूक्ष्म, अविनाशी चीज छे, के तेनो उपासना के 'आत्म 'हत्या – ए बेनो त्रीजो विकल्प नथी.

आ संस्कृत कोश

आ संक्षिप्त 'विनीत 'कोश एक रीते उपर जणावेली एवी भारतीय श्रद्धानुं प्रतीक छे के, भारतीय संस्कृतिए पोतानो आत्मा खोवो न होय, तो संस्कृत भाषानो संपर्क छोडये नहीं चाले; तेथी तेना अम्यासने माटे जरूरी सामग्री — आ कोश जेवी — उपलब्ध करवी जोईए, एम विद्यापीठे विचार्युं. अलबत्त, अत्यारे अभ्यासक्रममां अंग्रेजीने ज बार-बार कलाको (पीरियड) आपवाना के तेने पांचमा धोरणथी, त्रीजा घोरणथी के बाळपोथीथी शरू करवाना जे प्रयत्नो थाय छे, ते जोतां आजनी भारतीय शाळाओमां आ भाषाना अभ्यासने घटतुं स्थान के समय मळवां शक्य नथी. छतां 'सर्वनाशे समुत्पन्ने 'जेवी दशामां डहापण वापरी, संस्कृत-भाषाना अभ्यासने जेटलो टेकवाय तेटलो टेकवी आपवो जोईए. अने ते माटे उपयोगी एवं नानुं मुलभ साधन गणीने आ कोश तैयार करेलो छे.

मॅट्रिक-विनीतना विद्यार्थीने जे कक्षाना संस्कृत फकराओ अभ्यासक्रममां भणवाना आवे छे, तेमने मुख्यत्वे लक्षमां राखी आ कोशना शब्दो संघर्या छे. अलबत्त, ए फकराओथी पांच के सात गणा कदनी 'गाइडो' एटली बधी सुलभ होय छे के, ते परीक्षा माटे तो ए 'गाइड' ज सौथी वधु उपयोगी थाय. परंतु, मॅट्रिक जेटलुं संस्कृत भण्या पछी ए विद्यार्थीने संस्कृत साहित्यना मूळ ग्रंथो तरफ जवा मन थाय, (अने थवुं पण जोईए,) तो तेने उपयोगी एवो एक कोश तैयार मळवो जोईए. तो ज ते एटला भणतरने उपयोगमां लई, आगळ अभ्यास जारी राखी शके.

मॅट्रिक-विनीत कक्षामां सामान्य रीते रामायण, महाभारत, पंच महाकाव्य, प्रसिद्ध संस्कृत नाटको, अने कादंबरी, कथासरित्सागर, हितोपदेश, पंचतंत्र आदि कथासाहित्यने आवरवामां आवे छे. एटले आ कोशमां मुख्यत्वे ए साहित्यना शब्दो आवी जाय अने ए शब्दोना पण ए साहित्यमां वपरायेला अर्थो आवे, ए लक्षमां राख्युं छे. बाकी, संस्कृत भाषाना शब्दोना अर्थो तो प्राचीन कोशकारोए अनेक अनेक नोंच्या होय छे. संस्कृत भाषानी खूबी ज एवी छे के तेना शब्दोना (खास करीने घानुओना) अनेक अर्थो थाय. अने तथी ज ए भाषामां एको साथे रामायण, अने महाभारतनो जुदी जुदी वात चालती होय एवा काव्यो अरे, महाकाव्यो जोवा मळे छे.

आ कोशने विनीत कक्षाना विद्यार्थीने दृष्टिमां राखीने संक्षिप्त बनाववो, एम नक्की कर्युं तो खरुं. परंतु ए शब्दोनी पसंदगी करवानुं तो छेवटे ए कोश तैयार करनार सेवकवर्गना वैयक्तिक धोरणने आधारे ज थाय. उपरांत ए कोश अमुक पानांनो ज (अंदाजे ७०० पाननो) करवो एवी कांईक मर्यादा पण होवी घटे अने ते नक्की करवामां पण आवी हती. एटले शरूआतमां संक्षेप करवा उपर ज वधु ध्यान अपातुं जाय ए स्वाभाविक छे. कोश अधीं छपायो त्यारे कंईक अंदाज मेळवी शकाय तेवुं थयुं. त्यार पछी शब्दो लेवानी बाबतमां अमुक निश्चित घोरण अपनावी शकायुं.

एटले कोश पूरो थतां, पाछळथी अपनावेला ए धोरणने आगळना भागने पण लागु पाडवुं जरूरी लाग्युं, तेम ज शक्य पण बन्युं. एटले कोशने अंते पूर्ति रूपे ए शब्दो उमेरी लीधा छे. एम जोके आवा नाना कोशमां, बे जगाए शब्द शोधवानुं विद्यार्थीने मुक्केल लागशे खरुं, पण बीजी आवृत्ति वेळा पूर्तिना ए शब्दो योग्य क्रममां भेगा करी लेवाशे; अने ए रीते सळंग एक संक्षिप्त कोश उपलब्ध थशे.

आ कोशमां कुल २६,६०९ शब्दोना अर्थी आपिला छे.

आगळनो तबक्को

उपर जणाव्युं ते प्रमाणे आ कोशमां जाणीता काव्य-नाट्य कथाग्रंथोना ज शब्दो लेवाया छे. पण आपणी भारतीय संस्कृतिना मूळ स्थानो सुधी पहोंचवा इच्छनारने पुराण-स्मृति-दर्शन-उपनिषद ए साहित्यना ग्रंथोना शब्दो पण मळवा ज जोईए. जाणीता साहित्यना ग्रंथोनो अभ्यास करी चूकेलाने अत्यारे बधी देशी भाषाओमां उपलब्ध भाषांतरो द्वारा ए ग्रंथोनो अभ्यास मुश्केल तो न ज पडे; पण एक कोश एवो पण तैयार थवो जोईए के जेमां आ बवा शब्दो आवे. वेद-बाह्मण ग्रंथोना शब्दो ए तो जाणे एक प्रकारे जुदी भाषाना शब्दो गणाय. ए बधा शब्दो साथेनो बृहत् कोश पण गुजराती भाषामां होवो जोईए. पण आ बधी तो बहु आगळनी वात थाय.

परंतु पुराण-स्मृति-दर्शन-उपनिषद तथा वैदक-ज्योतिषना ग्रंथोना शब्दो-बाळो कोश तो तैयार करवानुं शरू थवुं ज जोईए. तो ज आ संक्षिप्त कोशे आरंभेलुं काम आगळ चाले मोनियर बिलियम्स, आप्टे, वगेरेना कोशो उपरथी ए शब्दो तारवी काढवानुं काम बहु मुश्केल पण न गणाय

एटले आ कोश ए बीजा आगळना कोशनी आवश्यकता जाणे पुरवार करवा माटेनो बनी रहे छे! अलबत्त, आ कोशने पण तेनी मर्यादामूां आवता साहित्यना बधा शब्दोनो तेमां समावेश थाय ए रीते (पान के शब्दनी मर्यादा विना) पूरो करवो बाकी रहे छे ज. पण ए तो आवृत्तिए आवृत्तिए सुधारा वधारा जेवुं काम गणाय. अने ए चालतुं ज रहेवानुं.

आ कोशनी गोठवणी

आ कोश जे कक्षाना विद्यार्थीओना उपयोग माटे विचारायों छे, तेमने शब्दोना अर्थो शोधवानुं मुलभ थाय ते रीते एनी गोठवणी विचारी छे. अर्लवत्त व्याकरण-पद्धतिथी जरा पण न भण्यो होय तेवा विद्यार्थीने आ कोशनों के कोई पण कोशनों उपयोग करवी शक्य न होय. जेम के गुजराती भाषाना कोशमां पण 'गयो' ए प्रयोगनों अर्थ 'जवुं' धातुमां शोधवा जेटलुं व्याकरणनुं ज्ञान विद्यार्थीने होवुं जोईए ज. तेम, गच्छित, चकार, अध्नन्, धुक्ष्य, अमृष्ट, अतृष्य, विम्यति, विभराणि, जहीहि, धत्स्य वगेरे रूपो साहित्यमां वपरायेलां मळे, तो ते माटे कोशमां अनुक्रमे गम्, कृ, हन्, दुह्, मृज्, तृह् भी, भृ, हा, भा, ए धातुओमां अर्थ शोधवों जोईए, एवी तो विद्यार्थीने खबर होवी घटे. कोई पण कोश व्याकरणनी रीते वदलायेलां रूपोनो पण शब्द-कममां अर्थ न आपी शके. सद्भाग्ये संस्कृत भाषाना शिक्षणनी वाबतमां आपणी शाळाओमां व्याकरण-पद्धतिने छेक ज छोडी देवामां आवी नथी.

आ कोशना शब्दोनी गोठवणीमां अनुसरवामां आवेला बे मुख्य मुद्दाओनी समज अहीं ज जणाववी घटे: (१) उपसर्गो साथे वपराता धातुओनी अर्थ उपसर्गोना कममां आप्यो छे, मूळ धातुना ज पेटामां निह. जेम के अधिगम्, अभ्यागम्, निगम्, निर्गम्, प्रत्यागम्, संगम् ए धातुओने ए शब्दना कममां ज गोठव्या छे; सामान्य रीते संस्कृत कोशमां गम् धातुना पेटामां ज तेमने बधाने नंखाय छे. पण तेथी 'अधी' धातुनो अर्थ 'इ' धातुना पेटामां मळशे एवी खबर न होय, तेने मुश्केली पडे. अहीं तो 'अधी' धातु तरीके ज

तेना कममा एनो अर्थ मळी जशे. ज्यां जरूर मानी त्यां ए उपसर्गने छूटो पाडीं कौसमां फरीथी लख्यों छे. जेम के 'अधी' (अधि + इ); ' रुपपे' (वि + अप + इ). (२) संस्कृत कोशमां बीजी मुख्य मुश्केली अनुनासिकना उपयोगवाळा शब्दोनो कम शोधवामा पडे छे. जेम के सामान्य संस्कृत कोशमां अंश, अंस, अंहस् वगेरे शब्दों अ अक्षरथी शरू थता शब्दोनी छेक ज शरूआतमां आप्या हशे, अने अंड, अंत, अंध, वगेरे शब्दों अण्ड, अन्त, अन्थ, ए प्रकारे कम कल्पीने ए कममां मूक्या हशे. आ कोशमां विद्यार्थीनी सगवड विचारी, गूजरात विद्यापीठना गुजराती जोडणीकोशनी रीते बया अनुनासिकोने अवश्य अनुस्वाररूपे ज लखीने, दरेक स्वर ने अंते ज एक साथे आप्या छे. अर्थात् 'अ' अक्षर पूरो थतां अंथी शरू थता शब्दो, 'आ' पूरो थया पछी आंथी शरू थता शब्दो, ए प्रमाणे.

दरेक धातुनुं त्रीजी विभक्ति एकवचननुं रूप आप्युं होय तो उपयोगी धाय लरुं;पण एनायी मूळ धातुने शोधवा माटे कशी मदद न मळे. एटले ज्यां आदेश-ने कारणे धातुनुं जुदुं रूप थतुं होय, त्यां ज चोरस कौंसमां ते रूप आप्युं छे. जेम के, गम् १ प० [गच्छिति].

दरेक धातुनी साथे तेनुं भूतऋदंतनुं रूप पण अपाय छे. पण तेने मूळ धातु शोध-वामां उपयोगी न मानीने भूतऋदंतनो शब्द आवे त्यारे ते जे धातुनुं भूतऋदंत होय ते कौंसमां वताब्युं छे. जेम के **गूढ** ('गुह्' नुं भू० ऋ०). (उपसर्ग साथेना धातुनुं भूतऋदंत होय, त्यां ते आ प्रमाणे जुदुं नथी बताब्युं.

संस्कृतमां भूतक्वदंतो कर्मणि भूतक्वदंतो मुख्यत्वे होय छे. एटले कर्मणि भू० कृ० न लखतां संक्षेपमां मात्र भू० कृ० ज लख्युं छे. केटलांक बहु ओछां भूतकृदंतो कर्तरि पण होय छे. जेम के 'हतवतु'.

ज्यां शब्दनी अंदर इ के उ नी पछी स् आववाथी स् नो ष् थई गयो होय छे, तेवे स्यळे कौंममां ते जुदुं दर्शाव्युं छे. जेमके, निषिथ्, (नि + सिध्), निषेव् (नि + सेव्).

जे शब्दो बहुवचनमा ज वाराय छे, तेमना प्रथमा विभक्ति बहुवचननां रूप ज मूळ शब्द तरीके मूक्यां छे. जेम के, पौरजानपदाः पुं० व० व०. परन्तु केट-लाक शब्दोना मात्र द्वि० व० के व० व० मां जुदा अर्थ थता होय, तेवाओने मूळ तो एकवचनमां ज मूकीने पछी अर्थीमां वचन दर्शावी जुदो अर्थ आप्यो छे. जेम के, पूर्वदेव पुं० (३) (द्वि० व०) नर अने नारायण; पूर्वपूर्व (२) पुं० (व० व०) पूर्वजो.

नामधातुओनुं त्रीजा पुरुष एकवचननुं रूप ज मूळ शब्द तरीके मूक्युं छे, अने अर्थ धातुनी रीते कौँसमां दर्शाब्यो छे. तेवी जगाए गण के पद ज्यां मूळ आधार-कोशोमांथी मळ्यां त्यां ज दर्शाब्यां छे.जेम के प्रकटयित प० (दर्शाववुं, प्रगट करवुं). च्वि रूप साथेनां कियापदोना गण माटे पण तेम ज समजवुं. जेम के कोडीकृ आर्किंगनमां लेवुं; भेटवुं.

धातुनां प्रेरक अने कर्मणि रूपोना अर्थ ज्यां आपवा जेवा लाग्या त्यां जुदो फकरो पाडीने –प्रेरक० के –कर्मणि० एम लखीने स्वतंत्र संख्याकम दर्शावीने आप्या छे. जेम के, जुओ स्था धातु.

अर्थो आपवामां मूळ व्युत्पत्तिने लक्ष्यमां राखीने अर्थ आप्यो छे. मधुसूदन एटले मात्र श्रीकृष्ण अर्थ न आपतां, " (मधु राक्षसने हणनार) श्रीकृष्ण " एम लक्ष्युं छे; जेथी ए नाम शाधी पड्युं छे ते पण लक्ष्यमां आवे. ते ज प्रमाणे जुओ मुडाकेशः

चार, सात, आठ वगेरे संख्याओवाळा शब्दोमां बने त्यां लंबाण करीने पण ते चार, सात, के आठ वस्तुओं कई ते गणी बतावी छे. जेम के, जुओं 'चतुर्दश-रत्नानि' के सप्तसमुद्राः, जेथी एटलुं जाणवा बीजा ग्रंथो सुधी दोडवुं न पडे.

केटलाक शब्दोना अर्थो एकवीजाना संबंधमां वधु जाणीता होय छे. त्यां पण साथे कौंसमां ते बीजो शब्द दर्शाब्यो छे. जेम के पूर्त एटले वाव कूबा इ० बंधाववाथी थतुं पुण्य. ते शब्द, यज्ञयागादिथी थता पुण्यवाचक 'इष्ट' शब्द साथे ज ('इप्टापूर्त') वधु वपराय छे. एटले पूर्त शब्दना अर्थमां 'इष्ट'ने पण कौंसमां नोंध्यो छे.

तहेवार वगेरेना दिवसोनी तिथि के महिनो ज्यां निश्चित रूपे जणावी शकाय, त्यां ते जणाववा प्रयत्न कर्यो छे.

पण एक बावतमां लाचारी कबूल करवी आवश्यक छे. संस्कृत साहित्यमां वनस्पित के पशु-पंखी सृष्टि साथे एटलो बघो गाड परिचय प्रगट थाय छे, के जाणे ए बघी वनस्पितओ, पशु, पंखी, फूल-फळ, पण मनुष्योना जीवनसाथी —— सह-बंधुओ ज होय. तेथी ए साहित्यमां वृक्षो, पशुओ, पंखीओ, फूल-फळ वगेरेना उल्लेखो घंणा आवे छे. अंग्रेज कोषकारोए ए बधाने लॅटिन परिभाषानां नामोमां मूकवा प्रयत्न कर्यों छे. पण आपणा देशी कोशकारोए मोटे भागे अर्थमां 'एक वृक्ष', 'एक फूल', 'एक पंखी' एम कहीने चलाव्युं छे. ते बधाना देशी भाषाना अर्थो शोधीने आपवा जोईए. हवे वनस्पतिशास्त्र तथा पंखीवर्णन इत्यादिनां पुस्तको वणां बहार पड्यां छे. तेमांथी योग्य चोकसाई करी अर्थो निश्चित करीने मोगरो, जाई, जूई, बटेर, लावरी वगेरे जेवा परिचित अर्थो आपीए, तो ज ते बधा शब्दोना उपयोग पाछळनी उपमा के काव्य आपणे वश्च माणी शकीए.

आ कोशनुं काम जुदे जुदे हाथे थयुं छे. एम एकठी थयेळी सामग्री परथी हस्तिलिखित प्रत तैयार करीने छपाववा प्रेसमां मोकलवानुं थयुं त्यारे जणायुं के शब्दोनी पसंदगीमां तथा अर्थ आपवानी रीतमां एकरूपता लाववानी जरूर छे; अने घणुं बीजुं करवानुं रहे छे. समय साथे होड बकीने ए बधुं झटपट आटोपवानुं थयुं छे. तेमां मुख्य दृष्टि आ कोश वापरनार वर्गने वधुमां वधु उपयोगी थवानी राखी छे. ते वर्गने जे प्रमाणमां आ कोश उपयोगी नीवडशे, तेटले अंशे आ कोश तैयार करवामां हिस्सो लेनार सौनी महेनत लेखे लागशे, ए कहेवानी जरूर न होय.

छेवटे, कोशने सळंग तपासी जई प्रेस माटे तैयार करवानुं काम धारी झडपथी आटोपी शकायुं, तेनो यश विद्यापीठना श्री. शिवबालक बिसेनना मने माग्या मळेला सहकारने आभारी छे. तथा पूर्ति माटे शब्दो तारवी आणी तैयार करी आपवानुं झंझटवाळुं काम श्री. नारणभाई जीभाईदास पटेले झडपथी पार पाडी आप्युं न होत, तो आ आवृत्ति वखते ए शब्दो कोशमां उमेरी लेवानुं शक्य बन्युं न होत. ते बने मित्रोए आपेली मददनी हुं अहीं साभार नोंध लउं छुं.

अंते, बधा पुरुषार्थीमां पंचम तरीके सदासर्वदा व्यापी रहेनार पिता-गुर पर-मात्मानी कृपा याद करीने, मारे माटे कंईक मोटी 'फाळ' गणाय तेवुं काम मने सोंपी मने सळग प्रेरणा आपनार ते वखतना गूजरात विद्यापीठना महामात्र श्री. मगनभाई प्रभुदास देसाई प्रत्ये कृतज्ञता प्रगट कर छुं.

२३-३-'६२

गोपाळवास जीवाभाई पटेल

संकेतोनी समज

अ० अव्यय (क्रियाविशेषण इ०) अ० कि० अकर्मक कियापद आ० आत्मनेपदी धातु इच्छा० इच्छादर्शक रूप उ० परस्मैपदी तेम ज आत्मनेपदी -एम उभयपदी धातु उदा० उदाहरण तरीके, जेम के कर्मणि कर्मणि रूपमां अर्थ गणित० गणितशास्त्रनो शब्द ज्यो० ज्योतिषशास्त्रनो शब्द द्वि० व० द्विवचन न० नपुंसक लिंग नाट्य० नाट्यशास्त्रनो शब्द न्याः न्यायदर्शननो शब्द **प०** परस्मैपदी धात् पुं० पुंलिंग प्रेरक रूपमां अर्थ ब० व० बहुवचन बौद्ध० बौद्ध प्रयोनो शब्द भू० कु० भूतकृदंत (कर्मणि)

योग० योगदर्शननो शब्द
ला० लाक्षणिक अर्थ
व० क्रु० वर्तमान कृदंत
वि० विशेषण
वि० स्त्री० विशेषण स्त्रीलिंग
वेदान्त० वेदांतदर्शननो शब्द
स्या० व्याकरणशास्त्रनो शब्द
स० ना० सर्वनाम (ते विशेषण पण
गणाय एटले साथे वि० पण मूक्युं
छे).

संगीत० संगीतशास्त्रनो शब्द सांख्य० सांख्यदर्शननो शब्द स्त्री० स्त्रीलिंग

अक्षरमी आगळनी आ निशानी
 ते अक्षरमो विकल्प दर्शावे छे, जेम के
 तुंबि (-बी) एटले तुंबि अने तुंबी
 बंने समजवानां छे.

१-२-३-४-५-६-७-८-९-१० धातुना अर्थनी शरूआतमां मूकेला आ आंकडा ते कथा गणनो छे ते दशवि छे.

संस्कृत-गुजराती

विनीत कोश

अ

अ संस्कृत वर्णमाळानो पहेलो अक्षर; एक ह्रस्व स्वर (२)पुं० विष्णु (३)अ० नकारार्थं दर्शावतो पूर्वग; उदा० अभाव (४)दया, निंदा, ठपको, संबोधन, निषेध ए बतावृतो उद्गार [न होय तेवुं **अऋणिन्** वि० करज विनान्; देवादार अक न० सुखनो अभाव;दुःख(२)पाप अकच वि० माथे वाळ वगरनुं;टालियुं (२) पुं० केतुग्रह अकथ्य वि० न कहेवा लायक अकरण वि० स्वाभाविक; अकृत्रिम (२) सर्वे इंद्रियोधी रहित (परब्रह्म) (३) न० कामकाज न करवुं ते अकरणि स्त्री० निराशा; निष्फळता अकर्ण दि० कान वगरनुं; बहेरुं (२) पुं० साप अकर्मक वि० जेने कर्म नथी तेवुं **अकर्मण्य** वि० कर्म करवाने शक्तिमान नहिं तेवुं (२) न करवा लायक अकर्मन् वि० काम वगरनुः; (२) अकुशळ (३) अकर्मक (व्या०) (४) न० कर्मनो अभाव (५) अयोग्य कर्म; गुनो; पाप अकल वि० अंश – भाग विनानुं अफल्प वि० निरंकुश्च(२)निर्बळ(३)जेनी तुलनान थई शके तेवुं भाविक अकल्पित वि० कृत्रिम नहि तेवुं; स्वा-अकल्य वि० अस्वस्थ;रोगी(२)साचु;खरं अकस्मात् अ० एकाएक; अणधारी रीते (२) निष्कारण

अकाम वि० इच्छारहित(२)कामपीडा-रहित (३) हेतुरहित; इरादा वगरन् अकामतः अ० अनिच्छाए (२)इरादा वगर; असावधपणे अकाय वि० शरीर वगरनुं (२)पुं०राहु **अकारण** वि० कारण विनानुं (२) प्रयो-जन विनानुं िनिष्कारण ; व्यर्थ अकारणम्, अकारणात्, अकारणे अ० अकार्पण्य वि० कृपणता विनानुं (२) दीनता दाखव्या विना मळेलुं अकार्य वि० नहि करवा योग्य (२) न० अयोग्य कार्य; खोटुं कार्य अकाल वि० कवस्ततनुं; अयोग्य वस्ततनुं (२) पुं० अयोग्य समय; कवस्वत अकालज, अकालजात वि० अकाळे जन्मेलुं; कवखते उत्पन्न थयेलुं अ**कालस**ह वि० विलंब सहन न करतुं; अधीर्छ (२)लांबो वस्तत टकी न शके तेव् अ**कालिकम्** अ० अचानक (२) तरत ज अकांड वि० अणधार्युः आकस्मिक (२) अवसर विनानुं (३) थड विनानुं अकांडपात पुं० अकस्मात् बनेलो बनाव अकांडे अ० अचानक; अकस्मात् **अकिल्बिष** वि० निष्पाप ऑकिंचन वि० निर्धन; गरीब अकिंचनता स्त्री० दरिद्रता (ब्रुत) अकिचिज्ज वि० थोडुं पण नहि जाण-नारुं; अज्ञानी अकिचित्कर वि० कशुंन करी शकनारं (२) निरुपयोगी

अकुतः अ० कोई ठेकाणेथी नहि; नयायथी नहि (समासमां) अकुतोभय वि० क्यांयथी भय विनानुं; निर्भय (२) सुरक्षित अकृप्य न० हलकी धातु नहि ते – सोनुं-रूपुं (२) कोई पण हलकी धातु अकुझल वि० कुझळ के होशियार नहि तेवुं (२) अमंगळ (३)अणगमतुं (४) न० अनिष्ट; दुःख अकुह वि० न छेतरे तेवुं; प्रमाणिक अकुंठ वि० बूठुनहि थयेलुं (२) प्रति-बंध विनानुं (३) स्थिर (४) समर्थ अक्रंठित वि० प्रतिबंध-रकावट विनानुं अक्षार वि० जेनो अंत खराब नथी तेवुं (२)पार विनानुं(३)पुं० समुद्र (४) सूर्य (५) काचबो (कूपने न तजतो) **अकृच्छ्** वि० सहेलुं; मुक्केली वगरनुं अकृत वि० नहि करेलुं (२) खोटी रीते करेलुं (३) तैयार नहि थयेलुं (अझ) (४) अपरिषक्व ; अशिक्षित (५) नहि सरजायेलुं (६) न० नहि करायेलुं काम (७) कार्यं नहि करवुं ते (८) पूर्वे न नि जाणनारुं साभळेलं कार्य अकृतज्ञ वि० कृतघ्न; करेलो उपकार अकृतबुद्धि वि० काची बुद्धिवाळूं अकृतात्मन् वि० अज्ञानी; मूर्ख (२) ईश्वरदर्शन नहि पामेलुं अकृतिन् वि० अकुशळ; अक्षम अकृत्य न० खोटुंकाम (२) न करी शकाय तेवुं काम अकृत्रिम वि०स्वाभाविक सिंचायेलुं अकृष्ट वि० नहि खेडायेलुं (२) नहि अक्कास्त्री०मा; माता अक्त ('अज्'न भू० कृ०)वि० खरडायेलुं; लेपायेलुं (घणुं करीने समासने अंते वपराय छे; उदा० तैलाक्त; घृताक्त) अक्त न० कवच; बस्तर अकत् वि० यज्ञरहित (२) संकल्परहित (परमात्मा)

अक्रम वि० क्रमरहित (२) गतिरहित (३) पुं० कम-परिपाटी-शिष्टाचारनो अिक्य वि० कियारहित (२) निष्किय अकिया स्त्री ॰ निष्क्रियता (२) कर्तव्यनी उपेक्षा रिहितता अकोष वि० कोधरहित (२) पुं ० कोध-अक्लिष्ट वि० नहिथाकेलुं (२) नहि मूझायेलुं (३) खंडित – दूषित नहि तेवुं (४) श्रमपूर्वक नहि थतुं – सहज **अक्लिण्टकर्मन्** वि० कर्म करवामा न थाकनारु **अक्लोब** वि० सार्चु; अफर अक्लीबम् अ० भय विना अक्ष् १,५,५० पहोंचवुं (२) व्यापवुं (३) एकठुं करवुं अक्ष पुं० धरी (२)पासो (३)पैंडुं (४) रथ; गाडुं (५) विषुववृत्तथी उत्तर-दक्षिण कोई पण जगानुं गोलीय अंतर (६)त्राजवांनी दांडी (७) जेना मणका बने छे ते बीज (८) रुद्राक्ष (९) १६ मासानुं एक वजन (कर्ष) (१०) न० ज्ञानेंद्रिय (११) नेत्र अक्षकुशल वि० पासा रमवानी विद्यामां अक्षकूट पुं० आंखनी कीकी अक्षत वि॰ ईजा पाम्या विनानुं (२) अखंड; भाग्या विनानुं (३) पु०(ब० व०) धार्मिक कियामां वपराता वगर भांगेला चोखा अथवा न छडेलां जब, डांगर वगेरे (४) न० कोई पण धान्य (५) हानि न थवी ते; उल्कर्ष अक्षतयोनि स्त्री० जेनुं कौमार खंडित नथी थयुं तेवी स्त्री अक्षपाद पुं ० न्यायदर्शनना प्रणेता गौतम अक्षम वि० अशक्त;असमर्थ(२) सहन न करे तेवुं;असहिष्णु अक्षमा स्त्री० ईर्षो (२)अधीराई(३)कोध अक्षमाला स्त्री० मणकानी माळा (२) वसिष्ठपत्नी – अरुधती

अक्षय वि० क्षय न पामतुं;अविनाशी(२) अखूट (३) पुं० परमात्मा अक्षय्य विश्क्षय के नाश न पामे तेवुं(२) **अक्तर** वि० अविनाशी; शाश्वत (२) पु० परमात्मा (३) न० वर्णमाळानो प्रत्येक वर्ण (४) मोक्ष (५) परब्रह्म अक्षरन्यास पुं० वर्णमाळा (२) लखाण **अक्षरशः** अ० अक्षरे अक्षरः; शब्दे शब्दना अर्थ प्रमाणे ज्ञान अक्षहृदय न० पासानी विद्यानुं रहस्य के अक्षांति स्त्री०क्षमानो अभाव (२) ईर्षा (३) क्रोध अक्षांश पुं० विषुववृत्तथी उत्तर के दक्षिणनुं अंतर – अक्ष बतावनार १८० अर्थेश छंते अक्षिन० आंख (२) 'बे'नी संख्या अक्षिगत वि॰ प्रत्यक्ष; दृष्टिगोचर(२) आंखमां खूंचतुं; अप्रिय अक्षिपक्ष्मन्, अक्षिलोमन् न० आंखनी **अक्षिथवस्** पुं० साप अक्षुण्ण वि० वटायेलुं नहि तेवुं (२) अजित; फतेहमंद अक्षेत्र वि० खेतर विनानुं; खेड विनानुं (प्रदेश) (२) न० खराब खेतर(३) कुपात्र शिष्य **असौहिणी** स्त्री०२१८७०हाथी,२१८७० रथ, ६५६१० घोड़ा, तथा १०९३५० पायदळनी बनेली महासेना अलर्ष वि० ठींगणुं नहि एवं (२) मोटुं अखंड, अखंडित वि० खंडित न थयेलुं; आख् अखिल वि॰ आखुं; बधुं; समस्त अस्थात वि० अप्रसिद्ध (२) न कहेलुं अरग वि० चाली न शके तेवुं (२) जेनी पासे न जई शकाय तेवुं (३) पुं० वृक्ष (४) पर्वत (५)साप (६) सूर्य (७) 'सात'नी सरूया अगच्य वि० गणी न शकाय तेटलुं (२) गणनामां न लेवाय तेवुं – तुच्छ

अगति स्त्री० उपाय के मार्ग न होवो ते (२)प्रवेश के पहोंच नहीं ते (३) अवगति अगतिक, अगतीक वि० निराधार (२) छेवटन्ं (उपाय) अगद वि० नीरोगी (२) न बोलतुं के कहेतुं (३) पुं० ओसड (४) तंदुरस्ती अगम्य वि० ज्यां जई न शकाय तेवुं (२) समजी न शकाय तेवु; गूढ; अज्ञेय (३) तजवा जेवुं; निषिद्ध अगम्या स्त्री० जेनी साथे संग निषिद्ध होय तेवी (स्त्री) अगम्यागभन न० निषिद्ध स्त्री साथे व्यभिचार अगर पुं० एक जातनुं चंदन खाडा अगाम वि० घणुं ऊंडुं(२) पुं०, न० ऊंडो अगार न० रहेठाण; आवास; घर अगुण वि० निर्गुण (परमात्मा) (२) सारा गुणो विनानुं; निरूपयोगी (३) पु० दोष अगुरु वि० वजनदार नहि एवं; हलकुं (२) टूंकुं; ह्रस्व (पद्यमां) (३) जेने गुरु न होय तेवुं; नगुरुं (४) न० अगरु अगृह पु० घर वगरनो – वानप्रस्थ **अगोचर** वि० इंद्रियातीत; अगम्य अग्नि पुं० अग्नि; आग (२) अग्निदेव (३) जठराग्नि (४) पित्तनो अग्नि (५) सोनुं (६) 'त्रण'नी संख्या अग्निकर्मन् न० अग्निमां होम करवो ते **अग्निकुमार** पुं० कार्तिकेय अग्निकोण पुं० अग्निख्णो (दक्षिण-पूर्व) अग्निकिया स्त्री० प्रेत-संस्कार; शबने अग्निदाह देवो ते अनिकोडा स्त्री० आतशबाजी अग्निगर्भ वि० जेमांथी अग्नि जन्मे एवं (२) सूर्येकांत मणि (३) अरणी अग्निज वि० अग्निमांथी उत्पन्न थयेलं (२)पुं० कार्तिकस्वामी (३) न० सोर्नु अग्निजिह्वा स्त्री० अग्निनी ज्वाळा अग्नितनय पुं० कार्तिकस्वामी

द्वार्किकेय नैं० त्रेण प्रकारना अग्नि (दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय) अग्निदात् वि० अग्निसंस्कार करनार्घ **अग्निदोपन** वि० जठराग्नि प्रदीप्त [पणानी परीक्षा अग्निपरीक्षा स्त्री० अग्नि वडे साचा-अन्निपर्वत पु० ज्वाळामुखी पर्वत अग्निप्रवेशं पुं० (स्त्रीनुं) सती थवुं ते अग्निमंथ पुं घर्षणथी अग्नि उत्पन्न करवो ते **अग्निमांद्य** न० जठराग्निनी मंदता अग्निमुख पुं० देव (२) ब्राह्मण (३) अग्निहोत्री अग्निवर्धक वि० जठराग्नि वधारनारुं अग्निबाह पुं० धुमाडो (२) बकरो अग्निवाहन न० बकरो अग्निशाला स्त्री० अग्निहोत्रनुं स्थान अग्निशिखा स्त्री० ज्वाला अग्निष्टोम पुं० एक प्रकारनो यज्ञ अग्निसंस्कार पु० प्रेतिकिया अग्निहोत्र न० शास्त्रीक्त अग्निमां सवारसांज होम करवानुं कर्म अग्निहोत्रिन् पुं० अग्निहोत्र करनार अग्न्यस्त्र न० अग्नि वरसत् अस्त्र अन्याधान न० मंत्रपूर्वक अग्निनं स्था-पन (२) अग्निहोत्र अग्न्युत्पात पुं० आकाशमां । अनिष्टसूचक प्रकाशवाळी उपद्रव (उल्का, धूमकेतु इ०) अन्यपस्थान न० अग्निनी पूजा (२) अग्निहोत्र अग्र वि० सौथी आगळनुं; पहेलुं (२) पुं० अस्ताचल (३) न० टोच उपरनो --छेडानो भाग (४) ध्येय; हेतु (५) शिखर (६) कोई पण वस्तुनो श्रेष्ठ भाग (७) उत्कर्ष (८) प्रारम्भ (९) आधिक्य अच्चम पुं० आमेवान अग्रमच्य वि० गणतरीमां पहेलुं; श्रेष्ठ

अग्रज वि० प्रथम जन्मेलुं (२) पुं० मोटो भाई (३) ब्राह्मण अग्रजन्मन् पुं० मोटो भाई (२) ब्राह्मण अप्रजा स्त्री० मोटी बहेन अभ्रणी वि० आगेवान (२) पुं० अग्नि अग्रतः अ० सौथी आगळ; मोखरे(२) हाजरोमां जिनार दूत **अग्रदूत** पुं० आगळथी समाचार लई अग्रदेवो स्त्री० पटराणी | पूजानुं मान अग्रपूजा स्त्री० श्रेष्ठ पुरुषने अपातुं प्रथम अग्रबीज वि० डाळखी रोपवाधी ऊगे तेवु (२) जेनी कलम थई शके तेवुं अग्रभाग पुं । प्रथम भाग; श्रेष्ठ भाग(२) शेष भाग अग्रभुज् वि० जमवामा पहेलु(२)खाउधर अग्रभूमि स्त्री० अंतिम ध्येय; महत्त्वा-कांक्षानुं घ्येय (२) टोचनो भाग अग्रमहिषी स्त्री० पटराणी अग्रयान वि० सौथी आगळ चालनारं (२) न० मोखरानुं सैन्य अप्रयाधिन वि० आगळ जनारुं अग्रयोधिन् पुं० मुख्य योद्धो अग्रवात पुं० ताजो पवन **अग्रसर** पुं० अग्रेसर; आगेवान अग्रहस्त पुं० हाथनो आगळो भाग (२) आंगळीओ (३) सूंढनो आगलो भाग (४) जमणो हाथ मास अग्रहायण पुं० वर्षारंभ (२) मार्गशीर्ष अग्रहार पुं०राजा तरफथी (ब्राह्मणोने) अपायेल जमीन **अग्राणीक** न० आगळनुं सैन्य अग्रासन न० प्रथम स्थान; माननुं स्थान अग्राह्य वि० ग्रहण न करी शकाय तेव् (२) स्वीकारी न शकाय तेवं अग्निम वि० अनुक्रममां प्रथम (२) मुख्य (३) उत्तम (४) पुं० मोटो भाई अग्रे अ० आगळ; पहेलां (२)समक्ष; सामे

(३) हवे पछी

अग्रेसर वि० आगळ जनार (२) पुं० आगेवान; नेता अरन्थ वि० सौथी आगळनुं (२) प्रथम ; श्रेष्ठ (३) पुं० मोटो भाई अध वि॰ पापी;दुष्ट(२)न० पाप; दुष्कर्म (३)दु:ख; संकट (४)सूतक; अशौच अधनाज्ञन वि० पापनो नाश करनारुं अध्मर्थण न० पापनाशक सूक्त – मंत्र **अधर्म** वि॰ ठंडु; शीतळ अधाय वि॰ पापी जीवन गाळनार्ह अधासुर पुं० एक राक्षसनुंनाम – बक राक्षसनो भाई अधोर वि॰ भयंकर नहीं तेवुं (२)पुं० शिव (३) शिवनो भक्त अधोष वि० अवाज वगरनुं; शांत (२) कठोर उच्चारवाळुं (३) पुं० वर्ण-माळामां मुख्य पांच उच्चारस्थानीना पहेला वे वर्णो तथा श्, ष्, स् – तेरमांनी प्रत्येक बळद अध्न्य वि० नहि मारवा योग्य (२) पुं० अध्न्या स्त्री० गाय अञ्चेय वि० न सूंघवा लायक (२) न० अच् पुं०संस्कृत व्याकरणमां स्वरन् नाम अचक्ष्मस् वि॰ अधिळुं; आंख वगरनुं; अंघ (२) न० बगडेली आंख अचर वि० स्थिर; स्थावर अचरम वि० छेल्लुं नहि तेवुं; वचलुं ६० **अचल** वि० स्थिर; निश्चल; कायमनुं (२)पुं० पर्वत (३) शंकु;स्तीलो (४) 'सात'नी संख्या अचलपति पुं०हिमालय पर्वतः मेरु पर्वत अचला स्त्री० पृथ्वी **अचलाचिप** पुं• हिमालय पर्वत अचित्त वि० अतर्क्य; अचित्य (२) समज्जण वगरनुं; जड़; मूखे अचिर वि॰ अल्पजीवी; क्षणिक (२) हमणांनुं; तरतनुं [स्त्री० वीजळी अचिरचुति, अचिरप्रभा, अचिरमास् अचिरम्, अचिरस्य, अचिरात्, अचिराय, **अचिरेण** अ० बहु पहेलां नहि तेम; हमणां; तरतः; जलदी अखितनीय वि० चितवी न शकाय तेवुं; विचारमां न आवे तेवुं ऑसतित वि० ओवित् अचित्य वि० जुओ 'अर्जितनीयं' अचेतन वि० चेतन बगरनुं; निर्जीव (२) ्वित्त वगरनु भान विनानुं; बेशुद्ध अचेतस् वि० चेतन वगरनुं; अचेतन(२) अचेष्ट वि॰ चेष्टारहित; कियारहित अच्छ वि० स्वच्छ; निर्मेळ; शु**द्ध** (२) पुं० रींछ (३) स्फटिक अच्छंदस् वि० वेद भणीन शके तेवुं – यज्ञोपवीत-रहित (२) वेदाघ्ययन माटे अनिधिकारी (३) गद्यात्मक अच्छिद्ध वि० दोष वगरनुं (२) काणा बगरनुं(३) न० दोषरहित कार्यं (४) दोषनो अभाव अच्छिम वि० अखंड अच्छेद्य वि० दुकड़ान करी शकाय तेर्बु अच्छोद न० हिमालयना एक सरोबरन् क्षच्छोदम् बि॰ स्वच्छ पाणीवार्ळ् अच्युत वि० च्युत न थाय तेवुं (२) अविनाशी (३) पुं० विष्णु (४) कृष्ण अज वि० नहि जन्मेलुं; अनादि; सनातन (२) पुं• परमात्मा; विष्णु;शंकर; ब्रह्मा (३) जीवात्मा (४) चन्द्र (५) कामदेव (६) बकरो अजगर पुं० एक मोटो साप अजन्मन् वि० जन्म विनानुं; शास्वत (२) पुं० मोक्ष अजपा स्त्री० वगर प्रयत्ने - श्वासी-च्छ्वासथी यतो जाप (हुंस) अजपाल पुं० भरवाड अजय वि० अजेय (२) पुं० पराजय अजया स्त्री० भौग

अजय्य वि० अजेय अकर अकि अमि के बूद में शीर्य तैव ं(२) अविनासी (३) पुं० देव अजर्य वि ०ज्ओ 'अजर' (२) न ० मित्रता अजल वि० न अटकतुः, कायम रहेतुं अजसम् अ० सततः कायम अजा स्त्री० बकरी अजागसस्तम् पूर्व वर्षेरीने गळे लटकतो अधिक (२) तेवी निरुपयोगी वस्तु अजात वि० नहि जन्मेलुं(२)अविकसित अजातराश्च वि० जैने कोई रात्रु नथी तेवुं (२) पुं० युधिष्ठिरनुं नाम अजाति स्त्री० अनुत्पत्ति अजानि पुं० पत्नी विनानो पुरुष; विधुर अजानिक वि० घेटा-बकरा चरावनार भरवाड अजानेय पुं॰ जातवान घोडो अजि वि० गतिशील; चालतुं (२) स्त्री० गति (३) फेंकवुं ते शिकाय तेवुं अजित वि॰ नहि जितायेलुं(२) जीती न अजिन न० आसन तरीके क्परातुं बाघ वगेरेनुं चामडुं (खास करीने काळा मृगन्) अजिर वि० उतावळुं (२) न० आंगणुं; फळियुं; रमतगमत बगेरे माटे रोकेली [(३) पुं० देडको अजिह्य वि० सरळ;सीघुं(२)प्रमाणिक अजिह्मग वि० सीधुं जनार – चालनार (२) पुं० बाण

अजीगतं पुं साप
अजीगतं पुं साप
अजीगं वि नहि पचेलुं (२) जीणं नहि
थयेलुं (३) न अपची; अजीणं
अजीव वि जीव विनानुं; निजीव
अजेय वि न जीती शकाय तेवुं
अञ्जुका,अञ्जूका स्त्री वेश्या(नाटकमां)
अज्ञ वि नहि जाणतुं (२) अज्ञानी; मूर्कं
अजात वि नहि जाणेलुं; अजाण्युं (२)
अणधार्यं

अंशातसर्या स्त्री०, अज्ञातवास पुं० कोई न जाणे तेम गुप्त रहेवुं ते; गुप्तवास अज्ञान वि० अज्ञानी; मूर्ख (२) न० ज्ञाननो **अभाव** (३) अविद्या अज्ञानिन् वि० जुओ 'अज्ञ' **अज्ञेय** वि० न जाणी शकाय सेवुं अट् १ प० फरवुं; रखडवुं; भटकवुं अट वि० भटकनार; रखडनार अटन न० फरवुं – रखडवुं – भटकवुं ते अटनि, अटनी स्त्री० धनुष्यनी खांचा-वाळो छेडो **अटल** वि० दुढ़; स्थिर अटिव वि० जंगल; अरण्य अटियक पुं० वनेचर; वनमां फरनार अटबी स्त्री० जुओ 'अटवि' अट्ट वि ० ऊंचुं; मोटुं(२)पुं०, न० अटारी; झरूखो(३) किल्ला उपरन् सैन्यगृह (४) महेल (५) क्षौमवस्त्र (६) न० अन्न अट्टहसित न०, अट्टहास पुं०, अट्टहास्य न० मोटेथी खडखड हसवं ते अट्टाल, अट्टालक पुं० अटारी; झरूखो अट्टालिका स्त्री० हवेली; महेल अणक वि० तुच्छ; अधम अणि पुं० सोयनी अणि (२) सीमा; हद (३) गाडानी घरोनो खीलो **अणिमन्** पुं० सूक्ष्मता; नानापणुं (२) नानुं रूप धारण करवानी एक सिद्धि अणिष्ठ वि० सौथी नान् अणी स्त्री० जुओ 'अणि' अणीयस् वि० वधारे नानुं अणु वि० घणुं नानुं (२) पुं० परमाणु (३) नानामां नानो समयविभाग अतट वि० तट वगरनुं; सीधुं; ऊर्भुं (२) पुं० पर्वतनी ऊभी भेखड अतनु वि० नानुं के पातळूं नहि तेवुं (२) अनंग; कामदेव |असंयमी अतपस्, अतपस्क वि० तप विनानुं;

अतिकत वि० अकल्पित; ओचितुं

अतक्यं वि० समजी न शकाय तेवुं अतल वि० तळिया विनानुः, अगाघ (२) न० सातमानुं एक पाताळ अतस् अ० आयी; तेथी (२) अहींथी; आमांथी (३) अत्यारथी अतसी स्त्री० शण (२) अळसी अतंत्र वि०तंतु विनानुं(वाद्य) (२) मिरं-अतंत्र, अतंत्रित, अतंत्रिल वि० आळस विनानुं; चपळ (२) सावघ; जाग्रत अति अ० अतिशय, अमर्याद,हद बहारनुं, -थी आगळ जतुं, ए अर्थमा वपराय छे **अतिकय** वि० न मानवा जेवुं(२)न कहेवा जेवुं (३) नष्ट; मृत अतिकया स्त्री० अतिशयोक्तिवाळी वात (२) नकामी – अर्थ वगरनी वात असिकल्य न० वहेली सवार अतिकाय वि० असाधारण कदनुं असिक्रुच्छ, वि० घणुं मुक्केल (२) पुं०, न० एक कठिन व्रत अतिकम् १ उ० [अतिकामति -- कमते], ४ ५० [अतिकाम्यति] हद बहार जर्युः; उल्लंघन करवुं (२) चडियातुं थवुं; श्रेष्ठ थवुं (३) उपेक्षा करवी (४) बातल करवुं (५) व्यतीत थवुं; पसार थवुं (समयन्) (६) दबाववुं; पकडवुं अतिकम पुं० ओळंगवुं ते;उल्लंघन (२) आक्रमण (३) पसार धवुं ते (समयनुं) (४) दबाववुं ते - चडियाता थवुं ते अतिक्रमण न० मर्यादानुं उल्लंघन (२) अपराध; दोष(३)समयनुं व्यतीत थवुं ते अतिक्रमणीय वि० ओळंगवाजेवुं (२) उपेक्षाकरवाजेवुं अतिकांत वि० हद ओळंगी गयेलुं (२) चाल्युं गयेलुं (३) वीती गयेलुं (४) न० भूतकाळमां बनी गयेलुं ते अतिकांति स्त्री० उल्लंघन अतिग वि० (समासमां) चडियातुं; श्रेष्ठ (२) घणुं आगळ गयेलुं; —यीं वघारे

अतिपात अतिगम् १ ५० [अतिगच्छति] बीतवुं (समयनुं) (२) -थी वधी जवुं (३) मटी जवुं (४) उपेक्षा करवी (५) छटकी जबुं अतिगुण वि॰ उत्तम गुणवाळुं; श्रेष्ठ (२) गुणहीन अतिचर् १ प० उल्लंघन करवुं (२) बेवफानीवडवुं (३) उपेक्षाकरकी (४) चडियाता थवुं अतिचार पुं० उल्लंघन; अतिकम (२) ग्रहोनुं एक राशिमांथी बीजी राशिमां जवु ते; ग्रहोनो गतिमार्ग अतिच्छत्र पुं० बिलाडीन। टोध अतिजीव् १५० —नी पछी जीवता रहेवुं (२) वधु सरस रीते जीववुं अतितमाम् अ० सौयी वधारे; अत्यंत (२) सौथी ऊंचुं (पदवीमां) अतितराम् अ० घणुं वधारे (२) घणुं ऊंचुं (पदवीमां) अतित् १ प० ओळंगी जवुं **अतिषि** पुं० महेमान; परोणो अतिषिवेष वि० अतिथिने देव गणत् अतिनिद्र वि० अत्यंत निद्रावाळुं (२) निद्वारहित अतिपत् १ प० उल्लंघन करवं --प्रेरक० मोडुं करवुं (२) उपेक्षा करवी; अनादर करवो (३) पसार थाय तेम करवुं (४) बिनअसरकारक करवुं (५) खेंची जयुं; आंचकी जवुं अतिपतन न० वही जबुं ते (समयनुं) (२) उल्लंघन (३) उपेक्षा; अनादर अतिपस्ति स्त्री० वही जवं – वीती जवं ते (समयनुं) (२) उल्लंघन (३) निष्पत्ति न थवी ते अतिषद् ४ आ० अतिऋमयुं(२)उल्लंघन — संबंध अतिपरिचय पुं० वधारे पडतो परिचय अतिपात पुं० वही जबुं ते (समयनुं) (२) उल्लंघन (३) उपेक्षा; अनादर (४)

भावी पडबुं ते (जेम के दुःखनुं) (५) विरोध (६) नाश (समासमी) अतिपातिन् वि० वेगमा पाछळ पाडी देत् अतिप्रशंघ पुं० अतिवेगयी के एक पछी एक जलदी आववं ते अतिप्रवृद्ध वि० अतिशय वधी गयेलुं (२) प्रदळ के आक्रमक बनेलुं अतिप्रक्त पुं पर्यादा बहारनो प्रक्त (२) पूरतो जवाब मळवा छतां फरी करातो प्रश्न अतिप्रसंग स्त्री • अत्यंत आसक्ति (२) अति निकटता (३) तोछडापणुं अतिभू १ प० नीकळवुं; ऊभुं थवुं(२) –थी वधी जव् अतिभूमि स्त्री० पराकाष्ठा; अंतिम हद (२) मर्यादानुं उल्लंघन **अतिमर्त्य** वि० जुओ अतिमानुष अतिमर्याद वि० मर्यादा बहारनुं अतिमात्र वि० प्रमाण बहारनुः अतिशय अतिमात्रम् अ० वधारे पडतुं होय तेम अतिमानुष वि०माणसथी न थई शके तेवं **अतिमाय** वि० मायाथी पर; मुक्त **अतिमुक्त** वि० संसारनी मायाथी मुक्त (२) मोती (– नाहार) थी चडियातुं (३) पुं० एक लता (माधवी लता) (४) एक वृक्ष [वृक्ष **अतिमुक्तक पुं**० माधवी लता (२) एक अतिमृत्यु वि० मृत्युने तरनाहं (२)पुं० मोक्ष अतिया २ प० उल्लंघन करवुं; आज्ञानो भंग करवो (२) चडियातुं थवुं अतियात वि० त्रेगवंत् **अतिरय** पुं० बिनहरीफ योद्धो (रथमां बेसी लडनारो) अतिरभस पुं० अतिशय वेग अतिरंहस् वि० घणुं झडपी – वेगीलुं अतिरिक्त वि० श्रेष्ठ – चहियातुं (२) जुदु; भिन्न (३) खाली (४) अतिशय (५) वधारे पडतुं; वधारानुं

अतिरिच् (घणुंखरं कर्मण प्रयोगमा) ─थी वधी जबुं (२) वधारानुं होबुं अतिरूप वि० अति रूपाळुं(२)रूप वगरनुं (३) पुं० निराकार (ब्रह्म) अतिरेक पुं० अधिकता; अतिशयता (२) भिन्नता (३) वधारो; नकामो वधारो अतिरोमश,अतिलोमश वि० घणा वाळ-वाळु(२)पुं• मोटो वानर(३)जंगली बकरा **अतिवतेन** न०क्षमा करवा योग्य अपराध अतिवर्तिन् वि० चडियातुः श्रेष्ठ (२) उल्लंघन करनार अतिबहु १ प० पार लई जबुं – प्रेरक० पसार करवुं (समय) (२) –थी छटकवुं (३) उपाडीने लाववुं; खसेडवुं (४) अनुसरवुं (मार्ग) अतिवाद पुं० कठोर वाणी; निदा:ठपको (२) वधारीने बोलवुं ते (३) वधारे बोलवुं ते अतिवादिन् वि० वधु बोलनार(२)वीजानुं तोडी पाडी पोतानी वात कहेनार अतिवाहक पुं० जीवना सूक्ष्म करीरने दोरी जनार देव अतिवाहन न० पसार करवं ~ व्यतीत करवुं ते (२) अत्यंत परिश्रम करवो ते; भारे बोजो ऊंचकी जवो ते (३) दूर करवुते अतिवाहित वि० पसार करेलुं; व्यतीत अतिविष्ठित वि० वीरताथी लडनार्छः २) मर्यादानुं उल्लंघन करनारुं अ**तिवृत् १** आ० ओळंगी जवुं; उल्लंघन करवुं(२)पसार थवुं (समयनुं)(३) उपेक्षा करवी अतिवृद्धि स्त्री० वधारे पडतो वरसाद अतिबेल वि० मर्यादाने ओळंगी गयेलं अतिवेलम् अ० अत्यंत (२) कवखते अतिब्याप्ति स्त्री० लक्ष्य न होय तेवी वस्तुनो समावेश थवो ते (२) नियमनो गमेतेम खेंचीने विस्तार करवो ते

अतिशय वि० अधिक; घणुं(२) श्रेष्ठ(३) पुं ॰ आधिक्य (४) श्रेष्ठता अतिज्ञायित वि०अधिक(२)ओळगी गयेलु अतिशयिन वि० अधिक; श्रेष्ठ अतिशयोक्ति स्त्री० अत्युक्ति; वधारीने कहेवु ते (२) ए नामनो अलंकार अतिशी २ आ० चडियातुं थवुं; श्रेष्ठ थवुं(२)हदथी वधारे ऊंघवुं –प्रेरक० {अतिशाययति} –थी वधी अतिसर्ग वि० नित्य(२)मुक्त(३)पुं०दान (४)परवानगी; रजा (५)काढी मूकवुं ते अतिसर्जन न० आपी देवुं ते(२)उदारता (३) मारी नास्तवुं ते (४) वियोग अतिसंधा ३ उ० छेतरवं अतिसंधान न० छेतरपिंडी अतिसार प्० संग्रहणीनो व्याधि अतिसृज् ६ प० आपवुं;आपी देवुं(२) स्याग करवो;काढीं मुकदुं(३)परवानगी आपदी अतिस्नेह पुं० अति प्रेम अती (अति+इ)२ प० उल्लंधन करवे; ओळंगी जवुं (२)पराजय करवो (३) श्रेष्ठ थवुं (४) उपेक्षा करवी (५)समयनुं पसार थवं - वही जवं (६) वधी जवं; वधारे होवुं (७) मरण पामवुं अतीत वि० ओळंगी गयेलूं (२) वीतेलूं (३) समाप्त थयेलुं (४) मृत असीव अ० घणुंज ्र(२) न**० मन** अलीप्रिय वि० इंद्रिययो पर – अग्राह्य अतुल, अतुल्य वि० जेनी तुलनान थई शके तेवुं; अनुपम **अनुचार** वि० उष्ण; गरम असुवारकर, असुहिनकर पुं० सूर्य **अस्पय** पुं० व्यतीत चत्रुं ते;अंत; नाश (२)विपत्ति; जोसम; मुक्केली(३) दोष; अपराध (४) हुमलो (५) समजब् - समजावयुं ते (६) उपर थईने चालव् -- जबुंते

अस्यर्थ वि० प्रमाण बहारनुं; अतिशय अत्यर्थम् अ० घणुं वधारे होय तेम अत्यंकुश वि० निरंकुश अर्त्यंत वि० धणुं वधारे (२) अनंत; शाश्वत (३) संपूर्ण; पूरेपूरु अत्यंतगत वि० हंमेशने माटे गयेलुं **अस्यंतम्** अ० घणुवधारे होय तेम (२) मरता सुधी (३) संपूर्णपणे अत्यंताभाव पुं० संपूर्ण अभाव अस्याचार पुं० शास्त्रविरुद्ध कार्य-निषिद्ध कार्य अस्यास्ट वि० अतिशय वधी गयेलुं अस्याक्तिः स्त्री० अति ऊंचुं -प्रसिद्धि ∫(३) साहमे अस्माहित न० संकट; विपत्ति(२)दुर्भाग्य अस्युक्ति स्त्री० अतिशयोक्ति **अत्र अ**० अहीं . अवस्य वि० आ स्थळनुं अक्रप दि० शरम वगरनु अन्रभवत् वि० 'मान्य', 'पूज्य', 'आपश्री' –ए अर्थमां (सामे अभेल माटे) मान-वाचक संबोधन (स्त्री० अत्रभवती) अन्नस्त वि० बीक वगरनुं; निर्भय **अत्रस्य** अ० अहींनुं; आ स्यळनुं (२) स्थानिक अत्रांतरे अ० आ दरम्यान अस्त्रिपु० ब्रह्माना पुत्र अति ऋषिः; सप्तिषिओमांना एक अथ अ० ग्रंथारंभे वपरातो मंगल शब्द (२) पछी; अनंतर (३) 'जो एम मानीए तो' - एम बीजो पक्ष बतावे(४)अने(५) प्रश्न बताबे (६) तमाम - संपूर्ण एवो वर्ष बतावे (७) संशय -- विकल्प बतावे अब किम् अ० 'हा', 'एम ज' -- एवो अर्थ बतावे अप च अ० 'ते ज प्रमाणे' - एवी अर्थ अच तु अ० 'पण', 'तेथी ऊलटुं' -- एवो अर्थे बतावे **क्षप**र्व न० अपर्वे बेद

अथर्वण पुं० शंकर भगवान(२)अथर्व वेद अथर्षन् पुं० एक ब्राह्मण (२) एक मुनि (३) अथर्व वेद (४) शंकर (५) वसिष्ठ अथवा अ० किंवा; के अभातः अ० 'माटे' 'हवे' – एवी अर्थ अयो अ० ('अथ' शब्दना जेवा घणा-खरा अर्थमां) करवो आद् २ प० खावुं; खाई जवुं(२) नाश अदक्षिण वि॰डाबुं(२)होशियार-चालाक नहि तेवुं (३) दक्षिणा वगरनुं (यज्ञ ६०) अदत्त वि० नहि अपायेलुं (२) अयोग्य रीते अपायेलुं (३) नहि परणावेलुं अदत्ता स्त्री० नहि परणावेली कन्या अदत्तावायिन् वि० जे लेवानी अनुमति न होय ते लेनार (चोर) अदभ्रावि० पृष्कळ अदय वि० कूर; निर्देय अदयम् अ० खूब ज तीव्रताथी – जुस्साथी अदर्शन न० जोवुं नहिते (२) दर्शननी अभाव – लोप (३) गेरहाजरी अदस् वि० (स० ना०) पेल् **अदायाद** वि० वारस वगरनुं (२) वारस थवानो जेने हक न होय तेवुं अदिति स्त्री० कश्यप ऋषिनी पत्नी; -देवोनी माता (२) पृथ्वी(३) वाणी(४) [(२) पैसादार **अबीन** वि० दीन नहि तेवुं; जुस्सादार **अदृत्रय** वि० देखी न शकाय तेवुं अकृष्ट वि० नहि ओयेलुं (२) अणधार्युं (३) न० भाग्य; नसीब (४) नहि कल्पेली आफत अवृष्टि वि० आंधळुं (२) स्त्री० कूर दृष्टि; वक दृष्टि (३) न देखावुं ते अरदेय वि० न आपवाके आपी देवाजेवुं अदेश पुं० अयोग्य के अनुचित स्थान अद्धा अ॰ यथार्थ होय तेम (२) स्पष्ट होय तेम (३) नक्की होय तेम (४)आम; वा प्रमाणे

अव्भृत वि० आश्चर्यकारक अलौकिक (३)पुं० अद्भुत रस (४) न० आश्चर्य (५) आश्चर्यकारक बनाव **अक्षर** वि० अकरांतियुं खानारुं अस्त्र अरु आज; आजे अख दि० खावा लायक [आधुनिक अ**द्यत**न वि० आजने रुपतुं; आजनुं (२) अद्यपूर्वम् अ० आज पहेलां अद्यप्रभृति अ० आजधी मांडीने अ**द्यापि** अ० हजुपण अखाविध अ० आजश्री मांडीने अद्रुख्य न० नकामी वस्तु अद्भि: पुं॰ पर्वत (२)सूर्य(३)वृक्ष(४) इंद्रनुं वष्म (५) वादळुं; वादळांनो समूह (६) एक जातनुं परिमाण–माप (७) 'सात' -नी संख्या अद्विकन्या स्त्री० पार्वती **अद्विपति** पुं० हिमालय पर्वतः अक्रिसार पुं० लोढुं अद्रिसुता स्त्री० पार्वती अद्रिष्ट्न् पुं० इन्द्र अब्रोह पुं० द्रोहनो अभाव आह्रय वि० एक (२) अद्वितीय (३) न० ऐक्य; अद्वैत अहितीय वि • अजोड;सर्वश्रेष्ठ(२)एकलुं अद्वेत वि० द्वैतभाव-रहित (२) न० ऐक्य; अभेद अद्वेतवादिन् पुं० वेदांती अद्वेष वि० जुदाईना भाव विनानुं अषम वि० नीच; हलकुं (२) दुष्ट अधमर्ण, अधमणिक पुं० देवादार अधर्मांग न० पग अधर वि॰ नीचेनु (२) हलनुं; नीच (३) आगळनुं के पाछळनुं (४) पुं० नीचलो अषरतः,अषरतात् अ० नीचे;तळे;तळिये **अधरपान न० हो**ठ उपर चुम्बन अधरस्तात्, अधरस्मात् अ० नीचे;तळे;

तळिये

अधरात अ० नीचे; तळिये **अधरीकृ ८** उ० पाछळ पाडी देवुं;हरावबुं **अषरीभू १** प० खोटुं ठरवुं (अदालतमां) अवरेद्धः अ० आगले दिवसे (२) गई कालने आगले दिवसे **अधरोत्तर** वि० श्रेष्ठ अने कनिष्ठ (२) दूरनुं अने नजीकनुं (३) हमणानुं अने पछीनुं (४) अधिक अने न्युस (५) बहेलुं अने मोडुं (६) ऊलटी रीते **अवरोध्ठ** पुंच नीचली होठ अधर्म पुं० शास्त्रविरुद्ध आचरण (२) अनीति (३)पाप अर्थामन् वि॰ धर्म विरुद्ध वर्तनारुं; पापी अवर्म्य वि॰ धर्मविरुद्ध (२) गेरकायदेसर अधवा स्त्री० विधवा **अधश्चर** पुं० चोर अथस् अ० नीचे; तळे **अवस्करण** न० हरावव ते(२)नीचुं पाडवुं **अधस्तन** वि० नीचे आवेलुं – रहेलुं **समस्तल** न० नीचेनुं तळ; नीचेनो भाग अधस्तात् अ० नीचे; तळे [अधोगति **अवःपात** पुं० नीचेनी तरफ पडवं ते: अधि अ० उपर, ऊचे, अधिक, श्रेण्ठ, -ने लगतुं, वधारानुं, ए अर्थमां वपराय छे अधिक वि०वधु;वधारे(२)मोटुं(३) प्रख्यात(४)वधारानुं(५)न० वधारो(६) नकामापणुं(७)अ० वद्यारे ; वद्यारे पडतुं अधिकरण न० अधिकारे - पदे नियक्त ुकरवुं ते(२) स्थान (३) आश्रय (४) वाक्यमां शब्दनो संबंध (५) विषय; प्रकरण; खंड (६) अधिकार; हक (७) पूर्णस्वामित्व (८) न्यायमंदिर (९) सरकारी खात् **अधिकदि (**अधिक+ऋदि) वि० अतिशय वैभवसंपन्न अधिकाम वि० अतिशय कामनावाळ्

अधिकार पुं० सत्ता, पदवी (२)सोंपेलुं

काम(३)राज्यव्यवस्था (४)स्वामित्वनो

हक (५) ग्रंथविभाग -- प्रकरण (६) मु**स्थ** नियम, जे बीजा नियमो पर अधिकार चलावे छे (७) शब्दनो वाक्यमां संबंध अधिकारवत्, अधिकारिन् वि० अधि-कारवाळुं; सत्तावाळुं(२) योग्य; उचित (३) पुं० व्यवस्थापक; अधिकारी (४) हकदार; वारसदार अधिक ८ उ० अधिकार होवो -- आपवो

अधिक्क ८ उ० अधिकार होवो – आपवो (२) संबंब होवो; अनुलक्षवुं (३) सहन करवुं; अनुभववुं (४) वश करवुं; चडियाता थवुं

अधिकृत वि० अधिकार पामेलुं; नीमेलुं (२) पुं० अधिकारी; निरीक्षक अधिकृत्य अ० उद्देशीने; संबंधमां अधिकम् १ उ० [अधिकामति–कमते] ऊंचे चडवुं (२) आक्रमण करवुं

अधिक्षिप् ६ प० अपमान करवुं (२)निंदा करवी; गाळ देवी (३) उपर नाखवुं — फेंकवुं (४) —थी चडियाता थवुं; पाछळ पाडी देवुं

अधिक्षेष पुं० अपमान; निदा; गाळ (२) काढी मूकवुंते (३) फॅकबुं – नाखवुंते अधिगण् १० उ० गणतरी करवी (२) ऊंची किंमत आंकवी

अधिगत वि० जाणेलुं (२) प्राप्त करेलुं अधिगम् १ प० | अधिगच्छति | प्राप्त करवुं; मेळववुं (२) नजीक पहोंचवुं – जवुं (३) जाणवुं (४) संग करवो

अधिगम पुं०, अघिगमन न० ज्ञान (२) प्राप्ति; लाभ (३) अभ्यास (४) स्वीकार (५) संग; समागम

अधिगुण वि० उत्कृष्ट; अधिक गुणवाळुं (२)सारी रीते खेंचेलुं (जेमके धनुष्यनी पणछ)

अधिज्य वि० पणछ चडावेलुं (धनुष्य) अधिज्यकार्मुक,अधिज्यधन्यम् वि० जेणे धनुष्यनी पणछ चडावी छे तेवुं अधित्यका स्त्री० पर्वतनी ऊंची भूमि अधिदेव पुं ०, अधिदेवता स्त्री ०, अधिदेव, **अधिदैवत** नर्० श्रेष्ठ देव (२) अधिष्ठाता अमलदार अधिप,अधिपति प्ं० राजा (२) उपरी-अधिपांशुल वि० उपरथी धूळवाळुं अधिप्रज विं० घणां संतानवाळ् अधिप्रजम् अ० प्रजा -- संततिनी बाबतमां अधिभू पुं० स्वामी; श्रेष्ठ व्यक्ति **अधिभृत**िव ० पंचभृत वगेरेने लगतुं (२) न॰ जड सृष्टि (३) परमतत्त्व अधिमात्रम् अ० अत्यंत; अमाप अधियज्ञ वि० यज्ञने लगतुं(२) पुं० सर्व यज्ञना अभिमानी विष्णु (३)मुख्य यज्ञ अधिरथ वि०रथारूढ (२)पुं० सारथि अधिराज्, अधिराज पुं० सार्वभौम राजा; चक्रवर्ती राजा सर्वोपरी राज्य अधिराज्य, अधिराष्ट्र न० साम्राज्य; अधिरुह १प० उपर चडेवुं(२)सवारी करवी –प्रेरक० [अधिरोह (-प) यति] उपर चंडाववुं (२)फरी पाछुं स्थापित करवुं (३) पणछ चडाववी (४) अर्पवुं अधिकत वि० उपर चडेलु;आरूढ थयेलुं (२) अत्यंत वृद्धि पामेलुं अधिरोहण न० उपर चडवुं ते **अधिवस् १** प० रहेवास करवो (२) २ आ० पहेरवुं (वस्त्र) अधिवास पुं ० निवासस्थान; निवास(२) खुशबो (३) यज्ञना आरभमां देवतान् स्थापन (४) जन्मस्थान (५) भूरूपा बेसी करेलुं धरणुं अधिवासित वि० स्थापित करेलुं (देवता) (२) सुगंधयुक्त करेलुं अधिवासिन् वि० रहेलुं;वसतुं(२)सुगंध-**अभिविद्६** उ० [अधिविन्दति-ते] एक उपर बीजुं परणवुं अधिवेद, अधिवेदन पुं० एक जीवती

अपृति **अधिशो २** आ० –नी उपर सूर्व् (२) रहेवास करवो (३) ~मां बेसर्वु अधिष्ठा (अधि+स्था) १ प० [अधि-तिष्ठिति अभुं रहेवुं (२) उपर बेसवुं (३) आचरवुं; –नुं अनुष्ठान करवुं (४)-मां वसवुं -- रहेवुं(५)-ना स्वामी बनवुं; जीतवुं – वश करवुं (६) दौरवु; शासन करवुं (७) उपयोग करवो अधिष्ठात् वि० नियममां राखनार्हः; नियासक (२) पुं० अध्यक्ष; उपरी-अमलदार अधिष्ठान न० स्थान; निवासस्थान (२) आश्रय (३) सत्ता (४) राज्य-सत्ता (५) पैडुं (६) आशीर्वाद (७) बेठक; आसन; शस्या अधिष्ठित वि० रहेलुं(२) उपरी धईने रहेलुं(३)स्थापेलुं, नीमेलुं(४)वसेलुं अधिस्यन्दम् अ० वधु वेगथी अभी (अधि+इ) २ आ० अभ्यास करवी; भणवुं; शीखवुं (२) २ प० याद करखुं –प्रेरक० भणाववुः; शीखवर्वु अधीकार पुं० जुओ 'अधिकार' अधीत वि० शीखेलुं (२) जाणेलुं(३) न० अध्ययन; अभ्यास अधीति स्त्री० अभ्यास (२) याद अधोतिन वि० जेणे अम्यास कर्यो छे तेवुं; निपुण अधीन वि० पराधीन; परतंत्र अधीयान पुंज् विद्यार्थी (२) वेदनो अभ्यासी अधीर वि॰ उतावळुं (२) चंचळ (३) क्षुब्ध; गभरायेलुं (४) वीकण अधीरा स्त्री० कलहप्रिय स्त्री(२)वीजळी अघीवास पुं० लांबी डगली अधीक्ष,अधीक्षर पुं० सार्वभीम राजा; अञ्चला अ० हमणां; हवे; आ समये **अधुना**तन वि० आधुनिक अवृति स्त्री० धैर्य - धारणानी अभाव

जपर बीजी स्त्री परणवी ते

अव्युष्य वि० अजेय; जेना उपर आक्रमण न थई शके एवुं (२)नम्रः; शरमाळ (३) (अगोचर) अषोऽक्षज पुं० विष्णु (इंद्रियज्ञानयी अधोगति स्त्री० दुर्दशा; अवनति अधोगमन न० नीचे जबुं ते(२)अवनति; अधोदृष्टि स्त्री० नीची नजर अधोद्वार न० गुदा अधोऽधस् अ० वधुने वधुनीचे अमोमुख वि॰ नीचा मुखवाळुं; नीचुं मुख करेलुं अभोलोक पुं० नीचेनी दुनिया – पाताळ अषोवायु पुं० अपानवायु अध्यक्ष वि० दृष्टिगोचर (२) उपर नजर राखनार; नियंता (३) पुं० प्रमुख; मुख्य अधिकारी अध्यक्षर न० 'ॐ' ए अक्षर-पद **अध्यय** पुं•, अव्ययन न॰ अम्यास **अध्यवसान न०** प्रयत्न; उद्योग; खंत(२) तादात्म्य; तद्रूपता अध्यवसाय पुं रु प्रयत्न; उद्योग; खंत(२) निश्चय (३) उत्साह [उत्साह**वा**ळु अध्यवसायिन् वि० निश्चयवाळुं (२) अध्यवसो ४ ५० निश्चित करवुं (२) उत्साहवाळा थत्रं |खरं मानी लीधेलुं अध्यस्त वि० आरोपण करायेलुं;खोटाने अध्याकम् १ उ० अध्याकामति-कमते हुमलो करवो (२) जईने बेसवुं – रहेवुं अध्याकांत वि० कबजो लेवायेलुं; प्रवेशायेल् अध्यागम् १ प० अध्यागच्छति जडवुं; मळषु **अध्याचरित** वि० वपरायेलुं (पर**ब्रह्म अध्यास्म** वि० आत्मा संबन्धी (२)न० अष्यास्मवेतस् पुं० आत्मानुं चितन कर-विदातनुं ज्ञान नारुं अध्यात्मज्ञान न० आत्मज्ञान; ब्रह्मज्ञीन;

अध्यात्मम् अ० आत्माने लगतुं होय तेम अध्यात्मयोग पुं• आत्मानुं घ्यान अध्यात्मरति वि० आत्मचितनमां मग्न रहेनार्ह [विद्या अध्यात्मविद्या स्त्री० ब्रह्मविद्या; आत्म-अध्यात्मक वि० आत्मा संबंधी; अध्या-त्मने लगतुं

अध्यापक पुं० शिक्षक; विद्या आपनार अध्यापन न० शिक्षण; शीक्षववुं ते अध्यापियत् पुं० शिक्षक; भणावनार अध्याय पुं० अध्ययन; अभ्यास (२) प्रकरण; सर्ग; परिच्छेद (३) अभ्यासनो योग्य समय

<mark>अध्यायिन्</mark> वि० भणना**रं** (विद्यार्थी) **अध्यारुह् १** प० उपर चडवुं (२) –थी अधिक थवुं

—प्रेरक० [अघ्यारोपयित | उपर चडाववुं (२) आरोपण करवुं (३)जेवुं न होय तेवुं तेने मानवुं [(३) दबायेलुं अध्यास्ट वि० उपर चडेलुं (२)चडावेलुं अध्यारोप पुं० आरोपवुं ते — वस्तुमां अवस्तुनुं आरोपण करवुं ते; भूल भरेलुं जान

अध्यास् २ आ० रहेवुं;स्थित थवुं;स्थिति करवी (२)होद्दानो स्वीकार करवो (३) प्रवेश करवो; कबजो लेवो (४)समागम करवो

अध्यास पुं० खोटुं आरोपण;मिथ्याझान (२)उप-प्रकरण (३)उपर बेसवुं -- रहेवुं ते (४) उपर मूलवुं ते

अध्यासित वि० बेठेलुं; रहेलुं (२)न० उपर बेसवुं ते

अध्याहरण न०, अध्याहार पुं० अर्थना स्पप्टीकरण माटे अनुक्त पद उमेरबुं ते (२) अनुमान; तर्क

अध्याह् १ उ० अध्याहार करवो अध्यषित ('अधि+वस्'नुं भू० कृ०) वि० घास करायेलुं अक्षु विते अरु मळसके; प्रभात समये अध्युष्ट वि० साडा त्रण **अध्यूढ** ('अधि+वह'नु মূ৹ কূ৹) বি৹ अवलंबित (२) घणी समृद्धि के वृद्धि -वाळुं (३) पुं० कन्यावस्थामां |कर्युं छे ते स्त्री थयेलो पुत्र **अध्यूदा** स्त्री० जेना पतिए बीजुं स्त्रन **अध्येत्** पुं० विद्यार्थी; शिष्य अध्येत्री स्त्री० विद्यार्थिनी अभ्रुव वि० अनिष्टिचत (२)क्षणिक; अध्वन पु॰ मुसाफर; वटेमार्गु (२) सूर्य अध्यगमिन् वि॰ मार्गे जनारुं;मुसाफरी आकाश अध्वन् पुं० मार्ग; रस्तो (२) काळ (३) अध्वर पुं० यज्ञ जाणनार ब्राह्मण अध्वर्यु पुं० यज्ञ करावनार; यजुर्वेद अध्वांत न० परोढ के संघ्याकाळनी प्रकाश (२) मुसाफरीनो अंत अनकार वि० मूंगुं; अवाचक (२) अभण (३) बोलवाने अयोग्य (शब्द) **अनगार** वि० घर विनानुं अनिम वि० अग्निहोत्र विनानुं (२) सन्यासी (३) न परणेलुं अनघ वि० पाप वगरनुं; पवित्र (२)दोष विनानुं; सुन्दर (३) आपत्ति के विपत्ति विनानु **अनदुह** पुं॰ बळद अनिति अ० घणुं वधारे नहि तेम अनितक्रम पुं० अतिकम – उल्लंघननो अभाव; मध्यमसरता अनितममणीय वि० उल्लंघन न करी शकाय के न करवा जेवुं अनद्यतन दि० आजनुं नहि तेवुं अनुधिकारचर्चा स्त्री० अधिकार – लायकात विना चर्चा करवी ते अनुष्रिगत वि० न मेळवेलुं(२)नहि भणेलुं **अनधिगतमनोरथ** वि० जेना मनोरथ पूर्णनियी थया तेवुं – निराश

अनध्ययन न०, अनध्याय पुं० न भणवुं त; रजानो दिवस अनन्य वि० बीजुनहितेवु – अभिन्न (२) अद्भय; अपूर्व (३) एकाग्र; एकनिष्ठ अनन्यगति स्त्री० एक ज मार्ग; एक ज उपाय विनान् अनन्यगतिक वि० बीजा आश्रय के अनन्यचित्त, अनन्यचेतस् वि० एकाग्र चित्तवाळु अनन्यपूर्व पुं । बीजी परनी विनानी पुरुष अनन्यपूर्वा स्त्री० कदी बीजानी नथी थई तेवी स्त्री – कुमारिका अनन्यभाज् वि० बीजा कोईने न भजतुं; वफादार अनन्यमनस् वि॰ जुओ 'अनन्यचित्त' अनन्यविषय वि० बीजा कोईने लागुन पडत् **अनन्यसाधारण** वि० असामान्य **अनन्वय** पुं० संबंधनो अभाव अनन्वितः वि० संबंध विनान् (२)असंगत (३) साथे न होय तेवुं; विनानुं अनपकार पुं० कोईनु अहित न करवुं ते अनपग वि० स्थिर; दृढ़ अनपत्य वि० निःसंतान; वांझियुं अनपत्रप वि० शरम विनानुं अनपराध, अनपराधिन् वि० अपराध विनानुः निरपराधी शाइवतपण् अनपाय वि० अविनाशी; अक्षय(२) पुं० अनपायिन् वि० शाश्वतः; स्थिर अनपेक्ष,अनपेक्षिन् वि०अपेक्षा -- दरकार विनानुं(२)लाल्सा वगरनुं; निःस्पृही (३) संबंधथी पर अनपेत वि० दूरनहिगयेलु (२)युक्त; सहित (३) छूटुं न पडतुं; वळगी रहेत् अनभिज्ञ वि० अज्ञानी; मूर्ख (२) अपरि-चित्र; अजाण्युं अनय पुं॰ अव्यवस्था (२) अनीति (३) दुःखः; विपत्ति (४) छळः; कपट अनर्गेल वि० निरंकुश; छुटुं

अनर्घे दि० अमूल्य (२) पुं० खोटी के अयोग्य किंमत अवर्घ वि० अमुल्य(२)सीथी वधु पुज्य अनर्थं वि०निरुपयोगी;नकामुं(२)अभागी (३) नुकसानकारक; अनिष्ट (४)अर्थ वगरनुं (५) पुं० निरुपयोगिता (६) प्रयोजन के उपयोग विनानी वस्तू (७) अनिष्ट; आफत अनयंक, अनध्यं वि० अर्थ वगरन् (२) प्रयोजन विनानुं; लाभ वगरनुं (३) दुर्भागी (४) न० निरर्थक प्रलाप अनहं वि० अयोग्य; लायक नहि तेवुं अनल पुं॰ अग्नि (२) जठराग्नि (३) ऋोधारिन अनलम् अ० बस नहि तेम; पूरतुं नहि अनलस वि० आळस विनानुं; उद्योगी **अनल्प** वि० घणुं;पुष्कळ ∣विनानुं अमबकाश वि० अवकाश-प्रसंग-तक अनवगीत वि० निदित नहि तेवुं अनवप्रह वि० काबूमांन रहेतेवुं **अनवच्छिन्न** वि० छूटुं पाडेलुं नहि तेर्नु (२) सीमा के मर्यादा नहि करायेलुं(३) निश्चित नहि करायेलुं [अनिदित **अनवद्य** वि० दोष—स्रोड **अनवरत** वि० सतत; निरंतर अनवसर वि० अवकाश -- फुरसद वगरनुं (२) उचित काळ विनानुं अनवसित वि० पूर्व न थयेलुं; असमाप्त अनवस्थ वि० अस्थिर; चंचळ अनवस्या स्त्री० अस्थिरता अनिश्चितता (३) निर्णय अथवा छेडो न आदवो ते; एक तकंदोष |राखवी ते **अनवेक्षण** न० काळजी – तपास **अनक्षन न०** उपवास (२) आमरणांत विनान् अनसुय, अनसुयक वि० असूया-अदेखाई अनंग वि० अंगरहित (२) पुं० कामदेव अनंगलेख पुं० प्रेमपत्र अनंगद्मत्र पुं० शंकर भगवान

अनंजन वि० आंजण दिनानुं(२) दोष विनानुं (३) कक्षा संबंध विनानुं अनंत वि० अपार (२) शाक्वत (३) प्० शेषनाग अनंसर वि० पछीनु (२)नजीकनु (३) अंतर वगरनुं – सतत; अखंड अनंतरम् अ० तरत ज (२) पछीथी अनंतराय वि० अंतराय - बाधा विनानं **अनंतरीय** वि० ऋममां तरत ज पछीनं **अनंद** वि० आनंदरहित; दःखपूर्ण अनागत वि० नहि आवेलुं(२)नहि मळेलुं (३) भावि; भविष्यकाळन् अनागतविषात् पुं० अगमचेतीवाळी अनागस् वि० निर्दोषः; निरपराधी अनाष्ट्रात वि० नहि सूंघेलुं;नहि भोगवेलुं अनाचार वि० शास्त्रविहित आचारो न आचरनारुं: निषिद्ध आचार आचरनारुं अनात्मन् वि० आत्मा,मन वगेरे विनानुं (२) शरीरने लगतुं(३) जेणे आत्मा जीत्यो नथी तेवुं; अजितेंद्रिय(४) पुं० शरीर वगेरे जड़ वस्तू अनात्मक वि० आत्मा जेवी स्थिर वस्तू विनानुं; क्षणिक **अनाथ** वि० आश्रय वगरनुं;असहाय (२) माबाप - स्वामी वगेरे विनानं अनादर वि० आदर विनानु (२) पृ० तिरस्कार; अपमान अनादि वि० जेनो आरम्भ के जन्म नथी अनादिनिधन वि० आदि तथा अंत विनान् विनान् अनादिमध्यान्त वि० आदि-मध्य-अंत **अनादीनय** वि० दूषण वगरनु अनादृत वि० अनादर करायेलु;अनादर निथी तेवुं; शाश्वत **अनाद्यनंत** वि० जेनो आरम्भ के अंत अनाष्ट्रष्ट, अनाधुष्य वि० न जीती के दबावी शकाय तेवं अनापद् स्त्री० आपत्तिनो अभाव

अस्तरमः विच न बेळवेषः (२) बेळवथाया ं निष्पक्र गयेल् (३) अनुशळ (४) पुं० पुं०, न० आरोग्य; सूख अनामय वि० नीरोगी; दु:खरहित (२) अ**नामा,अनामिका** स्त्री बटचली आंगळी पासेनी आंगळी अनायत वि० असंयत (२) दुंड अनायल वि० परवश नहि तेवुं; स्वतंत्र अनायास वि० प्रयत्न वगरनुं (२) सहेलुं; मश्केल नहि तेवु (३) पुं० मुश्केलीनो अभाव (४) स्गमता अनायुष्य दि० आयुष्यने हितकर नहि अनारतम् अ० अनवरतः सततः अनारंभ पुं० (कार्यनो) आरंभ नहि करवो ते **अनारंभण** वि० आलंबन विनानुं अनारोग्य वि० आरोग्यने प्रतिकृळ (२) न० मादगी; मदवाड **अनार्तवा स्त्री०** रजस्वला न थयेली अनार्य वि० आर्यने न छाजे तेवुं;हरुकूं (२) असम्य (३) आर्थो विनानुं (४) आर्य नहि ते जातिनं सेवेल अनार्यज्ञ वि० आर्योए न आचरेलं --**अनालंब** वि० आलंबन बगरनुं:निराधार अनावतिन् वि० फरीथी पाछं न फरतुं **अनाविद्ध** वि० अणवींध्य अताविल वि० स्वन्छ; निर्मळ **अमाब्त** वि० नहीं ढंकायेलुं; खुल्लुं अनावृत्त वि० पहेली वारनं; फरीवारनं नहि तेवं मोक्ष अनावृत्ति स्त्री० पाछुं नहि फरवुं ते (२) **अनावृष्टि** स्त्री० वरसाद नहि यवो ते; नाशरहित अ**नाग्न** वि० आशा विनानुं; निराश (२) अनाशक वि० यथेच्छ भोगके भोजन रहित (२) नाशरहित (३)न० उपवास; आमरणांत उपवास असाधव वि० न सांभळतुं (२) कर्मबंध-अनास्वस् वि० भृष्युं; उपवासी

अनाश्वास वि० आधार लई न शकाय तेवुं (२) अ० विश्रांतिरहितपणे अनास्या स्त्री० अनादर (२) अश्रद्धा अनाहत वि० नहि हणायेलुं - घवायेलुं (२)कोरु; नवु; न वापरेलुं (३) वगाडया ंविना एनी मेळे थतुं (घ्वनि) **अनाहृत** वि० बोलावेलुं के निमंत्रेलुं नहि अनिकेत वि० घरबार विनानुं;एक ज स्थळे न रहेनारुं (२) पुं० संन्यासी अनिच्छ वि० इच्छारहित (२) इच्छा न करत् अनिच्छा स्त्री० नाखुशी; नामरजी अनित ('अन्'नुभू० कृ०) वि० साथे न होय तेव् अनित्य वि० अशास्त्रतः; नाशवंत (२) अस्थिर (३) प्रासंगिक अनिभृत वि० गुप्त नहि तेवुं (२) अविवेकी; धृष्ट (३) अस्थिर; चंचळ अनिमित्त वि० अकारण; सहज (२) न० योग्य कारणनो अभाव (३) अपशुकन अनिमिष,अनिमेष वि ० आंखना पलकारा वगरनुं; स्थिर (२) जाग्रत; सावधान (३) खिलेलुं; खुल्लुं (आंख, फूल ६०) (४) पुं० देव (५) माछलुं अनियत वि० निरंकुश (२) अनिश्चित अनियम पुं० नियमनो अभाव (२) अनिश्चितता |अब्यवस्थित अनि**यंत्रित** वि० स्वच्छंदी अनिराकरण न० निवारण न करवं ते अनिर्दिष्ट वि० निर्देश नहि करायेलु अनिर्देश्य वि० निर्देश न थई शके तेवुं अनिर्वचनीय वि० अवर्ण्य; अवर्णनीय अनिस्त पुं० पवन (२) बायुदेव अनिस्तस्स, अनिस्तसारिष पुं० अनिन अनिलाशन वि० उपवास करनाहं -पवन ज खानारुं (२) पुं० साथ अनिवार्य वि० निवारी न शकाय तेवुं **अनिक्रम् अ०** निरंतर: सतत

अनिष्ट वि० नहि इच्छोलुं (२) नहि इच्छवाजोग; बुरुं (३) न० संकट; दुःखः; आपत्ति अर्घ तेव् **अनिष्टानुबंधिन्** वि० पाछळ अनिष्टो अनिष्टापत्ति स्त्री० न इच्छेलुं मळवुं के आवी पडवं ते अनिव्रिय न० बुद्धि (२) मन अनीक पुं०, न० लक्कर; सेना (२)युद्ध (३) समूह पहेरेगीर अनीकस्य पुं० सैनिक (२) सशस्त्र अनीकिनी स्त्री० सेना; लश्कर (अक्षी-हिणीनो दशमो भाग) अनीति स्त्री० नीति विरुद्ध आचरण **अनीप्सित** वि० नहि इच्छेलुं अनीश वि० स्वामी के उपरी विनानुं (२) सत्ता के काबू वगरनु; अस्वतंत्र अनीव्यर वि० जेनो कोई स्वामी नथी तेवु – स्वतंत्र (२)असमर्थ (३) ईश्वर संबंधी नहि तेवु (४) ईश्वरमां न मानतुं अनीव्यरबाद पुं० ईव्वर नयी एवी वाद अनीह वि० निःस्पृह (२) आळसु **अनु** अ० पाछळ, साथे, परिणामरूपे, नीचे, नानुं, तरफ, नजीक, पछीनुं, जेवुं – एवा अर्थमां वपराय छे लिगोलग अनुकच्छम् अ० भेजवाळा भागनी **अनुकरण** न० नकल करवी ते अनुकंप् १ आ० दया वताववी अनुकंषा स्त्री० दया; सहानुभूति अनुकंपित वि० अनुकंपा दर्शावायेलुं अनुकंष्य वि० अनुकंषा करवा योग्य **अनुकार पुं**० अनुकरण -|आवत् **अनुकारिन्** वि० अनुकरण करतुं; मळतुं **अन्कीर्ग** वि०व्याप्त;पूर्ण ∤जाहेरात **अनुकीर्तन** न०कहेवुंते; वर्णन (२) अनुकूल वि० फावे तेवुं; सगवडवाळुं (२)हितकर; माफक; रुचतुं; पथ्य अनुकृ ८ उ० अनुकरण करवुं; नकल करवी (२) बदलो आपवो

अनुकृत वि० अनुकरण करायेलुं; –नी समान करायेलुं (२) न० वळतो घा अनुकृति स्त्री० अनुकरण करवुं ते अनुक्त वि० नहि कहेवायेलुं (२)अपूर्व; सांभळवामां न आवेल् अनुक्रम् १ उ० [अनुकामति - क्रमते], ४ प० [अनुऋाम्यति] पाछळ पाछळ जवुं; अनुसरबुं (२) गणतरी आपवी अनुक्रम प्०एक पछी एक आवद् ते; कम (२)पुस्तकादिना विषयोनी अनु-क्रमणिका (३) रोजनो अम्यास अनुक्रमणिका, स्वी० अनुऋमणी सांकळियुं; अनुऋम अनुकुक् १ प० –नी तरफ के पाछळ बुम पाडवी –प्रेरक० शोक दाखववामां सामेल अनुकोश पुं० दया; सहानुभूति अनुग वि० अनुसरनारुं(२)पुं० अनुचर अनुगत वि० अनुसरतुं; पाछळ जतुं (२) युक्त; सहित (३) व्याप्त; पूर्ण अनुगति स्त्री० अनुसरवुं - अनुकरण करवं ते (२) संमति अनुगम् १ प० | अनुगच्छति | पाछळ पाछळ जवुं; अनुसरवुं(२)आचरवुं; अमल करवो (३) -मां शोधवुं; -मां रखडवुं (४) अनुकरण करवुं; मळतुं आवर्ष (५) आवी पहोंचव् (समय) अनुगम पुं०, अनुगमन न० पाछळ जवं ते ; अनुसरण (२)समजवुं – पकड**वूं** ते (३)पतिनी पाछळ स्त्रीनु सती थवुं ते अनुगरित न० गर्जनानो पडघो अनुगामिन् वि० अनुसरनारुं; अनुयायी अनुगिरम् अ० पर्वतनी बाजुए अनुगुण वि० सरखा गुणवाळु; अनुरूप (२) अनुकूळः; प्रिय अनुगुणम् अ० सानुक्छ होय तेम अनुमै १ प० गावामां साथ आपवी (२) (काव्यमां) गाईने प्रसिद्ध करवुं

अनुप्रह् ९ प० | अनुगृह्धाति | कृपा करवी; उपकार करवो (२) टकावी राखवुं (३)अनुसरवुं; मळता आवर्युं अनुग्रह पुं०, अनुग्रहण न० कृपा;उपकार अनुप्राह्य वि० अनुग्रह करवा योग्य अनुचर् १५० पाछळ पाछळ जवु (२) सेवा करवी अ**नुसर** पुं० सेवक; अर्नुयायी अनुचरी स्त्री० दासी ∣गेरवाजबी अनुचित वि० अयोग्य (२) खोटुं; अनुचित् १० प० चितवव् अनुष्किष्ठष्ट वि० भोगवेलु नहि तेवुं; ताजुं (२) छांडेलुं नहि तेबुं; शुद्ध अनुजन् ४ आ० [अनुजायते] -नी पछी जन्मवु(२) –नाजेवाथवु अनुज वि० पछी जन्मेलुं(२) पुंचनानी अनुजात वि० पछी जन्मेलुं (२) –ना जीवुं थयेलुं (३) पुं० नानो भाई **अनुजीव् १ प० -**-ने आधारे जीववुं (२) -नी समान जीववु अनुजीविन् वि० -ने आधारे जीवतुं (२) पुं० सेवक; नोकर अनुजीव्य वि० सेववा योग्य (२) जीवनमां अनुसरवा योग्य अनुज्ञा ९ उ० | अनुजानाति-जानीते | रजा आपवी; संमति आपवी (२) क्षमा आपवी (३) आजीजी करवी (४) विवाह करवो अनुज्ञा स्त्री० परवानगी (२) संमति **अनुज्ञात** वि० परवानगी – संमति आपेलु अनुज्ञापन न० परवानगी आपवी ते अ**नुतप् १** प० पश्चात्ताप करवो (२) दिलगीर थवुं; दुःखी थवुं **अनुताप** पुं० पश्चात्ताप (२) खेद **अनुस्क** वि० उत्कंठा विनानुं; स्वस्थ अनुसम वि० सर्वोत्तम; श्रेष्ठ अनुसर वि० मुख्य (२) उत्तम; श्रेष्ठ (३) हलकुं; नीच (४) चूप; उत्तर विनान्

अनुत्थान न० उद्यमनो अभाव अनुत्सेक पुं० गर्वनी अभाव; विनय अनुत्सेकिन् वि० निरिभमानी; विनयी अनुदर्शन न० अवलोकन; देखरेख (२) विचार; चितवन अनुविनम्, अनुदिवसम् अ० दररोज अनुदृश् १ प० ¦अनुपश्यति | नजर सामे राखवुं; निहाळवुं अ**नुब्घात** वि० खाडाटेकरावाळूं नहि तेवु; सरखु अनुद्वं 📍 प० पाछळ पाछळ दोडवं अनुद्वेग वि० उद्वेगनो अभाव (२) पुं० उद्देग के भय विनाना होवुं ते अनुधाव् १ प० –नी पाछळ दोडवुं (२) –नी पासे पहोंचवुं (३) साफ करवुं अनुधायन न० पाछळ दोडवं ते (२) साफ करवं ते अनुध्यान म० ध्यान; समरण; चितन अनुष्यै १ प० चितवबुं(२) शुभ इच्छय् **अनुनद् १** प० –नी तरफ आ**वा**ज करवो --प्रोरक० पेद्धो पडे तेम करवु (२) अवाजयी भरी काढवुं अनुनय वि० सांत्वना आपनारं; शांत पाडनारं (२)पुं० सात्वन ; शांत पाडवुं ते (३) नम्रता; आदरभाव (४) आजीजी; विनर्ती अनुनाद पुं० अवाज; पडघो अनुनासिक वि० नाकमांथी उच्चारातुं **अनुनी १** प० समजाववुं; शांत पाडवुं (२)विनंती करवी (३)प्रेम दर्शावत्रो (४) समानवु अनुपत् १५० - तरफ ऊडवुं(२) - नी पाछळ दोडवुं – जबुं (३) हुमलो करवो अनुपद् ४ आ० अनुसरवुं (२) आसक्त थवुं (३)नीचे पडवुं (४) लागु थवुः,

मंडवुं (५) शोधी काढवुं

अनुप्रधि विक्र निर्देश एकिन

अनुपक्स् अ० पगले पगले (२) शब्दे शब्दे

अनुपपत्ति स्त्री० तर्क - युक्तिनो अभाव; असंगति शिकाय तेव् **अनुपम** वि० अनन्य; उपमा न आपी अनुपयुक्त वि० अयोग्य; निरुपयोगी अनुपलस्थ वि० नजरे न पडेलुं; न मळेलुं अनुपहत वि० नहि वपरायेलु; कोरुं --नवुं (वस्त्र) अनुपा २ प० --नी पछी पीवुं(२)--नी साथे पीवुं (३) जुओ "अनुपाल्" अनुपात पुं० पाछळ जबुंते (२) एक पंछी एक जबुं ते (३) हुमलो अनुपातम् अ० एक पछी एक एवा क्रममां अनुपान न० औषधनी साथे के पछी लेवानु मददरूप प्रवाही के बीजी दवा अनुपाल् १० प० संरक्षवुं (२) मानवुं; पाळवु अनुपूर्व वि० कम प्रमाणेनुं(२)प्रमाणसर अनुपेत वि० रहित; विनानुं (२) जेन यज्ञोपवीत अपायुं नथी तेवुं अनुप्रविद्या ६ प० - मां प्रवेशवुं; जोडावुं (२) -ने बंधबेसत् थवूं अनुप्रदेश पुं० अंदर पेसवुं ते (२) -ने बंधबेसत् थवुं ते (३) अनुकरण **अनुप्रसादन** न० प्रसन्न करवुं ते अनुप्राप् ५ प० जई पहोंचवुं(२)अनुकरण अनुप्रास पुं० एकनो एक अक्षर जेमां वारवार आवे तेवो शब्दालंकार अनुष्लव पु० अनुचर; नोकर **अनुधद्व** वि०जोडायेलुं; बंघायेलुं (२) परिणामरूपे आवतुं (३) सतत; चालु **अनुबंध् ९** प० बांधवुं; जोडवुं (२) पाछळ पाछळ आववुं (३) आग्रह करवो (४) चालु राखवु **अनुबंध** पुं० बंधन; संबंध (२) चालु अनुक्रम; सांकळ (३) परिणाम; फळ(४) वेदांतमां – विषय, प्रयोजन, अधिकारी अने संबंध ए चारनो समूह

अनुयात्र अनुबंधिन् वि० संबंधवाळुं; जोडायेलुं (२) परिणामे आवतुं (३) सतत चालतुं अनुबुष् ४ आ० बोध थवो; जाणवुं (२) जागवुं (३) याद करवु देव राववु ~प्रेरक० बोध आपवो (२) याद अनुभव पुं• प्रत्यक्ष ज्ञान(२)जाते - पोते जाणवुं ते (३) परिणाम अनुभवसिद्ध वि॰ अनुभवधी पुरवार अनुभाव युं ० प्रभाव; तेज; महता (२) पराक्रम; सामर्थ्य (३) दृढ निश्चय (४) मनोगत भावनो बाह्य विकार अनुभुज् ७ आ० भोगववुं; अनुभववुं अनुभू १ प० अनुभवनुं; भोगवन् अनुभूति स्त्री० अनुभव (२) इंद्रियज्ञान अनुमत वि० संमत (२) सहमत (३) इष्ट;प्रिय (४) पु० प्रेमी (५) न० संमति; मंजूरी अनुमति स्त्री० संमति; अनुज्ञा; रजा अनुमन् ४ आ० संमत थवुं; रजा आपवी: मंजूर करवुं **अनुमरण** न० ⊷ना मरण पाछळ (साथे ज) मरी जबुंते; स्त्रीनुं सती अटकळ करवा **अनुमा २** प०, ३ आ० अनुमान करवुं; अनुमान न० अटकळ (२) तर्क 🗬) तुलना (४) न्यायशास्त्रमांनां चार प्रमाणोमांनुं एक - अनुमितिनुं साधन अनुमिति स्त्री० अनुमान प्रमाणथी थयेलुं ज्ञान अनुमृद् १ आ० अनुमोदन आपवुं;समर्थन करवुं (२) आनन्द पामबुं अनुमृ ६ आ० [अनुम्नियते] -नी पाछळ मरी जवुं; (स्त्रीनुं) सती थवुं अनुमेय वि० अनुमान करी शकाय तेवुं अनुमोदन न० समर्थन (२) संमति अनुया २ ५० पाछळ पाछळ जबुं (२) अनुकरण करवूं अनुयात्र न० अनुयायी वर्ग

शास्त्रभान्य कमे,

अनुलोमज वि०

अनुबारिन् वि० पाछळ पाछळ जनार्हे; अनुसरनार (२) समान; सरखं (३) पुं० अनुसरनार; अनुयायी अनुषुज् ७ आ० प्रश्न पूछको (२) परीक्षा लेबी (३) शिक्षण आपवुं (४) आजीजी करवी अनुयोक्तृ पुं० परीक्षक (२) शिक्षक अनुयोग पुंच प्रश्त (२) तपास (३) विनंती (४) निदा; ठपको (५) उद्यम (६)योग -- ध्यान (७)टीका;समजूती अनुयोज्य पुं० सेवक; नोकर अनुरक्त वि० रंगायेलुं; लाल रंगवाळुं (२) अग्सक्त अनुरक्ति स्त्री० आसक्ति; प्रेम अनुरणन न० रणकार अनुरथ्या स्त्री० पगथी; 'फूटपाथ' अनुरसित न० पडघो अनुरहसम् अ० खानगीमां; एकान्तमां अ**नुरंज् ४** उ० [अनुरज्यति--ते] लालाश बारण करवी (२) आसक्त थवुं अनुरंजन न० प्रसन्न करवुं ते; आनन्द आपवो ते अनुराग पुं० प्रेम ; स्नेह (२) लालाश अनुरागिन् वि० प्रेमवाळुं; आसक्तिवाळुं अनुहरू २ ५० सहानुभूतिमां साथे रहतुं अनुरुष् ७ उ० अवरोधवं (२)पाळवं; मानव (३) चाहव (४) आग्रह करवो अनुरूप वि० – ना जेवु (२) तुल्य (३) योग्य अनुरोध पुं॰ संमति; स्वीकार (२) विनंती; आग्रह (३) नियमनु पालन अनुरोधिन् वि० अनुसरतुं; पाळतुं अनुलग्न वि० लागेलुं; बळगेलुं **अनुलिप् ६** प० |अनुलिपति∤लेप करवो; खरडव् **अनुलेप** पुँठ, **अनुलेपन** नठ लेप करवो ते (२) लेपनो पदार्थ; मलम अनुस्रोम वि० अनुकूळ; कमने अनुसरत्

ऊतरता वर्णनी स्त्रीना उच्च वर्णना पुरुष साथैना लग्नथी जन्मेलुं **अनुबचन** न०पाठ; अभ्यास; पुनराव-वर्तन (२) खंड; प्रकरण अनुबद् १ प० बोलेलानु अनुकरण करव् (२) १ उ० रणकार करवो; पडघो पडवो (३) फरी बोली जवुं अनुवर्तन न० अनुसरण; आज्ञापालन अनुवर्तिन् वि० अनुसरनारुं; आज्ञा पाळनारु अनुबंश पुं० वंशवृक्ष अनुवाक पुं० वेदनो भाग -- प्रकरण (२) अम्यास; पुनरावर्तन अनुबाद पु० पुनरुक्ति (२)कहेली बात समजूती साथे फरी कहेवी ते अनुवादिन् वि० अनुवाद करनाहं(२) संवादी; सुसंगत अनुविद्ध वि० वींधेलुं (२) पूर्ण; व्याप्त; युक्त (३) (रत्नथी) जडेलु – जडित अनुविधा ३ उ० विधान करवुं (२) अनुसरवुं; अनुकरण करवूं अनुबृह् १ आ० अनुसरवुं अनुवृत्ति स्त्री० संमति(२) -नी मरजीने 🛴 के आज्ञाने अनुसरवुं ते (३) पुनरावर्तन **अनुवेध** पुं० वींधवुं ते (२) संस्पर्श (३) নিখ্য **अनुवेलम्** अ० हर वेळा अनुवेश्य वि० पडोशी अनुष्यध् ४ प० | अनुविध्यति | वीधवः फरी वींधवुं (२) व्यापवुं; मिश्रित थवुं अनुध्याध पु० जुओ 'अनुवेध' अनुद्याहरण न०, अनुस्याहार पुं पुनरावृत्ति ; पुनरुच्चार (२) गाप अनुवज् १ प० वळाववा पाछळ जवं (२) अनुसरबु अ**नुवत** वि०वफादार(२) व्रत नियमनुं यथोचित पालन करनार

अनुश्च पुं० पश्चात्ताप (२) दुःखः; खेद (३) आसक्ति (४) हाडवेर; आदवेर (५) संस्कार; वासना **अनुशास् २ ५०** समजादवुं; शीखवर्यु (२) हुकम करवो (३) राज्य करवु (४) शिक्षा करवी (५) प्रशंसा करवी **अनुशासक** वि० अनुशासन करनारुं अनुशासन न० शिक्षा;उपदेश(२)नियम; कायदो (३) विवरण; समजूती(४) अमल करवो ते; राज्य चलाववुं ते अनुशासित्, अनुशासिन्, अनुशास्त् वि ० अनुशासन करनारुं अनुशिष्ट वि० शिक्षित; विनीत (२) पुछायेलु (३) दशनायेलु अनुझी २ आ० साथे सूदुं (२) पस्तावो करवी **अनुशीलन** न० सतत अभ्यास **अनुत्रुच् १** प० शोक करवो; पश्चाताप करवो मळलु **अनुभविक** वि० शास्त्रमांथी जाणवा **अनुषु ५** प० [अनुशृणोति] सांभळवुं (२) परंपराथी सांभळता आदवुं **अनुवक्त** वि० जोडायेलुं;वळगी रहेलुं अनुषंग पुं० गाढ संबंध (२) साहचर्य (३) पूर्वीपर संबंध (४) शब्दोनो परस्पर संबंध (५) अवश्य परिणाम **अनुषंगिन् वि० वळगेलुं, जो**डायेलुं(२) परिणामरूपे साथे जनाहं - साथे रहेलुं अनुषंज् (अनु + संज्) १ प० । अनु-षजति जोडावु; वळगी रहेवं -कर्मणि० [अनुषज्यते, अनुषज्जते] (उपरनोज अर्थ) **अनुष्ट्रभ्**स्त्री० एक छंद अनुष्ठा (अनु + स्था) १ प० [अनु-तिष्ठति करवुं; आचरवुं(२)नजीक कभा रहेवुं; सेवामां रहेवुं (३)अनुसरबुं; अनुकरण करवुं (४) शासन करवुं (५)

अनुष्ठान न० क्रिया करवी ते(२)वर्रामक किया (३) कार्यनो आरंभ ; पूर्वतैयारी अनुष्ठित वि० करेलु; आचरेलु अनुष्ठेय वि० करवा जेवु; करवानु अनुसरण न० अनुसरवुं ते **अनुसंतन् ८** उ० फेलावुं(२)चालु रहेवुं अनुसंघा ३ उ० शोधवु; तपासवु(२) शांत पाडवुं (३)अनुलक्षवुं; विचारवुं (४) अनुसरवुं;साथे रहेवुं (५) योजवुं; तयारी करवी अनुसंघान न० चोकसाई; बारीक तपास (२)योग्य संबंध (३)योजना; पूर्वतैयारी अनुसार पुं० अनुसरवं ते (२) रूढि; रिवाज (३) परिणाम अनुसारणा स्त्री० पीछो पकडत्रो ते; पाछळ जबुं ते अनुसृ १ प० पाछळ जवुं - अनुसरधुं **अनुसमृ १ प**० स्मरण करवुं **अनुस्यूत** वि० —नी साथे जोडायेलुं – गृंथायेल्ं -- सीवेल्ं -- वणायेल् अनुस्वार पुं॰ स्वरनी पाछळ उच्चाराती अनुनासिक वर्ण के तेनुं चिह्न () **अनुहु १** प० अनुकरण करवुं (२)**१** आ० ∫नम्र;विवेकी , मळता आवर्ष अनुचान वि० विद्वान (२)वेद भणेलुं (३) अनुदक न० वरसाद न पडवो ते; सूको [संपूर्ण (२) घणुं मोटुं अल्लून वि० न्यून के हलकूं नहि तेब् – **अनूप** वि० पुष्कळ पाणीवाळुं; भेजवाळुं (२) पुं०, न० पुष्कळ पाणीवाळी के भेजवाळी जगा (३) नदीनो किनारो अनुरु वि० जांघ विनानं (२) पुं० अहण; सूर्यनो सारिय अनुरुसारचि पुं० सूर्य अनुह वि० अविचारी अनुण, अनृणिन् वि० ऋणमुक्त **अनृत** वि० मिथ्या; असत्य (२) न० असत्य; जुठ

शास्त्रोक्त कार्य विधिपूर्वक करव्

अनेक वि० एक नहि—बहु अनेकगुण वि० घणा प्रकारनुः विविध अने**कचित्त** वि० अस्थिर मनवाळुं अ**नेकधा** अ० अनेक प्रकारे अनेकरूप वि० घणा प्रकारन्(२)विविध रूपवाळं (३)अनिश्चित; अस्थिर मननुं अनेकबचन त० द्वित्रचन अथवा बहु-वचन (व्या०) अने**कशः** अ० वारंवार (२)अनेक प्रकारे (३) मोटी संख्यामां अनेकसाधारण वि० घणान् सहियारं अनेकांस वि० अनिश्चित (२) अनेक वाजुवाळु अनेकांतबाद पं० वस्तुनां अनेक पासां परत्वे जुदी जुदी रीते ज्ञान थाय छे -एवो जैन बाद [अप्रस्तुत ; गौण अनेकांतिक वि० अनिश्चित (२) अने।कह ए० वृक्ष अनीचित्य न० अनुचितता; अयोग्यता **अन्न** न**० (रां**घेलुं) अनाज – खोराक अञ्चक्ट पुं० राघेला चोखानो ढग अन्नदोष पुं० निषिद्ध खोराक खावाथी लागतुं पाप अ**न्नपूर्णा** स्त्री० दुर्गा देवी अन्नप्रका पुं०, अन्नप्राञ्चन न० नाना छोकराने पहेलबहेलुं अन्न खबडाबबानो संस्कार

अन्नमय वि० अन्नतुं बनेलुं
अन्नमयकोश (-ध) पुं० स्थूल शरीर
अन्य वि० बीजुं(२) जुदुं; निराळुं(३)
अमामान्य; विलक्षण (४) अधिक;
वधारानुं [दुराचरणी
अन्यम, अन्यमामिन् वि० व्यभिचारी;
अन्यचित्त वि० जेनुं मन बीजा पर लागु
थर्युं छे तेवुं [उपरांत
अन्यत् वि० बीजुं (२) अ० फरीथी;
अन्यतम् वि० घणांमानुं एक
अन्यतर वि० बेमानुं एक

अन्यतरेद्युस् अ० बेमांथी कोई पण दिवसे अन्यतस् अ० बीजा तैरफथी; बीजी बाजुएथी (२)बीजा कारणसर; बीजा हेमुथी (३) बीजी बाजु; ऊलटुं (४) बीजी नरफ अन्यत्र अ० बीजे ठेकाणे; बीजे प्रसंगे (२) सिवाय (३) बीजा अर्थमां अन्यथा अ० बीजी रीते;जुदी रीते (२) खोटी रीने (३) ऊलटुं अन्यशास्त्राति स्त्री० (होय तेनाथी) अन्य रूपे ज्ञान थवुं ते अन्यथावृत्ति वि० बदलायेली वृत्तिवाळ् अन्यदा अ० वीजे वखते; बीजे प्रसंगे अभ्यपुष्टा स्त्री० कोयल अन्यभूत पुं० कागडो अभ्यभुता स्त्री० कोयल अन्यमनस्, अन्यमनस्क, अन्यमानसं वि० जैन मन बीजे लागेल छे तेव; बेध्यान; व्यग्र मनवाळुं (२) अस्थिर मनवाळुं अन्यरूप वि० बीजुं रूप लीधेलुं; वेश-पलटी करेलुं सहियार् अन्यसाधारण वि० बीजां घणान अन्यादक्ष,अन्यादृश्,अन्यादृश वि० बीजा प्रकारनुं;बोजा जेवुं(२)जुदुं; असाधारण अन्याय वि० अयोग्य(२)न्याय विरुद्ध (३)अप्रमाणिक (४)पुं० न्यायविरुद्ध कृत्य : गेरइनसाफ अन्याय्य वि० न्यायविरुद्धः अयोग्य **अन्येद्य**स् अ० बीजे दिवसे (२) एक दिवस; एक बार अन्योक्ति स्त्री० एक अर्थालंकार-बोलव् एकमे उद्देशीने अने लाग् पाइव् कोई बीजाने, एवं वाणीनुं चातुर्थ (२) स्तुतिना बब्दोमा निदा, अने निदाना शब्दोमां स्त्ति दर्शाववी ते अन्योढा स्त्री० परस्त्री अन्योन्य वि० परस्परः एकमेक अन्योग्यम् अ० परस्पर

अन्वक् अ० पाछळ पाछळ (२)पाछळथी अन्यक्षम् अ० तरत ज पछी **अन्वय** पुं॰ वंश; संतति (२) पाछळ पाछळ जवुं ते (३) संबंध (४) वाक्यमां शब्दोनो स्वाभाविक कम (व्या०) (५) कार्यकारण संबंध (६) पाछळ पाछळ **्जनार-अ**नुचर वर्ग (७) नित्य साहचर्य (न्या०) **अन्वयज्ञ** पुं० वंशावली जाणनार **अन्यमागत** वि० वंशपरंपरागत **अन्वर्य** वि॰ यथार्थ; अर्थने अनुसरत् **अन्वहम्** अ० दररोज जन्यास् २ आ० पासे बेसवुं; पासे रहेवुं ़(२)–नी पछी बेसवुं(३)सेवा करवी (४) धर्मकिया करवी **अन्ति (**अनु+इ) २ प० पाछळ पाछळ जनु; अनुसरवु **क्रॅन्विस**ः ('अन्वि'नुं भू०कृ०) वि० युक्त; सहित (२) मन वडे समजायेलुं (३) उचितः; लायकः अन्विष् (अनु∔इष्) ६ प० अन्वि-च्छति ।, ४ प० |अन्विष्यति । शोधवुः ं शोध करवी ; तपास करवी **अन्बीक्ष् १** आ० बारीकीथी जोवं – तिपास तपासव् **केन्स्रीक्षण** न०, अस्वी**क्षा** स्त्री० दारीक **अल्बोत** वि०जुओ 'अन्वित' **अन्वेषक** वि० निरीक्षक;बारीक तपास 'करनारुं तिपास **अंस्वेषण** न०, अन्वेषणा स्त्री० बारीक 🐙 स्त्री० पाणी (ब० व० मांज िं**वप**राय छे) **ब्रुप** अ॰ दूर—अळगुं, खोटुं—खराब, **ॅंकेलटा**पण्-विरोध, निर्देश-उदाहर**ण**, मजाक⊸मश्करी,बातल करवुं,छुपाववुं, 🏪 ए अर्थमां वपराय छे **हायकर्तु** वि० नुकसान करनारुं; विरोधी (२) पुं० शत्रु

अपकर्मन् वि० खराब आचरणवाळुं (२) न ० ऋण चुकववुं ते (३) अनुचित कार्य; खरात्र कृत्य अपयश अपकर्ष पु॰ अवनति; ह्रास(२)नामोशी; अपकर्षण वि॰ लई लेनाहं; खेंची जनाहं (२) न० लई लेवुं ते;दूर करवुं ते (३) हलकुं पाडवुं ते अपकार पुं ० अपकृत्य; हानि;द्रोह;दुष्टता (२) अनिष्ट चिंतवबुं ते अपकारक, अपकारिन् वि० खोटुं करनारुं; नुकसान करनारुं (२) कृतस्ती अपकोति स्त्री० अपयशः; बदनामी अपक् ८ उ० खोटुं करवुं अपकार करनी (२)दूर करवुं (३)ईजा करवी; नुकसान अपकृत न० अपकार; हानि; नुकसान अपकृष् १ ५०, ६ उ० पाछुं खेंची लेबुं; दूर खेंची जबुं(२)लई लेबुं; लई जबुं (३)खेंची काढवुं; सत्त्व काढवुं(४) ओछं करवुं (५)हलकुं पाडवुं ; अपमान करवु (६) वाळवुं; खेंचवुं (धनुष्य) अपकृष्ट वि० खेंची लेवायेलु; करायेलुं(२) हलकुं; नीच (३)निषेध करायेल; रोकायेलु (४) पु॰ कागडो अपकृ ६ प० [अपिकरित] वेरवुं; विखेरवुं; उछाळवुं (२) ६ आ० [अपस्किरते] पगथी खणवुं - खोतरवुं (पशुनुं आनंदमां) अपऋम् १ प० [अपऋमिति] दूर जनुं; नासी जबुं (२) समयनुं बीतबुं अपक्रम पुं॰ दूर जबुं - नासी जबुं ते (२) समयन वीतवं ते (३) कमनो अभाव; खोटो ऋम अपिकया स्त्री० नुकसान; ईजा (२) दोष अपकोश पुं० निदा; गाळ अपश वि० पांस वगरनुं (२) पक्ष के मित्र वगरेनुँ (३) एके पक्षनुं नहि तेव (४) विरुद्ध

अपकारात पुं० निष्पक्षपातपणुं अपक्षय पुं०क्षय थवो ते; क्षीण थवुं ते अपगत वि० चाल्यु गयेलु; खसी गयेलु; –थी रहित; –विनानु अपगति स्त्री० दुर्गति; दुर्दशा **अपगम् १** प० ¦अपगच्छति | जतुं रहेवुं (२) पसार थवुं – वीतवुं (समयनुं) अपगम पुं जतुं रहेवुं ते;वियोग २)मृत्यु **अपघात** पुं• हणवुं ते (२) निवारवु ते (३) कुमरण **अपचय** पुं० ओछुं थवुं ते (२) नुकसान अपचर् १प० विदाय थवुं (२) उल्लंघन करवुं; आडे मार्गे जवुं अपचरित वि० गयेलुं; मृत (२) स० अपराधः; दोष अपचायिन् वि० योग्य संमान न करतुं **अपचार** पुं० विनाश;अभाव(२)अपराध; दोष (३) कर्मना लोपथी प्राप्त थनारो दोष(४) अपकार; खराब आचरण (५) कुपध्य अपि ३ प० सन्मानवुं; आदर करवी (२) ५ उ० एकठुं करवुं; वीणवुं —कर्मणि० क्षीण थयुं; ओछुं थवुं (२) -थी रहित बनवं अपित वि० क्षीण थयेलुं (२) आदर पामेलुं; संमानित अपचिति स्त्री० क्षय; क्षीणता; नुकसान; नाश (२) खर्च (३)वसूलात; बदलो; प्रायश्चित्त (४) मान; आदर; पूजा अपच्छाय वि० छाया विनानुं(२) प्रकाश विनानुं; झांखुं (३) अपशुकनियाळ पडछायाबाळु (४) पुं० देव (जेने पडछायो न होय) अपजात पुं० खराब संतान; माबाप करतां उत्तरता गुणोवाळुं संतान अपना ९ आ० (अपजानीते) संताडवुं; ळुपाववुं (२) ना कहेवी

अपटीक्षेप पुं० पडदो उछाळवो त (उतावळमां के गभराटमां) अपस्य न० संतान; बाळक अपत्रप् १ आ० शरमावुं अपत्रप वि० बेशरम अपत्रया स्त्री० शरम अपच वि० मार्गरहित (२) पुं०, न० मार्गनो अभाव (३) कुमार्ग अपथ्य वि० अयोग्य; अहितकर (२) कुपथ्य अपद वि० पग वगरनुं (२) स्थान के होद्दा विनानु (३) पुं सापनी पेठे पेटे चालनार प्राणी (४) न० अयोग्य स्थळ (५) स्थाननो अभाव (६) आकाश अपदश वि० दशथी दूरनुं (२) छेडो-किनारी ('दशा') विनानुं (वस्त्र) अपदान न० परिश्द्ध आचरण; महान कृत्य (२) भूतकाळ के भविष्यकाळनां तेवां सत्कृत्योनं वर्णन करतो ग्रंथ अपदार्थ पुं० मिथ्या – अमत् वस्तु (२) शब्दार्थ नहीं ते अपदांतर वि० तरत पछीनु अपदिश् ६ ५० उल्लेख करवो; दर्शाववृ (२) बहानुं काढवुं; ढोंग करवो अपदेश पुं ० कथन;उल्लेख(२)मिष;बहान् (३) हेतु दर्शावको ते (४) खराब स्थान अपदेश्य वि० दर्भाववा – उल्लेखवा लायक (२) छळथी कहेवा लायक अपद्वत न० मीचा वळी नासी जवुंते अपध्यान न० खोटो विचार; अहित इच्छव ते(२)न जितववा योग्यनुं चितन अषध्यै १प० सोटो विचार करवी; अहित इच्छवुं अपध्यस्त वि० निदित (२) तजेलुं (३) चूर्ण करेलुं **अपध्यंस् १** आ० खसी जवुं; चाल्या जब्ं (२) बढबुं; ठपको आपवी अपर्व्यंस पुं० अधःपातः; अधोगति

अपनय पुं० लई लेवुं ते (२) दूर करवुं ते (३) खंडन करवु ते (४) दूर्वर्तन; अनीति (५) हानि; अपकार अपनयन न० लई लेवुं ते (२) दूर करवुं ते (३)देवामांथी मुक्त करवुं – थर्वु ते (४) अन्याय अपनी १५० लई लेबुं (२)दूर करवुं.३) खेंचवुं; खेंची काढवुं (तेल, बाण इ०) (४) उतारवं (कपडां, घरेणां इ०) (५)बाकात राखवुं(६)दुर्वतन करवुं अपनीत वि० लई लीधेलुं; काढी नाखेलुं (२) विरुद्धनुं; ऊलटुं (३) चूकवी दीवेलुं (४) दुर्वेर्तनवाळुं (५) न० दुर्वर्तन (६) छळ; कपट अपनुति स्त्री० दूर करवुं ते; खसेडवुं ते **अपनुब् ६ ५० दू**र करवुं; खसेडवुं **अन्भाव् १** आ० अपशब्द बोलवा; गाळ देवी; निंदा करवी **अपभाषण** न० अपशब्द; गाळ (२) निदा अपभ्रष्ट वि० नीचे पडेलुं (२) अपभ्रंश पामेल **अपश्रेष्ट्** १ आ० दूर पडवुं; सरी पडवुं --प्रेरक० लसेडवुं; दूर करवुं अपभंग पुं० नीचे पडवुं ते (२) विकृत थयेलो शब्द (३) संस्कृतने हिनाबे अपभ्रष्ट थयेली एक भाषा **अपमर्द**पूं० कड़ी; कचरो अ**पमर्जा** पुं० स्पर्जा करवो — धसावुं ते **अपमान** पुं० अनादर; तिरस्कार अपमार्जन न० लुखी काढवुं ते; साफ करवुं ते अपमृत्यु पुं० आकत्मिक मृत्यु ; क्मोत अपयशस् न० अपयशः; अपकीति अपया २ प० जतुं रहेवुं; नासी जबुं अपर वि० जेनाथी श्रेष्ठ बीजुं कांई नथी तेवुं;उत्तम (२)बीजुं;अन्य;वधारानुं (३) बीजानुं (पोतानुं नहि तेवुं) (४) पछीनुं;

(६)निकृष्ट;हलकी जातनुं(७) पुं० हाथीनो पाछलो पग (८) शत्रु अपरक्त वि० रंग वगरनुं (२) लोही वगरनुं; निस्तेज (३) असंतुष्ट अपरत्र अ० बीजे ठेकाणे अपरम् अ० बळी; भविष्यमां; विशेषमां अपररात्र पुं० रात्रीनो उत्तर भाग अपरस्पर वि० एक पछी बीजुं होय तेवुं; सतत जारी रहेतुं (२) अन्योन्य **अपरंज्** (कर्मणि०) |अपरज्यते| विरक्त थवुं (२) असंतुष्ट थवुं अपरा स्त्री० पश्चिम दिशा अपराग पु० असंतोष;वैर;स्नेहनो अभाव अपराजित वि० नहि जितायेलु;अजेय अपराजिता स्त्री० दशेराने दिवसे जेनुं पूजन थाय छे ते – दुर्गादेवी (२) मादळियामां बंधाती एक वनस्पति (टुचका तरीके) अपराजेय वि० अजेय; न हरावी शकाय अ**पराद्ध** वि० अपराधी (२) लक्ष चुकेलुं (बाण इ०) (३) उल्लंघन थवुं ते (बेळा इ० नुं)(४)म० गुनो;अपराध;दोष;ईजा अपराध् ४, ५ प० अपराध करको; दोष करवो अपराध पुं० दोध; मुनो (२) पार अपराधिन् वि० गुनो करनारुं; अपराधी अपराविद्या स्त्री० वेद-वेदांग (ब्रह्मविद्या सिवायनी विद्याओं) |पहोर अपराह्म पुं० सांज; दिवसनो पाछलो अपरांत वि० पश्चिम सरहदे रहेत्(२) पुं० पश्चिम सरहदे आवेलो देश अपरांतक पुं० सह्याद्रि पासेनी पश्चिम सरहदनो प्रदेश अथवा तेनो रहेवासी अपरिग्रह वि० घरबार के परिवास विनानुं (२) पुं० धननो परिग्रह – स्वीकार न करवो ते (३) निर्धनता

अपरिच्छद वि० निर्धन; गरीब (परि-

वार – वस्त्र बगेरे विनानुं)

पाछळनुं (काळस्थळमां) (५) पश्चिमनुं

अपरिच्छिन्न वि० स्पष्ट समजण विनानुं (२) सतत; विच्छेद विनानु अपरिच्छेद पुं० स्पष्ट समजनो अभाव (२) सातत्य(३) विभाग के वैशिष्ट्यनो अभाव अपरिमाण, अपरिमित, अपरिमेय वि० मापी न शकाय तेवुं; अनंत अपरिहार्थ वि॰ टाळी न शकाय तेवुं; अनिवार्य **अपरेद्यस्** अ० बीजे दिवसे अपरोक्ष वि० प्रत्यक्षः; दृष्टिगोचर थाय तैवुं (२) दूर नहि तेवुं अपरोक्षम् अ० हाजरीमाः; नजर आगळ अपूर्णा स्त्री० पार्वती (पादडां पण ख़ावानां छोडी तप कर्युं होवाथी) अपर्याप्त वि० पूरतुं नहि तेवुं; थोडुं (२) असमर्थः; अशक्तिमान अपर्याप्ति स्त्री० न्यूनता; अधूरापणु **अपर्युषित** वि० ताजुं; वासी नहि तेवुं अपलप् १ प० होवा छता नथी एम कहेबुं (२) छुपावबुं --प्रेरक० छेतरवुं [ना पाडवी ते अपलाप पुं० छुपाववुं ते (२) होवा छतां अपवचन न० भूंडुं बोलवुं ते अपवद् १ प० निदा करवी; गाळ देवी (२) विरोध करवो; इनकारवु अपवरक पुं व घरनी खानगी ओरडो (२) हवानुं बाकुं अपवर्ग पुं० अंत; पूर्णाहुति (२) मोक्ष (३) त्याग (४) फेंकबुं ते (बाण ६०) अपवजित वि० तजेलुं(२)चूकते करेलुं (देवुं) (३) रहित – विनानुं अपवह १प० अंचकीने लई जबुं (२) हांकी काढवुं; दूर करवुं (३) छोड़ी देवुं; त्याग करवो (४) बाद करवुं अपगरित वि० ढांकेलुं (२) छुपावेलुं

अपवाह पुं० लई जबुं ते; दूर करवुं ते (२) बाद करबुं ते अपविद्ध वि० तजी देवायेलुं (२) दूर करायेलुं; उपेक्षित (३) नीच;हलकु अपवृ ५ उ० उघाडवुं; खुल्लु मूकवुं –प्रेरक० ढांकवुं; छुपाववुं अपवृज् ७ ओ० टाळबुं;दूर करवुं (२) खंची काढव –प्रेरक० तजबुं (२) वेरबुं(३) भरपाई करवु ४) कापी नाखवु; छूटुं पाडवु (५) ऊंधुं पाडवुं(६) दान आपवुं (७)संमानवुं अपवृत् १ आ० पाछु फरवुं ; नीकळी जवुं –प्रेरक० पाछु वाळवु; ह्याँकी काढवुं **अपवृत्त** वि० पाछुं फरेलुं (२) ऊंधुं वळेलुं वाळेलु(३)समाप्त करेलु(४)नीचे मुखे रहेलुं अपन्यध् ४ प० | अपविध्यति | भोकवं (२) फेंकी देव (३) त्याग करवो; नाखी देवुं अपव्यय पु० खोटुं खर्च करवुं ते; उद्याउपण अपशकुन न० माठी शुकन अपशब्द पुं० नियम विरुद्धनो शब्द (ब्या०) (२) निंदा (३) गाळ (४) ग्राम्य भाषा अपिकचम वि० जेनी पाछळ कांई न होय तेवुं (२) आगळनुं – पहेलुं (३) अत्यंत; अतिशय अपसद पुं ० नीच के हलकी वर्णनो मनुष्य (२)नीच वर्णनी स्त्रीथी जन्मेलो मनुष्य — प्रतिलोमज(३)अधम;नीच(समासमा छेडे आवे छे; उदा० सूतापसद) अपसरण न० पाछुं जवुं ते ; नासी जवुं ते अपसर्प, अपसर्पक पु० गुप्तचर

अपसब्ध वि० डाबुं नहि तेवुं - जमणुं

अपसारण न०, अपसारणा स्त्री० दूर

करवुं – काढी मकवुं ते; हटाववुं ते

(२) ऊलटुं; विपरीत

अपवारितकेन, अपवार्य अ० (नाटकमां)

बाजुए ; बीजाने ('प्रकाशम्' थी ऊलट्)

अपसृ १ प० दूर जबुं; जतुं रहेवुं (२) अदृश्य थवुं |छोडेलुं (बाण) अपसृत वि० गयेलुं (२) पाछुं फरेलुं (३) अपनृष् १ प० सरकी जबुं (२) नासी जवुं (३) छानुंमानुं जीवुं –प्रेरक० हांकवुं; खसेडवुं अपस्मार पुं० भूली जबुं ते (२) फेफरानो व्याधि; वाई अपह वि० (समासने छेडे)निवारना६ं; दूर करनारुं; नाश करनारुं अपहन् २ प० निवारत्युं;दूर करवुं(२) हुमलो करवो (रोगे)(३)छडवुं(डांगरने) अयहरण न० उपाडी जबुं ते;काढी जबुं ते (२) चोरी जबू ते अपहस् १ प० मश्करीमां हसर्वुः मश्करी अपहसित न० जुओ 'अपहास' अपहस्त पुं० हांकी कादवा गळे हाथ मूकवो ते (२) लई लेवुं ते; फेंकी देवुं ते अपहस्तित वि० काढी मूकेलुं; फेंकी दीधेलुं; तजी दीधेलुं अपहा ३ प० छोडी देवुं; त्याग करवो (२) चूकते करवुं (देवुं) अपहाय अ० तजीने (२) विना; सिवाय अपहार पुं० अपहरण (२) हानि (३) गुप्त राखदुं ते (४) (बीजानुं धन) सर्च करवुते अपहास पुं० अकारण हसर्वु ते (२) मश्करीमां हसवं ते अपहुं १ उ० लई लेवुं, झूंटवी लेवुं; चोरी छेवुं; लुंटी छेवुं; नाश करवो (२) फेरवी लेबुं; खसेडी लेबुं (मों) (३) आकर्षण करवुं; वश करवुं अपहुत वि० लई लेदायेलुं -- छीनवी लेवायेलुं; चोरायेलुं |प्रेम; स्नेह अपह्मव पु॰ छुपाववं ते; संताडवुं ते (२) अ**पहनु २** आ० छुपाववं;संताडवं(२) इन्कारवुं (३) बहानु काढवुं अपहनुति स्त्री० छ्पाववं ते

अपावृत्ति अपाकीर्ण ('अपाकृ'नुं भू० कृ०) वि० तरछोडायेलुं; तजायेलुं अपाक्त ८ उ० दूर करवुं; निवारवुं (२) तरछोडवु; तजब् अपाकृति स्त्री० दूर करवं – निवारवं ते अपाक ६ प० । अपाकिरति । फेंकी देव् (२) अस्वीकार करवो; ना कहेवी अपात्र न० नकार्मुवासण (२) नकार्मु के नालायक माणस (दान इ० **माटे**) अपादान न० लई लेवं ते; दूर करवुं ते (२)पंचमी विभक्तिनो अर्थ (ब्या०) अपान पुरु पांच प्राणवायुओमानो एक (जे गुदा बाटे नीकळे छे) अपाप, अपापिन् वि० पापरहित; पवित्र अपाय पुं० विघ्न;हरकत (२) वियोग (३) अदृश्य थवुं ते;अभाव (४)हानि; नाश (५) दुर्भाग्य; दुःख अपायिन् वि० क्षणिक; नाशवंत अपार वि० किनारा विनानुं (२) अंत विनानुं; पार विनानुं (३) दुर्लेघ्यः; दुर्गम (४) पुं० समुद्र (५) न० नदीनो सामो किनारो अपारबार वि० मर्यादा विनानुं अपार्थ, अपार्थक वि० निरर्थक; अर्थ विनानुं अपार्थिय वि० अलौकिक; पृथ्वीनुं नहि अपावरण न० उघाडवुं - खुल्लुं करवुं ते (२) ढांकवुं – संताडवुं ते अपावर्तन न० पाछुं फरवुं ते;पाछुं काढवुं ते (२) (जमीन पर)आळोटवुं ते (३) मों पार्छु फेरवी लेवु ते; अस्वीकार अपाव ५ उ० उपाडवु; खुल्लुं करवुं (२) डांकवुं अपावृत वि० खुल्लुं करायेलुं(२)ढंकायेलुं अपावृत्त वि० पाछुं फरेलुं (२) पाछुं काढी मुकेलुं; हरावेलुं (३) (कर्तरि अर्थमां) काढी मूकेलुं; अनादर करेलुं अपावृत्ति स्त्री० जुओ 'अपावर्तन'

अपाधयः वि० आश्रय रहितः निराधार (२) पुं० आशरो; आधार (३) चंदरवो; छत (४) माथुं अपाधि १ उ० आशरो लेवो अपास् ४ उ० फेंकी देवुं (२) त्याग करवो; हांकी काढर्वु (३)अस्वीकार करवो; ना पाडवी अपासु वि० निष्प्राण; मृत अपास्त वि॰ फेंकी देवायेलुं; तजायेलुं **अर्पान, अर्पानक** वि० जेनुं अंग विकृत के खंडित छे तेत्रुं (२) पुं० आंखनो खूणो (२) कामदेव (४)अंत; छेडो अपांगनेत्र वि० सुन्दर खूणावाळी आंखो बाळुं (स्त्री) (२) कटाक्ष नाखती **आंखोवाळू** अपि अ० नाम अथवा धातुनी साथे नीचेना अर्थमा वपराय छे :- नजीक; समीप; तरफ (२) कि॰ वि॰ अथवा उभयान्वयी तरीके :- अने, पण, बळी, तदुपरांत,विशेषमां, –ए अर्थे(३)जो के– तोपण (४) प्रश्नार्थमां वाक्यारंभे (५) आशा, इच्छा, अपेक्षा दशवि (विध्यर्थ साथे) (६) प्रश्नार्थ सर्वनाम 'किम्'नी साथे अनिश्चिततानो अर्थ दर्शावे; उदा० कोऽपि बालः (७)शंका, अनिश्चितता, संभव, तिरस्कार,उपेक्षा दर्शावे (८) भार दईने कथन करवा माटे वपराय (अद्यापि = आज पण) अपिका ३ उ० बंध करवुं(२) डांकवुं; [ढांकण ; आच्छादन **अपियान** न० ढांकवुं – छुपाववुं ते (२) **अपिनद्ध** वि० पहेरेलुं अपि नाम अ० कदाच; संभव छे के; एम होय तो केवं साहं? अपिहित वि० बंध करेलुं (२) ढांकेलुं; **छुपावेलुं** (३) नहि छुपायेलुं; स्पष्ट अपी (अपि + इ) २ प० प्रवेश करवो (२) पामबुं; भोगववुं (३) जोडावुं; एक थवुं

अपीत ('अपि+इ'नुंभू० कृ०) वि० प्रवेशेलुं (२) खोवायेलुं (३) मृत अपीति स्त्री० विलय; प्रलय (२) युद्धमां सामसामा आबी जबूं ते **अपुत्र, अपुत्रक** वि० पुत्र के वारस बगरनु अपुनर् अ० एक जवार (२) कायमन् **अपुनर्भव** पुं० फरीन जन्मवुं ते; मोक्ष अपुनरावृत्ति स्त्री० मोक्ष (२) मृत्यु **अपुष्ट** वि० दूबळुं; पोषण विनानुं (२) मंद – धीमुं (अवाज) अपूप पुं० वडुं; पूडो (२) पूडो (मधमाखनो) **अपूर्ण** वि० पूरुं नहि थयेलुं; अधूरुं अपूर्व वि० पहेलां नहि तेवुं; असामान्य (२) विलक्षण; नवुं; अद्भुत (३) अपरिचित (४) न० पाप अने पुण्य (जे भावि सुख के दु:खनुं कारण थाय छे) (५) कर्मनु भावि परिणाम – फल **अपे** (अप+इ) २ प० जवुं; जुदा पडवुं (२) अदृश्य थवुं; नाञ पामवुं (३) छूटा पडवुं; –विनाना थवुं **अपेक्ष १** आ० आशा राखदी (२) राह जोवी (३) जरूर होत्री; इच्छा होत्री (४)नजरमां होबुं(५)रूयाल राखवो **अपेक्षणीय** वि०इच्छवा -- आशा राखवा जेवुं; रूपालमां लेवा जेवुं अपेका स्त्री० आशा; इच्छा (२) जरूर; अगत्य (३) उद्देश; स्थाल (४)संबंध (५) काळजी **अपेक्षित वि० इच्छे**लुं(२) आशा रखायेलु (३)आवश्यक (४) ख्यालमां लेवायेल अपेक्षितच्य, अपेक्ष्य वि० जुओ 'अपे-क्षणीय ' |−थी रहित **अपेत** वि० गयेलुं (२) —थी जुदुं पडेलुं; अपेय वि०न पीवा लायक **अपोढ** ('अप + वह'नुं भू० कृ०) वि० लई जवायेलुं; दूरे करायेलुं अपोहु (अप + उह् अथवा ऊह्) १ उ०

हांकी काढवुं; दूर करवुं (२) तजवुं (३) विरोध करवो; दलील करवी अपोह पुं ०दूर करवुं ते (२) तर्कथी शंकानुं निवारण करवं ते (३) विधरीत तर्क अपोहन न० जुओ 'अपोह' (२) तर्कशक्ति अपीरव, अपीरवेय वि० कायर; बीकण (२) **म**नुष्यथी नहि करायेलुं; ईश्वर-कृत (३) न० कायरता; निर्बळता (४) ईश्वरी शक्ति अप्यय पुंज्पासे जबुं – जोडावुं – मळवुं ते (२) लय; नाश (२) अप्रस्तुत अप्रकृत वि० मुरूय नहि तेवुं; प्रासंगिक अप्रगल्भ वि० अनुद्धतः; नम्प्र (२)शरमाळ (३) बीकण; कायर अप्रज वि० निःसंतान (२) नहि जन्मेलूं (३) प्रजा वगरन् (राज्य) अप्रजाता स्त्री० वांझणी स्त्री अप्रणीत वि० विधि – संस्कारथी पवित्र न करेल्ं (२) न रचेलुं अप्रतिकर्मन् वि० अजोड कर्म के सिद्धि-वाळुं (२) सामनो के उपाय न थई शके तेव अप्रतिकार वि० जेनो उपाय नधी तेवं (२) सामनो न करवो ते अप्रतिपक्ष वि० बिनहरीफ (२)असदृश अप्रतिपत्ति स्त्री० अस्त्रीकार; नहि लेवुं ते (२) अक्रिया (३) उपेक्षा (४) समजणनो अभाव (५)अनिश्चय (६) तरतबुद्धि न स्फुरवी ते विनान अप्रतिभ वि० शरमिदं (२) प्रतिभा अप्रतिम वि० अनुपम; बिनहरीफ **अप्रतिरथ** वि० जेनो सामनो करे तेबो बीजो योद्धी नथी तेवुं अप्रतिरूप वि० जेना समान रूपवाळुं बीजुनयी तेवुं (२) सरखामणीन थई शके तेवुं अप्रतिष्ठ वि० प्रतिष्ठा – आधार विनानुं

अप्रतिष्ठित वि० प्रतिष्ठारहित; अस्थिर (२) रूयाति विनानु; अप्रसिद्ध अप्रतिहस वि० अटकावी के रोकी न शकाय तेवुं (२) रुकावट विनानुं; निर्विष्न (३) निराश नहि थयेलुं **अप्रतीकार** वि० जुओ 'अप्रतिकार' अप्रतीत वि० असंतुष्ट (२) अस्पष्ट अर्थवाळुं (३) जेनी पासे जवुं मुक्केल छं तेव अप्रतीति स्त्री० समजावं नहि ते (२) अविश्वास *अप्रत्यक्ष* वि० नजरे न पडतुं; परोक्ष अप्रत्यय वि० अविश्वासु (२) अज्ञानी (३) पुं० अदिश्वास (४) न समजावुं ते अप्रधुष्य वि० अजेय; अजित अप्रमत्त वि० प्रमाद रहित; सावध अप्रमद वि० आनन्द के हर्ष वगरनुं अप्रमाण वि० अपरिमित; पुष्कळ (२) आधार, पुरावो के साबिती वगरन् (३) अविश्वसनीय अप्रमेय वि० जेनी तुलना न थई शके तेवुं (२) अपरिमित; अगाध (३) स्पष्ट न समजी शकाय तेवुं; अगम्य अप्रवृत्ति स्त्री० प्रवृत्तिनो अभावः; निष्क्रियता (२) प्रेरणानो अभाव – निरुत्साह अन्नज्ञस्त वि० प्रशंसा करवा योग्य नहीं तेतुः, तिरस्कार करवा योग्य अन्नसक्त वि० अनासक्त अप्रसंग पुं० आसक्तिनो अभाव (२) अयाग्य समय (३) संबंधनो अभाव अप्रस्तुत वि० असंबद्ध (२) अर्थ वगरन् (३)आकस्मिक (४) तैयार नहि तेर्बु अप्राकृत वि० ग्राम्य नहि तेवुं (२) मौलिक नहि तेवुं (३) असामान्य अप्राप्त वि० नहि मेळवेलं (२) नहि आवेलुं (३) नहि पहोंचेलुं अन्नाप्तकाल वि० अयोग्य समयन्;

(२) अस्थिर; चंचल (३) रूपाति विनान्

प्रसंगने अनुकूळ नहि तेवुं (२) वयमां नहि आवेळुं – पुस्त वयनु नहि तेवु अफ्रिय वि० न गमतुं;प्रतिक्ळ (२) न० प्रतिकूळ वर्तन (३)पुं० शत्रु; विरोधी अप्सरस् स्त्री० अप्सरा;स्वर्गनी वारांगना अप्सरस्तीर्थ न० अप्सराओने नाहवानुं पवित्र स्थळ - तीर्थ अप्सरा स्त्री० जुओ 'अप्सरस्' अफल वि० निष्फळ; व्यर्थ; निरुपयोगी (२) बंध्य (३) पूरुवत्वहीन अफलाकांक्षिम् वि० फळनी इच्छा विना काम करनारुं अबद्ध वि० नहि बंधायेलुं; छूटुं;स्वतंत्र (२) अर्थशून्य; असंबद्ध (३) पुं० अशक्य वस्तु; अनुचित वस्तु अबला स्त्री० स्त्री अबाध वि० प्रतिबंधरहित; निर्विघन (२) दुःखरहित अवाधित वि० प्रतिबंध - विघ्न विनानुं (२) जेनुं खंडन नथी थयुं तेवुं अबुद्ध वि० नहि जाणनारु; मूर्ख (२) न० चेतनरहित -- जड तत्त्व (३) अज्ञान अ**बुद्धि** स्त्री० अविद्या; अज्ञान(२)मूर्खता अबुध् स्त्री० अज्ञान; बुद्धिहीनता अबुध्(-ध) वि० अज्ञानी; मूर्ख (२) पुं॰ अज्ञानी – मूर्ख माणस अबोध वि० अज्ञानी; मूर्ख (२) पुं० अज्ञान; मूर्खता; बुद्धि न होवी ते अब्ज वि० पाणीमां जन्मेलुं (२) पुं० धन्वंतरि (३) चन्द्र (४) कपूर (५) शंख (६) न० कमळ (७) अबजनी संस्या अब्जभव,अब्जयोनि पु० ब्रह्मा (कमळमा जन्मेला) अब्द वि० पाणी आपनारं (२) पुं० वादळ (३) पुं०, न० वर्ष अब्धि पुं० समृद्ध (२) भंडार (ला०) अध्यिज पुं० चंद्र (२)शंख (३)न० मीठ् **अन्धिजा** स्त्री० लक्ष्मी (२) सुरा;मद्य

आभक्तम् अब्रह्मण्य वि० ब्राह्मणने माटे अयोग्य . (२) ब्राह्मणोनुं विरोधी (३) न० दुष्कृत्य; पापकर्म अभक्ष वि० नहि खावा योग्य; शास्त्रमा जे खाबानो निषेध छे तेवुं (२) न० अभध्य पदार्थ अभद्र वि० अमंगळ; अशुभ (२) न० पाप; दुष्टता (३) शोक अ**भय** वि० भयरहित (२) पुं० भय-मांथी मुक्ति **अभयदान** न० सलामती बक्षवी ते; अभयवचन **अभयवद्यन** न० संरक्षणनुं वचन आपवुं ते **अभव** पुं॰ उत्पक्तिनो अभाव; जन्मना अभाव (२) विनाश अभव्य वि० न बनवानुं; न बनवा जेवुं (२) दुर्भागी; अभागियुं(३) अशिष्ट अभागिन् वि० जेनो भाग न होय तेव् (२) अभागी; दुर्भागी अभाव वि० भाव - प्रेम विनानुं (२) अस्तित्व विनानुं (३)पुं० न होत्रुं ते (४) नाश; मृत्यु अभि अ० तरफ, -नेमाटे, -नी सामे, उपर, चारे बाजु, घणुं, अधिक, उत्तम, नजीक, पासे, --ना संबंधमां, --एक पछी एक – एवा अर्थमा वपराय छे अभिक वि० विषयासक्त; कामी (२) पु० प्रेमी; आशक अभिकम् १० आ० प्रेम करवो;इच्छत् **अभिकाम** वि० आसक्त; प्रेमी; इच्छा राखनार्ग (२) पुंच प्रेम (३) इच्छा अभिकांक्ष् १ उ० आशा राखर्वा (२) इच्छव् अभिकांक्षा स्त्री० आशा; इच्छा अभिकृ ८ उ० करवुं; रचवुं (२) -ने अर्थे करवुं अभिक्रम् १ उ० [अभिकामति–कमते]

जवु; पासे जवुं (२) ४ प० [अभि-

काम्यति भटकवुं (३) हुमलो करवो (४) आरंभवुं; तैयारी करवी अभिकम पुं० आरंभ (२) नजीक जबुंते (३)हुमलो; आक्रमण (४) उपर चडवुं ते (५) आरंभेलुं – माथे लीबेलुं ते अभिकृश् १प० बुम पाडवी (२) विलाप करवो; शोक करवो (३) ठपको आपवानी रोते कहेवुं **अभिक्रोश** पुं० बोलाववं - व्म पाडवी ते (२) विलाप करवो ते (३) निंदा [चडियाता थवुं करवीते अ**भिक्षि**ष् ६ प० सामे फेंकवुं(२) –थी अभिस्याः स्त्री० शोभा; सौन्दर्य (२) कहेबुं ते; जाहेर करवुं ते (३)बोलावबुं ते (४) नाम (५) शब्द; पर्याय-शब्द (६) कीर्ति (खोटा अर्थमां) अभिख्यात वि० प्रसिद्ध थयेल अभिगम् १ प० | अभिगच्छति | पासे जवुं; मुलाकात लेवी (२) --नी पाछळ जवुं (३) मळवुं; जडवुं (४) संभोग करवो (५) माथे लेवुं (६) समजवुं अभिगम पुं०, अभिगमन न० पास जबु ते (२) संभोग; सेवन अभिगम्य वि०पासे जवा यौग्य (२) भय के संकोच विना पासे जई शकाय तेवुं अभिगंत वि० संभोग करनारुं (२) {संभोग करनाई समजनारु अभिगामिन् वि० पासे जनारुं (२) अभिगीत वि० गीतमां गवायेलुं -प्रशंसायेलुं (२) सारी रीते गायेलुं अभिगुप्त वि० संरक्षायेलुं (२)छुपावेलुं अभिग्रह ९ उ० लेवुं; स्वीकारवुं(२) झंटवी लेयुं(३)जोडवुं (हाथ) (४)धारण करवुं; प्रगट करवुं (फूल, फळ इ०) अभिग्रह पुं० लई लेवुं – लूटी लेवुं ते (२) हुमलो (३) युद्धनु आह्वान (४) फरियाद (५) सत्ता; वजन अभिषात पुं० प्रहार करवो ते (२)

सामो प्रहार करवो ते (३) मारी नाखवुं – नाश करवो ते अभिचर् १ प० बेवफा नीवडवुं; कोई प्रत्ये खोटी रीते वर्तवुं (२) काम माटे मंत्रनो प्रयोग करवी अभिचरण न०, अभिचार पुं० मेलां काम माटे मंत्रप्रयोग करवो ते अभिजन् ४ आ० [अभिजायते| उत्पन्न थवु; जन्मवुं (२) फरी उत्पन्न थवुं (३) वारसदार तरीके जन्मवुं (४) बनी जबुं; –मां रूपांतर थबुं अभिजन पुं॰ वंश;कुळ (२) उत्पत्ति; जन्म (३) उच्च कुळमां जन्मवुं ते (४) पूर्वेज (५) कुळनो मुख्य माणस (६) जन्मस्थळ (७) कीति; यश अभिजात वि० उत्पन्न थयेलु; जन्मेलुं (२)–ना हकदार तरीके जन्मेलुं(३) —ने परिणामे जन्मेलुं (४) उच्च कूळमां जन्मेलुं; कुलीन (५) प्रिय; अनुकूळ (६) मनोहर (७) योग्य; लायक (८) पंडित (९) न० ऊन्चाकुळमां जन्म; कुलीनता (१०) जातकर्मः अभिजित् वि० पूरेपूरो विजय मेळवनारुं (२) विजय मेळववामां मदद करनार्रु अ**भिजुष्ट** वि० सेवायेलु निष्णात अभिज्ञ वि० जाणीतुं; अनुभवी (२) अभिज्ञा ९ उ० [अभिजानाति–जानीते| ओळखबुं; पिछानवुं (२) जाणवुः समजबुं; परिचित होवुं (३) गणबुं; मानवु (४) कबूल राखवु(५) याद करव् अभिज्ञा स्त्री० ओळखाण; स्मरण; स्मृति (२) एक सिद्धि (मनगमतुं रूप धरवं, दूरथी सांभळवुं – जोवुं – विचार जाणवा इ०नी) अभिज्ञान न० ओळखाण; स्मरण(२) याददास्त माटेनुं चिह्न

अभितप्त वि०तपेलुं (२)दुःखी अयेलुं **अभितराम्** अ० नजीकः; पासे अभितस् अ० नजीक; पासे (२) मों आगळ; सामे (३) बंने बाजुए (४) बधी **बाजु**ए (५) संपूर्ण रोते; सर्वथा (६) जलदी |हुमलो अभिद्रव पुं०, अभिद्रवण न० आऋमण; **अभिद्रु १** प० आक्रमण करवुं; हुमलो करवो अभिषर्भ पुं० परम सत्य; तत्त्व (बौद्ध) **अभिषा ३** उ० संबोधवुं; जणावव (२) नाम आपवुं अभिक्षा स्त्री० नाम (२) शब्द;ध्वनि (३) शब्दनी अर्थ बताववानी शक्ति अभिषान न०नाम (२) होहो; पदवी (३) कहेवुं ते ;दर्शाववुं ते (४) कथन ; संभाषण (५) शब्द (६) शब्दकोश अभिषेय वि० कहेवा योग्य (२) नाम देवा योग्य (३) अर्थ (४) विषय ; वस्तु **अभिष्या स्त्री**० इच्छा; लोभ (२)पारकुं भन लेवानी इच्छा ध्यान अभिष्यान न० इच्छा;लोभ (२)चितन; अभिष्ये १प० इच्छत्रु; लोभ करवो (२) ध्यान करवुं ; चितवबुं अभिनय पुं० शरीरनां अंगोनुं मनोभाव-दर्शक हलनचलन (२) नाटकमां देख भजववो ते अभिनव वि० तद्दन नवुं (२) जुवान ; न्वीलत् (३) अनुभव विनानुः, काचु अभिनह ४ प० बांची देवूं; मजबूत बांधवूं अभिनंद् १ प० प्रसन्न थर्तु (२) मुबारक-बादी आपत्री (३) प्रशंसा करवो (४) इच्छाकरवी; सरजी बतावबी अभिनंदन न० संतरेष; प्रशंसा (२) प्रोत्साहने; उत्तेजन अभिनंदनीय,अभिनंद्य वि० स्तुति करवा योग्य; आवकारवा योग्य अभिनियोग पुं० मन परोबवुं ते; लीन आसक्त थब् अभिनिविश् ६ आ० प्रवेश करवो (२)

अभिप्लुत अभिनिवेश पुं ० भक्ति; प्रेम(२) आसक्ति (३)निञ्चय; संकल्प (४)अज्ञानजन्य |ते (२) संन्यास मृत्युनी भय अभिनिष्कमण त० बहार नीकळी जब् अभिनिष्यत्ति स्त्री० समाप्ति; सिद्धि अभिनी १ प० नजीक लई जबुं (२) अभिनय करवो अभिनीत वि० नजीक लवायेलुं – लई जवायेलुं (२) भजवायेलुं(३)सुन्दर; सुद्योभित वनावायेलुं (४) उत्तम; श्रेष्ठ (५)योग्य;अनुक्ळ (६)क्षमा-शील (७) कृपाळू अभिनेतृ पुं० अभिनय करनार; नट अभिनेत्री स्त्री० नटी अभिन्न वि० नहि भांगेलुं; अखंड (२) असर नहि पामेलुं; नहि बदलायेलुं (३) जुद् नहि तेवुं अभिषत् १प० नजीक जबुं(२)हुमलो करवो (३) नीचे पडवुं अभिपद् ४ आ० पासे जवुं (२) मानी लेवुं; कल्पवुं (३) मदद करवी (४) हुमलो करवी ; ताबे करवुं (५)--मां जोड़ावुं; मग्न थवुं (६) स्वीकारवुं अभिषक्ष ('अभिषद्' नुं भू० कृ०) वि० पासे आवेलुं -- गयेलुं(२)नासी आवेलुं ; शरणे आवेलुं (३) पीडायेलुं; ग्रस्त (४) दुर्भागी; दुःखी (५) अपराधी (६) स्वीकारायेलु अभिशाय पुं० हेतु; आशय; उद्देश (२) इच्छा (३) शब्दनो अर्थ; भावार्थ; फलितार्थ (४) संबंध (५) मंतव्य अभिन्ने (अभि+न्न+इ) २ प० पासे जवुं (२) इरादो होवो अभिप्रेत वि०इच्छेलुं (२ स्वीकारायेलुं; पसंद करायेलुं (३) प्रिय; अनुकूळ अभिष्लव पुं० दुःख;पीडा(२)ऊभरावुं ते; पूर (३) जळप्रलयः अभिष्लुतः वि० व्याप्त थयेलुं; दबायेलुं

अभिभव पुं॰ पराभव; पराजय (२) अपमान; तिरस्कार (३) मानहानि (४) उत्कर्षः प्रचार अभिभावक, अभिभाविन् वि० पराजय करनारुं; जीतनारुं (२) चडियातुं अभिमाषण न० वातचीत अभिभू १५० हराबबु; जीतबु; श्रेष्ठ थवुं (२) हुमलो करवो (३) अपमान करवुं; मानभंग करवुं अभिभूत वि० हरावायेलुं; अपमानित .**अभिभृ**ति स्त्री० पराजय(२)अपमान; मानभंग; अतादर अभिमत वि० इष्ट; प्रिय (२) पसंद करायेलुं (३) संमानित (४) पुं० प्रियजनः प्रेमी (५) इच्छा अभिमन् ४ आ० इच्छव्; लोभ करवो (२) पसंद करवुं(३)संमत थवुं(४) विचारवुः धारबुः, कल्पना करवीः; ध्यानमां लेवुं अभिमर्द पुं० मर्दन करवुं ते (२) कचरी नांखबुते (३) युद्धः; संग्राम अभिमर्श (-र्ष) पुं० स्पर्श (२) हुमलो; बळारकार: संभीग अभिमंत्र १० आ० (नयारेक प० पण) मंत्रपूर्वे≉ संस्कारवाळॄं करवुं (२) बोलाववुं: मंत्र वडे तेडवुं (३) मसलत करवी अभिमान पुं० अहंकार; स्वमान; गर्व (२)पोताने ज अनुलक्षयुं ते(३)मान्यता; कल्पना : अभिप्रत्य (४) प्रेम ; इच्छा अभिमानिन् वि० अहंकारयुक्त; गविष्ठ (२) पोताने ज अनुलक्षनार्घ (३) माननार्षः कल्पनार्षः -नो देखाड (३) अनुकूळ करनार **अभिमुख** त्रि० संमुखः; नजीक (२) तत्पर अभिमृत्यम् अ० –ती तरफ;पंमुख;नजीक अभिमृश् ६ प० स्पर्ग करतो; संबंध थवो (२) धीमेथी घतत्र्

अभिया २ प० नजीक जबुं(२) हमलो करवो (३) रच्यापच्या रहेबु; लीन थई जब् अभियान न० तजीक जबुंते (२) कूच; प्रयाण (३) हुमलो करवो ते अभियायिन् वि० पासे जतुं (२) -नी सामे कूच करतुं; हुमलो करतुं अभियुक्त वि० उद्योगी; निश्चयी ; साबध (२) निष्णात; कुशळ (३) जेना उपर आरोप मुकायेलो छे तेवुं (४) जेना उपर हुमलो करायेला छे तेवुं (५) नियुक्त (६) कहेवायेलुं; बोलायेलुं (७) विश्वास मूकतुं अभियुज् ७ आ० जोडावु; उद्योग करवी (२) आक्रमण करवुं (३) आरोप मूकको (४)हक करवो(५)अधिकार सोंपवो ; नीमबुं (६) कहेतुं अभियोक्तृ वि० हुमलो करनाहं (२) आरोप मूकनार्धः; फरियादी अभियोग पुं० उद्योग; खंत (२) तीव अभ्यास (३) आक्रमण (४) आरोप; फरियाद |मोठुं; मधुर **अभिरक्त** वि० लीन; आसक्त (२) अभिरत वि० अत्यंत आसक्त; निमग्न अभिरति स्त्री० अत्यंत आसक्ति;प्रेमः अभिरम् १ आ० (कदीक प० पण) आनन्द पामव –प्रेरक ० आतन्द पमाडवुं;खुश करवुं अभिराद्ध वि० आराघेलुं; प्रसन्न करेलु अभिराम वि० मनोहर; श्रिय; अनु-क्ळ (२) सुन्दर; आकर्षक अभिरामम् अ० सुन्दर रीते;मनोहर रीते अभिरुक् १ आ० गमवुं (२) इच्छवुं अभिहान स्त्री० अत्यंत हानि;पीति;शोख

अभिक्त न० अवाज; घोषाट; बूम

अभिरूप वि० योग्य; अनुकुळ (२)

विद्वान, शाण्

सुन्दर; रम्य (३) मानीतुं (४)

अभिलप् १ प० वातचीत करवी अभिलष् १, ४ उ० इच्छा राखवी; अभिलाषाः राखवी अभिलेखित न० अभिलाषा;उत्कट इच्छा अभिलाप पुं० कहेवुं ते; कही बताववुं ते अभिलाब पु॰ उत्कट इच्छा; अभिलाषा अभिलुलित वि० क्षुब्ध; चंचळ अभिवद् १ उ० — ने कांई कहेवुं (२) दर्शाववुं; उल्लेख करवो (३) प्रणाम करवा --प्रेरक० मानपूर्वक प्रणाम करवा के कराववा (२) वाजित्र वगाडवुं अभिवंद् १ आ० मानपूर्वक प्रणाम करवा अभिवादन न० आदरपूर्वक प्रणाम अभिविनीत वि० केळवायेलुं; संस्कारी अभिवीक्ष् १ आ० जोवुं; तपासवुं (२) परीक्षा करवी (३) –नी तरफ लक्ष राखवुं – ढळवुं अभिवृत् १ आ० पासे जवुं; तरफ जवुं; सामे ऊभा रहेवुं (२) हुमलो करवो ; धसी जबुं(३) शरू थबुं; देखाबु; बनवं (४) –नी तरफ फेलाबुं अभिवृध् १ आ० वधवुं (२) वधारो थवो; समृद्ध थवुं अभिव्यक्त वि० स्पष्ट दर्शावायेलुं (२) स्पष्ट; उघाडुं अभिव्यक्ति स्त्री० व्यक्त थवं -- प्रगट थवुं – स्पष्ट थवुं ते अभिव्यंज् ७ प० दर्शाववुं;स्पष्ट करवुं अभिष्याप् ५ प० व्यापवुं; समाववुं अभिज्याप्ति स्त्री० व्यापवुं ते; समावेश **अभिशस्ति** स्त्री० शाप (२) अनिष्ट; आपत्ति (३) निंदा; तहोमत अभिशंस् १प० निंदा करवी; आरोप मूकवो (२) प्रशंसा करवी अभिशाप पुं ० शाप (२) आरोप; तहोमत **अभिष्व पुं**० यज्ञनी पूर्वतैयारी रूपे नाहव् ते (२) निचोवीने रस काढवो ते (३) अर्क काढवोते (४) सोमरस पीवोते

अभि**षं**ग पु० संबंध; आसक्ति (२) आलिंगन; संभोग (३) पराभव; तिरस्कार (४) अणधार्युं संकट (५) शाप; निंदा (६) खोटुं तहोमत (७) शपथ (८) भूत-प्रेतनी बाधा अभिषंज् (अभि + संज्) १ प० (अभि-षजति | संबंधमा आववुं (२) आसक्त थव् अभिषिक्त ('अभि + सिच्'नुं भू० कृ०) वि० जळथी छंटायेलुं; अभिषेक करायेलुं; राज्याभिषेक करायेलुं अभिविच् (अभि+सिच्) ६ उ० (अभि-षिचित⊸ते] सींचवुं (२) अभिषेक करवो; गादीए बेसाडवुं अभिषेक पुं० जळसिंचन के तेनो विधि (मूर्ति अथवानवा राजा उपर) अभिष्टु (अभि+स्तु) २ प० स्तवन करवु; स्तुति करवी अभिष्यंद् (अभि∔स्यंद्) १ आ० झरवुं; टपकवुं (२)ऊभरावुं(स्तेह, दया इ० थी) अभिष्यंद पु॰ झरबु-टपकवु ते (२) आख झम्या करवी ते(रोग)(३)अतिशय वृद्धि; वधारानी – वधारे पडतो भाग अभिष्यंग पुं० संबंध; अत्यंत आसक्ति **अभिसमापद् ४** आ० प्रवेशव् **अभिसमापन्न** वि० संमुख आवेलुं अभिसरण न० मळवा जवुं ते (२) प्रेमीओन् संकेतस्थानमां मळवा जवु ते 🔻 अभिसंघा ३ उ० छेतरवुं (२) ताकवुं; लक्ष्य करवुं (३) उद्देश राखवो (४) संधि करवी; मित्रता करवी (५) वचन आपवुं; कबूल राखवूं (६) आक्षेप करवो ; कलंक चडावव् अभिसंभा स्त्री० बाणी; बचन (२) कपट अभिसंधान न० वाणी; वचन; विकार (२) हेतु; लक्ष्य (३) छेनरपिंडी; **ভ**ळ (४)संधि करवी ते (५) आसक्ति; रस अभिसंधि स्त्री० वाणी; वचन (२)

ह्यु; आशय; लक्ष्य (३) अभिप्राय (४)करारनी शरत (५)छेतरपिंडी ि**भसंपत् १** ५० —नी तरफ ऊडवुं--क्दबुं (२) आसपास ऊडवुं अभिसंपत्ति स्त्री० -ना रूप बनी जवुं ते अभिसंपद् ४ आ० --नुरूप धरत्रु(२) प्राप्त करवुं (३) जई पहोंचयुं अभिसंपन्न वि० -पूरेपूर्घ बनलुं (२) भराई गयेलुं; छवाई गयेलुं अभिसंपात पुं० भेगा मळवुं ते (२) युद्ध; विग्रह (३) शाप अभिसंरंभ पुं० वेरनी लागणी अभिसंहित वि० साथेनुं; सहित; जोडायेलुं अभिसार पु ० संकेत प्रमाणे प्रेमीने मळवा जबुं ते (२) प्रेमीनुं मिलतस्थान (३) हुमलो, युद्ध (४) सायी; सोबती (५) बळ; सामर्थ्य अभिसारिका स्त्री० संकेत प्रमाणे नियत स्थळे प्रेमीने अळवा जनारी स्त्री अभिस् १प० जवुं; पासे जवुं (२) संकेत प्रमाणे मळवा जवुं (३) हमलो | नैयार करवु; रचवु करवी अभिसृज् ६ प० आपर्युः, बक्षत्रुं (२) अभिहत वि० प्रहार पामेलु; ईजा (२) पीडायेलुं; हणायेलु (३) गुषायेलुं (गणित०) अभिहन् २ प० प्रहार करवो ; मारवुं ; नाश करवो (२) रोकवुं; हॉकी काढवुं (३) वगाडबुं (ढोल वगेरे) अभिहरण न० पासे लाववं ते(२)लुंटी [न०नाम; शब्द अभिहित वि० बोलायेलुं; कहेवायेलुं (२) अभिह १ उ० लई जवु; खेंची जवुं (२) पासे लाववुं अभी वि० भय विनान् अभी (अभि+इ) २ प० नजीक जर्बु (२) पहोंचवुं; प्राप्त करवुं; (३) सेवा करत्री; अनुसरत्रुं

अभीक वि० अत्यंत उत्सुक (२)कामुक; विषयी (३) भयंकर; ऋर (४) पासे गयेलुं(५) बीक वगरेनुं (६) पुं० पति; स्वामी (७) कवि अभीक्ष्ण वि० वारंवार थतुं (२) सतत रहेतुं; कायम (३) अतिबय अभीक्ष्णम् अ० वारंवार; फरी फरी; सतत (२)अत्यंत (३)जलदीथी अभीषात पुं० जुओ 'अभिधात' अभोष्सित वि० इच्छेलुं (२) प्रिय (३) न० इच्छा अभोष्मु वि० अभिलाषावाळुं;इच्छावाळुं अभीमान पुं० जुओ 'अभिमान' अभीर पुं० गोवाळ; भरवाड अभीक्षाप पुं० जुओ 'अभिद्याप' · **अभी**शु पुं० छगाम (२) किरण अभीष् ६ प० |अभीच्छति | इच्छबुं; अत्यंत इच्छा राखवी अभीषु पुं० जुओं 'अभीशु' अभोष्ट वि० इच्छेलुं; इष्टः; प्रिय (२) पुं० प्रिय जन (३) न० इच्छित वस्तु अभुक्त वि० नहि खाधेलु; भोगवेलुं (२) जेणे खाधुं नयी तेवुं **अभुजिष्या** स्त्री० दासी के गुरुाम न न होय तेबी - स्वतंत्र स्त्री **अभूत** वि० नहि थयेलुं; अस्तित्वमां न होय तेवुं (२) असत्य; मिथ्या **अभूतपूर्व** वि० अपूर्व; लोकोत्तर अभृति स्त्री० अस्तित्वनी अभाव (२) गरीबाई (३)असामर्थ्य (४)नाश अभूमि स्त्री० अनुचित स्थान के विषय (२) –ना क्षेत्रनी, शक्यतानी के मर्यादानी बहार होवुं ते अभेद वि० अविभक्त; भेदरहित; एक ज (२) पुं० अभिन्नता; ऐक्य; भेदनो अभाव (३) निकट संबंध अ**भेद्य** वि० भांगी तोडीन शकाय तेत्रुं (२) जेना भागलान थई शके तेबुं (३) न० हीरो

अभ्यय वि० नजीकनुं (२) नवुं; ताजुं अभ्यधिक वि० वधारे (२)श्रेष्ठ; उत्तम अभ्यन्ता ९ उ० अभ्यन्जानाति --'जानीते | संमति अग्पवी (२) विदाय आपवी अम्यनुज्ञा स्त्री० संमति; अनुमति (२) हुकम; आज्ञा (३) छूटी – रजा – विदाय आपवी ते करवी अभ्यर्च् १,१०प० अर्चन करवुं; स्तुति अभ्यर्ण वि० समीप; नजीक (२) न० सानिध्य **अम्यर्थ् १०** आ० विनंती करवी; आजीजी करवी (२) इच्छा करवी अभ्यर्थन न०, अभ्यर्थना स्त्री० विनंती आजीजी; अरज (२) अरजी अभ्यदंन न० पीडा; त्रास अभ्यर्द्, १, १० प० पूजवुं; संमानवुं अभ्यहित वि० पूजित; पूज्य; मानवंत (२) योग्य; उचित **अम्यवहार** पुं० खात्रुं पीवुं ते (२)भोजन अम्यवहायं वि० सावा माटे योग्य; सावा लायक (२) न० खावूं ते (३) भोजन अम्यवह १ उ० खावुं (२) फेंकवुं; नाखी देवुं (३) एकठुं करवुं ; मेळववुं **अभ्यस् ४** उ० अभ्यास करवो; टैव पाडवी (२) वारंवार करवुं (३) शीखबुं (४)फेंकबुं ; ताकबुं (बाण) अभ्यसन न० अभ्यास; वारवार आवर्तन करवुं ते अभ्यसूयक वि० ईर्ष्याळु; द्वेषी अभ्यसुया स्त्री० ईष्यी; - अदेखाई ; द्वेप; क्रोध **अभ्यस्त** वि० वारंवार करी जोयेलुं (२) महाबराबाळुं; टेवायेलुं (३) द्वित्व पामेलुं – बेवडायेलुं (ब्या०) अभ्यंग पुं० शरीरे तेल वगेरे पदार्य चोळवाते (२) लेप अभ्यंज् ७ प० खरडवुं; चोपडवुं

अम्यंजन न० शरीरने तेल वगेरे चोळव् ते (२) आंखमां काजळ आंजवुं ते अभ्यंतर वि० अंदरतुं (२) अंदर समावेश पामेलुं (३) परिचित; निष्णात (४) निकटनुं (५) न० अंदरनो भाग (वस्तु, स्थळ के समयनो) अभ्यंतरीकु ८ उ० परिचित **प्र**वेश पामवो (२) दाखल करवुं (३) निकटनु मित्र बनावव् अस्यागत वि० नजीक आवेलुं; आवी पहोंचेलुं (२) अतिथि तरीके आवेलुं (३) पुं० अतिथि; महेमान अभ्यागम् १ प० [अभ्यागच्छति] नजीक आववुं; आवी पहोंचवुं (२) –म जई पडवुं (स्थितिमां) अभ्यागम पुं० आवी पहोंचवुं ते; आगमन; मुलाकात (२) सांनिध्य (३) ऊभा थव्ं (आवकार माटे) (४) मारवं – हणवं ते (५)वेर (६)युद्ध अभ्यादा ३ आ० लई लेबुं; झूंटबी लेबुं (२) धारण करवुं; पहेरवुं (माळा) (३)उपाडी लेबुं(वातचीतनो तंतु) अभ्यावतिन् वि० वारंबार आवत् अभ्याश पुं० समीपता; नजीकपणुं(२) त्वरा; झडप (३) व्यापव - पहोंचव ते अम्यास पुं० वारंबार पुनरावृत्ति (२) महाबरो ; टेब (३) भणवुं ते ; गोखबुं ते (४) सामीप्य; नजीकपणुं (५) हिरुक्ति पामेला धातुनो पूर्व भाग (ब्या०) (६) ध्रुवपद (संगीत०) अभ्यासद् १ प० [अभ्यासीद्रति] प्राप्त थवु; पहोंचवुं (२) —मां बेसवुं –प्रेरक० हुमलो करवो अभ्याहत वि० हणायेलुं; प्रहार करायेलुं (२) रुकावट पामेलुं; अटकावायेलुं (३) भूलभरेलुं ल्टी लेब् ते **अभ्याहार** पुं० लावी आपवुं ते (२) **अभ्याहार्य** वि० खावानं

बस्बाहित ('अभि + आ + धा'नं भू० क्व०) वि० मूकेलुं; उमेरेलुं (बळतण इ०)

अस्याह १ प० लई आवर्षु; लाबीने आपर्षु(२)उपाडी जबुं;लूटी जबुं

अम्युक्षण न० जळ छांटतुं ते; जळ छांटीने पवित्र करवुं ते | मुजबनुं अम्युक्तित वि० चालतुं आवेलुं; रिवाज अम्युक्तियं पुं० वृद्धि; समृद्धि

अम्युब्छितः वि० उच्चः उन्नतः अम्युक्षा (अभि+उद्+स्था) १प० [अम्युक्तिष्ठति | सामे ऊठीने मान-आपवुं (२) मळवा माटे ऊठवुं – ऊभा थवुं

अम्युरयान न० स्थान परथी ऊडीने मान आपनुंते (२) प्रयाण करवुंते; प्रयाण माटेनी तैयारी (३) उन्नति; उत्कर्ष; वृद्धि

अम्**युत्यित** वि॰ ऊर्मु थयेलुं; ऊठेलुं (२) तैयार थयेलुं; तत्पर थयेलुं

अम्युत्पत् १प० -- उपर कूदको मारवो अम्युत्पतन न० कूदको मारवो ते; हुमलो करवो ते

अभ्युदय पुं० उन्नति; वृद्धि; आबादी (२) उत्सव (३) उदय थवो ते; ऊगवुं (सूर्यादिनुं) (४) इच्छित वस्सु सिद्ध थवी ते (५) आरंभ

अम्मुदि (अभि + छद् + इ) २ प० (सूर्यादिनुं) ऊगर्वु (२) ऊंचे चडवुं (३) उन्नत थवुं; आबाद थवुं (४) बनवुं; थवुं(५)सामे थवुं

अभ्युदित ('अभ्युदि'नुं भू० कृ०) वि० जगलुं (२) बनेलुं; थयेलुं (३) जनत – आबाद थयेलुं (४) सूर्यं जगी जाय छतां सूई रहेनाहं (५) सामे थयेलुं (युद्धमां) (६) ('अभिवद्'नुं भू० कृ०) वाणीमां बोलायेलुं – उच्चारायेलुं

अम्युद्गत वि० मळवा सामुं गयेलुं (२) व्यापेलुं (कीर्ति)

अम्पूचतः वि॰ ऊंचुं करेलुं (२) सज्ज थयेलुं; तत्पर थयेलुं (३) सामे रजू करेलुं; वगर माग्ये आपेलुं (४) उदय पामेलुं; प्रगट थयेलुं

अभ्युक्ततः वि० ऊंचुं; उन्नतं अभ्युक्ततः स्त्री० उन्नति; आबादी अभ्युपगतः वि० स्वीकारेलुं; कवूल राखेलुं(२)पासे गयेलुं;सामुं आवेलुं अभ्युपगम् १ प० [अभ्युपगच्छति] पास जवुं; आवी पहोचवुं (२) मददे आववुं (३) मेळववुं; प्राप्त करवुं (४) कबूल करवुं; कबूल राखवुं

अम्युपगम पुं० आवी पहोचवुं ते (२) कबूल राखवुं ते (३) वचन; करार (४) मान्यता; अभिप्राय

अभ्युष्पत्ति स्त्री० मददे जबुं ते (२) सांत्वन; रक्षण (३) अनुग्रह; क्रुपा (४) वचन; करार

अभ्युष्पद् ४ आ० (आपत्तिमांथी)
छोडाववुं; बचाववुं (२) आश्वासन
आपवुं (३)मदद मागवी; शरणे जवुं
अभ्युष्पन्न वि० शरणागतः; शरणे आवेलुं (२) बचावेलुं; संरक्षेलुं अभ्युष्पाय पुं० वचनः; करार (२)

उपाय; साधन अम्युपायन न० लांच; रुशवत अम्युपे (अभि+उप+इ) २ प० पासे जवुं; आवी पहोंचवुं; प्रवेश करवो

(२) स्थिति प्राप्त करवी – पामत्री (३) त्रचन आपवुं; कबूल करवुं; स्वीकारवुं (४) संमत थवुं; मान्य

राखबुं(५)ताबे थवुं;शरणे जबुं अम्युपेत वि० पासे आवेलुं; सामे आवेलुं (२) स्वीकारेलुं अम्यूह् १७० दलील करवी; तर्क करवी

अभ्यूह पुं० वादविवाद; चर्ची; दलील (२) तर्क; अनुमान अभ् १ प० जबुं (२) रखडबुं अभ्रान० वादळुं(२) आकाशः; दाता-वरण (३) अबरक अभ्रक न० अबरक **अभ्रपुष्य** न० आकाशकुसुम मंभवित वस्तु) अभ्रम् स्त्री० ऐरावतनी सहचरी **अभंकव, अभंसिह** वि० वादळांने अडके तेवृ; धणुं ऊच्चुं (२) पुं० पदन अभिन वि० वादळथी घेरायेलं अम् अ० जराक (२) जलदी **अमनस्, अमनस्क** वि० विचारहीन (२) बुद्धिहीन (३) बेदरकार; लक्ष विनानुं (४) मन उपर काबू विनानुं (५) प्रेमरहित अमम वि० ममतारहित (२)निरिभमानी अमर वि० अविनाशी (२) पुं० देव अमरगुर पुं० देवोना आचार्य – बृहस्पति अमरतटिनी स्त्री० गंगा नदी अमरत्व पुं० कल्पवृक्ष (२) देवदार अमरपति पुं० इंद्र **अमरपुर** न० स्वर्ग अमराब्रि पुं० मेरु पर्वत अमराधिप पुं० इन्द्र अमरापना स्त्री व गंगा नदी अमरालय पुं० स्वर्ग अमरावती स्त्री० इंद्रनी नगरी अमरांगना स्त्री ० देवनी स्त्री(२)अप्सरा अमरेक्टर पुं० देवोनो राजा - इन्द्र अमर्याद वि॰ मर्यादा बहारनुं; मर्यादानुं जल्लंघन करतुं (२) मर्यादा न जाळवतुं; अनादर करतुं (३) हद बहारनुं; अनंत अमर्ष पुं० असहिष्णुता (२) कोध (३) अदेखाई अमर्जण, अमर्जित, अमर्जिन् वि० कोधी; असहिष्णु (२) अदेखाईवाळुं

अमल वि० निर्मेळ; शुद्ध (२) श्वेत; |दुर्भागी प्रकाशित अमंगल, अमंगल्य वि० अशुभ (२) अमा वि० अमाप (२) अ० साथै; —नी साथे (३)स्त्री० चन्द्रनी सोळमी कळा (४) अमावास्या अमारम पुं• प्रधान; सचिव अमात्र वि० अमाप; मर्यादारहित अभानम न०, अमानना स्त्री० अपमान; तिरस्कार; अवगणना अमानिता स्त्री०न म्रता;निरभिमानीपण् अमानुष, अमानुष्य वि० अलीकिक; अद्भृत (२) दिव्य अमायिक, अमायिन् वि० निष्कपटी अमावसी, अमावस्या, अमावासी, अमाबास्या स्त्री० अमास अभित वि० अमाप; अनंत(२)अज्ञात **अमिताभ** वि० अत्यंत तेजस्वी अमित्र पुं० शत्रु; विरोधी; हरीफ अमिष वि॰ छळ विनानुं (२) पुं० लौकिक भोग पदार्थ (३) मांस अमुक वि० कोई एक; फलाणुं अमृतः अ० त्यांथी (२) परलोकमांथी अमुत्र अ० त्यां; ते स्थळे (२) परलोकमां; बीजा जन्ममा अमुष्यकुल न० खानदान कुळ; प्रसिद्ध अमुख्यपुत्र पुं ० कुळवान पुत्र **अमृर्त** वि० मृर्त रूप विनानुं; निराकार अमूल, अमूलक वि० मूळ वगरनुं (२) उपादानकारण रहित (३) प्रमाण रहित; आधार विनानुं अमृल्य वि० जेनी किंमत आंकी न शकाय तेवुं; घणुं ज कीमती अमृत वि॰ नहि मरी गयेलुं (२) अविनाशो; अमर (३) अमरपणुं निपजावनारुं (४) सुन्दर; इष्ट (५) पुं० देव (६) शिव; विष्णु (७) न० अमरपण्; मोक्ष (८) स्वर्ग (९) अमर

करे तेवो रस (१०) पाणी (११) घी (१२) दूध (१३) मिष्टान्न (१४) यज्ञमां बधेलुं ते (१५) बगर माग्ये मळेलुं ते (१६) मनगमती वस्तू अमृतदीधिति, अमृतद्युति पु० चन्द्र अमृतप पुं० विष्णु (२) देव अमृतभूज् पुं० देव मिथन अमृतसंयन न०अमृतप्राप्ति अर्थे(समुद्रनुं) अ**मृतलता,अमृतलतिका** स्त्री० अमरवेल अमृतसार वि०अमृतमय;अमृत जेवुं मधुर अनृता स्त्री • सुरा;मद्य (२) तुलसी,हरडे, गळो इ० केटलीक वनस्पतिनुं नाम अमृतांञ्च पुं० चन्द्र अमेषस् वि० बुद्धिहीन; मूर्व अमेध्य वि० यज्ञने माटे अयोग्य (२) अपवित्र (३) न० विष्टा अमेथ वि० अपरिमित; मापी न शकाय तेवुं (२) अज्ञेय अचुक, सफळ अ**मोक** वि० कदी निष्फळन नीवड्तु; अम्ल वि० खाटुं (२) पुं० खटाश; साटो रस (३) न० छाश अम्लान वि० नहि करमायेलुं (२) झांखुं नहि तेवुं (३) स्पष्ट; चोख्खुं अयु १ उ० जब् अय पुरुजनार (समासने अंते; उदारु 'अस्तमय') (२) सद्भाग्य अयज्ञ वि०यज्ञन करनारुं अ**यति** वि० पूरो प्रयत्न न करनारुं; यत्नमां मंद अयतिन् वि० अनिग्रही; असंयमी अयत्न वि०यत्न न करवो पडे तेवुं (२) पुं वत्ननी अभाव अयवा अ० जेम होवुं जोइए, के जेवुं धार्युं होय तेवं नहि तेम निहिएम **अयवावत्** अ० खोटी रीते; यथायोग्य अयन वि० जतुं (समासने अंते) (२) न० गति (३) मार्ग (४) ब्यूहनो प्रवेशमार्ग (५) आश्रयस्थान (६)

विषुववृत्तनी उत्तरमां अने दक्षिणमां देखाती सूर्यनी गति (७) ए गतिने लागतो वखत(छ मास)(८)मोक्ष अयभित वि० काबूमां नहि राखेलु के रहेलुं (२) नहि कापेलुं; संस्कारेलुं नहि तेवुं (नख इ०) अयशस् वि० अपकीतिवाळुं; बेआबरू थयेलुं (२) न० अपयश; अपकीति अयस् न० लोढुं (२) पोलाद (३) कोई पण धातु अयस्कात,अयस्कातमणि पु० लोहचुंबक अयःशंकु पुं० भालो (२) लोढानो अणी-दार खीलो माग्ये मळेलुं दान अयाचित वि० नहियाचेलुं (२) न०वगर अयाचितव्रत न० वगर माग्ये जे मळे ते बडे जीववानुं व्रत अयाज्य वि० यज्ञ करवानुं अधिकारी नहि तेवुं; जेने माटे यज्ञ न करी शकाय के नवळ नहि ययेल अयातयाम वि० ताजुं; वापरवायी जीर्ण अधि अ॰ 'हे' एवा अर्थनु एक प्रेम-संबोधन (२) प्रार्थना, विनंती, सौम्य प्रश्त इ०नो भाव दशौंवे छे अयुक्त वि० नहि जोतरेलुं (२) नहि जोडेल् (३)चंचळ; असावध; बेध्यान (४) नहि रोकेलुं–थोजेलुं (५) अनुचित ; अयोग्य (६) खोटुं ; जूठुं अयुक्ति स्त्री० जोडायेलु न होवु ते (२) अयोग्यता (३) युक्तिपुरःसर न होतुंते; असंबद्धता अयुग् वि० एकलुं (२) एकी संख्याबाळुं (३, ५, ७, इ०) अयुगपद् अ० एक साथे नहि तेवी रीते; एक पर्छीएक अयुगल वि० जुओ 'अयुग' अयुगाचिस् पुं०(सात ज्वाळावाळो)अग्नि अयुग्म वि० जोडीमां नहि तेवुं;एकलुं;

छ्टुं (२)एकी संख्याबाळुं (३,५,७,६०)

अयुग्मनेत्र, **अयुग्मलोचन** पुं० (त्रण अखिवाळा) शंकर अयुग्मशर पुं०(पांच बाणवाळी)कामदेव **अयुत** वि० जुदुं करायेऌं; नहि जोडा-येलुं (२) न० दश हजारनी संख्या अये अ० 'हे' ए अर्थनुं प्रेमसंबोधन (२) आश्चर्य, विस्मय, ऋष, शोक, भय, स्मरण, थाक इ० नो भाद दर्शावे छे अयोग्य वि० अघटित; अनुचित (२) नकामुं; निरुपयोगी (३) प्रतिकुळ; बंध न बंसत अयोघन ५० हथोड़ो; घण अयोजाल न० लोढानी जाळी अयोध्य वि० हुमलो के सामनो न करी शकाय तेवुं अयोनि वि० अनादि; उत्पत्तिरहित (२) योनि द्वारा न जन्मेल् (३) शास्त्रविधि प्रमाणेना लग्नथी नहि जन्मेलुं (४) जेना कुळनी खबर नथी तेवुं अयोनिज, अयोनिजन्मन् वि० सृष्टिकम प्रमाणे गर्भमांथी नहीं जन्मेलुं अयोनिजा, अयोनिसंभवा स्त्री ० सीता अयोमुख पुंच्याण ऋर; निर्देय अयोहृदय वि० लोढा जेवा हृदयवाळुं; अर नि॰ उतावळु; वेगी (२) अल्प; थोडुं (३) जतुं; जनारुं (समासने छेडे) (४) पुं० पैडानो आरो **अरघट्ट, अरघट्टक** पुं० रेंट अरज, अरजस्, अरजस्क वि० ध्ळ वगरन् (२) मेलुं नहि तेवुं; स्वच्छ (३) रजोगुण विनानुं (४) ऋतुस्राव प्राप्त न थयो होय तेवुं **अरणि** पुं० सूर्य (२) अग्नि(३) चकमकनो अरणि पुं०, स्त्री०, अर**जी** स्त्री० घसीने अग्नि उत्पन्न करवा वपरातो लाकडानो टुकडो (शमी वृक्षनो) अ**रणोसुत** पुं• शुकदेव (२) अग्नि अरण्य न० जंगल; वन

अरम्यचर वि० जंगली अरम्यचंद्रिका स्त्री० (अरण्यमा चांदनी जेवी) व्यर्थशोभा अरच्यरुदन, अरच्यरुदित न० (अरण्यमां रडवा – बूम पाडवा जेवो,व्यर्थ विलाप; व्यथे प्रवृत्ति 🏻 (२) वानप्रस्थ **अरण्यवासिन्** वि० अरण्यमा रहेनारु **अरण्योक**स् वि० जंगलमां रहेनारुं (२) वानप्रस्थ अरित वि० असंतुष्ट; उद्विग्न (२) निस्त्साही; मंद (३) स्त्री ० अप्रीति; अणगमी (४) उद्वेग; शोक असंतोष; चित्तनी अस्वस्थना अर्रात्न पुं०, स्त्री० कोणी (२) एक हाथनुं माप (कोणीथी टचली आंगळीना छेडा सुधीनुं) (३) हाय अरम् अ० जलदी;तरत ज; हमगां ज अरर न० बारणुं (जोडमानुं दरेक) अर्रावद न०कमळ (लाल के नील्ं) अर्रीवदिनो स्त्री० कमलिनी (२)कमल-समूह (३) कमलनुं सरोवर के तलाब अरसिक वि० नीरस (२) लागणी वगरनु (३) रसनी कदर न करी शके तेवुं अ**राजक** वि० राजा विनानुं; अंधा-ध्धीवाळु **अरात् अ०** तत्काळ; जलदो **अराति** पुं० शत्रु; दुश्मन अ**रा**ल वि० वांकुंचूंकुं (२) झांकवाळुं (३) पुं० वांको बळी गयेलो हाथ (४) मदोन्मत हाथी अ**रालकेशी** स्त्री० वांकडिया वाळवाळी अरि पुं० शत्रु; दुश्मन **अरित्र** न० हलेसुं (२) सुकान अरिष्ट वि॰ सुरक्षित; कुन्नळ (२) न्म (३) अनुभप्रद (४) अविनाशी (५) पुं० शत्रु (६) अरीठानुं झाड (৩) लीमडानुं झाड (८) मद्य; आसव (९) न० दुर्भाग्य;

(१०) अनिष्ट सूवक उत्पात (११) मोतनी निशानी (१२) सुदावडीनो ओरडो (१३) मद्य; आसव अरियुदन पुं० शत्रुतो नाश करनार अरुचि स्त्री० अनिच्छा; नामरजी; अणगमो (२) भूख न लागवी ते अरुज वि०नीरोगी (२) रोग दूर करनार्ह (३) स्वस्थः दुःखरहित **अदश** वि० संघ्याना रंगन्; रताश पडतु; काळश्चा मिश्रित लाल वर्णनुं (२) पुं० सवारनो लालाश पडतो रंग (३) सूर्यनो सारिथ (४) सूर्य अरुनप्रिय, अरुणसारिय,अरुणाचिस् पुं ० रंगायेल **अविग**त वि० लाल थयेलुं; लाल रंगे अवगोवय पुं > प्रातःकाळ; परोडियुं अरंतुर वि० मर्भवेधक; तीव्र व्यथा करनार् अहंत्रती स्त्री० वसिष्ठ ऋषिनी पत्नी अरुष् वि० कोथरहित **अरूप** वि० आकाररहित (२) कुरूप (३) भिन्न; असमान (४) न० खराब रूप; रूपनो अभाव अरे अ० ऊतरता दरज्जाना माणसने संबोधवानो उद्गार (२) आश्चर्य, दुःख, चिता, क्रोध इ० सूचक उद्गार अरेरे अ० कोध, शोक, तिरस्कार दर्शाववा वपरातो उद्गार अरोग वि० नीरोगी; तंदुरस्त (२) पु॰ तंदुरस्ती; आरोग्य अरोगिन्, अरोग्य वि० नीरोगी अरोचक वि० न प्रकाशतुं; तेजस्वी नहि तेत्रुं(२) अणगमतुं; कंटाळो आपनारुं (३) अरुचि उत्पन्न करे तेत्रुं (४) पुं० [गमे तेवुं; कदरूपुं अरुचि; कंटाळो अरोखिष्णु वि० तेजस्वी नहि तेवुं (२) न अर्कवि० अर्चनीय(२)पुं० सूर्य(३) अम्नि (४) स्फटिक (५) आकडो

अर्जव अर्कबंबु, अर्कबांबद पुं० शाक्यमुनि; बुद्ध अर्कोपल पु० लाल चूनी(२)सूर्यकांत मणि अर्गल पुं०, न०, अर्गला, अर्गली स्त्री० आगळो; भूंगळ; उलाळो (२) रुकावट -- विष्त करनार वस्तु अर्घ् १ ५० म्ल्य बेसवुं अर्घपु० किंमतः, मूल्य (२) देव अथवा महापुरुषनी पूजा माटेनो सामान अर्ध्य वि० पूजवा योग्य; मान आपवा योग्य (२) न० पूजन; पूजा (३) पूजनसामग्री अर्च् १ उ० पूजन करवुं;मान आपवुं; सत्कारवुं (२) प्रकाशवुं (३) १०५० पूजन करबुं; सत्कारबुं अर्चन वि० पूजा करतुः; सत्कारतुं(२) न॰ पूजन; पूजा अर्बना स्त्री० पूजन; अर्चन अर्चास्त्री० पूजा; अर्चन (२) पूजा करवा माटेनी मूर्ति **अविष्मत्** वि० ज्वाळावाळुं; प्रकाशतु (२) पु० अग्निदेव (३) सूर्यं **अविष्मतो** स्त्री० अग्निनी नगरी अथवा लोकनुं नाम **अक्स्**न० प्रकाशनुं किरण; ज्वाळा (२) प्रकाश; तेज (३) पुं० अग्नि (४) प्रकाशनुं किरण अर्ज् १ प० मेळववु; कमाबु; प्राप्त करवुं (२) उपाइनुं; लेवुं (३**) १०** प० मेळववुं; प्राप्त करवुं अर्जन न० मेळवबुं – कमाबुं ते **अफित** वि० मेळवेलुं, प्राप्त करेलुं; कमायेल अर्जुन वि० क्वेत; शुभ्र (२) पुं० पांडु राजानो त्रीजो पुत्र – अर्जुन (३) कार्तवीर्यं – सहस्रार्जुन (४) एक वृक्ष **अर्जुनध्वज** प्ं० हनुमान अर्जुनी स्त्री० गाय अर्णव पुं० समुद्र(२)प्रवाह;मोजुं;पूर

अति स्त्री० दुःख; पीड़ा; शोक अर्थ्य १० आ० मागवुं; याचवुं (२) मेळववा प्रयत्न करवो; इच्छव् अर्थ पु॰ हेतु; ध्येय; इच्छा(२) -'ने माटे' –'ने लीघे' –'ना हेतु थी ' एवा अर्थमां समासने छेड़े आवे छे (अने विशेषण पेठे वपराय छे); ए ज अर्थमां - 'अर्थम्' **'अर्चे' अने 'अर्थाय'** रूपे अव्यय पेठे वपराय छे (३) कारण; निमित्त; हेतु (४) शब्दनो मायनो (५) वस्तु; पदार्थ; विषय (६) कामकाज; बाबत; कार्यः (७) धन; संपत्ति (८) धर्मादि चार पुरुषार्थमानो बीजो(९) फरियाद; दावो (१०) लाभ; फायदो (११) गरज; उपयोग; प्रयोजन (१२) फल; परिणाम अर्थकर वि० धन प्राप्त करावनारुं (२) उपयोगी; स्टाभदायक **अर्थकाम** वि० धननी इच्छावाळुं **अवंशुच्छ्र न०धननु** संकट (२) मुश्केल बाबत अर्थकृत वि० जुओ 'अर्थकर' अर्थनौरव न० अर्थनुं ऊंडाण **अर्थजात न**० वस्तुओनो समृह (२) अढळक संपत्ति (३) बधी बाबतो अर्थतस्य न० साचुं रहस्य; साची वात; साचो हेतु; साचुं स्वरूप अर्थतः अ० अर्थनी बाबतमां; अर्थ प्रमाणे (२) वास्तविक रीते (३) पैसा के लाभने माटे (४) -ने कारणे; -ना हेत्रूषी [(२) उदार **अर्थद** वि० धन आपनार्ह; लाभकारक **अर्थद्वण** त० उडाउपणुं (२) पर**कुं** धन दबावी बेसवुं ते (३) अर्थमां भूल निजर राखती ते काढवी ते **अर्थदृष्टि** स्त्री० लाभ ~ नफा तरफ ज **अर्थना स्त्री० विनंती;** याचना अ**र्थनिकंघन** वि०धन पर आधार राखतुं अर्थपति पुं० धननो स्वामी कुबेर (२) राजा

अर्थपर वि० लोभी; कंजूस अ**र्यवंध** पुं० शब्दोनी गोठवणी – रचना (२) काव्य; निबंध अर्थबद्धि वि० स्वार्थी; आपमतलबी अर्थमात्र त०, अर्थमात्रा स्त्री० अढळक धन (२) निश्चित अर्थ **अर्थयुक्त** वि० अर्थवाळुं; सार्थ **अर्थलाभ** पं**० धननो लाभ**;धनप्राप्ति अर्थसम्बद्ध वि० धननो लोभी (२)कंजूस अर्थवत् वि० अर्थवाळुं; सार्थक (२) श्रीमंत; धनदान अर्थवाद पुं० (वेदनां) विधिरूप वाक्यमां रुचि उपजाववा ते विधिओनी स्तुति, तेमन् पालन न करवाथी यती हानि, तया तेने लगतां अतिहासिक दृष्टांत इ० आपवां ते (२) स्तुति; तारीफ (३) ग्रंथमां मुख्य विषयने स्पष्ट करवा के तेनुं गौरव दर्शाववा (लखातो) भाग (४) जीवनमां अर्थ-संपत्तिने महस्व आपनार बाद **अर्थविद् वि० सम**जदार; डाह्युं अर्थविपति स्त्री व लक्ष्य चूकवुं ते अर्थशास्त्र न० संपत्तिशास्त्र (२) राज-नीति (३) व्यवहारनीति **अर्थशोच** न० प्रामाणिकता अर्थसंपद् स्त्री० इच्छित वस्तु सिद्ध थवी अर्थसंबंध पुं० अर्थप्राप्ति (२) वाक्य के शब्द साथे अर्थनो संबंध (व्या०) अर्थसार पुं प्रकळ द्रव्य अर्थसिद्धि स्त्री० इच्छित अर्थ सिद्ध थवो अर्थहीन वि० अर्थ वगरनुं; निरयंक (२) धनहीन; दरिद्र अर्थाणमः पुरुधननी प्राप्ति अर्थात् अ० एटले **अर्थायन्** वि०धनलोभी (२)गरजवाळूं (३) स्वार्थी अर्थार्थी वि० धननी इच्छावाळुं (२) कोई पण बस्तुनी इच्छावाळुं

अर्थांतर न० बीजो अर्थ (२) बीजो हेत् (३) नवो विषय; नदी बाबत के बनाव अर्थित वि० मागेलुं; याचेलुं (२) इच्छेलुं (३) न० दिनंती; याचना अधिता स्त्री०, अधिस्य न० याचकपण् (२) विनंती; याचना (३) इच्छा अधिन् वि० याचनार्ष (२) इच्छनार्षः; इच्छावाळुं (३) भिक्ष्कः (४) फरियादी; वादी **अर्थीय वि०** (समासमां) --ने माटे नियत थयेलुं (२) —ने माटेनुं; —ना संबंधी अर्थोष्मन् प्०धननी गरमी **अर्घ्य वि० मा**गवा लायक (२) वाजबी; न्यायी (३) सार्थक; सप्रयोजन (४) साचुं (५) समृद्ध (६) पैसा प्राप्त करवामां चतुर अर्ष् १प० दुःख देवुं; ईजा करवी; मारी नासवुं (२) विनती करवी; याचवुं (३) जतु; ससवुं (४) क्षुब्ध थवुं (५) वेरावुं(६) १० प० पीडा आपवी; दुःख आपवुं (७) हणवुं: मारवुं; मारी नाखवुं (८) क्षुब्ध करवुं; ज़ोरथी डखोळवुं अर्बन वि० दु:ख देनारुं (२) नाश करनार्ह **ऑदत** वि० ठार मारेलुं; पीडेलुं(२) गयेलुं (३) याचेलुं अर्घवि० अर्घु(२) पुं०, न० अर्धो भाग अर्थचंद्र वि० बीजना चंद्रना आकारन् (२) पुंज्बीजनो चंद्र(३) पंजानो अर्घचन्द्र जेवो आकार (कर्ज्य पकडवा करातो) (४) अर्थचंद्राकृति बाण अर्थसंद्रं दा ३ उ० त्रोची पकडीने काढी अर्धनाराख पुं० अर्धचंद्राकार दाण अर्घनारोज्ञ, अर्घनारीज्ञ्चर पु० शंकर अर्थमागधी स्त्री० जुना जैन धर्मग्रंथो जेमां लखाया छे ते भाषा अर्थार्थ पुं०, न० एक चतुर्थांश अ**र्घासन** न० अर्घु आसन (२) अति मान-पूर्वक सत्कार करवी ते

अभीग न० अर्धु शरीर अर्थेषु पु० अर्थचंद्र; बीजनो चंद्र अ**धॅदुमीलि** पु० शंकर अर्थोक्त वि० अर्धुं उच्चारेलुं -- कहेलुं अर्घोदित वि० अर्धु ऊगेलुं – ऊंचुं आवेलुं (२) अर्धु उच्चारेलुं अर्पण न० –नी उपर मूकवुंते; अंदर मूकवुं ते (२) समर्पण करवुं ते (३) पाछुं आपवुं ते अपित वि० मूकेलुं; खोसेलुं (२) अपायेलुं; सोंपेलु(३) पाछु अपायेलु (४) कोतरेलुं; चीतरेलुं (५) वींधायेलुं ; भौंकायेलुं (६) लुप्त थयेलुं; जतुं रहेलुं अर्बुद पुं०, म० आबु पर्वत (२) वादळुं (३)दस करोड (४) मांसना लोचा जेवी स्थिति अर्भ पु॰ बाळक अर्भक वि० नानुं; टूंकुं (२) मृर्खः; बालिश (३) पुं० बाळक (४) पशुनुं बच्चुं अर्थ वि० श्रेष्ठ; उत्तम; समाननीय (२) वफादार (३) प्रिय; ममता-वाळुं (४) पुं० स्वामी ; मालिक अर्यमन् पुं० सूर्य (२) पितृओनो राजा अर्वन् पु० घोडो **अवक् अ० आ बा**जुए (२) अमुक बिदुधी (३) पहेलां; प्रथम (४) नीचेनी बाजु (५) पछीथी (६)अंदर; नजीक अर्वाच् वि० आ तरफनुं; आ तरफ वळतुं (२) -नी तरफ वळेलुं; -ने मळवा आवतुं (३)आ किनारा उपरनुं (४)नीचेनुं; पाछळन् (समय के स्थळमां) (५) **पछ**ीन् अर्वाचीन वि० आधुनिक; हालनुं(२) ऊलटुं; **विरुद्ध (३) पछीनुं**; पा**छ**ळनुं (४)आ बाजुनुं (५)पछी जन्मेलुं अर्कापुंक, अर्कास् न व हरस अर्ह १प० योग्य होवुं; लायक होवुं (२) अधिकार होवो (३) कंई करवानी फरज होवी (४) शक्य होवुं;

शक्तिमान होवुं (५) -नी किमतनुं होवुं (६) १० प० मान आपवु;पूजवु अहं वि० पूज्य; संमाननीय (२)धोग्य; लायक; अधिकारवाळ्ं (३) किंमतनुं; कीमती (४) समर्थ; शक्तिमान (५) पु॰ मूल्य ; किंमत (६) योग्यता अर्हण न०, अर्हणा स्त्री० पूजन करवृते; मान भापवुं ते (२) पूजनसामग्री; भेट; ्[(४) पुं० बुद्ध (५) तोर्थंकर अर्हत् वि॰ पूज्य (२) योग्य (३) विख्यात अहँत वि० पूज्य ; माननीय (२) योग्य (३) पुं० बुद्ध (४) बौद्ध भिक्षु अर्हा स्त्री० पूजा; अर्चना अर्द्धावि ० पूज्य (२) स्तुत्य (३) उचित (४) मेळववा लायक अलक पुं०, न० वाळनी लट-गुच्छो (२) कपाळ उपरना वांकडिया वाळ अलकनंदा स्त्री० गंगा (२) तेने मळती [अलकापुरी अलका स्त्री० कुत्रेरनी राजधानी -अलकाधिप, अलकेश्वर पुं० मुबेर अ**लक्त, अलक्तक** पुं० अळतो अलक्षण वि० शुभ चिह्नो विनानुं (२) विशेष चिह्न के लक्षण विनानुं (३) अपश्कतियाळ;अभागी (४) समजमां न आवे तेबु लिक्षण विनान् अलक्षित वि० नहि जोयेम् (२) चिह्न के अलक्ष्मी स्त्री० दुर्भाग्य; दारिद्रघ अलक्य वि० नजरेन पडतुं; अज्ञात; अदृइय (२) चिह्न के लक्षण विनानुं अलघ वि० भारे; वजनदार (२) हस्व नहिं तेवुं; दीर्घं (मात्रा) (३) गंभीर (४) तीक्र अलम् अ० पूरत् - जोईए तेटलुं होय तेम (२) शक्तिमान-समर्थ होय तेम (३) तुल्य -- समान होय तेम (४) बस करो, जरूर नथी - एवा अर्थमा (५) पूरेपूरं - खुब - पुष्कळ होय तेम

असर्क पुं० आठ पगवाळुं एक कल्पित प्राणी (तीक्ष्ण दंष्ट्रा अने कांटाळा बाळवाळुं) अस्तस वि० आळसु (२) सौम्य; मंद (३) थाकेलुं (४) धीमुं; जड अलस्य वि० आळसु अलंकरण न० सुशोभित करवं ते (२) शोभा ; शणगार (३) आभूषण ; घरेणुं अलंकामता स्त्री० संपूर्ण तृष्ति अलंकार पुं० शोभा; सौन्दर्य (२)घरेणुं; कोई पण शोभीती वस्तु (३) शब्द अथवा अर्थनी चमत्कृतिवाळी रचनाः अलंकु ८ उ० शणगाखे; सूरोभित करवुं(२)रोकवुं;बस कराववुं अलं हत वि० विभूषित; रागगारेलुं अलंकृति स्त्री० शोभा; शणगारः(२) धरेणुं (३) शब्द के अर्थनी चमरकृति-वाळी रचना 🖚 अलंकार अलंकिया स्त्री० शणगारवानी किया अलंघनीय, अलंध्य वि० ओळंगी न शकाय तेवं (२)जेने पहोंची न शकाय तेवुं (३) सुरक्षित अलंभूष्णु वि० समर्थः; अक्तिमान अलात पु०, न० खोरणुं; खोरियुं अलाबु (--बू) स्त्री० तुंबडुं अलाभे पुंजन मळवुंते (२) हानि अलि पुं० भमरो अलिक न०कपाळ; ललाट अलिकुल न० भगराओनो समूह अलिन् पुं० भमरो **अलिनी** स्त्री० भ्रमरसमूह अस्तिम वि० चिह्न विनानुं (२) खराब चिह्नवाळु अलिजर पु० माटीनुं मोटुनासण; माण अलिंद पुं० मुख्य बारणा परनुं छजु (२) बारणा आगळनो चोक अलीक वि० अप्रिय; प्रतिकूळ (२) खोटुं; जूठुं (३) न० कपाळ (४) अप्रिय - प्रतिकृळ एवं ते

अलोक्त वि० अदृश्य (२) मिर्जन(३) मरण पछी (सुकृत्यना अभावे) जैने कोई पण लोकनी प्राप्ति थती नशी तेवुं (४)अवकाशनी पारनुं (५) पुं०, न • लोकनो अंत -- विनाश (६) पाताल (७)अभौतिक – आध्यारिमक जगत अलोकसामान्य वि० असामान्य अ**ठोक्य** वि० परलोक – स्वर्ग न प्राप्त करावनारु अलो**मक, अलोमिक** वि० वाळ वगरनुं अलोल वि० शांत; अक्षुब्ध (२) स्थिर; दृढ; चंवळ नहि तेवुं (३)तृष्णा वगरन् **अलोलुस्ब,अलोलुस्ब** न० लोलुपतानो अभाव; विषयो प्रत्ये निरपेक्षता अलौकिक वि० असामान्य; विलक्षण (२) दिग्यः; अद्भुत (३) दुर्लभ **अल्प**ंवि ० नजीवुं;क्षुल्लक(२) थोडुं;नानुं **अल्पक** वि० सूक्ष्म; नानुं (२) नीचुं; हलकुं ; तुच्छ **अल्पन्न** वि० थोडुं जाणनारुं अल्पभी वि० अली बुद्धिवालुं; मूर्ख **अल्पप्राण** पुं० उच्चार करतां ओछो प्रयत्न करवो पडे तेत्रो वर्ण (व्या०) **अत्यभाषिन्** वि० थोडुं बोलनार्हः; मितभाषी अरुपमेधस् वि० टूकी बुद्धि के समजवाळुं अल्पसत्त्व वि० अंल्प बळ के हिमतवाळुं अल्पसार वि० थोड़ी किमतनुं अल्पात् अ० जुओ 'अल्पेन ' **अल्पाल्प** वि० बहु थोडुं अल्पित वि० ओछु करायेलु(२)हलकु पाडेलु; अपमानित अल्पीभू १प० ओछुं थवुं; नाना थवुं अल्पेतर वि० मोटुं; वधारे अल्पेन अ० थोडा माटे; अल्प कारणथी (२)वहु सहेलाईथी , मुश्केली वगर अस्ता स्त्री० मा; माता **अव् १** प० रक्षण करवुं (२) प्रसन्न करवुं; आनन्द आपवो (३) पसंद करवुं;इच्छवुं

अ० उपसर्ग तरीके – दूरता, ओछापणुं, नीचापणुं, एवा वपराय छे (२) क्रियापदना भातूनी पूर्वे - निश्चय, व्यापकता, अवज्ञा, आश्रय-आधार, पराभव, अभाव, आज्ञा, नीचापण्, ज्ञान, एवा अर्थमां वपराय छे अवकर पुं० पूंजो; कचरो अवकर्ष् १० प० सांभळवुं अवकर्तन न० कापवुंते; फाडवुंते(२) रणभूमि विसत् अवकल्पित वि० —ने मळतुं आवतुं;बंध **अवकाश** पुं० प्रसंग;तक;योग्य समय (२) स्थान; जसा (३) आकाशः; खाली जगा (४) वच्चेनो समय; वचगाळो (५) छिद्र; बाकोरुं अवकीर्ण वि० वेरायेलुं; छवायेलुं(२) भागेलु – चूरो करेलु (३) नाश करेलुं (४) व्रतभंग करेलुं; द्वात्य बनेलुं (५) वेरविखेर थतुं; भागी पडतुं अवकुंचन न० संकोचन (२) बांक् वळवं – वाळवं ते अवकुंठित वि० चारे तरफ घेरायेलुं (२) खेंचायेलुं; आकर्षायेलुं अवकृत् ६ प० कापी नाखवुं; फाडी लेवुं अवकृत वि० नीचुं बळेल् अवकृष् १प० जोरधी खेंचवुं (२) र्खेची काढवुं (३) दूर करबुं अवकृष्ट वि० लेंची काढेलु (२) दूर करायेलुं (३)काढी मूकेलुं(४)नीचुं; हलकुं; अधम अवक् ६ प० [अविकरित वेरवुं; विखेरवुं; पाथरवुं (२) छाई देवुं; भरी काढवुं (३) बहार काढवुं(४) खंखेरी काइबुं; तजवुं (५) ६ आ० [अवकिरते] फेलावुं (७)छूटुं पडवुं; खरी पडवुं (८) बेवफा नीवडवुं अवक्लृष् १ आ० -ना समान होवुं ; योग्य

होवुं; शक्य होबुं (२) परिगमबुं; सिद्ध करवुं; मदद करवी --प्रेरक० तैयार करवुं(२) शक्य आनवुं (३) योग्य रीते वापरबुं अवक्रमण पुं०, अवकान्ति स्त्री० नीचे कतरबुंते; कतरी आवबुंते (२) गर्भमां प्रवेश करवो ते अवकोश पुंच गाळ; निदा (२) शाप (३) बेसूरो – कर्कश अवाज अवक्षय पुं० क्षयः; नाग अविक्षिप् ६ ५० काढी नाखत्रुं; फेंकी देवुं (२)ठपको आपवो ; निंदा करवी **अवभुत** वि० छोंक लावाथी के थूंक्याथी अपवित्र थयेलुं आक्षंप अवक्षेप पुं० ठपको ; निंदा (२) बांघो ; **अवगण् १० उ०** अवगणना करवी; उपेक्षा करवी **अवगत** वि० जाणेलुं; समजेलुं (२) जाणीतुं; प्रसिद्ध (३) अवगति पामेलुं (४) स्वीकारेलुं; कबूल राखेलुं अवगति स्त्री० जाणवुं ते; समजवं ते (२) निश्चित ज्ञान **अवगम् १** प० [अवगच्छति | जाणवुं; समजबुं (२) मानवुं; गणबुं (३) खातरी [समजण; निश्चित ज्ञान अवगम पुं०, अवगमन न० ज्ञान; **भवगाद** ('अवगाह्र्'नुं भू० कृ०) वि० अंदर पेठेलुं; डूबेलुं (२) नोचुं; ऊंडुं (३) जेमां स्तान करवामां आवतुं होयः तेवुं **अवगाह् १** आ० स्नान करवु; नाहवु; डूबकी मारवी (२) प्रवेशवुं;ब्यापवुं **भवगाह** पुं०, **अवगाहन** न० स्तान करवुं ते (२) डूबकी मारवी ते; प्रवेशवुं ते (३) विषयनो पूरो अभ्यास करवो ते (४) नाहवानुं स्थान **अवगीत** वि० बेसूर्च गायेलुं (२)निदित; लोकापवाद पामेलुं (३) दुष्ट; गहित; नीच (४) बारंबार बोयेलुं (५) न०

निदा-काव्य (६) ठपको ; निदा(७) बेसूरं गायन **अवगुन** पुं०दोष; खामी **अवगुर् ६** उ० धमकी साथे हुमलो करवो; शस्त्र उगामवुं अवगुरु १ उ० [अवगूहति-ने] ढां ऋतुं; छुरावबु (२) अर्रित्यन करब् **अवगुंठन** न० बुरखो (२) सावरणी अवगुं**ठित** वि० बुरखो नाखेलु;ढांकेलु; छुपावेलुं अ**बगुंकित** वि० गूंथेलुं अ**वग्रह् ९** उ० । अवगृह्णानि-गृह्णीते । ढीलुं मूकवुं (लगाम) (२) छूटुं पाडवुं (३) शिक्षा करवी (४) धक-डावुं – रूबावुं (५)केद पकडवुं; ताबे करवुं (६) सामनो करवो; हकावट करवी (७) पकडवुं (पगश्री) अवग्रह पुं० समासना अवयवो इ० छुटा पाडवा ते (२) 'अ' नो लोप थयो होय, त्यारे 'अं' ने बदले मुकातु आवुं 'ऽ' चिह्न (३) संधिनो अभाव (४) शिक्षा; दंड (५) अनावृष्टि (६) अंकुश(हाथी माटेनो) (७) विघ्न; अंतराय (८) भावना; कल्पना (९) हठ; आग्रह **अवघट्ट् १** आ० धकेली काढवुं (२) तोडवुं; भागवुं (३) स्पर्श करवो; घसवु (४) हलाववु अ**वचात** पुं० हणबुं-मारबुं-प्रहार करवो ते (२) (अनाज) खांडवु ते (३) अकाळ-मरण अवधुष् १ प० ढंढेरो पिटावी जाहेर करवुं(२)बोलाववुं; तेडाववुं(सभा) (३) अवाजयी भरी काढवुं **अवघुष्ट** वि० ढंडेरो पिटावी जाहेर करेलूं (२) बोलावेलुं **अवधूर्ण् १** उ० चकाकार

फेरववुं; आम तेम डोलवुं

अवदूर्ण वि० क्ष्य **मबबृष् १** उ० घसी नाखवुं; भूको करवो **बन्धा १ प०** [अवजिझिति सूघवु (२) चुंबवुं (माथे) **जनधात** वि० सूघेलुं (२) चुंबेलुं अवजन वि० बोल्या वसरनुं; चूप(२) न० कथनतो अभाव ; मौन (३)निदा ; [योग्य (२) अनिद्य **मवचनीय** विं० अश्लील; न बोलवा **अवचय** पुं० एकठुं करवुं ते; दीणवुं ते अविचि ३ प० पूजवुं; सन्मानवुं (२) ५ उ० वीणवुं; चूंटवुं (३) तपासवुं; पसंद करवुं (४) उतारी नाखवुं (कपडुं) अविवासीया स्त्री० वीणवानी इच्छा अवसूह पुं० ध्वज -- निशाननी नीचे लटकतो रखातो वस्त्रनो पटको (२) ध्वजनी टोच उपर रख़ाती चमरी वगेरे शणगार **अबचूडा** स्त्री० माळा; हार अवसूर्ण १० प० चूर्ण बगेरे छाटवु प्रवक्त पुं० जुओ 'अवचूड' **अवस्टब् १०** ५० आच्छादन करवु अवच्छाद पुं० आच्छादन; ढांकण **अबच्छिद् ७** उ० कापर्बु; फाडवुं(२) सीमित करवुं (जेमके स्थळ-काळ इ०थी) (३) जुदुं पाडवुं (विशिष्ट लक्षणोथी) **प्रवच्छित्र** वि० कापी नाखेलुं; जुदुं पाडेलु (२) मर्यादित; निश्चित(३) विशिष्ट गुणोने लीधे जुदुं तरी आवतुं **अविज १**५० जीती लेवुं (२) पाछुं मेळवर् (३) रोकव्; अटकावब् **अवजिति** स्त्री० विजय अवसा ९ उ० | अवजानाति-जानीते] उपेक्षा करवी ; तिरस्कार करवो अवज्ञा स्त्री०, अवज्ञान न० तिरस्कार; अनादर; अपमान [(२)कूको अवट पुं०, अवटि (--टी) स्त्री० खाँडो

अब्दुज पुं॰ माथानी पाछळना वाळ अवडीन न० पंखीनुं ऊडबुं ते (नीजेनी तरफ) अवतत वि० छवायेलुं; ढंकायेलुं(२) ढीलुं करेलुं – छोडी नाखेलुं अवतन् ८ उ० नीचेनी बाजुए फेलावुं (२) उपर छावुं (३) ढीलुं करबुं; छोडी नाखबुं (पणछ) अवतर पुं० अतरवुं ते; अवतरण अवतरण न० नीचे ऊतरबुं ते (२) स्नान माटे जलाशयमां ऊतरबुं ते (३) अवतार – जन्म (४) तदीमा ऊतरवानां पगथियां (५) नाहवानं तीर्थस्थान (६) उतारो; टांचण अवतरणिका स्त्री० ग्रंथने आरंभे टुंकी प्रार्थना (२) प्रस्तावना अवतंस पु०,न० हार(२)काननुं घरेणुं 'एरिंग'(३)माथानु घरेणुं; कलगी (४) भूषणरूप कोई पण बस्तु अ**वता**न पुं० धनुष्यनी पणछ चडाववी ते (२)फेलावो; लता वगेरेनो विस्तार अ**वतार** पुं० नीचे ऊतरवुं ते (२) उत्पत्ति; प्रादुर्भाव (३) पृथ्वी पर देव के ईश्वरनुं अवतरवुं ते (४) रूप; आकृति(५) जळाशय; तीर्य-स्थान (६) ऊतरवानी जगा ; ओबारो अवतीर्ण वि० नीचे अतरेलु; प्रवेशेलु (२) अवतार पामेलुं (३) ओळगी गयेलुं; पार करी गयेलुं अवत् १प० नीचे ऊतरवुं (२) -मां वहेंबुं - भळी जवुं (३) प्रवेशवुं (४) शरू करवुं(५) प्रादुर्भाव थवो (६) मर्त्ये रूपे अवतरवुं (७)पार करव् अवदंश पुं भद्यपान वगेरेनी तलप वधारे तेवुं उत्तेजक खाद्य अवदात वि० निर्मळ; शुद्ध (२) उज्ज्वळ ; तेजस्वी ; श्वेत (३)सुन्दर (४) शुभ; पुण्यदायक

अबदान न० पराऋम; यशस्वी कृत्य (२) दंतकथानुं वस्तु (३) खंडन अवदारण न० फाडवुं - चीरवुं ते (२) कोदाळी अवदीर्ण वि० फाडेलुं; चीरेलुं(२) प्रवाही करेलुं; अोगाळेलुं (३) मूझाबेलुं; गूचवायेलुं अवर ९ प० चोरी नाखवुं; फाडी नाखवुं अबद्ध वि० नहीं प्रशंतवा योग्य (२) हलकुं; नीचुं (३) निद्य (४)दूषित; मामीवाळुं (५) पाययुक्त (६) न० दोष ; खामी ; अपूर्णता (७) दुर्गुण ; पाप (८) निंदा; ठाको अवद्यत् वि० भागी नाखत् अवधा ३ उ० मूकवुं (२) ध्यान आपवुं; मन लगाडवुं(३)बंध करवुं;वासवुं अवधान न० ध्यान; लक्ष; काळजी अवधार पुं , अवधारण न , अवधारणा स्त्री ० निर्णय; निश्चय (२) मर्यादा बांघवी ते अवधारणीय वि० निश्चय करवा योग्य अवभारित वि० निश्चित करेल अवधार्य वि० जुओ 'अवध।रणीय' , अविधि पुं० ध्यान ; लक्ष (२) मर्यादा ; मीमा (स्थळ के समयनी) (३) छेडो; पराकाष्ठा; समाप्ति (४) समयनो गाळो (-थी मांडीने -- सुधी) (५) ठराव ; संकेत ; वायदो (६) प्रमाण ; धोरण अनादर करवो अवधीर् १० आ० अवगणना करवी; अवधीरणा स्त्री० उपेक्षा; तिरस्कार अवशीरित वि० अनादर करेलुं; अव-गणना करेलुं अवध् ५ उ० हलाववुं; कंपाववुं (२) टूर करवुं; खंखेरी नाखतूं (३) तिरस्कारवुं; अवगणदुं अवध्व वि॰ हलावेलुं; कंपावेलुं (२) खंखेरी काढेलुं; तजेलुं (३)अनादृत;

तिरस्कृत (४) फाछळ पाडी देतुं; चडियातुं; पराजित करेलुं(५)सांसा-रिक आसिक्तिथी छूटुं थयेलुं (६) पुं० संसारी संबंधो के आसक्ति त्यागनारो |(३) ક્ષ્લોમ सन्यासी अवधूनन न० हलाववुं ते (२) उपेक्षा **अवध् १०** उ० निश्चय करवो (२) **खातरी करदी (३) विचारवुँ; मानवुं** अबबेय वि० मूकवा योग्य (२) लक्ष आपवा योग्य; मानवा योग्य (३) समजवा योग्य (४) न० ध्यान ; लक्ष अवध्य वि० वध नहि करवा योग्य **अवध्यं १प**० ध्यान न आपजुं; अवगणना करवी अबन न०रक्षण अवनत वि० नीचुं नमेलुं अवनति स्त्री ० नीचुं नमवुं ते (२) वंदन; नमन अवनद्धं वि० बांधेलुं (२) मढेलुं (३) न० मृदंग; ढोल अवनम् १ प० नीचे नमी पडवुं (२) नमन अवनाह पुं० बांधवुं ते (२) बांधवानुं अविन स्त्री० पृथ्वी अवनिज पुं० मंगळ ग्रह अवनिभृत् पुं० पर्वत (२) राजा अवनिरुह पुं० वृक्ष अवनी स्त्री० जुओ 'अवनि ' अवपात पुं० पडवुं ते (२) खाडो (३) हाथी पकडवानो खाडो अवपीड् १०प० दावतुः, चांपतु अवप्लु १ आ० क्दत्रुं; कूदको मारवो अवबुध् ४ आ० जागवु (२) जाणवुं (३) ओळख बुं – प्रेरक० जगाडवु (२) याद कराववुं(३)बोध आपवो;उपदेशवुं अवबोध पुं० जागत्रंते (२) जाणवुंते; ज्ञान (३) विवेकज्ञान (४) उपदेश

अवबोधक वि० दर्शावनारुं; सूचवनारुं (२) बोध – ज्ञान आपनारुं (३) पुं० जगाडनार – सूर्य (४) वैतालिक; चारण (५) गुरु; अघ्यापक (६) इरादो; विचार अवभास् १ आ० प्रकाशवुं ; प्रगट थवुं अवभास पुं० प्रकाश;, तेज (२) ज्ञान (३) आविर्भाव (४) मिध्या ज्ञान अवभुग्न वि० वांकुं वळेलुं **अवभृष** न० यज्ञनी पूर्णाहुति (२) यजनी पूर्णाहुति वखते करातुं स्नान अवम वि० पापयुक्त; दुष्ट (२) नीच; अधम (३) हलकुं; ऊतरतुं (४) पछीनुं; नजीकनुं (५) सौथी नानुं – छेवटनुं (६)क्षय पामतुं ; घटतुं **अदमत** वि॰ उपेक्षित (२) तिरस्कृत अवमन् ४ आ० उपेक्षा करवी; तिर-स्कार करवो (२)हलकुं पाडवुं; हलकुं गणव् |ते; विध्वंस **अवसर्व** पु॰ कचरी नाखवुं ते; उजाडवुं **अवमर्श** पुं॰ स्पर्श अवमर्ष पुं० आलोचना; विचारणा अवमर्षण न० असहिष्णुता (२) भूंसी काढवुं ते; भूली जबुं ते अवमान पुं अवमानन न ०, अवमानना स्त्री० अवगणना; अपमान; तिरस्कार अवसूत्र् ६ प० स्पर्श करवो (२)विचारवं –प्रेरक० अडके एम करवं (२)ध्वस करवो अदेषव पुं० आखी वस्तुनो एक विभाग -अंश (२) शरीरनी भाग (३) साधन -- उपकरण (४) शरीर **अवर** वि० नानुं (वयमां) (२) पछीनुं; पाछलुं (समय के स्थळमां) (३) नीचुं; हलकुं; सौथी नीचुं (४) पश्चिमनुं (५) छेल्लुं (६) अत्यंत श्रेष्ठ **अवरज** वि० पाछळथी जन्मेलुं; नानुं **अवर**त वि० थोभेलु; अटकेलुं (२) विश्राति करत्

अवरति स्त्री० योभवुं - अटकवुं ते (२) विश्वांति **अवरद्ध** वि० अटकावायेलुं; रूधायेलुं (२) गोंधी राखेलुं;पूरी राखेलुं (३) छुपा वेशवाळ् अवरुष् ७ उ० अटकाववुं हकावट करवी (२) पूरी राखवुं; घेरी लेवुं अवरह प० नीचे ऊतरवुं; नीचे जबुं – प्रेरक ० [अवरोहयति,अवरोपयति] नीचे उतारवूं के स्थापवुं (२) गादी उपरथी उठाडी मूकवुं(३)रोपवुं (वृक्ष) अवस्य वि० नीचे ऊतरेलुं (२) मूळमांथी उखाडेलुं अवरेण अ० नीचे **अवरोध** पुं० विष्नः; अटकादः; अंकुश (२) अंतःपुर (३) वाड; वाडो; पूरी राखवानी जगा(४)ढांकण(५) चोकीदार (६) घेरो (७) **खाडो** अवरोपण न० उपाडी – उखेडी ना**स**यं ते (२) नीचे उतारी पाडवुं ते (३) रोपवंते अवरोह पुं० नीचे ऊतरबुं ते (२) बृक्षने वींटायेलो वेलो (३) स्वर्ग (४) ऊंचा स्वर परथी नीचा स्वरमा आववं ते (संगीत०) (५) उपर चडवुं ते (६) वडवाई जेवुं मूळ अवर्ण वि॰ रंग विनानुं (२) हीन; सारा गुण वगरनुं (३) पुं० अपवाद – कलंक (४) निदा अवर्ष पुं० अनावृष्टि अवलंब् १० आ० लटकर्वु; वळगवु (२) आधार – टेको लेवो (३) विलंब करवा; मोडा थवुं अवलंब पुं०, अवलंबन न० आश्रय: आधार; देको अवलंबित वि० आधये रहेलुं (२) लटकर्तु (३) आधीन (४) शीघ्रा;

उतावळू (५) नीचे ऊतरेल्

अवलिप्त वि० अभिमानी; गविष्ठ (२) लेपायेलुं; सरडायेलुं **अवलीढ** वि० चाटेलुं (२) खाघेलुं अवलुंचन न० खेंची काढवुं ते; उपाडी [(२) लूंटी लेवुं ते नाखवुं ते **अवलुंठन न०** आळोटवुं के गबडवुं ते अ**वलुंपन** न० एकदम धसी आववुं ते अवलेप पुंज, अवलेपन नव लेप (२) अहंकार; गर्व (३) संग; ऐक्य (४) शोभा; भूषा अवलेह पुं० चाटवुं ते (२) चाटण अवलोक् १ आ०, १० प० जोवुं; निहाळवु; नीरखवु अवलोक पुं०, अवलोकन न० जोधुं ते; निहाळवुं ते (२) जोवानी शक्ति; नेत्र **अवस्रोकित** वि० जोयेलुं;तपासेस्टुं(२) म० दुष्टि; नजर -चुबब ते अवस्रोप पुंज कापी लेवुं ते (२) करडवुं अर्वज्ञ वि० स्वतंत्र; स्वाधीन (२) कोईने वश न थाय तेवुं; असंयत (३) परवश; पराधीन (४) निश्चित; आवश्यक अवशिष् ७ प० (घणे भागे कर्मणिरूप वपराय छे) बाकी रहेवुं; अवशेष रहेवुं अवशिष्ट वि० बाकी रहेलुं; शेष रहेलुं अवशीर्ण वि० भागेलु; फुरचा ऊडी गया होय तेवुं अवश् ९५० भागी जबुं; फुरचा ऊडी जवा (२) चोतरफ ऊडवुं-वीखरावुं अवशेष पुं० बाकी रहेलो -- बचेलो भाग अवदय वि० वश न करी शकाय तेयुं; दुर्दान्त (२)अनिवार्य (३)आवश्यक **अवदयम् अ०** निःसंशय; नक्की; खचित अवस्यंभाविन् वि० अनिवार्यपणे थवान् होय तेवुं (२) श्ववाने निर्मायेलुं अवश्याय पुं० हिम; भूमस; झाकळ (२) गर्वः; अभिमान **अवब्दब्य** वि० पकडेलुं; टेको लीघेलुं (२) नजीकनुं; पासेनुं (३) रुकावट

पामेलुं; अटकावायेलुं (४) बांधेलुं; जोडेलुं (५) जक्की; हठीलुं (६) पाछळ पाडी देवायेल् अवष्टं भ् ५,९ प० टेको लेवो ; आधार लेको (२) रोकवुं (३) ढांकवुं; आवरवुं (४)टेको आपवो ; पकडवुं ; वळगबुं अवष्टंभ पु० अभिमानः गर्व (२) आश्रयः; टेको(३) धैर्य ; दृढ़ निश्चय (४) लक्षो; जकडाई जवुं ते (५) उत्तमता अवसक्त वि० वळगेलुं; संलग्न अवसक्थिका स्त्री० केड अने ढींचणनी आसपास कपडुं बांधीने बेसवुं ते **अवसथ** पुं० रहेठाण; निदास (२) गाम (३) पाठशाळा; मठ अवसद् १प० [अवसीदति] बेसी पडवुं; खिन्न थवुं; मूर्छित थवुं (२) निराज्ञ थवुं; थाकी जवुं (३) नाश **पामवुं;** बरबाद थवुं अवसन्न वि० खिन्न; निराश; हताश; नाउमेद (२)नष्ट; रहित; दूर थयेलुं (३) पोतानुं कार्यं करवाने अशक्त **अवसर** पुं० प्रसंग; तक; समय (२) योग्य समय (३) जगा; अवकाश (४) समय; फुरसद अवसर्ग पुं वस्वतंत्रपणुं; पोतानी मरजी प्रमाणे चालवानी छूट अवसंज् १ प० [अवसजित] वळगवुं (२) वळगाडवुं; मूकवुं अवसाद पुं • बेसी पडवुं ते ; बेहोश थवुं ते (२) अंत; नाश (३) कामकाज करवानी अशक्ति अवसादन न० विनाश (२) पोतानुं काम करवानी अशक्ति अवसान न० विराम; समाप्ति; अंत (२) मृत्यु (३) सीमा; हद (४) {(३) निश्चय शोभवुते अवसाय पुं॰ अंत; समाप्ति (२)अवशेष अवसायक[े] वि० विनाश करनारं

अवसित वि० पूर्ण थयेलुं (२) जाणेलुं; निश्चित; खातरी करेलुं (३) सारी रीते बांधेलुं **अवसृज् ६** प० फेंकवुं (२) काढी मूकवुं; *छूटुं* करवुं (३) तजदुं; पडतुं मूकवुं (४) सर्जेवुं ; घडवुं आपेलुं (२) त्यागेलुं अवसृष्ट ('अवसृज्'नुं भू० कृ०) वि० अवसेक पुं० अभिषेक करवो ते; पाणी छांटव्ं ते [अभिषेकनुं जळ अवसेचन न० पाणी छांटवुं ते (२) अवसो ४ प० [अवस्यति | पूरुं करवुं;सिद्ध करवुं (२) निश्चय करवो; समजवुं (३) उत्तरवुं; मुकाम करवो (४) नाश करवो (५) निष्फळ जबुं;अंत आवदो (६) जाणवुं (७) मुक्त करवुं; छोडवुं (८) दृढ रहेवुं; आग्रही रहेवुं **अवस्कर** पुं० विष्टा (२)गुह्य भाग (३) कुडोकचरो मारवो **अवस्कंद् १** प० हुमलो करवो (२) कूदको **अवस्कंद** पूं०, **अवस्कंदन** न० आऋमण; हुमलो (२) ऊतरवुं ते (३) लक्करनी छावणी (४) आरोप; आक्षेप **अवस्कृ ६** उ० [अवस्किरति-ते| खणवुं; खोतरव् **अवस्तरण** न०, **अवस्तार** पुं० ढांकण ; आच्छादन (२) पाथरणुं **अवस्तु** न० नकामी – तुच्छ वस्तु (२) सत् न होवुं ते; मिथ्यापणुं अवस्तु ९ प० [अवस्तृणाति] पाथरवं (२) ढांकवुं (३) व्यापबुं अवस्था १ आ० [अवतिष्ठते] रहेवुं (२) वळगी रहेवुं; अनुसरवुं (३) जीवता रहेवुं (४) स्थिर ऊभा रहेवुं; थोमवुं (५) अळगा थवुं - रहेवुं -प्रेरक० [अवस्थापयति-तें] मूकवुं; राखवु; स्थापित करवुं (२) स्थिर करवुं; दृढ़ करवुं; आक्दासन आपवुं (३) छूटुं पाडवुं; जुदुं करवुं

अवस्था स्त्री० स्थिति; हालत (२) परिस्थिति (३) दशा; भूमिका (४) स्वरूप; आकार (५) प्रमाण (६) स्थिरता; दृढता **अवस्थाचतुष्टय** न० बाल्य, कौमार, यौवन अने वार्धक्य, ए चार दशाओ अवस्थात्रय न० जागृति, स्वप्न अने मुष्पित, ए त्रण अवस्थाओ अवस्थाद्वय न० जीवननी बे स्थितिओ –सुख अने दुःख अवस्थान न० रहेवुं ते (२) रहेठाण; निवास (३) स्थिति (४) दृढता; स्थिरता (५) आधार; टेकी अवस्थित वि० रहेलुं; वसेलुं (२) दृढ; स्थिर (३) सज्ज; तत्पर (४) स्थिर; निश्चेष्ट (५) व्यवस्थित अवस्थिति स्त्री० रहेवुं ते (२) निवास अवहन् २ प० मारी नाखवु;नाश करवो; दूर करवुं (२) झूडवुं; छडवुं अबहार पुं० चोर (२) झूड; मगर-भच्छ ;ग्राह (३)युद्धविराम ; लश्करने रणमेदानमाथी खसेडी लेवुं ते (४) बोलाववुं – निमंत्रवुं ते (५) थोसबुं – अटकव् ते अवहार्य वि० लई जवा योग्य (२) दंड --सजा करवा योग्य (३) पूरुं करवा योग्य (४) पाछुं आपवा योग्य; भरपाई [मश्करी (३)ठेकडी करवा योग्य अवहास पुं ० स्मित; हास्य (२) मजाक; अवहित वि० मूकेलुं (२) एकाग्र; सावधान (३) प्रस्यात अवहेल पुं॰, अवहेलन न॰, अवहेलना, अवहेला स्त्री० अपमान; अनादर;

तिरस्कार

अवंति (-ती) स्त्री० माळवानी प्राचीन

अवाक् अ० नीचे (२) दक्षिण तरफ

ंराजधानी – हालनुं उज्जन अबंध्य वि० सफल; फलोत्पादक

फेरफार - विकिया

अविक्रिय वि०

नीचा अवाग्मुख, अवाङ्मुख वि० मुखवाळु; नीचे मींए जोत् अवाच् वि० मूंगुं अवाच् वि० जुओ 'अवाच् ' अवासी स्त्री० दक्षिण दिशा (२) पाताळ अवासीन वि० अधोमुख (२) नीच; निद्य (३) विपरीत; प्रतिकूळ (४) दक्षिण दिशा तरफन् अवाच्य वि० न कहेवा लायक;न बोलवा लायक(२)शब्दमां न वर्णवी शकाय तेव् अवाध्य वि० दक्षिण तरफनुं अवाप् ५ प० प्राप्त करवुं;मेळववुं (२) पहोंचवुं (३) सहत करवुं; वेठवुं अवाप्त वि० प्राप्त करेलुं; मेळवेलुं अवाप्ति स्त्री० प्राप्ति; मेळवव् ते अवार पुं० आ तरफनो किनारो अवारपार पुं समुद्र अवारितद्वार वि० खुल्ला वारणांवाळुं अबारितम् अ० विष्न के रुकावट विना; मरजी मुजब अवांच् वि० नीचे वळेलुं; नीचे नमेलुं (२)-थी नीचे आवेलुं (३)दक्षिणनुं अवांखित वि० नीचे नमावेलुं (२) नीचे टपकत् अवांतर वि० वच्चेनुं (२) समाविष्ट; अंदर आवेलुं (३) गौण (४) बाह्य; ∣दिशाओ वच्चेनो खुणो आगंतुक अवांतरदिश्, अवांतरदिशा स्त्री० वे **अविकत्थन** वि० बडाई – आत्मश्लाघा |विसंवादी नहि तेवुं न करनार्ह अविकल वि० सकल; संपूर्ण; आखु (२) अविकल्प पुं० शंकानी अभाव (२) विकल्पनो अभाव अविकल्पम अ० नि:शंक अविकार वि० फेरफार न थाय तेवुं अ**विकार्य** वि० विकार न पामे एवुं; विकाररहित अविक्रम वि० पराक्रम – बळ विनानुं

विमान् अविष्न वि० हरकत – विष्न विनानुं (२) न० विष्ननो अभाव;कल्याण **अविचारित** वि० बराबर नहि विचारेलुं (२) जेमां विचारवापणुं बाकी नथी तेवुं - निश्चित; स्पष्ट अविचारिन् वि० विचार न करे तेवुं; अविचारी; उतावळुं **अवितय वि० अ**सत्य नहि ते**वुं** – सत्य (२) निष्फळ नहीं तेवुं – सफळ अविदग्ध वि० कुशळ नहि तेवु; बिन-अनुभवी; मुर्ख अविद्रुषक वि० निर्दोष अविद्य वि० विद्या वगरनुं; अज्ञानी **अविद्या** स्त्री० अज्ञान (२) ईश्वर संबंधी अज्ञान -- माया पोकार **अविषा** अ० 'धाजो' एवो मदद माटेनो अविषेष वि० अनियंत्रित; प्रतिकृळ; काबूमांन राखी शकाय तेवुं अविनय पुं० अविवेक; असभ्यता (२) दुर्वेतंन; उद्धताई (३) अभिमान(४) दोप: अपराध अविनाभाव पुं० एकबीजा विना रही के होई न शके तेवो भाव के लक्षण अविनीत वि० अशिक्षित; असंस्कारी (२)असभ्य ; अविनयी (३) उद्धत अविभक्त वि० संयुक्त; भागला नहीं पडेलुं (२) अखंड; एकरूप (३)भिन्न नहि तेव् अविभाव्य वि० नजरे न देखी शकाय तेवुं अविमृष्य वि० शंका वगरनुं; निश्चित **अदिरत** वि० न अटकेलुं; सतत चालु रहेतु, अखंड **अबिरतम्** अ० सततः; निरंतर (२) गाढपणे; अलंडितपणे (अधवुं) **अविरल वि० जा**डुं; घट्ट(२)सतत चालतुं (३) नजीकर्नु; पासेनुं (४) स्थूळ; मोट्

अविरलम् अ० गाढपणे (२) सतत; निरंतर निहि तेवुं अविरहित वि० छूटुं न पडेलुं; -- विनानु अविरामम् अ० सततः; निरंतर अविलक्ष्य वि० निष्कपट ; बहाना विनान् (२) उद्देश विनानुं (३)लक्ष विनानुं (४) उपाय – प्रतीकार विनानुं अविलंबितम् अ० उतावळे; जलदीथी अविवेक वि० विवेक-विचार विनानुं (२) पुं० अविचारीपणुः; उतावळिया-पणुं; साहस (३) जुदुं न पाडवुं ते अविशेष वि० समान; तुल्य (२)पू०, न० समानता (३) ऐक्य; तादातम्य अविशेषज्ञ वि० भेद नहि जाणनारु; विवेक नहि करनारुं **अविशेषतः** अ० भेद पाडया के समज्या **अविश्वान्त** वि० विश्वांति माटे थोम्या विनानुं ; न अटकेलुं अ**विश्रान्तम् अ०** सतत अविषक्त वि० लागेलुं – वळगेलुं नहि तेवुं (२) नियंत्रित नहि तेवुं अविषय वि० अगोचर; अदुश्य (२) विषयो तरफ न वळेलुं – न वळगेलुं (३)पुं० अभाव;न देखावुं ते (४) गोचर न होवुं ते; -थी पर होवुं ते (५)इंद्रियोना विषयो तरफ उपेक्षा **अविषह्य** वि० सहन न करी शकाय तेवुं (२) बीजाओथी पराभव न पामे तेवुं; दुर्धर्षे (३) निश्चय न करी शकाय तेवुं (४) अगोचर अविष्कर पुं० कूकडो अविसंवादिन् वि० बराबर मळत् आवत् (२) जूठुं न पडतुं अविहत वि० विरोध के रुकावट विनानुं अविहा अ० अरेरे! |निषिद्ध **अविहित** वि० शास्त्रीक्त नहि तेवुं; अवी स्त्री० रजस्वला स्त्री **अवीचि** वि० मोजा विनान्

अवृत्ति वि० निर्वाहना साधन विनातुं (२)अविद्यमान (३)स्त्री० निर्वाहना साधननो अभाव (४) वेतन अथवा मजुरीनो अभाव अवे (अव + इ) २ प० जाणवुं; समजवुं अवेक् १ आ० जोबुं; तपासबुं(२)लक्षमां लेवुं; नजर समक्ष राखवुं (३)संभाळ राखर्वी; रक्षण करवुं (४) विचारवुं (५) आशा राखवी **अवेक्षण** न० जोवूंते (२) तपास; देखरेख; काळजी अवेद्य वि० न जाणी शकाय तेवुं; गृढ (२) न प्राप्त करी शकाय तेवुं **अवेलम्** अ० समय विना; कसमये अ**बैध** वि० शास्त्रमान्य नहि तेवुं; विधि – कानून मुजबन् नहि तेबुं अञ्चन्त वि० अस्पष्ट; अप्रगट(२) अदृश्य; अगोचर (३) न० परब्रह्म (४) अज्ञान; अविद्या(५) सूक्ष्म शरीर(६)मूळ प्रकृति(सांख्य०) अव्यक्तम् अ० अस्पष्टपणे अञ्चय वि० व्यग्ननहितेवुं; स्वस्थ; शांत (२) कामकाजमां के अंधामां नहि लागेलुं (३) नि:स्पृह; उदासीन (४) लक्ष – काळजीवाळुं अव्यग्रम् अ० स्वस्थताथी; आरामथी अव्यभिचार पुं० नित्य साहचर्य(२) एकनिष्ठा; वफादारी अध्यभिचारिन् वि० अनुकूळ सद्गुणी; पवित्र; नीतिमान (३) एकनिष्ठ; वफादार (४) बधी वखते एकसरखु; अपवाद रहित अव्यय वि० न बदलाय एवं; शास्वत; अविनाशी (२) न खरचेलुं (३) कर-

कसरवाळ्(४)अविनाशी फळ आपनारुं

(५) न० सर्वे जाति, दचन अने

विभिक्तमां न बदलानार शब्द (व्या०) अञ्यलोक वि० सत्य (२) प्रिय; अनुकूळ अव्यवघान वि० समीपनुं; पासेनुं(२) खुल्लुं (३) असावधः; बेदरकार **अव्यवसायिन्** वि० उद्यम रहित (२) अनिश्चयी अन्यवस्थ, अन्यवस्थित वि॰ चंचळ; अस्थिर(२)व्यवस्था वगरनुं;अनियमित (३) कायदो के व्यवहारने न अनुसरत् अन्यवहित वि० लगोलगन् ; तद्दन पासेन् अञ्याकृत वि० प्रगट नहि थयेलुं; अञ्यक्त (२) समजमां न आवे तेवुं;अतर्क्यं अव्याज वि० निष्कपट; कृत्रिम नहि तेवुं; स्वाभाविक (२) पुं०, न० स्वाभाविकता; अक्रुत्रिमता अज्यापार वि० काममां न रोकायेलुं; काम विनानुं (२) पुं० कामकाज न होबुं ते (३) पोतानुं काम नहि ते अख्याहत वि० जेनो भंग – विरोध के रुकावट न कराता होय तेवु;जेनु पालन थत् होय तेव् अब्युत्पन्न वि० अकुशळ; अप्रवीण ; अनुभव विनानुं (२) व्युत्पत्तिथी सिद्ध नहि थयेलुं (ब्या०) अश् ५ आ० व्यापवुं (२)पहोंचवुं (३) मेळववुं; भोगववुं; अनुभववुं (४) एकठ् थव् भोगवव् अञ् ९ प० (कदीक आ०) खावुं(२) **अज्ञक्त** वि० असमर्थे; अशक्तिमान अशक्ति स्त्री० निर्बळता; नवळाई अशक्य वि० शक्य नहि तेवुं;असंभव अकान न० व्यापवृते (२) खावृते; भोगववंते (३) अन्न अञ्चना, अञ्चनाया स्त्री० भूखः; खावानी अक्षानि पुं०, स्त्री० इंद्रनुं वच्च (२) बीजळी (३) अस्त्र अशब्द वि० शब्दमां प्रगट नहि करेलुं (२) शास्त्रमां नहीं दर्शावायेलुं (३) पुं० निदा; गाळ [अ।श्रयरहित **अशरण, अशरण्य** वि० निराधार;

अक्षरीर वि० शरीर रहित; अमूर्त (२)पुं० परमात्माः(३)कामदेव अज्ञरीरिन् वि० शरीर विनानुं (२) दैवी; गरीरधारी वडे न बोलातुं अञ्चर्मन् वि०दुःखी (२) न०दुःख अशंक, अशंकित वि० निर्भय (२) शंकारहित |नीतिबिरुद्ध अशास्त्रीय वि० शास्त्रविरुद्ध (२) <mark>अशित ('</mark>अश्'नुं भू० कृ०) वि० खाघेलुं (२) भोगवेलुं अशिव वि० अशुभ; अकल्याणकारी (२) कमनसीब (३) उग्र (४) न० दुर्भाग्य अज्ञिज्ञिर वि० ठंडुं नहि तेवुं -- गरम अज्ञिष्ट वि० असंस्कारी; ग्राम्य (२) शास्त्रमां नहि उपदेशेलुं; शास्त्रविहित नहीं एवं अशुचि वि० स्वच्छ नहि तेवु; गंदु; अञ्च वि० अपवित्र (२) खोटुं; मुलवाळ् अञ्चभ वि० अमंगळ; अपशुकनियाळ (२) पापी (३) कमनसीव (४) न० पाप; शरमभरेलुं कृत्य (५) कमनसीबी अज्ञान्य वि० खाली नहि तेवुं (२) सूनुं नहि तेव् तमाम अञ्चेष वि० शेष विनानु; संपूर्ण; पूरेपूरु; अञ्चेषतः, अशेषम्, अशेषेण अ० पूरेपूरुं होय तेम; कई पण बाकी न रहे तेम अशोक वि० शोकरहित(२)पुं० তাল पुष्पवाळुं एक वृक्ष (३) सुख अशोच्य वि० शोक नहि करवा योग्य **अशोभन** न० दोष; अपराध; भूल अशीच न० अपवित्रता; अशुद्धि; गदकी (२) सूतक अशौंडीर्घ न० कायरता; असामर्थ्य (२) स्वाभिमाननो अभाव **अञ्चन्** पु० शिला; पथ्थर(२) चकमक अश्मवर्ष पुं० करानो वरसाद अक्ससार वि० लोढा के पथ्थर जेंबुं (२) पुं०, न० लोढुं (३) करवत

अश्मंतक पुं० एक वृक्ष (अम्लोटक, कोविदारक इ०) (२) एक घास अश्व पुं० खुणो (मोटे भागे समासने छेडे) (२) न० आंसु (३) लोही अभद्धान वि० श्रद्धान करतुं अश्रद्धाः स्त्री० अविश्वासः; अनास्था **अश्रद्धेय** वि० विश्वास न करवा योग्य अश्राव्य वि० न सांभळवा लायक; न सांभळी शकाय तेवुं **अश्चांत** वि० नहि थाकेलुं (२) अ० थाक्या विना; सतत **अधि, अश्रो** स्त्री० खूणो (घर के औरडानो) (२) धारवाळी बाजु (शस्त्र इ० नी) अश्री स्त्री० दुर्भाग्यनी देवी अश्रीक वि॰ दुर्भागी; समृद्ध नहि तेवुं अश्रीमत् वि० दुर्भागी; कमनसीब अभील वि० जुओ 'अश्रीक' **अभुन**० आंस् अश्रुत वि॰ नहि सांभळेलुं (२) वेदथी विरुद्धनुं (३) शास्त्र नहीं **भ**णेलुं; अशिक्षित असभ्य; ग्राम्य अक्लोल वि० बीभत्स; नठाएं (२) **अक्ट** पुं० घोडो अश्वतर पुं० खच्चर अञ्चलरी स्त्री० खच्चरी अञ्चत्य पुं० पीपळानुं वृक्ष अश्वपाल पुं० घोड़ानो खासदार **अश्वमुख** पुं० किन्नर अरवमुखी स्त्री० किन्नरी अश्वमेध पुं० एक यज्ञ, जेमां दिग्विजय करी आवेलो घोडो होमवामां आवे छे अश्वशाला स्त्री० घोडानो सबेलो अञ्चलाद, अञ्चलादिन् पुं० घोडेसवार सैनिक अश्वस्तन, अश्वस्तनिक वि० कालनुं नहि – आजनुं (२) कालने माटे संघरो न करनारुं

अश्वहृदय न० अश्वविद्या अरुका स्त्री० घोडी ट्रिकडी अक्वारोहणीय न०हयदळ;घोडेसवारोनी अदिवनीकुमारौ, अदिवनौ पुं ० (द्विवचन) देवोना वैद्य गणाता बे देवो **अधाढ** पुं० असाड महिनो अष्टक वि० आठ भागनुंबनेलुं (२) न० ऋग्वेदना आठ भागमांनो दरेक (३) आठनो कोई पण समुदाय अष्टधा अ० आठ प्रकारे **अष्टघातु** पुं० आठ श्रातुओ (सोनुं, रूपुं, तांबुं, कथीर, पीतळ, सीसुं, लोढुं, पारो) अष्टन् वि० आठ अष्टपद पु॰ करोळियो (२) शरभ नामनुं आठ पगवाळुं एक कल्पित प्राणी (३) कैलास पर्वत (कुबेरनुं धाम) (४) पुं०, न० सोगठांबाजीनो पट **अष्टभुजा** स्त्री० महालक्ष्मीदेवी अष्टभोगाः पुं० (ब० व०) आठ भोगो (अन्न, उदक, तांबुल, पुष्प, चंदन, वसन, शय्या, अलंकार) **अष्टम** वि० आठम् अष्टमहासिद्धयः स्त्री० (ब०व०)आठ सिद्धिओ (अणिमा, महिमा, रुघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशिता, वशिता) अष्टमंगल पुं० चार पग, कपाळ, छाती खांघ, तथा पूंछडी जेनां घोळां होय तेवो घोडो अष्टमी स्त्री० आठमी तिथि; आठम

(२) न० राज्याभिषेक वस्त्रतनी आठ

शुकनियाळ वस्तुओनो समूह: सिंह,

वृषभ, गज, कलश, पंखो, निशान,

वाद्य, दीप (३) शुक्रनियाळ गणाती

आठ वस्तुओ (ब्राह्मण, अग्नि, गाय,

अष्टमृति पु० शंकर (पृथ्वी, जळ, अग्नि,

वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, ऋत्विज 🗕

सुवर्ण, घृत, सूर्य, जळ, राजा)

एवां आठ रूपवाळा)

अष्टरसाः पुं० ब० व० श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत - ए आठ रसो अष्टविवाहाः पुं० ब० व० ब्राह्म, दैव, आर्ष, गांधर्वे, राक्षस, प्राजापत्य, आसुर अने पैशाच – ए आठ विवाहो अष्टिसिद्धयः स्त्री० ब०व० जुओ 'अष्ट-महासिद्धय: ' अष्टाध्यायी स्त्री० पाणिनी-रचित व्याकरण (आठ अध्यायवाळु) **अष्टापद** पुं० जुओ 'अष्टपद' पुं० (२) पुं०, न० सूवर्ण **अध्टाबक** पुं० एक ऋषि (तेमनां आठ अंग वांकां हतां तेथी) **अष्टांग** वि० आठ अंगवाळ् (२) न० शरीरना आठ अग – बे हाथ, बे पग, बे ढींचण, छाती तथा कपाळ (के वाचा तथा मन), अथवा हाथ, पग, ढींचण, छाती, माथुं, मन, वाणी अने दृष्टि - जेमना वडे दंडवत् प्रणाम करवामां आवे छे ते **अध्य, अध्य** स्त्री० बीज (२)ठळियो अस् २ प० थवुं; होवुं (२) ४ प० फेंकवुं (३) दूर होकी काढवुं (४) डरावी काढवुं (५) तजबुं; छोडवुं (६) १ उ० जबुं (७) ग्रहण करबुं (८) प्रकाशवुं; दीपवुं असकृत् अ० वारवार **असक्त** वि० आसक्ति के संग विनानु (२) **फ**लेच्छारहित **असक्तम्** अ० आसक्ति विना (२) तरत ज (३) सतत; रुकावट विना असक्ति स्त्री० अनासक्ति; संगरहितता **असच्चेष्टित** न० न्कसान ; पीड़ा ; दु:ख असत् वि० अस्तित्वमां न होय तेवुं (२) असत्य (३)दुष्ट; खराब (४)अव्यक्त; अप्रगट (५) कशुं परिणाम लाबी न असती स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री असत्कृत वि० अपमान करायेलुं असत्ता स्त्री० अस्तित्वनो अभाव (२) असत्यता (३) दुष्टता; दुराचरग असत्य वि० खोटुं; जूठुं (२) काल्पनिक; अवास्तविक(३) जेनुं परिणाम निश्चित नथी तेब् असदृश वि० असमान (२) अनुचित **असद्ग्रह, असद्ग्राह** पुं० बालिश इच्छा (२) खराब अभिश्राय; पूर्वेग्रह असद्भाव पुं० न होवुं ते; अभाव (२) दुष्ट के खराब अभिप्राय (३) खराब स्वभाव असर्वृत्ति वि० दुष्ट वृत्तिवाळुं; दुष्ट विचारवाळुं (२) स्त्री० खराब धंधो; हलको घंधो (३) दुष्टता असन् न० लोही (बीजी विभक्ति बहु-वचन पछी 'असुजु'नां रूपोमां ज) अ**सम** वि० समान नहि तेवुं; असमान (२) बेकी (संख्या) (३) अजोड(४) खाडा टेकरावाळ् |आगतुक असमवाधिन् वि० जुद् पाडी शकाय तेवुं; असमंजस वि० अस्पष्ट; समजी न शकाय तेवुं (२) अनुचित; अयोग्य (३) मूर्खाईभरेलुं असमीक्ष्य अ० वगर विचार्ये असमीक्ष्यकारिन् वि० वगर विचार्युं काम करतारु असमेत वि० न आवेलुं; गेरहाजर असम्यंच् वि० ठीक नहि तेवुं; अघटित (२) अपूर्ण; अधुरुं असह, असहन वि० असहिष्णु; अधीरुं (२) सहन न करी शके तेवुं (३) ऊंचकी न शके तेव् असहन पुं० शत्रु (२) न० असहिष्णुता असहनीय वि० जुओ 'असह्य' असहाय वि० मित्र के साथी विनानुं; एकलुं; मददगार विनानुं

शके तेवुं

असहिष्णु वि० सहन न करे तेवुं (२) द्वेषी; ईर्ष्याळ् िशक्य नहीं तेबु असह्य वि० सहन न थई शके तेवुं(२) असंस्य, असंस्थात, असंस्थेय वि० अगणित; गणी न शकाय तेवुं असंग वि० संसारमां आसन्ति विनानुं (२) अकुंठित; बाधारहित; (३) संग – संबंध रहित; एकलुं **असंगत** वि० न जोडायेलुं;असंबद्ध (२) मेळ न खाय तेवुं; असमान(३)अनुचित; अशिष्ट (४) बाधारहित; अकुंठित असंगति स्त्री ॰ संगत - सोबत - मेळनो अभाव (२) असंभव असंज्ञ वि० मूर्च्छित; बेभान असंज्ञा स्त्री० मतभेद; विवाद **असंदिग्ध** वि० संदेहरहित; निश्चित **असनद्ध**िव ० शस्त्रसज्ज नहि थयेलु (२) पोते पंडित छे एम माननारुं असंनिधान न०, असंनिधि पं० दुर होवापणुं (२) अभाव असंनिवृत्ति स्त्री० फरी पाछुं न फरवं ते; कायम माटे जबुते **असंपात** पुं० निष्क्रियता; कामकाज वंध करवुते अ**संबद्ध** वि० संबंध वगरनुं (२) अर्थ असंबाध वि० भीड वगरन् (२) खुल्लुं; अवर जवर थई शके तेवुं (३) पीडा विनान् असंभव वि० अशक्य; असंभवित (२) पुं० अशक्यता (३)अस्तित्व न होवं ते असंभावना स्त्री० असंभव (२)कल्पवानी मुश्केली के अशक्यता (३) अनादर असंभावनीय वि० असंभवित (२)कल्पी न शकाय तेवुं असंभावित वि० -ने लायक नहि तेवुं असंभाव्य वि० जुओ 'असंभावनीय' असंभूति स्त्री० उत्पत्तिनो अभाव (२) विनाश (३) फरी न जन्मवुं ते

असंभूत वि० अकृत्रिम;स्वाभाविक (२) सारी रीते नहि पोषेछुं असंभ्रम पुं० क्षोभ के गभराटनो अभाव; शांति; स्थिरता असंमत वि० परवानगी न होय तेवुं (२) न गमतुं (३) जुदा अभिप्रायवाळुं (४) ণুঁ০ হাসু [लेनारुं; चोर असंमतादायिन् वि० परवानगी वगर असंमूढ वि० मोहरहित; भ्रांतिरहित असंमोह पुं• मोहनो अभाव (२) यथार्थ असंयत वि० संयमरहित (२) बंधनमुक्त असंरंभ पुं निर्भयता **असंशय** वि० संशय विनानुं ; संदेह दगरनुं असंशयम् अ० निःशंक रीते; नक्की असंस्कृत वि० संस्कार नहि पामेलुं; प्राकृत (२) शुद्ध नहि करायेलुं असंस्तुत वि० अपरिचित;अजाण्युं (२) विसंवादी; प्रतिकृळ असंस्थित वि० अव्यवस्थित; अनियमित (२) स्थिर नहि तेवुं; चंचळ अ**साधन** वि० साधन वगरनं (२) न० सिद्धन करवुते असाधनीय वि० सिद्ध न करी शकाय तेवुं (२) उपचार न थई शके तेवुं असाधारण वि० असामान्य; अनोखुं (२)सहियारं नहि तेवुं ; आगवुं असाधु वि० सारुं नहि तेवुं; न गमे तेवुं (२) दुष्ट; दुराचारी असाध्य वि० जुओ 'असाधनीय' असामयिक वि० कसमयनुं; कवेळानुं असामंजस्य न० अघटितता; अनुचितता **असामान्य** वि० असाधारण; विशेष; खास; अनोखुं असार वि० सार वगरनुं; नि:सत्त्व(२) निरर्थक (३) तुच्छ (४) अशक्त; निर्वेळ (५) गरीब; दरिद्र असांप्रत वि० अयोग्य: अघटित

असि पुं० तरवार असित वि० घोळुं नहि तेवुं -- काळुं (२) पुं काळो रंग (३) कृष्णपक्ष असितगिरि पुं० ए नामनो पर्वत असितग्रीच पुं० अग्नि (२) मोर असितपक्ष पु० कृष्णपक्ष छोड़ असिता स्त्री० यमुना नदी (२) गळीनो असिद्ध वि० सिद्ध नहि थयेलुं (२) अपरिपक्वः; काचुं (३) अपूर्णं असिद्धि स्त्री० सिद्ध -- साबित न श्रवुं ते (२) अपूर्णता; निष्फळता (३) अपरिपक्यता असिधारावृत न० तलवारनी धार उपर कभा रहेवानुं ब्रत (अति कठिन ब्रत) असिपत्र वि० तलवारनी धार जेवां पांदडांबाळुं (२) पुं० शेरडी (३) एक नरकनुं नाम (४) न० तळवारनुं म्यान असु पुं० श्वास ; प्राण (२) (व० व०) पांच प्राण (प्राण, अपान इ०) अमुख वि॰ दु:सी; दिलगीर (२) कठिन ; दुर्लभ (३)न० बेचेनी ; दु:ख असुर वि० अलौकिक; दैवी असुर पुं० दैत्य (२) पिशाच असुरगुरु पुं० दैत्योना गुरु – शुक्राचार्य असुररिषु, असुरसूदन पुं० विष्णु असुराचार्य पुं० असुरोना गुरु – शुकाचार्य **असुराधिप** पुं० दैत्योनो राजा – बलि असुरारि पुं० असुरनो शत्रु; देव (२) इन्द्र (३) विष्णु भगवान असुरेंद्र पुं० असुरोनो राजा -- बिट असूर्य वि० असूरोन् असुसम वि० प्राणप्रिय; प्रेमी असुहृद् पुं० शत्रु असूति स्त्री० वंध्यत्व; न जन्मवुं ते असूयक वि० ईर्ष्याळु; देषी (२) असंतुष्ट; नाखुश असूया स्त्री० ईर्ष्या; द्वेष (२) बीजाना मुणमां दोष जोवा ते (३) कोध

असूर्य वि० सूर्य वगरनुं;प्रकाश वगरनुं असूर्यंपश्या स्त्री० सूर्यने पण न जोती पतिव्रता स्त्री (२) राजानी स्त्री **असुक्पात** पुं० रक्तपात अस्र्यारा स्त्री० लोहीनी धारा **असृज्** न० लोही नि दीधेलुं असृष्ट वि० न सर्जेलुं (२) न तजेलुं (३) **असौष्ठ**व वि० सुन्दरता वगरनु; कदरूपुं अस्खलित वि० अडग; स्थिर (२) **रुकावट – भंग विनानुं (३)सुरक्षित**ः; सहीसलामत(४)स्खलन – भूल विनानुं अस्त (अस् 'नुं भू० कृ०) वि० फेंकेखुं; मोकलेलुं (२) समाप्त थयेलुं अस्त पृं० जुओ 'अस्ताचल' (२) सूर्या-स्त (३) पडती; अवनति अस्तगमन न० सूर्यनु आथमवुं ते अस्तमन न० सूर्यास्त थवो ते **अस्तमय** पुं० सूर्यास्त (२) अस्त ; पडती ; नाश (३) डॉकी देवुंते अस्ताचल पुं० पश्चिम तरफनो एक कल्पित पर्वत, जेनी पाछळ सूर्य आथमतो मनाय छ अस्ति अ० हयाती अने स्थिति बतावे (२) कथा के वार्ताना आरंभे वधाराना शब्द तरीके आवे अस्तित्व न० होवुं ते; हयाती अस्तु अ० 'हो ' 'योओ ' 'भले ', 'खेर '-एवा अर्थोमां वपराय(२)अनुज्ञा, पीडा, तिरस्कार, असूया, प्रकर्ष, अंगीकार, प्रशंसा, लक्षण, असूयापूर्वक अंगीकार - ए अर्थो बताबे अस्तेय न० चोरी न करवी ते अस्तोक वि० थोडुं नहि तेवुं अस्तोदयौ पुं० द्वि० व० चडती अने पडती; अस्त अने उदय अस्त्र न० फेंकवानुं हथियार (२)कोई पण खिंचतां भणवानो मंत्र हथियार **अस्त्रमंत्र** पुं० अस्त्र फेंकता के पाछुं

अस्त्रलाघव न० अस्त्र फेंकवानी कुशळता अस्त्रागार न० हथियारखानुं अस्थन् न० हाडकु अस्थाग, अस्थाध वि० अथाग ; घणुं ऊंडुं अस्थान न० खराब स्थान; खोटुं स्थान (२)अयोग्य स्थळ, विषय के प्रसंग अस्थाने अ० अयोग्य स्थाने - प्रसंगे अस्थि न० हाडकुं (२) फळती अंदरनो ठिळवी अस्थिति वि० स्थिर नहि तेवुं (२) निश्चित मर्यादा विनान् (२) स्त्री० स्थिरतानो के मर्यादानो अधाव अस्थिपंजर पु० हाडपिजर अस्थिर वि० स्थिर नहीं तेवुं; चंचळ (२) अनिश्चितः; शंकास्पदः अस्थिसंभव पुं० मज्जा **अस्नेह** वि० तेल के चीकट विनानुं(२) स्तेह विनानुं **अस्पर्शन न० न** अडकव् ते अस्पंद दि० हलन-चलन विनान् अस्पृक्य वि० स्पर्शन थई शके तेव् **अस्पृह** वि० स्पृहा विनानुं; नि:स्पृह **अस्फुट** वि० अस्पष्ट अस्पद्स० ना० 'हुं' नां रूप जेनां बने छे ते मूळ (२) तेनुं पांचमी विभक्ति एकवचनन् रूप अ**स्मदीय** वि० अमार्ह; आपणुं अस्मि अ० 'हुं' (एवा अर्थमां वपराय छे) अस्मिता स्त्री० अहंता अस्त पु० खुणो (२) न० आंसु (३) लोही अस्तप पुं० राक्षस अस्तुन० अश्रु; आंसु अस्य वि० धनहोन; गरीब (२) पोतानुं नहि तेवुं – पारक् अस्वप्न वि० जागतुं; निद्रारहित (२) पुं॰ देव (३) निद्रारहितता अस्वर्ग वि० स्वर्गप्राप्ति न करावे तेव् **अस्वस्थ** वि० वेचेन; मांदुं

अस्वास्थ्य न० व्याधि; रोग (२) अस्वस्थता; बेचेनी **अह**् १ आ० [अंहते], १० उ० [अंहयति-ते] जवुं (२) प्रकाशवुं (३) ५ प० व्यापबुं (४) कहेबुं; जणाबबुं (मात्र नीचेनां पांच ज रूपो मळे छे 🗝 आत्थ, आहथुः, आह्, आह्तुः, आहुः) अह अ० स्तुति, निश्चय, वियोग, निषेध, दूर करवुं, सोकलवुं, रूढिथी विरुद्ध वर्तवं – अशिष्टाचार इ० अर्थो दशक्वि अहत वि० नहि घवायेलुं; नहि हणायेलुं (२) घोया वगरनुं; नवुं; कोरुं अहन् न० दिवस; दिवसनो समय (२) दहाडो (रात अने दिवस वंने मळीने) (३) आकाश (समासना आरंभे 'अहन्'ने वदले — 'अहस्' के 'अहर्' अने समामने अते 'अहः' 'अहम् 'के 'अह्न' थाय छे) (एकवचन) अहम् स० ना० 'हुं' ('अस्मद्' नुं प्रथमा अहमहिमका स्त्री० स्पर्धा; चडसाचडसी अहरहः अ० दिवसे दिवसे अहरागम पु० दिवसनु आववुं ते अहर्निश न० दिवस अने रात; एक आखो दहाडो अहर्पति पुं० सूर्य अहल्या स्त्री० गौतमऋषिनी पत्नी अहस्कर, अहस्पति पुं० सूर्य अहह, अहहा अ० खेद, दु:ख, थाक, आश्चर्य, संबोधन, दया, वगेरे दर्शावे (२) अरेरे ! अहोहो ! अहंकार पुं० अभिमान; गर्व अहंकारिन् वि० अभिमानी; गर्विष्ठ अहं**कृत्**वि० 'हुं कर्ता छं' एवा अहंकारवाळुं (२)र्गावष्ठः; अभिमानी अहंपूर्विका, अहंप्रथमिका स्त्री० प्रथम आववानी इच्छा; हरीफाई **अहंभाव** पुं०, **अहंमति** स्त्री० अभिमान अहः**पति** पु०सूर्य

अहःशेष पुं०, न० सायेकाळ अहार्य वि० न लई लेवा योग्य (२) मेळत्री न लेवाय तेवं – वफादार अहि पुं० साप(२)वृत्रासुर(३)मेघ अहित वि० नहि मुकायेलुं (२) अयोग्य (३) अपथ्य; नुकसानकारक (४) प्रतिकूल; शत्रुता धरावनार्ह (५) पुं० शत्रु(६) न० नुकसान; हानि **अहिद्रह**् **अहिद्विष्** पुं० गरुड (२) नोळियो (३) मोर (४) कृष्ण (५) इन्द्र अहिनिर्मोक पुं० सापनी कांचळी अहिपति पु०शेषनाग(२)वासुकि नाग अहिफोन पुं०, न० अफीण **अहिम** वि० उष्ण; गरम आहमकर, अहिमकिरण, अहिमतेजस्, अहिमधामन्, अहिमरुचि, अहिमांशु युं ० सूर्य (उष्ण किरणोवाळो) **आहिंसा** स्त्री० कोईने मारवुं नहि ते (२) मन, वाणी के कर्मथी कोईने दुःख न अहिसा वि० अहिंसक; कोईने दुःख न दे अहीन वि० अखुं; संपूर्ण (२) ऊतरतुं नहि तेवुं(३) – विनानुं नहि तेवुं अहीर पुंच गोवाळ; गोप होमेल् अहुत वि० नहिं होमायेलुं (२) खोटी रीते अहेतुक, अहैतुक वि० हेतु विनानुं; आपमेळे अहैत्कम् अ० बीजानी मदद विना; अहो अ० शोक, धिक्कार, विषाद, दया, संबोबन, विस्मय, प्रशंसा, वितर्क, असूया वगेरे दर्शावे (२) पादपूरक तरीके वपराय ंबळती प्रशंसा अहोपुरुषिका स्त्री० आपवडाई;पोताना अही बत अ० संबोधन, दया के थाक बतावे अहोरात्र पुं०, न० दिवस अने रात अह्नाय अ० जलदी; एकदम; सत्वर अह्नीक वि० शरम वगरनुः निर्लञ्ज

अंक् १० उ० आंकवु; निशानी करवी (२) लांछन लगाडवूं अंक पुरु आंको; चिह्न (२) संख्यानुं चिह्न; आंकडो (३) डाघो; कलंक (४) खोळो (५) नाटकनो विभाग (६) वांको आंकडो के ओजार (७) बाजु; पडखुं; सामीप्य (८) वांक; वळांक (९) स्थळ; स्थान <mark>अंकगत</mark> वि० जुओ 'अंकागत*'* अंकन न० निशानी; निशानी करवी ते (२) निद्यानी करवानुं साधन अंकपरिवर्त पुं० खोळामां आळोटवुं ते; गाढ आलिंगन [धात्री; आया अंकपालि (-ली) स्त्री० आलिंगन (२) अंकभाज् वि० खोळामां लीधेलुं के केडे तेडेलु (२) हाथमां आवे तेवुं; जलदी मळे तेव् **अंकमुख** न० अंकना जे भागमां वस्तुनुं बीज तथा अंत निरूपायां होय ते (नाटघ०) अंकागत वि० खोळामां – हाथमां आवी पडेलुं; प्राप्त थयेलुं अंकित वि० निशानी अथवा छापवाळुं (२) गणवामां आवेल् **अंकुर** पु०,न०फगगो (२)थोडुं खीलेलुं फूल (३) समासमा 'अणियाळूं' अर्थमां ; (उदा० नखाङ्कुर)(४) संतति – वंशज (उदा० कुलांकुर) **अंकुरित** वि० फणगा फूटचा होय तेवुं **अंकुश** पुं०,न० हाथीने हांकवानुं छोढानुं साधन (२) काबू; दाब; नियमन अंकुर पुं० जुओं 'अंकुर' अंक्**रित** वि० जुओं 'अंक्रुरित' **अंकूष** पुं० जुओ 'अंकुश्ते' अंकोट, अंकोठ, अंकोल पु० एक छोड (२) अखरोट अंग अ० 'ठीक', 'वारु', 'खरेखर' (२) 'किम्'नी साथै 'केटलुं बधुं वधारे '

वपराय छे

स्रातुं (४) उपाय (५)मुख्य वस्तुनो गौण भाग (६) प्रत्यय लागे ते पूर्वनुं शब्दन्ं रूप (व्या०) अभंगक न० शरीर (२) अवयव **अंग्ज** वि० शरीरमां अथवा शरीर **उ**पर उत्पन्न थयेलु; शरीरनु; शरीरमानुं (२) पुं० पुत्र (३) कामदेव (४) केश; बाळ (५) रोग (६) न० लोही (७) केश ; बाळ अंगजा स्त्री० पुत्री अभंगण न० आंगण् अंगद पुं० वालिना पुत्रनुं नाम (२) न० हाथनु घरेणु ; कडु **अंगन** न० जुओ 'अंगण ' अंगना स्त्री० स्त्री(२)सुन्दर स्त्री **अंगप्रत्यंग** न० नानो मोटो प्रत्येक अवयव अंगभंग पुं० पक्षाघात; लक्वो (२) (अंग्रमांथी अठया पछी करे छे तेम) अंगोने लांबा पहोळा करवा ते अंगभू पुं० छोकरो (२) कामदेव अंगरक्षक पुं० अंगनी रक्षा करनार खास सैनिक अंगरक्षणी स्त्री० वख्तर अंगराग पुं० शरीरे सुगंधीदार वस्तु-ओनो लेप करवो ते (२) सुगंधी लेप **अंगरुह** न० बाळ; केश **अंगविक्षेप, अंगहार** पुं० भावने व्यक्त करवा शरीरना अवयवोनी चेष्टा (२) एक जातनुं नृत्य अंगहारि पुं० अंगचेष्टा (२) नृत्य माटेनो मंच अंगार पुंज, नव कोलसो (सळगेलो के न सळगेलो) (२) भंगळतो ग्रह अंगारक पुं॰, न॰ सळमतो कोलसो

कै 'कैटलुं बधुं ओछुं' अ अर्थमां

अंग न० शरीर (२) शरीरनो अवयव

(३)एक आखी वस्तुनी भाग;विभाग;

(२) मंगळनो ग्रह (३) मंगळवार (४) न० अग्निमो तणखो **अंगारकमणि** पुं० प्रवाळ; परवाळुं **अंगांगिभाव** पु**० गौ**ण अने मुख्यनो सबंध अंगिन् वि० शरीरवाळु; मूर्तिमंत (२) जेने गौण विभागो छे तेवुं – मुख्य अंगीकरण न**ः, अंगीकार** पुरु स्वीकार अंगीकृ ८ उ० अंगीकार करवुं;स्वीकारवुं अंगुल पुं० आंगळी (२) अंगूठो (३) एक आंगळनुं माप अंगुलि स्त्री० आंगळी (२)अंगूठो (३) हाथीनी सूंढनो अग्रभाग (४) एक अरगळन् माप अंगुलिका स्त्री० आंगळी अंगुलिमुद्रा स्त्री० महोर करवानी – सील करवानी वीटी अंगुली स्त्री० जुओं 'अंगुलि' अंगुलीक, अंगुलीय, अंगुलीयक न० आंगळीनी वीटी अंगुष्ठ पुं० अंगुठो (२)अंगुठानुं माप **अंघस्** न०पाप ऑक्टि पुं०पग (२) वृक्षनुंमूळ अधिवाप पु०वृक्ष **अंच् १** उ० जबु (२) थळवु; बाळवुं (३) पूजवुं; सत्कारवुं (४) पामवुं (५) १० उ० प्रगट करव् **अंचल** पुं०, न० वस्त्रनो छेडो; कोर (२) खुणो (जैमके आंखनो) **अंचित** वि० वळेलुं; वाळेलुं (२) वाकडियुं; सुंदर (जैम के भगर) (३)सन्मानेलुं; पूजेलुं (४)सुशोभित करेलुं; गूंथेलुं (५) गयेलुं **अंज् ७** ড০ आजवुं (२) जवुं; जई पहोंचवुं (३) दर्शाववुं; प्रगट करवुं (४) शोभवुं; प्रकाशवुं (५) संमानवुं (६) शणगारवुं अंजन न० आंजवुं ते; लेप करवो ते (২) आंजण; मेश (३) शाही (४) पुं० आठ दिग्गजोमांनो एक

अंजनशलाका स्त्री० आंजवानी सळी अंजना स्त्री० हनुमाननी माता -अंजलि पुं० खोडो; पुष्प के जळथी भरेलो खोबो (२) आदर के नमस्कार दर्शाववा हाथ जोडवा ते अंजसा अ० सीधेसीघुं (२) वास्तविक रीते; खरेखर (३) जलदी आंड पुं०, न० ईंडुं (२) वृषण (३) पेळनी कोथळी (४) मृगनी नाभिमांनी कस्तूरीनी कोथळी अंडकोश (-ष) पुं व वृषण; पेळनी कोयळी अंडज वि० ईंडामांथी जन्मेलुं अर्थत वि० नजीकनुं (२) छेल्लुं (३) सौथी नानुं (४) सौथी हलकुं; खराब (५) रम्य; मनोहर (६) पुं० छेडो (७) कोर; किनार; शिरोभाग (८) सामीप्य; सांनिध्य (९) अंत; छेवट (१०) मरण; नाश (११) निश्चय; निर्णय (१२) अंदरनो भाग; सळियानो भाग (१३) कुल संख्या के परिमाण (१४)स्वरूप; स्वभाव(१५)विभाग (१६) सीमा; हद (१७) छेवटनो भाग; शेष **अंतक** वि० नाश करनारुं (२) पुं० मृत्यु; यम (३) सीमा; हद अंतकर, अंतकरण, अंतकारिन् वि० नाश करनारुं; अंत लावनारुं **अंतकाल** पुं० मरणनो समय **अंतकृत्** वि० अंत लावनारुं – मरण लावनारुं (२)पुं० मृत्यु; यम **अंतग** वि० अंत सुधी जनारुं; पामनारुं; निष्णात अंतगति वि० जुओ 'अंतगामिन् ' अंतगमन न० कार्यनी पूर्णता (२) मरण **अंतगामिन्** वि० मरण पामनार्;ुं नाशवंत **अंतचर** वि० सरहदे फरनारुं; सरहदे जनारुं(२)कार्यना अंतने पहोंचनारुं **अंततस्** अ० अंते ; आखरे (२) छेल्लेयी (३)वस्तुताए(४)अंदर (५) अंतिम रीते ('मुख्यतः' -थी ऊलटुं)(६) अंशतः अंतपरिच्छद पुं० डांकवानुं वासण अंतपाल पुं० सरहदनुं रक्षण करनार (२) द्वारपाल अंतर थ० अंदर बच्चे मध्ये अंदरना

अंतर् अ० अंदर, बच्चे, मध्ये, अंदरना भागमां, छानुं होय तेम, –वगेरे अर्थमां वपराय (समासमां अघोष व्यंजन पहेळां 'र्' नो विसर्ग थई जाय)

अंतर वि० अंदरनुं (२) नजीकनुं (३) निकट संबंधवाळुं (४) जुदुं, बहारनुं (५) न० अंदरनो भाग (६) अंतःकरण; मन; आत्मा (७) भेद; तफावत (८) वचगाळो; वच्चेनो भाग (९) आड; व्यवधान (१०) छिद्र; नबळी बाजु(११) हेतु (१२) प्रवेश (१३) समयनो गाळो (१४) अवकाञ्च; जगा (१५) गेरहाजरी; वियोग (१६) वस्त्र (१७) प्रसंग; तक (१८) (समासमां अंते) बीजुं; जुदुं (उदा० 'अवस्थान्तर') (१९) -ने लगतुं, -ने विषे, -ना संबंधे होवुं ते (२०) ऋममां एक पग्थियुं वेगळुं होवुं ते (२१)उत्तमता;श्रेष्ठता(२२)प्रतिनिधि-पणुं; अवेज (२३) विशिष्टता; जुदापणुं (२४) खातबी; जामीन

अंतरंग वि० अंदरनुं (२) नजीकनुं (३) अत्यंत प्रिय (४) न० चित्तः; अंतःकरण (५) निकटनो मित्र (६) अगत्यनो भाग अंतरा अ० अंदरः अंदरखाने(२)मध्यमाः;

अतरा अ० अदर; अदरखान(२)मध्यमा; वच्चे (३)मार्गमां (४) —ने मळतुं, नी बरोबरीनुं होय तेम (५) दरम्यान; वचगाळे (६) विना; सिवाय

अंतरात्मन् पुं० जीव;अंतःकरण;मन अंतरापण पुं० दाहेरनी मध्यमां आवेलुं बजार

<mark>अंतराय</mark> पुं० विध्न ; मुश्केली ; हरकत **अंतराराम** वि० अंतरमां शांति के सुख मेळवनारुं अंतराल न० वचली जगा; वचगाळो (२) अंदरनो भाग; वच्चेनो भाग **अंत**रि (अंतर्+इ) २ प० वच्चे आववु; जुदुं पाडवुं (२) आडे आववुं; न देखाय तेम करवुं अंतरिक्ष न० स्वर्ग अने पृथ्वी वच्चेनी जगा; अवकाश; वातावरण अंतरित वि० वच्चे आवेलुं; आडमां आवेलुं; छूटुं पडायेलुं; न देखाय तेम करायेलुं (२) ढंकायेलुं; छुपायेलुं; रक्षायेलुं (३) अटकावायेलुं; एका-वट करायेलुं (४) प्रतिबिबित (५) दबायेलुं ; झांखुं पडेलुं (६)दूर करायेलुं अंतरीक्ष न० जुओं 'अंतरिक्ष' **अंतरोप** पुंच द्वीप अंतरोय न० अंदरनु वस्त्र अं**तरे** अ० अंदर; वच्चे अंतरेण अ० सिवाय; विना (२) संबंधमां; विषे (३) वच्चे; मध्ये (४) दरम्यान (५) अंतरमां ; हृदयमां अंतर्गंडु वि० निरर्थंक; निरुपयोगी अंतर्गत, अंतर्गामिन् वि० वच्चे पेठेलुं (२) अंदर आवेलुं (३) ढंकायेलुं; छुपायेलुं (४) भूली जवायेलुं (५) अदृश्य थयेलुं (६) नाश पामेलुं **अंतर्गृढ** वि० अंदर छुपायेलुं; गुप्त अंतज्ञानि न० अंदरनुं गुढ ज्ञान **अंतज्योंति** वि० अंतरमां ज्ञानप्रकाश-वाळु अंतर्दशा स्त्री० (मागसनी स्थिति उपर) एक ग्रहनी महादशामां आवती बीजा ग्रहोनी टूंकी दशा (ज्यो०) अंतर्वहन न०, अंतर्वाह पु० अंदरनी (बळतरा — पोडा) (२) सोजो अंतर्द्वार न० अंदरनुं द्वार; गुप्तद्वार **अंतर्धा ३** उ० अंदर मूकवुं – राखवुं (२) अंदर समावी लेवुं – लई लेवुं (३) दर्शाववुं; देखाडवुं(४) छुपस्ववुं;

नजरेन पडवुं (५) ढांकी देवुं; नजरे न पडे तेम करवं –श्रेरक० |अन्तर्धापयति|अदृश्यकरवु —कर्मणि० अदृश्य धवुं **अंतर्धा स्त्रो०** छुपावूं – ढंकावुं ते अंतर्धान न० अदृश्य थवुं ते **अंतर्नगर** न० राजानो किल्लो अंतर्निवेशन न० घरनी अन्दरनी भाग **अंतर्निहित** वि० अंदर छुपायेलुं **अंतर्बाष्प** वि० जेणे आंसू दबाव्यां छे एवुं (२) आंसुयी भरेलुं अंतर्भाव पुं० अंदर होवापणुं;समावेश (२)अंतरनी वृत्ति के भाव (३)अदृश्य छिन्नभिन्न थयेलुं थवुं ते अंतर्भिन्न वि० वींघेलुं; आंतरिक कलहथी अंतर्भृत वि० समाविष्ट; -मां समायेलुं (२) अंदर रहेलुं अंतर्भेद पुं० आंतरिक कलह; कुसंप अंतर्भोम वि० जमीननी अंदरनु अंतर्मुख वि० अंदर वळेलुं (२) आत्म-चितनपरायण अंतर्यामिन् पुं० जीवात्मानुं के आंतरिक वृत्तिओनुं नियंत्रण करनारुं; परब्रह्म **अंतर्लोन** वि० अंदर छुपायेलुं (२)अंदर रहेल् अंतर्वती, अंतर्वस्नी स्त्री० गर्भिणी स्त्री अंतर्वेश, अंतर्वेशिक पुं० कंचुकी; अंत:-पुरनो रक्षक [यत्रभूमिनी अंदर **अंतर्वेदि** वि० यज्ञभूमिनी अंदरनुं (२)अ० अंतर्वेदि(-दी) स्त्री० गंगा-यमुना वच्चेनो दोआब [खाने हसवुं ते अंतर्हास पुं० दबावी राखेलुं हास्य; अंदर-अंतर्हित वि० वच्चे मुकायेलुं; छुटुं पडा-येलुं (२) ढंकायेलुं; छुपायेलुं (३) अदुश्य थयेलुं **अंतदत्** वि० अंतवाळुं; नाशवंत; नश्वर अं**तवेला** स्त्री० मरणनो समय **अंतइचर** वि० अंदर व्यापेलुं ; अंदर रहेलुं अंतसद् पुं० शिष्य; अंतेवासी अंतस्ताप वि० अंदरथी तपेलुं; अंदरथी बळतुं(२)पुं० आंतरिक ताप के ताव अंतस्तोय वि० अंदर पाणीवाळुं अंतःकरण न० अंदरनी इंद्रिय; मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार अंतःकोप पुं० अंदरनो क्रोध;गुप्त क्रोध <mark>अंतःपातिन्</mark> वि० अंदर आवेलुं अंतःपुर न० राणीवास; स्त्रीओनो आवास (२) अंतःपुरमां रहेती स्त्रीओ के राणीओ अंतःपुरिक पुं० कंचुकी;अंतःपुरनो रक्षक अंतःप्रकोप न० अंदरनो(प्रजानो)असंतोष **अंतःस**स्वा स्त्री० सगर्भा – गभिणी स्त्री अंतःसलिल वि० जमीननी (बहेता) पाणीवाळ् अंतःसंज्ञ वि० अंदरथी चैतन्ययुक्त;अंदर जेने संज्ञा - भान छे तेवं (वृक्ष इ०) अंतःसार वि० अंदरना बळ के जोमवाळ् (२) वजनदार (३) पुं० अंदरनुं तत्त्व; अंदरनी वस्तु माणनार अंतःसुख वि० अंतरमां -- आत्मामां सुख अंतःस्थ वि० वच्चे रहेलुं(२)पु० यु रु ल् व् -ए चारमांनो दरेक व्यंजन (व्या०); अर्घस्वर (स्वर अने व्यंजन बंदेना |सान्निध्य धर्मवाळो) अंतिक वि० पासेनुं;नजीकनुं (२) न० अंतिकचर पुं० हजूरियो अंतिम वि० छेल्लुं (२)तरत ज पछीतुं **अंते** अ० छेवटे; छेडे (२) अंदर (३) समीपे अंतेवासिन् पुं० शिष्य (गुरुनी समीपे रहेनारो) (२) चांडाळ (गामने छेडे रहेनारो) अंत्य वि० छेल्लुं (२)तरत जपछीनुं (३) हलकुं; नीचुं (४) नश्वर (५) पुं० म्लेच्छ; यवन (६)चांडाल (७) शब्दनुं छेल्लुं पद (८) न० एकडा उपर पंदर मीडां गोठवतां थती संख्या

अंत्यकर्मन् न०, अंत्यक्रिया स्त्री० प्रेत-संस्कार; अग्निसंस्कार अंत्यज, अंत्यजन्मन्, अंत्यजाति, अंत्य-जातीय वि० हलकी वर्णनुं; शृद्र **अंत्याहति, अंत्येष्टि** स्त्री० प्रेतसंस्कार; मरणसंस्कार अंत्र न० आंतरड् अंदु(-दू) स्त्री० सांकळ (२) हाथीना पगे बाधवानी सांकळ (३) पगे पहेरवान् घरेण् थव् अरंघ् १० उ० आंधळुं करवुं (२) आंधळुं अंघ वि० आधळुं (२) आधळुं करे तेवुं; अति गाढ (अंधार्ष) (३)अत्यंत पीडायेलुं (४) मेलुं करायेलुं (५) न० अथारुं (६) अज्ञान; अविद्या (७) पाणी; मेऌं पाणी अधिक वि० आधळ अधकार पुं० अधार्ष अधकृष पुं० झाड-झांखरांथी ढंकाई, न देखातो होवाथी, फसाई पडाय तेवो कूबो (२) मुद्धता; मोह अंधतमस, अंधतामस न० पूर्ण अंधकार ; गाढ अधार्ष अधितामिस्र पुं०, न० पूर्ण अधारुं(२) मानसिक अंथकार – अज्ञान (३)एक नस्क (४) भरण अधिस् न० अन्न आरंधापु० क्वो **अंबक** न० आंख (उदा० व्यंबक) अंबर न० आकाश (२) वस्त्र (३) एक सूगंधी पदार्थ अंबरिष, अंबरीष पुं० एक विष्णुभक्त राजानु नाम (२)सूर्य(३)तावडी; कढाई **अंबरोक**स् पुं० स्वर्गमां वसनार – देव अंबा स्त्री० माता; मा अं**बालिका, अंबिका** स्त्री० मा; माता **अंबु**न० जळ; पाणी **अंबुज** वि० जळमां उत्पन्न थयेलुं (२)

पु० शंख (३) न० कमळ

अंबुद, अंबुधर पुंच वादळूं **अंबुधि, अंबुनिधि** पुं० महासागर;समुद्र **अंबुप** पुं० समुद्र (२) वरुण **अंबुपति** पुं० वरुण **अंबुमुच् पु० वादळ**; मेघ **अंबूरय** पु० प्रवाह **अंबुराशि** पुं० समुद्र अंबुरह् न०, अंबुरह पुं०, न० कमळ (दिवसे खीलतु) अंबुबाह पुं० वादळ; मेघ (२)सरोवर (३) पागी वहेनारो अ**भस् न० पाणी (२) आ**काश **अंभोज** वि० जलोत्पन्न (२) न० कमळ अंभोजिनी स्त्री० कमळनो छोड़ (२) कमळनो समूह (३) कमळनु सरोवर के तळाव अंभोद, अंभोधर पुं० वादळुं अंभोधि, अंभोनिधि, अंभोराशि पुं० महासागर; समुद्र **अंभोरह**्न०, अंभोरह पुं०, न० कमळ **अंश** प्ं० भाग; हिस्सो (२) मिलकतमां हिस्सो (३) वर्तुळनो ३६० मो भाग (४) জ भो

अंशावतार पु० जेमा ईश्वरनी विभूति-नो मात्र अंश होय तेवो अवतार अंक्षिन् वि० भागीदार; हकदार (२) अवयवी; जेने अंशो होय तेवुं अंशु पुं० किरण (२) अणी के छेडी (३) नानामां नानो भाग; अणु(४) वेग (५) वस्त्र (६) पातळो दोरो अंशुक न० वस्त्र (२) बारीक अथवा रेशमी वस्त्र (३) झीणुं के स्वेत वस्त्र (४) उत्तरीय अंशुमत् वि० किरगवाळुं; तेजस्त्री; प्रकाशित (२) अणीवाळुं (३) पुं• सूर्य (४) चंद्र **अंशुमालिन्** पुं॰ सूर्य अंत पुं॰ भाग; हिस्सो (२) खभो अंसल वि० मजबूत खभावाळुं; बळवान अंसविवर्तिन् वि० खभा तरफ वळेलुं अंह् १ आ० जवुं (२) १० प० मोकलबुं (३) वोलबुं (४) प्रकाशबुं अहस्त० पाप आंह्रिपुं० जुशो 'अंद्रि'

आ

आ संमति, दुःख, शोक, अनुकंषा, स्मरण अने पादपूरण अर्थे वपराय(२)सामीप्य, चारे बाजुए, —ए अर्थमां नाम अने धातुनी पूर्वे आवे (३) गति-वाचक कियापदो साथे ऊठटो अर्थ दर्शाववा वपराय (उदा० 'आगच्छति' = आवे छे; 'आनयति' ⇒ लावे छे) (४) जुदा लखाता उपसर्ग तरीके, '-थी मांडीने – सुवी 'ए जातनी मर्यादा – सीमा दर्शावे (उदा० 'आ जन्मनः' = जन्मयी ज; 'आ परितोखाद् '=संतोष याय त्यां सुधी) (५) 'सुधी'-'पर्यंत'

-एवा अर्थमां समासमां पण जोडाय (उदा० 'आवालम्', 'आमरणम्') (६) विशेषणनी साथे अल्पता दर्शाव (उदा० 'आरक्त' = थोडुं लाल) आकत्यन वि० बडाई मारनारुं आकर्यन वि० बेण्ड; उत्तम (२) पुं० खाण (३) समूह; ढगलो आकरपंथ पुं० कोई विषयनी माहितीनो प्रमाणभूत ग्रंथ आकरिन् वि० खाणमां पेदा थयेलुं(२) सारी जातनुं; उत्तम ओलादनुं **आकर्ण् १०** प० सामळवु; ध्यानयी सांभळवु आकर्णन न० ध्यानथी सांभळवुं ते आकर्ष पुं० पोता तरफ खेंचवुते (२) पाछुं खेंची लेवुं ते (३) अनुष्य खेंचवुं ते (४) आकर्षण ; मोह (५) छोहचुंबक (६) कसोटीनो पथ्यर (७) पासा वडे रमवुं ते लोहचुबक **आकर्षक** वि० आकर्षे तेवुं (२) पुं० **आकर्षण न**० खेंचाण (२) मोह **आकल् १०५०** पकडवुं; हाथमां लेवुं (२) मानवुं; ग**णवुं** (३) विचारवुं; लक्षमां लेवुं (४)बांघवुं; जकडवुं (५) हलाववुं; डोलावबुं(६)समर्पेण करवुं (७) फेंकवुं (८) मापवुं **आकलन** न० पकडवुं – ग्रहण करवुं ते (२)बंधन;निग्रह(३)गणना;गणतरी (४) तपास (५) समजण आकरप पुं० भूषण; शणगार (२) वेशरचना [करवुते आकल्पक पुं० उत्कंठापूर्वक याद कर्या आकल्पम्, आकल्पांतम् अ० कल्प पूरो श्राय (१००० युग) त्यां सुवी; महाप्रलय थाय त्यां सुधी |कारण विनान् **आकस्मिक** वि० ओचितुं;अणधार्युं(२) **आकार** पुं० आकृति; घाट (२) *देखाव*; चहेरो (३) निशानी; लक्षण आकारण -न**ः, आकारणा** स्त्री० बोलावबुं ते; निमंत्रबुं ने आकारित वि० बोलावेलु; निमंत्रेलुं(२) कबूलेलु (३) मागेलुं; पडाबेलुं **आकालिक** वि० क्षणिक (२)कसमयनुं आकाश पुं०, न० आकाश (२) पंच-महाभूतोमानु एक महाभूत (३) खाळी जगा; अवकाश (४) स्थान; स्थळ (५) प्रकाश (६) ब्रह्म आकाशग पुं० पक्षी; पंची **आकारागंगा, आकारामा** स्त्री० स्वर्गेगंगाः

आकाशभाषित न० रंगभृमि बहारनी कोई व्यक्ति साथे जाणे वात करतो होय ते रीते नटे करेली उक्ति **आकाशयान** न० आकाशमां गति करतुं वाहन (२) आकाशमां थईने गति करवी ते स्त्री० आकाशवाणी अकाशमा उच्चारायेली – देवी वाणी आकाशशयन न० खुल्लामां सूर्व ते आकाशेश वि० जेने आकाश विना बीजी मिलकत नथी तेत्रुं; निराधार (बाळक, स्त्री, भीखारी, पंगु बगेरे) (२)पुंब इंद्र आकांक्ष् १ उ० इच्छत्रुं; अभिलाषा राखवी (२) जरूर होबी आकांक्षा स्त्री० इच्छा ; अभिलाषा (२) हेतु; इरादो (३) –ती सामे नजर करवी ते; अपेक्षा (४) तपास (५) सांभळनारने बीजा पदनी अपेक्षा रहे तेवी प्रथम पदनी अपूर्णता (ब्या०) आकांक्षिन् वि० आकांक्षा -- अपेक्षा –अभिलापा राख**नार** [गरीदाई आकिंचन, आकिंचन्य न० दास्द्रिय; आकीर्ण वि०विखरायेलुं;वेरायेलुं (२) व्याप्त ; पूर्ण (३) न० भीड ; टोळ् **आकुल** वि० व्याकुळ;क्षुद्ध (२) अस्वस्य; व्यग्र (३) न० भीडवाळुंस्थान आकुलम् अ० गभराटमाः ; मूंझवणमा आकुलित वि० धुब्ध; व्यग्न (२) गूंचवायेळु; मृझायेळु **आकुंच् १** आ.०,६ प० बांकाबळव् –प्रेरक० वांकुं वाळवुं; संकोचबु आ**कुंचित** वि० वळेलुं; बाळेलुं(२) संकोचेलुं (३) वस्कडियं (बाळ) आकृणित वि० सहेज संकोचायेलुं आकृत न० हेतु; अभित्राय; इरादो (२)मनोभाव ; लागणी (३)आश्चर्य **आकृति** स्त्री० कर्मेंद्रिय (२) किया (३) इरादो; आशय

आक्रुट उ०, ५ प० नजीक लाववुं; हांकीने पासे लावबुं –प्रेरक० बोलाववुं; निमंत्रवुं (२) प्रेरवुं (३) पडकारवुं (४) कोई पासे कोई मांगवुं **आकृति** स्त्री० आकार; रूप (२) शरीर; शरीराकृति (३) बाह्य देखाव आकृष् १ उ०,६ उ० खेंचवुं; आकर्षण करवुं (२) खेंचीने वाळवुं(धनुष्य) (३) खेंचवुं; बहार काढवुं (४) बीणबुं; एकत्रित करबुं (५) लई लेबुं; पडाबी लेबुं **आकृष्ट** वि० खेंचायेलुं; आकर्पायेलुं **आऋष् १** उ०पासे जबुं ⊶पहोंचवुं(२) व्यापत्रुं (३) हमलो करवो (४) जीतवुः; ताबे करवुं (५) श्रेष्ठ थवुं ; झांखुं पाडवुं (६) ऊँचे चडबुं (सूर्यनुं आकाशमां) (७) मार्थे लेबुं; शरू करवुं (८) वजन मुकद्; दबाववु आक्रम पुं०, आक्रमगन० पासे जर्त्र 🗝 पहोंचबुं ते (२) हुमलो (३) ओळंगबुं ते; बटी जबूं ते (४) व्यापकृंते (५) दबावदुते (भार वडे) **अक्ष्रंद् १** उ० रडव्ं – विला**प करवो** (२) बूम पाडवी ; बोलाववुं **आर्ऋ**द पुं० रुदन ; विलाप (२) वोलाववुं ते; बूम (३) युद्ध; लड़ाई (४) त्राता; रक्षक (५) रइवानुं स्थान **आऋंडन** न० हदन;विलाप (२) बोलावव् **आकंदित** वि० बोलावेलुं (२) तिलाप करतुं (३) न० पोकेपोक मूकीने रडवुं ते (४) बूम; गर्जना - विोलावतुं आऋंदिन वि० विलाप करतां करतां **आक्रांत** वि० पकडायेलुं : प्राप्त करायेलुं; पराभव पमाडेलुं (२) छवायेलुं; व्याप्त (३)रोकायेलुं(४) दबायेलुं; कचरायेलुं (५) सवारी करेलुं आक्रांति स्त्री० उपर चडवुं ते; पग

मूकवो ते (२)वजन मूकवुं ते ; दबावबुं ते (३) ऊगवुंते (४) बळ;जोर आक्रीड पुं०, न० कीडा; रमत (२) क्रीडोद्यान **आकृ**श् १ प० मोटेथी बूम पाडवी (२) ठपको देवो; वढवुं (३) सिंदा करबी (४) शाप आपवो **आऋष्ट** वि० ठपको अपायेलुं; निदायेलुं (२) बूम पाडेलुं (३) शाप आपेलुं **आकोश** पुं०, आकोशन न० मोटी बूम; बूम पाडीने योलावतुं ते (२) निदा; गाळ (३) शाप (४) सोगंद आक्लिन वि० भीतुं (२) क्यार्ड **आक्षिप् ६** प० फेंक्वुं; पछाडवुं (२) लोभावतुं; आकर्षेतुं (३) अस्त्र वडे प्रहार करवो (४) वर्ष्मेथी रोकवुं (५) पाछुं खेंची लेतुं; झूंटत्री लेवुं (६) हांकी काढवुं (७) लटकाववुं; फरकाववुं (घ्वज इ०) (८) सूचववुं; दर्शाववं (९) उपेक्षाकरवी; नकारबुं (१०) वाधो उठावको (११) अपमान करवुं (१२) चडियाता थवुं; झांखुं पाडवुं (१३) कटाक्षमां कहेवुं (१४) पसार करवुं (समय) आक्षिप्त वि० फेंकेलुं; नाखेलुं (२) झूंटवी लेवायेलु (३) निदित; अपमानित (४)पराभूत (५) गूचवायेलुं ; मूंझायेलुं (६) आकर्षायेलु; लोभायेलु आक्षिप्तिका स्त्री० रंगभूमि पर आवती बखते पात्र वडे गवातुं गीत आक्षेप पुं० फेंकबुं ते; खेंची काढबुं ते; **झ्टब**बू ते (२) निदा; ठपको; तिरस्कार (३)नाखी देवुं ते; छोडी देवुं ते (४) प्रकोमन ; आकर्षण (५) चोषडबुं – लगाववं ते (६) वांथो; अंका (७) अनुमान; तर्क (८) उल्लेख; मूचना (९) न्यास; थापण आक्षेपण वि० आकर्षक; मनोहर(२)

न० फेंकवूं – नाखवूं – उछाळवुं ते (३) गाळ भांडवी – तिरस्कार करवो ते (४) बांघा उठाववा ते **आक्षेपिन्** वि० आकर्षनारुं;खेंचनार्ह **आखंडल** पुं० इंद्र आखु पुंच उंदर आखुपत्र, आखुवाहन पु० गणपति (उदरना वाहनवाळा) आखेट पुं० शिकार **आखेटक** पुं० शिकारी (२) न० शिकार आस्य वि० कहेनारुं;वर्णन करनारुं **आख्या २** प० कहेवु (२) -- नामे कहेवुं |प्रतीति – ओळखब् आख्या स्त्री० नाम (२) शोभा (३) भास; **आख्यात** वि० कहेवायेलुं (२) प्रसिद्ध करायेलुं (३) न० कियापद आख्याति स्त्री० कहेवुं ते (२) नाम (३) कीर्ति; प्रसिद्धि आरख्यान न० कहेवुं – वर्णवर्तुते (२) पूर्वनुं वृत्तात कहेवुं ते (३) कथा; वार्ता (४) पौराणिक के ऐतिहासिक महाकथा (महाभारत इ०) (५) तेनो सर्ग के खंड (६) प्रत्युत्तर आस्यानक न० नानी कथा; दंतकथा आख्यायिका स्त्री० वार्ता; कथा **आस्येय** विश्कहेवायोग्य आगत वि० आवेलुं; आवी पहोंचेलुं (२)बनेलुं(३)प्राप्त थयेलुं;पामेलुं आगति स्वी० आवी पहोंचवुं ते (२) प्राप्ति (३)उत्पत्ति; मुळ(४) पाछूं आवव् ते (४) अकस्मात बनाव आगम् १ प० | आगच्छति | आववुं ; आवी पहोंचवुं (२) प्राप्त थवुं;पामवुं –प्रेरक० लई जबुं(२)–नुआगमन जाहेर करवुं (३) समाचार मेळववा; माहितगार थवुं (४) भणवुं; शीखवुं (५)आ० धीरज राखती; राह जोवी **आगम पुं**० आगमन ; आवी पहोंचवुं ते ;

देखावुं ते (२) लाभ; प्राप्ति (३) उत्पत्ति; जन्म (४)वृद्धि; वधारो (५) प्रवाह (६) ज्ञान; विद्या (७)शास्त्र (८) शस्त्राभ्यास (९) पुं०, न० तंत्रशास्त्र (१०) नदीनुं मुखं (११)मार्गः; मुसाफरी **आगमन** न० आववुं ते (२) पाछा फरवुं ते (३)लाभ ; प्राप्ति (४) उत्पत्ति आगमापायिन् वि० उत्पत्ति विनाशवाळुं; आवनारुं अने जनारुं आगमित वि०भणावेलुं (२) जाणेलुं; अभ्यासेलुं **आगमिन्** वि० नजीकना भविष्यमां आवनार्ह(२)आगमशास्त्र भणेलुं(३) आगंतुक; घुसी गयेलुं आगस् न० अपराघ; गुनो (२)पाप (३) आगस्त्य वि० दक्षिण तरफतुं (२)अगस्त्य ऋषि संबंधी |माणस; अतिथि **आगंतु** पुं० नत्रो आदेलो—अजाण्या **आगंतुक** वि० पोतानी मेळे–वगर बोलाव्युं आवेलुं (२) रखडतुं – फरतुं (ढोर इ०) (३) आकस्मिक; हमेशनु नहि एवं (४) धूसी गयेलं – मूळनं नहि एवुं (पाठ इ०) (५) पु० अतिबि; अजाण्यो (६) घुसणियां (७) घूमी गयेलो पाठ आगामिक वि० आवनारं; भविष्यनुं **आगामिन्** वि० जुओ 'आगमिन् ' आगामुक वि० आवनाहं(२)भावि आगार न० घर; निवासस्थान **आग्नेयकीट** पुं० अग्निमां झंपलावतुं एक पतंगियुं (चोर लोको दीवो बुझादवा मोकले छे) करातो यज **आग्रयण** पुं० नवुं अन्न आववाने निमित्ते आग्रह् ९ उ० पकडव्: जोरथी पकडव् (२) जोरथी खेंचवुं (लगाम) (३) आग्रह करवो **आग्रह** पुं० पकडवुं – लेबुं ते (२) धार्युं करवानी वृत्ति; खंत; निश्चय (३) हठ; जीद; ममत

आग्रहायण पुं० मार्गशीर्प मास **आघट्ट् १०** प० अथडाव् आघट्टना स्त्री० घर्षण; अफळावुं ते **आधर्व** पुं०, **आधर्षण न**० परस्पर घर्षण आधात पुं प्रहार (२) घा (३) हिंसा; नाश (४) कतलखानुं ; वधस्थान **आधूर्ण् १** आ०, ६ ५० चकर चकर फरबुं [नामुं; ढंढेरो के फेरवव् आघोषण न०, आघोषणा स्त्री० जाहेर-आद्रा १ प० [आजिझिति] सूंघतुं(२) माथु चूमवु (३) हुमलो करवो ; खाई जवुं (ला०) आघ्रात वि० सूंघेलुं (२) तृप्त **आचक्ष्** २ आ० बोलवुं; कहेवुं; जणा-ववुं; दर्णववुं आचम् १५० [आचामति] आचमन करवुं (२) चाटी जबु; पी जबु आचम पुं० आचमन आचमन न० धार्मिक विधिनी शरूआत-मां के जमतां पहेलां अने पछी हथेळीमां पाणी भरी पी जबुं ते (२) ते माटेनुं पाणी **आचर् १** प० आचरवुं; वर्तवुं (२) वारंबार अवरजवर करवो आचरण न० आचारमा मुकवु ते; अनुष्ठान (२)वर्तन (३)आचार; व्यवहार; रिवाज योग्य **आचरणीय** वि० आचरवा योग्य; करवा **आचरित** वि० आचरेलुं; करेलुं (२) रूढि – परंपराथी आचरायेलुं (३) नियमधी नक्की करेलुं (४) वसाहत करायेलुं (५) न० वर्तन; आचार आचार पु॰ वर्तन, आचरण (२) सदाचरण (३)परंपराथी आचरवामां आवतो व्यवहार; शिष्टाचार **आचारपूत** वि०सदाचरणथी पवित्र बनेऌं आचार्य प्० विद्या आपनार; गुरु(२) थर्मगुरु (३) जुदो सिद्धान्त प्रतिपादन करनार शास्त्रकार (४) विद्वान ; पंडित आचार्यक न० आचार्यनुकर्म; शिक्षण (२) आचार्यनुंपद (३) आचार्यनी पूजा (४) भाष्य करवुं – समजाववुं ते **आचार्यानी** स्त्री० आचार्यपत्नी; गुरुपत्नी आचि ५ उ० एकठुं करवुं; ढगलो करवो (२) पाथरी देवुं; भरी काढवुं आचित वि० भरी काढेलुं; पाथरी दीघेलुं (२) बांघेलुं ; गूंथेलुं (३) संगृहीत आचीर्ण वि० खवाई गयेल (जंतु ६० थी) (२) आचरायेलुं **आच्छद् १**०प० ढांकवुं (२) संताडवुं; गुप्त राखवुं (३) पहेरवुं आच्छद् स्त्री० ढांकण (२) म्यान **आच्छन्न** वि० ढकायेलु(२)पहेरेलु **आच्छाद** पुं० वस्त्र ; कपडां **आच्छादन न**० ढांकण; आवरण(२) वस्त्र; कपडां (३)झभ्भो; डगलो (४) चादर(५)छापरानुं छाज आच्छिद् ७ उ० छेदव् (२)झ्टवी लेवुं; खेंची लेबुं (३) अवगणवुं; ध्यानमां न लेवुं (कथन) (४) अळगुं करबुं आच्छिन्न वि० छीनवी लीधेलुं (२) सारी रीते दूर करेलुं; खसेडी नाखेलुं **आच्छोटित** वि० खेंची काढेलुं; तोडी नाखेलुं (२) टचाका बोलावेलुं(आंगळी) आज वि० बकरानु आजनन न० श्रेष्ठ जन्म (२) अ० जन्मथी मांडीने आजन्म, आजन्मम् अ० जन्मथी मांडीने आजात वि० कुलीन ; कुळवान आजानु अ० ढींचण सुधी आजानेय वि० सारी जातनुं (घोडो द०) आजि पु०, स्त्री० युद्ध; लडाई (२) दोडवानी के लडवानी हरीफाई (३) रणभूमि (४) मेदान (शरततृं) आजिमुख न० लडाईमां पहेली हरीळ आजीव् १ प० -ना वडे, -ने आधारे जीवव्

आजीव पु०, आजीवन न० निर्वाह(२) निवहिन् साधन; धंशो **आजीवनिक** वि० आजीविका शोधतुं **आजीविक** पुं० गोृशाल मेखलि**पु**त्ते स्यापेल भिक्षुसंप्रदायनो साधु आजीविका स्त्री०धंधो; निर्वाहनुं साधन आजीध्य वि० आजीविका आपनारु (२) न० आजीविकानुं साधन **आज्ञप्त वि० आ**ज्ञाकरायेलुं;प्रेरायेलुं **आज्ञप्ति** स्त्री० आज्ञा; हुकम आज्ञा ९ प० | आजानाति | जाणवुं; प्रिरव समजवु --प्रेरक० ¦आज्ञापयति | हुकम करवो; आज्ञा स्त्री० हुकम (२) रजा; पर-वानगी (३) आण **आज्ञापक** वि० हुकम आपनारुं आज्ञापन न० हुकम करवो ते (२) जाहेर करवुं ते **आज्य न**० वी **आज्यभुज्** पुं० अग्ति (२) देव आटविक पुं अरण्यवासी आटोप पुं० गर्व; अभिमान (२) फुलवाथी के पहोळा थवाथी थतो विस्तार (३) आडंबर; भगको; देखाव **आडंबर** पुं० अहंकार;दर्प(२)दबदबो; भपको ; ठाठ (३) गर्जना (मेघ के हाथी। इ०नी) (४)पांपण (५) आवेश ; क्रोब (६) युद्धनुं नगारुं आढक पुं०, न० अनाजनुं एक माप (१६ क्डव के ६४ प्रस्थ बराबर) आदघ वि० श्रीमंत (२) युक्त; पूर्ण (३) मिश्रित आतत वि० पथरायेलुं; फेलायेलुं(२) खेंचेलुं (धनुष्य) आततायिन् वि० खूनी (२) घोर पातक करनारुं; महापापी आतन् ८ उ० डांकवुं; बिछावबुं; पाथरव् (२) विस्तरव् ; व्यापव् ; फेलाव्

(३) उत्पन्न करवुं; पेदा करवुं (४) आचरवं; करवं (५) खेंचवं (धनुष्य) आतप् १ प० तपवुं, तपाववुं (२) संताप पामवी **आतप** पुं∘ तडको; ताप **आतपत्र** न० छत्री **आतपात्यय** पुं० सूर्यास्त आतपापाय पुं० उनाळो पूरो थवो ते आतंक पुं० व्याधि (२) ज्वर (३) संताप (४) भगः भीति आतिथेय, आतिथ्य ति० अतिथिने योग्य; अतिथि माटेतुं (२) आतिथ्यमां कुशळ (३) न० परोणागत |माट) आतुद् ६ उ० मारवुं; भोंकवुं (हांकवा आतुर वि० -थी पीडातु, पीडायेलु (२) बोमार; मांदलुं (३) अधीरुं; आकन्नुं (४) उत्सुक (५) पुं॰ रोगी; दरदी (६) रोग आतोद्य न० एक वाद्य (वीणा जेवुं) आत्त ('आ ∔दा'नुं भू० कृ०)वि० लीघेलुं (२) स्वीकारेलुं (३) खेंची लीबेलुं; आकर्पेलुं (४) ग्रहायेलुं; दबायेलुं आत्तगंत्र वि० जेनो गर्व हणाई गयो क्यों छे एव् छे तेव् आसदंड वि० जेणे राजदंड धारण आसमनस्क वि० हर्षथी ऋभरायेला मनवाळ आत्तलक्ष्मी वि० जेनुंधन हराई गयुं आत्मक वि० –नुंबनेलुं; –नास्वभावनुं (ए अर्थमां समासने अंते) आत्मकाम वि० अहंकारी; अभिमानी (२) परब्रह्ममां ज आसक्तिवाळ् आत्मगत वि० मनमां उत्पन्न थयेलुं आत्मगतम् अ० स्वगत वोलवं ते (नाटकमां सूचना रूपे आवे छे) **आत्मघात** पु० आपघात ; आत्महत्या आस्मज पुं ० पुत्र (२) कामदेव (३) वंशज

आत्मजा स्त्री० पुत्री (२) बुद्धि

आत्मजान न० पोताना संबंधी ज्ञान (२) आध्यात्मिक ज्ञान; आत्मानो साक्षात्कार |सतुष्ट **आत्मतृप्त** वि० आत्मतत्त्वमां तृप्त -आत्मत्याम पुं स्वार्थत्याम आत्महत्यः आत्मदर्श पु० अरीसी |आत्मज्ञान **आत्मदर्शन** न० आत्मसाक्षात्कार (२) आत्मन् पुं० आत्मा; जीव; प्राण (२) पोते -पोतानी जात (३) परमात्मा (४)स्थूळ शरीर; देह (५)मन (६) बुद्धि (७)समज(८)आकृति; स्वरूप (९) जोम; बोर्य; यत्न (१०) बायु (११) पुत्र (१२)स्वभाव; प्रकृति (१३)विशिष्ट गुण (१४) घ्येय (१५) समासने अंते '-नुबनेलु'ए अर्थमा वपराय छै। आत्मना अ० पोते; जाते (२) 'द्वितीय,' 'तृतीय' वगेरे ऋमदाचक शब्दो साथे 'पोताने गणताः' एवा अर्थथाय छे **आत्मनिवेदन** न० पोतानी जात के पोतान् बधुं ईश्वरनां चरणामा समर्पी देवूं ते आत्मनीन वि० पोतानूं (२)पोताने माटे उचित एवं (३) प्राणधारी; जीवतं (४) पुं० पुत्र (५) साळो (६) विदूषक आत्मप्रत्ययिक वि० जातअनुभवशी जाणनार्च आत्मप्रभव पुं० जुओ 'आत्मज' आत्मप्रशंसा स्त्री० पोतानी जातनां वखाण आत्मभू पु० ब्रह्मा (२) विण्णु (३) शंकर (४) कामदेव (५) पुत्र वफादार आत्मभूत वि० पोतामांथी जन्मेल (२) **आत्मभानिन्** वि० अभिमानी; गर्वित (२)सर्व प्राणीने आत्मवत् माननारुं **आत्मयोनि** पुं० जुओ 'आत्मभू' आत्मक्त् वि० पोताने वश चित्तवाळ (२) डाह्युं; सम्जण् (३) अ० पोतानी जेम

आत्मबश्य वि० आत्माना - पोताना काबुमां होय तेवुं (२) पोतानी जात उपर काब्रुवाळ् |ब्रह्मज्ञानी आत्मविद् वि० आत्माने ओळखनारुं; **आत्मविद्या** स्त्री० ब्रह्मविद्या आत्मवृत्ति वि० आत्मामां स्थिर वृत्ति-वाळ् (२) स्त्री० पोतानो धंधो के कर्तव्य आचरवां ते (३) हृदयनी लागणी (४) पोताना संजोग मुजबनुं कार्ये आत्मशुद्धि स्त्री० आत्मानी - पोतानी जातनी शुद्धि |आत्मस्तुति आत्मश्लाघा स्त्री० आत्मप्रशंसा; **आत्मसंपन्न** वि० जितेंद्रिय: जात उपर काबूबाळुं (२) बुद्धिशाळी आत्मसंभव पु० पुत्र (२)कामदेव (३) |स्वाभिपान आत्मसंभावना स्त्री० आत्मश्लाघा; आत्मसात् अ० संपूर्ण रीते पोताने स्वाधीन - पोतानुं होय तेम आत्मसिद्धि स्त्री० मोक्ष (२) पोताना हेतुनी सिद्धि – प्राप्ति **आत्मस्य** वि० स्वाधीन आत्महत्या स्त्री० आपघात आत्महन् वि० आत्मघाती आत्मादिष्ट वि० आपमेळे सुझेलुं आत्मानुरूप वि० पोताने योग्य तेवुं आत्मापहार पुं० जातने छुपावबी ते आत्माराम वि० आत्मज्ञान माटे प्रयत्न करनारुं (२) आत्मा ए ज जेने आनंदनुं स्थान के साधन छ तेवुं आत्माश्रम वि०स्वाश्रमी आत्मीकृ ८ उ० जीतवं आत्मीय वि० पोतानुं **काबुवा**ळ् आत्मेश्वर वि० पोतानी जात उपर आत्मोद्भव पुं०पुत्र (२) कामदेव आत्मौपम्य न० पोताना जैवं मानवं ते आत्म्य वि० पोतानुं; पोतानी जातनुं (२) (समासने अंते) –ना गुणधर्मबाळ्

आस्यिक वि० विनाशक (२) अनिष्ट (३) अगत्यनुं; उताबळुनुं (४) मोडुं

(५) न० आफत; विपत्ति; संकट

आत्यंतिक वि॰ अनंत; सतत (२) खूब; पुष्कळ (३) सर्वश्रेष्ठ (४) आखरी; अंतिम; कायमन्

आ<mark>यर्षण</mark> वि० अथर्ववेद मंबंधी (२)पुं० अथर्ववेद (३) अथर्ववेद भणनार (४) न० अभिचार वगेरे कर्म

आदर पुं० संमान; मान (२) काळजी (३) उत्सुकता; आतुरता (४) प्रयत्न (५) आरंभ (६) आसक्ति (७) स्वीकार

आदर्श पुं० अरीसो; दर्पण (२) असल अथवा मूळ प्रत (३) नमूनो (४) टीका; टिप्पणी (५) नकल

आदा ३ आ० लेवुं; स्वीकारवुं (२)
पकडवुं; कबजे लेवुं (३)पहेरवुं; धारण
करवुं (४) (खान-पान तरीके)वापरवुं
(५) लई जबुं; पडाववुं (कर, धन) (६)
तोडी लेवुं; चूंटी लेवुं (७)वहन करवुं
(८) धरपकड करवीं (९) ('वाच्', 'वचस्' – एवा शब्दो साथे) बोलवुं; उच्चारवुं

आदान नर्बे ग्रहण ;स्वीकार (२) मेळवर्बुं ते (३) व्याधिनुं लक्षण ; रोगनुं निदान (४) बांधवुं ; केद पकडवुं

आदि वि०पहेलुं (२)मुख्य (३)मूळतुं; पहेलांनुं (४)पुं० प्रारंभ; शरूआत (५) मूळ कारण (६)प्रथम भाग – हिस्सो (७) समासमां 'वगेरे', एवा अर्थमां अंते आवे छे

आदिकर्तृ पुं० सरजनहार(ब्रह्मा के विष्णु) आदिकवि पुं० ब्रह्मा (वेदोना गानार) (२)वाल्मीकि ऋषि रामायण गानार)

आदित्य वि० सूर्यवंशनुं (२) पुं० देव (अदितिनो पुत्र) (३) सूर्य

आदित्यबंधु पुं० शाक्यमुनि; गौतम बुद्ध आदिम वि० प्रथम - मूळ आदिश् ६ उ० दर्शाववु; सूचवबुं(२) हुकम करवो (३) उपदेशवुं; जणाववुं

(४) भविष्य भाखवं (५) पडकारवं

(६) अजमाववुः प्रयोग करवो

आदिष्ट वि० हुकम करेलुं (२) उप-देशेलुं; दर्शविलुं (३) कहेलुं; भाखेलुं (४) त० हुकम;आज्ञा (५)सलाह; मूचन; उपदेश

आदृ ६ आ० [आद्रियते] आदर आपवो; संमानवुं (२) मन उपर लेवुं; ध्यान उपर लेवुं (३) –मां लागवुं; मंडवुं (४) इच्छवुं; उत्सुक थवुं

आदृत वि० आदर करेलुं; सत्कारेलुं(२) आदरवाळुं(३) लक्षवाळुं; प्रयत्नशील

आदेश पुं० आजा;हुकम(२)उपदेश; शिखामण (३)हकीकत; वर्णन (४) शास्त्राज्ञा; विधि (५) भविष्यकथन (६)संकल्प (व्रतादिनो)

आदेशिक पुं० जोषी; भविष्य भाखनार आदेशिन् वि० हुकम करनारुं; प्रेरनारुं आद्य वि० प्रथम; मूळनुं (२) श्रेष्ठ (३) तरत पहेलांनुं(४)खाद्य(५)समासने अंते '--थी शरू करीने, वगेरे' --ए अर्थमां (६) न० शरूआत (७) अन्न; अनाज आद्यंत वि० आदि अने अंतवाळुं (२) पहेलुं - ले छेन्लुं

आर्युपांतम् अ० पहेलेथी छेडे सुधी आर्युन वि० (बेशरमपणे) खाउधरुं आर्थाषत वि० अपमानित; अवमानित (२) तिरस्कृत; खंडन करेलुं

आधा ३ उ० मूकवुं (२)लगाववुं; स्थिर करवुं (३) लेवुं; धारण करवुं (४) उत्पन्न करवुं; प्रेरवुं (५) पूरुं पाडवुं; अर्पवुं (६) नीमवुं

आधातृ वि० आपनार्ंुः मूकनार्ं आधान न० मूकवुं ते(२)लेवुं – स्वीकारवुं ते(३) असल करवो – पार पाडवुं ते (४) संस्कारपूर्वक अग्निनुं स्थापन ড३

(होम माटे) (५) अर्पवुं; प्रेरवुं; उपदेशवुं (६) रचवुं; उत्पन्न करवुं (७) प्रयत्न; उद्यम (८) थापण; अनामत (९) मैथुन; गर्भावान आधार पुं० टेको; अवलंबन (२)आश्वय; मदद (२) पात्र; वासण (४) झाडना मूळनी आसपासनी क्यारी आर्थि पुं० मानसिक पीडा (२) शाप; आपत्ति; दुर्भाग्य (३) घरेणे म्कवुं ते; गीरो मूकवुं ते (४)स्थळ; स्थान आधिकरिणक पुं० न्यायाधीश आधिक्य न० वधारो (२) श्रेप्ठता आधिदंविक वि० अधिष्ठाता देवोने लगतुं (२) दैवकृत (सुख-दु:ख) **आधिपत्य न० अ**धिपतिपणुं; उपरीपणुं आिषभौतिक वि० पंचमहाभूतने लगतु (२)भूतप्राणीने लगतुं स्वामित्व अधिराज्य न० साम्राज्य; संपूर्ण **आधुनिक** वि० हालनुं; वर्तमान समयनुं आधूत न० हलावेलुं (२)क्षुब्ध ; ध्रूजतुं आधृ १० प० धारण करवुं (२) टेको आपवो | सवार आघोरण पुं० हाथीनो महावत अथवा आध्मा १ प० [आधमति] धमण धमवी; फुलाववुं (२) फूंकवुं (शंख इ०) –कर्मणि० फुलावुं आध्मात वि० फ्लेलुं; भरपूर; व्याप्त (२) घणुं वधी गयेलुं (३) अवाजशी भरायेलुं (४) बळी गयेलुं; दग्ब आध्मान न० धमवुं ते; फूंकवुं ते (२) वधी के फूली जबूं ते (३) बडाई आध्यात्मिक वि० आत्मा संबंधी; आत्म-तत्त्व संबंधी (२)मन वडे थयेलुं (दुःख, शोक, मोह इ०) आध्यायिक वि० वेदाध्ययनमां रत आध्ये १५० घ्यान धरवुं (२) स्मरण करवुं(३)चितन करवुं;याद करवुं आध्वनिक वि० प्रवासी; वटेमार्गु

आनक पुं•ढोल;नगारुं (युद्धनुं) (२) गर्जना करतुं वादळ आनत वि॰ नमेलुं; प्रणाम करेलुं(२) नीचे नमेलुं (३) नम्र **आनित** स्त्री० नमवुं ते (२) नमस्कार; प्रणाम (३) नम्रता आनद्ध वि० वांधेलुं(२)मढेलुं **आनन** न० मुख;चहेरो (२) पुस्तकनो विभाग - खंड **आन्स् १** प० प्रणाम करवा (२) नमवुं; नमी पडवुं (३) नीचा पडवुं आनयन न० लाववुं - आणवुं ने (२) यज्ञोपवित (जनोई) आपवुं ते आनंतर्य न० तरत ज पछी आववुं ते। (२) छेक निकटता; (देश-काळनी) वचगाळो न होवी ते आनंत्य न० अनंतता (२) शाश्यतता (३) उत्तम लोकनी प्राप्ति आनंद् १ प० आनन्द पामवुं; खुश थतुं आनंद पुं० हर्षः; प्रसन्नता (२) परब्रह्म (३) न० परब्रह्म आनंदन वि० आनंददायक; सुखकारक आनायिन् पुं० माछीमार आनी १ प० लई आववुं, लावबुं (२) उत्पन्न करवुं (३) (स्थितिने)पमाडवुं आनीति स्त्री० पासे लई जवुं ते **आनुकूट्य** न० अनुकूलता; सगवड (२) कृपा; महेरबानी **आनुजीव्य** न० सेवकनी आचार आनुपूर्व न०, आनुपूर्वी स्त्री०, आनुपूर्व्य न० परिपाटी; क्रम आनुषात्रिक पुं० अनुचर; अनुयायी आनुषंशिक वि० अमुकना संबंधवाळुं; सहवर्ती (२) गौण; प्रासंगिक (३) सूचित; ध्वनित (४) अनिवायं; अपरिहार्य (५) आसक्त; वारंबार जतुं आवतुं (६) समान; सरखुं आनृण्य न० देवामांथी मुक्त थवुं त

अानृजंस, आनृजंस्य वि० दयाळु; मायाळु (२) न० दयाळुपण्ं; दया आन्वीक्षकी स्त्री० आत्मविद्या (२) तकेशास्त्र **आय् ५** प० मेळवबुं; पामवुं(२)पासे पहींचवुं (३) व्यापवुं आपगा स्त्री० नदी आपण पुं० बजार;दुकान (२)वेपार आपणक, आपणिक वि० बजार संबंधी; व्यापार संबंधी (२)बजारमांथी प्राप्त थयेलुं (जकात) (३) पुं० दुकानदार; वेपारी (४) दुकानो उपरनो कर आपत् १प० हुमलो करवो ; तूटी पडवुं (२) पहोंचवुं; पासे आववुं (३) वेगे घसवुं (४) घवुं ; बनवुं (५) माथे आवी **पडबुं (६) स्फु**रवुं; लागवुं आपत्काल पुं० दु:खनो – संकटनो समय आपत्ति स्त्री० –ना रूप थई जवुं – बनी जबुंते (२) प्राप्ति (३)आफत; विपत्ति (४) भंग; उल्लंघन; दोष आपद् ४ आ० नजीक जवुं (२) —ना रूप बनवुं; –नुं रूप प्राप्त करवु (३) विपत्तिमां आवी पडवुं (४) बनवुं; थवुं आपद् स्त्री० संकट; विपत्ति (२) दुर्भाग्य आपदा स्त्री० आपत्ति (२) दुर्भाग्य आपद्गत, आपद्ग्रस्त वि० आवी पडेलुं; दुःखी (२) दुर्भागी आपद्धर्म पुं० आपत्तिना समयनी धर्म; आपत्तिना समये न छुटके धर्मशास्त्रे जे करवानी रजा आपी होय ते आचार आपन्न वि० पामेलुं; प्राप्त (२) --मां जई पडेलुं; —ने प्राप्त थयेलुं (३) दु:खमा आवी पडेलुं (४) आवी पडेलुं आपन्नसत्त्रा स्त्री० गर्भिणी; सगर्भा स्त्री **आपस्कार** न० शरीरनुं थडियुं आया १ प० [आपिबति] पी जवुं (२) (कान के आंख वडे) खुब ध्यानथी जोवं के सांभळवं

आपात पु॰ उपर तूटी पडवुं ते – मसी जबुं ते (२) नाखबुं ते; पाडबुं ते (३) चालु क्षण; चालु समय (४) अचानक आववु ते आपाततः अ० नजर पडतां ज ; तत्काळ आपात्य वि० धसी आवतुं;हुमलो करतुं आयाद पुं० प्राप्ति (२)फलप्राप्ति **आपादन** न० थाय एम करवुं ते; कोई स्थितिमां लाववुं ते आपान न० (दारू) पीवानी महेफिल (२) दारूनुं पीठुं (३) हवाडो **आधिजर** वि० रताक्ष पडतुं आपीड १० प० दाबवुं; भार देवो (२) पीलवुं; कचरबुं आपोड वि० दुःख आपतुं; ईजा करतुं (२) कचरतुं; पीलतुं (३) पुं० माथे बंधाती कलगी ; तोरो (४) झरणुं आपीत वि० पीळाश पडतुं (२) थोडुं पीधेलुं [आउ; आंचळ आपीन वि० जाडुं (२) पुं० कूबी (३) न० आपूर पुं० प्रवाह; पूर (२) भरी काढवुं ते आपूरण वि० भरी काढतुं; पूर्ण करतुं (२) न० भरी काढवुं ते आपूर्यमाण वि० भरी कढातुः पूर्ण करातु आपूष न० कलाई निमस्कारायेलुँ आपृष्ट वि० पुछायेलुं(२)सत्कारायेलुं; आर्ग् ९ उ० भरवुं; पूर्ण करवुं **आपेक्षिक** वि० अपेक्षा ऊभुं करतुं आप्त ('आप्'नुं भू० कृ०) वि० प्राप्त (२) विश्वासपात्र (३) यथार्थ ज्ञानवाळूं (४) युक्ति – दलीलवार्लु (५) कुशळ (६) संपूर्ण ; पुष्कळ (७) परिचित ; संबंधी (८)पहोंचेलुं ; ब्याप्त (९) पुं• स्नेही ; मित्र ; संबंधी (१०) विश्वास-पात्र माणस आप्तकाम वि० जेनी इच्छा पूर्ण थई छे तेवं (२) जेणे सर्व सांसारिक वासनाओनो त्याग कर्यो छे एवं

आफ्तकारित् पुं० विश्वासु नोकर के कर्मचारी आप्तवचन न० विश्वासपात्र के प्रमाण-भूत माणसनुं बचन (२) वेद के शास्त्रनुं प्रमाणभूत वचन आप्तवाच् वि० जेनुं वचन प्रमाणभूत गणाय तेवुं(२)स्त्री ० जुओ 'आप्तवचन' आफ्ति स्त्री० प्राप्ति; लाभ (२) संयोग; संबंध (३) समाप्ति; परिपूर्णता आष्याय पु० जाडा के पूर्ण थवुं ते **आप्यायन द०** पूर्ण के जाडुं करवुं ते; (२) प्रसन्न – तृप्त करवुं ते ; प्रसन्नता ; तृप्ति (३) वृद्धि; विकास; पुष्टि आरम्यं १ अग० जाडा थवुं; पूर्णक्षवुं –प्रेरक० जाडुं करवुं; पूर्ण करवुं (२) संतुष्ट करवुं; खुश करवुं आप्रच्छ ६ आ० | आपृच्छते | विदाय मागबी; विदाय लेबी (२) पूछवुं (३) प्रशंसा करवी (बस्त्र, माळा इ०) आप्रयदीन वि० पगना छेडा सुधी पहोंचतुं आप्लब पु०, आप्लबन न० डूबकु मारब् ते; नाहबुं ते (२) बधी बाजुए पाणी छांटवु ते आष्लाश पुं० स्नान ; इबकी (२)महा-पूर (३) जळ छांटवुं – उछाळबुं ते आफ्लु १ आ ० कूदबुं; ऊछळबुं(२) नाहवुं; डूबकुं मारवुं −प्रेरक० नवराववं (२)धोवं;छाटवुं; पलाळवुं (३) छलकावबुं; ऊभरावबुं (४) -ना उपर रेलाववुं (पूर) आप्लुत वि० नाहेलुं (२) छांटेलुं; भीनुं करेलुं (३) –थी रेलायेलुं; ऊभरायेलुं (४) यस्त; छवायेलुं आफ्लुब्ट वि० थोडु दाझेलुंके बळेलुं आफलक पुं० आहः, वाड आबद्ध वि० बांधेलुं – बंधायेलुं (२) रचायेलुं – रचेलुं (अंजलि, कूंडाळुं इ०) (२) स्थिर करेल्

आबंब् ९ प० [आबच्नाति] बांधवुं (२) रचवुं (३) वळगवुं आबंध पुं०, आखंधन न० दृढ बंधन (२) जोत्तरुं; जूसरानुं बंधन आज्ञाध पुं०पीडा; ईजा (२) उपद्रव; हरकत; बिघ्न तापरूप क्लेश **आबाधा** स्त्री० पीडा (२) त्रण प्रकारना आब्दिक वि० वर्षनु; वर्षने लगतु **आभरण** न० अलंकार (२) पोषण आभा २ प० प्रकाशवुं (२) देखावुं आभा स्त्री० प्रकाश; कांति; प्रभा (२) शोभा;सौंदर्य(३)सादुव्य(४) छाया; प्रतिबिब **अग्रभाषक** पुंठ लोकोक्ति; कहेबत आभाष् १ आ० वात करवी; संभाषण करवुं; कहेवुं (२)मोटेथी बूम पाडवी आभाष पुं०, न० संभाषण; वातचीत (२) प्रस्तावना; उपोद्घात (३) कहेवत आभाषण न० संबोधन (२) वातचीत **आभाष्य** वि० संबोधवा – कहेवा लायक आभास् स्त्री० प्रकाशः; तेज आभास् १ आ० प्रकाशित करवुं; प्रकाशवुं (२) देखावुं; --ना समान देखावुं (३)आभास थवो आभास पुं० प्रकाश; तेज (२) प्रतिबिब; छाया (३) सादृश्य; –ना जेवुं देखावुं ते(४)भ्रम;खोटो देखाव(५)इरादो; |वगेरेथी करेलुं ल्याल आभिचार, आभिचारिक वि० मंत्र तंत्र आभिजन वि० वंशने कारणे मळेलुं; वंश संबंधी (२) न० कुलीनता **आभिजात्य न० कु**लीनता; खान**दा**नी (२) पोडित्य (३) सौन्दर्य आभिनुष्य न० -नी तरफ, -नी संमुख होवुं ते (२) तत्परता; प्रवणता आभिरामिक वि० प्रिय; सुन्दर; मनोरम आश्मिषेचनिक वि० अभिषेक संबंधी आभोर पुं० अभीर; गोवाळ

आभील वि० भयंकर(२)न० दु:ख; पीडा आभुग्न वि० थोडुं बाकू बळेलुं आभृत वि० उत्पन्न करेलुं;सरजेलुं(२) पूर्ण; स्थिर आभोग पुं० वांक; बळांक (२) विस्तार; आसपासनो भाग (३)नागनी फेलावेली फणा (४) भोग; तृप्ति **आभ्यंतर** वि० अंदरतुं; माहेलुं आम्यासिक वि० अभ्यास के महावरा-मांथी परिणमतुं (२) निकटनुं आभ्युदियक वि० उन्नति, आबादी के कल्याण करनारुं (२) कञ्चाना उदय के शरूआतने लगतुं आम् अ० 'हा'; 'हो'; 'हें' (स्वीकार, संमति, स्मृति, निश्चय दशवि छे) अरम वि० काचुं; अपरिपक्व (२) नहि रंधायेलुं (३) नहि पचेलुं (४) पुं• रोग(५) अजीर्ण(६)न०काचुं के कूणुं होबुंते (७) कद्यजियात; पराणे के खराब झाडो थवो ते आमय पुं व्याधि; रोग (२) हानि; नुकसान; नाश (३) अजीर्ष आमरणांत, आमरणांतिक वि० मरण पर्यंतन् 🗕 दबाववुं ते आमर्द पुं० कचरवुं ते (२) चोळी नांखवुं आमर्श पुं०, आमर्शन न० गाढ स्पर्शे (२) कूछव् ते (३)सलाह; विचारणा (४) | (२) अधोराई मनोवृत्ति आमर्ष पुं०, आमर्षण न० कोघ; गुस्सो **आमलक** पुं॰ आमळूं आमंजु वि० सुन्दर; रमणीय **आमंत्र १०** आ० बोलाववु; आमंत्रण आपवुं – नोतरबुं (२)संबोधवुं ; कहेबुं ; वातचीत करवी (३) विदाय लेवी आमंत्रण न०, आमंत्रणा स्त्री० संबोधन ; बोलाववुं ते (२) वातचीतः; कहेवुं ते (३) निमंत्रवुं ते **आमंत्रित** वि० आमंत्रेलुं

आम्नाय **आमंद्र** वि० थोडी घेरी गर्जनावाळ आमिष न० सांस (२) शिकार; भोग्य पदार्थ (३) लांच (४) लोभ (५) लोभाववा माटेनी वस्तु (६) मोह उपजावनार पदार्थ आमील् १० प० मींचवुं (आंख) आमुक्त वि० छूटुं करेलुं (२) पहेरेलुं (३)छोडेलुं;फोंकेलुं;काढी नाखेलुं आमुख न० आरंभ; शरूआत (२) ग्रंथनी प्रस्तावना आ**मुच् ६** उ० [आमुंचति–ते] जवा देवुं; छोडी देवुं (२)पहेरवुं;धारण करवुं (३) छोडबुं; फेंकबुं (४)काढी नांखबुं; फेंकी देवं (वस्त्र) आमुष्मिक वि० परलोक संबंधी **आमुष्यायण** पुं० जुओ 'अमुष्यपुत्र ' **आमृद्९** प० चोळी नाखबुं (२) निचोवी नाखवुं **आमृश**्६ ५० स्पशेबुं;मर्दन करवुं(२) पकडवुं; खावुं(३)हुमलो करवो(४) घसवुं ; लूछी नाखवुं (५) विचार करवो **आमृष्ट** वि० स्पर्शेलुं (२) पकडेलुं; हुमला करेलुं (३) मर्दन करेलुं (४) लूछेलुं आमोक्षण, आमोचन न० छुटुं करव् ते (२)छोडवुं ते : फेंकवुं ते (३) पहेरवुं--धारण करवुत आमोटन न० भूको के चूर्ण करवृते आमोद पुं० आनंद (२) सुगंध **आमोदिन्** वि० हर्षित (२)सुगंधित आम्ना १ प० | आमनति | शास्त्र-वाक्यरूपे कहेबुं; प्रवर्तित करवुं (२) याद करवुं; अभ्यासर्वु आम्नात वि० सारी पेठे अभ्यासेलुं (२) कहेलुं; उपदेशेलुं; शास्त्रवाक्य रूपे प्रवतिवेलुं (३) मानेलुं; गणेलुं आम्नाय पुं० परंपराथी चालता आवेल वेद वगेरे शास्त्र (२) परंपराथी चालता

आवेलो आचार (३) शास्त्रोपदेश

आम्न पुं० आंत्रानुंबुक्ष (२) न० केरी **आम्रवण** न० ओबानुवन आम्ल वि० खाटुं (२) न० खटाश आय पुं० आववुं ते (२)लाभ;प्राप्ति (३)आवक; नफो (४)उपाय; साधन **आयत् १** आ० प्रयत्न करवो (२) आधार राख*व*ो आयत वि॰ दीर्घं; लांबुं (२) मोटुं; विशाळ (३) खेंचेलुं; खेंचायेलुं(४) नियंत्रित (५) दूरनुं; भविष्यनुं **आयतन** न० स्थान ; ठेकाणुं (२) निवास-स्यान (३) यज्ञस्थान (४)देव वगेरेनुं स्थान आयतम् अ० लाबुं – दीर्त्रहोय तेम आयित स्त्री० लंबाई (२) विस्तार (३) भविष्यकाळ (४)फळ; परिणाम (५) प्रभाव;तेज (६)संयम;निग्रह (७)वंश; (करनार्घ; थाकेलुं संतनि आयत्त विश्वाधीन;ताबे(२) प्रयत्न **आयर्वाशन्** वि० महेसुल उघरावनाहं **आयम् १** उ० लंबावतुं; लांबुं करवुं (२) निग्रह करवो; अंदर खंचत्रुं (श्वास) (३) पकडवुं ; छेवुं (४) –नी तरफ दोरबुं – लावव् आवस् ४ प० उद्यम करवो; प्रयत्न करवो (२) थाकी जब –प्रेरक ० पीडवुं ; त्रास आपवो (२) थक्षवबुं (३) पणछ चडावबी **आयस** वि० लोडानुं के धातुनुं बनेलुं (२) लोढाना रंगनुं (३) न० लोखंड(४) लोखंडनुं बनेलुं कंई पण; शस्त्र; ओजार आया २ प० आवर्ष् (२)पामवुं;पहोंचबुं (कोई दशाने) (३) प**रिणमवुं** आयात वि० आवेलुं (२) पामेलुं; पहोंचेलुं (दशाने) (३) न० उद्रेक **आयाम** पु० लंबाई; विस्तार (२) लांबुं करवुं ते ; विस्तारवुं ते (३) नियमन **अध्यास** पुंच अति यत्न; प्रयास (२) थाक

आयुक्त वि० नियुक्त(२)जोडायेलुं आयुज् ७ आ० जोडवुं; जोतरवुं; बांधवुं (२) नीमबुं आयुथ पुं०, न० शस्त्र; हथियार आयुर्वेद पु० वैदक शास्त्र **आयुष** न० आयुष्य आयुष्कर वि० आयुष्य वधारनारुं आयुष्मत् वि० जीवतु (२) लाबा **जीवनशक्ति** आयुष्यवाळ् आयुष्य वि० आयुष्यवर्धक (२)न० प्राण; आयुस् न० आयुष्य ; जीवन (२) प्राण आयोग पु० निमणुक ; सोंपणी (२) संबंध आयोजन न० जोडवुं ते (२) उद्योग; प्रयत्न (३) लेबुं ते; एकठुं करबुं ते आयोधन न० युद्ध (२) रणभूमि आरक्ष पु०, आरक्षा स्त्री० रक्षण (२) हाश्रीना कुंभस्थळतो नीचलो भाग (३) लक्कर; मैन्य नि० जंगल; वन आरण्य वि० अरण्यनुं; जंगली (२) पुं०, आरण्यक वि० जंगली; जंगलमां उत्पन्न थयेलुं (२) पुं० अरण्यवासी (३) न० अरण्यमा रचायेलो के अरण्यवासीना धनों के तेमनां चिंतनो निरूपतो ग्रंथ **आरत** वि० थोभेलुं; अटकेलुं आरति स्त्री० निवृत्ति; उपरति (२) आरती उतारवी ते आरब्ध वि० शरू करेलुं आरभ् १ आ० शरू करव्ं; आरंभ करवो (२) उद्यम करवो आ**रम् १** प० आनंद माणवो; रमवुं (२) विरमवुं; अटकवुं (३) थाक खावो आरंभ पुं० प्रारंभ ; शरूआत (२) त्वरा (३) उद्यभ (४) कार्यः; क्रियाः; व्यापारः (५) वध; हिंसा आरा स्त्री० चमारनी आरी आरात् अ० नजीक ; पासे (२) दूर आराति पुं० शत्रु; दुश्मन आरात्रिक न० आस्ती

आराष् ५, १० प० प्रसन्न करवुं(२) पूजा करवी; आदर करवी **आराधन** न० प्रसन्न करवुं ते; माधत्रुं ते (२) प्रसन्नता; संतोष (३) पूजा; उपासना; संमान आराधनीय वि० आराधवा योग्य (२) साधवा योग्य आराधिवतु वि० पुजक; उपासक; सेवक आराष्ट्रिकणु वि० प्रसन्न करवा प्रयत्न करतुं; सेववानी इच्छा राखतुं आराध्य वि० जुओ 'आराधनीय' आराम पुं आराम; विश्रांति (२) आनंद (३) बाग; बगीचो **आराव** पुं० बूम;गर्जना(२)गुंजारव आराविन् वि० अवाज करतुं आरास पु० चीस; बुमाटा आर २ प० बूम पाडवी आरुज वि० पीडा करतुं;त्रास आपतुं आरुत न० अवाज; ध्वनि **आरध्** ७ उ० घेरो घालको (२) दूर राखवुं; अटकाववुं आरुरक्ष वि० उपर चडवानी के -ने प्राप्त करवानी इच्छावाळुं आरुह् १ प० ऊंचे चडवुं (२) सवारी करवी (३) लेवुं; माथे लेवुं (प्रतिज्ञा इ०) (४) पामबुं; पहोंचबुं –प्रेरक० [आरोहयति, आरोपयति] ऊंचे चडावबुं; उपर चडावबुं (२) सवारी करावत्री; बेसाडवु (३) पहोंचाडवुं (४) स्थिर करवुं;'म्कबुं (५)आरोपबुं(६)पणछ चडाबबी **आरूढ** वि० उपर चडेलुं; सवार थयेलुं आरूढि स्त्री० चडती; उन्नति आरेचित वि० खाली करेलुं (२) भेळवेलुं (३) संकोचेलुं **आरोग्य** न० तंदुरस्ती; कुशळता **आरोध** प्० घेरो आरोप पुं० मूकवुं ते; लादवुं ते (२)

आरोप मूकवो ते (३) एक वस्तुना गुणनुं बीजी वस्तुमां आरोपण करवुं ते आरोपण न० मूकवुं ते; स्थापवुं ते; चडावबुं ते (२) वावबुं ने (३) धतुष्प-नी पणछ चडावकी ते आरोह पुं० ऊंचे चडवुं ते; मवारी करकी ते (२) चडनार; सवारी करनार (३). कची जगा; कंत्राण; बडाव (४)पर्वत; ढगलो (५)गर्व; अभिमान (६)स्त्रोतो नितंब [(२) हांकतार आरोहक पुं० सवारी करनार; सवार **आरोहण** न० ऊँच चडबु ने (२) --उपर सदार थवु ते (३) निसरणी (४) नृत्य माटेनी ऊर्जा रंगभूमि आरोहिन् वि० ऊँच चडनानं (२) सनारी आर्जव न० सरळका; सीधापणुं (२) नम्रता (३) प्रामाणिकवा आर्त वि० -धी भीडित (२) रोगी: आर्तनाद पुं० दुःखनो अवाज आर्तव वि० अप्तु संबंधी (२) स्त्री-ओना मासिक ऋतुस्राव संबंधी (३) न० स्त्रीओनो मासिक ऋतुम्बाद आर्तस्वर पुंच जुओं 'आर्तनाद' आर्ति स्त्री० दुःव ; पीडा (२) ब्याधि (३) नाग (४)मानसिक दुःख; विसा आर्थ वि० शब्दार्थ संबंधी (२) पदार्थ **आधिक वि० अर्थयुक्त; सब्दार्थने** जगत् (२) डाह्युं (३) संपत्तिमान (४) वास्तविकः; लारुं **आर्द्ध** न० समृद्धिः; विपुलता आर्द्ध वि० भीत्; भेजवाळ (२) ठीउँ; सूकुं नहि तेवुं (३) ताजुं (४) पौगळो गयेलुं (स्तेह, दया इ० थी) आर्थ वि० अर्थु (समासना प्रारंपनां; उ**दा०** आर्थमानिक) आर्य वि० आर्य जातिनुं (२) आर्यने छाजे तेवुं (३) संमाननीय; लायक;

शिष्ट (४) उच्च; श्रेष्ठ (५) पुं० आर्य जातिनो मनुष्य (६) ब्राह्मण, क्षत्रिय के वैश्य (७) संमानतीय पुरुष (८) श्रेष्ठ कुळमां जन्मेली माणस (९) ससरो (जेम के 'अर्स्यपुत्र'मां) (१०)न०पुण्य;शील(११)विवेक आर्येक पुं० दादो (२) संमाननीय पुरुष **आर्यगृह्य** वि० आर्यपक्षनु **आर्यजुष्ट** वि० आर्थीए सेवेळुं – अनु-सरेलुं; आर्यने छाजतुं आर्यदेश पुं० आर्य लोकोनो देश **आर्यपुत्र** पुरु संमान्य पुरुषनो पुत्र(२) पतिनुं संबोधन (नाटकमां) आर्यमिश्र वि० पूज्य; संमाननीय पुरुप (२) पुं० सद्गृहस्थः; सज्जनपुरुषः आर्यवृत्तः न० आर्थपुरुश्नो सदाचार आर्यसत्य न० आर्ये - बुद्धे बतावेलुं मत्य (दु:खनो उपाय वगेरे बाबत) आर्था स्त्री० पूज्य के संमानतीय स्त्री (२) सासु (३) पार्वती **आर्यावर्त** पुं० आर्योनुं मूळस्थान(उत्तरमां हिमालय, दक्षिणमां विध्य, तथा पश्चिम अने पूर्वमां महासागरथी घेरायेलो प्रदेश) आर्थ वि० ऋषि संबंधी; ऋषिनुं(२) पवित्र; अलौकिक (३) वेद संबंधी; वेदनुं (४) पुं० विवाहनो एक प्रकार (वर पासेथी गायनी एक-वे जोड लईने कन्या आपे) **आलक्ष् १०** उ० जोवुं दिखातु आसम्ब वि० नजरे पडतुं (२) थोडुं आलजाल न० छळकपटरूपी जाळ आलप् १ प० बोलवुं;कहेवुं;वातचीत करवी आसब्ध वि० स्पर्शायेलुं; संयुक्त(२) मेळवेलुं; जीती लीधेलुं (३) वध करायेळुं; हिंसित आस्म् १ आ० स्पर्शं करवो (२) मेळववृं;

प्राप्त करवुं (३) वश्र करवो; कापवुं (४) पकडवुं; झालवुं (५) जीती लेवुं; मेळवी [गाम (४) निवासस्थान आलयपुं०, न० स्थान; धाम (२) घर (३) **आलयम् अ०** मृत्यु पर्यंत आलकं वि० हडकायेला कूतरानुं आलवाल न० (वृक्षनी आसपासनी) आलस्य न० आळस आलंब् १ आ० आधार राखवो; टेको लेबो (२)लटकवुं (३)पकडवुं ; लेवुं **आलंब** वि०लटकतुं(२) पुं∙ आश्रय; आधार (३) पात्र आलंबन न० आधार; टेको (२)कारण; हेतु (३) पात्र |टेको आपेलुं आलंबित वि० लटकतुं (२) पकडेलु; **आलंबिन्** वि० लटकर्तु (२) –ना आधारवाळुं; -ने आश्रये रहेलुं(३) टेको – आश्रार आपतु आलंभ पुं०, आलंभन न० स्पर्श (२) आलान न० हाथीने बांयवानो थांभलो; ते माटेनुं दोरडुं (२) बंधन आलाप पुं० संभाषण; वातचीत (२) कही बताववुं ते आलापन न०संभाषण; वातचीत(२) स्वस्तिवाचन ; आशीर्वचन आप्ति पुं० भमरो (२) वींछी आिल स्त्री० सखी; सहचरी (२) हार; ं [(३)खणवुं;स्पर्शवुं **आस्टिल् ६** प० लखर्यु (२) चित्र काढवुं आलिप्६ प० (आलिपति) लेप करवाः; चोळवुः; खरडवुं आलिप्त वि० लेप करेलुं, खरडेलुं(२) लीपेलुं; धोळेलुं आलिंग् १ उ०, १० प० भेटवुं आलिंगन न० भेटवुं ने **आ**वलि आली स्त्री० सखी; सहचरी(२)हार; आली ४ आ० उपर बेसवु; अंदर ध्सी जबुं (२) मूछित थवुं

आलीढ वि० चाटेलुं; चाखेलुं(२)ईजा पामेलुं (३) न० लक्ष ताकती वसते जमणो ढींचण आगळ करी, डाबी पग पाछळ करी, भरातो पेंतरो **आलीन** वि० भेटेलुं;वळगेलुं;चोटेलुं आलुड् १ प०, --प्रेरक० डखोळबुं; हलाववुं **आलुलित** वि० थोडुं क्षुव्ध ययेलुं आलुंचन त० चीरी नाखवं – फाडी नाखव ते आलून वि० चूंटेलुं; तोडेलुं; छेदेलुं आलेख पुं० लखवुं ते (२) पत्र ; खत **आलेखन** न० खोतरवुं ते (२) चीतरवुं ते (३) लखबुते **आलेखनी** स्त्री० पींछी; कलम आलेख्य न० चित्र(२)लेख;लखाण आलेक्यद्रोध वि०मृत (जेनुंचित्र ज बाकी रहधुं छे तेवुं) **अज्ञोक् १** आ०, १० प० जावुं; निहाळवुं (२)गणवुं; मानवुं (३)अभिनंदवुं आलोक पुं० जोबुंते (२) देखावुंते; नजरेपडवुं ते (३) प्रकाश; तेज(४) द्धितमर्थादा (५) ग्रंथविभाग (६) प्रशंसावचन **अस्त्रोकक** पुं० द्रष्टा; जोनार आलोकन न० आलोकवुं -- जोवुं ते आलोकनीय वि० जीवा योग्य (२) विचारवा योग्य आलोकित न० नजर; कटाक्ष क्रा**लोच् १** आ०, १० उ० जोबुं;विचारबुं अल्लो**चित** वि० जोयेलु; विचारेलु आ**लोडित** वि० डखोळेलुं; हलावेलुं ८२) मिश्रित करेलुं; भेळवेलुं आलोल वि० चंचळ (जेमके आंख) (२) हालम् ; क्षुब्ध आवपन न० वाववृते; वेरवृते (२) मुंडन ; बाळ कपाववा ते आवरण वि०ढांकनार्ह (२) न०ढांकर् ते (३) आवरण; ढांकण (४) रुकावट

आवह् (जेम के लज्जानी)(५) वंडो; भींत; कोट(६) बस्तर(७)चामडानुं मोजुं (धनुष्य वापरती वखते पहेरवानु) **आवर्जन** न० नमाववुं ते ; वाळवुं ते (२) आपवुं ते (३) जीती लेवुं ते आवर्जित वि० नमेलुं; वळेलुं (२) वहेत्ररावेलुं; रेडेलुं (३) नमाबेलुं; वश करेल **आवर्त** पुं॰ चक्राका रे गोळ फरवुं ते (२) पाणीन् वमळ; भमरो (३) मनमां वारवार चितवबुं ते;चिता –विचारणा (४) घोडाना शरीर परनो गूंबळिप्रा वाळनो गुच्छो , सुभ गणाय छे । (५) संशय आवर्तक पुं० बार प्रकारना मेघोमांना एक (२) भमर उपरनो खाडो (३) चक्राकारे फरवुं ते (४)मनमा आवर्तन करवृते (५ पाणीनुं वमळ ∫फरवुं ते **आवर्तन** न० पाछुं फरवुं ते (२) चक्राकारे **आव**लि स्त्री० हार ; ओळ (२)परंपरा **आवलित** वि० थोडुं वळेलुं आक्ली स्वी० जुओ आविलि' आवस्मित वि० ऊछळत् आवरिगन् वि० कूदत्; नाचत् आवक्ष्यक वि० जरूरतुं; अगत्यनुं(२) अनिवार्य आवस् १ प० रहेवुं (२) प्रवृत्त थवुः; प्रवेद करवो (३) व्यतीत करवुं; गळदुं (रात) आवसति स्त्री० रात्रि; मध्यरात्रि **आवसथ** पुं ० घर; निवासस्थान;विश्राति-स्थान (२) विद्यार्थीओं के भिक्षुओं माटेन्ं निवासस्थान (३)गामडुं (४) यज्ञनो अग्नि राखवानुं स्थान **आवह**् १ प० लाववु (२) आणुं करवुं (नवोद्धानुं) (३) उपजाववुं; पेदा करवं (शरम इ०) (४) दोरी जयुं; लई जबुं (५) पहेरवुं; धारण करवुं

(६) अखत्यार कस्बुं

बावह वि० लावनारुं; उत्पन्न करनारुं (उदा० दुःखावह) **रावाप** पुं० खेतरमां बीज वाववां ते (२) वृक्षनी आसपासनी क्यारो (३) शत्रु के परराष्ट्र अंगे विचारणा(४)कंकण **गवास् १०** प० सुगंधित करवुं ग्र**वास** पुं० निवासस्थान; घर (२) आश्रयस्थान ग्र**बाह** पुं० एक धार्मिक विधि त**बाहन**ा ० बोलाववु – निमन्नवु ते(२) नि० अनन् वस्त्र देवनु आबाहन त**बिक** वि० ऊनन् (२) घेटा संबंधी (३) ग**विद् २** उ०*, –*प्रेरक० जणाववुं; निवेदन करवुं (२) अगाउथी जाण करवुं (३) विक्षम आपवी ग**विद्ध** ('आव्यघ्'नुं भू० क्र०) वि० वींक्षायेलुं: छेद पडायेलुं (२) वांकुं; वळेलुं (३) जोरथी फेंकेलुं (४) एकबीजा पासे नाखेलुं ∣ते (२)अवतार **ाबिभावि** पुं० प्रकट थवुं ते⊹प्रकट करवुं त**विर्भ १** प० प्रकट थवुं; देखावुं ग**बि**ल वि० दूषित;मिलन (२) अस्बच्छ; गंदुं (३)अस्द्ध (४)काळाश पडतुं (५) झालुं; अस्पष्ट ाबिश्६ ५० प्रवेश करवो (२) पास जबुं(३) कबजो लेवो (भय,कोध इ० लागणीओए) (४) अमुक स्थिति प्राप्त करबी (सुख, दु:ख इ०) ।बिष्करण न०, आविष्कार पुं० प्रकट थवाते: प्रकट करवं ते ारिष्क्र ८ उ० खुल्लुं करवं; प्रकट करवें **ाविष्कृत** वि० प्रकट करायेलुं **– थये**लुं (२) प्रसिद्ध थयेलुं **ग़रिब्ट** वि० प्रवेशेलुं (२) ग्रस्त (भूत-प्रेतादियों के भयकोधादिथी) (३) तत्पर; मग्न ग्राबिस् अ० प्रकट ; खुल्लु ; नजर सामे ग्रवुक पुं० पिता; बाप (नाटकनी भाषामां)

आधुत्त पुं० बनेबी आवृ ५, ९, १०, उ० ढांकवुं(२)वरवुं; पसंद करवुं (३) व्यापवुं; भरी काढवुं (४) रोकवुं; निवारवुं **आवृज् १** आ० आपवुं(२)तरफ वळवुं (३) पसंद करवं –प्रेरक० वाळवुं; नमाववुं (२) जीती लेवुं; मनावी लेवुं; खुश करवुं (३) भेगुं करवुं; लावबुं (४) आपवुं; वरसाववुं (५) खें**ची लेवुं; काढी** लेवुं (६) ठालवबु आवृत् १ आ० गोळ फरवुं (२) पाछ्ं फरवुं; पाछुं वळवुं (३) तरफ जबुं –प्रेरक० फेरववुं (२) गबडाववुं; उलटाववुं (३)रेलाववुं (आंसु)(४) पुनरावृत्ति करवी आवृत्त वि० गोळ फरेलुं (२)पाछुं फरेलुं के फेरवेलुं(३)पुनरावृत्ति करेलुं (४) गोखेलुं (५) नासी गयेलुं **आवृत्ति** स्त्री० पुनरागमनः, पाछा फरव् ते (२) प्रलायन (३) गोळ फरवुं ते; आसपास फरवुं ते (४) फरी फरीने जन्म-मरण पामवां ते (५) फरी फरीने अभ्यास (६) एकनी एक किया फरी फारोने करवी ते **आवेग** पुं० जुस्सो; आवेश (२) क्षोभ; व्यप्रता (३) त्वरा; उतावळ आवेश पुं• प्रवेश (२) जुस्सो; ऊभरो (३) ग्स्सो (४) अभिमान; अहंकार (५) अभिनिवेश; आसक्ति (६) वळगाड (भूत वगेरेनो) आवेष्ट् १० प० ढांकवुं; बिछाववुं(२) आमळब् **आवेष्टन** न० ढांकण (२) वींटवुं – बांधवुं ते (३) वाड; कोट आज्ञ पुं० खाबुंते; भोजन आज्ञय पु० अभिप्राय; इरादो (२)विभव; समृद्धि;मिलकत(३)वासनारूप संस्कार (४)भाग्य; अदृष्ट (५) चित्त (६) शयन-

स्थान (७) सूर्वु ते – शयन (८) निवास-स्थान; आधारस्थान; आधार (९) पश्ने पकडवा माटे करातो खाडो आशंक् १ आ० शंका करवी; वहेम लाववो (२) बीवुं;डरवुं (३) कल्पर्बु आर्जाका स्त्री ० शंका; संशय (२) भय (३) अविदवास; वहेम आशंस् १ आ० (कदीक प०) आशा राखवी;इच्छा राखवी (२) शुभ इच्छवु (३) प्रशंसा करवी (४) डरवुं (५) कहेवुं आशंसा स्त्री० इच्छा (२) आशा (३) कल्पना (४) कथन आशंसु वि० आशावाळुं; इच्छावाळुं आज्ञा स्त्री० उमेद; धारणा (२) दिशा **आशातंतु** पुं० आशानी तांतणो **आशार्यप** पुं० आशानुं बंधन ; आसानो [बस्त्रवाळुं) आधार;आश्वासन आज्ञाबासस् वि० नग्न (दिशाओ रूपी आशास् २ आ० आशीर्वाद आपवो (२) इच्छवुं; आशा राखवी (३) हुकम करवो; आज्ञा करवी (४) प्रशंसा करवी आशास्य वि० आशीर्वादथी प्राप्त करवा योग्य (२)आज्ञीर्वाद आपवा योग्य (३) इच्छवायोग्य (४) न० इच्छा (५) आशीर्वाद **लाउध**र आशित वि० भोजनथी तृप्त थयेलुं(२) **आक्षिन्** वि० खानारुं;खातुं (समासमां; उदा० 'फलाशी') आशिस् स्त्री० आशीर्वाद (२) इच्छा (३) सापनी दाढ आक्ती २ आ ० उपर सूर्वु (२) सूत्रामां पसार करवुं (३)इच्छवुं;प्रार्थवुं (४) वसवुं; रहेवुं **आशीविष, आशीविष** पुं० (जेनी दाढमां विष छे तेवो) झेरी साप आज्ञु वि० उतावळुं; वेगयुक्त (२) अ० पुं० बाण जलदीयी; त्वरायी आश्चम वि॰ जलदी जनारुं; उताबळुं (२) **आशुतोब** वि० जलदीथी प्रसन्न थाय एवं (२) पुं० शंकर **आशुशुक्षणि** पुं०पवन (२) अग्नि आइचर्य वि० अद्भृत; विलक्षण (२) न० आश्चर्यकारक वस्तु के बनाव (३) अचंबो; विस्मय आइमन वि० पथ्थरनुं बनेलुं आक्षान वि० सुकाईने गठ्ठो थयेलुं. **आश्रम** पुं॰ साधु-तपस्वीनो निवास; झूंपडी (२) तपोवन (३) जीवननो विभाग (ब्रह्मचर्य, गृहस्य, दानप्रस्थ अने सन्यास --ए चारमांनो कोई पण) आश्रमधर्म पुं० तपस्वीनो धर्म (२) दरेक आश्रमनुं कर्तव्य **आश्रमपद** न० आश्रम अने तेनी आज्-बाजुनो प्रदेश; तपोवन आश्वय पुं • आधार (२) निवासस्थान(३) आश्रयस्थान (४) बाण राखवानुं भार्थ् **आश्रयण** वि० आश्रय लेतुं – शोधतुं (२) -ने लगतुं; -ना संबंधी **आश्रव** वि० आज्ञांकित;नम्न(२) पुं० वचन (३) करार (४) दोष ; क्लेश आश्वि १ आ० आधार लेवो; आश्रय लेबो (२) अनुभववुं (३) चोटवुं; वळगवुं (४) पसंद करव्ं आश्रित वि० आशरे रहेलुं – आवेलुं (२) –मा रहेतुं –बसतुं; उपर रहेलुं – **बे**ठेलुं – आवेलुं (३) – ने उपयोगमां लेतुं (४) —ने आचरतुं (५) संबंधी; —ने लगतुं (६) पुं• आशरे रहेलो सेवक – दास आहिलव् ४ प० भेटवं (२) चोटवं आहिलष्ट वि० आलिंगन करेलुं; भेटेलुं (२) वळगेलुं; चोटेलुं आक्लेष पुं० आलिंगन; भेटबुंते (२) निकट संबंध **आश्वस** २ प० श्वास लेवो (२) आश्वासन पामवुः, विश्वास राखवो **आस्वास** पुं० स्वास लेवो ते (२) सांत्वन

आश्वासनः, हिमतः, धीरज (३)ग्रंथ-विभाग; सर्ग (४) समाप्ति **अक्ष्यासन न०** दिलासो; सांत्वन(२) छ्टकारानो – निवृत्तिनो श्वास लेवो ते **आस्वामिन्** वि० सांत्वना छेतुं —पामत् **आक्रियन** पुं० आसो महिनो (२) द्वि०व० अश्विनी कुमारो आ**षाट** पु०असाड महिनो(२)ब्रह्मचारीने आपवामां आवतो खाखरानो दंड आस् अा० जुओा 'आः' **आस् २** आ० बेसबुं (२) रहेबुं; वसबुं (३) शांत बेसी रहेवुं; विरोध न करवो; निष्किय रहे ुं (४) होवुं (५) अमुक स्थितिमां चालु रहेवुं(६)बाजुए राखवुं; जतु करब् धनुष्य आस पुं बेठक; आसन (२)पुं०, न० आसक्त वि० चोटेलुं; अनुरक्त (२) तल्कीन ; तत्पर (३) अनवरतः ; अखंडः **आसक्ति** स्त्री० अतिशय स्नेह – प्रीति (२)तत्परता; चोटी – बळगी रहेबूं ने आसत्ति स्त्री० गाड संबंध; संयोग (२) प्राप्ति; लाभ (३) वे शब्दो वच्चेनो संबंध – अर्थमंबंध आसद् १ प० |आसीदति | नजीक वेसव् (२) नजीक पहोंचव्ं – जव्ं – मळव्ं (३)पासवुं; जडवुं(४)हुमलो करको; सामनो थवो (५) शरू करवु; माथे लेबुं (६) मुकबुं **आसन्** न० मों ('आस्य' नां रूपोमां द्वितीया द्विवचन पछी विकल्पे मुकातो গতহ) असम न० वेसवृते (२) बेसवानी वस्तु (३) वेसवा वगेरेनी रीतीमांनी एक (४) थाभवं ~पडाव नाखवा ते आ**सन्न** वि० नजीकनुं; पासेनुं (२)आवी पहोंचेलुं; प्राप्त करेलुं; पामेलुं **आसन्नमृत्यु** वि० जेनुं मृत्यु नजीक आवेळुं **आसद** पुं० सत्त्व;अर्क (२)गाळेलो दारू

तत्परता (३) संबंध; संयोग (४) पहेरवं – बांघवं ते **आसंज् १** प० [आसजति | बांधबुं;जोडवुं; पहेरवं(२)वळगी रहेवं;आधारे रहेवं; चोटव् आसंदिका स्त्री० नानी खुरशी आसादन न० पासे मुकवुं ते; स्थापन (२)प्राप्ति (३)आक्रमणः हुमलो आसादित वि० प्राप्त; मेळवेलुं (२) गर्येलुं ; पहाँचेलुं (३) सामनो करायेलु ; हमलो करायेल आसार पुं० घोधमार वरसाद (२) घेरी वळ दुं ते (३) मित्र राजानुं सैन्य (४) खाद्यसामग्री अ**सिधार** न० 'असिधारा' ब्रत **आसीन** वि० वेठेल आसुर वि० असुरोने लगतुं (२) दैवी ; आव्यात्मिक (३) पुं० राक्षस (४) विवाहना आठ प्रकारोमानो एक (द्रव्य वडे कन्या लर्शदवी ते) आसेक पुं० पाणी छांटवुं – सीचवुं ते आसेव् १ आ० तत्परताथी आचरव् – अमल करवो (२) माणवुं; भोगवर्बु (३) सेवा करवी **आस्कंट् १**प० हुमलो करवो;आक्रमण करवुं (२) उपर कृदवुं **आस्कंद** पुं० हुमलो; अत्याचार (२) उपर थईने चालवुं ते; उपर चडवुं ते (३)क्दब्, ऊछळबुं ते |पाध रण् आस्तर पुं० ढांकण;बादर (२) शेतरंजी: **आस्तरण** न०पाथरवं ते (२) पाथरण् (३) ओशिकुं; रजाई; पथारी ; श्रेतरंजी आस्तिक वि० ईश्वर अने परलोकना अस्तित्वमां माननारुं(२)श्रद्धाळ् आस्तिक्य न० आस्तिकपणं आस्तीर्ण वि० पाथरेलुं(२)पथरायेलुं आस्तृ(-स्तु) ५,९उ०पायरव् आस्या १ उ० | आतिएटति – ते | ऊभा

आसंग प्० आसक्ति (२) तल्लीनता;

रहेवुं (२) उपर चडवुं (३)आचरवुं;करवुं (४)पक्ष लेवो (५)स्वीकारवुं; मार्थे लेवुं आस्था स्त्री० काळजी; दरकार(२) आदर; मान (३) श्रद्धा; आशा आस्थान त० सभा (२)श्रद्धा (३)श्रदर (४) विश्वातिस्थान आस्थित वि० रहेलुं (२) प्रवृत्त; आचरतुं (३) पामेलु; पहोंचेलु (४)रोकेलुं; व्याप्त आस्पद न० स्थान; जगा (२) आश्रय-स्थान; निवासस्थान (३) पदवी; अधिकार (४) पात्र; विषय आस्पंदन न० कंपवुं; फरकवुं आस्फल् १० प० अफाळवुं; पछाडवुं (२) फफडाववुं (३)टंकार करवो (धनुष्यनो) (४) झणझणाववुं (बीणा इ०) (५) फाडी नाखबु; चीरी नाखबुं आस्फालन न० अफाळवुं ते; पछाडवुं ते (२) फफडाववु त **आस्फुट् १** ५० ध्रुजाववुं;फफडाववुं(२) फाडवुं (३) दळी नाखवुं आस्फोट पुंब, आस्फोटन नव थाबडवुं ते ;पोला हाथे (कोपीनी उपरना भाग उपर) ठोवलुं ते (२) उपणबुं ते (३) प्रगट – जाहेर करवुं ते आस्य न० मुख; मों आस्यंदन न० झरवुं ते; वहेवुं ते आस्त्र न०लोही आश्रप न० लोही पीनार राक्षस आस्त्रव पुं० क्लेश; दुःख; पीडा (२)स्राव (३) पाप; दोष आस्वद् १ आ० चाखवुं; खावुं (२)सुख भौगववु –प्रेरक० चाखवु; भोगववुं (२) छेतरावुं; लूंटावुं (ला०) आस्वाद पुं॰ चाखवुं ते; खावुं ते(२) स्वाद (३) भोगववुं ते आस्वाद्य वि॰ मीठुं; स्वादु आह अ० ठपको, हुकम, नाखबुं – मोक-लवुं – ए अर्थ बतावे (२) एक अपूर्ण

कियापदनुं त्रीजो पुरुष एकवचननुं रूप ('बोल्यो ', 'कह्यू 'ए अर्थ) आहत वि० प्रहार करायेलुं; घवायेलुं (२) पग तळे कचरायेलु (३) मारी नाखवामां आवेलुं(४)नष्ट करायेलुं; दूर करायेलुं (५) गुणायेलुं आहर्ति स्त्री० वध (२) प्रहार(३) गुणाकार (४) आगमन **आहन् २** प० मारवुं;प्रहार करवो(२) वगाडवुं (घंट अथवा ढोल) (३)मारी नाखब् आहर वि० लावनारुं (२) लेनारुं(३) पुं• लाववुं ते; एकठुं करी लाववुं ते (४) श्वास लेवो ते **आहरण** न० लाववुं ते(२)लेवुं ते(३)काढवुं ते (४) अनुष्ठान (यज्ञनुं) (५) कन्याने लग्न समये अपाती भेट **आहर्तृ** वि० लेनारुं (२)लावनारुं(३) अनुष्ठान करनार् आहब पु० युद्ध ; लडाई (२) युद्ध माटे आह्वान – पडकार [होमनो अग्नि **आहवनीय** वि० होमवा योग्य (२) पुं० आहार वि० लावनारुँ; मेळवनारुँ(२) लेवा जनारुं (३) पुं० लाववुं ते (४) वापरवुं ते (५) खोराक लेवो ते (६) खोराक **आहारवृत्ति** स्त्री० आजीविका;निर्वाह **आहार्य** वि० लाववा योग्य (२) लई जवा योग्य (३) खावा योग्य (४) कृत्रिम (५) न० नाटकनी वेशसजावट वगेरे बाबत आहाब पुं० पाणीनो हवाडो आहित वि० मुकायेलुं(२)करायेलुं आहिताग्नि पुं० अग्निहोत्री ब्राह्मण आहु ३ प० होम करवो; होमवुं **आहुत** वि० होमेलुं आहुति स्त्री० होमवुते (२) होमवानी वस्तु – बलिदान

आहृत वि० बोलावेलुं

राह् १ उ० लाववुं (२)नजीक लावबुं ; आपवुं (३) पाछुं लाववुं (४) प्राप्त करवुं;मेळववुं (५)धारण करवुं (६) -नुं कारण बनवुं; उत्पन्न करवुं (७) परणीने लाववुं (कन्या**) (८)यज्ञ** करवो (९)खेंची जवुं; आकर्षण करवुं (१०)जुदुं करवुं; दूर करवुं (११) आहार करवी **प्राहृत** वि० आणेलुं; लावेलुं (२)लीघेलुं (३) खाधेलुं (४) बोलायेलुं;उच्चारायेलुं **आहेय** वि० साप संबंधी [उद्गार शाहो अ० संशय, प्रश्त के गर्वदर्शक प्राहोस्वित् अ० 'शंका', 'संभव' दर्शावे श**ह्निक** वि० दिवसनुं;दररोजनुं (२) न॰ दररोज करवानुं काम के विधि (३) ग्रंथनो विभाग भाह्नार् १० उ० आनंद पमाडवो **प्राह्माद** पुं० आनंद; हर्ष **शाह्लादन**्न० खुश करवुं ते; आनंद पमाडवं ते **श्राह्व** वि० नामनुं; नामवाद्धं माह्यय पुं० नाम (समासने अंते) श्राह्मयन न० नाम **आह्वान न०** बोलाववुं ते (२) देवनुं

आवाहन करवुं ते (३) कचेरीमां हाजर थवानो हुकम; 'समन्स' (४) पडकार (५) नाम **आह्वायक** पुं० दूत **आह्वे १** प० बोलाववुं (२) आवाहन करवुं (३) (युद्ध साटे)आह्वान करवुं आंगिक वि० शसीरनुं (२) अवयवना हाबभावथी दर्शावायेलुं आ**ंजन** वि० अजनते लगतुं (२) पुं० हनुमान (३) त० अंजन; नेत्राजन आंजनी स्त्री० मेश; नेत्रांजन (२) मेशनी दाबडी **आंजनेय** पुं० हनुमान (अंजनाना पुत्र) आंतर वि० अंदरनुं; छानुं; गुप्त (२) छेक अंदरनुं; आंतरिक आंतरिक्ष, आंतरीक्ष वि० अंतरिक्षने लगतुं (२) स्वर्गीय; दैवी **आंत्र** न० आंतरडुं आंदोलन न० हींचका खावाते (२) झुलाववुं ते;ढोळवुं ते (चामर) (३) कंप; ध्रुजारी आः अ० स्मरण, कोध, शोक, दुःख,

इ

इ अ० कोघ, निंदा, दया, दु:ख, दाझ अने विस्मयसूचक चित्कार (२) पुं० कामदेव; मदन इ २ प० जबुं; पासे जबुं; पहोंचबुं (२) प्राप्त करबुं; पामबुं (३) पाछुं जबुं (४) बीतबुं -पसार यबुं (समय) (५) उत्पन्न थबुं (६) विनंती करबी; शागबुं (७) होबुं; देखाबुं इ ४ आ० आवबुं; देखाबुं (२) दोडबुं; आदुं (४) याचबुं

इक्षु पुं० शेलडी
इक्ष्याकु पुं० अयोध्यामा थई गयेला
सूर्यवंशी राजानुं नाम
इच्छा स्त्री० मरजी (२) कामना
इच्छासंपद् स्त्री० इच्छा सफळ थवी ते
इच्छा वि० पूजवा योग्य (२)पुं० गुरु;
अध्यापक
इच्छा स्त्री० यज्ञ (२) दान; भेट (३)
पूजा (४) प्रतिमा; मूर्ति
इडा स्त्री० जुओ 'इला'
इत ('इ'नुं भू० कु०) वि० गयेलुं (२)
पाछु फरेलुं (३) याद करेलुं (४) पामेल

विरोध दशवि छे

इतर म० ना०, वि० बीजुं; वेमानुं बीज्(२)वाकीना बीजा (ब०व०मां)(३) –थी जुदुं (४) –थी ऊलटूं (५)क्षुद्र; नीच इतरतस्, इतरत्र अ० जुदी रीते; बीजी राते (२) अन्यत्र; बीजे ठेकाणे इतरथा अ० बीजी रीते; ऊलटी रीते (२) नहितो इतरेतर स०ना०, वि० परस्पर; अन्योन्य इतरेशुस् अ० वीजे दिवसे इतस् अ० अहींथी; आर्था; आ समयर्था; आ स्थळथी; आबाजुथी (२) अहीं; आ बाजु; मारे पक्षे (३) आ कारणथी (४) आ दुनियामांधी इतस् – इतस् अ०एक बाजु – बीजी बाज् इतस्ततः अ० अहीं नहीं; आम तेम इति अ० प्रकार, उद्देश्य, कारण, आधार,दृष्टांत,अभिप्राय तथा वाक्य-समाप्ति दर्घावे (२) उतारो करेलो भाग दर्शाववा अंते मुकाय (अवतरण-चित्रना अर्थमां) इतिकथ वि० विश्वास न मूकवा लायक (२) नष्ट-भ्रष्ट इतिकथा स्त्री० निर्धंक वात **इतिकर्तव्य** वि० अमुक विधि प्रमाणे करवा योग्य (२) न० कर्तव्यः फरज इतिकर्तक्यता स्त्री० आवश्यक कर्तव्य (२) करवुं जोईए ते कार्यः इतिवृत्त न० वनाव; हकीकत; वृत्तान्त (२) कथा; वार्ना इतिह अ० आ प्रमाणे; परंपरः प्रमाणे इतिहास पुं० दतकथा के परंपराधी चालती आवेली वात (२) वीरकथा (३)तवारीख; भूतकाळनुं वृत्तांतः इत्थम् अ० आ प्रमाणे; ते प्रमाणे इत्यंभूत वि० आ प्रकारे बनेलुं इत्यर्थ पु० तात्पर्यः भावार्थः द्वनो सार **इत्यर्थम्** अ० आ हेत्थी

इदम् स० ना०, वि० 'आ' (२) अ० आ प्रकारे; आ प्रमाणे इदंतन वि० आ समयन्; वर्तमान **इदानीम्** अ० हवे : हमणां ; आजकाल (२) अहसमये पण इदानींतन वि० हमणांनुं; आधुनिक इद्ध ('इंध्'नुं भू० हः०) वि० सळगावेलुं; प्रदीप्त (२) प्रकाशित; तेजस्वी (३) चोर्ल्सु; स्वच्छ (४) पळायेलुं; अनुसरा-येलु (आज्ञा) (५) न० ताप; तडको (६) तेज; दीष्ति (७) आश्चर्य **इद्धदीधिति** पुं० अग्नि इद्धाः अ० उघाडुं; खुल्लुं; स्पष्ट इध्म पुं० बळतण; इंधण इन पु० सूर्य(२)राजा; स्वामी इनकात पुं० सूर्यकांत मणि इभ पुं० हाथी इभ्य त्रि० थीमंत; धनिक (२) पुंज राजा (३) हाथीनी महाबत इयत् वि० आटलुं; एटलुं इयसा स्त्री० आटलापणुं (२) प्रमाण; परिमाण (३)सीमा; हद ्रप्रका≎ इरम्मद पु० वीजळीना कडाका साथेनो इरा स्त्री० पृथ्वी (२) त्राणी (३) सरस्वती (४) जळ (५) अन्न इरावत् वि० वानपानथी सुखी इरिण न० खारवाळी जमीन इरेश ५० परब्रह्म; विष्णु फेकव इल् ६ प०, १० उ० जवुं (२) ऊँधवुं (३) इला स्त्री० पृथ्वी (२) गाय (३) वाणी इलाधर पुं० पर्वत **इलाबृत** न०पृथ्वीनानत्रखंडी(वर्ष)-मानो एक खंड इव अ० पेठे; जेंस (२) जाणे के (३) कदाच ; क्यांक ; थोडुंक (४) (प्रश्नार्थ

शब्दा साथे) 'खरेखर - शुं '?

डष्६प० (इच्छति | इच्छव् (२) पसंद

करवुं (३) प्राप्त करवा यत्न करवो

इत्यादि वि०वगेरे

(४) संमत थवुं (५) अपेक्षा राखवी (६) याचद् **इब** पुं० आसो महिनो **इविका** स्त्री० मुंज घासनी वचली सळी (२) शर (बरु) नुं राडुं इख् पुं० बाण **इषुकार** पुं**० बा**ण बनावनार **इष्**धि पुं० बाणनो भाथो **इष्ट** ('इष्'नुं भू० कृ०) वि० इच्छेलुं(२) हितावह (३) प्रिय ; मनगमतु (४) योग्य (५)पूजेलुं (६) यज्ञ वडे पूजेलुं (७) कल्पेलुं (गणिस) (८) पुं० प्रियंजन; भ्रेमी (९)पति (१०)मित्र (११) न० इच्छा (१२) यज्ञ इष्टका स्त्री० ईट **इष्टकामदुह्** वि० इच्छित फळ आपनारु इष्टदेव पुढे, इष्टदेवता स्त्री० प्रिय -पोतानी आस्थानो देव (२)कुळदेव इष्टभागिन् वि० पोतानुं इच्छेलुं जेने मळघुं छे तेव इष्टापत्ति स्त्री० इच्छेलु बनवुं ते(२) विरुद्ध पक्ष तरफयी अनुकूळ कार्य के दलील इष्टापूर्त न०, इष्टापूर्ति स्त्री० यज्ञ-यागयी तथा वावक्वा कराववाथी थतुं पुण्य इंडिट स्त्री० एक जातनो यज्ञ इष्यत् वि० भविष्यनुं; भावि इष्वसन, इष्वस्त्र न० धनुष्य इष्वास पुं० धनुष्य (२)धनुर्घारी योद्धो इस् अ० कोघ, दुःख के शोक दर्शावे इहं अ० अहीं (२) आ दुनियामां (३) आ समये इहत्य वि० अहींनुं; आ दुनियानुं **इहलोक** पुं० आ दुनिया; आ जीवन **इहामुत्र अ० आ** लोकमां अने परलोकमां इंन् १ उ० हालवुं; कंपवुं (२) जवुं इंग वि॰ जंगम; अस्थिर इंगित ('इंग्' नुं भू० क्व०) वि० हालेलुं;

कपेलुं (२) न० इशारो; संकेत (३) मनोविकारनुं बाह्य चिह्न - चेष्टा (४) मननो गुप्त भाव इंगुदी स्त्री० एक वृक्ष; इंगोरियो इंदिरा स्त्री० लक्ष्मी (२) शोभा ; कांति **इंदिवर** न**० भू**हं कमळ इंदिंदिर पुं० मोटो भगरो इंदीवर न० भूहं कमळ इंदु पुं० चंद्र (२) कपूर इंदुकांत पुं० चंद्रकांत मणि पित्नी इंदुमती स्त्री० पूर्णिमा (२) अज राजानी **इंदुमौ**लि पुं० शंकर; शिव **इंदुरोसर** पुं• जुओ 'इंदुमौलि' **इंदूर** पुं० उंदर इंद्र पु॰ देवोनो राजा (२)मेघोनो राजा (३) अधिपति; शासक (४) राजा (५) आत्मा; जीव (६) ते ते वर्गमां 'श्रेष्ठ', 'उत्तम' एवो अर्थ दर्शावे (उदा० नरेंद्र; मृगेंद्र) इंद्रकील पुं॰ मंदर पर्वत **इंद्रचाप** पुं० मेघधनुष्य **इंद्रजा**ल न० जादु; नजरबंधी **इंद्रनील** पुं० नीलम **इंद्रमह** पुं० इंद्रती पूजा माटेनो उत्सव (२) वर्षाऋतु इंद्रमह-कामुक पुं० कूतरो इंद्रलोक पुं० स्वर्ग इंद्रक्षत्र, पु०प्रह्लाद (२) वृत्र **इंद्रानुज** पुं• विष्णु; उपेन्द्र **इंद्रायुष** न० व*ञा* (२) इंद्रधनुष्य इंद्रारि पुं० असुर; राक्षस इंद्रासन न० इंद्रनु सिहासन इंद्रिय न० शरीरनुं ज्ञान तथा कर्म माटेनुं (बाह्य के आंतर) साधन इंद्रियगोचर वि० इंद्रियोथी जोई शकाय के समजी शकाय एवं (२)पुं० इंद्रियनो विषय इंद्रियप्राम न० इंद्रियोनो समूह इंद्रियसुख न० विषयभोगनुं सुख

इंद्रियाराम वि० विषयासक्त **इंद्रियार्थ** पुं० शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श –ए पांच इंद्रियोना विषयोमांनो दरेक **इंध् ७** आ० सळगाववुं; प्रदीप्त करवुं **इंधन न**० सळगाववुं ते (२) लाकडां; बळतण

₹

ई पुं० कामदेवनुं नाम; मदन (२) स्त्री० लक्ष्मी (३) अ० निराशा, दु:ख, शोक, क्रोध, अनुकंपा तथा संबोधननो अर्थ दर्शावे ई ४ आ ० जवुं (२) २ प० जवुं (३) पहोंचवुं (४) ब्यापवुं **ईक्ष, १** आ० जोवुं;अवलोकवुं(२)गणवुं – मानवु (३) ध्यानमां लेवुं; काळजी राखवी (४) विचारवु (५) जहर होबी (६)सारुं के खोटुं भाग्य जोत्र **ईक्षण न**० जोवुंते (२) आंख (३) दृष्टि ; दर्शन (४)दरकार ; काळजी ईक्षा स्त्री० दृष्टि; नजर (२) अव-लोकनः, विचारणा **ईक्षिका** स्त्री० दृष्टि ; नजर (२)आंख **ईक्षित** ('ईक्ष्'नुभू० कृ०) वि० जोवायेलुं; अवलोकायेलुं (२) न० दृष्टि (३) आंख **ईड् २** आ० स्तुति करवी; प्रशंसा क**रवी ईड्य** वि० प्रशंसा – स्तुति करवा योग्य **ईति** स्त्री० अतिवृष्टि,अनावृष्टि,उंदर, तीड वगेरेनो उपद्रव **ईवृक्ता** स्त्री० जात;गुणवस्ता('इयत्ता' – 'जयो' थी ऊलट्) **ईदृक्ष, ईदृश** वि० आवुं;आ प्रकारनुं **ईप्सा** स्त्री० प्राप्त करवानी इच्छा (२) नि० इच्छा द्च्छा **ईप्सित** वि० इच्छेलुं; प्रिय; इष्ट(२) **ईर् २** आ०, **१ प०** जवुं; हालवुं (२) १० उ० फेंकवुं (३) उश्केरवुं; प्रेरवुं

(४) उच्चारवुं; कहेर्बुं (५)हलाववुं; गतिमान करवुं (६)खेंचवुं; आकर्षव **ईरिण** न० अखर -- वेरान जमीन **ईरित** ('ईर्' नुं भू० कृ०) मोकलायेलुं (२) उच्चारायेलुं **ईर्या** स्त्री० भिक्ष्चर्या **ईषां** स्त्री० जुओं ईप्यां ' **ईषित** न० ईस्पी **ईर्ष्य १**प० ईर्ष्याकरवी **ईर्ष्या** स्त्री० अदेखाई **ईध्यलि** वि० अदेख ईक् २ आ० राज्य करवुं; अधिकार चलाववो (२) शक्तिमान होवुं(३) उपरोपणु करवुं (४) परवानगी आपवी (५) मालिक होबुं ईश वि० मालिक - स्वामी होय तेवुं (२) शक्तिमान (३) पुं**० अधिपति** (४) पति ; स्वामी (५) शंकर (६) परमेश्वर **ईझान** पुं० शंकर (२) राजा ;स्वामी **ईशितब्य वि**० अधीन (जेना उपर ईशपण् चाले) **ईशिता** स्त्री० प्रभुता – श्रेष्ठता (२) आठ सिद्धिओमांनी एक **ईशित्** पुं० परमेश्वर **ईश्वर** वि० सत्ताबीश (२) धनदान; श्रीमंत (३) पुं० राज्य करनार – राजा; अधिपति (४) श्रीमंत माणस (५)पति (६) शंकर (७) परमेदवर **ईश्वरभाव** पुं० प्रभुताः, राज्यकर्तापणुं **ईषत्** अ०थोडुं; जरा

ईषत्कर वि० थोडुं करनारुं (२) सहे-लाईथी यई शके तेवुं(३)न०थोडुं; अल्प ईषस्पुरुष पुं० हलको – नीच माणस ईषबुरुष वि० थोडुं गरम ईषदून वि० पूरुं नहि तेवुं; थोडुं ओछुं ईषा स्त्री० गाडी के गाडानी ऊथ(२) हळनो घोरियो [(३) बाण ईषिका स्त्री० पींछी(२)जुओं 'इषिका'

ईिषर पुं० अग्नि ईह् १ आ० इच्छवुं(२)मेळववा यत्न करवो ईहा स्त्री० इच्छा(२)प्रयत्न(३)चेष्टा ईहामृग पुं० वरु (२) बनावटी मृग (३) एक जातनुं नाटक ईिह्त ('ईह्'नुं भू० कृ०) वि० इच्छेलुं (२) न० इच्छा(३)यत्न(४)चेष्टा

उ

उ अ० कोध, अनुकंपा, आशा, दया, संमति, निश्चय, आञ्चयं, अनुमान तथा संबोधनना अर्थमां वपराय (२) 'अथ' 'न' अने 'किम्' साथे म्**रू**यत्वे आवे छे (जुओ 'अथो', 'नो', 'किम्') उ - उ अ० एक तरफ - बीजी तरफ **उक्त** ('वच्'नु भू०कृ०)वि० बोलायेल; कहेवायेलुं (२) न० कथन उक्ति स्त्री० भाषण; कथन (२) कहेवत उक्थ न० स्तोत्र उक्ष् १, ६, उ० छांटवुं (२) बहार फेंकवुं उक्षण न ॰ छांटवुं ते (२) जल छांटीने पवित्र करवुं ते उक्षन् पुं० बळद उप वि० आकरुं; जलद (२) क्रोधी (३) बिहामणुं (४) जबरुं उचित ('उच्' नुं भू० कृ०) वि० योग्य; षटित (२)रोजनुं; परिचित ; टेवायेलुं उच्च वि० ऊंचुं; उन्नत (२) मोटुं; तीव्र उच्चकै: अ० ऊंचेथी **उच्चट् १** ५० चाल्या जवुं; अदृश्य थवुं –प्रेरक० डरावी काढवुं; हांकी - काढवुं (२) निर्मूळ करवुं; नाश करवो उच्चय पु० समूह; ढगलो (२) उन्नति; आबादी (३) वस्त्रनी गांठ (४) वीणवुं – एकठुं करवुं ते (फूल)

उच्चर् (उद्+चर्) **१**प० ऊंचे चडवुं (२) नीकळुवु (अवाज) उच्चारवुं (४) १ आ० तजवुं (५) बेवफा नोवडवं (६) उल्लंधन करवं (७) –नी उपर चडवुं उच्चल् १ प० चालवा मांडवुं; जवा नीकळवुं (२) दूर चाल्या जवुं; नीकळी पडव उच्चाटन न० दूर करवं ते (२) खेंची काढवुं ते (३) एक अभिचार-प्रयोग उच्चार पुं॰ उच्चारवं ते; उच्चारण (२) विष्टा उच्चायच वि० ऊंचुं अने नीचुं उच्चि (उद्+चि) ५ उ० एकठुं करवुं (२) वीणवुं उ**च्चेद्विष्** वि० सबळ शत्रुओवाळ् उच्चेंबींद पुं० मोटी प्रशंसा उच्चंस् अ० ऊंचे (२) मोटा अवाजथी (३) जोरथी (४) (विशेषणना अर्थमां) ऊंचुं; खानदान; विस्थात उच्चे:शिरस् वि॰ उदात्त मनवाळुं; उच्च पदवीवाळुं उच्चै:श्रवस् पुं० इंद्रनो घोडो उच्छन्न वि० नाश करायेलुं (२) लुप्त **उच्छल्** (उद्+शल्) १ उ० ऊछळव् उच्छादन न० आच्छादन (२) सुगंधी पदार्थीथी शरीरतुं मार्जन उच्छास्त्र वि० शास्त्रविरुद्ध शास्त्रनुं उल्लंघन करनार्ह उच्छित्र वि० ऊंची शिखा – कलगीवाळ् (२) ऊंची शग – ज्वाळावाळूं उच्छिखंड वि॰ पीछा अंचा कया होय तेवुं (मोर) **उन्छिद् ७** उ० उच्छेद करवो -कर्मणि० न मळवुं; अभाव होवो उच्छिन्न वि० उच्छेद करेलुं (२) नीच; प्रितापी; खानदान अधम **उच्छिरस्** वि० ऊंचा माथावाळु(२) **उच्छिलींध्र वि० बिलाडीना टोप ऊंचा** थया होय - ऊग्या होय तेवुं उच्छिष्ट वि० एठुं; बोटेलुं (२) खातां वधेलुं (३) न० यज्ञ के भोजनमाथी वधल उच्छून वि० सूजी गयेलुं; फूली गयेलुं उच्छ बल वि० उद्धत (२) स्वेच्छाचारी; निरकुश [ते (२) समूळ नाश **उच्छेद पुं०, उच्छेदन** न ० छेदवुं — कापवुं **उच्छोफ** पुं**०** फूली जबुं ते **उच्छोषण** वि० सूकवी नाखनारुं **उच्छ्य, उच्छाय** पुं० ऊगवुं ते (२) ऊंचं करवुं ते (३) ऊंचाई; उन्नति (४) बृद्धि; आधिक्य उच्छित वि॰ ऊंचुं (२) उन्नत (३) समृद्ध (४) गविष्ठ **उच्छ्दस् २** प० स्वास लेवो (२) थीरज घरवी; निरांतनो श्वास लेवो (३) खोलवुं (४) निसासो नाखवो (५) ढीलुं थवुं ; छूटी जवुं (गांठनुं) उच्छवसित वि० श्वास लेत् खीलेलुं; स्फुरतुं; ताजूं थयेलुं (३) आस्वासन पामेलुं (४) पींखाई गयेलुं (बाळ) (५) भूंसाई गयेलुं (६) न० श्वास ; प्राण (जीवित) (७) निसासी

उच्छ्यास पुं० श्वासः; प्राण निसासो (३) आश्वासन (४) मरण वखतनो स्वास चालवो ते चोपडीनुं प्रकरण के विभाग (६) वधवुं ते; ऊंचुं आववुं ते उच्छ्वासित वि० आश्वासित करेलुं (२) ऊंचुं करेलुं (३) ढीलुं थयेलुं; छूटी गयेलुं |वध करवो उज्जस् ४ प०, –प्रेरक० विनाश करवो; **उज्जागर** वि० उश्केरायेलुं **उज्जिञ्च** वि० सूंबनाहं **उज्जिहा**स ('उद्धा' ३ आ० नुं व०कृ०नुं रूप) वि० तजतुं (२) अंचुं करतुं -- चडावत् उज्जृंभ् १ आ० बगासुं खावुं (२) विकास पामवुं; खीलवुं (३) भानमां आववु उज्जूंभण न०, उज्जूंभा स्त्रीव बगासुं खावुं ते (२) वधवुं - विकास पामवुं ते उज्ज्वल् १ प० प्रकाशवुं –प्रेरक • उजाळवुं; प्रकाशित करबुं **उज्ज्वल** वि० ऊजळुं; देदीप्यमान उज्ज्ञ् ६ प० त्याग करवो (२) फेंकवुं; नाखब् उज्ञित ('उज्झ्' नुं भू० कृ०) वि० तजेलुं (२) नाखेलुं; रेडेलुं **उटज** पुं०, न० झूंपडी; पर्णशाळा उट्टंकन न०टांकबुं ते; छापबुंते **उड्ड** स्त्रो०,न० तारो; नक्षत्र (२) **न०** पाणी उ**ड्डप** प्०, न० होडी; होडकुं उडुप, उडुपति, उडुराज पुं० चंद्र **उडुयन** न० ऊंचे ऊडवुं ते उड्डामर वि० श्रेष्ठ; संमाननीय (२) उड्डी (उद्+डी) १ आ० ऊंचे ऊडवुं **उड्डीन** वि० ऊडतुं (२)म० अंचे ऊडबुं ते उत् अ० प्रश्न, तर्क, संशय, अतिपणुं, उपर –ए अर्थ बतावनार उद्गार

उत अ० प्रश्न, संशय, अनिश्चितपणुं, विरोध,समुदाय, अति तथा विकल्प -ए अर्थ दर्शावे (२) पादपूरण अर्थे वपराय उत ('वे' नुभू० कृ०) वि० वणायेलुं (२) सिवायेलु उत बा अ० अथवा; अने; वळी उताहो, उताहोस्वित् अ० संशय के प्रक्तनो भार दर्शावे उस्क वि० उत्कंठित (२) उद्दिग्न (३) शून्यमनस्क (४) पुं० इच्छा उत्कच वि० वाळ ऊभा थया होय तेवुं (२)वाळ विनानुं (३)पूरेपूर्ह खीलेलुं उत्कट वि० मोटुं (२)तीव ; प्रबळ (३) नजरे पडे तेवुं; स्पष्ट (४)मत्त; उन्मत्त (५) गविष्ठ (६) विषम; मुख्केल उत्कर पुं० समुह; ढगलो (२) कचरानो ढगलो ; उकरडो (३) लूमखु ; झूमखु उत्कर्ष पुं० ऊंचे खेंचवुं ते (२) अभि-बृद्धिः; अधिकता (३) बडाईः;आत्म-[अत्यंत उत्कल वि० दया उपजावे तेवुं (२) उत्कलाप वि० पींछांनी कलाप ऊंची कर्यो होय तेव् उत्कलिका स्त्री० चिता; अस्वस्थता (२) अख़ुरता (३) कळी (४) तरंग; मोजुं उत्कथण न० खेडवंते उत्कंठ वि० आतुर; उत्सुक आशा जल्कंठा स्त्री० तीव्र इच्छा; आतुरता (२) उल्लंधर वि० डोकुं ऊंचुं करेलुं उत्कर वि० ऊंचे उराइनाई (समासने | (२) कोतरेलुं अंत) उल्कीर्ण वि० अंचुं उराडेलुं; इमलो करेलुं उत्कुल वि० कुलने कलंक लगाडनारुं उत्कूर्दन न० ठेकडो; कूदको उल्कूल वि० किनारा उपर थईने वहेतुं **उत्कृत् ६ प०** कापर्युः, कतल करर्यु उक्कुष १ प० ऊंचे खेंचव (२)वृद्धि करवी (३) आकर्षण करवु (४) खेंची काढवुं

उत्कृष्ट वि० खेंची काढेलुं; उपर खेंचेलुं (२) श्रेष्ठ (३) घणुं; दधारे (४) खेडेलुं (५) खणेलुं(६)उखाडी काढेलुं (७) आकर्षेलुं उत्कृ ६प० | उत्किरति | उराडवुं (२) ढगली करवी (३) खोदबुं (४) कोतरवुं उत्कृत् १० ५० | उत्कीर्तयति | जाहेर करवुं; विरूपात करवुं;प्रशंसा करवी **उत्कोच पुं**० लांच; रुशवत उत्कोटि वि० अणीवाळ् उत्क्रम् १ उ०[उत्कामति-क्रमते], ४ प० |उत्काम्यति | ऊंचे जवुं -- चडवुं (२) उदय पामवुं (३)जल्लंघन करवुं (४) नीकळी जबूं; चाल्या जनुं (५) मरण पामवु **उत्कांत** वि० बहार नीकळी गयेलुं (२) ओळंगी गयेलुं (३) ऊडी गयेलुं(रंग) उत्क्रांति स्त्री० ऊने अथवा बहार जबुं ते (२) मरण पामबुं ते उत्भुज् १ प० मोटेथी बुम पाडवी (२) पोकारवुं (३) जाहेर करवुं उत्क्रोश पुंज्योकार; बूम; चीस(२) जाहेरात उत्सिष् ६ प० फेंकवुं; फेंकी देवुं (२) **ऊंचुं करवुं ; टटार करवुं** उत्क्षिप्त वि० अंचुं फेंकेलुं (२) अंचुं टेकवेलुं – करेलुं (३) अभिभूत थयेलुं (४) उखाडी नाखेलुं; फेंकी दीधेलुं; काढी नाखेलुं उत्क्षेप पुं० ऊंचे फेंकबुंते ; ऊंचुं करबुं ते(२)मोकलबुं ते(३)फेंकी देवुं ते उत्लन् १ प० खोदी काढवुं (२) उखेडी नाखवं – निर्मूळ करवं (३) खेंची काढवुं (४) बहार काढवुं (जेमके, म्यानमांथी तलवार)

उत्खात वि० खोदेलुं (२) खेंची काढेलुं

(३) निर्मूळ करायेलु (४) न०

खाडो-खंयो

उत्तट वि० किनारा उपर थईने वहेतुं उत्तप् (उद् + तप्) १ प० तपाववुं (२) संतापवु [थयेलुं (३)संतापेलुं उत्तप्त वि० तपावेलुं; तपेलुं (२)गुस्से उत्तम् ४ प० चितातुर थवुं; व्याकुळ थवु; संताप पामवो उत्तम वि० श्रेष्ठ (२) मुख्य (३) प्रथम उत्तमर्ण पुं० लेणदार उत्तमांग न० शरीरनुं मुख्य अंग – मार्थुं **उत्तर** वि० उत्तर दिशानुं (२) उपरनुं – ऊंचुं (३)श्रेष्ठ; मुस्य (४) (समयना ऋममां) पछीनुं (५) भविष्यनुं; अंतनुं (६) अधिक; वधारे (७) चडियातुं; –थी पर; –थी बहार (८) डाबुं(९)युक्त; सहित; –नुं मुख्यत्वे बनेलु; अनुसरातुं (१०) पुं० भावि परिणाम; भविष्यकाळ (११) न० उत्तर; जवाब (१२)बाकीनुं – शेष ते (१३) आच्छादन (१४) उत्तर दिशा (१५)श्रेष्ठता; चडियातापणुं (१६) परिणाम (१७) आधिक्य उसरकाय पुं० शरीरनो उपरनो भाग उत्तरकाल वि० भविष्यनुं (२) पुं० भविष्यनो समय किया उत्तरिकया स्त्री० मरण पछीनी अंतिम उत्तरत्र अ० पछीथी; आगळ (२) बीजी बाजु ('पूर्वत्र ' थी ऊलटुं) (३) |तेवु; उद्धत उत्तरदायक वि० सामी जवाब आपे उत्तरपक्ष पुं० उत्तर अथवा डाबी **बाजु** (२)कृष्णपक्ष (३) वादमां पछीनो – जवाबरूप भाग ('पूर्वपक्ष'थो ऊलटुं) उत्तरपथ पुं० जुओ 'उत्तरापथ' उत्तरपश्चिमा स्त्री० वायव्य खूणो उत्तरपूर्वा स्त्री० ईशान खुणो उत्तरम् अ० उपर (२) पछी उत्तरमीमांसा स्त्री० वेदांतदर्शन (पूर्व-मीमांसा पछीनु)

उत्तरवयस् न० वृद्धावस्थाः; घडपण **उत्तरंग** वि० ऊछळतां मोजांवाळुं(२) **ऊछळत्*** उसरंगि वि० हांफतुं [वारसो उत्तराधिकार पुं० वारस तरीकेनो हक; **उत्तरापथ** पुं० उत्तरनो मार्ग, दिशा के रिश्विषट्कमां जबुते **उत्तरायण** न० सूर्यनुं उत्तर तरफना उत्तरार्थ पुं०, न० शरीरनो उपरनो अर्थ भाग (२) ग्रंथनो पाछलो अर्घ भाग उत्तरासंग पुं० उत्तरीय वस्त्र उत्तराहि अ० उत्तरे; उत्तर बाजुए उत्तरीय, उत्तरीयक न**०** उपर ओढवानुं उत्तरेण अ० उत्तर तरफ; उत्तरे उ**त्तरेशुस्** अ० बीजे दिवसे ; पछीने दिवसे उत्तरोत्तर वि० अधिकाधिक; वधु ने वधु; हंमेश वधतुं जतुं (२) न० प्रत्युत्तर उत्तरोत्तरम् अ० वधारे ने वधारे (२) **उत्तंभ्** (उद्+स्तंभ्) ५, ९, प० टेको आपवो –प्रेरक० वधारवुं (२) उदकेरबुं उत्तंभ, पुं०, उत्तंभन न०टेको आपवो ते (२) आधार **उत्तंस** पुं• घरेणुं (२) शिरोभूषण; कलगो (३) कर्णभूषण उत्तंसित वि० शिरोभूषण तरीके धारण उत्तान वि० विस्तृत ;पहोळुं करेलुं(२) मों ऊंचुं रहे तेम - चत्तुं - पीठ उपर सूतेलुं(३)उघाडेलुं;ऊंचुं करेलुं (४) खुल्लु; संकोच विनानुं (५) छीछहं उत्तान**हृदय** वि० खुल्ला हृदयवाळुं उत्ताप पुं० खूब गरमी (२) संताप; त्रास (३) जुस्सो (४) गुस्सो (५) चिता उत्तार पुं० उपर थईने लई जबूं ते (२) पार करवुं ते (३) किनारे ऊतरवुं ते (४) बचाववुंते (५) –थी अळगा थवं – छटवुते

उत्तारण वि० पार करावनारुं; **बचाव**-नारुं (२) न० पार अतरवुं ते (३) बचाववुं ते (४) पार लई जवुं ते उत्तास वि० मोटु; जबरुं (२) भारे; तीय (अवाज) (३) भयंकर; झनुनी (४) मुश्केल; कठिन (५) प्रगट; स्पष्ट (६) श्रेष्ठ; उत्तम(७) ऊंचुं **उत्तावल** वि० उतावळुं डित्तिण् - प्रेरक० प० प्रेरवुं; उक्केरवुं **उसीर्ण** वि० पार ऊतरेलुं (२) बची मयेलूं (३) अभ्यास पूरो करेलुं; अनुभवी; कुराळ (४) उपकारमांथी मुक्त थयेलुं **उत्तुं**ग वि० ऊंचुं; घणुं ऊंचुं उत् (उद्+तृ) १प० तरी जबुं (२) बहार नीकळी आववं (पाणीमांथी) (३)पार करवुं (मुश्केली) (४)नीचे कतरबुं (५) छोडी देवुं **उत्तजन न०** प्रोत्साहन; उक्केरणी;प्रेरणा (२)धार काढवी ते (३)सोकलबुं ते **उत्तेजित** वि० उक्केरेलुं (२) मोकलेलं (३) बार काढेलुं शिषगारेल् उत्तोरण वि० ऊंचा तोरण - कमानथी **उत्य** वि० (समासने अंते) उत्पन्न थयेलुं; ऊठेलु; नीपजेलुं (२) ऊभुं थतुं; नीकळतुं उत्था (उद्+स्था) १ प० [उत्तिष्ठति] ऊमा थवु; ऊठवुं (२) ऊगवुं (सूर्यनुं) (३) छोडी देवुं; विरमवुं (४)पाछ्ं ऊछळवुं (५)मळवुं;हांसल थवुं(६)सबळ थवुं (७) फरी सजीवन थवुं (८) सकिय बनवुं; यत्नवान थवुं (९) चडियाता थवुं −प्रेरक० ∫उत्थापयति| ऊंचुं करवुं; कर्मु करवुं(२)उराडवुं(धूळने)(३) उक्केरवुं; प्रेरवुं (४) सजीवन करवुं (५) टेको आपवो ; पुष्ट करवुं उत्यान न० ऊठवं ते; ऊभं थवं ते(२) उदय पामवुं ते ; ऊगवुं ते (३) जागवुं ते (४)पेदा थवुं ते ; उत्पक्ति (५)करी सजीवन थवूं ते (६) उद्यमः; पुरुषार्थं (७) युद्ध माटेनी तैयारी

उत्थापन न० उत्यान करवुं ते (२) समाप्ति उत्थित ('उत्था'नुं भू० कृ०)वि०ऊठेलुं; ऊभुं थयेलु (२) ऊंचुं थयेलु (३) बचावेलुं (४) पेदा थयेलुं (५) उद्यमी (६) पाछुं **ऊ**छळेलुं (७) ऊंचुं; उच्च उत्पक्ष्मन्, उत्पक्ष्मल वि० पांपण अंची करी होय तेवुं उत्पद् १० प० उखाडी नाखबुं; उपाडी नाखर्वु (२) खेंची काढवुं (३) दूर करवुं उत्पत् १ प० ऊडवुं ; ऊछळवुं ; नीकळवुं (२)कूदवुं(३)उत्पन्न थवुं; पेदा थवुं उत्पतन न० ऊछळवुं ते; ऊडवुं ते; नीकळवुं ते (२)कूदवुं ते (३)उत्पत्ति उत्पताक वि० पताकाओ फरकती होय – ऊंची चडावी होय तेवुं उत्पत्ति स्त्री० जन्म; पेदाश; प्रादुर्भाव (२) मूळ कारण (३) लाभ ; पेदाश उत्पथ पुं० खोटो मार्ग; अवळो मार्ग उत्पद् ४ आ० जन्मवुं; उत्पन्न थवुं (२) बनवुं; थवुं उत्पन्न वि० जन्मेलुं (२)नीपजेलुं; बनेलुं (३)प्राप्त थयेलुं; मेळवेलुं; कमायेलुं उत्पल न० कमळ; भूहं कमळ उत्पलाक्ष वि० कमळ जेवी आंखोबाळुं **उत्पाटन** न० निर्मूळ करवुं ते उत्पात पुं० ऊछळवूं ते (२) कुदबूं ते (३) अनावृष्टि, रोगचाळो वगेरे उत्पन्न थवानुं सूचन करतो अनिष्ट बनाव (४) आफत; विपत्ति उत्पाद पुं ७ उत्पत्ति उत्पादक वि० उत्पन्न करनाहं(२)प्राप्त करावनारुं(३)पुं० पिता उत्पादिन् वि० उत्पन्न थयेलुं (२) उत्पन्न करत् (समासमा छेडे) उत्पाद्य वि० उत्पन्न करवा योग्य; उत्पन्न कराय एवं उत्पिजर, उत्पिजल वि० पांजरामांथी छूटेलुं (२) गाभरुं; व्याकूळ

उत्पीड् १० प० दबाववं (२) निचोवबं (३) पीलवुं (४) क्लेंब आपको उत्पोड वि० - नी साथे दबातुं (२) पुं० दबाववं - निचीववं ते (३) धसी अवितो प्रवाह -- जथो (४) उपर थई वे वहेतो वधारानो प्रवाह (५) फीण उत्प्रबंध वि० सतत; अविरत उत्प्रास पुं०, उत्प्रासन न० मश्करी; कटाक्ष; ठठ्ठो उल्प्रेक् (उद्+प्र+ईक्ष्) १ आ० ऊंचे जोवुं (२) आशा राखवी (३) जोवुं (४)कल्पना करवी (५) याद करवुं उत्प्रेक्षा स्त्री० धारणाः; कल्पना (२) बेदरकारी उत्प्लब पुं० कूदको **उत्प्लु १** आ० कूदवुं (२) ऊछळवुं(३) उपर तरी आवर्बु -- तर्बु **उत्फाल** पुं० कूदको ; छलंग **उत्फुल्ल** वि० खीलेलुं; विकसेलुं उत्स पुं० फुवारो; झरणुं **उत्सक्त** वि० आबाद-समृद्ध थतुं उत्सव् १ प० | उत्सीदित | नाश पामवृं उत्सन्न वि० उच्छिन्न; नष्ट **उत्सर्ग** पुं० तजवुं ते; छोडबुं ते (२) रेडवुते (३) बक्षिस; भेट (४) छूट् मूकवृते (उदा० वृषोत्सर्ग) (५) बलिदान; मानतामां मानेली वस्तु आपवीते (६) खर्च करवृते (७) मळमूत्रनुं विसर्जन (८) समाप्ति (व्रत के अभ्यासनी) (९) सामान्य नियम ('अपवाद'थी ऊलटुं) उत्सपिन् वि० उपर सरकतुं (२) ऊंचे ऊडतुः, ऊच् (३) ओळगी जत् – पारनुं (४) आगळ आवतुं – देखातुं उत्सव पुं० उजाणी;ओच्छव;आनंदनो दिवस (२) खुशी; आनंद(३) उत्कट इच्छा उत्सह् १ आ० शक्तिमान थवुं (२)

हिमत करवी; प्रयत्न करवी (३) उमंग दाखबवो उत्संग पुं • खोळो (२) संबंध; संसर्ग (३) अंदरनो भाग; मध्य भाग (४) उपरनो भाग (५) नितंत्र (६) पर्वतनी किनारी उत्साद पुं०, उत्सादन न० विनाश (२) मालिशं, गदडवुं ते (पग वडे) उत्सारण न० (रस्ता परथी) बाजुए खसेडवुं ते; हटाववुं ते उत्साह पु॰ उद्योग; उद्यम (२) उमंग; होंश (३) प्रयत्न; खंत उत्सिक्त वि० सींचायेलुं – छंटायेलुं (२) अभिमानी ; घमंडी (३)छलकातुं (४) गांडियुं; अस्थिर उत्सिच् ६ ५० [उत्सिचति] सीचवुः छोटबुँ (२) अभिमान करबु **उत्सुक** वि० आतुर;होंशीलुं (२)अधीरुं; बेचेन (३) आसक्त (४) चिंतातुर **उत्सूत्र** वि० (दोरामांथी)छूटुं पडी गयेलुं (२) नियमथी बहार जत् **उत्सृ -**श्रेरक० काढी मूकवुं;दूर करवुं; बाजुए खसडव् **उत्सृज् ६** प० बहार काढवुं; फेंकवुं (२) तजबुं; छोडी देवुं (३)वावबुं; रोपवुं (४)आपवुं;वक्षवुं(५) (कोई स्थळे) मोकलवुं (६) काढी मुकवुं उत्सृष् १ प० पासे सरकव् – जव् **उत्सृष्ट** वि० त्यजी दीधेलु (२) आपेलुं (३)वापरेलुं; उपयोगमां लोधेलुं(४) रेडेलुं; छोडेलुं उत्सेक पुं० सीचतुं -- छाटवुं ते ; अभिषेक (२) छलकावुं ते (३) अभिमान; धमंड उत्सेष वि० ऊंचुं(२) पुं० ऊंचाई(३) जाडापणुं ; फूळेला होबापणुं (४) शरीर (५)महानता; भव्यता किरवी **उत्स्मि १** आ० हसी काढवुं; मजाक **उद् अ०** श्रेष्ठता, उच्चता, वियोग, अभाव, लाभ, प्रसिद्धि, आश्चर्य, चिंता,

मुक्ति, शक्ति – वगेरे अर्थमां वपराय (नाम अने कियापद पूर्वे) **उद, उदक** न० जळ ; पाणी **उदककार्य** न० देहशुद्धि (२) पितृतर्पण; [बारसदार **उदकदातृ** वि० श्राद्ध करनारुं (२) उदकांत पुं० जळाशयनो किनारो उदकुंभ पुंठ पाणीनो घडो **उदप्र** वि ० ऊंची अणीवाळुं (२) ऊंचुं (३) मोटुं; विस्तृत (४) उदार; भव्य; उत्कृष्ट (५) वयोवृद्ध (६) तीव्र; भयंकर; असह्य (७) उक्करायेलुं; झनूनी उदग्रप्लुतत्व न० ऊंची छलंग के कृदको **उदछमुख वि०** उत्तर तरफ मोंबाळुं **उदच्** वि० ऊँचे जनारुं (२) उपरवास आवेलु (३) उत्तर तरफन् (४) पछीनुं; पाछलु **उदिध पुं**० समुद्र; महासागर उदिधिकन्या स्त्री० लक्ष्मी उदिधिमेखला स्त्री० पृथ्वी उदिषमुता स्त्री० लक्ष्मी (जाय) **उदन्** न० पाणी (समासमा 'न्' ऊडी **उदन्या** स्त्री० तरस उदन्यत् पुं महासागर **उदपात्र** न० जळपात्र **उदपान** पुं०, त० नानुं खाबोचियुं (२) क्वा पासेनी कूंडी; कूवो **उदपीति स्त्री०** पाणी पीवानुं स्थळ **उदप्लब** पु॰ जळप्रलय **उद्दिंदु** पुंच पाणीन् टीप् **उदभार** पुं० मेघ (२) पूर **उदम** पुं० चडवुं ते, ऊगवुं ते: बृद्धि, उन्नति (२) प्रगट थवुं ते ; उत्पत्ति (३) संपत्ति;लाभ; उत्कर्ष (४)परिणाम; फळप्राप्ति; सिद्धि (५)व्याज (६) आमदनी; महेसूल (७) एक कल्पित पर्वत, जेनी पाछळथी सूर्य उदय पामे छेएम मनाय छे (८) प्रारंभ

उदयन न० कगवुं ते ; उदय उबर न० पेट (२) अंदरनी भाग -मध्यभाग (३) युद्ध - मारामारी; वध -- कतल उदरंभरि वि० पोतानुं पेट भरनारुं; स्वार्थी (२) अकरांतियुं खानारुं जुदर्क पुं॰ अंत (२) परिणाम (३) भविष्य ~ भविष्यकाळ (४) चडियाता होबुं ते उदिचस् वि० सळगतुं; प्रकाशित; तेजस्वी (२) पुं० अग्नि उदबास पुं० पाणीमां रहेवुं ते; पाणीमां रही तप करवुं ते उदवाह पुं० मेघ **उदश्रु** वि० आंसु सारतुं; रडतुं उदस् ४ प० ऊंचुं करवुं – घरवुं (२) नीचे फेंकबुं (३)दूर करवुं;नाबूद करवुं उदहार वि० पाणी वही लावनाहं (२) पुं० वादळ **उदंच्** वि० जुओ 'उदच् ' उदंच् १ उ० ऊंचुं करवुं ; ऊंचुं चडाववुं (२) उच्चारवुं (३) अ० क्रि० ऊर्चे चडवुं; उपर धसवुं पाणीनुं वासण **उबचन** न० पाणी काढवानी डोल; **उदंत** पुं० समाचार; खबर **उदंभस्** वि० पाणीथी भरेलुं **उदात** वि० उच्च ; श्रेष्ठ (२) उदार (३) प्रस्यात (४) ऊर्च्च (स्वर) उदान पुं० श्वास उपर खेंचवो ते(२) शरीरमांना पांच प्राणवायुओमांनो एक (३) आनंदनो उदगार (बौद्ध०) उदायुष वि० शस्त्र उगाम्यां होय तेवं उदार वि० सखी दिलनुं;दानशील(२) खुल्ला मननुं; निखालस (३) प्रमाणिक (४) सुंदर; मनोरम (५) उचित; योग्य (६) पुष्कळ (७) मोटुं; भव्य उदारम् अ० मोटेथी ; सोटे अवाजे (२) दलीलो वडे उदास् २ प० उदासीन रहेवुं; वेकिकर रहेवुं (२)तटस्थ रहेवुं(३)निष्किय रहेवुं

उदास, उदासीन वि० निरपेक्ष; तटस्थ; बेफिकर (२) विरक्त; विषयो तरफ अप्रीतिवाळु दुष्टात उदाहरण न० कहेवुं ते; बोलवुं ते(२) **उदाह १** प० कहेवुं; उच्चारवुं (२) दृष्टांत तरीके टांकवुं **उदाहृत** वि० कहेलुं; कहेवायेलुं (२.) नाम दईने बोलावेलुं (३) दृष्टांत तरीके टांकेलुं **उदि १** प० उदय पामवुं; ऊगवुं उदि २ प० ऊंचुं आववुं; ऊगवुं (२) उत्पन्न थवुं (३) वहार जवुं; चाल्या जवुं (४) सामा कभा रहेवु; सामा थवुं (५) उन्नत थवुं; वधवुं **उदित** ('उदि' नुं भू० कृ०) वि० कगेलुं; ऊंचे चडेलुं(२)उन्नत; ऊंचुं(३)वृद्धि पामेलुं(४)उत्पन्न थयेलुं(५)विरूयात (६) शरू थयेलु; आरंभायेलुं (७) जागेलुं; ऊठेलुं (८) सज्ज; तैयार **उदित** ('वद्'नुं भू० कृ०) बोलायेलुं; उच्चारायेल् **उदित्वर** वि० ऊगतुं; ऊगेलुं (२)चडियातुं उदीक्ष १ आ० ऊंचे जीवुं; तरफ जीवुं (२) अपेक्षा राखवी; राह जोवी **उदीची** स्त्री० उत्तर दिशा तरफन् **उदीचीन** वि० उत्तर दिशानुं;उत्तर दिशा **उदीच्य** वि० उत्तर दिशामां आवेलुं (२)पुं० सरस्वती नदीनी उत्तर तथा पश्चिम तरफनो प्रदेश **उदीर् २** आ० ऊंचे चडवुं; ऊठवुं (अवाज) (२) ऊपडवुं (जवा के आववा) (३) उपर चडवुं (४) उत्पन्न थवुं –प्रेरक० ऊंचु करवु (२) उच्चारवुं; बोलवु (३) नाम पाडवु (४) फेंकवु ; नाखवु (५) प्रगट करवु (६) प्रेरवुं; उत्तेजवुं (७) परिणमाववुं **उदीरण** न० उच्चारवुं ते; बोलवुं ते; कहेवुंते (२) फेंकवुंते (अस्त्र)

उदीर्ण ('उदीर्'नुं भू० क्र॰) वि० उदय पामेलुं; ऊंचुं चडेलुं (२) परिणमेलुं (३) उद्धत (४) उक्केरायेलुं ; उत्तेजित (५) घणु; मोटु; तीव (६)सज्ज करेलुं; तैयार करेलु (७) कहेवायेलु; बोलायेलुं उबुंबर पुं॰ उमरडानुं वृक्ष (२) घरनी ऊमरो ∫नीकळी गयेल् उद्गत वि० नीकळेलुं; ऊंचे चडेलुं (२) उद्गति स्त्री० ऊंचे चडवुं ते; नीकळवुं ते (२)देखावुं ते; उत्पन्न थवुं ते उद्गम् १ प० [उद्गच्छति] अंचे चडवुं — जबूं (२)प्रगट थबुं; देखाबुं (३)नीकळवुं; पेदा थवुं(४)चाल्या जवुं;विदाय थवुं (प्राण इ०) (५) प्रस्यात थवुं **उद्गम** पुं० ऊँचे जबुंते; चडवुंते(२) ऊंचा – ऊभा थवुं ते (रोमावलीनुं) (३) बहार जवुं ते; नीकळवुं ते (प्राण) (४) उत्पत्ति; पेदा थवुं ते (५) ऊँचाई उद्गमनीय वि० उपर चडवा योग्य (२) न० धोयेलां कपडांनी जोड उद्गंधि वि० सुगंधीदार (२) तीव्र |ब्राह्मण गधबाळ् **उद्गातृ** पुं० सामवेदनी ऋचाओ गानार उद्गार पुं • बहार काढवुं ते ; थूंकवुं ते ; ओकवुं ते; झमबुं ते; बहेबुं ते (२) उच्चार; बोल; शब्द; अवाज (३) फरी फरी बोलवुं ते; वर्णववुं ते(४) बहार काढेली वस्तु (५) थूंक; लाळ (६) [(२) बहार काढत् ओडकार उद्गारिन् वि० ऊंचु जतु; बहार कढात् उद्गीथ पुं० ॐकार (२) सामवेदना मत्र बोलवा ते उद्गोणं ('उद्गृ' नुं भू० कृ०) वि० बहार काढेलुं (२)ओकी काढेलुं(३) उपजावेलुं; निपजावेलुं उद्गृ ६ प० [उद्गिरति] थूंकवुं; ऊलटी करवी (२) बहार काढवुं – नाखवुं (३) मोमांथी काढतू; बोलवुं; उच्चारवुं (४) ओडकार आववो

उद्गं १ ए० मोटेयी गावुं (२) जाहेर करवुं; जणाववुं (गाईने) उद्ग्रम् १,९ उ० बांघ बुं; जूथमा बांधवुं (२) गूंथवुं; परोववुं (३) छोडवुं; उकेलवुं (गांठ) [अंबोडो) उद्गयन न० गूथवुं ते; वाळवुं ते (वेणी, **उद्ग्रह् ९ ५**० [उद्गृह्णाति | ऊंचुं लेवुं; ऊंचुं करवुं (२) खेंची काढवुं; पाछुं काढवुं (३) ग्रहण करवुं; स्वीकारवुं **उद्ग्राह** पुं० ऊंचुं करीने लेबुं ते **उदग्रीय** वि० डोक ऊंची करी होय एवं **उद्घट् १** आ० ऊत्रडवुं --प्रेरक ॰ उधाडवुं (२) कोटलुं काढी नाखबुं; फोडबुं (३) खुल्लुं करबुं; उघाडुं पाडवुं (४) प्रारंभ करवो **उद्घट्टन** न० घसावुंते; अफळावुंते (२) फाटी नीकळबुं ते उद्घाटक पुं० चावी; कूंची **उद्घाटन** वि० उघाडनारु (२) प्रगट – ·खुल्लुकरनारुं (३) न० खोलवुं ते; उघाडवुं ते (४) खुल्लुं करवुं ते; स्पष्ट करवुं ते **उद्धात** पुं० आरंभ (२) उपोद्घात; जल्लेख (३) प्रहार (४) (गाडानुं) अछळ र् ते के तेनाथी पछडाबुं ते (५) ऊंचाण ; ऊंचाई (६) प्रकरण ; विभाग **उद्घातिन्** वि० खाडाखैयावाळुं उद्घुष् १, १० प० मोटेथी बोलीने जाहेर करवुं; घोषित करवुं **उद्घुष्ट** ('उद्घुष्'नुंभू० कृ०) वि० जाहेर करेलुं; घोषणा करेलुं (२) न० अवाज; घोष **उद्घुष्ट** वि० घसेल् **उद्घोष** पुं० मोटेथी जाहेर करवुं ते (२) लोकमां प्रचलित वात (३) अवाज **उद्दंद** वि० दंड के दंडो ऊँ वो कर्यो होय तेबु (२) भयंकर; प्रचंड अहाम वि० अंकुश के बंधन विनानुं; अनियंत्रित (२)उग्र; जहाल (३) गविष्ठ

उद्दामम् अ० जोरथी; जुस्साथी उद्दांत वि॰ उत्साही; प्रयत्नशील (२) नम्र; ताबे थयेलुं उद्दिश् ६ उ० दर्शाववुं; कहेवुं (२) —ने उद्देशीने कहेवुं (३) समजाववुं; शीखबबुं (४) इरादो राखबो (५) –ने अर्पण करवुं (६) भविष्य भाखवुं उद्दिश्य अ० उद्देशीने; संबंधमां उद्दिष्ट वि० दर्शावायेलुं (२) उद्देशीने कहेबायेलु (३)इच्छेलु (४)शीखवेलु: उपदेशेल् **उद्दीप् ४** आ० सळगवुं; सळगी ऊठवुं −प्रेरक० सळगाववुं (२) उत्तेजवुं; उश्केरव् उद्दीपक वि० उश्केरतुं; वधुतीव करतुं (२) प्रकाशित करतुं; सळगावतुं उद्दीपन न० सळगाववं - प्रगटाववं -प्रज्वलित करवुं ते (२) उत्तेजन; उइकेरणी उद्दृश १ ५० [उत्परयति] ऊंच् जोव् (२)भविष्यमां जोवुं; अपेक्षा राखवी (३) शंका करवी उद्देश पुं० उद्देशवुं ते (२) उदाहरण (३) हेतु; धारणा; इरादो (४) उल्लेख; संक्षिप्त कथन (५)स्थळ; प्रदेश (६) शोधः; तपास **उद्देश्य** वि० समजाववा योग्य (२)लक्ष्य करका योग्य (३) न० हेतु; प्रयोजन (४) जेने उद्देशीने कई कहेवायुं होय ते; कर्तापक्ष (व्या०) उद्देहिका स्त्री० ऊधई **उद्द्युत् १** आ० दळ हुँ; प्रकाशवुं –प्रेरक० प्रकाशित करवुं; शोभाववुं उद्द्योत वि० प्रकाशितः; तेजस्वी (२) पुं० प्रकाश; तेज (३) ग्रंथविभाग उद्धत ('उद्धन्' नुं भू० कृ०) वि० ऊंचुं करेलुं; ऊंचु थयेलुं (२) अतिशय (३) उच्छृंखल (४)पूर्ण (५)भव्य ; तेजस्वी

उद्धित स्त्री० ऊंचापणुं(२)उच्छृंखलता (३) ठोकर

उद्धन् (उद्+हन्) २ प० ऊंचे चडवुं— चडावचुं (२) २ आ० आत्महत्या करवी उद्धरण न० खेंची काढवुं ते; काढी नाखवुं ते (२) उद्धार करवो ते; बचाववुं ते (३) निमूळ करवुं ते; उखाडी नाखवुं ते (४) ऊंचुं करवुं ते उद्धार्त वि० ऊंचुं करनारुं (२) बचावनारुं उद्धार्ष वि० हींपत (२) पुं० अति आनंद (३) उमंग (४) उद्धेक [करनारुं उद्धार्ष वि० आनंदकारक; खंवां ऊमां उद्धार्ष वि० आनंदकारक; खंवां उमां उद्धार्ष वि० आनंदकारक; खंवां उमां

उद्घार पुंच लेंची काढवुं ते (२) बचाववुं ते; छूटको करवो ते (३) ऊंचुं करवुं ते (४) टांकबुं ते (फकरो) (५) मुक्ति; मोक्ष(६) बघेलुं ते (७) मुदो काढेलो भाग उद्धर वि० झूंसरीमांथी मुक्त: अति-

यंत्रित (२) स्थिर; दृह (३) मोटुं; भारे उद्घू ५, ९ उ० हलाववुं (२) खंखेरी नाखवुं (३) उक्केरवुं; जाग्रत करवुं

जाबनु (२) उपन्य पुरुषात्रस्य करपु उद्दृत वि० हलावेलुं; ऊछळेलुं (२) ऊनुं;भोटुं(३) उन्नत (४) खीलेलुं

उद्दूलन न० चूर्ण छांटवुं ते (२) मसालो उद्दूर, १० प० उपर खेंचवुं; ऊंचुं लाववुं (२) बचाववुं; उद्धार करवो (३) उखेडी नाखवुं (४) चूंटबुं; वीणवुं (५) वहन करवुं

उद्धृत वि० उपर खेंचेलुं; ऊंचुं करेलुं; उद्धारेलुं (२) उखेडी नाखेलुं (३) पसंद करेलुं(४)अवतरण तरीके लीधेलुं

उद्धृषित विश्रहेवां खडां थयेलुं उद्बद्ध विश्र बांधेलुं; अकडेलुं उद्बंध ९ पश्चित्रं; जकडवुं(२)

्लटकाववु उ**व्वंघ**्ववि० छोडी नास्नेलु उद्बंध पुं०, उद्बंधन न० वांधवुं ते; लेटकाववुं ते (२) फांसो खावो ते उद्बाष्प वि० आंसु भरेलुं उद्बाह्य वि० हाथ ऊंचा करेलुं उद्बाह्य वि० जगाडेलुं; उद्दीप्त(२) खीलेलुं (३) स्मृतिमां ताजुं करेलुं उद्बोध पुं०, उद्बोधन न० जगाडवुं ते; याद कराववुं ते उद्भट वि० उत्तम; श्रेष्ठ उद्भव पुं० उत्पत्ति; जन्म (२) मूळ; जन्मस्थान

उ<mark>द्भावन</mark> न० कल्पना करवी ते; उत्प्रेक्षा (२) उत्पादन (३) चिंतन

उद्भास् १ आ० प्रकाशसुं(२)नजरे पडलं —प्रेरक० प्रकाशित करवं (२)नजरे पडे तेम करवं तिजस्वी उद्भासन्, उद्भासुर वि० प्रकाशित; उद्भारक पं० छोड; वनस्पति (बीज के जमीन फोडीने नीकळे ते) उद्भिद् ७ उ० फाडबं

-प्रेरेक० प्रगट करतुं; विकसावतुं -कर्मणि० फूटवुं; नीकळवुं; देखावुं उद्भिन्न वि० पेदा थयेलुं (२) अंकुर रूपे नीकळेलुं; फूटेलुं (३) विकसेलुं; खीलेलुं (४) पकडावी दीधेलुं उद्भू १ प० उत्पन्न थवुं (२) बमवुं;

थ्युं (३) ऊंचे चडवुं (४) सामुं यबुं; बंड करवुं जन्मन निक जनान श्रोलं: जनोलं(३)

उद्भूत वि० उत्पन्न थयेलुं; जन्मेलुं(२) - उन्नत (३) नजरे पडेलुं

उद्भूति स्त्री० उत्पत्ति; जन्म (२) उन्नति; आबादी

उद्भेद पुं०, उद्भेदन न० (भेदीने) बहार आववुं ते; ऊगवुं ते (२) विकसित थवुं ते (३) देखावुं ते

उद्भ्रांत वि० क्षुट्य ; गाभरुं ; व्याकुळ (२)बीनेलुं;छळेलुं(३)वीझेलुं;ध्यावेलुं **उद्यत** वि० ऊंचुं करायेलुं ; उपाडेलुं (२)

उद्यत १५० जपु करावलु, उपाडलु सज्ज; तत्पर (३) उद्योगी उद्यम् १आ० [उद्यच्छते] (कदीक प० पण) ऊंचे चडाववुं; ऊंचुं करवुं (२)आपवुं; अर्पण करवुं (३)तैयार थवुं ; सज्ज थवुं (४) उद्योग करवो (५) नियंत्रण करवु **उद्यम** पुं॰ उद्योग; प्रयत्न (२) उपाडवुं ते (३)दृढ निश्चय (४)तत्परता; तैयारी उद्या २ ५० ऊर्चे चडवुं; ऊर्चुथवुं(२) उत्पन्न थवुं **उद्यान** न०, पुं० बाग उद्यापन न० धर्मकर्म के व्रतादिनी समाप्तिनी विधि; तेनी उजवणी उद्युक्त वि० काममां परोवायेलुं; उद्यमी (२) तत्पर **उद्युज् ७** उ० प्रयतन करवो –प्रेरक० प्रयत्न करवा प्रेरवुं उद्योग पुं० महेनत; प्रयत्न (२) काम; वंबी रोजगार बितील् उद्योगिन् वि० उद्योगी; प्रयत्नशील; **उद्योत पुं•** प्रकाश; तेज उद्रिक्त वि० अतिशय; अधिक (२) देखाय तेवुं; स्पष्ट उद्रिच् (मुरूयत्वे कर्मणि वमां अने पंचमी साथे) चडियाता थवुं उद्रेक पुं॰ पुष्कळता; अतिशयता(२) चडियातापण् **उद्वर्त** पुं० अधिकपणुं (२) लेप करवो ते (३) प्रलय काळ (४) छांडवुंते उद्वर्तन न० ऊचुं थवुं ते; वघवुं ते (२) उन्नति (३) ऊछळवुं ते (४) एक बाजुशी बीजी बाजु फरवु ते (५) दळवु -- खांडवुं ते (६) शरीरे सुगंधीदार लेप करवो ते **उद्वत्** प्रेरक० देशनिकाल करवुं; काढी मुकवु **उद्वह् १** प० परणवुं (२)वहन करवुं; धारण करणुं (३) लई जबुं; उपाडी जबुं(४)पूरुं करवुं;अंत सुधी लई जबुं **उद्दह** वि० लई जनारुं (२) चालु राखनारुं (वंशने) (३) मुख्य;श्रेष्ठ

(४) पुं० पुत्र (५) लग्न (६) बंश के कुळनो मुख्य आगेवरन **उद्वहन** न० लग्न; विवाह (२) ऊंचकवुं — टेकववृंते (३) सवारी कर**वी** ते (४) धारण करवुं ते (लज्जा ६०) **उद्वाह** पुं० लग्न; विवाह **उद्**विग्न (उद्विज् नु भू० कृ०) वि० व्याकुळ ; खिन्न त्रास पामको **उद्विज् ६** आ० उद्वेग करवो (२)बीवुं; उ**द्वीक्ष् १** आ० ऊंचुं जोवुं (२) निहाळवुं उद्बोक्षण न० ऊचे ओवुं ते (२) दृष्टिः; नजर (फूंकव) **उद्वीज् १०** प० पंखो नाखवो (२)वायु उद्वृत् १ आ ० ऊरंचे चडवुं (२) फाटी जबुं; तूटी जबुं(३)गबडी पडबुं(४) अभिमान करव्ं (५) छलकावुं -प्रेरक ० निर्मूळ करवुं (२)ऊंचे फेंकवुं – चडाववुं (३) धुमावबुं; फेरवबुं (आंख) (४) लेप करवो उद्वृत्त वि० अंचुं करेलुं (२) छलकातुं; वधी गयेलुं (३)तोछडुं ; अभिमानी उद्धेग पुं० कपवुं ते; व्याकुळता;गभराट (२) चिता; दुःख; शोक उद्वेदि वि० अंची बेठक के सिहासनवाळुं उद्वेल वि० किनारा परधी वही जतुं (२) हद – मर्यादा ओळंगतुं उब्बेल्ल् १ प० हालवुं; ऊछळवुं (२) गोळ बींटळाबुं उद्**वेष्ट**न वि० छूटुं करेलुं; बंधन**मुक्त** उद्देष्टनीय वि० छोडी नाखवा योग्य उन्नत वि० ऊंचुं; महान; प्रस्थात(२) पूर्ण; भरावदार (३) खुशमिजाज उन्नित स्त्री० ऊंचाई (२) चडती; आबादी (३) मोटाई; महत्ता उन्नद् १ प० गर्जना करवी **उन्नद्ध (**'उन्नह्'नुं भू० कृ०) वि० **बांघेलुं;** गांठेलुं (२) ऊछळतुं (३) छूटुं थयेलुं (४) उत्कट

उन्नम् १प० ऊंचुं आववुं (२) घेराई रहेवुं; तोळाई रहेवुं (३) ऊंचुं करवुं उन्नमित वि० ऊंचुं करेलुं; उपाडेलुं(२) ऊचुं; चडियातु उन्नयन वि० ऊंची करेली आंखोबाळूं उन्नयन न० अंचे लई जवुं ते (२)अंचुं --सीधुं करवुं ते उन्नह् ४ प० बांधवुं (२) खेंची काढवुं (३)बंधनमांथी छूटुं थवुं – करवुं **उन्नाम** पुं० टटार थवुं ते उन्नाह पुं० ऊंचुं नीकळवुं ते (२) अति-शयता; अधिकता (३) उद्धताई उन्निद्र वि॰ निदारहित (२) खीलेल् ्**उन्नी १** प० ऊंचुं लाववृं; ऊंचुं करवृं (२) तिचोबवुं (३) वितर्क करवो; कल्पना करवी (४)छूटुं पाडवुं;एक बाजु सई जर्नुं पाणीमांथी बहार उन्मङ्जन न्० नीकळबुते उन्मस वि० गांडुं; (भूतादिना) आवेश-बाळुं (२) नशो करेलुं; छाकटुं (३) अहंकारी; गविष्ठ; उद्धत उन्मय् १,९ प० डखोळवुं (२)मारवुं; मारी नाखवुं; नाबूद करवुं (३) उतरडी नाखवु उन्मथन न० इस्रोळी नासवु ते; वलोवबुं; ते (२) खंखेरी नाखवुं ते (३) वध; कतल **उन्मद् ४** प० उन्मत्त थर्वु उन्मद वि० उन्मत्त (२) मद उपजावनारु **उन्मदन** वि० कामावेशथी युक्त उन्मदिष्णु वि० मदमत्तः; उन्मत्त (२) उन्मत्त करनार् जन्मनस्, जन्मनस्क वि० क्षुब्धः; अस्वस्थ (२) खिन्न (३) उत्सुक (४) चितातुर उन्मयूख वि० प्रकाशित; तेजस्वी उन्मस्य ६ प० [उन्मज्जित] बहार नीकळव् उन्मंय १,९ प० जुओ 'उन्मय्' **उन्मंबन** न० जुओ ⁽उन्मथन)

उन्माथिन् वि० वलोवतुं; डखोळतुं (२) त्रास आपत्; पीडतुं **उन्माद** वि० गांडुं (२) पुं० गांडापणुं; घेलछा (३) प्रबळ आवेश **उन्मार्ग** वि० आडे के खोटे मार्गे चडेलुं (२) पुं० खोटो के ऊंधो रस्तो (३) कुमार्गः; अनीतिनो मार्गः **उन्मिष् ६** प० आंख उघाडवी (२)क्षीलवुं (३) चमकवुं दृष्टि; नजर **उन्मिषित** वि० खुल्लुं;ऊघडेलुं(२)न० **उन्मील् १** प० उघाडवुं (आंख) (२) खीलवुं; खूलव् उन्मील पुं०, उन्मीलम न० ऊघडवुं ते (आंख); जागवुते (२) खूलवुंते; विकसबुं ते (३) देखावुं ते; प्रगट थवुं ते उन्मुख वि० मूख ऊंचुं करेलुं;सामे मूख-वाळुं (२) सज्ज; तैयार (३) तत्पर; आतुर (४) -ना मुखे बोलतुं **उन्मुच् ६** उ० काढी नाखबुं;छोडी नाखब् (२)मुक्त करवुं(३)काढवुं(अवाज) (४) छोडवुं; फेंकवुं करव् उन्मूल् १० ७० उक्षेडी नाखवुं; निर्मूळ उन्मूलन न० निर्मूळ करवुं ते उन्मृष्ट ('उन्मृज्'नुं भू० कृ०) वि० ल्छी। नाखेळुं; भूसी नाखेळुं **उन्मेख** पुं०, **उन्मेषण** न० आंखनुं ऊघडवुं ते; आंखनो पलकारो (२) खुलवुं --खीलवुं ते (३) प्रकाश; झबकारो उप अ० सामीप्य, सामर्थ्य, दोष-खामी, अंत, अध्ययन – उपदेश, मान, आरंभ, प्रयत्न, व्याप्ति, दान - ए अर्थमां वपराय छे; खास करीने लघुता के गौणत्व दशवि छे उपकथा स्त्री० नानी वार्ता (२) मुख्य कथामां आवती आड-कथा उपकरण न्० सहाय; मदद(२) साधन (३) साधन-सामग्री उपकर्तृ वि० उपकार करनारुं

उपकल्पन न० तैयार करवं ते (२) अवेजीमां मुकबुं ते उपकंठ वि० समीप; नजीक (२) पुं०, न० सांनिष्य (३)गामनी नजीकनो भाग उपकंडम् अ० गळे (२) नजीक **उपकार** पुं० भऌं करवुं ते ; कल्याण (२) मदद; सहाय (३) शोभा; शणगार उपकार्या स्त्री० राजमहेल; शाही तंब् **उपकीर्ण** वि० उपर विक्षेरेलुं होय तेर्बु; छवायेलं **उपक्लम्** अ० किनारे;किनारा उपर उपकृ ८ उ० [उपकरोति, उपकुरुते] पूरु पाडवुं; लावी आपवुं (२) उपकार करवो; मदद करवी; सेवा करवी (३) 🛮 उपस्करोति, उपस्कुरुते 🕽 पूर्व पाडवुं (४) सेवा करवी (५) शणगारवुं; क्षीभा करवी उपकार उपकृत न०, उपकृति स्त्री० मदद; **उपकृ**६ प० [उपकिरति] बेरवुं (२) [उपस्किरति] कापवु; चीरव् उपक्लृप् १ आ० योग्य होवुं (२) तैयार होबुं(३) –मां परिणमवुं;फळ आववुं (४) थवुं; बनवुं −प्रेरक० तैयार करवुं (२) नियत करवुं; नक्की करवुं (३) कल्पवृं; मानवुं **उपक्लृप्त** वि० नजीक लवायेलुं(२) तैयार करेलुं; बनावेलुं (३) गौण **उपक्रम् १** आ० डिपक्रमते |, ४ प० ∤उप-काम्यति | नजीक जवुं (२)आचरवुं ; करवा मांडवुं (३)आरंभ करवो (४) हुमलो करवो – सामुं थत्रु **उपक्रम** पुं० आरंभ; शस्थात (२)पासे – अगळ आवर्त्र ते (३)योजना ; उपाय(४) सहिस के योजनापूर्वक आरंभेलुं कार्य उपक्रमणिका स्त्री० प्रस्तावना (ग्रंथनी) **उपकात वि**० प्रारंभेळुं उपकोश पु०, उपकोशन न० ठपको

उपक्षय पुं० नुकसान; हानि (२) खर्च उपक्षिय् ६ प० फेंकवुं (२) ठपको देवो ; आळ मृकवुं (३) सूचववुं; इशारो करवो (४) माडवुं, आरंभवुं उपक्षेप पुं॰ सामे फेंकवुं ते (२) सूचन; इशारो ; उल्लेख (३) आक्षेप ; भमकी ; आळ (४) आरंभ |पामनारु उपग वि० (समासने अंते) पासे जनारः; उपगत वि० पहोंचेलुं;यसे आवेलुं; मळेलुं (२)अनुभवेलुं (३)बनेलुं(४) युक्त; सहित (५) स्वीकारेलुं (६) मरण पामेलुं उपगम् १ प० | उपगच्छति | पासे जनुः आववु (२)पामवु; मळवु; प्राप्त करवु (३) माथे छेवुं; स्वीकारवुं जपगम पुं॰, <mark>उपगमन</mark> न० नजीक जबुं ते (२) ज्ञान ; परिचय (३)प्राप्ति (४) वचन; करोर (५) संग; समागम (६) स्वीकार (७) अनुभववुं – सहवुं ते **उपगीत** वि० चारणोए गायेलुं – बखाणेलुं उपगुह् १ आ० | उपगृहते | भेटवुं; आलिगन करवुं (२) संताडवुं **उपगृढ** वि० छुपायेलुं (२) आलिगेलुं; पकडेलुं (३) न० आलिंगन उपरी १ प० कोईने गाई सभळावव (२) गीतमां गाईने वखाणवुं उपग्रह् ९ ५० [उपगृह्णाति – गृह्णीते] पकडवुं ; लेवुं ; मेळववुं (२)ताबे करवुं ; समजाववुं;मेळवी लेवुं (३)ऋबूल राखवुं उप**ग्रह** पुं० केदमां नाखवुं ते (२)पराभव (३) केदी (४)समाघान; संघि(५) अनुकूळता; सहानुभूति (६) प्रोत्साहन; मदद **उपग्रहण** न० पकडवुं ते (२) स्वीकारवुं ते **उपग्राह** पुं० उपहार; भेट उपघात पुं० ईजा ; हानि (२)नाश (३) रोग(४)पोतानुं कार्य करवानुं असामर्थ्य उपध्न पुं० लगोलगनो आधार – आश्रय उपचय पुं० संचय; वधारो; उमेरो (२) जथो ; ढगलो (३) आबादी ; उन्नति :

उपकोष्ट्र वि ० ठपको आपतुः;निदा करतुं

उपचर् १ प० सेवा करवी(२)पूजा करवी (३) वर्तवुः, वर्तन राखवुः(४)शुश्रुषा करवी (रोगीनी) उपचर्या स्त्री० सेवाशुश्रुषा (रोगीनी) **उपचार** पुं० सेवाजुश्रूषा (२)सारवार; चिकित्सा (३) शिष्टाचार; सम्यता (४)संमान ; सत्कार (५) व्यवहार ; अनुष्ठान (६)पूजा-सत्कारनो विधि ; तेनी साधन-सामग्री (७)लक्षणा द्वारा अर्थबोध थवो ते उपचारिक वि० उपयोगी; साधनरूप उपिच ५ उ० संग्रह करवो;वधारवं(२) एकठुं करवुं – वीणवुं (३) उपर एकठुं थवुं, छवावुं **उपचित** वि० एकठुं करेलुं; संचित(२) वधेलुं ; मोटुं थयेलुं (३) मजबूत थयेलुं ; शक्तिमां वधेलुं (४) खूब लगाडेलुं-चोपडेल् **उपचिति** स्त्री० संग्रह;वृद्धि(२)लाभ; **उपच्छंर् १०** प० समजाववुं; लोभाववुं; मनाववु **उपच्छंदन** न० फोसलाववु ते; मनाववु ते **उपजन् ४** आ० [उपजायते] जन्मवु; उत्पन्न थवुं (२)बनवुं;यवुं (३)फरीथी जन्मव् **उपजिल्पित** न० बातचीत **उपजल्पिन् वि०** सलाह — उपदेश आपतुं **उपजात** वि० जन्मेलुं;थयेलुं;बनेलुं उपजाप पुं० कानमां गुसपुस करवी ते (२) छानी मसलतथी उश्केरवुं ते उपजीव १ प० -ने आश्रये जीववुं -निर्वाह करवो (२) — तो आधार लेवो; --मांथी आधार मेळववी ख्**पजीवन** न०, **उपजीविका** स्त्री० आजीविका; निर्वाह **उपजीविन्** वि० –ने आधारे जीवनारुं उपमुख्ट वि० सेवायेलुं ख**पजोब** पुं०, **उपजोषण** न० प्रीति; मरजी (२) उपभोग; सेवन

उपजोधम् अ० मरजी मुजब; खुशी प्रमाणे (२) चूपकीथी; मौन रहीने उपजा स्त्री० कोईए शीखव्या विना पोते नवुं विचारी काढेलुं ज्ञान (समासमा; ते पछी नपुंसक जातिनुं नाम गणाय छे; उदा० 'स्वोपज्ञ') (२) पहेलां न करायेली वस्तु शरू करवी ते **उपढौक्** –प्रेरक० नजराणा तरीके रज् **उपतप् १** प० गरम करवुं;तपावबुं(२) दुःख देवुं (३) तपवुं; दुःखी थर्बु **उपताय** पुं० ताप; गरमी (२) दुःख; क्लेश ; संकट ; बीमारी (३) उतावळ **उपतापिन्** वि० गरम करनार्हः संताप आपनारुं (२) ताप सहन करनारुं; संताप पामनारुं (३) बीमार; मांदुं **उपतीर्थ न**० ओवारो; किनारो उपत्यका स्त्री० पर्वतनी तळेटीनी -नीचाणनी जमीन उपदर्शक वि० बतावनारुं; देखाडनारुं उपदंश पुं० भूख के तरस उत्तेजनार चटणी वगेरे स्वादु पदार्थ (२) दश; इंख (३) एक रोग -- चांदी उपदा स्त्री० भेट; नजराणुं **उपदिश्६** प० उपदेश करवो; शीसवर्षु (२) दर्शाववुं; कहेबुं (३) विधान करवुं; [(३) कहेलु आज्ञा करवी **उपदिष्ट** वि० उपदेशेलुं (२) दशविलुं **उपदेश** पुं० बोध; शिखामण (२) शिक्षण (३) निर्देश ; सूचन (४) बहानुं ; मिष **उपदेष्ट्र** पुं० उपदेशक;गुरु;आचार्यः उपद्रव पुं॰ संकट; आपत्ति (२) ईजा पीडा; नुकसान (३) सार्वजनिक संकट (आसमानी के सूलतानी) (४) हुल्लंड **उपद्रब्द** वि० नजीकमां रहीने जोनारुं; [हमलो करवो साक्षी **उपद्र १** प० —नी तरफ दोडवुँ (२) उपद्वत वि० उपद्रवधी पीडित उपषा ३ उ० उपर, नीचे के अंदर मुकर्बु

(२) मोकलबुं; उत्पन्न करवुं (३) सोंपवुं (काम के अधिकार) (४) छेतरव् उपमा स्त्री० उपर स्थापवुं ते(२) छळ; कपट; युक्ति; उपाय (३) परीक्षा **उपयान** न० समीप मूकवुं ते (२) ओशीकुं (३) विशेषता; श्रेष्ठता (४) प्रणय; प्रेम उपचाब् १ उ० -नी तरफ दोडवुं (२) मदद लेवा माटे दोडवुं **उपि स्त्री**० छळ; कपट उपघ्यानीय पुंठ 'प्' अने 'फ्' नी वच्चे आवतो महाप्राण विसर्ग (व्या०) **उपनगर** न० मुख्य नगरनुं परुं; 'स**बर्ब**'. उपनम् १ प० आवी पडवुं; वळबुं(२) बनवुं; घटवुं उपनत वि० नजीक आवेलुं; प्राप्त थयेलुं; आदी पडेलुं (२)बनेलुं; ययेलुं (३)रजू करेलुं; अर्पेलुं (४)ताबे थयेलुं, नमेलुं उपनति स्त्री० नमन (२) नजीक पहोंचवुं ते (३) वलण उपनद वि० मढेलुं; हांकेलुं **उपनयन न० न**जीक लई जवुं – लाववुं ते (२) अर्पवृ ते (३) यज्ञोपवीत आपवृ ते उपनिषा ३ उ० नजीक मुकबुं – लई जबुं (२)अर्पेबुं;सोंपवुं(३)उत्पन्न करवुं उपनिपातिन् वि० अचानक आवी पडतुं उपनिबद्ध वि० लखेलुं; रचेलुं (२) चर्चेलुं **उपनिर्हार** पुं• हमलो उपनिविष्ट वि० रहेवास करीने रहेलूं (२) घेरो नाखेलुं ['कॉलोनी' उपनिवेश वि० संस्थान; वसाहतं; **उपनिषद्** स्त्री० वेदनी अंतर्गत गणातो, तेना गूढ अर्थोने स्पष्ट करतो, तथा ब्रह्मविद्यानुं प्रतिपादन करतो तास्विक ग्रंथ (२) गूढ रहस्य ; गूढ विद्या (३) **ब्रह्मज्ञा**न उपनिहित वि० नजीक मूकेलुं(२)बक्षेलुं **उपनी १** प० पासे लई जबुं ; पासे लाववुं (२)अर्पण करवुं (३) –नी स्थितिए

पहोंचाडवुं – लई अवुं (४) सिद्ध करवुं; पेदा करवुं (५) यज्ञोपवीत आपवुं **उपनीत** वि०**पा**से लवायेलुं(२)जनोई दीधेलु (३) जाणेलुं(४)मेळवेलुं(५) बक्षिस करायेलुं **उपनुष्म** वि० ह्ंकायेलुं; धकेलायेलुं उपनेतृ वि० पासे लई जनारुं के लावनारुं (२) पुं० यज्ञोपवीत आपनार आचार्य उपनेत्र न० चश्मां उपन्यस ४ प० नजीक – उपर – नीचे मूकवुं (२) अनामत मूकवुं; सोपवुं (३) रजू करवुं; सूचववुं; दर्शाववुं (४) समजाववुं; वर्णन करवुं **उपन्यस्त** वि० पासे लवायेलुं; **मुकाये**लुं (२)कहेवायेलुं; रजू थयेलुं; सूचवायेलुं (३) थापण तरीके सोंपायेलुं उपन्यास पुं० नजीक मूकवुं ते (२) थापण ;गीरो (३)सूचन ;कथन (४) प्रस्तावना ; रजुआत (५) समाधान **उपपति** पुं० यार उपपत्ति स्त्री० उत्पत्ति; जन्म (२) कारण; हेतु (३)तर्क;दलील; युक्ति (४) पुराबो; प्रमाण (५) उपाय; इलाज ; साधन (६)औचित्य ; योग्यता (७) अंत (८) संबंध (९) स्वीकार (१०)सिद्धिः; प्राप्ति (११) अणधार्युं -- अकस्मात एवं ते उपपद् ४ आ० पासे जबुं; पासे आववुं (२)प्राप्त करवुं (३)बनवुं;थवुं(४) संभवित होवुं (५) छाजवुं; शोभवुं (६)हुमलो करवो (७) रज् करवुं उपपद न० पूर्वे बोलायेलो के आगळ मुकायेलो शब्द (२) समासनो पहेलो शब्द (३) उपाधि; अटक उपपन्न वि० मेळवेलु; प्राप्त करेलुं (२)

*-*नी साथे आवेलुं - रहेलुं (३)योग्य;

स्संगत (४) साबित – सिद्ध थयेलुं

(५) संभवित; शन्य

उपपात पुं० अकस्मात आवी पडवुं ते (२)संकट;आपत्ति (३)नाश उपपादन न० युन्तिपूर्वक साबित करव् ते (२) उत्पन्न करवुं – सिद्धे करवुं ते **उपपीड् १०** प० दबाववुं; कचडवुं(२) पीडवुं ; दुःख देवुं (३)ढांकी देवुं ; ग्रसवुं उपप्रवान न० भेट; नजराणुं (२) छांच **उपप्लव** पुं०उपद्रव; पीडा(२)संकट; विघ्न (३) भय (४) दुर्भाग्य (५) उत्पात (६) (सूर्यचंद्रन्ं) ग्रहण (७) प्रलय; नाश (८) क्षोभ (९) राहु **ग्रह** (१०) अधेर; विप्लव उपप्लु १ आ० उपर तरवं (२) उपर फरी वळवुं (३) हल्लो करवो ; पीडवुं (४) उपर कूदवुं [ग्रसायेलु **उपप्लुत वि० हुमलो करायेलुं;पजवायेलुं;** उपबृंहण न० वधारो; वृद्धि **उपबृंहित** वि० वृद्धिगत थयेलुं; विस्तार पामेलुं (२) सहित; युक्त उपभुज् ७ उ० उपभोग करवो; भोगववं **उपभृत** वि० नजीक आणेलुं; --ने माटे मेळवेल् उपभोग पुं० भोगवयुं ते (२) माणवुं – मजा लेवी ते (३) अनुभव; लहावो उपभोग्य वि० भोगववा योग्य **उपमर्दे पुं**०चोळवुं – दाबवुं – मर्दन करवुं ते (२) नाश; वध (३) तिरस्कार उपमा ३,४ आ०,२ प० तुलना करवी; उपमा आपवी उपमा स्त्री० सरखामणी (२)मळतापणुं उ**पमान** न० सरखामणी; तुलना (२) सरखासणी माटेनुं घोरण; जेने आघारे सरलामणी थाय ते उपमिति स्त्री०उपमा; सरखामणी (२) तेथी थतुं ज्ञान (न्या०) उपमेय विवतुलना के सरखामणी करवा ्योग्य (२) न० जेने उपमा आपवामां आवी होय ते

उपयम् १ उ० | उपयच्छति-ते | परणवुं (२) पकडवुं; धारण करवुं (३) स्वीकारवुं (४) सूचवर्बु **उपयंत्** पु० पति प्राप्त करवी उपया २ प० जवुं;पहोंचवुं(२)स्थिति उपयान न० नजीक जबुं ते (२) पामबुं ते; प्राप्ति [छाजतु; बंधबेसतु उपयुक्त वि० उपयोगी (२) योग्य; उपयुज् ७ आ० कामे लागवुं; कामे लगाडवुं(२) उपयोग करवो ; वापरवुं (३)भोगववुं; अनुभववुं (४)आसक्ति राखवी (५) (वाहने) जोडवुं उपयोग पुं० वापर; वपराश (२) खप; जरूरियात उपयोगिन् वि० उपयोगमां आवे एवं; खपनुं ; कामनुं (२) उपयोगमां लेनारुं उपरक्त वि० संकटग्रस्त (२) ग्रहणमां सपडायें छूं (३) रंगायेलुं (४) पुं० ग्रहणमां ग्रस्त सूर्य के चंद्र उपरत वि० योभेलुं; अटकेलुं; विरमेलुं (२)मृत(३)खसी गयेलुं;पाछुं हठेलुं (४) संसारमांथी विरक्त थयेलुं उपरति स्त्री० विरमवं - थोभवं -अटकवुं ते(२)मृत्यु (३) उपेक्षा;विरक्तित उपरम् १ आ० अटकवुः; विरमवुः,थोभवु (२) शांत थवुं **उपरम** पुं॰ अटकवुं – विरमबुं ते(२) निवृत्त थवुं – विमुख थवुं ते (३)मृत्यु उपरंज् ४ उ० [उपरज्यति -ते] रातु थवुं (२) ग्रहणमां सपडावुं उपराग प्० ग्रहण (२) लालाश;रंग (३) संकट; विपत्ति ('वाईसरॉय' उपराज पुं० राजा पछीनो अधिकारी; उपराम पुं० उपरम; निवृत्ति (२) विराम; अटकवुं ते (३) मृत्यु **उपरि** अ० उपर, तरफ, आगळ, बधारे, उपरांत, संबंधमां, पछी, ऊंचे, तरत ज - ए अर्थमां वपराय छे

उपरितन वि० उपरनुं; वधु उपरनु उपरिष्टात् अ० उपर; अंचे; पछी; पछीथी; पाछळथी; आगळ उपर **उपरिष्ठ** वि० उपर रहेलुं उपरुष् ७ उ० अटकाववु ; हरकत करवी (२) घेरो घालवो (३) त्रास आपवो (४) केद करवुं (५) छुपाबबुं उपरोध पुं० हकावट; प्रतिबंध; विघ्न (२) घेरवुं ते (३) त्रास; पीडा उपल पुं० पथ्यर; खडक (२) रत्न उपलक्ष १० प० तपासवुं; जोवुं (२) लक्षमां लेवुं; विचारवुं (३) आंकवुं; निशानी करवी उपलक्षण न० निहाळवुं ते; जोवुं ते (२) चिह्न; विशेष लक्षण उपलब्ध वि॰ मळेलुं; मेळवेलुं (२) जाणेलुं; समजेलुं जाम उपलब्धि स्त्री० प्राप्ति; लाभ (२)बोध; उपलभ् १ आ० जोवुं; जाणवुं (२) प्राप्त करवुं; मेळववुं उपलल् १० प० लाड लडाववां **उपलंभ** पुं० प्राप्ति (२) बोघ; अनुभव (३)जाणवुं ते;खातरी करवी ते(४) जोवुंते; दर्शन खरडावु **उपलिप् ६** प० लेप करवो (२)लेपावुं; उपलेप पुंठ लेप करवो ते (२) लींपवुं ते; लींपण उपयन न० बगीचो; वाडी खपवर्तन न० प्रदेश (२) राज्य (३) व्यायामशाळा (४) भेजवाळी जगा उपवास पुं० व्रत के नियम तरीके न साब् ते (इंद्रियभोगमात्रनो त्याग करवो ते) उपवाहन न० नजीक लाववुं के लई जवुं ते **उपवाह्य** पुं०, **उपवाह्या** स्त्री० राजानो हाथी (नर के भादा) (२) राजान वाहन उपविश ६ प० वेसवुं; नीचे बेसवुं (२) पडाव नाखवो (३) आथमव्

उपविष्ट वि० बेठेलुं (२)आवी पहोंचेलुं (३) -मां लगोलुं - मंडेलुं उपवीत न० यज्ञोपवीत - जनोई (२) यज्ञोपनीत आपवानी धार्मिक क्रिया उपवृंहण न० जुओ 'उपबृंहण' उपवेद पुं० गौण वेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांवर्ववेद, स्थापत्यवेद) उपवेश पुं०, उपवेशन न० बेसवुं ते (२) –मां लागवुं ते (३) मूकवुं ते (४) ताबे थवुं ते **उपशम** पुंब शांत पडवुं – विराम लेवो ते; शमवुं ते (२) शांति; निवृत्ति (३) इंद्रियनिग्रह उपशमन न० शांति; निवारण; शमन उपशय पुं० नजीक सूर्वु ते (२) संतावान् स्थानः; भराई रहेवानी जगा (शिकारीनी) (३) रोगनुं शमन उपशस्य न० गामनी भागोळ उपशांति स्त्री० शांत थवुं ते; शांत पाडवुं ते (२) निवृत्त थवुं ते उपश्रुत वि० सांभळेलुं (२)स्वीकारेलुं; वचन आपेलु उपभुति स्त्री० सांभळवं --कान मांडवा ते (२) ज्यां सुधीनुं संभळाय ते अंतर(३) एक अलौकिक वाषी; वनदेवतानी भविष्यसूचक वाणी (४) वचन; स्वीकारनुं वचन उपिक्लप् ४ प० आलिगव् (२) नजीक जवुं - पहोंचवुं –प्रेरक० नजीक स्थापवुं – राखवुं उपदिलष्ट वि० नजीकनुं; नजीक मूकेलुं **उपक्लोकयति** (क्लोक वडे स्तृति करवी) **उपद्धंभ** पुं० टेको ; आधार ; उत्तेजन **उपसक्त** वि० आसक्त **उपसद् १** ५० [उपसीदति] *पा*से बेसव् (२) सेवा करवी (३) (मेळववा) प्रयत्न करवो (४) हुमलो करवो उपसदन न० नजीक आवबुं के जबुं ते

(२) गुरु पासे बेसवुं ते; शिष्य थवुं ते (३) पाडोश

उपसम्म वि० हाजर थयेलुं; नजीक आवेलुं (२) नजीक मूकेलुं; उपर मूकेलुं उपसर्ग पुं० मंदवाड; व्याधि (२) दुर्भाग्य ; दुःख ; संकट ; हानि (३) विघ्न (४) दुश्चिह्न ; उत्पात (५) ग्रहण (६) घानुओ अने धानुओ उपरथी बनेलां नामोनी पहेलां जोडातो तथा तेमना मूळ अर्थमां विशेषता आणतो शब्द (ब्या०)

उप्सर्पण न० पासे जबुंते **उपसंक्षेप पुं**० सार; तात्पर्ये -उपसंग्रह पुं०, उपसंग्रहण न० निभाववुं ते; खुश राखवुं ते (२) पग पकडीने

नमस्कार करवा ते (३) स्वीकारवं ते (४) संग्रह करवो ते

उपसंपद् ४ आ० जई पहोंचवुं; आवी [मेळवी आपवुं पहोचन् –प्रेरक० नजीक लई जवुं (२) आपवुं;

उपसंपन्न वि० प्राप्त थयेलुं (२) पहोंचेलुं (३) संपन्न ; युक्त (४)परिचित (५) मृत (६) यज्ञमां मारेलुं (७) राधेलुं (८) न० मसालो

उपसंस्कृ ८ पुं० तैयार करवुं; राधवुं (२) शोभाववुं; शणगारवुं (३) पवित्र करवुं

उपसंहार पुं० एकत्र थवुं ते; एकत्रित करवुं ते (२) पाछुं खेंची लेबुं ते(३) संचय ; संग्रह (४) ट्रंकामां आटोपी लेवुं ते; समाप्त करवुं ते (५)टूंकाण; संक्षेप; सार (६) संहार; नाश(७) हुमलो करवो ते; आक्रमण

उपसंह १ प० एकत्रित करवुं(२)उपसंहार करवो; समाप्त करवुं (३) संकोची लेवुं; पाछुं खेंचवुं (४) निग्रह करवो

उपसाच् -प्रेरक० प० वश करवुं(२) रांधवु

उपसृ१ प० पासे अवुं; नजीक जबुं

उपसृप् १ प० नजीक जवुं – पहोंचबुं उपसृष्ट वि० छोडेलुं; त्यागेलुं (२) (ग्रहण इ० जेवा) उपद्रवधी ग्रस्त (३ पिशाचग्रस्त (४)पीडित (५)व्याप्त **उपसेव् १** आ० सेववुं; भोगववुं (२) आसक्ति राखवी; भजवुं उपसेविन् पुं० सेवकः; नोकर उपस्कन्न वि० क्षुब्ध; त्रस्त **उपस्कर पुं०** साधनसामग्री; साहित्य (२) घरखटलो (३) मसाला वर्गेन् पदार्थो (४) निदा ; ठपको (५) घरैणुं उपस्करण न० हिंसा; वघ (२)शोभा : शणगार (३) मूळ गुणमां फेरफाः करे तेवो संस्कार (४) साधन (हिंस के शणगारन्)

उपल्कृ ८ उ० जुओ 'उपकृ' **उपस्कृत** वि० तैयार करेलुं;पूर्ण करेल् (२) ठपको अपायेलुं (३) हणायेलुं (४) एकटुं करायेलुं (५) शणगारेलुं (६) गुणांतर करेलुं 'उपष्टंभ उपस्तंभ पु०, उपस्तंभन न० जुओ

उपस्थ पुं० मध्य भाग (२) खोळो (३) पुं०, न० जननेंद्रिय (४) गुदा

उपस्था १ उ० [उपतिष्ठति-ते] पारे कभा रहेवुं; सेवा करवी (२) सत्काः करवो (३) उपासना करवी (४) नजीव आववुं (५) मळवुं; जोडावुं (नदीनुं) (६ भित्रता करवी (७) हाजर थर्द (८) बनवुं; **यबुं** (९) आशरे रहेवुं

उपस्थान न० पासे ऊभा रहेवुं ते (२) पासे आववुं ते (३) उपासना; पूज (४) नजीक मूकवुं ते (५) उपासनागृह (६)अनुसंघान ; स्मरण; चितन (७) मेळववं ते; प्राप्ति

उपस्थित वि० आवी पहोंचेलुं; नजीव आवेलुं; हाजर (२)आवी पडेलुं(३ बनेलुं(४) ज्ञात ; प्राप्त (५) उपासेलूं पुजल्

उपस्पर्शन न० आचमन (२)स्नान (३) कोगळाथी मुखशुद्धि करवी ते(४)दान; |(२) भ्रष्ट; असुद्धः उपहत वि० हणायेलुं; ईजा पामेलुं; नष्ट उपहतक वि० अभागी; दुर्भागी **उपहस् १** प० हसर्वुः; मश्करीमां हसर्वुः; मक्करी करवी **उपहसित** वि० हसी कार्डेलुं (२) न० मक्करी; मक्करीमां हसवुं ते **उपहा**३ आ० ऊत्तरवुं; उपर आवी पडवुं −कर्मणि० [उपहीयते] घटवुं; ओछुं ति माटेनी वस्तुओ थव् **उपहार** पुं० भेट ; बक्षिस (२) बलिदान ; **उपहास** पुं० मश्करी; ठेकडी **उपहित** वि० अंदर -- नजीक – उपर मुकायेलुं (२) जो डायेलुं (३) उपाधि-युक्त (४) कामे लीधेलुं (५) आपेलुं **उपहृत** वि० बोलावायेलुं उपहूर्ति स्त्री० बोलाववुं – तेडवुं ते **उपह १** प० नजीक लई जब्; नजीक लाववुं(२)भेट आपवी(३)बलिदान आपवुं (४) पीरसवुं; वहेंचवुं (५) एकठुं करवुं (६) लई लेवुं; नाश करवो **उपाकृ ८** उ० नजीक लाववुं (२) बोलाववुं; आमंत्रवुं(३)अर्पवुं; बक्षवुं (४) प्राप्त करवुं (कीर्ति) (५)मार्थे लेबुं; शरू करवुं (६) (वधेरवा माटे के विधि माटे) तैयार करवूं उपा**रुयान, उपा**रुयानक न० नानुं आख्यान(२)सांभळेली वात कहेवी ते उपायत वि० आवेलुं (२) धनेलुं (३) अनुभवेल्; पामेल् उपागम् (उप+आ+गम्) १ प० [उपागच्छति] पासे जबु; पासे आवव् (२) (अमुक स्थिति) पामवी; अनुभववं (३)आवी पडवुं; बनवुं (४) प्राप्त करवुं उपाचर् १ प० नजीक जवुं(२)सेवा करवी (३)आसक्त थवं (४)उपचार करवो (मांदानो)

उपात्त वि० मेळवेलुं; प्राप्त करेलुं (२) लई लीघेलुं;ग्रहणकरेलुं (३)गणेलुं; मानेलुं (४) उपयोगमां लीघेलुं उपादा ३ आ० लेबुं;स्वीकारवुं (२) प्राप्त करवुं (३) –ने आपबुं (४) धारण करवुं (५)पकडवुं; वळगवुं(६)उपाडी जवुं (७)अनुभववुं (८)मानवुं;गणवुं (९) माथे लेवुं; शरू करवु (१०)रूप घारण करवुं (११) उपयोगमां लेवुं उपादान न० अंगीकार; स्वीकार (२) लई लेवुं ते;पडावी लेवुं ते (३)कारण; समवायी कारण उपादेय वि० लई शकाय तेवुं (२) स्वीकार्य (३)पसंद करवा योग्य (४) उत्तमः; वलाणवा जेव् उपाधा ३ उ० नजीक मूकवुं; उपर मूकवुं (२) आपवुं (३,पहेरवुं (४) उत्पन्न करवुं (५) पकडवुं; पकडी राखवुं (६) करवुं; बनाववुं (७) फोसलाववुं (स्त्रीने) उपाधि पुं० छळ; कपट; वंचना (२) विशिष्टता; विशेष भुण (३)पदवी; खिताब (४) मर्यादा; निमित्त; हेतु (५) संज्ञा; चिह्न (६)कारण ; हेतु उपाध्याय पुं० गुरु; शिक्षक **उपानह**्स्त्री० जोडो; पगरखुं उपाय पु० इलाज ; युक्ति (२) साधन ; रस्तो (३) आरंभ; शरूआत (४) पासे आव ुते; आवी पहोंच ुते **उपायन** न० भेट; बक्षिस उपारत वि० विरत थयेलुं; विरमेलुं (२) निवृत्त (३) —मां लागेलुं; मग्न उपारम् १ प० आनंद माणवो (२) थोभवु; विरमवु **उपारूढ** वि० वृद्धि पामेलुं उपार्जन न० प्राप्त करवुं ते; कमावुं ते **उपाजित** वि० मेळवेलुं; कमायेलुं **उपालभ् १** अर० ठपको आपवो ; वांक काडवो (२) कापदुं; वधेरबुं

उपालंभ पु०, उपालंभन न० ठपको; ति; आळोटवुं ते **उपाद्यर्तन** न०पाछुं फरवुं ते (२)गबडवुं **उपादृत् १** आ० पाछुं फरवुं (२) पासे जबुं (३) आपवुं (४) आळोटवुं; गबडबुं उपाश्रय पुं० आशरो; आघार (२) अश्वियस्थान **उपाधि १** उ० आश्रय लेवो उपाश्रित वि० आशरो लेनार्ह (२) धारण करनार्ह; वहन करनार्ह **उपास् २ आ०** पासे बेसवुं (२) उपासना करवी; सेववुं (३) पसार करवुं (समय) (४) पहोंचवुं; जबुं (५) रहेवुं; पासे रहेबुं (६) घेरो घालवो उपासक पुं० भक्त; साधक (२)अनुयायी; उपासन न०, उपासना स्त्री० आराधना; सेदा ; भक्ति (२) ध्यान – चिंतन (३) धनुर्वेदनो अभ्यास **उपाहार** पुं• अल्प आहार; नास्ती **उपाहित** वि० मूकेलुं (२)अनामत मूकेलुं (३)पहेरेलुं(४)युक्त उपाह् १ उ० लई आववुं; लाववुं(२) आपबुं; अर्पण करवुं उपांग पूं० कपाळे करवामां आवतुं चंदनन् टीलुं (२) न० मुख्य विषयनो पेटा भाग ; गौण अंग – अंगनुं अंग (३) वेदांग जेवां चार शास्त्र (पुराण,न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र) [(पाणी) उपांच् (उप∔अंच्) १उ० ऊंचे चढावतुं **उपांत** वि० छेडानी नजीकनुं (२) पुं० नजीकनो भाग – प्रदेश (३) कोर; छेडो; सीमा; हद (४) आंखनो खुणो (५) निकटता; नजीकपणुं उपांत्य वि० छेल्छानी पहेलांनुं (२) त० सांनिध्य [गुप्त रीते उपांतु अ० खानगीमां; धीमेथी (२) **उपे** (उप+इ)२प०पासे आवदुं;आवी पहोंचवुं (२) गुरु पासे जवुं; शिष्य

थवुं (३) स्वीकारवुं; आचरवुं; धारण करवुं; पामवुं (स्थिति) **उपेक्ष् १** आ० उपेक्षा करवी ; अवगणनः करवी (२) बेदरकार रहेवुं (३) तिरस्कार करवो (४) त्याग करवो (५) जोबुं; विचारबुं **उपेक्षण** न०, **उपेक्षा** स्त्री० अनादर; तिरस्कार (२) त्याग (३) अनपेक्षा उदासीनता (४) बेदरकारी उपेत ('उप' मुंभू० कृ०) वि० नजीव आवेलुं (२) युक्त; सहित उपेय वि॰ पासे जवा योग्य (२) पाळव लायक (३) उपायधी साधवा लायक **उपेंद्र** पुं० विष्णु (बामन अवतारम[्] इंद्रना नाना भाई होवाथी) **उपोढ** वि० एकठुं थयेलुं; संग्रहायेल् (२) मजीक लावेलुं – आवेलुं (३) आरंभायेलुं (४) परणेलुं उपोक्घात पु० आरभ (२) ग्रंथनी प्रस्तावना (३) प्रसंगः; साधन **उपोषण, उपोषित** न० उपवास **उपोह**् (उप+ऊह्) १ प० धकेलवुं; --नी तरफ खसेडव् जप्त ('वप्'नुंभू० इत्०) वि० वाबेलुं (२) नाखेलुं (३) मूंडेलुं उप्ति स्त्री० वावणी **उभ् ६ प० |**उभति, उंभति], ७ प० [उनप्ति], ९ ५० [उम्नाति| भरवुं; [मांज बपराय) उभ स० ना०, वि० बंने ; बे (द्वि० व० **उभय** स० ना०, वि० बन्ने (अर्थमः द्विवचनी छता एकवचन के बहुवचन-मांज वपराय) उभयतस् अ० बन्ने बाज्एथी **उभयथा** अ० बन्ने रीते **उभयान्वियन्** वि० उभय (पद अथवः वाक्य) -ने जोडनारुं (ब्या०) **उम् अ०प्र**श्न, सांत्वन, संमति, स्वीकार कोध – ए भाव दशिवे

मा स्त्री० पार्वती (२) तेज; प्रभा (३) कीर्ति (४) रात्रि **।मापति** पुं॰ शंकर **मासुत** पुं० कार्तिकेय अथवा गणपति *र*मेश पुं० शंकर **उरग** पुं∘ साप (पेटे चालनार) रस्यराज पुं० शेषनाम (२) वासुकिनाम **उरगारि, उरगाञ्चन** पुं० गरुड (२) मोर **उरगेंद्र** पुं० शेषनाग (२) वासुकिनाग **उरण, उरभ्र** पुं० घेटो **गररी अ०** संमति के स्वीकार दर्शावे (आ अर्थमां ते सामान्य रीते 'कु', 'भू' अने 'अस्' धातु पूर्वे वपराय छे) (२) विस्तारने। अर्थ दशवि **उररीक़ ८** उ० स्वीकारवुं; कबूल राखवुं उरस् वि० श्रेष्ठ; उत्तम (२) न० छाती उर**सिज, उरसिरु**ह पुं० स्तन **उरस्त्राण न**० कवच; बस्तर (छाती उपरन्) **उरस्य** वि० परणेली स्त्रीथी थयेलु (संतान) (२) उत्तम; श्रेष्ठ उ**रीकृ ८** उ० जुओ 'उररीकृ' 🕫 वि० विशाळ; मोटुं; विस्तृत (२) श्रेष्ट (३) अत्यंत (४) पुष्कळ **इर्णा** स्त्री० ऊन उरोज, उरोभू पुं० स्तन उर्वरा स्त्री० फळद्रुप जमीन उर्वरित वि० अधिक; अतिशय (२) बधेलुं; शेष रहेलुं उर्वेशी स्त्री० स्वर्गनी एक अप्सरा उर्वेग पुं॰ पर्वत (२) समुद्र उर्वोस्त्री० पृथ्वी (२) जमीन **उर्वोपति** पुं० राजा **उर्वोरह** पुं० वृक्षः {(२) कोमळ तृण उलप पु॰ जमीन पर फेलाती एक वेल उल्लूक पुं० घुवड (२) इंद्र **उल्बल न० लांडणियो** (लाकडानो) **उल्का** स्त्री० रेखाना आकारे पडतो

तेजनो ढगलो ; आकाशनो अग्नि (२) खरतो तारो (३)मशाल(४)ज्वाळा उल्कामुख पुं० एक जातनुं प्रेत (ज्वाळा-युक्त मुखदाळुं)(२) एक जातनुं शियाळ उल्ब न० गर्भ उपरनुं आवरणः; ओर उल्बंग वि॰ जाडुं; धट्ट (२) घणुं; अत्यंत (३) मजबूत; मोटुं (४) प्रगट; स्पष्ट (५) भपकादार (६) भयंकर (७) पापयुक्त **उल्मुक** पुं० मशाल; स्नोरियुं **उल्लप् १ प० दूर** करवु; टाळवु **उल्लेक्टित** वि० कंपतुं; ध्रूजतुं; क्षुड्ध (२) अछळतुं; अंचे जतुं उल्लस् १ ५० कूदवुं; अछळवुं; फर-फरवुं (२) चळकवुं; चमकवुं (३) प्रगट थवुं; देखावुं (४) प्रतिबिक्ति थवुं (५) खीलवुं; खूलवुं उल्लसित वि० तेजस्वी; स्फुरतुं (२) उल्लासयुक्त (३) खेंचेलु; बीझेलु (तरवार इ०) उल्लंब् १ आ०, १० प० उल्लंघन करवुं उल्लंघन न० ओळगवु ते; अतिकम उल्लाप पुं० वाणी; उद्गार (२)कटाक्ष के तिरस्कारनुं वचन ; वक्रोक्स (३) घांटो पाडीने बोलाक्क्युं ते (४) दु:ख-भय-शोक वगेरेथी स्वरमां पडतो परक उल्लास पुं० आनन्द (२) प्रकाश; भपको (३) प्रकरण उल्लिख् ६ ५० छेकवुं (२) बलूरवं (३) खोतरवुं; कोतरवुं (४) घसवे मांजवुं (५) चीतरबुं; लखबुं उल्लिह् २ उ० [उल्लेखि, उल्लीखे] घसीने चकचिकत करवं र्जील्लगित वि० प्रसिद्ध; जाणीतुं(२) प्रगट थयेलुं (विशिष्ट लक्षणोथी) उल्लीह वि० घसेलुं; भार काढेलुं उल्लेख पुं० निर्देश; सूचन (२) कथन; वर्णन (३) घसवुं – वलूरवुं – स्रोतरबुं ते उल्लोल वि० अति चंचळ

उल्बान० जुओ 'उल्ब' **उल्बंग वि० जुओ** 'उल्बंग' **उज्ञत्** वि० सुन्दर (२) प्रिय (३) निर्मेळ (४) बीभत्स; अमंगळ उश्ती स्त्री० तीखी वाणी **उज्ञनस्** पुं० दैत्योना गुरु शुक्राचार्य **उझी** स्त्री० इच्छा उद्योर पु०, न० वीरणनो वाळो उष् १ प० बळवुं ; बाळवुं (२) शिक्षा करवी (३) मारवुं; मारी नाखबुं उचम् न० परोढ; प्रात:काळ (२) परोढ वस्ततनुं तेज (३) परोढनी देवता उपसी स्त्री० सायंकाळनुं तेज **उषस्कर** पुं० चंद्र उष:काल पुं० परोडनो समय उचा स्त्री० परोढ (२) प्रातःकाळनुं तेज (३) रात्रि (४) बाणासुरनी पुत्री अने अनिरुद्धनी पत्नी उषित ('वस्'नुं भू० कृ०) वि० वसेलुं (२) ('उप्'नुं भू० कृ०) बळेलुं उषीर पुंठ, नव जुओ 'उशीर' **उद्भ** पुं॰ ऊंट [माटीनुं वासण उष्ट्रिका स्त्री० ऊंटडी (२) तेवा घाटनुं

उष्ण वि० गरम (२) सखत; कडक (३) पुं०, न० उनाळो (४) गरमी; ताप; तडको (५) निसामो उष्णकर पुं० सूर्य उष्णम पुं० उनाळो (२) वषऋितु उष्णगु, उष्णदीधिति पुं० मूर्य उठणबाध्य पुं० आंसु (२) वराळ उष्णरिम पुं सूर्य **उष्णागम** पुं॰ उनाळो उष्णांश पु० सूर्य **उष्णीष** पुं०, न० पाघडी ; फेंटो ; मुगट **उच्म, उच्मक** पुं० उच्णता (२) उनाळी (३) क्रोध (४) उत्साह; संत **उष्मन्** पुं० उप्णता; गरमी (२)ग्रीष्म ऋतु; उनाळी **उष्मागम** पुं॰ उनाळो उस्न पुं० किरण (२) बळद उस्वित् अ० अथवा; किया **उंछवृत्ति** वि० खेतरमां पडेला दाणाः वीणीने जीवनारं **उंदर, उंदुर, उंदुर, उंदूर** पुं० उंदर उंभ् ६,७,९५० जुओं 'उम्'

あ

क अ० दया, रक्षण, संबोधननो अर्थं बतावे (२) वाक्यारंभे वपरातो उद्गार कढ ('वह' नुं भू० कृ०) वि० वहम करायेलुं (बोजो); ऊंचकी जवायेलुं; लई जवायेलुं (२)परिणीत (३) न० लग्न कत ('अव्' नुं भू० कृ०) वि० रक्षायेलुं; मदद करायेलुं (२) ('वे'नुं भू० कृ०) वणायेलुं; सिवायेलुं कति स्त्री० लीला (२)सीववं — वणवं — गूंथवं ते (३) कृपा; मदद कथन्य न० दूध कथन्य न० आज; बावलुं उत्थरम न० दूध
उत्त वि० जणुं; ओछुं; अपूर्ण (२)
जणपवाळुं; नबळुं (३) बाद (संस्थाबाचक शब्द साथे, उदा० (एकोनबिशति') (उद्गार
उत्त्म अ० प्रश्त, निदा के स्पर्धा बताबतो
उत्ती अ० जुजो 'उररी'
उत्त पुं० साथळः जांघ
उत्स्तंम पुं० जांघनो संधिबा; जांघबाळा भागनुं अकडाई जबुं ते
अर्थ (३) रस (४) जळ

क्रजं पुं॰ शक्ति; ताकात (२) उत्साह (३) ताण (४) प्रजोत्पादन शक्ति (५) कार्तिक मास (बळ आपनार) क्रजंस् न० सामर्थ्य (२) अन्न क्रर्जस्वल, कर्जस्विन् वि० शक्तिमान; पराक्रमी; तेजस्वी क्रजित वि० समर्थ; बळवान (२) श्रेष्ठ; उच्च; भव्य (३) वृद्धियुक्त; चडियातु (४) न० सामर्थ्यः , शक्ति क्रर्ण न० कन (२) कननुं वस्त्र क्रर्णनाभ, क्रर्णनाभि, क्रर्णपट पुं० करोळियो विच्चेनी वाळनी रेखा कर्णा स्त्री० कन (२) आंखनी भमरो क्रणीयु वि० ऊननुं (२) पुं० घेटो (३) करोळियो (४) ऊननो कामळो **ऊर्ण् २** उ० ढांकवुं ; संताडवुं ; वीटाळवुं **कर्ध्व वि० ऊ**भुं; ऊंचुं; उपरनुं (२) सीघुं ; टटार (३) ऊंचुं करेलुं ; उन्नत (४) न० उच्चता; ऊंचाई **ऊर्ध्वकाय** पुं०, न० शरीरनो उपलो भाग कथ्वंग, कथ्वंगति, कथ्वंगामिन् वि० ऊंचे जनारुं; चडनारुं **ऊर्ध्वजानु, ऊर्ध्वज्ञ, ऊर्ध्वज्ञु** वि० ढींचण ऊंचा करीने बेठेलुं **क्रध्वंदेह** पुं० भरण पछी थनारो देह (२) मरण पछी करवानी एक किया

अर्थवाहु वि० ऊंचा हाथ करेलु कर्ष्यम् अ० ऊंचे (२) मोटेथी; मोटा अवाजे (३) पछी; पछीथी **ऊर्ध्वमुख** वि० ऊंचा मोंबाळुं; उपरनी बाजुए ऊघडतुं **अर्ध्वरेतस्** वि० जेना वीर्यनुं पतन थतुं नथी एवं; नित्य ब्रह्मचर्य पाळनाहं कर्मि पुं० स्त्री० मोजुं; तरंग (२) प्रवाह (३) लागणीनो तरंग; उत्कंठा; संकल्प **ऊर्मिमालिन्** पुं० समुद्र; महासागर (तरंगो रूपी माळाओवाळो) **ऊर्व** पुं• वडवानल (२) बादळ (३) समुद्र (४) पितृओनो एक वर्ग **ऊर्वरा** स्त्री० जुओ 'उर्वरा' **ऊलूक** पुं० जुओ 'उलूक' ऊषर वि० साराशवाळुं (जभीन) (२) पुं०, न० **ऊष्म, ऊष्मन्** पुं० जुओ 'उष्म', 'उष्मन्' **ऊष्मोपगम** पुं॰ उनाळो **ऊह् १** उ० तर्क करवो (२) मानवुं; धारवुं;अपेक्षा राखवी(३)विचारणा करवी अह पुं ० तर्क; कल्पना (२) परीक्षण; विचारणा (३) अध्याहार

ऋ

श्वः १ प० [ऋच्छति] जवुं (२) ३ प०
[इयति] जवुं (३) मळवुं; मेळववुं
(४) ऊंचुं चडाववुं (अवाज) (५) ५ प०
[ऋगोति] ईजा करवी(६)हुमलो करवो
—प्रेरक० [अर्पयति| नाखवुं; फेंकबुं;
मूकवुं (२) आपचुं; सोंपवुं (३) पाछुं
आपवुं (४) वींधवुं
श्वः पुं० रींछ (२) पुं०, न० नक्षत्र

(३) पुं० ब० व० सप्तिषिना तारा ऋसराज पुं० रीछोनो राजा; जांबुबान (२) चंद्र (नक्षत्रोनो राजा) ऋग्वेद पुं० चार वेदोमांनो पहेलो वेद ऋग्वेदसंहिता स्त्री० ऋग्वेदनी ऋचा-ओनो ब्यवस्थित संग्रह ऋच् स्त्री० ऋग्वेद (२) ऋग्वेदनी ऋचा; मंत्र (३) स्तुति; स्तोत्र (४) पूजा (५) शोभा

अहापोह पुं० चर्चा; विचारणा

ऋस्छ्६ प० जवुं (२) अकडाई **ज**वुं; जड थई जबुं (३) मूच्छा पामवी **ऋष्य १** आ ० अिर्जते जिनु(२) प्राप्त करवु; मेळववुं (३) स्थिर थवुं (४) तंदुरुस्त थवुं – बळवान थवुं (५) १ प० [अर्जति] कमाबु **ऋशु,ऋजुक** वि० सीघुं; सरळ (२) प्रमाणिक (३) अनुकूळ **ऋःजुला** स्त्री० सरळता; प्रमाणिकपण् ऋण न० देवुं; करज **ऋणमुक्त** वि० देवामांथी छूटेलुं ऋणमुक्ति स्त्री०, ऋणकोधन न० देवामांथी छ्टबुं ते ऋणिक, ऋणिन् वि० देवादार **ऋत वि**० साचु; खरुं (२) योग्य (३) प्रमाणिक (४)न० दैवी नियम; अच्छ नियम (५) मोक्ष (६) सत्य ऋतधामन् वि० शुद्ध के साचा स्वभाव-बाळुं (२) अविनाशी पदवाळुं ऋतम् अ० खरेज; साचे ज ऋतंभर पुं० परमेश्वर (सत्यने टकावी राखनार) ऋतंभरा स्त्री० सत्य प्रज्ञा (विषयिस विनानी) ऋति स्त्री० गमन (२)मार्ग(३)निदा (४) समृद्धि (५)आक्रमण (६)**स्प**र्घा (७) दुर्दैव (८) रक्षण ऋतु पुं० बे महिनानो नियत काळ (छ ऋतुओमांनी दरेक) (२) स्त्रीओनो मासिक स्नाव (३) जुओ 'ऋतुकाल'

ऋतुकाल पुं० स्त्रीओना मासिक अटकावनो समय (२) ऋतुप्राप्ति पछीनो १६ दिवसनो गर्भाषाननो समय **ऋतुपति** पुंज्यसंत ऋतु ऋतुमतो स्त्री० रजस्वला स्त्री (२) परणवा योग्य उमरनी कन्या **ऋतुरा**ज पुं० वसंत ऋतु **ऋसुसंहार** पुं० ऋतुओनो समृह (२) कालिदासना एक काव्यनुं नाम ऋतुस्माता स्त्री० अटकाव पछी (चोथे दिवसे) नाहीने शुद्ध थयेली स्त्री ऋते अ० सिवाय; वगर ऋस्विज् पुं० यज्ञ करावनार ब्राह्मण ऋद्धावि० समृद्धा ऋद्धि स्त्री० समृद्धि;वृद्धि (२) आबादी; उत्कर्ष (३) सिद्धि ऋष् ४,५ प० वधवुं; समृद्ध थवुं(२) खुश करवु ऋरभुक्ष पुं० इंद्र (२) स्वर्ग (३) वज्र ऋषभ पुं० सांढ; आखलो (२) उत्तम, श्रेष्ठ –ए अर्थमां समासने छेडे वपराय (उदा० 'पुरुषर्घभ') ऋषभध्वज पुं० शंकर ऋषि पुं० मंत्रद्रष्टा; नवुं दर्शन पामनारी (२) मुनि; तपस्वी; साधु ऋषिकुल्या स्त्री० पवित्र नदी **ऋध्टि स्**त्री० तलवार; वेधारी तलवार

(२) कोई पण शस्त्र (भालो इ०)

ऋष्य ५० घोळा पगवाळुं हरण

ऋ, लू, लू

ए

ए अ० संबोधन, स्मृति, दया, ईर्ष्या, तिरस्कार –ए भाव दर्शावे ए (आ+इ) २ प० आवर् (२) पामवुं (दशाइ०) एक स० ना०, वि० एक (२) एकलुं (३) ए ज; जुदुंनहि तेवुं(४) स्थिर; न बदलायेलुं (५) अद्वितीय; असामान्य (६) मुख्य; श्रेष्ठ (७) वे अथवा घणांमांथी एक (८) समासमां वच्चे 'फक्त' एवा अर्थमा वपराय (उदा० दोषैकदृक्) (९) ब०व० बीजा;केटलाक एकक वि०एक लुं(२) ए ज **एककार्य** वि० एक ज कार्य करनार्ह (साथीदार) (२) एक ज उपयोगवाळुं एकचक वि० एक ज पैडावाळुं (सूयंनो रथ) (२) एक ज राजाना अमल हेठळनुं एकचर वि० एकलुं फरतुं के रहेतुं(२) पुं० संन्यासी एकचारिणी स्त्री० पतिव्रता स्त्री एकचित्त, एकचेतस् वि० एकात्रं चित्त-बाळुं; एक ज लक्षमां तल्लीन थयेलुं एक स्क्रम वि० एक ज राजावाळूं एकजाति पुं० शूद्र [एक ज कुटुबनु एकआतीय वि० एक ज जातनुं अथवा एकतम वि० घणां मांथी एक एकतर वि० बेमांथी एक; वेमांनुं एक एकतम् अ० एक बाजुएथी; एक तरफथी (२) एके एके एकता स्त्री० एक्य एकतान वि॰ जुओ 'एकचित्त' एकत्र अ० एक स्थळे (२) बधां मळीने एकत्र -- अपरत्र अ० एक बाजु -- बीजी बाज एकदंडिन् पुं० संन्यासी

एकदा अ० एक वार; एक वस्नत (२)एक ज समये; एक साथे होय एवं एकदृश्य वि० जोवा माटेनुं एकमात्र पात्र एकदृष्टि स्त्री० स्थिर नजर **एकदेश** वि० एक ज जगाए रहेतुं(२) पुं० एक भाग – अवयव (आखानो) एकचा अ० एक रीते (२) एकले हाथे(३) एकदम; एक ज वखते (४) कोईक वार एकनिष्ठ वि० एक ज वस्तुमां निष्ठा के वफादारीवाळुं (२) एक ज वस्तुमां एकाग्र थयेलुं एकपत्नी स्त्री० पतित्रता स्त्री एकपदी स्त्री० केडी; पगरवट एकपार्थिक पुं० एकमात्र - सर्वसत्ता-भीश राजा एकभक्ति वि०एक ज देवमां भक्ति के निष्ठावाळुं (२) स्त्री० रोज एक ज टंक खावुं ते एकभार्या स्त्री० जुओ 'एकपत्नी' एकभाव पुं० एक ज भावना के निष्ठा होवी ते एकभुक्त न० रोज एक बखत स्नावुं ते एकमनस् वि०एक ज – समान विचार-वाळुं (२) एकाग्र; एकचित्त एकरस वि॰ एक ज वस्तुमां रस के आनंदवाळुं (२) एक ज रस – प्रीति-वाळुं (३) स्थिर; दृढ; वफादार एकल वि० एकलुं; एकाकी एकवाक्य न० एकमती; सर्वानुमति एकदारम् अ० एकदम; तरत ज (२) एक वखत; एक ज वखत एकबीर पुं० श्रेष्ठ योद्धो; मुख्य योद्धो एकदेणी स्त्री० (पतिना वियोगमा) वाळने एक ज जूडा हिये राखवा ते

एकदाः अ० एक एक करीने एकहायन वि० एक वर्षनी वयन् एकाकिन् वि० एकलुं एकाक्ष वि० एक घरीवाळुं (२) एक आंखवाळुं (३) पुं० कागडो एकाक्षर वि० एक अक्षरवाळुं (२) न० गृह मंत्र ॐ एकाप्र वि० एकलक्षी (२) तल्लीन एकातपत्र वि० एकछत्र; सार्वभौम एकायन वि० मात्र एकथी ज जवाय एवं (सांकडुं) (२) एकाग्र; एक ज अवलंबनवाळुं (३) न० एकांत स्थळ (४₎ मळवानुं संकेतस्थान (५) एकमात्र लक्ष के ध्येय (६) एक ज प्रकार; समानता (७) व्यावहारिक नीति एकार्णंव पुं॰ सघळुं महासागर रूप थई रहे ते; प्रलय एकार्थवि० एक ज अर्थके हेतुवाळुं एकांत वि० कोईना अवरजवर विनान् (२) एक बाजुनुं; एकाकी (३) एक ज बाजु अथवा वस्तुने लगतुं; 'अनेकांत'थी विरुद्ध एवं (४) अतिशय; अत्यंत (५) एकनिष्ठ (६) निश्चित; अटळ (७) पुं० एकांत स्थान (८) बीजा सौथी अलगपणुं (९) निश्चित --अटळ नियम के सिद्धान्त (१०) एक ज रुक्ष्य के मर्यादा (११) न० एक ज निश्चित नियम के सिद्धांत एकांततस्, एकांतम् अ० चोनकसपणे; मात्र; फक्त (२) अत्यंत; तद्दन(३) अलग होय तेम; एकलुं ज होय तेम एकांतर वि० वच्चे एक आंतरो पडे तेवुं; ऋममां वच्चे एक मूकीने आवतुं एकांतिक वि० छेल्लुं; छेवटनुं एकांतिन् वि० एकनिष्ठ

एकांते, एकांतेन अ० जुओ 'एकांततस्' **एकिक** वि० एकलुं **एकोक्त** ८ उ० एकठुं करवुं (२) जोडवुं एकेक वि० एक एक; दरेक एककशः अ० जुदुं जुदुं; एके एके एकोदर पुं० समी भाई एकोदरा स्त्री० सगी बहेन **एकोन** वि० एक ओछुं होय तेवुं **एज् १** आ ० ध्रूजवुं; कंपवुं (२) गति-मोन थवुं (३) १ प० प्रकाशवुं **एडक** पुं० घेटो **एड्क, एड्क** पुं०, न० हाडकां वगेरे जेवा अवशेष उपर रचेलुं मंदिर एण, एणक पुं० एक जातनो काळो मृग **एतद्** स० ना०, वि० आ ; ए; पेलुं (बोलनारनी नजीकन्ं) एतदीय वि० आनुं; एनुं; पेलानुं **एतर्हि अ**० हवे; हमणां एता**दृक्ष, एसादृ**ञ् (–श) वि० आवुं; आ प्रकारन् **एतावत्** वि० आटलुं; एटलुं एष् १ आ० वधवुं (२) आबाद थवुं **एभ** पुं०, **एघस्** न० बळतण; ईंघण **एनस्** न० पाप **एरंड** पुं० दिवेलो एला स्त्री० एलचीनो छोड(२)एलची एव अ० मात्र; फक्त; ज एवम् अ० आ प्रमाणे; आ रीते **एवंविष** वि० एवुं; ए जातन् एषण न०, एषणा स्त्री० चाहना; इच्छा (२) आजीजी; विनंति एषणीय वि० इच्छवा योग्य एवा स्त्री० इच्छा एषिन् वि० इच्छावाळुं एष्टब्य वि ॰ इच्छवा योग्य (२) न ०इच्छा

ऐ

ऐ अ० संबोधन, आमंत्रण के स्मृति दर्शावतो उद्गार **ऐकमत्य** न० एकमत होवुं ते **ऐकागारिक** पुं० चोर (एकला–सूना घरमां पेसनार) **ऐकाश्य न**० एकाग्रता **ऐकात्म्य न० ए**कात्मता; अभेद; एक-स्वरूपत्व (२) परमात्मा साथे अभेद (३) आत्मानुं एक होवापणुं **ऐकां**तिक वि० संपूर्णं; पूरेपूर्हं (२) निश्चित; चोक्कस; अवश्यंभावी (३) अलग; खानगी **ऐकां**त्य न० सख्य; मित्रता (२) निश्चितता; अलगता **ऐक्य** न०एकता (२) एक मती (३) अभेद (आत्मा अने परमात्मानो) **ऐक्ष्वाक** वि० इक्ष्वाकु राजाना वंशनुं **ऐच्छिक** वि० वैकल्पिक; मरजियात (२) स्वेच्छानुसारी;पोतानी मरजी मुजबन् **ऐणेय** वि० मादा काळियारनुं (२) पुं० काळियार | परपरागत **ऐतिहासिक** वि० इतिहासने लगतुं(२) ऐतिहा न० परंपरायत वात के वर्णन

ऐदंपर्य न० मुख्य तात्पर्य **ऐन** वि० सूर्यनुं ऐभि वि० हाथीनुं; हाथी संबंधी ऐराव**ण, ऐरावत** पुं० इंद्रनो हाथी **ऐलविल** पुं० कुबेर एक वि० शंकर संबंधी (२) राजा संबंधी ऍशान वि० शंकरनुं **ऐशानी** स्त्री० **ईशा**न खूणो ऐस्बर वि० ईश्वरनुं; ईश्वरी (२) शंकरनुं **ऐश्वयं** न**० ईश्वरपणुं**(२)सर्वोपरीपणुं (३)मोटाई; साहेबी (४)विभूति;संपत्ति ऐहलीकिक वि० आ लोकतुं; आ दुनियानुं; सांसारिक ऐहिक वि० आ दुनियानुं; आ लोकनुं; सांसारिक (२) स्थानिक **ऐंस्व** वि० चंद्रनु अर्जुन के वालि ऍंद्र वि० इंद्रनुं; इंद्र संबंधी (२) पुं० ऐंद्रजालिक वि० मायाबी; जादुई; इंड्रजाळ संबंधी (२) पुं० जादुगर ऐंबि पुं (इन्द्रनी पुत्र) जयंत, अर्जुन के वालि (२) कागडी इंद्रियोन् ऍब्रिय, ऍब्रियक वि० इंद्रियग्राह्म (२) ऐंड्री स्त्री० पूर्व दिशा (२) इंद्राणी

ओ

जो अ० संबोधन, स्मरण, अनुकंपा
—ए भाव दश्वि
ओक पुं० घर; निवासस्थान(२) आश्रय
ओकस् न० घर (२) आश्रयस्थान
ओघ पुं० पूरनुं पाणी; प्रवाह (२)
जळनो वेग (३) ढगलो; जयो
ओज, ओजस् न० प्रकाश; तेज (२)
बळ; प्रतिभा; पराक्रम (३) जीवनशक्त; जननशक्ति; पौरुष (४)

शुक घातुमांथी कांति अने प्रभावक्षे विराजती शरीरनी एक धातु ओजस्बत्, ओजस्बिन् वि० तेजस्वी ओत ('आ + वे'नु भू० कु०) वि० वणेलुं ओतप्रीत वि० एकवीजानी साथे परोवायेलुं – वणायेलुं [(२) सीर ओवन पु०, न० भात; राषेला योला ओव् पु० वेदनो पहेलो बने पवित्र उच्चार, प्रणव + ॐ (२) अ० संमति, स्वीकार, आज्ञा, आरंभ, निवारण, कल्याण —ए भाव दर्शावे औषि स्त्री० वनस्पति (२) औषिमां वपराती वनस्पति ओषिषनाथ, ओषिपिति पुं० चंद्र ओषिषी स्त्री० जुओ 'ओषिध' ओष्ठ पुं० होठ [बोलातुं (व्या०) ओष्ठप वि० होठनुं; होठनी मददथी

औ

औ अ॰ बोलावामां, विरोध दर्शाववामां के निर्णय बताववामां वपरातो उद्गार औचिती स्त्री०, **औचित्य** न० उचित-पणुं; योग्यता **औडस्वल्य न०** उज्ज्वळता (२)अजवाळुं औरपातिक वि० अनिष्ट, उत्पात के दुर्भाग्य सूचवनारु औत्सृक्य न० अत्यंत आतुरता; उत्सुकता (२) उत्कट इच्छा (३) चिता (४) खंत **औदरिक** वि० लाउभर औदार्य न० उदारता; भव्यता (२) श्रेष्ठता; महत्ता (३) अर्थगांभीर्य औदासीन्य, औदास्य न० वेदरकारी; उपेक्षा (२) विराग; उदासीनता (३) एकलापण् **औद्धत्य न० उद्धतपणुं;** घृष्टता औद्वाहिक वि० लग्न संबंधी (२)लग्नमां मळेलुं (३) न० कन्याने मळेली भेट औधस्य न० दूध औपकार्यास्त्री० तंबु; भंडप औपचारिक वि० गौण; लाक्षणिक; आलंकारिक (२) उपचारने लगतुं 🗕 उपचार पूरतुं ज औपदेशिक वि० उपदेश करीने निर्वाह चलावनार् (२) न० उपदेश करीने मेळवेलुं धन औपपत्तिक वि० तैयार(२)योग्य(३) उपपत्तिवाळुं; तर्कशुद्ध

औपन्य न० उपमा (२) सादृश्य;समानता पूर्वक मेळवेल (३) तुलना औपयिक वि॰ योग्य: घटित (२) प्रयतन-औपवाद्या वि० सवारी माटेनुं (२)पुं० राजानो हाथी (३) राजानुं वाहन औपाधिक वि० जुओ 'औपयिक' **औरस** वि० पोतानी परणेली स्त्रीयी थयेलुं (संतान) (२) शारीरिक (३) कुदरती;स्वाभाविक]बनावेलं और्ष, और्षक, औषिक वि० ऊननुं; ऊनन् **और्ध्वदेह** न० प्रेतसंस्कार; मरणसंस्कार **और्ध्वदेहिक,और्ध्वदेहिक** वि० प्रेत संबंधी (२) परमात्मा संबंधी (३) न० प्रेत-संस्कार (४) परलोक माटे उपयोगी एक्ंयज्ञ – दान आदि कर्म और्व पुं० वडवानल औज्ञन, औज्ञनस वि० शुक्राचार्यनुं; शुक्राचाये संबंधी **औशनसी, औशनी** स्त्री० देवयानी **औशीर** न० शब्या; पथारी (२) आसन (३) बीरणबाळानो बनावेलो लेप औषध न० वनस्पति (२)ओसङ;दवा औषधि (-धी) स्त्री० जुओ 'ओषधि' **औषस** वि० प्रातःकाळ संबंधी औष्ट्रक न० ऊंटोनो समृह औष्ट्रिक वि० ऊंटनुं(२) पुं० घांची - तेली **औত্তঘ** বি০ লুজী 'জীড্ডঘ' **औष्ट्य, औष्ट्य** न० गरमी : उष्पता

क

क नाम के विशेषणने लागतो तद्धित प्रस्यय - अल्पता के वहाल बतावे छे; अर्थमां कशो फेर कर्या वगर पण लागे ·छे (उदा० बालक) (२) पुं० ब्र<u>ह्मा</u> (३) न० सुखः; आनंद (४) पाणी ककुद् स्त्री०, ककुद पुं०, न० पर्वतनुं शिखर; टोच (२) खूंध (३) राजचिह्न (छत्र, चामर वगेरे) (४) मुख्य; श्रेष्ठ (व्यक्ति) **ककुदिन्** वि० श्रेष्ठ; मुस्य **क्कुचत्, ककुचिन्** वि० खूंघवाळुं (२) पुं० पर्वत (३) आखलो ककुभुस्त्री० दिशा (२) शोभा; सौंदर्य (३) शिखर **कक्ष पुं॰ बगल** ; काख (२)पासुं ; पडखुं (३) स्त्रीनो कंदोरो (४) वननो अंतर्भाग (५) सूकुं धास (६) राजानुं अंतःपुर (७)आसपास आवेली भीत (८) ग्रहनो भ्रमणमार्ग (९) कछोटो (१०) न० नक्षत्र; तारो (११) पाप कक्षा स्त्री० कमर; केड(२)कमरपटो; कंदोरो(३) उत्तरीय वस्त्र(४) भींत; आसपासनी भींत (५) वाडो; चोक; आंगणुं (६)सादृश्य (७) घरनो मध्य-भाग; एकांत भाग (८) पासुं; पडखुं (९) स्पर्घा (१०) वस्त्रनी किनारी; कोर (११) अंतःपुर **कक्षाग्नि** पुं० दावानळ जंगल **कक्ष्य न० त्राज्**वानुं पल्लुं (२)सुका घासनुं कक्ष्या स्त्री० तंग;दोरडुं(हाथी के घोडानु) (२) कंदोरो (३) महेलनु अंतःपुर (४) दीवाल; भींत (५)कछोटो (६) समानता कच् १ उ० बॉधवुं (२) प्रकाशवुं (३) १ प० अवाज करवी

कच पुं० केश; बाळ **कचग्रह** पुं० वाळ खेंचवा ते लडवुं ते कचाकवि अ० एकबीजाना वाळ पकडीने **कचाचित** वि० छूटा केशवाळुं कच्चित् अ० 'इष्ट उत्तर आपशे' ए अर्थमां प्रश्न पूछवामां वपराय छे (२) हर्षे, विकल्प, हेत् अने मंगलप्रसंग -एवो भाव दशवि कच्छ पु०, न० किनारो; किनारानो प्रदेश; भेजवाळो भाग (२) कछोटो कच्छप पुं० काचबो कच्छपो स्त्री०काचबी(२)सरस्वतीनी वीणा (३) वीणा कच्छु(-च्छु) स्त्री० खस (रोग). [अंजन (३) शाही **कज**्ञन० कमळ **कज्जल** न० काजळ ; मेश (२) आंखनुं कट पुं० एक तृण; तेनी सादडी (२) हाथीनुं गंडस्थळ – लमणो (३) द्यूतमां पासा फेंकवानी एक रीत (४) श्रोणी; नितंब (५) कटाक्ष (६) शब के तेनी ठाठडी (७) अतिशयता कटक पुं०, न० कडुं, हाथनुं धरेणुं (२) कमरपटो; कंदोरो (३) सादडी (४) पर्वतनी खीण आगळनो सपाट भाग (५) पर्वतनी भेखड के धार (६) हाथीना दंतूराळ उपरनुं कडुं (७)सैन्य (८) छावणी कटकिन् पुं० पर्वत **कटन** न० घरनुं छापरुं के छाज कटप्रभेद पुं० मद झरवा मांडवो ते **कटाक्ष** पुं० बऋदृष्टि ; तीरछी आंखे जोवुं ते (प्रेम, संकेत के क्रोधमां) कटारिका स्त्री० नानी कटार कटाह पुं० कढाई (२) घडानुं ठींकरुं

कटि स्त्री० कमर; केड (२) गंडस्थळ (३) थापो; कुलो **कटिसट** पुं० नितंब-प्रदेश **कटित्र** न० घुघरीवाळो कंदोरो (२) केंड उपर वींटवानुं वस्त्र **कटिशृंखला** स्त्री० घृषरीवाळी कंदोरो कटिसूत्र न० केडनो पटो - कंदोरो कटी स्त्री० जुओ 'कटि' कटुवि० कडवुं (२) तीखुं (३) तीझ वासवाळुं (४) दुगैधवाळुं (५) ईष्पीळु; मत्सरवाळुं (६) विकराळ; उग्र; दारुण (७) प्रतिकूळ, दु:खद (८) न० अकार्य; दुराचरण (९)ठपको ; दूषण ; आरोप **कट्टक** वि० कडवुं (२)तीखुं (३)अप्रिय; [जलि (२) हाथीनो मद कटोदक न० मरण पाछळ अपाती जलां-कठिन वि० कठण; सखत (२) कठोर; निर्देय (३) दु:खदायक; असह्य (४) सखत; तीद्र (५) अघरुं; मुश्केल (६) न० तपेलु; दोणी |(२) टचली आंग**ळी** कठिनिका, कठिनी स्त्री० खडी; चाक **कठोर** वि० कठण; सखत (२) निर्देय (३) विकसित; पूर्ण कडंकरीय,कडंगरीय वि० गीतर खवडा-ववा योग्य (२) पुं० गाय, भेंस इ० ढोर

ववायोग्य (२) पु॰ गाय, भंस इ॰ ढोर कडार वि॰ पीळाश पडतुं; बदामी (२) गविष्ठ (३) पुं॰ नोकर कण् १ प॰ जवुं (२) नाना थवुं (३)

कण् १ प० जबु (२) नाना थवु (३) रोबुं;अनाज करवो (४)१०प० आंख मींचवी

कण पुं० दाणो (२) लेश; सूक्ष्म भाग (३)षूळनी रजकण(४)जळविंदु (५) अल्प संख्या(६)बान्यनुं कणसलुं(७) अग्निनो तणसो

कणप पुं० भाला जेत्रुं एक हथियार (२) अग्निबळपी लोढानी गोळीओ छोडतुं हथियार [-- दाणे दाणे कणशस् अ० नाना कणमां -- टीपे टीपे किणिक पुं० जुओ 'कण'
कणीका स्त्री॰ नानो कण; नानुं बिंदु
कतम सटै ना०, वि० कयं - कोण
(अनेकमांथी) [- कोण
कतर स० ना०, वि० (बेमांथी) कयुं
कित स० ना०, वि० केटली संख्यानु
(व० व०मां ज)(२) 'चिह्न', 'चन'
अने 'अपि' साथे वपरातां 'केटलुंक' एम
अनिश्चितार्थं बतावे

कतिपय वि० केटलाक ; थोडाक (अमुक निश्चित संख्या —एको भाव बतावे) कतिविष वि० केटला प्रकारनुं

कत्ताशब्द पुं० पासा फेंकवानो अवाज कत्थ् १ आ० बडाई मारवी (२) वखाणवुं (३) निंदा करवी

कत्यन वि० बडाईसोर (२)न० बडाश कथ् १० उ० कहेवुं (२) वातचीत करवी (३) जणाववुं; दर्शाववुं (४) वर्णन करवुं; वसाणवुं (५) सबर आपवी; फरियाद करवी

कथक वि० कहेनारुं;बोलनारुं; वर्णवनारुं (२) पुं० वक्ता (३) पुराणी (४) नट अने गायक

कथन वि० कहेनारुं;वातोडियुं(२)न० कहेवुं ते; बोल (३) वर्णन

कचम् अ० केवी रीते; कई रीते; क्यांथी
(२) 'शुं', 'हें', एम आश्चर्य दर्शावे
(३) 'इव', 'नाम', 'नु', 'ना', 'स्वित्'
साथे 'एवुं ते शी रीते होय़?', 'एम ते
केम होय ?'-एवो अर्थ दर्शावे (४)
'चित्', 'चन' अने 'अपि' साथे 'जेम
तेम करीने', 'गमे तेम' - एवो अर्थ
दर्शावे (५) भाग्ये; विरल ज

कथंकारम् अ० केवी रीते; केम करीने कथा स्त्री० वार्ता; कहाणी (२)वृत्तांत (३) वर्णन; उल्लेख (४) वातचीत; संभाषण्य (५) विवाद; चर्चा कथानक न० नानी वार्ता

क्याप्रबंध पुं० वार्ता; कथा कयाप्रसंग पुं वातचीतनो प्रसंग (२) मांत्रिक; विषवैश्व क्यामात्र, क्याविशेष, क्याशेष वि० मरी गयेलुं (जेनी मात्र वात ज बाकी: रही होय तेवुं) प्रसंग क्यांतर न० बीजी कथा (२) वातचीतनो कथित ('कथ्'नुं भू०कृ०) वि० कहेलुं; वर्णवेलुं (२)न० कथन ; बातचीत क्योकृत वि० जुओ 'कथामात्र' **कर्** अ० 'कु'ने बदले समासना प्रथम पद तरीके 'दुष्टता', 'अल्पता', 'नीचता', 'अपूर्णता', 'दोष', 'स्नामी' **– ए** अर्थीमां लागे **कदक** न० छत; चंदरवो **कदन न० नाश; क**तल जुलम **फदर्थन** न**्रकदर्थना** स्त्री० पीडा;त्रास; **फर्वायत** वि० तिरस्कृत;अपमानित (२) त्रास पमाडेलुं (३) निरुपयोगी कदर्यं वि० कंजूस; कृपण (२) तुच्छ; हलकुं (३)अणगमतुं; खराब (४) पुं० केज्स माणस कदल, कदलक पुं० केळ कदिलकास्त्री० धजा(२) केळ कदली स्त्री० केळ (२) एक जातनुं हरण (३) हाथी उपरनी धजा कदंब पुं० कदंब वृक्ष (मेघगर्जनाथी तेने कळीओ बेसती मनाय छे) (२) न० फूल(३)समूह **कर्ववक पुं० कदंब वृक्ष (२)** त० केदंबनु कदा अ० क्यारे (२) 'अपि', 'चन' अने 'चित्' साथे 'कोई बार', 'एक बार' -एवो अर्थ बतावे **कराचार** पुं० खराब बर्तन **करापि** अ० कोई वार; कोईक दार कदुष्य वि० थोडुं गरम; नवशेकुं (२) कठोर (शब्द) **कब्र(—प्र) वि० पीळाश** पडता बदाभी

कपि रंगनुं (२) काबरचीतरुं (३) स्त्री० कश्यपनी पत्नी (नागोनी मा) कनक न० सोनुं **कनकदंड** न० राजछत्र कनकपट्ट न० जरीनुं वस्त्र कनकपत्र न० सोनानुं एरिंग; एरिंग कनकपर्वत पुं असमेर पर्वत **कनकमय** वि० सोनानुं बनेलुं कनकसूत्र न० सोनानो हार, कंठी कनकाचल पुं० सुमेर पर्वत कनकांगद न० सोनानुं कडुं **फनिष्ठ** वि० सौथी नानुं; सौथी ओछुं (२) उमरमां सौथी नानुं कनिष्ठिका स्त्री० टचली आंगळी कनीयस् वि० वधारे नानुं (बेमां) कन्यकास्त्री० कन्या (२) दस वर्षनी छोकरी हिलकु कन्यस् वि० नानुं (उमरमां) (२)नीच; कन्या स्त्री० छोकरी; कुंदारी छोकरी (२) दस वर्षनी छोकरी कपट पुं०, न० छळ; प्रपंच कपटप्रबंध पुं० छेतरवानी युक्ति; प्रपंच कपर्व, कपर्वक पुं० कोडी (२) जटा **कपर्विका** स्त्री० नानी कोडी कपदिन् पुं० (जटाधारी) शंकर कपाट पुं०, न० बारणुं; कमाड कपाटवक्षस् वि० (कमाड जेवी) पहोळी छातीबाळ् कपाल पुं ०, न० खोपरी ; खोपरीनु हाडकु (२) घडानुं ठींकरुं (३) एक जातनी संघि (सरखी शरतोवाळी) कपालपाणि, कपालभृत्, कपालमास्तिन्, कपालिशिरस् पुं० शंकर कपालिका स्त्री० माटीना वासणनी दुकडो – ठींकरुं कपालिन् वि० खोपरीवाळुं(२)खोपरीओ पहेरतुं (३)पुं० शंकर **कपि** पुं० वानर

कपिकेतन पुं० जुओ 'कपिध्वज' कपित्थ पुं० कोठानुं झाड (२)न० कोठुं कपिध्वज पुं• अर्जुन (धजा उपर हनुमान होवाथी) कपिरच पुं॰ रामचंद्र (२) अर्जुन कपिल वि० घेरा बदामी रंगनुं (२) पुं र सांस्यदर्शनना प्रणेता मुनि कपिश वि० रतूमडुं; बदामी रंगनुं **फपिजल** पुं० चातक (२) तेतर क्पोंद्र पुं० हनुमान (२) सुग्रीव (३) जांबुवान पण पंखी **कपोत** पुं० कबूतर(२)होलो(३)कोई कपोतवृत्ति स्त्री० आजीविकानी एक प्रकार (उपयोग जेटलूं मेळवीने संचय न करवो ते) कपोतहस्त पुं० (भिक्षा) मागवा माटे के भयथी अमुक रीते हाथ जोडवा ते क्षपोल पुं० गाल (२) हाथीनुं गंडस्थल कपोलकाष पुं० जेनी साथे गाल के गंडस्थळ घसवामां आवे ते कपोलताइन न० (भुलनी कबुलात तरीके) गाल उपर तमाच मारवी ते कपोलपालि (-ली) स्त्री० गालनी विशाळ गाल के लमणा **क्योलभित्ति** स्त्री० गाल अने सम्पा (२) कफ पुं० वात, पित्त अने कफ ए त्रण भातुओमांनी एक (२) खांसी; उघरस (३) गळफो; बळखो स्त्री० कोणी कफणि, कफोणि पु०, स्त्री०, कफोणी कबर वि० मिश्रित (२) जोडेलुं जडेलुं (३)काबरचीतरुं(४)पूं० लटः वेणी कबरी स्त्री० लट; वेणी कबंध पुं०, न० माथा वगरनुं घड (२) पुं० राहु (३) एक राक्षस कम् १० प० चाहवुं (२)अत्यंत इच्छवुं कमठ पुं० काचबो कमन वि० सुंदर (२) कामुक (३) इच्छावाळुं (४) पुं० प्रेमी; पति

कमनीय वि० सुंदर; मनोहर (२) इच्छवा योग्य; इष्ट कमल न०कमळ (२) जळ कमलज पुं० ब्रह्मा **कम**लपत्राक्ष वि० कमळदळ जेवी आंखीवाळ – इंद्र कमलभृद्वाह पुं० मेघ जेनुं वाहन छे ते कमला स्त्री० लक्ष्मी (२) सुंदर स्त्री कमलाकर पुं० कमळनो समूह (२) कमलपूर्ण सरोवर स्त्री कमलाक्षी स्त्री० कमळ जेवा नेत्रवाळी कमलापति पुं० विष्णु **कमलालया** स्त्री० लक्ष्मी कमलासन पुं० ब्रह्मा कमलिनी स्त्री० कमळनी वेल (२) कमळनो समूह (३) कमळथी भरेलु सरोवर कमली स्त्री० कमळनो समूह कमलेक्षणा स्त्री० जुओ 'कमलाक्षी' कमंडलु पुं०, न०, कमंडलू स्त्री० कमंडळ; संन्यासीनुं जळपात्र कमा स्त्री० शोभा; सौंदर्य **कन्न** वि० सुंदर; मनोहर (२) कामासक्त कर वि० करनारुं (समासने अंते ; उदा० 'सुखकर') (२) पुं० हाथ (३)हाथीनी सूंढ(४)कर;खंडणी(५)किरण(६) करो (वरसादनो) करक पुं० संन्यासीनुं जळपात्र (कमंडलु) (२) पु॰, न० करो (वरसादनो) **करकमल** न० कमळ जेवी सुंदर हाथ करका स्त्री० करो (वरसादनो) कर्राकसलय पुं०, न० कूपळ जेवा कोमळ हाथ (२) आंगळी **करकुड्मल** न० आंगळी करज पुं० नख (हाथ उपरनो) करट पुं० हाथीनुं गंडस्थल (२) कागडो करटक पुं० कागडो करदिन् पुं हाथी

करण वि० करनाहं (२) पुं० लहियो (३) न० करवुं ते (४) कार्य; कर्म; कृत्य (५) कारण; हेतु (६) कोई पण कियानुं साधन (७) इंद्रिय (८) शरीर (९) दस्तावेज; खत; लेख(१०) ताल आपवो ते (संगीत ०) (११) दिवसनो भाग (तेवा ११ करण होय छे) (१२) त्रीजी विभक्तियी दर्शावाती अर्थ (व्या०) **फरतल** पुं०, न० हथेळी करतलगत वि० हाथमां रहेलुं; हाथमांनुं **फरतलामलक** न० हाथमां रहेलुं आमळुं (तेनी जेम स्पष्ट जोई शकाय तेवुं) **करताल पुं०, करतालक न०** हाथथी ताळी पाडवी ते (२) एक वाद्य -करताळ **करतालिका, करताली** स्त्री० ताळी (२) ताल आपना माटे अपाती ताळी (संगीत०) [आपनारुं – सहायक करद वि० कर आपतुं; खंडियुं(२)हाथ **करपत्र** न० करवत आंगळी करपल्लव पुं० कोमळ हाथ (२) कोमळ करपाल पुं• तलवार (२) गदा **करपीडन न०** पाणिग्रहण करपुट पुं० अंजिल; खोबो (२)ढांकण-बाळी पेटी करभ पुं० हाथीनी सूंढ (२) हाथीनुं बच्चुं (३) ऊंटनुं बच्चुं (४) ऊंट (५) कोणीथी कांडा सुधीनो हाथनो भाग करिभन् पुं० हाथी करभोष स्त्री ० करभ (एटले के हाथीनी सूंढ के हाथनी पाछली भाग -तेना) जेवी सुंदर जांघवाळी स्त्री कररुह पु० हाथनो नल (२) तरदार **करवा**ल पुं० तरवार करबीर, करबीरक पुं० कणेर; करेण (२) तरवार (३) स्मशान करस्वन पुं० ताळी पाडवी ते

करंक पुं • हाडपिंजर(२)स्रोपरी(३) नानुं पात्र (माळियेरीना काचलानुं) (४) (पान राखवानी)पेटी; एक पात्र करंड पुं० कंडियो **करंडिका** स्त्री० नानो कंडियो करंभ वि० मिश्र गंघवाळुं (२) सेकेलुं; भूजेलुं(३)पु० दहीं मिश्रित लोट (४) [एक शिक्षा) करंभवालुका स्त्री० गरम रेती (नरकनी करंभा स्त्री० दहीं वलोववानी गोळी कराग्र न० हाथनो आगलो भाग कराघात पुं० हाथ वडे करेली प्रहार कराल वि० भयंकर;बिहामणुं(२)मोटुं; केंचु (३)तीव्र, उग्र (४)तीक्ष्ण; तीणुं (५) विशाळ (६) दांतरु कराला स्त्री० दुर्गा विहामणुं करेलुं करास्त्रित वि० भयभीत; त्रस्त (२) करिका स्त्री० नखनो वलूरो करिकुभ पुं० हाथीनुं गंडस्थळ करिणी स्त्री० हाथणी करिवंत पुं० हाथीदांत **करिन्** पुं० हाथी करीर पुरु वांसनो फणगो – अंकुर (२) रणमां थतो एक कांटाळो छोड़ करीष पुं०, न० छाणुं करींद्र पुं० श्रेष्ठ हाथी करण वि०दयाजनक; शोककारक (२) पुं० करुणा; दया करुणा स्त्री० दया; अनुकंपा **करुणामय** वि० करुणायी भरेलुं करुणार्द्घ वि० दयार्द्ध; दयाळ् कश्णाविमुख वि० निर्दय; निष्ठुर करेणु पुं० हाथी करेणु(-ण्) स्त्री० हाथणी करोट न०, करोटि स्त्री० खोपरी कर्कपुं० काचबो (२) घोळो घोडो कर्केट, कर्केटक पु० करचलो (२) वर्तुल कादवानुं साधनः; कंपास

करहाट पुं० कमळनुं मूळ के दांडो

कर्कटि (-टी) स्त्री० काकडी ; चीभडुं कर्कर वि० कठण; मजबूत (२) पुं० हाडकुं (३) मरडियो कर्करी स्त्री० नाळचाबाळुं पात्र; झारी कर्कश वि० कठोर; कठण (२) निर्दय (३) अत्यंत;तीव्र (४) मजबूत; दुढ (५)अति आसक्त(६)व्यभिचारी कर्फशा स्त्री० कंकासियण; वढकारी कर्केषु(-भू) स्त्री० बोरडीनुं झाड कर्फारुक पुं० तरबूचनो वेलो (२) न० तेनुं फळ कर्जूर न० सोनुं (२) हरताळ **कर्ण** पुं०कान (२) सुकान (३) वासणनो कानो, हाथो के कडुं (४) त्रिकोणमां काटखूणानी सामेनी बाजु कर्णगोचर वि० सांभळवामां आवे तेवुं; सांभळी शकाय तेवूं कर्णजप, कर्णजाप पुं० चुगलीखोर **कर्णताल पुं० हाथीए कान फफडाववा ते क्तर्णधार** पुं० सुकानी कर्णपथ पुं० सांभळी शकवानी मर्यादा कर्णपरंपरा स्त्री० एक कानेथी बीजे काने सांभळवामां आवयुं ते कर्णपाश पुं० सुंदर कान **कर्णपूर** पुं० काननी आसपास पहेरातुं (फूल इ०नु) घरेणु **कर्णवेष्ट** पु०, **कर्णवेष्टन** न० एक जातनुं काननुं घरेणुं; एरिंग कर्णशब्कुली स्त्री०काननो बहारनो भाग कर्णाकींण अ० एक कानेथी बीजे काने कर्णातिक वि० काननी नजीकनुं किषक वि० कानवाळुं (२) जेना हाथमां सुकान छे तेवुं (३) पुं० सुकानी कॉंपका स्त्री० काननुं धरेणुं (२) वचली आंगळी (३) हाथीनी सूढनो अग्रभाग (४) कमळनो बीजकोश कांजिकाचल पुं० सुमेरु पर्वत कणिकार पुं० एक वृक्षनुंनाम (२)

कमळकोश (३) न० कर्णिकार वृक्षनुं पुष्प (सुंदर रंगवाळुं होवा छतां गंध विनानुं होवाथी अणगमतुं गणातुं) **कर्जेजप** पु० जुओ 'कर्णजप' **कर्णोपकणिका** स्त्री० ऊडती वात कर्तन न० कापवुं ते ; छेदन (२) कांतवुं ते **कर्तनी** स्त्री० कातर कर्तरिका, कर्तरी स्त्री० कातर (२) छरी; चप्पु (३) नानी तरवार कर्तव्यावि० करवायोग्य (कार्ये) (२) कापवा योग्य (३) न० कार्य; कर्म (४) फरज **कर्त्** वि० करनारं कर्दम पुं० कादव (२) कचरो (३) पाप कपॅट पुं०, न० जूनुं के फाटेलूं वस्त्र (२) कापड कर्पण पु० एक शस्त्र कर्पर पुं० खोपरी (२) कढाई (३) माटीनुं वासण (४) भागेला घडानुं कलेडुं -- ठीबुं कर्पास पुं०,न०, कर्पासी स्त्री० कपासनी **कर्पुर** पुं० कपूर **कर्बुर** वि० काबरचीतरुं (२) राखोडियुं कर्बुरित, कर्बुर वि० कावरचीतरुं **कर्मकर** पुं० मजूर; कारीगर कर्मकार पुं० कारीगर; मजूर (२) लुहार कर्मकांड पुं०, न० धर्मकार्यो अने धर्म-कियाओने लगती वेदनी भाग कर्मक्षम वि० कार्य करवाने समर्थ **कर्मठ** वि० कार्यकुशळ (२) धार्मिक कर्मकांडमां मची रहेतुं(३)उद्योगी कर्मच्य वि० कार्यकुशळ; होशियार (२) न० उद्योग; प्रवृत्ति **कर्मन्** पुं० विश्वकर्मा (२) न० कार्यः; किया; काम (३) धंधो; प्रवृत्ति (४) धर्मकर्म (नित्य-नैमित्तिक-काम्य)(५) नसीब; पूर्वंकर्म (६) परिणाम; फळ (७) जेनी उपर किया थती होय ते (व्या०)

कर्मपाक पुंच जुओ कर्मदिपाक **कर्मफल न० कर्म**नुं फळ – परिणाम **कर्मबंध** पुं०, **कर्मबंधन** त० कर्मनुं बंधन (२)कर्मना फळरूपे मळतो पुनर्जन्म कर्मभूमि स्त्री० कर्म करवानुं क्षेत्र (२) वर्मकर्म करवानो देश (भारतवर्ष) कर्मयोग पुं ० उद्योग (२) यज्ञादि कर्मने अनुसरवा द्वारा मोक्ष मेळववानो मार्ग **कर्मविपाक पुं**० करेलां कर्मनुं फळ मळवूं ते कर्मसिव पुं० मंत्री; प्रधान कर्मसंग पुं० सांसारिक कर्मो अने तेमनां फळो प्रत्येनी आसन्ति कर्मसाक्षिन् पुं० नजरे जोनार साक्षी (२) माणसनां सारांनरसां कर्म जोनार (सूर्य, चन्द्र, यम, काल अने पंच-महाभूतो) कार्यमां सफळता **कर्मसिद्धि** स्त्री० कर्मफळनी प्राप्ति (२) **कर्मायतन** न० इद्रिय; कर्मेंद्रिय **कर्मार** पुं० सराणियो; लुहार **कर्माञय पुं०** (सारांमाठां) कर्मोनो संचय के तेनुं स्थान कर्मात पुं ० कार्यनो अंत; कर्मनी समाप्ति (२) घंधोरोजगार (३) कार्यकर; सेवक कर्मांतर न० चालु धर्मकार्य थोम्यु होय ते वचगाळो (२) अन्य कर्म **क्ष्मोतिक पुं**० मजूर; कारीगर **र्शमन्** वि॰ उद्योगी (२)फळना हेतुथी धार्मिक कार्यो करनारुं (३) पुं० [(२) कार्यकुशळ कारीगर **र्कामच्ठ** वि० कर्म करवा उपर प्रीतिवाळुं **क्वेंद्रिय** न० कर्म करवानी इंद्रिय (हाथ, पग, वाणी, गुदा अने उपस्य) **कर्वट** पुं० जिल्लानी राजधानी जेवूं के बजारनुं मोटुं शहेर **कर्वर** वि० काबरचीतरुं कर्जन वि० कृश बनावतुं;पीडा करतुं कर्षक पुं० खेड करनार; खेडुत

कर्षण न० खेडबुंते(२) खेंचबुंते(३) दुःख देवुं ते (४)एक शस्त्र (५)खेड;खेती कवित वि० खेडायेलुं (२) आकर्षायेलुं (३)पीडा करायेलुं(४)घसाई गयेलुं **कर्षिन्** वि० खेंचनारं (२) आकर्षक (३) पं० खेडूत कहि अ० क्यारे? कये वखते? कहिचित्, कहिस्वित्, कहांपि अ० कदी पण; क्यारे पण **कल् १** आ० अवाज करवो (२) गणवुं (३) १० उ० पकडवुं; लेबुं; धारण करवं (४) गणतरी करवी; मापवं (५) धारवुं; मानवुं;गणवुं; समजवुं (६) प्रेरव् (७) १० प० हाकवुं; धकेलवुं (८) नाखवुं; फेंकवुं कल वि० अस्पष्ट; मधुर (२) मिष्ट; धीमुं; हळवुं (३)झंकार करतुं; रणकतुं (४) पूर्ण क्लबल; घोंघाट कलकल पुं० कलरव; गुंजारव (२) कलकंठ वि० मधुर अवाजवाळुं कलत्र न० पत्नी; भार्या(२) नितंब **कलधौत** न० चांदी;रूपुं(२)सोन् कलन वि० करनारुं (समासने अंते) (२) न० चिह्न (३) दोष (४) ग्रहण करवुं ते (५) ज्ञान कलना स्त्री० ज्ञान (२) ग्रहण करवुं ते (३)पहेरवुं – भारण करवुं ते (४) उतारी नाखवं – काढी नाखवं ते कलभ पुं० हाथी के ऊंटनुं वच्चुं (२) त्रीस वर्षेनी वयनो हाथी **कलम** पुं**०** एक जातनी डांगर (२) लेखणी **फलरव** पुंज्यधूर घ्वनि **कर्लाबक** पुं० चकलो [महासागर कलद्वा पुं०, न० लोटो; कळश (२) कलशि(–शी) स्त्री० घडो; गोळी कलस पुं०, न० जुओ 'कलश' कल्लिस(—सी) स्त्री० जुओ 'कलशि' कलह पुं० कजियो; कंकास (२) युद्ध

कलहप्रिय वि० कलह जेने प्रिय छे तेवुं (२) पुं• नारद ऋषि

कलहेस पुं० राजहंस (२)बतक कलहांतरिता स्त्री० पति साथे कलह करी रूसणुं लई बेठेली स्त्री (पण अंतरथी पस्ताती)

कलंक पुं० चिह्न;डाध (२) बट्टो; लांछन (३) दोष; अपूर्णता

कलंकित वि० कलंकवाळुं, कलंक पामेलुं कला स्त्री० अंश; भाग (२) सोळमो भाग (चन्द्रनो) (३) समयनो विभाग (१ मिनिट, ४८ सेकंड, के ८ सेकंड) (४) मूडी उपरनुं ब्याज (५) ललित कौशल्य के शिल्प (नृत्य, गीत वगेरे)

कलाधर, कलानिधि पुं० चन्द्र कलाप पुं० जूडो; समूह (२) मोरनां पीछांनो समूह (३) कटिमेखला; कंदोरो (४) भूषण (५) जटा(६) बाणनो भाथो

कलापक पुं० जूडो; समूह (२) कंदोरो (३) एक घरेणुं (४) न० चार श्लोके भाव पूरो थतो होय तेवुं काव्य कलापिन् वि० बाणना भाथावाळुं (२) कळा करेलुं (मोर) (३) पुं० मोर

कलाय पुं॰ वटाणा

कलालाप पुं० अव्यक्त मधुर अवाज (२) मधुर प्रिय वातचीत

कलावत् वि० कळाकुशळ (२)पुं० चन्द्र किल पुं० कजियो; कलह (२) युद्ध (३) कळियुग (४) पासानी एक टपकावाळी बाजु (५) स्त्री० कळी

कलिका स्त्री० कळी (२) चंद्रनी कळा कलिकार पुं० नारदऋषि

कलित वि॰ लीधेलुं; पकडेलुं (२) भागेलुं (३) वीणेलुं; एकटुं करेलुं (४) रचेलुं;बनावेलुं (५) भेळवेलुं; मेळवेलुं (६) प्राप्त करेलुं (७) गणेलुं (८) छूटुं पाडेलुं (९) जाणेलुं कलिब्रुम पुं० बहेडानुं बृक्ष (२)देवदार कलिल वि० व्याप्त; पूर्ण (२) मिश्रित; युक्त (३) गहन; अभेदा (४) न० गोटाळो (५) ढगलो

कालद पुं० यमुना नदीनुं उत्पत्तिस्थान
— कलिद पर्वत [स्त्री० यमुना नदी
कालदक्त्या, कालदक्त्या, कालदमुता
कलुष वि० कादववाळुं; मेलुं; गंदुं (२)
कथायेलुं; झंखवायेलुं (३) क्षुद्ध (४)
दुष्ट; घातकी (५) विपरीत (६)
न० पाप (७) मेल; गंदकी; कादव
कलुषित वि० मेलुं (२) कचवायेलुं;
रिसायेलुं (३) दुष्ट; घातकी

कलेवर पुं०, न० शरीर; देह
कल्क वि० दुष्ट; पापी (२) पुं०,
न० तेल वगेरेनो कचरो (३)कचरो;
मेल (४) दंभ; छेतरपिंडी (५)
वाटीने बनावेलो लोंदो; लूगदी (६)
पाप (७) घूंटीने करेलुं बारीक चूंणं
कल्कि, कल्किन् पुं० विष्णुनो दशमो –

छेल्लो अवतार
कल्प वि० शक्य; व्यवहारु (२) योग्य;
साचुं (३) दृढ; शक्तिभान (४)
पुं० शास्त्रनियम (५) सूचना; दरलास्त (६) अभिप्राय (७) धर्मकर्मनो
विधि (८) विहित विकल्प (९)
आचार (१०) एक वेदांग जेमां यज्ञ-

आचार (१०) एक वेदांग जेमां यज्ञ-किया इ० नो उपदेश छे (११) महा-प्रलय (१२) ब्रह्मानो दिवस (१००० युगनो) (१३) 'जेवुं', 'सदृश', 'थोडुंक ज ओछुं' --एवा अर्थमां नाम के विशेषणने

अंते (उदा० 'प्रभातकल्पा')
फल्पक वि० विश्व-नियम प्रमाणेनुं
कल्पक्षय पुं० सृष्टिनो अंत – प्रलयकाळ
कल्पतर, कल्पद्रुम पुं० इच्छेलुं बधुं
आपतुं मनातुं स्वर्गनुं वृक्ष

कस्पन न० रचना (२) विधान (३) करवुं -- आचरवुं ते (४) कातरवुं ते

कल्पना स्त्री० निश्चित करवुंते(२) आचरवुं-अनुष्ठान करवुं ते(३) रचना; गोठवण (४) शणगारवुं ते (५) धारणा; रूयाल (६) कोई पण बाबतनी मनमां थती प्रथम रचना कल्पपादप पुं० जुओ 'कल्पतरु' कल्पलता, कल्पवल्ली स्त्री० कल्पवृक्षनी जेम इच्छेलुं आपती मनाती लता कल्पविष् वि० शास्त्रविधि जाणनारु कल्पवृक्ष पुं जुओ 'कल्पतर ' कल्पादि पु० सुष्टिनो आरंभकाळ कल्पांत पुं• कल्पनी अंत – जगतनी प्रलयकाळ कल्पिक वि० योग्य; उचित कर्ल्पित वि० गोठवेलुं; रचेलुं (२) नक्की करेलुं (३) तैयार करेलुं;सज्ज करेलुं (४) अटकळ करेलुं; कल्पेलुं **कल्मच** वि० पापी; दुष्ट (२) मेलुं; गंदुं (३)पुं०, न० डाघो ; मेल (४)पाप कल्माच वि० रंगबेरंगी (२) घोळा अने काळा रंगन् कल्माची स्त्री० यमुना नदी **कल्य वि० नीरोगी**; तंदुरस्त(२)सज्ज; तैयार (३) दक्ष; कुशळ (४) शुभ; अनुकूळ (५) न० परोढ (६) आवती काल (७) पुं० उपाय (८) (अस्त्र) फंकवुं ते तुच्छ वस्तु **कस्यवर्त पुं**० सवारनो नास्तो(२) न० **कत्याण** वि० सुखी; सुभागी (२) मंगळ; शुभ (३) सुन्दर(४) उत्कृष्ट; श्रेष्ठ (५) प्रमाणभूत; साचुं (६) न० सुख; सौभाग्य (७) सत्कर्म; पुण्य **कल्याणकृत्** वि० कल्याण आचरनार् (२) शुभ (३) पुण्यशाळी **फल्लि अ**०काले कल्लोल पुं० मोटुं मोजुं (२) आनंद **कह्लोलिनी** स्त्री० नदी कल्हार न० घोळुं कमळ

कव् १ आ० प्रशंसाकरवी (२) काट्य रचवुं; वर्णन करवुं (३) चीतरवुं कवच पुं०, न० बस्तर (२) तावीज (३) मूठ-चोटमांथी रक्षण करतो मनातो मंत्रोच्यार (हुम्-हूम) **कवर** वि० जुओ 'कबर' कवरी स्त्री० जुओ 'कबरी' कवल पु०, न० कोळियो **कविलत** वि० कोळियो करायेलुं **कवाट** पुं०, न० जुओ 'कपाट' कवि वि० सर्वेजः; क्रांतदर्शी (२) पुं० ज्ञानी; विद्वान (३) कविता रचमार (४) शुक्राचार्य कविका स्त्री० (घोडाना) मोढामा रहेती लगामनो भाग कविता स्त्री० काव्य; पदबंघ **कवोष्ण** वि० कोकरवायुं; नवसेकं कव्य न० पितृओने अपातो बलि कथ्यवाह (-ह) पुं० अग्नि कद्म पुं० (मुख्यत्वे ब० व०मां) चाबुक कक्षा स्त्री० चाबुक कशिक पुं०नोळियो कदमल वि० मेलुं; गंदुं (२) अकीर्तिकर (३) न० खेद; निराशा (४) पाप कक्मीरज पुं० केशर **कष् १** उ० खणवुं; घसवुं (२) परीक्षा करवी (कसोटीना पश्थर उपर) (३) ईजा करवी; नाश करवो कष पुं० खणवं - घसवुं ते (२) कसोटी-नो पष्थर **कषण** न० घसवुं ते; खणवुं ते (२) कसोटी करवी ते (सोनानी) **कषा स्**त्री० जुओ 'कशा' कवाय वि० तूरुं;कडूचुं (२) सुवासित (३) गेरुवा रंगनुं; रंगेलुं (४) मधुर अवाजवाळुं (५) पुं०, न०कटाणी – कडूचो स्वाद (६) गेरुवो – भगवो रंग (७)काट; मेल (८) कावो; उकाळो

(९)आसक्ति; वासना (१०) विलेपन (११)जडता ; मूर्खता (१२)पुं०राग **कषायित** वि० रंगवाळुं; लाल रंगनुं कष्ट वि० दुःखमय; दुःखकर (२) कठण; गहन (३) दुर्जय (४) न० दुःख; संताप (५) महेनत; श्रम कष्टम अ० अरेरे! अफसोस! कष्टसंश्रय वि० कष्टयुक्त कडिट स्त्री० दुःख ; पीडा (२) कसोटी कस्तुरिका, कस्तूरिका, कस्तूरी स्त्री० अमुक जातनां हरणनी डूंटीमांथी मळतो सुगंधी पदार्थ कह्लार न० घोळुंकमळ कंक पु० जेनां पीछां शरपुंख तरीके वपराय छे ते बगला जेवुं पक्षी कंकट, कंकटक पुं०बरूतर (२) अंकुका [कंकणदोरो (हाथीनो) **कंकण** पुं० हाथे पहेरवानु कडु (२) कंकणधर पुं० वरराजा वाळुं घरेणुं कंकणी स्त्री० नानी घूघरी (२) घूघरी-कंकत पुं०,न०, कंकतिका, कंकती स्त्री० [पक्षीनां पींछांवाळुं बाण कांसको कंकपत्र, कंकपत्रिन्, कंकवासस् पुं ० कंक कंकाल पुं०, न० हाडपिजर कंकालशेष वि० हार्डीपजर ज मात्र रह्युं होय तेवुं **कंचुक** पुं० सापनी कांचळी (२)कमखो ; चोळी (३) कवच; बस्तर (४) शरीरने बराबर बंधबेसती जम्भो **कंचुकित** वि० बस्तर पहेरेलुं **कंबुकिन्** वि० **बस्**तरवाळुं (२) **पुं**० अंत:पुरनो द्वारपाळ (३) साप **कंचुकीय** पुं० कंचुकी (नाटघ०) कंचुलिका, कंचुली स्त्री० चोळी;कांचळी क्षंज्र पुं० केश (२) जहाा (३) न० कमळ कंजर, कंजार पुं० हाथी (२) सूर्य (३) ब्रह्मा (४) पेट (५) मोर **कंटक** पुं०, न० कांटो (२) भोंक;

घोच (३) कोई पण वस्तुनी अणी (४) विष्न; नडतर (५) रोमांच (६) नख (७) कटु दचन (८) माछलीनो कांटो **कंटकित** वि० कांटावाळुं(२)रोमांचित **कंटकिन्** वि० कांटावाळुं (२) पीडा करनारुं के देनारुं कंठ पुं०, न० गळुं (२) डोक (३) वासणनो कांठो (४) अवाज (५) सामीप्य; निकटपणुं **कंठगत** वि० कंठे आ**वे**लुं (प्राण) (२) कंठ सुधी गयेलुं – जतुं कंठाभरण न० गळानुं आभूषण (हार इ०) कंठाइलेख पुं० गळे आलिगन **कंठी** स्त्री० डोकमां पहेरवानुं सेरवाळुं [(३) कबूतर एक घरेणुं कंठीरव पुं० सिंह (२) मद झरतो हाथी **कंठच** वि० गळानुं; कंठनुं कंडन न० (फोतरां काढवा) खांडवुं ते कंडनी स्त्री० खाडणियो (२) साँबेलु कंडिका स्त्री० नानो विभाग (२) फकरो कंडिल वि० मदमत्त (२) धृष्ट कंडु पुं०, स्त्री०, कंडू, कंडूति स्त्री० वलूर; खंजवाळ कंड्रयन न० वलूरवुं ते; खंजवाळवुं ते कंड्रल वि० खंजवाळ ऊपडी होय तेवुं (२)ख्जली करे तेवुं कंतु पुं० कामदेव (२) हृदय कंशा स्त्री० चींथरां सीवीने बनावेलुं वस्त्र (तपस्वीओ पहेरे छे ते) कंयाचारिन् पुं० कथा पहेरनार तपस्वी कंद पुं०, न० जेमां खावानो गर होय तेवुं मुळ -- गांठ कंदर पुं०, न० गुफा; खीण **कंदरा(-रो)** स्त्री० गुफा कंदर्प पुं० कामदेव; मदन (२) प्रेम **कंदल** पुं०, न० नवो अंकुर (२) गाल **कंदली** स्त्री० केळ

कंदु पुं॰, स्त्री॰ भठ्ठी (२) दाणा भूजवानुं पात्र **कंदुक** पुं० दडो (२) ओशिकुं **कंदोट** पुं० नीलुं कमळ **कंधर** पुं० गरदन; गळुं; डोक (२) **कंथरा** स्त्री० गळुं; गरदन; डोक **कंप् १** आ ० कंपबुं; ध्राजबुं कंप पुं० कंपारो; ध्रुजारो र्कंपन वि० ध्रूजतुं; कंपतुं (२) पुं० शिशिर ऋतु(३)एक अस्त्र(४)न० ध्र्जवुं ते कंपित ('कंप्'नुं भू० क्र०) वि० ध्रुजतुं (२) कंपाबेलुं; हलावेलुं (३) न० कपवुत **कंप्र** वि० कंपतुं; हालतुं कंबर वि० रंगबेरंगी; चित्रविचित्र **कब**ल पुं० कामळो कंबु वि० रंगबेरंगी; चित्रविचित्र रंगनुं (२)पु०,न० शंख (३) कंकण **कंदुकंठी** स्त्री० गळे शंखना जेवी त्रण रेखावाळी स्त्री (भाग्यशाळी गणाय) **कंबुपीवा** स्त्री० शंखना आकारनी डोक (२) जुओ 'कंबुकंठी' कंबू वि॰ चोरी करनारुं; लुच्चुं(२) पुं०चोर (३) कड्डं; कंकण हंबोज पुं० शंख (२) एक जातनो हाथी कंस पुं०, न० कोसूं (२) प्यालो **क्संक** न० कांसूं **कंसद्विष्, कंसहन्, कंसारि** पुं० कंसने मारनार (श्रीकृष्ण) 👣 स्त्री० पृथ्वी काक पुं० कागडो (२) निद्य – हलको माणस (३) पाणीमां मात्र माथुं बोळीने नाहवुं ते **काकणी** स्त्री० जुओ 'काकिणी' **काकतालीय** वि० आकस्मिक; अणधार्युं ('काग बेसे ने ताड पड़े' – तेना जेवुं) काकनिद्रा स्त्री० कागडा जेवी - जलदी जागी जवाय तेवी – निद्रा

काकपक्ष पुं० जूलफुं; कानशेरियुं काकपद न० (लखता रही गयेल) शब्द वगेरे उमेरवानुं चिह्न(∧) काकपुष्ट पुं० कोयल **काकपेय** वि० छीछर्र काकरक, काकरूक वि० कायर; बीकण (२) पुं० स्त्रीवश पुरुष काकलि (--सी)स्त्री० कोमळ अने मधुर अवाज (२) मंद अवाजवाळुं एक वास (चोरो अंघता-जागतानी परीक्षा माटे वापरता कहेवाय छे) काकवंध्या स्त्री० जेने एक जवार प्रसव थाय तेवी स्त्री काकारि पुं० घुवड काकिणि, काकिणिका, काकिनी स्त्री० कोडी (२) कोडी जेटली किंमतनो सिक्को काकी स्त्री० कागडी काकुस्त्री० क्रोध, शोक के भयमां बोलतां स्वरमां थतो फेरफार (२) करडाकी के व्यंगमां बोलवुं ते **काकुत्स्य** पुं० ककुत्स्थनो वंशज; सूर्य-वंशी राजाओने लगाडातुं उपनाम **काकोदर** पुं० साप **कांको**ल पुं० कागडो **काच** पुं० काच काठिन, काठिन्य न० कठण होबापणुं (२) कठोरता (३) अधरापणुं काण वि० एक आंखवाळुं (२) काणा-वाळुं; फूटेलुं काणेलीमात् पुं० कुंवारी मानी दीकरो कातर वि० बीकण (२) व्याकुळ; क्षुब्ध (३) उत्सुक (४) भयथी चंचळ बनेलुं (आंख इ०) कातर्यं न० भीरुता; बीकणपणुं **कात्कृतः वि**० तिरस्कृत करवंब पुं० कलहंस (२) बाण (३) न० कदंब वृक्षानुं फूल

कारंबर न० कदंबना पुष्पनी दारू कार्वबरीस्त्री० कदंबना पुष्पनोदारू (२) मद्य; दारू कार्देखिनी स्त्री० मेघपंवित **कानन** न० अरण्य; जंगल **कानीन** पुं० कुंबारी कन्याने थयेलो पुत्र कापथ पुं० खराब मार्ग(२)कुमार्ग(ला०) **कापाल, कापालिक** वि० कपाळनुं (२) पुं० खोपरीनी माळा पहेरनार तथा पात्र तरीके वापरनार एक भिक्षु कापुरुष पुं० बीकण — बायलो पुरुष (२) अधम – तुच्छ पुरुष **कापेय** वि० वानरनुं(२)न० वानरवेडा कार्बध्य न० कबंघ - घड मात्र रहेवं ते काम पुं० इच्छा ; वासना (२)प्रेम ; स्नेह (३) कामनानो विषय (४) विषय-मुखनी इच्छा – लालसा (५) चार पुरुषार्थमांनी श्रीजो (६) कामदेव कामकाम, कामकामिन् वि० विषयेच्छ् **कासकार** वि० इच्छानुसार वर्तनारुं; स्वेच्छानुसारी (२)पुं०ऐच्छिक कार्य; स्वेच्छाथी करेलुं कार्य (३) फळनी इच्छाणी प्रेराईने कर्म करवुं ते कामग वि० स्वेच्छाचारी कामगति वि० इच्छेले स्थळे जई शके तेवुं; इच्छा मुजब गति करनारुं कामचर, कामचार वि० इच्छा मुजब फरनारुं; बाधा विना जई शकनारुं कामचार वि० अनियंत्रित (२) पुं० पोतानी मरजी मुजब वर्तवु ते;स्वेच्छा-चार (३) विषयीपणुं (४) स्वार्थीपणुं कामठ वि० काचबानुं **कामतस्** अ० स्वैरपणे (२) जाणी जोईने; स्वेच्छाथी (३) कामवासनापूर्वक कामद वि० इच्छेलुं आपनारुं कामरा, कामदुह्, कामदुहा स्त्री० कामधनु कामदेव पुं० कामवासनानो देव; मदन

कामघेनु स्त्री० मनकामना पूरी करनारी मनाती अन्हों किक गाय कामना स्त्री •वासना; इच्छा; अभिलाषा कामनीय, कामनीयक न० रमणीयता **कामभोग पुं०** कामवासना तृष्त करवी ते **कामम्** अ०इच्छा प्रमाणे (२) तृप्ति थाय त्यां सुधी (३) खुशीयी (४) भले !हशे ! (५) धारो के;मानो के (६) निःसंशय; खरेखर (अनिच्छा के विरोधमां) कामम् – न अ० 'आ सारुं . . . पण ए सार नहीं' - एवी अर्थ बतावे काममूद, काममोहित वि० कामवासना-ने वश बनेलुं;कामवासनाथी मूढ बनेलुं कामयमान, कामयान, कामयित् वि० कामी; कामासक्त कामरूप वि० इच्छानुसार रूप धारण करनारुं(२)सुंदर;खूबसुरत कामवत् वि० कामी; प्रेमी (२) विषया-**कामवृत्त** वि० विषयी; विषयासक्त (२) स्वेच्छाचारी (स्त्री० स्वेच्छाचार कामवृत्ति वि० स्वेच्छानुसार वर्ततुं (२) कामसल पुं० वसंतऋतु (२) चैत्रमास कामसंखी स्त्री० चांदनी **कामसूबि**० इच्छापूर्णकरनासं कामसूत्र न०प्रेमप्रसंग; प्रेमप्रकरण (२) काम-पुरुषार्थं विषयक एक ग्रंथ **कामहैतुक** वि० विषयभोगना हेतुवाळुं कामातुर वि० कामवासनायी पीडित कामात्मन् वि० कामातुर कामारि पुं० (कामदेवने बाळनार)शिव कामार्त वि० कामवासनाथी पीडित कामांध वि० कामवासनाथी मृढ बनेलुं कामिक वि०इच्छेलुं (२) इच्छातुप्त करे तेवं कामित वि० इच्छेलुं (२) न० इच्छा कामिन् वि० विषयी; विषयासक्त (२) इच्छावाळुं; इच्छतुं (३) पुं० कामी पुरुष; प्रमी

कामिनी स्त्री० प्रेमी स्त्री (२) सुंदर स्त्री (३) कोई पण स्त्री कामुक वि०इच्छुक (२) विषयी; कामी (३) पुं•यार (४) कामी पुरुष कामेप्सु वि० भोगनी इच्छावाळूं काम्य वि०इच्छवायोग्य(२)ऐच्छिकः बास हेतुथी करेलुं ('नित्य'थी ऊलटुं) (३) सुंदर; रमणीय काम्या स्त्री० इच्छा; कामना; धारणा काय पुंज, नव शरीर (२) वृक्षनुं थड िकरीने आवेलुं (३) समूह कायवत् वि० अवताररूपे – देह धारण कायस्य पुं० ए नामनी ज्ञातिनी माणस (क्षत्रिय पुरुष अने शूद्र स्त्रीथी जन्मेल) **कायिक** वि० शरीरने लगतुं; शरीरनुं **कायिका** स्त्री० व्याज कायिका वृद्धि स्त्री० गीरो मूकेल ढोर के मुद्दलना उपयोगधी व्याजरूपे मळतुं जें कंई ते **कायिन्** वि० मोटा शरीरवाळुं कार वि० करनारुं; रचनारुं (समासने 🕏 डें) (२) पुं० वर्णने अंते ति वर्णके तेनो उच्चार एवा अर्थमा (उदा० 'अकार') (३) रवानुकारी शब्दने अंते 'तै रव' एवा अर्थमां (४) कार्यः; कर्म (५) बल; यत्न **कारक** वि० करनारुं; करावनारुं (समासने छेडे) (२) न० वाक्यमां नाम अने क्रियापद वच्चेना अथवा नामनी साथे विभक्तिनो संबंध धरावता शब्दो वच्चेनो संबंध (छठ्ठी सिवायनी वधी विभिन्ति) **कारण** न० कार्यनी **उ**त्पत्ति के प्रवृत्तिनुं मूळ - बीज (२) हेतु; उद्देश (३) साधन (४) उत्पन्न करनार; जनक (५) मूळ तत्त्व (६) इंद्रिय (७) शरीर (८) पूर्व वासना **कारणकारण न०** आदि कारण; मूळ कारण (२) परमाणु

कारणकारितम् अ० —ने कारणे कारणभृत वि० कारणरूप – साधनरूप बनेलु **कारणकारीर** न० स्थूल-सूक्ष्म दारीरना मूळ कारणरूप देह (वेदांत०) कारणा स्त्री० तीत्र वेदना (२) प्रेरणा कारणांतर न० विशेष कारण (२) निमित्त कारण कारंड, कारंडव पुं० एक जातनी बतक कारा स्त्री० केद (२) केदखानुं कारागार, कारागृह, कारावेश्मन् न० केदखान् [क्रिया;कार्यं कारि पुं० कारीगर; शिल्पी (२)स्त्री० कारिका स्त्री० व्याकरण, दर्शनशास्त्र इ० ना सिद्धांतीनुं श्लोकबद्ध विधरण **कारित** वि० करावेलू **कारिन्** वि० करनारुं; बनावनारुं (समासने छेडे) (२)पुं० कारीगर **कारु** वि० शिल्पी; कारीयर **कारुणिक** वि० दयाळ **कारुण्य न०** करुणा; दया कार्कश्य न० कर्कशता; कठोरता (२) निर्दयता; ऋरता **कार्तस्वर न**० सोन् कातौतिक पुं० ज्योतिषी **कार्तिक** पुं० कारतक मास कार्तिकी वि० कारतक मासनुं **कार्तिकेय** पु० शंकरना पुत्र – स्कंद कात्स्न्यं न० सघळापणुं; सकळपणुं **कादेम** वि० कादववाळ कार्पटिक पुं० यात्राळु (२) संघ कार्पण्य न० गरीबाई; दीनता (२) दया; अनुकंपा (३) कृपणता कार्पास वि० कपासन् बनावेलुं; सुतराउ (२)पुं०, न० कपासनुं बनावेलुं बस्त्र कार्मण वि० कर्मकुशळ (२) न० जादु-विद्या; मंत्र-औषधादिथी वशीकरण वगेरे करवुं ते

कार्मुक न० धनुष्य **कार्य** वि० करवा योग्य (२) न० करवानुं होय ते; कामकाज (३) कर्तव्य; फरज (४) घंघो; प्रवृत्ति; साहस; जरूरी काम (५) धर्मकार्य (६)जरूर; गरज (७)प्रयोजन; हेतु (८)फरियाद (९) अनिवार्ये परिणाम **कार्यकर्तु** पुं० -ना हितमां काम करनारुं कार्यकारण न० कार्यनो खास हेतु – प्रयोजन (२) (द्वि०व०) कार्यअने कारण; हेतु अने प्रयोजन **कार्यकाल** पुं० कोई कार्य माटेनो उचित काळ; तक कार्यगौरव न० कोई पण कार्यनी के प्रसंगनी अगत्य - महत्ता कार्येचितक वि० विचारशील; डाहर्यु कार्यपरवी स्त्री० कार्यसरणी; कार्य करवानी रीत के कम कार्यवज्ञात् अ० हेत्सर; प्रयोजनधी कार्यवस्तु न० अभिप्राय; उद्देश कार्यविपत्ति स्त्री०, कार्यव्यसन न० असफळता; निष्फळता कार्यहेत पुं कार्यमां विष्न करनार; काम बगाडनार कार्याकार्यन० करवा योग्य अने न करवा योग्य – सारुं अने नरसूं काम कार्यार्थ न० कार्यनुं निमित्त; कार्यनो हेतु कार्यायिन् वि० काम पार पाडवानी इच्छा राखनारुं (२) फरियाद करनारुं काइयं न० कृशता ; दुर्वळता (२)ओछा-पणुं (३)अल्पपणुं (उदा० 'अर्थकार्थ') **कार्षापण** पुं० एक सिक्को (२) एक वजन कार्ष्ण वि० कृष्णनुं; विष्णु संबंधी (२) कृष्ण-द्वेपायन व्यासन् कारणीयस वि० लोखंडनुं बनावेलुं(२) न० लोखंड कार्षिण पुं० कामदेव (कृष्णना पुत्र प्रद्युम्न तरीके) (२) शुकदेव

काल वि० काळुं (२)पुं० काळो रंग (३) समय (४) योग्य समय (५) समय-विभाग (६) संहारकर्ता देव – हद्र; शंकर (७) मृत्यु(८)मृत्युसमय(९) यम (१०) ईश्वर (११) दैव;नसीब (१२) आबोहवा; मोसम **कालकर्मन्** न० मृत्यु (२) विनाश कालकंठ वि० काळी डोकवाळुं (२) पुं० मोर (३) शॅकर **कालकृट** न० एक जातनुं तीन्न विष (२) समुद्रमंथनमांथी नीक**ळे**लुं विष कालकम पुं० समयनुं व्यतीत थवुं ते (२) समय व्यतीत थवानो ऋम **कालचक्र** न० काळनुं सतत फरतुं रहेतुं चक (२) जिंदगीना बाराफेरा कालज्ञ वि० योग्य समयने जाणनारुं (२)पुं० दैवज्ञ; जोषी **कालदंड** पुं० यमराजनो दंड; मृत्यु ; मरण कालधर्म, कालधर्मन् पुं० समयने योग्य एवं कर्तव्य (२) काळनो नियम (३) अमुक समये अमुक परिणामो नीपजवां ते(४) मोत;यम **कालधौत** न० सोनुं के रूपुं कालनियोग पु०नियतिनो लेख -- निर्णय **कालपर्यय** पुं० कालकम (२) कालाति-कम; समयनुं बीती जबुं ते (३) कालनी विपरीतता कालपाशिक पुं० फांसी देनारो कालयाप पुं०, कालयापन न० कालक्षेप: ढील -- विलंब करवां ते कालयोग प्० नसीब कालरात्र (-त्री) स्त्री० घोर अंधारी रात (२) सृष्टिना प्रलयनी रात (दुर्गानुं स्वरूप) (३) दिवाळोनी रात कालविप्रकर्ष पु० बहु लांबी काळ जवी ते कालसमन्वित, कालसमायुक्त वि० मृत कालहरण न०, कालहानि स्त्री० विलंब कालागर न० काळ चंदन

कालाजिन न० काळा हरणनु चामडु कालातिकम पुं०, कालातिकमण न०, कालातिपात, कालातिरेक पुं० मोडुं करवुं ते; विलंब कालातीत वि॰ जेनो समय वीती गयो होय तेवुं; जूनुं थई गयेलूं कालात्यय पुं ० विलंब;वेळा वीती जवी ते कालायस वि० लोखंडनुं बनेलुं (२) न० लोखंड सिमज कालावबोध पुं० समय अने संजोगनी कालांतक पुं० यम कालांतर न० वचगाळो; समयनो गाळो (२) बीजो समय कालिका स्त्री० दुर्गा(२)काळुं वादळ; काळां वादळोनो समुदाय **कालिमन्** पुं० काळाश कालिंदी स्त्री० यमुना नदी **काली** स्त्री० दुर्गा **कालुष्य** न० मिलनताः; गंदापण् कालेय, कालेयक न० एक सुगंधी लाकडु कालागर **काल्पनिक** वि० मात्र कल्पनामां रहेलुं; कल्पित (२) कृत्रिम काल्य वि० कालोचित (२) शुभ; अनुकूळ (३) न० परोढ; परोढियं काव्य न० रसात्मक वाक्य के पदबंध (२) पद्य ; कविता (३) पुं० असुरोना गुरु शुकाचार्य **काश् १** आ० प्रकाशवुं; चळकवुं(२) देखावु (३) -ना जेवु देखावु **काश** पुं० एक जातनुं घास (सादडी वगेरेमां वपरातुं) (२)न० तेनुं फूल काशिन् वि० (समासने अंते)-नी समान देखातुं – शोभतुं – चळकतुं काश्मीर, काश्मीरज न० केसर **काश्यपी** स्त्री० पृष्टवी **काष** पुं० धसवुं ते (२) जेनी साथे कशुंघसवामां आवे ते

काषाय वि० लाल; भगवुं (२) त० रातुं के भगवुं वस्त्र **काष्ठ** न० लाकडुं (२)सोटी (३)बळतण **काष्ठकुट,काष्ठकूट** पुं० लक्कडखोद पक्षी **काष्ठप्रदान** न० चिता तैयार करवी ते काष्ठा स्त्री० दिशा (२) मर्यादा; हद (३)पराकाष्ठा; अंतिम हद **काष्ट्रिक** पुं० कठियारो कास् १ आ० प्रकाशवुं (२) उधरस खावी कास पुं० उधरस; खांसी कासार पुं० तळाव; सरोवर काहल न० अव्यक्त अवाज (२) एक बाद्य **काहलम्** अ० अत्यंत कांक् १ आ० आकांक्षा -- इच्छा राखवी कांक्षा स्त्री० आकांक्षा; इच्छा कांक्षित ('कांक्ष्'नं भू० कृ०) वि० इच्छित (२)न० इच्छा ; आकांक्षा कांक्षिता स्त्री० इच्छा; आकांक्षा कांक्षिन् वि० आकांक्षा राखतुं **कांचन** वि० सोनानुं; सोनानुं बनावेलुं (२)न० सोनुं(३)धन; समृद्धि कांचि स्त्री०, कांचिकलाप पु०, कांची स्त्री०, **कांचीकलाप** पुं० स्त्रीनी कंदोरों; घूघरीवाळो कंदोरो कांड पु॰,न० भाग; विभाग; प्रकरण (२) बे पिराई बच्चेनो भाग; पेरी (३)डाळी (४) तीर (५) ढगलो; जथो (६) अवसरे; समय; प्रसंग कांडपट पुं० तंबूनी आसपासनी कनात कांडपात पुं० बाणनुं ऊडवुं -- पडवुं ते (२)बाण जई शके तेटलुं अंतर कांडपृष्ठ पुं० सैनिक; शस्त्रीपजीवी (२)पोताना कुळ के वर्णने वफादार न रहेनारो (गळ) **कांडीर** पुं० धनुर्घारी ('कांडपृष्ठ'नी पेठे गाळ रूपे पण वपराय छे) **कांत** पुं०इच्छित; प्रिय (२) सुंदर; मनोहर (३) मुखद; अनुकूल (४) पुं॰ प्रीतम (५) वर; पति

कांता स्त्री • प्रिया (२) सुदर स्त्री कांतार पुं०,न० अरण्य; मोटुं -- निर्जन वन (२) दुर्गम रस्तो – खाडो ६० कांति स्त्री व शोभा; सौंदर्य; मनोहरता (२) तेज;नूर;दीप्ति कांतिभृत् पुं० चंद्र कांतिमत् वि० सुंदर;मनोहर(२)भव्य कांदविक पुं कंदोई कांदिशीक वि० नासभाग करवा मांडेलुं; कांसु (३) घंट भयभीत कांस्य वि० कांसानुं बनेलुं (२) न० कांस्यकार पुं० कंसारो कांस्यताल पुं० झांझ; कांसीजोडां **कांस्यदोहन** वि० कांसानुं पात्र भरीने दूध आपे तेवुं किट्ट, किट्टक न० काट (२) शरीरमांथी झरतो के नीकळतो मेल, मलमूत्र इ० (३)तेलमां ठरतो कचरो (४)कीटुं किण पुं० घसारो पडीने (हाथ वगेरेमां) जामती गांठ; घानुं चाठुं कितव पुं० शठ; लुच्चो; कपटी किम् स० ना०, वि० कोण ? कयो ?श्? (२) न० 'शो उपयोग'? 'शुं प्रयोजन'? (ते ते नामनी तृतीया साथे; उदा० धनेन किम्) किम् अ० 'कु' ने बदले, 'खराब','हलकुं', 'नीचुं' –ए अर्थमां (उदा० 'किपुरुष') किमपि (किम्+अपि) अ० कंईक अंशे; कंईक (२) (जथो -- गुण -- स्वभाव अंगे) निश्चितरूपे न कही शकाय तेम (३) घणुंय; केटलुंय **किमर्थम्** (किम्+अर्थम्)अ० शामाटे? किमंग अ० 'तो पछी . . . नी तो बात ज शी करवी ?' - एवो अर्थ वतावे किमिति (किम्+इति) अ०शा माटे? [शके '? शा हेतुथी ? किमिव (किम्+इव) अ० 'शुंहोई किम, किमृत अ० शुंआ के ते? (२)

शा माटे; वळी (३) केटलू वधारे; केटलुं ओछूं कियत् अ० केटलुं? केटलुं मोटुं ? केटले दूर ? (२) शी विसात ? (३)केटलुंक **किरण** पुं० तेजनी रेखा; रश्मि किरात पुं॰ पहाड़ी – जंगली लोकोनी एक जात(२) वेपारी; वाणियो किरीट पुं०, न० मुगट (२) पुं० वेपारी किरीटिन् वि० मुगटवाळुं किल अ० खरेखर; नक्की (२) कहे छे के⁷,'सांभळवामां आव्युं छे के⁷ –एवो अर्थ बतावे (३) कृत्रिमता, ढोंग, आशा, अणगमो, तिरस्कार, हेतु, कारण —एवो अर्थ दशवि किलक्लिल पुं०, किलकिला स्त्री० हर्ष के आनंदनो ध्वनि किल्विष न० पाप (२) अपराघ; दोष (३)विपत्ति ; दुःख (४)कपट (५)देर किशोर पुं० नानो छोकरो(पंदरथी ओछी वयनो)(२) सूर्य (३) तरुण (४) वछेरो किशोरी स्त्री० नानी छोकरी; कन्या **किसलय** पुं०, न० क्रुपळ; पल्लव **किंकणी** स्त्री० घंटडी (२) घूघरी **किकथिका** स्त्री० आनाकानी; संशय **किंकर पुं**० सेवकः; नोकर **किंकर्तव्यता** स्त्री० सुझवण ; 'शुं करवुं' -एवो प्रश्न थाय तेवी परिस्थिति किकिणिका, किकिणी, किकिणीका स्त्री० जुओ 'किकणी' किकिरात पुं० एक जातनो पोपट (२) कोयल (३) मदन (४) अशोकवृक्ष (५) कदी न करमातुं मनातुं एक फूल (लाल के पीळुं) | विनान् **किक्षण** वि० आळसु; समयनी किंमत किंच अ० अने; वळी **किंचन** अ० कांईक अंशे; कंईक (२) कोई पण रीते नहि; जरा पण नहि **किचित्** अ० कईक; थोडुक

किंज वि० गमे त्यां जन्मेलुं (खानदान [बगेरेनो केसरतंतु नहि तेव्ं) र्मिज न०, **किजल, किजल्क** पुं० कमळ किं**तु अ०** पण; परंतु **ॅंकदास** पुं० खराब नोकर **(कनर** पुं० तुच्छ – कदरूपी माणस (२) माणसन् शरीर अने अश्वन् मुख - ए अकारतो कुबेरनो गण; एक देवजाति किंपु अ० आ के ते ? (२) केटलुं वधारे ? केटलं ओछुं ? (३) शूं बळी ? (४) परंतु; छता र्कि**नुखलु**अ० शःथीते? सुंकारण होई शके ? (२) एम हर्शे खरुं? कियाक पुं० झेरकचोलुं **कि पुसर्** अ० केटलु वधारे ? केटलुं किंपुरुष पुं० अयम – हलको माणस (२) माणसनं माथुं अने बोडान् शरीर -ए आकारनो एक देव किंप्रभृ पुं० खराव यालिक के राजा केंद्रत् वि० तुच्छ किंदर्दति (-सी) स्थी० लोकवायका कियराटक पुंच उडाउ मरणस (कोडीनी ते शी विसास ?' -एम माननार) **किं वा** अ० शुं? (२) के पछी **किंशुक** पुं० पळाश वृक्ष; खाखरो(२) न० दाखरानुं ५्ळ; केसूडानुं फूल किंसिल पुं० खराब मित्र (प्रथमा एकवचन 'किसखा') कि स्थित् अ० शुंबळी; वयांक **कीचक** पुंज पोलो वांस कीट पुं० कीडो (२) 'क्षुद्र' --'निद्य' -ए अर्थमां समासने छेडे **कीटध्न** पुं० गंधक कीटज न० रेशम कोटोस्कर पुं० कीडीनो राफडो **कीवृक्ष, कीवृ**श् (–श)वि० कई जातनुं ? केवा प्रकारनुं ? [(४)कसाई कीमाद्या पुं० खेडूत (२)यम (३)कंज्स

कीर पुं० पोपट कोणं ('कृ' तृं० भू० कृ०) वि० विखरायेलुं (२) छवायेलुं कीर्तन न० कहेबु-वर्णववुं ते (२) वसाणबुं ते (३) शंदिर;कलामय मकान क्षेत्रिनीय वि० वस्ताणवा योग्य कीर्ति स्त्री० ख्याति; नामना; यश कोल, कोलक पुं० खीलो (२)फाचर कीलित वि० जडायेलुं; खीली ठोका-येलुं (२) शूळीए दीर्थेलुं (३) रोपायेलुं कुल्ली० पृथ्वी क्रु अ० नाम पूर्वे लागीने खराब, हरुकुं, निदित, पापी –एयो अर्थ बतावे; ठपको, दुष्टता, नीचता, लघुता, [वि० दुराचरणी अपूर्णता दशि कुकर्मन् न० दुष्ट कार्य; दुराचरण(२) **कुकुर** पुं० कूतरो [तेनो अग्नि कुकूल पुंव, न० डूगसां; फोतरां(२) **कुक्कुट** पुं० कूकडो कुरकुर यु० भूतरो कुक्ति स्त्री० कूल (२) पेट (३) गर्भाशय (४) अंदरको भाग (५) खाडो (६) गुफा कुक्षिभरि वि० पेट भरवानी ज परवा-वाळुं; स्वार्थी; साउधरं(२)अंदर व्यापी रहेल् **क्रुग्राम** पुं० (ज्यां कोई राज्याधिकारी, बैद्य के नदी न होय तेवुं) नानुं गामडुं **कुच** पुं० स्तन क्रुज पुं० वृक्ष (२) मंगळनो ग्रह **कुट्६** प० वॉकुंबाळवं, ∽वळवं(२) छेतरवुं(३) ४ प० फाडवुं; भागवुं; कूटबुं; जूरो करवो कुट पुं०,न० घडो;लोटो (२) पुं० किल्लो (३) हथोडो (४) वृक्ष (५)घर(६) पर्वत कुटज पुं० एक वृक्षनुं नाम ('इन्द्रजव') कुटि स्त्री० झूंपडी (२) वळांक **कुटिर** न० झ्पडी **कुटिल** वि० वक; वांकुं; वांकुं-<mark>जूंकु</mark> (२) कपटी; अप्रमाणिक

कुटी स्त्री० झूंपडी (२) लतागृह **कुटीर** पुं०, न० झूंपडी **कुर्दुब** पुं•, न० परिवार; वंश (२) बैरी छोकरां वगेरे घरनां माणसानो समूह(३)घरसंसार;तेनी उपाधि **कुटुंबिक, कुटुंबिन्** पुंठ परणेली - कुटुंब-वाळो माणस; जेना उपर घरनी जवाब-दारी होय ते [मुख्य स्त्री; गृहिणी **फुटुंबिनी** स्त्री० कुटुंबवाळी - कुटुंबनी **कुट्ट् १०** उ० कापवुं (२) कूटवुं; खांडवुं (३) गाळ भांडवी **कुट्टन** न० कापर्वु ते (२) खांडबुं ते (३) गाळ देवी ते **कुटूनी** स्त्री० क्टणी **कुट्टाक वि० कापना**र्छ; छेदनार्छ **कुट्टिम** वि० फरसबंध; पथ्थर जडेलुं **कुठार** पुं० कुहाडो **फुठारिका** स्त्री० नानी कुहाडी **कुडप (--व**)पुं० बार मूठी जेटलुं अनाजनुं [(२) पुं० कळी **कुड्मल** वि० खीलतुं; विकसतुं; अधडतुं कुड्मलित वि० कळीओ बेठी होय तेवुँ (२) अर्धु मींचायेलुं (कळी जेम) कुडच न० भीत **कुणप** पुं ०,न० मडदुं ; शब (२)पूं ०भालो **जुतश्चन, जुतश्चिद्** अ० क्यांयथी (अनिश्चितता बतावे) कुतस् अ० स्यांथी? (२) क्यां? (३) शामाटे? (४) कया कारणथी? कई रीते? (५) कारण के (६) 'किम्'ना पांचमी विभक्तिना 'कस्मात्' अर्थमां पण वपराय छे (उदा० 'कुतः कालात्') कुतस्त्य अ० 'क्यांथी आवेलुं', 'केवी रीते बनेलुं' -एवो अर्थ बतावे कुतीर्यपु० खराव शिक्षक **कुतुक** न० उत्सुकता; इंतेजारी (२) होस; इच्छा **फुतुकित, फुटुकिन्** वि० कौतुहलयुक्त

कुतुप पुरु, **कुतू** स्त्री० चामडानी थेली (तेल वगेरे भरवानी) **कुतूह**ल वि० आश्चर्यकारक (२) श्रेष्ठ (३) वस्रणायेलुं(४)न० उत्सुकता; इंतेजारी (५) आश्चर्यकारक वस्तु (६) आनंद; सुख कुतोऽपि अ० वयायथी पण कुत्र अ० क्यां? (२)क्याय (३)आ क्यां ने ए क्यां ? केटलुं जुदुं -- विरोधी ? कुत्रचन अ० क्यांक कुत्रचित् अ० कोईक ठेकाणे; क्यांक **कुत्रस्य** अ० क्यां होनारुं? क्यां रहेनारुं? कुत्रापि अ० कोई ठेकाणे; क्यांक फुत्स् १० आ० निदा करवी कुरसन न०, कुरसास्त्री० निदा (२) तिरस्कार (३) गाळ: अपशब्द कुरिसत वि० निद्य; तिरस्कार करवा योग्य (२) नीच; क्ष्ट्र **कुथ् ४** प० सडव्; गंधाव् **कुष** पुं०, न०, **कुथा** स्त्री० हाथी उपर नाखवानी झूल (२)पाथरणु; जाजम कुदृष्टि स्त्री० खोटो मत (२) खोटा के खराब ख्यालथी जोत् ते **कुट्टा**ल पुं० कोदाळी **कुद्मल** न० कळी कुर्घी वि० मूर्ख (२) दुष्ट कुनदिका स्त्री० नानी नदी; बहेळी **कुनीत** पुं० सोटी दोरवणी के सलाह कुर्प्४ पं०कोध करवो ;गुस्से थवुं (२) उश्केरावुं; वकरवुं कुपथ पुं० कुमार्ग (२) वेदविरुद्ध मार्ग **कुपथ्य** वि० शरीरने हानिकारक एवं (२) न० पथ्य के चरी न पाळवां तें **कुपरीक्षक** वि॰ योग्य मूल्य न ठरावतुं थियेलुं; वकरेलुं – न जाणत्ं कुपित ('कुप्'नूं भू० कु०) वि० गुस्से **कुप्य** न० हलकी धातु (सोना-रूपा सिवायनी)

हुबेर पुं• धननी अधिपति देव; यक्षी अने किन्नरीनी राजा; उत्तर दिशानी दिक्पाल (ते कदरूपी मनाय छे: त्रण पग, आठ दांत तथा आंखने ठेकाणे मात्र एक ज पीळा चाठावाळी)

कुष्ण वि० खूंचुं; कूबडुं कुमार पुं० नानो छोकरो (पांच वर्षनी अंदरनो) (२) युवराज(३)कार्तिकेय कुमारक पुं० कुमार(२)आंखनो डोळो कुमारभृत्या स्त्री० नाना वाळकनी के गर्भिणीनी सार-संभाळ

कुमारतत न० अखंड **ब**द्धाचर्यनुं दत **कुमारिका** स्त्री० दसथी बार वर्षनी वयनी छोकरी(२)कुंवारीकन्या (३) दीकरी; पुत्री

कुमारिकापुर न० कन्याओन् अंतःपुर कुमृद् न० सफेद पोयणुं (२) रातुं कमळ कुमृद पुं०, न० सफेद पोयणुं (चंद्रोदये खीळतुं) (२) रातुं कमळ

कुमुदनाय, कुमुदकांघव पुं० चंद्र कुमुदाकर पुं० कमलपूर्ण सरोवर कुमुदिनी स्त्री० सफेद पोयणांनी वेल (२) कमळसमूह(३)ज्यां कमळ घणां होय तेवं स्थळ

कुमुद्दत् वि० घणां कमळवाळुं कुमुद्दत्ते स्त्री० पोयणांनी वेळ (२) कमळसमूह्(३)घणां कमळवाळुं स्थान कुरब, कुरबक पुं० जुओ 'कुरव' कुरर पुं० कौंच पक्षी कुररी स्त्री० मादा कौंच पक्षी कुरल पुं० जुओ 'कुरर' तिनुं फूळ कुरब, कुरबक पुं० एक फूलझाड(२)न० कुरंग, कुरंगक पुं० मृग; हरण (२) चंद्रनुं

कलक [ताळी स्त्री कुरंगनयना स्त्री०हरण जेवां चपळ नेत्र-कुरंगनाभि स्त्री० कस्तूरी कुरंगम पुं० जुओ 'कुरंग' [ताळो) कुरंगलांछन पुं० चंद्र (हरणना चिह्न- **कुरंगाक्षी** स्त्री० जुओं 'कुरंगनयना' **कुरु** पुं०(ब०व०)अत्यारना दिल्हीनी आसपासनो प्रदेश (२) ए देशना चंद्र-वंशी राजाओ

कुरक्षेत्र न**० दि**ल्ही मजीकनुं, पांडवो अने कौरवोना युद्धनुं स्थळ

फुरवृद्ध पुं० भीष्मिपितामह
फुरूप नि० कदरूपुं; वेडोळ
फुर्कुट पुं० कूकडो (२) कचरो
फुर्कुर पु० कूतरो
फुर्कुर पु० कूतरो
फुर्द् १ उ० जुओ 'कूर्द,'
फुर्दन न० जुओ 'कूर्दन'
फुर्पर पुं० जुओ 'कूर्पर'
फुर्ल न० कुटुंब; वंश (२) कुटुंबनुं
निवासस्थान (३) ऊर्चुं कुळ (४)

टोळुं; जूथ (५) गोत्र; जाति; ज्ञाति कुलक न० समूह (२) सळंग वावय-संबंधवाळा पांचथी पंदर क्लोकोनो

समूह

कुलकन्यका स्त्री० ऊंचा कुळनी कन्या **कुलक्षण** वि० अमंगळ लक्षणोवाळुं **कुलजन** पुं० सारा कुळमां जन्मेली कुलजात वि० ऊंचा कुळनुं (२) वंश-परंपरागत

कुलटा स्त्री • व्यभिचारिणी स्त्री कुलदेवता स्त्री • कुळनो इष्ट देव के देवी कुलधन वि • कुळनो कीर्ति ए ज जेनुं धन छे तेवुं (२) न • कुटंबे – कुळे मानेळी मोंघी मिलकत

कुलधूर्य पुं० मोटी उमरनो पुत्र (जे कुटुंबनी धुरा वहन करी शके)

कुलनंदन वि॰ कुळनी कीर्ति वधारनार्ह कुलपति पुं॰ कुटुंबनी मुख्य पुरुष (२) दश हजार शिष्योने आश्रममां राखीने भणावनार आचार्य

कुलपर्वत पुं० जुओ 'कुलाचल' कुलपांसन वि० कुळने बट्टो लगाडनार्र कुलपुत्र पुं० ऊँचा कुळमां जन्मेलो युदान **कुलपुरुष** पुं० ऊंचा कुळमां जन्मेलो पुरुष (२) पूर्वज **कुलपूर्वक (-ग)** पुं० पूर्वज कुलस्थिति स्त्री० कुळाचार कुलाचल पुं० मुख्य पर्वतः भारतवर्षमा सात दिशाए आवेला सात मुख्य पर्वेतो-मांनो दरेक (मलय, सह्य, विध्य इ०) **कुलापोड** पुं० कुळना मुगटरूप पुरुष कुलाय पुं०, न० पक्षीनो माळो **कुलाल** पुं० कुंभार कुलालंबिन् वि० कुळनुं भरणपोषण करनार्घ (२) कुळनुं आधारभृत एवुं **कुलांगता** स्त्री० कुळवान स्त्री; ऊंचा कुळनी स्त्री [कुळद्रोही कुलांगार वि० कुळने कलंक लगाडनार्; **कुलिर** पुं०,न० करचली कुलिश पुं०, न० इन्द्रनुं वज्य **कुलिंग** पुं० पंखी (२)चकलो(३)साप **कुलीन** वि० कुळवान; ऊंचा कुळनुं **कुलीर, कुलीरक** पुं०, न० जुओं 'कुलिर' **कुलीश** पुं०, न० जुओ 'कुलिश' **कुलोह्रह** पु० वशकेलो टकाकी राखनार कुळनो अग्रणी कुल्प वि० अंचा कुळनुं (२)कुळने लगत्ं (३)न० हाडकुं (४) मास कुल्या स्त्री० सद्गुणी स्त्री (२) नानी नदी; नहेर (३) खाई **कुवर्ष** पुं० अचानक पडेलो के घोधमार कुषलय न ० नील कमळ कुवलियमी स्त्री० नील कमळनी छोड (२) कमळसमूह (३) घणां कमळ-वाळुं स्थान कुविद पुंच्यणकर क्कुज्ञ पुं०दर्भ (२) न० पाणी **कुज्ञल** वि० शुभ; कल्याणकारी (२) आरोग्यवान (३) प्रकीण; होशियार (४) न० कुशळता ⊶सुख (५) कौशल्य कुशस्त्रक्र पुं० 'कुशळ तो खरा?' --एवी पूछपरछ

(दाभनी **कुशाग्र** वि० तीन्न; सूक्ष्म अणी जेवुं) कुशीलव पुंज चारण; भाट (२) नट कुशूल, पुं० भंडार; कोठार [अर्कखेंचवो कुद्दोशयन० कमळ कुष् ९ प० काढवुं; खेंची काढवुं(२) **कुछ्ठ** पुं०, न० कोढ(व्याधि) **कुल्मांड** पुं० कोळ् **कुसरित्** स्त्री० नानी नदी कुसौद पुं० व्याजखाउ माणस (२) न० ब्याज उपर धीरेलुं नाणुं (३) व्याजे पैसा धीरवानो धंघो **कुसुम** २० फूल कुसुमकार्म्क, कुसुमचाप पुं० कामदेव **कुसुमप्रवृत्ति, कुसुमप्रसूति** स्त्री० फूल बेसवां ते कुसुमबाण पुं० कामदेव कुमुमस्तद्यक न० फूलोनो गुच्छो कुसुमंधय पुं नधमाख **कुसुमाकर** पुं० वसंतऋतु कुसुमापचय पुं० फूल वीणवी – चूंटवी ते कुमुमापीड पुं० कामदेव (२) फूलनी कलगी **कुसुमायुध** पुं० कामदेव **कुमुमांजिल** पुं० फूलथी भरेल*े* खो**बो कुसुमित** वि० फुछ खील्यां हाय तेवुं कुसुमेषु प्० कामदेव **दुसुमोच्चय** पुं० फूलनो गुच्छ **कुसुंभ** पुं०, न० कसुंबानुं वृक्ष (२)न० सोन् (३) कसुंबानी रंग **कुसूल** पुं० कोठार; भंडार कुसृति स्त्री० छळकपट; शठता कुहक पुं० शठ; ठग (२) जादूगर (३) न० ठगाई; जादु **कुहकचिकत** वि० सावचेत;शंकाशील; छेतरावाथी डरत् कुहका स्त्री० ठगाई (२) जादु **कुहर** न० गुफा; बखोल

कुट्ट स्त्री० कोयलनो अवाज (२) अमावास्या **जुहुनंठ, कुहुरय** पुं० कोयल **कुह** स्त्री० जुओ 'कुहु' **कुहेडिका, कुहेडो, कुहेलिका** स्त्री ०धुम्मस **कुं**कुस न० केश र **कुंचन** न० वांकुं – त्रांसुं वळवुं ते **कुं**चिकास्त्री० क्ची विळेलुं , वाकुं **कुंचित** ('कुंच्'नुंभू० कृ०) वि० दांकुं **कुज् १ ५०** कूजवुं [स्थान ; लतामंडप **कुंज** पुं०,न० वेला वगेरेथी छवायेलुं **कुंजकुटीर** पुं० लतागृहः; लतामंडप **कुंबर पुं**० हाथी (२) (समासने छेडे) ते ते वर्गमां सर्वथी श्रेष्ठ (उदा० 'नरकुंजर') **कुंठ** वि० बुठ्ठुं(२)आळसु(३)मूर्ख **कुंठित** ('कुंठ्'नु भ्०ङ०) वि० वुठ्ठु (२) शिथिल , निर्वेळ [कूंडी ; पात्र कुंड पुं०, न० होज (२) यज्ञनी वेदी (३) **कुंडक** पुं०, न० माटीनी कूंडी (पात्र) कुंडल पु०, न० काननुं घरेणुं (२) गळानुं घरेणुं (३) हाथनुं घरेणुं (४) दोरडानो वीटो **कुंडिका** स्त्री० कूंडी; कूंडुं(२)कमंडळ **कुंत** पुं० भाली **कुंतल** पुं० माथाना वाळ ; झूलफुं ; लट **कुंद** पुं०, न० एक जातनो मोगुरो (२) न०तेनुं फूल [एक राशिनुं नाम **कुंभ** पुं॰ घडो (२) हाथीनुं गंडस्**यळ (**३) **कुंभक प्**० प्राणायाम वखते स्वास रूंधी राखवो ते **कुंभकार** पुं० कुंभार कुंभज, कुंभजन्मन्, कुंभयोनि, कुंभसंभव पुं० अगस्त्य ऋषि (२)वसिष्ठ ऋषि (३) द्रोणाचार्य **कुंभा** स्त्री० वेश्या **कुंभिका** स्त्री० नानो घडो

कुंभिल ५० खातरपाडनारचोर **कुंभी** स्त्री० नानो घड़ो (२) दोणी (रांधवानी) **कुंभीनस** पुँ० एक जातनो झेरी साप कुंभीपाक पुं० एक नरक **कुंभीर** युं० लांबा मीवाळी मगर(गंगानो) कुंभीरक, कुंभील, कुंभीलक पु० चीर **क्कुर** पुं० क्तरो क्च पुं रतन {(दुःखनो} कूज्१प० कूजवुं(२) अंहकारी करवी क्रूज, क्रूजन, क्रूजित न० क्रूजवृंति क्ट वि० खोटुं; मिथ्या (२) पुं०, न० बूड; ठगाई; छेतरपिंडी (३)पर्वतनी टोच; शिखर(४)ढगलो; समूह(५) न समजाय तेवुं जे कई होय ते (रहस्य, कोयडा ६०) (६) हरणने पकडवानो फांदो – जाळ (७) छुपावेलुं हथियार -गुप्ति (८)हथं।डो; घण (९) शहेरनो दरवाजो क्टक न० कपट; छेतरवुं ते (२) ऊंचाण (३) हळनुं फळ – कोश **क्टकार** पुं० जूठो साक्षी **कूटकृत्** वि० छेतरनारुं; कपटी (२) खोटो दस्तावेज बनावनार् **क्टच्छमन्** पुं० ठग **कृटतुला** स्त्री० खोटां त्राजवां **कूटपालक** पुं० कुंभार (२) कुंभारनो निमाडो – भठ्ठी क्टपाश, क्टबंध पुं० फांदो; फांसी **कूटमान** न**०** खोटां काटलां क्ट्रेयुद्ध न० कपटी युद्ध; अधर्मनुं युद्ध क्टरचना स्त्री० जाळ; फांसी (२) कपटजाळ के युक्ति **क्टसाक्षिन् पुं**० जूठो साक्षी **क्टस्थ** वि० टोच पर-ऊंचामां उंचा स्थळे ऊभेलुं (वंशावळीमां) (२)श्रेष्ट (३)सर्व काळे एकरूप रहेनारुं; अचळ (४)पुं० परमात्मा

कुंभिन् पु० हाथी

कूटागार न० उपरनी मेडी **कूणित** वि० मींचेलुं (२) संकोचेलुं कूप पुं० कूबो (२) पोलाण; खाडो **कूपदंड** पुं० कूबायंभ (बहाणनो) **कूपमंडूक** पुं० कूवामांनो देडको (२) बिनअनुभवी माणस (ला०) क्पयंत्रघटिका स्त्री० रेंट **कूपार** पुं० महासागर कूपिकास्त्री० नदी बच्चेनो खडक **कूबर पुं**०, न०,**कूबरी** स्त्री० गाडानो घोरियो कूर पुं०, न० भात (रांघेलो) कूर्च पुं०, न० दाढी (वाळ)(२)चूंटी (३) क्चडो ; पींछी ; झूडो **कूर्द् १** उ० कूदवुं(२)खेलवुं **कूर्दन** न० कूदवुं ते (२) खेल कूपर पुं० कोणी (२) ढींचण क्पसि, क्पसिक पुं० चोळी ; कांचळी कूर्म पुं० काचबो कूल न० किनारो; तीर; तट **कूलमृद्रुज वि०** किनारो तोडी नाखनारुं (नदी, हाथी इ०) [नाखनार् कूलमुद्रह, कूलंकच वि० किनारो धोई **क्**लं**कषा** स्त्री० नदी **कूष्मांड** पुं० कोळुं **कृ० ८** उ० करवुं; काम करवुं (२) बनाववुं (३) रचवुं; बांधवुं; तैयार करवुं(४)गोठबवुं (५) उत्पन्न करवुं (घडो; अवाज) (६) कहेवुं; वर्णन करवुं(७)परिणाम लाववुं(८)अमल करवो ; आचरवुं (९)त्यागवुं ; काढवुं (भळ-मूत्र) (१०)धारण करवुं (११) मूकवुं; राखवुं (१२) नीमवुं (१३) रांधर्युः, पाकं करवो (१४) गणवुः, मानवुं (उदा० 'तृणीकृत') (१५) विताववुं ; पसार करवुं (समय) (१६) -तरफ वळवुं; निश्चय करवो (उदा० 'मर्ति करोति') (१७) उपयोगमां आववुं 👽 । ५ उ० ईजा करवी ; मारी नासवुं **कृकवाकु** पुं० क्कडो क्रुच्छा वि० कष्टसाध्य (२) दु:खद; कण्टकारक (३) दुष्ट; अनिष्ट(४) कष्टकारक दशामां आवी पडेलुं (५) पुं०, न० संकट; पीडा; मुश्केली(६) उपवासादि शारीरिक कष्ट;तप **कृच्छ्रम्,कृच्छ्रात्,कृच्छ्रं च** अ०मुश्केलीथी कृत् ६ प० [कृतित] कापवु **कृत्** वि० (समासने अंते) करनारुं (उदा० 'पापकृत्') (२) पुं० धातुमांथी नाम, विशेषण आदि बनाववा वपरातो प्रत्यय (व्या०) (३)ए प्रत्यय लागीने बनतो शब्द (व्या०) कृत ('क्व'नंभू०कृ०) वि० करेलुं; आचरेलुं (२) बनावेलुं; रचेलुं (३) हणायेलुं (४) मेळवेलुं; खरीदेलुं (५) नीमेलु(६) न० कार्य; कर्म; करेलु ते (७) उपकार; सेवा; लाभ (८) सत्ययुग (१७२८००० वर्षनो) (९) चार चिह्नवाळी पासानी बाजु कृतक वि० बनावेलुं ('नैसर्गिक'थी ऊलटुं) (२)दत्तक लीधेलु (३) ढोंगथी करेलुं; [(२)चतुर;कुशळ देखाव पूरतुं कृतकर्मन् वि० जेनु कार्य पूर्ण थयु छे तेव् कृतकास वि० जेनी कामनाओ पूर्ण थई छे तेवुं; परितृप्त **कृतकृत्य** वि० पोतानुं कार्य-पोतानी फरज पूरी करी चूक्य होय तेवुं (२)तेना संतोषवाळुं जिने तक मळी छे तेवुं **फ़ुतक्षण** वि० अधीराईथी राह जोतुं (२) कृतघ्न वि० बीजाए करेलो उपकार भूली जाय तेवुं **कृतज्ञ** वि० सामाना उपकारनी कदर करनारुं(२)साचुं कर्तव्य जाणनारुं कृतची वि० संस्कारेली बुद्धिवाळु (२) बुद्धिशाळी; शाणुं; विचारवंत **कृतनामधेय** वि० नामवाळुं; —ना नामे ओळखातुं

कृतपरिश्रम वि० अभ्यास करेलुं; -नी पाछळ महेनत लीधी होय तेवुं शृतबुद्धि वि० स्थिर - निश्चयी बुद्धि-वाळुं; **डाहपुं**; शाणुं; शिक्षित कृतम् अ० 'बस करो '; 'बंध करो ' (तृतीया साथे) **कृतयुग** न० सत्ययुग [होय तेबूं **कृतरूप** वि० परंपरागत विधिओ जाणतुँ **कृतलक्षण** वि० चिह्नित; अंकितं(२) गुणो वडे विरुयात कृतवत् वि० जेणे कर्युं होय तेवुं **कृतिबद्य** वि० विद्वानः; पंडित **कृतवेदिन्** वि० कृतज्ञ **कृतवेश** वि० वस्त्राभूषणथी अलंकृत कृतहस्त वि०प्रवीण (२) चतुर कृतागस् वि० अपराधी; पापी **कृतात्मन्** वि० संस्कारेला – शिक्षित *–* शुद्ध अंत∴करणवाळ् **कृतान्न** न० रांधेलुं अन्न **कृतापराध** वि० गुटेगार; अवराधी **कृताभिषेक** वि० जेतो राज्याभिषेक करवामां आव्यो छे तेव् कृतार्थ वि० जेनुं कार्य सफळ थयुं छे तेवुं (२)संतुष्ट; मुखी -**कृतार्थोक्र ८** उ० सफळ करवुं (२)संतुष्ट कृतालय वि० जेणे घर बांध्युं छे के मांड्यूं छे तेबूं िनास्यु छे तेवु हतावमर्ष वि० जेणे समृतिमांश्री भूसी **कृतास्त्र** वि० अस्त्रविद्यामां पारंगत **कृतांजि**ल वि० (याचना करवा) जेणे हाय जोडेला छेतेबुं **कृतांत** पुं० यमराज (२) दैव; नसीब (३)साबित थयेलो सिद्धांत **कृति**, स्त्री० करवुं ते ; आचरवुं ते (२) कार्य; कृत्य (३) सर्जन; रचना (साहित्यनी) (४) जादु (५) वध कृतिन् वि० कृतार्थः; कृतकृत्य (२) सुसी; संतुष्ट (३) सुभागी

चतुर; कुशळ (५) सद्गुणी; पवित्र (६) ताबेदार **कृते, कृतेन** अ०. —ने माटे; —नी खातर; −ने निमित्ते (छठ्ठी विभिन्त साथे) **कृतोद्वाह** वि० परणेलुं **कृ**त्ति स्त्री० चामडुं ; मृगचर्म (२)ओजपत्र **कृत्तिका** स्त्री० एक नक्षत्र **कृत्तिकापुत्र, कृत्तिकासुत** युं० कार्तिकेय **कृत्तिवास, कृत्तिवास**स् पुं ० शिव (चामडुं आढनार) **कृत्य** विश्करया योग्य; कर्तब्य (२) न० कर्तव्य; फरज (३)कार्य; काम (४) हेतु; प्रयोजन **कृत्यका** स्त्री० जादुगरणी; डाकण **कृत्यवत्** वि० कंईक प्रयोजन -- याचना – इच्छावाळुं मिली शक्ति कृत्या स्त्री० किया (२) मेली विचा; कृत्रिम वि० कुदरती के स्वाभाविक नहि तेवुं; बनावटी; ऊभुं करेलुं(२)दत्तक (३)शणगारेलुं कुत्वस् अ० '-गणु', '-वार', '-वखत' (उदा० अध्टकृत्वस्) कृत्स्न वि० आखुं; बधुं; संपूर्ण **कृपण** वि०दीन ; गरीब ; दयापात्र (२) विवेक-विवार करवा अशक्तिमान (३) नीच; अधम (४) कंजुस कृपा स्त्री० दया; अनुकपा **कृपाण** पुं० तरवार; खड्ग **कृपालु** वि० दयाळ् कृमि पुं० कोडो; जीवडो **कृञ् ४** प० ओछुंथ**वुं**; घटवुं; दूबळुंथवुं **कृश** वि० दूबळु; पातळु(२)अल्प; थोडुं (३) क्षुद्र **कृशानु** पुं० अग्नि **कृशानुरेतस्** पुं० शंकर **कृशाश्विन् पुं**० नट; 'एक्टर' **कृशांग** वि० कृश शरीरवाळुं; पातळुं **कृशांगी** स्त्री० पातळा – नाजुक बांधा-वाळी स्त्री

कृशोदर वि० कमर के पेटनो भाग पातळो होय तेवुं **कृष्६** उ० खेडवुं (२) १ प० खेंचवुं; खेंची जबुं; खेंची कैवुं (३) दोरवुं (४) वश करवुं; जीतवुं **कृषक पुं**० खेडूत कृषि स्त्री० खेतीवाडी; खेती कृष्ट ('कृष्'नुभू० कृ०) वि० खेंचेलुं (२) आकर्षित (३) खेडेलुं **कृष्ण** वि० काळुं (२) **दु**ष्ट; खराब (३) पुं० काळो रंग (४) कृष्णपक्ष (५) व्यासमुनि (६) श्रीकृष्ण **कृष्णद्वंपायन** पुं० व्यासमुनि **कृष्णपक्ष** पुं० वद पक्ष ; अंधारियुं **कृष्णवरमंन्** पुं० अग्नि **कृष्णसार पुं**० काळी मृग **कृष्णसारिथ पुं**० अर्जुन कृष्णा स्त्री० द्रौपदी (२) यमुनानदी **कृंतन** न० कापवुंते 🧤 ६प० [किरति] वेरवुं ; विखेरवुं (२) पाथरवु; छाई देवु (३) ९ उ० किणाति, कृणीते | ईजा करनी ; वध करवी कृत् १० उ० [कीर्तयति –ते] उल्लेख करवो ; बोलवुं (२)कहेवुं ; वर्णववुं ; जाहेर करवुं (३) प्रशंसा करवी क्लूप् १ आ० [कल्पते] करवा माटे शक्तिमान के लायक होवुं (२) थवुं; बनवुं (३) तैयार – सज्ज थवुं के होवुं (४) उपजाववुं –प्रोरक० तैयार करवुं (२) नक्की करवुं; इरादो राखवों (३) सजवुं (४)पूरुं पाडवुं(५)मानवुं; घारवुं (६)कापवुं ; भाग पाडवा (७) अमलमां मूकवुं; निपजाववुं; बनाववुं (८) रचवुं (ग्रंथ) (९) स्वीकारवुं क्लृप्त ('क्लृप्'नुं भू०कृ०)वि० नक्की; निश्चित; तैयार; सज्ज (२) कापेलुं

क्लुप्ति स्त्री० सिद्धि (२)युक्ति (३) रचना; गोठवण केकर वि० बाइं केकास्त्री० मोरनो अवाज केकावल, केकिन्युं० मोर **केतक** पुं० केतकीनो छोड; केवडो(२) घ्दज (३) न० केतकीनुं फूल **केतकी स्त्री० केतकीनो छोड**; तेनुं फूल **केतन** न० घर; निवासस्थान(२)घ्वज (३) स्थान (४) *ां*ज्ञा (५) तेडुं; निमंत्रण(६)अवश्य करवानुं कर्म केतु पुं० ध्वज ; निशान (२)श्रेष्ठ व्यक्ति; आगेवान (समासने छेडे) (३) एक यह; धूमकेतु(४)दीप्ति; प्रकाश **केतुयध्टि** स्त्री० धजानो दंड केदार पुं० क्यारानी जमीन; क्यारी **केयूर** पु०, न० हाथना कोणी उपरना भागमां पहेरातुं वरेणुं ; कडुं केलि पुं०, स्त्री०, केली स्त्री० कीडा; रमत (२) रतिक्रीडा **केवल** वि० विशिष्ट; असाधारण(२) एकलुं; मात्र (३)संपूर्ण; समग्र (४) अनाच्छादित; खुल्लुं (५) शुद्ध; सादु (६)निष्णात केवलज्ञान न० भ्रांतिशून्य, विशुद्ध ज्ञान **केवलय्** अ० मात्रः, फक्त (२) संपूर्ण रीते; पूरेपूरुं केश पुं० वाळ (२) माथाना वाळ **केशकर्मन्** न० वाळ ओळवा ते **केशकलाप** पुं० वाळनो गुच्छो के समूह **केशपाश** पुं० केशनो जथो **केशर पुं**०, न० जुओ 'केसर' केशरचना स्त्री० वाळ जुदी जुदी रीते ओळवा ते **केशरिन्** पुं० जुओ 'केसरिन्' **केशव** पुं० विष्णु (सुंदर केशवाळा) **केशव्यपरोपण** न० केश खेंचवा ते **केशहस्त** पुं० जुओ 'केशपाश'

(३) उपजावेलुं (४)मानेलुं ; कल्पेलुं

केशाकेशि अ० परस्पर वाळ खेंचीने (लडवुं) राक्षस केशिन् पु० सिह(२)श्रीकृष्ण(३)एक **केशिनियुदन** पुं० केशीनो वध करनार -- श्रीकृष्ण केसर पूं०, न० केशवाळी (२)हरकोई फूलनी अंदर थतो तंतु(३)बकु**रु वृक्ष** केसरिन् पुं० सिंह (२) घोड़ो (३) ते ते वर्गमां श्रेष्ठ (समासने अंते) केंद्र न० मध्यबिंदु **कटभ** पुं० एक राक्षस कैटभजित्,कैटभरिषु,कैटभहन्, केटभारि पु० विष्णु (कैटभने मारनार) **कतव** न० दावमां मूकेली वस्तु(२) जुगार (३)कपट; ठगाई (४)प्०शठ; ठग(५)जुगारी **करव** न० श्वेत कमळ ; पोयणुं (चंद्र ऊग्ये **कैरवबंध**ूपु० चट्ट **करविणी** रत्नी० पोशणी(२**)**घणां पोयणां-बाळुं जळाराय (३)पोयणांनी समृह फैलास पुं० हिमालय पर्वतनुं एक शिखर (शंकर अने बुबेरलूं निवासस्यानः) मनाथ पुं० शंकर (२) कूबेर केंबत, बोबतंक पुं० माछी कंबल्य न० केवल स्वरूप – ब्रह्म स्वरूप थवुं ते (२) निर्किप्तपणुं ; मोक्ष कैशिक न० केशसमृह **कैशोर** न० किशोर अवस्था **कंश्य** न० केशसमूह **फोक** पुं० वह (२) चक्रवाक (३) कोयल **फोकनद** न० रातुं कमळ कोकबंधु पुं० सूर्य **कोकिल** पुं० नरकोयल कोकिला स्त्री० मादा कोयल **कोजागर** पुं० शरद पूनभनो उत्सव **कोटर** पुं०, न० वृक्षमांनी बखोल **कोटि** स्त्री० छेडो (२)धनुष्यनी अग्र-भाग (३) हथियारनी अग्रभाग (४)

पराकाष्ठा; अंतिम हद (५) चंद्रती कळानी वे अणीओमांनी दरेक (६) शिखर(७) वर्चास्पद बाबतनी एक वाज् (८)करोड (संख्या) (९)वर्गः; जाति कोटिमत् वि० धारवाळुं; अणीवाळुं कोटिशस् अ० करोडोथी;करोड रीते कोटी स्त्री० जुओ 'कोटि' **कोटीर** पुं० मुगट (२) जटा-गुच्छ **कोटीइबर** पुं० करोडपति **कोट्ट** पुं० किल्लो; कोट कोण पुं० खूणो (२) खड्गके शस्त्रनी तीणी धार (३) ठाकडी के दंडो (४) सारंगी बगेरेनुं कामठुं (५) ढोल वगाडवानी डंड्को कोणप पुं० राक्षस [इ० नो **)ध्वनि** कोणाघात पुं० अनेक वादोनो(ढोल,भेरी कोदंड पुं०, न० धनुष्य कोद्रव पुंट कोदरा कोप पुं० गुस्सो ; क्रोध (२)वकरवुं ते कोषन त्रि० कोधजनक(२)गुस्साबाळुं (३)वकरावनारुं कोषिन् वि० गुस्से थनाहं (२) गुस्सो करलार्ह (३)वकरावनार्ह कोमल वि० कुमळुं; नाजुक; सुकुमार (२)नरम, मृदु(३)मधुर कोरक पुं॰, न० कळी (२) कळीना आकारनुं जे कंई होय ते कोरकित वि० कळीओथी छवायेलं कोल पुं० डुक्कर (२) तरापो; होडी (३)आलिंगन (४) खोळो कोलाहल पुं०, न० घोंघाट; शोरबकोर कोविद वि० अनुभवी; निपुण; कुशळ **कोविदार** पुं०, न० एक वृक्षनुं नाम कोश पुं०, न० पाणी भरवानुं वासण; डोल (२) पेटी ; कबाट ; कबाटनुं खानुं (३) स्यान (४) ढांकण; आवरण (५) कोठार; भंडार (६) खजानो; तिजोरी (७) धन; संपत्ति (८)

शब्दकोश (९) बिडायेलुं फूल (१०) दहो; गोळो कोशक पुं० ईंडुं कोशकार पुरुम्यान बनावनार (२) रेशमनो कीडो (३) शब्दकोश रचनार कोशकारक पुं० रेशमनो कीडो कोशकृत् पुं० शेलडी **कोञ्चगृह** न० तिजोरी; संग्रहस्थान [स्रजानची **कोशचंच् पुं०** बगलो **कोशनायक, कोशपालक पुं**० कोशाध्यक्ष; **कोशस्त्रिक** पुं० लांच **कोशवासिन्** पुं० कोशमां रहेनार कीडो कोशवृद्धि स्त्री० संपत्तिनो वधारो (२) अंडवृद्धि कोशवेश्मन् न० भंडार; कोठार; तिजोरी कोशशायिका स्वी० तरवार(२)छरी कोशशुद्धि स्त्री० अग्निपरीक्षा जेवी कसोटीथी शुद्ध ठरवुं ते कोशामारपुं०, न० धनभंडार; तिजोरी (२)कोठार को आध्यक्ष पुं० खजानची (२) कुवेर **कोष** पुं०,न० जुओ 'कोश' कोष्ठ पु० पेटनो मध्यभाग; कोठो (२) कोठार (३) घरनो मध्यभाग (४) न० कोट; भींत (५) कोटलुं कोच्ठामार पुं० कोठार; भंडार कोब्ण वि० थोडुगरम; हरोकुं कौक्षेय वि० कुखनुं; पेटमानुं (२) केडे बांधेलुं; म्यानमां रहेलुं कौक्षेयक पुं० तरवार कौटिल्य पुं० चाणक्य (२) न० कुटिलता; वकता (३) कपट **कौटुंबिक** वि० कुटुंबनुं; कुटुंबने लगतुं (२) कुटुंबनी मुख्य माणस कौणप प्० राक्षस कौतुक न० इच्छा; आतुरता; अधीराई (२) जिज्ञासा (३) कुतूहरू जाग्रत करे एवं कई पण (४) उत्सव; कीडा (५)

लग्न पहेलां हाथे दोरो बांधवानो विधि (६)आनंद; सुख कौतुकक्रिया स्त्री० लग्नक्रिया **कौतूहल न०** कुतूहल; इतेजारी **कौपीन न० गु**ह्यांग; उपस्थ (२)लंगोटी (३) फाटेलुं वस्त्र (४) कफनी (५) पाप; दुष्कर्भ **कौबेर** वि० कुबेरनुं; कुबेरने लगतुं कौबेरी स्त्री० उत्तर दिशा **कौमार** वि० जुवान ; **कुं**वारुं (२)नाजुक (३)युद्धना देव – कार्तिकेयने लगतुं (४) न० बाळपण (५) कुंवारा रहेतुं ते कौमारक न० बाळपण; नानपण कौमारभृत्य न० नानां बाळकोने उछे-रवा ते ; बाळकोनी संभाळ राखकी ते **कीमारराज्य** न० युवराजनुं पद **कौमारवत न० कुंबारा – ब्रह्मचारी** रहेबानुं व्रत **कौमुद** पुं० कार्तिकमास कौमुबी स्त्री • ज्योरस्ता ; चांदनी (२) तेना जेवी शीतळ मुखप्रद बस्तु (३) कार्तिक-पूर्णिमा (४) अश्विन-पूर्णिमा (५) उत्सव (रोशनी करवानो) कौमोदकी, कौमोदी स्त्री० विष्णुनी गदा कौरव थि० कुरुवंशास्पन्न; कुरुवंशनुं **कौरव्य** पुं० कुरुनो वंशज (२)कुरुओनो राजा **कौल वि० वंशपरंपरानुं; कु**ळतुं (२)ऊंचा कुळनुं (३)पुं० वाममार्गी; शाक्त (४) न ० वाममार्गे ; शावत पंथ **कौलिक** वि० वंशपरंपरागत (२)कुळनुं; कुटुंबनुं (३)पुं० शाक्त (४)वणकर **कौलीन** वि० कुलीन ; ऊंचा कुळन् (२) पुं ० शाक्त (३) न ० लोकापवाद ; आळ (४)दुष्कर्म ; कुकर्म (५)कुलीनता **कौलोन्य न० कु**लीनता; कुळवानपण् **कौत्य** वि० कुलीन ; अंचा कुळमां जन्मेलुं (२) न० कुलीनता

कौंशल न॰ क्षेमकुशळ होवापणुं (२) कुशळता; निपुणता कौशलिक न० लांच **कौशलेय** पुं० कौशल्याना पुत्र – राम **कौशस्य न० जुओ 'कौ**शस्र' **कौशस्यायनि** पुंच जुओ 'कौशलेय' कौतिक वि० स्थानमां रहेलुं (२)रेशमी (३)क्रुशिकना वंशन् (४)पुं ० विश्वामित्र (५) इंद्र (६) धुवड (७) नोळियो (८) गारुडी (९) न० रेशमी वस्त्र कौशिकाराति, कौशिकारि पुं० कायडो कौशिको स्त्री० पृथ्वी(२)दुर्गा कौशेय, कौषेय न० रेशम(२)रेशमी वस्त्र **कौसुम** वि० फूलनुं; फूल संबंधी **कौस्ंभ** वि० कसूंबी; लाल रंगनुं कौस्तुभ पु॰ समुद्रमंथनमांथी नीकळेलां १४ रत्नोमांनुं एक; एक मणि (तेने विष्णु धारण करे छे) कौंजर वि० हाथीनुं [अर्जुन) **कॉतेय** पुं॰ कुंतापुत्र (युधिष्ठर, भीम, कक्च पुं० करवत (२) एक बाद्य **कतु** पुंज्यज्ञ (२) विष्णु (३) संकल्प कम् १ उ० [कामति; कमते], ४ प० [ऋाम्यति] जवुं; चालवुं(२) पासे जबुं(३) ओळंगी जबुं(४) कूदबुं (५) ऊंचे चडवुं (६) चडियातुं यवुं (७) माथे लेवुं (काम) (८) सिद्ध करवुं −पार पाडवुं (९)वृद्धि पामवी; विकास थवो कम पुं॰ पगलुं; डगलुं (२) पग (३) जबुं ते; पसार थवुं ते (४) पद्धति; अनुक्रम; परिपाटी (५) आचरण; आरंभ(६) पकड (७)हुमलो करता पहेलांनी तैयारी (पश्नी)

कमण न० जबुंते; डगभरबुंते (२)

कॅमतस् अ० कमे कमे; घीमे घीमे

कमागत, कमायात वि० अनुक्रमे -- वंश-परंपराथी चालतु आवेल् **कमेलक** पूं० ऊंट ऋष पुं० खरीदव्ते, खरीदी क्रियक वि० खरीदनारं **कब्य** न० काचुं मोस क्रव्यभुज्, ऋव्याद् (-व) पु० वाघ वगेरे हिंस प्राणी (२) राक्षस 🛪 द् १ प० बूम पाडवी ; रडवुं ; विलाप करवो (२)दयाजनक रीते बोलायवुं कंदन, कंदिस न० दु:खनो विलाप के पोकार (२) पडकार काकचिक पुं० लाकडां वहेरनारो कांत ('कम्'नुं भू०कृ०)वि० गयेलुं(२) हुमलो करायेलुं (३)आरूढ (४) अतीत (५)व्यापेलुं(६)उल्लंघन करेलुं कांतर्वांशन् वि० सर्वज्ञ कांति स्त्री० जबुंते; आगळ वधवुंते (२) ओळंगी जबुं ते (३) पगलुं(४) हुमलो करवो ते; ताबे करवुं ते किमि स्त्री० जंतु; कीडो क्रिया स्त्री० करवुं ते; पार पाडवुं ते (२) कर्म; कार्य (३) प्रवृत्ति; शारीरिक किया; मजूरी (४) शिक्षण (५) नृत्य-संगीत आदि कळा(६)अमल; आंचरण ('शास्त्र' थी ऊलटुं)(७) साहित्य-कृति (८) धार्मिक क्रिया; प्रायश्चितः; श्राद्धः (९) व्याधिनो उपचार (१०)गति (११) कियापद क्रियापर न० क्रिया बतावनः रुंपद(त्र्या०) क्रियापर वि० कार्य करवाने तत्पर; कार्यमां प्रवृत्त **क्रियासम्बर्ध न**० शिल्पकळानुं सींदर्य कियावत् वि० आचरणमां लागेलुं; व्यवहारकुशळ (२) योग्य विधिथी कियाओं करनारुं **क्रियाविशेषण** न० क्रियापदना विशेषण तरीके वपरातो शब्द (ब्या०)

डगलुं; पगलूं

क्रमशस् अ० कम प्रमाणे

की ९ उ० खरीदबुं (२) विनिमय करवो **क्षीड् १** प० रमवु; खेलवुं **क्रीडन** न० रमवृते; क्रीडा(२)रमकडुं कीडनक पु०, न०, क्रीडनीय, क्रीडनीयक न० रमकडु ऋगेडा स्त्री० रमत (२) मश्करी **क्रीडावेश्मन्** न० क्रीडागृह कोडित न० रमतगमत श्रीडोहेश पु० रमतगमतनुं मेदान **ऋौत** ('की'नुं भू० कृ०) वि० खरीदेऌं **मुद्ध** ('कुथ्'नु भू० इ०) वि० गृस्से थयेलु; कुपित **कृष् ४** प० कोध करवो ; गुस्से थवुं **ऋध्**स्त्री० कोप;गुस्सो करवो **ऋश् १ प० वूम पाडवी (२) र**डवुं**;**विलाप **कुष्ट** ('कुश्'नुं भू० कृ०) वि० बोला-वायेलुं; पोकारेलुं (२) न० पोकार; बूम (३) विलाप ऋर वि० निर्देय (२) कर्कश; कठोर (३) **क्रोड** पं०डुक्कर;वराह(२)छाती(३) वृक्षनी बखोल (४) मध्यभाग (५) न० बे खभा वच्चेनो भाग -- छाती(६) अंदरनो भाग -- पोलाण (७) खोळो कोडपत्र न०पूर्ति; वधारो (ग्रंथ इ० नो) **कोडीकरण** न० आलिगन; भेटबुं ते **कोध** पुं० कोप; गुस्सो कोघन वि० सट गुस्से थई जाय तेवुं (२) न०कोप;कोध क्रोधनीयं वि० गुस्सो उपजावे तेवुं **ऋोघेद्ध** वि० कोपथी सळगी ऊडेलं क्रोश पुं० बूम; विलाप (२) कोस; योजननो चोथो भाग कोष्ट्र, कोष्ट्र पुं० शियाळ कीर्य न० कूरता (२) भवंकरता करींच पुं० एक पक्षी (२) एक पर्वत (हिमालयनो भौत्र) क्लम् १ ५० (क्लामित), ४ ५० [क्लाम्यति] थाकी जवुं; थाक लागवो (२) खेद करवो; शोक करवो

क्वण् क्लम, क्लमथ (-थु)पुं० थाक; परिश्रम पर्लात ('क्लम्'नुं भू० कृ०) वि० थाकी गयेलुं (२) निराश; खिन्न (३)कृश; करमाई गयेलं क्लांति स्त्री० परिश्रम; थाक विलद् ४ प० भीनुं थवुं; पलळवुं विलन्न ('विलद्'नुं भू० कृ०) वि० आर्द्रे; भीनुं **षिलञ्** ४ आ० (केटलाकने मते प० पण) क्लेश करवो ; दुःखी थवुं ; दुःख पामवुं (२)दुःख देवुं; जुलम करवो(३)९ प० दुःख देवुं ; पीडवुं (४) दुःख वेठवुं **विलशित, विलब्द** ('विलश्'नुं भू० कृ०) वि०क्लेश पामेलुं; दु:ख पामेलुं(२) झांखुं थयेलुं (३) अ**संबद्ध –** अस्तव्यस्त (४) परस्पर विरोधी (बाक्य) (५) अर्थनी खेंचताण करवी पड़े तेवुं; स्पष्ट नहि तेवुं (६) पजवणी करे तेवुं; पीडा करेतेब् **क्लोब् १** आ० कायर बनवुं ; निर्वीर्य होवुं (२) १० आ० बीकण – भीरुथव् **क्लोब** वि० नपुंसक (२)कायर; निर्वीर्य (३)भीरु; बीकण (४)अञ्चलतः; उत्साह वगरनुं (५) पुं०, न० नपुंसक (६) नान्यतर जाति (व्या०) क्लेंद्र पुं० भीनाश; भेज(२) उपद्रव **क्लेश** पुं० दुःख; त्रास (२)परिताप (३) क्रोध (४) संसारव्यवहार के तेनी चिता (५) पाप भीरुता **क्लब्य न**० कायरता (२) निर्बळता (३) क्ब अ० क्यां ? क्यारे ? कये ठेकाणे ? **क्व – क्व** अ० 'क्यां आ . . . ने क्यां ते' क्वचित् अ० कोईक दाखलामां; कोईक ठेकाणे नवचित् -- व्यक्तित् अ० 'एक स्थळे आ ने बीजे स्थळे पेलुं'; 'कदीक – कदीक' क्वण् १ प० अस्पष्ट अवाज करवो (२) गणगणवुं(३)वगाडवुं (वासळी)

क्वणित न० अवाज; बाद्यनो अवाज नवय् १ प० उकाळव् क्वाण पुं० ध्वनि क्वाय पुं० उकाळो – काढो क्वापि अ० क्यांक; कोई ठेकाणे **क्षण् ८ उ० ई**जा करवी; घायल करवं (२) भांगीने ककडा करवा क्षण पु०, न० वखतन् एक माप सेकंडनो क्रुं भाग; पळ (२) विश्वांति; फ़्रसद (३) योग्य समय; तक; अदसर (४) उत्सव; आनंद; पर्व (५) निश्चय; नियम क्षणकर पुं० चंद्र **क्षणक्षेप** पुं० क्षणनो विलंब **क्षणचर पुं० राक्ष**य **क्षणदा** स्त्री० रात्री क्षणदाकर पुं० चंद्र **क्षणदासर** पुं० निशाचर; राक्षस **अण्युति, अण्यकाशा, अ**ण्यसा स्त्री० नाशवंत अणभंगुर वि० क्षणमां नाश पामे तेवुं; **अणमात्रम्** अ० क्षण वार माटे भणविध्वसिन् वि० क्षणभंगुर **अणिक** वि० क्षण सुधी चालतुः क्षणमा .नाश पामतुं क्षणेअणे अ० हरघडी; दरेक पळे क्षत् स्त्री० मारी नाखवुं ते; वध (२) ईआ; पीडा क्षत ('क्षण्'नुं भू० कृ०) वि० जखमी; घवायेलुं (२) फाडी नाखेलुं; भागी नाखेलुं; कचरी नाखेलुं; क्षीण करेलुं (३) न० जखम; द्रण (४) बळूरो (५) पीडा; संकट **भतज** न० रक्त; लोही **सतवृत्ति** वि० आजीविकानुं काई साधन रहेवा देवामां न आत्र्युं होय तेवुं मिति स्त्री० प्रहार; ईजा (२) व्रण; जखम (३) नाश (४) हानि ; नुकसान (५) प्रमाद; भूल(६)पडती;क्षय

क्षन् पुं• सारिय (२) द्वारपाळ (३) क्षत्रिय स्त्रीने शूद्रथी थथेलो पुत्र (४) दासीपुत्र क्षत्र पुं०, न० क्षत्रिय जातिनो पुरुष (२) क्षत्रिय जाति (३) सैनिक (४) सामर्थ्यः; शक्तिः; सत्ता (५) हिंसा क्षत्रबंधु पुं० नामनो ज क्षत्रिय; अधम विर्णनो पुरुष **क्षत्रिय** पुं० चार वर्णोमांना बीजा क्षत्रियः **क्षप् १०** उ० फेंकवुं क्षपणक पुं० बौद्ध के जैन भिक्ष **क्षपा** स्त्री० रात्रि **शपाकर** पुं० चंद्र अयरचर पुं० राशस: नियात्रर शपानस्य पुंठ अंद्र अपित वि० नाश करेलुं; घटाडेलुं; क्षीण अम् १ आ० [क्षमते], ४ ५० [क्षाम्यति] क्षमा करवी (२) सहन करवुं(३)धैर्य राखवुं: राह् जोशे (४) शक्तिमान थवुं - होबुं (५) सामुं थबुं क्षम वि॰ अमाशील (२) सहनशील (३) समर्थः; शक्तिमान (४) अनुकूळ (५) योग्य; लायक (६) सहने थई शके तेर्बु क्षमणीय वि० सहत करवा योग्य (२) क्षमाकरवायोग्य क्षमा स्त्री० खामोशी; दरगुजर करवुं ते; माफी (२) पृथ्वी क्षमान्त्रित वि० क्षमाचान;क्षमायुक्त असापन न० अमा – माफी मागवी ते **अमाभृत्** पुं० पर्वत (२) राजा क्षमिन् वि० क्षमाशील; धैर्यवान क्षय पुं० घर; निवास (२) घसारो; क्षीण थवुं ते; घटवुं ते (३) एक रोग; घासणी (४)अंत; नाश; ह्वास (५) प्रलय **क्षयकाल** पुंच प्रलयकाल क्षययु पुं० लांसी; उधरस; छींक क्षयपक्ष पुं • कृष्णपक्ष ; अधारियं **क्ष्यरोग** पुं० एक रोग; घासणी

क्षयिन् वि० नाशवंत; घटतुं; ओछुं यनारुं (२) क्षयना रोगवाळुं क्षयिष्णु वि० क्षय – नाश पामनार्ह **क्षर् १** प० वहेवुं (२) टपकवुं; झरवुं (३) क्षय पामवो; क्षीण थवुं (४) ओगळवुं (५) सरवुं; सरकी जबुं भर वि० क्षीण यतुं; नाशवंत (२) जंगम (३) न० देह; शरीर (४) प्रकृति क्षरण न० झरवुं ते; वहेवुं ते (२) परसेवो वळवो ते काल् १० उ० घोतुं; घोई काढतुं(२) लूछी नाखबु क्षंतव्य वि० क्षमा करवा योग्य **भंत्** वि० क्षमाशील (२) सहनशील आसर स्त्री० पृथ्वी (२) निद्रा क्षात्र वि० क्षत्रियनुं (२) न० क्षत्रिय जाति (३) क्षत्रियना गुणधर्म (शीर्यं, पराक्रम वगेरे) क्षाम वि० कृश;क्षीण;दूबळुं(२)अल्प; नानुं; ओछुं(३)निर्बळ; अश्वत (४) न० नाश क्षामा स्त्री० पृथ्वी क्षाम्य वि० सहन करवुं पडे तेवुं (२) क्षमा करबी पड़े तेवुं क्षार वि० खार्च (२) तीखुं (३) कडवुं (४)क्षारना गुणवाळु (५) पुं॰ मीठुं; सार; कोई पण क्षारधर्मी पदार्थ **क्षारित** वि० खोटुं आळ मुकायेलुं क्षाल, सालन न० धोवुं ते; धोई काढवुं ते **भार्कित** ('क्षल्'नुं भू०कृ०)वि०घोयेलुं (२) घोई नाखेलुं; लूछी काढेलुं क्षांत ('क्षम्'नुं भू० कृ०) वि० सहन करेलुं (२) क्षमा करेलुं (३) सहन-शील; सहिष्णु (४) न० धैर्य; क्षमा श्रांति स्त्री०क्षमा (२) सहनशीलता क्षि १ प० घसाई जवुं, ओछुं धवुं; क्षय पामवो (२) १, ५, ९ प० नाश करवो; क्षीण करवुं; ईजा करवी (३) दिताववुं (४) ६ प० क्षियति । रहेवं : वसवं

क्षित् वि० राज्य करनारुं; शासक क्षित ('क्षि'नुं भू० कृ०) वि० मारी नाखेलुं (२) क्षीण करेलुं क्षिता स्त्री० पृथ्वी क्तिति स्त्री ॰ पृथ्वी; जमीन (२) निवास-स्थान; घर(३)नुकसान; हानि(४) महाप्रलय (५) समृद्धि क्षितिकंप पुं० धरतीकंप क्षितिक्षित् पु०राजाः [दृष्टिमर्यादा श्रितिज्ञ पुं०वृक्ष (२) न०क्षितिजः; **क्षितिजा** स्त्री० सीता **क्षितितल** न० पृथ्वीनी सपाटी – तल क्षितिघर पुं॰ पर्वत क्षितिनाथ, क्षितिप, क्षितिपति, क्षिति-पास, क्षितिभुज् पुं० राजा क्षितिभूत् पुं० राजा (२) पर्वत **क्षितिरह** पुं० वृक्ष क्षितिस्पृश् वि० पृथ्वीनो निवासी; मनुष्य क्षितीश पुं० राजा क्षिप् ६ उ० फेंकवुं; नाखबुं (२) उपर मूकवु (३) फेंकी देवु; उतारी नाखवु(४) दूर करवुं; नाश करवो (५)मारी नास्त्रवुं (६) तिरस्कार करवो (७) पीडवूं क्षिप्त ('क्षिप्'नुं भू० कृ०) वि० फेंकायेलु; नंखायेलु (२) तजेलुं (३) उपेक्षित ; अनादृत (४) मुकायेलु (५) विक्षिप्त; गांड् क्षिप्सचित्त वि० व्यग्र चित्तवाळुं; अन्य-क्षिप्र वि० उतावळुं; त्वरित **क्षिप्रकारिन्** वि०चालाकः, त्वरायी काम करनार्ह क्तिप्रम् अ० एकदम; जलदी क्षीण वि० कृश; दूबळुं; घसाई गयेलुं; जीर्ण यई गयेलु (२) नाजुक (३) नानुं; अल्प (४) गरीब (५) निर्बळ; अशक्त (६) नाश पामेलुं क्षीणमध्य वि० पातळी कमरवाळूं

क्षीय वि० जुओ 'क्षीव'

भीर पुंब, तब दूध (२) पाणी **भीरकंठ** पुं॰ (घावतुं) **बा**ळक भीरज न० दहीं सीरधात्री स्त्री ०धाव ; धवडावनारी स्त्री सौरिष, भौरनिषि, शीरवारिषि, भीर-समुद्र, भीरसागर, श्रीराब्धि पुं० क्षीर -दूषनो महासागर **भौरिन्** वि॰ दूघवाळुं; दूघ देतुं क्षीरोद, क्षोरोदिध यु० जुओ 'क्षीरिध' क्षीव वि० उन्मत्त; दारू पीधेलुं (२) उष्केराई गयेल सु२ प० छींक खावी (२) उधरस खावी (३) ९ उ०, ५ प० कूदको मारवो; ठेकडो मारवो **भुष्प** ('क्षुद्' नुभू० कृ०) वि०्पग तळे रोळेलुं; कचरेलुं (२) लांडेलुं; पीसेलुं (३) जेना उपर घणी अवर-जबर होय तेवुं(मार्ग)(४) घणां जजे आचरेलुं ; अनुसरेलुं (५) उल्लंबायेलुं ; भंग करेलुं (ब्रत) (६) जितायेलुं **भुज्जमनस्** वि० पश्चात्ताप पामेळुं **भृत्** स्त्री० छींक **भुत्काम** वि० भूखथी कुश धयेलुं **ज्**त न०, **अ्**ता(--ति) स्त्री० छींक **शृद्**स्त्री० जुओ 'क्षुघा' भुष् ७ उ० कचरी नाखबुं; पग तळे रोळवुं (२) पीसवुं; खांडवुं **भृद्र** वि० नीच; हलकुं (२) नानुं; तुच्छ (३) दरिद्री; गरीब (४) कृपण (५) दुब्ट; ऋूर **भुद्रधान्य** न० हलकुं अनाज (सामो **वगे** रे) भुद्रा स्त्री० मधमाखी (२) वेश्या; नाचनारी (३) कर्कशा सुष् ४ प० भूख्या यवु सुधा स्त्री० भूख भुषान्त्रित, धुधार्त, क्षुषादित, क्षुषास्त् वि०भूरूयुं; क्षुघातुर **सुधित** ('क्षुध्'नुं मू० कृ०) वि० भूह्युं

क्षुप पुं० झा**र**वुं ['क्षुभित' **भु**ष्य वि० ['क्षुभ्'नुं भू० कु०] जुओ **सुभ् ४** प० कंपवुं; क्षोभ पामको क्षुभित ('क्षुभ्' नुं भू० कृ०) वि० कंपेलुं; क्षीभ पामेलुं; खळमळेलुं (२) बीनेलुं क्षुर पुं० अस्त्रो (२) बाण (३) क्षरी **भुरिकया** स्त्री० हजामत करवी ते **क्षुरप्र** पुं० एक प्रकारनुं बाण **क्षुरिका** स्त्री० छरी; कटार **भुरिन्** पुं० वाळंद; हजाम **भुरो** स्त्री० जुओ[®] 'क्षुरिका' ब्रुल्ड वि० नानुं; अल्प अल्लक वि॰ नानुः, अल्प (२) तुच्छ (३) दुष्ट; हलकुं क्षेत्र न० खेतर (२)स्थान;स्थळ (३) तीर्थक्षेत्र (४) देह (५) उत्पत्ति-स्थान (६) पत्नी क्षेत्रत वि० कुशळ; चतुर (२) पु० आत्मा (३) परमात्मा (४) खेडूत क्षेत्रपाल पु० खेतरनो रखेवाळ क्षेत्रविद्वि० क्षेत्रज्ञ (२) पुं० खेडुत (३) आत्मज्ञानी; ऋषि (४) आत्मा क्षेत्रिन् पुं० खेडूत (२) पति; स्वामी (३) जीवात्मा (४) परमात्मा क्षेत्रीकृट उ० — नुंक्षेत्र बनाववुं (२) मालिक बनवुं क्षेप पुं० फेंकवुं ते; नाखवुं ते; आम-तेम हलाववुं ते(२) मोकलवुं – छोडवुं ते (३) अनादर (४) उल्लंघन (५) विलंब (६) व्यतीत करवुं ते (समय) क्षेपक वि॰ नाखनारुं; फॅकनारुं (२) वघारानुं उमेरेलुं (ग्रंथमां) क्षेपण न० फेंकवुं ते (२) व्यतीत करवुं ते (समय) (३) गाळ; तिरस्कार क्षेपणि (-णी) स्त्री० जाळ (२) हलेसुं (३) गोफण क्षेम वि॰ सुख-शांति आपनारं (२) सुख-शांतिवाळुं; आबाद (३) प्०_i

न० सुख-शांति (४) कल्याण; श्रेय (५) सुरक्षितता; सहीसलामती क्षेप्रजूर वि० सुरक्षित स्थळे पराक्रमी; घरमां शूरु क्षेम्य वि॰ मुखशांतिवाळु (२)आबाद भोड पुं० हाथीने बांघवानी थांमलो भोभि स्त्री० पृथ्वी शो**रिणपति, भोणिभुज् युं**० राजा क्रोणी स्त्री० पृथ्वी क्षोब पुं० खांडतुं ते (२) जेनी उपर बाटवामां आवे छे ते पथ्यर (३) सूक्ष्मांश; रजकण क्षोबीयम् वि० घणुं नानुं (२) तुच्छ क्षोद्य वि० पग तळे कचरी नाखवा योग्य; उपर पर मूकवा योग्य क्षोभ पुं० कंपबुंते; ऊन्छळ बुते (२) खळभळाट (३)गभराट; व्यग्रता (४) ्रिबळभळाट करनाएं त **भोभण** न० उक्करणी करनारुं ते;

भौणि स्त्री० जुओ 'क्षोणि' भौणिषर, क्षौणिभृत् पु० पर्वत क्षीणी स्त्री० जुओ 'क्षोणि' भोड़ न० क्षुद्रता; अल्पता (२) मध (३) पाणी (४) भूळनी रजकण क्षौम वि० शणनुं बनेलुं (२) पुं०, न० शणनुं वस्त्र (३) वंडो; कोट (४) मेडी (५) न० रेशमी वस्त्र (६) अळसी क्षीर न० हजामत **भौरिक** पुं• वाळंद; हजाम **१मा** स्त्री० पृथ्वी **क्ष्माप, क्ष्मापति, क्ष्माभुज्** पुं० राजा **३माभृत्** पुं० राजा (२) पर्वत **क्ष्टेड** पुं० अवाज ; गरबङ (२) विष ; झे**र अवेडित पुं॰**, न॰ सिहनी अर्जना (२) युद्धनी गर्जना **क्ष्ट्रेल, १** प० कूदवुं **क्ष्रेलन** न०, क्ष्वेला, क्ष्रेलि, क्ष्रेलिका स्त्री० खेल; रमत (२) सक्तरी

ख

🕶 न० आकाश (२) इंद्रिय (३) शरीरनुं छिद्र (मों, कान, आंख, नाक बगेरे) (४) बिदु; अनुस्वार; शून्य क्षम पुं ० पक्षी (२) सूर्य (३) बायु (४) ग्रह **समयति** पुरुगरुड ह्मनाधिप, सनेश, खगेंद्र पुंच गरुड क्षच १ प० देखावुं; बहार नीकळवृं (२) १० प० बांधवुं; जकडवुं (३) पुं ० पक्षी जडवं (मणि वगेरेने) खचर वि० आकाशमां गति करतुं(२) सचित ('सव्'नु भू०कृ०)वि० विषेतुं; जकडेलुं (२)सज्जड बेसाडेलुं; जडेलुं सज, सजक पुं०, सजा स्त्री० रवैयो; मथनदंड सट्वा स्त्री० खाटलो सद्याक्ड वि० आळसु (साटले सूई

रहेतुं) (२) नीच ; अधम (३) मूर्ख खट्वांगपुं० खाटलानः पायाना आकारती माथे खोपरीवाळी गदा (शिव इ०नी) खड्ग पुं० तरवार **खड्गपत्र न०** तरवारनुं फळ् **सद्योत** पुं० आगियो (२) सूर्य **सम् १ उ०** खोदवुं; खोदी काढवुं **सनक** पुं० खाणमां खोदनार – खाणियो (२) चोर (३) उंदर **श्चनन** न० खोदबुंते **खनि** स्त्री० खाण खनित्र न० कोदाळी स्त्रनी स्त्री∘ खाण वस्त् **क्षपुष्प** न० आकाशकुसुम – असंभवित स्तर वि० कठण ; कर्कशः; नक्कर (२) तीक्ष्ण; तीव (३)अणीदार; धारवाळुं

(४)तीखुं(५) उष्ण(६)निर्देय(७) व्यथाकारक (शब्द) (८)पुं० गधेडो सरकुटी स्त्री० हजामनी दुकान; हजामनी थेली सरम् अ० तीवपणे; तीक्षणपणे **सरांशु** पुं० सूर्य **क्तजं**न न० वलूरवुं ते **सर्ज्**स्त्री० वलूर; खूजली **सर्जूर** पुं**०** खजूरीनुं वृक्ष (२)न० खजूर सर्पर पुं० लोपरी (२)भिक्षापात्र (३) ठींकर्रः, कलाड् **लर्म** न०रेशम (२) पुरुषातनः मरदाई खर्बवि ० ठींगणुं;वामणुं (२) पुं०, न० स्वर्वेनी संख्या (१०,००,००,००,०००) (३) कुबेरनो एक निधि खर्वट पु॰, न॰ पर्वतनी तळेटी आगळ आवेल शहेर (२) बसो गामडा बच्चेनुं मुख्य शहेर **खरित** वि० वामणुंबनेलुं **অল** पुं० হাত**; दुर्जन** (२) पुं०, ল০ अनाजनु खळुं – खळी (३) तेलनो नीचे जामतो कचरो (४) खरल **सलक** पुंज्यडो (२) लोटो बलित वि० टालवाळुं; टालियुं **बलि(-ली)** स्त्री० तेलनो कचरो (२) [तिरस्कार; अपमान खलोकार पुं०, खलीकृति स्त्री० भत्स्नी; खलीन पुँ०, न० लगामनी मोढामा रहेतो भाग ← चोकडुं **खलु** अ० खरेखर;नक्की (२) वाक्या-लंकार तरीके पण वपराय छे खल्ल पुं० पध्थरनो खल (२) चामडुं; खाल (३) मशक; पखाल **सत्वाट** वि० वोडा माथावाळुं; टालियं **खब्प** पं०कोघ:गुस्सो (२) निर्दयता स्तर पुंज्यामडीनी एक रोग **खंज् १**५० लंगडाव् **बंज** वि० लूलुं; लंगडुं संजन, संजरीट पु० एक पक्षी (जेनी

पूछडी सतत हाल्या करे छे) क्षंड् १ प० भागवुं; कापवुं; टुकडा करवा (२) पराजय करवो; हरा-ववुं (३) दूर करवुं; साबूद करवुं खंड वि॰ भांगेलुं (२) तूटक (सतत नहि तेवुं) (३) पुं०, न० भाग; टुकडो (४) पुस्तकनो विभाग; प्रकरण (५) समूह (६) पृथ्वीनो विभाग **लंडक** पुं०, न० टुकड़ो; भाग खंडन वि० भांगनारुं; तोडनारुं;नाश करनार्६ (२) न० भागवुं - तोडवुं ते (३) ईजाकरदी⊷करडवुंते (४) दलीलने तोडवी – जवाब आपवो ते (५) निराश करवुं ते **खंडपरशु, खंडपर्शु** पु० शंकर (२) परशुराम टुकडा **संब्धस्** अ० ककडे ककडे (२) टुकडे **खंडशः कु ८** उ० टुकडा करवा **संदित** ('संड्' नुभू० कृ०) वि० भागेलु; तूटेलु; नाश पामेलुं (२) तोडेलुं (दलील);जवाब आपेलुं(३)निराश थयेलुं; छेतरायेलुं संडितवृत्त वि० भ्रष्टचरित्र; पतित **संडिता** स्त्री० बेवफा प्रेमी के पतिथी छेतरायेली अने तेथी रूठेली स्त्री खंडीकृ ८ उ० टुकडा करवा खात ('खन्' नुं भू० कृ०) वि० खोदेलुं; लोदी काढेलुं (२) न० खाडो; खाई **खाद् १**प० खावुं **खादक** वि० खानारुं (२) पुं० देवादार खादन न० खोराक (२) खावुं ते **खादिर** वि० खेरना लाकडान् खाद्य वि० खावा स्रायक; खावानुं **खानि** स्त्री० खाण [एक माप खार पुं∘,खारि(−रो) स्त्री० अनाजनुं खांडव न० कुरुक्षेत्रनुं एक वन (तेर्ने अग्निए बाळी नाख्युं हतुं) **खिद् ४,७** आ० दुःखीथवुं (२) खिन्न थवुं; थाकी जवुं

स्तिम ('स्विद्'नुंभू० क्व०) वि० स्वेद पामेलुं (२) थाकी गयेलुं **क्षिल न० प**डतर जमीन; खेडघा वगरनुं खेतर (२) खाली जगा (३) पूर्तिरूपे उमेरेलुं (४) अवशेष **बिस्तीकृत** वि० बरबाद करेलुं; उजाडेलुं (२) अवरोधेलुं; रुकावट करेलुं **खिलीभृत वि० पसार न थ**ई शकाय तेवुं; रुकावटवाळुं (२) अशक्य बनेलुं; बंध पडेलू **खुर** पुं० खरी **खुरक्षेप** पुं० जुओ 'खुराघात' **खुरन्यास** पुं० खरीनी छाप पडवी ते **खुरली** स्त्री० शस्त्रास्त्रनी कसरत के [पछडावी ते (२) लात सुराघात पुं० (चालवाथी) पगनी सरी खुल्ल वि० नानुं (२) नीच; क्षुद्र स्रोचर वि० आकाशमां गति करतुं(२) पुं० पक्षी (३) आकाशचारी विद्या-घर के गांधर्व (४) ग्रह संचरी स्त्री० दुर्गा (२)विद्याधरी (३) आकाशमां ऊडी शकाय तेवी सिद्धि संचरोत्तम पुं० सूर्य स्रोट पुं० गामडुं (२) पुं०, न० ढाल (३) न० चामडुं(४) (समासने छेडे) दुःखी, हलकुं, तुच्छ -एवो भाव बतावे (उदा० 'नागरखेट' = तुच्छ शहेर) क्सेटक पुं० नानुं गामडुं (२)पुं०, न० ढाल

क्षेद पुं० थाक (२) हताशा; निराशा (३) दु:ख; पीड़ा (४) दिलगीरी **खेदित वि० खेद** पामेलुं; त्रासेलुं खोल् १ प० हालवुं; कंपवुं; झूलवुं(२) रमबु खेल वि० रमतियाळ (२)हालतुं;कंपतुं खेलन न० हलाववुंते (२) खेल; कीडा (३) नाटक; प्रयोग **खेला** स्त्री० कीडा; खेल; रमत खेलि स्त्री० रमत; कीडा **खेसर** पुं० खच्चर **स्रोड**् १ प० लंगडाव् स्रोड वि० लूलुं; लंगडुं; स्रोडुं स्रोल न० माथानुं रक्षण करवा पहेरातो टोप (सैनिकनो) **रूया** २ प० कहेवुं (२) वर्णवर्षु –प्रेरक० [स्थापयति] प्रसिद्ध करवुं (२) वर्णववुं (३) प्रशंसवूं स्यात ('स्था'नुंभू० कृ०) वि० कहेवायेलुं (२) प्रस्यात (३) वर्णवेलुं (४) वगोवायेलुं **स्याति** स्त्री० कीर्ति (२) प्रसिद्धि (३) प्रशंसा (४) नाम (५) वर्णन (६) ज्ञान; समज **स्थापन न० प्र**सिद्ध करवुं ते; जाहेर करवुं ते (२) कबूल करवुं ते स्यापित वि० जाहेर थयेलुं, वर्णवायेलुं

ग

ग वि० (मात्र समासने छेडे) जनारं, जतुं, रहेतुं, समागम करतुं -ए अर्थमां गगन न० आकाशः; आभ [वस्तु गगनकुसुम न० आकाशकुसुम;असंभवित गगनगति पुं० देव (२) ग्रह गगनघर वि० आकाशमां जेनी गति छे एवं (२) पुं० पक्षी (३) ग्रह (४) देव गगनसिह, वि० गगनचुंडी; घणुं ऊंचुं गगनविहारिन् वि० आकाशभारी
गगनसद् वि० आकाशमां रहेनारं(२)
पुं० देव
गगनसिंघु स्त्री० आकाशगंगा
गगनांगना स्त्री० अप्सरा
गगनेघर वि० जुओ 'गगनचर'
गज पुं० हाथी (२) लंबाईनुं एक माप
(सामान्य ३० आंगळ जेटलुं)

(२) वंगोवायेलुं

गजगित स्त्री० हाथीना जेवी चाल गजगामिनो स्त्री० हाथीना जेवी चाल-वाळी स्त्री गजता स्त्री० हाथीओन् जूथ गजदध्न वि० हाथी जेटल अंच् गजवंत पुं० गणपति (२) हाथीदांत (३) भीतमानी खीली; खींटी गजद्वयस वि० जुओ 'गजदघ्न' गजनिमीलिका स्त्री०, गजनिमीलित न० हाथीनी पेठे कशा तरफ आंख बंध करवी ते; जोता होवा छतां, जोयानो ढोंग करवो ते गजपुंगव पुं० मोटो – श्रेष्ठ हाथी गजमुक्ता स्त्री०, गजमौक्तिक न० हायीना कुंभस्थळमां पेदा थतुं मनातुं मोती गजपूर न० हाथीनुं टोळुं गजस्नान न० हाथीना स्नान जेवी निरुपयोगी प्रवृत्ति (हाथी नाह्या पछी शरीर उपर धूळ फेंके छे) गजानन पुं० गणपति गजापसद पुं० हलको हाथी; तुच्छ हाथी गजारि पुं० सिह **गजारोह** पुं० महावत गर्जेंद्र पुं० श्रेष्ठ हाथी; मोटो हाथी **गडि** पुं० वाछडो ; जुवान आखलो (२) आळसु बळद गङ्कर (–स्त्र) पुं० घेटुं गर्हरिका स्त्री० घेटांनी हार **गड्डरिकाप्रवा**ह पुं० गाडरियो प्रवाह गण् १० उ० गणवुं; गणतरी करवी (२) किमत आंकवी (३) दरकार राखवी (४) मानवुं ; -मां गणना करवी (५)ध्यानमां लेव् गण पुं० समूह; समुदाय; टोळुं (२) वर्ग ; मंडळ (३)शंकरनो अनुयायी वर्ग गणक पुं० गणितशास्त्री (२) ज्योतिषी गणन न० गणवुं ते; गणतरी करवी ते (२) मानवुं ~धारवुं ते

गणना स्त्री० गणतरी (२) लेखुं गणपति, गणाधिपति पुं० शंकर (२) गजानन – गणेश शास्त्रज्ञ गणि स्त्री० गणवुं ते;गणतरी (२) पुं० **गणिका** स्त्री० वेश्या(२)हाथणी **गणित** ('गण्' नुं भू० कृ०) वि० गणेलुं (२) ध्यानमां - गणतरीमां लेबायेलुं (३) न० गणितशास्त्र गणिन् वि॰ गण – टोळुं जेने छे तेवुं (२) पुं० आचार्य गणेश पुं० गणपति गण्य वि० गणनामां लेवा जेवुं (२) (समासने अंते) --ना वर्गनुं गत ('गम्' नुंभू० कृ०) वि० गयेलुं (२) मृत (३) नष्ट (४) जाणेलु; सम्जेलुं (५) (दशा) पामेलुं (६) -ने लगतु; -ने विषेतु (समासमा) (७)न० गमन ; जवुं ते (८) गति ;चाल गतत्रप वि० निर्लज्ज; शरम वितानुं गतदिनम् अ० गई काले गतप्रभ वि॰ शोभारहित; कांतिरहित गतप्रायः वि० लगभगः पूरुं थयेलुं ≕गयेलुं ग**सभर्तृका** स्त्री० विधवा (२) जेनो पति परदेश समो होय तेवी स्त्री **गतमनस्क वि० –**नो विचार करतं गतवयस् वि० वृद्धः; प्रौढ गतक्यथ वि० जेनुं दुःस दूर थयु छे करतु गतश्रम विश्वम के दुःखनी विचार न गतसस्य वि० मृत; निर्जीय (२) नीम गतसंग वि० आसक्ति विनानुं (२) -थी विमुख ; -ना प्रत्ये उपेक्षावाळ् गतस्पृष्ट वि० स्पृहा बिनानुं (२) दया – माया विनानुं गतागत च० जबुं-आवबुं ते (२) दारं-नार जन्म-मरण (३) स्थळ बदलवुं ते (४) भूत-भविष्यनुं वर्णन गताधि वि० चितामुक्त

गभस्तिमत्, गभस्तिमाछिन् पुं० सूर्ये

गताध्वन् वि० जेणे मुसाफरी पूरी करी छे तेवुं(२)अनुभवी; रहस्यने पामेलुं गतानुगतिक वि० बीजानुं अंध अनु-करण करनार्ह; आगळ जनारने अंध-पणे अनुसरनार्ह

गतायुस् वि० वृद्धः अशक्त (२) मृत गतार्तवा स्त्री० वृद्ध के वंध्या स्त्रीः **गतार्थ** वि० निर्धन (२) अर्थ विनात् गतासु वि० मृत; प्राणहीन **गर्तात** वि० अंतनी नजीक आवेलं गति स्त्री० जबुं ते; हालबुं-चालबुं ते (२) चाल (३) प्रवेश (४) अवकाश (५) प्रवृत्ति; ऋम (६) स्थिति; दशा (७) पहोंचवं ते; पामवं ते (८) मार्ग; रस्तो; उपाय (९) आशरो; शरणुं (१०) डहापण; समज(११) जीवननी अवस्था (१२) कर्मफळ-रूपे मरणोत्तर प्राप्त थती स्थिति गतिभंग पुं अटकवुं ते; थोभवुं ते गतिहीन वि० आशरा के शरण विनान **गतोत्साह** वि० उत्साह नाश पामेलुं गत्वर वि० जंगम (२) क्षणभगुर गद १ ५० बोलवुं (२) गणतरी करवी गद पुं० भाषण; वाक्य (२) व्याघि; रोग (३) बळराम (४) न० झेर गदा स्त्री० लडाईनुं एक हथियार गदाप्रज पुं० गद - बळरामना मोटाभाई --श्रीकृष्ण **गदाधर** पुं० विष्णु गदित वि० कहेलुं; वर्णवेलुं गदिन् वि० (हाथमां) गदावाळुं (२) व्याधिग्रस्त **गद्गद** वि० गळगळुं (२) पुं०, न० गळगळ् थईने बोलवुं ते गद्गदम् अ० गळगळुं थईने गद्य वि० बोलवान्; कहेवान् (२) न०

गवाय नहि एवं (पद्यथी ऊलटुं) ते

सभस्ति पु०, स्त्री० प्रकाशनुं किरण

गभीर वि० ऊंडुं (२) घेरुं (अवाज) (३) गाढुं (जंगल) (४)गंभीर(५) चतुर; प्रवीण (६) अगम्य ; रहस्यमय गम् १ प० [गच्छति] गमन करवुं; जबुं (२) पहोंचवुं; पासे जवुं (३) जुदुं पडवुं; विदाय थवुं (४)पसार थवुं – वीतवुं (समयनुं) (५) स्थिति – दशाने पामबुं(६)स्त्री-समागम करवो ~प्रेरक० पहोंचाडवुं; पमाडवुं (२) समजाववुं;स्पष्ट करवुं(३)अर्थ थवो -करवो (४) (स्थळे) **हाववुं** (५) आपवुं; बक्षवुं गम वि०(समासने अंते) --जतुं,--पहोंचतुं, -पामतुं (उदा० 'हृदयंगम')(२)पुं० जवुं ते (३)कूच करवी ते (४)स्त्रीसंग गमक वि० सूचक; पुरावारूप (२) खातरी करावनाइं **गमन** न० जवुं ते;गति;चाल(२)पासे आववुं ते (३) आक्रमण माटे कूच (४) प्राप्त करवुं ते (५) ज्ञान;समज(६) सहन करवुं ते (७)स्त्रीसमागम गमनीय वि० पासे जई शकाय तेवं (२) गोचर;पात्र (३)सुबोध;समजी शकाय एवं (४) अनुकूळ; इष्ट; उचित (५) संग माटे योग्य (स्त्री-पुरुष) (६) मटी शके तेवुं (दर्द) गमागम पुं० जबुं अने आववुं ते (२) समाधाननी मंत्रणा गम्य वि० जुओं 'गमनीय' **गर** पुं० रोग (२) पुं०, न० झेर गरण न० गळव्ं ते (२) छांटवुं ते (३) **गरद** वि० झेर आपतार्ह (२) पुँ०,४० **गरल** पुं०, न० विष; झेर **गरिमन्** पुं० महत्त्व; मोटाई(२)भार; बंजन (३) श्रेष्ठता (४) योग्यता; किंमत (५) आठ सिद्धिओमांनी एक

गरिष्ठ विरु सौथी मारे (२) सौथी **व अग**त्यम्: [।] (२) व**षु अग**स्यन् गरीयस वि० (बेमां) वधु वजननुं गरुष पु० पक्षीओनो राजा;विष्णुन् बाहन गरुषकेतु, गरुष्टध्यज पु० विष्णु 🔸 गरुवाग्रज पुं० अरुण् (सूर्यनो सारिथ) गरुडांक पुं० दिख्यु गरुत् पुं० पंखीनी पांख [(३) पक्षी गरुत्मत् वि० पांसोबाळुं (२) पुं० गरुङ गर्गर पुरुगागर; दहीं वलोबवानुं पात्र गर्जा १ प०, १० उ० गर्जना करवी (२) गाजबु गर्जन न०, गर्जनास्त्री० गर्जवुंते; तेथी बतो के तेना जेवो ध्वनि - अवाज र्गाजल वि० गाजेलुं (२) बडाश मारेलुं (३) न० बादळांनो गडगडाट **गर्त** पुं०, न०, **गर्ता** स्त्री० खाडो; खाई (२) गुफा गर्दम प्०गभेडो गर्मपु० उत्कट इच्छा; लोभ गर्धन, गर्धित, गर्धिन् वि० लोभी; लालच् गर्भ पुं० गर्भाशय (२) माना पेटमां रहेलुं जीवनुं रूप (३) गर्भधारण (४)अंदरनो भाग; मध्यभाग गर्भगृह न० जुओ 'गर्भागार' गर्भदास पुं० जन्मयी जदास – गुलाम गर्भपात पुं० गर्भस्राव; चोथे महिने गर्भ गळी जवो ते गर्भभवन न० जुओ 'गर्भागार' गर्भवती स्त्री० संगर्भा स्त्री गर्भवास पुरु गर्भनो उदरमा वास गर्भवेश्मन् न० जुओ 'गर्भागार' गर्भस्राव पुं जुओ 'गर्भपात' गर्भागार न० गर्भाशय (२) अंतःपुर (३) मंदिरनो गभारो गर्भाषान न० गर्भ मुक्तको ते के धारण करवो ते (२) एक संस्कार गॅभिणी स्त्री० संगर्भा स्त्री

गर्भित वि० गर्भवाळुं (२) — श्री पूर्ण गर्भेतृप्त वि० जन्मथी ज संतीषी(२) घनथी के संततिथी तृप्त (३) आळसु गर्भेशूर वि० बायलुं; जुस्सा विनानुं गर्भेक्वर पुं० गर्भश्रीमंत गर्वपु० अभिमान ; गुमान गर्बित ('गर्ब्'न् भू० कु०) वि० गर्ब-वाळुं; अभिमानी गर्हे १, १० आ० ठपको देवो; तिर-स्कारवुं (२) आरोप मुकवो; आळ मुकवुं (३) दिलगीर थवुं **गर्हेच** न०, **गर्हचा, गर्हा** स्त्री० ठपको ; तिरस्कार गहित ('गर्ह्', नुंभू० कृ०) वि० निदेलुं; तिरस्कारेलुं (२) अधमः हलकुं (३) न० तिरस्कार करवा योग्य कृत्य गह्यं वि० निद्यः; तिरस्कारवायोग्य गल् १५० झरवुं; टपकवुं; गळवुं(२) नीकळी पडवुं; पडी जवुं (३) अदृश्य थर्बु; नाश पामबुं (४) गळबुं ; स्ताबुं गल पुं० गळुं; डोक दिवावकी ते गलहस्स पुं० गळुं पकडवुं ते; गळची **गलित** ('गल्'नुंभू० कृ०) वि० पडी गयेलुं; नीचे पडेलुं (२) टपकेलुं; **झ**रेलुं; गळेलुं (३) पीगळेलुं (४) अदृश्य थयेलुं; ज्तुं रहेलुं (५) छूटुं थयेलुं; ढीलुं थयेलुं (गांठ) (६) खाली थयेलुं; टपकी गयेलुं (७) गळेलुं – गाळेलुं (पाणी वगेरे) (८) बगडी गयेलुं (९) ओछुं थयेलुं; घटी गयेलुं पिछली उमरन् ग**लितवयस्** वि० वृद्धावस्थामां आवेलुं; गल्ल पु० गाल गल्लकं, गल्बकं पुं० दारू पीवानु पात्र गवय पुं० गलकंबल बिनानुं, बळदना आकारनुं पशु ग**वाक्ष** पुं० पवन आववा मस्टेनुं बाकुं (२) जाळियुं; जाळी

गर्वापति पुं० गोवाळ (२) सांढ(३) अग्नि (४) सूर्य गवेष् १ आ०, १० प० शोधवुं; शोध करवी (२) अत्यंत इच्छा करवी; प्राप्त करवा प्रयत्न करवो गवेष विश् शोधतुं (२) पुंश् शोध ग**वेषण न०, गवेषणा** स्त्री० शोध ; तपास ग**वेषित** वि० शोथेलुं; तपास करायेलुं गबोद्ध पुं० उत्तम गाय अथवा सांढ गव्य वि गायनुं; गाय संबंधी (२) गायमांथी उत्पन्न थयेलूं(दूध, छाण इ०) (३)गायने योग्य -- हितकर (४)न० गायनुं धण; गोसमूह (५) दूध(६) गोचर जमीन (७) गोरोचन (८) धनुष्यनी पणछ – दोरी गब्यूत न०, गब्यूति स्त्री० वे कोश जेटलुं अंतर (२) गोचर; चरो गहन वि० गाढुं; ऊंडुं (२) दुर्गम (३) दुर्बोघ; कठिन (४) गंभीर; भन्य (५) न० दुर्गम जंगल गह्यर वि० ऊंडुं; दुर्गम (२) मनमा गूंचवायेलुं (३) न० ऊंडो खाडो (४) जंगलः; झाडी (५) गुफा (६) दुर्गम स्थान (७) समस्या; कोयडो (८) प्॰ निकुंज; लतामंडप **गह्वरित** वि० विचारमां सोबाई गयेलुं (२) संतायेलुं; खुपायेलुं गंगा स्त्री० गंगानदी गंगाज पुं० भीष्म (२) कार्तिकेय **गंगाद्वार** न० हरिद्वार गंगापुत्र पुं० भीष्म (२) कार्तिकेय **गंगावलार** पुं० गंगानुं स्वर्गमांथी पृथ्वी पर आबर्बुते ते स्थान गंगासागर पुं० गंगा ज्यां समुद्रने मळे छे गंगासुत पुं० भीष्म (२) कार्तिकेय गंगो**र्भेट** पुंच्यंगानुं मूळ गंगील पुं० एक मणि (गोमेद) **गंज पुं**०,न० खजानो ; भंडार ; कोठार (२) दाणापीठ

गंजन वि० चडियातुं (२) विजयी गंड पुं० गाल (२) हाथीनी गंडस्थळ (३) गूमडुं (४) गेंडो (५) गांठ **गंडक** पुं० गेंडो (२)गांठ (३)गूमडुं (४) अंतराय; विघ्न [नाम (२)गेंडी गंडकी स्त्री० उत्तरं हिंदनी एक नदीनुं **गंडग्राम** पुं० मोटुं गाम **गंडभित्ति** स्त्री० भींत जेवो पहोळो गाल (२) हाथीनो मद झरे छे ते भाग **गंडभेद** पुं० चोर गंडमाल पुं॰, गंडमाला स्त्री॰ गळानी गांठ उपर सोजो आवदो ते **गंडरोल** पुं० भूकंप वगेरेथी गबडी गयेलो मोटो पथ्थर कुभस्थळ **गंडस्यल** न० हाथीना लमणानो भाग; **गंडीर** पुं**० शूरवी**र (२)पहेलवान (३) बीजाने बचाववा माटे लडनार **गंड्** पुं०, स्त्री०, गंड्र स्त्री० ओसीकुं; तिकयो (२) गांठ (३) सांधो गंड्र पुं ॰ कोगळो (२) खोबो (पाणीनो) **गंडोपघान** न० गालमसूरियुं **गंसच्य** वि० जवा लायक; जवा माटेनुं गंत्री स्त्री० बळदगाडी गंध पुं० सोड; वास (२) सुवास (३) सुगंधी पदार्थ (४) गंधक (५) गर्व; अभिमान (६) चंदनतो लेप (७) संबंध; सगाई (८) पाडोशी (९) सरखावणुं (१०) (समासमां) 'बहु ओछुं' – एवो अर्थ बतावे (उदा० 'घृतगिघ') (११) न० सोडम ; वास (१२) अगरु गंधक पुं० एक खनिज पदार्थ गंधकाली स्त्री० व्यासमाता – सत्यवती गंधगज,गंघद्विप पुं० उत्तम जातिनो हाथी **गंधन** न० सतत प्रयत्न;खंत(२)हिंसा; वध (३) प्रगट करवृं ते; सूचन गंधर्व पु॰ देवोनो गर्वयो; एक देवजाति (२)गायक (३)घोडो (४)मूआ पछीनी अने जन्म्या अगाउनी जीवनी स्थिति

गंधवंनगर, गंधवंपुर न० आकाशमां गंधर्वोनुं कल्पित नगर; मृगजळ पेठे आकाशमां देखाती नगरनी आकृति गंधर्यविद्या स्त्री० संगीतशास्त्र **गंधर्वविवाह** पुं० विवाहनो एक प्रकार (जेमां वर-कन्या पोतानी मेळे छानी रीते देहसंबंध करी परणी जाय छे) **गंघवह, गंघवाह** पुं० पवन गंबहस्तिन् पुं० जुओ 'गंधगज' **गंधादध** न० चंदन गंधि, गंधिक वि० (समासने अंते)-ना गंधवाळुं (२) जेमां गंधमात्र छे - बहु ओ छुं प्रमाण छे एवुं (३) पुं० सुगंधी पदार्थ वेचनारो गंधोली स्त्री० पीळी भमरी गंभीर वि० जुओ 'गभीर' गा १,२ आ०,३ प० जवुं (२) स्तुति करवी; वखाणवुं(३)कोई स्थिति के दशाने पामबुं गाढ़ ('गाह्,'नुंभू० क्ट०) वि० डूबकी मारेलु; प्रवेशेलु (२) खूब वसवाट-वाळुं; भीडवाळुं(३)चपसीने बेठेलुं; खूब दबायेलुं (४) घट्ट; गाढुं (५) अंडु; दुर्गम (६) अत्यंत; तीव्र **गाउतरम्** अ० वधु चपसीने ; वधु दबा-वीने;वधुतीव्रताथी गाउम् अ० अत्यंत भार दईने: तीव्रपणे: **गाउम्**ष्टि वि० कंज्स; लोभी **गाउवचस्** पुं० देडको गात्र न० देह (२) शरीरनो अवयव **गात्रक** न० शरीर गात्रयष्टि स्त्री० पातळी -- नाजुक काया गाचक पुरु गर्वयो गाबा स्त्री० स्तोत्र (वेदनुं नहीं एवं) (२) श्लोक (३) कथा; आख्यान (४) गावुं ते;गीत (५) एक प्राकृत भाषा **गायिक** पुं० जुओ 'गायेक' गायिका स्त्री० गीत; स्तोत्र

गाम् १ आ० रहेवुं; ऊभा रहेवुं (२) जना नीकळवुं; प्रवेशवुं (३) तपासबुं; शोधवुं(४)गूथवुं, रचवुं (ग्रंथ इ०) **गाध** वि० छोछहं;पार करी शकाय एवं (२) न० छीछरा पाणीवाळुं स्थान; उतार(३)लोभ;तृष्णा;कामना(४) तळियुं;तळ [(साधि राजाना पुत्र) **गाधिनंदन, गाधिपुत्र** पुं० विश्वामित्र गान न०गीत (२) स्तुति (३) ध्वनि गानीय न०गीत जितुं (मार्ग) **गामिक** वि० (समासने अंते) --अतुं ; लई गामिन् वि० (समासने अंते ज) जनार्ह (२) –नी उपर सवारी करनारुं (३) लई जतुं; दोरी जतुं (४) —ने लागु पडतुं; -ना संबंधी गाय पुं० गायन; गावुं ते गायक पुं० गानारो (२) नट गायत्री स्त्री० एक वैदिक छंद(२) एक प्रसिद्ध मंत्र (संघ्या वखते जपातो) (३) ब्रह्मानी पत्नी (४) दुर्गाः गायन पुं० गायक (२) न० गावुं ते (३) गावानो घंघो **गायड** वि० गरुड जेवुं(२) गरुड संबंधी (३) पुं०, न० मरकत मणि (४) सापना झेरनो मंत्र (५) एक व्यूह गारुडिक पुं० गारुडी; सापनी मंत्र जाणनार (२) मदारी **गारुत्मत** वि० गरुडना आकारनुं (२) गरुडनी शक्तिवाळुं (अस्त्र) **गार्ध्यं** न० लोभियापणुं गार्हकमेथिक पुं० गृहस्थनुं कर्तव्य - धर्म **गार्हपत्य** पुं० गृहस्थे राखवाना त्रण अग्निमांनो एक (२) ते अग्निनं स्थान गार्हस्थ्य न० गृहस्थाश्रम; गृहस्थधर्म (२) घरखटलो गालन न० गाळवुं ते (प्रवाहीने) (२) ओगरळबुं ते (३) गाळ भांडवी ते गालि स्त्री० गाळ; अपशब्द

गाह् १ आ० डूबकुं मारवुं; नाहवुं(२) ऊंडुं पेसबुं; चोतरफ फरवुं (३) हला-बर्बु; बलोवर्बु(४)तल्लीन धर्बु (५) छुपावुं मारबुत गाह पुं०, गाहन न० नाहवुं ते;डूबकुं गांग, गांगेय वि० गंगा नदीनुं; गंगा उपरनुं(२)पुं० भीष्म(३)कार्तिकेय **गांडिय** पुं०, न० अर्जुननुं धनुष्य गांडिवधन्वन् पुं० अर्जुन मांडीय पुं०, न० जुओ 'गांडिव' गांडीबधस्वन् पु० जुओ 'गांडिववन्वन् ' **गांडीविन्** पुं० अर्जुन गांत्री स्त्री० बळदगाडी गांविली स्त्री० गंगा गांदिनीसुत पुं० भीष्म (२)कार्तिकेय गांधर्व वि० गंधर्वनुं; गंधर्वने लगतुं (२) पुं० गंधर्व ; स्वर्गनो गायक (३) आठ लग्नप्रकारोमांनो एक; गंधर्व विवाह (४) एक उपवेद – संगीतशास्त्र (५) घोडो (६) न० संगीतशास्त्र **गांधर्वक** पुं० गर्वयो गांधर्वकला, गांधर्वविद्या स्त्री० संगीत गां**धविक** पुं० गवैयो [(२) दुर्योधन गांधारि पुं दुर्योधननो मामो – शकुनि गांधारी स्त्री० गांधार देशना राजानी पुत्री - धृतराष्ट्रनी पत्नी - दुर्योधना-दिनी माता – शकुनिनी बहेन गांधिक पुं० सुगंधी पदार्थी वेचनारो (२)कारकुन(३)न० सुगंधी द्रव्यः गांभीर्य न० अंडाण (पाणीनुं के अवाजनुं) (२)गंभीरता (अर्थनी के चारित्र्यती) (३) उदारता गिर्स्त्री० भाषा; वाणी; शब्द (२) दाणीनी देवता - सरस्वती भिरा स्त्री० वाणी;भाषा(२)स्तुति **गिरि** बि० पूज्य; सन्माननीय (२) पुं॰ पर्वतः; खडक **गिरिक** पुं० शिव

गिरिकंटर पु० पर्वतनी गुफा विरिजा स्त्री व पार्वती (२) गंगा **गिरिजातमय** पुं० कार्तिकेय (२)यणपति गिरिजाधव, गिरिजापति पुं० शिव गिरिज्बर पुं॰ इंद्रनुं वज्र **गिरितनया** स्त्री० पार्वेती गिरिदुर्ग पुं० पर्वत उपरनो किल्लो गिरिध्वज पुं० इंद्रनुं वज **गिरिनंदिनी** स्त्री० पार्वती (२)गंगा (३) **गिरिप्रस्य** पुं० पर्वत उपरनो सपाट भाग गिरिभिष् पुं० इंद्र (२) स्त्री० नदी गिरिराज् (--ज) पुं० हिमालय **गिरिश्रज** न० मगधनी राजधानी – राजगृह **गिरिश** पुं० शिव (कैलासे रहेनार) गिरिश्वंग पुं० गणपति **गिरिसुता** स्त्री० पार्वती **गिरोझ, गिरींद्र** पृं० शंकर (२) हिमालय **गिर्वाण** पुं० देव **गिलित** ('गिल्'नुं भू० कृ०) वि० गळेलुं; गीत ('गै'नुंभू० कृ०) वि० गायेलुं; गवायेलुं (२) कहेवायेलुं (३) न० गावुं ते; गीत गीतक न०गीत; गायन **गीतबंघन** न० गावा माटेनुं महाकाव्य गीता स्त्री० केटलाक धार्मिक पद्मग्रंथोने आपवामां आवेलुं नाम; खास करीने श्रीमद् भगवद्गीता गीति स्त्री०गीत (२)गावुंते (३)एक छंद (४) साममंत्र गीतिका स्त्री० नानु गीत **गीर्ण ('गृ'नुं भू० कृ०)वि० गळी** जवायेलुं (२) वर्णवायंलु गीर्वाण पु०देव **गुच्छ, गुच्छक** पुं० गोटो; झूडो (२)फूलनो गुच्छो (३) मोरनां पीछांनो झुडो गुटिका, गुटी स्त्री० नानी गोळी(२)मोती गुड पुं० गोळ (खाद्य) (२) गोळो; दडो

गुडाकेशः पुं० शंकर(२)अर्जुन(जटियां जेवा वाळ 'गुडा' उपरथी)

गुण् १० उ० गुणाकार करवो (२) आमंत्रण आपर्व (३) शिखामण आपर्व (३) शिखामण आपर्व (३) शिखामण आपर्व (३) स्म (३) सद्गुण; सारो गुण (४) लाभ; उपयोग (५) असर; परिणाम (६) दोरी; दोरो; दोरडी (७) धनुष्यनी दोरी; पण्छ (८) बीणा वगेरे बाद्यना तार (९) दीवानी वाट; दिवेट (१०) अधिकता; उत्कर्ष (११) प्रकृतिना घटक गणाता — सत्त्र, रजस् अने तमस् ए त्रण गुणोमांनो दरेक

गुणकार पुं० गौण वस्तुओ राधनार रसोइयो (२) भीमसेन

गुणकृत्य न० पणछ तरीकेनो उपयोग
गुणकान न० गुण गावा ते; गुणनुं वर्णन
करवुं ते [गुणोथी आकर्षाय तेवुं
गुणगृष्ट्या वि० गुणोनी कदर करनारुं;
गुणगौरी स्त्री० शील-गुणवती स्त्री
गुणग्रहीतृ वि० गुणनी कदर करनारुं
गुणग्रहीतृ वि० गुणनी कदर करनारुं
गुणग्रहक, गुणग्राहिन्, गुणका वि० गुणनी
कदर करनारुं

गुणतः अ० गुण प्रमाणे; गुण अनुसार गुणता स्त्री०, गुणस्य न० गौणपणुं(२) उत्तमपणुं;योग्यता (३) दोरडी होवापण् गुणन न० गुणाकार (२) गणतरी (३) गुणोनुं कीर्तन

गुणनिका स्त्री० अम्यास; पुनरावर्तन (२) माळा; हार (३) नृत्यकळा

गुजपूर न० गुणसमुदाय गुजप्रकर्ष पुं० गुणोनी उत्तमता गुजरात पुं० बीजाना गुणोमां आनंद -आसन्ति

गुणवस्ता स्त्री० सारा गुणोवाळा होवा-पणु (२) उत्तमता; श्रेष्ठता गुणसंस्थान न० सांस्यशास्त्र गुणसंपद् स्त्री० गुणसमृद्धि
गुणाकर पुं० गुणोनी खाण — सर्व सद्गुणो बाळो मनुष्य (२) शिव
गुणागुण पुं० पाप-पुण्य; धर्म-अधर्म
गुणागुण वं० पाप-पुण्य; धर्म-अधर्म
गुणाग्य न० उत्तम गुण; मुख्य गुण
गुणाग्य नि० सारा गुणोयुक्त
गुणातीत नि० सत्त्व नगरे त्रण गुणोने
— तेमनां कार्योने ओळंगी गयेलुं (परमात्मा; मुक्त)

गुणानुबंधित्व न ० सद्गुणो साथेनो संबंध गुणाभय पु० सद्गुणी गुणांतर न० बीजो (मारो) गुण गुणित वि० गुणेलुं (२) ढगलो करेलुं; एकत्रित करेलुं

गुणिन् वि० गुणयुक्त; सद्गुणी (२) शुभ युणीभूत वि० गौण बनेलुं; मूळ अर्थ के अगत्य बिनानुं थयेलुं (२) गुणरूप बनेलुं गुणोत्कर्ष पुं० गुणोनी बाबतमां श्रेष्ठताः; उत्तम गुणोनी प्राप्ति

गुणोपेत वि० गुणयुक्त; सारा गुणवाळुं गुणौघ पुं०, न० गुणोनो समृह गुढ न०, गुढा स्त्री० शरीरमांयी विष्ठा नीकळवानुं द्वार

गुप् १ प० [गोपायित] रक्षण करवुं; बचाववुं (२) संताडवुं; छुपाववुं (३) ४ प० गमराई जवुं; व्याकुळ थवुं; व्यय थवुं (४) १० उ० प्रकाशवुं (५) बोल्खुं (६) संताडवुं (७) १ आ० [गोपते] संताडवुं; छुपाववुं (८) १ आ० [जुगुप्सते] धिक्कारवुं; तिरस्कारवुं (९) निदवुं (द्वितीया के पंचमी साथे)

गुप्त ('गुप्' नुं० भू० कृ०) वि० रक्षा-येलुं; बचावेलुं (२) गुप्त राखेलुं; संताडेलुं (३) खानगी; छानुं (४) नजरे न पडतुं; अदृश्य

गुप्तगति. पुं० गुप्तचर; जासूस गृ<mark>प्तचर</mark> वि० गुप्त रीते जनार्घ (२) पुं० जासूस **गुप्ति** स्त्री० रक्षण ; बचाव (२) छुपाववुं ते (३) ढांकवुं ते; म्यानमां मुकवुं ते (४) बंधन ; केंद्र (५) भोंयरुं (६) किल्लो **गुरु** वि० भारे; वजनदार (२) मोटुं; विशाळ (३) दीर्घ; लांबुं (४) महत्त्वनं (५) दु:सह; तीव्र (६) पूज्य (७) पचवामां भारे (८) अभिमानी (९) श्रेष्ठ; उत्तम (१०) सामे न थई शकाय तेवुं; प्रबळ (११) असूत्य (१२) पुं० पिता; पूर्वज; ससरो (१३) पूज्य के वडील माणस (१४) शिक्षक; अध्यापक (१५) आचार्य; धार्मिक संस्कार आपनार (१६) स्वामी; उपरी (१७) बुहस्पति (१८) द्रोणाचार्य गुरुक वि० थोडुंक भारे **गुरुकुल** न० गुरुनुं घर; विद्यापीठ **गुरुकृत** वि० पूजेलुं (२) घणं महत्त्व आपेलुं; मोटुं – उत्तम मानेलुं **गुरुक्रम** पुं० गुरु द्वारा चाल्युं आवेळुं परंपरागत शिक्षण – उपदेश गुरुचर्या स्त्री० गुरुसेवा **गुरुजन** पुं० वडील के पूज्य पुरुध गुरुतर वि० वधु अगत्यनुं (२) वधु पूज्य (३) वधु भारे (४) वधु मुश्केल **गुक्ता** स्त्री० वजन; भारेपणुं (२)मुञ्केली (३)महत्ता (४)पूज्यता (५)अगत्य गुरुवक्षिणा स्त्री० अभ्यास पुरो कर्या पछी गुरुने आपवानी दक्षिणा **गुरुलाघव** न० ओछुं-वत्तुं मृत्य के अगत्य **गुरुवर्तिता** स्त्री० गुरु के वडील प्रत्येनुं आज्ञांकितपणुं **गुरुवर्तिन्** पुं० गुरुने घेर रहेतो विद्यार्थी **गुरवृत्ति** स्त्री० गुरु के वडील प्रत्ये आज्ञांकितपणे वर्तवुं ते गुरुष्यव वि० भारे व्यथायुक्त गुरुव्य (गुरु +स्व) न० गुरुनी मिलकत गुर्जर पुं० गुजरात देश के तेनो वतनी **गुर्वर्थ** वि० अगत्यनुं(२)पुं०गुरुदक्षिणा

गुवंगना स्त्री । गुरुपत्नी **गुविणो, गुर्बी** स्त्री० सगर्भा स्त्री गुलिका स्त्री० दडो; मणको (२) गोळो (३) मोतो गुल्फ पुं० घूंटी; क्टण गुल्म पुं०, न० झाडी (२) किल्लो (३) सैन्यविभाग (४) बरोळ;ते वधवानो रोग (५) छावणी (६) तंबू गुह् १ उ० संताडवुं; ढांकवुं **गुह** पुं० कार्तिकेय **गुहा** स्त्री० गुफा (२) खाडो (३) अंतःकरण; बुद्धि (४) छुपादवुं ते **गुहाञय** वि० गुफामां रहेनार्हः, गुफामां सूनाइं (२) हृदय के अंतःकरुणमां **गुह्य** वि० संताडवा योग्य; गुप्त राखवा योग्य (२) गूढ (३) न० गुप्त बात; रहस्य (४) एकांत स्थळ (५) पुं० दंभ; पाखंड (६) काचबो दिवजाति गुह्यक पुं० कुबेरना भंडारनो रक्षक; एक गुंज् १ प० गुंजबुं; गुंजारव करवी **गुंज** पुं० गुंजारव (२) गुरूक्को **गुंजन** न० गुंजबुं ते; गुंजारव गुंजा स्त्री० चणोठीनो छोड(२)चणोठी **गृंजित** न० गुंजारव; गणगणाट **गुंठन** न० ढांकवुं ते; छुपाववुं ते (२) चोपडवुं – चोळबुं ते **गुंठिस** वि० घेरायेलुं; ढंकायेलुं **गुंफ् ६** प० परोववुं, गूंथवुं गुंफित ('गुंफ्'नुं भू० कृ०) वि०गूंथेलुं; परोवेलु गूढ ('गुह्र्'नुं भू० कृ०) वि०संताडेलुं; ढांकेलु (२) गुप्त; छानु राखेलु (३) खानगी (४) नजरे न पड़े तेवुं गूढचार, गूढचारिन् पुं० जासूस गूर्जर पुं० जुओ 'गुर्जर' गूर्व पुं० कूदको गृद्ध ('गृध्' नुं भू० कृ०) आसक्त

गृष् ४ प० लोभ करवो; अत्यंत तृष्णा राखवी गृष्नु वि० लोभी;इच्छावाळुं;आतुर गृध्य न० लोभ ; तृष्णा मृध्र वि० लोभी ; विषयेच्छु ; कामी (२) पुं०, न० गीध **यृध्रपति, गृध्रराज** पुं० जटायु गृष्टि स्त्री ० एक बार वियायेली - जुवान गाय (२) जुवान पशु-मादा (समासमां) गृह न० घर (२)पत्नी (३) गृहस्थाश्रम गृह पुं० ब० व० निवासस्थान ; घर (२) पत्नी (३) गृहस्थाश्रम; घरखटलो गृहक न० वाटिका गृहकर्तृ पुं० घर बांधनार; सुतार गृहगोघा स्त्री० घरोळी [गृहकलह **गृहक्छिद्र** न० घरनी गुप्त वात (२) गृहदार न० घरनो थांभलो गृहदीप्ति स्त्री०धरनी शोभारूप सद्गुणी गृहपति पुं० गृहस्य; गृहस्थाश्रमी (२) घरनो मुख्य माणस (३) गामनो मुखी - आगेवान गृहमणि पुं० दीपक; दीवो गृहमेघ पुं० घरोनो समुदाय गृहमेधिन् पुं० गृहस्य; गृहस्याश्रमी गृहयंत्र त० ध्वजदंड गृहसार पुं० मिलकत गृहस्य पुं० गृहस्थाश्रमी पुरुष गृहस्याश्रम पु० चार आश्रमो पैकी बीजो आश्रम (जेमां विद्यास्यास पूरो करीने, लग्न करी, गृहस्थनां कर्तव्य बजावे छे) गृहिणी स्त्री० गृहस्यनी स्त्री; घर-- प्रतिष्ठा धणियाणी गृहिणीपद न० गृहिणी तरीकेनी पदवी गृहिन् पुं० मृहस्थाश्रमी पुरुष गृहीत ('ग्रह्'नुं भू० कृ०) वि० लीघेलुं; पकडेलुं (२) स्वीकारेलुं, कबूल करेलुं (३)मेळवेलुं(४) शीखेलुं; समजेलुं; जाणेलुं (५) पहेरेलुं

गृहीतिन् वि० शीखेलुं; भणेलुं **गृहेज्ञानिन्** वि० धरमां डाहच्युं; विन-अनुभवी ; मूर्ख [राचरचीलु गृहोपंकरण, गृहोपस्कर ने० धरतुं गृह्य ('गृह्' उपरथी) वि० आकर्षेवा योग्य; –थी प्रसन्न थतुं (२) घेर पाळेलुं; घरमा राखेलुं (३) आधार राखतुं (४) —नी बहार रहेलुं (५) —ना पक्षनुं (६) न० घरमां करवानो विधि गृह्य ('ग्रह्' उपरथी) वि० लेबा लायक; पकडवा लायक (२) जोवा लायक (३) कबूल राखवा लायक मृ९प० बोलवुं; बोलाववुं (२) जाहेर करवुं; घोष करवें। (३) वर्णन करवुं (४) स्तुति करवी (५) ६ ५० गळी जवुं; खाई जबुं (६) काढी नाखवुं;काढवुं भेय वि० गावाने योग्य (२) न० गीत **गेह** न०घर; निवासस्थान **गेहिन्** वि० गृहस्याश्रमी **गेहिनी** स्त्री० गृहिणी; भार्या **गेहेक्वेडिन्, गेहेनदिम्, गेहे**ञूर पुं० घरमां शूरो – बीकण माणस [ओशीकुं गेंडुक, गेंडुक पुं० रमवानो दडो (२) **गै १**प० मा**बुं**(२)वर्णन करवुं(गीतमां) गैरिक पुं०, न० गेह गो पु॰, स्त्री॰ पशु; ढोर (२) गायनुं जे कंई होय ते (दूष, मांस, चामडुं इ०) (३) इंद्रनुं वज्र (४) प्रकाशनुं किरण (५) बाण (६) आकाश (७) स्त्री० गाय (८) पृथ्वी (९) वाणी; शब्द (१०) सरस्वती ; वाणीनी देवता (११) दिशा (१२)पुं० बळद; सांढ (१३)इंद्रिय (१४) शरीरनो वाळ (१५) सूर्य **गोकर्ण** वि० गायना कानना आकारनुं (२) पुं० गायनो कान (३) साप (४) खच्चर (५) एक जातनुंबाण (६) एक जातनो मृग (७) अंगुठाना टेरवाथी अनामिका सुधीन अंतर(८) एक तीर्थं (दक्षिणन्ं)

गोकुल न० गायोनु धन (२) गायनी कोड (३) श्रीकृष्ण ऊष्टर्या हता ते गाम गोश्वर वि० ढोर बेना पर चरवा फरतां होय तेवुं (२) बारंबार जतुं – रहेतुं (३) —नाक्षेत्रमां आवर्तु; —नी शक्तिनी मर्यादामां आवतुं (४) पृथ्वी उपर फरतुं (५) – वडे प्राप्त थई शके तेबुं(६) पुं० चरो; चरवानी जगा (७) क्षेत्र; निबास-स्थान (८) इंद्रिय पहोंची शके ते क्षेत्र (९) मर्यादा; क्षेत्र ; खिषय (१०) काबू ; सत्ता (११) दुष्टिमर्यादा; क्षितिज गोणी स्त्री० धान्य भरवानी गुण गोत्र न० गायनी कोढ; वाडी (२) कुटुब; वंश (३) नाम (४)समुदाय(५) पुं० पर्वत गोत्रज वि० एक ज गोत्रमां जन्मेलुं – उत्पन्न थयेलुं गोत्रपट पुंच्यंशवृक्ष गोत्रभिद् पुं० इंद्र गोत्रस्वसन, गोत्रस्वन्ति न० नाम देवामां भूल करवी ते गोका स्त्री० गोदावरी नदी गोदान न० गायोनुं दान (२) बाळनी बाधा उतराववानी विवि गोबुह् (–ह) पुं॰ गोवाळ गोधर पुं० पर्वत गोषा स्त्री० धनुष्यनी पणछ न वाने माटे डाबे हाथे बांधवानो पटो (२)घो गोधुम, गोबूम पुं० घडं गोधुलि स्त्री० संध्याकाळ; गायोनो चरीने पाछी आववानी समय गोध्र पुं० जुओं 'गोधर' गोनर्दपुं० सारस पक्षी (२) शिव (आखलानी पेठे गर्जना करता) गोप पुं० गोवाळ (२) रक्षण करनार (३) गुप्त राखवुं ते गोपचाप पुं० मेघधनुष्य गोपति पुं • गायोनो मालिक(२)आखलो; सांढ (३) सूर्य (४) इंद्र (५) श्रीकृष्ण (६) शंकर (७) व**रण**

गोपन न०रक्षण (२) गुप्त राखवुं ते; संताडवुं ते **गोपनीय** वि० रक्षण करवायोग्य (२) छुपाववा योग्य (३) छानुं गोपाटविक पुं० गोवाळियो **गोपाध्यक्ष** पुं०श्रीकृष्ण गोपानसी स्त्री० छापरानुं लाकडुं गोपाल पुं० गोवाळ (२)श्रीकृष्ण (३) राजा (४) शंकर **गोपालधानी** स्त्री० गायोनी कोढ **गोपालि** पुं०शंकर करनार स्त्री गोपिका स्त्री० गोवाळण (२) रक्षण गोपित वि० छुपावेलुं; गुप्त राखेलं गोपी स्त्री० जुओ 'गोपिका' गोपुत्र पुं० बळद (२) कर्ण (सूर्यनो पुत्र) गरेपुर न० नगरनो दरवाजो (२) मदिरनो दरवाजो (३) मुख्य दरवाजो गो**पेंद्र** पुं० श्रीकृष्ण [(३) विष्णु गोप्तृ पुं० रक्षण करनार (२) संताडनार गोच्य वि० रक्षण करवा योग्य (२) छुपाबवा योग्य [शके तेवुंस्थान गोप्रतार पुं० गायो ज्यां नदी ओळंगी गोमतल्लिका स्त्री० उत्तम गाय गोमय पुं० गोवाळियो गोमय पुं०, न० छाण गोमायु पुं० शियाळ गोमुख पुं०, न० एक वाद्य (२) न० गोमुखी; माळा फेरववानी थेली गोयान न० बळदगाडुं गोयुत न० वे कोसनुं अंतर गोरस पुं०(गायनां)दूध, दहीं, माखण ६० **गोक्त** न० जुओ 'गोयुत' गोरोचना स्त्री० गायना माथामांथी मळती के तेना पित्त या मूत्रमांथी बनावाती पीळी औषधि **गोरू** पुं०, न० दडो ; गोळो (२) वतुंळ **गोलक** पुं० गोळो ; दडो (२) विधवानो जारज पुत्र (३) गोळो; गोळ घडी

गोबर न**े गोबर**; गायनुं छाण गौबाट पुं॰ गायोनी कोछ; वाडो गोविसर्ग पुं० परोडियुं (गायो घरवा छूटी मुकाय छे ते बेळा) गोविद पु॰ गायोने पाळनार (२)श्रीकृष्ण (३) बृहस्पति गोवंद न० गायोनो समूह **गोत्रज** पुं० गायोनो वाडो गोष्ठ पुं०, न० गायोनी कोढ (२)निदास-स्थान (३) पुं० सभा गोष्ठि (-ब्डी) स्त्री०सभा (२)समाज; मंडळ (३)संभाषण ; चर्चा (४)समूह ; समुदाय (५) कौटुबिक संबंध गोष्यद न० गायनो पग (२) गायना पगलानो पडेलो खाडो (३) नानुं खाबो-चियुं (गायना पगलाथी पडेला खाडामां समाय तेटला पाणीवाळुं) गोसंस्य पुं गोवाळियो गोस्तन पु० गायनु अडण – बावलुं **गोस्थान** न० गायनी कोड गोस्वामिन् पुं० गायोनो मालिक (२) (इंद्रियनिग्रही) साधु (३)नामनी आगळ लगाडातो सन्मानदर्शक शब्द गौड वि॰ गोळनुं बनावेलुं (२) गौड देशने लगतुं (३) पुं० एक प्रदेशनुं नाम (प्राचीन बंगाळ) (४)न० मीठाई गौडी स्त्री० गोळनो दारू गौण वि० मुख्य नहितेवुं;पेटामां आवतुं (२) औपचारिक; लाक्षणिक गौतमी स्त्री । द्रोणाचार्यनी पत्नी (२) गोदावरी नदी (३) (गौतम) बुद्धनो सिद्धांत (४) न्यायदर्शन (गौतम मुनि प्रतिपादित) (५) दुगाँ गौर वि० गोर्ह; घोळुं(२)पीळाश पडतुं लाल (३) चकचिकत; प्रकाशित (४) स्वच्छ; सुदर गौरक्ष्य न० गायना पालननुं काम गौरव न० भार; वजन (२)मोटाई; महत्ता (३) मान; आदर

गौरी स्त्री • पार्वती (२) रजोदर्शन नहि पामेली छोकरी (आठ वर्षनी) (३) गौर रंगना चहेरावाळी स्त्री (४) पृथ्वी (५) गोरोचना **गौरीकांत** पुं० शंकर गौरीपुर पुं ० हिमालय (पावंतीना पिता) **गौरीनाय, गौरीपति** पुं० शंकर ग्रय् १ आ० [ग्रथते, ग्रंथते] वांकुं यवुं; वांकुं वाळवुं (२) दुष्ट थवुं **प्रथित** ('ग्रथ्' तथा 'ग्रंथ्' नुं भू० कृ०) वि० बांधेलुं ; गूँथेलुं (२) रचेलुं ; लखेलुं (३) गोठवेलुं (४) गंठायेलुं; घट्ट थयेलुं (५)कठण थयेलुं (६) हरावेलुं; पकडेलुं (७) ईजा पामेलुं ग्रस् १ आ० गळी जवुं; कोळियो करी जवो (२) पकडवुं (३) ग्रहण करवुं (सूर्यचंद्रने) (४) १ प०, १० उ० खाई जवुं; कोळियो करवो प्रसिष्णु वि० गळी जनारं ग्रस्त ('ग्रस्'नुंभू० कृ०) वि० गळी जवायेलुं (२) पकडायेलुं (३) ग्रहण थयेलुं (सूर्य के चंद्र) **ग्रह**् ९ उ० [गृह्णाति-गृह्णीते] पकडवुं (२)लेवुं; स्वीकार करवो (३) केंद्र करवुं (४) काबूमां लेवुं; अटकाववुं (५) आकर्षवुं; वश करवुं (६) समजाववु; पक्षमां लेवुं (७) खुश करवुं; संतोषवुं (८)धारण करवुं (९) जाणवुं; समजवुं (१०)मानवुं; धारवुं (११)इंद्रियथी ग्रहण करवुं (सांभळवुं ६०) (१२)उल्ले-खवुं; उच्चारवुं (नाम) (१३) हरण करवुं; लई लेवुं (१४) खरीदवुं (१५) पहेरवुं (वस्त्र) (१६) धारण करवुं (गर्भ) (१७) पालन करवु (ब्रत, उपवास इ०) (१८)काम माथे लेवुं **ग्रह पुं०** लेवुं – ग्रहण करवा ते ; लई लेवुं ते (२)पकड (३)स्वीकार करवो ते (४) ग्रहण (सूर्यनुं के चंद्रनुं) (५) चोरो ; लूंट

(६) उच्चारवुं ते; लेबुं ते (नाम) (७)नव ग्रहोमानो दरेक (८) राहु (९) अटकाव; विष्त (१०) मगर (११) भूत, पिशाच वगेरे (१२)इंद्रिय (१३)इंद्रियथी थतुं ज्ञान (१४) दया; कृपा (१५) उद्योग; स्रंत (१६) धनुष्यनो मध्य भाग −पकड (१७)हेतु; उद्देश(१८)केद **ग्रहग्राम**णी पुं० सूर्य **प्रहण** न० लेवुं - पकडवूं ते (२) स्वी-कार (३) उल्लेखवुं ते; उच्चारवुं ते (४) (वस्त्र)पहेरव् ते (५)जाणवुं – समजवुं ते (६) शीखवुं ते; अभ्यासवुं ते (७) इंद्रिय (८) आकर्षण (९) लग्न (१०) केदी (११) पडघो **ग्रहपीढन** न० ग्रहण (सूर्य-चंद्रनुं) ग्रहाग्रेसर पुं० चंद्र प्रहालुंचन न० शिकारने फाडी खावी ते **ग्रहिल** वि० लेवानी इच्छावाळुं (२) जक्की; हठीलुं (३) भूतपिशाचना बळगाडवाळु देवादार **प्रहीतृ** वि० लेनाइं(२)खरीदनाइं(३) **ग्रंथ् ९** ५०, १० उ० गृथवुं; परोववुं (२) गोठववुं (३) रचबुं गंथ पं० बांधवुं ~मूंथवुं ते (२)पुस्तक; साहित्यकृति (३) मिलकत ग्रंथि स्त्री० गाठ(२)वस्त्र के दोरडानी गांठ (३) शरीरनो साम्रो ग्रंथिक पुं० ज्योतिषी; जोषी **प्रंथिछेरक** पुं० सीसाकातरु **प्रंथित** वि० जुओ 'ग्रथित ' **प्रंथिन्** पुं० पुस्तको वांचनार;पुस्तकियो (२) विद्वान बाधेलुं प्रंथिमत् वि॰ गांठोवाळुं (२) गांठ वडे **प्राम** पुं० गाम**बुं** (२) समुदाय; समूह (३) मूर्छेनाना आश्रयरूप स्वरसमूह प्रामचेत्य पुं० गामनो पवित्र पीपळो प्रामणी वि० श्रेष्ठ; मुख्य (गाम के ज्ञातिमां) (२)पुं० गामनो मुखी (३) आगेवान; नेता

ग्रामिक वि० गामडानुं; ग्राम्य;असम्य (२)पुं० गामडियो (३)गामनो मुखी ग्रामीण वि० गामहियुं; असम्य (२) गामडानुं (३)पुं० गामडानो माणस **प्रामेय** वि० गामडानुं; गामडियुं **ग्राम्य** वि० गामडान्; गामडामां रहेतुं (२) पाळेलुं (जानवर) (३)खेडेलुं ('वन्य' थी कलट्ं) (४) असम्य; **अश्लील (५) पुं० गामडियो (६) न०** ग्राम्य भाषा (७) प्राकृत वगेरे भाषा ('संस्कृत'थी जुदी) (८) कामभोग **प्रावन्** पुं०ं पथ्यर; सडक (२) पर्वत ग्रास पुं० कोळियो (२) अन्न; सोराक (३)गळव् – गळी जव्ं ते (४)ग्रहण **ग्राह** दि० पकडनारुं; ग्रहण करनारुं; लेनारुं (२) पुं० पकडवुं ते (३) स्वीकार (४) केदी (५) मगर (६)ज्ञान; समज(७) दुराग्रह;हठ (८) निर्णय; निश्चय **पाहक** वि० लेनार्ड; ग्रहण करनार्ड; पकडनार्ह (२) समजावनार्ह (३) खरीदनारं (४) समावेश करतुं **प्राहकत्व न०** ग्रहणशक्ति; समजशक्ति ग्राहम् अ० (समासने अंते) पकडीने **ग्राहित** वि० पकडवा के लेवा फरज पडी होय तेवुं (२) शीखवाडायेलुं **ग्राहिन्** वि० पकडनारुं; लेनारुं (२) चूंटनाहं; वीणनाहं(३)समावतुं (४) आकर्षतुं (५) मेळवतुं (६)पसंद करतुं (७)देखतुं; जाणतुं(८)खरीदतुं ग्राह्म वि० लेवा -- पकडवायोग्य (२) समजवा योग्य (३)स्वीकारवा योग्य ग्रीवा स्त्री० डोक; गळुं ग्रीष्म वि० उष्ण; गरम (२) पुं० उनाळो (३) ताप; गरमी ग्रीष्मवन न० गरमीमां सेवाती कुंज **ग्रेंद, ग्रेवेय** वि० कंठनुं, गळानुं (२) न० कठभूषण; हार (३) हायीना गळानी सांकळ

मैंबेयक न० गळानुं भूषण (२) हाथीना गळानी सांकळ ग्रुपन न० थाक; ग्लानि (२) करमायुं ते ग्रुपित वि० थाकेलुं (२) करमायेलुं (३) कपायेलुं ग्रुह् १, १० उ० जुगार रमवो; जुगार-मां जीतवुं (२) लेवुं; स्वीकारवुं ग्रुह् पुं० जुगारी (२)पासो (३) होड ग्लान ('ग्लै'नुं भू० कुं०) वि० श्रमित; थाकी गयेलुं ग्लानि स्त्री० थाक; सुस्ती; मंदता (२) पडती (३) नवळाई (४) अणगमो ग्लुच् १ प० जवुं (२) चोरवुं (३) लई लेबुं; छीनवी लेवुं ग्लै १ प० अणगमो होवो (२) थाकी जवुं (३) निराश थवुं (४) करमाई जवुं

घ

घ वि० (समासने अंते) हणनार्ह; नाश करनारं (उदा० 'जीवघ') घट् १ आ० उद्योग करवो; प्रयत्न करवो (२) बनवुं; थवुं; शक्य होवुं (३) पहोंचवुं; आववुं (४) जोडावुं; संबंधमां आववुं (५) १० उ० मारी **मासवुं**; ईजा करवी (६)साथे लाववुं; बोडवुं (७) प्रकाशवुं -प्रेरक० जोडवुं; भेगुं करवुं; संबंधमां **क्षाववुं** (२)सिद्ध करवुं ; बने तेम कर**वुं** (३)बनावबुं; रचवुं; घडवुं (४)प्रेरवुं घट पुं० घडो (२) हाथीनुं गंडस्थळ **घटक** वि० उद्यमी; प्रयत्नशील (२) **योजनार्ह; सिद्ध करनार्ह; रचनार्ह** (३) वस्तुना अंशरूप (४) प्० वर-कन्यानुं रुग्न गोठवी आपनार **घटकर्पर** पुं० भागेला घडानुं कलाडुं घटन न०, घटना स्त्री० प्रयत्न (२) बनाव; बवुं - बनवुं ते (३) सिद्ध करवुं ते; करवुं ते; घडवुं ते (४) जोडवुं ते (५) गति (६) कलह; कंकास धरयोनि, घटसंभव पुं० अगस्त्य ऋषि घटस्थापन न० नवरात्रि वगेरे समये कळशनी दुर्गारूपे स्थापना घटा स्त्री० प्रयत्न; उद्यम (२) समूह (३) हाथीनुं लक्कर (४) सभा

घटाटोप पुं० रथ, गाडी के बीजा सर-सामान उपरनुं आच्छादन घटिका स्त्री० नानो घडो (२) २४ मिनिट जेटलो समय; घडी घटिकायंत्र न० जुओ घटीयंत्र धटित ('घट्'नुं भू० कृ०) वि० जोडेलुं; मेळवेलुं (२) घडेलुं; करेलुं घटी स्त्री० घडो (२) घडी (२४ मिनिट) घटीयंत्र न० रेंट (२) घडी मापवानं यंत्र **घटोदर** पुं० गणपति घटोयस् (घटोध्नो रूप थाय) स्त्री० घडा जेवा मोटा आउवाळी गाय **धहु १** आ०, **१०** उ० हलाववुं (२) घसवूं (३) तिरस्कार करवो (४) सताववुं (५) दबाववुं; सरखुं करवृं घट्ट पुं॰ नदीनो घाट-ओवारो (२) हलाववुं ते; क्षुब्ध करवुं ते घट्टन न० हलाववं ते; छंछेडवं ते (२) बनाववुं ते; रचवुं ते **घट्टित** वि॰ हलावेलुं (२) रचेलुं(३) दबावेलुं; सरखुं करेलुं धन वि० कठण ; नक्कर (२)घाडुं ;गाढ (३) जाडु; भरेलुं; पूर्ण विकसित (४) ऊंडुं;गंभीर(अवाज)(५)अखंड(६) दुर्भेद्य (७)तीव्र (८)पूर्णं ; व्याप्त (९)

शुभ (१०)पुं० वादळ; मेथ (११) गदा; धण (१२) न० झालर वर्गरे वाद्य **घनध्यनि** पुं० मेघगर्जना धनपदवी स्त्री० आकाश (वादळनो मार्ग) घनम् अ० गाडपणे धनवर्शन् न० जुओ 'घनपदवी' **खनकाहन** पुं० शंकर (२) इंद्र धनवीषि स्त्री० जुओ 'धनपदवी' घनव्यपाय पुं । शरद ऋतु **घनश्याम** वि० यादळांना जेवुं काळुं (२) पुं० मेघ (३) श्रीकृष्ण धनसमय पुं वर्षाऋतु घनसार पुं० कपूर (२) पाणी (३) पारो (४) मोटुं वादळ **धनागम** पुं० वर्षाऋतु धनाधन वि० दुष्ट; घातकी (२)सांघा वगरन् ; घट्ट ; एकसरख् (३) पुं० इंद्र (४) मदोन्मत्त हाथी (५) गाढुं के वर्षतुं वादळ (५) एकबीजा साथे संगठन घनात्यय, घनांत पुं० जुओ 'घनव्यपाय' **धनांब** न० वरसाद **घनोपल** पुं० (वरसादमां पडतो) करो घनीच पुं० मेघघटा [पुं० तेवो अवाज घर्घर वि० अस्पष्ट - 'घरघर' एवं (२) घर्चरा स्त्री० घूचरी (आभूषणनी) (२) एक जातनी बीणा **घर्धरिका** स्त्री ० जुओ 'घर्षरा'(२)भूंजेला घर्घरी स्त्री० जुओ 'घर्घरा' धर्म पुं ० उष्णता; गरमी (२) ग्रीष्म ऋतु दूर करवी ते (३) प्रस्वेद; घाम चर्मछेद पुं० तडको दूर करवो ते; गरमी **घर्मज**ल न० परसेवो घर्मदीधिति, घर्मद्युति पुं० सूर्यं **घमंप्यस्** न० परसेवो (२) गरम पाणी घमीत पुं० वर्षाऋतु घमाँबु, धमाँभस् न० परसेवो घमौजु पुं० सूर्य **धर्मोदक** न० परसेवो

घर्ष पुं॰, घर्षण न० धसवुंते; घसावुं ते (२) दळवुं – खांडवुं ते र्षावत वि० घसेलुं (२)दळेलुं; बाटेलुं घस् १,२ प० खाबुं; खाई अर्थु **धस्मर वि० खाउध**र्छ (२) मक्षक; नाशक **मक्र** पुं० दिवस घंट पुं० शिव घंटा स्त्री० घंट घंटिका स्त्री० घंटडी; घूघरी घात पुं० वध; नाश (२) प्रहार; घा **घातक वि० ना**श करनारुं **घातन** न० मारी नाखवुते; बध **घातिन्** वि० घात करनारुं धाल्य वि० घात करवा योग्य घातिक पुं० अनारसुं; एक पकवान **धास** पुं• अक्ष (२) चारो घृष् १प०, १० उ० अवाज करवो ; बूम पाडवी (२) घोषणा करवी; जाहेर करवुं(३)प्रशंसा करवी (४) १आ० चकचिकत थवु; खूबसूरत थवुं (५) १ प० ठार मारव् घुसूण न० केसर घूक पुं० घुवङ [चक्राकार भमवुं घूर्ण् १ आ०, ६ प० गोळ गोळ फरवुं; **घूर्णन** न०, **घूर्णना** स्त्री० चक्राकारे फरवुं अणगमो (३) ठपको घृणा स्त्री० दया; अनुकंपा(२)तिरस्कार; घृणिन् वि० दयाळु(२)घृणायुक्त(३) लज्जाळु घृत न० घी (२) तेज **घृतपूर, घृतवर** पुं० घेबर; एक पकवान धृष् १ प० घसवुं (२) घसीने साफ करवुं (३) कचरबुं; खांडबुं; पीसबुं घृष्ट ('घृष्'नुं भू० कृ०) वि० घसेलुं; दळेलुं; वाटेलुं घृष्टि पुं० रानी डुक्कर **घोट, घोटक** पुं० घोडो **धोणा** स्त्री० नाक (२) नसकोर्ह (३)

(धृवडनी) चांच (४) धरी जेमां रहे छे ते पँडानो भाग गेर वि० भयंकर; भयानक (२) उग्र; कराल गेरदर्शन वि० भयंकर आङ्कतिवालुं (२) पुं० धृवड शेष पुं० व्वति; अवाज (२) गरबड (३) मेघगर्जना (४) जाहेरनामुं; ढंढेरो (५) अफवा (६) भरवाडनो वाडो; गोवाळोनो पडाव (७) मृडु व्यजननो उच्चार (व्या०) (८) पुं० कांसुं शोषण न०, शोषणा स्त्री० ढंढेरो

घोषवती स्त्री० वीणा
घोषवृद्ध पुं० भरवाडांनो मुखियो
घ्न वि० (समासने अंते)नाश करनाएं;
मारी नाखनाएं (उदा० 'वातध्न')
प्रा ३ प० [जिझिति] सूंघवुं; सूंघीने
पारखवुं (२) चुंबन करवुं
प्राण ('झा' नुं० भू० क्व०) वि० सूंघेलुं
(२)न० सूंघ ुंते(३)वास (४)नाक
प्राणंद्रिय न० नाक
प्रात ('झा' नुं भू० कु०) वि० सूंघेलुं
प्रेय वि० सूंघवायोग्य (२)न० सूंघवानो
पदार्थ (३) गंध; वास

इ.

[इ कंठस्थानीय अनुनासिक वर्ण; आ व्यंजनथी शरू थती शब्द नथी।].

च

🗷 ४० संयोग, समुच्चय, समाहार, निश्चय, शरत, पक्षांतर, अवधारण, के पादपूरण तरीके वपरातो अव्यय (२) अने, तथा, पण, परंतु, बळी, सिवाय, खरेखर, नक्की -ए अर्थ बतावे **चकास् २** प० प्रकाशवुं (२) सुखी थवुं ; समृद्ध थवुं कित वि० भयथी कंपतुं (२) बिवरावेलुं (३)भयभीत (४) न० कंपवु ते; झूजवुं ते (५) भय; भीति कितचकितम् अ० खूब बीनीने **राकतम्** अ० भयभीतपणे **कोर** पुं० चकोर पक्षी श्कोरवृश्, चकोरतेत्र, चकोराक्ष वि० ्(चकोर जेवी) सुंदर आंखवाळुं **बक्ष** पुं० चक्रवाक पक्षी (२) समुदाय 📭 न० गाडीनुं पैडुं (२) एक झस्त्र (उदा॰ सुदर्शन चक्र) (३) कुंभारनो

चाक (४) घाणी (५) कूंडाळुं (६) समूह (७) राज्य; सत्ता; साम्राज्य (८) ब्यूहरचना (९) सैन्य (१०) काळनु चक्र (११) क्षितिज (१२) पाणीनुं वमळ (१३) प्रांत; जिल्लो; तालुको चक्रगति स्त्री० चक्राकारे फरवुं ते चक्रचक न० चक्रवाक पक्षीनुं टोळुं चक्रधर पुं० विष्णु (२) सम्राट चक्रनेमि स्त्री० चक्रनो परिघ – घेरावो चक्रपाणि पुं० विष्णु **चक्रभ्रमि** स्त्री० सराण चक्रवर्तिन् पुं० सार्वभौम राजा (२) श्रेष्ठ; उत्तम (पोताना वर्गमा) चक्रवाक पुं० चको पक्षी चक्रवात पुं० वंटोळियो **चक्रवाल** पुं०, न० वर्तुल (२) समूह; समुदाय (३) क्षितिज (४) पुं० चकवाक (५) लोकालोक पर्वेत

चक्रव्यूह पुं० (चक्राकारे) सैन्यनी एक रचना -- ब्यूह **चक्रसाह्यय** पुं० चक्रवाक चऋहस्त पु ० विष्णु 🏻 [श्रीकृष्ण; विष्णु चकायुघ पुं० (चक्र जेनुं आयुध छे तेवा) चकार पुं०, न० पैडानो आरो चकावर्त पुं० चकाकारे भमवूं - फरवुं ते **चकाह्य, चकाह्यय पुं**० चकवाक चकांग पुं० हंस (२) चकवाक चिकित् पु ० विष्णु ; श्रीकृष्ण (२) चक्रवर्ती राजा (३) चक्रवाक चक्रेश्वर पुं० विष्णु (२) जिल्लानो [त्याग करवो अधिकारी – शासक चक्ष् २ आ० कहेवुं; बोलवुं (२) जोवुं (३) चक्ष्रीयवय पुं ० दृष्टिमयदि। (२) असिनी विषय; दृश्य (३) क्षितिज चक्षुष्पय पुं० दृष्टिमयीदा चक्षुष्मत् वि० आंखवाळु; शक्तिवाळुं (२) अगमचेतीवाळुं चक्षुष्य वि० सुंदर; प्रियदर्शन (२)आंखने हितकर (३) पुं०, न० नेप्रोजन **चक्ष्**स् न० आंख (२) दृष्टि; नजर चक्षुःश्रवस् पुं० साप **खक्ष्रा**ग पुं०आंखनी लालाश(२)प्रेमभरी चट् १ प० [चटित] भागवुं; जुदुं पाडवुं (२)१० उ० वींधवुं; मारी नाखवुं (३) हरकत करवी चटक पुं० चकलो चटका, चटिका स्त्री० चकली चदु पुं० प्रिय भाषण; खुशामत चटुल वि॰ चचळ; अस्थिर (२) सुंदर; मनगमत् चण वि॰ (समासने अंते) प्ररूपात; निष्णात (उदा० 'अक्षरचण,' 'माया-चण ') चण, चणक पुं० चणा चतस्रः ('चतुर्'नुं स्त्री ० ब०व०) चार चतुर्वि० (ब०व०) चार (संख्या) (२) अ० चार वस्तत

चतुर वि० चालाक; कुशळ(२) उतावळुं; चपळ (३) सुंदर; मनोहर चतुरश्च (-म्न) वि० चार खूणावाळुं (२) बधां अंगोमां प्रमाणसर; सुंदर चतुरंग वि० चार अंगवाळुं;चार विभाग-वाळुं(२)न०(हाथी,घोडा, रथ, पायदळ -एवा पूरा चार विभागवाळी) सेना चतुरंगिणी स्त्री० चार अंगो पूरा होय तेवी ('चतुरंग') सेना **चतुरं**त वि० चार छेडा के सीमावाळूं **चतुरंता** स्त्री० पृथ्वी **चतुरानन पुं० ब्रह्मा** (चार मूखवाळा) **चतुर्गुण** वि० चारगणुं; चोपट चतुर्थ वि० चौथुं (२) न० चौथो भाग **चतुर्थाश्रम पुं**० संन्यास आश्रम चतुर्दशभुवनानि न० व०व० चौद लोक; समग्र विश्व चतुर्देशरत्नानि न० ब० व० समुद्रसंथन वखते नीकळेलां चौद रत्नो (लक्ष्मी, कौस्तुभ, पारिजातक, सुरा, धन्वंतरि, चंद्रमा, कामदुघा गाय, ऐरावत हाथी, रंभा वगेरे अप्सरा, सात मुखवाळी घोडो (उच्चैःश्रवा), हलाहल विष, शाङ्कर्ग धनुष्य, पांचजन्य शंख, अमृत) **चतुर्दंत** पुं० ऐरावत हाथी चतुर्दिश न० चार दिशाओनो समूह **चतुर्विज्ञम्** अ० चारे बाजुए **चतुर्धा अ० चार प्रकारे; चार रीते** चतुर्बाहु, चतुर्भुज् (-ज) पुं० विष्णु **चतुर्मास** न० अषाड शुक्छ एकादशीथी कार्तिक शुक्ल एकादशी सुधीनो समय – चातुर्मास **चतुर्भुख** पुं० ब्रह्मा चतुर्युग न० सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि --ए चार युगनो समूह **चतुर्वर्ग** न० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष –ए चार पुरुषार्थीनो समूह चतुर्वर्ण न० ब्राह्मण, क्षत्रिय, वश्य, शद -ए चार वर्णीनो समूह

चतुर्विद्य वि० चारे वेद जाणनारुं चतुश्शास न० जुओ 'चतुःशास्त्र' चतुष्क न० चारनो समूह (२) चार रस्ता मळे ते स्थळ -- चकलुं(३)चार खूणावाळुं आंगणुं - चोक (४) चार स्तंभवाळो मंडप (५)चार पायावाळी बेठक (६)चार सेरवाळो हार चतुष्कर्ण वि० चार काने सांभळेलुं (बे माणसे जाणेळुं) चतुष्काष्टम् अ० चारे दिशामां चतुष्कोण वि० चार खूणावाळु **चतुष्टय** वि० चार अवयववाळुं (२) चार प्रकारनुं (३) न० चारनो समूह (४) चतुष्कोण चतुष्पथ पुं०, न० जुओ 'चतुःपथ' चतुष्पद् (-द)वि० चार पगवाळुं(२) पुं० चोपगुं प्राणी **चतुष्पाणि** पुं० विष्णु **'चतुष्पद्' चतुष्पाद् (—द)** वि० (२) पुं० जुओ चतुःपथ पुं०, न० जुओ 'चत्वर'; चकलुं चतुःशाल न० चार मकानोथी बनेलो चोक; चार मकानोवाळी खडकी चत्वर न० चार रस्ता मळे तेवुंस्थळ – चकलुं (२) चोक चस्वारः ('चतुर्'नुंपुं० ब० द०)चार चत्वारि ('चतुर्'नुं न० ब० व०)चार चत्वारिशत् स्त्री० चालीस (संस्या) **चपल** वि० हालतुं; अस्थिर (२)क्षणिक; नाशवंत (३) त्वरित; शीघ्र (४) साहसिक; अविचारी **भपला** स्त्री० वीजळी(२)लक्ष्मी(३) जीम (४) व्यभिचारिणी स्त्री (५) सुरा चपेट पु॰, चपेटिका स्त्री॰ तमाच **चम् १** प० पीवुं (२) खावुं चमत्करण न०, चमत्कार पुं०, चमत्कृति स्त्री० आरचर्यः; नवाई (२)आरचर्य-कारक बनाव के देखाव चमर पुं वमरी गाय (२) पुं , न । तेना पूछडाना वाळनी बनती चमरी

चमरी स्त्री० चमरी गाय(२) मंजरी चमस पुं०, न० एक पात्र (सोमरस पीवानुं) (२)जव-चोखा वगेरेनुं वडुं चम् स्त्री० सैन्य (२) एक सैन्यविभाग **चम्चर** पुं० सैनिक चम्नाय, चम्प, चम्पति पुं० सेनापति **चम्र** पुं० एक मृग **थय** पुं० समूह; ढगलो (२) एकठुं करवुं - बीपवुं ते (३) मकानना के किल्ला-ना पाया माटे जमीन खोदीने करेलो माटीनो ढगलो (४) गोठववुं ते; खडकवुं ते (५)स्थापवुं ते (अग्नि) चयन न० ढगलो करवो ते; एकठुं करवुं ते; वीणवुं ते (२) अग्नि स्थापवो ते **चर् १** प० चालवुं; जबुं; फरवुं; भटकबुं (२)आचरवुं; करवुं(३)चरवुं(घास इ०) (४) वर्तवुं – वर्तन राखवुं (कोई साथे) (५) फेलावुं (६) जीववुं चर वि० चालतुं, फरतुं, चरतुं इ० (२) आचरतुं (समासने अंते) (३) जंगम (४) पहेलां हतुं तेवुं (उदा० 'आद्वचचर' =पहेलां पैसादार हतुं तेवुं) (५) पुं० गुप्तचर चरक पुं० गुप्तचर; दूत (२) भटकतो भिक्षुक (३) प्रसिद्ध वैद्य मुनि चरण पुं०, न० पग (२)स्तंभ;थांभलो (३) चोथो भाग (४) देदनी शाखा (५) श्लोकनी एक पंक्ति (६) न० भटकवुं ते (७) आचरवुं ते (८) कोई पण वर्गनो रूढ आचार **चरणकमल** न० कमळ जेवा पग **घरणप** पुं० वृक्ष चरणपतन न० पगे पडवुं ते चरणपात पुं० पग मूकवो ते (२) पगे पडवुं ते (३) पगलांनो अवाज **चरणयोधिन्** पुं० कूकडो **चरणञ्जूश्रूषा, चरणसेवा** स्त्री ० पगे पडवुं ते(२)सेवा;भक्ति [जळ;चरणोदक चरणामृत न० ऋषि इ० ना पग धोयेलुं चरणायुष पुं० जुओ 'चरणयोधिन्' चरणारविंद न० जुओ 'चरणकमल' चरणोदक न० जुओ 'चरणामृत' **चरणोपधान** न० पग टेकववानो बाजठ चरम वि० छेवटनुं; छेल्लुं (२) पश्चिम तरफर्नु (३) पाछलुं; पछीनुं **चरमकाल** पुं भृत्युकाल; अंतिमकाल चरमम् अ० छेवटे; अंते चरमवयस् वि० घरडुं; वृद्ध चराचर वि० स्थावर अने जंगम (२) हालतुं; कंपतुं (३) इच्छेलुं (४) न० स्थावर अने जंगमनो समूह; आखी दुनिया (५) स्वर्गः; अंतरिक्ष चरित ('चर्' नुं भू० कु०) वि० गयेलुं; भटकेलुं (२) आचरेलुं; करेलुं (३) जार्थेलुं(४)प्राप्त करेलुं(५) आपेलुं; अपायेलुं (६) न० जवुं — चालवुं ते (७) आचरण; वर्तन (८) जीवन-चरित्र; इतिहास चरितार्थ वि० कृतार्थ; कृतकृत्य; सफळ (२) परितृप्त (३) सिद्ध (४) सार्थक ; अर्थ अनुसार (५) योग्य; उचित चरित्र न० आचरण; वर्तन (२)जीवन-चरित्र (३) स्वभाव चरिष्णु वि॰ गतिमान; जंगम चरु पुं० होमार्थे दूधमां रांधेलो भात (२) ते माटेनुं बासण चर्च ६ प० निदा करवी (२) चर्ची --विचारणा करवी; विवाद करवो (३) लेप करवो सुगंधी लेप करवो ते चर्चन न० अभ्यास; पठन (२) शरीरे चर्चरिका, चर्चरी स्त्री० एक जातनुं गीत (२) संगीतमां हाथ वडे ताल आपवो ते; ताळी (३) आनंदोत्सव चर्चा, चर्चिका स्त्री० अभ्यास; पठन (२) विचारणा; वादविवाद (३) शरीरे सुगंधी द्रव्यनो लेप करवो ते र्वाचित ('चर्च्'नुंभू० कृ०) वि० लेप

करायेलुं; खरडायेलुं (२) चर्चायेलुं; विचारायेलुं चर्पट पु॰ तमाच ; लपडाक (२) चीथर्ह चर्भटी स्त्री० चीभडी के तेनुं फळ चर्मकार, चर्मकारिन्, चर्मकृत् पुं० मोची (२) चमार चीडिय चर्मचटक पुं०, चर्मचटिका स्त्री० चामा-**चर्मन्** न० त्वचा; चामडी (२) चामडुं (३) स्पर्शेद्रिय (४) ढाल चर्ममय वि० चामडानुं बनेलुं के बनावेलुं **चर्मयब्टि**स्त्री० चाबुक चर्मावकतिन् पुं० मोची चिमिन् वि० चामडानुं बनावेलुं (२) डालवाळुं (३)पुं० ढालवाळो योद्धो चर्या स्त्री० चालवुं ते; फरवुं ते (२) सवारी करीने जवुं ते (३) आचरण; वर्तणूक (४) विधिपूर्वक आचरवुं ते; अनुष्ठान चर्च् १ प०, १.० उ० चावबुं; खावुं (२) चूसवुं (३) चाखबुं; स्वाद छेवो **चर्यण** न०, **चर्यणा** स्त्री० चाववुं ते; खावुं ते (२)चूसवुं ते (३)चाखवुं ते चर्बित ('चर्ब्'नु भू० कृ०)वि० चावेलुं; खाघेलुं (२) चाखेलुं **चर्वितचर्वण** न० चावेलुं फरी चाववुं ते (२) निरर्थक पुनक्षित चर्षणि पुं० माणसजात चर्षणी स्त्री० छिनाळ स्त्री चल् १ प० हालवुं; कंपवुं; धवकवुं (२) जबु; चालबु (३) चलित थबु; क्षुब्ध थबु चल वि ० हालतुं; कंपतुं (२) चपळ; चंचळ (३) अस्थिर; जंगम (४) नाशवंत चलचित्त वि० अस्थिर मननु चलन न० हालवुं ते ; कंपवुं ते (२)फरवुं ते; भटकवु ते चला स्त्री० लक्ष्मी (२) वीजळी चलाचल वि० अस्थिर; अति चंचल (२) स्थावर अने जंगम चलित ('चल्'नुं भू० कृ०) वि० कंपेलुं;

क्षुब्ध (२) खसेडेलुं (३) गयेलुं (४) न० चालवुं ते (५) हालवुं ते (६) एक नृत्य चलुक पुं० हाथनो खोबो (कोगळो करवानु पाणी लेवा माटे) चषक पुं०, न० दारू पीवानुं पात्र चर्चात पुं० भक्षण (२)वधः; नाश **चंक्रमण** न० आम तेम फरवुं ते **चंग** वि० सुंदर(२)निपुण(३)तंदुरस्त चंच् १ प० हालवुं (२)कूदवुं ; ऊछळवुं **चंचत्क** वि० कूदतुं (२) हालतुं चंचरिन्, चंवरीक पुं० मोटो भमरो **चंचल** वि० कंपतु; हालतुं(२)अस्थिर बंचला स्त्री० लक्ष्मी (२) वीजळी **चंचु** वि० प्रख्यात ; जाणीतुं (२) चतुर चंचु (-चू) स्त्री० चांच चंचूर्यमाण वि० वीभत्स चाळा करतुं चंड वि० क्रोधी (२) उष्ण (३) भयंकर चंडम् अ० तीव्रपणे; भयंकर रीते; गुस्साथी चंडा स्त्री० दुर्गा(२)कोधीस्त्री चंडाल वि० निर्देय; घातकी (२) पुं० एक जातनो अंत्यज चंडांशु पुं० सूर्य चंडि, चंडिका स्त्री० दुर्गा चंडिमन् पु० कोध; गुस्सो (२) गरमी चंडी स्त्री० दुर्गा अथवा तेनो लेप चंदन पुं०, न० सुखडनुं वृक्ष, लाकडुं चंदनगिरि पुं० मलयाचल पर्वत चंदनसार पुं॰ उत्तम चंदन चंदनाचल, चंदनाद्वि पुं० मलय पर्वत (ज्यां चंदननां वृक्षो बहु थाय छे) **चंदि**र पुं॰ चंद्र(२)हाथी चंद्र पुं० चांदो (२) (समासने अंते) श्रेष्ठ (उदा० 'प्रषचंद्र') चंद्रक पुं० चंद्र (२) आंगळीनो नख (३) मोरना शींछामांनी टीलडी चंद्रकला स्त्री० चंद्रविवनी सोळमी भाग चंद्रकथत् पुं० मोर **चंद्रकांत** पुं० एक मणि (जेना उपर **चंद्रनां**

किरण पडतां तेमांथी पाणी झमे छे) (२) पुं०, न० (रात्रे चंद्रथी खीलतुं)पोयण् **चंद्र**किन् पु० मोर चंद्रचूड, चंद्रचूडामणि पुं० शंकर **चंद्रद्युति स्त्री० चंद्रन्ं तेज (२)चांदनी चंद्रपाद** पुं० चंद्रकिरण चंद्रप्रभा स्त्री० जुओ 'चंद्रद्युति' [ओरडो चंद्रप्रासाद पुं० घरनी टोचे आवेलो चंद्रमस् पुं० चंद्रमाः; चांदो चंद्रमुख वि० चंद्र जेवा सुदर मुखवाळु **चंद्रमौ**लि पुं० शंकर चिंद्र-किरण चंद्ररेखा, चंद्रलेखा स्त्री०चंद्रनी कळा(२) **चंद्रबदन** वि० चंद्र जेवा सुंदर मुखवाळुं चंद्रशाला स्त्री० अगासी (२) चांदनी **चंद्रशेखर** पुं० शंकर **चंद्रहास** पुं० चमकती तरवार (२) रावणनी तरवारनुं नाम **चंद्रातप** पुं० चांदनी; चंद्रिका **चंद्रात्म**ज पुं०बुध (ग्रह) चंद्रानन वि० चंद्र जेवा सुंदर मुखवाळूं (२) पुं० कार्तिकेय **चंद्रापीड** पुं० शिव चंद्रार्थमौलि, चंद्रार्थशेखर पुं० (अर्धचंद्र जेना मस्तके छे ते) शिव चंद्रिका स्त्री० चंद्रनो प्रकाश; चांदनी **चंद्रोदय** पुं० चंद्रनो उदय चंद्रोपल पु० चंद्रकात मणि **चंपक पुं**० चंपो (२) च० तेनुं फूल चंपू स्त्री० गद्य अने पद्यवाळी, परिश्रम-साध्य एवी एक साहित्यकृति चाकचक्य न० चकचिकतपणुं चाक्षुष वि० चक्षु संबंधी; (२)दृश्य; जोवा लायक (३) न० प्रत्यक्ष ज्ञान **चाक्षुषज्ञान** न० प्रत्यक्षज्ञान (२)पुरावो चाट पुं० धूर्त; ठग स्पष्ट वाणी चाटु पु०, न० मधुर वाणी; खुशामत (२) **चाटुकारं** वि० खुशामत करनारं चादुक्ति स्त्री० मधुर वचन; खुशामत

चातक पुं० एक पक्षी (वरसादनां टीपां ज पीतुं मनाय छे) चातकानंदन पुं० वर्षिऋतु (२) मेघ चातुर वि० चतुर; डाहघुं;शाणुं (२) चार वडे खेंचातुं (वाहन) चातुरंत वि० (चारे बाजुए समुद्रधी वींटळायेली) आखी पृथ्वीनुं मालिक **चातुरी** स्त्री० चतुराई **चातुर्य** न**०** कुशलता; चतुराई चातुर्वर्ण्यः न० ब्राह्मणादि चार वर्णे (२) चारे वर्णनां कर्तव्य चातुर्विद्य न० चार वेदनो समूह चाप पुं० धनुष्य (२) मेघधनुष्य चापल, चापल्य न० चपळता; चंचळता (२) साहस (३) अस्थिरता **चामर** पुं०, न० चमरी **चामीकर** न० सोन् चामुंडा स्त्री० दुर्गानुं विकराळ स्वरूप चाय् १ उ० निहाळवुं (२) संमानवुं **चार** पुं॰ जबुं – चालवुं ते;गति;**संचा**र (२) गुप्तचर (३) करवु - आचरवु ते वारक वि० जनारुं; संचार करनारुं; आचरनार्ह (२) पुं० गुप्तचर (३) कारागृह; जेल [(राजा) चारचक्षुस् वि० जासूसरूपी आंखवाळुं चारण पुं० भाट; चारण; स्तुतिपाठक (२) नट; विदूषक; नाचनार (३) प्रवासी; यात्राळु (४) जासूस चारदृश् वि० जुओं वारचक्षुस् चारभट पुं वीर सैनिक चारिका स्त्री० परिचारिका; दासी चारित्र, चारित्रय त० चरित्र; वर्तन; आचरण (२) सदाचरण (३) स्त्रीनुं शील (४) स्वभाव (५) कुलाचार **चारिन्** वि० (समासने छेडे) जतुं; फरतुं; जीवतुं; आचरतुं (२) पुं० पायदळनो सैनिक चारु वि० सुंदर (२) प्रिय; रुचिकर चारदर्शन वि० सुंदर; स्वरूपवान

चारुवक्त्र वि० सुंदर मुखवाळुं **चारुवर्षना** स्त्री० स्त्री [करनार स्त्री चारुतता स्त्री० एक मासना उपवास चारुशिला स्त्री० रत्न चारशील वि० सुंदर चरित्रवाळुं चार्या स्त्री० मार्ग; रस्तो **चार्वगी** स्त्री० सुंदर स्त्री **चार्बाक** पुं० नास्तिक मतनो प्रवर्तेक चार्वी स्त्री० सुंदर स्त्री (२) कुबेरनी पत्नी (३)बुद्धि (४) प्रभा;तेज(५) चांदनी; चंद्रिका चालन न० हलाववुं ते (२) चाळवुं ते (चाळणीथी) (३) ढीलुं करवुं ते **चालनी** स्त्री० चाळणी चाष (-स) पुं० चास पक्षी (२)शेरडी मांचल्य न० चंचलता; अस्थिरता (२) क्षणिकता चांडाल पुं० जुओ 'चंडाल' चांद्र वि० चंद्रनुं; चंद्र संबंधी (२) न० चांद्रायण व्रत चांद्रमस वि० चंद्रनुं; चंद्रमानुं चांद्रायण न० (खाव।मां रोज कोळियो वधारता – घटाडता जवानुं) एक व्रत चांद्री स्त्री० चांदनी; चंद्रिका चि ५ उ० वीणवुं; एकटुं करवुं (२) संग्रह करवो ; ढगलो करवो (३) शोधवुं (४) जडबुं; चोटाडबुं (मणि-रत्न बगेरे) . (५) ढांकी देवुं ; भरी काढवुं -कर्मणि० फळ बेसर्चु; सफळ थर्चु (२) वधवुं; समृद्ध थवुं चि ३ प० निहाळयुं (२)निरीक्षण करवुं; तपासवुं (३) निश्चय करवो चि १ आ० धिक्कारवुं (२) वेर लेवुं चि १ उ० [चायति –ते] –थी बीवुं (२) मान आपवुं (३) निहाळवुं चिकतिषु वि० कापवा इच्छतुं चिकित्सक पुं० वैद्य ति; वेंदु चिकित्सा स्त्री० रोगनो उपचार करवो **खि**कित्सु वि० वैदकीय उपचार करनारुं

चिक्लि पुं० कादव; कीचड विकीष स्त्री० करवानी इच्छा (२) जाणवानी इच्छा चिकीर्ष् वि० करवानी इच्छावाळुं चिकुर वि० अस्थिर; चंचळ (२) अविचारी (३) पुं० माथाना वाळ चिकुरकलाप, चिकुरनिकर, चिकुरपक्ष, चिकुरहस्त पुं० केशनो समूह – जूडो चिक्कण दि॰ स्तिग्ध; चीकणुं (२) लीसुं (३) चीकटवाळुं **चिष्छक्तित स्त्री० चेतन्य** चित् १प०, १० आ० जोवुं; निहाळवुं (२) जाणवुं; समजवुं (३) भानमां आवर्षु; चेतना आववी (४) चितवर्षु; ल्भ राखवुं (५)गणवुं; धारवृं (६) चेतववु (७) शीखववु चित् स्त्री० विचार (२) बुद्धि; समज (३) मन; अंतःकरण (४)ज्ञान (५) चैतन्य; आत्मा (६) ब्रह्म चित ('चि'नुं भू० कृ०) वि० एकटुं करेलुं; वीणेलुं;संग्रहेलुं(२)मेळवेलुं(३)ढंकायेलुं; [लाकडांनो ढगलो; चेह चिता स्त्री० (मुडदुं बाळवा गोठवेलां) चिति स्त्री० ढगलो (२) चिता (३) संग्रह करवो ते;वीणवुं ते(४)गोठवणी;रचना चितिका स्त्री० चिता; चेह चित्त ('चित्' नुं भू० कृ०) वि० जोयेलुं; जाणेलुं; विचारेलुं; इच्छेलुं (२) न० अंतःकरण; मन (३)विचार; चिंतन (४) बुद्धिशक्ति; ज्ञान चिसचारिन् वि अपोतानी **मरजीने** प्रीति; प्रेम अनुसरनारु चित्तज, चित्तजन्मन् पुं० कामदेव (२) **चित्तज्ञ** वि० बीजानुमन जाणनारु चित्तनिर्देति स्त्री० संतोष; सुख वित्तप्रमाथिन् वि० चित्तने मथी नाख-नार्रः चित्तमां तीव्र कामना ऊभु करनार चित्तविष्लब, चित्तविभ्रम, चित्तविभ्रंश पुं० गांडपण; उन्माद

चित्तविश्लेष पुं० मैत्री सूटी जवी ते वित्तवृत्ति स्त्री० चित्तनी वृत्ति **चित्तवंकल्य** न० चित्तनी व्याकुळता चित्तहारिन्, चित्तार्कीयन् वि० चित्तने हरी लेनारुं;आकर्षक अनुसरनार्ष विसानुवर्तिन् वि० पोतानी मरजीने चित्तापहारक, चित्तापहारिन् चित्तने हरी लेनाई; सुंदर **चित्तापित** वि० चित्तमां धारण करेलुं **चित्ति** स्त्री० विचार; चिंतन (२) ज्ञान; समज (३) स्याति चित्य वि० चिता संबंधी(२)पु० चितानी चित्या स्त्री० चिता (२) यज्ञस्थान चित्र दि॰ चित्रविचित्र (२) विविध (३) रम्य; सुंदर (४) आश्चर्यकारक(५) नजरे पड़े तेवूं (६) पुं० चित्रविचित्र रंग (७) न० चीतरेलुं ते; छबी (८) घरेणुं (९) आश्चर्यः अद्भूत वस्तु **चित्रक पुं० चितारो** (२) वाघ के चित्तो (३) न० चंदनन् तिलक **चित्रकर** पुं० चितारो; चित्रकार **चित्रकर्मन्** न० अद्भुत कृत्य (२) चीत रवुं ते (३)चित्र (४)जादु (५)पुं० जादुगर (६) चितारो **चित्रकार** पुं० चितारो चित्रग, चित्रगत वि० चीतरेलुं चित्रगुप्त पुं ० मनुष्यना पापपुण्यनो हिसाब राखनार यमराजानो अधिकारी **चित्रत्यस्त** वि० चीतरेलु **चित्रपट** (-ट्टू)पुं०चित्र(२)चीतरेलो पट चित्रफलक न० चित्र दोरवानुं पाटियुं **चित्रभान्** पुं० सूर्यं (२) अग्नि चित्रम् अ० केवी नवाई! अद्भुत! चित्ररथ पुं० सूर्य (२)गंधवीनो राजा चित्रलिखित वि० चीतरेलुं (२) मूगुं; हाल्याचाल्या विनान् चित्रलेखा स्त्री० चित्र (२) बाणपुत्री उषानी संखी **चित्रविचित्र** वि० रंगबेरंगी

चित्रावि० एक नक्षत्र चित्रिणी स्त्री० चार प्रकारनी स्त्रीओ-मानी एक (पद्मिनी, चित्रिणी, शङ्किनी, हस्तिनी) चित्रित वि० चीतरेलुं(२)रंगवेरंगी रंगनुं **चित्रिन्** वि० रंगवेरंगी (२) आश्चर्यं-कारक (३) काबरचीतरा वाळवाळ् चिद्घन, चिदात्मन् पुं० परब्रह्म **चिदाभास** पुं० जीव न० परब्रह्म **चिन्मय** वि० ज्ञानमय; चेतनमय (२) चिन्मात्र न० शुद्ध चेतन **चिपिट** वि० चपटुं चिबुक न० हडपची; दाढी चिर वि॰ दीर्घकालिक; लांबा समयनुं (२) न० लांबो समय चिरकार, विरकारिक, चिरकारिन् वि० काम करवामां विलंब करनारुं चिरकालिक, चिरकालीन वि० लांबा समयनु; जूनु चिरजीविन् वि० चिरंजीवी; दीर्घजीवी (२) पुं० अश्वत्थामा, बळिराजा, व्यासम्नि, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम -ए सातमांथी दरेक (३) मार्कंडेय मुनि **चिररात्र** पु॰ लांबी वखत चिररात्राय अ० लांबा वखत सुधी;लांबा वखत बाद |रहे तेव चिरस्थायिन् वि० लांबा समय सुधी टकी **चिरंजीव** वि० दीर्घायुषी; लांबुं <mark>जीवनार्</mark>ह चिरंटी स्त्री० युवावस्था पछी पण बापने घेर रहेती स्त्री **चिरंतन** वि० पुराणुं; पुरातन चिरात्, चिराय अ० लांबा समय सुधी; लांबा समय पछी; अंते; छेवटे चिरायुस् वि० दीर्घायुषी चिरि पुं० पोपट; शुक चिरिकाक पुं० एक जातनो कागडो चिरिबिल्व पुं० करंज वृक्ष **चिरिटी** स्त्री० जुओ 'चिरंटी'

चिरेण अ० जुओ 'चिरात्' विभंटि स्त्री० चीभडी (२) चीभडु चिल्ल पुं० चील; समडी चिह्नान० निशानी; छाप (२) लक्षण चिचा स्त्री० आमली **चित् १०** उ० चितन करवुं; मनन करवुं (२) संभाळ राखवी; चिता राखवी (३)विचारी काढवुं; शोधी काढवुं **चितक** वि० चितवनारुः, विचारनारु (समासने छेडे) **चितन न०, चितना स्त्री०** चितववुं ते; विचारवुं ते (२) चिंता; फिकर **चिंतनीय** वि० जुओ 'चिंत्य' [फिकर चिता स्त्री० विचारणा; विचार (२) **चिताकु**स्न वि० व्यग्र; चितातुर **चितापर** वि० चितामां पडेलुं – डूबेलुं **चितामणि** पुँ० इच्छेलुं आपनार मणि **चिंतत** ('चिंत्'नुं भू० कृ०) विचारेलुं; चितवेलुं(२)न० विचार;धारणा चितितोपनत, **चितितोपस्थित** वि० विचारतांवेंत हाजर थयेलुं चित्य वि० विचारवा – चितववा योग्य चीत्कार पुं० (हाथी, गधेडुं ६०नी) चीस **चीन** पुं० चीन देश(२)पुं० (ब०व०) चीन देशना लोको के राजाओ **चीनपिष्ट** न० सिंदूर **चोनां**शुक न० रेशनी वस्त्र; चीनमां बनेलुं बारीक वस्त्र **चीर** न० फाटेलुं वस्त्र; चींथरुं (२) वस्त्र; कपडुं (३) बौद्ध भिक्षुनुं वस्त्र (४) [(२) कथाधारी बल्कल **चीरपरिग्रह,चीरवासस्** वि०वल्कलधारी **चोर्ण** वि० आचरेलुं चिथिरं; कपडु **घीवर न०** भिक्षुक वगेरेनुं वस्त्र (२) चुद् १० उ० प्रेरवुं; धकेलवुं; हांकवुं (२) त्वरा करवी (३) आग्रहपूर्वक विनंति करवी (४) (दलील के वांधी) रजू करवुं; धरबुं चुप १ प० धीमेथी – चुपकीथी चालवु

चुबुक पुं० हडपची; दाढी चुर् १० उ० चोरवुं; लई लेवुं चुरि(-री) स्त्री० चोरी **चुलुक** पुं० कोगळो (२) प्रवाही भरवा करेलो खोबो **चु**ल्लि (-ल्ली) स्त्री० चूलो **चुंचु** वि० (समासने छेडे) विख्यात (२) निष्णात **चुंब** १, १० उ० चुंबन करवुं **चुंबक** पुं० चुंबनार (२) लोहचुंबक **भुंबन** न० चूमवुं ते चुंबित ('चुंब्'नुं भू० कृ०) चुंबेलुं **भुंबिन्** वि० चुंबत करतुं (२) स्पर्शतुं चूचुक, चूचुक न० स्तमनी दींटडी चुंडा स्त्री० चोटली (२) कलगी (मोर इ० नी) (३) कलगी (शणगारनी) (४) शिखर; टोच (५) चूडो; चूडी **चूडाकर्मन्** न०वाळ उत्तराववानो संस्कार **चूडापारा** पुं• वाळनी लट.— गुच्छो चूडामणि पुं०, चूडारत्न न० माधे पहेरातो मणि (२) (समासमां) ते वर्गमां श्रेष्ठ - तत्तम च्डाल वि० चूटा भुक्तः; शिखाताळुं चूत ५० आम्रवृज्ञ; आंबो चूर्ण १० उ० चूरो करवो; खाडवुं चूर्ण पुं०, न० भूको (२) पुं० खडी; चूनो **चूर्णक** पुं० एक वृक्ष (शीमळानी जातनुं) चूर्णिस्त्री० चूरो करवो ते; भूको (२) भाष्य; टीका च्णित वि० चूरो करायेलु **चूर्णी** स्त्री० जुओ 'चूर्णि' चूल पुं० केश चूला स्त्री० कलगी चुलिका स्त्री ० कूकडाना माथानी कलगी (२) नाटकमां बनवानी बाबतीनी नेपथ्यमांथी सूचना चूष् १ प० चूसवुं; पीवुं **जूष्य** न० चूसवानो भोज्य पदार्थं चेट, चेटक पुं० नोकर;सेटक;गुलाम

चेटि, चेटिका, चेटी स्त्री० दासी **चेतक** वि० चेतावनारुं (२)चेतनयुदत चेतन वि० चेतनयुक्त; संजीव (२) नजरे पड़े के देखाई आवे तेवुं (३) पुं० प्राणी ; मनुद्य (४) जीव ; आत्मा चेतना स्त्री० चेतनपणुं; चेतन्य (२) शूधब्धः , डहापणः , समज चेतस् न० चेतना; शुद्धि; भान(२) जीव ; प्राण (३) बुद्धिशक्ति (४) चित्तं; मन ; अंत:करण चेतोजन्मन्, चेतोभव, चेतोभ् पु० काम-देव (२) प्रेम; प्रीति चेद् अ० जो (वाक्यारंभे वपरातो नथी) चेदिपति, चेदिराज् (–ज) पुं० चेदि देशनो राजा – शिशुपाछ **चेय** वि० भेगुं करव^{्य} -- दीणवा योग्य (२) ढगलो करवा योग्य; गोठववा --- स्थापता श्रीग्य चेङ न० वस्त्र (२) (समासने अंते) खराव – दुष्ट (उदा० 'भायचिल' ≕खराब पत्नी) चेलिका स्त्री० चोळी; 'बॉडिस' **चेष्ट् १** आ० हालवुं; क्रिया करवी; गति करवी; चेष्टा करवी (२) यत्न करवो (३) आचरवुं; वर्तवुं **चेष्ट** न० चेष्टा; चाळो चेष्टा स्त्री० हालचाल; गति (२) चाळो; हाबभाव (३) प्रयत्न (४) वर्तन; बर्तणूक **चेष्टित** न० आचरण; वर्तन (२) हालचाल; चाळो; चेष्टा **चैतन्य** न० चेतना; चेतनपणुं(२)समज; ज्ञान (३) आत्मा (४) परमात्मा चैत्त वि० चितने लगतुः; मानसिक चैत्य वि० चिताने लगतु (२) पुं० जीवातमा (३) न० कीडीनो राफडी (४) (बुद्धना अवशेष उपर बांधेल) स्तूप(५)स्मरणस्तंभ; पाळियो (६) देवालय(७) यज्ञमंडप (८) पूजाने स्थाने ऊगेलु पीपळानुं के बीजुं कोई वृक्ष

चैत्यपास पुं० चैत्यनो रखेवाळ चैत्यमुख पुं० यतितुं कमंडलु चैत्यवृक्ष पुं० पूजाने स्थाने अगेलरे पीपळो चैत्र पुं० ते नामनी मास **चेत्ररथ** न० कुबेरन् उपवन **चैत्रसल** पुं० कामदेव **चैद्य** पुं० चेदिराज; शिशुपाळ चैल न० वस्त्र; कपडु चोक्ष वि० शुद्धः, स्वच्छ (२) प्रमाणिक (३)सुंदर; देखावडुं(४)कुशळ चोच न० तज(२)छाल(३)चामडुं चौदना स्त्री० प्रेरवं-मोकलवं-घकेल ंु-हांकबुंते (२) विधिः; आज्ञा चोदित ('चुद्'नुं भू०कृ०)वि० प्रेरेलुं; मोकलेलुं; आज्ञा करेलुं (२) दलील तरीके रजू करेलुं चोद्य वि० प्रेरवा योग्य: मोकलवा योग्य (२) उल्लेखवा योग्य (३) न० प्रश्त; शंका (४) आश्चर्य **चोर** पुं० चोरी करनार; चोरी जनार **चोरिका** स्त्री० चोरी; लूंट चोरिकाविवाह पुं० गुप्त लग्न चोरित वि० चोरेलुं (२) न० चोरी

चौल पुं॰, चोली स्त्री० चोळी; कवजी (२)पग सुधी पहोंचे तेवुं बस्त्र नोध्य वि० चूसवा योग्य (२) न० चूसवानो पदार्थ **चौक्ष** वि॰ जुओ 'चोक्ष' चौर पुं० जुओ 'नोर' राखबुं ते चौर्य त० चोरी; लूंट(२)गुप्तता;गुप्त चौल न० चुड़ाकर्म च्यवन न० च्युत थवुं ते **च्यादन** वि० च्युत करनाएं (२) स० काको मूकवुं ते; पदच्युत करवुं ते च्यु १ आ० नीचे पडी जवुं; च्युत थवुं (२)वहार नीकळवुं – झरवुं – टपकवुं (३) तळवं; लसी जवुं; च्युत थवुं(४) 🤊 थव्; अदृश्य थवु च्युन् १ प० टमकवुं; झरवुं (२) सरी पडवुं; रीकळी पडवुं च्युत ('च्यु'नुं भू० कृः) वि० पटी गरेलुं; च्यवेलुं (२) नष्ट (३) भःट (४) खोवायेलुं च्युति स्त्री • च्यववुं वै : बहुत थवुं ते (२) झेरवुं ते; टपकवुं ते (३) अदृश्य थर्चु ते; नाश (४) --विनाना थवु ते

ব্য

छग, छगल पुं० बकरो छटा स्त्री० समुदाय; पंक्ति; परंपरा (२) तेजपुंज; तेजनो चमकार छत्तर छत्र पुं० बिलाडीनो टोप (२) न० छत्री ; **छत्रघर, छत्रघार** पुं**०** छत्र घारण करनार छत्रपति पुं० सम्राट; वकवर्ती राजा छत्रिका स्त्री० नानुं छत्र (२) बिलाडीनो [(२) पुं• हजाम **छत्रिन्** वि० छत्रवाळुं छत्र धारण करनार्ष **छत्वर** पुं० घर (२) लतामंडप छद् १, १० उ० ढांकवुं (२)ओढवुं (३) संताडव्

छद पुं०, छदन न० ढांकण; आच्छादन (२) पांख (३) पांदर्डु (४) म्यान **छदि** स्त्री०, **छदिस्** न० छापर्रं के छाज **छद्मन्** न० वेष ; स्वांग (२)बहानुं(३) कपट; युक्ति (४) घरनुं छापरुं **छद्मरूपेण** अ० वेश धरीने ; छूपे वेशे छिपान् वि० कपटी; होंगी (२) (समासने अंते) —नो वेश लेनारं छन्न ('छद्'नुं भू०कृ०) वि० ढंकायेलुं; ढांकेलुं (२) छुपावेलुं (३) खानगी छर्द प्ं, छर्दन न०, छदि, छदिका,छदिस् स्त्री० ऊलटी

छल पुं०, न० छळ ; कपट ; (२)बहानुं ; मिष (३) शठता; लुच्चाई **छलन** न**ः, छलना** स्त्रीः छळकपट छलिक न० गीत-अभिनय साथेनुं गीत **छलित** वि० छेतरायेलुं; ठगायेलुं छल्लि (--ल्लो) स्त्री० छाब छवि स्त्री० चामडीनो वर्ण; रंग (२) शोभा; कांति **छंद् १०** उ० खुश — संतुष्ट करवुं (२) समजाववुं - पटाववुं (३) ढांकवुं (४) [स्वच्छंद; मनस्वीपणुं –मां राचर् **छंद** पुं० इच्छा; स्वेच्छा; रुचि (२) खंदस् न० इच्छा; स्वेच्छा; रुचि (२) स्वच्छंद; मनस्वीपणुं (३) वेद (४) वृत्त; छंद (५) एक वेदांग; छंदशास्त्र छंदानुबृत्त न०, छंदानुबृत्ति स्त्री० बीजाना छंदने अनुसरवुं - अनुकूळ [संतुष्ट थयेलुं ⊸करेलुं थवुं ते ষ্ঠবিत ('छंद्'नुंभू० कृ०) वि० खुश; छाग पुं० बकरो **डागमुख** पुं० कार्तिकेय **छागरथ** पुं० अग्निदेव छागल पुं० वकरो छागवाहन पुं० जुओ 'छागरथ' **ভারে** ('छो:'नुं মৃ৹ कृ०) বি**৹** ভিন্ন (२) दुर्बळ; कृश इक्सपुं शिष्य; विद्यार्थी **छात्रव्यंसक** वि० जडस् शिष्य छाद पुं० छापर्र; छाज **छादन** न० ढांकण (२) न० छुपाववुं ते क्टादित ('छद्'नुंभू० कृ०) वि० ढांकेलुं (२) छुपावेलुं **छाया** स्त्री० **छांयो**; छांयडो (तत्पुरुष समासने अंते 'गाढ छाया' वर्षमां 'छायम्' थाय छे) (२) प्रतिबिंव (३) कांति; तेज(४) सींदर्य; शोभा (५) वर्ण; रंग (६) सादृश्य (७) भ्रमः भास(८)प्राकृतनुं संस्कृत रूपांतर

क्टायातव, क्टायाद्रुम पुं॰ गाढ क्टायानाळुं झाड (२) 'नमेर्' वृक्ष छायाद्वितीय वि० एकलुं (पोतानी छाया ज साथमां छे एवं) **छायापथ** पुं० आकाशगंगा **छांदस** वि० वैदिक (२)वेद भगेलुं(३) छंद संबंधी (४) पुं० वेद भणेली ब्राह्मण (५) वेद **छिक्का** स्त्री० छींक **छिद् ७** उ० कापवुं; छेदवुं; फाडवुं; चीरवुं (२) खलेल करवी; हरकत करवी (निद्रादिमां) (३) दूर करवुं **छिद्** वि० (समासने छेडे) कापनारुं; छेदनारुं; नाश करनारुं **छिवा** स्त्री० कापव्ंते; छेदन **छिदुर** वि० जलदी भागे तेवुं; दरड (२) कापत्; छेदत्; भाग पाडत् (३) छिन्न; भागेलु;तूटेलु [(३)दोष;भूल;खामी **छिद्र** वि० छिद्रवाळुं(२)न० काणुं; छेद खिब्रदर्शन,खिब्रदर्शिन् वि० छिद्र जोनारः; दोषद्रष्टा छिद्रानुजीविन्,छिद्रान्वेषिन् वि० बीजा-नां छिद्र शोधनारुं; निदासीर **छिद्रित** वि० छिद्रवाळुं; काणावाळुं **ভিন্ন** ('ভিহ্'नুं মৃ৹ ক্ত**০) বি০ का**पेलुं; छेदेलुं ; भागेलुं ; तोडेलुं ; दूर करेलुं **छिन्नभिन्न** वि० कापीने जुदुं करायेलूं **छिन्नमु**ल वि० मूळमांथी कापी नाखेलुं **छिन्नसंशय** वि० संशय नाश पामेल **छुर् १ प० कापवुं** (२) कोतरवुं (३) ६ प० खरडवुं; लेप करवो -- प्रेरक० खरडवुं **छुरण** न० लेपबुंते; खरडबुंते **छरित** न० काप; कापो **छुरी, छूरिका, छूरी स्त्री०** छरी; चप्पु **छेक** वि० पाळेलुं (पशु) (२) शहेरनी चतुराई के दुर्गुणवाळुं छेतु वि० कापनार्ष (२) दूर करनार्ष

छेद पुं० कापवुं — छेदवुं ते (२) भाग; हिस्सो (३) खंड; टुकडो (४) दूर करवुं ते; अंत; नाश (५) न होबुं ते — न रहेबुं ते [करनारुं इ० छेदक वि० कापनार्ह; भाग — खंड छेदन वि० कापनार्ह; छेदनार्ह (२) नाश करनार्ह (३) टुकडा करनार्ह; फाडनार्ह (४) न० कापवुं — छेदवुं ते;

चीरबुं ते; भाग पाडवा ते (५) भाग; टुकडो; खंड (६) दूर करवुं ते; नाश करवो ते छेदिन वि० कापनारुं; तोडनारुं;चीरनारुं छेद्य वि० छेदवा — कापवा योग्य; कापी — छेदी शकाय तेवुं छो ४ प० [छचिति]कापवुं; कापी नाखवुं छोटिका स्त्री० चपटी; चपटी वगाडवी ते

স

ज वि० (समासने छेडे) जन्मेलुं; उत्पन्न थयेलुं ; –थी पेदा थयेलुं ; –माथी बनेलुं जक्ष् २,प० ∫जक्षिति | खावु;खाई अयुं जगच्चक्ष्म पुं भूर्य जगिच्चत्र न० जगतनी अद्भुत वस्तु (२) जगतरूपी आश्चर्य जिगदेवा - दुर्गी जगज्जननो स्त्री० जगतनी माता-जगत् वि० गतिमानः; जंगम (२) न० दुनिया; विश्व (३) शरीर; देह जगतो स्त्री०पृष्ट्यी (२) लोको (३) विश्व (४) एक छंद जगती न० द्वि० व० स्वर्ग अने पाताळ जगतीधर पुं० पर्वत जगतीपति पुं० राजा जगतीरह् पुं० वृक्ष जगतीश्वर पुं० राजा जगत्कर्तृ पु० जगत्कर्ता परमेश्वर (२) [अने पाताळ ब्रह्मा जगत्त्रय न० स्वर्ग, मृत्युलोक (पृथ्वी) जगत्पति पुं० जुओ 'जगदीश' जगत्यधीश्वर पुं० राजा **जगत्सेतु** पुं० परमात्मा जगत्स्रष्ट् पुं० जगतनो सरजनहार(२) **ब्रह्मा** (३) शिव जगदंबा, जगदंबिका स्त्री० दुर्गी जगदातमन् पुं ० परमातमा

जगदाधार पुं० काळ (२) वायु जगदायु पु० पवन जगदीप पुं० सूर्य जगदीश पु० जगतनो स्वामी (विष्णु; [शिव (४)नारद (५)ब्रह्मा **जगद्गुरु** पुं० परमात्मा (२) विष्णु (३) जगद्योनि पुं० परमात्मा (२) विष्णु; शिव; ब्रह्मा(३)स्त्री० पृथ्वी जगहुँद्य पुंठ श्रीकृष्ण जगन्नाथ पुं० जगतनो नाथ - स्वामी (२)विष्णु;दत्तात्रेय(३) जगन्नाथनीः मूर्ति (पुरीमां आवेली) (४) (द्वि०व०) विष्णु अने शिव 📗 ईश्बर; विष्णु जगन्निवास पुं जगतमां व्यापी रहेनार जगन्मातृ स्त्री० दुर्गा(२)लक्ष्मी जग्ध ('अद्'तथा 'जक्ष्'नुं भू० कृ०) वि० खाधेलुं जिन्धि स्त्री० भोजन; भक्षण जधन न० केड; कमर; कूलो (२) लश्करनो पाछलो – अनामत भाग **जघनगौरव** न० (मोटा) कुलानो भार जघनचयला स्त्री० व्यभिचारिणी(२) नृत्यमां चपळ स्वी जघन्य वि० हलकुं; निद्य (२) अंतिम; छेल्लु (३) हलका कुळ के पदवाळ (४) पुं० शूद्र ; अंत्यज

जघन्यज पुं० नानो भाई (२) शुद्र जटा स्त्री० बाबाओ माथे राखे छे ते के तेवुं केशनुं झूंड (२) वडवाई जेवुं मूळ **जटाजूट** पुं० जटानो जुडो **जटाधर** वि० जटा घारण करनारुं(२) पुं० शंकर (३) तपस्वी जटामंडल न० जटानो जुडो **जटामौलि** पुं० जटानो मुगट **जटाल वि० ज**टावाळुं; जटाधारी (२) जटानी पेठे गुथायेल् जटि स्त्री॰ जटा (२)वड (३)समूह जटिन् पु॰ शंकर (२) पीपळी जटिल वि० जटाधारी; जटावाळुं(२) अटपटुं; गूंचवायेलुं (३)पुं० शिव (४) तपस्वी **जटी** स्त्री० जुओ 'जटि' जठर वि० कठण (२) घरडुं; वृद्ध (३) बांधेलुं (४) पुं०, न० पेट; उदर(५) गर्भाशय (६)बस्तोल ; अंदरनो भाग जठराग्नि पुं० खाधेलुं पचावनारो जठरनो अग्नि – जठरनी सक्ति जड वि० ठंडुं; अकडाई गयेलुं (२) निश्चल ; स्तन्ध (३) मूर्ख ; ठोठ जडता स्त्री०, जडत्व न० आळस;काम करवानो अणगमो (२) मूर्खपण्: बेवकूफाई (३) सूर्छा; बेभानपण् **जडिमन्** पुं० जडता; ठंडापणुं (२) मुर्खता; बेवकुफाई (३) मुर्छा **जडोकृ ८** उ० जड, हिरुचाल विनानुं के मूर्छित बनावी देवुं जनुन० लाख (२) अळतो जनुगृह न० लाख वगेरेनुं बनावेलुं घर (पांडवोने सळगावी मूकवा) जञ्जुन० हांसडीनुं हाडकुं; हांसडी जन् ४ आ० [जायते] जन्मवुं; उत्पन्न थवुं (२) ऊगवुं; फूटवुं (३) बनवुं जन पुं॰ प्राणी; मन्ष्य; व्यक्ति (स्त्री के पुरुष) (२) लोको ; जनसमृदाय

जनक वि० उत्पन्न करनार्ह (२) पुं० पिता (३) विदेह - मिथिलाना राजा – सीताना पिता जनकतनया, जनकनंदिनी, जनकसुता, जनकात्मजा स्त्री० जनकपुत्री सीता जनचक्षुंस् न० सूर्य जनता स्त्री० जन्म (२) जनसमाज जनन वि० उत्पादक (२) न० जन्म; उत्पत्ति (३) उत्पन्न करवुं ते जननी स्त्री० माता जनपद पुं० जाति; प्रजा (२) देश; प्रदेश; राज्य (३) (पुर – नगरथी জলহুं) गामडानी भाग; देश जनप्रवाद पुं० अफवा; लोकोक्ति जनियतृ वि० उत्पन्न करनारुं (२) पुं० पिता (३) ब्रह्मा जनविष्णु पुं० उत्पन्न करनार जनलोक पुं॰ सात लोकमांनो पांचमो जनवाद पुं०, जनश्रुति स्त्री० अफवा; लोकोक्ति (२) आळः; कलंक जनसंबाध वि० लोकोनी भीडवाळुं जनस्थान न० दंडकारण्यनो एक भाग **जनंगम** पुं० चांडाल जना स्त्री० जन्म; उत्पत्ति जनाकीर्ण वि० लोको टोळे बळचा होय जनातिग वि० असामान्य; अलौकिक **जनाधिप** पुं० राजा जनार्णव पुं॰ मोटो जनसमुदाय ; काफलो जनार्दन पुं० विष्णु; कृष्ण **जनांत** पुं० निर्जन स्थान (२) प्रदेश (३) यम (४) संमुखता; सान्निध्य जनांतिकम् अ० बीजा न सांभळे तेम; एक बाजुए (नाटकमां) जिन स्त्री० जन्म ; उत्पत्ति (२)माता जनित वि० जन्मेलु (२) जन्म आपेलु (३) बनेलुं; थयेलुं जनितृ पुं० पिता **जनित्री** स्त्री० माता

जनी स्त्री० जुओ 'जनि' जनुस् न० उत्पत्ति; जन्म (२) जीवन जनौय पुं० लोकोनुं टोळ् जन्मकील पुंच विष्णु जन्मकुंडली स्त्री० जन्मपत्रिका जन्मतिथि पुं०, स्त्री०, जन्मदिन न०, जन्मदिवस पुं० जन्मनो दिवस जन्मन् न० जन्म ; उत्पत्ति (२) आयुष्य ; जिंदगी (३) पिता; जन्म आपनार जन्मपादप पु० वंशवृक्ष; वंशावळी जन्मभाज् पुं० जन्मेलुं ते; प्राणी जन्मभाषा स्त्री० स्वभाषा; मातुभाषा जन्मभूमि स्त्री० स्वदेश; वतन **जन्मभृत्** पुं० जुओ 'जन्मभाज्' जन्मसाफल्य न० जन्मनी सफळता; कृतकृत्यता **जन्महेतु** पुं० जन्मनुं कारण जन्माष्टमी स्त्री ० श्रीकृष्णनी जन्मतिथि – श्रावण बद आठम जन्मांतर न०पुनर्जन्म; बीजो जन्म (२) परलोक [जन्ममां करेलुं जन्मांतरीय वि० बीजा जन्मनुं; वीजा **जन्मांध** वि० जन्मथी आंधळुं **जन्मिन्** पुं० प्राणी जन्य वि० उत्पन्न थयेलुं; जन्मेलुं (२) (समासने अंते) ~वडे पेदा थयेलुं; --मांथी जन्मेलुं (३) जाति, वंश के कुटुंवनुं (४)पुं० वरनो संबंधी, भित्र के साथी (५) सामान्य माणस (६) न० जन्म; उत्पत्ति (७) जन्मेलुं ते (८)देह (९)युद्ध; सडाई(१०)प्रजा; लोक जन्या स्त्री० मातानी सखी (२)कन्यानी सखी (३) हाट (४) लोक ज्ञष् १ प० जपवुं; मनमां बोलवुं; रटवुं (२) मंत्रनो जाप करवो जिपनो ते जप पुं० मंत्र इत्यादिनुं रटण (२) माळा **जप**त् पुं० तपस्वी जपन न० जप; जप करवो ते

जपमाला स्त्री० जप करवानी माळा जपा स्त्री० एक फुलछोड; तेनुं फुल **जप्य वि०** जप करवा योग्य (२) पुं०, न० जप; जपनो मंत्र **जभ् १** आ० बगास् खार्वु ज्ञम् १ प० भोजन करवुं; जमबुं जमदिग्न पुं० परशुरामना पिता जमन न० खावुं ते जय पुं० विजय ; जोत ; फतेह (२) निग्रह (इंद्रियादिनो) (३) सूर्य (४) इंद्रनो पुत्र; जयंत (५) युधिष्ठिर (६) विष्णुनो द्वारपाळ(७)अर्जुन(८) महाभारतनुं नाम (९) जयजयकार (१०) वीररस जयकुंजर पुं० विजयी नीवडेलो हाथी जयमंगल पु० राजाने वेसवा माटेनो उत्तम हायी जयलक्ष्मी स्त्री० विजयनी देवी जयलेख पुं० विजयनो दस्तावेज जयशब्द पुं० जयजयकार; चारणी वडे करातो 'जय' एवो पोकार जयश्री स्त्री० विजयनी देवी जयस्तंभ पुं ० विजय के जीतनी यादगीरी माटे ऊभी करेली स्तंभ जयंत वि० विजयी (२)पुं० इंद्रनो पूत्र जया स्त्री० दुर्गी जिंदिन् वि० विजयी; फतेहमंद (२) मनोहारी; चित्ताकर्षक जय्य वि० जीतवा योग्य (२) जीती शकाय एवं जरठ वि० वृद्ध; जीर्ण (२) कठण; कर्करा (३) विकसेलुं; परिपक्व जरत् वि० वृद्धः; जीर्णः; अशक्त जरतिका, जरती स्त्री० वृद्ध स्त्री जरद्गव पुं० वृद्ध बळद जरा स्त्री० वृद्धावस्था; घडपण जराजीणं वि० वृद्धावस्थाथी अशक्त जरायु न० सापनी कांचळी (२) गर्भाशय (३) गर्भने वींटीने रहेतुं पातळुं पड

जरायुज पुं० गर्भाशयमांयी उत्पन्न थतुं प्राणी (मनुष्य, पशु बगेरे) **जरित** वि० वृद्ध; अशक्त जर्जर, जर्जरित वि० वृद्ध (२) जीर्ण थयेलुं (३) पीडित; त्रस्त; घायल जल वि० जड; बेवकूफ जल न० पाणी **जलकुक्कुट** पुं० जळक्कडी जलकेलि पुं०, स्त्री० पाणीमां के पाणी वडे रमत्रुं ते [अंजल्टि जलकिया स्त्री० पितृओने अपाती **ज**स्दी**डा** स्त्री० चुओ 'जलकेति' जलचर, जलचारिन् पुं० जळचर प्राणी जलज वि० पाणीमां जन्मेलुं - उत्पन्न थयेलुं (२) पुं० जळचर प्राणी ; माछलुं (३) चंद्र (४) रोवाळ (५) पुं०,न० राख **जलजंतु पुं० माछलुं वगेरे** जळचर प्राणी जलजीविन् पुं० माछीमार जलतरंग पुं० पाणीनुं मोजुं जलद पुं० मेघ; बादळ जलदागम पुं० दर्षाऋतु जलवर पुं० मेघ (२) समुद्र जलिंध पुं० समुद्र (२) एक संख्या (एकडा उपर पंदर मींडां जेटली) जलधिज पुं० चंद्र जलनिधि पुं० समुद्र जलपटल न० मेघ; बादळ **जलप्रदान** न० पूर्वजोने जलांजिल जलप्रपात पुं० घोघ जलमुच् पुं० मेघ; वादळुं जलयंत्र न० पाणीनो फुवारो(२)रेंट **जलयंत्रमंदिर न०** पाणीमां बांधेलुं अथवा फुवारावाळुं मकान; ग्रीष्मगृह जलयात्रा स्त्री० दरियाई मुसाफरी जलयान न० नौका; वहाण जलराशि पुं० महासागर; समुद्र जलरह् (-ह) न० कमळ जलवाह पुं० मेघ (२)पाणी भरनारो

जलबाहक पुं० पाणी भरनारो जलशय, जलशयन, जलशायिन् पृ० [तळाव; जळाशय जलस्थाम न०, जलस्थाय पुं० सरोवर; जलाकर पुं० झरो जलागम पुं० वर्षाऋतु जलात्यय पुं० शरद ऋत् जलाधिय पुँ० जळनो देव - वरुण जलाई वि० भीनुं (२)न०भीनुं वस्त्र जलावर्त पुं० पाशीनुं वमळ -- भमरो जलाशय वि० जळमां सूनारुं – आराम करतारुं (२) मूर्ख; बेवकूफ (३) पुं० सरोवर; तळाव; समुद्र (४) माछलुं **जलाश्रय पु**० तळाव (२) पाणीमा बांधेलुं [पितृओने अपाती जलांजिल जलांजलि पुरु पाणीनी अंजलि (२) जलुका स्थी० जळो **ज**लेश पुं० वरुण जलेशय पुं० विष्णु **जलेक्वर** पुंo वरुण जलोका, जलौका स्त्री० जळो जल्प् १ प० बोलवुं; वात करवी (२) बडबडवुं; अस्पष्ट बोलबुं जल्प पुं॰ कथन; वातचीत (२) बक-वाद (३) तत्त्वनिर्णयनी इच्छाथी नहि पण परपक्ष-खंडन अने स्वपक्ष-मंडननी इच्छाए करेलो वाद (न्याय०) जल्पक वि० बोल बोल करनाहं (२) वकवाद करनार्ह **जल्पन** वि० बोलतुं (२) बकवाद करतुं (३) न० कथन (४) बकवाद जिल्पत वि० बोलेलुं; कहेलुं (२) न० वातचीत (३) बकवाद **जब** पुं० त्वरा; उतावळ; वेग **जवन** वि० वेगीलुं; झडपी (२) न० त्वरा; वेग जवनिका, जवनी स्त्री० पडदो; चक जवा स्त्री० जुओ 'जपा'

जिंदन् वि० झडपी; वेगीलुं जहत् वि० तजतु; छोडी दतु जहत्स्वार्था, जहल्लक्षणा स्त्री० एक जातनी लक्षणा, जेमां शब्दना वाच्या-र्थनो त्याग थतो होय छे (ब्या०) जह्नु पुं० एक प्राचीन राजा (तेणे गंगाने पूत्री तरीके ग्रहण करी हती) जह नुकन्या, जह नुतनया स्त्री० गंगा **जंग पु० युद्ध**; लडाई **जंगम** वि० (स्थावरथी ऊलटुं) गतिशील; खसी शके तेवुं (२) सजीव प्राणीओ संबंधी (३) न० बीजे ठेकाणे लई जई शकाय तेवी वस्तु जंगल वि० उज्जड; वेरान; निर्जन (२) न० अरण्य; वन; झाडी जंघा स्त्री० जांघ; साथळ **जंघापथ** पुं॰ रस्तानी बाजुए पगपाळा चालवा माटेनो भाग; 'फूटपाथ' **जंघाब**ल न० नासी जबुं ते **जंजपूक** पुं० अतिशय जप करनार्ह जंतु पुं० प्राणी (२) जीवात्मा (३) लोक; जनता (४) तुच्छ कोटीनुं प्राणी जंतुमती स्त्री० पृथ्वी **जंपती** पु०द्वि० व० दंपती **जंबाल** पुं० कादव (२) लील जंबालिनी स्त्री० नदी जबीर पु० विजीसन् झाड जंबु स्त्री० जाबुडानु वृक्ष (२) जाबु जंबुक पुं० शियाळ (२) नीच मनुष्य जंबुखंड, जंबुद्दीप पुं॰ मेरु पर्वतनी आज्-बाजु आवेला सात खंडोमांनी एक (जेमां भारतवर्ष आवेलो छे) जंभ् १ आ० वगासुं खावुं –प्रेरक० नाश करवो; दूर करवुं जंभ पुं० जडबुं (ब०व०मां) (२) दांत (३) भक्षण; चाववुं ते (४) इंद्रे मारेला एक राक्षसनुं नाम (५) बगासुं जंभक वि० भक्षण करतुः; (२) पुंज दगाबीज भागम

(३) अधिधोपचार **जंभद्विष्, जंभभेदिन्, जंभरियु** प्ं० इंद्र **जंभा** स्त्री० बगास् जंभारि पुं० इंद्र जागता रहेवुं ते जागर पुं०, जागरण न० जागर्व ते; जागरूक वि० जागतुं; सावध जागुड पुं० जेनुं केसर वखणाय छेते देश (२) न० केसर जागृ २ प० जागवु (२) सावध रहेवुं जाग्रत् वि० जागतुं (२) सावध जाधनी स्त्री० साथळ (२) पूछडी जा**जिन्** वि० योद्धो; लडवैयो जाठर वि० जठरतुं; पेटतुं (२) पुं० पाचनशक्ति (३) छोकरो **जाडच न०** जडता; मूर्खपणुं जात ('जन्'नुंभू० कृ०) वि० जन्मेलुं; उत्पन्न थयेलुं (२) पुं० छोकरो; वेटो (३) प्राणी (४) न० जन्म; उत्पत्ति (५)वर्ग ; जरित ; सम्ह (६) बोळक जातक वि० जन्मेलुं(२)पुं० नवुं जन्मेलुं बाळक (३) न० जन्मपत्री (४) जन्म समये करवामां आवतो संस्कार **जातकर्मन्** न० 'जातक' (संस्कार) जातकौतूहल वि० तीत्र इच्छावाळ् जासप्रत्यय वि० विश्वास उत्पन्न थयो होय तेब् जातप्रेत वि० जन्मेलुं अने मरी गयेलुं जातमन्मथ वि० प्रेममा पडेलु जातमात्र वि० तरतनु जन्मेलु जातरूप वि० सुंदर; तेजस्वी (२) न० सोनुं (३) नग्नावस्था जातवासक न० जुओ 'जातवेश्मन्' **जातवेदस्** पुं० अग्नि जातवेश्मन् न० सुवावडीनो ओरडो जाता स्त्री० पुत्री; दीकरी जाति स्त्री० जन्म; उत्पत्ति (२) वर्ण के न्यात तथा योनिना भेदसूचक वर्ग; समुदाय (३) वर्गनी जुदी जुदी व्यक्ति-ओमां रहेलो समान धर्म (४) सप्तकना सात स्वरोमांनो दरेक (संगीत०)

जातिक्षय पुं० पुनर्जन्ममायी मुक्ति जातिधर्म पुं० वर्णाश्रम धर्म; वर्णधर्म जातिमत् वि० उच्च कुळमां जन्मेलुं जातिमह पुं जनमदिवसनी उत्सव जातिमात्र न० मात्र जन्म (जाति)थी ज प्राप्त थयेली स्थिति (कर्मथी नहीं) जातिसंपन्न वि० उच्च कुळन् जातिस्मर वि० पूर्वजन्मनी स्थिति याद करी शकनारुं जातिहोन वि० नीच जातिनुं; अधम जाती स्त्री० एक फूलनी वेल के तेनुं फुल (मालती) समुदाय जातीय न० अमुक प्रकारना वासणीनी जातु अ० कदी पण; जरापण (२) कदाचित्; कदीक; संभव छे के जातुथान पुं० राक्षस जास्य वि०एक ज जातिनुं;संबंधी (२) कुलीन (३) सुंदर; मनोहर जात्यंध वि० जन्मथी ज आंधळुं जानको स्त्री० जनकपुत्री – सीता जानपद पुं० गामडियो (२) देश; गामडां वगेरे वाळी भाग (३) प्रजाजन जानि स्त्री० आया; पत्नी (बहुन्नीहि समासने छेडे 'जाया' ने बदले) जानु न० डींचण; घूंटण जाप पुं० जप; मंत्र जपवो ते **जापक** वि० जप करनाहं (२) जपने लगतुं; जयथी मळेलुं जामदम्त्य पुं० परशुराम (जमदग्निनो जामा स्त्री० पुत्री (२) पुत्रवधू जामातृ पुं० जमाई **जामि** स्त्री० वहेन (२)पुत्री (३)पुत्रवधू (४) नजीकना सगपणवाळी स्त्री **जामित्र** न० लग्नथी सातमुं स्थान (ज्यो०) (पोतानी पत्नीनी बाबतमां भावि सद्भाग्य सूचवे) **जामेय** पुं० भागेज जाया स्त्री० पत्नी; भार्या

जायापती पुं० द्वि० व० पतिपत्नी; दंपती जार पुं० परस्त्रीनो प्रेमी; यार जारज पुं० व्यभिचारथी जन्मेलो पुत्र **जारण** न० जीर्ण करवुं ते (२) जीर्ण करनार बस्तु के मंत्रप्रयोग जारिणो स्त्री० व्यभिचारी स्त्री जारूथ्य वि० प्रशंसापात्र (२) जेमा दक्षिणादि खूब अपातां होय तेवुं **जाल** न० पंखी, माछलां बगेरे पकडवा माटेनी जाळ (२) करोळियानुं जाळुं (३) जाळी बाळुं बस्त र (४) भींतमांनुं जाळियुं; बारी (५) समृह; समुदाय (६)इंद्रजाळ (७)अणविकस्युं फूल **जालक** न० जुओ 'जाल' (२) वाळमां पहेरवानु एक घरेणुं जालकर्मन् न० माछीमारतो धंधो जालकारक पुं० करोळियो जालग्रथित वि० जाळाथी जोडायेलुं (पंजानी आंगळीओ इ०) जालपाद् (-द) पुं ० जाळाथी जोडायेला पगना प जावाळुं प्राणी (जेमके, बतक) जालाक्ष पुं० नानुंजाळियुं; गवाक्ष जालिक पु० माछीमार (२) शिकारी(३) ठग; शठ (४) करोळियो (५) प्रांतनो सूबो (६) मदारी; जादुगर जालिका स्त्री० जाळ (२)सांकळीवाळुं बस्तर (३) जळो (४) लोढ् (५) करोळियो (६) विधवा स्त्री (७) जाळीदार बुरखो (८) समृह जाल्म वि० कूर; धातकी (२) अविचारी (३)पुं० चोर; शठ(४)नीच –पामर भाणस **जाल्मक** वि० नीच; हलकुं **जाह्नवी** स्त्री० गंगानदी **जांगल** वि० जंगली (२) न० शिकार करी आणेलुं मांस जांब्नद वि० सोनानुं (२) न० सोनुं (३) सोनानुं घरेणं

जि १ प० जीतबुं; हरावबुं (२) चडियाता थवुं (३) जीतीने मेळववुं (४) निग्रह करवो; संयममा राखवुं जिगोषा स्त्री० जीतवानी इच्छा (२) स्पर्धाः हिरीफाईमां ऊतरेलुं **जिगीषु** वि॰ जीतवानी इच्छावाळुं (२) जिचत्सा स्त्री० खावानी इच्छा; भ्ख जिघांसा स्त्री० मारी नाखवानी इरादो जि**घांस्** वि० हणवानी इच्छा राखनारुँ (२)पुं० शत्रु जिघुक्षा स्त्री० पकडवानी – लेवानी **जिज्ञासा** स्त्री० जाणवानी इच्छा जिज्ञासु वि० जाणवानी इच्छावाळुं जित् वि० (समासने छेडे) जीतनारुं जित ('जि'नुं भू० कृ०) वि० जितायेलुं; ताबे करेलुं (२) जीतीने मेळवेलुं (३) –थी वश थयेलुं (४) न० विजय जितकाशि पुं० दृढ मूठी – मुक्को जितकाशिन् वि० विजय वडे शोभतुः विजयोन्मत्त जितश्रम वि० न थाके तेवुं जितात्मन्, जितेंद्रिय वि० जात उपर के इंद्रियो उपर विजय मेळवनार्; आत्मनि**ग्र**ही जिल्क्षर वि० जीत मेळवनारुं; विजयी जिन वि० विजयी (२) पुं० बौद्ध के जैन संत (३) विष्णु जिल्ला वि० विजयी (२) --ना करतां चर्डियात् (समासने छेडे) (३) पुं० सूर्य; इंद्र; विष्णु; अर्जुन जिहान वि० जतुं; –नी तरफ जतुं(२) मेळवत्; पामत् जिह्म वि० वक; वांकुं (२) कपटी;कुटिल; अप्रमाणिक (३) मंद; सुस्त (४) झांखु; अंघारियुं(५) न० कपट; अप्रमाणिकता जिह्यग वि० वांकुंचुंकुं जनारुं (२) धीमे चालनारुं (३) पुं० साप **जिह्यगति** वि० वांकूंचूंकूं चालनार्ह

जिह्मयोधिन् वि० अप्रामाणिक रीते लडनारुं (२) पुं**॰ भी**म जि**ह्यित** वि० वांकुं वळेलुं – वाळेलुं जिह्न पुं०, जिह्नास्त्री० जीभ जिह्वालौल्य न० जीभनी लोल्पता जीन वि० वृद्ध; जीर्ण (२) पूं० चामडानी कोथळी जीमूत पुं० मेघ; बादळ जीर्ण ('जू'नुं भू० कृ०) वि० जूनुं; प्राचीन (२) घसाई गयेलुं; फाटी गयेलुं (३) पाचन थयेलुं जोणींद्वार पुं० जीर्ण थयेला मंदिर वगेरेने फरी समरादवुं ते **जीव १** प० जीववुं (२) सजीवन थवुं (३) -ना वडे निर्वाह चलाववो **जीव वि० जी**वतुं; हयात (२)पुं० प्राण (३)जीवातमा (४) जीवन; आयुष्य (५) प्राणी (६) व्यवसाय; धंधी जीवक वि० जीवतुं (२) —ना वडे आजीदिका चलावतुं (३)लांबो वस्तत जीवतुं (४)पुं० प्राणी (५)नोकर (६) बौद्ध भिक्षु (७) गारुडी (८) व्याजे नाणां धीरनार शाहकार **जीवजीवक** पुं० चकोर पक्षी जीवत् वि० जीवत् **जीवधानी** स्त्री० पृथ्वी **जीवन** वि० सजीवन करनारुं (२) पुं० परमात्मा; परब्रह्म (३) न० जीववुं ते (४)आयुष्य; जिंदगी(५) जीवन-शक्ति; प्राण (६) पाणी (७) आजीविकानुं साधन (८) सजीवन करवुं ते **जीवनिकाय** पुं० जीवघारी प्राणी **जीवनीय वि**० निर्वाहोपयोगी (२) जीववा योग्य (३) न० पाणी (४) [आजीविका ताजुं दूध **जीवनोपाय** पुं० निर्वाहनुं साधन; जीवन्मुक्त वि० छते देहे मुक्त थयेलुं जीवन्म्क्ति स्त्री० जीवन्म्क्त दशा

बीवपुत्रा स्त्री० जेनो पुत्र जीवतो होय तेवी स्त्री [प्राणीओ **जीवलोक पुं**० मृत्युलोक (२) जीवतां **जीवशेष** वि० मात्र जीव ज बाकी रहे तेम नासी छूटेलुं हिाय तेवी स्त्री जीवसू स्त्री० जेनां बधां बाळको जीवतां **जीवंजीव** पुं० चकोर पक्षी जीवा स्त्री० धनुष्यनी पणछ (२)पृथ्वी (३) जीवन (४) आजीविका **जीवातु** पुं०, न० जीवन ; अस्तित्व (२) पुनर्जीवन आपवं – सजीवन करवं ते **जीवात्मन्** पुं० जीवात्मा; जीव **जीवांतक पुं० पारधी;** शिकारी (२) खुनी; वघ करनार जीविका स्त्री० निर्वाह; निर्वाहसाधन (२) जीवन (३) पाणी जीवित ('जीव्'नुं भू० कृ०) वि० जीवतुं; हयात (२) सजीवन करेलुं (३) न० जीवन (४) आयुष्य (५) निर्वाह; आजीविकानुं साधन **जीवितज्ञा** स्त्री० रक्तवाहिनी;नाडी **जीवितनाथ** पुं० पति जीवितस्य जीववा - जीवाडवा योग्य (२) न० आयुष्य; जीवन (३) जीववानी के जीवता थवानी आशा **जोक्तिसंशय पुं**० प्राणसंकट; जीवनुं जोखम (२) जीववानी अनिश्चितता जीविताशा स्त्री० जीववानी आशा जीवितेश पुं० पति; प्रेमी (२)यमराज जीविन् पु० (घणुंखरं समासने अंते) जीवतुं (२) -ना वडे जीवतुं(उदा० 'शस्त्रजीविन्') (३) पुं० जीवतुं प्राणी जीबोत्सर्ग पुं० प्राणत्याग करवी ते; जीव आपवो ते **जुगुप्सन** न०, **जुगु**प्सा स्त्री० आरोप; निदा; गाळ; ठपको (२) अणगमो; तिरस्कार बुष् ६ आ० संतुष्ट थवुं; प्रसन्न थवुं (२)

अनुकूळ थवं (३) गमवुं; भोगववुं; माणवं(४)सेववं(५)रहेवं; वारवार जबुं (६) १ प०, १० उ० विचारबुं; तर्के करवो (७)तपासवुं (८)तृप्त थवु **जुष्** वि० (समासने अंते)आनंद पामतुं; रस लेतुं (२) पासे जतुं;सेवतुं (३) पामतुं; पहोंचतुं **जुष्ट** ('जुष्'नुं भू० कृ०) वि० संतुष्ट; प्रसन्न (२)सेवेलुं (३)युक्त (४) प्रिय; अनुकूळ (५) प्रशंसायेलुं जूट पुं० जटा; केशसमूह जुंभ् १ आ० बगासुं खावुं (२) विकसवुं; खीलवुं ; फूलवुं (३)विस्तरवुं;फेलावुं (४) प्रगट थवुं; देखावुं जूंभ पुं०, न० बगासुं खावुं ते (२) खीलवुं ते; विकसवुं ते जुंभकास्त्र न० अध्यमा नाखनार अस्त्र जुंभण न० बगासु खानु ते (२) (आळस लावा) अवयवो लांबा करवा ते(३) खीलवुं ते (४) घेनमां नाखी देवुं ते (५) जृम्भकास्त्र **जुंभा** स्त्री० जुओ 'जृम्भ' जुंभिका स्त्री० बगासुं **जृं**भित् ('जृंभ्'नुं भू० कृ०) वि० बगासुं खाघेलुं (२) खीलेलुं; विकसेलुं (३) पणछ उतारी नाखेलुं (४) न० बगासुं (५) खीलवुं – विकसवुं ते ज् १ प० [जरति], ४ प० [जीर्यति], ९ प० [जुणाति], १० उ० [जार-यति-ते] जीर्ष थवुं, वृद्ध थवुं; कर-मावुं(२)नाश पामवुं(३)पची जवुं जेतृ वि० विजयी; जीतनारुं (२) पुं० विजेता **जेमन** न० जमवुंते नि० विजय औत्र वि० विजयी (२) पुं० विजेता (३)

जैन वि० जैन मतनुं अनुयायी जैवातृक वि० दीर्घायुषी (२)पुं० चंद्र

जेह्म्य न० कुटिलता; वकता

जोटिंग पुं० शिव (२) उग्र तपस्वी जोष पुं असंतोष; तृष्ति सुखे; निराते जोषम् अ० चूपकीथी; छानामाना (२) **ञ** वि० जाणनारुं; परिचित (समासने अंते) (२) डाहचुं (३) पुं० विद्वान (४) जीवात्मा स्तुति **ज्ञ**प्ति स्त्री० जाएवं ते (२) बुद्धि (३) **मा ९ उ०** [जानाति; जानोते] जाणवु; परिचित थवुं (२) शोधी काढवुं (३) समजबुं; अनुभवबुं (४) कसोटी करवी; परीक्षा थवी (५) ओळखब् (६) गणबुः; मानवं -प्रेरक० ज्ञापयति, ज्ञपयति | जणाववुं; जाहेर करबुं ज्ञात ('লা'নু'মৃ০কূ০) वि० जाणेलुं; समजेलुं (२) न० ज्ञान ज्ञाति पुं ० पिता(२)पिता तरफनो संबंधी; पित्राई; ते आखो वर्ग (३) सगुं माणस **ज्ञातिभाव** पुं० सगाई; सगापणुं ज्ञातिभेद पुं० सगामां कुसंप **ज्ञातृ** वि० जाणनारुं; डाहचुं; विद्वान ज्ञान न० जाणवुं ते; समजवुं ते (२) विद्या (३) ब्रह्मज्ञान (४) खबर; माहिती (५) भान; प्रतीति (६) बृद्धिशक्ति (७) अभिप्राय; मत **ज्ञानकृत** वि० जाणी बुजीने करेलुं **ज्ञानचक्ष्म् न०** ज्ञानरूपी असि ज्ञानतस् अ० जाणी जोईने; इरादापूर्वक **ज्ञानद** पुं० गुरु; आचार्य ज्ञानदा स्त्री० सरस्वती **ज्ञानमय** वि० ज्ञानरूप; ज्ञाननुंबनेलुं ज्ञानयोग पुं० मोक्ष माटे ज्ञान-चितन रूपी साधनमाग ज्ञानवृद्ध वि० ज्ञानमां आगळ वधेलुं; ज्ञानमां मोटुं -- श्रेष्ठ ज्ञानित्व न० भविष्य भाखवुं ते **ज्ञानिन्** वि॰ ज्ञानी; डाह्युं (२) पुं० भविष्य भाखनार; ज्योतिषी (३) आत्मज्ञानी

ज्ञानेंद्रिय न० ज्ञान ग्रहण करनार इंद्रिय (त्वच्, रसना, चक्षुस्, कर्ण ने घ्राण) **ज्ञापक** वि० जणावनार्यः; कहेनारः; रजू करनारुं (२) पुं० गुरु; शिक्षक (३) राजदरबारनो एक अधिकारी (जे आवेदनपत्र रजू करे छे) **ज्ञेय** वि० जाणवा के तपासवा योग्य **ज्या** स्त्री० धनुष्यनी पणछ ज्यानि स्त्री० जीर्णपणुं; बृद्धता (२) तजबुते (३) हानि ज्यायस् वि० वधारे मोटुं के चडियातुं **ज्यायिष्ठ** वि० उत्तम; श्रेष्ठ ज्येष्ठः वि० सौथी मोटुं (उंमरमां) (२) सौथी उत्तम; श्रेष्ठ (३) पुं० मोटो भाई (४) जेठ मास **ज्येष्टा** स्त्री० मोटी बहेन (२) वचली आंगळी (३) गंगा नदी (४) अढारम् ज्योतिर्मय वि० ताराओनुं बनेलुं ज्योतिर्विद् पुं० ज्योतिषी; जोषी ज्योतिवद्या स्त्री० उयोतिषशास्त्र (२) खगोळशास्त्र ज्योतिश्चक न० राशिचक ज्योतिष पुं० ज्योतिषी; जोपी (२) न० ज्योतिनिद्या ज्योतिषिक पुं० जोषी **ज्योतिषी** स्त्री० तारो ज्योतिष्क पुं० ग्रह, नक्षत्र, सूर्य इ० आकाशना तेजस्वी पदार्थमांनी दरेक ज्योतिष्मत् वि० तेजस्वी; प्रकाशित (२) तारा, ग्रह वगेरेथी युक्त **ज्योतिष्मती** स्त्री० रात्रि **ज्योतिस्**न० प्रकाश;तेज (२) वीजळी (३) ग्रह, नक्षत्र वगेरे तेजस्वी पदार्थ (४) ज्योतिषशास्त्र (५) सूर्य अने चन्द्र (द्वि० व०मां) ज्योतिःशास्त्र न० जुओ 'ज्योतिर्विद्या' ज्योतस्ना स्त्री० चांदनी; चंद्रप्रकाश (२) चंद्रप्रकाशवाळी रात

ज्योत्स्नी स्त्री० चंद्रप्रकाशवाळी रात ज्वर् १ प० ताव आववो; बीमार थवुं (२) आवेशयी तपवुं ज्वर पुं० ताव ज्वरित वि० ताव वडे बीमार थयेलुं ज्वल् १ प० सळगवुं; बळवुं; प्रकाशवुं (२) सळगी जवुं; बळी जवुं (३) बळतरा थवी

ज्वलन पुं० अग्नि (२) न० बर्ळवृं — सळगवृं ते ज्वलित ('ज्वल्'नुं भू० कृ०) वि० सळगेलुं; सळगतुं (२) प्रकाशित ज्वाल वि० बळतुं; सळगतुं (२) पुं० ज्वाळा; प्रकाश ज्वाला स्त्री० ज्वाळा; प्रकाश ज्वालामुखी स्त्री० ज्वाळामुखी पर्वत

श

झगति, झगिति, झटिति अ० एकदम; जलदी; झट श्रणभण न०, भणभणा स्त्री०, अणत्कार पुं० रणकार; खणखण अवाज **झर** पुं**०, झरा (–री)**स्त्री० झरो ; झरण् क्षर्भर पु॰ झांझ (बाद्य) (२)कांसीजोड (३)डाखलुं(४) नेतरनी सोटी (५) कळियुग श्र**र्मरिन्** पुं० शिव **अर्झरी** स्त्री० झांझ (वाद्य) **अला** स्त्री० छोकरी;पुत्री (२)पतंगियुं (३) तडको; प्रकाश श्रलि स्त्री० सोपारी **किंसीजोड** मल्लक न०, झल्लकी स्त्री० झांझ (२) बल्लरो स्त्री० झांझ (२) डाखलुं प्रस्लो स्त्री० डाखल् क्ष**ष** पुं॰ माछलुं (२) मोटो मत्स्य क्ष**केतन, अवकेत्** पुं० कामदेव; मदन

झषांक पुं० कामदेव; मदन झषोदरी स्त्री० व्यासमुनिनी माता -- सत्यवती **झंकार** पुं० गुंजारव; गणगणाट संकारिणी स्त्री० गंगा **झंकृत** न० जुओ 'झंकार' झंकृति स्त्री० धातुनां घरेणांना जेवो खणखणाट संझा स्त्री० झंझावात; वावाझोडुं (२) धातुनो रणकार; खणखणाट संसानिल, संसामरत्, संसावात पुं० वरसाद साथेनो वंटोळ **झंप** पुं०, **झंपा** स्त्री० कूदको झांकारिन् वि० कर्कश अवाज पेदा करत् **झांकृत** न० झांझरनो झणकार (२) झरणानो अवाज क्किल्ली स्त्री० तमहं(२)झांझ(वाद्य) (३) दिवेट (४) सूर्यप्रकाश

ञा

[म् तालुस्यानीय अनुनासिक; भा व्यंजनथी शरू थती शब्द नथी।]

ट

टंक १० उ० टांको मारवो; सीववु; जोडवुं (२) टांकवुं; कोतरवुं टंक पुं०, न० कुहाडी; छीणी (२) तरवार (३) तरवारनुं म्यान (४) टोच; शिखर (५) न० चलणी सिक्को टंकण न० टंकणखार टंकशाला स्त्री० टंकशाल दंकशाल स्त्री० टंकशाल दंकार पुं० धनुष्यनो टंकारव (२) बूम; पोकार; चीस टंकिका स्त्री० कुहाडी

टंकृत न० टंकार टंग पुं० टांग; पग (२) पावडो; कोदाळी टंगा स्त्री० टांग; पग टिट्टिभ पुं० टिटोडो (एक पक्षी) टिट्टिभो स्त्री० टिटोडी टिप्पणी(—नी) स्त्री० टूंकी नोंघ; टीप टीक् १ आ० जबुं; पहोंचवुं; रहेवुं टीका स्त्री० समजूती आपवा करेलुं विवरण

₹

ठक्कुर पुं० मूर्ति; प्रतिमा; देवता(२) संभान दर्शाववा प्रतिष्ठित माणसना नामने लगाडाती शब्द **ठिठा** स्त्री० जुगारनी अड्डो

3

डमर पुं॰ हुल्लड; धांधळ **उमर** पुं**० एक वाद्य**; डाखलुं डयन न० ऊडवुं ते (२) पाल खी; डोळी **ढंबर** वि० प्रसिद्ध; प्रस्थात(२)पुं**०** समूह; समुदाय (३) सादृश्य; सरखापणुं (४) आडंबर; देखाव (५) मोटो अवाज **डंबरनामन्** वि० आडंबरी नामवाळुं **डाकिनो** स्त्री० डाकण; स्त्रीपिशाच **डात्कृति** स्त्री० जुओ 'डांकृति' **डामर** वि० भयंकर (२) सदृश; अनु-रूप (सुंदर) (३) युं० हुल्लडनो अथवा उत्सवनो घोंघाट; घांघळ डांकृति स्त्री० घंटानाद भिखारी डिडिक पुं० चित्रविचित्र वेशवाळो डिडिस पुं० ढोल (दांडी पीटवानी)

डिंडिर, डिंडीर पुं० फीण
डिंड पुं० हुल्लड; दंगी; तोफान (२)
बाळक; बच्चुं (३) दडो; गोळो (४)
दडा जेंवो गोळ फूल-गुच्छ (५)
भयनो घोंघाट (६) शरीर; देह
(७) घूमतो भमरडो
डिंभ पुं० छोकरो; बाळक (२) पशुनुं
बच्चुं (३) फणगो; अंकुर
डिंभक पुं० नानुं बच्चुं (२) बाळक
डी १ आ० ऊडवुं (२) जवुं
डोन ('डी'नुं भू० कृ०) वि० ऊडेलुं
(२) न० ऊडवुं ते
डुंडुभ (-म) पुं० झेर विनानो साप
डोम, डोंब पुं० एक हलकी मनाती
जातिनो मनुष्य

₹

ढक्का स्त्री० मोटुं नगार्घ ढाल न० प्रहार – झाटको झीलवानुं चामडानुं एक साधन ढुंडन न० ढूंडवुं ते ढुंडि पुं० गणपति ढोक् १ आ० पासे जबुं

— प्रेरक० पासे लावबुं (२) रजू
करबुं; अर्पबुं
ढोकन न० अर्पबुं ते (२) बक्षिस; लांच
ढोल पुं० ढोल; नगारुं

দা

[ण् मूर्धस्यानीय अनुनासिक; आ व्यंजनयी शरू थतो शब्द नथी।]

त

লক ন০ ভাষা तकसार न० मालण तस् १, ५ प० छोलवुं; चीरवुं (२) षडवुं (छोलीने) (३) घायल करवुं तक्षक पुं• सुथार के कठियारो (२) विश्वकर्मा (३) एक नाग तक्षण न० कापबुंते; छोलवुं ते तगर पुं० एक वनस्पति (२) न० तेनुं बनतुं सुगंधी चूर्ण तज्ज्ञ वि० --जाणनारुं; विद्वान (२) पुं । डाह्यो माणसः तत्त्वज्ञानी तट पुं., न० ढोळाव ; करा≅ (२) किनारेा तटस्य वि० नदीकिंनारे आवेलुं (२) निष्पक्ष (३) वेदरकार; परायुं; निष्क्रिय (४) पुं० मित्र के शत्रु नहि तेवो -- निष्पक्ष माणस तटा स्त्री० जुओ 'तटी' तटाक पुं०, न० जुओ 'तडाग' तटाकिनी स्त्री० मोटुं तळाव तटाघात पुं० किनारा के भेखड सामे प्रहार करवो ते

तिटिनी स्त्री० नदी तटी स्त्री० भेखड; किनारो (२) ढोंळाववाळी बाजु **तड् १०** उ० मारवुं; प्रहार करवो (२) वगाडवुं (ढोल; संतुवाद्य ६०) तंडाग पुं०, न० तळाव तिंडत् स्त्री० वीजळी तिकत्वत् वि० वीजळी साथेनं; वीजळी-वाळुं (२) पुं० वादळ; मेघ तिंडन्मय वि० वीजळी जेवुं चमकतुं संडिल्लता स्त्री० फांटाबाळी वीजळी तडिल्लेखा स्त्री० वीजळीनो लिसोटो तत ('तन्'नुं भू० कृ०) वि०पथरायेलुं; विस्तृत (२) ढांकेलुं; पाथरेलुं (३) खेंचेलुं; चडावेलुं (धनुष्य) (४)न० तंतुवाद्य (५) पुं०, न० संतान **ततस् अ०** त्यांथी; तेमांथी (२) त्यां (३) त्यारथी; पछीथी (४) तेथी; ते कारणे (५) ते उपरांत; तेना करता वधारे (६) तो; तो पछी ततस्ततः अ० अहीं तहीं (२) पछी -

आगळ चालो; आगळ शुं ? (वात-चीतमां)

ततस्य वि० त्यांन् ततःकथम् अ० पण, तो पछी शी रीते ? ततःकिम् अ० तेथी शृं? तेथी क्षो लाभ ? (२) पछी शुं? [पछी ततःक्षणम्, ततःक्षणात् अ० तरत ज ततःपरम् अ० तदुपरांत ततःप्रभृति अ० त्यारथी मांडीने ततामह पुं० पितामह तित म० ना०, वि० तेटला (पहेली-बीजी विभविताब०व०नं रूप) तित स्त्री० हार; ओळ; समुदाय तत्काल पुं० ते समय (२) वर्तमान समय तत्कालम् अ० तरत ज;ते पछी तरत ज **तरक्षण** पुं ० वर्तमान समय (२)ए ज समय तरक्षणम्, तरक्षणात् अ० तरत ज तत्त्व न० वस्तुस्थिति; सत्य (२) सार्चु स्वरूप (३) म्ळ तत्त्व (४) ब्रह्म; परमात्मा (५) शरीर तत्त्वज्ञ वि० तत्त्वज्ञानी तस्वज्ञान न० यथार्थ ज्ञान (२) आत्म-ज्ञानः; परमः तत्त्वन् ज्ञान तत्त्वतस् अ० वास्तविक रीते; यथार्थपणे तत्त्वदशिन्,तत्त्वदृश् वि ० सत्य जाणनारुं

कसोटी
तत्त्वन्यास पुं० विष्णुनी पूजामां मंत्रीच्यारपूर्वक जुदां जुदां अंगोए जुदी
जुदी मुद्राओ लगाववानी किया
तत्त्विद् वि० जुओ 'तत्त्वज्ञ '
तत्त्वशुद्धि स्त्री० यथार्थं ज्ञाननूं शोधन
— निर्णय

तत्त्रनिकषग्रावन् पुं० सत्य जाणवानी

तत्त्वसंख्यान न० सांख्य सिद्धांत तत्त्वार्थ पुं० सत्य; सत्य स्वरूप तत्पर वि० ते पछीनुं (२) अत्यंत उत्सुक; तत्परायण [ते पहेलानुं तत्पूर्व वि० पहेली ज वार बनतुं (२) **तत्पूर्वम्** अ० पहेली ज वार तत्प्रथम वि० पहेली ज वार ते काम **तत्प्रथमम्** अ० पहेली जवार तत्र अ० त्यां;तेस्थळे(२)तेप्रसंगे; ते बाबतमां ठिकाणे ठेकाणे तत्र तत्र अ० अहीं तहीं;दरेक स्थळे; तऋत्य वि० ते स्थळनुं; त्यांनुं **तत्रभवत्** वि० तेओश्री (गेरहाजर व्यक्तिने माटेनुं मानवाचक संबोधन) तत्रभवती स्त्री० (गेरहाजर) स्त्रीने माटे वपरातुं मानवाचक संबोधन तत्रस्थ वि० त्यांनुं; त्यां रहेलुं क्रसमनीतरम् अ० ते पछी तरत ज तथा अ० तेम; ते प्रमाणे; आ प्रमाणे (२) अने;वळी; तेम ज (३) बराबर तेम अ; साचे; खरेखर तथागत वि० तेवी स्थितिमां आवेलुं; ते स्थिति पामेलुं (२) ते जातनुं (३) पुं० गौतभवुद्ध (४) जिन ; केवळज्ञानो तथा च अ० अने वळी (२) तेम ज (३) एवं कहेवामां आब्युं छे के तथापि अ० तोपण: तेम छतां तथाभाव पुं० ते दशा – स्थिति (२) सत्य स्वरूप |गमेल तथाभूत वि० ते स्वरूपनुं (२)ते दशाने तथाविध वि० तेवु (२) ते प्रकारनुं तथाविधम् अ०ते जप्रमाणे; तेमज तथाविधान, तथावत वि० -ए विधि के व्रतने अनुसरतुं तथाहि अ० दाखला तरीके (२) तेम ज तार्थेव अ० तेज प्रमाणे तथ्य वि॰ यथार्थ; साचुं; खर्ष (२) न० सत्य; वास्तविकता तद् स० ना०, वि० ते (पुं० प्रथमा एकवचनमां 'सः '; स्त्री० प्रथमा एक वचनमां 'सा'; न० प्रथमा एक वचनमां 'तत्') (२) ते – प्रसिद्ध (३)ते ज; हत् ते ज (४) बे बखत वपरातां

'अनेक' एवो अर्थथाय (उदा० 'तेषु तेषु स्थानेषु') (५)न० परत्नह्म(६) आ लोक; आ दुनिया **तद्** अ० त्यां; ते स्थळे (२) तो; पछी (३) त्यारे; ते समये (४) तेथी; ते कारणथी तदनंतरम् अ० त्यार पछी; तरत ज तदनु अ० पछीथी; त्यार बाद **तदर्थ** वि० जुओ 'तदर्थीय ' तदर्यम् अ० तेथी करीने; ते कारणे; ते माटे हितुवाळु तदर्थीय वि० ते माटेनुं; ते ज अर्थ के तरहं वि० तेने योग्य; तेने लायकन् तदवधि अ० त्यां सुधी **सरवस्थ** वि० ए दशाने पामेलुं; ए स्थितिमां मुकायेलुं **तदं**त वि०ए – आ प्रमाणेना अंतवाळूं तदा अ० त्यारे; ते समये **तदीय** वि० तेनुं [लगनीवाळ् तदेकचित्त वि० तेमां ज चित्त के **तद्गत** वि० ते तरफ बळेलुं; तेमां आसक्त तहेश्य पुं० एक ज देशनो - देशबंधु तद्धित वि० तेने माटे सारं – हितकेर (२) पुं नाम, सर्वनाम, विशेषण के अव्ययने लागीने नवी शब्द बनावती प्रत्यय (व्या०) तद्भव वि० तेमांथी थतुं - जन्मतुं (२) संस्कृतमांथी उद्भवेलुं (शब्द) **सद्र्प** वि०ए ज*स्*वरूपनुके गुणवाळू तहत् अ० तेनी पेठे; ते प्रमाणे तिद्व वि० ते जाणनार्च (२) सत्य जाणनारुं तद्विभा वि०ते प्रकारनुं तम् ८ उ० विस्तारवुं; लंबाववुं;लांबुं करवुं (२) पाथरवुं; फेलावबुं(३) छाई देवुं; भरी काढवुं (४) उत्पन्न करवु; अर्पवु (५) अनुष्ठान करवु (यज्ञ इ० नुं) (६) रचवुं (पुस्तक इ०) (७) वाळवं (धनुष्य)

तनय पुं० पुत्र; वंशज **तनयाः** स्त्री० पुत्री तनिका स्त्री० बांधवा माटेनुं दोरहुं तनिमन् पुं• कृशताः; अल्पताः; सूक्ष्मता तन् वि० कृश; क्षीण; दूबळु; पातळुं (२)नाजुक (३) सूक्ष्म (४) क्षुल्लक; नजीवं (५) छीछरं (६) स्त्री ० देह; शरीर (७) मूर्ति (८) स्वरूप तनुच्छद पुं० बस्तर तनुज पुं० पुत्र (२) शरीर उपरनो बाळ तनुजा स्त्री० पुत्री तनुता स्त्री० कृशता; सूक्ष्मता; अल्पता तनुत्यज् वि० शरीर छोडतुं (मरण काळे) (२) साहसी **तनृत्या**ग वि० कंजूस (२) पुं० पोतानो जीव जोखममां नाखवी ते **तनुत्र, तनुत्राण न० ब**स्तर **तनुधी** वि० अल्प बुद्धिवाळुं तनुप्रकाश वि० झांखा प्रकाशवाळुं तन्**भृत्** पुं० प्राणी ; मनुष्य तनुमध्य वि० पातळी-नाजुक कमरवाळुं तनुरुह् (-ह) न० वाळ (२) पीछुं तनुलता स्त्री० नाजुक - पातळूं शरीर **तनुवार** न० बस्तर तनुस् न० देह; शरीर तन् स्त्री ० शरीर (२) अवयव तन्कः ८ उ० ओछुं करवुं ; पातळुं करवुं **तन्ज** पुं० पुत्र (२)पीछ् तन्जा स्त्री० जुओ 'तनुजा' **तनृताप** पुं० देहकष्ट तनूद्भव पुं० जुओ 'तनूज' तनूद्भवा स्त्री० जुओ 'तन्जा' तन्नपात् पुं० अग्नि (२) न० घी तनूरह न० शरीर उपरनो बाळ (२) पोल; पीछुं (३) पुं० पुत्र (४) बाळ **तन्मय** वि० तल्लीन (२) तेन् बनेलुं (३) तेनारूप बनेलुं तन्मात्र वि०मात्र एज; शुद्ध (२) न ॰ मात्र ते ज; मात्र एटलुं ज; बह

अल्प-तुच्छ (३) पंचमहाभूतन् शुद्ध सूक्ष्म रूप तन्वंग दि० नाजुक अवयववाळुं **तन्त्रंगोः** स्त्री० नाजुक – सुंदर स्त्री तन्वी स्त्री० नाजुक – सुकुमार स्त्री तप् १, ४ प० प्रकाशवुं ; तपवुं (२) संताप पामवो; कष्ट वेठवुं; तप करवुं(३) तपाववुं; कष्ट आपर्वु तम पुं० ताप; गरमी (२) सूर्ये (३) ग्रीष्म ऋतु (४) तपश्चर्या तपती स्त्री० सूर्यनी पुत्री (संवरणनी पत्नी अने कुरुनी माता) सपन वि० तपतुं; प्रकाशतुं (२) पुं० सूर्य (३) न० संताप; दुःख तपनतनय पुं० यम; कर्ण; सुग्रीव सपनद्यति वि० सूर्यजेयुं तेजस्वी (२) स्त्री० सूर्यप्रकाश तपनसुता स्त्री० यमुना नदो **तपनीय** न० सोनुं (तपावीने शुद्ध करेलुं) **तपर्त्** पुं० उनाळो किरवुंते तपद्वरण न०, तपद्वर्या स्त्री० तप तपस् न० प्रकाश (२) दुःखः; ताप (३) तपश्चर्या (४) सप्तलोकमानो छठ्ठो लोक (५) स्त्री० माघ महिनो सपस पुं० सूर्य (२) चंद्र (३) पक्षी तपस्य पुं॰ फागण महिनो (२) अर्जुन तपस्या स्त्री० तपश्चर्या तपस्विन् वि० तप करनारुं (२) बिचारुं; बापडुं (३) पुं० तपस्वी तपस्विनी स्त्री० तप करती स्त्री (२) कंगाळ के दरिद्र स्त्री तपःसमाधि पुं० तपश्चर्याः; तपश्चरण तपःसुत पुं० युधिष्ठिर तपात्यय, तपांत पुं॰ उनाळानो अंत --चोमासानी शरूआत तपोधन वि० तपरूपी धनवाळुं; तप-स्वी (२) पुं॰ तपस्वी **तपोनिधि** पुं० तपस्वी

तपोबल न० तपनुंबळ **सपोमय** वि० तप आचरतुं (२) तपनुं त्रपोमूर्ति पुं ० तपस्वी (२) परमात्मा तभोराज्ञि पुं॰तपस्वी (२) विष्णु तपोवन न० तप करवाने अनुकूळ एवं उपवन; तपस्वीओवाळुं पवित्र बन त्रपोवृद्ध वि० अत्यंत तपस्वी तप्त ('तप्'नुंभु० कृ०) वि० तपेऌं; तपावेलुं (२) दु:खी; संताप पामेलं (३) आचरेलुं (तप) सम् ४ प० [ताम्यति] थाकी जवुं (२) इच्छवुं (३)पीडावुं (मन के शरीरधी); झूरवुं (४) स्वास रूधावो तम एक तद्भित प्रत्यय; नाम, अने विशेषणने लागतां 'सौथी श्रेष्ठ 'एवो अर्थ वतावे (उदा० 'सु**हुत्त**म ') तमस् न० अधकार(२)मूर्च्छा; निद्रा (३)अज्ञान (४) क्रोध; मोह; दुःख; पाप; शोक (५) तमोगुण **तमस** पुं० अंधकार (२) क्वो **तमस्कांड** पुं०, न० भारे अंधकार तमस्तिति स्त्री० अधकारनो फेलाव तमस्विनी, तमा स्त्री० रात्री तमाम् क्रियापद अने अव्ययने 'सौथी सारी रीते '-ए अर्थमां लागतो तद्धित प्रत्यय (उदा० 'पचिततमाम्') तमाल पुं० काळी छालवाळुं एक वृक्ष तमालपत्र न० तमालवृक्षनुं पांदडुं (२) तमालफळना रसथो करातुं तिलक तमि स्त्री० रात्री; अंधारी रात **तमिस्र** वि० अंधकारवाळुं; (२)न० अंधकार(३)क्रोध;मोह तमिस्रपक्ष पुं० कृष्णपक्ष **तमिस्ना स्त्री**० रात्री; अंधारी रात्री **तमी** स्त्री० जुओ 'तमि' तमोगुण पुं० अज्ञान-अंधकार (प्रकृतिना सत्त्व, रजस्,तमस्-ए त्रण गुणोमांनो एक) (सांख्य०)

तमोनुद्(-द) पुं० सूर्य(२) चंद्र (३) अग्नि (४) दीप तमोपह वि० अज्ञान -- अंधकार दूर करनार्ह (२) पुं० सूर्य (३) चंद्र तमोमय वि० अंधकारथी व्याप्त(२) अज्ञानमय तमोरि पुं०सूर्य (२) चंद्र (३) अग्नि तयः १ आ० जवुं (२) रक्षण करत्रुं तय पुं०रक्षण (२)रक्षक तर एक तद्धित प्रत्यय; विशेषण अने नामने लागतां 'बेमां वधु सारुं' एवो अर्थ बतावे तर वि० ओळंगनाहं; पार करनाहं (२) चडियातुं; जीतनारुं (३) पुं० ओळंगवुं – पार करवुं ते (४) होडी ; तरापो (५) मार्ग (६) नूर; भाडुं तरक्ष (-क्षु) पुं० एक हिंसक जानवर; तरस (२) वाघ तरण न० ओळंगवु ते [स्त्री० होडी तरिण पुं० सूर्य (२)होडी; तरापो (३) **तरणितनया** स्त्री० यमुना नदी तरपण्य न० होडीनुं न्र तरल वि० चपळ;चंचळ(२)अस्थिर; क्षणिक (३) चमकतुं; प्रकाशित (४) प्रवाही (५) पुं० कंठीनो मध्य-मणि तरलता स्त्री० चंचळता; चपळता; अस्थिरता (२) चमक; तेज **तरवारि** पुं० तरवार तरस् न० वेग (२) बळ; पराऋम तरस न० मांस तरस्विन् वि० झडपी; वेगीलुं (२) बळवान; पराक्रमी तरंग पुं० मोजुं (२) ग्रंथनो भाग; अध्याय (३)घोडानुं ठेकडा भरतां चालवुं ते तरंगिणी स्त्री० नदी तरंगित वि॰ मोजांथी ऊछळतुं (२) चंचळ (३) न० चकळ वकळ थवुं ते तरंड पुं॰, न॰, तरंडा, तरंडी स्त्री॰ होडी; तरापो

तराम् कियापद अने अब्ययने लागतां 'बेमांयी वधु सारी रोते'-ए अर्थमां लागतो तद्धित प्रस्यय तरालु, तरांधु पुं० सपाट तळियावाळी तरि स्त्री० नौका; नाव तरिणी स्त्री०, तरित्र न०, तरित्री स्त्री० नौका; होडी तरी स्त्री० जुओ 'तरि' तरीष पुं० होडी; मुछवो (२) समुद्र (३) प्रवीण अथवा योग्य पुरुष (४) स्वर्ग (५)काम ; घंधो (६) शोभा-शणगार तर पुं•वृक्ष तरकोटर न० झाडनी वखोल **तरखंड** पुं०, न० झाडनुं झुंड तरजीवन न० वृक्षनु मूळ तरुण वि० जुवान (२) नवुं; ताजुं; कुमळुं (३) तरतमां ज ऊगेलुं (सूर्य इ०) (४) तरवराटवाळुं; जीवतुं (५) पु० युवक; जुवान माणस तरुणिमन् पुं० किशोरावस्था; जुवानी तरणी स्त्री० युवती; जुवान स्त्री तस्तल न० झाडनां म्ळ पासेनी जगा **तरुमंडप** पुं० झाडोनी घटा – मंडप तर्कु १० उ० कल्पना करवी ; अटकळ करवी ; अनुमान करवुं (२)विचारणा करवी (३)मानवुं; धारवुं(४)इरादो करवो (५) नक्को करवुं; खातरी करवी तकेपुं० कल्पना ; अटकळ ; अनुमान (२) विचारणा (३) न्यायशास्त्र (४) इरादी तर्कविद्या स्त्री०, तर्कशास्त्र न० न्याय-शास्त्र ; 'लॉजिक ' **तर्कित** वि० तर्क करेलुं; शंका करेलुं (२) चर्चेंलुं; विचारेलुं तर्कु पुं०, स्त्री० रेंटियानी त्राक तर्भु पुं तरसः एक हिसक प्राणी तर्जे १प०, १० उ० धमकी आपवी(२) ठपको आपवो (३) तिरस्कार करवी तर्जन न०, तर्जनास्त्री० धमकी (२)

टपको (३) शरमिद्ं करवुं ते; पाछळ पाडी देवुं ते (४) गुस्सो सर्जनी स्त्री० अंग्ठा पासेनी आंगळी तजित ('तर्ज्'नुं भ्०कृ०) वि० धमका-वेलुं(२)ठपको अपायेलुं (३)शरमिदुं करायेलुं (४) न० धमकी तर्ण, तर्णक पुं० वाछरडुं **तर्पण न०** तृप्त करवुंते (२) तृप्ति ; संतोष (३) रोज करवाना पंच महायज्ञोमांनो एक – पितृयज्ञ तर्पित वि० तृप्त थयेलुं तर्षपुं०, तर्षणन०तृषा; तरस (२) [अभिलाषावाळुं इ∜छा **तींबत, तर्षुल** वि० तरस्य (२) **तहं् १** प० ईजा करवी (२)कतल करवुं **र्ता**ह अ० ते समये; त्यारे (२) तो; ए बाबतमां तल पुंजन जिल्ला हुन हो चेनो भाग (२) सपाटी (समासने छेडे घणी वार अर्थमां कशा फेरफार विना पण वपराय छे; उदा० 'भूतल') (३)झाड के कोई पण बस्तुनी नीचेनो भाग; तेनी छाया के आञ्चरो (४) न० अरण्य; वन (५) हेतु; मूळ (६) तळाव (७) डाबा हाथे पहेरातुं चामडानुं मोज् तलातल न० सप्त पाताळोमांनुं चोथुं तिलन वि० पातळुं; सूक्ष्म (२)नीचेनुं; तळेनुं (३) न० बिछानुं; पथारी तिलनोदरी स्त्री • पातळी केडवाळी स्त्री तरूपपुं०,न० शय्याः; पथारी (२) पत्नी (३) मिनारो (४) संरक्षक तस्पल न० हाथीनी पीठनुं हाडकुं **तस्तिका** स्त्री० कूंची तस्कर पुं० चौर (२) (समासने अंते) तुच्छ – तिरस्कार पात्र (उदा० 'जलद-तस्कर') (३) कान तस्करता स्त्री० चोरी (२) सांभळवुं ते तस्थिवस् वि० ऊभेलुं; स्थिर; स्थावर

तस्युवि० स्थावर; स्थिर **तंच्** ७ प० संकोचावुं; संकुचित करवुं **लंडुल पुं० चोला (२) छडेलुं** धान्य तंति स्त्री० पंक्ति; हार (२) दोरी; दोरडुं (३) गाय (४) वणकर **तंतिपाल पुं०** गोबाळ [(४)संतति संतु पुं॰ तांतणो (२) दोरो (३) पाश संतुक पुं ० दोरो; दोरडुं (समासने अंते) तंतुकीट पुं० रेशमनो कीडो ततुनाभ पुं० करोळियो **तंतुवाद्य** न० तारवाळ् वाद्य तंतुबाय पु० करोळियो (२) वणकर **तंत्र् १०** उ० शासन करवुं; राज्य चलाववुं (२) व्यवस्थित राखवुं तंत्र न० साळ(२)दोरो(३)हार;औळ (४) मुख्य मुद्दो (५) सिद्धांत (६) परिवार (७) शास्त्र (८)अधीनता (९) प्रकरण; भाग (१०) साधना के सिद्धि माटे मंत्रतंत्रादिना प्रयोग निरूपतो ग्रंथ (११) कुळ ; वंश (१२) औषधः तेने लगतो मंत्र (१३) व्यव-स्था; प्रबंध; नियमन (१४) सैन्य (१५) समूह (१६) वस्त्र (१७) कुटुंबपोषण (१८) शासन; सत्ता (१९) काई पण कार्य करवानो साचो ऋम के युक्ति तंत्रक पुं० घोया विनानुं को हं बस्त्र **तंत्रण** न० कुटुंबपोषण (२) झासन; नियंत्रण, प्रवंध संन्नि स्त्री० तंतु; दोरो; तार (२) धनुष्यनी पणछ (३) वीणा तंत्रिन् वि० तंतुनुः, ततुवाळु तंत्रिल वि० राजकाजमां मग्न **तंत्री** स्त्री० ज्ओ 'तंत्रि' तद्रास्त्री० आळस ; सुस्ती ; थाक (२) ऊंघ णशीपणुं थाकेल **तंद्रालु** वि० ऊंघणशी; तंद्रावाळुं (२) तंद्रिस्त्री० आळस; सुस्ती; घेन (२) थाक; मर्छा

तंद्रित वि० जुओ 'तंद्रालु' तंद्री स्त्री॰ जुओ 'तंद्रि' ताजिक (-त) पुं० ईराननो बतनी (२) उत्तम घोडानी एक जात ताटस्थ्य न० तटस्थपणुं ताटंक पुं० काने पहेरवानुं मोटुं एरिंग ताड पुं० प्रहार; मार (२) अवाज; नाद (३) घासनुं पूळियुं (४) पर्वत **ताडन** न० मारवूं ते; मार **ताडनी** स्त्री० चाबुक ताडि स्त्री० ताडवृक्ष (२) एक आभूषण **साडित** ('सड्'नुं भू०कृ०) वि० मारेलुं ताडी स्त्री० जुओ 'ताडि' **ताड्यमान** वि० मरातुं; हणातुं तात पुं० पिता (२) पुत्रो, शिष्यो वगेरेने संबोधवामां वपरातो प्रेमदर्शक शब्द (३) पूज्योने के वडीलोने लगाडातो संमानसूचक शब्द ताति पुं० दीकरो; वंशज (२) स्त्री० सतत चालु रहेवुं ते; परंपरा (उदा० 'अरिष्टताति ') तात्कालिक वि० एक ज समये थनारुं -थयेलुं (२)तरतनुं ज ; ते ज समयनुं तात्त्विक वि० वास्तविक; सत्य; खर्र तात्पर्यं न० हेतु; मतलब (२)भावार्थ तादर्थ्य न० समान इरादो के अर्थ होवो ते (२) – ने उद्देशीने होबुंते तादातम्य न० समानता; एकरूपता तादक्ष, तादृश् (-श) वि० तेना जेवुं ज **तान** पुं० तंतु; तांतणो (२) आलाप (संगीत०) (३) न० विस्तार तानव न० कृशता; अल्पता; तनुत्व ताप पुं० तडको; गरमी (२) पीडा; दु:ख; संताप तापत्य पुं० कुरुराजा(२)अर्जुन तापत्रय न० त्रण प्रकारनुं दु:ख (आध्या-रिमक; आधिदैविक; आधिभौतिक) तापन वि० प्रकाशित करतुं (२) पुं०

सूर्य (३) ग्रीष्म ऋतु (४) न० संतापवुं ते (५) मूझवण (नाटकमा) तापनीय वि० सोनानुं; सोनेरी तापस वि० तप के तपस्वी संबंधी (२) पुँ० तपस्वी तापसक पुं० खराब तपस्वी तापसी स्त्री० तपस्विनी **तापस्य न०** तपस्वीपणुं तापिच्छ पुं० तमाल वृक्ष के तेनुं फूल तापित वि० संतप्त तापिन् वि० ताप – पीडा उत्पन्न करतुं तापी स्त्री० तापी नदी (२) यमुना ताम पुं० ग्लानि के भय ऊभो करनार वस्तु (२) दोष (३) ग्लानि तामर न॰ पाणी (२) घी तामरस न० रातुं कमळ तामरसो स्त्री० कमळोवाळी तळावडी तामस वि० अंधकारमय (२) तमो-गुणी (३) अज्ञानी (४) दुर्गुणी; दुष्ट तामसिक वि० तमोगुण संबंधी तामिस्र पुं० कोघ; धिक्कार; द्वेष (२) एक नरक (३) क्रुब्लपक्षा ताम्र वि० तांवानुं (२) तांबाना रंग जेवुं लाल (३) न० तांबुं (४) तांबाना जेंबो लाल रंग **ताम्र**क पुं० तांबुं ताम्रकार, ताम्रकुट्ट पुं० कंसारो ताम्रगर्भ न० मोरथूथु **तास्रचूड** पुं० कूकडो ता**म्रपट्ट** पुं०, **ताम्रपत्र** न० तांबानुं पत्र**रं** (२) तेना परनो छेख ताम्नपर्णी स्त्री० मलय पर्वतमांथी नीकळती एक नदी (मोती माटे मशहूर) ताम्राक्ष पुं० कागडो (२) कोयल तास्त्रस्मन् पुं० पद्मराग मणि **ताम्रोपजीविन्** पुं० कंसारो **तार** वि० ऊंचुं;तीव्र (स्वर) (२) देदीप्यमान; चळकतुं (३) पुं० मोतीनी

स्वच्छता के पारदर्शकता (४) मोर्ट् के सुंदर मोती (५) तंतु; तांतणो (६) पुं०,न**० ग्र**ह अथवा तारो (७)**आं**खनी कीकी (८) न० रूपुं (९) बीजकोष (खास करीने कमळनो) तारक वि० तारनारुं; उद्घारनारुं; रक्षण करनारुं (२) पुं० सुकानी (३) तारो (४) कीकी तारका स्त्री० तारो; खरतो तारो (२) **तारकिणी** स्त्री० ताराओवाळी रात्रि तारिकत वि० ताराओथी भरेलुं **तारण** वि० उद्घारनारुं;पार लई जनारे (२) न० जीतनार ते (३) उद्घारनार ते तारणि (-णी) स्त्री० होडी; मछवी तारतम्य न० तकावत ; विशिष्टता (गुण, प्रमाण, मृत्य वगेरेनी सापेक्षता के चढता-ऊतरतापणुं) तारा स्त्री० ग्रह के तारो (२) कीकी **ताराक्षिप, तारापति** पुं० चंद्र (२) वालि (३) बृहस्पति तारापथा पुं० आकाश; अंतरीक्ष तारामैत्रक न० आंख मळतां ज ऊभी थती प्रीति; आकस्मिक प्रेम तारित वि० पार करेलुं; उद्घारेलुं तारुण्य न० जुवानी तारेय पुं० बुधनो ग्रह (२) वालिनो ताराधी थयेला पुत्र - अंगद तार्किक पुं० नैयायिक (२) तत्त्ववेत्ता तार्क्स पुं० कस्यप ऋषि [(४) पक्षी तार्ह्य पुं० गरुड (२) अरुण (३) रथ तार्तीय, तार्तीयीक वि० त्रीज् ताल पु॰ ताडवृक्ष (२) ताळी (३) फड़फड़ाट (जेमके, हाथीना काननी) (४) ताल आपवो ते (संगीत०) (५) कांसीजोड (६) ताळुं (७) शंकर (८) अंगूठो अने वचली आंगळी बच्चेनो टुंको गाळो (९) कंचाईनुं अम्क माप

तालकेतु पुं० भीष्म पितामह तालपत्र न० ताडपत्र (लखवा माटे वपरातुं) (२) काननुं एक घरेणुं तालफल न० ताडफळ [एक ओज़ार तालयंत्र न० ताळुंकूंची (२) वाढकापनुं **तालवन न**० ताडनुं वन **तालवृत** न० पंखो **तालच्य** वि० तालुस्थानी तालापचर,तालाबचर पुं० नर्तेक; नट तालिक पुं० हाथनो खुल्लो पंजो (२) ताळी (३) ग्रंथ के हस्तप्रत बांधवानुं ढांकण ताली स्त्री ० एक जातनो ताड (२) ताळी **तालीपट्ट**न० एक जातनुं कर्णभूषण तालोबन न० ताडनुं वन **तालु** न० ताळवुं **तालुस्थान** वि० ताळवाना प्रदेशने लगतुं – त्यांथी उच्चारातुं **तावक, तावकीन** वि० तार्ह ताबत् वि० तेटलुं; तेटलुं मोटुं; तेटलुं वघारे (२) तमाम; समूचुं (३) थोडुंक; जरा (४) अ० प्रथम; पहेलां (५) . दरम्यान; त्यां सुधी (६) हमणां ज; तरत ज(७) जं (भार बताववा) (८) खरेखर; नक्की (९) सर्वथा; संपूर्णपणे तावत्कृत्वस् अ० तेटली वार (गणतरी) **तावत्फल** वि० एवा फळवाळुं तायन्मात्रम् अ० तेटलुं ज ताबन्मात्रे अ० तेटला स्थळे तांडव पुं०, न० नृत्य; नर्तेन (२) शंकरन् भयंकर नृत्य (३) नृत्यकळा तौडवित वि० नचावेलुं; नाचतुं (२) जोसथी नाचता चक्राकारे फरतुं तांत ('तम्'नुं भू०कृ०) वि० थाकेलुं (२) पीडित (३) करमाई गयेलुं **तांतव** वि० तंतु – तांतणानुं बनेलुं (२) न० कॉतवुंते; वणवुंते

तांत्रिक वि० तंत्रशास्त्रने लगतुं (२) तंत्र के सिद्धांतमां पारंगत (३) पुं० तंत्रशास्त्रने माननार तांबुल न० पान (२) सोपारी तांबुलकरंक पुरु पाननी पेटी तांब्लवल्ली स्त्री० नागरवेल तांबुलिक स्त्री० तंबोळी; पान वेचनारी **तांबुली** स्त्री० नागरवेल **तिक्त** वि० कडवुं (२)तीखुं (३) सुवासित (४) पुं०कडवो स्वाद तिकतगंधा स्त्री० राई तिक्ततंडुला स्त्री० लींडी पीपर तिग्म वि० तीक्ष्ण; उग्न तिग्मकर, तिग्मतेजस्, तिग्मदोधिति, तिग्मद्युति, तिग्मरिक्म पुं० सूर्य तिग्मांशु पुं० सूर्य (२) अग्नि **तिज् १** आ० सहन करवुं(२) **१०** उ० के प्रेरक० धार काढवी;तीक्ष्ण करवुं (३) उक्केरवुं; क्षुब्ध करवु तितिका स्त्री० सहनशीलता; वैये **तितिक्षु** वि० सहिष्णु; सहनशील (२) तजवानी इच्छावाळु तितिर पु० तेतर पक्षी तितीर्षा स्त्री० तरवानी इच्छा तितीषुं वि० तरवानी इच्छावाळुं तित्तिर, तित्तिरि पुं० जुओं 'तितिर' तिथि पुं०,स्त्री० चांद्रमासनो कोई पण दिवस (दरेक पक्षमा पंदर गणाय) **तिथिपत्री** स्त्री० पंचांग तिथिप्रणी पुं० चंद्र तियी स्त्री० जुओ 'तिथि' तिनिश पुं० एक झाड (सीसमनी जातनुं) तिम् १प० भीनुं करवुं (२)४प० भीनुं थवुं (३) शांत थवुं **तिमि** पुं० समुद्र (२) वहेल — मगर-मच्छ (३) माछलु तिमिघातिन् पुं० माछीमार **तिमित** ('तिम्'नुं भू०कृ०) वि० भीनुं (२) निश्चल (३) शांत

तिमिध्वज पुं० शंबर राक्षस तिमिर वि० अंधकारमय (२) पुं०, न० अधकार (३) अंधत्व तिमिरारि पुं० सूर्य तिमिगल पुं० (तिमिने पण गळी जाय तेदो) मोटो मगरमच्छ तिमी स्त्री० जुओ 'तिमि' तिरक्ची स्त्री० पशुनी मादा **तिरब्बीन** वि० त्रांसुं;तीरछुं;वांकुं तिरस् अ० वांकी रीते (२) गुप्त रीते; अदृश्य होय तेम तिरस्करिणी स्त्री० पडदो;बुरखो(२) अदुश्य थवानी विद्या तिरस्कार पुं० तुच्छकार; अनादर (२) ठपको; गाळ; निदा (३) ढंकाई जवुं – अदृश्य थवुं ते (४) छातीनुं बस्तर चडियात् तिरस्कारिन् वि० पाछळ पाडी देतुं; तिरस्कु ८ उ० तिरस्कार करवो (२) ठपको आपवाः; निदवुं (३) ढांकी देवुं; संताडवुं (४) चंडियाता थवुं (५) दूर करवुं; खसेडी मूकवुं तिरस्कृत वि० तिरस्कार पामेलुं (२) ठपको पामेलुं (३) गुप्त; ढंकायेलुं (४) पाछळ पाडी देवायेल् तिरस्कृति, तिरस्किया स्त्री० जुओ 'तिरस्कार' तिरोधा ३ उ० अदृश्य थवुं; देखाता बंध थवुं (२) छुपाववुं (३)चडियाता थवुं;पाछळ पाडी देवुं (४) हराववुं; जीतवुं (५) स्रसेडवुं; दूर करवुं तिरो**ञ्चान** न० अदृश्य थवुं ते (२) पडदो; ढांकण; बुरखो तिरोभाव पुं० अदृश्य थवुं ते तिरोभू १ प० अदृश्य थवुं तिरोहित वि० अदृश्य थयेलुं (२) संताडेलुं; ढंकाई गयेलुं तिर्येक अ० त्रांसुं-तीरछुं-वांकुं होय तेम

तियंग्योनि स्त्री० पशुप्राणीनी सृष्टि ति**यंच्,तियंच** वि० तीरछुं; त्रांसुं (२) बांकुं (३) पुं०,त० पशु; जानवर (४) पंखी; पक्षी **तियँची** स्त्री० पशुनी मादा तिल पुं० तलनो छोड; तल (२) कोई पण पदार्थनो सूक्ष्म कण (३) शरीर उपर तल जेवी डाघी तिलक पुं० सुंदर फूलवाळुं एक झाड (२) पुं०, ने० चांरलो; टोलुं (३) समासने अंते 'ते ते वर्गमां श्रेष्ठ - शणगाररूप' -- एवा अर्थमां वपराय छे तिलका स्त्री० एक जातनो हार तिलकित वि० तिलक करेलुं (२)शोभित तिस्रवस्ति (नर्लो) स्त्री० तलनो खोळ तिलपीड पुं० घाणी फेरवनारो; घांची तिलद्याः अ० तल जेवडा नाना अंशमां तिलोत्तमा स्त्री० एक अप्सरा तिलोदक न० पितृतर्पण अर्थे अपातुं तिलयुक्त जल तिष्ठद्गु अ० गायो (दोहवा माटे) सांजे ऊभी रहे त्यारे (संध्या पछी कलाक जेटले समये) तिष्य वि० पुष्य नक्षत्रमां जन्मेलुं (२) भाग्यशाळी; शुभ (३)पुं०पुष्य नक्षत्र (४) न० कळियुग तितिष्ठ पुं०, तितिष्ठिका, तितिष्ठी, तितिलिका, तितिली स्त्री० आमली तीक्ष्ण वि० धारवाळुं; तीत्र (२) तीखुं (३) गरम (४) कठोर; कडक (५) तोछडुं (६) होशियार; जोशीलुं; उत्साही (७) पवित्र; धार्मिक; तपस्वी (८) हानिकारक; प्रतिकृळ तीक्ष्णधार पुं तरवार वाळ तोक्ष्णबृद्धि वि० होशियार; तीव्र बुद्धि-तीक्ष्णमार्ग पुं० तरवार **तीक्ष्णांशु** पुं० सूर्य (२) अग्नि तीर न के किनारो (२) कोर; कोराण

तीरित वि० फेंसलो आपेलुं; चुकादो आपेलुं (२) न० समाप्ति; परिपूर्णता तीर्ण ('तृ'नुं भू० कृ०) वि० ओळंगी गयेलुं; तरी गयेलुं(२)चडियातुं (३) पराभव पामेलुं (४) नाहेलुं; नाहवा ऊतरेलुं तीर्थं वि॰ पवित्र (२) तारनारुं (३) न० मार्ग; रस्तो; घाट;ओवारो (४) जळाशय (५)यात्रानुंधाम; पुण्यक्षेत्र (खास करीने नदीने किनारे आवेलुं) (६) उपाय; साधन (७) पूज्य के पवित्र माणस (८) आचार्यः; गुरु (९) प्रधान; मंत्री (१०) शिखामण; बोध (११) योग्य समय (१२) पुं० शंकराचार्यं संन्यासीओना स्थापेला दस वर्गोमांनो एक (१३) सन्यासीना नाम पाछळ लगाडातो मानवाचक शब्द तीर्थंकर पुं० जैनधर्मनो प्रवर्तक (चावीस छे) (२) साधु; तपस्वी (३) नवी सिद्धांत प्रवर्तावनार आचार्य तीर्थकाक पुं० लोलुप मनुष्य (तीर्थ-स्थानना कागडा जेवो) तीर्यचर्या स्त्री० तीर्थयात्रा तीर्थध्वांक्ष पुं जुओ 'तीर्थकाक' **लीर्थभूत** वि० पवित्र; पावनकारी तीर्थयात्रा स्त्री० तीर्थनी यात्रा **तीर्थराज** पुं० प्रयागराज तीर्थराजि (-जी) स्त्री० काशी तीर्थेवायस पुं० जुओ 'तीर्थकाक' तीर्थंकर पुं० जुओ 'तीर्थंकर' तीथिक पुं० जात्राळु (२) तपस्वी बाह्मण (३)अन्य संप्रदायनो अनुयायी के आचार्य [करनार्ह) तीर्थोदक न० तीर्थस्थाननुं जळ (पवित्र तीव्र वि० उष्ण; तीखुं; कठोर; दुःसह तु अ० (वाक्यारंभे कदी न आया वे) पण; परंतू (२) बीजी बाज -- ऊलट्

(३) हवे (४) पादपूरण अर्थे के भार दर्शाववा पण वपराय छे तुक्खार, तुखार पुं० विध्यमां रहेती एक जाति (२) 'नुखार' घोडो **तुच्छ** वि० तुच्छकारने पात्र; माल वगरनुं (२)नजीवुं ; अल्प (३)कंगाळ ; दीन (४) त्यजायेलुं तुच्छ**दय** वि० दयाहीन **तुद्**६ उ० मारवुं; ईजा करवी (२) परोणाथी गोदाववुं (३) पीडवुं तुर वि० पीडतुं; दु:ख देतुं **तुम्नवाय** पुं० दरजी तुम् ४,९ प० ईजा करवी; मारवुं तुमुल वि॰ घोंघाटवाळुं (२) भयंकर; दारुण; उग्र (३) गूंचवायेलुं; क्षुब्ध (४) पुं०, न० घोघाट (५) युद्ध तुर् स्त्री० वेग; झडप तुरग पुं० घोडो (२) मन; विचार तुरगिन् पुं० घोडेसवार **तुरंग, तुरंगक** पुं० घोडो **सुरंगकांता** स्त्री० वडवा;घोडी **तुरंगवक्त्र** पुंच किनर **तुरंगसादिन्, तुरंगिन्** पुं० घोडेसवार तुरायण वि० निःस्पृह; निरिच्छ (२) न ॰ एक प्रकारनो यज्ञ (३) एक व्रत तुरासाह् पुं० इंद्र **तुरि (-रो)** स्त्री० साळवीनो कांठलो के कूचडो (२) पींछी (चित्रकारनी) तुरीय वि० चीथुं (२) चार भागनुं बनेलुं (३) न० चोथो भाग (४) तुर्य अवस्था (वेदांत०) **तुर्य** वि० चोथुं (२)न० चोथो भाग (३) (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति पछी) आत्मा-नी चोथी अवस्था - जेमां परमात्मा साथे अभेद थाय छे (वेदांत०) **तुल् १** ५०, १० उ० तोळवुं; मापवुं (२) (मनमां) तुलना करवी; विचारवू (३) सरखामणी करवी (४) ऊंचुं

करवुं (५) टेको करवो (६) शंका करवी (७) कसोटी करवी बुलन न० ऊंचं करवं ते; अंचकवं ते (२) तोळवुं ते; वजन (३) तुलना, सरखामणी के परीक्षा करवी ते **तुलना** स्त्री० सरखामणी (२) वजन करवुं ते (३) अंचकवुं ते (४) मूल्य आंकवुं ते; परीक्षा – तपास करवी ते **तुलसी** स्त्री० तुळसीनो छोड **नुस्रा** स्त्री० त्राजवुं; त्राजवानी दांडी (२) वजन; माप (३) तोळवुं ते (४) सादृश्य (५) तुला राशि **तुलाकोटि (-टो)** स्त्री० नुपूर; कडलुं **तुलादान** न० पोताना वजन जेटलुं सोनुं-रूपुंदानमां आपवुंते तुलाधिरोहण न० समानता; सरखामणी **तुलापुरुष, तुलाभार** पुं० माणसना वजन जेटलुं सोनुं-रूपुं (तुलादान माटे) तुलामान नः, तुलायष्टि त्राजवांनी दांडी नुलित वि० तोळेलुं (२) सरखुं;समान तुल्य वि० समान; सरखुं (२) योग्य **तुल्यकक्ष** वि० समान कोटीनुं **तुत्यनक्तंदिन** वि० रात अने दिवसनो फेर न समजतुं (२)सरखां दिवस अने रातवाळ् **तुल्यम्** अ०एक साथे ज (२)समानपणे **तुवर** वि०तूर्ह(२)पुं०तुवेर तुष् ४ प० संतुष्ट थवुं; प्रसन्न थवुं (२) शांत थवुं (३) संतोष आपवो तुष पुं० अनाजनुं फोतरुं; ढ्णसुं तुषानल पुंज फोतरांनी अग्नि (२) ते वडे अपराधीने देहांतदंड देवानी सजा तुषार वि०ठंडुं; शीतळ(२)पुं० हिम; बरफ (३)झाकळ ; ओस (४)ठंडी तुषारिकरण पुं० चंद्र तुषारगौर वि० बरफ जेवुं क्वेत (२) बरफ वडे स्वेत थयेलुं (३) पुं० कप्र तुषाररशिम पुं० चंद्र तुषाराद्वि पुं० हिमालय तुषित पुं० गणदेवतानो एक प्रकार **तुष्ट** ('तुष्' नुं भू० कृ०) वि० संतुष्ट **तुष्टि** स्त्री० संतोष**;** प्रसन्नता (२) तृष्ति **लुहिन** वि० शीतळ; ठंडुं (२) न० बिरफनो कण बरफ(३)झाकळ तुहिनकण पुं शाकळन् बिंदु (२) तुहिनद्युति, तुहिनरिक्म पुं० चंद्र तुहिनाचल, मुहिनाद्रि पुं० हिमालय तुहिनांशु पु० चंद्र तुंग वि० ऊंचुं; उन्नत (२) मुरूय; प्रधान (३) उग्र (४) पुं० पर्वत (५) ऊंचाण; ऊंचाई; टोच **नुंगिमन्** पुं० ऊंचाई तुंज पुं० राक्षस तुंड न० मुख; मों (२) चांच (३) सूंढ **तुंद** न० पेट; फांद **र्नुदपरिमृज्(--ज)** वि०पेट उपर हाथ फेरव्या करतुं; एदी तुंदि स्त्री०, न० पेट (२) डूंटी तुंदिक, तुंदित, तुंदिन्, तुंदिभ, तुंदिल वि० मोटा पेटवाळुं; फांदवाळुं (२) भरेलुं (३) मोटुं तंदिलित वि० फांदवाळुं **तुंब** पुं० तुंबडुं **तुंबर** पु० एक गांधर्व तुंबा स्त्री० लांबुं तुंबडुं (२) तांबडी; दूधनुं वासण तुंबुर पुं० एक गांधर्व – तुंबर तुण पुं० भाषी (बाणनी) तूणमुख न० भाथानुं मों तुणि प्ं०, तूणी स्त्री०, तूणीर पुं०, न० बाण राखवानो भाषो तूर्णम् अ० वेगयी **तूर्य** पुं०,न० एक जातनुंबाद्य सूल पुं०, न०, तूलक न० कपास **त्रुलकार्मुक** न०, तूलचाप पु० पींजण तूलदाहम् अ० रू बळे के बाळे तेम **तुलधनुष्** न० पींजण तूलपीठी, तूललासिका स्त्री० त्राक तूलसेचन न० कांतवुं ते **तूला** स्त्री० कपासनी छोड (२) दिवेट तुलि स्त्री० चित्रकारनी पीछी तुलिका स्त्री० चित्रकारनी पींछी (२) दिवेट (३) रजाई (४) मूस सुली स्त्री० कपास (२) दिवेट(३) पींछी (वणकर के चित्रकारनी) तूबर वि० जुओ 'तुबर' तूष्णीक वि० चूप; मूंगुं तूष्णीम् अ० चूपकीथी; बोल्या विना तूंबि (--बी) स्त्री० तुंबडुं तुण न० घास; खड (२) तरणुं (३) तुच्छ वस्तु (तरणा जेवी) **तृणगणना** स्त्री० तृण समान गणवुं ते तृणद्रुम पुं० ताड (२) खजूरी (३) नाळियेरी (४) सोपारीन झाड तृणधान्य न० वाच्या वगर ऊगतुं धान्य तृणावतं पुं० वंटोळ [पाछुं पाडी देवुं तृणीकृ ८ उ० तण क्लाजेवुं गणवुं (२) तृतीय वि० त्रीचुं विभिन्त तृतीया स्त्री० त्रीज (तिथि) (२) त्रीजी तृब् १, ७ ५० चीरवुं; फाडवुं (२) नाश करवुं; वध करवो तृष् ४, ५, ६ ५० तृप्त थवुं; संतुष्ट थवुं (२) तृप्त करवुं (३) १ प०, **१**० उ० तृप्त करवुं; खुश करवुं तृष्त ('तृष्' नुं भू० ऋ०) वि० संतोष पामेलुं; घरायेलुं तृष्ति स्त्री० तृष्त – संतुष्ट थवुं ते तृष् ४ प० तरस्या थवं (२) उत्सुक – आतुरता; तृष्णा आत्र थव् तृष्(-षा) स्त्री० तरस (२) अत्यंत तृषातं वि० तरसथी पीडायेलुं, तरस्यु तुषित ('तृष्' नुं भू० कृ०) वि० तरस्यं (२)अत्यंत उत्स्क

तृष्णास्त्री० तृषा (२) तीव्र इच्छा तृष्णाक्षय पु० शांति; तृप्ति **तृह**् ७ प०, **१०** उ०, ६ प० मारवुं; मारी नाखबु **तृंह**् ६ ५० महरवुं; सारी नाखवुं **तृंहण** न० मारी नास्त्रवुं ते तृ १ प० तरी अवुं; ओळंगवुं (२) तरवुं (पाणीमां) ं तेज पुं० तीवता (२) तीक्ष्णता; धार (३)जुस्सो (४) प्रकाश तेजन न० वांस (२) धार काढवी ते (३) प्रज्वलित करवुं ते (४)शस्त्रनी अणी के धार **तेजनी** स्त्री० सादडी (२) वाळनो गुच्छो **तेजस्**न०तीक्ष्णताः; धार (२) शयनी अणी (३) प्रकाश; उष्णता (४) तेजस्विता; शोभा; सौंदर्य (५) जोम; उत्साह; पराऋम (६) पंच-महाभूतोमांनुं एक - अग्नि (७) बळ; प्रभाव (८) वीर्य (९) सस्व; अर्क (१०) अधीराई; क्रोध (११)सूर्य के तेवो बोजो आकाशनो तेजस्वी पदार्थ **ते**जस्विन् वि० प्रकाशित(२)बळवान; पराक्रमी (३) भव्य **तेजोभंग** पुं० अपमान; अनादर तेजोमय वि० तेजस्वी;प्रकाशित(२) प्रतापी; जुस्सावाळुं; शक्तिमान **तेजोमंड**ल न० तेजनुं कूंडाळुं (तेज-स्वी पदार्थनी आसपासन्) तेजोम्ति पुं० सूर्यं **तंक्ष्ण्य न**० तीक्ष्णता तंजस वि० तेजोमय; प्रकाशित (२) उग्न; बळवान; पराऋमी **तैर्घिक** वि० तीर्थ संबंधी (२) पुं० तपस्वी (३) नवी सिद्धांत प्रतिपादन करनार (४) न० तीर्थोदक **सेल** न० तेल तेलाभ्यंग पुं० शरीरे तेल चोळवुं ते

तेलिक, तेलिन् पुं० तेली; घांची तोक न०बाळक तोकवती स्त्री० बाळकोवाळी स्त्री **तोत्त्र** न० परोणो (२) अंकुश तोद पुं० दुःखः; वेदना (२) हांकवुं – गोदाववुं ते तोमर पुं०, न० लोढानी गदा (२) भाला जेवुं एक अस्त्र ; ऊंधा अधेचंद्रना फळावाळ् बाण तोयान० पाणी तोयकर्मन् न० शरीरना जुदा जुदा भागोने पाणी वडे शुद्ध करवा ते (२) पितृओने जलांजलि अर्पवी ते **तोयक्रीडा** स्त्री० जळकीडा तोयद, तोयघर पुं० मेघ; वादळ तोयधि, तोयनिधि पुं० महासागर **तोयमुच्** पुं० वादळ ; मेघ **तोयराशि** पुं० महासागर (२) सरोव**र** तोयबाह पुं० वादळूं तोयव्यतिकर पुंच नदीओनो संगम तोरण पुं०, न० कमानवाळो दरवाजो (२) शोभा माटे बनावेली कमान (३)न० गळूं; गरदन तोल पुं०, न० माप; वजन (२) एक तोलो (वज**न**) िऊंचकवुं ते तोलन न॰ तोळवुं -- जोखवुं ते (२) तोष वि० संतोष आपनारुं (२) पुं० संतोष ; तृप्ति [संतोष ; तृप्ति तोषण वि० संतोष आपनारं (२) न० तोषित वि० संतुष्ट; प्रसन्न तोषिन् वि० (समासने अंते) –थी संतुष्ट थयेलुं (२) संतोष आपनारुं **त्मन्** पुं॰ पोतानी जात ('आत्मन्') त्यक्त ('त्यज्'नुं भू० क्ट०) वि० त्यजेलुं छोडेलुं; त्यागेलुं (२) आपी दीघेलुं त्यक्तजीवित, त्यक्तप्राण वि० जीवितनी त्याग करवा तत्पर थयेलुं त्यक्तलज्ज वि० निर्लज्ज; शरम वगरन् स्याज् १ प० तजवुं; छोडी देवुं (२) आपवुं (३) -श्री अळगा रहेवुं - थवुं त्याग पुं० तजबुते; छोडी देवुते (२) दानमां आपी देवं ते (३) औदायें त्यागिन् वि०त्यागकरनारुं (२) दानी (३)फळनी आशा त्यागनारुं त्याजित वि० त्याग करावायेलुं (२) उपेक्षा करावायेलुं (३) -विनानुं थयेलुं त्याज्य वि० त्यागवा योग्य **त्रप् १** आ० शरमावुं त्रपा स्त्री० शरम; लज्जा **त्रपुन**० कलाई (२) सीसुं **त्रय** वि० त्रण प्रकारनुं (२) त्रण गणुं (३) न० त्रणनो समूह **त्रयस्** ('त्रि' नुप्रथमा **ब**०व०) वि० त्रण (संख्यावाचक शब्दना समासमा; उदा० 'त्रयोदश', 'त्रयश्चत्वारिंशत्) त्रयी स्त्री० त्रण वेदोनो समूह (ऋग्-यजुर्-साम) (२) त्रणनो समूह त्रयीधर्म पुं० वेदोमां उपदेशेलो धर्म के कर्तव्य (यज्ञकर्म) **त्रस् १,४** प० त्रासर्वुः, कंपवुः, ध्राजवुं (२)बीवुं;डरवुं(३) –थी दूर नासवुं **ं** ऊडतुं देखातुं) **अस** वि० जंगम असरेणु पुं० रजकण (सूर्यना हेरियामां **त्रस्त** ('त्रस्'नुं भू० कृ०) वि० दीनेलुं; त्रासेलुं; भयभीत त्रस्मु वि० भयभीत; भयथी ध्रूजतुं त्राण ('त्रैं'नुंभू० क्ट०) वि० रक्षेत्रुं रक्षित (२) न० रक्षण; बचाव(३) नि० रक्षण आधार; आश्रयः त्रात ('त्रै'नुं भू० कृ०) वि० रक्षेलुं(२) **त्रातृ** वि० रक्षण करनारुं त्रास पुं०भय; डर त्रासन वि० भयप्रद (२) न० भय पमाडवो ते (३) डराववानुं साधन त्रासित वि० भय पमाडेलुं; डरावेलुं ক্সি বি০ সৃদ

त्रिक वि० तेवडुं; त्रणगणुं (२) न० त्रिपथ; त्रिभेटो (३) त्रिपुटी त्रिकाल न० वर्तमान, भूत, भविष्य – ए त्रण काळ (२) प्रातःकाळ, मध्याह्न, सायंकाळ -ए त्रण काळ त्रिकालज्ञ, श्रिकालदक्षिन् वि० त्रणे काळना ज्ञानवाळुं; सर्वज्ञ त्रिकालम् अ० त्रण वखतः; त्रण वार **त्रिकृट** पुं० लंकानो एक पर्वेत त्रिकोण पुं० त्रण ख्णावाळी आकृति **क्रिगण** पुं० धर्म-अर्थ-काम --ए त्रण पुरुषार्थीनो समुदाय **त्रिगुण** वि० (सत्त्व, रजस्, तमस् –ए) त्रण गुणवाळुं (२) त्रण दोरानुं बनेलुं (३) त्रणगणुं (४) पुं० ब० व० त्रणः गुणो (सत्त्व, रजस्, तमस्) (५) न० प्रकृति; प्रधान (सांख्य०) **त्रिचतुर** वि० (ब०व०) त्रण के चार त्रिजगत् न०, न्निजगती स्त्री० स्वर्ग-मृत्यु-पाताळ --ए त्रण लोक **त्रिणता** स्त्री० धनुष्य **त्रिणाक** पुं०स्वर्ग **त्रितय** न० त्रणनो समुदाय **त्रिदश** पुं०देव त्रिवदागोप पुं० गोकळगाय; इन्द्रगोप त्रिवशपति पुं० इंद्र **त्रिदशपुंगव** पुं० विष्णु त्रिदशवधू, त्रिदशवनिता स्त्री० अप्सरा त्रिदशवर्त्मन् न० आकाश **त्रिदशाचार्य** पुं० बृहस्पति त्रिदशाधिप पुं० इंद्र **त्रि**दशा**धिपति** पुं० शिव **त्रिदशाध्यक्ष** पुं० विष्णु **त्रिदशायुध** न०वज्र (२) मेघधनुष्य त्रिदशालय, त्रिदशावास पुं० स्वर्ग (२) मेरु (३) देव त्रिदशांकुश न० वज्र **त्रिदरोंद्र** पुं० इंद्र (२) शिव

त्रिदंड पुं० संन्यासी धारण करे छे ते -त्रण दंडनो समुदाय (२) मन,वाणी अने कर्मनो निग्रह संन्यासी **त्रिदंडिन्** पुं० त्रिदंड घारण करनार – **त्रिदिव** न० स्वर्ग (२)अंतरीक्ष ; आकाश त्रिदिवगत वि० स्वर्गवासी - मृत त्रिदिवालय पुं० स्वर्ग **त्रिदिबौकस्** पुं० देव **त्रिदोष** न० वात, पित्त तथा कफना प्रकोपथी थतो रोग -- सनेपात त्रिभा अ० त्रण प्रकारे; त्रण भागमां त्रिधामन् पुं० विष्णु (२) व्यास (३) िशव (४) अग्नि (५) मृत्यु (**६**) न० स्वर्ग त्रिनयन, त्रिनेत्र पुं० शंकर **त्रिपय** न० स्वर्ग, मृत्यु, पाताळ -ए त्रणनो समूह (२) त्रण रस्ता मळे तेवुं स्थान - त्रिभेटो **त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी** स्त्री० गंगानदी त्रिपदिका स्त्री० त्रण पायावाळी बेठक [(३) हाथीनो तंग त्रिपदी स्त्री० त्रिपाई(२)गायत्री छंद त्रिपाद् वि० त्रण पाद के चरणवाळुं (२) त्रण चतुर्थांश (३) पुं० विष्णु (वामनावतारमां) **त्रिपिटक** न० सुत्त-विनय-अभिधम्म –ए त्रण प्रकारना बौद्ध धर्मग्रंथोनो समूह **त्रिपुर** पुं० त्रिपुरासुर(२)न० तेनी त्रण नगरीओनो समूह शंकर **त्रिपुरब्न, त्रिपुरबहन, त्रिपुरारि** पुं० **त्रिपुंड्र, त्रिपुंड्रक** पुं० त्रण लीटीनुं तिलक **त्रिफला** स्त्री० हरडां, बहेडां अ**ने** आमळां -ए त्रणनो समुदाय **त्रिभंग** न० त्रण ठेकाणेथी बळेलुं होय एवी शरीरनी मुद्रा **त्रिभुज न**० त्रिकोण **त्रिभुवन** न० त्रण लोकनो समूह; त्रिलोक **त्रिम्बनगुर** पुं० शिव

त्रिमार्गा स्त्री० गंगानदी त्रिमूर्ति पुं**० ब्र**ह्मा, विष्णु, शंकर **-ए** त्रणेनुं भेगुं स्वरूप त्रियामा स्त्री० रात्री त्रिलिंग वि० नर-नारी-नान्यतर –ए त्रण जातिवाळुं (विशेषण) (व्या०) **त्रिलोक** न० त्रण लोकनो समूह (स्वर्ग-मृत्यु-पाताळ) विलोकनाथ पुं० इंद्र (२) शिव **त्रिलोकरक्षिन्** वि० त्रणे लोकनुं रक्षण करनारुं त्रिलोकी स्त्री० जुओ 'त्रिलोक' **त्रिलोचन** पुं० त्रिनेत्र – शिव त्रि**वर्ग** पुं० धर्मे, अर्थ अने काम ---एत्रण पुरुषार्थनो समूह (२) सत्त्व, रजस् अने तमस् -ए त्रण गुणनो समूह त्रिविल (-ली) स्त्री० पेट उपरना त्रण वाटा (सुंदर स्त्रीनुं लक्षण) त्रिवारम् अ० त्रण वार; त्रण वखत **त्रिविक्रम** पुं० विष्णु (वामनावतारमां) त्रिविष्टप न० स्वग करीने करेलुं <mark>त्रिवृत्</mark> वि० त्रण गणुं करेलुं; त्रण भेगा त्रिवृत्ति स्त्री० यज्ञ-अध्ययन-भिक्षा -ए त्रण वडे प्राप्त कराती आजीविका त्रिवेण (-णी) स्त्री० गंगा, यमुना अने सरस्वतीन् संगमस्थान त्रिवेणु पुं० संन्यासीनो त्रिदंड (२) रथनो घोरियो - ऊध त्रि**शंकु** पुं० एक सूर्यवंशी राजा-हरिश्चंद्रनो पिता पिस्रं **রি**হিয়েরে ন০ রিযুক্ত **त्रिशूल** न० त्रण अणीओवाळुं एक आ_{ञ्} त्रिस् अ० त्रण वार; त्रण वस्तत⁰⁰ त्रिसरक न० त्रण बार मद्य पीयुं है त्रिस्थली स्त्री० काशी, प्रयाग अने -ए त्रण धाम (त्रणनो स **त्रिस्थान** न० मार्थु, गळुं अने छाः त्रिस्रोतस् स्त्री० गंगानदी

त्रिशत्, त्रिशति स्त्री० त्रीस (संख्या) त्रु**ट् ४, ६** ५० तूटवुं; फूटवुं **त्रुटित** ('त्रुट्' नुं भू० कृ०)वि० तूटेलुं; भागेलुं; तोडेलुं; फोडेलुं श्रोता स्त्री० चारयुगोमांनो बीजो (२) पासानो एक दाव (त्रणनी निशानी-बाळो) (३) अग्निहोन्नना त्रण पवित्र अग्नि(गार्हपत्य,दक्षिण अने आहवनीय) त्रेधा अ०त्रण प्रकारे; त्रण रीते त्री १ आ० रक्षण करवुं; बचाववुं त्रैकालिक, त्रैकाल्य वि० वर्तमान-भूत-भविष्य –ए त्रण काळ संबंधी (२) न० त्रण काळ (वर्तमान, भूत, भविष्य अथवा सूर्योदय, मध्याह्न अने सूर्यास्त) **त्रेगुण्य** न० सत्त्व-रजस्-तमस् –ए त्रण गुणोनो समूह (२) त्रण गुणनुं बनेलुं के त्रण गुणवाळुं होवुं ते **त्रेमातुर** पुं० लक्ष्मण **त्रंत्नोक्य** न० स्वर्ग, मृत्यु, पाताळ -ए त्रण लोकनो सगुदाय त्रेलोक्यप्रभव पुं०राम श्रेलोक्यबंधु पुंच सूर्य [त्रणने लगत् वैविशिक वि० धर्म, अर्थ, काम --ए त्रेविणक वि० प्रथम त्रण वर्णने लगत् **श्रीवक्रम** वि० विष्णु संबंधी (२) विष्णुए भरेलां त्रण पगलां संबंधी त्रैविद्य वि० त्रणे वेद जाणनारुं (२) त्रण वेदोए प्रवतिवेलुं (३) न० त्रण वेदोनो समूह श्रोटक न० नाटकनो एक प्रकार बोटि (-टी) स्त्री० चांच **त्रोत्र** न० हांकवानो परोणो

त्र्यक्ष पुं• शंकर (त्रण आंखवाळा) **त्र्यंग** न० त्रण विभाग (रथ, अश्व, पदाति)-वाळुं लश्कर স্থাৰক पुं० शिव (স্থা आंखवाळा) **त्वक्त्र**ान**ः बस्**तर त्वच्, त्वचा स्त्री० चामड़ी(२)छाल (३) स्पर्शेद्रिय (४) कोई पण वस्तुनो उपरनो ढांकण जेवो भाग त्वत् (-द्) केटलाक समासोनी शरू-आतमां बीजा पुरुष सर्वनाम (युष्मद्')नुं रूप (उदा ० 'त्वदधीन' ; 'त्वत्सादृश्यम्') (२) 'तारी पासेथी' ('युष्मद्' नुं पांचमी विभक्ति एकवचननुं रूप) **त्वदीय** वि० तारुं त्वहिष वि० तारा जेवुं रवर् १ आ० उतावळ करवी –प्रेरक० उतादळ कराववी (२) उतावळथी बोलाबी लेबूं त्वरता, त्वरा स्त्री० उतावळ; झडप त्**वरित** वि० उतावळुं; शीध्र (२) **न**० रवरा; उतावळ स्वरितम् अ० उतावळथी; बेगे **त्वष्टृ** पुं० सुथार (२) देवोनो सुधार – विश्वकर्मा (३) प्रजापति त्यंकार पुं० तुंकारो; 'तुं' थी बोलाववुं ते त्यंग् १ प० जवु; चालवुं(२) कूदकी मारवो (३) ध्रूजवुं त्वादृश् (-श) वि० तारा जेवुं; तारी **त्विष् १** उ० प्रकाशवुं; चळकवुं; बळवुं त्विष् स्त्री० प्रकाश; तेज; चळकाट (२) सौंदर्य; कांति (३) तीत्रता त्सर पुं० तरवार बगेरेनी मूठ **स्सारक** वि० तरवार वायरवामां कुकळ

थ

थुत्कार, यूत्कार पुं०, **यूत्कृत न०** थूंकवानो अवाज **थं थं** अ० एक वाद्यना ध्वनिनीः जेम ₹

(समासने छेडे) आपनारुं; द वि० वधारनारुं (उदा० 'जलद') दक न० पाणी; उदक दक्ष १ प० बीजाने संतोष थाय तेम वर्तेवुं (२) आ० शक्तिमान थवुं (३) जलदी करवुं (४) वधवुं (५) जबुं (६) वध करवी –प्रेरक० खुश करवूं दक्ष वि० प्रवीण; कुशळ (२) योग्य (३) सावध ; तत्पर (४) पुं० जमणी बाजु (५) एक प्रजापति (शिदना ससरा - सतीना पिता) दक्षकन्या, दक्षतनया, दक्षसुता स्त्री० सती (बीजे जन्मे पार्वती) (२) नक्षत्र (२७ नक्षत्र-कन्याओं जेमने चंद्र साथे परणावी हती तेमांनी दरेक) **दक्षिण** वि० चतुर;कुशळ (२) जमणुं; जमणी तरफ आवेलुं (३) दक्षिण दिशा तरफर्नु (४) प्रमाणिक (५) योग्य (६) अनुकूळ; वश (७) सभ्य (८)पुं० जमणो हाथ (९)अग्निहोत्र-नात्रण अग्नि पैकी एक (१०) पु०, न० जमणी बाजु (११) दक्षिण दिशा दक्षिणपश्चिमा स्त्री० नैऋत्य खुणो **दक्षिणपूर्वा** स्त्री० अग्नि खूणो **दक्षिणा** अ० जमणी बाजुए (२) दक्षि**ण** तरफ(३)स्त्री०धर्मकार्यमां ब्राह्मणने अपातुं दान (४) प्रजापतिनी पुत्री अने यज्ञनी पत्नी(५)महेनतना बदलामां अपातो पुरस्कार (६) दक्षिण दिशा (७) दुधाळी गाय **दक्षिणाचार** वि० प्रमाणिक; सदाचारी **वक्षिणापथ** प्०दक्षिणदेश दक्षिणायन न० सूर्यनुं कर्क राशिमां जबं

ते (२) न० कर्कसंकांतिथी मकर-संक्रांति सुधीनो समय **दक्षिणार्ह** वि० दक्षिणा आपवा लायक दक्षिणावर्त वि० डाबीथी मांडीने जमणी बाजुतरफ बळतुं (शंख) (२) पुं० तेवो शंख (३) दक्षिणदेश दक्षिणीय वि०दक्षिणाने योग्य दक्षिणेतर वि० डाबुं (हाथ के पग) दक्षिणेन अ० जमणी बाजुए दक्षिण्य वि० जुओ 'दक्षिणीय' बग्ध ('दह्'नुभू० कृ०) वि० अग्निथी बळी गयेलुं (२) शोकथी संतप्त (३) अशुभ (४) दुष्ट; निद्य दग्धजंठर न० भूरूयुं पेट; बळचं पेट दध्न वि० सुधी पहोंचतुं, –जेटलुं ऊंचुं के ऊंडु –ए अर्थमां नामने छेडे जोडाय छे (उदा० 'उस्दघ्न') दच्छद (दत्+छद)पुं० होठ **दत्** पुं० ('दंत' ने बदले विकल्पे वपराय छै; एना पहेलां पांच रूपो नथी) दांत दत्त ('दा' नुंभू० कृ०) वि० अपायेलुं: मेट अपायेलुं (२) मुकायेलुं (३) रक्षायेलुं (४) पुं० दत्तकपुत्र (५) दत्तात्रेय (६) न० दान; बक्षिस दत्तक पुं० शास्त्रविधि प्रमाणे पोतानो करेलो (बीजानो) पुत्र दलदृष्टि वि० तरफ जोत् दलहस्त वि० टेका माटे हाथ आपेल् (२) मदद करायेलुं **दत्तावकान** वि० एकाग्र; लक्षवाळ् **दत्ति** स्त्री० बक्षिस;भेट दर् १ आ० आपवुं; बक्षिस आपवी दद्गुपुं० दादर; खरजबुं (२) एक जातनी कोढ दिधि न० दहीं

दयीच पुं० एक प्रख्यात ऋषि (वज्र बनाववा पोतानां हाडकां आपनार) **दषीचास्थि** न० इन्द्रनुं वज्र (२) हीरो दशीचि पुं० जुओ 'दधीच' **दधृष्** वि० बेशरम; धृष्ट माता दनु स्त्री० कश्यपनी पत्नी -- दानवोनी दनुज पुं० राक्षसः; दानव दनुजद्विष्, दनुजारि पु० देव दभ्र वि० अल्प; थोडुं दम् ४ ५० शांत करवुं; वश करवुं(२) दमन करवुं; निग्रह करवो (३)पळाबुं (पशुनुं) (४) शांत पडवुं – थवुं दम पुं० दमन करवुं ते; निग्रह करवो ते (२) इंद्रियनिग्रह (३) चित्तने पाप-प्रवृत्तिमांथी निवारवुं ते दमन वि० दमन करनाहं;वश करनाहं (२) इंद्रियनिग्रही (३) न० इंद्रिय-निग्रह; आत्मसंयमन (४) शिक्षा; सजा (५) नास; वध दम्य वि० केळवदा योग्य (काची उमरनुं) (२) शिक्षा करवा योग्य (३)पुं० वाछरडो; जुवान बळद (जेने केळवदानी जरूर छे) दय् १ आ० दया आववी; दया करवी (२) चाहवुं (३) रक्षण करवुं दया स्त्री० कृपा; करुणा **रपालु** वि॰ दयावाळुं; कृपाळु दियत वि० प्रिय (२) पुं० पति; प्रेमी **दयिता** स्त्री० पत्नी; प्रिया दर वि० फाडनारुं; चीरनारुं (समासने अंते) (२) अल्प;थोडुं (३) पुं०, न० गुफा; बखोल; बाकुं (४) शंख (५)पु० बीक; डर दरतिमिर न० बीकरूपी अंधारुं **दरम्** अ०थोडुंक;जराक **दरमंथर** वि०थोडुंक धीमुं दरि स्त्री० गुफा; पर्वतनी बखोल वरिक्र पुं० गरीब; निर्धन

वरिव्रता स्त्री० निर्धनता; गरीबाई बरिक्का २ प० निर्धेत - गरीब होवुं (२) दुःखी होवं (३) अल्प-- आ छुं थवं दरिभृत् प्०पर्वत **दरिमुख** न०गुफा जेवुं मों (२)मों जेवी गुफा (३) गुफानुं मों बरी स्त्री० जुओ 'दरि' **दर्बुर** पुं**० देडको (२) मोर**ली -- वांसळी जेवुं वाद्य (३) दक्षिणनो एक पर्वत वर्षुरपुट पुं० पावो वगेरे वाद्यनुं मुख **र्य्यु (-र्ब्रू)** पुं० खरजवुं; दादर दर्पपु० अभिमान; गर्व दर्गक पुं० कामदेव (२) गर्व दर्यकल वि० मधुर तथा अभिमानभर्या शब्दवाळ दर्पण पुं० अरीसो, **दर्गित वि०** अभिमानी; गर्विष्ठ दर्भ पुं० कुश; दरभ दभौकुर न० दर्भनी धारदार अणी दित (-वीं) स्त्री० कडछी; पळी (२) सापनी फेलावेली फेण वर्शे पुं० दृश्य; देखाव (घणुं खरुं समास-मां उदा० 'दुर्दर्श') (२) अमावास्था (३) दर पडवे करातो यज्ञ – होम दर्शक वि० दर्शावनाई; बतावनाई (२)जोतु; निहाळसु (३) समजावतु वर्शन वि॰ जोतुं; निहाळतुं (समासने अंते) (२) दर्शावतुं; शीखवतुं (३) न ॰ जोर्बुते; निहाळवुते (४) जाणवुं - समजबुं ते (५) तजर; दृष्टि (६) आंख (७) तपास; निरीक्षण (८) दर्शाववुं ते (९) देखावुं ते; नजरे पडवुं ते (१०) दर्शन करवा के मुलाकाते जबुं ते (११) देखाव; स्वरूप (१२) तत्त्वज्ञाननो सिद्धांत (१३) अभिप्राय; मत (१४) दर्पण दशनपथ पुं० नजर पहोंची शके तेटलो प्रदेश; दिष्टमर्यादा

दर्शनीय वि० सुंदर; जोवा योग्य (२) बताववा-रज् करवा योग्य (अदालतमां) दर्शियत् वि० दर्शावनारुं (२) दोरनारुं दर्श-दर्शम् अ० दरेक नजरे **र्वांगत** वि० दशविलु; बतावेलुं (२) समजावेलुं; साबित करेलुं **र्वाजन्** वि० (समासने अंते) जोतुं; समजतु; नजर राखतु; दर्शावतुं (२) –लेवानी **ज** पेरवी राखतुं दल् १ प० तोडवुं; फोडवुं; चीरवुं; फाडवुं (२)खीलवुं ; विकसवुं प्रेरक० फाडवुं;चीरवुं(२)कापवुं; टुकडा करवा (३) करमाई जवुं बलपु०, न० भाग; दुकडो (२)पांखडी; कुमळुपान करवो ते बलन न० भागवुं-फोडवुं-तोडवुं-चूरो बलित ('दल्'नुं भू०कृ०)वि० भागेलुं; तूटेलुं; फोडेलुं; फूटेलुं (२) विकसेलुं; बीलेलुं (३) पग तळे रोळेलुं दव पुं० जंगल (२) दावानळ दवयु पुं० ताप (२) संताप;गुस्सो **दबदहन** पुं० दावानळ दवाग्नि, दवानल पुं० जुओ 'दवदहन' **दविष्ठ** वि० सौथी वधारे दूर ('दूर'नूं श्रेष्ठतात्मक रूप) दवीयस् वि० वधारे दूर ('दूर' नुं तुल-नात्मक रूप) **बशक न० द**शनो समूह **दशकंठ, दशकंधर, दशग्रीब** पुं० रावण दशधा अ० दश प्रकारे; दश रीते **दशन्** वि० दशः; दसः (संख्या) दशन पुं०, न० दांत (२) करडवुं ते दशनच्छद पुं० होठ दशनपद न० दांत वेठा होय तेनुं चिह्न **दशनांशु** पुं० दांतनो चळकाट **दशम** वि० दशम् दशमी स्त्री० दशमी तिथि (२) आयुष्यनी दशमी दशको (३) सैकानां छेल्लां दश वर्ष

दशमुख पुं० रावण चिंद्रना पिता दशरय पुं० अयोध्याना राजा; राम-दशक्यक न० नाटकना दश प्रकार **दशवक्त्र, दशबदम** पुं० रावण दशिवध वि० दश प्रकारनुं दशशतनयन, दशशताक्ष पुं० इंद्र (हजार आंखवाळो) दशहरा स्त्री० गंगानदी (दश पापनी नाशकरनारी) (२) दकेरा दशा स्त्री० वणेला ताकानी दशी - आंतरी (२) वस्त्रनो छेडो (३) दिवेट (४) जीवननी अवस्था - स्थिति (बाल्य, यौवन इ०) (५) कर्मफळ रूपे प्राप्त थती स्थिति दशानन पुं० रावण दशाभाग पुं० खराब दशा दशार्थ न० पांच (संख्या) दशायताराः पुं० ब० व० विष्णुना दश अवतार (मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध अने कल्कि) दशांत पुं० दिवेटनो छेडो (२) जीवननो दशांतर न० जीवननी जुदी-जुदी (मुख-दुःखवाळी) स्थिति वर्शाश (दशन् + अंश)पुं० दशमी भाग **दर्शा+ अं**श) पुं० अवस्था; दुःखना दहाडा दशेरक पुं० नानुं ऊंट (२) गधेडो बष्ट ('दंश्' नुं भू० कृ०) वि० दंशित; करडायेलुं दसेरक पुं० जुओ 'दशेरक' **दस्यु** पुं० चोर(२)आवश्यक संस्कार न कर्या होवाथी बहिष्कृत माणस (३) राक्षस (४) शत्रु (५) जुलमी माणस दह् १ प० बळवुं; बाळवुं (२) नाश करवो (३) दुःख देवुं; पीडवुं दहन वि० बाळगार्ह(२)विनाशक (३) पुं० अग्नि पुं० हृदयाकाश दहर वि० नानुं; सूक्ष्म; झीणुं (२)

बंड् १० उ० शिक्षा करवी; दंड करवी बंध पु०, न० दंडो; लाकड़ी; सोटी (२) राजदंड (३) ब्रह्मचारी के संन्यासीनो दंड (४)दांडो (कमळनो) (५)हाथो (छत्र इ० नो) (६)शिक्षा; सजा(७)शिक्षा तरीके लेवात् नाणुं (८) सेना; लश्कर (९) नियंत्रण; निग्रह (१०) राजनीतिशास्त्र दंडक पुं॰, लाकड़ी; काठी (२) ध्वज-स्तंभ (३) हार; ओळ वंडक पुं०, न०, वंडका स्त्री० नर्मदा अने गोदावरी नदी वच्चेनो प्रदेश वंडकारण्य न० दंडक वन(दक्षिणमां) बंडग्रहण न० संन्यास लेवी ते दंडचक पुं० सैन्यनो विभाग दंडघर, दंडघार वि० शासन करनारे; शिक्षा करनारुं (२) पुं० राजा (३) सेनापति (४) यमराज दंडन न० शिक्षा करवी ते; दंड करवी ते दंडनायक पुं० दंड करवानी अधिकार जेने छे ते (न्यायाधीश, फोजदार, राजा) (२) सेनापति वंडनीति स्त्री० राजनीतिशास्त्र (२) न्याय आपवी ते (३) दुर्गा **बंडपाणि पुं**० यसराजा (२) पोलीस बंडपाल, बंडपालक पु० मुख्य न्याया-धीश (फोजदारी गुनानो) (२) हारपाळ बंडपाशक, बंडपाशिक पुरुष पोलीस अधिकारी (२) फांसी आपनारो वंडमाणव, वंडमानव पुं० वंडधारी संन्यासी के ब्रह्मचारी (२) आगेवान ; [(नमस्कार करवा ते) दंडवत् अ० दंडनी पेठे लांबा पडीने **बंडाघात** पुं० लाकडीथी मारवुं ते दंडावंडि अ० सामसामा लाकडीए-लाकडीए (लडवुं ते) दंडाधिय पुं० मुख्य न्यायाधीश (फोज-दारी गुनानो)

वंडानीक त० लश्करनो विभाग दंडार पुं० रथ;गाडी (२) (कुंभारनो) चाकडो (३)होडी (४)मदमां आवेलो हायी (५) वनुष्य **बंडिका** स्त्री० लाकड़ी; दंडी (२) मोतीनी माळा;कंठहार (३) दोरडुं (४) ओळ; पंक्ति **दंडिन्** वि०दंडघारी (२) पुं० संन्यासी **दंडोद्यम** पुं० घमकी आपवी ते (२) सत्तानुं जोर अजमाववुं ते **दंत** पुं•दांत (२) दंतूशळ (३) दंष्ट्रा **यंतक** पुं० दांत (२) शिखर (३) ख्टी (४) छाजली; अभराई दंतकार पुं० हाथीदांतनुं काम करनार **दंतकाध्ठ**न०दातण **दंतकूर** पुंजसंग्राम; युद्ध **बंतच्छद** पुं०होठ (ते(२)दातण **दंतधाब** पुं**०, दंतधावन** न० दातण करवुं **दंतपत्र** न०एक कणेभूषण दंतपत्रिका स्त्री० एक कर्णभूषण (२) कांसकी (३) कुंद पुष्प **दंतपांचालिका** स्त्री ० हाथीदांतनी पूतळी **वंतप्रक्षालन** न० दांत साफ करवा ते **दंतवस्त्र, दंतवासस्** न० होठ **बंतवीणा** स्त्री० एक तंतुवाद्य (२) दांस ककडवाते (टाइयी) वंतव्यापार पुं० हाथीदांतनो हुसर दंतासिका, दंताली स्त्री० लगाम दंतावल, दंतिन् पुं० हाथी **दंतुर** वि० लांबा अने बहार नीकळता दांतबाळुं (२) ऊंचुं नीचुं (३) कांटा ऊभा थया होय तेवुं; रोमांचित **दंतुरित** वि० दांतरुं (२) ऊंचुं नीचुं; खरबचडुं (३) खरडायेलुं; छवायेलुं **वंतोल्ख**लिक पुं० भरड**चा** – खांडचा विनानुं धान्य खानारो अरण्यवासी के तपस्वी दंत्य वि० दंतस्थानी (वर्ण) (व्या०)

दंदञ्क वि० करडकणुं; झेरीलुं (२) पुं• साप (३) राक्षस वंद्रम्यमाण वि० जुदे जुदे रस्ते जतुं **बंपती** पुं० द्वि० व० पति अने पत्नी **बंभ** पुं० डोळ; ढोंग; छळकपट **दंभिन्** पुं० दंभी ; ढोंगी **बंश् १** प० [दशति] डंख मारवो; करडवुं (२) १ प० [दंशति], १० उ० [दंशयति—ते] बोलवुं (३) प्रकाशवुं **दंश** पुं० डंख मारवो ते; करडवुं ते (२) सर्पेदंश (३) दंशनी जगा (४) दांत (५) बगाई [(२)बस्तर र्वेज्ञन न० कंरडवुं ते ; इंख मारवो ते **दंशित** वि० करडायेलुं; जेने कंई कर-डघुं होय तेवुं (२) बस्तरधारी (३) तत्पर; सज्ज; एक लक्षवाळुं **बंख्ट्रा** स्त्री० मोटो दांत (२) दाढ **बंध्ट्राल** वि० मोटी दंष्ट्रावाळ **बंब्ट्रिन्** वि० जुओ 'दंब्ट्राल' (२) पुं० जंगली डुक्कर (३) साप दा १ प० [यच्छति] आपवुं; आपी देवुं (२) २ प० [दाति] कापवुं: तोडवुं (३) ३ उ० [ददाति, दत्ते] आपवुं (४) भेट आपवी (५) सोंपवुं (६) पाछुं आपवुं (७) लग्नमां आपवुं (८) -देवुं; रजा आपवी दाक्षायण पुं० दक्ष प्रजापतिनो वंशज (२) न० सोनुं; सोनानुं घरेणुं दाक्षिणात्य वि० दक्षिण दिशानुं; दक्षिण तरफ रहेलुं (२) पुं० दक्षिणनो बतनी **दाक्षिण्य** न० कीशल्य: प्रवीणता (२) सम्यता; विनय; शिष्टता (३) वधारे पडतो – देखावनो – विनय (रूठेली प्रेमिकाने मनाववा बतावातो) (४) दक्षिण दिशा संबंधी वाश्य न॰ दक्षता; कुशळता; चतुराई (२) प्रमाणिकता (३) उद्यम; उद्योग

दाडिम, दाडिंद पुं० दाडमडी (२) न० दाडम बाढा स्त्री० दंतूशळ; दाढ **दात** ('दा' नुंभू० कृ०) वि० कापेलुं; लणेलुं (२) ('दै' नुं भू० कृ०) स्वच्छ करेलुं; घोयेलुं आपवानु **दातच्य** वि० आपवा योग्य (२) पाछुं दातृ वि० आपनारुं; देनारुं(२)दाता; उदार (३) पुं० दाता दात्यूह पुं० एक पंखी (कालकंठक, जलकाक, चातक इ०) **दात्र** न० दातरडा जेवं एक ओजार **बाद** पुं० बक्षिस; दान दान न० देवुं ते ; आपवुं ते (२) शीखववुं ते (३) लग्नमां आपवुं ते (४) बक्षिसः भेट (५) हाथीना गंडस्थळमांथी झरतो मद (६) लांच **दानभिन्न** वि० लांचथी फोडेलुं दानव पुं० राक्षस; असूर बानविष्न् पुं० मदमां आवेलो हाथी दानवारि न० मद (हाथीनो) दानवारि पुं० देव (दानवोनो दुश्मन) दानवीर पुं० मोटुं दान करनार माणस बानशील, बानशूर, बानशौंड वि० अत्यंत उदार; दान करवामां तत्पर दाम न० (समासने अंते) हार; माळा **दामन्** वि० दानशील दामन् न० दोरडुं; दामण (२) माळा दामनी स्त्री० पगे बांधवानुं दोरडुं बामांचल न० घोडाने पगे बांधवानुं दोरड़ं दामिनी स्त्री० वीजळी वामोदर पुं ० श्रीकृष्ण **दाय पुं**० बक्षिस (२) भाग; हिस्सो दायक वि० (समासने अंते) आपनारुं (उदा० 'पिडदायक') दायभाग पुं० दारसानी वहेंचणी बायाद पुं० वारसदार (२) सगो दायिन् वि० (समासने अंते)आपनारः; उत्प**न्न** करनारुं (उदा० 'क्लेशदायिन्')

बाध पुं० बळवुं ते; दाह

दार पुं० चीरो; फाट(२)पुं० **व०व०** जुओं 'दाराः' पुं ० पुत्र दारक वि॰ चीरनारुं; फाडनारुं (२) **दारकर्मन्** न० लग्न [बाळक ; बच्चुं दारकी स्त्री० पुत्री; दीकरी (२) दारिक्रया स्त्री० लग्न दारण न० फाडवुं-कापवुं-चीरवुं ते **दारपरिग्रह** पुं० लम्न दारब वि० लाकडानुं बनावेलुं **बारवी** ('दारव' वि०नुं स्त्रीर्लिंग) लाकडानी बनावेली **वारसंग्रह** पुं० लग्न **दाराः** पुंज्बब्बब्पत्नी बारिका ('दारक' वि०मुं स्त्रीलिंग) फाडनारी; चीरनारी दारिका स्त्री० पुत्री (२) फाट; चीरो **दारित** वि० फाडेलुं; चीरेलुं दारिद्र, दारिद्रच न० निर्धनता; गरीबाई [सारिथ दार न० लाकडुं बारक पुं देवदार वृक्ष (२) श्रीकृष्णनो **कारकर्मन्** न० जुओ 'दारुकृत्य' वारका स्त्री० लाकडानी पूतळी दारकृत्य न० लाकडानी कारीगरी (२) लाकडान् बनायवान् ते **बारण** वि०भयंकर (२) कठण; कठोर (३) निर्दय (४) तीन्न **बारोदर** वि० जुगारने लगतुं **बाढर्फ न०** दृढता; मक्कमता (२) समर्थन करबुं ते (३)बळ;ताकात **दार्भ** वि० दर्भनुं **दना**वेलुं दार्शनिक पुं० दर्शनशास्त्र जाणनारो दाव पुं० दावानळ ; दव दावाग्नि, दावानल पुं॰ दावानळ; दव दावित वि० दूभवेलुं; दुभायेलुं दाञा पुं० माछीमार (२) दास; नोकर दाशनंदिनी स्त्री० सत्यवती ; व्यास-माता दाशस्य, दाशरिथ पुं० दशस्थनो पुत्र (२) राम

बाधाई पुं० श्रीकृष्ण वाजेयी स्त्री० जुओ 'दाशनंदिनी' दाशोर पुं० माछीमार (२) कंट दाशेरक पुं० माछीमार (२) मालवदेश वास पुं० चाकर; नोकर (२) आर्य नहि तेवी जातिनो माणस दासानुदास पुं० दासनो पण दास (अति नम्रता बताववा वपराय छे) बासी स्त्री ० नोकरडी (२) माछण दासेर, दासेरक पुं० दासीनो पुत्र (२) माछीमार (३) ऊंट **दास्य** न० दासपणुं; गुलामी दास्याःपुत्र पुं० नेश्यानी पुत्र (गाळ) **बाह** पुं० बळवुंते; बाळवुंते (२) संताप;बळतरा;गरमी (३) स्मशान **बाहक** वि० बाळना हं (२) पुं० अग्नि दाहन न० बाळी नाखवुं ते वाहारमक वि० बाळवानी शक्तिबाळुं दाहिन् वि० बाळनारं (२) संतापनारं **बाह्य** वि० बळी शके तेवुं (२) बाळी नाखवा योग्य दांडिक पुं० शिक्षा करनार दांत ('दम्'नुंभू० कृ०) वि० निग्रह करेलुं; वश करेलुं; नाथेलुं (२) निग्रह्वाळुं; संयमी **दांतिक** वि० हाथीदांतनुं बनेलुं **दांपत्य** न० पतिपत्नी-संबंध दांभिक वि० दंभी; ढोंगी (२) कपटी **दिक्कन्या** स्त्री० दिशारूपी कन्या **दिक्चक** न०क्षितिज (२) समग्रजगत दिक्पाल पु० दिशानो रक्षक देव दिगंत पुं० दिशानी छेडो; क्षितिज दिगंतर न० बीजी दिशा (२)अंतरीक्ष (३) बीजो देश; दूरनो देश दिगंबर वि० दिशारूपी वस्त्रवाळ् - नग्न (२) पुं० नग्न भिक्षु (जैन के बौद्ध) विगीश, विगीश्वर पुं० जुओ 'दिक्पाल' दिग्गज पुं० दिशाओनुं रक्षण करनार आठ हाथीओमानी दरेक

दिग्दर्शन न० मात्र दिशा दर्शाववी ते (२) सामान्य रूपरेखा दिग्दंतिन् पुं० जुओ 'दिगाज' **दिग्दाह** पुं० दिशाओ बळती देखावी ते (एक उत्पात गणाय छे) **दि**ग्घ ('दिह्_,'नुंभू० कृ०) वि० लेपायेलुं; लेपेलुं; खरडायेलुं (२) झेर पायेलु; झेरी बनावेलुं (३) प्र लेप (४) दिष पायेल् बाण दिग्नाम पुं० जुओं 'दिग्गज' **दिग्भम** पुं० दिशा न जडवी – सम-जाबी ते दिग्मस्त्र न० जुओ 'दिइदमात्र' **दिग्मुल** न० जुओ 'दि**ड**्रमुख' विग्मोह न० जुओ 'दिग्नम' दिग्वध् स्त्री० दिशारूपी स्त्री **दिग्वासस्** वि० जुओ 'दिगंबर' विग्यिजय पुं० चारे दिशाओं नो विजय; संपूर्ण विजय रिक्कनाग पुरु जुओ 'दिगाज' विद्यमात्र न० मात्र सूचन – इशारो **विद्युल** न० आकाशनो भाग – दिशा विक्रजोह पुं० जुओ 'दिग्भ्रम' **दित** ('दो^र नुंभू० कु०) वि० कापेलुं; कपाई गयेलुं; जुदुंपडेलुं दिति स्त्री० कश्यप ऋषिनी स्त्री; दैत्योनी माता (२) कापवुं ते दितिज, दित्य पुं ० दैत्य; असुर; राक्षस दित्सा स्त्री० आपवानी इच्छा दिद्धा स्त्री० जोवानी इच्छा **विदृशु** वि० जोवानी इच्छाबाळुं दिन पुं०, न० दिवस (२) दिवस अने रात्रि (२४ कलाक) दिनकर पुं० सूर्य **दिनकर्तव्य** म० जुओ 'दिनकृत्य' विनकर्तृ, दिनकृत् पुं० सूर्य विनकृत्य न० रोज करवानुं धर्मकर्म विनचर्या स्त्री० दररोजनो कार्यक्रम

विनपाटिका स्त्री० रोजनी मजूरी; रोजी विनमणि पुं० सूर्य दिनमुख न० प्रातःकाळ **दिनागम** पुं० सवार; उष:काळ विनात्यय पुं न सांज; सूर्यास्त विनादि, दिनारंभ पु० सवार; उष:काळ दिनावसान न०, दिनांत पुं० सायंकाळ विलोप पुं० एक सूर्यवंशी राजा; भगीरथनो पिता (२) (कालिदासना मते) रघुनो पिता विव्४ प० [दिव्यति] प्रकाशवुं; चळकवुं (२) फेंकवुं (बाण; अस्त्र) (३) पासाथी जुगार खेलवो (४) होडमां मूकवु **दिव्** स्त्री० स्वर्ग (२) आकाश (३) **विव**ान० स्वर्ग (२) आकाश दिवस पुं०, न० दहाडी दिवसकर, दिवसनाथ पुं० सूर्य दिवसमुख न० प्रातःकाळ; परोढ दिवसविगम, दिवसांत पुं॰ सायंकाळ दिवसेश्वर पुं सूर्य दिवस्पति पुंजइंद्र **दिवा** अ० दिवसे दिवाकर पुं० सूर्य विवातन वि० दिवसनुं; दिवस संबंधी **दिवानक्तम् अ०** रातदिवस दिवाभीत, दिवाभीति पुं० घुवड दिवादसान न० सांज दिवाशय वि० दिवसे सूनारं दिवास्वप्न, दिवास्वाप पुं० दिवसे सूबुं ते विवांध वि० दिवसे आधळुं(२)पुं० घुवड दिविषद्, दिविष्ठ, दिविसद्, दिविस्थ पुं० स्वर्गमां रहेनार – देव दियोकस्, दियोकस् (-स) पुं० स्वर्गनो निवासी -- देव **दिव्य** वि० स्वर्गीय (२) दैवी; अलौकिक (३) तेजस्वी (४) कोई गुनेगार 🕏 के नहिते नक्की करवा अग्नि बगेरे द्वारा कराती परीक्षा

विव्यचक्षुस् वि० दिव्यदृष्टिवाळ् विव्यवनी स्त्री० भागीरथी **दिव्यस्त्री, दिव्यांगना** स्त्री० अप्सरा विश् ६ उ० बताववुं; दर्शाववुं (२) –ते हिस्से नाखवुं; आपवुं; सोंपबुं (३) आज्ञाकरवी; हुकम करवी (४) संमति आपवी; अनुज्ञा आपवी – प्रेरक० दर्शाववुं; कहेवुं; जणाववुं (२) हुकम करवो (३) अर्पवुं दिश् स्त्री० दिशा (२) सूचन (३) पद्धति (४) स्थळ; प्रदेश दिशा स्त्री० पूर्व वगेरे चार दिशाओमांनी दरेक (२) बाजु; तरफ **दिस्ट** ('दिश्'नुं भू० कृ०) वि० बतावायेलुं; निर्देशायेलुं; सूचवायेलुं; वर्णवायेळु (२)विधाताए नियत करेलुं (३) निहिचत थयेलुं (४) न० दैव; नसीब (५) हुकम; आज्ञा **दिष्टभाव, दिष्टांत पुं**० मरण; मृत्यु **दिष्टि** स्त्री० निर्देश; आज्ञा (२) सद्-भाग्य (३) नसीब **दिष्टधा** अ० सारे नसीबे दिष्टचा बुध् '-ना बदल अभिनंदन घटे छे' (-ए अर्थमां) **दिह**्२ उ० लेपवुं; खरडवुं दी ४ आ० क्षीण थवुं; नाश पामवुं दीक्ष १ आ० दीक्षा लेवी के आपवी (२) समपित थवुं –प्रेरक ० प्रेरवुं ; फरज पाडवी दोक्षा स्त्री० यज्ञ-त्रत-नियम माटे विधिपूर्वक संकल्प करवो ते (गुरु पासे) (२) यज्ञोपवीत धारण करवुं ते (३) कोई कार्यने समर्पित थवुं ते **दीक्षाश्रम** पुं० वानप्रस्थाश्रम दीक्षांत पुं० यज्ञने अंते दोषनिवारणार्थे करातो वधारानो यज्ञ (२)अवभृथस्नान बीक्षित वि॰ दीक्षा लीघेलुं (२) यज्ञ माटे संकल्प कर्यो होय तेवुं (३) अभिषेक करेलुं

दीधिति स्त्री० प्रकाशनुं किरण (२) तेज; प्रकाश (३) पराक्रम; बळ दीधितिमत् पुं० सूर्यं **दीन** वि० निर्धन; गरीब (२) दुःखी (३) कंगाळ; क्षुद्र (४) भयभीत (५) पुं गरीब माणसः; दुःखी माणस (६) न० दु:ख ; कंगालियत दीनार पुं० चलणी सिक्को (२) सोना-महोर (३) सोनानुं घरेणुं दीप् ४ आ० दीपवुं; प्रकाशवुं (२) सळगवुं; प्रज्वलितं थवुं (३) प्रदीप्त थर्वु; वधर्वु (४) गुस्से थर्वु (५) प्रसिद्ध थवुं **दीप** पुं० दीवो दीपक वि० प्रकाशक (२) उत्तेजक; वधारनारुं (३) जठराग्निने प्रदीप्त करनारुं (४) पुं० दीवो दीपन वि० दीपक; प्रकाशक; उत्तेजक (२) न० प्रदीप्त करवुं ते; सळगाववुं ते (३) उत्तेजक औषधि दीपपात्र, दीयभाजन न० कोडियुं **दीपमाला** स्त्री० दीपमाळ **दीपव**ति स्त्री० दिवेट **बोपवृक्ष** पुं० दीवी (२) दीपमाळ दीपशिखा स्त्री० दीवानी ज्योत दीपालि (-ली), दीपावली स्त्री० दीवानी पंक्ति – हार (२) दिवाळी **बोपांकुर** पुं० दीवानी ज्योत **दोपिका** स्त्री० दीवी; दीवो **दीपिन्** वि० प्रदीप्त – उद्दीपित करनारुं (२) प्रकाशित; तेजस्वी दीम्त ('दीप्'नुं भू० कृ०)वि० सळगेलुं; प्रदीप्त (२) प्रकाशित; तेजस्वी दीप्ति स्त्री० तेज;प्रकाशः(२)सौंदर्य; अतिशय कांति दीप्र वि० तेजस्वी; प्रकाशित दीर्घ वि॰ लाबुं (२) विस्तृत (३)ऊंडुं दीर्घदर्शन, दीर्घदिशन्, दीर्घदृष्टि वि० दूरदर्शी; अगमचेतीवाळु; डाहच्

दीर्घनिद्रा स्त्री० लांबी ऊंघ (२) मृत्यु **दीर्घबाहु** वि० लांबा हाथवाळुं **दीर्घम्** अ० लांबा समय सुधी (२) ऊंडे सुधी (३) दूर सुधी दीर्घसत्र न० लांबी यज्ञ (२) पुं० तेवी यज्ञ करनार **दोर्घसूत्र, दीर्घसूत्रिन्** वि० नकामो लांबी विचार कर्या कैरनाएं; नकामी वार लगाइनारं बीर्घायु, दोर्घायुष्, दीर्घायुष्य वि ० दीर्घा-युषी – लांबुं जीवनारुं दीधिका स्त्री० लांबुं जळाशय (२) सामान्य कुवो के तळाव दीर्ण ('दू'नुभू० कृ०) वि० फाडेलुं; चीरेलुं (२) भयभीत; बीनेलुं हु ५ प० बाळी नाखवुं(२)दुःख देवुं; पोडवुं (३) दुःखी थवुं; दुःख पामवुं –कर्मणि० पीडावुं; दुःखी थवुं दुक्ल न० रेशमी वस्त्र (२) बारीक वस्त्र **दुग्ध** ('दुह्'नुं भू० कृ०) वि०दोहेलुं; दोही लीघेलुं (२) न० दूध **दुग्धदा** स्त्री० दूझणी गाय **बुंघ** वि० देनारुं; आपनारुं (समासने छेडे; उदा० 'कामदुघ') दुत ('दु'नुंभू० कृ०) वि० दुःखितः; दुर् अ० 'दुस्' ने बदले स्वर तथा घोष भ्यंजनो पूर्वे 'खराब', 'मुश्केल', 'कठण' –ए अर्थमा मुकाय छे **दुरक्षर न**० अनिष्ट – अप्रिय शब्द दुरतिऋम वि० अजेय; अनुल्लंघनीय; दुस्तर (२) अनिवार्य दुरत्यय वि० दुर्जय (२) अगाध ; दुष्प्राप दुरिधग, दुरिधगम वि० दुष्प्राप, दुर्जय (२) दुर्जेय दुरध्यय वि० शीखवं कठिन (२) दुष्प्राप दुरध्यवसाय पु० मूर्खाईभरेली प्रवृत्ति दुरध्व पुं० दुर्गम मार्ग ; खराब रस्तो **दुरन्वय** वि० दुर्जेय (२) अयोग्य ; अनुचित (३)मुक्केलीयी अनुसरी शकाय तेवुं **दुरवाप** वि० प्राप्त करवुं मुश्केल **दुरंत** वि० जेनो अंत पामी शकाय नहि एवुं(२) खराब अंतवाळुं(३) दुर्ज्ञेय (४) मुश्केलीयी ओळंगी शकाय तेवुं **दुराकम** वि० अजेय (२) मुक्केलीधी पसार करी शकाय तेवुं **दुराकंद** वि० दयाजनक रीते विलाप **दुरागम** पुं० अन्यायथी करेली प्राप्ति **दुराग्रह** पुं० खोटो आग्रह; हठ दुराचार वि० दुराचारी (२) दुर्वर्जन-वाळुं (३) पुं० दुराचरण ; दुब्टता दुरात्मन् वि० दुष्ट; पापी दुराधर्ष वि० जुओ 'दुर्घर्ष' दुराधि पुं० चिता(२)गुस्सो तिव् दुरानम वि० खेंची के वाळी न शकाय ु **दुराप** वि० दुष्प्राप (२) मुक्केलीथी पासे जई शकाय तेवं दुरामोद पुं० दुर्गध दुराराध्य वि० खुश के वंश करवुं मुक्केल **दुरारो**ह वि० चडबुं म्श्केल दुरालोक वि० जोवं मुक्केल (२)आंजी नाखे तेवुं दुरावर, दुरावार वि० भरी के ढां ही न शकाय तेवुं (२) रोकों के पूरी न शकाय तेबुं [लिंगदेह दुराशय वि० दुष्ट आशयवाळुं(२)पुं० **दुराशा** स्त्री० दुष्ट आज्ञा (२) व्यर्थ [शकाय तेवुं दुरास वि० मुश्केलीथी संबंध राखी **दुरासद** वि० मुञ्केलीथी पासे जवाय तेवुं (२) दुष्प्राप (३) अजेय **दुरित** न० पाप (२) संकट **दुरुक्त** न०, **दुरुक्ति** स्त्री० कडवो बोल ; खोटुं लागे <mark>तेबी वाणी (२)निदा ; गाळ</mark> दुरुत्तर वि० जवाब न आपी शकाय तेवं (२) पार न करी शकाय तेवुं दुरुदर्क वि० खराब परिणामवाळुं(२) कशा परिणाम विनानुं

दुरदाहर वि० मुक्केलीथी उच्चाराय तेवुं **बुरुद्वह** वि० ऊंचकी न शकाय तेवुं **दुरुपसद, दुरुपस्थान** वि० पासे न जई शकाय तेवुं तिव् दुरूह वि० मुश्केलीथी तर्क करी शकाय **दुरोदर** पुं० जुगारी (२) पासानी पेटी (३) होड (४) न० जुगार दुर्गवि ० दुर्गम (२) दुर्ज्ञेय (३) दुष्प्राप (४) खोटे मार्गे वळेलुं (५) पुं०, न० किल्लो (६) दुर्गम मार्ग (७) संकट; विपत्ति (८)पुं० गूगळ **दुर्गत** वि० कमनसीब (२) खराब अवस्थाने पामेलुं, मुश्केलीमां आवी पडेलुं (३) दरिद्र ; कंगाळ **दुर्गति** स्त्री० दुर्देशा (२) दुःखदारिद्रध दुर्गम वि० म्इकेलीथी जई शकाय एवु (२) दुष्प्राप (३) दुर्बोध ; दुर्जेय (४) न० दुर्गम स्थान बिराब गंध **दुर्गंध** वि० खराब गंधवाळुं (२) पुं**० दुर्गा** स्त्री० पार्वती दुर्गानवमी स्त्री० कार्तिक सुद नोम **दुर्गुणित** वि० बराबर अम्यास न क**रे**लुं बुग्रंह वि० दुःसाध्यः; दुष्प्राप (२) मुश्केलीथी जिताय तेवु (३) दुर्गम; दुर्बोघ (४) पुं० हठ; जीद; धून दुर्जन वि० दुष्ट; शठ (२) पुं० दुष्ट माणस; शठ **दुर्जय** वि०अजेय; अजित **दुजंर** वि० हमेशां जुवान रहेनारुं (२) पचीन शके तेवुं (३) भोगवीन शकाय तेवुं **दुर्जात** वि० खराब कुळमां जन्मेलुं; नीच (२) खराब स्वभावनुं; दुष्ट (३) दुःखी; कंगाळ (४) खोटुं; जुडुं (५) न० संकट; विपत्ति ; दुर्भाग्य दुर्जाति वि० खराब – दुष्ट स्वभावनुं (२) स्त्री० कमनसीबी **बुबोंग** वि० मुरकेलीथी जाणी शकाय एवं

दुर्णीत वि० असम्य ; अशिष्ट ; धृष्ट (२) न • दुश्चरित्र ; दुराचरण दुर्देम, दुर्देमन, दुर्देम्य वि० दमन करवुं मुश्केल; वश – ताबे करवुं मुश्केल **दुर्दर्श** वि० म्रकेलीथी जोई शकाय एवं (२) आंजी नाखे तेवुं **दुर्वर्शन** वि० कदरूपु **दुर्देशा** स्त्री० खराब — माठी दशा दुर्वीत वि० दमन न थई शके तेवुं (२) गविष्ठ; तुमाखीवाळ् दुर्दिन न० खराब दिवस (२) वादळा के वरसादना तोफानवाळो दिवस (३) वरसाद (कोई पण वस्तुनो)(४)गाढ अधकार दुर्दिवस पुं० अंधारियो के वरसादवाळो **दुर्द्**श वि० जोवुंन गमे तेवुं(२) मुक्केलीथी जोई शकाय तेव् दुर्वेच न० दुर्भाग्य; कमनसीव दुर्घर वि० निवारी – रोकी न शकाय तेवुं (२) असह्य (३)मुश्केलीथी सिद्ध करी शकाय तेवु (४) मुश्केलीथी याद करी शकाय तेवुं **बुर्धर्ष** वि० हुमलो न थई शके तेवुं(२) पासे न जई शकाय तेवुं (३) भयंकर (४) तुमाखीभर्युं [उद्धतपणु दुर्नेय पुं० खराब नीति (२)अनीति (३) **दुनिग्रह** वि० निग्रह न करी शकाय तेवुं दुर्निमित वि० बेदरकारीथी फावे तेम जमीन उपर मूकेलुं – नाखेलुं दुनिभित्त न० भावी अनिष्ट सूचवनारुं खराब निमित्त (२) खोटुं बहानुं **दुनिवार, दुनिवार्य** वि० निवारण न थई शके तेवुं [कमनसीब **दुर्नोत** न० दुष्ट वर्तन; दुराचरण(२) **दुर्नीति** स्त्री० अन्यवस्था; अंधेर **दुर्न्थस्त** वि० खराब रीते गोठवेलुं दुर्बेल वि० निर्वेळ; अशक्त **बुर्बुडि, दुर्बुध** वि० दुष्ट (२) मूर्ख

दुर्बोभ वि० न समजी शकाय एवं **दुर्भग** वि० कमनसीब (२) कदरूपुं दुर्भगा स्त्री० पतिने न गमती स्त्री (२) कर्कशा (३) विधवा दुर्भर वि० मुइकेलीथी वहन करी शकाय तेवुं ; अति भारे लदायेलुं (२) मुक्केलीथी पोषी शकाय - टेकवी निसीब. शकाय तेव् दुर्भाग्य वि० अभागी (२) न० कम-दुर्भिक्ष न० दुष्काळ; दुकाळ दुर्भिद, दुर्भेद, दुर्भेद्य वि० अभेद्य दुर्मति वि० दुष्ट (२) मुर्ख; अज्ञ (३) स्त्री० दुष्ट बुद्धि ; कुमति **दुर्मनस्** वि० उदासः; अस्वस्थः; व्याकुळ **दुर्मर** न० खराब मोत; कुमरण **दुमँत्र** पुं०, **दुमँत्रणा** स्त्री०, **दुमँत्रि**त न० खोटी सलाह; अवळी सलाह **दुर्मुख** वि० कदरूपुं(२)माळ बोलनारुं **दुर्मेधस्** वि० मूर्खः; मंदबुद्धिवाळ्यं **दुर्योघ, दुर्योधन** वि० जेनी साथे लडवुं कठिन छे तेवुं; अजेय **दुर्योघन** पुं० धृतराष्ट्रनो मोटो पुत्र **बुर्लक्ष** वि० जोवं मुश्केल (२) न० खोर्टुलक्ष – ध्येय **दुलंभ** वि० दुष्प्राप (२) विरस् दुर्लित वि० अति लाडमां अछरेलुं; तोफानी (२) हठीलुं; जिद्दी (३) न० तोफान ; अवळचंडाई दुवंच वि० अवर्णनीय (२) कही न शकाय एवं (३) गाळ बोलतुं; अप-शब्द बोलतुं (४) न० गाळ ; अपशब्द **दुवंचस्** न० निदा (२) अपशब्द **दुवंणं** पुं० खराव रंग (२)अशुद्धि (३) न० रूपुं (४) एक जातनो कोढ **दुर्वसति** स्त्री० दुःखभयों रहेवास **दुर्बह** वि० भारे ; अंचकी शकाय नहि तेवुं **दुर्वाच्य** न० गाळ; निदा (२) अप-कीर्ति (३) कठोर शब्द (४) भाठा समाचार

दुर्वार, दुर्वारण वि० रोको के निवारी न शकाय एवं दुर्वासस् वि० योग्य पोशाक न पहेरेलुं (२)नग्न (३) पुं० एक ऋषि (महा-कोधी तरीके जाणीता) करनारुं हुर्विदग्ध वि० मुर्ख (२) खोटो गर्व दुविध वि० कंगाळ (२) दुष्ट; नीच दुर्विनोत वि० खोटी केळवणी पामेलुं; अशिष्ट; अविनयी (२) तोफानी; उद्धत (३) जक्की; जिही **दुर्विपाक** वि० माठुं परिणाम लावनारुं (२) पुं० माठ्ठं परिणाम (३) पूर्वे करेल कर्मनुं माठुं फळ दुर्विभाव्य वि० कल्पी के चितवी न शकाय तेवुं असम्यता दुविलसित न० तोफान; उद्धताई; दुविलास पुं० दुर्दैव; दुर्भाग्य **दुविष** पुं० शिव [खराब वर्तन दुर्वृत्त वि० दुष्ट वर्तनवाळुं (२) न० **दुर्व्यसन** न०धून; लत (२) दुष्ट वलण दुल् १० उ० आम तेम हलाववुं ; ऊंचुं-नीचुं करवुं के उछाळवुं **दुइचर** वि० आचरवुं मुश्केल (२) पा**से** न जई शकाय तेवुं (३) दुराचारी दुश्चरित, दुश्चेब्टित वि० दुराचरणी (२) न० दूराचरण **दुष् ४** प० दूषित थवुं; अपवित्र **धवुं** २) खराब धवुं; गंदुं धवुं (३) दोष करवो; पाप करवुं; भूल करवी(४) व्यभिचारी बनवु; बेवफा नीवडवुं –प्रेरक० गंदुं करवुं;अपवित्र करवुं; दूषित करवुं(२)भ्रष्ट करवुं(स्त्रीने) (३) दोष आरोपवो; निंदवु दुष्कर वि० मुश्केलीथी थई शके एवं (२) न० कठिन कार्य; मुझ्केली **दुष्कर्मन्** वि० पापकर्म करनारुं (२) न० दुष्कृत्य; पाप **दुष्काल** पुं० खराब समय (२) प्रस्नयनोः समय (३) दुकाळ

दुष्कुल न० हीन कुळ; निदित कुळ **दुष्कुह** वि० अश्रदाळु; शंकाशील दुष्कृत् पुं० पापी **दुष्कृत न०, दुष्कृति** स्त्री० पाप **दुष्कृतिन्** पुं॰ दुष्ट; पापी **बुष्ट** ('दुष्'नुंभू० कृ०) वि० गदु, भ्रष्ट के दूषित थयेलुं – करायेलुं (२) अधम; दुराचरणी; हीन (३) न० दोष; अपराध; पाप **बुष्टता** स्त्री०, **बुष्टत्व** न० दुष्टपणुं दुष्टात्मन् वि० दुष्ट अंतःकरणवाळुं **दुष्ठु** अ० खोटी रीते; खराब रीते **दुष्परिग्रह** वि० पकडी राखवुं मुक्केल **दुष्पूर** वि० मुश्केलीथी भरी शकाय के संतोषी शकाय एवं **दुष्प्रणीत** वि० खराब रीते गोठवेलुं; खराब व्यवस्थावाळुं (२) न ॰ दुर्व्यवहार **बुष्प्रतर** वि० तरवुं के समजवुं मुक्केल **दुष्प्रतीक** वि० ओळखवुं मुक्केल **दुष्प्रद** वि० दुःख के शोक आपनासं **दुष्प्रधर्ष, दुष्प्रधृष्य** वि० मुक्केलीथी आक्रमण यई शके एवं, अजेय दुष्प्रवाद पुं० आळ; बदगोई बुष्प्रवृत्ति स्त्री० खोटा समाचार **दुष्प्रसह** वि० असह्य (२)सामनो न थई शके तेवं **दुष्प्राप, दुष्प्रापण** वि० दुर्लभ **दुष्यंत** पु० एक चंद्रवंशी राजा; शकुं-तलानो पति; भरतनो पिता **दुस्** अ० नाम (अने कोई वार कियापद) ्पूर्वे 'दुष्ट' 'सराब ', 'मुक्केल' वगेरे अर्थमां लागे छे शकाय तेवुं दुस्तर वि० मुश्केलीथी पार करी **दुस्सह** वि० जुओ 'दुःसह' **बुह**् २ उ० दोहवुं(२) दोही लेबुं; -माथी खेंची लेवुं (३) -माथी लाभ मेळववो (४) इच्छित वस्तु आपवी **दुहित्** स्त्री० दुहिता; पुत्री

दुंदुभ पुं० एक जातनुं नगारुं (२)पाणी-नो साप (३) एक जातनी माळा **दृंदुभि** पुं०,स्त्री० एक जातनुं नगारु **बुंदुभायित** न० नगारानो अवाज दुःखः वि० दुःखदायकः; प्रतिक्ळः; अप्रियः (२) मुक्केल ; कठिन (३) न० पीडा ; कष्ट (४) मुश्केली **दुःसकर** वि०दुःखी करनारुं बुःखगत न० आपत्ति; विपत्ति दु:खच्छेच वि० महामुश्केलीए कापी के दूर करी शकाय तेवुं दु:खदु:ख न० महामुश्केली दुःखम् अ०दुःखेः; महामुक्केलीए दुःखजील वि० झट उरकेराई जाय तेवुं; चीडियुं (२)राजी करवुं मुश्केल (३) —नुंदुःख सहन करवा टेबायेलुं दुःखाकृत वि०पीडित;दलित **बु:खान्वित, दु:खार्त** वि० दु:खित; **दु**:खी **दुःखित** वि० दुःख पामेलुं; पीडायेलुं (२) न० दुःख; पीडा दुःखिन् वि० दुःखित (२) मुश्केल; दु:खदायक (३) कंगाळ दुःखेन अ० महामुश्केलीथी **दुःशासन** वि० जेना पर शासन चलावव् मुश्केल छे तेवुं (२) पुं० धृतराष्ट्रनो एक पुत्र दुःषम, दुःसम वि० विषम (२)असमान (३) प्रतिकूळ; अनिष्ट; खराब दुःसह वि० सहन नथई शके तेवुं (२) सामनो न थई शके तेबुं दुःसंचार वि० जेमां थईने चालवुं के पसार थवुं मुश्केल छे तेव **दुःसंधान, दुःसंधेय** वि० साधी न शकाय तेवुं (२) समाधान न थई ्शके तेवुं **दुःसंस्थित** वि०कदरूपुं दुःसाध (-ध्य) वि० मुश्केलीथी सिद्ध थर्द शके तेवुं(२)मुश्केलीथी उपचार थई शके तेवुं

दुःस्थ वि० दुःखी; विपद्ग्रस्त (२) गरीव; कंगाळ (३) मूर्ख; अज **दुःस्थम्** अ० अस्वस्थ-बीमार होय तेम **दुःस्थित** वि० जुओ 'दुःस्थ' **दुःस्मर** वि० याद करवुं मुश्केल के दुःख-दायक होय तेवुं दू ४ आ० (केटलाकने मते 'दु'नुं कर्मणि रूप) दुःखी थवुं; पौडा पामवी; खिन्नं थवुं (२)दु:खं आपवुं दूत, दूतक पुं दूत; कासद (२) पर-राज्यमां भोकलातो प्रतिनिधि दूर्तिका,दूर्ती स्त्री०संदेशो लई जनार स्त्री दून ('दु'नुं भू०कृ०) वि० दुःखी; पीडित; खिन्न दूर वि० आघेनुं; लांबा समयनुं; ऊंचुं (२)अतिशय; घणु (३) न० अंतर; छेदुं (स्थळ के काळमां) दूरग, दूरगत वि० दूर गयेलु; दूरनुं (२) खूब वधी गयेलुं दूरतः अ० दूरथी; छेटेथी; आघेथी **दूरविञन्** वि० दीर्घदृष्टिवाळुं (२)पुं० गोध (३) कांतदर्शी ऋषि (४) विद्वान दूरवृष्टि स्त्री० दीर्घदृष्टि (२) दूरनुं तोडी पाडे तेवु **दूरपात, दूरपातिन्** वि० दूरथी ताकीने **दूरपात्र** वि० पहोळा पात्रवाळुं (नदी) दूरपार वि० बहु पहोळुं (नदी) (२) मुश्केलीथी पार करी शकाय तेवुं दूरबंधु वि० पत्नी अने सगांसंबंधीथी अळगुं पडेलुं **दूरम्** अ० आ**घे**; छेटे **दूरवर्तिन्** वि० दूर रहेलुं; दूरनुं **दूरविलंबिन्** वि० खूब नीचुं झझूमतुं **दूरसंस्य, दूरस्थित** वि० दूर रहेलुं **दूरात्** अ० दूरथी ; आघेथी (२) मोटा प्रमाणमां (३) दूरना समययी **दूरापेत** वि० तद्दन अप्रस्तुत दूरास्ट वि० अंचे चडेलुं (२) खूब वधी गयेलुं; तीव्र; जोरदार

दु:स्य

दूरीकृत वि० दूर ससेडेलुं (२) **छ्**टुं पाडेलुं; लई लीधेलुं (३) निवारेलुं (४) पाछुं पाडी दीघेलुं दूरे अ० आधुं; छेटे दूरेण अ० दूरथी (२) मोटा प्रमाणमां **दूरोत्सारित** वि० दूर खसेडेलुं **दूर्वा**स्त्री० **ए**क घास – दरो दूष वि० (समासने छेडे)दोषित कर-नारुं (उदा० 'पंक्तिदूष') दूषक वि० अपवित्र के भ्रष्ट करनारुं (२) दोषजनक (३) उल्लंघन करनारुं (४) अधार्मिक; अपराधी दूषण वि० दूषित करनारुं; भ्रष्ट करनारुं (२)न० दूषित करवृते (३) उल्लंघन करवुं ते (४) दोष; कलंक (५) (दलीलनुं)खंडन ; विरोध करवो ते (६) दोष; अपराध; पाप **दृषित** वि० दोषयुक्त करायेलुं; अपवित्र के भ्रष्ट करायेलुं (२) खंडित; भंग थयेलुं के करायेलुं (३) निदित; कलंकित (४) मेलुं थयेलुं; खरडायेलुं (५) न० दोष; अपराध दूष्य न०कपास (२) वस्त्र (३) तंबू ६ आ० [द्रियते] (मुरूयत्वे 'आ' उपसर्ग साथे वपराय छे) जुओ 'आदु' **वृक्पथ** पुं० दृष्टिमर्यादा दृक्पाःत पुं० दृष्टि – नजर नाखवीते **दृक्संगम** पुं० नजरे जोवं तथा भळवं ते दृग्गोचर वि० दृश्य; दृष्टिमर्यादामा आवतुं (२)पुं० दृष्टिनी मर्यादा – हद **दृढ** वि० स्थिर; निश्चळ (२) **म**जबूत; सखत (३) अत्यंत (४) निश्चित दृष्टनाभ पुं० अस्त्र ने रोकवानी मंत्र **बृहप्रत्यय पुं० दृढ विश्वास – लातरी** बृद्धम् अ० सखत – मजबूत होय तेम (२) अत्यंत; जोसयी (३) पूरेपूरु दृढमन्यु वि० खूब गुस्सावाळ्ं (२) खूब शोकवाळु

दृढसौहद वि० दृढ मित्रतावाळ् **वृढानुताप** पुं० भारे पस्तावो वृति पुं०, स्त्री० पाणीनी मसक; पखाल (२) लुहारनी धमण **वृष् ४५०** गर्व करवो; तुमाखो करवी (२)मदमत्त थवुं (३)अति हर्षित थवुं **दृप्त** ('दृप्'नुं भू०कृ०) वि० गर्विष्ठ; अभिमानी (२) प्रमत्तः मदमत्त वृब्ध वि० बांधेलुं;गूंथेलुं(२)बीनेलुं **वृज् १** प० [पश्यति] जोवुं; निहाळवुं (२)मळवा अवुं(३)समजबुं;जाणबुं (४) शोध करवी; तपासवुं (५) अंतर्दृष्टिथी जाणवुं **दृश्** वि० (समासने छेडे) जोनारुं (२) जाणनारुं (३) -ना जेवुं देखातुं (४) स्त्री • जोवुं ते (५)दृष्टि ; आंखं (६) ज्ञान; बुद्धि बृध्य वि० जोवा योग्य; जोई शकाय तेवुं(२)मनोहर; सुंदर(३)न० दृश्य पदार्थ ; दृश्य जगत **दृश्येतर** वि० अदृश्य; न देखी शकाय तेवुं दृश्वन् वि० (समासने अंते) जोनाहं (२) समजनारुं; परिचित द्श्वर वि० जेणे जोयुं छे तेवुं **दृषत्सार** न० लोढूं **दृषद्** स्त्री० शिला; पथ्थर **बृष्ट** ('दृश्'नुं भू० क्ठ०) वि० जोयेलुं; निहाळेलुं (२) जोई शकाय तेवुं(३) जाणेलुं; समजेलुं(४) निश्चित बुष्टदोष वि० दोषी; अपराधी **दृष्टच्यतिकर** वि० दुर्भाग्य अनुभव्युं होय तेवुं (२)अगाउथी अनिष्ट जोनारुं दृष्टांत पुं०, न० उदाहरण (२) शास्त्र **दृष्टि** स्त्री० जोवंते (२) नजर (३) आंख (४) जाणवुं ते; ज्ञान (५) मत; अभिप्राय; सिद्धांत; वाद **बृष्टिक्षम** वि० जोवालायक **दृष्टिक्षेप** पुं० नजर नाखवी ते

दृष्टिगत न० सिद्धांत; मत दृष्टिगोचर वि० जोई शकाय एतुं; दृष्टिनी मर्यादामां आवी शके एवं दृष्टिपथ पुं० दृष्टिमयदि। **वृष्टिपात** पुं० नजर करवी ते; जोवुं ते **दृष्टिपूत** वि० आंख**यी जो**येलुं – तपासेलुं (जेथी गंदकीमां न पडाय) दृष्टिप्रसाद पुं० दृष्टि करवा जेटली कृपा दृष्टिराग पुरु आंखमां प्रगट थतो भाव **दृष्टिविक्षेप** पुं० कटाक्ष **दृष्टिविभ्रम** पुं० प्रेमकटाक्ष वृष्टिसंभेद ए० परस्पर नजर करवी ते बु ४ प० दिर्श्वित ।, ९ प० दिणाति । फाडवुं, चीरवुं (२) टुकडा करवा –कर्मणि० फाटी जवुं; चिराई जवुं –प्रेरक० फाडवुं; चीरवुं; खोदवुं (२)विखेरवुं चिकित देदीप्यमान वि० अति तेजस्वी; चक-देय वि० आपवा योग्य (२) भेट आपवा योग्य (३)पाछु आपवानुं (४) परणवा योग्य (५) न० दान; बक्षिस देव वि० दिव्य (२) तेजस्वी (३) पुं० सुर;देवता (४) इंद्र; मेघ (५) राजा माटे वपरातुं संबोधन (६) न० इंद्रिय **देवकर्मन्, देवकार्य** न० धर्मकृत्यः; धार्मिक ऋिया (२) देवपूजा देवकीनंदन, देवकीसूनु पु० श्रीकृष्ण देवकुल न० मंदिर (२) देवोनो सम्ह देवगति स्त्री० देवलोकनो मार्ग **देवगर्भ** पु० जुओ 'हिरण्यगर्भ' देवगुरु पुं० देवोना पिता – कश्यप (२) देवोना गुरु – बृहस्पति **देवगृह** न० मंदिर (२) राजानो महेल देवता स्त्री० देव (२) देवनी मूर्ति **देवतात्मन्** वि० दिव्य प्रकृतिवाळुं; दिव्य स्वरूपवाळुं **देवदत्त** वि० देवे आपेलुं (२) देवने माटे अपायेलुं (जमीन इ०) (३)पुं०

अर्जुननो शंख (४) 'अमुक' – फलाणो' एवो अर्थ दर्शाववा माटे वपरातो शब्द **देवदार** पुं०, न० देवदारनुं वृक्ष **देवदुंदुभि** पुं० देवनुं नगाहं देवदेव पुं० शंकर (२) विष्णु (३) ब्रह्मा (४) गणेश देवधानी स्त्री० इंद्रनी नगरी **देवन्** पुं० दियर **देवन** पुं**० पा**सो (२)न० पासा खेलवा ते देवनदी स्त्री० गंगा (२) पवित्र नदी **देवना** स्त्री० दूसकीडा **देवनागरी** स्त्री० संस्कृत भाषा जेमां लखाय छेते लिपि **देवनिकाय** पुं० स्वर्ग (२) देवोनो समुह **देवपथ** पुं० स्वर्ग ; आकाश (२)आकाश-गंगा **देवपादाः** पुं० ब० व० राजाने माटे वपरातुं मानवाचक 'संबोधन **देवपुर** न०, **देवपुरो**स्त्री० इंद्रनी राज-धानी - अमरापूरी देवप्रिय पु० शिव **रेवभूमि** स्त्री० स्वर्ग **देवभोग** पुं० देवोने लायक मोग देवमणि पुं० कौस्तुभ मणि (२) सूर्य (३) घोडानी डोक उपरनो वाळनो भमरो **देवमातृक** वि० वरसाद उपर आधार रास्ततुं (नहेर वगेरे उपर नहीं) देवयजन न० यज्ञ करायो होय ते भूमि देवयज्ञ पुं० पंच महायज्ञोमांनी एक देवयज्य न०, देवयज्या स्त्री० देवनी मृतिनो वरघोडो देवयान वि० मोक्ष आपनार्ह (२) न० विमान (३) पुं० मोक्षनो मार्ग देवयुग पुं० सतयुग देवर पु० दियर (२) पति **देवराज् (-ज)** पुं० देवोनो राजा इंद्र वैवर्षि पुं॰ नारद (२) (भृगु, अत्रि वगेरे) देवत्त्य ऋषि

देवलोक पु० स्वर्ग मिलकत देवस्व न ० देवोनी मिलकत; घार्मिक देवागार पुं०, न० देवालय; मंदिर देवाधिप प्०इंद्र **देवानांप्रिय** पुं० देवोने प्रिय (२) बकरो (३) मुखं; गमार (४) तपस्वी देवायतन पुं० मंदिर; देवालय देवारण्य न० देवोनुं उपवन – नंदनवन देवारि पुं० देवोनो शत्रु-दानव **देवालय** पुं० मंदिर (२) स्वर्ग वेवांगना स्त्री० अप्सरा वेवित्, वेविन् पुं० जुगारी **देवी** स्त्री० देव स्त्री (२) देवता (दुर्गा, सरस्वती, सावित्री इ०) (३) राजानी पटराणी देव पु० दियर **देश** पुं० स्थळ; स्थान (२) प्रदेश; विभाग; राष्ट्र (३) आखानो अंश के बाजु (४) गोचर-क्षेत्र देशक पुं० राजा (२) आचार्य (३) भोमियो; मार्गदर्शक **देशकंटक** पुं० जाहेर आफत वेशकालज्ञ वि० योग्य स्थळ अने समय जाणनारुं आचार देशधर्म पुं० देशनो धर्म; स्थानिक **देशना** स्त्री० सूचना;निर्देश;आज्ञा देशरूप न० योग्यता; औचित्य **देशाचार** पुं० स्थानिक आचार-रिवाज देशाटन न० प्रवास; मुसाफरी **देशांतर** न० अन्य देश **देशिक** वि०स्थानिक (२)पुं० गुरु (३) प्रवासी (४) भोमियो देशित वि० कहेलु; सूचवेलुं आज्ञा करेलु (२) उपदेशेलु; सलाह आपेलु देशीय वि॰ स्थानिक; प्रांतिक (२) —नं रहेवासी (समासने छेडे; उदा० 'मगघदेशीय') (३) लगभगः; नजीकन् (उदा० ''अष्टादशवर्षदेशीया'')

देश्य वि० सिद्ध करवा योग्य; बताववा थोग्य (२) स्थानिक; देशीय (३) लगभग; नजीकन् **देह** पुं०, न० शरीर देहकर पुं० पिता [(३) पिता **देहकृत् पुं॰ पंचमहाभूत(२)परमे**श्वर वेहत्याग पुं मृत्यु (२)आपमेळे शरीर त्यागवुं ते [निद्रा इ०) **देहधर्म** पुं• देहनो सहज धर्म (आहार, **देहबद्ध** वि० देहघारी; मूर्तिमंत **देहबंध** पुं० शरीरनुं माळखुं **देहभाज्** वि० देहघारी देहभृत् पुं० प्राणी (खास करीने मनुष्य) वेहवात्रा स्त्री० मरण; मृत्यु (२) भोजन (३) आजीविका वेहयापन न० शरीरने पोषण आपत्रुं ते देहिल (-ली) स्त्री० उपरो देहदत् प्०देहघारी; प्राणी देहाबरण न० बस्तर **देहांतर** न० पुनर्जन्म; बोजोदेह **देहिन्** पुं० देहधारी प्राणी ; मनुष्य (२) जीवात्मा (शरीरमां बद्ध) **दं १** प० स्वच्छ करवुं; शुद्ध करवुं दैतेय, दैत्य पुं० दितिनो पुत्र – राक्षस **दैन,दैनंदिन,दैनिक** वि० दररोजनुं दैन्य न० दीनता; गरीबाई; कंगालियत **दैष्ट्यं न०** दीर्घता; लंबाई देव वि०देव संबंधी; दैवी (२) पुं० आठ विवाह-प्रकारमांनो एक (जेमां यज्ञ वखते, यज्ञ करावनार ऋत्विजने कन्या परणाबी देवाय छे) (३) न० भाग्य; नसीब (४) धर्मकृत्य (५) देव (६) राजानुं कर्तव्य दैवगति स्त्री० नसीबनुं फरवृं ते दैवचितक, दैवज्ञ पुं० ज्योतिषी; जोषी देवत वि॰ देवी; दिव्य(२)(समासने छेडे) ⊶ने इष्टदेव मानतुं (उदा० 'सूर्यदैवत') (३) न० देवता ; देव (४) देवोनो समूह (५)मूर्ति

वेवतपति पुं इंद्र देवतस् अ० नसीवजोगे **दंवदत्त** वि० सहज; कुदरती **दैवदुर्विपाक** पुं० नसीवनी प्रतिकूळता **बैबयोग** पुं० नसीबनी जीग **देवरक्षित** पुं० देवरेए रक्षेत्र् **दैवसिक** वि० एक दिवसमां थतुं दैवहत पुं० दुर्भागी; कमनसीब **वैवाधीन, दैवायस** वि० प्रारब्धने आधीन देवोपहत वि० कमनसीब; दुर्भागी **देशिक** वि० स्थानिक(२)राष्ट्रीय(३) ते स्थळनुं परिचित (४)शीखदनारं; दर्शावनारुं (५)पुं० गुरु (६)भोमियो **दैहिक** वि०देहने लगतुं; देह संबंधी (२) देहमां थनारुं - होनारुं बो ४प० [द्यति] कापवुं; भाग पाडवा (२)लणवुं **बोग्ध** पुं० दूध *दोहनार (२)* बाछरडुं **दोर** पुं० दोरहुं **दोर्वंड** पुं० दंड जेवो मजबूत हाथ दोर्मूल न० बगल; काख बोर्युद्ध न० हाथोहाथनी लडाई **दोल** पुं० हींचको ; झ्लो (२)हींचवुं ते **दोला** स्त्री० पालखी; डोळी (२) हींचको ; झुलो (३) अनिश्चितता दोलायमान वि० हीचतुं, डोलतुं(२) अनिश्चित; अस्थिर; संशयग्रस्त दोलायुद्ध न० विजयनी अनिश्चितता-ग्रस्तः, अनिश्चित दोलारूढ वि० हींचका खातुं (२)संशय-दोष पुं० भूल; चूक (२) खोड; खामी (३) गुनो; वांक (४) लांछन (५) पाप (६) नुकसान; ईजा; बीमारी दोषग्रस्त वि० अपराधी; गुनेगार(२) दोष के खामीथी भरेलूं दोषग्राहिन् वि० मात्र दोष जोनारुं; दोषदृष्टिवाळुं **बोबज्ञ** वि० दोषने जाणनारुं(२)पुं• विद्वान माणस; डाह्यो माणस

दोषत्रय न० त्रिदोषनो व्याधि - सनेपात दोषद्दिः वि० मात्र दोष ज जोनारुं दोषन् पुं०, न० हाथ (आनां द्वितीया ब॰व॰ थी अगाऊनां पांच रूपो नथी) दोषभाज् वि॰ दोषी; अपराधी (२) खोटुं करनारुं (३) दुष्ट; बदमाश **बोष**ल वि० दोषयुक्त; दूषित बोषस् स्त्री० रात्री (२) न० अंघकार **दोषा** स्त्री० रात्रि; रातनुं अंधारुं(२) अ० राते; सांजे बोषाकर पुं० चंद्र **दोषातन** वि० रातनुं; राते थतुं दोषिक वि॰ दोषवाळुं;स्वामीवाळुं(२) पुं० व्याधि; रोग बोषिन् वि० दोषवाळुं; खामीबाळुं(२) दुष्ट; स्नराब काढनार् दोषंकदृश् वि० मात्र दोष ज जोनारं के दोस् पुं०, न० हाय; बाहु (द्वितीया ब० व० पछी 'दोषन्' विकल्पे मुकाय छे) **दोह** पुं० दोहवुं ते (२)दूघ (३)दोहवानुं **दोहद** पुं०, न० सगर्भा स्त्रीने थतो अभि-लाष (२) तीव्र अभिलाष बोहदिन् वि० तीव्र अभिलाषावाळ् **बोहन** वि० दूध आपनार् (२) इच्छित वस्तु आपनारुं (३) न० दोहवुं ते (४) दोहवानुं वासण **बोहल** पुं० जुओ 'दोहद' **बोःशालिन्** वि० मजब्**त बाहुवा**ळुं; बहादुर; लडायक **बोःस्य** पुं० नोकर(२)सेवा(३)क्रीडा **बौत्य न**० दूतनुं कार्यः; संदेशो लई जवो ते (२) संदेशो **दौरात्म्य** न० दुरात्मापणुं; दुष्टता बौरवरी स्त्री० चंद्रनो गुरु अने शुक्र साथेनो योग (जन्मकाळ तरीके उत्तम गणाय छे) **बौर्गस्य** न० दुर्गति; कंगालियत

बौर्जन वि० दुर्जन संबंधी बौर्जन्य न० दुर्जनता दौर्बेल्य न० दुर्बेळता; कंगालपणुं दौर्मनस्य न० अणबनाव (२) खेद; बेचेनी; निराशा **दौमंत्र्य न० स्रोटी सलाह** बौहु द न० वेर; अणबनाव (२) सगर्भा-वस्था (३) गर्भिणीनो दोहद दौवारिक पुं० द्वारपाळ दौरचयं न० दुर्जनता; दुष्टता (२) दुष्कर्म **दौष्कुल,दौष्कुलेय,दौष्कुल्य** वि० हलका क्ळमां जन्मेल् **दौष्यंति** पुं० दुष्यंतनो पुत्र **दौहदिक** पुं० वृक्षोनो - उपवननो माळी (२) तीव्र अभिलाषा **दौहित्र** पुं० पुत्रीनो पुत्र; दोहितर बौहित्री स्त्री० पुत्रीनी पुत्री **बौह्द** न० जुओ 'दौ**ह्र** द' **बौ:शील्य** न० दु:शीलता दौ:साधिक पुं० द्वारपाळ द्यावापृथिव्यौ (द्यो +पृथित्रो) स्त्री ० द्वि ० व० स्वर्गक्षने पृथ्वी [धसव् **छ २** ¤० [द्यौति]हुमलो करवो ; −तर**फ** खुपुं० अग्नि (२) न० दिवस (३) गगन (४)स्वर्गे (व्यंजनथी शरू यता प्रत्ययो पहेलां तथा समासमां 'दिव्' स्त्री० ने बदले 'द्युं' मुकाय छे) **द्युत् १**प० प्रकाशवुं; शोभवुं --प्रेरक० प्रकाशित करवुं (२) समजाववुं (३) स्पष्ट-प्रगट करवुं द्युति स्त्री० प्रकाश; कांति(२)किरण द्युमस् वि० तेजस्वी; कांतिमान **बुम्न** न० तेज;कांति(२)बळ;पराक्रम **द्युयोषित्** स्त्री० अप्सरा **द्युसरित्** स्त्री० गंगानदी **धृत** पुं०, न० जुगार; जूगटुं **द्युतकर** पुं० जुगारी **जूतकी हा**स्त्री० जुगार खेल**दो** ते

ब्रुतमंडल न० जुगार रमवानुं स्थान (२) हारेलो जुगारी पैसान चुकवे त्यां सुधी तेनी आसपास आण तरीके दोरातुं क्रूंडाळु (जेने छोडी ते बहार जई शके नहीं) द्यो स्त्री० स्वर्गः; अंतरीक्ष (प्रथमा ए० व० नुं रूप 'द्यौः' थाय; द्वंद्वसमासमा 'द्यो⁷नुं 'द्यावा' थाय छे) धोतक वि॰ प्रकाशित करनाएं (२) समजावतुः, प्रगट करतुः, दशवित् **द्योतन** वि० प्रकाशित; तेजस्वी द्रिहिमन् पुं० दृढता (२) समर्थन द्रम् १ प० चोतरफ दोडवुं द्रम्म न० एक जूनो सिक्को द्रव वि० झमतुं; टपकतुं (२) प्रवाही ('कठिन'थी ऊलटुं) (३)पुं० ओगळबुं ते (४) ओगळीने थयेलुं प्रवाही (५) पलायन; नासी जबुं ते क्रविण न० धन; पैसो (२) सोनुं (३) सामर्थ्य; बळ (४) वीर्य; पराक्रम द्रविणाधिपति, द्रविणेश्वर पुं० कुबेर **द्रविणोदय** पुं० धनप्राप्ति द्ववीभू १ प० पीगळी जवु (दया इ०थी) **द्रवेतर** वि॰ घन ('प्रवाही'थी ऊलटुं) द्रव्य प० वस्तु; पदार्थ (२)कोई वस्तुनो घटक पदार्थ (३) योग्य पात्र (४) धनसंपत्ति; मालमिलकत इंड्टब्य वि० जोई शकाय तेवुं (२) सुंदर; मनोहर (३) जोवा, विचारवा के समजवा योग्य **द्रष्ट्रकाम वि० जोवानी इच्छावा**ळुं **द्रष्टुमनस्** वि० जोवानी मरजीवाळुं द्वष्ट् वि॰ जोनार्ह (२) साक्षात्कार करनारुं (३) पुं न्यायाधीश **ब्रह** पुं० ऊंडुं सरोवर (२) धरो **द्रा २** प० दोडी जवुं (२) ऊंघवुं बाक् अ० जलदी; तरत ज **द्राक्षा** स्त्री० द्राक्ष

द्राध् १ आ० लांबुं करवुं; खेंचवुं –प्रेरक० लांबु करवु (२)मोडु करवु द्राधिष्ठ वि० अत्यंत लांबुं द्राघीयस् वि० वघारे लांबु **द्रावण** वि० नसाडी मूकनारुं द्भु १ प० दोडवुं; वहेवुं; नासी जवुं (२) धसवुं; हुमलो करवो (३) ओगळबुं; द्रवबुं (४) ५ प० ईजा करबी हुपुं० वृक्ष (२) डाळ (३) पुं०, न० लाकडुं (४) गति द्वुत ('द्रु'नुं भू० कृ०) वि० शीघ्र; उतावळूं (२) पीमळेलुं; द्रवेेलुं (३) नासी गयेलुं (४) न० नासी जवुं ते द्रुतम् अ० जलदीथी; त्वराधी द्रुति स्क्री० द्रवयुंते (२) नासी जवृते द्रम पुं० वृक्ष **द्रुमबासिन्** पुं० वानर ब्रुह् ४ प० द्रोह करवो; द्वेष करवो (२) ई जा के नुकसान करवा इच्छवुं द्रुह् वि० (समासने छेडे) ईजा करतुं; शत्रुवट राखतुं **द्रोग्धृ** वि०द्रोह करनारुं;हानि करनारुं द्रोण पुं० मुशळधार वरसता मेघनो एक प्रकार (२) द्रोणाचार्य (३) पु०, न०एक माप (३२ शेर के ६४ शेरनुं) (४) न० लाकडानुं एक पात्र द्रोणदुषा स्त्री० एक 'द्रोण' जेटलुं (३२ के ६४ शेर) दूध आपती गाय **द्रोणमुख** न० चारसो गामो वच्चेनुं भारे वृष्टि मुरूय शहेर वोणवृष्टि स्त्री० (द्रोणमेघनी) अतिशय द्वोणि (–णो)स्त्री० लाकडानुं अंडाकार पात्र (२) पर्वतो वच्चेनी खीण ब्रोह पुं० द्वेष ; अनिष्ट करवा इच्छवुं ते (२) विश्वासभात; दगो (३) बंड; बळवो (४) अपराध; गुनो द्वोहिन् वि०द्रोह करनारु; इच्छनार् (२) बंड करनार्

ह्रौणायन, ब्रोजायनि, द्रौणि पुं द्रोणाचार्यनो पुत्र - अश्वत्थामा **डोपदी** स्त्री० द्रुपद राजानी पुत्री --पांडवोनी पत्नी [राजानो पुत्र द्रौपदेय पुं० द्रौपदीनो पुत्र (२) द्रुपद इय वि० बेवडुं; बमणुं(२) बे प्रकारनुं (३)न० युग्म; जोड्रं हयबादिन् वि॰ अप्रमाणिक (२) हैतवादी हयस वि॰ '-सुधी पहोंचतु'; '-जेटलु कंचु के ऊंडु ' (उदा० 'नितंबद्वयस') **इंड** पुं० एक समास (व्या०) (२) न ॰ जोडुं; जोडकुं (३) बें जण बच्चेनुं युद्ध (४) एकांत - गुप्त स्थळ **इंडचर** पुं० चऋवाक पक्षी इंडेषु:ख न० शीत-उष्ण, सुख-दु:ख वगेरे द्वंद्वोथी उत्पन्न थतुं दु:ख **दंहयुद**ा० वे जण वच्चेनु युद्ध द्वंद्वशस् अ० बब्बेना जोडकामां द्वादशात्मन् यु० सूर्य द्वापर प्०,न० चारमानो त्रीजो युग (२) वे टपकांवाळी पासानी बाज् **द्वार्**स्त्री० द्वार; दश्वाजो; बारणुं **द्वार** न० बारणुं(२)साधन; उपायः **द्वारका** स्त्री० द्वारिका नगरी **द्वारप, द्वारपाल** पुं० दरवान **द्वारपिघान** पुं० बारणानो आगळो (२) समाप्ति; अंत द्वारवती, द्वारावती स्त्री० द्वारिका द्वारिक पुं ० द्वारपाळ द्वारिका स्त्री० द्वारका द्वारिन् पुं० द्वारपाळ [वापरव् **इारीकृ ८** उ० माध्यम के साधन तरीके द्वाःस्थ, द्वाःस्थित पुं० द्वारपाळ द्विवि (द्विव्वव्) बे; बन्ने (पहेली विभ० 'द्वौ' पु०, 'द्वे' स्त्री०, 'द्वे' न०) क्विक वि० बे संख्यावाळुं (२) बीजुं (३) बीजी वार बनतुं (४) सेंकडे के टका जेटलुं(५)पुं० कागडो(६)चक्रवाक

हिंगु वि० वे गायना बदलामां मळेलुं (२)पुं० एक समास (व्या०) द्विगुण, द्विगुणित वि० बेवडुं; बमण् हिज पुं० ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैदय – ए त्रण वर्णोमांनो दरेक (उपनयन-संस्कार रूप बीजो जन्म पामेलो) (२) ब्राह्मण (३) पक्षी; कोई पण अंडज प्राणी (४) दांत (५)तारो द्विजपति, द्विजराज पु० चंद्र द्विजाति पुं० जुओ 'द्विज' द्विजिह्व पुं० साप (२) चाडियो; चुगलीखोर गरुडपक्षी द्विजेश, द्विजेंद्र पुं० चंद्र(२)कपूर(३) **द्वितय** वि० बेने; बेउ (२) न० जोडकुं हितीय वि० बीजुं (२)पुं० पुत्र ; दीकरो (कुटुंबमां पिता पछी बीजुं स्थान भोगवतो) (३) सायी; सोबती (समासने छेडे) (४)न० अर्घो भाग **द्धितीयम्** अ० बीजी वार; फरीथी **द्वितीयवत्** वि० सोबती – साथी साथेनुं द्वितीया स्त्री ० बीज (तिथि) (२)पत्नी ; सहचरी (३) बीजी विभक्ति (ब्या०) द्वितीयाश्रम पुं० गृहस्थाश्रम ब्रिज वि० (ब०व०) बेके श्रण द्वित्व न० युगल; जोडुं(२)द्वैत; बेपणुं (३)बेवडायेलो प्रयोग (व्या०) द्विष वि० वे प्रकारनुं; वे रीतनुं द्विषा अ० बेप्रकारे; बेरीते **द्विप** पुं० हाथी द्विपद् वि० बे पगवाळुं द्विपद पुं० (बे पगवाळो) माणस **द्विपाद्** वि० बे पगवाळुं द्विपाद पुं॰ (देपगवाळो)माणस(२) पक्षी (३) देव बांधेला वाळ द्विफालबद्ध पुं० सेथी पाडोने बे भागमां **द्विरद** पुं० हाथी शरभ प्राणी द्विरदाराति, द्विरदांतक पुं० सिंह(२) **द्विरुक्ति** स्त्री० पुनरुक्तित **द्विरेफ** पुं० भमरो (वे 'र्'-कार वाळो')

हिलय पुं० (गीत अने वाद्य पेठे) बे वस्तुओन् साम्य(२)बेवडो लय(?) द्विबचन न० बेने माटेनुं बचन (व्या०) द्विवर्ग पुं० बेनुं जोडकुं (प्रकृति-पृरुष; काम-ऋोध इ०) द्विविध वि० बे प्रकारनुं द्विशस् अ० बब्बे; जोडकामां द्विष् २ उ० द्वेष करवो ; शत्रुता राखवी द्विष् वि० द्वेषयुक्त; शत्रुतावाळुं (२) पुं० शत्रु; वेरी **द्विष, द्विषत्** पुं० शश्रु **द्विषंतप** वि० शत्रुने पीडनारुं हिष्ट ('द्विष्'नं भू० कु०) धिवकारायेलुं(२)वेरी; विरोधी द्विस् अ०वे वार ह्रीप पुं०, न० बेट (२) आश्रय-स्थान (३) पृथ्वीनो खंड (मेहनी आसपास तेवा चार, सात, नव के तेर गणाय छे) **द्वीपवती** स्त्री० पृथ्वी (२) नदी द्वीपिन् पुं० वाघ (२) चित्तो द्वेषा अ० वे प्रकारे; बे वार **हेभाकिया** स्त्री० बेभाग करवा ते हेष पुं० अणगमो ; धिक्कार (२) शत्रुता **द्वेषण** वि०द्वेष करनारुं (२) पुं० शत्रु (३) न० शत्रुता; वेर हेषिन्, हेष्ट्र पुं० शत्रु; दुश्मन द्वेष्य पु०द्वेष करवा योग्य (२) अप्रियः प्रतिकूळ (३) पुं•शात्रु

द्वेत न० बेपणु; भिन्नता **द्वेतवाद** पुं० प्रकृति-पुरुष, जीवात्मा-परमात्मा. ब्रह्म-जगत --ए जुदां भिन्न छे एम माननारो वाद **द्वेतीयोक** वि० बीजुं द्वैष वि० बे प्रकारनुं (२) बेवडुं;बमणुं (३) न० बे होबापणुं(४) संशय; अनिश्चितता (५) विरोध; भेद **द्वैधीभाय** पुं० बे प्रकारे थवुं – होवुं ते (२) द्वित्व; भेदभाव (३) संशय; अनिश्चतता (४) वेर (५) प्रतिवाद (६) अंदरथी एक अने बहारथी भिन्न एवो भेदभाव द्वेषीभू १ प० वे भाग पडवा (२) अनिश्चितता थवी **द्वेपायन** पुं० वेदव्यास (द्वीपमां जन्मेला) द्वैष्य वि॰ द्वीप संबंधी; द्वीपमां रहेतुं **हैमातुर** पुं० (बे माताओवाळुं) गणपति (२) जरासंध **द्वैमात्**क वि० नदीनातेम ज वृष्टिना एम बे जळथी पाक थतो होय तेवो देश द्वैरथ पुं० प्रतियोद्धो; शत्रु(२)न० बे रथीओनुं युद्ध न० बे राजाओं वच्चे द्वेराज्य वहेंचायेलो देश (२) सरहद द्वचर्य वि० वे अर्थवाळुं (२) वे हेतुओवाळुं **द्वधवर** वि॰ ओछामां ओछुं बे

ध

वक् अ० (गुस्सानो उद्गार)
धिगिति अ० एक क्षणमां; एकदम
धत्र पुं० धंतूरो
धन न० द्रव्य; मिलकत; खजानो(२)
अत्यंत मूल्यवान के प्रियं वस्तु
धनक पुं० लोभ; तृष्णा
धनक्षय पुं० धननो नाश

षनजात न० कुल मिलकत; समग्र कीमती वस्तुओ धनद पुं० कुबर धनदानुज पुं० रावण (कुबेरनो नानो भाई) धनघानि स्त्री० खजानो; तिजोरी धनपति पुं० कुबेर

द्वचाहिक वि०दर वेदिवसे आदतो

बनप्रयोग पुं० व्याजे पैसा भीरवानुं काम **धनहर** पुं० वारस(२)चोर **वनहार्य** वि० धनथी वश कराय तेवुं **धनंजय** पुं० अर्जुन (२)अग्नि (३)विष्णु वनाढच वि० धनवान; श्रीमंत धनाधिष, धनाधिपति, धनाध्यक्ष पुं० कुबेर (२) खजानची धनाचित वि० कीमती बक्षिसोधा खुश **धनिक** पुं० धनवान; श्रीमंत धनिन् वि० श्रीमंत; धनवाळु धनु पुं० धनुष्य वनुर्युण पुं० धनुष्यनी दोरी **धनुर्प्रह, धनुर्प्राह** पुं० बाणावळी **बनुष्या** स्त्री० धनुष्यनी पणछ वनुर्धर, धनुभूत् पुं वाणावळी **धनुविद्या** स्त्री० बाणविद्या **धनुर्वेद** पुं• धनुविद्या (यजुर्वेदनो उपवेद) **धनुष्कांड** न० धनुष्य अने बाण **धनुष्यंड** न० धनुष्यनो एक हिस्सो **घनुष्पाणि** वि० हाथमां घनुष्यवाळुं **धनुष्मत्** पुं० बाणावळी **धनुस्** न० धनुष्य (बहुक्रीहि समासमां 'धन्वन्' थई जाय छे ; उदा० 'अधिज्य-धन्वन्') (२) चार हाथनुं माप **ानुःकांड** न० धनुष्य अने बाण मनुःखंड न० धनुष्यनो खंड - भाग अनूस्त्री० धनुष्य **र्गिषन्** वि० घननी इच्छा राखनारुं (२) पुं० पैसा मागतो लेणदार श्**नोब्मन् पुं० ध**ननी गरमी~हूंफ (२) घननी तीव्र इच्छा **शन्य** वि० घन आपनारुं (२) श्रीमंत (३) सुखी; सद्भागी (४) उत्कृष्ट; सद्गुणी (५) आरोग्यप्रद; पथ्य(६) पुं० सुखी के सद्भागी मनुष्य **शन्यवाद** पुं० आभार दर्शाववो ते (२) शाबाशी आपवी ते अन्वन् पुं०, न० जळरहित प्रदेश; रण (२) धनुष्य (३) आकाश

वन्वंतरि पुं० देवोनो वैद्य (समुद्रमंधन वस्तते नीकळेलां चौद रत्नोमानु एक) **धन्विन् पुं**० बाणावळी **घम् १** प० फूंकवुं **घमधमायते** (भभूकवुं; सळगवुं) घमनि (-नी) स्त्री० भूंगळी; फूंकणी (२) रक्तवाहिनी; नस धम्मल, धम्मिल, धम्मिल्ल पुं० पुष्प वगेरेषी गूंथेलो अंबोडो बय वि० (बहुधा समासने छेडे) धाव-नारुं; पीनारुं (उदा० 'स्तनंधय') घर वि० (बहुधा समासने छेडे) पकड-नारुं; लई जनारुं; धारण करनारुं (उदा० 'गदाधर') (२) पुं० पर्वत; पर्वंत उपरनो किल्लो **धरण** वि० घारण करनारुं (२) न० धारण करवुं ते (३)आश्रय; आधार **घरणि** स्त्री० पृथ्वी (२) भूमि बरणिधर पुं० शेषनाग (२) पर्वत **धरणिधरसुता** स्त्री० पार्वेती **घरणिधृत्** पुं० पर्वत (२) शेषनाग **घरणिपुत्र** पुं० मंगळ ग्रह(२)नरकासुर **घरणिभृत्** पुं० राजा (२) पर्वत (३) विष्णु (४) शेषनाग घरणिसुत पुं० जुओ 'धरणिपुत्र' **धरणी** स्त्री० जुओ 'धरणि' **घरा** स्त्री० पृथ्वी घराधर पुं० पर्वत (२) शेषनाग **घराधरेंद्र** पुं० हिमालय **घराधिप** पुं० राजा घराभृत् पुं० पर्वत धरित्रो स्त्री० पृथ्वी (२) जमीन **धर्म** पुं० कर्तव्य; आचार(२)कोई पण वर्ग के पंथनो परंपरागत आचार (३) शास्त्रोक्त विधान – आचार (४) चार पुरुषार्थोमांनो एक; पुण्य कर्म के तेन् उपार्जन (५) न्याय; प्रमाणिकता; नीति (६) निष्पक्षता (७) स्वभाव;

खासियत ; विशिष्ट गुणधर्म (८) युधि-ष्ठिर (९) यम (१०) कुशळता; आचरवा इच्छतुं धर्मकाम पुं० धर्मेपरायण; धर्म ज धर्मक्षेत्र न० भारतवर्ष (२) कुरुक्षेत्र धर्मचक पुं० धर्मनुं चक्र – साम्राज्य **धर्मचर्या** स्त्री० धर्माचरण **धर्मचारिणी** स्त्री० पत्नी(२)सद्गुणी परायण **धर्मचारिन्** वि० धर्म आचरनारुं; धर्म-**धर्मज** पुं० युधिष्ठिर; धर्मराजानो पुत्र (२) कायदेसर जन्मेलो पुत्र **धर्मज** वि० धर्म जाणनारुं (२) शास्त्र अथवा कायदो जाणनारुं **धर्मदाराः** पुंबबब्दं कायदेसर परणेली **धर्मद्रुह**्वि० धर्मतुं उल्लंघन करनारु धर्मध्वज, धर्मध्वजिन् पुं० धर्मनो ढोंग करनार; पाखंडी [मालिक **धर्मनाथ** पुं० कायदेसर संरक्षक के **घर्मनिष्ठ** वि० धर्मपरायण **धर्मपत्नी** स्त्री० शास्त्रविधि प्रमाणे परणेली स्त्री धर्मपथ पुं धर्मनो मार्ग **धर्मपर** वि० धर्मपरायण वर्मपाल पुं० दंड; शिक्षा (ला०) **धर्मपुत्र** पुं० कायदेसरपुत्र (२)धार्मिक कियाओ करवा माटे स्वीकारेली पुत्र विर्तनारुं (३) युधिष्ठिर घर्मप्रधान जि० धर्मने मुख्य मानीने वर्मप्रवचन न० धर्मशास्त्र(२)कायदो समजाववो ते धर्मप्रेक्ष्य वि० धर्माचरणी धर्मबाह्य पुं० धर्मधी विरुद्ध धर्मभगिनी स्त्री० कायदेसर बहेन (२) गुरुकन्या (३)मानी लीधेली बहेन (४) समान धर्म आचरती होवाथी बहेन धर्मभागिनी स्त्री० सद्गुणी परनी बर्मभाणक पुं० धर्मग्रंथोनी कथा कहेनार

धर्मभृत् पुं० राजा (२) धर्मपरायण, सदाचरणी माणस **धर्ममहामात्र** पुं० धार्मिक बाबतीनुं निरीक्षण करनार अधिकारी **धर्ममु**ल न० वेद **धर्मयुग न०** कृतयुग; सत्ययुग धर्मरति वि० धर्माचरणमा प्रीतिवाळ् **धर्मराज्**षु० यम **धर्मराज** वि० धर्मशील (२) पुं**० य**म (३) युंधिष्ठिर (४) राजा (५) जिन **धर्मराजन्** पुं० युधिष्ठिर **धर्मलक्षण** न० वेद **वर्मलोप** पुं० अधर्म (२) कर्तव्यनुं उल्लंघन धर्मवाद पुं० धर्म के न्याय अगे वादविवाद धर्मविष्लव पुं० धर्मतू उल्लंघन धर्मबृद्ध वि० धर्मनी बाबतमां मोटुं धर्मज्ञाला स्त्री० धर्मशाळा (२)न्याय-मंदिर; कचेरी धर्मशासन, धर्मशास्त्र न० कायदानो ग्रंथ वर्मसेतु पुं० धर्मके न्यायनो आधार (२) शिव वर्माक्षराणि न० व० व० धर्मनां सूत्रो **धर्माचार्य** पुं० धर्मेगुरु **धर्मात्मन्** वि० न्यायोः; पुण्यशाळीः **धर्माधिकरण** न० न्यायमंदिर (२) न्याय चुकववो ते (३)पु० न्यायाधीश धर्माधिकार प्० धर्मअंगेनी देखरेख; धार्मिक कार्योनी देखरेख(२)न्याय चूकववो ते (३) न्यायाधीशनो होहो धर्माधिकारिन् पुं० न्यायाधीश **धर्माधिष्ठान** न० न्यायनी अदालत **धर्माध्यक्ष** पुं० न्यायाघी**श** (२) विष्णु **धर्मापेत** वि० धर्मविहीन; अधर्मी **धर्मारण्य** न० तपोवन धर्माश्रय, धर्माश्रित वि० धर्मी; पृष्य-**धर्मासन** न० न्यायासन र्षामन् वि० धार्मिक; धर्मने अनुसरतुं (२) सद्गुणी (३) -ना गुणधर्मवाळुं (समासने अंते)

धर्मिष्ठ वि० अत्यंत धर्मनिष्ठ **धर्मीपुत्र** पुं० नट वर्मेंद्र पुं० यमराज धर्मोत्तर वि॰ न्यायी; निष्पक्ष (२) सद्गुणी; धर्मपरायण धर्मोपचायिन् वि० धर्मपरायणः; धर्मिष्ठ धर्म्य वि॰ कायदेसर (२) धार्मिक; शास्त्रोक्त (३) अमुक गुणधर्मवाळु वर्ष पुं॰ गर्व; उद्धताई; धृष्टता (२) अधीरता; असहिष्णुता(३)बळात्कार (४) ईजा; नुकसान वर्षण न० उद्धतता; अभिमान (२) अपमान; अनादर (३) हुमलो; बळात्कार (४)पराभव **र्वापत** वि॰ बळात्कार करायेलुं(२) पराभव पमाडेलुं(३)अनादर करा-येलुं, अपमानित **धव** पु० हालवु-ध्रुप्तवुं-कंपवुं ते(२) पुरुष (३)पति (४)मालिक (५)शठ; ठग (६)एक जातनुं वृक्ष-धावडो **धवल** वि॰ धोळुं (२) सुंदर (३) निर्मळ (४) पुं० श्वेत रंग (५) उत्तम सांढ **घवलपक्ष पुं० शुक्लपक्ष (२) हंस** धवला स्त्री० श्वेत मुखवाळी स्त्री (२) घोळी गाय (३) बगली **धवि**त वि॰ धोळुं करेलुं (२) धोळेलुं षवलिमन् पुं० धोळापणुं; धोळो रंग (२) फीकाश धा ३ उ० मूकवुं; स्थापवुं; उपर मूकवुं (२) -तरफ एकाग्र करवुं - वाळवुं (मन -विचार) (३) आपी देवु; बक्षिस करवु (४)पकडवुं; लेवुं (५) धारण करवुं; समाववुं (६)पहेरवुं (७) दशविवुं; देखाव घारण करवो (८) टेकववुं; ऊंचकव्ं (९) उत्पन्न करवुं भातु पुं० मूळ घटक; अगत्यनी अंश (२) मूळ तत्त्व (पृथ्वी-पाणी-तेज-वायु -आकाश) (३) शरीरमाना अगत्यना

घटकोमांनो दरेक (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मञ्जा अने शुक्र)(४) वात-पित्त-कफ ए त्रणमांथी दरेक (५) खनिज धातुओमांनी दरेक (६) क्रियापदनुं मूळ रूप (७)इंद्रिय घातुमत् वि० घातुओथी समृद्ध थातृ पुं • उत्पादक; कर्ता (२)संरक्षक; पालक (३) ब्रह्मा (४) विष्णु (५) सप्तिषि (६) विधाता ; नसीब धात्री स्त्री० दाई; उपमाता (२)माता (३)पृष्वी (४)आमळी (वृक्ष) धात्रेयिका, धात्रेयी स्त्री० धाव-भातानी पुत्री -- बहेन (२) दाई;धाव धान न०,धानी स्त्री० ठेकाणुं; स्थान (उदा० 'राजधानी') **धानुष्क** पुं० बाणावळी **धान्य** न० अनाज **धामन्** न० घर; निवासस्थान (२) किरण; प्रकाश (३) प्रताप; बळ **धामवत्** वि० बळवानः; शक्तिमान षार वि० धारण करना हं (२) वहेतुं **धारक, धारण** वि० धारण करनारुं **धारणा** स्त्री० घारण करवुंते (२) यादशक्ति (३) मनने एकाग्र राखवुं ते (४) श्वास धारण करी राखवो ते (५) धैर्यः; दृढता (६) निश्चित सिद्धांत (७) खातरी (८) समजण घारियत्री स्त्री० पृथ्वी; धरित्री भारा स्त्री० धार; प्रवाह(२)जोरथी वरसाद पडवो ते (३)पंक्ति; परंपरा (४) घोडानी गति (५) धार (चप्पु वगेरेनी)(६)पर्वतनी ढळती बाजु (७) रथनुं पैंडुं अथवा तेनो परिघ **धारागृह न० फुवा**राओथी ऊडता पाणी-वाळुं स्नानागृह भाराधर पुं० मेध **धाराधिरूढ** वि० पराकाष्ठाए पहोंचेलुं **घारानिपात, घारापात पुं० मु**शळधार वरसाद(२)पाणीनी धार

षारायंत्र न० फुवारी (२) झारी **घारावर्ष** पुं०, न० मुशळधार के एकधारो पडतो वरसाद थाराबाहिन् वि० सतत चालु रहेतुं **धारासंपात** पुं०, न० जुओ 'धारावर्षे' धारासार पुं० मुशळधार वरसाद **भारांकुर** पुं० वरसादनुं फोर्ह के करो **भारिणी** स्त्री० पृथ्वी राखनारु **घारिन्** वि० धारण करनारुं(२)याद षारोष्ण वि० ताजुंदोहेलुं--गरम **धार्तराष्ट्र** पुं० धृतराष्ट्रनो पुत्र (२) काळी चांच अने काळा पगवाळु हंस जेवुं एक पक्षी **धार्मिक** वि० धर्माचरण करनार्ह(२) न्यायी (३)पुं ० न्यायाधीश (४)धमधि माणस (५) मदारी; ऐंद्रजालिक **भार्य** वि० धारण करवायोग्य (२) सहन करवा योग्य(३)पहेरवा योग्य (४) मनमां राखवा योग्य धाष्ट्यं न० धृष्टता; उद्धताई; हिंभत बाव् १प० दोडवुं; आगळ वधवुं(२) --नीतरफ घसवुं;हुमलोकरवो(३) नासी जबुं (४) १ उ० धोवुं; साफ करवुं (५) मांजवुं; ऊजळुं करवुं धावक वि० दोडी जनारुं (२) झडपी (३) घोनारुं (४) पुं० धोबी षावन न० दोडवुंते (२) वहेबुंते (३) आक्रमण करवुं ते (४) धोवुं ते; स्वच्छ करवुं ते (५) माजवुं ते भावत्य न० घोळाश (२) फीकाश **धाबित** ('धाब्'नुं মৃ৹ কূ০) বি৹ भोयेलुं (२) -नी तरफ दोडतुं (३) जलदी जत् **धावितृ पुं**० देगे दोडनार िष ५.प० खुश करवुं; संतुष्ट करवुं (२)६प० पासे होवुं; भारणकरवुं वि पुं० (समासने छेडे) भंडार; निधि (उदा० 'जलिष')

षिक् अ० 'धिक्कार छे' -ए बतावतो उद्गार **धिक्कार** पुं० तिरस्कार; ठपको धिक्कु ८ उ० धिक्कारतुं; ठपको आपवो **धिक्कृत** वि० धिक्कारायेलु; तिरस्कृत (२)न० धिक्कार; तिरस्कार धिक्किया स्त्री० तिरस्कार; ठपको **घिग्वाद** पुं० ठपको; निंदा **धिप्सु** वि० छेतरवा इच्छतुं; छेतरे तेवुं **धिषण** न० निवासस्थान धिषणा स्त्री० बुद्धि (२) वाणी (३) स्तुति (४) पृथ्वी **बिष्ठित** वि० बराबर गोठवायेलुं – स्थपायेलुं (२)दृढ़ करेलुं; स्थिर करेलुं (३) बहादुरीथी सामे थयेलुं **बिडण्य** पुं० यज्ञना अग्निनुंस्थान (२) न० स्थान; निवासस्थान(३)नक्षत्र **धी ४** आ० अनादर करवो (२) आराधवं(३)धारण करवें; समाववें (४) सिद्ध करवुं [कल्पना भी स्त्री० बुद्धि; मन (२)विचार; धीमत् वि० बुद्धिमानः; विद्वान **घीर** वि॰ धैर्येवाळुं; निर्भय(२)दृढ़; स्थिर (३) दृढ निश्चमी (४) शांत; स्वस्थ (५)गंभीर (६)बुद्धिमान (७) मंद; सीम्य धीरचेतस् वि० दृढ निश्चयी **धीरता** स्त्री०, **धीरत्व** न० धैर्य; हिमत (२)गंभीरता (३)पांडित्य ; डहापण **भीरम् अ०** दृढताथी; स्वस्यताथी **घोरोदात्त** पुं० (धीर अने उदात) नायकनो एक प्रकार (नाटच०) **घोरोद्धत पुं**० (धीर पण उद्धत) नायकनो एक प्रकार (नाटघ०) घोषर पुं॰ माछीमार भीवरी स्त्री० माछण षु ५ उ० जुओ 'बू' भूक् १ आ० सळगाववु

प्त ('घु' नुं मू० क्व०) वि० हलावेलुं; कंपावेलुं (२) तजेलुं मुति स्त्री० फफडाववुं ते **युनि (-नी)** स्त्री० नदी **बुर्** स्त्री० (प्रथमा ए०व० 'घू:') धूंसरी; धुरा (२) घोरियानो आगळनो भाग (ज्यां जूंसरं बंघाय छे) (३) घरीने बे छेडे (पैडा आगळ) स्रोसाती स्रीली (४) धोरियो ; ऊघ (५) बोजो ; भार ; जवाबदारी (ला०) (६) अग्रस्थान; उच्चस्थान (छा०) (७)गंगानदी षुर पु॰ (समासने छेडे) जूराह ; घोरियो (२) भार; बोजो (३) धरीना छेडा आगळनो खीलो **मृरंघर** वि० धुराधारण करनाहं(२) श्रेष्ठ; मुख्य; आगेवान षुरा स्त्री० भार; बोजो षुरीण, षुरीय, षुर्य वि० धूंसरी वहन करनार्ष (२) धूंसरी नाखवा योग्य (३)जवाबदारीवाळुं(४)पुं० भार वहन करनार पशु (५) जवाबदारी वहन करनारो माणसः; आगेवान भू ६ प० [धुवति], १ उ० [धवति–ते], ५ उ० [धूनोति, धूनुते; धुनोति, बुनुते], ९ उ० [धुनाति, धुनीते], १० उ [धूनयति-ते] हालवु; कंपवु; हलाववुं; कंपाववुं (२) हलावीने काढी नाखवु; फेंकी देवुं (३) फूंकीने सळगा-बवुं - प्रदीप्त करवुं भूत ('षू'नुं भू० कृ०) वि० हलावेलुं; कंपावेलुं (२) काढी नाखेलुं के फेंकी दीघेलुं (३)प्रदीप्त करायेलुं (फूंकीने) **मृतकल्मष, भूतपाप** वि० पाप खंखेरी नास्यां होय तेवुं; पापरहित षूनन न० हलाववुं ते भूष् १ ५० [धूपायति] तपवुं; तपाववुं (२) १० उ० [बूपयति--ते] घूप करवी **मृष पुं॰** सुगंधी द्रव्य (२)तेने बाळवाथी नीकळती सुगंघी घूणी

यूपन न० धूप देवो ते (२) धूप भूपाणित ('भूप्'नुं भू०कृ०) वि० भूप दीवेखुं(२)श्रमितः पीडित मूपिक पुं० भूप बनावनारी व्यम पुंब्धुमाडी (२) झाकळ वूमकेतन, बूमकेतु पुं० अग्नि (२) पूंछडियो तीरो(३) बरतो तारो **भूमग्रह** पुं० राहु भूमज पुं० वादळूं **षूमप** पुं० धुमाडो पीने तपश्चर्या करनार **षूमपय** पुं० कर्ममार्ग; यज्ञमार्ग(२) धुमाडो बहार नीकळवानो मार्ग-जाळियुं वगेरे षूमयोनि पुं० मेघ; वादळ भूमायित वि० धुमाडाथी ढांकी काढेलुं ─भरी काढेलुं; अंघारियुं करी दीधेलुं ष्मित वि० धुमाडाथी काळु थयेलुं **षूमोव्गार** पुं० धुमाडो नीकळदो ते धूम्याः स्त्री० गाढी धूणी ; धूणीनुं वादळ **भूऋ** वि०घुमाडाना रंगमुं (२)न० पाप षूर्यत वि० घोरिया उपर ऊभेलुं(२) मुख्य; आगेदान **धूर्जांद** पुं०शंकर **षूर्तं** वि॰ ठगारुं;धुतारुं(२)विलासी; स्वेच्छाचारी(३)पुं० सठ; जुगारी (४) ठगारो प्रेमी **धूर्तक** वि० शियाळ (२) शठ **धूर्वी** स्त्री० गाडीनी घोरियो ধুলি (–লী) पु०, स्त्री० धूळ; रज (२)भूको षुसर वि॰ धूळिया के घोळा-पीळा रंगनुं षु ६ आ० [भ्रियते] जीवता होवु जीवता रहेवुं(२)टकी रहेवुं; चाल रहेवुं(३)निश्चय करवो (४) १ ५० [धरति], १०उ० [धारवति-ते] कबजामां 'राखबुं; मालिक (५) पहेरवुं (६) रूप भारण करवुँ (७) अंकुश राखवो (८)स्थिर करव् (९)-नुं देवं होवं; -नुं उधार होवं

थृक् वि० (समासने छेडे)धारण करनार्;; वहन करनारु **धृत्** वि० (समासने छेडे) धारण करनारुं **भृ**त ('घृ'नुंभू० कृ०)वि० पकडेलुं; लीधेलुं; धारण करेलुं (२) कबजामां राखेलु (३) साचवी राखेलुं (४) पहेरेलुं (५) मूकेलुं (६) आचरेलुं (७) निश्चयवाळु **सृतदंड** वि०सजा करनार्ह(२)जेने सजा करवामां आवी होय तेवुं धृतमानस वि० निश्चयवाळु; निश्चयी **भृतराजन्** वि० सारो राजा राज्य करतो होय तेवुं(देश) **धृतात्मन्** वि० दृढ़ निश्चयी; शांत; स्वस्य भृति स्त्री० पकडवुते; छेवुते (२) कबजामां होवुं ते (३) पोषवुं ते ; टेकवबुं ते(४)दृढ़ता; स्थिरता(५)धीरज; धैर्य (६) तृप्ति; संतोष; आनंद **चृतिमत्** वि० दृढ; स्थिर(२)तृप्त; सुखी; संतुष्ट **धृतिमुख्** वि० धैर्य हरी लेनारुं ध्रतेकवेणि वि० एक जुडामां ज वाळ राख्या होय तेवुं (शोक-चिह्न तरीके) भृष् १ प०, १० उ० ईजा करवी (२) अपमान करवुं (३) आक्रमण करवुं; हरावव् (४) भ्रष्ट करवुं (५) **५ ५**० हिंमत करवी; धृष्टता करवी (६) खातरी होवी (७) अधीरुं थवुं (८) अभिमान करवुं (९) सामनो करवो; पडकार करवो **भृष्ट** ('धृष्'नुं भू० कृ०) वि० हिंमत-वान; बेशरम; उद्धत (२) निष्ठुर (३) पुं० व्यभिचारी प्रेमी के पति **खृष्टद्युम्न** पुं ० द्रुपद राजानो पुत्र ; द्रौपदी-[निर्लज्ज ; उद्धत नो भाई **भृष्णु** वि० धैर्येवान; बहादुर(२) र्घे १ प० धाववुं; चूसवुं (२) चुबवुं धेनुस्त्री० गाय; दूघ देती गाय (२) पृथ्वी (३) ते ते वर्गना नाम साथे ते

भुप वर्गनी मादा एवो अर्थ बतावे (उदा० 'वडवधेनु') (४) (समासने छेडे) हरू-कापणुं -- तुच्छपणुं बतावे (उदा० 'खड्गघेनु') **घेग** वि० पकडवा— लेवा योग्य (२) धवराववा - पोषवा योग्य (३)पीवा-धाववा योग्य (४) आचरवा योग्य भैर्य न० धीरज;दृढता; स्थिरता (२) धृष्टता; हिमत **धैर्यवृत्ति** स्त्री० दृहता; धीरज **घोरण** न० वाहन (घोडो, हाथी ६०) **धौत** ('धाव्'नु भू०क्रु०) वि० धोवायेलुं; धोयलुं(२)माजेलुं; चकचिकत करेलुं (३) प्रकाशित [खूणावाळु **घौतापांग वि० उज्ज्वळ धयेला आंखना** बौति (-ती) अ० हठयोगनी एक किया **धौरेय** पुं०भारवाहक पशु (२) घोडो (३) आगेवान; अग्रणी घ्मा १ प० [धमिति] श्वास बहार काढवो (२) फूंकवुं; धमवुं (३) फूंकीने अवाज करवो -- वगाउवु (४) फूंकीने अग्नि प्रदीप्त करवो ध्मात ('ध्मा'नु भू०कृ०) वि० फूंकेलुं; फूंकीने प्रज्वलित करेलुं (२) फुलाई गयेलुं; गविष्ठ [ध्यान धरेलुं ध्यात ('ध्यें'नुं भू०कृ०) वि० चितवेलुं; घ्यान न० चितन(२) एकाग्रता;लक्ष (३) समाधि ध्यानगम्य वि० घ्यानथी ज जाणी शकाय ध्यानस्थ वि० ध्यानमां मग्न ध्यानिक वि० ध्यानथी मळी शकतुं **ध्याम** वि० मेलुं; गंदुं ध्येय वि० व्यान घरवा योग्य; चितववा व्या १ प० चितववुं (२) ध्यान करवुं 😝 वि० (समासने छेडे) धारण करनारुं (उदा० 'महीध्र') ध्रुव वि० स्थिर; निश्चळ (२) निश्चित; नक्की (३) शास्त्रत; हंमेश रहेना हं

(४) पुं० ध्रुवनो तारो (५) ध्रुवपद (६) उत्तानपाद राजानो भक्त पुत्र धुवम् अ० चोनकसः; नक्की ध्रौव्य न० स्थिरता; ध्रुवता (२) **नि**श्चितता ष्यंस् १ आ० नीचे पडवुं (२) पडीने टुकडा थवा; चूर्ण – भूको थेवुं(३) नाश थवो (४) निराश थवुं (५) ढंकाई जवुं; ग्रस्त थवुं [(३)मरण प्यंस पुरु पडीने भागी जबुं ते (२) नाश ध्वंसकारिन् वि० नाश करनाहं (२) बळात्कार – व्यभिचार करनारुं ध्यांसन वि० नाश करनारुं (२) न० ध्वंस; नाश (३) पडी जबुंते (४) चाल्या जबुंते | पामनार्ह **प्वंसिन्** वि० नाश करनारुं (२) नाश **भ्यज** पुँ० घजा; वावटो; पताका (२) ध्वजस्तंभ (३) दावटा उपरनु निशान (उदा० 'मकरघ्वज') (४) (समासने छेडे)ध्वजारूप – शोभारूप एवी माणस (उदा० 'कुलध्वज') **ध्वजपट** पुं०, न० जुओ 'ध्वजांशुक' ध्वजयब्दि पुं० ध्वजनी दंड ध्वजारोह पुं० व्वजा उपरतो एक विडायको ते शणगार **प्वजारोहण** न० ध्वज ऊंचो करवो-**घ्यजांशुक न० धजा;** वावटो

ध्वजिक वि०ढोंगी; दंभी(धर्मअंगे) ध्वजिन् वि० घ्वज घारण करनारुं (२)निशानीवाळुं(३)पुं० ध्वजधारी (४)कलाल (५) रथ (६) ढोंगी ; दंभी थ्यजिनी स्त्री० सेना; लश्कर व्यजीकृ ८ उ० घजा रोपवी (२) बहाना तरीके वापरवुं ष्ट्रजोच्छ्य पु० ढोंग; दंभ ध्वन् १,१० प० अवाज करवो; उच्चार करवो (२) गणगणवुं; गुंजारव करवो (३) गर्जवुं (४) पडघो पडवो ध्वनन न० अवाज करवी ते (२) सूचववृं ते (३) व्यंजना (अलंकार०) **ध्वनि** पुं० अवाज (२) गर्जना (३) व्यंग्यार्थ (अलंकार०) ध्वनित ('ध्वन्'नुंभू०कृ०) वि० घ्वनिवाळुं (२) सूचित;गर्भित (३) न० ध्वनि (४) गर्जना ध्वस्त ('ध्वंस्'नुंभू०कृ०) वि०नीचे पडेलुं (२) नाश पामेलुं; खोवायेलुं (३) छवायेलुं (घूळ इ० थी) **ध्वस्ति** स्त्री० नाश घ्यान पुं० ध्वनि(२)गुंजारव ध्वांक्ष पुं० कागडो (२) (समासने छेडे) धिक्कार – तुच्छकार बताववा वपराय छे (उदा० 'तीर्थध्वांक्ष') (३) बगलो ष्यांत न० अंघकार

न

न अ० न; ना; नहि
नकुल पुं० नोळियो (२)पांच पांडवोमानो चोथो (माद्रीनो पुत्र)
नक्त न० रात्री
नक्तचारिन् पुं० घुवड (२) बिलाडी
(३) चोर (४) पिशाच
नक्तम् अ० राते; रात्रि दरम्यान
नक्तंचर पुं० जुओ 'नक्तचारिन्'

नक्तंचर्या स्त्री० राते भटकवुं ते
नक्तंतन विर्शाते थतुं
नक्तंदिनम्, नक्तंदिश्म् अ० रातदिवसः;
दिवसे अने राते
नक्ष पुं० मगर
नक्षकेतन पुं० कामदेव
नक्षत्र न० तारो (२) तारानां अमुक
निश्चित २७ झूमखांमांनुं दरेक

नक्षत्रनाय पुं०चंद्र {(३) विष्णु नक्षत्रनेमि पुं० चंद्र (२) ध्रुवनो तारो **नक्षत्रपथ पुं**० ताराओ भरेलुं आकाश **नक्षत्रमाला** स्त्री० ताराओ -- नक्षत्रोनी माळा के समूह (२) २७ मोतीनी माळा (३) हाथीना गळानो हार नक्षत्रराज पुं० चंद्र जियोतिःशास्त्र नक्षत्रविद्याः स्त्री० खगोळशास्त्र; नख पुं०, न० हाथपगना आंगळांना टेरवां उपर वधतो रहेतो कठण भाग (२) नहोर नलपद पुं० नखनो उझरडो **नखर पुं०, न० नख**; नहोर नलवर्ण पुं० जुओ 'नलपद' **नखंपच** वि० नखने रांधी नाखनारुं – नबळो पाडी देनारं तिनी निशानी **मखाधात पुं०,** न० नखनो उझरडो; नलानिल अ० सामसामा नल मारीने **नखांक पुं० जुओ** 'नखाघात' निस्तिन् वि० नख – नहोरक्षाळुं **नग** पुं० पर्वत (२) वृक्ष नगज पुं॰ पर्वतमा जन्मेल् नगनदी स्त्री० जुओ 'नगापगा' नगनिम्नगा स्त्री० जुओ 'नगापगा' नगपति पुं ० हिमालय **नगभिद्** पुं० इंद्र;जुओ 'नगारि' नगर न० मोटुं शहेर नगरंध्रकर पुं० कार्तिकेय नगरी स्त्री० नगर; शहेर नगाथिय, नगाथिराज पुं० हिमालय नगापगा स्त्री० पर्वतनी नदी नगारि पुं॰ इंद्र (पर्वतोनी पांसोने कापी नाखनार) नगेंद्र पुं० हिमालय मन्त, नरनक वि० नागुं; वस्त्ररहित नग्नम्चितप्रक्य वि० लूंटीने छेक ज नागुं करी नाखेलुं नग्नीकृत वि० नग्न करेलुं (२) नागा रहेता पंथमां भेळवेलुं

नक्ष्पु० नकार नट् १ प० नृत्य करवुं (२) अभिनय करवो (३) १० उ० नीचे पडवुं (४) प्रकाशवुं (५) ईजा करवी –प्रेरक० अभिनय करवो (२) नकल करवी; ना जेवा देखावुं नट पुं नटवो; नृत्य करनार (२) नाटकमां अभिनयं करनार; 'एक्टर' नटबर पुं० मुख्य नट (२) नाटकनो सूत्रधार (३)श्रीकृष्ण नटित न० अभिनय नटी स्त्री० स्त्री-नट (२) मुख्य स्त्री-नट (सूत्रधारनी पत्नी गणाय छे) **नड** पुं०, न० एक जातनुं नेतर **नड्यल** वि० बहुनेतर के बरुवाळुं नत ('नम्'नुंभू० कृ०) वि० नमेलुं; नमतुं (२) नमस्कार करतुं (३) वळेलुं; वांकुं नतनाभि वि० पातळुं; नाजुक नतभ्र स्त्री० वांकी भमरोबाळ् नतांगी स्त्री० नमेला अवयवीवाळी स्त्री (२) स्त्री निति स्त्री० नमवुं – वांकुं वळवुं ते (२) वऋता (३) प्रणाम; वंदन नतोन्नत वि० ऊंचुं ने नीचुं ;विषम नत्युह पुं० एक जातनुं पक्षी नद् १प० अवाज करवो; पडघो पाडवो (२) गर्जना करवी (३) बूम पाडवी नद पुं० मोटी नदी (सिंधु जेवी) (२) प्रवाह ; बहेळो नदयति, नदराज पुं० महासागर नदी स्त्री० पर्वत इ० मांथी नीकळीने वहेतो जळप्रवाह; सरिता नदीकुल न० नदीकिनारो **नदीज** पुं० भीष्म (२) न० कमळ नदीन (नदी + ईन), नदीपति पुं० समुद्र; महासागर(२)वरुण नदीमातुक वि० नदीना पाणीथी सींचाई यती होय तेव्

नदीमुख न० नदी ज्यां समुद्रने मळे छे ते स्थान नदीश पुं अमुद्र ; महासागर नदीष्ण(-स्न) वि० नदीमां स्नान करनारुं (२) नदीनी ऊंडाई दगेरे जाणनारुं (३) अनुभवी; कुशळ नद्ध ('नह' नुभू० कृ०) वि० बांधेलुं; वींटेलुं; जोडेलुं (२) पहेरेलुं ननंदू, ननांदू स्त्री० नणंद (२) साळी ननु अ० प्रश्न, खातरी, निश्चय, विनय, अनुनय, परवानगी, संभ्रम, आक्षेप -- ए अर्थं बतावे('शुं'; 'खरेखर'; 'रे'; 'अरे') नपात् पुं०पौत्र (२) वंशज **नपुंस् (-**स) पुं० नपुंसक नपुंसक पुं०, न० षंड (२)न० नपुंसक-लिंग (व्या०) नष्तृ पुं० पौत्र (पुत्रनो के पुत्रीनो पुत्र) नप्त्री स्त्री० पौत्री नभ् १ अः० ईजाकरवी नभ वि० हिंसक; ठार मारनाई(२) पुं० श्रावण मास (३) न० आकाश नभक्ष्चर वि० आकाशमां फरनारुं(२) पुं० देव (३) विद्याधर **नभस्** पुं० श्रावण मास (२) न० आकाश नभस्तल न० अंतरीक्ष; आकाशनुं तळ नभस्य पुं० भादरवो महिनो नभस्वत् वि० वादळावाळु; धूमसवाळु (२) जुबान (३) पुं० पवन **नभःसद्** पुं० देव | घणुं ऊर्च् नभःस्पृश् वि० आकाशने पहोंचे एवुं; **नभोमंड**ल न० गगनमंडल नम् १ उ० नमन - वंदन करवुं (२) नीचुनमबुं – बळवुं (३)नभी पडबुं; ताबे थवुं(४)वांकुं वळवुं; वळी जवुं --प्रेरक० नमाववुं; वाळवुं(२)ताबे करवुं; खंडियुं बनाववुं निभावनार **नमन** न० नमबुंते;नमस्कार(२)पुं० **नमस्** अ० नमस्कार-वंदन (नाम जेवो अर्थ होवा छतां ते अन्यय गणाय छे)

नमस वि० अनुकूळ नमस्करण न०, नमस्कार पुं० वंदन नमस्कृत वि० वंदित; पूजित नमस्कृति, नमस्क्रिया स्त्री० नमस्कार **नमस्य** वि० पूज्यः; मान्य (२) नम्र नमस्यति प० (नमस्कार करवा) नमस्या स्त्री० पूजा; वंदना निमत वि० नमी पडेलुं; नीचुं नमेलुं नमुचि पु॰ इंद्रे हणेला एक राक्षसनुं नाम (२) कामदेवः **नमुचिद्धिष्** पुरु इंद्र नमेर पुं० रुद्राक्षनु झाड नमोबाकम् अ० 'नमस्कार' एवी शब्द बोलीने; नमस्कार करीने नम्र वि॰ नीचुं नमेलुं ; बळेलुं (२)विनयी नय वि० दोरनारु; लई जनारु; मार्ग दर्शावनाषं (२) उचित; न्याय्य (३) पुं० रीतभात ; वर्तन (४) सदा-चार; नीति (५) अगमचेती; दूर-र्दोशता (६) राजनीति(७)योजनाः तरकीब (८) नियम (९) सिद्धान्त; मत नयचक्षुस् वि० राजनीतिज्ञ (२)अगम-चेतीवाळुं; डाहचुं; समजणुं नयन न० दोरी जवुंते; लई जबुंते (२) व्यतीत करवुं ते (समय**) (३)आंख** नयनज न० आंसु नयनपथ पुं० ज्यां सुधी आंख जोई शके ते मर्यादा; दृष्टिमयादा नयनपुट न० पांपण नयनविषय पुं० कोई पण दृश्य पदार्थ (२) क्षितिज (३) दृष्टिमर्यादा नयनसलिल न० आंसु **नयनाभिराम** वि० मनोहर नयनांचल, नयनांत पुं० कटाक्ष (२) आंखनो खूणो नधनोपांत पुं० आंखनो खूणो नयवादिन्, नयविद्, नयविशारद पुं राजनीतिमां कुशळ पुरुष; मुत्सही

नयशालिन् वि० सदाचारी; नीतिमान नयशास्त्र न० राजनीतिशास्त्र (२) नीतिशास्त्र नर पुं॰ पुरुष (२) एक प्राचीन ऋषि (३) (ते ऋषिनो अवतार) अर्जुन नरक पुं नरकासुर राक्षस (२) पुं ०, न० नरक; दोजल नरकजित्, नरकरिषु पु० श्रीकृष्ण नरदेव पुं० राजा नरद्विष् पुं० राक्षस; पिशाच नरनारायण पुं० श्रीकृष्ण (२) द्वि०व० बे प्राचीन ऋषिओ ; तेमना अवताररूप अर्जुन अने श्रोकृष्ण नरपति, नरपाल पुं० राजा नरपुंगव, नरर्षभ पुं० नरश्रेष्ठ नरवाहन पुं कुबेर नरव्याच्च, नरकार्द्रल पुं० नरश्रेष्ठ **नरसल** पुं० नारायण नरसिंह, नरहरि पुं विष्णुनो चोथो अवतार; नृसिह नराधम पुं० नीच – हलको माणस नराधिप, नराधिपति पुं० राजा नराज्ञ पुं० राक्षसः; पिशाच नरांतक पुं भृत्यु नरी स्त्री० स्त्री नरेश, नरेश्वर पुं॰ राजा मरेंब्र पु॰ राजा (२)वैद्य; विषवैद्य नर्ते पुंच नृत्यः, नाच नर्तंक पुं॰ नाचनारो; नट (२) नृत्य शीखवनार (३) हाथी (४) त्रिवं नर्तकी स्त्री० नाचनारी गानारी; नटी नर्तन पुं० नाचनार(२)न० नृत्य नर्तियत् पुं० नृत्य शीखवनार शिक्षक र्नातत वि॰ नचावेलुं; नाचेलुं (२) नाचतुं , ऊंचुंनीचुं थतुं नर्दु १ प० गर्जना करवी नर्दन त० गर्जना(२)जयजयकार निर्दित वि० गर्जना करेलुं (२) जय-

जयकार करेलुं (३) पुं० पासानो एक दाव (४) न० गर्जना नर्मगर्भ वि० मजाकवाळ् (२) पुं० [विदूषक यार; आशक **नर्मद** वि० आनंद आपनारुं (२) पुं० **नर्मन्** न० ऋीडा (२) मक्करी , ठठ्ठो **नर्मसचिव, नर्मसुहृद्** पुं० विदूषकः; आनंद माटे रखातो सोबती नर्मोक्ति स्त्री० मजाकमां कहेली वात नल पुं० एक जातनुं बरु (२) निषध देशनो राजा;दमयंतीनो पति (३) एक वानर(तेणे लंकानो सेतु बांध्यो हतो) (४)चार हाथ जेटलुं माप(५) न० नील कमळ **मलक** न० शरीरनुं कोई पण लांबुं हाडकुं नलद न० सुगंधी वाळो;वीरण नलमीन पुं० एक जातनुं मत्स्य निलका स्त्री० नळी (२) नाडी शिरा (३) बाणनी भाषी निलिन पुं० सारस पक्षी (२) न० कमळ (३) पाणी निस्तिनी स्त्री० कमळनो छोड़ (२) कमळसमूह (३) कमळपूर्ण सरोवर (¥) इंद्रनी नगरी निलनीखंड न० कमळनो समूह निलनीदल, निलनीपत्र न० कमळनुं पान **निलनीषंड** न० जुओ 'निलिनीखंड' नव वि० नवुं;ताजुं(२)आधुनिक नवप्रहाः पुं० ब० व० नव ग्रहो (सूर्य, चन्द्र, पांच ग्रह, राहु अने केंतु) नवछित्र न० शरीर (मुख, बें कान, **बे आं**ख, बे नसकोरां तथा मल अने मूत्रनांबेद्वार -- एम नव छिद्रवाळुं) नवता स्त्री० नवीनता (२) ताजापण् नवति स्त्री० नेवुं (संख्या) **नवदुर्गा** स्त्री० (भद्रा, काली, चंडिका **इ**०) नव रूपो धारण करनारी – <u>द</u>ुर्गा नवद्वार न० जुओ 'नवछिद्र'

नवधा अ० नव प्रकारे नवन् वि० (ब० व०) नव; ९ (समा-सनी शरूआतमां अंत्य 'न्' ऊडी जाय) नवन न० वखाणवुं ते नवनिधि पुं० (ब०व०) कुबेरना नव नवनी स्त्री०, नवनीत न० ताजुं माखण नवपाणिग्रहणा स्त्री० जुओ 'नवोढा' नवम् अ० हालमाः; तुरतमा नवमल्लिका, नवमालिका स्त्री० एक फूलझाड मयपौवन त० नवी जुवानी नवयौवना स्त्री० जुवान स्त्री नबरत्न न० नव रत्नो (मुक्ता, माणिक्य, वैदूर्य, गोमेद, वज्र, विद्रुम, पद्मराग, मरकत, नील) (२) विक्रमना दर-बारनां नव रतन (धन्दंतरि, क्षपणक, अमर्रासह, शंकु, वेताल, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर, वररुचि) नदरसाः पुं०ब०व० श्रृंगार, वीर, करुण, हास्य, अद्भुत, भयानक, बीभत्स, रौद्र अने शांत – ए नव रस (काव्य०) नवरात्र न० आसो महिनाना शुक्ल-पक्षना प्रथम नव दिवसो (दुर्गापूजाना) नवशिभृत् पुं ० शिव (चन्द्रकळा माथे धारण करनार) नवसर पुं०, न० नव मोतीनुं एक धरेणुं नवांगी स्त्री० स्त्री नवांबुन ० नवं पाणी; ताजं पाणी **नवीकृ ८** उ० तार्जु करवुं(२) नवुं करवुं नवीन वि० नवुं (२) आधुनिक नवेतर वि० जून् नवोद्धा स्त्री० तरतनी परणेली स्त्री नव्य वि० जुओ 'नवीन' नश् ४ प० नाश पामवुं (२)अदृश्य थवुं (३) नासी जबुं (४) निष्फळ जबुं –प्रेरक० भ्रष्ट करवुं (२) खोई नाखवुं;खोई नंखाववुं (३) भूली जवुं नश्वर वि॰ नाशवंत; क्षणिक (२) विष्वंसक; विनाशक

नष्ट ('नश्' नुंभू० कु०) वि० नाश पामेलुं (२) स्रोवायेलुं (३) अदृश्य थयेलुं (४) नासी गयेलुं(५) विनानुं; रहित (समासमां) (७) भ्रष्ट म**ब्टकिय** वि० कृत्रच्न नष्टचेतन, नष्टचेष्ट वि० मूर्छित **नष्टरूप** वि० अदुश्य **नष्टसंग** वि० मूर्छित **नष्टातं**कम् अ० चिंताके भय विना नष्टात्मन् वि० बुद्धि के समज विनानुं नष्टार्थं वि० गरीब; धनहीन नष्टाशंक वि० भय के शंका विनानुं नस् स्त्री० नाक ('नासिका'ना द्वितीया द्वि० व० ५छी विकल्पे मुकाय छे) नस्या स्त्रो० पशुना नाकमां परोवेली दोरी; नाथ नहुँ ४ उ० बांधवुं; वींटवुं (२) (कपडां के बख्तर पहेरीने) सज्ज थवुं महि अ० नहीं; नहीं ज नंद् १ प० खुश थवुं; प्रसन्न थवुं नंद पु० आनंद; हर्षे (२) श्रीकृष्णना पालक पिता (३) पाटलिपुत्रना नंदवंशनो स्थापक राजा **नंदक** वि० आनंद आपनारुं (२) --मां आनंद लेनारुं (३)पुं० विष्णुनुं खड्ग **नंदध्** पुं० आनंद; हर्ष **नंदन** वि० आनंददायक; सुखकर (२) पुं० पुत्र (३) न० ईंद्रनुं उपवन (४) अतंद; हर्षे **मंदनद्रम** पुं० नंदनवननुं वृक्ष नंदनवन न० इंद्रन् उपवन **नंदनंदन** पुं ० श्रीकृष्ण नंबना स्त्री० पुत्री नंदा स्त्री० आनंद (२)नणंद (३)समृद्धि (३) माटीनो नानो घडो (४) गौरी नंदात्मज पुं० श्रीकृष्ण नंदि प्०, स्त्री० आनंद (२) समृद्धि नंदिघोष 👚 पु॰ अर्जुननो रथ (२) आनंदनो अवाज

नंदिन् वि० आनंदी; हर्षयुक्त (२) आनंददायक (३) --मां मुख मानतुं (४) पुँ० पुत्र (५) नाटकनो सूत्रधार (६)शंकरनो मुख्य अनुचर केपोठियो नंदिनी स्त्री० पुत्री (२) नणंद (३) (कामधेनु जेवी) सुरिभ गायनी पुत्री **नंदीपट**ह पुं० एक वाद्य **नंदीवर्धन** पुं० पुत्र **नंहस** पुं• भक्तो उपर कृपावंत देव ना अ०ना; नहि नाक पुं० स्वर्ग (२) आकाश (३) न० सुख; अत्यंत सुख नाकनारी स्त्री० अप्सरा नाकसद् पुं ० देव (२) गांधर्व **नाकौकस्** पुं० देव नाक्षत्र पुंजीषी नाग पुं साप (२) पाताळमां रहेतुं तथा मनुष्यनुं मों अने सापनी पूछडी-वाळु एक अर्घदेवी प्राणी (३) हायी (४)तेते वर्गमां श्रेष्ठ (समासने अंते; उदा० 'पुरुषनाग') (५) भींतमांनो खीलो; खींटी (कशुं टींगाववा माटे) नागकेसर पुं ० एक फूलझाड नागर्वत, नागर्वतक पुं ० हाथीदांत (२) भींतमांनी खींटी नागपति पुं० ऐरावत हायी (२)शेषनाग नागर वि॰ नगरने लगतुं (२) नगर-मां अखरेलुं; संस्कारीं; चतुर (३) शहेरना दुर्गुणोवाळुं (४) पुं**०** नागरिक; शहेरमां रहेनार पुरुष नागरक वि॰ जुओ 'नागरिक' नागरता स्त्री० चालाकी; चतुराई नागरिक वि॰ नगरमां ऊछरेलुं (२) सम्य; विवेकी (३) चतुर (४) पुं० नगरमां वसनार (५) चतुर प्रेमी (६) पोलीस अधिकारी नागरिकवृत्ति स्त्री० राजदरवारी रीत नागरिषु पुंरु गरुड [वतुर स्त्री नागरी स्त्री॰ देवनागरी लिपि (२)

नागलोक पुं पाताळ नागाञ्चन पूं० गरुड (२) मोर (३) सिंह (हाथीने मारनार) नागेन्द्र पुं० श्रेष्ठ हाथी (२) ऐरावत (३) शेषनाग नाट पुं० नृत्य; अभिनय **नाटक** पुं० नृत्यकार; नट (२) न०नाट्य नाटकाचार्य पुं० नृत्यशिक्षक नाटकीय वि० नाटकनुं; नाटक संबंधी नाटकीया स्त्री० नाचनारी; नटी नाटिका स्त्री० नानुं नाटक **नाटितक** न० चेष्टा; अभिनय नाटच न० नाटक(२)नृत्य(३)हाब-भाव; अभिनय (४) नृत्य के अभिनयनुं शास्त्र के कळा (५) नटनी पहेरवेष **नाटघप्रिय** पुं० शंकर **नाटचशाला** स्त्री० रंगभूमि ; नृत्यशाला **नाटघाचार्य** पुं० नृत्य शीखवनार नाडि, नाडिका स्त्री० कोई पण छोड़ती गोळ दांडी (२) कमळ वगेरेनी पोली दांडी (३) शिरा;नस (४) हाथ के पगनी नाडी (५) एक घडी (चोवीस मिनिट) (६)नळी, वांसळी, कांठली इ० **नाडियम** वि० नाडीओ उछाळे तेवुं (भय इ०) (२) पुं० सोनी **नाडी** स्त्री० जुओ 'नाडि' नाडीजंघ पु० एक जातनो बगलो (२) काग्डो (३) एक मुनि **नाणक** न० नाणुं; चलणी सिक्को नातिचिरे अ० टूंक समयमां नातिदूर वि० अति दूर नहीं एवं नातिबाद पुं० गाळागाळी त्यागवी ते नाय १ प० आजीजी करवी; याचवुं (२) १ आ० आशिष आपवी नाय पुं० स्वामी; नायक (२) रक्षक (३) पति (४) बळदना परोवेली दोरी **नायवत्** वि० मालिक के रक्षकवाळुं (२)ताबेदार, गुलाम एवं

नाद पुं० गर्जना; बूम (२) ध्वनि नादिन् वि० गर्जना - अवाज करत् नादेय वि० नदीमां जन्मेलुं – धतुं **नाद्य** न० कमळ नाना अ० जुदे जुदे प्रकारे; जुदे जुदे स्थळे(२) भिन्न-अलग होय तेम (३) समासनी शरूआतमां विशेषण तरीके) अनेक प्रकारनु ; विविध (४) विना नानारस वि० जुदा जुदा रसोवाळुं नानार्थ वि० जुदा जुदा अर्थवाळुं (२) जुदा जुदा हेतु के प्रयोजनवाळ् नानाविध वि० अनेक प्रकारनुं नानुरक्त वि० अनुराग विनाःनुं **नापित** पुं० हजाम; वाळंद नाभि पुं ०, स्त्री० डूंटी; डूंटी जेवो खाडो (समासने छेडे 'नाभ' यई जाय छै; उदा० 'पद्मनाम') (२) पु० चक्र के पैडानो मध्य भाग (३) मध्यबिन्दु (४) नेता; आगेवान (५) संबंध; सगाई (६) सार्वभौम राजा (७) स्त्री० कस्तूरी नाभिगंध पुं० कस्तूरीनी गंध नाभिज, नाभिजन्मन् पुं० ब्रह्मा नाभिनाडी स्त्री०, नाभिनाल न० नाळ (गर्भस्थ बाळकनी डूटी साथेनी) नाभी स्त्री० जुओ 'नाभि' नाभोग पुं० देव (२) साप नाम अ॰ नामे; नामे ओळखातुं (२) सरेखर; लचित (३) कदाच;रखेने (४) एम ते होय? (ठपको बताववा) (५) जाणे के; देखाव करीने (६) (आज्ञार्थ साथे) मानी लो; एम मानी लईए के (७) धमकी के गुस्सी दर्शावे (८) आश्चर्य दर्शावे नामकरण, नामकर्मन् त० नाम पाडव् ते (विधि के संस्कार) नामग्रह पुं०, नामग्रहण न० नाम लेवुं ते मामप्राहम् अ० नाम दईने – लईने

नामधारक, नामधारिन् वि० नामनुं जः मात्र नामवाळुं (तेवा गुण विनानुं) **नामभेय** न०नाम; संज्ञा (२) वस्तुनी संज्ञारूप शब्द (ब्या०) नामन् न० नाम **नामभात्र** वि० मात्र नामवाळुं(२)न० मात्र नाम के उल्लेख नाममुद्रा स्त्री० उपर नामवाळी वींटी (महोर – छाप देवामां वपराती) नामशेष वि० मात्र नाम ज दाकी रहर्यु होय तेवुं; मृत **नामांक** वि० नामवाळुं;नाम लखेलुं नामित वि० नमावेलु; वाळेलु नाम्य वि० वाळी के नमावी शकाय तेवं नाय पुं० नेता; आगेवान (२) दोरवुं ते (३) नीति (४) उपाय नायक पुं॰ नेता; आगेवान (२) मुख्य माणस; सरदार (३) नाटक के वार्तानुं मुख्य पात्र नायिका स्त्री० नाटकनुं मुख्य स्त्री पात्र (२) पत्नी (३) गणिका नार वि० माणसने लगतुं (२) पुं० पाणी (३) मनुष्यनो समूह नारव पुं० एक प्रसिद्ध देविष नाराच पुं० लोखंडी बाण (२) बाण नारायण पु० विष्णु (२) 'नर' ऋषिना साथी प्राचीन ऋषि (जेमणे उर्वशीने जांघमांथी पेदा करी हती) नारिकेर(--ल) पुं०, ना**रिके**लि(--ली) स्त्री० नाळियेरनुं झाड के तेनुं फळ नारी स्त्री० स्त्री िकेर′ **मारीके**लि(-ली) स्त्री० जुओ 'नारि-नारीनाथ वि० स्त्री मालिक होय तेवं नाल वि० बरुनुं; बरुवाळुं (२) पुं०, न० पोलो दंड (खास करीने कमळनो) (३) गर्भमां बाळकनी डूंटीए जोडायेलो नाडीसमूह (४) न० शिरा; नस (५) नीक; नहेर

नासा स्त्री० पोलो डांडलो (कमळनो) नास्त्रि स्त्री० नस; नाडी (२) पोलो डांडलो (कमळनो) (३) २४मिनिटनो समय; घडी(४)नीक नालिकेर पु०,नालिकेलि(–स्त्री) स्त्री० नाळियेरन् झाड के तेन् फळ नाली स्त्री० जुओ 'नालि' नालीक पुंब्बाण (२) भाली (३) बरछी (४) कमळदंड नावनीत वि० माखणनुं (२) माखण जेवं पोचं - कोमळ (३) न० घी नाविक पुं० सुकानी (२) खलासी; वहाणवटी (३) नौकानो मुसाफर नाध्य वि० नौकामां बेसीने ओळंगी शकाय एवं (२) स्तुत्य; प्रशस्य (३) न० नवीनता; नवीनपण् नाज्ञ पुं० अदृश्य थवुं ते (२) संहार; पायमाली (३) मरण (४) दुर्भाग्य; आफत (५) नासी जवुं ते नाशन वि० नाश करनार्ह; दूर करनार्ह (समासमां) (२)न० विनाश (३)दूर करवं ते (४) मरण (५) विस्मरण नाशिन् वि० नाश पामनारुं; नाशवंत [कुमाो (२) नाश करनार्घ नासत्यौ पुं० द्वि० व० बे अध्विनी-नासा स्त्री० नाक (२) सूंढ नासाग्र न० नाकनुं टेरवृं नासारंध्र न०, नासाविरोक पुं०, नासा-विवद न० नसको ह **नासिका** स्त्री० नाक (२) सूंढ नासिर, नासीर पुं० लक्करनो मोखरा-नो भाग(२)मोखरे वसनार योद्यो नास्ति अ० न होय तेम नास्तिक वि० वेद, ईश्वर तथा पुन-र्जन्मने न माननार्छ नास्तिबाद पुं० नास्तिकवाद नाहुष पुं० ययाति राजा **मांत** वि० अंत विनानुं

नांतरीयक वि० छुटुन पाडी शकाय तेवुं; कदी जुदुं न होय तेवी रीते संबद्ध नांबी स्त्री० हर्ष; आनंद (२) वैभव; समृद्धि (३) (धर्मविधि के नाटकना आरंभे) मंगळाचरणरूपे कराती देव के देवीनी (आशीर्वचनयुक्त) स्तुति (४) घणां वाद्योनो सामटो ध्वनि नांबीनाद पुं० आनंदनो घ्वनि नि अ० क्रियापद अथवा नामनी पूर्व अधोगति, समूह, आज्ञा, सततता, बंधन, सामीप्य, अपमान, नुकसान आश्रय, कौशल्य, निश्चय, संशय, अंत-भीव, उपराम, विरति, अतिशयता – ए अर्थ बतावे निकट वि० पासेनुं; नजीकनुं (२) पुं०, न० सांनिष्य; पडोश निकम् १० आ० अत्यंत इच्छा राखवी निकर पुं० ढगलो (२) समूह; जयो निकर्तन न० कातरी के कापी नाखु ते (२) निकंदन निकर्षण न० गाम पासेनी रमतगमत माटेनी खुल्ली जमीन (२)आंगणुं निकष प्० कसोटीनो पथ्यर (२) कसोटी के परीक्षा करे तेवी कोई पण वस्तु (३) कसोटीना पथ्यर उपर करेली सोनानी रेखा निकषप्रावन् पुं० कसोटीनो पथ्थर निकषण पुं०, न० कसोटीनो पथ्यर (२) घसी काढवुंते **निकथा** अ० नजीक; पासे **निकलोपल** पुं० कसोटीनो पय्थर निकाम वि० विपुल; यथेच्छ; अत्यंत (२) -नी इच्छावाळ (३) प्०, न० इच्छा; भरजी निकामम् अ० यथेच्छ रीते; मरजी मुजब (२)पुष्कळ; अत्यंत निकाय पुं० ढगलो; समूह (२) निवासस्थान (३) शरीर

निकारय पुं० निवासस्थान निकार पु॰ अपमान; तिरस्कार (२) वध (३) गाळ (४) विरोध **निकारण** न० वध ; कतल निकाश पुरुसानिध्य; नजीकपण् (२) सरदापण् (समासने अंते) (३)प्रकाश निकाष गुं० घसवुं ते (सराण इ० उपर) निकास पुं० जुओ 'निकाश' **निकुरंब, निकुरंब** न० टोळु; समुह निकुंज प्०, न० छतामंडप(२)गुफा निकुंभिला स्त्री० लंकाना पश्चिम दर-वाजे आवेली एक गुफा (२) ते तरफ आवेलो भद्रकालीनी मूर्ति (३) ज्यां बलिदान अपातां होय ते स्थान निकृ ८ उ० अपमान करवुं; हलकुं पाडवुं;ताबे करवुं(२)ईजा करवी(३) खराब वर्तन चलाववुं ी नाखवुं निकृत् ६ प० [निकृतित] कापवुं; कापी निकृत वि० अपमानित; तिरस्कृत (२) पोडित (३) वंचित (४) दुष्ट; नीच (५) न० तिरस्कार निकृति वि० दुष्ट ; नीच (२) स्त्री० दुष्टता;नीचता (३) अप्रमाणिकता; छेतरपिंडी (४) अपमान; तिरस्कार (५) दारिद्र**च**; दैन्य (६) पुं० शठ निकृष् १,६ ५० ओछु करवुं; बाद करवुं (२) खेंचबुं; खेंची पाडवुं निकृष्ट वि० नीच; अधम (२) नजीकनुं **निकृष्टयुद्ध** न० हाथोहाथनी लडाई **निकृतन** वि० कापनार्ह के कातरनार्ह(२) न० कापवुं के कातरवुं ते (३) निकंदन (४)कापवानुं **के** कातरवानुं साधन निकेत, निकेतक पुं० घर; रहेठाण निकेतन न० मकान; निवास **निक्वण, निक्वाण** पुं० अवाज; रद **निक्षिप् ६** प० नाखवुं(२)नीचे मूकवुं (३) सोंपबुं; थापण तरीके मूकबुं (४) नीमवुं; स्थापवुं (५) फेंकी निक्षिप्त वि० मूकेलुं (२) नाखेलुं(३) अनामत मूकेलुं (४) तजी **दीघे**लुं निक्षेप पुं० फेंकवुं ते; नाखवुं ते (२) थापण ; अनामत (३) काढी मूकवुं ते ; तजी देवुं ते निक्षेपण न०नीचे मुक्तवुंते **निक्षेपित** वि०मुकावेलुं(२)लखावेलुं; कोतरावेलं निखन् १ प० खोदवुं (२) दाटवुं(३) रोपवु (४) खोसवु; भोंकवुं निखनन न० खोदव ते (२) रोपव ते निखर्यवि० वामण्; ठींगण् (२) न० सो अबज निखात वि० खोदेलुं (२) रोपेलुं निखिल वि० आखुं; बधुं; तमाम निखिलेन अ० पूरेपूर्वः; तमाम निगड वि० सांकळे बांधेलुं (२) पुं०, न० हाथीना पर्गे बंघाती सांकळ (३) सांकळ; हेड; बेडी निगडन न० सांकळे बांधवं ते निगडित वि० सांकळे बांधेलुं निगद् १ प० जाहेर करवुं (२) जणावव्; कहेव्रुं (३) संबोधव् (४) गणतरी करवी (५)नामथी आळखवु निगदित वि० कहेलुं (२) प्रेरेलुं **निगम् १** प० बिगच्छति । पासे जवुं; प्राप्त करवुं (२) -मां प्रवेश करवो निगम पुं० वेद; वेदवाक्य (२) वेदना अंगभूत के समजवामां सहायभूत ग्रंथ (३) देव के संतनो उपदेश (४) तर्कशास्त्र; नीतिशास्त्र (५) संघ; काफलो (६) शहेर (७) निश्चय; प्रतिज्ञा; खातरी (८) बजारनी मार्ग **निगमन** न० तारदेलो निर्णय (२) अंत; उपसंहार निगर पुं०, निगरण न० गळी जवुं ते निगल, निगाल पुं० गळी जबुं ते (२) घोडानुं गळुं के डोक (३) सांकळ

देवुं; तरछोडी काढवुं

निगीर्ण वि० गळी जवायेलुं; गळेलुं (२) छुपायेलु ; ढंकायेलु निगृढ वि॰ संतायेलुं; संताडेलुं (२) छानुं; गुप्त (३) गूढ़; रहस्यरूप **निगृदम्** अ० गुप्त रीते **निगूहन** न० सेताडवुं के गुप्त राखवुं ते निगृहित वि० पकडेलुं; अटकावेलुं; रोकेलुं (२)हरावेलुं (दलीलमां) **निगृहोति** स्त्री० काबू; अंकुश (२) पराभव; पराजय निग्रह ९ प० [निगृह्धाति] निग्रह करवो; अंकुशमां राखवुं(२)रोकवुं; अटकाववुं (३) सजा करवी (४) पकडवुं ; लेवूं (५)वश करवुं ; हराववु (६) बंध करवुं; मींचवुं निग्रह पुं० काबू; अंकुश (२) निरोध; रुकावट (३)वश के ताबे करवुं ते (४) दूर करवुं ते (५) केद; बंधन(६) उपचार; उपाय (रोगनो) (७) शिक्षा;सजा (८) उल्लंघन नियाह पुं० एक प्रकारनो शाप (२) सजा निघर्ष पु०, निघर्षण न० घसवुं ते; घसावुं ते निघंट (-टु) पुं०, शब्दसूचि; शब्दोनो कोश (खास करीने यास्के समजावेला वैदिक शब्दोनो) निघात पुं० प्रहार निष्म वि० ताबेदार; अधीन **निष्नान** वि० हणतुं; हणनारुं निचय पुं० संग्रह; ढगलो (२) निधि; भंडार(३)समूह(घटक भागोनो) निचयिन् वि० --थी भरेलुं; --थी पूर्ण निचि ५ उ० एकठुं करवुं; ढगलो करवो (२)पाथरवु ; ढांकवु ; छावुं निचित वि० ढंकायेलुं; छवायेलुं(२) परिपूर्ण (३) ढगरुो करायेल् **निचुल** पुं० एक जातनुं बरु(२)कालि-दासनो (समकालीन)कविभित्र

निचुलक न० छातीनुं बस्तर(२)पेटी (धनुष्य इ० नी) निचुलित वि० पेटीमां मूकेलुं निचोल पुं० ओछाड;ढांकण (२) बुरखो निचौलक पुं० चोळी; कबजो (२) छातीनं बस्तर [नाहवुं; शुद्ध थवुं निज् ३ उ० धोवुं; स्वच्छ करवुं(२) निज वि॰ पोतानुं (२) सहज (३) विशिष्ट; खास निटल, निटिल न० कपाळ निडीन न० पक्षीनु ऊडतां ऊडतां नीचेनी तरफ वळवं ते **नितराम्** अ० अत्यंत (२) पूरेपूरुं ; त**द्द**न (३) चोक्कस ; नक्की (४) सतत **नितल** न० एक पाताळ **नितंब** पुं० कूलो;थापो(स्त्रीनो)(२) पर्वतनो ढोळाव – बाजु (३) नदीना वाळी स्त्री किनारानो ढोळाव नितंबवती स्त्री० भारे अने ढळता नितंब-नितंबिन् वि॰ सुंदर अने ढळता नितं-बवाळुं (२) सुंदर ढोळाव के बाजु-बाळ् (पर्वत) नितंबिनी स्त्री० जुओ 'नितंबवती' नितात वि० अतिशय; असाधारण नितांतम् अ० अत्यंत; घणुं ज नित्य वि० शास्वत; अविनाशी; कायम-न् (२) अवश्य करवानुं; वैकल्पिक नहीं तेवुं (३) रोजनुं; सामान्य ('नैमि-त्तिक'थी ऊलटुं) (४) (समासने अंते) हंमेशां रहेतुं (५) हंमेशां रत रहेतुं नित्यकर्मन् न० दररोज धार्मिक कार्य नित्यजात वि० नित्य जन्मवावाळ् नित्यम् अ० हमेशां **नित्यक्षस्** अ०दररोज **निदर्शक** वि० जोनाएं (२) दर्शावनाएं निवर्शन वि० दर्शावनार्छ; जाहेर कर-नारुं (२) उपदेशनारुं (३) न०

दर्शन; दृश्य (४) दर्शाववुं ते (५) पुरावो; साबिती (६) दृष्टांत निर्दाशन् वि० गमसुं; गोठे तेवुं (२) [(३)परसेवो समजवाळ् निदाघ पुं ० उष्णता ; गरमी (२) उनाळो **निदाधकर** पुं० सूर्य निदाधकाल पुं० उनाळो **निटाधधामन्** पु० सूर्य निदान न० दोरडुं (२) मूळ कारण; कारण (३) रोगना कारणनी तपास निदिध्यास पुं०, निदिध्यासन न० निरं-तर चितन निदृश् -प्रेरक० दशविवुं (२) साबित करवुं (३) समजाववुं; दृष्टांत आपवुं निदेश पुं० आज्ञा; हुकम (२) कथन निद्रा स्त्री ॰ ऊंघ (२) सुस्ती; आळस निद्रालस वि० ऊंघमां घेरायेलुं निद्रालु वि० निद्रायुक्त निद्रित वि० ऊंघमां पडेलुं नियन वि० दरिद्री; गरीब (२) पुं०, न० मृत्यु (३) अंत निधनता स्त्री० गरीबाई निषा ३ उ० मूकवु (२) सोंपवुं(३) दबाबी देवं (४) चितववं (५) संघरवं (६) याद राखवं निघान न० मूकवुं ते (२) राखवुं ते; साचववुं ते (३) संग्रह; निधि; भंडार निधि पुं० भंडार; खजानो; कोठार (२) समुद्र (३) वंशानुकमशास्त्र निधिनाथ, निथीश पुं० कुबेर निध्वन न० कंपवृते; क्षोभ (२) ऋडि निध्ये १ ५० ध्यान घरवुं; चितववुं निध्वान पुं० ध्वनि; शब्द निनद् १ प० अवाज करवो; गर्जना करवी (२) पडघो पडवो निनद पुं० घ्वनि (२) गुंजारव निनंध्युवि० मरी जवा इच्छतुं(२) नासी जवा इच्छत्

निवम् निनाव पुं॰ जुओ 'निनद' निपत् १ प० नीचे पडवुं; नीचे ऊत-रवुं (२) –नी तरफ फेंकावुं (३) पगे पडवुं (४) हुमलो करवो (५) भाग्यमां आवी पडवुं --प्रेरक० वध करवो; नाश करवो निया २ प० पीवु; चूसवु (२) चुंबवुं (३) आंख के कान वडे रसपूर्वक जोबंक सांभळवं निपात पुं० नीचे पडवुं ते; नीचे ऊतरवुं ते (२) आक्रमण; हुमलो (३) फेंकवुते; नांखवुते (४) अकस्मात (५) नाश; मरण (६) मिश्रित थवुं ते (७) अनियमित रूप; रूपारूयान न थतुं होय तेवो शब्द (अव्यय ६०) **निपातिन्** वि० नीचे पडतुं के ऊतरतुं (२) विनाशक (३) नाश पामेलुं नियान न० पीवुं ते (२) जळाशय (३) हवाडो (४) आधार निपीड १० उ० पीडवुं; त्रास आपवो (२) दबाववं (३) जोरथी पकडवं निपीडन न० जोरथी दबाववुं ते (२) पीडवुं ते; त्रास आपवो ते **निपीडना** स्त्री० पीडा; दु:ख निपुण वि० प्रवीण; चतुर; अनुभवी (२)नाजुकः; सूक्ष्मः; तीत्रः (३)पूरेपूरुः; [सचोट रीते सचोट निपुणम् अ० कुञ्चळतायी (२)पूरेपूर्हः **निबद्ध** वि० बांधेलुं (२) जोडेलुं; संबद्ध (३) जडेलुं; सज्जड बेसाडेलुं (४) अटकावेलुं (५) व्यापेलुं **निबर्ह् १०** उ० वध के नाश करवो **निवर्हण** वि० नाश करनारुं (२) न० वध: नाश: कतल निवहित वि० नाश करेलुं निसंध् ९ प० बांधवुं (२) सांकळ वडे बांधवं (३) जोडवं ; स्थिर करवं (४) रचवुं; रचना करवी

निबंध पुं॰ बांधवुं-जोडवुं-वळगाडवुं ते (२) आसक्ति; राग (३) रचवूं ते (४) ग्रंथ (५) अंकु स; दाब निबंधन न० बांधवुं ते (२) रचना करवी ते (३) अंकुशमां राखवुं ते (४) बंधन ; बेड़ी (५) गांठ बंध (६) आधार; टेको (७) मूळ; कारण; हेतु (८) आश्रयस्थान **निबंधिन्** वि० बांघतुं; जोडतुं (२) संबद्ध (३) उत्पन्न करतुं नि**बिड** वि० गाढुं (२) मुश्केल ; कठण निबिडित वि० गाढुं (२) भारे (३) जकडीने दबावेल निबिरीस वि० निबिड, गाढुं निबुध् १प० जाणवुं; समजवुं; शीखवुं (२) गणवुं; मानवुं निबृह १, ६ प० नाश करवो निबोध पुं०, निबोधन न० जाणवुं ते; समजबुते (२) जणावव् ते **निभ** वि० (समासने अंते)—ना जेर्नु; सदृश(२)पु०, न० तेज; प्रकाश(३) ढोंग; कपट (४) मिष; बहानुं निभल् १० उ० भाळवुं; निहाळवुं **निभालित** वि० जोयेलुं; निहाळेलुं **निभृत** वि० नीचे मूकेलूं (२) —थी भरेलुं; पूर्ण (३) अदृश्य; गुप्त (४) शांत; निश्चल; नीरव (५)विनयी; नम्र (६) दृढ निश्चयी (७) मींचेलुं; बंध करेलुं (८) एकांत निभृतम् अ० छानी रीते; गुप्त रीते निमग्न वि० डूबी गयेलुं (२) तल्लीन (३) आथमेलुं (४) ऊंडुं निमग्ननाभि, निमग्नमध्या स्त्री० जेनी नाभि ऊंडी छे तेवी स्त्री(२)पातळी केडवाळी स्त्री निमज्जयुपुं० डूबकुं भारवुं ते (२) पथारीमां पडव् ते; सूई जव् ते निमज्जन न० डूबकुं मारवुं ते (२) डूबी जब्ते (३) लवलीन थवुं ते

निमस्ज ६ प० [निमज्जिति डुबी जवु; डूबकुं मारवुं (२) अदृश्य थवुं (३) तल्लीन थव् बोलावव् **निमंत्र १०** आ० निमंत्रण आपवुं; **निमंत्रण** न० निमंत्रयुं ते; बोलाववुं ते **निमित्त** न० कारण;हेतु;प्रयोजन(२) बाह्य कारण ('उपादान'-कारणथी জলটু) (३) निशान; लक्ष्य (४) भविष्यसूचक चिह्न आंखो मींचवी; निमिष् ६ प० पलकारो मारवो निमिष पुं० आंखनो पलकारो (२) आंखना पलकारा जेटलो समय निमील् १ प० आंख बंध करवी (२) मरण पामवु (३) झांखु पाडवु (४) बिडाई जवुं(५)अदृश्य थवुं; आथमवुं निमीलन न० आंख बंध करवी ते (२) आंख मींचाबी ते; मृत्यु निमीलित वि० वंध करेलुं; मींचेलुं (२)ढांकी दीधेलुं ; छाई दीधेलुं **निमेख** पुं० आंखनो पलकारो(२)पल-कारा जेटलो समय **निमेषांतर** न० पलकारा जेटलो समय; निम्नः वि०ऊंडुं;नीचुं(२)न० अंडाण; नीची जमीन (३) नीच कृत्य निम्नगा स्त्री० नदी(२)पर्वत उपरथी ऊतरतो प्रवाह **निम्ननाभि पुं०** नाजुक; पातळुं **निम्नाभिमुख** वि० नीचेनी तरफ वहेतं **निम्नित** वि० ऊंडुं; नीचुं **निम्नोञ्चत** वि० ऊंचुं-नीचुं; विषम नियत वि० नियममां रखायेलुं; निग्रह करेलुं; संयमित (२) निश्चितः; नक्की (३) स्थिर; दृढ़ (४) अनि-वार्य (५) दृढ रीते पाळलुं (ब्रत) नियतम् अ० हंमेशाः; सतत (२) नक्कीः; चोक्कस िकर्तव्यकर्म नियति स्त्री० संयम (२) नसीब (३)

नियम् '१ प० [नियच्छति] नियंत्रणमां राखवु; निग्रह करवो (२) आपवु (३) शिक्षा करवी (४) नियमन करव् –प्रेरक० काबुमा राखबु; निग्रह करवो (२) बांधबुं; जकडवुं (३) ओछं के हळवं करवं (ताप इ०) **नियम** पुं० अंकुश; दाब (२) धारो; कायदो (३) रीत; चाल (४) व्रत; प्रतिज्ञा (५) बंधन; नियंत्रण (६) योगना आठ अंगोसानु एक नियमन न० निग्रह; शासन; नियं-त्रण (२) बांध बुंते (३) नियम नियमविधि पुं रोजन् धर्मकृत्य नियमित वि० नियम के निग्रहमां रखा-येलुं(२)हळवु के मर्यादित करायेलुं (३) शासित (४) निश्चित (५) पाळेलुं (व्रत के तप) नियंतृ पुं० सारिथ (२) शासक ; निय-मन करनार िनयमन; प्रतिबंध नियंत्रण न०, नियंत्रणा स्त्री० निग्रह; **नियंत्रित** वि० निग्रहके नियंत्रणमां रखायल शासन करनारु नियामक वि० नियमन करनारं (२) नियुक्त वि० नीमेलुं;योजेलुं(२) आज्ञा के परवानगी अपायेलुं (३) जोडेलुं; बांबेलु(४)पु० अधिकारी; अमलदार **नियुज् ७** आ० नीमबुं; निमण्क करवी (२) आज्ञा करवी (३) जोडवुं; बांधर्व (४) नियम करवो प्रेरक० उपयोगमां लेव् नियुद्ध न० कुस्ती; मल्लयुद्ध **नियोक्तृ** पुं० स्वामी; मालिक नियोग पुं० विनियोग; उपयोग (२) आज्ञा; हुकम (३) सोंपवामां आवेलुं काम; अधिकार; फरज (४) आव-श्यकता; फरजियातपणुं (५) संतान वगरनी विधवाए दियर के पासेना सगा साथे संतान माटे शास्त्रमान्य संबंध करवो ते

नियोगिन् पुं० अधिकारी; अमुक काम माटे निमायेलो अमलदार नियोजन न० योजवुं के नीमवुं ते (२) हुकम करवो ते नियोजित वि॰ योजेलुं; नीमेलुं (२) जोडेलुं (३) प्रेरेलुं (४) उपयोगमां माणस; सेवक **नियोज्य प्० अ**मुक काम माटे नीमेलो निर्अ० ('निस्' ने बदले स्वर अने घोष व्यंजन पूर्वे) '-माथी बहार', '-थी रहित, '--थी विनानु', '--थी दूर' --ए अर्थमां वपराय छे **निरक्षर** वि० अभण निरम्नि वि० यज्ञादि क्रिया सारु अग्नि नहि राखनारुं;अग्निनो त्याग करनार्ह निरत वि० अनुरक्त; आसक्त (२) विश्रात, योभेल् निरति स्त्री० अत्यंत आस्रक्ति निरतिशय वि० अनुपम; अद्वितीय निरत्यय वि० सुरक्षित; भय विनान् (२) दोषरहित; स्वार्थरहित (३) पूरेपूरुं सफळ **निरनुक्रोश** वि० निर्दय; कठोर **निरनुरोघ** वि० प्रतिक्ळ (२) निर्दय निरम्बय वि० संततिहीन (२) असंबद्ध ; असंगत (३) दृष्टि बहारनुं (४) आकस्मिक (५)परिजन विनानुं (६) पाछळ कशो अवशेष न रहेतेव् निरपत्रप वि० निर्लज्ज; धृष्ट **निरपराध** वि० निर्दोष; बेकसूर निरपवाद वि० दोष के कलंक विनानं (२) अपवाद विनान् निरपाय वि० विघ्न विनानु (२) अमोघ; निष्फळ न नीवडे तेवुं **निरपेक्ष** वि० अपेक्षा वितानुं (२) परवा विनानुं (३) इच्छा - आकांक्षा विनानुं (४) निःस्वार्थः; अनासक्त (५) बंदरकार

निरभिभव वि० पराभव न पमाडी शकाय तेवुं; पाछुं पाडी न शकाय तेवुं निरभिलाष वि० परवा के आकांक्षा विनान्

विनान्ं
निरमर्ष वि० क्रीथ विनानुं
निरम पुं० नरक (२) दुःख (३)पाप
निर्माल वि० विघ्न के रुकावट विनानुं
(२) अंकुश विनानुं(३) मर्यादा विनानुं
निरमंलम् अ० रुकावट विना
निरमं वि० वन विनानुं; गरीब (२)
प्रयोजन विनानुं; अथहीन
निरभंक वि० उपयोग विनानुं; लाभ
विनानुं (२) अर्थहीन; मतलब विनानुं
निरवकाश वि० खाली जगा विनानुं
(२) अवकाश – फुरसद विनानुं
निरवग्रह वि० प्रतिबंध वगरनुं; काबू
विनानुं (२) स्वच्छंदी (३) मनस्वी
निरवग्र वि० दोप, खामी के बांधो

न काढी शकाय तेवुं निरविध वि० मर्यादा के अंत विनानुं (२) सतत चाळु रहेतुं

निरवलंब वि० आधार विनानुं (२) आधार न आपतुं(३)आधारे न रहेतुं

निरवशेष वि० संपूर्ण; पूरेपूरुं निरवसाद वि० आनंदी

निरस् ४ प० फेंकबं; फेंकी देवुं (२) डांकी कादबं दर करवं

(२) होकी काढवुं; दूर करवुं (३) पराभव करवो; नाझ करवो

(४) इत्कार करवो; अर्स्वाकार करवो (५) खंडन करवे (दलीलन्ं)

(६) ढोकी देवुं: झांख्ं पाडेबुं

निरसन वि० काढी मुकतुः; हांकी काढतुं (२) न० काढी मुकतु ते (३)इन्कार

(४) खंडन (५) नाश

निरस्त वि० फेंकी दीवेलुं; काढी मूकेलुं; दूर करेलुं; नाश करेलुं;त्यागेलुं(२) –िधनानुं; –रहित (३) खंडन करेलुं (४) ओकी काढेलुं (५) अपेलुं निरहंकार, निरहंकृति वि० अभिमान-रहित; तम्न [स्वतंत्र निरंकुश वि० अंकुश के दाब वगरनुं; निरंग वि० अवयव विनानुं (२) साधन के युक्ति विनानुं

निरंजन वि० राग-द्वेष, पुण्य-पाप के कलंक इ० रहित (२) मेश विनानुं (नेत्र) (३)कृत्रिमता विनानुं; सहज निरंतर वि० सतत; अखंड (२) बच्चे अवकाश विनानुं; खूब लगोलग आवेलुं (३) गाढ (४) वफादार; साचुं (५) परिपूर्ण; व्याप्त (६) दृष्टि बहार नहिं तेवुं

निरंतरम् अ० अविरतपणे; सतत (२) गाढपणे; दृढपणे (३) तरत ज निरंतराल वि० वच्चे अवकाश विनानं; नजीक होय तेवुं (२) सांकडुं

निरंबर वि० वस्त्र विनानुं; नग्न निराकरण न० इन्कारवुं ते; रदबातल करवुं ते (२) दूर करवुं ते; हांकी काढवुं ते (३) खंडन; विरोध निराकरिष्णु वि० इन्कारतुं; हांकी

काढतुं (२) तिरस्कार करतुं (३) रुकावट करतुं (४) –विनानुं करवा इच्छत्

निराकुल वि० शांत; स्वस्थ; गाभरुं निह थयेलुं (२) भीड विनानुं (३) अव्यवस्थित नहि तेवुं (४) स्पष्ट निराकु ८ उ० हांकी काढवुं; काढी मूकवुं (२) खंडन करवुं (३) तिरस्कार करवो (४) नाश करवो (५) इन्कारवुं (६) विरोध करवो निराकंद वि० फरियाद के विलाप विनानुं (२) अवाज न संभळाय तेवुं (३)संरक्षण न आपतुं;संरक्षण विनानुं विरागम वि० वेदना आधार विनानुं निरागम वि० वेदना आधार विनानुं

निरागस् वि० निर्दोषः; निरपराधी निरातंक वि० नीरोगी (२) निर्भय (३) विघ्न के रुकावट वगरन् निरापद् वि० विपक्ति विनानुं निराबाध वि० पीडा के विघ्न विनान् (२) पीडा के हेरानगति न करतुं निरामय वि० नीरोगी; तंदुरस्त (२) लामी के कलंक विनानु (३) पुं०, न० कल्याण; कुशळता; क्षेम निरामिष वि० मांस विनानुं (२) विषयेच्छा विनानुं (३)पगार के लाभ [(२) संकोचेलुं निरायत वि० खूब खेंचेलुं के लंबावेलुं **निरायति** वि० जेनो अंत नजीक छे तेव् निरायास वि० महेनत वगरनुं;सहेलुं निरारंभ वि० कार्य के प्रवृत्ति रहित निरालंब वि॰ आलंबन विनानु (२) पोतानी जात पर ज आधार राखतुं; स्वतंत्र (३)सहाय दिनानु; एकलुं **निरालोक** वि० अंथकारमय; प्रकाश वगरन् (२) दृष्टि विनान् निराश वि० आशारहित; हताश निराशा स्त्री० नाउमेदी; हताशा निराशिस वि० उदासीन; इच्छा के तृष्णा विनानुं (२) वरदान के लाभ निराध्य वि० आशरा विनानुं (२) साथी के मित्र विनानुं; एकलुं निरिंग वि० स्थिर; **निरीक्ष् १** आ० निरीक्षण करवुं; घ्यानथी जोवूं (२) तपासवुं; शोधवुं (३)चिंतन करवु;विचार करवो निरोक्षण न०, निरोक्षा स्त्री०, निरी-**क्षित** न० दृष्टि; नजर; निहाळव्ं ते (२)शोधवुते (३)आशा (४) ख्याल ; िपीडाओ विनानुं विचार निरीति वि० अतिवृष्टि वगेरेनी निरोह वि० इच्छा विनानुं; निःस्पृह (२) निश्चेष्ट निरुक्त न० एक वेदांग; व्युत्पत्तिशास्त्र व्युत्पत्तिथी शब्द निरुक्ति स्त्री० समजाववो ते

निरुच्छ्वास वि० श्वास न चालतो होय तेव् (२) सांकडुं (३) मृत निरुत्सव वि० उत्सव विनान् **निरुदर** वि॰ फॉद विनानुं;पातळं **निरुद्ध** वि० अटकावेलुं; रोकेलुं (२) अकुशमां रखायेलुं (३) केदं पूरेलुं (४) ढांकेलुं (५) −थी भरा**ई** गयेलुं निरुद्धित वि० अछळत्ं नहि तेवं (रथ) निरुष् ७ उ० निरोध करवो; अटका-ववुं; रोकवुं (२) केद पूरवुं (३) नियंत्रणमां राखवुं निरुपिध वि० माया - कपट विनानं निरुपपद वि० कोई पण पदवी के इलकाब विनानु निरुपप्लव वि० निर्विघ्न (२) पीडा न निरुपस्कृत दि० शुद्ध ; भ्रष्ट नहि थयेलं निरूढि स्त्री० प्रसिद्धि (२) प्रवीणता निरूप् १० उ० बारीकाईथी जोवुं के तपासवुं (२) निर्णय के निश्चय करवी (३) पसंद करवु; नीमवु (४)अभि-नय करवो (५) विचारणा करवी निरूपण न० जोवुं के तपासवुं ते (२) अवलोकन ; विवेचन (३) व्याख्या निरेभ वि० नि:शब्द निरोध पुं अटकाववुं ते; रोकवुं ते (२) केंद्र पूरवुं ते (३) घेरी लेवुं ते (४)निग्रह करवो ते (५)संपूर्ण नाक्ष निरोधक वि० अटकावनारुं; रोकनारुं निरोधन न० अटकावव ते (२) संयमन (३) कारागृहमां नाखब्ं ते निऋदेति स्त्री० नाश; विनाश (२) आफत; विपत्ति; दुर्भाग्य (३) मृत्यु के बरबादीनी देवता; नैऋंत्य अर्थात दक्षिण-पश्चिम खूणानी देवी निर्गम् १ प० [निर्गच्छिति] बहार नीकळवुं – जबुं (२)फूटबुं ; नीकळबुं ; उत्पन्न थवं (३) जता रहेवं ; दूर थवं निर्मम पु०बहार नीकळवुं के जबूते

(२)दूर थवुं के चाल्या जबुं ते (३) बहार नीकळवानो मार्ग निगंध वि० गंध विनान् **निगंधन** न०वधः, कतल **निर्मुण** वि० पणछ विनानुं (धतुष्य) (२) सारा गुणो विनानुं; नकार्मु (३) सत्त्व, रजस् अने तमस् ए त्रणे गुणोना लेश विनानुं निर्धंय वि० बधा पाश के बंधनथी मुक्त निर्प्राह्म वि० जोई शकाय तेवुँ निर्घात पुं० वज्यपात; मेघगर्जना (२) उत्पातसूचक शब्द (३) वावंटोळ निर्घुण वि० निर्देय; कूर निर्घाष प्रमोटो ध्वनि निर्जन वि० अवरज्वर के वसवाट विनानुं (२) परिवार विनान् (३) न वेरान स्थळ (४) एकांत स्थळ **मिर्जर** वि० तरुण (२) अजर; अवि-नाशी (३) **पुं**० देव **निजि १ प०** जीतवुं; हरावनुं (२) पाछळ पाडी देव् **नि•ि**त वि० जितायेेेेेेंछुं (२) हरावेेेेें निर्जीव वि॰ जीव बगरनुं; मृत निर्झर पुं०, न० झरो; पर्वतनो प्रवाह निर्ह्मरिणी, निर्झरी स्त्री० (पर्वतनी) [चर्चा;विचारणा भिर्णय पुं० निश्चय (२) फेंसलो (३) निणिक्त वि०धोयेलुं;साफ करेलुं(२) प्रायश्चित्त करेलुं निर्णी १ प० निर्णय करवो निर्णीत वि० नक्की करेल् निर्णेतृ पुं० न्यायाधीश (२) दस्तावेज निवंप वि० दया वगरन् (२) गाढ; **∫जोरभेर** तीवः; अत्यंत निवंधम् अ० दया विना (२) अत्यंत; **निर्दर** वि० कठण (२) निष्ठुर (३) निर्लंडज (४) पुं० गुफा **निर्वरि** स्त्री० गुफा

निर्देहन वि० अम्नि विनानुं (२) बळ-तरा के दाह विनानुं (३) शीतळ; शांत (४) बळतुं; बाळतुं (५) न० बळवुं ते; बाळवुं ते निर्वाक्षिण्य वि० विवेक के सम्यता **निर्दारित** वि० फाडेलु; फोडेलु निदिश् ६ प० निर्देश करवो ; सूचवर् ; दर्शाववं (२) उल्लेख करवो (३) सोंपबुं; आपवुं (४) भविष्य भाखवुं (५) सलाह आपवी (६) कही बता-बबु;वर्णन करवुं(७)आज्ञा करवी निविष्ट वि० दशक्तिः; सूचवेलः (२) आज्ञा करायेलुं (३)वर्णवायेलुं निर्देश पुं० कथन (२) सूचन (३) आज्ञा (४) वर्णन (५) उपदेश निर्देश्य वि० दर्शविवा, बताववा के जणाववा योग्य (२) प्रायश्चित्तने योग्य निर्दोष वि० दोष के खामी विनान् निर्द्धं वि० सुख-दुःख वगेरे द्वंद्वोधी रहित (२) निःस्पृह (३) बीजा उपर आधार न राखत् **निर्धन** वि०धनहीन; गरीब निर्धार पु०, निर्धारण न० नक्की करवुं ते (२) निश्चय; खातरी निर्धारित वि० निश्चित करेलुं निर्धाव् १ प० धोत्रुं; साफ करवुं(२) --मांथी नीकळवुं; वहेवुं (३) --नी पासेथी नासी छुटवूं निर्भू ५, ९ प० दूर करवुं; फेंकी देवुं; खंखेरी नाखवुं (२) तिरस्कारवुं (३) त्याग करवी (४) इन्कारवुँ (५) पीडवुं; त्रास आपवो (६) वींझवुं; घुमाववुं निर्भत वि० काढी नाखेलु; दूर करेलुं; खंखेरी काढेलुं (२) त्यागेलुं; तिर-स्कारेलुं (३) नाश करे**लुं** निर्भूनन न० अछळवं ते (समुद्रन्ं) निर्घु १ प०, १० उ० निर**धा**र करवो

निर्घौत वि० स्वच्छ करेलुं;धोयेलुं निर्नेमस्कार वि० अविनयी; उद्धत (२) जेनो कोई सत्कार नथी करतुं तेव ; तुच्छकारायेल् निर्नाणक वि० पैसा विनानु;गरीव निर्नाथ वि० अनाथ; असहाय, **निर्नाभि** वि० डूंटी खुल्ली रहे के डूंटी सुयी न पहोंचे तेतुं (पहेरेलुं बस्त्र) निर्बेस वि० नबळुं; अशक्त निर्बंध् ९ प० आग्रह करवो; हठ करवी निर्बंध पुं० आग्रह; हठ (२) आजीजी (३) भारे प्रयत्न निर्भग्न वि० भागेलुं; तूटेलुं वळेलुं (३) हीन; कंगाल निर्भय वि० भयरहित; सुरक्षित निर्भर वि० अतिशय; गाढ;तीव्र (२) (समासने अते) पूर्ण; भरेलुं निर्भरम् अ० अत्यंत; गाढपणे **निर्भःस् १०** उ० ठपको आप हो ; धमको आपत्री (२) शरमात्री देवुं; पाछुं [तिरस्कार; धमकी पाडी देव निर्भत्सेन न०, निर्भत्सेना स्त्री० ठपको ; निर्भा २ प० प्रकाशवुं; देखावुं (२) प्रगट थव् निर्मिद् ७ उ० भांगवुं; फाडवुं (२) वींवर्षु (३) प्रगट करवुं ; खुल्लुं पाडवुं **निर्भिन्न** वि० तोडेलुं; फोडेलुं (२) बोंबेजु(३)खोलेलु(४)खुल्लुं करेलुं निर्भुग्न वि० वळेलुं (२) सीधुं (३) एकवो जा साथे खुब दबायेलूं निर्भेद पुं० भाषातुं, फोड़बुं के फाडबुं ते (२) चीरो; फाट (३) खुल्लुं के प्रगट करी देवूं ते (४) नाश निर्भोग वि० भोगमां आसक्ति विनान् निर्मक्षिक वि० माखो विनानुं (२) दखल विनानुं; एकांत निर्मय पुर, निर्मथन नर्वे वलोववुं ते (२) घसवृंते (३) विनाश

निर्मद वि॰ मदमत्त नहि तेवुं; शांत (२) गर्विष्ठ नहि तेवुं; नम्र **निर्मम** वि०ममतारहित; विरक्त (२) निःस्वार्थः; निःस्पृह निर्मर्याद वि० अनंत; अमाप (२) मर्यादानुं उल्लंघन करनारुं; दुष्ट; पानी (३) उद्धत; नियंत्रण विनानुं निर्मल वि० स्वच्छ; शुभ्र (२)निष्पाप (३) तेजस्वी; प्रकाशित **निर्मेश् १,९** प० मंथन करवुं; दलोववुं (२) घसीने अग्नि उत्पन्न करवो (३) मारबुँ; कृटवुँ (४) पूरेपूरो नाश करत्रो निर्मा ३ आ०, २ प० निर्माण करवु; बांधबुं; रचवुं (२) वसाववुं (शहेर) (३) रचर्जु – लखब् (काव्य) निर्माण न० मापवु ते (२) प्रमाण; मर्यादा (३) उत्पन्न करवुं के रचवुं ते(४) सर्जन; सरजेली वस्तु(५) आकार;घाट; रचना (६) ग्रंथ निर्मातृ वि० बनावनारुं; रचनारुं (२) उत्पन्न करनारु निर्माथ पु० जुओ 'निर्मेथ ' निर्मानुष वि० निर्जन निर्माल्य वि० स्वच्छ; निर्मळ (२) न० स्वच्छता (३)देव उपर चडावेली के चडावोने उतारेली वस्तु (फूल इ०) (४) वापरीने काढी नाखेली वस्तु **निमित** वि० बनावेलुं; सरजेलुं; रचेलुं (२) कृत्रिम (३) अनुष्ठित **निर्मक्त** वि० छोडी मूकेलुं, छूटुं करेलुं (२) संसार के तेनी आसक्तिमांथी मुक्त (३) निचोबोने काढेलुं (४) पु० जेणे पोतानी कांचळी तरत ज उतारी नाखी छे तेवो साप निर्मुच्६ प० [निर्मुचिति] छोडी देवु; छुटकारो करवी (२) त्याग करवी **निर्मुल १०** उ० निर्मुळ करवुं **निर्मूल** वि० मूळ विनानुं (२) आधार के प्रमाण विनान् (३) नाबुद करेलुं

निर्मुलन न० समूळ विनाश; निकंदन निर्मृज् २प० लूछी नाखवुं;साफ करवुं **निर्मृष्ट** वि० लूछी नाखेलुं निर्मोक पुं ० मुक्त करवुं ते (२) चामडी ; चामडुं (३) सापनी कांचळी निर्मोक्ष पुं० मुक्ति; छुटकारो निर्यत् १० उ० बदलो लेवो के बाळवो (२)पाछुं वाळवुं (३) क्षमा करवुं (४) बक्षिस करवुं **–प्रे**रक**ः झूं**टबी जव्; खेंची लेव्ं **निर्येत्** वि० बहार नीकळतुं निर्या २ प० बहार जवुं (२) व्यतीत थवुं; पसार थवुं(समय) -प्रेरक० हांकी काढवुं (२)अनुष्ठान शरू करवु निर्याणः न० जवानीकळवृते; प्रस्थान (२) अदृश्य-लुप्त थवुं ते (३) मृत्यू (४) मोक्ष (५) हायीनी आंखनो खूणी (६)पगे बांघवानुं दोरड् (ढोरने) निर्यात वि० बहार नीकळेलुं(२)बाजुए मूकेलुं(धन) (३)पूरुं परिचित **नियतिन** न० पाछुं आपवुं ते (थापण **६०) (२) देवुं पाछुं वाळ**बुं ते (३) वेर लेबुते (४) मारी नाखबुते नियंतित वि० पाछुं आपेलुं निर्यास पु०,न०वृक्ष वगेरेमांथी झरतो रस (२) अर्क निर्यूह पुं० टोच उपरनी धूमटी (२) अर्क (३) खूंटी (४) दरबाजो (५) फूलनो कलगी (६) कबूतर वगेरेने बेसदा भीतमां रखातुं लाकडुं **निर्योग** पुं० पोशाक; शणगार (२) गायो बांधवानुं दामण निर्योगक्षेम वि॰ अप्राप्तनी प्राप्ति अने प्राप्तनी रक्षानी इच्छामाथी मुक्त ; कंई मेळववा-साचववानी भाजगड विनान् **निर्रुक्षण** वि० शुभ लक्षणो विनानुं (२) अगत्यनु नहि तेवु; तुच्छ (३)

रंगीन पट्टा के चाठां विनानुं;सादं (४) पारखीन शकाय तेवुं **निर्लक्ष्य** वि० अदृश्य **निर्लंडज** वि० शरम विनान् **निर्लुंडन** न० लूंटव ते; खेंची लेव ते निर्वचन वि० चूप (२) दोपरहित; अनिद्य (३)न० प्रसिद्धि; स्थाति (४) व्युत्पत्ति (५) प्रशंसा **निर्वचनम्** अ० चूपकीथी;बोल्या विना **निर्वेप् १** प० छाटवुं; रेडवुं (२) वेरवुं(बीज)(३) अर्पण करवुं(४) पितृओन् तर्पण करव् **निर्वेषण** न० पितृतर्पण करवुं ते (२) अपेण करवुं ते (३) बक्षिस; दान **निर्वर्ण**् १० उ० निहाळीने जोबुं **निर्वस् १** प० बहार के परदेश वसवुं (२)वसवाटनो समय पूरो करवो –प्रेरक० देशनिकाल करवुं **निर्वह १** प० पार पडवुं; सफळ थ**वुं** (२)पूरुं थर्बु (३)-थी निर्वाह करवो *−*श्रेरक० पूर्ंकरवुं;पार**पाड**वुं(२) व्यतीत करवुं (समय) निवंहण न० अंत;समाप्ति (२) छेवट सुधो नभाववुं ते (३) नाटकना वस्तुने कटोकटी उपर के छेवटनी भूमिका उपर लाववुं ते (नाट्य०) निर्वा २ प० फूंकबूं; पवन नाखवो (२) टाढा थर्नु; टाढा पडवु (३) फूंक मारीने ओलबी नाखबु; बुझाई जबूं (४)शांत पडवुं – थवुं निर्वाच्य वि० कहेवाने अयोग्य (२) अर्निद्य; दोषरहित **निर्वाण** ('निर्वा' नुं भू० कृ०) वि० ओलवी नाखेलुं (२) मुक्त (३) मृत (४) आथमेलुं (५) शांत ययेलुं – पडेलुं (६) न० बुझाई जवुं ते (७) अदृश्य थवं ते (८) मृत्यु (९) अंतिम मुक्ति (१०) संपूर्ण शांति - तृप्ति

निर्वात वि० पदन वगरनु **निर्वाद** पुं० निदा (२) लोकापवाद; आळ (३) अफवा (४) वादविवादनो अंत आववो ते निर्वाप प्०तर्पण; श्राद्ध निर्वापण न० तर्पण; श्राद्ध बक्षिस; दान(३)ओलवी नाखवुं ते (४) बीज विखेरवां के वाववां ते (५) र्शात के ठंडुं पाडवुं ते (६)नाश ; वध निर्वापयित् वि० ओलवी नाखनाएं (२)ठेंड् पाडनारुं;शांत करनारुं निर्वापित वि० ओलवी नाखेलुं (२) ठंडुं पाडेलुं (३) वध करेलुं निर्वास पुं०, निर्वासन न० देशनिकाल करवुं के थवुंते (२) वध; कतल **निर्वाह** पुं० जुओ 'निर्वहण' निविकल्प वि० कोई विकल्प के शंका न होय तेवुं (२) ज्ञाता-ज्ञेय-ज्ञान-ना भान विनानुं (समाधि) निविकल्पम् अ० अःनाकानी विना निविकार वि० विकार के फेरफार विनानुं (२) उदासीन; निःस्पृह निविचार वि० अविचारी निविचारम् अ० अविचारीपणे **निर्विष्टन** वि० विष्टन के हरकत विनान् **निविण्ण** ('निविद्' नुं भू० कृ०) वि० खिन्न; कंटाळेलुं (२) दःखित; शोकग्रस्त निविद् ४ आ० –थी कंटाळव् निविद्ध वि० घवायेलुं; हणायेलुं (२) एकबीजाथी छूटुं पडेलुं **निविमर्श** वि० अविचारी **निर्विवर** वि० छिद्र के अवका**श वि**नानुं (२) गाढू विनान् निविवाद वि० विरोध के तकरार **निविश् ६** प० भोगववुं; अनुभवव (२) शणगारवं (३) परणवं निविशंक वि० शंका के भय विनानं

निविशेष वि० भेद के तफावत विनानुं (२) तुल्य; समान निविशेषम्, निविशेषेण अ० तफावत कर्या विना; समान रीते **निविषय** वि० पोताना **घ**र के उचित स्थानमांथी हांकी कढायेलु निविष्ट वि० भोगवेलुं; अनुभवेलुं (२) परणेलुं (३) पामेलुं; पहोंचेलुं (४) पेठेलुं (६) बेठेलुं; पडाव नाखेलुं निर्वोर्ध वि० निर्बळ; पराक्रमहीन निर्वे ५ उ० सुख पामवुं; तृप्त थवुं निर्देत् १ आ० समाप्त थवुं; अंत आववो (२) बनव्; थव् −प्रेरक० सिद्ध करवुं;समाप्त करवुं निर्वृत वि० सुखी; स्वस्थ; निश्चित; संतुष्ट (२) समाप्त निर्वृति स्त्री० शांति;तृप्ति;सुख(२) समाप्ति (३) नाश; मृत्यु (४) मोक्ष निर्वृत्त वि० सिद्ध; समाप्त (२) मृत **निर्वृत्तमात्र** वि० तरतमा ज पूरु थयेलुं निर्वृत्ति स्त्री० सिद्ध थवं – समाप्त थवं ते (२) फळ; परिणाम (३) —थी निवृत्त थवुं के दूर रहेवुं ते (४) मोक्ष निर्वेद पुं० खेद; कंटाळो; निराशा (२) दुःखः; शोक (३) मानभंग (४) विरक्ति; वैराग्य निर्वेर वि० वेररहित **निर्व्यपेक्ष** वि० निःस्पृह; उदासीन निर्व्यलीक वि० दंभ के जूठ विनानुं **निर्व्यंजक** वि० प्रगट – खुल्लुं करनारे निर्व्यंजन वि० दंभ वगरतुं; प्रमाणिक **निरुपांज** वि० निष्कपट; (२) छळ के बनावट विनानुं (३) पराऋमथी मेळवेलुं निव्यापार वि० चेष्टा के प्रवृत्ति विनानुं (२) बेकार; कामकाज विनानुं निर्व्युट वि० पूर्ण करेलुं; निष्पन्न करेलुं (२) वधेलुं; विकसेलुं (३) साबित

करेलुं; बतावी आपेलुं (४)त्यागेलुं; पड**र्सु** मूकेलुं (५) व्यूहरचनामां गोठ-वायेलुं के गोठवेलुं (६) काढी मूकेलुं; धकेली काढेलुं निर्ब्यूह पुं० खोटी (२) एक हथियार (३) टोच उपरनी घूमटी निर्वीड वि० निर्लंज्ज; घृष्ट निर्हाद पु० मळत्याग करवो ते निर्हार पु० लई जबुते; दूर करवुते (२) खेंनी काढनुते (कांटो इ०) (३) निर्मूळ करवुं ते (४) शबने अग्निदाह माटे बहार लई जबूं ते (५) खानगी द्रव्यसंचय करवो ते (६) मळ-मूत्रनुं विसर्जन करवूं ते निर्ह्ह १ प० बहार खेंची काढवुं (२) हरण करवुं (३) शबने बाळवा बहार काइबुं (४) दूर करबुं (दोष इ०) **निर्ह्वा**द पुं० ध्वनि ; अवाज (२)पक्षी-ओनो कलरव निर्ह्नी, निर्ह्नीक वि० निर्लज्ज; बेशरम **निलय** पुं० संतावानी जगा (२) निवासस्थान; घर (३) विनाश (४) आथमवुं ते **निलयन** न० निवासस्थान; निवास (२) अध्यय स्थान; आशरो निली ४ आ० चौंटवं (२) उपर बेसवं ; उपर ऊतरवुं (३) संतावुं; भरावुं निलीन वि० संतायेलुं; अदृश्य थयेलुं (२) भळी गयेलुं; एकरूप थयेलुं(३) भेरायेलुं (४) पूर्ण (५) बदलायेलुं; रूपांतर पामेलुं (६) नाश पामेलुं निबप् १ प० वाववुं के विखेरवुं (बीज) (२) पितृतर्पण करवुं (३) वधेरवुं (प्राणी) निवपन न० पितृतर्पण करवृते (२) वावतुं -- वेरब्ं -- विखेरवुं ते **निवर्तन** न० पाछु आववुं ते (२) पाछुं बाळ बुंते (३) न बनवुं के थमूं ते (४) --मांथी विरमवुं ते

निवहंण वि० जुओ 'निबहंण' निवस् १ प० रहेवं (२) मोजूद होवं (३)मुकाम करवो (४)२ आ० कपडाँ पहेरचां के बदलवां **निवसन** न० निवासस्थान (२) वस्त्र निवह १ उ० पासे लई जवुं के लाववुं (२ॅ)ऊंचकव्ं; बहन करव्ं निबह वि० उत्पन्न करतुं; निपजावर्तुं (२) पुं० समूह; ढगलो; जथो **निवात** वि० पवनना झपाटा विनानुं (२) त० वायुरहित स्थान (३) वायुना झपाटा न होवा ते; शांति; निष्कंपता (४) मजबूत बखतर निवाप गुं० वाववानुं धान्य; बियावुं (२) पितृतर्पण (३) अर्पण ; बक्षिस निवापांजलि पुं०, निवापोदक न० पितृओने पाणीनी अंजलि अर्पदी ते निवार पुं०, निवारण न० निवारव् ते; रोकव् ते (२) अटकायत ; डखल निवास पुं० रहेवुं ते (२) निवास-स्थान (३) मुकाम करवो ते (४) वस्त्रे निवासन न० निवासस्थान (२) मुकाम करवो ते [पहेर्युं होय तेवुं नियासिन् वि० रहेतुं; वास करतुं(२) **निविद् २** प० (मुख्यत्वे प्रेरक रूपे) निवेदन करवुं; जणावबुं(२)जाहेर करवुं; दर्शाववुं (३) नजराणुं करवुं (४)-नी संभाळमां सोंपव् निविज्ञ ६ आ० बेसवुं (२) अटकवुं; पडाव नाखवो (३)--उपर स्थिर करवृं (४)प्रवेश करवो(५)तल्लीन थर्बु (६)परणवु(७)नीचे ऊतरवुं –प्रेरक० स्थिर – एकाग्र (भनने) (२) मूकवुं (३) बेसाडवुं; स्थापित करवुं (४) परणाववुं (५) पडाव नाखवो (६) चीतरबुं (७) लखवुं (८) सोंपवुं **मिविष्ट** वि० बेठेलुं(२)तल्लीन(३) पडाव नाखेलुं (४) प्रवेशेलुं

निवृ ५, ९, १ उ० घेरी लेवुं -प्रेरक० निवारवुं;रोकवुं निवृत् १ आ० पाछुं फरवुं (२) नासी जवुं (३) विमुख थवुं (४) अटकवुं (५)अंत आववो; पूरुं थवुं निवृत ('निवृ'नं भू० कृ०) वि० चारे बाजुथी घेरायेलुं (२) निवारेलुं; अटकावेलुं(३)न० बुरखो;पडदो नियुत्त ('निवृत् 'नुं भू०कृ०)वि० पाछुं फरेलुं(२)चाल्युं गयेलुं(३) –मांथी विरमेलुं (४) पूरुं – समाप्त थयेलुं निवृत्तकारण वि० काई ज हेतु के प्रयोजन न रह्यां होय तेवुं निवृत्तयोदन वि० जेनी जुवानी पाछी आंबी छे तेवुं [विनान् निवृत्तलौल्य वि० इच्छा के लोलुपता निकृत्तहृदय वि० विमुख थयेलुं (२) अनुकपावाळ बनेल् निवृत्ति स्त्री **०** पाछुं फरवुं ते (२) अंत ; वंध पडवुं ते (३) प्रवृत्ति छोडी देवी ते(४) विमुख थवुंते **निवेदन** न० जणाववुं ते (२) जाहेर करवुं ते(३)रजूआत(४)अर्पण करवुंते निवेद्य न० नैवेद्य निवेश पुं ० प्रवेश (२) मुकाम करवो ते; प**डा**व (३)निवासस्थान (४) घेराव; विस्तार (५) मूकवुं ते (६) परणवुं ते (७) नगर स्थापवुं ते निवेशन न० प्रवेश (२) निवासस्थान (३) लग्न (४) नगर वसाववुंते (५) छावणी ; पडाव (६) शहेर निज्ञ्स्त्री० रात्री ('निशा'ना द्वितीया द्वि०व०ना रूप पछी विकल्पे आवे छे) निशठ वि० निष्कपट **निज्ञक्द** वि० न बोलतुं; चूप निशम् ४ प०, १० उ० सांभळवुं; घ्यान आपवुं (२) निहाळवुं ; अवलोकवुं निशास्त्री० रात्रि (२) स्वप्न

निशाकर प्० चंद्र निज्ञागृह न० सूवानो ओरडो निशाचर पुं० राक्षस (२) चोर निशाचरी स्त्री० राक्षसी (२) अभि-सारिका (३) वेश्या निशाट, निशाटन पुं० राक्षस (२)धुवड **निशात** वि० तीक्ष्ण; घारवाळ निशात्यय पुं० रात्रिनो अंत – परोढ निशानाथ पुं० चंद्र **निशामुख** न० सायंकाळ **निज्ञाबिहार** पुं० निज्ञाचर; राक्षस **निशांत** न० घर; निवास (२) अंतःपुर (३) पुं० परोढ निशित वि॰ धारवाळं; तीक्ष्ण निशोध पुं मध्यरात्रि (२) रात्रि; सुवानी समय निशुभ, निशुंभ ६ प० [निशुंभति] (पग तळे) रोळी नाखव् निशुंभ पुं० वध ; कतल (२) (धनु-ष्यने) वाळवं के भागवं ते **निशुंभन** न० वघ; कतल निञ्चकम् अ० पूरेपूरुं; तमाम निश्चय पुं० तपास; खातरी (२) निर्णय ; ठराव (३) संकल्प ; लक्ष्य **निश्चर् १** प० बहार नीकळवुं (२) उत्पन्न थवुं निश्चल वि० अचळ; स्थिर **निश्चाय** पुं० समुदाय **निञ्चायक** वि० निर्णायक **निश्चि५** उ० निश्चय करवो निश्चित वि० नक्की करेलुं (२) न० निश्चय; निणय **निश्चितम्** अ० नक्की करीने ; निःसंशय .<mark>निश्चित</mark> वि० चिता विनानुं (२) अविचारी निश्चेतस् वि० उन्मत्तः; पागल निश्चेष्ट वि० चेष्टा विनानु; स्थिर

(२) शक्तिहीन; दूबळ्

निरुच्युत् १ आ० टपक**वुं**; झरवुं निश्रम पु० सतत श्रम **निश्रयणी** स्त्री० निसरणी निश्राण पुं० धार काढवानो पथरो (२) हथियार (तरवार) निअणि(-णी) स्त्री० निसरणी निश्वस् २ प० श्वास अंदर लेवो (२) निसासी नाखवी निश्वास प्० निसासी **निषक्त** ("निषंज्'नुंभू०कृ०) वि० नाखेलुं; वळगाडेलुं (२) प्रतिबिंबित थयेलुं (३) आसर्वत निषण्ण ('निषद्'नं भू०कृ०) वि० बेठेलुं; अढेलीने बेठेलुं (२) खिन्न निषद् (नि + सद्) १ प० निषीदति बेसवुं; अढेलीने बेसवुं (२) खिन्न **थवुं**; निराश थवुं (३) रहेवुं (४)दुःखी थवं [खाटलो **निषद्या** स्त्री० हाट; बजार (२) नानो **निषध** पुं० नळराजाना देशनुं नाम (उत्तरनो कुमाऊं प्रदेश) निषंग पुं० आसक्ति; वळगवुं ते (२) संबंध (३) भाष् निषंज्(नि+संज्) १ प० [निषजति] वळगवुं; चोटवुं (२) आसपास वींटळावुं (३) प्रतिबिंब पडवुं(४)आसक्त थवुं निषाद पु॰ पारधी, माछीमार वगेरेन् काम करनार एक आदिवासी जात (२) चांडाल (ब्राह्मण अने शूद्रीयी जन्मेलो) (३) संगीत सप्तकनो छेल्लो के सातमो स्वर **निषादित** वि० बेसाडेलुं **निषादिन्** वि० बेठेलुं; आडुं पडेलुं (२) प्० महावत **निषिक्त** वि० सींचेलु (२)रेडेलुं निषिच् (नि+सिच्) ६ प० [निषिं-चिति सिचन करवुं; रेडवूं; छांटवुं (२) वीर्येसिचन करवं

निषिद्ध वि०अटकावायेलुं ; मना करायेलुं **निषिद्धि** स्त्री० मनाई निषिध् (नि+सिध्) १ प० अटकाववुं; वारवुं (२) मना करवी (३) सामुं थवुं; विरोध करवो | हणव् **निष्द्** (नि+सूद्) **१०** आ० मारतुं; **निष्दन** न० मारी नाखब ते (२) प्० [(बीर्य)सिचव ते भारनार निषेक पृं० छांटवुं ते; रेडवुं ते (२) निषेध पु० मनाई (२) इन्कार **निषंधिन्** वि० निवारतारुं; अटकावनारुं (२) पाछु पाडी देनारुं; –थी चडियातुं निषेव् (नि+सेव्) १ आ० सेववुं; आचरवु(२)भोगवबु (३)रहेवुं(४) उपयोग करवो (५) अनुभववुं **निषेवण** न०, **निषेवा** स्त्री० सेववुं ते (२)पूजा (३)अभ्बास ; परिचय (४) उपभोग; उपयोग(५)आसक्ति(६) विसवाट करायेलुं **निषेवित** वि० सेवायेलुं(२)रहेबायेलुं; **निष्क पुँ**०, न० सोनानो सिक्को (२) हार;कठी **निष्कपट** वि० कपट वगरनुं; सरळ निष्करुण वि० दया वगरनुं; ऋर निष्कर्षपु० सार; तात्पर्य (२) न० कर लेवा प्रजा उपर जुलम करवो ते निष्कर्षण न० खेंची काढवुं ते (२) निर्णय तारववी ते **निष्कल् १०** प० दूर हांकी काढवुं निष्कल वि०क्षीण; दुर्बळ (२) अव-यव – भाग विनानुं (३) बंध्य ; षंढ निष्कल्मष वि० डाघ के कलंक विनान् **निष्कस्** ⊷प्रेरक० हांकी काढवु; देश-निकाल करवुं(२) खेंची काढवुं **निष्कंटक** वि० कांटा वगरनुं (२) शत्रु विनानुं;भय के त्रास विनानुं निष्कंप वि० निश्चल; स्थिर निष्काम वि० कामना विनानुं(२) फळनी इच्छा विनानुं (३) निःस्वार्थ

निष्कारण वि० हेतूरहित; कारण वगर-नुं (२) निरुपयोगी (३) निःस्वार्थ निष्कारणम् अ० निरर्थक; वगर कारणे निष्कालिक वि० जेनुं आयुष्य पूरुं थवा आव्युं छे ते**बुं**(२**)**अजेय निष्कासित वि० काढो मूकेलुं; हांकी काढेलूं (२) बहार नीकळेलुं (३) मूकेलुं ; स्थापेलुं निष्किचन वि० गरीब; दरिद्री निष्कुट पुं० घर पासेनो बाग (२) अंतः-पुर (३) बारगुं; दरवाजो निष्कुलाकृ ८ उ० छाल उतारवी के काढो नाखत्री (२) निर्वेश करवुं निष्कुलीन वि० हलका कुळनु निष्कुष ९ प० फाडवुं; चूंथवुं (२) खेंची काढवुं (३) छोतरां काढवां निष्कुषित वि० खेंची काढेलुं(२)फाडी नाखेलुं(३)काढी मूकेलुं(४) खबाई गयेल **निष्कूज** वि० चूप; अवाज न करतुं निष्कृट वि० दयाहीन; कूर निष्कु ८ उ० दूर करवे; काढी मूकवुँ (२)टुकडा करवा निष्कृति स्त्री० प्रायश्चित्त (२) उप-कारनो बदलो बाळवो ते (३) माफी; क्षमा (४) **ध्**तकारवं ते निष्कृष् १ प० खेंचत्रुं; खेंची काढवुं (२)छीनक्षे लेबुं(३)फाडबुं;चोरबुं निष्कोषणक न० दांत खोतरवानी सळी निष्कम् १ उ० जत् रहेर्तुः, विदाय थवुं (२) बहार नीकळवूं (३) अटकवुं; बंध थब् **निष्कम** पूं०, निष्**कमण** न० बहार नीकळ दुते (२) विदाय थवुते निष्कय पुं० मूल्य; किंमत (२) बिक्षस (३) बदलो वाळ**वो** ते (४) खरीदी (५)वेचाण(६)अदलोबदलो निष्कांत वि० बहार गयेलु; विदाय थयेलुं(२)ऊपसी आवेलुं;ऊठेलुं

निष्पत्ति निष्किय वि० अकिय(२)यज्ञादि किया न करनारुं (३) तत्त्वज्ञानी (सन्यासी) (४)न० परब्रह्म निष्टन पु० निसासी; दुःखनी उद्गार निष्टप् १ प० तपावतु (२) शेकवुं; तळवुं (३) घसीने साफ करवुं निष्टानक पुं० गर्जना; घोंघाट (२) **दुःखन**ो ऊंहकार **निष्टाप** पं० सहेच तपावबं ते निष्ठ वि० (समासने अंते) –उपर के –मा रहेलु के आवेलु (२)–ना संबंधी (३) –मां आसक्त; –मां रत; –मां तत्पर (४) –मां श्रद्धावाळ् (५) उत्पन्न करनार्ह निष्ठा स्त्री० अवस्था; स्थिति (२) पायो; आधार (३) स्थिरता; दृढता (४) आसिन्त; भिन्त; श्रद्धा (५) परिषाम; समाप्ति (६) कुशळता; निष्णता(७)मत्य निष्ठान न० चटणी; अथाणुं (२) अधिष्ठान वगेरे उमेरेलुं निष्ठानित वि० स्वादिष्ट करवा मसाला **निष्ठापित** वि० पूर्व ~ सिद्ध करेलुं **निष्ठित** वि० –मां के –उपर आवेलं (२) निष्ठावंत (३) पूर्व करेलुं (४) स्थिर (५) निश्चित करेलु **निष्ठिव् १,** ४, प० बहार काढवुं(२) नि० धुकवृते थ्कव् निष्ठीव पु॰, न॰, निष्ठीवन, निष्ठीवित **निष्ठुर** वि० कूर (२) कठोर **निष्ठचूत** वि० बहार काढेलुं – फेंकेलुं (२) थूंकेलुं (३) उच्चारेलुं (४) न० थूंक; थूंकवुं ते निष्ण, निष्णात वि० प्रवीण; चतुर (२) पार पाडेलुं (३) कबूलेलुं निष्पत् १प० बहार नीकळवुं; ऊडवुं निष्पत्ति स्त्री० उत्पत्ति (२) परिपाक (३) पूर्णता; समाप्ति

निष्पत्राकृ ८ उ० जोरथी बाण मारवं (जेयी बाग पीछां सुत्री आरपार नीकळी जाय) (२) खूब वेदना थाय तेम करवु **निष्पद् ४ आ० –**मांथी नीकळवुं(२) जन्मबुं; उत्पन्न थर्बु निष्पन्न वि० उत्पन्न (२) सिद्ध; समाप्त **निष्परिकर** विं० तैयारी वगरनुं **निष्परिग्रह** वि० परिग्रह के मालमत्ता विनातुं (२) पुं० तपस्वी ; त्यागी निष्पर्याय वि० कम विनान् **निष्पंक** वि० कादव विनानु; स्वच्छ निष्पंद वि० स्थिर; कंपरहित (२) बुं० स्तेहनो गांठ (३) समूह **निष्पाप** वि० पापरहित; निर्दोष निष्पिष् ७ प० भूको करवो; दळवुं (२) घसाबुं; छोलाबुं (३) हाथ चोळवा (४) दांत पोसवा निष्पोडन न० दबाववुं ते; निचोववुं ते **निष्योडित** वि० दबावेलुं; निचोवेलुं निष्पूर्त न० बाव-सूबा, धर्मशाळा वगेरे बंधाववां ते निष्पेब पुं०, निष्पेषण न० खूब दबाववुं ते (२) कचरी नाल बुंते (३) दळी नाख र ते (४) अफाळवुं के पछाडवुं ते निष्प्रतिकार, निष्प्रतिक्रिय वि० उपचार न थई शके तेब्(२) निविध्न; रुकावट विनान निष्प्रतिध वि० रुकावट विनानुं निष्प्रतिद्वंद्व वि० शतु के हरीक विनान **निष्प्रतीकार** वि० जुओ 'निष्यतिकार' निष्प्रत्याचा वि० निराश; हताश निष्प्रस्यह वि० विघन के इकावट विनान् **निष्प्रभ** वि० निस्तेज (२) कमजोर निष्प्रयोजन वि० कारण वगरतुं (२) प्रयोजन विनातुं (३) निरुपयोगी निष्प्राण वि० मृत्यु पामेलु; निर्जीव (२) नमालु; निर्बळ

निष्फल वि० फळ विनानुं (२) व्यर्थ; फोगट (३) निरर्थंक ; नकाम् (४) वेध्य **निष्यंद** पुं० झरवूं – टपकवुं ते (२) **स्ना**व; प्रवाह; टपकतो रस (३) परिणाम **निस्** अ० क्रियापद पूर्वे —थी दूर, —थी बहार, खातरी, पूरेपूर होवापणु, भोग, उल्लंघन वगेरे अर्थमां वपराय **छे** (२) भातु-साधित नहि एवां नामो पहेलां –थीं बहार, –थीं दूर, विनानुं, रहित --एवा अर्थमां वप-राय छे (स्वरो अने घोष व्यंजनो पूर्वे 'निस्'ना 'स्'नो 'र्' थई जाय छे; ऊष्माक्षरो पहेलां तेनो विसर्ग थई जाय छे; 'च्', 'छ' पहेलां 'श्' शाय छे अने 'क्' तथा 'प्' पहेलां 'ष्' थाय छे) **निसर्ग पुं**० आपी देवुं ते;बक्षिस (२) मळत्याग करवी ते (३) तजी देव ते (४) सृष्टि (५) स्वभाव ; प्रकृति निसर्गज वि० कुदरती; स्वभावसिद्ध **निसर्गनिपुण** वि० कुदरती रीते ज कुशळ निसर्गभिम्न वि० कुदरती रीते ज जुदुं निसर्गसिद्ध वि० जुओ 'निसर्गज' **निसूदन** वि० नाश करतुं (२) न० हिंसा; वब सोंपबू (३) आपी देव **निसृज् ६** प० छूटुं करवुं; छोडवुं(२) निसृष्ट वि० आपेलुं (२) तजेलुं (३) परवानगी आपेल निसुष्टार्थ गु० एलची; दूत; वकील निसृष्टार्थदूती स्त्री० नायक-नायिकाना मनोरथ जाणी ते सफळ थाय तेवं कार्य पोतानी जाते ज करनारी **निस्तमस्क** वि० अंधारा विनानं ; प्रकाशित (२)पापरहित

निस्तल वि॰ तळिया विनान् (२)

निस्तंतु वि० संतान विनानुं (२) ब्रह्म-

निस्तंद्र (-द्रि) वि० आळसु नहि तेव (२)

बर्तुंळाकार (३) चल; हालत्

[चपळ; नोरोगी

निस्तार पुं० पार करवुं ते; ओळंगवुं ते(२) – मांथी बचवुं के छूटवुं ते(३) मोक्ष (४) देवं चुकववं ते (५) उपाय निस्तिमिर वि० जुओ 'निस्तमस्क' **निस्तीणं** वि० बचावेलुं (२) पार करेलुं (३) पूर्ण करेलुं निस्तुष वि० फोतरा विनान (२) खोडखांपण विनान्ं (३) साफ*;* स्वच्छ निस्तृ. १ प० पार करवुं; ओळंगी जवुं (२) पसार करवं (समय) (३) नासी छूटवुं; -मांथी बचवुं प्रायश्चित्त करवुं; साटुं वाळवुं निस्तेजस् वि० तेजोहीन;तेज विनानुं निस्त्रप वि० शरम विनानुः; निर्लज्ज निस्त्रिंश वि॰ त्रीसथी वधु(२)कूर; दया विनानुं (३) पुं० तरवार **निस्त्रेगुण्य** वि० सत्त्व-रजस्-तमस् ए ंत्रण गुणोधी पर थयेलुं निस्पंद वि० चेष्टारहित; स्थिर (२) पुं भूजव ते; कंपव ते निस्पृह वि० स्पृहा-इच्छा वगरनुं निस्पंद पुं० जुओ 'निष्यंद' **निस्यंदिन्** वि० झमत्ं; झरतुं; टपकतुं निस्नव, निस्नाव पुं० प्रवाह; झरणुं(२) भातनुं ओसामण निस्वन पुं०, निस्वनित न०, निस्वान पुं० शब्द ; अवाज निहत वि० मारी नाखेलुं; हणेलुं (२) –मा ठोकेल के खोसेल **निहन् २ प० हण**र्यु; नाश करवो (२) प्रहार क**रवो** ; मारवुं (३)जीतवुं (४) वगाडवुं (ढोल) (५)दूर करवुं निहार पुं० जुओ 'नीहार' निहित वि० मूकेलुं; स्थापेलुं (२) अनामत मूकेलुं; सोंपेलुं निहीन वि० नीच; अधम **निह्नव** पुं० नामुकर जव्ंते (२) छुपावव ते (३) दरगुजर करवु ते

निह्न २ आ० छुराववु (२) नामुकर जबु **निर्ह्नु**त वि० छुपावेलु (२) नामुकर [छुपावबु ते निह्नति स्त्री० नामुकर जवुं ते (२) निज् २′आ० धोवुं; स्वच्छ करवु **निद् १** प० निदाकरवी; वखोडवु **न्दिक** वि० निदा करनार्ह; वखोडनार्ह निंदन न०, निंदा स्त्री० बदगोई; वगोवणी (२)ठपको **निदित** ('निद्' नुभू० कृ०) वि० निंदा करायेलु (२) निषद्ध (३) नीच; अधम [निषिद्ध **निद्य** वि० निदा करवा योग्य (२) **निष** पुंच लीमडो निस् २ आ० चुंबवुं निःक्षत्र, निःक्षत्रिय वि० क्षत्रियो विनान् निःक्षि**प्**६प० जुओ 'निक्षिप्' निःक्षिप्त वि० फेंकेलुके मोकलेलुं(२) पसार करेलुं (समय) निःक्षेप पुं० फेंकी देवुं ते (२) पसार करवृते (समय) (३)लृछवृते (आंसु) नि:शब्द वि० अवाज विनान् **निःशस्त्र** वि० शस्त्र विनानुं **निःशंक** वि० भय के शंका विनान् निःशंकम् अ० शंका के भय विना निःशिष् –प्रेरक० पूरेपूर् नाबूद करवु (२) कशुं शेष न राखवूं निःशेष वि० संपूर्णः; पूरेपूरुं निःशेष्रम्, निःशेषेण अ० पूरेपूरुं होय तेम निःश्रयणी, निःश्रयिणी स्त्री० निस-रणी; दादर निःश्रोक वि० शोभा के सौंदर्य विनानुं (२) कमनसीब ; दुःखी निःश्रेणि (-णी) स्त्री ० जुओ 'निःश्रयणी' निःश्रेयस न० मोक्ष निःश्वस् २ प० निसासो नाखवो (२) सिसकारो भरवो (३) (हाथीए) बरा-डवुं (४) श्वास लेवो

निःश्वसन, निःश्वसित न०, निःश्वास पुं० निसासो (२) श्वास बहार काढवो ते **निःसत्त्व** वि० सत्त्वहीनः; निर्वेळ (२) होन (३) मिथ्या; भासरूप (४) अविद्यमान **िनःसपत्न** वि० शत्रुके हरीफ विनानुं नि:समम् अ० कसमये (२) दुष्टताथी निःसरण न० बहार नीकळवुं ते (२) मरण (३) निर्वाण ; मोक्ष (४) उपाय **निःसरणि** वि० उपाय के मार्ग विनानं **निःसह** वि० थाफेलु(२)असह्य निःसंग वि० संग के संबंध विनानुं (२) नि:स्पृह (३) नि:स्वार्थ (४) निविध्न **निःसंचार** पु० हरवु-फरवु नहि ते **निःसंज्ञ** वि० बेहोश **निःसंशय** वि० संशय वगरनुं; नक्की निःसंस्कार वि० असंस्कारी निःसाधारम् अ० टेका के आधार विना **निःसार** वि० सत्त्वहीन (२) तुच्छ (३) पुं० बहार जबूं ते (४) समूह निःसारण न० बहार काढवुते; हांकी काढवं ते (२) घरनी बहार नीकळ-वानो मार्ग | काढेल निःसारित वि० काढी मूकेलुं; हांकी निःसीमन् वि० अमर्योदः; अपार निःसूत्र वि॰ दोरा विनानुं(२)आधार के मदद विनानुं वहेवु ; झरवु निःसु १ प० बहार नीकळवुं (२) **निःस्नेह** वि० चीकट के भेज विनानुं (२)लागणी विनान् निः**स्पर्श**वि० कर्कशः कठण **निःस्पंद** वि० निश्चलः; स्थिर **निःस्पृह** वि० स्पृहा के दरकार विनानुं **नि:स्रव** पुं० सिलक;बाकी निःस्राव पुं० व्ययः खर्च (२) भातनुं ओसामण (३) बहार वहेवराववु ते निःस्व वि० धनहीतः; गरीव निःस्वन वि० अवाज विनानुं (२) पु० अवाज

निःस्वभाव पुं० गरीबाई; दरिद्रता नी १ उ० दोरवुं (२) लई जवुं (३) पसार करवुं (समय) (४)–स्थितिए पहोंचाडवं (५)तपासीने नक्की करवं नी पुं० (समासने छेडे) दोरनार; मार्गदर्शक; नेता नीका स्त्री० सींचाई माटेनी नहेर नीच वि० नीचुं; नानुं; वामणुं (२) तळेनुं (३) धीमुं (अवाज) (४) अधम ; हलकुं (५) तुच्छ नीचग वि॰ नीचाण तरफ जतुं - वळतुं (नदी) (२) अधम; नीच नीचैस् अ०नीचे;तळे (२)नम्रताथी; नमीने (३) हंळवेथी; धीमेथी (४) नान् - वामण् होय तेम नीड पुं०, न० पक्षीनो माळो (२)पथारी (३) बखोल (४) वाहननो अंदरनो भाग के बेठक (४) आश्रयस्थान नीडक पुं० पंखी (२) माळो नीत ('नी'नुंभू० कृ०) वि० लई जवायेलुं; दोरी जवायेलुं (२) पमा-डेलुं;पहोंचाडेलुं(३)व्यतीत करेलुं नीति स्त्री० दोरवृते (२) वर्तवृते; वर्तन (३) शिष्टता;शिष्टाचार(४) डहापण (५) राजनीति (६) सदाचार नीतिकुशल, नीतिनिपुण वि० राज-नीतिज्ञ (२) शाणुं, डाह्यू **नीतिमत्** वि० राजनीतिज्ञ (२)डाह**ध्**; शाणुं (३) धर्मनीति अनुसरतुं नीतिव्यतिक्रम पु० राजनीति के धर्म-नीतिना नियमनुं उल्लंघन नीतिसंधि पु० राजनीतिनी रीत **नीध्र न**० छापरानो छेडानो भाग नीप वि॰ नीचे आवेलुं; ऊंडे आवेलुं (२)पुं०पर्वतनीतळेटी (३) एक जातनुं कदंबवृक्षः तेनुं फूल (चोमासा-मां थाय छे) (४) एक राजवंश नीर न० पाणी **नीरक्त** (निर्∔रक्त)वि० रंग विलानुं;

नीरचर वि० जळचर नीरज (निर्+रज) वि० धूळ विनानुं (२) वासना विनानुं नीरज वि॰ पाणीमां थतुं (२) पुं० वीरणवाळो (३)न०कमळ (४)मोती नीरत (निर्+रत) वि० आसक्त नहि तेवुं नीरद, नीरधर पुं० मेघ; वादळ नीरव वि० (निर्+रव) अवाज विनानु नीरस (निर्∔रत)वि०स्वाद विनानु (२) रस विनानुं (३) निष्फळ ; नकामुं नीरंध्र (निर्+रंद्र)वि० काणां विनानुं (२) खूब नजीक नजीक आवेलुं नीराज् --प्रेरक० चळके तेम करवुं; प्रकाशित करवुं (२) आरती उतारवी नीराजन त०, नीराजना स्त्री० शस्त्रो चळकतां करवां ते (२) आरती **नीरच्** (निर्+रुच) वि० तेज विनानुं; झांख् [रोग) वि० तंदुरस्त नीरुज्(-ज), नीरोग (निर्+रुज्, नील् १ प० नीलुं रंगवुं नील वि० भूषं; इयामल (२) पुं० श्यामल रंग (३) (रामना सैन्यमांनो) एक वानर (४) एक पर्वत **नीलकंठ पुं० मोर** (२) शिव नीलपटल न० काळुं आवरण (२) ऑधळानी आंख उपरनो अंघारपडदो नीलमणि पुँ०, नीलरत्न न० नीलम नीलराजि स्त्री० गाढ अंधारं नीललोहित वि० जांबुडा रंगनुं (२) पुं० शिव **नीलस्नेह** पुं० दृ**ड** स्नेह नीलांजन न० सुरमो (काळो) **नीलि** पुं० गळीनो छोड नीलिका स्त्री ० गळीनो छोड (२)शेवाळ **नीलिमन्** पुं० भूराशः; काळाश नीलिराग पुं० दृढ प्रेम नीली स्त्री० गळीनो छोड नीलोभांड न० गळीनू वासण

नीलीराग पुं० वृढ प्रेम **नीलोत्पल**ं न० नील कमळ नीवार पुं० खेडचा विना ऊगेली डांगर नीवि(-वी) स्त्री० स्त्रीओना वस्त्रनी बूंटीए बळाती गांठ (२) मूळ मूडी **नीहार** पुं० बरफ; हिम(२)धुम्मस; झाकळ (३) मळत्याग नु अ० प्रश्न, वितर्कं, विकल्प, अनुनय, अपमान, पश्चासाप, आदेश – ए अर्थ बतावे (२) प्रश्नार्थं सर्वनामी साथे 'खरेखर'? 'संभवित होई शके'? ए अर्थमां वपराय (३) हवे; तेथी करीने (४)-नी पेठे (५) जलदीथी (६) आजथी मांडीने; हवे पछी **नु**२ प० वखाणवुं; प्रशंसा करवी नुत ('नु'नुंभू० इ०) वि० प्रशंसेलुं नुति स्त्री० स्तुति; प्रशंसा **नुत्त** ('नुद्'नुंभू० कृ०) वि० धके-लायेलुं; प्रेरायेलुं (२) हांकी कढा-येलुं; दूर करायेलुं नुद्६ उ० हांकवुं; आगळ चलाववुं (२) प्रेरवुं; उक्केरवुं (३) दूर करवुं **नुद**िव ० (समासने अंते['])दूर करनार्ह; हांकी काढनारहं नुम्न ('नुद्' नुं भू० कृ०) वि० जुओ नू ६ प० [नुवति] बखाणवुं **नूतन**, नूतन वि० नवुं (२) ताजुं (३) विचित्र; नवाईभरेलु नूनम् अ० खरेखर; चोकस (२) मोटे भागे; घणे भागे (३) हवे; तेथी करीने **नूपुर** पुं०, न० झांझर नृ पुं० माणस (२) जण; व्यक्ति (स्त्री के पुरुष) (३)मानव जाति नृकेसरिन् पुं० चरसिंहावतार नृजग्ध वि० मनुष्यभक्षी **नृत् ४** प० नाच करवो; नृत्य करवुं (२) रंगभूमि उपर अभिनय करवो **नृत्त, नृत्य** न० नाच

नृप, नृपति पुं० राजा नृपनीति स्त्री० राजनीति नृपञ्च पुं० जानवर जेवो माणस **नृपसंक्षय** पुं० राजानो आश्रय नृपात्मज पुं० राजकुंबर नृपात्मजा स्त्री० राजकुंवरी **नृपाल** पु०राजा नृपांगण (-त) न० राजदरबार नृपांश पुं० कररूपे राजाने अपातो भाग (अनाजनो छठ्ठो, आठमो इ०हिस्सो) नृशंस वि० कूर; घातकी (२) न० घातकी कृत्य **नृशंसन** न० कूरता नृषद्, नृसद् स्त्री० बुद्धि नृसिंह पुं० (विष्णुनो चोथो)नर्रीसह अवतार(२)मनुष्योमां श्रेष्ठ नसोम प्रमहापुरुष नृहरि पुं० जुओ 'नृसिंह' नेजन न० घोवुं ते (२) घोबीघाट नेतथ्य वि० दोरवा के लई जवा योग्य नेतृ पुं० नायक; आगेवान(२)गुरु मंत्र न० आंख (२) रवैयानी दोरी; नेतरं(३)रेशमी बस्त्र नेत्रगोचर वि० नजरनी मयोदामा आवेलुं; नजरे पडे तेवुं नेत्रतिसन् वि० आंखने स्पर्शतुं (ऊंघ) नेत्रांजन न० काजळ; आंजण नेत्रोत्सव पुं० जोवी गमे तेत्री सुंदर वस्तु नेदिवस् वि० अदाज करनारुं नेदिष्ठ वि० सौथी वधु नजीक नेदीयस् वि० वधुपासे नेपथ्य न० आभूषण; शणगार (२) वस्त्र; पहेरवेश (३) नटनो पहेरवेश (४) नटो वस्त्रपरिधान करे ते स्थळ (पडदा पाछळ) **नेपभ्यविधान** न० नटोनां वस्त्राभूषण वगेरेनी गोठवण नेमि पुं॰ पैडानो घेराव(२)धार(३)

नेमिवृत्ति वि० –ता चोले चीले चालतुं नेमी स्त्री० जुओ 'नेमि' नेय वि० दोरी जवा योग्य; दोरी जवाय नेष्ट वि० नहि गमतुं (२) अप्रिय (३) अनिष्ट (४) अनिष्टनुं साधन **नेष्ट्र** पुं० माटीनुं **ढेफू** नैक वि० अनेक (२) विविध (३) एक पण नहि तेबुं नै मिटिक वि० नजीकनुं (२)पुं० भिक्षु नेकटच न० निकटता; समीपता **नैकथा** अ० बहु प्रकारे; अनेक रोते नेकशस् अ० घणी मोटी संस्यामां (२) [ऋ्र; घातकी वारवार नैकृतिक वि० दुष्ट; कपटी;नीच(२) नैगम वि० वेद के शास्त्रने लगतुं(२) प्० वेदनुं तात्पर्य बतावनार (३) उपाय; युक्ति (४) वेपारी (५) शहरनो माणस **नंज** वि० पोतान्; आत्मीय नैतल न० सात पाताळोमांन् एक (वितल) ने**तलसम्बन्**न०यम नैत्यक न० (रोज धरावातुं) नैवेद्य नैदाघ पुं० उनाळो मेंद्र वि० निद्राजनक (२) ऊंघे भरायेलुं (३)बिडायेलुं (पांखडीओनी जेम) नेपुण (-ण्य) न० निपुणतः; क्शळता नैभृत्य न० नम्रता (२) गुप्तता (३) चूपकीदी नमय पुं० वेपारी नेमित्त वि० निमित्त (भविष्य-सूचक चिह्न)संबंधी (२)पुं० ज्योतिषी नैमित्तिक वि० प्रसंगोपात्तः; आवुषंगिक (२) प्०भविष्य भाखनार नैमिष वि०क्षणिक (२) न० नैमि-षारण्य (ज्यां सौतिए महाभारतनी कथा संभळावी हती) नैयायिक पुं० न्याय – तर्कशास्त्र जाण-

नेरंतर्य न० सातत्य नेराश्य न० निराशा (२) इच्छाके अपेक्षानो अभाव नेऋतंत पुं० राक्षस **नेऋंतो** स्त्री० दुर्गा(२)नैऋंत्य खूणो नैऋर्त्य वि० दक्षिण-पश्चिम तरफन् नेर्गुण्य न० गुणोनो अभाव; निर्गुणता (२) सारा गुणोनो अभाव नेर्घृण्यः न० ऋूरता; घातकीपण् **नैर्म**ल्य न० निर्मळता नंबेद्ध न० देवने घरेलो भोज्य पदार्थ नैश,नैशिक वि० रात्रीनुं; रात्री संबंधी (२) राते देखातुं नंबध पुं० (निषध देशनो) नळराजा नेषभीय वि० नळराजा संबंधी नेष्कभ्यं न० कर्मरहितता (२) कर्म के कर्मना फळोमांथी छुटकारो (३) आत्मज्ञान (४) मोक्ष नैष्किक वि० एक निष्कना मूल्यनुं(२) पुं० टंकशाळनो उपरी नैष्ठिक वि॰ छेल्लुं; छेक्टनुं (२) निश्चित (३) स्थिर; दृढ़ (४) उत्तम; श्रेष्ठ; संपूर्ण (५) पूरेपूरु माहितगार (६) मरण पर्यंत ब्रह्मचर्य घारण करनारुं (७) आवश्यक ; करव् ज पडे तेवुं (८) पुं० नैष्ठिक ब्रह्मचारी **नैष्ठुर्य** न० निष्ठुरता; कठोरता नैसर्गिक वि० स्वामाविक; कुदरती नो (न+उ) अ० तहि;ना **नो चेत्** अ० नहितो । प्रस्तुत नोदन न० काढी मूकवुं ते (२) हांकवुं के **नोधा** अ० नव प्रकारे नौ स्त्री० नौका; बहाण नौका स्त्री० वहाण ; होडी **नौक्रम प्**० होडीओनो बनावेलो पूल **नौचर** पुं० खलासी नौत्र्यसन न० मधदरिये वहाण डूबबुं ते **नौसाधन** न० नौकानो काफलो

न्यक् अ० तिरस्कार – तुच्छकार बतावे ('कृ' के 'भू' धातु साथे) न्यक्करण न०, न्यक्कार पु० निदा; तिरस्कार; अपमान **न्यम्भाव** पूं० नीचापणुं (२) तिरस्कार न्यग्भावित वि० तिरस्कृत (२) हलकुं के पाछुं पाडेलुं **न्यग्रोघ** पुं० वड [सुंदर स्त्री **न्यप्रोधपरिमंडला** स्त्री० सुविकसित – **न्यस् ४** प० नीचे मूकव्; नीचे फेंकव् (२) दूर करवुं; तजवुं (३) उपर के अंदर मूकवुं (४) -ने सोपवुं (५) बक्षवु; अर्पवुं (६)रजू करवुं(दलील) न्यस्त ('न्यस्'नुं भू० ५००) नाखेलुं; फेंकेलू (२)अंदर के उपर मूकेलु (३) चीतरेलुं (४)सोंपेलुं (५) तजेलुं (६) न्यासविधिथी स्पर्शेलुं (७) धारण करेलुं न्यस्तचिह्न वि० चिह्न के लक्षण विनानुं न्यस्तशस्त्र वि० जेणे आयुधो छोडी दीधां छे तेवुं (२) नि:शस्त्र न्याय पुं० रीत; पद्धति; रिवाज (२) योग्यता; वाजबीपणुं (३) कायदेसर – धर्मानुसार वर्तन (४) फरियाद (५) फेंसलो; चुकादो (६) दृष्टांत; कहेवत (७) (गौतम-प्रवर्तित) न्यायदर्शन न्यायतः अ० योग्य रीते; विधि प्रमाणे न्याय्य वि० यथार्थ; वाजबी; कायदे-सर (२) हरहमेशनु न्यास पुं० मूकवुं ते (२) चिह्न (३) थापण (४)चीतरवुं के दोरवुं ते (५) त्याग; संन्यास (६) मंत्र अने विधि-सहित शरीरनां जुदां जुदां अंगोने देवताओने सोपवां ते ~एक धर्मविधि न्यासीकृ ८ उ० थापण तरीके मूकवं(२) --नी संभाळमां मूकवुं न्युडज वि॰ नीचुं नमेलुं; वळेलुं (२) ऊंधुं न्यून वि० ओछुं (२) हलकुं; ऊतरत्

(३) खोडवाळुं (४) विनानुं – रहित

म्यूनता स्त्री० –ना करतां ऊतरतापणुं (२) ऊणप; ओछापणुं म्यूनभाव पुं० ओछुं के ऊतरतुं होवापणुं न्यूनाधिक वि० ओछुंवत्तुं; असमान न्यंज् (नि+एज्) १ आ० ध्रूजवुं; कंपवुं

प

ष वि० (समासने अंते)पीनाहं;पीतुं(२) [जंगलीओनो वास रक्षण करनार्ह **पक्कण** पुं० चांडालनुं झूंपडुं (२) **पक्ति** स्त्री० राधवु ते (२) पचाववुं ते (३) परिषक्व थवुं ते (४) प्रतिष्ठा; गौरव पक्क वि॰ रांधेलुं (२) पत्रावेलुं (३) परिपक्त थयेलुं; तैयार थयेलुं (४) अनुभवी; चालाक (५) विनाशोन्मुख पक्वाम न० राधिलु अस **पक्ष पृ**० पांख (पंखीनी) (२) पींछुं (बाणने छेडे कोसेलुं) (३) पडखुं (४) कोई पण वस्तुनी बाजु (५) लक्ष्करनी बाजु (६) पखवाडियुं (शुक्ल के कृष्ण) (७) विभाग; जूथ (८) वंश; कुळ (९) कोई पण विभागनो पक्षकार – अनुयायी पक्षक पुं० बाजुनुं खानगी बारणुं (२) पक्ष; बाजु (३) -ना पक्षनी माणस पक्षचर पुं० टोळामांथी विख्टो पडेलो हाथी (२) चंद्र (३) अनुचर पक्ष च्छिद् पुं० इंद्र (पर्वतोनी पांखो कापनार) पक्षतास्त्री० पक्ष लेवो के रजुकरवो ते पक्ति स्त्री० पांखनुं मूळ (२) सुद पडवो पक्षद्वार न० बाजुनुं खानगी बारणुं पक्षपात पुं० एक पक्षनी तरफदारी पक्षपातिता स्त्री० पक्षपात (२) पांखी वडे ऊडव्ं ते पक्षपातिन् वि० पक्षपात करनार्ह (२) –ना पक्षमां जोडानारुं;अनुयायी

पक्षपुट पुं० पांख पक्षमूल पुं० पाखनुं मूळ पक्षवत् वि॰ पांखवाळुं (२) अनुसरनारुं (३) सारा कुळन् पक्षहर पुंच पंखी (२) पक्षद्रोही पक्षिणी स्त्री० पंखिणी . पक्षिन् वि॰ पांखवाळुं (२) पक्षवाळुं; पक्षमां जोडायेलु (३) पु० पंखी (४) बाण (५) शिव [भाई) पक्षिपति पुं असंपाति (जटायुनो मोटो पक्षिपुंगव पुं० जटायु (२) गरुई पक्षिराज्(-ज) प्० गरुड (२) जटायु पक्षीय वि०(समासने अंते)-ना पक्षनुं पक्षींद्र पुं० गरुड **पक्ष्मन्** न० पांपण (२) केसरतंतु (३) फूलनी पांखडी (४) हरणना वाळ (५) मूछना वाळ **यक्सल** वि० सुन्दर अने दीर्घ पांपणी-वाळुं (२) वाळथी भरेलुं पक्ष्य पुं० पक्षनो अनुयायी पच १ उ० रांधवुं; पकाववुं (२) भठ्ठीमां नाखी सेकवुं (ईंट) (३) पचाववुं(अन्न) (४)परिपक्व थवुं पच् वि० (समासने अंते) राधनारुं **पचेलिम** वि० पोतानी मेळे – स्वाभाविक रीते पाकतुं(२)जलदी रंधातुं के पाकतुं पट् १ प० जबुं (२) १० उ० के प्रेरक० फाडवुं (३) बाकोर्ह पाडवुं (४) छेद पाडवो; वींधवुं (५) उपाडी -- खेंची काढवुं (६) १० उ० गूंथवुं ; वणवुं

पट पुं०, न० कपडुं; वस्त्र (२)पडदो (३)बुरखो (४) लखवा के चीतरवा माटेनुं फलक (५) न० छाज; छापरुं **पटच्चर** पुं० चोर(२)न० जीर्ण वस्त्र पटिच्छदा स्त्री० कपडानी चींदरडी पटभास पुं० जाळीदार बारीनुं बाकुं **पटमंडप** पुंच तंबू पटल न॰ छापर्छ(२)आच्छादन(३) आंख उपरनी छावरी (४) ढगलो; जथो (५) पुस्तकनुं प्रकरण के खंड पटलक पुं, न० पडदो;आच्छादन;बुरखो पटलिका स्त्री० इगलो; जथ्थो (२) नानी पेटी [आच्छादन पटवास पुं० एक सुगंधी द्रव्य (२) पटवेश्मन् न० तंबू **पटह** पुं० नगार्ह; ढोल **पटहधोषक** पुं० ढोलथी ढंढेरो पीटनार पटांचल पुं० वस्त्रनो छेडो पिट स्त्री ॰ रंगभूमि उपरनो पडदो (२) तंबूनी कनात **पटिमन्** पुं० कुशळताः; चतुराई पटी स्त्री० जुओ 'पटि' **पटीक्षेप पुं**० जुओ 'अपटीक्षेप' पटीर पु०चंदन **पटीरजन्मन्** पुं० चंदनन् झाड **पट्** वि० चतुर; होशियार(२)तीव्र; जोरदार (३) नीरोगी; स्वस्थ **पट्ता** स्त्री० कुशळता(२)चपळता पटोत्तरीय न० उत्तरीय वस्त्र पटोल पुं ० पंडोळुं **पट्ट** पुं ०, न० पाटला के तरूता जेवुं सपाट जे **कंई** ते(२)**मुगट**(३)पाघडी;फेंटो (४)पाटो (५) रेशम (६) उत्तरीय पट्टक पुं० पतरुं (लेख कोतरवानुं) **पट्टकर्मकर** पुं० वणकर पट्टदेवी स्त्री० पटराणी पट्टन न० शहेर; नगर पट्टमहिषी, पट्टराजी स्त्री० पटराणी

पट्टवस्त्र, पट्टवासस् वि० रेशमी के रंगीन कपडा पहेरेलुं [राज्याभिषेक **पट्टाभिषेक** पु० मुगट पहेराववो ते; **पट्टांशुक** पुंर्ेरशमी वस्त्र (२) उत्तरीय **पट्टिका** स्त्री० कपडानी पट्टी; चींदरडी (२)दस्तावेज(३)सपाट पतरुं इ० पट्टिश(–स), पट्टीश(–स) पुं० भाला जेवुं एक धारदार हथियार पठ् १ प० मोटेथी वांचवुं (२) भणवुं (३) टांकवुं; उल्लेख करवो (४) जाहेर करवुं ; वर्णव**व**ुं **पठक** पुं० बांचनार; भणनार पठन न० बांचवुं ते; भणवुं ते पिठत ('पठ्'न भू०कृ०) वि भणेलु; [असर करतुं पठितसिद्ध वि० मोढे बोली जवाथी ज पण् १ आ० सोदो करवो; विनिमय करवो; वेपार करवो; खरीदवं (२) होड बकवी; जुगार खेलवो (३) आ०, १० उ० प्रशंसा करवी पण पुं० होड के जुगार (२) होडमां मूकेली वस्तु (३) शरत;करार(४) वेपार; सोदो (५) धन; मिलकत (६) मजूरी; वेतन **पणकिया** स्त्री० होड बकवी ते पणबंध पुं० संधि करवी ते; करार पणव पुं० नानुं ढोल पणाय पुं० नफी मेळवदो ते **पणायित्** पुं० वेचनार पणांगना स्त्री० वेश्या पणित् पुं० वेपारी पण्य वि० वेचवा-खरीदवा लायक (२) पु॰ वेचवानी चीज; वेपारनी माल (३) वेपार (४) किंमत पण्यपति पुं० मोटो वेपारी **पण्यविलासिनी** स्त्री० वेश्या पण्यवीयी, पण्यशास्त्रा स्त्री० क्रजार; हाट (२) दुकान

पण्यस्त्री, पण्यांगना स्त्री० वेश्या **पत् १**प० पडवुं; नीचे आववुं; ऊतरवुं (२) ऊडवुं (३) आथमवुं (४) पतित थवुं; अधोगति पामवी (५) कंगाळ थवु (६) नरकमा पडवुं(७) आवी पडवें (८) उपर पडवें पत पुं अडब्ते (२) नीचे अतरब्ते पतग पुं॰ पंखी (२) सूर्य पतत् वि॰ ऊडतुं (२) ऊतरतुं; नीचे आवतुं (३) पुं० पक्षी पतब्ग्रह पुं । पिकदानी पतन न० नीचे आववं के ऊतरबं ते; उपर पडवुं ते (२) आथमवूं ते (३) अधोगति थवी ते (४) भ्रष्ट थवुं ते (५) पडती ('उदय' थी अज्लंदुं) पतनीय न० अधोगतिकारक पापकर्म पतंग पु॰ पक्षी (२) सूर्य (३) पतं-गियु; तीड; तीतीघोडो **पतंगम** पुंजपक्षी (२) पतंगियुं **यसंगिका** स्त्री० नानुं पंखी (२) नानी मधमाखी (३) धनुष्यनी पणछ पताका स्त्री० वजा; घ्वज-दंड (२) प्रख्याति; प्रसिद्धि(३)निशान; चिह्न पताकास्थान न० अपेक्षित वस्तुने बदले तेना जेवं बीजं वस्तु अकस्मात् रज् कराय ते (नाटघ०) पताकिन वि० धजा पकडनारुं (२) धजाथी शणगारेलु (३) पुं धजा पकडनारो (४) ध्वज (५) रथ पताकिनी स्त्री० सेना; लश्कर पति पुं० धणी; भर्ता (२) मालिक; स्वामी (३) राजा; हाकेम पतित ('पत्' नुभू०कृ०) वि०पडेलुं; नीचे ऊतरेलुं (२) पतन पामेलुं; भ्रष्ट थयेलुं (३) पराजय पामेलुं (युद्धमां) (४) राखेलुं; मूकेलुं -पतितस्थित वि० जमीन उपर गबडेल् पतिदेवता, पतिदेशा स्त्री० पतिने देव माननारी – पतित्रता

पथ **पतिञ्चता** स्त्री ० पतिञ्चत पाळनारी – सती पतिवरा स्त्री० पोतानी मेळे पति पसंद करनारी स्त्री | योग्य स्त्री पतीयंती स्त्री० पतिने इच्छतो के पतिने **पत्काषिन् पु**० पायदळनो सैनिक;पदाती **पत्तन** न० शहेर पत्ति पु० पदाती; पायदळनो सैनिक (२) स्त्री० लक्करनी नानी दुकडी (जेमां एक रथ, त्रण घोडा, बे हाथी अने पांच पदाती होय) **पत्तिक** वि० पग्पाळ् पत्नी स्त्री०शास्त्रविधिथी परणेली स्त्री **पत्र** न० पांदडुं (२)पांखडी (३)कागळ (रुखेरो के रुखवा माटेनो) (४) चोपडीनुं पानुं (५) धातुनुं पातळ् पतरुं; बरख (६) पक्षीनी पांख (७) पोंछुं (८) बाणनुं पींछुं (९) वाहन (१०) छरीनुं के तरवारनुं पानुं (११) मों के शरीरना भाग उपर करेल लेप के चित्ररचना **पत्रपुट न० (पांदडांनो)** पडियो पत्रभंग पु॰, पत्रभंगि(-गी) स्त्री॰ मों के शरीर उपर चंदन वगेरेथी करेली चित्ररचना पत्रस्य पुंच्यक्षी पत्ररेखा, पत्रलेखा, पत्रवल्लरी, पत्र-वल्लि (-ल्ली) स्त्री० जुओ 'पत्रभंग' पत्रवाह पुं० पक्षी (२) बाण पत्रविशेषक पुं० जुओ 'पत्रभंग' **पत्रवेष्ट** पु० काननुं एक घरेणुं **पत्रारूढ** वि० लखेल् पत्रालंबन न० पडकार (वादविवादमां) पित्रका स्त्री० लखवा माटेनो कागळ (२)दस्तावेज (३)काननु एक घरेणुं पत्रिन् वि० पांखवाळुं (२) पींछावाळ् (३) पांदडांबाळ् (४) पृष्ठवाळ्(५) पु॰ बाण (६)पंखी (७) बाज पक्षी पत्रोर्ण न० रेशमनुवस्त्र पथ प्०मागं; रस्तो

पयदर्शक पु० मार्गदर्शक; भोमियो पथिक पुं० मुसाफर; वटेमार्गु (२) भोमियो; मार्गदर्शक [समुदाय पथिकजन पु० मुसाफर के मुसाफरोनो पिकसार्थ पुं० संघ; काफलो पथिन् पुं० (प्रथमा ए०व० 'पंथाः'; समासने अते 'पथ' थाय) रस्तो; मार्ग; वाट (२) मुसाफरी (३) गोचर -- क्षेत्र – मर्यादा (४) प्रणाली; शिरस्तो पथ्य वि० हितकर; अनुकूळ (औषघ, सलाह इ०) (२)न० हितकर खोराक (३) हित; कल्याण **पद्४** आ० जवुं(२) पासे जवुं(३) पामवु (४) आचरव् **पद्**पुं० (पहेलां पांच रूप नथी; 'पद' ना द्वितीया द्वि० व० पछी विकल्पे मुकाय छे) पग; चरण (२) चोथो भाग (श्लोक इ० नो) **श्दर्पु॰** पग (२) डगलुं; पगलुं (३) पगलानी छाप (४) निशानी; चिह्न (५) स्थान; पदवी; होद्दो (६) रलोकनुं चरण (७) शब्द (विभक्ति इ॰ प्रत्यय साथेनो)(८)बहानुं(९) शेतरंजना पट उपरनुं खानुं (१०) सिक्को (११) रस्तो पदक न० डगलुं; पगलुं (२) पदवी: पदकम न० पगला भरवां ते; चालवुं ते **पदगति** स्त्री० चालवानी रीत पदच्छेद पु० वाक्यना शब्दनो वर्ग कहेवो ते (२) पदनुं व्याकरण परन्यास पुं॰ पगलुं; डगलुं (२)पगलानी छाप (३) अमुक रीते पर गोठववा ते (४) रेलोक के चरण रचवां ते पदपंदित स्त्री० पगलांनी पंक्ति (२) शब्दोनी गोठवणी पदभंश पुं० होद्दा उपरथी दूर करावुं ते पदवि(-वी) स्त्री० रस्तो; मार्ग (२) होदो; अधिकार

पदशः अ० पगले पगले (२) शब्दे अब्दे **पदस्य** वि ० पगवाळुं (२) ऊंची पदवीबाळुं पदंकु ८ उ० पग मांडवो;पग मुकवो (२)प्रवेश करवो **पदाजि, पदात (–ित)** पुं० पायदळ सैनिक (२) पगपाळुं चालतुं **पदातिन्** वि० पायदळवाळ् (२) पगे चालतुं (३) पुं० पायदळ सैनिक पदास्यध्यक्ष पुं० पायदळनो सेनापति पदानुग पुं० अनुयायी; साथी पदार्थ पु० शब्दनो अर्थ (२) कोई पण वस्तु ; द्रव्यः [गोठवणी पदावली स्त्री० शब्दोनी हारमाळा के **पदांतर** न० बीजुं पगलुं (२) **ए**क पगला जेटलु अंतर पद्धति (-ती) (पद्+हति)स्त्री० रस्तो; मार्ग (२)हार;पंक्ति (३)रीत **पद्म पुं**० एक दिग्गज (२) सापनी एक जात(३)रामनुं एक नाम(४) कुबेरना एक भंडारनुं नाम(५)एक आसन (योग) (६) न० कमळ (७) हाथीना मों के सूंढ उपरनुं चित्र (८) अबज (संख्या) **पद्मक** न० **ए**क ब्यूहरचना (२) हाथीनी सूंढ के मों उपरनी चित्रावली (३) पद्मासन (४) एक जातनुं काष्ठ पद्मखंड न० कमळनो समुदाय पद्मगुणा स्त्री० सक्ष्मी पश्चाज मृं० ब्रह्मा पद्मनाभ (-भि) पुं० विष्णु पद्मभव, पद्मभू पुं ० ब्रह्मा **पद्मराग** पुं०, न० माणेक पद्मवर्थस् वि० कमळना रंगन् . **पद्मषंड** न० कमळनो समुदाय पद्मा स्त्री० लक्ष्मी **पद्माकर** पु० कमळोवाळु मोटुं सरोवर (२)कमळोनो समुदाय पद्मालम पुं० ब्रह्मा

पद्मालया स्त्री० लक्ष्मी पद्मावती स्त्री० लक्ष्मी (२) एक नदी पद्मासन न० कमळरूपी आसन (२) योगनुं एक आसन पियन् वि० चटापटावाळुं (२) कमळ-वाळुं (३) पुं० हाथी पियनी स्त्री० कमळनी वेलो (२) कमळनो समुह (३) कमळवाळुं सरो-वर (४) स्त्रीओना चार वर्गमांना प्रथम वर्गनी स्त्री (पश्चिनो, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी) [समुदाय पर्यानीखंड, पर्यानीखंड न० कमळीनी पद्य वि॰ पदनुं बनेलुं; पद संबंधी (२) पगने लगत् (३) चिह्नवाळु (४)न०कविता, काव्य (५) स्तुति पद्या स्त्री० मार्ग; केडी पद्म पुं० गाम; गामड्रं पनस पुं• फणसनुं झाड (२) कांटो पन्नग पुं० साप पद्मगनाशन, पद्मगारि पुं० गरुड पयस् न० पाणी (२) दूध पयस्विन् वि॰ दूषवाळुं(२)रसवाळुं पयस्विनी स्त्री० दूझणी गाय पयःपूर पुं० सरोवर पयोज न० कमळ पयोजन्मन् न० वादळ; मेघ पयोजयोनि पुं ० ब्रह्मा पयोद पुं॰ वादळ; मेघ **पयोघर पुं॰ मेघ** (२) स्तन(३)आंचळ पयोषि, पयोनिषि पुं० महासागर; समुद्र पयोभुत् , पयोमुच् पुं० वादळ पयोवाह पुं० वादळ; मेघ **पर** वि० बीजुं (२) दूरनुं (३) पार आवेलुं; सामी बाजुए आवेलुं (४) पछीनुं (५) उत्तम; श्रेष्ठ (६) पारकुं; अजाप्युं (७) विरोधी; सामा पक्षनुं (८) उपरांतनुं; वधारानुं; वर्षेलुं (९) छेवटनुं (१०) परायण

पर पु० अजाण्यो; पारको; परदेशी (२) शत्रु (३) न० पराकाष्ठा (४) परब्रह्म (५) मोक्ष (६) परलोक **परकलत्र** न० परस्त्री **परकीय** वि० पारकानुं; बीजानुं;पारकुं (२) अजाण्युं; विरोधी परकीया स्त्री० बीजानी स्त्री परग्लानि स्त्री० शत्रुने दबाववी ते **परचक** न० शत्रुनुं सैन्य (२) शत्रुए करेली चडाई [(३)शत्रुन् परज वि॰ अजाण्युं (२) हलकुं; ऊतरतुं **परजित** वि० वीजा वडे जितायेलुं (२) बीजा वडे पोषायेलुं (३) पुं० कोयल परतस् अ० बीजा पासेथी (२) शत्रु पासेथी (३) --थी पार; --थी पछी परतंत्र वि॰ पराधीन परतीयिक पुं० अन्य संप्रदायनो अनुयायी परत्र अ० परलोकमां; बीजा जन्ममां (२)न० परलोक धार्मिक माणस परत्रभीद पुं० परलोकथी डरनार --परदाराः पुं० ब०व० परस्त्री परदेश पुं० विदेश (२) शत्रुनो देश परसर्म पु॰ बीजानो धर्म - कर्तव्य परपक्ष पुं० शत्रुनो पक्ष परपद न० श्रेष्ठ स्थान (२) मोक्ष परपरिग्रह वि॰ पराधीनः; परतंत्र **परपिंड** पुं० पारकानुं अन्न **परपुरुष** पुं० बीजो पुरुष; अजाण्यो माणस (२)अन्य स्त्रीनो पति (३) विष्णु [पुं० कोयल **परपुष्ट** वि० बीजा वहें पोषायेलुं (२) **परप्रेष्य** पुं॰ दास; नोक्र परब्रह्मन् न० परम तत्त्वः ब्रह्म परभाग पुं ० बीजानो भाग (२) उत्तमता (३)सद्भाग्य ; समृद्धि (४)विपुलता ; अतिशयता (५) शेष भाग **परभृत् प्**ं० कागडो (कोयलने पोषनार) परभूत पुं० कोयल (नर)

परभृता स्त्री०(मादा)कोयल(कागडी-ना माळामां उछेराती होवाथी) परम् अ० -- यी पार; -- थी बहार; पछीयी (२) ते पछी; त्यार बाद (३) परंतु (४) नहितो (५) अत्यंत (६) घणी खुशीयी (७) फक्त (८) बहु तो परम वि॰ श्रेष्ठ; उत्तम (२) बहु दूरनुं; छेल्लुं (३)मुख्य (४)पूरतुं (५) न० उत्तम – ऊंचो – मुख्य भाग (६) (समासने छेडे) -नुं मुख्यत्वे बनेलुं ते (७) –मांलवलीन एवं ते **परमगति स्त्री**० मोक्ष (२)मृख्य आधार (ईश्वर देव इ०) परमप्रस्य वि० प्रसिद्धः प्रस्थात **परमम् अ**० स्वीकृति के कबूलात –एको अर्थ बतावे [(२)संपूर्णपणे सफळ परमसमुदय वि० अति कल्याणकारी परमहंस पुं ० उत्तम कोटीनो संन्यासी परमाणुपुं० वधु विभाग न थई शके एवी नानामां नानी भाग **परमात्मन् पुं०** परमात्मा; परब्रह्म परमापद् स्त्री० मोटामां मोटी विपत्ति परमायुष न० चक्र; एक हथियार परमार्थ पुं० परमसत्य; परमतत्त्व; परमज्ञान (२) साचु के खरुँ होय ते (३)कोई पण उत्तम के अगत्यनी वस्तु परमार्थतः अ० खरेखर; चोकसपणे **परमार्थदरिद्र** वि० खरेखरु दरिद्र परमिक वि० उत्तम;श्रेष्ठ परमेश्वर पुं० परमातमा परमेष्ठ वि० उत्तम;श्रेष्ठ परमेष्ठिन् वि॰ टोचे कमेलुं;श्रेष्ठ (२) पुं० विष्णु, शिव, द्वह्मा, गरुड के अग्निन्, नाम (३) गुरु (४) अर्हैत परमेष्यास पुं० उत्तम बामावळी पररमम पुंच परणेली स्त्रीनो धार परलोक पुं मृत्यु पछीनो (स्वर्ग धगेरे बीजो)लोक

परवत् वि० परतत्रः, पराधीन परवत्ता स्त्री० पराधीनता परवज्ञ, परवज्य वि० पराधीन; परतंत्र परवाच्य न० पारकानुं छिद्र परवाद पुं ० अफवा (२) वांधो; तकरार **पर**ञ्च पुं॰ पारसमणि (जेना स्पर्शयी लोढुं वगरे सोनुबनी जाय) **परशु** पुं० फरशी; कुहाडो **परशुराम** पुं० जमदग्निना पुत्र ; विष्णुनो छठ्ठो अवतार परश्वध पुं० कुहाडो; परशु परश्वस् अ०आवती काल पछीने दिवसे परस् अ० -- भी पार; -- भी दूर (२) बीजी बाजुए [होय तेम हायमां (सोपेलुं) **परसात्** अ० परस्तात् अ० पार; सामी बाजुए; -यी दूर(२)हवे पछी;पाछळथी (३)बाजुए परस्त्री स्त्री० बीजानी परणेली स्त्री **परस्पर** वि० एकबीजानुं (२) (ब०व०) एकबीजा समान (३) स०ना०, वि० एकबीज् (एकवचनमां ज) परस्परम् अ० एकबीजाने परस्य न० बीजानी मिलकत **परहित** वि० बीजानुं हित करनारुं के ताकनारुं (२) बीजाने लाभ करनारुं (३) न० पारकानुभल् परंज पुं० घाणी (२) तलवारनुं फळुं (३) न० इंद्रनुंखड्ग परंतप वि० शत्रुओने पीडनारुं परंपर वि० एक पछी एक ऋममां आवत् (२) पुं० प्रपौत्र परंपरम् अ० अनुक्रमे; एक पछी एक परंपरा स्त्री० सतत प्रवाह (२)पंक्ति; समुदाय (३) योग्य कम (४) वंश **परंपरित** वि० परंपरामां होय तेवुं ; चालु परंपरीण वि० वंशपरंपरागत (२) परंपरागत परःशत वि० सोशी वधु

परःसहस्र वि० हजारथी वधु परा अ० प्रधानपणुं, मुख्यत्व, मोकळा-पणुं, मुक्ति, प्रतिलोमपणुं, त्याग, अनु-ऋमनो अभाव, निंदा, घणापण्, अप-मान, घर्षण, गति, भंग, अनादर अने अनावृत्ति बतावे परा स्त्री० वाणीनां चार रूपोमांनु प्रथम पराक पुं० एक तप पराकृ ८ उ० अवगणवुं; उपेक्षा करवी पराकम् १ उ० पराकम दाखववुं (२) पाछुं फरवुं (३) हुमलो करवो पराकम पुं० बहादुरी; भूरातन (२) प्रयास; साहस (३) हुमलो;आक्रमण पराकांत वि० वहादुर; शूरवीर (२) आक्रमण करायेलुं (.३)पाछुं फेरवायेलुं पराग पुं ० फूलमांनी रज (२) बारीक रज परागत वि० मृत्यु पामेलुं (२) व्याप्तः; छवायेलुं (३) फेलायेलुं परागम् १ प० [परागच्छति] पाछु फरवं (२) ब्यापवं; छावं पराङ्ममुख वि० विमुख ;पीठ फेरवी होय तेवु; प्रतिकूल (२) परवा वगरनुं पराच् वि० सामे पार – बीजी बाजुए आवेलुं (२) पराङ्मुखः; विमुख (३) प्रतिकूल (४) बहारनी बाजु वळेलुं (५) पाछुंबाळेलुं (६) अ० दूर (७) बहारनी तरफ **पराचीन** वि॰ ऊंधी दिशामां वळेलुं (२) विमुख; परवा विनानुं (३) पछोथी बनेलुं(४)बहिर्मुख(५)सामी बाजुए आवेलुं [—थी हारवुंते पराजय पुं० जीतवुं ते; हराववुं ते (२) पराजि १ आ० पराजय पमाडवुं; हराववुं; जीतवुं (२) –थी हारी जबुं (३) — नेताबेथब् पराजित वि० हारेलुं; जितायेलुं **पराडीन** न० पाछळनी बाजुए ऊडवुं ते परात्पर वि० उत्तमोत्तम (२) पुं० परमपुरुष: परमात्मा

पराधीन वि० बीजाने आधीन; परतंत्र पराम्न न० बीजानुअन्न ∫ जीवनारुं परान्नभोजिन् वि० पारकानुं अन्न खाईने परापत् 🛠 प० पासे आववुं (२) पाछुं फरवुं (३) पडी जबुं; खोवावुं परापर वि॰ दूरनुं अने नजीकनुं (२) पहेलूं अने पछीनुं (३) बहेलुं अने मोडुं (४) उपरनुं अने नीचेनुं पराभव पुं० पराजय; हार (२) अनादर; तिरस्कार (३) अलोप थर्व् ते(४)विनाश [मांहोय तेव् पराभावुक वि० नाश पामवानी तैयारी-**पराभू १** प० हराववुं (२) अलोप धई जवुं (३) ताबे थवुं **पराभूत** वि॰ हारेलुं; पराजित (२) अनादर – अपमान पामेलुं **पराभृति** स्त्री० पराभव परामर्श पु० पकडवुं के खेंचवुं ते (केश) (२) नमाववुं – खेंचवुं ते (धनुष्य) (३) बळात्कार (४) उसल; विध्न (५) विचार; चिंतन (६) हळवेथी स्पर्शकरवो ते **परामृश् ६** प० स्पर्श करवो (२) धीमेथी घसवुं ~ दबाववुं (३) हुमलो करवो (४) भ्रष्ट करवु (स्त्री के मंदिर) (५) विचार करवो; चिंत-वबुं (६) स्तुति करवी परामृष्ट वि॰ पकडायेलुं ; स्पर्शायेलुं (२) बळात्कार करेलुं (३) विचारेलुं; चितवेलु (४) संबद्ध (५) पीडित **परायण** वि० अत्यंत आसक्त (२) –ना आधारवाळुं; −नुंआश्रित(३)रक्षक; त्राता (४) —नी साथे संबंधवाळुं (५) – नो तरफ लई जतुं (६) न० मुख्य के उत्तम ध्येय, आश्रय के प्रयोजन (७) सार; तस्व (८) दृढ भक्ति (९)सर्व रोगोनी रामबाण दवा परायत्त वि० परतंत्र; पराधीन **परायन** वि० जुओ 'परायण'

परार्थ वि० बीजा हेतु के अर्थवाळुं (२) बीजा माटेन् (३) पुं० उत्तम प्रयोजन के लाभ (४) बीजानुं हित ('स्वार्थ' थी ऊलटुं) (५) मोक्ष परार्थम् , परार्थे अ० बीजाने माटे **पराधं** न० दशः करोड अबज (एकडा उपर सत्तर मीडा जेटली संख्या) परार्घ्य वि० दूरनी के सामेनी बाजुनुं (२) आगळनी अर्धी बाजुने लगत् (३) सर्वश्रेष्ठ (४) सौथी वधु सुंदर के कीमती (५) दिव्य; दैवी परावर वि॰ दूरन अने नजीकनुं (२) पहेलांनु अने पछीन् (३) ऊंचु अने नीचुं (४) सौने व्यापतुं (५) न० कार्य अने कारण (६) समग्र विश्व परावरक्ष वि॰ भूत-भविष्य जाणनाहं परावर्त पु० पाछुं फरवुं के वळबुं ते (२) अदलोबदलो; विनिमय परावसथशायिन् वि० बीजाना घरमां मूई रहेनारुं **परावृत् १** आ० पाछा फरवु के वळवु **परावृत्त** वि० पाछुं फरेलुं (२) चकाकार फरेलुं (३) पाछु आपेलुं परावृत्ति स्त्रो० पाछुं फरवुं ते (२) पलायन करवुं ते (३) चक्राकारे फरवुं ते (४) अदलबदल करवुं ते **परास्** (परा+अस्) ४ प० तजवुं (२) दूर करवुं; काढी मूकवुं (३) इन्कारव् परासिसिषु वि० हांकी काढवानी इच्छा-परासु वि॰ मृत; प्राणरहित परासुता स्त्री०, परासुत्व न० मृत्यु (२) पराधीन जीवन परासेघ पुं० केद [(३)इन्कारेलुं परास्त वि॰ फेंकी दीघेलुं (२) पराजित **पराहत** वि० पाछुं धकेली काढेलुं (२) मारेलु; ठोकेलु **पराहन् २** प० पाछुं धकेली काढवुं (२)

हुमलो करवो (३) मारबुं; ठोकवुं पराह्म पुं० बपोर पछीनो समय; पाछलो पहोर **परांच्** वि० जुओ 'पराच्' परि अ० (क्यारेक 'परी' पण) धातुओ अने धातुसाधित नामो आगळ: आसपास, उपरांतमां – वधु, सामे – विरोधमां, अत्यंत, –ए अर्थमां (२) उपसर्ग तरीके: --नी तरफ, --नी सामे, कमे – एक पछी एक, भागे – हिस्सामां, --मांथी, सिवाय -- बाद करतां, वीत्या बाद, --ने परिणामे, -थी वधु, -अनुसार, -नी प्रमाणे, -उपरातमां -ए अर्थमां (३) धातु-साधित नहि एवां नामो पूर्वे: घणुं, अत्यंत, –ए अर्थमां (४) अव्ययरूप समासोनी शरूआतमां: --सिवाय, —ने बाद करतां, —थी वींटळायेलुं **के** घेरायेलुं –ए अर्थमां (५) विशेषण-रूप समासोने अंते: –थी थाकेल के कटाळेलुं -एवो अर्थ बतावे परिकथा स्त्री० धार्मिक आस्यान परिकर पुं० परिवार; अनुयायी वर्ग (२) टोळुं; समुदाय (३) प्रारंभ; शरूआत (४) केड बांधवी ते; सज्ज थवुंते (५) केडे बांधवान् वस्त्र परिकर्मन् पुं० सेवक; नोकर (२) न० शरीरने शणगार, सुगंध वगेरेथी संस्कारवुं ते (३) पग रंगवा ते (४) तैयारी (५) पूजा (६) मनने शुद्ध त्रास पमाडेलुं करवानी उपाय परिकाषित वि० खेंचेलुं; ताणेलुं (२) **परिकल् १**० उ० आकलन करवुं; समजवुं (२) पकडवुं **परिकल्पन न०, परिकल्पना** स्त्री० नक्की करवुं -- ठराववुं ते (२) गोठवणी करवी के रचवुंते (३) पूर्ह पाडवं के मदद करवी ते

परिकल्पित वि० ठरावेलु; कल्पेलुं (३) वहेंचेलुं (४) तैयार करेलुं (५) गोठ-वेलु; योजेलु परिकंप पुं॰ खूब ध्रूजवृंते (२) भारे डर परिकीर्ण वि० वेरायेलुं; विखरायेलुं (२)भीडवाळुं थयेलुं परिकीतेंन न० कहेवुं के जणाववुं ते (२)बडाश मारवी ते (३)बोलाववुं ते **परिकृष् १** प० र्खेचवुं (२) दोरवुं (सैन्य) (३) चिंतन करवं परिकृ ६ प० [परिकिरति] घेरबुं(२) आपवुं;सोपवुं(३)विखेरवुं परिकृत् १० उ० [परिकीर्तयति –ते] कही बताववुं ; जणाववुं (२) वल्लाणवुं (३)बोलावव् परिकलृप् १ आ० परिणाम नीपजवुः परि**णा**म लाववामा कारणभूत यर्व (२)बक्षवुं(३)विचारव् ~प्रेरक० नक्की करवुं(२)मानवुं; गणवं (३) तैयार थवं (४) अर्पण करवुं (५) अमल करवो (६) सफळ करवुं (७) योजवुं ; गोठववुं परिकोप पुं० अत्यंत कोप के गुस्सो परिकम् १ उ० [परिकामति, परि-कमते] फरवुं; आम तेम फरवुं परिकाम पुं० आमतेम फरवुं ते (२) प्रदक्षिणा करवी ते परिक्रय पुं०, परिक्रयण न० भाडुं; रोजी (२) खरोदवुं ते (३) विनिमय (४) पैसा आपीने मुलेह खरीदवी ते परिकिया स्त्री० रक्षण माटे चारे तरफ वाड के खाई वडे घेरी लेबुं ते (२) घ्यान आपवुं ते; संभाळवुं ते परिकी 🕻 आ॰ खरीदवुं (२) (योडा वखत माटे)रोजीए राखबुं;नोकरीए राखवुं (३)पाछुं वाळवुं ; भरपाई करवुं **परिक्लांत** वि॰ थाकी **के** कंटाळी गयेलं परिक्लिश् ९ प० क्लेश के त्रास आपवी (२) ४ आ० त्रास पामवुं;कंटाळवुं

परिक्लिब्ट वि० कटाळेलुं(२)थाकेलुं परिक्लेश पुं० क्लेश; त्रास (२) थाक परिक्रत वि० घायल ययेलुं , ईजा पामेलुं परिक्षय पुं० क्षय; नाश; हानि परिकाम वि० दूबळ् थई गयेल् परिक्षिप् ६ प० घेरी वळबुं (२)सांकळ-थी बांघवुं(३)ठेकडी उराडवी परिक्षिप्त वि० घेरायेलुं; वींटळायेलुं (२)वीखरायेलुं(३)तजी देवायेलुं परिक्रीण वि० क्षीण थयेलुं (२) खुटी गुयेलुं;ओछुं थयेलुं (३)नाश पामेलुं परिक्षेप पुं० वेरवुं-विखेरवुं ते (२) घेरी छेवुंते (३) चोगरदम घेरती हद (४) तजी देवूं ते परिस्ता स्त्री० खाई परिख्यात वि० विख्यात परिख्याति स्त्री० प्रसिद्धिः परिगण् १० उ० गणतरी करवी (२) गणनामां लेबुं परियणन न०, परिगणना स्त्री० गणतरी परिगत वि० व्याप्त; घेरायेलुं (२) चोतरफ फेलायेलुं (३) समजेलुं; जाणेलुं (४) – थीं युक्त के पूर्ण (५) मेळवेलुं (६)हरावायेलुं (७)पीडित परिगम् १ प० [परिगच्छति] चोतरफ फरवुं (२) घेरी वळवुं (३) चोतरफ व्यापवुं (४) प्राप्त करवुं (५) जाण-वुं; समजवुं (६) मरण पामवुं परिगाद वि० अत्यंत; घणुं परिगृहोत वि० ग्रहण करेलुं (२) आर्लिंगन करेलुं (३) वींटळायेलुं (४) स्वीकारेलुं (५) परणेलुं परिप्रह् ९ उ० भेटवुं (२) वींटळावुं (३)पकडवुं (४)माये लेवुं ; स्वीकारवुं (५)कृपा करवी (६)टेको आपवो; मदद करवी (७) घारण करवुं ; पहेरवुं (८)परणवुं(९)पाछळ पाढी देवुं परिप्रह पुं० स्वीकारवुं ते; ग्रहण करवुं ते (२)घेरी लेबुं ते (३)बींटबुं के पहेरबुं

ते (४) मिलकत (५) लग्न करवुं ते (६) पत्नी (७) पोताना रक्षणमां लेबुं ते (८) अनुग्रह (९) दासदासी इ० परिवार (१०) राजानुं अंतःपुर (११) बक्षिस (१२) स्वागत करवुं ते(१३) शाप (१४) शरीर (१५) वहीवट; कारभार (१६) समजण (१७) शाप (१८) शासन परिग्रहीतृ पुं० पति **परिध** पुं० आगळो ; उलाळो (२) विघ्न (३) गदा (लोखंडना खीलावाळी) (४) दरवाजो (५) त्यां लेवातो कर परिषमुर वि० आगळा जेटलुं भारे परिषद्द १० उ० डखोळवुं; हलाववुं (२) दाबवुं; घसवुं परिघट्टन न० हलावम् – डखोळव्ं ते परिघस्तंभ पुं० बारसाख **परिचक्ष् २ आ०** कहेवुं; जाहेर करवुं **परिचतुरशंन्** वि० पूर्ं चौद; चौदथी वधु परिचय पुं० एकठुं करवुं ते;ढगलो (२) ओळखाण (३) अम्यास; महावरो (४) वसवाट परिचयकरणा स्त्री० वधती जती ममता **परिचयवत्** वि० पराकाष्ठाए पहोंचेलुं परिचर् १ प० विचरवुं (२) सेववुं (३)पूजा करवी (४)सारवार करवी परिचर पुं० नोकर; सेवक परिचर्या स्त्री० सेवा; चाकरी (२) पूजा (३) आचार (४) प्रदक्षिणा परिचार पुं० सेवा; शुश्रूषा (२) सेवक परिचारक पुं० सेवक (२) शूद्र परिचारण न० सेवा **परिचारिका** स्त्री० दासी परिचि ५ उ० भेगुं करवुं (२) जाणवुं (३)मेळवत्रुं (४)वधारवुं (५) ३ प० अभ्यास करवो; परिचय करवो --कर्मणि० वसर् परिचित वि० भेगुं थयेलुं; एकठुं थयेलुं

(२) जाणीतु; ओळखाणवाळु (३) अभ्यासेलुं; शीखेलुं परिचिति स्त्री० ओळखाण; परिचय परिचित् १० उ० चितववुं; विचारवुं (२) याद करवुं परिचुंब् १ प० खूब आवेशथी चुंबवुं परिचेतन्य वि० परिचय करवा योग्य परिच्छद् १० उ० ढांकवुं; ओढवुं; वीटाळत् (२) संताड**वुं**; छुपाव**ब्** परिच्छद स्टी० परिवार; अनुयायीवर्ग **परिच्छ**द पु० आच्छादन ; ढांकण (२) चंदरवो (३) वस्त्र; पोशाक (४) परिवार; अनुयायीवर्ग (५) छत्र-चामर वगेरे बाह्य उपकरण (६) वासण-कूसण वगेरे माल-मिलकत परिच्छन्न वि॰ ढांकेलुं; ढंकायेलुं(२) छ।येलुं (३) वींटळायेलुं परिच्छिद् ७ उ० कापी नाखवु; दुकडा करवा (२) छूटु पाडवु; भाग पाडवो (३)निर्णय आपवो;निश्चित करवुं; विवेक करवो परिक्थिक वि० कापी नाखेलुं (२) निश्चित करेलुं(३)मर्यादित परिच्छेद पुं० कापवूं ते; भाग पाडवो ते; छूटुं पाडवुं ते (२) निश्चय; निर्णय (३)सीमा;हद(४)प्रकरण;खंड परिच्छेच वि० निश्चित करवा योग्य; निश्चय करी शकाय तेवुं (२) मापवा के तोलवा योग्य परिच्युत वि० -मांथी च्युत थयेलुं परिजन पुं० सेवक वर्ग; अनुयायी वर्ग (२) दासीओनो समुदाय (३) सेवक परिजनता स्त्री० सेवा; सेवकपण् परिक्रप्ति स्त्री० संवाद (२)ओळखाण परिक्रा ९ उ० जागवुं; ओळखवुं(२) नक्की करवुं; शोधी काढवुं परिज्ञा स्त्री०, परिज्ञान न० संपूर्ण ज्ञान (२) ओळखाण

परिज्ञेय वि० जाणी के समजी शकाय तेवुं (२)ओळखी शकाय तेवुं परिणत वि॰ वळेलुं; नीचुं नमेलुं(२) परिपक्व; पाकट; वृद्ध (३) पूरेपूरु विकसेलुं (४) पची गयेलुं (५) -मां रूपांतरित थयेलुं(६)आथमेलुं(७) पुं॰ दंतूशळ खोसवा नमेलो हाथी परिणतप्रज्ञा वि० पाकट बुद्धिनुं परिणति स्त्री० वळवुं ते; नमबुं ते(२) परिपक्वता; विकास (३) रूपांतर; पलटो (४) परिणाम; अंत (५) 🛮 विस्तृत ; पहोळु *वृद्धावस्था* परिणद्ध वि० बंधायेलुं; वींटळायेलुं(२) परिणम् १ उ० वांका वळवुं; नीचा नमवं(२) –मां रूपांतर थवं ; पलटावं (३)परिणमवुं; बनवुं(४)परिपक्व थवं; विकसित थवं (५) घरडु थवु (६) रंघावुं (७) आथमवुं (८) पूरुं थवुं (९) व्यतीत थवुं परिणय पुं०, परिणयन न० लग्न; परिणह ४ उ० चोतरफ वींटळावुं (२) चोतरफथी बांधवु परिणाम पुं० रूपांतर थवुं ते; फरफार; विकार (२) पाचन (३) असर (४) परिपक्वता; विकास अंत; छेवट (६) वृद्धावस्था (७) व्यतीत थवुं ते (समयनुं) परिणामदर्शिन् वि० अगमचेतीवाळ् परिणायक पुं० नेता; भोमियो (२) पति परिणाह पुं० घेराव; विस्तार; व्याप परिणाहिन् वि० मोटुं; विशाळ परिणिष्ठा स्त्री० संपूर्ण कुशळता परिणिसक वि० चाखतुं; खातुं (२) चुंबतुं परिणी १ प० दोरवुं; लई जवुं(२)परणवुं .**परिणी** पुं० पति पार पाडेलं **परिणीत** वि० परणेलुं (२) पूर्व करेलुं; परिणोति स्त्री० लग्न; विवाह परिणीवित वि०ढंकायेलुं

परिणेतृ पु० पति **परितप् १** प० तपावबुं; गरम करवुं (२) बाळवुं; सळगाववुं (३) दुःख-पीडा वेठवां (४) तप आचरवुं **परितर्क् १**० प० विचारवुं; चितववुं (२) तपासवुं (अदालते) परितस् अ० चोतरफ; दरेक बाजुए (२) −तरफ; −दिशामां परिताप पुं० सखत ताप के तडको (२) दुःख; पीडा (३) विलाप; शोक परितापिन् वि० त्रास आपनार्ह **परितुष् ४**प० संतोष पामवो ; खुशी थवुं **परितुष्ट** वि० संतुष्ट; खुश परितृप् ४ प० तृप्त थवु; संतुष्ट थवुं परितोष पु०तृप्ति; संतोष(२) हिंच **परित्यज् १** प० त्याग करवो; तजवुं (२) बाद करवुं; छांडवृं परित्याग पुं० तजवुं ते (२) छोडी देवुं ते; छांडवुं ते(३) उदारता परित्रस्त वि० बोनेलुं; त्रासेलुं **परित्राण** न०रक्षण; बचाव परिचास पु० बीक; त्रास **परित्रं १** आ० रक्षण करवुं; बचाववुं **परिदञ्ज** वि० पूरुंदश (२) दशयी वधु **परिवहन** न० बाळी नाखवुं ते **परिदंशित** वि० बस्तरथी ढंकायेलुं परिदा 🗦 उ० आपी देवुं; सोंपवुं परिदाह पुं० बाळी नाखवुं ते (२) बळतरा; पीडा (३) संताप परिदेव पुं० शोक; आऋंद परिदेवन न०, परिदेवना स्त्री०, परि-**देवित** न० विलाप; आऋंद (२) पस्तावो ; शोक परिचून वि० खिन्न; दु:खी **परिघा ३** उ० पहेरवुं; धारण करवुं (२) आसपास मूक्तवुं (३)--तरफ नाखवुं के वाळवुं (नजर) परिषान न० पहेरवुं के धारण करवुं ते (२) वस्त्र (३) म्यान

परिधारण न० सहन करवुं ते परिधारणा स्त्री० धीरज **परिधाव् १** प० पाछळ पडवुं परिधि पुं० वाड, भींत के तेवी आसपास आवेली वस्तु (२) सूर्य-चंद्रनी आस-पासन नूडाळ ; तेजन नूडाळ (३) क्षितिज (४) आच्छादन; वस्त्र परिघूसर वि० झांखुं;मेलुं;धूळियुं परिध्वंसिन् वि० विध्वंस करनारं **परिनिष्ठा** स्त्री० संपूर्ण ज्ञान (२) पेराकाष्ठा (३) मोक्ष परिनिष्ठित वि० पूरेपूरुं निष्णात (२) निश्चित; मुकरर (३) संपूर्ण थयेलुं **परिपक्व** वि० पूरेपूर्ह रंधायेलुं के **रो**का-येलुं (२)पूरेपूर्ह पाकेलुं के पाकट थयेलुं **परिपणन** न० बांहेधरी आपवी ते (२) होड बकवी ते **परिपत् १** प० गोळ फरवुं; आंटा मारवा (२) उपर तूटी पडवुं (३) चोतरफ धसव् (४)–मा पडव् परिपंथक पुं० राजु; दुश्मन परिपंथिन् वि० हकावट के विघ्न करनाहं (२)पुं० दुश्मन (३) वाटपाडु ; लूटारो परिपा १ प० [परिपिबति] पीवं (२) **२** प० [परिपाति] रक्षण करवुं (३) पालन करवुं (४) शासन करवुं (५) राह जोवी परिपाक पुं॰ सारी रीते रंधावुं ते (२) सारी रीते पाचन थवुं ते (३) परि-पक्वता (४) परिणाम (५)कुशळता परिपाटल वि० आछा लाल रंगन् **परिपाटि (-दी)** स्त्री० पद्धति ; प्रणाली (२)अनुऋम;गोठवणी िकरवुं ते परिपाठ पुरु गणतरी (२) वारवार पठन परिपालन न० रक्षण करवुं ते (२) निभाववं ते (३) पोषवं ते परिपोड् १० उ० पीडवुं; त्रास आपवो (२) निचोदवुं (३) आलिंगवुं

परिपूत वि० शुद्ध करेलुं; पवित्र (२) पूरेपूरुं ऊपणेलु ्रिपास करवी परिप्रच्छ ६ प० [परिपृच्छिति] पूछवुः परिप्रदन पुं० फरी फरीने पूछवुं ते परिप्रेष्य पु० चाकर; नोकर परिष्लव वि० तरतुं (२) कंपतुं (३) अस्थिर (४) पुं० डूबकुं (५) नौका परिष्लु १ आ० तरवं (२) डूबकुं मारवुं(३)कूदवुं (४) पूर फरी वळवे परिप्लुत वि० डूबेलुं; मान परिष्लुति स्त्री० छोळ; अतिशय होवं ते परिबर्ह पुं० परिवार; नोकरचाकर (२) सरसामान (३) भेट; बक्षिस (४) छत्र, चामर इ० राजचिह्न परिवाष् १ आ० पीडवुं; त्रास आपवो परिबाधा स्त्री० कष्ट; पीडा (२) थाकः; त्रास परिबृंहित वि० वधेलुं; समृद्ध थयेलुं परिभव पुं० अपमान; अनादर; तिर-स्कार (२) पराजय; हार परिभवास्पद न० अपमान के अनादरनुं पात्र थवुं ते परिभाव पुं० अनादर; अपमान परिभावन न० एकठुं थवुं ते; भळी जबुते (२) चितन; घ्यान परिभावना स्त्री० अनादर (२) चितन परिभाविन् वि० अनादर करनारुं(२) पाछळ पाडी देनारुं; चडियातुं परिभाष् १ आ० वातचीत करवी ; कहेवुं (२)समजाववं(३)उपदेश आपवो; प्रेरवं(४)परंपरा नक्की करी आपदी परिभाषण न० वातचीत; संवाद (२) ठपको (३) विधि; नियम परिभाषा स्त्री० वातचीत; संवाद (२) ठपको (३) खुलासो (४) कोई पण विद्यानी निश्चित संज्ञा के शब्द (५) सामान्य नियम परिभुक्त वि० खाधेलुं(२)भोगवेलुं

परिभुग्न वि० वांकुं वळेलुं; नमेलुं परिभुज् ७ आ० खावुं(२)उपभोग करवो परिभू १ प० हराववुं; जीतवुं (२) अपमान करवं(३)नाश करवो(४) ईजा करवी (५) पीडवुं; दुःख देवुं –प्रेरक० चिंतववुं; विचारवुं (२) समावेश करवो (३) चडियाता थवुं (४) एकाग्र करव् परिभृति स्वी० पराभव (२) अनादर परिभेद पुं० ईजा परिभोग पुंच उपभोग (२) संभोग (३) बीजानी वस्तुनो गेरकायदे उपभोग परिश्रम् १ प० [परिश्रमति], ४ प० [परिभ्रम्यति, परिभ्राम्यति] भमवुं; भटकवुं (२) चक्राकारे फरवुं (३) आसपास गोळ फरवुं परिभ्रम पुं भमवुं के भटकवुं ते (२) चित्तभ्रम (३) प्रस्तुत विषयथी बहार जईने बोलवुं ते परिभ्रष्ट वि० पड़ी गयेलुं; छूटूं पडेलुं (२)नासी गयेलुं(३)रहितः, विनानुं (४)पदच्युत ययेलुं के करेलुं **परिभ्रं**श पुं० नासी छूटवुं ते(२) –यी छूटुं पडवुं ते परिमर पुं नाश; विनाश परिमल पुं ० सुगंध (२) सुगंधी पदार्थी-थी करेलुं भर्दन (३)संभोग (४) डाघ [मेलुं थयेलुं परिमलन न० मर्दन **परिमलित** वि० खुशबोदार करेलुं(२) परिमंथर वि० सुस्त; खूब धीमुं परिमंद वि० झांखुं (२) भीमुं; मुस्त (३) नबळुं; कृश (४) अल्प; योंडुं परिभाण न० माप (२) तोल; वजन (३) संख्या परिमाथिन वि० पीडतुं; त्रास आपतुं परिमार्ग् १० उ० शोधवुं; खोळवुं परिमार्ग पुं०, परिमार्ग**य** न० शोधस्रोळ (२)स्पर्शः; संबंघ(३)लूछी काढवुं ते

परिमार्जन न० लूछी नाखवुं ते; साफ मापेलुं (३) नियमित करवं ते परिमित वि० मापसरनुं;मर्यादित(२) परिमितकथ वि० योडुं के टूंकमां बोलतुं परिमिति स्त्री० माप(२)प्रमाण;हद परिमिलन न० स्पर्श (२) संसर्ग परिमिलित वि० मिश्रित परिमुच् ६ उ० [परिमुङ्चित - ते] छोडी मूकवुं; मुक्त करवुं (२) त्याग करवो (३) छोडवुं ; फेंकवुं परिमुह् ४ प० मोह पामवुं (२) मूढ बनव्, मूझवणमां पडवु **परिमृद** वि० मूंझायेलुं **परिमृज् २** प० लूछी नाखवुं ; साफ करवुं (२)मसळवुं;दबाववुं **परिमृद् ९** प० दबाववुं; मर्दन करवुं (२) कचरवुं (३) नाश करवो (४) लूकी नाखवुं (५) 🕈 प० पाछळ पाडी दे ुं; चडियाता थवुं परिमृदित वि० कचरेलुं; छूंदेलुं (२) आर्लिंगन करेलुं(३)चूर्ण करेलुं **परिमृज् ६** प० स्पर्श करवो (२) पकडबुं (३)चितववुं(४)तपास**वृं** परिमृष् ४ प० गुस्से थवुं (२) अदेखाई **परिमृष्ट** वि० धोयेलुं; साफ करेलुं(२) स्पर्शेलुं (३) आलिंगेलुं (४) छवायेलुं परिमेच वि॰ मर्यादित; अल्प (२) मापी शकाय तेवुं परिमोक्ष पूं० दूर करवुंते (२) मुक्त करवुं ते(३)खाली करवुं ते(४)निर्वाण परिमोक्षण न० मुक्ति; मोक्ष (२) बंधनमांथी छूटुं करवुं ते **परिमोहन** न० मोह पमाडे तेवुं परिम्लान वि० करमायेलुं; चीमळायेलुं (२) खिन्न; हताश (३) घटेलुं; ओछुं थयेलुं (४) मेलुं ययेलुं परिम्लै १ प० करमाई जवुं(२)झांखुं पडवुं(३) खिन्न के हताशे धर्वुं(४) अलोप थवुं

परियंत्रणा स्त्री० नियमन परिरक्ष् १ प० रक्षण करवुं (२) छुपाववुं परिरब्ध वि० आलिंगेलुं परिरभृ १ आ० आलिंगन करवुं परिरंभ पु॰, परिरंभण न॰ आलियन परिरोध पुं॰ आडखीली, विघ्न परिलघु वि० अति हलकुं (२) पच-वामां हलकुं (३) घणुं नानुं परिलंघन न० अहींथी तहीं कूदवुं ते **परिसंबन** न० विलंब करवो ते परिलोलित वि० कंपतुः अछळतुं परिवत्सर पुं पूरुं एक वर्षे परिवद् १ प० निदा करवी परिवर्जित वि॰ तजेलुं (२) रहित (३) संपादित; अजित परिवर्त पुं० चक्राकार फरवुं ते (२) समयनो गाळो व्यतीत थवो ते (३) पुनरावर्तन (४) फेरफार; पलटो (५) विनिमय; अदलोबदलो (६) चकळ वकळ फरवुं ते (७) वारंवार जन्मम् ते परिवर्तन न॰ पडलुंबदलवुंते (२) चक्राकार फरवुंते (३) समयना गाळानो अंत (४) फेरफार;, पलटो (५) विनिमय; अदलोबदलो परिवर्तित वि० चकाकारे फरेलुं (२) अदलोबदलो करायेलुं (३) उलटावेलुं ; पलटेलुं (४)दूर करेलुं; खसेडेलुं परिवर्तिन् वि० चक्राकारे फरतुं (२) पलटातुं; बदलात् परिवर्षक पुं० घोडानो खासदार परिवर्षित वि० वधेलुं (२) उछेरेलुं परिवह पुं॰ सात बायु पैकी छठ्ठो वायु (सप्तिषि तथा स्वर्गेगाने वहन करनार) परिवाद पुं० निंदा; अख्य; कलंक (२) तहोमत; आरोप (३) वीणा वगाडवानुं साधन

परिवादिनी स्त्री० सात तारवाळी वीणा परिवार पुं० नोकरचाकरनो समुदाय (२) ढांकण; आच्छादन (३) वाड (४) म्यान पिरवार **परिधारण न० वे**ष्टन – आच्छादन (२) परिवारता स्त्री० दासता; परतंत्रता परिवारित वि० घेरायेलुं; वींटळायेलुं परिवास पुं० वसवूं ते (२) सुगंध परिवाह पुं • ऊभराईने वहेवं ते (२) वधारानुं पाणी वही जवा माटेनो मार्ग परिवाहिन् वि० ऊभरातुं बींटळायेलुं परियोत वि० घेरायेलुं; (२) फेलायेलुं; व्यापेलुं **परिवृ** ५, ९, १० उ० घेरी लेवुं परिवृद्ध वि॰ गाढ; स्थिर (२) मोटुं; घणुं (३) पुं० मालिक; स्वामी परिवृत् १ आ० गोळ फरवुं (२) अहीं तहीं फरवुं (३) बदलबूं; ऊलटबुं (४) पाछुं फरवुं (५) थवुं; बनवुं (६) नाश पामवो; लुप्त थर्बु **परिवृति** स्त्री० घेरी बळवुं ते परिवृत्त वि० चक्राकार फरेलुं (२) पाछ फरेलुं (३) अदलोबदलो करेलुं परिवृत्ति स्त्री० चक्राकार फरवुं ते (२) पाछु फरवुं ते (३) विनिमय; अदलो-बदलो (४) अंत (५) चारेकोर वींटळाव् ते परिवृद्ध १ आ० वधर्वु परिवेत्त परिवेदक पुं० मोटा भाई करता पहेला परणेली नानी भाई परिवेदन न० लग्न (२) मोटा भाईनी पहेलां नाना भाईनुं लग्न (३) संपूर्ण ज्ञान (४) प्राप्ति (५) दुःख; वेदना परिवेल्लित वि० वींटळायेलुं; घेरायेलुं परिवेश पुं० पीरसनुं ते (२) तेजनुं कुंडाळ् (सूर्यचंद्रनी आसपासनुं) परिवेशन न० पीरसवुं ते (२) घेरी बळवुं ते (३) सूर्यचंद्रनी आसपासन् क्डाळ

परिवेष पुं॰ जुओ 'परिवेश' परिवेषक पुं पीरसनारो नोकर परिवेषण न० जुओ 'परिवेशन' **परिवेष्ट् १** आ० आच्छादन करवुं –प्रेरक० वींटळावुं; वींटवुं परिवेष्टन न० वींटळावुं ते (२) आच्छादन (३) पाटो खेंची बांधवो ते परिव्रज् १ प० परिव्रज्या लेवी परिव्रज्या स्त्री० एक जगाएथी बीजी जगाए विचरवं – फरता रहेवं ते (२) घर छोडी संन्यासी थवुं ते परिद्राज्(-ज),परिद्राजकपु० संन्यासी परिकाब्दित वि० जणावेलु; उल्लेखेलु परिसंक् १ आ० शंका लाववी (२) धारवुं; कल्पवुं (३) बीवुं परिशंका स्त्री० शंका; अविश्वास (२) आशा; अपेक्षा **परिशंकिन्** वि० बीतुं; डरतुं परिशिष् ७ प० बाकी रहेवा देवूं (२) (स्थळनो) त्याग करवो परिशिष्ट वि० बाकी रहेलुं; वधेलुं (२) समाप्त (३) न० पुरवणी परिशोलन न०स्पर्श; संसर्ग (२) गाढ संपर्कः; अम्यास परिशुद्ध वि० शुद्ध करेलुं (२) मुक्त थयेलु के करेलुं (३) चूकवी दीघेलुं परिशुद्धि स्त्री० पूरेपूरुं शुद्ध करवुं ते (२) साचापणुं; खरापणुं परिशुष् ४ प० सुकाई जवुं; शोषावुं परिशुष्क वि० पूरेपूर्व मुकाई गयेल् **परिज़्य** वि० तद्दन खाली (२)⊸थी तद्दन रहित परिश्रम पु० थाक; तकलीफ (२) यत्न; उद्यम (३) परिणाम परिश्वय पुं० सभा (२) आश्रय परिभुत वि॰ सांभळेलु(२)विस्यात परिषद स्त्री० सभा; बेठक; मंडळी परिषेक पु॰, परिषेचन न० सीचवुं-छांटबुं – रेडबुं ते

परिष्कर पु० शणगार; अलंकार परिष्कार पुं० अलंकार; शणगार(२) रांधवुं ते (३) राचरचीलुं परिष्कृ ८ उ० शणनारवुं (२) साफ करवुं; मांजबुं **परिष्कृत** वि० शणगारेलुं (२) संस्का-रेलु (३) स्वच्छ करेलु (४) राधेलु (५) मांजेलुं परिष्यंद पु० रेलो; बहेळो (२) झमबुं ते परिष्वक्त वि० आलिगेलुं; भेटेलुं **परिष्यज् १** आ० आलिगव् परिष्वजन न०, परिष्यंग पु० आलि-गन (२) स्पर्श; संसर्ग **परिष्वंज् १** आ० [परिष्वजते] आलि-गन करवुं; भेटवुं परिष्वंजन न्० जुओ 'परिष्वजन' परिसमाप्त वि० पूरुं थयेलुं (२) केन्द्रित थयेलुं परिसर पुं० सीमा; हद (२) (नगर, पर्वत वगेरेनी) आसपासनी भूमि (३) नस; शिरा (४) पहोळाई परिसर्पण न० आसपास घूमबुं के फरवुं ते परिसंख्या २ प० गणतरी करवी परिसंख्यान न० गणतरी परिसृ १ प० आसपास वहेवुं (२) चारेकोर फरव<u>ुं</u> परिस्कंद् १ प० आमतेम कूदवुं परिस्कंद वि॰ बीजाए उछेरेलुं (२) पुं० पालित संतान (३)नोकर (४) अंगरक्षक परिस्कंथ पुं ० समुदाय; समूह परिस्तृ ५ उ०, परिस्तृ ९ उ० पाथरवं (२) ढांकवुं परिस्तोम पुं० हाथी उपर नाखवानी झूल (२) एक यज्ञपात्र परिस्पंद पु० फरकवुं – ध्रूजवुते (२) वाळने फूल वगेरेथी शणगारवा ते (३) शणगार (४) चालु राखवुंते (५) पराक्रम; बहादुरी

परिस्फुरित वि० कंपतुं; हालतुं (२) चळकतुं; चमकतुं (३) खीलेलुं परिस्यंद पु० जुओ 'परिष्यंद' परिस्नव पुं० वहेवुं ते; रेलो (२) सरी के सरकी जबुंते परिस्नुत वि० झमेलुं; टपकेलुं परिहत वि० ढोलुं थयेलुं – करेलुं परिहस् १ प० हसर्वु; मजाक करवी (२) चडियाता थवु; हसी का**ढवुं** परिहा ३ प० तजवुं; छोड़ी देशु –कर्मणि० –थी अतरता होवुं (२) —मां अधूरा होबुं; —थी रहित होबुं (३) क्षीण थवुं; दूबळुं धवुं (४) बीती जबुं (५) -थी रहित कराबुं परिहाणि (-नि) स्त्री० घटाडो (२) क्षीण थवं ते **परिहार** पुं० छोडी देवुं – छांडवुं ते; दूर करवुं ते (२) निराकरण करवुं ते परिहार्य वि० तजवा के छांडवा योग्य **परिहास** पु॰ मजाक ; ठठ्ठो (२) हांसी **परिहोण** वि० --विनानुं; रहित (२) ओछुं; अधूरुं; ख्टतुं परिहृ १ प० दूर करवुं; वर्जवुं; तजवुं (२) खंडन करवुं, जवाब आपवो (आक्षेप के आरोपनो)(३) छुपाववुं **यरिहृत** वि० त्यागेलुं; छांडेलुं (२) दूर करेलुं (३) लीधेलुं; पकडेलुं परी (परि + इ) २ प० प्रदक्षिणा करवी (२) वींटळावुं; घेराई वळवुं (३) विचारवुं; निरीक्षण करवुं परीक्ष् (परि + ईक्ष्) १ आ० परीक्षा करवी; चकासणी करवी **परीक्षक** पुं० परीक्षा करनार; तपासनार परीक्षण न० परीक्षा करवी ते परीक्षा स्त्री० तपास (२) कसोटी परीक्षित वि० परीक्षा करेलु; चकासेलुं **चरीजाम** पुं० जुओ 'परिणाम' परोणाह पुं० जुओ 'परिणाह'

परीत वि॰ घेरायेलुं;वींटळायेलुं(२) विदाय थयेलुं (३) वीतेलुं (४) पक-डायेलुं (५) प्रदक्षिणा करायेलुं **परीताप** पुं० जुओ 'परिताप' परीतोष पु॰ जुओ 'परितोष' परीवाह पुं० जुओ 'परिदाह' **परोघान** न० जुओं 'परिधान' **परीपाक** पुं० जुओ 'परिषाक' **परीप्सा** स्त्री० मेळववानी--प्राप्त कर-वानी इच्छा (२) ताकीद; स्वरा परीप्सु वि० संरक्षवानी इच्छावाळुं (२) शोधी काढवानी इच्छावाळुं परीभव पुं० जुओ 'परिभव' परीमाण न० जुओ 'परिमाण' **परीवर्त** पुं० जुओ 'परिवर्त' परीवाद पुं० जुओ 'परिवाद' परीवार पुं० जुओ 'परिवार' परीवाह पु० जुओ 'परिवाह' परीवेश (-ष) पुं० जुओ 'परिवेश' परीष्ट वि० इच्छवा योग्य; उत्तम परोष्टि स्त्री० शोध-खोळ; तपास (२) सेवा; चाकरी (३) पूजा-आदर **परीहार** पुं० जुओ 'परिहार' **परीहास** पुं० जुओ 'परिहास' **परुत्** अ० गये वर्षे; परार परुष वि० कर्कश; खरबचडुं (२) निष्ठुर; निर्दय (३) तीव्र; तीणुं **परुषाक्षर** वि० कठोर शब्दो बोलनार्ह परुषित वि० जेनी प्रत्ये कठोरताथी दर्तवामां आब्युं होय तेवुं परुषेतर वि॰ कर्कश नहि तेवुं; कोमळ **परे**(परा+इ) २ प० नासी जवुं; भागी छूटवुं (२) शामवुं ; पहोंचवुं (३) मरण पामबुं **परे** अ० त्यार पछी (२)भविष्यमां **परेण** अ० दूर; पार (२) –ना **कर**ता वध् (३) पछीथी परेत वि॰ मृत (२)पुं॰(भूत)प्रेत

परेतकल्प वि० मृतप्राय परेतकास पुं मृत्युसमय परेतभूत् पुं० यमराजा परेतभूमि स्त्री० स्मशान परेतर वि० दुश्मन नहि तेवुं (२)पोतानुं परेखित, परेखुस् अ० बीज़े दिवसे परेषित वि० बीजाए पाळेलुं के पोषेलुं (२) पुं•दास; नोकर(३) कोयल **परोक्ष** वि० अप्रत्यक्ष; नजरे न पडतुं (२) गेरहाजर (३) गुप्त; अजाण्युं (४) न० गेरहाजरी; नजर सामे न होबुं ते | मानत् परोक्षबृद्धि वि० निरपेक्ष (२) परोक्ष **परोडा**ंस्त्री० परपत्नी **परोपकार** पुं० बीजा उपर उपकार करवो ते; बीजानुं हित करवुं ते परोपवेश पुं० बीजाने उपदेश आपवी ते परोरजस् वि० रागद्वेष विनानुं पर्जन्य पुं० मेघ; वादळ (२) वर्षा; वरसाद (३) इंद्र **पर्ज** न० पांख (२) बाणनुं पींछुं (३) पान; पांदडुं (४) नागरवेलनुं पान पर्णकुटिका, पर्णकुटी स्त्री० झूंपडी **पर्णभीरपट** पुं० शंकर **पर्णल** वि० खूब पांदडांवाळुं पर्णजाला स्त्री० पांदडांनी झूंपडी पर्णसंस्तर पुं० पांदडांनी पथारीमां सूनारो पर्णास (-सि) पुं० तुलसी पर्णाहार पुं० पांदडा खाईने जीवनुं ते पर्णिन् पुं० वृक्ष (२)पलाश वृक्ष **पर्नोटज** न० पांदडांनी बनावेली झूंपडी **पर्पट पुं**० पापड पर्यक् अ० चोतरफ;दरेक बाजुए पर्यट् १ प० भटकवुं; रखडवुं पर्यटक पुं० रखडतो; भामटो पर्यटन, पर्यटित न० रखडवुं-भटकवुं ते पर्यय पुं• पूरुं यवुं ते; समाप्त यवुं ते

(२) नकामुं खोवुंते (समय) (३) फेर; पलटो (४) नाश पर्यवदात वि० तद्दन पवित्र; शुद्ध (२) अति जाणीत् पर्यवष्टंभ् ५,९ प० घेरो घालवो पर्यवर्ष्टभन न० घेरो घालवो ते पर्यवसान न० अंत; समाप्ति (२) निश्चय; निर्णय पर्यवसित वि० समाप्त थयेलुं (२) नाश पामेलुं (३) निदिचत करेलुं पर्यवसो (परि⊹अव+सो) ४ प० पूरुं करवुं (२) नक्की करवुं (३) परिणाम आववं (४) नाश पामवं पर्यवस्कंद पुं० कूदको मारवो ते पर्यवस्था (परि+अव+स्था) १ प० [पर्यवितिष्ठिति] स्थिर थवुं; स्वस्थ थवुं (२) बधे होवुं; व्यापवुं पर्यर्थु वि० आंसु भरेलुं; आंसु ऊभ-राता होय तेवु पर्यस् (परि+अस्) ४ प० नाखवुं; फेंकवुं (२) चोतरफ फेंकवुं; विस्तेरवुं (३) कंघुं वाळवुं (४) गोळ फेरवब्रुं (५) छाई देवुं; व्यापवुं पर्यस्त वि० चोतरफ फेंकायेलुं; विखे-रेलुं (२) घेरायेलुं (३)बंधायेलुं(४) ऊंधुं वळेलुं – वाळेलुं पर्यंक पुं० पलंग; खाटलो (२) म्यानो; पालसी (३) घूंटण बाळी केड साथे बंधातुं वस्त्र (४) एक आसन (योगनुं) पर्यंकर्बंध पुं० केड साथे घूंटण बंधाय एम कपडुं बांधवुं ते **पर्यंच् १** उ० गोळ फेरववुं; आमळवुं पर्यंत वि० –थी जेनी सीमा बंधाय छे तेवुं; -- सुधीनुं(२)पासेनुं; नजीकनुं (३) पुं० घेराव (४) छेडो; सीमा (५) बाजु; पडखुं(६)अंत;समाप्ति पर्यतदेश पुं० पडोशनो – नजीकनो प्रदेश पर्याकुल वि॰ डहोळायेल (२) गभ-रायेलुं (३) बीखरायेलुं अस्तव्यस्त

(४) आकुळव्याकुळ थयेलुं (५) भरायेलुं; पूर्ण [वींटवु; बांधवु पर्याक्षिष् (परि+ आ + क्षिप्) ६ प० पर्यागम् १ ५० [पर्यागच्छति] नजीक जवुं (२) पूरुं थवुं (३) जीतवुं (४) वींटळाबुं; घेरबुं (५) पाछुं आववुं पर्याण न० पलाण (धोडानुं) पर्याप् ५ प० पूरतुं होवुं; शक्तिमान होवुं(२)परिपूर्णं होवुं(३)बचाववुं पर्यापतत् वि० आमतेम दोडत् पर्याप्त वि० मेळवेलुं (२) परिपूर्ण (३) बघु; आखुं (४) समर्थ (५) पूरतुं (६) विशाळ (७) प्रचुर; अत्यंत (८) मर्यादित पर्याप्तम् अ० मरजी मुजब;धराईने पर्याप्ति स्त्री० प्राप्ति (२) अंत; समाप्ति (३) पूरतुं होवुं ते; परि-पूर्णता (४) तृप्ति पर्याय पुं० गोळ फरवुं ते; कूंडाळे फरवुं ते (२)वीतवुं - पूरुं थवुं ते (समयनुं) (३) नियमित आवर्तन थवुं ते (४) बारो; ऋम (५) व्यवस्था; गोठ-वण (६)रीत; पद्धति (७) समानार्थ शब्द (व्या०) (८)तक; प्रसंग (९) उपाय(१०)अंत(११)रचना (१२) विपरीतता; पलटो पर्यायत वि० घणु लांबु करवी ते पर्यायसेवा स्त्री० वारा प्रमाणे सेवा पर्यायेण अ० अनुक्रमे; वारी प्रमाणे (२) अवारनवार (३) एकांतरे **पर्यास्त्रोचित** वि० विचारेलुं; तपासेलुं पर्याविल वि० कादववाळुं; डहोळुं **पर्यावृत** वि० ढांकेलुं पर्यासन न० गोळ फरवुं ते (२) विनाश पर्यासित वि० नीचे पटकेलुं(२)विनष्ट **पर्युत्सुक** वि० खिन्न ; उदास (२) अत्यंत उत्सुक; आतुर (३) क्षुब्ध पर्युदस् ४ प० वारवुं; निकारवुं

पर्युपस्यान न० सेवाचाकरी [लेवो **पर्युपास् २** आ० सेवा करवी (२) आश्रय पर्युपासन न० सेवा; उपासना **पर्युषण** न० सेवा; भक्ति पर्युषित वि० वासी; ताजुं नहीं तेवुं (२) रात रहेलुं पर्येषण न०, पर्येषणा स्त्री० तपास; पर्वणी स्त्री० अमावास्या के पूर्णिमा (२) उत्सवनो दिवस **पर्वत** पुं० डुंगर; खडक पर्वतीकृ ८ उ० पर्वत जेवडुं मोटुं करवूं पर्वतीय वि० पर्वतनुं; पर्वत संबंधी पर्वतोपत्यका स्त्री० पर्वतनी तळेटी पर्वन् न० गांठ; सांधो (२) अवयव, अंग के सांधो (३) भाग; विभाग; खंड (४) निसरणीनुं पगथियुं (५) आठम, चौदश, पूर्णिमा तथा अमा-वास्या ए चार दिवसी (६)पूर्णिमा के अमावास्यानो दिवस (७) ग्रहण (सूर्य के चंद्रन्) (८) उत्सवनो दिवस **पर्वभाग** पु० कांडु **पर्जा** पुं० फरसी; कुहाडी पर्षद् स्त्री० परिषद; मंडळी (सास करीने धर्मविचार माटे मळेली) पल न० मांस (२) एक वजन के माप पलल पुं॰ राक्षस(२) न० मांस (३) कादव; कीचड **पलाय् १ आ**० पलायन कर**य् पलायन** न० नासी जब्देते पलाल पुं॰, न॰ पराळ पलाञ पुं० खाखरानुं झाड (२) न० खाखरानुं फूल; केसूडुं (३) पां**खडी** पलाशन पुं० राक्षस (मांस खानारो) पलांड पु० ड्गळी पलिस वि॰ घोळुं; भूखरुं (२) घोळा वाळवाळु;वृद्ध (३)न० घोळो वाळ; पळियुं (४) घणा के शणगारेला वाळ (५) केशपाश

पलितछब्मन् वि० पळियां पाछळ छुपा-येलुं (वृद्धावस्था) पर्संक पु॰ पलग पल्याणित वि० पलाणेलुं पल्लव पुं०, न० क्पेळ; नवुं पान (२) नवी डाळी (३) कळी (४) पालव; वस्त्रनो छेडो छिल्लुं (ज्ञान) पल्लवग्राहिन् वि० उपरचोटियुं; उपर-पल्लवित वि० नवी कूंपळोबाळुं(२) विस्तारित (३) अळताथी रंगेलुं(४) पुं० अळतो पल्लिबन् वि० कूंपळोवाळुं; अंकुरित पह्लि (-ल्ली) स्त्री० नानु गामहु (२) घरोळी पस्वल न० नानुं तळाव; खाबोचियुं पवत् वि० पावन करनारुं (२) वेगे गति करत् पवन वि॰ पवित्र; स्वच्छ (२) पुं॰ वायु; हवा (३) प्राणवायु; श्वांस (४) पावन करनार (दायु) पवनतनय पुं भीम (२) हनुमान पवनपदवी स्त्री० आकाश;अंतरीक्ष **पदनभू** पुं० हनुमान (२) भीम प**बमान** पुं० पवन; वायु; हवा (२) गार्हपत्य अग्नि पवमानसल पुं अग्नि पवि पुं० इंद्रतुंविज्य (२)गर्जना ; कडाको पवित्र वि॰ पावन; शुद्ध (२) पाप-रहित (३)न० धी होमवामां वपराता (बे) दाभ (४) जनोई पशु पुं० जानवर; चोपगुं प्राणी (२) यज्ञमां होमवानुं प्राणी (बकरं इ०) (३)जंगली जानवर पशुका स्त्री० कोई पण नानुं जानवर पशुचात पुं० यज्ञ माटे पशुनो वध पशुनाय, पशुपति पुं० महादेव पशुमारम् अ० ढोरने मारे तेम **पदच** वि० पाछळनुं (२) पश्चिमनुं

पश्चात् अ० पाछळथी ; पाछली बाजुए (२) पाछळ; पाछली बाजु (३) पछीथी (४)छेवटे (५)पश्चिम बाजु-एथी (६) पश्चिम तरफ पश्चात्कृत वि० पाछुं पाडी दीघेलुं पश्चात्ताप पुं पस्तावो पश्चादहस् अ० पाछले पहोरे पश्चार्ध पुं॰ पाछलो भाग; पाछळतो भाग (शरीरनो) (२) पछीनो अर्थो भाग (३) पश्चिम बाजु पश्चिम वि० पश्चिम दिशानुं; आध-मणुं (२) छेवटनुं; छेल्लुं (३) त्यार पछीनुं; पाछळ थनारं पश्चिमरात्र पुं॰ रातनो छेवटनो भाग पश्चिमा स्त्री० पश्चिम दिशा पदय वि॰ जोनार्ह; जोत् पश्यत् वि० जोतु; देखतु; निहाळतुं पश्यतोहर पुं० मालिक देखती होय ने चोरनार (जेम के सोनी) पश्यंती स्त्री० वाणीनी चार स्थितिमां-नी बीजी (जुओ 'परा') (२) वेश्या पंक पुं०, न० कादव; कीचड (२) तेना जेवो गाढ लोंदो (३) पाप पंकिच्छद् पुं० डहोळुं पाणी साफ करवा जेन् फळ वंपराय छे ते झाड **पंकज** न० कमळ पंकजकोश पु० कमळनो दोडो पंकजनाभ पुं० विष्णु **पंकजन्मन्** पुं० ब्रह्मा पंकजिनी स्त्री० कमळनो छोड-वेल (२) कमळतो समूह (३) घणां कमळ **ऊगतां होय तेवुं स्थळ पंकि**ल वि० कादव भरेलुं पंकेज, पंकेदह् (–ह) न० कमळ पंक्ति स्त्री • हार; पंगत; ओळ (२) एक ज ज्ञातिना जमवा बेठेला लोकोनी पंगत (३) दशनी संख्या **पंक्तिता** स्त्री० हार; ओळ

पंक्तिपावन पुं० पवित्र ब्राह्मण (आखी पंगतने पवित्र करनार मनाय छे) पंक्तिरथ पुं० दशस्य राजा **पंगु** वि० पांगळुं; लूलुं **पंचक** वि० पाचनुं बनेलुं;पाचने लगतुं (२) पुं० न० पांचनो समूह **पंचगव्य** न० गायनुं दूध, दहीं, घी, मूत्र अने छाण -ए पांच वस्तुओ पंचगुणाः प्रबर्वय इद्रियोना पांच विषयो (रूप, रस, गंध, स्पर्श अने शब्द) **पंचगुणी** स्त्री० पृथ्वी पंचतत्त्व न० पंचमहाभूत (पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश) पंचतपस् पुं० पंचाग्नि तपनारो तपस्वी **पंचत्वंगत वि॰ मृत (पंचमहाभूतनी** स्थिति पामेलुं) **पंचन्** वि० (ब०व०) पांच(समासनी शरू-आतमां आवे त्यारे न् ऊडी जाय छे) **पंचनल** पुं० पांच नखवाळुं प्राणी (हाथी, ससलुं, काचबो, मगर, सिंह, वाघ इ०) **पंचनद** पुं० हालनो पंजाब (शतद्रु– सतलज, विपाशा-बियास, ईरावती-राबी, चंद्रभागा-चिनाब, वितस्ता-जेलम, ए पांच नदीओनो प्रदेश) **पंचपरी** स्त्री० पांच पगलां साथे भरवां ते **पंचप्राणाः** पुं० ब०व० शरीरना पांच वायुओ – प्राणो (प्राण, अपान, व्यान, उदान अने समान) **पंचकाण** पुं० कामदेव (अरविंद, अशोक, आंबामोर, नवमल्लिका अने नीलोत्पल – ए पांच फुलरूपी बाणवाळी) **पंचभृत न० पृथ्वी, जल, वायु, तेज** आकाश –ए पांच महाभूत **पंचम** वि॰ पांचमुं (२) चतुर (३) सुंदर (४) पुं० संगीतना सप्तकमां पांचमो स्वर (कोयलनो स्वर) **पंचवटी** स्त्री० पीपळो, आमळी, आसो-पालव, वड अने बीली -ए पांच वृक्षीनी

समूह (२) नाशिक पासे आवेल दंड-कारण्यनो एक भाग (त्यां राम वन-वास रह्या हता) [इंद्रियोनो समूह **पंचवर्ग पुं**० पांचनो समूह (२) पांच पंचवीरगोष्ठ न० सभामंडप **पंचवृत्तिता** स्त्री० पांच इंद्रियो उपर आधार राखवो ते पंचशर पुं० कामदेव (जुओ 'पंचबाण') पंचशास्त पुं० हाथ (२) हाथी [नीकोवाळ्) **पंचशिख पुं**० सिंह पंचल्लोतस् न० मन (पांच इंद्रियो रूपी पंचाग्नि पुं ०पांच पवित्र अग्निनो समुदाय (दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य अने आवसध्य) (२) ए पांच अग्नि राखनार गृहस्थ **मंचातप** वि० (चार बाजु) चार अग्नि अने उपर सूर्य ए पांच अग्नि वडे तप करनारु पं**चातिग** वि० मुक्त पंचानन पुं० शिव (२) सिंह (पहोळुं मुख होवाथी) (३) (समासने अंते) ते ते विद्यामां पारंगत (उदा० 'तर्कपंचानन') **पंचामृत** न० दूध, दहीं, घी, मध, साकर -ए पांचनुं मिश्रण (२) पंचमहाभूतो-नो समूह **पंचायतन** न०, **पंचायतनी** स्त्री० गण-पति, विष्णु, शंकर, देवी अने सूर्य –ए पांच देवोनो समुदाय पंचाली स्त्री० ढींगली; पूतळी **पंचाञ्चत् , पंचाञ्चति** स्त्री० पचास **पंचास्य** पुं० शिव (२) सिंह **पंचांग** वि० पांच अंगवाळ (जेम के 'प्रणाम': बाहु, जानु, शिर,वक्षस्, दृष्टि वडे करातो; अथवा 'अभिनय': चित्त, अक्षि, भ्रू, हस्त, पाद वडे करातो; अथवा 'राजनीति': कार्यारंभ, पुरुष अने द्रव्यन् साधन, देशकाळ, मुख्केछी-

ओनो सामनो अने कार्यसिद्धि -ए पांच अंगवाळी) (२) न० टीपणुं (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, अने करण –ए पांच अंगबाळ्) **पंचिका** स्त्री० खातावही : **पंचोपचार** पुं० पूजाना पांच पदार्थी (गंध, पुष्प, धूप, दीप अने नैवेद्य) **पंजर** न० पोजरुं(२)पुं०, न० पांसळी-ओतुं पांजर्ह (३) हाडपिंजर (४) पुरु शरीर िपोपट **पंजरशुक** पुं॰ पांजरामानी (पाळेली) पंजिका स्त्री० शब्दे शब्दना अर्थवाळी टीका (२) खातावही (३) पंचांग पंडा स्त्री० शाणपण (२) विद्याम्यास पंडित वि० डाह्युं; शाणुं (२) कुशळ; होशियार (३) पुं० विद्वान पंडितजातीय वि० थोडुं घणुं होशियार पंडितमानिक, पंडितमानिन् विष्पोतानी जातने पंडित माननारं ्रिकरनार पंडितवादिन् वि० डाह्यं होवानी दंभ पंडितंमन्य वि० जुओ 'पंडितमानिक' पंपा स्त्री० एक सरोवर (दंडकारण्यमां) पा १ प० [पिबिति] पीवु (२) चुंबन करवुं (३) अंदर लेवुं (आंखयो, कानथी, श्वासयी इ०) (४) मद्यशान करबु पा२ प० [पाति] रक्षण करवुं (२) कातन करत् –प्रेरक० [पालयति ⊸ते] पालन करवुं; रक्षत्रं (२)शासन करवुं (३) पाळ रुं; पूरुं करवुं (प्रतिज्ञा ६०) (४) उछेरवं (५) -नी राह जोबी पावि० (समासने अंते) रक्षण करनारुं (२) पोनारुं (जेमके, 'सोमपा') पाक पुं० राधवुं ते (२)पकववुं ते (ईंट इ०) (३) पाचन करवुं –थबुं ते (४) परिथक्व थत्रुं ते (५)सिद्ध – पूर्ण थवुं ते (६) परिणाम (७)परिणाम तरफ जबुते (८) बाळ घोळा थवा ते (९) एक राक्षम (जेने इंद्रे मार्थे हतो)

पाकाभिमुख वि० परिपक्वता के विकास माटे तैयार थयेलुं पाक्षिक वि० पखवाडियानुं; पखवा-डियाने लगतुं (२) पक्षी संबंधी (३) पक्ष, बाद इ० ने लगतुं(४)वैकल्पिक पाखंड पुं० नास्तिक (२) जैन के बौद्ध पागल वि० उन्मत्त; गांडुं **पाचक** वि० राधनारुं (२) परिपक्व करनार्घ (३) पचावनार्घ (४) पुं० रसाइयो पाचन वि० जुओ 'पाचक' वि० पाटच्चर पुं० चोर; डाकु पाटन न० फाडबुं - चीरबुं - भेदबुं ते **पाटल** वि० आछुं लाल ; गुलाबी ; तांबा-ना रंगनुं (२) पुं० गुलाब अथवा तांबा जेवो लाल रंग (३) एक फूलझाड (४) न० तेनुं फूल पाटलित वि० लाल रंगनुं करायेलुं पाटलिपुत्र न० मगथनी राजधानी पाटलोपल पुं० एक मणि **पाटब पु॰ चतुर**ता; कुशळता (२) चपळता (३) साहस पाटविक वि० प्रशेण; चतुर पाटित वि० फाडेलुं; चीरेलुं (२) बींधेलुं; बींधायेलुं पाटी स्त्रो० गणित (शास्त्र) पाटीर ५० चंदन; सुखड पाठ पुं० भणवुं - पढबुंते (२) वांचवुं ते; अभ्यास (३) वेदोनुं पठन (४) ग्रंथनुं मूळ लखाण (५) पाठांतर पाठक वि० शिक्षक; अध्यापक (२) पुराणी (३) विद्यार्थी पाठन न० शीखववुं -- भणाववुं ते पाठशाला स्त्री० निशाळ; शाळा पाठांतर न० ग्रंथनी बीजी प्रतमां मळती जुदो पाठ पाठित वि० भणावेलुं; शीखवेलुं **पाठीन** पूँ० एक जातनुं माछलुं (२) एक फुलझाड

पाठच वि० पाठ करवा योग्य; भणवा योग्य (२) शीखववा योग्य पाण पुं० वेपार (२) वेपारी (३) रमतनो दाव (४) होड **पाणि पुं**० हाथ पाणि स्त्री० पीठ; बजार पाणिप्रह पु०, पाणिप्रहण न० लग्न पाणिप्रहीत्, पाणिप्राह पुं ० पति **पाणिघ** पुं० मृदंग वगाडनार पाणिघात पुं० मुब्टियुद्ध करनार **पाणिज पुं**० नख पाणितल न० हथेळी पाषिदाक्ष्य न० हाथचालाकी **पाणिनि** पुं० संस्कृत भाषानुं व्याकरण रचनार मुनि **पाणिनीय** वि० पाणिनिए रचेलुं पाणिपल्लव पुं ० कूंपळ जेवो कोमळ हाथ (२) आंगळी पाणिपात्र वि० हाथने खोबे पाणी पीनारं; हाथ रूपी पात्रवाळ् **पाणिपीडन** न० पाणिग्रहण **पाणिबाद पुं**० ताळी पाडकी ते (२) ढोलक बगाडबुं ते **पाणीकरण** न० परणवुं ते पात पुं॰ ऊडवुं ते (२) पडवुं ते; नीचे भाववुंते (३) विनाश (४) प्रहार (५) नाखवु-रेडवु-फेंकवु ते (६) बनव्ं – थवुं ते **पातक** पूं०, न० पाप **पातकिन्** वि० पापयुक्तः; पापी **पातन** वि० नीचे पाडनारुं (२) न० नीचे पाडवुं ते; नाखबुं ते **पातंजल** वि० पतंजलिए रचेलु **पाताल न०** पृथ्वीनी नीचे आवेला मनाता सात लोकमांनो छेल्लो पासित वि० नीचे नाखेलुं; नीचे पाडेलुं (२) नमावेलुं (३) नीचुं करेलुं **पातिन्** वि ० नीचे आवत्-जत्-ऊतरत्

(२) —मां समाविष्ट थतुं (३) पाडनार्ह; फेंकनार्ह **पातिव्रत्य न०** पतिव्रतापण् **पातुक** वि० पतनशील **पात्र** न० पीवानुं वासण (२) कोई पण वासण (३) जेमां कंई मूकदामां आवे ते (४) योग्य के लायक माणस (दान वर्गरे माटे) (५) नट; अभिनेता (६) नदीना वे कांठा वच्चेनो भाग पात्रता स्त्री० योग्यता; लायकात पात्रशेष पुं० भोजननुं बचेलुं – वधेलुं ते **पात्री** स्त्री० पात्र; वासण पात्रीकृ ८ उ० पात्र – योग्य बनाववुं पात्रेबहुल, पात्रेसमित पु॰ कामना समये नहि पण मात्र भोजनना समये भेगो थनार (२) दंभी पुरुष पात्रीकरण न० लग्न **पायस्** न० पाणी पायस्पति पुं० समुद्र; महासागर **पायेय** न० मुसाफरीमां खावा माटेनुं भातुं **पाचोचि, पायोनिचि** पुं० सागर; समुद्र पाद पुं०पग;चरण (२) किरण (३) पायो (साटला इ० नो) (४) पर्वतनी तळेटो नजीकनी टेकरी (५) चोधो भाग (६) कडी के श्लोकनी चोथो भाग (७) यांभलो (८) तळियु (९) मानानो एक सिक्को (एक तोलानो) पादग्रहण न० पग पकडवा ते (नमस्कार) **पादचार पुं०** चालवुं ते; फरवुं ते पादचारिन् वि० पगे चालनारुं (२)पग-पाळुं ऊभुं रहीने लडनार्च (३) प्ं० मुसाफर; बटेमार्गु पादत्राण न० जोडों; मोजडी **पादन्यास** पुं० पगनुं हलनचलन पादप पुं० वृक्ष पगवाट पादपद्धति स्त्री ० पश्लांनी पंक्ति (२) पादपोठ पुं०, न० पग मूकवानी बाजठ पादपूरण न० खूटती कडी उमेरवी ते

पारप्रभासन न० पग भोवा ते पादप्रहार पुं० लात पावमुद्रा स्त्री० पगलांनी छाप पादमूल न० पगनी एडी (२) पर्वतनी [वळगेलुं तळंटी पारसम्ब वि० पग पासे पडेलुं; पगे भादशीच न० पग घोवा ते पादाच पुं० पगनो आगलो भाग **पादाघात** पुं॰ लात [पायदळ **पादात पुं**० पायदळनो योद्धो (२) न० **पादानत** वि० पगे पडेलुं **पादारविंद** न० कमळ जेवो पग – चरण पादावनाम पुं पर्ग पडवु ते पादाहरित स्त्री० उपर पग मुकवो ते (२) स्रात ; ठेस [(चालवाथी पडती) पादांक प्० पगना तळियानी छाप **पार्वात** पुं० पगनो छेडानो भाग **पादांतरे अ०**एक पगला पछी (२) नजीक **पादुका** स्त्री० पावडी; चाख**डी पादोदक** न० पग घोदानुं पाणी (२) जेमां पग धोया होय ते पाणी पाद्य न० पग घोवा माटेनुं पाणी पान न० पीवुंते (२) दारू पीवो ते (३) पीणुं (४) पीवानुं वासण पानक न० पीण् स्थान पानभूमि स्त्री० दारू पीवानो ओरडो-**पानागार** पुं०, न० पीठुं; दारूनी दुकान पानीय वि० पीवा योग्य (२) रक्षण करवा योग्य (३) न० पाणी (४) पीणूं **पानीयवररिक** पुं० मठमां पाणी भरनार पाप वि॰ दुष्ट; पापी (२) नीच; अधम (३) अपशुकनियाळ (४) न० धर्म विरुद्धनुं कृत्य;दुष्कृत्य (५) पुं० पापी माणस पापगति पूं ० कमनसीब ; दुर्भागी पापग्रह पुं० खराब ग्रह (मंगळ, शनि, राहु के केतु) पापघन वि० पापनो नाश करनारु

पापचर्य पुं० पापी (२) असुर पापदर्शन, पापदर्शिन् वि० बीजना दोषो जोनारं (२) बीजान् बुरु ताकनारं **पापभाज्** वि० पापयुक्त पापम् अ० खोटी रीते; अधर्मथी पापद्धि स्त्री ॰ मृगया पापक्षील वि० स्वभावशी दुष्ट;पापी पापात्मन् वि० पापी; दुष्ट पापानुबंध पुं० खराब परिणाम **पापारंभ** वि० दुष्ट; पापी पापिन् वि० पापयुक्त; पापी पापिष्ठ वि० अतिशय पापी (सौमां) **पापीयस्** वि० ववुपापी (बेमां) **पाप्मन्** पुं० पाप पामन् पुं० खसनो रोग पामर पुं० मूर्ख (२) दुष्ट; नीच पामा स्त्री० खसनो रोग पायस पुं॰, न॰ दूबराक; खीर (२) न० दूध (३) अमृत **पायसपिडारक** पुं० पायस खानार पायिन् वि॰ पीतुं; पीनारुं पायु पुं ० गुदा **पार् १०** प० पूर्व करवुं (२) ओळंग**वुं** (३) शक्तिमान थवं (४) जीतवं पार पुं०, न० सामी बाजु के किनारी (२) छेडो; अंत (३)पूरुं – समग्र ते (४) पुं० अंत; छेंडो **शारक्य** वि० पारकुं (२) विरोधी **(३)** पुं० शत्रु (४) न० (परलोकमां सुख पँमाडे तेवुं) पवित्र आचरण **पारग** वि० सामे पार जनारुं (२) अंत सुधी जनारुं; पूरेपूरुं निष्णात (३) न० वचन पाळवुं ते पारगत वि० सामे पार पहोंचेलुं **पारग्रामिक** वि० विरोधो ~ दुश्मन **एवं पारण** वि० पार लई जनारुं (२) उद्घारनारुं (३) न० सिद्ध करवुं--पार उतारवं ते (४) उपवास पछी भोजन करवं ते (५) गळी जवं ते

स्वर्गना

पारणा स्त्री० उपवास पछी जमवुं ते; पारणुं (२) जमबुंते **पारतंत्र्य** न० परतंत्रता; पराधीनता **पारत्रिक, पारत्र्य** वि० परलोक संबंधी; परलोकमां उपयोगी **पारद** पुं० पारो **पारदारिक** पुं ० परस्त्रीगामी पारदार्यं न० व्यभिचार; जारकर्म पारदृश्वन् वि० डाहघुं; समजणुं (२) पारंगत; प्रवीण पारमार्थिक वि० परमार्थ - परम तत्त्वने लगतुं (२) यथार्थः; वास्तविकः; सत्य (३) परमार्थेनी परवा करतुं (४) अति उत्तम पारमिक वि० उत्तम; मुख्य; श्रेष्ठ **पारमित** वि० सामे पार गयेलु पारमिता स्त्री० सिद्धिः, परिपूर्णता पारियञ्जू वि० आनंददायक (२) अंत मुधी जई शकनारुं; यशस्वी **पारलोकिक** वि० परलोकने लगतुं; पर-लोक माटे हितकर **पारस** वि० ईरान देशनुं **पारसीक** पुं० ईराननो बासी **पारंगत** वि० पार गयेलुं पारंपर वि० आगळनुं; भविष्यनुं **पारंपरिण, पारंपरीण** वि० परंपराशी चाल्युं आवतुं ; वंशानुक्रमे चाल्युं आवतुं **पारंपर्य न० परं**पराथी चार्ल्यु आव**ट्यं** ते पारंपर्येण अ० कमयी; अनुक्रमयी पारा स्त्री० एक नदी **पारापत** पुं० कबूतर; पारे वुं **पारायण** न० सामे पार ज**ब**ुंते (२) सूक्ष्म अभ्यास (३) पूरेपूर्ह – समग्र ते **पारावत पुं**० कबूतर; पारेवूं पारावार न० बंने किनारा; नजीक अने दूरनो किनारो (२) पुं० समुद्र **पाराशर, पाराशर्य** पुं० पराशर ऋषिना पुत्र – न्यास

पांच वृक्षोमांनुं एक (समुद्रमंथनमांयी एक रतन तरीके नीकळेलुं) पारितोषिक वि० आनंदप्रद; संतोषप्रद (२) न० इनाम; बक्षिस पारिपाद्यंक, पारिपादियक पु० नोकर; हजूरियो (२) सूत्रधारनो मददनीञ **पारिप्लव** वि० चंचल; अस्थिर; कंपतुं (२) तरतुं (३) व्याकुळ; क्षुव्य (४) पुं० नाव; नौका (५) न० अशांति; व्याकुळता पारिवर्ह पुं० लग्न वसतनी भेट (२) परिजन – परिवार 🏻 [परिभाषारूप पारिभाषिक वि० चालु;सार्वत्रिक (२). पारियात्र पुं० सात 'कुलपर्वत'मांनो एक (महेंद्र, मलय, स**ह्य, शुक्**तिमान्, ऋक्ष, विन्ध्य, पारियात्र) **पारित्राजक, पारित्राज्य** न० भिक्षुपणुं पारिषद पुं० सभामां हाजर रहेलो सम्य **पारिषदाः** पुं० ब०व० देवनो परिवार पारिहारिक पुं० माळा बनावनार-माळी पारिहार्य पुं० हाथनु घरेण् - कड् पारी स्त्री० पाणी पीवानुं पात्र (२) दूघ दोहवानुं पात्र **पारीण** वि० सामे पार जतुं (२) (समास ने छेडे) पारगत; प्रवीण पारुष्य न० कठोरता; कर्कशता (२) निष्ठुरता (३) अपशब्द पारे अ० सामी बाजुए पार्य पुं० पृथा - कुंतीनो पुत्र (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन) (२) राजा पार्थक्य न० जुदाई; जुदापणुं **पार्थसारिथ** पुं० अर्जुनना सारिथ – श्रीकृष्ण **पार्यिव** वि० पृथ्वीने लगतुं(२)माटीनुं बनेलु (३) पृथ्वी उपर राज्य करत् (४) राजाने लगतुं(५) पुं० पृथ्वीनों वासी (६) राजाः

पारिजात, पारिजातक पुं०

पारियवी स्त्री० सीता (पृथ्वीनी पुत्री) **पार्य** न० अंत (२) पार करवानुं साधन **पार्यंतिक** वि० छेल्लुं; छेवटनुं पार्वण वि॰ पर्व संबंधी; पर्वने दिवसे आवतुं के होतुं पार्वेत वि॰ पर्वतन् ; पर्वत संबंधी पावंती स्त्री० हिमालयनी पुत्री – दुर्गा पार्वतीय पुं ० पर्वतवासी एक जाति **पार्वतीश** पुं० शंकर **पार्वतेय** वि० पर्वतमांथी जन्मेल् **पार्क्** वि० पडखेनुं; नजीकनुं (२) पुं०, न ॰ बगल नीचेनो पांसळीओवाळो भाग (३) पडखुं; बाजु (४) नजीकपणुं **पार्श्वग, पार्श्वचर** वि० नजीकन्; पडस्रे ऊभेलुं (२) पुं० नोकर; हजूरियो पादवंतस् अ० पडले; नजीकमां **पार्क्ट** पुं० सेवक; चाकर **पार्क्वतिन्** वि० पडले रहेतुं; नजीकनुं (२) सेवा बजावतुं (३) पुं० हजूरियों (४) साथी **पार्श्वस्य वि**० पडखे रहेलुं; नजीकनुं (२) पुं० साथी (३) मददनीश **पार्वानुचर** पुं० नोकर; हजूरियो **पार्क्यागत** वि० नजीक आवेल् पार्खासम्न वि० पडले अभेलुं के बेठेलुं **पादवींपपीडम् अ**० पडलां दबाववां पडे ते रीते (हसवुं) **पार्षत** वि० 'पृषत्' – जातना काबर-चीतरा मृगने लगत् **पार्वद पुं० साथी;** सोबती (२)परिजन – परिवार (देवनो) (३) परिषदमां हाजर सम्य पार्किण पुं०, स्त्री० एडी (२) सैन्यनो पाछळनो भाग (३) कोई पण वस्तुनो पाछळनो भाग; पीठ (४)लात; पाटु पार्किंग्रह न० शत्रुने पूंठेथी दबाववी ते पार्क्णिघात पुं० लात करवो ते पार्डणविग्रह पुं० शत्रुए प्रेथी हमलो पाल् १० उ० रक्षण करवु (२) पाळवुं (वचन, प्रतिज्ञा ६०) **पाल** पुं० पालक अश्वपाल पालक पुं० रक्षक (२) राजा (३) पालन वि० रक्षण करनारुं (२) न० रक्षण; पोषण (३) पाळबुं ते, पार पाडवुं ते (वचन, प्रश्तिज्ञा इ०) (४) धार काढवी ते (शस्त्रनी) पालनीय वि० रक्षण करवा योग्य (२) पाळवा योग्य (वचन इ०) **पालियत्** वि० रक्षण करनारुं पालि स्त्री०बूट; अणी (काननी) (२) छेडो;किनार (३) भार (४) हद**;** सीमा् (५) पंक्ति; हार पालित वि० रक्षायेलुं; पोषायेलुं (२) पूरुं करायेलुं (वचन **इ०**) पाली स्त्री० जुओ 'पालि' पाल्य वि० जुओ 'पालनीय' पावक वि० पवित्र करनारुं ; शुद्ध करनारुं (२) पुं० अग्नि अस्त्र पादकास्त्र न० अग्निदेवनी शक्तिवाळ् **पावन** वि० पापमांथी मुक्त करनारुं; शुद्ध करनारुं; पवित्र करनारुं (२) ह्वा उपर जीवनारं पाबर पुं० बेना अंकवाळी पासानी बाजू (२) ते पासानो दाव **पावित्र्य** न० पवित्रता पाविन् वि० शुद्ध -- पवित्र करनारुं पाठ्य वि० शुद्ध-पवित्र करवा योग्य पाञ्च पुं०बंध;दोरडुं;फांसो (२) जाळ (पंखी-प्राणी वगेरेने पकडवानी) (३) पासो (४) वरुणना हथियारनुं नाम (५) (समासने अंते) तिरस्कार-तुच्छता बतावे (उदा० 'छात्रपाश'); प्रशंसा दर्शावे (उदा० 'कर्णपाश'); जथ्थो बतावे (उदा० 'केशपाश') पाशजाल न० संसाररूपी जाळ **पाज्ञन** न० जाळ; फांसो

पाशभृत् पुं० वरुण (२) पाश धारण करनार (योद्धी) पाशव वि० पशु संबंधी पाशहस्त पुं० वरुण (२) यम **पाक्षिन्** पुं० वरुण(२)यम(३)पारधी **पाशी** स्त्री० दोरडुं; बंध **पाजुपत** वि० शिवनुं; शिव संबंधी (२) शिवे उपदेशेलुं (३) पुं० शिवभक्त पाइचारय वि॰ पाछळनुं; पछीनुं (२) पश्चिमन्; पश्चिम संबंधी **पाषक** न० पगमां पहेरवानो एक अलंकार **पार्वंड** वि० वेदमां न माननारुं; नास्तिक (२) पुं• नास्तिक पाषाण पुं० पथ्थर पावाणशिला स्त्री० सपाट शिला पाषाणहृदय पुं० पष्टवर जेवा कठोर हृदयवाळुं; ऋर **पांचजन्य पुं० श्रीकृष्णनो शं**ख **पांचभौतिक** वि० पंचभूतत् बनेलुं; पंच-भूतवाळु पांचरात्र न० एक वैष्णव संप्रदाय **पांचाल** वि० पांचालोना देशन्ं पांचालिका स्त्री० ढींगली; पूतळी पांचाली स्त्री ० द्रौपदी (२) पदरचनानी चार शैलीमांनी एक (जुओ 'रीति' **पांडर** वि० फीकाश पडतुं घोळुं **पांडव** पुं० पांडु राजानो पुत्र **पांडित्य** न० पंडिताई; विद्वत्ता (२) चालाकी ; कुशळता (३) डहापण **पांडिसन्** पुं० घोळापणुं; फीकाश **पांडु** वि० पीळाश पडतुं घोळुं (२) पुं० पोळाश पडतो घोळो रंग (३) कमळो (रोग) (४) पांडवोना पितानुं नाम पांडुभाव पुं की कुंपडी जबुंते पांड्र वि० फीकाश पडतुं घोळुं पांड्रोग पुं कमळो (रोग) **पांडुलोह** न० रूप् पांडच पुं॰ दक्षिणना ते देशनो राजा

पांडचाः पुं० ब० व० पांड**च दे**श के तेना रहेवासीओ पांच पुं॰ मुसाफर; वटेमार्गु पौरान वि० जुओ 'पासन' **पांशु** पु० जुओ 'पांसु' पांशुल वि॰ जुओ 'पांसुल' पांसन वि० (समासने छेडे)बट्टो के कलंक लगाडनारं (उदा०'कुलपांसन') (२) मेलुं करनाष्टं; बगाडनाष्टं **पांसु पुं॰ धूळ** (२) रजोटी पांसुकृत वि॰ धूळथी छवायेलुं पांसुकोडन, पांसुकोडा स्त्री० धूळमां रमवुं ते (बाळपणनी अवस्था) **पांसुल** वि० धूळवाळुं; मेलुं(२) अप-वित्र; कलंकित (३) बट्टो के कलंक लगाडनार **पांमुला** स्त्री० रजस्वला स्त्री (२) व्यभिचारिणी स्त्री(३)पृथ्वी पिक पुं० कोयल [सुर गणाय छे) पिकपंचम पुं० कोयलनो स्वर (जे पंचम पिकांग पुं० चातक पक्षी **पिचुमर्द, पिचुमंद** पु० लीमडो पिच्छ न० पींछु (२) पींछांबाळुं पुच्छ (मोरनुं) (३) बाणनुं पींछुं पिच्छल वि० लपसण् ; लपसी पडाय तेव् पिक्छिका स्त्री० मोरना पींछांनी झूडी (जादुगरी वापरे छे ते) पिक्छिल वि० चीकणु; (२) रूपसी पडाय तेवुं (३) पींछांबाळुं (४) पुं०, न० भातनुं ओसामण **पिटक** पुं०, न० नेतरनो करंडियो (२) लाकडानी पेटी(३)फोल्लो **पिटका** स्त्री० पेटी; टोपली (२) नानी पिठर, पिठरक पु०, म० तपेलुं **पिठरी** स्त्री० तपेली **पिण्याक** पुं०, न० स्रोळ पितरः ('पितृ') पुंज्वश्वश्पितृओ पितरौ ('पित्')पुं हि॰व॰ मातापिता पितामह पुं० पितानो पिता (२) ब्रह्मा पितृ पुं॰ पिता िआदि क्रिया **पितुकानन** न*ः* स्मशान पितृकृत्य न०,पितृक्रिया स्त्री० पिडदान **पितृक्षय** पुं० मृत्युतिथि (पितृनी) **पितृदेव** वि० पिताने पूजनारुं पितृबेबत्य न० पितृओने निमित्ते करातो [पितानी मा – दादी पितृप्रसू स्त्री० सायंकाळ; संघ्या (२) **पित्वन** न० स्मशान पितृच्य पुं० बापनो भाई – काको **पितृसद्मन्** न० स्मशान पितृस्वसु स्त्री० फोई पित्तं न० शरीरनी त्रण धातुओमांनी एक (कफ-पित्त-वात) पित्र्य वि॰ पिता संबंधी (२) पितृ-संबंधी (३)पुं० मोटो भाई पिषा (अपि+धा) ३ उ० बंध करवुं; ढांकवुं; छुपाववुं (२) रुकावट करवी पिशातक्य वि० बंध करवा योग्य; ढांकवा योग्य पिधान न० जुओ 'अपिधान' चिनद्ध वि॰ जुओ 'अपिनद्ध' पिनह ४ उ० बांधवुं (२) पहेरबुं (३) पिनाके पुं०, न० शिवनुं धनुष्य पिनाकध्कः, पिनाकपाणि, पिनाकिन् पुं० शिव ('पिनाक' धनुष्यवाळा) **पिपासा** स्त्री० तरस तिरस्यु पिपासित, पिपासिन्, पिपासु वि० **पिपील** पुं० मंकोडो पियोलिक पुं० कीडी (२) न० एक जातनुं सोनुं (कीडोओए भेगुं करेलू) **पिपोलिका** स्त्री० कीडी (मादा) **पिप्पल** पु० पीपळो (२) न० तेनुं टेटुं पिप्पलि (-ली) स्त्री० लांबी पीपर **पिप्लु पुं०** शरीर उपरनो तल **पिब** वि० पीनारुं; पी**रां पियाल** पुं**० ए**क झाड

पिशाच पुं० भूत-प्रेत जेवी एक हीन योनि पिशाचिका स्त्री० पिशाचणी **पिशित** न० मांस पिशिताशन, पिशिताशिन् पुं० मांसभक्षी -- राक्षस; पिशाच (२) वरु पिशुन वि० चाडियुं; चुगलीखोर (२) चाडी खातुं; जणावतुं; याद करावतुं (३) कूर; घातकी (४) नीच; अधम पिशुनयति प० ('दर्शावी दे छे') पिश्नुनित वि० कही दीघेलुं; बतावी दीधेल करवो **पिष् ७** प० पीसवुं; दळवुं (२) नाश पिष्ट ('पिष्'नं भू०कृ०) वि० दळेलुं; पीसेलुं (२) दबावेलुं, कचरेलुं (३) न० भूको;चूरो;लोट व्यर्थे प्रवृत्ति पिष्टपेषण न० (लोटने दळवा जेवी) **पिष्टसौरभ** न० सुखड; चंदन **विष्टात पुं० अबील ; सुगंधी चूर्ण** पिड्टोदक न० लोटने पाणीमां ओगाळी करेलुं (दूध जेवु) प्रवाही **पिस्पृक्षु** वि० स्पर्श करवानी इच्छावाळुं पिहित वि० जुओ 'अपिहित' पिंग वि० दीवानी ज्योत जेवा राता -पीळा रंगन् पिंगल वि॰ पीळचटा - बदामी रंगतुं (२)पु॰ बदामी रंग(३)बांदरो(४) एक ऋषि (छंद:शास्त्र रचनार) **पिंगलिमन् पुं**० पीळचटो – बदामी रंग **पिगाक्ष** वि० लालाश पडती आंखवाळ (२)पुं० शिव(३)वानर **पिजर वि०** लालाश पडतुं पीळुं(२)पुं० पिजरिक न० एक जातनुबाद्य **पिजरित वि० पीळचटा -- बदामी**ंगनु पिड वि॰ घन; नक्कर (२) गोळो वाळेलुं; पिंडो करेलुं (३) पुं०, न० गोळो (४) ढेफुं (५) कोळियो (६) श्राद्धमां पितुओने अपातो भातनो गोळो (७) अन्न; स्रोराक (८) आजीविका

(९) भिक्षा (१०) शरीर (११) पगनी पिडी (१२) एकठुं गणी – कुल जेथायते (१३) ढगलो; समुदाय पिडक पुं० फोल्लो **पिंडद** वि० अन्न के आजीविका आपनार्ह (२) पिंडदान करवानुं अधिकारी पिडवान न० श्राद्ध निमित्ते पितृने पिड आपवो ते पिडपात पुं० भिक्षा आपवी ते पिडभाज् वि० पिडमां भाग मेळववानुं अधिकारी (२) पुं० (ब॰व॰) पितृओ **पिंडालक्तक** पु० एक जातनो लाल रंग पिंडि स्त्री० पिडो; गोळो (२)घर पिडिका स्त्री० गोळ आकारनी सोजो (२)पगनी पिंडी (३)गंडस्थळ पिंडित वि॰ गोळो वाळेलुं (२) एकत्रित करेलुं **पिंडी** स्त्री० जुओ 'पिंडि' **पिडोशूर** पुं० कायर; बीकण (घरमां शूरो के लाडु भागवामां शूरो) पिंडोदककिया स्त्री० पितृओने पिंड, जळ वगेरे अर्पवां ते **पी ४** आ० पीवुं पीठ न० आसन; बेठक (२) दर्भासन (३)देवनुं आसन(४)कोई पण वस्तुनी बेसणी; पडघी(५)प्रांत; प्रदेश (६) सिहासन; राज्यासन पीठक पुंज, न० एक जातनी म्यानी **पीठग** वि०आसने वेसी रहेनारुं (२) अपंग **पीठमर्द** पुं० (नाटकमां)नायकने सहाय करनार साथी पीठसर्पं वि० अपंग; संगडुं पीठिका स्त्री० बेठक (२) बेसणी (३) पुस्तकनो विभाग **पीइ१०** उ० पीडवुं; त्रास आपवो (२) घेरो घालवो (३) दबाबबं; पीलबं **पोडन** न० पीडवं – दुःख देवं ते (२) दबाववुं ते; कचरवुं ते (३) पकडवुं

ते (उदा० 'करपीडन') (४) ग्रसबुं ते; ग्रहण पीडा स्त्री० व्यथा; दु:ख (२) ईजा; **पीडाकर** वि० दु:खकर;कष्टदायक पीडित ('पीड्'नु भू०कृ०) वि० पीडा पामेलुं (२) दबायेलुं; कचरायेलुं(३) पकडेलुं ; ग्रहण करेलुं (४) ग्रस्त पोडितम् अ० सखत रीते; दबावीने **पौत** ('पा'नुभू०कृ०) वि० पीर्घेलुं (२)पाणी पायेलुं(३)पीळा रंगनुं पीतांबर पुं०श्रीकृष्ण (पीळां वस्त्र धारण करनार) (२) पीळां वस्त्रधारी भिक्षु **पीय** पुं०पीणुं(२)न०पाणी पीन वि० जाडुं;पुष्ट(२)गोळ;भराव-पीयूष पुं०, न० अमृत (२) दूध **पीयूवबामन्, पीयूबभान्,** पुं० चंद्र पीव, पीवर, पीवस वि० जाडुं **पुच्छ** पुं०, न० पूछर्डु (२) पारुळने**: भाग** (३) मोरनुं पींछांवाळुं पूछडुं (४) कोई पण वस्तुनो अंतभाग पुट पु०, न० थर; पड (२) पोलाण; बस्रोल (३) पडियो (पांदडांनो) (४) एना जेवुं जे कंई ते (५) आच्छादन; ढांकण (६) पोपचुं (७) पुं० करंडियो; टोपली (८) एना जेवो कोई पण आकार (९) न० औषधने भठ्ठीमां मूकवा माटे बे पात्र सामसामे जोडी करेली रचना;संपूट **पुटक** न० पडियो (२) **एना जेवो करेलो** खोबो (३)कमळ पुटकिनी स्त्री० कमळनो समूह (२) **पुटपाक** पुं० पांदडांमां वींटी कपड**छाण** करी भठ्ठीमां मूकी औषध तैयार करवानी रीत पुटभेव पुं॰ पोपचां उघाडवां ते (२)

शहेर(३)एक दाजित्र; 'आतोद्य'

पुष्य वि० पवित्र (२) पुण्य प्राप्त थाय

पुटभेदन न० शहेर

एवुं (३) शुभ ; मांगलिक (४) सुंदर (५) न० सत्कर्म (६) तेनुं फळ पुज्यकीर्ति वि॰ जेनुं नाम लेतां के सांभळतां पुष्य थाय तेवुं (२)सुप्रसिद्ध पुष्यक्तेत्र न० पवित्र भूमि; तीर्थस्थान पुण्यमृह न० सदाव्रतन् स्थान (२) मंदिर पुण्यजन पुं० सदाचारी मनुष्य (२) राक्षस (३) यक्ष पुष्यजनेश्वर पुं ० कुबेर (यक्षोनो स्वामी) **पुज्यदर्शन** वि० सुंदर देखाववाळ (२) जेना दर्शनयी पुण्य याय तेवुं पुष्यभाज् वि० पुष्यशाळी पुण्यलक्मीक वि० समृद्ध; वैभवशाळी (२) मांगलिक **पुष्परलोक** वि० जेनुं नाम लीघाथी पुष्य थाय तेवुं (२)सारी कीर्तिवाळुं (३) पुं० नळ, युधिष्ठिर के जनार्दन (कृष्ण) पुष्यवलोका स्त्री० सीता(२)द्रौपदी पुण्यानुभाव पु० प्रसन्न करे तेको प्रभाव **पुण्याह** न० सुखनो के मांगलिक दिवस पुष्योदय पुं० संचित पुण्यकर्मोनुं फळ मळवानुं शरू थवुं ते **पुत्** न० ते नामनुं नरक **पुत्तल** पुं• पूतळुं **पुत्तलक** पुं**०, पुत्तलिका** स्त्री० ढींगली (२) मूर्ति; आकृति पुत्तली स्त्री० पूतळी पुत्तिका स्त्री० नानी मधमासी (२) कथई (३) डींगली पुत्र पुं० दीकरो (२) (समासने छेडे) ते ते वर्गनुं नानुं जे कई ते (उदा० 'असिपुत्र ') पुत्रक पुं० नानो छोकरो (२) 'बेटा' एवो बहालसूचक उद्गार(३)ढींगली पुत्रका स्त्री० जुओ 'पुत्रिका' पुत्रकाम्या स्त्री० पुत्रोनी कामना **पुत्रकृतक** पुं० दत्तक पुत्र पुत्रपौत्रीण वि० पुत्रो अने पौत्रो सुघी

पहोंचतुं; बंशपरंपरा चालतुं **पुत्रप्रवर** पुंच मोटो पुत्र पुत्रवधू स्त्री० दीकरानी वहु पुत्रिका स्त्री० पुत्री (२)ढींगली; पूतळी (३) (समासने अंते) ते ते वर्गतुं नानुं जे कंई ते (उदा० 'असिपुत्रिका') **पुत्रिकाषमं** पुं० पुत्र वगरनो पिता पोतानी पुत्रीने 'तमारो पुत्र मने मळे' ए शरते परणावे ते पुत्रिणी स्त्री० पुत्रवाळी स्त्री पुत्रिन् वि० पुत्र के पुत्रोबाळुं **पुत्री** स्त्री० दीकरी **पुत्रीकृ ८** उ० पुत्र तरीके ग्रहण करवुं **पुत्रीय** वि० पुत्र तरफतुं(२)पुत्र संबंधी पुत्रेष्टि स्त्री० पुत्र मेळववा कराती यज्ञ **पुत्रो** पुं०द्वि०व० पुत्र अने पुत्री पुष् ४ प० हानि करवी; ईजा करवी (२) १० उ० दीपवुं; प्रकाशवुं –प्रेरक० नाबूद करवु (२) दबाती देवुं (अवाजने) **पुद्ग**ल वि० सुंदर (२) पु० परमाणु (३) जीवात्मा (४) शरीर (५) भौतिक पदार्थ पुनर् अ० फरीथी; बीजीवार (२) **ऊ**लटुं; विरुद्ध दिशामां (३) परंतु; छतां (४) वधारामां; उपरांतमां **पुनराग**त वि० पाछुं आवेलुं पुनरागम पुं०, पुनरागमन न० पाछ<u>्</u> आवर्षु ते; फरीयी आवर्षु ते पुनरावर्तिन् वि० पुनर्जन्म पामनाहं पुनरावृत्, पुनरावृत्ति स्त्री ० पुनरावर्तन (२) पुनर्जन्म (३) नवी आवृत्ति पुनरक्त वि० फरीयी बोलेलुं – कहेलुं (२) नकामुं; निरर्थक (३) न० फरीथी कहेवुं ते पुनरुक्ति स्त्री० फरीयी कहेवुं ते **पुनरुपगम** पुं० पाछुं आववुं ते यूनजंन्मन न० फरी फरी जन्म धारण करवो ते (२) नवो जन्म थवो ते

पुनर्भव पु॰ फरीथी जन्मवु से; पुन-र्जन्म (२) वाळ (३) नख पुनर्भाव पुं० पुनर्जन्म पुनर्वसु पुं॰ ते नामनुं सातमुं नक्षत्र पुनविवाह पुंच पुनर्रुग्न **पुनः प्रत्युपकार** पुं० उपकारनो बदलो **पुनीत** वि० साफ करेलुं;पवित्र करेलुं पुन्नामन् वि० 'पुत्' नामनुं (नरक) पुनर्य (पुंस् + अर्थ) पुं० पुरुषार्थ; मानव जीवननुं प्रयोजन (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष -ए चारमानुं एक) पुर् स्त्री० पुरी; नगरी (२) किल्लो पुर वि० –थी भरेलु; पूर्ण (२) न० नगर; शहेर (३)किल्लो;कोट (४) मकान; घर (५) शरीर(६)अंतःपुर (७) पुं० एक राक्षस पुरतस् अ० -नी समक्षः -नी सामेः -नी आगळ (२) पछीथी (३) पहेलां **पुरहार** न० नगरनो दरवाजो पुररिष्टु पुं० शंकर पुरशासन पुं विष्णु (२) शिव पुरक्चरण न ० होम सहित देवना नामनी जप (२) पूर्वतैयारी रूपे करातो विधि **पुरस्** अ० (स्थळ के काळमां)आगळ; पहेलुं(२)—नी सामे; —नी समक्ष (३)पूर्व दिशाए पुरस्करण न० आगळ - मोखरे स्थाापीने पूजा-सत्कार करवां ते पुरस्कार पुं० आगळ स्थापवुंते (२) पसंद करवुं ते (३) सत्कार करवो ते (४) पूजा (५) साये होवुं ते (६) गोठववुं - तैयार करवुं ते (७) प्रगट करवुं ते (८) हुमलो के आक्षेप करबो ते पुरस्कु ८ उ० आगळ स्थापवुं; आगेवान बनाववुं (२) रजू करवुं (३)अतिथि-सत्कार करवो (४) स्वीकारवुं;अनु-सरवु (५) बहानुं घरवुं (६) दर्शाववुं पुरस्कृत वि० आगळ-मोखरे स्थापेलुं

पुरस्किया स्त्री० पूजन-सत्कार करवां ते पुरस्तात् अ० पहेलां; आगळ (२) मोखरे (३) प्रारंभमां (४) पहेलां; अगाउ (५) पूर्व बाजुए (६) पछी पुरंजन पु॰ जीवातमा (२) हरि **पुरंदर** पु॰ इंद्र (२) शिव (३) विष्णु पुरक्षि स्त्री० पति-पुत्रवाळी गृहिणी पुरंधिका स्त्री० पत्नी **पुरंध्रो** स्त्री० जुओ 'पुरंध्रि' पुरःपाक वि० फळ आपवानी तैयारीमां होय एवं पुरःप्रहर्तृ पुं० मोखरे लडनार पुर:फल वि० जेनुं फळ नजीकमां ज - हाथवेंतमां होय तेवुं पुरःसर वि० -नी आगळ जतु (२) पुं० अगगळ जनार (३) सेवक; दास (४) अग्रेसर; आगेवान (५) (समासने अंते) साथे के आगळ जतुं पुरःसरम् अ० साथे; पछी पुरा अ० अगाउ; पूर्वे (२) अत्यार सुधी; अत्यार आग्ध्रमच (३) प्रथम तो (४) थोडा समयमां; टूंक वसतमां पुराकल्प पुं॰ जूनी वात; भूतकाळनी कथा(२)जूनी सृष्टि; जूनो युग पुराकृत न० पूर्व जन्ममां करेलु कर्म पुराण वि॰ प्राचीन;जूनु(२)पुराणु; आच (३) जीर्ण थयेलु (४) न० प्राचीनकथा; दंतकथा (५) व्यासे रचेल १८ पुराणग्रंथमानुं दरेक पुराणपुरुष पुं० विष्णु (२) बृद्ध पुरुष पुरातन वि० प्राचीन; पुराणु (२) जूनुं; जीर्ण (३) पुं० ब० व० प्राचीन पुरुषो (४) न० प्राचीन कथा (५) पुराण ग्रंथ **पुराविष, पुराष्यक्ष** पुं० नगरनो कोट-**पुराराति, पुरारि** पुं० शिव पुराविद् वि० पुरातन वातोनुं जाणकार **पुरावृत्त** वि० प्राचीन समयने रुगतुं (२) न॰ जूनुं वृत्तांत;इतिहास;दंतकथा

पुरि स्त्री० शहेर(२)नदी [शरीर पुरी स्त्री • नगरी;शहेर(२)किल्लो (३) पुरोष न० विष्टा; मळ पुरीषोस्सर्ग पुं० मळस्याग करवो ते **पुर** वि० पुष्कळ;घणुं(२)पुं० फूलनो पराग(३)स्वर्ग (४)चंद्रवंशो एक राजा (५) एक राक्षस (जैने इंद्रे हण्यो हतो) पुरुष पुं० नर; मनुष्य (२) मनुष्य जाति (३) आत्मा; जीवात्मा (४) परमात्मा (५) बोलनार, सांभळनार अने ते सिवायनी व्यक्ति के पदार्थ-ए त्रण माटे प्रथम, मध्यम अने उत्तम **'पुरुष'ए**वो परिभाषा (व्या०) **पुरुवक पुं०, न०** घोडाए वे पग उपर कभा थई जबुं ते पुरुषकार पुं पुरुषप्रयत्न; उद्यम (२) पुरुषपणुं; मरदानगी पुरुषकेसरिन् पुं० नरसिंह (अवतार) पुरुषत्व न० मरदाई पुरुषपञ् पुं नरपशु; जानवर जैवो **पुरुषपुंगव** पुंच उत्तम पुरुष **पुरुषबहुमान** पुं० माणसजात तरफथी [माननारुं मळत्ं संमान **पुरुषमानिन्** वि० पोताने वीरपुरुष **पुरुषर्वभ पु॰** उत्तम पुरुष (पुरुषोमां ऋषभ जेवो) पुरुषव्याद्र, पुरुषशार्द्ल पुं० वीर पुरुष ँ [जेवो) (पुरुषोमां वाघ जेवो) **युरुषसिंह पुं**० उत्तम पुरुष(पुरुषोमां सिंह पुरुषाद्(-द)पुं० राक्षस(मनुष्यमक्षी) पुरुषाधिकार पुं० पुरुष तरीकेनुं कर्तव्य (२) पुरुष तरीकेनुं मूल्यांकन पुरुवार्थ पुं० मानव जीवननां धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष -ए चार प्रयोजनमांनुं प्रत्येक (२) पुरुषप्रयत्न; उद्यम पुरुषायुष (-स्) न० माणसनुं आयुष्य पुरुषोत्तम पुं॰ उत्तम पुरुष (२) विष्णु **पुरुह्**त पुं० इंद्र

पुरुहतद्विष् पुं० इंद्रजित् (रावणनो पुत्र) **पुरूरवस्** पु० चंद्रवंशनो स्थापक राजा पुरोग, पुरोगम वि० आगेवान; अग्रे-सर; श्रेष्ठ (२) (समासने अंते) —ना नेतृत्व हेठळनुं **पुरोगामिन्** वि० आगळ जनारुं; आगळ रहेनार्ष (२) आगेवान; अग्रेसर पुरोजव वि० वेगमां चडियातुं (२) पुं० दास; नोकर **पुरोडा**श पुं० यज्ञमां होमवानो एक हवि पुरोधस् पुं० कुळगुरु (राजानो) पुरीवा ३ उ० आगळ मूकवुं; अग्रेसर बनाववुं (२) पुरोहित बनाववुं(३) (पदे) नीमवुं पुरोभक्तका स्त्री० नास्तो; हाजरी पुरोभाग वि० डखलियुं; घूसणियुं (२) दोष जोनाहं (३) अदेखें (४) पुं॰ मोखरो; आगळनो भाग (५) डेखल; घूसणियावेडा (६) अदेखाई पुरोभागिन् वि॰ मनस्वी; स्वच्छंदी (२) घूसणियुं; डबलियुं (३) दोष जोनारं (४) अदेखुं **पुरोमारत** पुं० सामी पवन पुरोवतिम् वि० –नी समक्ष के आगळ होय तेवुं **पुरोबात** पुं॰ जुओ 'पुरोमाहत' **पुरोहित** पुं • कुळगुरु; गोर पुलक पुं रोम; रुवाटुं पुरुकित वि०रोमाचित िथवां ते पुलकोव्गम पुं० रोमांच; रुवांटां ऊभां पुलाक पुं०, न० तुच्छ धान्य (खाली के अपूर्ण दाणावाळुं) (२)भातनो गोळो पुलिन पुं०, न० भाठुं; नदीनो रेतीवाळो कांठो (२) नदी बच्चे थयेलो बेट पुलिंद, पुलिंदक पुं० एक जंगली के पहाडी जाति ; तेनो माणस (२)पारधी पुलोमजा स्त्री० शची (इंद्राणी) **पुलोमन्** पुं० एक राक्षस (इंद्रनो ससरो)

पुलोमारि पुं० इंद्र **पुष् १, ४, ९** प० पोषवु ; उछेरवुं (२) पोषण करवुं (३) विकसाववुं ; वधारवुं (४)प्राप्त करवुं(५)दर्शावर्वुः,प्रगट करवुं (६) खीलवुं (७) प्रकाशबुं पुष् वि० पोषतु (२) व्यक्त करतु पुरुकर न० नील कमळ (२) हाथीनी सूढनुं टेरवुं (३) ढोल उपर**नुं** चामडुं (४) तरवारनं फळु (५) आकाशः; अंतरीक्ष (६)पुं ० तळाव; सरीवर (७) एक जातनुं ढोल (८) एक जातनो मेघं (जे दुकाळ लावे छे) (९)पुं०, न० विश्वना सात महा द्वीपोमांनी एक पुरकराक्ष पुं० विष्णु [आवे छे) पुष्करावर्तक पुं ० एक मेघ (जेनाथी दुकाळ **पुष्करिणी** स्त्री० हाथणी(२) कमळो-वाळुं तळाव (३)तळाव ; सरोवर (४) कमळनी वेल [हाथी **पुष्करिन्** वि० खूब कमळवाळुं(२)पुं० **पुष्कल** वि० पुष्कळ; अति (२) पूर्ण; पूरेपूहं (३) समृद्ध; मन्य; सुंदर (४) उत्तम; श्रेष्ठ पुष्ट ('पुष्'नुं भू० कृ०) वि० पोषेलुं; पोषायेलु (२) जाडु; लठ्ठ; मोटु; भारे **पुष्टांग** वि० हष्टपुष्ट; जाडुं पुष्टि स्त्री० पोषण; पोषवुं ते (२) वृद्धिः; समृद्धिः (३) हुष्टपुष्टता **पुष्टिब** वि० पुष्टिकारक **पुष्प्** ४ प० विकसवुं; स्तीलवुं पुष्प न० फूल (२) स्त्रीनं रजे (३) कुबेरन विमान (४) पोखराज पुष्पक न० फूल (२) कुबेरनुं विमान पुष्पकेतु, पुष्पचाप, पुष्पधनुस्, पुष्प-धन्यन् पु० कामदेव **पुष्पधारण** पुं० विष्णु **पुष्पध्यज** पुं० कामदेव पुष्पपुर न० पाटलिपुत्र नगर (पटना) **पुष्पदाण** पुं० कामदेव

पुरुषमास पुं० चैत्रमास (२) वसंतऋतु **पुष्परजस्** न० फूलनी रज; पराग पुष्परथ पुं मुसाफरी माटेनी रथ पुष्पराग पुं० पोखराज **पुष्परेणु** पुं० पराग **पुष्पस्नावी** स्त्री० माळण पु**ष्पवती** स्त्री**० र**जस्वला स्त्री **पुरुपदर्ष** पुं०, **पुरुपदर्षण** न० फूलोनो वाडी पुष्पवाटिका, पुष्पवाटी स्त्री० फूलनी पुष्पक्षिट स्त्री० फूलनो वरसाद **युष्पवेणी** स्त्री० फूलमाळा पुष्पश्चर, पुष्पश्चरासन पु० कामदेव पुरुपाकर वि० फूल खूब थतां होय तेव् (वसंतऋतु) पुष्पागम पुं वसंतऋतु **पुरुपाजीव** पुं॰ माळी पुष्पायुध पुं० कामदेव पुष्पासव न० मध पुष्पासार पु० पुष्पोनो वरसाद पुष्पांजस्ति पुं० खोबो भरीने फूल (अर्पवांते) पुष्पिणी स्त्री० रजस्वला पुष्पित वि॰ फूलवाळुं; फूल भरेलुं (२) खीलेलुं (३) फूल जेवुं (वाणी) (४) –थी समृद्ध पुष्पोद्गम पुं० फूल बेसवां ते पूष्पोद्यान न० फूलवाडी पुष्य पुं० पोष मास (२) एक नक्षत्र <mark>पुस्त</mark> ने० चोपडवुंते; रंग करवो**ते** (२) माटी, लाकडुं के धातुमांथी करेली आकृति (३)पोथी ; हस्तप्रत पुस्तक न०पोथी; चोपडी पुस्तकर्मन् न० रंग के लेप करवो ते पुंख पु॰, न० बाणनी पींछांवाळी छेडी **पुंगव**ेपुं० आखलो; सांढ (२) (समासने अंते) ते ते वर्गमां श्रेष्ठ (उदा० 'मुनिपुंगव')

[भेगुंदबायेलुं पुंच पुं० ढगली पुंजित वि० ढगलो ययेलु के करेलु (२) पुंडरीक न० कमळ (२) सफोद कमळ (३) पुं० घोळो रंग (४) दक्षिण-पूर्व दिशानो दिग्गज (५) एक यञ्च पुंडरीकास पु० विष्णु पुंडूक पुं० लाल शेरडी (२) तिलक पुंचोन (पुंस् + योग) पुं ० पुरुष साथे [(व्या०) पुंक्तिंग (पुंस् + लिंग) न० नरजाति पुंबत् अरु पुरुष पेठे पुरुषल पुं व्यभिचारी पुरुष पुरुषली स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री पुंस् पुं• नर प्राणी (२) मनुष्य (३) नरजाति (व्या०) (४) एक नरक पुंसबन (पूंस् + सवन) न० सगर्भाने पुत्र जन्मे ते माटे करातो संस्कार (२) गर्भ (३) ऋतुस्नान पछीनो समय पुंस्कोकिल पु० नर कोयल पुंस्त्व न० पुरुषपणुं (२) नरजाति **पू १, ४** आ०, ९ उ० पवित्र करवुं; शुद्ध करवुं(२)साफ करवुं;अपणवुं पूर्वि० (समासने अंते) साफ कर-नारुं; पवित्र करनारुं पूर्व पुं० समूह; ढगलो (२) मंडळ (३)सोपारीनुं झाड(४)न० सोपारी पूर्गी स्त्री० सोपारीन झाड पूराीफल न० सोपारी **पूज् १०** उ० पूजवुं **पूजक** वि० पूजनारुं पूजन न०, पूजना स्त्री० पूजा करवी ते पूजा स्त्री० पूजन; आराधना; उपासना पूजाई वि० पूज्य; मानपात्र पूजासंभार पुंच जुओ 'पूजोपकरण' **पूजित** ('पूज्'नुंभू० कृ०) वि० पूजा-येलु; पूजा करायेलुं सामग्री पूजोपकरण न० पूजा माटेनी साधन-पूज्य वि० पूजवा योग्य

पूत ('पू' नुंभू० कृ०) वि० शुद्ध करेलूं; पदित्र करेलुं (२) ऊपणेलुं (३) सडेलुं; गंधातुं पूतकतामी स्त्री० शची; इंद्राणी पूतक्तुपु० इद्र **पूतना** स्त्री० एक राक्षसी **यूतपाप, पूतपाप्मन्** वि० पापमुक्त पूर्ति वि० सडेलुं; गंधातुं (२) स्त्री० पवित्रता; शुद्धि (३) दुर्गंघ; बदबो; सडो (४) न० परु पूर्तिक वि० सडेलुं; गंधातुं पूर्तिका स्त्री० कस्तूरी जेवुंद्रव्य पेदा करनार बिलाडी जेवुं प्राणी (२) सोमवल्छीना अभावे वपराती एक वनस्पति पूर्तिवनत्र वि० दुर्गंधी मुखवाळुं पूप पुं० पूडो; अपूप पूर्य १ उ० गंधावुं (२) भेदवुं ; तोडवुं **पूर्य** पुं०, न० पर पूर् ४ आ० पूरवं; भरवं (२) खुश करवुं (३) १० उ० भरी कार्डवुं (४) फूँकवुं; हवा भरवी (५)ढांकबुं; घेरबुं(६)संतोषबुं(कुतूहरू इ०) पूर पुं० भरी काढवुं ते (२) खुश करवुं ते (३) पाणीयी ऊभरावुं ~ छलकार्बु ते (४) घा भरावो ते (५) नाक वार्टे श्वास भरवो ते

पूरक वि० भरी काढतुं (२) पूर्ण कर-नार्ष(३) संतोषनारुं (४) पुं० प्राणा-याममां डाबे नसकोरेथी क्वास अंदर भरवो ते

पूरण वि० पूरनाहं; भरनाहं (२)
कमवाचक (उदा० द्वितीय, तृतीय)
(३)न० मरी काढवुं ते;पूर्ण करवुं ते
पूरिक पुं०, पूरिका स्त्री० पूरणपोळी
पूरित ('पूर्' नुं० भू० छ०)वि० मरी
काढेलुं
पूरुष पुं० जुओ 'पुरुष'

पूरोत्पीड पुं० पूर आववुं के ऊभरावुं ते पूर्ण ('पूर्'नुभू० कु०) वि० पूर्ह; संपूर्ण ; भरेलुं (२) आखुं ; कुल (३) सिद्ध थयेलुं (४) समाप्त थयेलुं पूर्णक पु० कूकडो (२) चास पक्षी पूर्णकास वि० जेनी कामनाओ पूर्ण थई छे तेवुं (२) पुं• परमात्मा पूर्णकुंभ पुं॰ पाणीथी भरेलो घडो (२) युद्धनो एक प्रकार (३) घडाना आकारनुं भीतमां पाडेलुं बाकुं पुनपात्र न० पूरी भरेली प्याली के घडो (२) २५६ खोबानुं माप (३) उत्सव प्रसंगे के वधामणी अर्थे (वस्त्रो, घरेणां वगेरेथी भरेलुं) अपातुं पात्र (पेटी के करंडियो) (४) यजने अंते चोखा भरीने अपातुं पात्र पूर्णमानस वि० संतुष्ट पूर्णमास पुं० पूनमने दिवसे करवानो एक यज्ञ (२) चंद्र पूर्णमासी स्त्री० पूनम **पूर्जावतार** पुं० पूर्ण कळा साथेनो (विष्णुनो चौथो, सातमो के आठमो) अवतार (नृसिंह, राम के श्रीकृष्ण तरीकेनो) पूर्णाद्वित स्त्री० पूरी कडछी भरीने आहुति (होमनी समाप्ति वखते) पूर्णि स्त्री० पूर्ण करवुं ते; भरवुं ते (२) पूनम पूर्णिका स्त्री० एक जातनुं पंजी पूर्णिमा, पूर्णिमासी स्त्री० पूनम **पूर्णेंदु** पुं० पूतमतो चंद्र पूर्त न० वावकूत्रा, धर्मशाळा वगेरे बंबाबवा रूपी पुण्यकर्म (अग्नि-होत्रादिथी थतुं ते 'इष्ट') पूर्ति स्त्री० पूर्ण करवुं ते (२)तृप्ति पूर्व वि० पहेलुं; प्रथम (२) पूर्व दिशानुं ; पूर्व दिशा तरफनुं (३)प्राचीन; अगाउनुं (४) प्राचीनकाळथी चालतुं

आवेलु (५)शरूआतनु ; प्रारंभन् (६) पुं० पूर्वेज (७) न० आगळनो भाग पूर्वक वि० (समासने अंते) —जेनी **आगळ छे** तेवुं; – साथनुं (२) पहेलांनुं; अगाउनुं (३) पूर्वं; प्रथम (४) पुं० पूर्वज पूर्वकाय पुं० शरीरनी आगळनी भाग (२)भाणसना शरीरनो **उपरनो भाग** पूर्वकालिक, पूर्वकालीन वि० प्राचीन; पहेलान् **पूर्विकिया** स्त्री० पूर्वतैयारी पूर्वंज वि० पूर्वे जन्मेलुं (२)पुं० मोटो भाई (३) पितृ पूर्वजन्मन् न० पहेलांनो जन्म (२) पुं० मोटो भाई पूर्वजा स्त्री० मोटी बहेन पूर्वजाति स्त्री० पूर्वजन्म <mark>पूर्वतस्</mark> अ० पूर्वमाः; पूर्व तरफ (२) आगळ ; -नी सामे (३) प्रथम ; पहेलां पूर्वत्र अ० पूर्वे; पहेला पूर्विदिश् स्त्री० पूर्व दिशा पूर्वदिष्ट न० पूर्व कर्मोन् फळ पूर्वदृष्ट वि० प्राचीनोए जणाचेलुं पूर्वदेव पुं० असुर (२) पितृ (३) (द्वि॰ व॰) नर अने नारायण **पूर्वदेवता** स्त्री० पितृ पूर्वनिविष्ट वि० पूर्वे करेलुं **पूर्वपक्ष** पुं० शुक्ल पंक्ष (२) चर्चाके निर्णय माटे कोई शास्त्रीय विषयनी बाबतमां रजू करेलो पक्ष के प्रश्न (३) अदालतमा वादीए रजू करेली वात पूर्वपीडिका स्त्री० उपोद्घात **पूर्वपुरुष** पुं० ब्रह्मा (२) पिता, पिता-मह, प्रपितामह ए त्रणमांनी कोई पण (३) पूर्वज [आतमां पूर्वम् अ० अगाउ; पहेलां (२) शरू-पूर्वपूर्व वि० एकएकथी पहेलांनुं (२) पुं० (ब० व०) पूर्वजो

२९२

पूर्वबंखु पुं० उत्तम के प्रथम मित्र पूर्वभव आगळतो जन्म पूर्वभाव पुं० पूर्वजन्म पूर्वनीमांसा स्त्री० जैमिनि रचित कर्म-कांड प्रधान दर्शन ('उत्तर मीमांसा' अर्थात् वेदांतयी जुदुं) **पूर्वरंग** पुं० नाटकनो मंगलाचरणवाळो [जन्मेलो प्रेम **पूर्व राग** पु॰ प्रत्यक्ष भेगा मळचा पहेलां पूर्वरात्र पुं० रात्रीनो प्रथम भाग पूर्ववयम् वि० जुवान (२) न० जुवानी **पूर्ववर्तिन्** वि० पहेलान् **पूर्ववृत** न० पहेलां बनेलो बनाव (२) पहेलांनुं चरित्र पूर्वपूर्वित वि० अगाउ एकठुं करेलुं (जेमके, आगळना जन्ममां) **पूर्वता**गर पुं० पूर्व समुद्र **पूर्वंगम** वि० आगळ – पहेलां जना**र्र पूर्वा** स्त्री० पूर्व दिशा पूर्वाचल, पूर्वाद्वि पुं० उदयाचल पर्वत **पूर्वापर** वि० पूर्वनुअने परिचमनु(२) पहेलुअने छेल्लु (३) प्रारंभनुअने पछीनुं (४) न० पहेलां जे होय ते अने पछी जे होय ते **पूर्वार्ध** पुं०, न० प्रथमनो अर्थो भाग (२) श्वरीरनो उपरनो भाग पूर्वा पुं० बपोरनी पहेलांनो भाग **पूर्विक** वि॰ पहेलानुं; अगाउन् **पूर्वेतर** वि० पश्चिमन् **पूर्वेद्युस्** अ० आगले दिवसे; गई काले (२)दिवसना प्रारंभमां;सवारे **पूर्वोक्त, पूर्वोदित** वि० आगळ कहेलुं पूज पुं० पोष महिनो पूचन पुं० सूर्य नाम पूरवातमज पुं० इंद्र (२) मेघ (३) कर्णन् **पूषानुज** पुं० वरसाद **ष् ३** प० पूर्ण करवुं (२) –मांथी बहार काढरुं; बचाववुं; रक्षण करवुं(३) पाळबुं; वृद्धिगत करवुं

पु ९ प० रक्षवुं पृ६ आ० [प्रियते] काममां रोकावुं (मोटे भागे 'न्या' उपसर्ग साथे) –प्रेरक**० कामे लगाडवुं ; काम सों**पवुं (२) मूकवुं; प्रेरवुं; नाखवुं पृ १० उ० पार लई जवुं (२) सामे पार जवु; पूरुं करवु (३) शक्तिमान थवुं (४) उद्घार करवो ; बचाववुं पृ ५ प० प्रसन्न करवें(२) खुश थवें पृक्त ('पृच्' नुं भू० कृ०) वि० मिश्रित ; भळेलुं (२) स्पर्शायेलुं; संबद्ध (३) भरेल; पूर्ण पृज् १ प०, १० उ० स्पर्श करवो ; संबंध-मां आवर्षु (२) विरोध करवो; रुका-वट करवी (३) २ आ० संबंधमां आववुं (४) ७ प० जोडवुं; संबंध करवो **पृच्छक** वि० तपास करनार्हः पूछनार्ह पृच्छा स्त्री० पूछपरछ (२) (भविष्यने लगतो) पृत् स्त्री० लश्कर, सेना (पहेली पांच विभक्तिनां रूपो नथी; अने पछी 'पृतना' शब्दने बदले द्वितीया द्वि० व० पछी विकल्पे उमेराय छै) पृतना स्त्री० सेना (२) युद्ध पृथम् अ० जुदुं जुदुं; छूटुं छूटुं (२) भिन्न होय तेम (३) एक बाजुए; अलग (४) सिवाय; विना पृथक्करण न०, पृथक्किया स्त्री० घटक तत्त्वो जुदां पाडवां ते [भिन्न) **पृथगात्मन्** पुं० जीवात्मा ('परमात्मा'यी **पृथग्जन** पुं० असंस्कारी माणस (२) मूर्ख; अज्ञ (३) दुष्ट; पापी पृथग्विध वि० विविध प्रकारनुं **पृथवी** स्त्री० पृथ्वी पृथा स्त्री० कुंती पृथाज, पृथातनय, पृथासुत, पृथासूनु पुं० कुंतीना (युधिष्ठिर, भीम अने अर्जुन ए) पुत्रोमांनो दरेक (मुरूयत्वे अर्जुन माटे वपराध छे)

पृथिबी स्त्री० पृथ्वी; धरती (२) पृथ्वी तत्त्व (महाभूत) पृथिवीक्षित्,पृथिवीपाल,पृथिवीभुज् पुं० **पृथिवीभृत्** पुं ० पर्वत पृथिवीहरू प्०वृक्ष पृथिवीञ पुं० राजा पृथु वि॰ विशाळ; मोटुं; पहोळुं (२) पुष्कळ; घणुं (३) मोटुं **पृथुक** पुं०, न० पौंआ (२) पुं० बाळक पृथुकीति वि० विशाळ स्थातिवाळ पृथुजधन, पृथुनितंब वि० विशाळ के मोटा नितंबवाळ् पृषुप्रय, पृथुयशस् वि विशाळ ख्याति-पृषुल वि० मोटुं; विशाळ **पृथुओ** वि० अति समृद्ध पृथ्वी स्त्री० धरती; धरणी(२)पृथ्वी तत्त्व (महाभूत) **पृथ्वीघर** पुं० पर्वेत **पृथ्वीपति** पु०राजा प्रिन वि० काबरचीतरुं (२) स्त्री० पृथ्वी (३) देवकी (ऋष्णनी माता) **पुश्निगर्भ** पुरु श्रीकृष्ण **पृहिनघर पुं**० विष्णु; श्रीकृष्ण पृष् १ आ० छांटवुं; सींचवुं पृथस् वि० टपकांवाळुं; काबरचीतरुं (\hat{x}) पुं० काबरचीतरो मृग (\hat{x}) न० टीपुं; बिंदु (ब॰व०) **पृष्ठत पुं**० काबरचीतरो मृग (२)पाणीनुं पृषतांपति पुं० पवन; वायु **पृक्तक** पुं॰ बाण (२) गोळ टपकुं पुष्ट ('पृष्' अथवा 'प्रच्छ्' नुं०भू०कृ०) বি৹ पूछेलुं(२)छांटेलुं(३)न० प्रश्न पृष्ट न० पीठ; पाछळनो भाग (२) कोई जानवरनी पीठ (३) उपरन् तळ - सपाटी (४) पाछळनी के बीजी बाजु (५) घरनु सपाट छापर (६) चोपडीन पान (७) शेष रहेलूं ते पृष्ठके कृ ८ उ० मुलतवी राखवुं (२) तजी देव

पृष्ठग वि॰ पीठ पर सवारी करी होय तेवुं **पृष्ठगामिन्** वि० जुओ 'पृष्ठानुग' **पृष्ठगोप** पुं० लडता योद्धानी पूंठ साचवनार योद्धो **पृष्ठतस्** अ० पाछळयी (२)पूंठे पूंठे (३) पीठ उपर(४)पीठ पाछळ; गुप्त रीतै **पृष्ठतः कृ ८** उ० पाछळ छोडवु ; तज**वु पृष्ठपीठी** स्त्री० पहोळी पीठ **पृष्ठभूमि** स्त्री० मकाननो उपलो **माळ** पुष्ठभांस न० पीठ उपरनुं मांस (२) बाकीनुं - छेवटनुं मांस **पृष्ठलग्न** वि० पूंठे लागेलुं;अनुसरतुं पृष्ठवंश पुरु पीठनुं हाडकुं **पृष्ठानुग** वि० अनुसरतुं;पूंठे **आवतुं पृष्ठच पुं**० भार वहन करनार घोडो पृष्टिण स्त्री० पगनी एडी; पानी **पृ३,९** प० पूर्णकरवं(२) संतुष्ट करवृं (आक्षा, इच्छा) (३) **पवन**ः भरवो - पूकवु (शंख, वांसळी) (४) तृप्त करवुं (५) पोषवुं **पेचक** पुं० घुवड **पेट** पुं० टोपली ; पेटी (२)समुदाय (३) परिजनपरिवार [समूह; जधो **पेटक** पुं०, न० टोपली ; डबो ; पेटी (२) पेटिका, पेटी स्त्री० करंडियो; पेटी **पेट्टाल, पेट्टालक** पुं०, न० पेटी ; करंडियो **पेम** वि०पीवायोग्य (२) न०पाणीः (३) दूध (४) मद्य इ० पीणुं पेया स्त्री० चोखानी कांजी पेरा स्त्री० एक वाद्य पेलव वि० नाजुक ; कोमळ (२) प!तळूं **पेला** स्त्री० एक वाद्य **पेलिन्** पुं० घोडो पेशल वि०पोचु; नरम; नाजुक (२) पातळुं; नानुं (केड) (३) **सुंदर**; मनोहर (४) कुशळ; निपुण (५) चालाक (६) शणगारेलुं पेशि(-शी) स्त्री० मांसनी टुकडी के

पोषध पुं० उपवासनो दिवस

मोळो (२) स्नायुपेशी (३) एक वाद्य (४) ढांकण; म्यान पेक पुं० दळ बुंते; कचरवुं ते **पेक्कि (-फो**) स्त्री० घंटी इ० दळ वा --वाटवानुं साधन **पेबल, पेस** क वि० जुओ 'पेशल' **पैडर** वि०(पिठर)तपेलोमां **रां**धेलुं **पैतामह** वि० दादा (पिताना पिता) संबंधी (२) ब्रह्मा संबंधी [संबंधी **पेतृक वि**० पिता संबंधी(२)पूर्वे**ज** – पितृ **पैप्पन्न** वि० पीपळाना लाकडानुं **पॅशस्य** न०कोमळता (२) कुशळता **पैशाच** वि० थिशाच संबंधी (२) पुं० पिशाच (३) आठ विवाहना प्रकारो-मांनो छेल्लो प्रकार (जेमां ऊंषेली के बेहोश एगी कन्याने भ्रष्ट करे छे) **पंजन (-न्य)** न० चाडियापणुं । रंग वैगस्य न० पिगळो(लालाश पडतो पीळो) **षोगंड** वि० जुवान (५थी १६ वर्षतुं) पोटा स्त्री० पुरुषना लक्षगवाळी स्त्री (दाढी-मूछना वाळवाळी) **पोट्टलिका, पोट्टली** स्त्री० पोटली **पोत पुं**० कोई पण प्राणीनुं बच्चें (२) दश वर्षनो हाथी (३) नाव; बहाण (४) नानो छोड ्र[छोड **पोतक** पुंज्ञाणीनुंबच्चुं(२) नानी पोतभंग पुं० वहाण भागबुं के डूबबुं ते **पोतवणिज्** पुं० वहाणवटुं करतो वेपारी **पोत्र** न० डुक्करन्ं अणियाळ् नाक(२) वहाण (३) हळपूणी **पोष** पुं० प्रहार **पोथको** स्त्री० आंख उपर थती आंजणी **पोषित** ('पुथ्'नुंभू०कृ०)वि० नाश करेलुं; वध करेलुं **पोप्लयमान** वि० तस्तुं – तणातुं आवतुं पोस्किका स्त्री० पूरी; पोळी **पोचक** पुं० पोषण करनार **पोवण** न० पोषबुंते

पोषित्, पोष्ट्र वि० पोषण करनारुं **पोध्य** वि० पीषवा योग्य **पौगंड** न० (५ थी १६ वर्षनी उमर सुधीनी) किशोर अवस्था **पौत्र** पुरुष् पुत्रनो पुत्र पौत्रिक वि० पुत्र संबंधी के पौत्र संबंधी **पौनस्क्त (-क्त्य)** न० वारंवार कहेर्बु ते (२) वधारानुं – नकामुं होबुं ते **पौर** वि० शहेरने लगतुं(२)शहेरमां बनेलुं (३)पुं० नागरिक ;शहेरी **पौरकार्य** न० राजकाज ; जाहेर काम-**पौरजन** पुं० नगरवासी (२)नागरिको पीरजानपदाः पुं० ब० व० शहेरना तेम ज गामडाना लोको पौरमुख्य पुं० शहेरनो मुख्य माणस; मुख्य नागरिक **पौरलोक पुं**० जुओ 'पौरजन' **पौरव** वि० पुरु राजानो वंशज वौरवृद्ध पुं० जुओ 'पौरमुख्य' प्रिथम **पौरस्त्य** वि० पूर्व दिशानुं (२)आगळनुं; **पौरंध्र** वि० स्त्री संबंधी;स्त्रीनुं **पौराणिक** वि० प्राचीन काळ**नुं**; पुराणुं (२) पुराण संबंधी (३) पुराणनुं जाणकार **पोरांगना** स्त्री० शहेरी स्त्री **पौरव** वि० पुरुष संबंबी (२) मर-दानगीभर्युं (३) न० पुरुषप्रयत्न; उद्योग (४) वीरता; सामर्थ्य (५) आंगळीओ अने हाथ अंचा करी पुरुव ऊभो रहे तेटलूं माप पुरुषनु; पुरुषे रचेलुं **पौरु**षेय वि० (२)मरदानगीभर्युं **पौरुध्य** न० पुरुषपणुं; मदर्हि **पौरहुत** वि० इंद्र संबंधी; इंद्रनुं पौरोभाग्य न० दोष काढवा ते (२) मत्सर; अदेखाई (३) दुष्ट कर्म **पौरोहित्य** न० पुरोहित५णुं; गोरपदुं

पौर्णमास वि० पूनमने लगतुं (२) पुं० ते दिवसे करातो विधि पौतं, पौर्तिक वि० (वाद्यक्वा ६० बनाववा रूपी) पुण्यकर्म संबंधी पौर्व, पौर्वक वि॰ पूर्वनुं ; भूतकाळनुं (२) पूर्व दिशा संबंधी (३) परंपरागत **पौर्वदेहिक, पौर्वदेहिक** वि० जन्मने लगतुं; पूर्व जन्ममां करेलुं पौर्वापर्यं न० पूर्वापर होवापणुं; ऋम **पौर्वाह्हिक** वि० पूर्वाह्हिने लगतुं **पौर्विक** वि० आगळनुं; पहेलांनुं (२) पूर्वजोन्ं (३) प्राचीन **पौलस्त्य** पुं० रावण (२) कुबेर **पौलोम** पुं० इंद्र (पौलोमीनो पति) **पौलोमी** स्त्री० शची; इंद्राणी (पुलोमा राससती पुत्री) **पौषम** पुं० उपवासनो दिवस **पौषी** स्त्री० पोष महिनानी पूनम पोकर वि० नील कमळ संबंघी **पौष्टिक** वि० पुष्टिकारक पौष्प वि० फूलनु; फूल संबंधी पौँडरीक वि० कमळन् बनावेलु; कमळ [शंखनुं नाम (३) तिलक संबंधी पौंडू पुं० एक देशनुं नाम (२) भीमना पौस्न वि० पुरुषने योग्य (२) मरदानगी-वाळुं (३) न० मरदाई; पुरुषपणुं प्ये १ आ० वृद्धि थवी; वधवुं अ अ० धातुओंनी पूर्वे 'आगळे', 'दूर' ए अर्थमा वपराय (२) विशेषणोनी पूर्वे 'अतिशय', 'पुष्कळ' -ए अर्थमां वपराय (३) नामोनी पूर्वे 'आरंभ', [•]लंबाई', 'ताकात', 'अघिकता', '<mark>तीव्र-</mark> त्ता', 'संभव – मूळ', 'पूर्णता', 'वियोग', 'जल्कर्ष', 'इच्छा', 'भेक्ति', 'विराम' **−ए अर्थमां व**पराय निजरे पडे तेव् **प्रकट** वि० खुल्लुं; स्पष्ट; जाहेर (२) प्रकटम् अ० स्पष्ट ; खुल्लु ; जाहेरमां प्रकटयति प० (दर्शाववुं; प्रगटकरवुं)

प्रकथ् १० उ० जाहेर करवुं; जणाववुं प्रकर पुं० ढगलो; समूह(२)झूमखुं; गुच्छो (३) सहाय (४) घोष् ते प्रकरण न० प्रसंग; विषय (२) ग्रंथनो विभाग;अघ्याय (३) कोई पण बाबत उपरनो संपूर्ण व्यवहार – मामलो (४) प्रस्तावना (५) कशुं करवानुं खास विधान करतुं बचन (६) कविकल्पित वस्तुवाळुं दशअंकी नाटक प्रकरी स्त्री० पछीना भागने समजाववा दाखल करेली उपकथा (नाटघ०) प्रकर्षपु०श्रेष्ठता;उत्कर्ष(२)आधि-क्य; तीव्रता (३) बळ; शक्ति (४) लंबाई (५) आत्यंतिकता प्रकल् १० उ० अनुसरवुं; पाछळ जबुं (२) प्रेरवुं (३) ईजा करवी प्रकल्पित वि० रचेलुं (२) निश्चित करेलुं (३) आणेलुं के रेडेलुं (आंसु) प्रकंप् १ आ० कंपवुं; ध्रूजवुं प्रकॉप पुं० ध्रूजवुं – कंपवुं ते(२)तीव कंप के घुजारो प्रकंपन वि० कंपावनारुं; ध्रुजावनारुं (२) पुं० पदम; वंटोळ (३) न० जोरदार आंचको के कंप प्रकाम वि० कामुक; विषयी (२) अत्यंत; घणुं; इच्छा मुजबनुं प्रकामतः अ० मरजी मुजब (२) राजी-खुशीथी प्रकामभुज् वि० धराई जवाय त्यां सुधी प्रकामम् अ० घणुं ; अत्यंत होय तेम (२) यथेष्टपणे (३) मरजीयी ; इच्छाथी प्रकार पुं० भेद;जात(२)रीत;तरेह प्रकालन वि० नाश करनार्ह(२)पाछळ पडतुं ; पीछो पकडतुं (३) न० संहार प्रकाश् १ आ० प्रकाशवुं (२) देखावुं; नजरे पडवुं (३) –ना जेवुं देखाकुं –प्रेरक० देखाडवुं ; प्रगट करवुं (२) खुल्लुं करवुं (३) जाहेर करवुं; जणा-ववं (४) प्रकाशित – तेजवाळं करवं

प्रकाश वि० तेजस्वी; चळकतुं (२) स्पष्ट; देखी शकाय तेवुं; प्रगट (३) प्रसिद्ध (४) जाहेर (५) झाड वगेरे विनानुं – चोरूखं (६) खीलेलुं (७) (समासने अंते) -ना जेन् देखातुः -ने मळतुं आवतुं (८) **पुं∘** तेज; कांति; चळकाट (९) (ग्रंथनामने अंते) विवरण ; खुलासो (१०) तडको (११) कीर्ति; प्रसिद्धि (१२) खुल्ली जगा (१३) ज्ञान प्रकाशक वि० प्रकाश आपतुं(२)प्रगट करतुं; देखाडतुं; खुल्लुं करतुं (३) खुलासो करतुं; विवरण करतुं प्रकाशनारी स्त्री० वेश्या; गणिका प्रकाशम् अ० जाहेरमां; खुल्ली रीते (२) मोटेथी; बधा सांभळे तेम ('आत्मगतम् 'थी अलटूं) प्रकाशात्मक वि० प्रकाशतुः, तेजस्वी प्रकाशात्मन् वि० तेजस्वी (२) शुं० सूर्य (३) विष्णु (४) शिव प्रकाशिन् वि० चळकतुं; तेजस्वी;स्पष्ट प्रकाशे अ० जाहेरमां (२) प्रगट (३) —नी हाजरीमां प्रकाशेतर वि० अदृश्य **प्रकाइय वि**० प्रगट करवा योग्य; प्रकाश-वायोग्य (२) न० प्रकाश प्रकांड पुं०, न० मूळयी शाखा सुधीनो थडनो भाग (२) शाखा; फणगो (३) (समासने अंते)ते ते वर्गनुं श्रेष्ठ होय ते (उदा०'क्षत्रप्रकांड') (४) पु० बाहुनो उपरनो भाग प्रकीर्ण वि० वेरायेलुं – वेरेलुं; विखेरा-येल् (२) जाहेर करेल् (३) फरफरत् (४) गूंचवायेलुं; अञ्यवस्थित (५) मिश्रित (६) नष्ट (७) गाढ लेपायेलुं (८) न० परचूरण-मिश्र एवं ते प्रकीर्णक प्०, न० चमरी; चासर (२) न० परचूरण बाबतोनो संग्रह

प्रकीति स्त्री० प्रशंसा; कीति (२) प्रस्याति (३) जाहेरात **प्रकीतित** वि० जाहेर करेलु (२) वक्षाणेलुं प्रकृष् ४ प० गुस्से थवुं; चिडावुं (२) वधवु; तीव्र थवु प्रकृट उ० करवु; आरंभवु (२) सिद्ध करवुं; अमलमा मूकवुं (३) हुमलो करवो ; बळात्कार करवो (४) संमा-नवुं; पूजवुं(५) उच्चारवुं(६) आगळ मूकवुं; प्रथम उल्लेख करवो (७) नीमवुं(८)प्रकार -- विभाग पाडवा प्रकृत वि० संपूर्ण थयेलुं; पूर्ण करेलुं(२) शरू करेलुं; आरंभेलुं (३) नीमेलुं (४) साचु; स्वाभाविक (५) प्रस्तुत; जेनी वात चालु होय तेवुं (६) न० मूळ वस्तु; उपाडेली -- चालु वात प्रकृति स्त्री० कोई पण वस्तुनुं कुदरती स्वाभाविक रूप (तेथी ऊलटुं 'विकृति') (२) स्वभाव; मिजाज (३) मूळ; वंश ; मूळ कारण(४) जड पदार्थीनु मूळ कारण (सांख्य०) (५) ब॰ व॰ राजानी अमात्य वर्ग (६) राजानो प्रजावर्ग प्रकृतिकल्याण वि० कुदरती रीते सुंदर प्रकृतिकृपण वि० समजवामां स्वभावधी ज भीमुं के अशक्तिमान प्रकृतितरल वि० स्वभावयी ज चंचळ प्रकृतिपुरुष पुं० प्रधान; राजपुरुष प्रकृतिमत् वि० कुदरती; सामान्य (२) सात्त्विक वृत्तिवाळुं **प्रजावर्ग प्रकृतिमंड**ल न० आखुं राज्य; आखो प्रकृतिसद्ध वि० कुदरती; स्वाभाविक **प्रकृतिसुभग** वि० कुदरती रीते ज सुंदर प्रकृतिस्थ वि०मूळ स्वाभाविक स्थितिमां रहेलुं के आवेलुं (२) सहज;कुदरती (३) नीरोगी; रोगमुक्त ययेलुं (४) नग्न ; खुल्लुं प्रकृत्यमित्र पुं असामान्यपणे अतु होय ते प्रकृष् १ प० सेंची जवुं; सेंचवुं (२)

दोरवुं (३) वाळतुं (धनुष्य) (४) वधव् (५) पीडव्; पजवर्नु **प्रकृष्ट** वि० खेंचेलुं(२)लंबावेलुं;लांबुं (३) श्रेष्ठ; चडियातुं; उत्तम (४) मुरूष (५)तीवः; अतिशय (६)त्रस्तः प्रकृद्ध प० [प्रकिरित] वेरवु; विखेरवु (२)वावव (बीज) (३) फूटी नीकळवुं –कर्मणि० अलोप थव् **प्रकृत् १०** उ० [प्रकीर्तयति –ते] जाहेर करवुं (२) वखाणवुं **प्रकल्प् १** आ० |प्रकल्पते] —ने अनुकूळ होवुं (२) बनवुं; धवुं (३) सफळ धवुं –प्रेरक० शोधी काढवु; योजवु(२) मुसज्ज करबुं; तैयार करवुं (३) नक्की करवुं; स्थापवुं (४) आगळ वधारवं (५) बांधवं **प्रक्लुप्त** वि० तैयार – सज्ज करेलुं प्रकोप पुंच्यास्सो; कोध (२) उत्तेजना; उश्केरणी (३) बळवो **प्रकोष्ठ, प्रकोष्ठक** पुं० कोणीनी नीचेनो कांडा सुधीनो हाथनो भाग (२) महेलना दरवाजानी पासेनो ओरडो (३) चोक प्रकम् १ उ० [प्रकामति, प्रकमते] आगळ ज**वुं** – चालवुं (२) कूच करवी; ऊपडेबं (३) चाल्या जेवं (४) आ॰ आरंभवुं (५) मार्थे लेवुं; हाथमां लेवूं (६) -नी प्रत्ये वर्तवुं प्रक्रम पुं० डगलुं; पगलुं (२) प्रारंभ (३) आगळ वधवुंते (४) ऋम; व्यवस्था; रीत; पद्धति प्रक्रमण न० आगळ डगलुं भरवूं के वधवुं ते (२) आरंभ प्रकात वि० गयेलुं; गत (२) आरंभेलुं (३) हाथमां लीघेलुं; प्रस्तुत (४) पूर्वोक्त (५)आगळ गयेलुं प्रक्रिया स्त्री० कार्यपद्धति; रीत (२) विधि;अनुष्ठान (३) प्रकरण; खंड

प्रक्लिफ वि० घणुंज भीनुं(२) तृप्त (३) दयाई बनेलुं **प्रक्लेद** पुं ० भीनाश **प्रक्लेंद्रन** वि० भीनुं करनार्ह प्रक्षल् १० उ० घोवुं; साफ करवुं (२) भूंसी काढवुं | करवुते प्रकालन न० धोई नाखवुं ते; साफ प्रकालित वि० घोयेलुं; साफ करेलुं प्रक्ति ५,९ प० क्षीण थवुं; कृश थवुं (२) नाश करवुं; ईजा करवी प्रक्षिप् ६ प० फेंकबुं; फेंकी देवुं (२) दाखल करवुं - उमेरवुं प्रक्षिप्त वि० फेंकेलु; –मा नाखेलुं (२) –मां दाखल करेलुं – उमेरेलुं प्रभुष्ण वि० कचरी नाखेलुं ि उमेरवुं ते प्रभुद् ७ उ० कचरवुं प्रक्षेप पुं० फेंकवुं – नाखवुं ते (२) **प्रकोभ पुं**०, **प्रकोभण** न० क्षुब्ध करव् ते प्रक्ष्वेडित वि० गर्जना करतुं; घोंघाट करतुं (२) न० गर्जना; घोंघाट प्रखर वि० तीच्र (२) अति तीक्ष्ण प्रस्य वि० स्पष्ट; नजरे पडतुं (२) (समासने छेडे) -ना जेवुं देखातुं प्रस्था २ प० जाहेर करवुं (२)वलाणवुं प्रस्था स्त्री० प्रसिद्धिः; विख्याति (२) रूप; देखाव (३) शोभा; कांति (४) सादृश्य प्रस्थात वि० विस्थात; प्रसिद्ध प्रस्थाति स्त्री० प्रसिद्धि; स्याति (२) स्तुति; प्रशंसा प्रस्यापन न० जाहेर करवुं ते; जणाववुं ते प्रगत वि० आगळ गयेलुं(२)भिन्न प्रगदित वि० स्पष्ट कहेवायेल्(२)बोलतुं प्रगम् १ प० [प्रगच्छति] आगळ वधव् (२) जवानीकळ दुं(३) पहोंच वुं; प्राप्त करवु प्रगम पुं० प्रणय थतां स्त्रीने रीझववानी पोता थकी कराती शरूआत

प्रगरुभ् १ आ० हिंमत करवी; शक्तिमान थवुं (२) निश्चय करदो (३) धृष्टता करवी; तत्पर थवुं प्रगल्भ वि० शूरवीर (२) हिंमतवान; **भृ**ष्ट (३)परिपक्व (४)विकसित (५) कुशळ (६) उद्धत ; बेशरम **प्रगरभता** स्त्री० धृष्टता; निर्रुज्जता (२) उत्साह (३) संकोचन होको ते (४) प्रतिभायुक्त होवुं ते प्रगंडी स्त्री० शहेरनी फरतो कोट अगाढ वि० –मां डूबेलु; अंदर ऊतरेलुं (२) अतिशय (३) दृढ (४) कठण (५) घणुं आगळं वधेलुं (६) न० मुश्केली; कष्ट प्रगात् पुं० गर्वयो प्रगीत वि० गायेलु (२)गानारु (३)न० अगुण वि॰ सरळ;सीधुं;प्रमाणिक (२) उत्तम गुणोवाळुं (३) लायकातवाळुं; सद्गुणी (४)चतुर; होशियार प्रयुजन न० सुव्यवस्थित करवु ते;गोठवर्वु **प्रगुणीक्व ८** उ० व्यवस्थित करवे (२) सरखं करदं; अनुकूळ करवं (३) उछेरबुं ; पोषवुं प्रगे अ० वहेली सवारे **प्रगेतन** वि० सवारे करवानुं अगेनिश, प्रगेशय वि० सवारे सुई रहेनारुं भगह् ९ उ० [प्रगृह्णाति, प्रगृह्णीते] ग्रहण करवुं; पकडवुं (२) विग्रह करवो (३) अनुग्रह करवो अप्रह वि० आगळ धर्युं होय तेवुं (२) पकडतुं; लेतुं (३) पुं० ग्रहण करवुं ते; पंकडवुं ते (४) लगाम (५) चाबुक (६) अंकुश; करबू (७) केद (८) अनुग्रह; कृपा (९) संग्रह (१०) जोडवुं ते (हाथ) प्रप्रहिन् वि० हाथमां लगाम पकडनारुं प्रपाह पुं० पकडवुं ते (२)धारण करवुं ते (३) त्राजवानी दोरी (४) लगाम

प्रघट् १ आ० मग्त यवुः स्थापृत **थवुं** (२) शरू करवुं **प्रचक्ष् २ आ०** कहेवुं; बोलवुं (२) गणवुं; मानवुं प्रचय पुं० चूंटवुं - बीणवुं ते (२) समूह; **प्रचर् १** प० विचरवुं;फरवुं; भटकवुं (२) प्रगट थ**वुं**; देखावुं (३) प्रचार पामवुं; फेलावुं (४) कामे लागवुं; माथे लेवुं **प्रचल् १** प० अछळवुं;कंपबुं(२)जवा नीकळवं (३) कुदको मारवो (४) विचलित-क्षुब्ध थवुं (५) प्रचारमां आववं (६) --मांथी चलित थवं **प्रचल** वि० हालतुं; कंपतुं; अस्थिर(२) प्रचलित; प्रचारमां आवेलूं **प्रचलन** न० ध्रूजवुं – कंपवूं ते (२)पाछुं भागवुं ते (३) प्रचेलित हो बुं के थवुं ते प्रचला स्त्री० काचिंडो; सरहो प्रचलाकिन् पुं० मोर प्रचलित वि० कंपेलुं; हालेलुं; गतिमान (२) आमतेम फरतुं(३) भटकतुं (४) जवा नीकळेलुं (५) प्रचारमां आवेलुं; रूढ प्रसंद वि॰ अति उग्र (२) बळवान; प्रतापी (३) अति उष्ण (४) मयंकर (५) असह्य (६) घृष्ट; हिंमतवान प्रचंडसूर्य वि० सूर्य बहु तपतो होय तेवुं (ऋतु) प्रचाय पुं० जुओ 'प्रचय' प्रसार पुं० विचरवुं ते; भटकवुं ते (२) प्रगट थवुं ते ; देखावुं ते (३) उपयोगमां होबुं ते; प्रचलित होबुंते (४)वर्तन; वर्तंगूक (५) रूढि (६) चरवानी जगा; चरो (७) मार्ग; रस्तो (८) संचार; प्रवृत्ति (९) जाहेरात; ढंढेरो

प्रचालन न० हलाववुं – डखोळवुं ते

प्रचि ५ उ० भेगुं करवुं; एकठुं करवुं (२)डमेरबुं;वधारबुं(३)कापी नांखबुं

--कर्मणि० मोटुं थवुं; जाडुं थवुं (२) समृद्ध थवुं ; वधवुं ॉं करवु **प्रवृद् १०** उ० प्रेरवुं;धकेलवुं (२)जाहेर **प्रचुर** वि० घणुं; पुष्कळ (२) मोटुं; विशाळ (३) (समामने अंते) –थो भरपूर – पूर्ण प्रचेतस् गुं० वरुण (२) एक प्राचीन ऋषि **प्रचोदित** वि० प्रेरेलुं; उत्तेजेलुं (२) विधान के आज्ञा करेलुं (३)मोकलेलुं प्रच्छ ६ ५० [पृच्छति] पूछत्रं **भच्छर् १०** उ० ढांकवुं (२) संताडवुं प्रच्छद पुं० ढांकण; ओछाड; चादर **प्रच्छन्न** वि० ढंकायेलु; छवायेलु (२) [काढबुं ते गुप्त; छान् **प्रच्छर्दन** न० वमन करवुं ते (२) बहार **प्रच्छादन** न० ढांकवुं ते ; छुपाववुं ते (२) उत्तरीय वस्त्र [(२)छुपावेल् प्रच्छादित वि० ढांकेलुं;आच्छादन करेलुं प्रच्छाय न० गाढ छायावाळ् स्थान प्रच्छिल वि० सुकूं; निर्जेळ **प्रच्यादित** वि० हांकी काढेलुं प्रच्यु १ आ० दूर जवु; जता रहेवुं (२) जुदु पडवुं; खरी पडवुं; नीचे पडवुं (३)तजी देवं (धर्म) (४) --धी रहित बनवुं; विनाना बनवुं (५) झमवुं; वहे**वुं** (६) हांकवुं; धकेलबु **प्रच्युत** वि० खरी पडेलुं (२) च्युत थयेलुं; भ्रष्ट थयेलुं (३) हांकी काढेलुं प्रजन् ४ आ० [प्रजायते] जन्मवुं; उत्पन्न थर्वु (२) ऊगर्वु (३) जन्म आपत्रो; उत्पन्न करव् **प्रजन** पुं० पेदा करनार; जन्म आपनार (२) गर्भाधान करवुं ते (३) पेदा करवुं ते; जन्म आपको ते **प्रजनन** न० उत्पन्न करवुं ते; गर्भाघान; प्रसूति (२)संतति (३)जननेंद्रिय **प्रजनिष्णु** वि० उत्पन्न करनार्ह (२) वधनारः; ऊगनार

प्रजल्पृ १ प० बोलवुं; कहेवुं (२) जाहेर करवुं (३) ब**बडवुं; बहु बोलवुं** प्रजल्प पुं०, प्रजल्पन, प्रजल्पित न० नकामो बडबडाट (२) वातचीत प्रजबन, प्रजबिन् वि०वेगीलुं;झडपी (२) पुं० कासद [(४)लोको;रैयत प्रजा स्त्री० उत्पत्ति(२)संतति (३)प्राणी प्रजागर पुं॰ जागरण; उजागरो (२) सावचेती; जागृति प्रजामृ २ प० तपास राखवी (२) जामता **प्रजात** वि० उत्पन्न थयेलुं; जन्मेलुं प्रजातनुपु० वंश; संतति प्रजाति स्त्री० प्रजोत्पादन (२) प्रसूति प्रजानाथ पुं० राजा (२) ब्रह्मा प्रजानिषेक पुं० गर्भाधान (२) संतति प्रजापति पुं० ब्रह्मा प्रजायिन् वि० जनम आपनारं प्रजायत् वि० संततिवाळुं; प्रजावाळुं प्रजावती स्त्री० भाईनी वहु; मोटाभाई-नी वहु (२) संतानवाळी स्त्री **प्रजासृज्** पुं० ब्रह्मा **प्रजातक** पुं०यम [उघाडव् प्र**जृंभ** १ आ० बगासुंखावुं (२) मीं प्रजेश, प्रजेश्वर पु० राजा प्रज्ञ वि॰ शाणुं; बुद्धिमान; डाह्युं(२) (समासने अंते) –नुं जाणकार (३) पुं० डाह्यो - शाणी माणस प्रज्ञा९ उ० जाणवुं; –ना विषे माहित-गार थव् (आ मंत्रव् −प्रेरक० दर्शाव्**वं** (२) बोलाव**वं**; प्रज्ञा स्त्री ० बुद्धि ; समज ; डहापण (२) विवेकबुद्धि(३)साच् – अलौकिक ज्ञान प्रज्ञाचक्षुस् वि० अंध (२) पुं० धृतराष्ट्र (३) न० मनरूपी आंख प्रज्ञात वि० जागेलुं; समजेलुं(२) [चिह्न प्ररूपात प्रज्ञान न० बुद्धि; ज्ञान; डहापण (२) प्रज्ञापित वि० कही दीधेलुं; दीवेलुं;बहार पा**डी दीघे**लुं

प्रशाबाद पुं० पंडिताईनां वचन प्रज्ञासहाय वि॰ डाह्यु; शाणुं प्रज्वल १ प० प्रज्वलित थवु; सळगवुं प्रश्वस्तित वि॰ सळगी ऊठेलुं; सळगतुं (२) चळकतुं; प्रकाशित प्रक्रीन ('प्र∔डी'नुं भू०कृ०) वि० दरेक दिशामां ऊडतुं (२) आगळनी तरफ ऊडत् प्रवात वि० नीचुं नमेलुं (२) नमस्कार करतुं (३)चतुर ; निपुण (४)वांकु प्रणति स्त्री० नमस्कार; प्रणाम (२) नम्रता; विनय प्रणद् १ प० गाजबुं;अवाज करवो **प्रणदित** वि० गाजतुं (२) गुंजारव करतुं **प्रणम् १** प० प्रणाम करवा ; वंदन करवुं ; अादरथी आपेल् नीचा नमवुं प्रणमित वि० नमेलुं (२) नम्रताथी के प्रणय प्० ग्रहण करवुं के स्वीकारवुं ते (लग्नमां) (२)प्रेम;प्रीति (३) इच्छा; कामना (४) मित्रता (५) परिचय; विश्वास (६) कृपा (७) विनंति (८) दिखावनी तकरार आदर प्रणयकस्तर पुं० प्रेमनी तकरार; मात्र प्रणयकुपिस वि० प्रेमने कारणे गुस्से थयेलु; गुस्सानो देखाव करतुं **प्रजयन २०** लाववुं – दोरवुं ते (२) अमलमां मुकवंते; आचरवंते (३) लखबु ते(४)फरमाबबु ते(सजा) प्रमयपेशल वि॰ प्रेमथी आर्द्र बनेलू प्रणयप्रकर्ष पुंठः अत्यंत प्रेम; आसक्ति प्रणयसंग पुं० प्रेमनो भग;बेवफापणुं **प्रणयविद्यात पुं**० (विनंतिनो) अस्वीकार प्रणयविमुख वि० प्रेममांथी के मित्रता-मांथी विमुख बनेल् प्रणयस्पृश् वि० प्रेमथी प्रेरायेलु;प्रेमार्द्र प्रणयापराध पुं० प्रेम के परिचयनी भंग ; बेवफापणुं प्रणियता स्त्री० प्रेम; आसित

प्रणियन् वि० स्नेह – प्रीतिवाळुं; प्रेमी (२) –नी इच्छावाळुं; –ने झंखतुं (३) परिचित (४) पु० मित्र ; प्रेमी ; साथी (५) पति; प्रियतम (६) याचक (७) भक्त प्रणियनी स्त्री० प्रेयसी; पत्नी; सखी **प्रणयोन्मुख** वि० पोतानो प्रेम प्रगट करवाने उत्मुक एवुं प्रणय पुं० ॐकार प्रणञ् ४ प० नाश पामवु (२) देखाता बंध थ ुं (३) नासी छुटवुं प्रणाद पु० मोटो अवाज (२) गर्जना प्रणाम प्० नमस्कार; नमन प्रणामांजलि पुं० वे हाथ जोडीने करेला प्रणामः | आगंबान प्रणायक प्ं असेनापति (२)मार्गदर्शक; **प्रणाय्य** वि० वहालुं; प्रिय (२) प्रमा-णिक (३) विरक्त प्रणाल पुं०, प्रणालिका, प्रणाली स्त्री० परनाळ;पाणीनो मार्ग(२)परंपरा प्रणाश पुं० विनाश (२) मृत्यु **प्रणाशन** वि० नाश करनारुं (२) न० विनाश, ध्वस प्रणिगद् १ प० जाहेर करवुं; जणाववुं प्रणिधा २ उ० सूकवुं; नीचे सूकवुं (२) जडवुं; सज्जड चोटाडवुं (३) –नी उपर नाखवं - स्थिर करवं (४) फेलाववुं(५)मोकलवुं(६) उपयोग करवी प्रणिधान न० उपयोग(२)महाप्रयत्न; उद्यम (३)गाढ चिंतन; समाधि (४) कर्मफलनो त्याग **त्रणिधि** पुं० जा**सू**स; बातमीदार (२) अनुचर (३) प्रार्थना; विनंती **प्रणिधेय** न० जासूस के बातमीदार मोकलवा ते (२) उपयोगमां लेवुं ते प्रणिपत् १ प० प्रणाम करवा प्रणिपतन न०, प्रणिपात पुं० प्रणाम प्रणिपातप्रतीकार वि० नमनथी जेनो उपाय थई शके तेवुं

प्रणिपातरस पुं० आयुधी साथे बोलाती एक मंत्र प्रणिहन् २ प० वध करवी (२) नीचुं नमाववुं (हाथ)(३) वधु धीमेथी बोलवुं ('**बनु**दात्त' करता) प्रणिहित वि० मूकेलुं;स्थिरकरेलुं(२) फेलावेलुं (३) सोंपेलुं (४) एकाग्र थयेलुं (५) स्वीकारेलुं (६) मोक-लेलु; प्रेरेलुं (७) निश्चित प्रणी १ प० दोरवु (लक्कर) (२) अर्पण करवुं (३) लई जबुं; स्थापबुं (४) पवित्र करवुं (मंत्रोथी)(५) नाखवुं (दंड) (६) विधान करवुं (७) रचवुं (ग्रंथ)(८) सिद्ध करवुं; उपजाववुं (९) स्थितिए पहोंचाडवुं (१०) दर्शाववुं (११) फेंकवुं ; प्रेरवुं ; छोडवुं (१२) दूर करवुं; नाश करवो **प्रणी** वि० बनावनार्हः; रचनार्ह **प्रणीत वि० -**नी समक्ष लावेलुं; अर्पेलुं (२) –ने पमाडेलुं (३) आचरेलुं (४) विधान करेलुं (५) फेंकेलुं; मोकलेलुं (६) मंत्र वडे संस्कारेलुं **प्रणुत** वि० वसापेलुं; प्रशंसा करेलुं **प्रणुद् ६** प० हांकर्बु ; हांकी काढ्वुं **प्रणु**च्च वि० हांकवामां आवेलुं (२) हांकी काढेलुं प्रणेय वि॰ दोरी जवाय तेवुं; वश; अधीन (२) पामवा -- मेळववा योग्य प्रणोदित वि० हांकेलुं; प्रेरेलुं **प्रतत** वि० फेलायेलुं; विस्तरेलुं प्रततम् अ० निरंतर; सतत **प्रतन् ८ उ०** विस्तारवुं; फेलाववुं (२) दर्शाववुं (३) रचवुं (४) अनुष्ठान करवुं [(२) अल्प; तुच्छ (यज्ञन्) प्रतनु वि॰ घणुं ज पातळुं; कृशः; सूक्ष्म प्रतप् १ प० तपवुं ; सळगवुं ; प्रकाशवुं(२) र्शेकवुं (३)तपस्या करवी (४)पीडवुं प्रतप्त वि० गरम थयेलुं (२) पीडित; त्रास पामेलुं (३) तप आचरेलुं

प्रतरण न० ओळंगवुं ते प्रतकं पुं० तकं; धारणा प्रतान पुं० डूंक; कूंपळ (२) वेलो (नीचे फेलातो) (३) विस्तार 🕝 प्रताप पुं० गरमी; ताप (२) तेज; कांति (३) रुआब (४) सामर्थ्यं; प्रभाव; पराक्रम असार पुं॰ पार लई जबुं ते (२) ओळंगी जबुं ते (३) ठगबुं - छेतरबुं ते प्रतारक वि० ठगनारुं; छेतरनारुं प्रतारणा स्त्री० ठगाई; छेतरपिंडी प्रतारित वि० छेतरेलुं; ठगेलुं प्रति अ० कियापदो पूर्वे '--नी तरफ', '-नी दिशामां', '-फरीथी', 'ऊलटुं', 'पाछुं','–नी उपर' –**ए** अर्थ बतावे (२) नामोनी पूर्वे, 'साद्क्य', 'विरोधी', 'ऊलटु', 'हरीफ' –ए अर्थ बतावे (३) अलग उपसर्ग तरीके (द्वितीया साथे) '–नी तरफ', '–नी सामे', 'सरखामणी– मां', 'प्रमाणमां', 'नजीक', 'समये', 'दरम्यान', '–ना पक्षमां –तरफेणमां', 'हर--दरेक', '–ना संबंध्**मां', •-ना** मते','-ना अभिप्राये', '-नी समक्ष'-ए अर्थ बतावे (४) (पंचमी साथे) '--ने बदले', '--ना प्रतिनिधि रूपे', -ए अर्थ **बता**वे (५) अव्ययीभाव समासमां 'दरेकमां', 'हरेकमां', '–नी दिशामां' -ए अर्थ बतावे प्रतिकरपुं० बदलो वाळवो ते प्रतिकर्तस्य न० बदलो लेवो ते प्रतिकर्मन् न० प्रतीकार; बदलो; बेरनी वसूलात (२) इलाज; उपाय (३) शरीरनां शोभा-शणगार (४) वि**रोध** (५) तपस्या (६) प्रायश्चित्त प्रतिकलम् अ० सतत प्रतिकाय पुं० प्रतिस्पर्धी; शत्रु (२) निशान ; लक्ष्य (३) प्रतिमा ; मूर्ति **प्रतिकार** पुं० प्रत्युपकार (२) **बदलो** लेवो ते (३) रोग वगेरेनो उपचार-

उपाय (४) विरोध; रुकाबट (५) मदद (६) अनुकरण प्रतिकार्यं न० जुओ 'प्रतिकर्तव्य' प्रतिकाश पुंश्र प्रतिबिंब (२) देखावः सादृश्य (३) समासने अते '–ना जेवुं', '--नी समान' --एवो अर्थ बतावे प्रतिकितव पुं॰ (जुगारमां)सामे रमनारो प्रतिकृल वि० अनुकूळ नहि तेवुं ; विरुद्ध ; ऊलटुं (२) कर्कश; कठोर प्रतिकृ ८ उ०बदलो वाळ हो (२) उपचार **−इला**ज करवो (३) पाछुं अप्पर्वु; पाछु मूकवु (४) वेर वाळव् प्रतिकृत वि० प्रतिकार कर्यो होय तेवुं; बदलो लोधो के बाळघो होय तेवुं; उपाय कर्यो होय तेवुं (२) उपकार कर्यो होय तेवुं (३)न० बदलो(४)विरोध प्रतिकृति स्त्री० बदलो; प्रतिकार (२) प्रतिबिंब (३) प्रतिमा (४) विरोध प्रतिक्रिया स्त्री० बदला लेवी ते; बदली बाळको ते (२) निवारण (३)विरोध (४) शणगार (५) आचरण (६) मदद; रक्षण प्रतिक्षणम् अ० हर पळे;दरेक क्षणे प्रतिक्षपम् अ० दरेक राते प्रतिक्षिप् ६ प० --मां फेंकवं (२)मारवं; हिंसा करवी (३) निंदवुं ; तुच्छकारयुं प्रतिगद् १ ५० जवाब आपवो प्रतिगम् १ ५० [प्रतियच्छति | सामा जबुं; आगळ जबुं (२) पाछुं फरबुं **प्रतिगमन** न० पाछ् फरवुं ते प्रतिगर्ज १ प० -नी सामे गर्जना करवी (२) सामनो करवो **प्रतिगृहीत** वि० स्वीकारेलुं (२) अनु-मत; समत (३) परणेलु प्रितियह् ९ उ० [प्रतिगृह्णाति, प्रति-गृह्णीते । पकडवें; टेकववं (२) स्वीकारवुं; लेबुं (३) सामनो करवो; हमलो करवो (४) परणवुं (५)

आज्ञापालन करवुं (६) –नो आशरो लेवो (७)स्वागत करव् प्रतिग्रह पुं० स्वीकारवुं -- लेवुं ते ; पकडवुं ते (२) दान स्वीकारवानो हक्त (३) भेट; बक्षिस (४) सामेथी स्वागत करवुं ते (५) लग्न प्रतिप्रहण न० भेट स्वीकारवी ते (२) लग्न (३) पात्र;वासण(४)स्वागत प्रतिष पुं विरोध; सामनो (२) मारा-मारी (३) गुस्सो (४) दुश्मन (५) मूर्छा प्रतिघात पुं० सामनी; निवारण (२) वळतो प्रहार (३) पाछ् ऊछळव् ते (४) मनाई; निषेध प्रतिघातिन् वि० विरोधी; दूश्मन (२) रुकावट के विघ्न करनारं(३)आंजी नांखत् प्रतिचिकीर्षा स्त्रो० बदलो लेवानी इच्छा प्रतिच्छद् १० उ० ढांकव्; आच्छादन करवुं (२) छुपाववुं; संताडवुं प्रतिच्छन्न वि० वीटेलुं, ढांकेलुं (२) संताडेलुं (३) संपन्न ; युक्त प्रतिच्छंद, प्रतिच्छंदक पुरु प्रतिमाः; आकृति (२) प्रतिनिधि प्रतिच्छाया, प्रतिच्छायिका स्त्री० प्रतिबिव (२) प्रतिमा प्रतिजन्मन् न० पुनजेन्म **प्रतिजीवन** न० सजीवन थवुं ते प्रतिज्ञा ९ आ० संकल्प करवो; वचन-लेवुं (२) निश्चयपूर्वक कहेबुं (३) स्वीकारवुं; मंजूरो आपवो (४) माहितगार थवुं; जाणवुं प्रतिज्ञास्त्री० पण; नियम; (२) जाहेरात; निवेदन प्रतिज्ञात वि० प्रतिज्ञा करेलुं; संकल्प करेलुं (२) स्वीकारेलुं; मान्य राखेलुं (३) न० प्रतिज्ञा; वचन प्रतिज्ञापित वि० जुओ 'प्रजापित' प्रतिदर्शन न० देखाव

प्रतिबा १ प० [प्रतियच्छति] विनिमय करवो (२) ३ उ० प्रतिददाति, प्रतिदत्ते [पाछ् बाळव् प्रतिदिनम् अ० दररोज; हमेशां प्रतिद्वंद्विन् वि॰ शत्रुतावाळुं (२) विरोधी; प्रतिकूळ (३) हरीफ प्रतिष्वनि, प्रतिष्वान पुं ० जुओ 'प्रतिरव' प्रतिनद् १ प० पडघो पडवो (२) बूम पाडीने जवाब आपवो –प्रेरक० अवाजधी भरी काढवुं प्रतिनव वि० नवूं;ताजु(२)तरतन् खीलेल् प्रतिनंद् १ प० आशीर्वाद आपवो (२) स्वागत करवु; अभिनंदवु प्रतिनाद पुं० प्रतिघ्वनि; पडघो प्रतिनारी स्त्री० हरीफ स्त्री प्रतिनिधि पुं० अवेजी; -ने बदले काम करवा नियुक्त करेलो माणस (२) प्रतिमा; मूर्ति (३) जामीन प्रतिनिनद पुं० जुओ 'प्रतिनाद' प्रतिनियत वि० नियंत – मक्की थयेलुं (२) अटळ ; दृढ **प्रतिनिजित** वि० हरावेलु; ताबे करेलुं (२)रदबातल करेलुं;पाछुं खेंचेलुं प्रतिनिविष्ट वि० जनकी; दुराग्रही प्रतिपक्ष वि० समान; सदृश (२) पुं॰ सामो पक्ष (३) विरोधी; हरीफ (४) उपायः प्रायश्चित्त प्रतिपच्चंद्र पुं० पडवानी चंद्र प्रतिपण पुं ० होड; सामी होड प्रतिपत्ति स्त्री० मेळववुं ते;प्राप्ति (२) **ज्ञान**; भान; समज (३) स्त्रीकार (४)शरू करबुं ते;माथे लेबुं ते(५) कार्य; कर्तेव्यः; वर्तन (६) निश्चय (७) समाचार (८) आदर; संमान (९) दान (१०) उपाय; मार्ग; रस्तो प्रतिपथम् अ० मार्गे; रस्ते प्रतिपद् ४ आ० पामवुं; पहोंचवुं(२) दाखल थवुं; अनुसरवुं (मार्ग) (३)

स्वीकारवुं (४) फरीथी प्राप्त करवुं (५) पकडवुं (६) मानवुं; गणवुं (७) माथे लेबुं; हाथमां लेबुं (कार्य) (८) संमत थवुं (९) आचरवुं; अमलः करवो (१०)वर्तवुं (११)पाछुं वाळवुं (जवाब) (१२) जाणवुं ; समजवुं —-प्रेरक० अपेबुं(२)साबित करबुं (३)समजाववुं(४)पाछुं लई जबूं प्रतिपद् स्त्री० सुद पडवो प्रतिपदम् अ० पदे पदे; पगले पगले (२) दरेक जगाए प्रतिपदा (-दी) स्त्री० सुद पड़वी प्रतिपन्न वि० मेळवेलुं; प्राप्त करेलुं (२) साधेलु; आचरेलु (३) स्वीकारेलु (४) कबूल करेलुं (५) जाणेलुं; समजेलुं (६) साबित करेलुं प्रतिपादन न० अर्पेबुंते (२) साबित के सिद्ध करवुं ते (३) शरूआत; आ**रंभ** प्रतिपादित वि० अर्पेळुं(२)सिद्ध करेलुं के थयेलुं (३)समजावेलुं (४)प्रगटेलुं प्रतिपाद्यमान वि० अपातुं; देवातुं प्रतिपान न० पीवानुं पाणी (२)पाणीः पिवराववुं ते प्रतिपाल् --प्रेरक० रक्षण करवुं (२) राह जोवी (३) आज्ञा पाळवी (४) उछेरवुं (५) आचरवुं; पाळवुं प्रतिपालन न० रक्षण करवुं ते (२) आचरवं के पाळवं ते प्रतिपुरुष पु० सरखो माणसः प्रतिनिधि (२)पाथी (३) पुरुषनी आकृतिनुं बावलुं प्रतिपूजित वि० साम् वंदन करवामां आव्युं होय तेवुं (२) संमानेलु प्रतिपुरुष पुं० जुओ 'प्रतिपुरुष' प्रतिपूर्ण वि० विस्तृत; पहोळ् प्रतिषु –प्रेरक० पूरेपूरुं भरी काढवुं (२) तृप्त करवुं;संतुष्ट करवुं प्रतिप्रदान, न० पाछुं वाळवुं ते(२)कन्या-प्रतिप्लवन न० पाछो कुदको मारवो ते प्रतिप्रिय न० प्रत्युपकार

प्रतिफल पुं०, प्रतिफलन न० प्रतिबिंब (२)बदलो [(२)पाछु वाळेलु प्रतिफलित वि० प्रतिबिधित थयेलुं प्रतिबद्ध वि॰ बंधायेलुं; बांघेलुं (२) रोकेलुं; अटकावेलुं (३) जडेलुं; सज्जड चोटाडेलुं (४) गूंथेलुं प्रतिबल वि० शक्तिमान (२) समान बळवाळुं (३) न० दुश्मननुं सैन्य (४) बळ; ताकात **अतिबंदी** स्त्री० सामी तेवी ज जवाब; सामानी दलीलने तेने ज भेरववी ते प्रतिबंद्धता स्त्री० विरोध; खंडन प्रतिबंध् ९ प० बाधी देवुं (२) दृढ करवृं (३) जडवुं – सज्ज्ञड चोटाडवुं (४) रोकवुं; प्रतिबंध करवो अतिसंघ पुं० बांघवुं के जोडवुं ते;संबंघ (२) अटकाव; हकावट; विरोध (३) घेरो **अतिबंधि पुं०,** स्त्री० आक्षेप;विरोध (२)बीजा पक्षने पण समानपणे लागु पडती दलील [(२)सखत बॉमतुं **प्रतिबंधिन्** वि० विघ्न-डस्रल करनारुं प्रतिबंधी स्त्री० जुओ 'प्रतिबंधि' प्रतिबाध १ आ० निवारवुं (२) रोकवुं (३) पीडा करवी **प्रतिबंब** पुं०, न० पडछायो;चळकती सपाटीमां पडती प्रतिच्छाया प्रतिबुद्ध वि० जागेलुं; जाग्रत थयेलुं (२)भानमां आवेळुं(३)खीळेलुं प्रतिबुध् ४ आ० जागवु(२)जाणवुः; अनुभवर्षु; संमजव् –प्रेरक० जगाडवुं (२) जणाववुं; माहितगार करवुं (३) सोंपवुं **प्रतिबोध** पुं० जागवुंते (२) ज्ञान ; भान (३) बोध; उपदेश (४) बुद्धि; तर्कशक्ति (५) स्मरण प्रतिबोधक वि० जगाडनाहं (२) उप-देश आपनारुं; जणावनारुं

प्रतिबोधन न० जागवुं ते (२) उप-देश (३) ज्ञान; समज; माहिती **प्रतिबोधित** वि० जागेलुं; जगाडेलुं (२) सीखवेलुं; उपदेशेलुं प्रतिबुर प० जवाब आपवो (२) आ० ना पाडवी [**मळवं --** प्रााप्त **थ**वं प्रतिभज् १ उ० पोताने भागे पाछुं प्रतिभट वि० हरीफाई करतुं; समान(२) पुं० हरीफ;विरोधी (३)सामावाळियो प्रतिभय वि॰ भयंकर (२) जोखम भरेलुं (३) न० जोखमः; भय प्रतिभा २ प० भासवुं; प्रकाशवुं (२) प्रगट थवुं; देखावुं (३) मनमां आवबुं--स्फुरबुं (४) योग्य लाग ुं प्रतिभा स्त्री० देखाव; भासवुंते (२) कांति; तेज (३) बुद्धि; सूझ (४) बुद्धिनी छटा; अलौकिक बुद्धि (५) प्रतिबिब (६) अचानक देखावुं ते प्रतिभात वि० प्रकाशित; तेजस्वी (२) जणायेलुं; समजायेलुं प्रतिभान न० कांति; तेज(२)बुद्धि; प्रतिभा (३) शोध्रबुद्धि प्रतिभानवत् वि० प्रकाशित; सुंदर(२) शीघ्र बुद्धिवाळुं (३) घृष्ट प्रतिभाव पुं० सामी समान भाव **प्रतिभाष् १** आ० जवाब आपवो (२) कहेवुं (३) नामे ओळखवुं प्रतिभास पुं० अचानक स्फुरवुं ते ~ देखावुं ते (२) देखावः, आभास **प्रतिभासन** न० देखाव; समानआकार प्रतिभिव् ७ उ० भेदवुं (२) खुल्लुं पाडी देवुं (भेद) (३) ठपको आपवो (४) नकारवुं (५) गाढ संसर्गहोदो प्रतिभिन्न वि० बींधायेलुं (२) गाढ संपर्कवाळुं (३) भागेलुं प्रतिभू पुं जामीन प्रतिभेद पुं० भेदव्ं – टुकडा करवा ते (२) शोध (३) खुल्लुं पाडी देवुं ते

प्रतिभोग पुं० भोग; आनंद प्रतिमल्ल पुं० हरीफ;सामावाळियो प्रतिमंडल न० सूर्य वगेरेनी आसपास देखातुं बीजुं कूंडाळुं प्रतिमा स्त्री० मूर्ति (२) समानता; सादृश्य (समासमां -- 'नी समान' ए अर्थमां वपराय छे ; उदा० 'देवप्रतिम,' 'अत्रतिम') (३) पडछायो; प्रतिबिब प्रतिमागृह, प्रतिमागेह न० मृतिओ ज्यां राखी होय तेवुं मकान प्रतिमान न० आदर्श; धोरणरूप वस्तु (२)मूर्ति (३) सादृश्य (४) हाथीनो कुभस्थल नीचेनो भाग प्रतिमानना स्त्री० पूजा प्रतिमार्ग पुं० पाछा फरवानो मार्ग **प्रतिमार्गम्** अ० पाछुं;पाछली तरफ प्रतिमित वि० नकल करेलुं सरखावेलुं (३) प्रतिबिबित **प्रतिमुक्त** वि० पहेरेलुं; धारण करेलुं (२)बांधेलुं (३) सुसज्ज (४) बंधन-मांथी छोडेलुं (५) फेंकेलुं प्रतिमुख वि० सामुं मों राखीने ऊभेलुं (२) नजीकनुं; संमुख प्रतिमुखम् अ० तरफ;सामे;समक्ष प्रतिमुच् ६ प० [प्रतिमुंचित] मुक्त करवुं ; छूटुं करबुं (२)पहेरवुं ; धारण करवु (३) त्यागवु (४) फेंकवुं प्रतिमुद्दः अ० वारंबार प्रतिमोचन न० ढोलुं करवुं ते; छूटुं करवुं ते; बदलो बाळवो ते (२) वसूलात; बदलो (वेरनो) मुक्ति; छुटकारो प्रतियत् १ आ० प्रयत्न करवो –प्रेरक० बदलो बाळवो के लेवो (२)पाछुं वाळवुं प्रतियत्न वि० प्रयत्न करतुं; सक्रिय (२) पुं० प्रयत्नः; उद्यम (३) संस्का-रीने तैयार करवु ते (४) नवी गुण

ऊभो करवो ते (५) इच्छा (६) विरोध; सामनो (७) बदलो लेबो ते **प्रतिया २** प० पाछा फरवुं के जवुं(२) समान थर्वे(३)पाछुं अपावं वाळेलुं प्रतियात वि० सामनो करेलुं(२)पाछुं **प्रतियातन** न० बदलो लेवो ते प्रतियातना स्त्री० मूर्ति; प्रतिमा **प्रतियान** न० पाछा फरवुं ते । प्रतियुष् ४ आ० युद्धमां सामसामा आवी प्रतियुवति स्त्री० वेश्या (२) हरीफ स्त्री **प्रतियोग** पुं० विरोध; सामनो (२) प्रतिकार; उपाय (३) जवाब प्रतियोगिन् पुं० विरोधी; प्रतिपक्षी (२) सामो समान भाग(३) भागीदार; साथी प्रतियोद्धृ पु० सामावाळियो; दुश्मन प्रतियोघ, प्रतियोधिन् पु० सामा-बाळियो; विरोधी प्रतिरत वि० –मां आनंद मानत् प्रतिरथ पुं० युद्धमां सामे आवनारो प्रतिरथ्यम् अ० दरेक मार्गे पडघो प्रतिरव पु० कलह;झघडो(२)प्रतिष्विन; प्रतिरसित २० पडघो **प्रतिरद्ध** वि० अटकावेलुं (२) देरो घालेलुं प्रतिरुष् ७ उ० अटकाववुं; रोकवुं(२) घरो घालबो (३) छुपाबबु **प्रतिरूढ** वि०पे**ठे**लुं (२)फरी स्थापित थयेलुं (३) अनुकरण करेलुं प्रतिरूप वि० सरका रूपवाळुं (२) सुंदर (३) योग्य; अनुरूप (४) अभिमुख (५) न० प्रतिमा; चित्र (६) अरीसा जेवी प्रतिबंब पाडे तेवी वस्तु (७) उपमान प्रतिरूपक वि० समान; सरख् (समासने छेडे) (२)न० चित्र (३) पडछायो (४) बनावटी आज्ञा प्रतिरोधक वि० अटकावनारुं घेरनारुं (३) पुं० विरोघी (४)चोर ; डाकु (५) विध्न

प्रतिरोधिन् वि० जुओ 'प्रतिरोधक' प्रतिलक्षण न० चिह्न; निशान प्रतिलभ् १ आ० मेळववु (२) पाछुं मेळववुं (३) शीखबुं; समजवुं (४) अपेक्षा राखवी [निंदा ; ठपको प्रतिलंभ पुं प्राप्ति; मेळवव् ते (२) प्रतिलिखित वि० जवाब आपेल प्रतिलोभ वि० ऊलटा कमनुं (२) उपला वर्णनी स्त्री साथेनुं (लग्न) (३)विरोधी; विपरीत (४) अधम; नीच (५) डावुं (६) जक्की; हठीलुं (७)अप्रिय प्रतिलोमतः अ० ऊलटा ऋमे (२) शत्रुता के विरोध करीने प्रतिबच् २ प० प्रत्युत्तर आपवी प्रतिबचन (-स्) न० जवाब (२) पडघो प्रतिवद् १ प० जवाबमां कहेवुं (२) बोलवुं (३) फरीथी कहेवुं (४) विरोधमां के सामुं कहेवुं प्रतिवस्तु न० सरखा रूपवाळी वस्त् (२)बदलामां आपेलुं ते प्रतिवाक्य न०, प्रतिवाच् स्त्री०, प्रति-वाचिक न० प्रत्युत्तर; जवाब प्रतिवात पुं लामो पवन प्रतिवातम् अ० सामे पवने प्रतिवाद युं० जवाब; प्रत्युत्तर(२)तकार; प्रतिचादिन् पुं प्रतिपक्षी; विरोधी (२)दावामां बचावपक्षनो माणस प्रतिवार पु॰, प्रतिवारण न॰ अटका-वब -- रोकवु ते प्रतिवार्ता स्त्री० समाचार; बातमी प्रतिवासरम् अ० दररोज प्रतिवासित् पु० पडोशी प्रतिविधात पुं० सामनो के बचाव करवो प्रतिविज्ञा ९ प० [प्रतिविजानाति] कृतज्ञतापूर्वक स्वीकारवं प्रतिविटपम् अ० दरेक डाळीए (२) एक पछी एक डाळीए

प्रतिविव् २ प० स्वीकारवुं; लेवुं (२) ६ प० प्रितिविदति । मेळवव् –प्रेरक० जणाववुं(२)आपवुं प्रतिविधा ३ उ० इलाज करवो; प्रति-कार करवो (२) गोठववुं; तैयार करवुं (३) मोकलवुं (४) सजा करवी **प्रतिविधान** न० उपाय के प्रतिकार करवो ते (२) गोठवण; रचना प्रतिवोर्य वि० सरक्षा बळवाळं प्रतिवेलम् अ० दरेक वेळा; दरेक प्रसंगे प्रतिवेश पुं० पडोशी (२) पडोश प्रतिवेशिन् वि० पडोशी प्रतिवेश्मन् न० पडोशीन् घर प्रतिवेश्य प्०पडोशी प्रतिव्युद्ध वि० सामे व्युहरचनामां गोठ-वेलुं (२)विस्तृत प्रतिशब्द पुं० पडघो प्रतिशम पु० शमन; नाश प्रतिश्चयित वि० देव पासे इच्छित वरदान मेळववा भूस्युं सूई जनारं प्रतिशासन न० हुकम करवो ते(२)हरीफ प्रतिशिष्ट वि० मोकलेलुं; विदाय करेलुं प्रतिश्रय पुं । आश्रय (२) रहेठाण (३) सभागृह (४) यज्ञगृह प्रतिश्रव पुं० वचन ; कबुलात (२) पडघो प्रतिश्रु५ प० वचन आपवुं पिडघो प्रतिश्रुत् (-ित) स्त्री० वचन ; कोल (२) प्रतिषद्ध वि० मना करेलुं प्रति•िष् (प्रति+सिष्) १ प० निग्रह करबो; निवारवुं; रोकवुं (२)मनाई करवी प्रतिषेद्ध वि० जुओ 'प्रतिषेधक' प्रतिषेध पुं निवारण करवं ते; दूर करवुं ते (२) मनाई; निषेध (३) ना पाडवी ते मिनाई करनारुं **प्रतिषेषक** वि० रोकनारु; अटकावनारुं; प्रतिषेघाक्षर न० नकार दर्शावतो शब्द **प्रतिष्टंभ** पुं० रुकावट ; हरकत

प्रतिष्ठा (प्रति-स्था) **१** प० [प्रति-तिष्ठति] स्थिर थवुं; दृढ थवुं (२) रहेवुं; वसवुं (३) -ने आधारे टकर्व् (४) आथमबु –प्रेरक० स्थापित करवुं(२)सोंपवुं (३)बक्षवुं प्रतिष्ठा स्त्री० 'आधारस्थान; स्थान; पायो (२) निवास (३) दृढता; स्थिरता (४) टेको; शोभा (छा०) (५) मोटुंपद (६) स्याति; कीर्ति (७) स्थापित थर्बु ते (८) इच्छित वस्तु प्राप्त थवी ते; सिद्धि (९) मूर्तिनी स्थापना करवी ते (१०) पग प्रतिष्ठान न० बेठक; पायो; स्थान; आधारस्थान (२) पग (३) चालु रहेवुं ते ; सातत्य प्रतिष्ठासु वि० स्थिर रहेवा इच्छतुं प्रतिष्ठितं वि० स्थापेलुं; ऊभुं करेलुं; स्थिर करेलुं; मूकेलुं (२) विख्यात (३) निश्चित; नेक्की थयेलुं (४) समाविष्ट (५) जीवनमां स्थिर थयेलुं – परणेलुं (६) प्राप्त थयेलुं; भागे आवेलुं (७) लागु पडे तेवुं (८) सिद्धः; परिसमाप्त प्रतिसम वि० बरोबरियुं प्रतिसमाधान न० उपाय; इलाज प्रतिसमासित वि० बरोबरियुं; सामनो करी शके तेव् प्रतिसर वि० अधीन; आश्रित (२) पु॰ अनुयायी; सेवक (३) कौतुकसूत्र (लग्न वखते बंधातुं) (४) तावीज प्रतिसर्ग पुं० प्रलय (२) गौण सृष्टि (मरीचि वगेरेए करेली) (३) प्रलय अने ते पछीनी फरीथी थंयेली सुष्टि वर्णवतो पुराणनो भाग प्रतिसब्य वि० अलटा क्रममां होय तेवुं प्रतिसंकाश पुं० सरखापण् प्रतिसंकम पुं० पडछायो; प्रतिबिद्ध

(२) प्रलय; मूळ कारणमां पाछा समाई जवुं ते प्रतिसंख्यान न० कोई पण बाबतनी शांत विचारणा(२)सांख्य सिद्धांत **प्रतिसंदेश** पुं० संदेशानो जवाब प्रतिसंधान न०फीथी जोडवुंते (२) उपाय; साधन (३) आत्मनिग्रह प्रतिसंधि पुं० फरीथी जोडाबुं ते (२) अटकवं ते; उपरम प्रतिसंहार पुं॰ पाछुं खेंची लेवुं ते (२) आपी देवुं ते (३) समावेश; संकोच प्रतिसंह् १ प० पाछुं खेंचवुं प्रतिसंहत वि० पाछुं खेंची लीधेलुं (२)निग्रह करेलुं; संकोचेलुं प्रतिसीरा स्त्री० पडदो; कपडानी भींत प्रतिसूर्यं, प्रतिसूर्यंक पुं० आकाशमां बीजा सूर्य जेव देखात तेज (२) सरहो प्रतिसृ १ प० पाछुं सरी जवुं (२) सामे धसर्वु; हुमलो करवो −प्रेरक० पाछुं सरकाववुं (२) पाछुं धकेली का**ढ**वुं; ह**ंको** का**ढवुं** प्रतिसृष्ट वि० मोकलेलुं (२) विख्यात (३) नकारेलुं (४) प्रमत्त प्रतिसेना स्त्री०, प्रतिसंन्य न० दुश्मननुं प्रतिस्पर्धा स्त्री० हरीफाई प्रतिस्पर्धिन् वि० हरीफ प्रतिस्पंदन न० धबकारो; धडकव्ंते प्रतिस्रोतस् वि० सामे वहेणे जतु (२) अ० सामे वहेणे प्रतिस्वन, प्रतिस्वर पुं० पडघो प्रतिहत वि० पाछुं वाळेलुं ; पाछुं धकेलेलु (२) अटकावेलुं (३) हणायेलुं; नार्श पामेलुं(४)अंजाई गयेलुं (५) बुठ्ठुं थयेलुं प्रतिहित स्त्री० सामुं मारवुं ते (२) पाछु धकैलवु ते (३) पाछु ऊछळवु ते प्रतिहन् २ प० सामो प्रहार करवो (२) अटकायत करवी; रोकवुं; सामनो करवो (३) पाछुं धकेलवुं (४) नाश करवो (५) उपाय करवो

प्रतिहर्तु पुं० निवारण करनार; दूर करनार (२) नाश करनार **प्रतिहस्त, प्रतिहस्तक** पुं० प्रतिनिधि प्रतिहस्तिन् पुं० वेश्यावाडानो मालिक प्रतिहस्तीकृ ८ उ० लेवुं प्रतिहार पूं० सामु मारनार (२) दरवाजो (३) दरवान (४) मदारी (५) आगमन जणाववुं ते **प्रतिहारण** न० बारणामां प्रवेशवा माटेनी परवानगी; प्रवेश प्रतिहारभूमि स्त्री० ऊमरो (मकान० इ० नो) (२)दरवान तरीकेनुं पद प्रतिहाररक्षी स्त्री० दरवान स्त्री प्रतिहिंसा स्त्री० बदलो; वेरनी वसूलात प्रतिह १ प० पाछुं मारी काढवुं (२) त्यागवुं ; वर्जवुं (३) अवगणवुं प्रती(प्रति+इ) २ प० पाछुं फरव<u>ुं</u> (२) पासे पहींचवुं; पामवुं (३) —ने भागे आवव् ; *—*ने माथे पडवुं (४) स्नातरी राखवी; विश्वास होवो (५) समजवुं; जाणवुं; शीखबुं (६) प्रस्यात थवुं (७) खुश -- प्रसन्न थवुं (८) विरोधीनी सामे जवुं –प्रेरक० खातरी कराववी ; विश्वास उत्पन्न करवो (२)लक्ष उपर लाववुं (३)साबित करवुं प्रतीक पुं० अवयव (२) न० मूर्ति; प्रतिमा (३) चिह्नः , निशान प्रतीकार पुं० जुओ 'प्रतिकार' प्रतीकाश पुं० जुओ 'प्रतिकाश' प्रतीक्ष् (प्रति + ईक्ष्) **१** आ० जोवुं; निहाळवुं (२) अपेक्षा राखवी (३) [अपेक्षा राखतुं राह जोवी प्रतीक्ष, प्रतीक्षक वि० राह जोतुं; प्रसीक्षण न०, प्रतीक्षा स्त्री० राह जोवी ते (२)अपेक्षा; आशा (३) घ्यान; लक्ष प्रतीक्षिन् वि॰ जुओ 'प्रतीक्ष' व्रतीक्ष्य वि० राह जोवा योग्य (२)

लक्षमां लेवा योग्य (३) संभाननीय (४)पाळवा – वळगी रहेवा योग्य प्रतीघात पुं० जुओ 'प्रतिघात' प्रतीची स्त्री० पश्चिम दिशा प्रतीच्छक पुं० लेनारो;स्वीकारनारो **प्रतीच्य** वि० पश्चिमनुं;पाश्चात्य प्रतीत वि० नीकळेलुं; ऊपडेलुं (जवा माटे) (२) विदाय थयेलुं; भूतकाळनुं बनेलुं (३) मानेलुं; विश्वास करेलुं (४) साबित करेलुं (५) ओळखेलुं (६) प्रस्यात थयेलुं (७) खातरीवाळ (८)दृढः संकल्पवाळुं(९)खुश थयेलुं (१०)डाह्युं;**ज्ञानी प्रतोति** स्त्री० खातरी (२) मान्यता (३) निश्चित ज्ञान (४) स्याति **प्रतीप** वि० विरोधी; प्रतिकूळ (२) ऊलटा कमनुं (३) पाछळ जतुं; पछात रहेतुं(४)अवळुं;ओडुं प्रतीपग वि० विरोधी; प्रतिकृळ **प्रतीपगति** स्त्री ०, प्रतीपगमन न ० ऊलटी गति; ऊंधी दिशाए जवूं ते प्रतीपतरण न० सामे प्रवाहे तरवुं ते प्रतीपम् अ० ऊलटुं के प्रतिकृळ होय तेम प्रतीपयति ५० (पाछ् वाळव्) **प्रतीपवचन** न० प्रतिकूळ के आडुं बोलवुं प्रतीपविपाकिन् वि० ऊलटा परिणाम-वाळुं(कर्ताने ज नुकसान करतु) **प्रतीर न**० तट;कांठो प्रतीवेश पुं॰ जुओं प्रतिवेश' प्रतीवेशिन् वि० जुओ 'प्रतिवेशिन्' **प्रतीष्** (प्रति+इष्) ६ प० [प्रतीच्छति] स्वीकारवं (२) स्वागत करवं (३) पालन करवुं (आज्ञानुं) (४) राह जोवी **प्रतीहार पुं**० जुओ 'प्रतिहार' प्रतीहारी स्त्री० दरवान स्त्री(२)दरवान **प्रतुद् ६ प० घोंचबुं**; मारबुं –प्रेरक० हांकबुं; प्रेरवुं; घोंच-परोणो करवो

प्रतुष्टि स्त्री० संतोष **प्रतुर्ण** वि० झडपी;वेगीलुं **प्रतु १** प० ओळंगबुं;पार करबुं -प्रेरक० छेतरवुं (२) लंबाववुं; वधारवुं [चाबुक प्रतोद पुं॰ अंकुश; परोणो (२) लांबी प्रतोली स्त्री० धोरी रस्तो **प्रत्त** वि० आपेलुं ; दीघेलुं (२)परणावेलुं प्रत्यक् अ० ऊलटुं; विरुद्ध दिशामाँ (२) पश्चिम तरफ (३) अंदरनी बाजु (४) पहेलां प्रस्यक्ष वि० देखी शकाय तेवुं (२) आंखनी सामे होय तेवुं (३) कोई पण इंद्रियथी जाणी शकाय तेवुं (४) स्यष्ट (५) न० इंद्रियो द्वारा यतुं ज्ञान; तेनुं साधन के प्रमाण (न्याय०) प्रत्यक्षम् अ० -नी समक्षः; -नी नजर सामे (२) जाहेरमां (३) स्पष्टताथी **प्रत्यक्षयति** प० (प्रगट करवुं; बताववुं) प्रत्यक्षात् अ० जुओ 'प्रत्यक्षम्' प्रत्यक्षिन् वि० नजरे जोनाहं प्रत्यक्षीकृ ८ उ० नजरे जोवं प्रत्यक्षे अ० —नी नजर सामे प्रत्यक्षेण अ० जुओ 'प्रत्यक्षम्' प्रत्यक्**स्रोतस्** वि० पश्चिम तरफ वहेतुं अत्यगात्मन् पुं० जीवात्मा कि कहेलूं प्रत्यग्र वि० नवुं; ताजुं(२)वारंवार करेलुं प्रत्यग्रव्यस् वि० जुवान; तरुण प्रत्यच् वि० –तरफ वळेलुं; अंदरनी बाजु बळेलुं (२)—नी पाछळ होय तेवुं (३) पछीनुं (४) पाछुं वळेलुं के वाळेलुं (५) पश्चिम तरफनुं (६) अंदरतुं (७) --नी समान (८) पुं० जीवात्मा (९) भविष्यकाळ **प्रत्यनंतर** वि० पश्सेनुं; नजीकनुं(२) वारसदार तरीके नजीकनुं (३) तरत जिनजीक पछीतुं (कममां) प्रत्यनंतरम् अ० तरत ज पछी; तरत

प्रत्यनीक वि० विरोधी; ऊलटुं(२) पुं० शत्रु (३)न० दुश्मननुं सैन्य (४) करेलो अपकार दुश्मनावट **प्रत्यपकार** पुं• अपकारना बंदलामां प्रत्यब्दम् अ०दर वर्षे आववं प्रत्यभिज्ञा ९ उ० ओळखवुं (२) भानमां प्रत्यभिज्ञा स्त्री० ओळखवूं ते प्रत्यभिज्ञान न० ओळखाण;ओळखवुं ते (२)ओळखवा माटे आपेली निशानी **प्रत्यभिनंद् १** प० साम् अभिनंदन करवुं (२) स्वागत करवुं **प्रत्यभिभाषिन्** वि० संबोधतुं; –ने कहेतुं प्रत्यभियोग पुं सामो आरोप **प्रत्यभिवद् -**प्रेरक० सामु अभिवादन करवुं; सामो नमस्कार करदो प्रत्यभिवादन न० वंदन करनारने सामुं वंदन करवुं के आशीर्वाद आपवो ते प्रत्यभ्युत्थान न० सत्कार करवा सामा ऊभा थवूं ते प्रत्यय पुं प्रतीति; खातरी (२) विश्वास; श्रद्धा (३) अभिप्राय; ख्याल (४) ज्ञान; वेदना; अनुभव (५) कारण; कार्यनो हेतु (६) रूपो के साधित शब्दो बनाववा शब्दने अते लगाडाय छेते (न्या०) प्रत्ययकारक, प्रत्ययकारिन् वि० खातरी के विश्वास उपजादनारु प्रत्याचित वि० जवाबमां सामो नमस्कार जेने कर्यो होय तेवुं **प्रत्यर्थ् १०** आ० पडकारव् प्रत्यर्थं वि० उपयोगी; कार्यसाधक (२) न० जवाब(३)दुश्मनावट प्रत्यर्थम् अ० दरेक पदार्थनी बाबतमां (२) दरेक दाखलामां प्रत्यिक पुं• दुश्मन; विरोधी प्रत्यियन् वि० विरोधी; प्रतिवादी (२) पु॰ शत्रु (३)हरीफ (४) आरोपी थियेल् (५)विष्नः **प्रत्यिभृत** वि० नडतर के डखलरूप **प्रत्यपंच** न० पाछुं आपवुं ते तिव् प्रस्थपित वि० जेणे पाछ सोंपी दीघ होय प्रस्थवमञ्जं (-वं) पुं० सलाह; मसलत (२)चितन ; ध्यान(३)धैर्य ; सहनशीलता प्रत्यवर वि० श्रेष्ठ नहि तेवुं; हलकुं **प्रत्यवसित** वि० खाईने केपीने परवारेलुं (२)जूनी (खोटी) टेवमां पाछुं बळेलुं अस्यवस्कंद पुं०, न० अचानक हमलो प्रत्यवस्था (प्रति+अव+स्था) १ आ० [प्रत्यवतिष्ठते]सामनो के विरोघ करवो (२) जुदा पडीने ऊभवुं **प्रत्यवहार** पुं० संहार; प्रलय (२) पाछ खेंची लेब ते प्रत्यवाय पु० विघ्न; जोखम (२) ऊलटो मार्ग (३) पाप; दोष (४) निराशा (५)सत् वस्तुनुं अदृश्य थवुं ते प्रति + अव + ईक्ष्) १ आ० सपास करवी; तपासब् प्रत्यवेक्षण न०, प्रत्यवेक्षा स्त्री० लक्ष राखवं ते; काळजी राखवी ते प्रत्यवेक्षित् पुं० निरीक्षक प्रस्यस्त वि० फेंकी दीघेलुं; तजा दीघेलुं अंत **प्रत्यस्तमय पुं**० आयमवुं ते (सूर्यनुं)(२) **प्रत्यहम्** अ० दररोज । अवयव प्रत्यंग न० उपांग (२) दरेक अंग के प्रत्यंगम् अ० दरेक अंगे; अंगोपांगे प्रत्यंच् वि० जुओ 'प्रत्यच्' प्रत्यंत वि० समीपनुं (२) पुं० सरहद (३) सरहदनो प्रदेश प्रत्यंशम् अ० खभा उपर; समे प्रत्याकित वि० गणतरी करेलुं (२) वच्चे दाखल करेल् प्रत्याकांक्स् (प्रति+आ+कांक्) १ व्या० आशा के अपेक्षा राखवी प्रत्याख्या (प्रति + आ + ख्या) २ प० ना पाडवी; नकारवं (२) मना करवी (३)पाछळ पाडी देवुं; चडियाता थवुं

प्रत्यामित प्रस्याख्यात वि० नकारेलुं (२) मनाई करेलुं (३) रद करेलुं (४) धकेली काढेलुं (५) पाछळ पाडी दीधेलुं प्रत्याख्यान न० नकारवं ते;अस्वीकार (२)ठपको (३) खंडन प्रत्यागम् (प्रति+आ+गम्) १ ४० [प्रत्यागच्छति] पाछुं फरवुं (२) भानमां आवर्ष प्रत्यागम पुं**०, प्रत्यागमन** न० फरवृते (२) आबी पहोंचवृते प्रत्याघात पुं० सामो प्रहार के धक्को प्रत्यादान न० पाछूं लेवुं ते(२)पाछुं हाय उपर लेवुं ते (३) पुनरावर्तन प्रस्यादिश् ६ प० छांडवुं; त्यजवुं (२) पाछु काढवुं (३) नकारवुं; अस्वी-कार करवो (४) ढांकी देवुं; पाछुं पाडी देवुं (५) बोलाववुं(६)आज्ञा करवी (७) चेतवणी आपवी प्रत्यादिष्ट वि॰ जणावेलुं (२) हुकम करेलू (३)अस्वीकार करेलुं; छांडेलुं; दूर करेलुं (४) झांखुं के पाछुं पाडी दीवेल् (५) चेतवेलुं **प्रत्यादेश** पुं**ृह**कम (२) माहिती; जाहेरात (३)अस्वीकार ; नकारबुं ते ; निराकरण (४) झांखुं के पाछुं पाडो देनार (५) चेतवणी (अलौकिक) (६) ठपको (७) बारबुं ते; निवार**ण प्रत्यानयन्** न० पाछ् मेळवव् के लावव् ते प्रत्यायत्ति स्त्री० पाछुं मळवुं के फरवुं ते(२)वैराग्य [बुद्धिवाळु **प्रत्यापन्न** वि० पाछुं मळेलुं(२)विपरीत प्रत्यायन न० जुओ 'प्रत्यायना' (२) परणबुंते; घेर स्नाबबुंते (बहुने) (३) आधमव् ते (सूर्यन्) प्रत्यायना स्त्री० विश्वास पेदा करवो ते; प्रतीति कराववी ते (२) सम-जाववुं ते (३) साबित करवुं ते **प्रत्यायित** वि० खातरी य**ई** होय ते ु

प्रस्पावर्तन न० पाछा फरवुं ते प्रत्याचा स्त्री० आशा; विश्वास प्रत्याश्वस्त वि० सांत्वन पामेलुं (२) फरी ताजुं थयेलुं **प्रत्याश्वासन** न० आश्वासन; दिलासो प्रत्यासत्ति स्त्री० निकटता (२) निकट संबंध (३) खुशमिजाजी प्रत्यासम्ब वि० नजीकनुं; पासेनुं (२) पस्तावो करतुं एक ब्यूहरचना प्रत्यासर पुं० सैन्यनो पाछलो भाग (२) प्रत्यासंग पुं ० संबंध ; संसर्ग **प्रत्यासार पुं**० जुओ 'प्रत्यासर' प्रत्याहत वि० पाछुं हटावेलुं प्रत्याहरण न० पाछुं मेळववुं ते (२) पाछुं खेंची लेबुं ते (३) निग्रह करवो ते प्रत्याहार पुं० पाछा हठवुं ते (२) पकडी राखवुं ते ; निग्रह करवो ते (३) प्रलय (४) संकोच; संक्षेप प्रत्याह् १ प० पाछुं लई लेवुं; पाछुं मेळवव् (२) पाछुं खेंचव् (३)उच्चा-रवुं (४) कहेवुं; जणाववुं (५) फरीथी गोठववु प्रत्याहृत वि॰ पाछुं मेळवेलुं(२)निग्रह प्रत्युक्त वि० जवादमां कहेलुं प्रत्युज्जीव १ प० सजीवन थर्वु प्रत्युज्जीवन न० सजीवन थवं ते (२) सजीवन करवुं ते प्रत्युत अ० ऊलटुं; सामेथी प्रत्युत्कातजी**वित** वि० मरवा पडेल् प्रत्युत्तर न० जवाब प्रत्युत्थान न० सामे थवं ते (२) युद्धनी तेयारी करवी ते (३) कोई आवे त्यारे मानमां सामा ऊभा थवुं ते प्रत्युत्पन्न वि० फरी उत्पन्न थयेलुं (२) तत्पर; तैयार (३) हाजर प्रत्युत्पन्नबृद्धि, प्रत्युत्पन्नमति वि० समय-सूचकतावाळुं; योग्य काळे योग्य कर-वानुं जेने झट सूझी आवे तेवुं(२) स्त्री० समयसूचकता;तरतबुद्धि

प्रत्युद्गत वि० सत्कार करवा माटे साम् क्रभ् थयेल् (२) साम् थयेल् **प्रत्युव्गति स्त्रो० स**त्कार माटे बेठा होय त्यांथी ऊभा चवुं ते प्रत्युव्सम् १ ५० [प्रत्युद्गच्छति] सत्कार करवा माटे साम् ऊभुं थवुं (२) तरफ धसबुं के कूच करवी प्रत्युद्गम पुं०, प्रस्युद्गमन न० जुओ 'प्रत्युद्गति ' **प्रत्युद्गमनीय** न० धोयेला कपडांनी **प्रत्युद्यम** पुं० प्रतीकार के सामनो कर-वानो प्रयत्न **प्रत्युद्यात** वि० जुओ 'प्रत्युद्गत' प्रत्युपकार पु० उपकारनो बदलो वाळतो ते (२) परस्पर मदद **प्रत्युपकृ ८ उ० उ**पकारनो बदलो बाळवो; सामो उपकार करवो(२) भरपाई करवुं | बाळवी ते प्रत्युपिकया स्त्री० उपकारनी बदली **प्रत्युपवेश** पुं े सामी उपदेश प्रत्युपपन्न वि० जुओ 'प्रत्युत्पन्न' प्रस्युपमान न० उपमानतुं पण उपमान होवं ते (२) आदर्श, जेना उपरथी बोजी वस्तुओनी गुणवत्ता मपाय ते प्रत्युपवेश पुं ०, प्रत्युपवेशन न ० नमाववा घेरो धालवो ते (२) सामे ऊभवुं ते **प्रत्युपस्थित** वि० पासे आवेलुं; हाजर थयेलुं (२) सामु थयेलुं **प्रत्युपहार** पुं० पाछुं सोंपवृ ते; पाछुं आपवंते (२) भेट प्रत्युप्त वि० जडी दीधेलुं; सज्जड चोंटा-डेलु – सोसेलु (२) वावेलुं प्रस्यूष पु०, न०, प्रत्यूषस् न० प्रात:-प्रत्यूह १ उ० विरोध के सामनो करवो (२) डखल करवी; नडतर करवी (३) इन्कार करवी (४) चडियाता थवुं (५) भेट चडाववी **प्रत्युह** पुं० विंघ्न; नडतर

प्रत्येक वि० दरेक प्रत्येकम् अ० दरेकमां; दरेकने (२) एक वखते एक; जुदुं जुदुं प्रथ्१ आ० वधवुं (२) फेलावुं (३) प्रसिद्ध थवुं (४) प्रगट थवुं (५) **१०** उ० फेलाववुं; जाहेर करवुं(६) प्रगट करवुं ; दशविवुं (७) विस्तृत करवुं प्रथम वि० पहेलुं; मुख्य; प्रधान (२) श्रेष्ठ; उत्तम (३) सौथी पहेलांनु; सौथी प्राचीन (४) पहेलांनुं; अगाउनुं प्रथमगिरि पुं० उदयाचल प्रथमतस् अ० पहेलेथी; प्रथमथी (२) तरत ज; एकदम (३) अगाउ; ⊸नो पसंदगीमां प्रथम होय तेम प्रथमदिवस पुं ० पहेलो दिवस प्रथमम् अ० पहेली वार (२) अगऊ ; पहेलां (३) **ए**कदम; तरत ज (४) ताजंतरमां **प्रथमवयस्** न० पहेली अवस्थाः; जुवानी प्रथमा स्त्रो० पहेली विभन्ति (व्या०) **प्रथमाश्रम** पुं० ब्रह्मचर्याश्रम (चार आश्रममां पहेलो) **प्रथमेतर** वि० बीजूं **प्रथमोदित** वि० प्रथम कहेलुं प्रधा स्त्री० प्रसिद्धि; स्याति प्रथित ('प्रथ्' नुं भू० कृ०) विस्तारेलु; वधेलु;पसरेलु (२) जाहेर थयेलुं; प्रसिद्ध (३) दर्शावेलुं; प्रगट प्रथिमन् पुं ० विस्तारः, विशाळता प्रथिष्ठ वि० सौथी वधु विशाळ ('पृथु 'नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) प्रथीयस् वि० (बेमा) वधु विशाळ; मोटुं ('पृथु'नुं तुलनात्मक रूप) (२) वध् विख्यात [(उदा० 'मुखप्रद') प्रद वि० (समासने छेडे) -आपनार् प्रदक्षिण वि० जमणी बाजु आवेलुं; जमणी बाजु जतुं (२) आदरयुक्त (३)शुभ; शुभ शुकनरूप(४)कुशळ

(५) अनुकूळ (६) पुं०, न० प्रदक्षिणा प्रदक्षिणा करवी ते प्रवक्षिणक्रिया स्त्री०, प्रवक्षिणन न० प्रदक्षिणम् अ० डाबीधी जमणी बाजुए (२) जमणी बाजुए (पोतानी जमणी बाजुं ते तरफ रहे ते रीते) (३)दक्षिण तरफ(४)सौ सारां वानां होय तेम प्रवक्षिणा स्त्री० (पोतानी जमणी बाजु ते तरफ रहे ते प्रमाणे)आसपास गोळ फरवुं ते (पूज्यभाव दर्शाववा) प्रवक्षिणाचिस् वि० जमणो बाजु ज्वाळा-ओ नीक्ळती होय ते**ब**ं [बाजु बळेलुं प्रदक्षिणावर्त, प्रदक्षिणावृत्क वि० जमणी प्रदक्षिणीकु ८ उ० प्रदक्षिणा करवी प्रकाध वि० बळी गयेल् प्रदर पुं० फाडवुं – चोरवुंते (२) फाट; चीरो (३) लश्करने वेरविखेर करवुं ते(४)बाण(५)स्त्रीओनो **ए**क रोग प्रदर्शक वि० बतावनारुं; प्रगट करनारुं (२) पुं० आचार्य; पेगंबर **प्रदर्शन** न० देखाव (२) प्रगट करवुं ते; देखाडवं ते (३) शोखववं ते; समजाववुं ते (४) दृष्टांत प्रदा ३ ७० आपवुं; अर्पण करवुं (२) शीखवबुं (३) परणावबुं (४) चूकवो देवुं (ऋण) प्रदान न० आपवुंते; दान (२) लग्न (३) शीखवबुँते (४) बिक्षस; भेट (५)खंडन(६)परोणो प्रदाय न०भेट; बक्षिस प्रदायक, प्रदायिन् वि० आपनारुं प्रदिपु० बक्षिस; भेट प्रदिग्ध वि० खरडायेलुं;लेपायेलुं प्रदिश् ६ ५० बतावयुं; दर्शाववुं(२) कहेबु; जणाववुं (३) आपवुं (४) हुकम करवो ; प्रेरवुं (५) सलाह आपवी प्रविश् स्त्रो० वे दिशा वच्चेनी खुणी **प्रदोप** पुं० दोवो (२)--नुं विवरण करतो ग्रंथ (ग्रंथना नामने छेडे)

प्रदीपन न० सळगावबुं ते (२) उजाळबुं ते (३) उदकेरवुं ते प्रदोप्त वि० सळगेलु; प्रकाशित (२) ऊंचुं करेलुं; फेलायेलुं(३)उक्केरायेलुं प्रदुष् ४ प० दूषित थवुं; बगडवुं; भ्रष्ट थवं (२)पाप के अपराध करवो –प्रेरक ६ भ्रष्ट करवुं (२) दोष काढवो **प्रदुष्ट** वि० भ्रष्ट थयेलुं (२) दुष्ट; पापी (३) स्वच्छंदी करवुते प्रदूषण न० भ्रष्ट करवुं ते; अपवित्र प्रवृश् १ प० [प्रपश्यति] जोवु ; निहाळवु (२) विचारवु; मानवुं **प्रदेय** वि० आपवानुं (२) जणावदानुं (३)परणाववानुं (४)पुं० भेट प्रदेश पुं० दर्शाववुं के सूचववुं ते (२) देश; विभाग; प्रांत (३) स्थान; स्थळ (४)अंगूठो अने तर्जनी फेलावता जेटलुं अंतर याय ते आंगळी - तर्जनी प्रदेशनी, प्रवेशिनी स्त्री० अंगुठा पासेनी प्रदेष्ट्र पु० न्यायाधीश प्रदोष वि० दुराचारी; भ्रष्ट (२) पुं० दोष; पाप; गुनो (३) बळवो; अंधा-धूंधी (४) रातनी शरूआतनी भाग **प्रदोषक** पुं० सांज प्रदोषतिमिर न० समीसांजनुं अंधार्ध प्रद्युम्न पुं अधिकृष्णनी पुत्र (कामदैवनी अवतार मनाय छे) प्रद्योत पुं० प्रकाश; तेज (२) किरण (३)उज्जयिनीनो प्रसिद्ध राजा प्रदूरप० नासी जवु; दोडी जवु (२) सामे वेगथी घसवु (३) हुमली करवी प्रद्रेक् १ आ० हणहणवुं **प्रद्वार्** स्त्री०, प्रद्वार न० बारणा के दरवाजा आगळनो भाग प्रद्रिष् २ उ० द्वेष करवो प्रदेख पुं०, प्रदेखण न० द्वेष ; धिक्कार प्रधन न० युद्ध; लडाई(२) विनाश प्रथनाघातक वि० लडाई ऊभी करनारुं प्रधनांगण न० रणक्षेत्र

प्रथर्ष पुं० बळात्कार;हुमलो **प्रथर्षक** पुं० हुमलो करनार(२)पजवनार प्रथवंण त०, प्रथवंणा स्त्री० हुमलो; बळात्कार(२)अपमान;अनादर प्रवर्षित वि० हुमलो करायेलुं; पराभव पमाडेलुं (२)तुमाखीवाळुं प्रवान वि० मुरुष; श्रेष्ठ (२)पुँ०, न० राजानो मुख्य मंत्री; वजीर (३) उमराव (४) महावत (५) सेनाध्यक्ष (६) न० अगत्यनी मुख्य वस्तु (७) सत्त्व-रज-तम ए त्रण गुणोनी साम्या-वस्थारूप मूळ प्रकृति; जगतनुं मुख्य भौतिक कारण (सांरूय०) प्रषानेन अ० मुख्यपणे प्रधारणा स्त्री० एक वस्तु उपर मनने स्थिर करवुंते प्रधाव् १ उ० आगळ दोडवुं; दोडी जवुं (२) प्रसरी जवुं (३) धोवुं; साफ करवुं(४)लूछी नाखवुं प्रिष पुं० पैडानो गोळ घेरावो प्रभो वि॰ उत्तम बुद्धिवाळुं (२) स्त्री ॰ उत्तम बुद्धि **प्रबृपित** वि॰ आपेलुं (२) तपावेलुं (३) प्रगटावेलुं; सळगावेलुं (४)संतापेलुं **प्रधृ १०** उ० मूकवुं; स्थिर करवुं (२) निरधारवुं; नक्की करवुं प्रयुद्ध ५ प० हुमलो करवो (२) पजववुं (३)ताबे करवुं ; हराववुं *--*प्रेरक∘ हुमलो करवो (२) बळात्कार करवो (३) बरबाद करवुं प्रथमा १ प० [प्रथमति] फूंकवुं (२) नाश करवी प्रध्यान न० ऊंडुं ध्यान;चितन प्रथ्ये १ उ० व्यान धरवुं; चितववुं (२) विचारी काढवुं;योजवुं प्रध्वस्त वि० पूरेपूरुं नष्ट प्रथ्वंस् १ आ० ध्वंस थवो; नाश पामव् **प्रध्वंस** पुं० विनाश **प्रध्वंसिन्** वि० नाशवंत

प्रनष्ट वि॰ नाश पामेलुं (२) खोवाई गयेलुं (३) नासी गयेलुं (४) देखातुं वंध थयेलुं प्रनृत् ४ ५० नाचवुं –प्रेरक० नचाववुं; कंपाववुं **प्रनृत्त** वि० नाचतुं (२) न० नृत्य प्रपक्ष पुं० पांखनो छेडानो भाग (जेमके, लश्करनी) प्रपतन न ॰ अडबुंते (२) --मां पडबुंते ; नीचे पडवुंते (३) नीचे ऊतरवुं ते (४) विनाश; मृत्यु (५) सीवी कराड (६) हुमलो प्रपद् ४ आ० प्रवेशवुं; डग भरवुं (२) पासे जबुं; पहोंचबुं (३) शरणे जबुं (४)-नी स्थिति पामवी (५)पामबुं; मेळववुं(६)—नी प्रत्ये वर्तवुं(७) कबूल राखर्वु प्रपन्न वि० आवी पहोंचेलुं, जई पहोंचेलुं (२) स्वीकारेलुं; माथे लीघेलुं (३) शरणुं लीघुं होय तेवुं (४) —ने वळेलुं (५) पामेलु; युक्त प्रपलायन न० नासी के भागी जबुं ते **प्रपलायित** वि० नासी गयेलुं (२) भगाडी काढेलुं;हरावेलुं प्रयंच प्० देखाव ; देखाड (२) विस्तार (३) विवरण (४) वैविष्य; विपुलता (५) दृश्य जगत; संसार (६) कपट;] কুহাক্ত प्रपंचचतुर वि० जुदां जुदां रूप धरवामां प्रपंचवचन न० विस्तारवाळी वाणी प्रपास्त्री० परब (२) मृत्वो ; टांकुं (३) हवाडो (ढोरने पाणी पीवानो) **प्रपाठक पु**० पाठ(२) ग्रंथविभाग प्रपात पुं० विदाय थवुं ते (२) पडवुं ते (३) अचानक करेलो हुमलो (४) पाणीनो धोध (५) किनारो (६) सीधी कराड (७) स्खलन प्रपान न० पीवूं ते स्त्री **प्रपापालिका** स्त्री० पर**बे** पाणी पानारी

प्रपितामह पुं० पिताना दादा (२) बह्याना पर्ण पिता - परमात्मा **प्रपोड् १०** उ० दबावबुं; निचोबवुं(२) त्रास गुजारवो(३)निग्रह करवो प्रपूरण न० भरी काढवुते; पूर्ण करवुं ते (२) अंदर भरवुं ते (३) संतोषवुं ते (४) –साथे जोडवुं ते (५) वाळवुं ते (धनुष्यने) **प्रपृ९** प० भरी काढवु; पूर्ण करवुं –कर्मणि० [प्रपूर्यते] भरी कढावुं; पूर्ण करावुं **प्रयोत्र** पुं० पौत्रनो पुत्र प्रकुल्त वि० खीलेलुं; विकसेलुं **प्रफुल्ल** वि० पूरेपूर्ष खीलेलुं (२) पहोळुं थयेलुं (जेम के आंख) (३) स्मित करतुं; आनंदी (४) चळकतुं प्रबर्हवि० उत्तम; श्रेष्ठ **प्रबल** वि० जोरावर; बलिष्ठ (२) अतिशय; तीब्र ; मोटुं (३) अगत्यनुं प्रबलम् अ० अतिशय; खूब होय तेम **प्रबंध** पुं० बंधन ; गांठ (२) अखंडपणुं ; सातत्य (३) लांबो - चालु संवाद (४) ग्रंथ; साहित्यरचना (५) गोठवण प्रबाष् १ आ० पीडवुं; जुलम गुजारवो (२) दबाववुं; हांकी काढवुं (३) गबडावी पाडवुं; नाश करवो प्रबुद्ध वि० जागेलुं; जगाडेलुं (२) डाह्यू; जाणकार (३) खीलेलु प्रवृष् १ प०, ४ आ० जागवुं (२) स्तीलवु (३) बोध थवो; जाणवुं –प्रेरक० जगाडवुं(२)जणाववुं(३) खोलववुं (४)शीखबबुं ; समजावबुं प्रबोध पु० जागवुं ते (२) खीलवुं ते (३)जागरूकता ; सावधानी ; सावचेती (४) ज्ञान; तत्त्वज्ञान प्रबोधन न० जागवुंते (२) जगाडवुंते (३) भानमां आववुंते (४) ज्ञान; डहापण (५) शिक्षण; सस्त्राह

प्रज़ू २ प० जाहेर करवु (२) बूम पाडवी (३) कहेवु; बोलवु (४) प्रशंसा करवी (५) शीखवर्बु प्रभग्न वि० कचरी नाखेलुं;हरावेलुं प्रभद्रक वि० अत्यंत सुंदर अभव पुं० उत्पत्तिस्थान; मूळ (२) जन्म; उत्पत्ति (३) नदीनुं मूळ (४) उत्पन्न करनार कारण (५) समृद्धि (६) —मांथी जन्मेलुं (समासने अंते) **प्रभवितृ** पुं० स्वामी; नियंता प्रभविष्णु वि० समर्थः, शक्तिमान (२) श्रेष्ठ (३) पुं•स्वामी; मालिक **प्रभंजन** पुं० तोफानी पवन; वंटोळ प्रभा २ प० देखावुं (२) प्रकाशवुं (३) सवार थवी (४) प्रकाशित करवु **प्रभा** स्त्री० दीप्ति;तेज(२)किरण **प्रभाकर** पुं० सूर्य (२) पद्मराग मणि प्रभात वि० तेजवाळुं थवा लागेलुं (२) न० परोढ; सवार **प्रभातकल्प, प्रभातप्राय** वि० सवार थवा प्रभातरल वि० देदीप्यमान प्रभापल्लवित वि० कांति वडे देदीप्यमान प्रभाप्रभु पुं० सूर्य प्रभाभिद् वि० देदीप्यमान **प्रभामंडल** न० तेजन् कूंडाळुं प्रभालेपिन् वि० प्रकाशित; तेजस्वी प्रभाव पुं० प्रकाश; दीप्ति (२) प्रताप; तेज (३) बळ; पराऋम; ताकात प्रभावन वि० प्रभाववाळु; ताकातवान (२) उत्पादक (३) प्रगट करनारुं (४) पुं • रचियता; विधाता प्रभाष् १ आ० बोलवुं; संबोधवुं (२) जाहेर करवुं (३) प्रगट करवुं (४) समजाव (५) बकव् प्रभाषित वि० कहेलु; जाहेर करेलुं प्रभास् १ आ० प्रकाशवु (२) देखावुं –प्रेरक० प्रकाशित करवुं प्रभास पु० प्रकाश; कांति

प्रभास्यर वि० प्रकाशित; तेजस्वी प्रिमन्न वि० फाडेलुं; फाटेलुं (२) टुकडा थयेलुं (३) कापी नाखेलुं; जुदुं पाडेलुं (४) खीलतुं; ऊषडतुं (५) मदमां आवेलुं (६) वीक्षेलुं (७) पु० मद झरतो हाथी प्रिमेन्नकरट वि० (गंडस्थळ फाटचा होय तेवुं) मद झरतुं आंजण प्रभिन्नांजन न० (तेल मिश्रित) एक प्रभु वि० समर्थं; शक्तिशाळी (२) समोवडियुं; सामनो करी शके तेवुं (३) पुं० स्वामी;मालिक;हाकेम प्रभुता स्त्री० स्वामीपणुः; सत्ताः प्रभाव (२) मालकी प्रभू १ प० उत्पन्न यवु(२)होवुं;धवुं (३) देखावुं (४) वधवुं (५) समर्थ थवुं; शक्तिमान थवुं; पोतानी ताकात बताववी (६) –ना उपर काब् होवो; –ने दबाववुं (७) –नुं बराबरियुं थवुं (८) पूरतुं थवुं; समावी शकवुं(९) –मां समावु िधणुः; पुष्कळ **प्रभू**त वि० –मांथी उत्पन्न थयेलुं (२) प्रभूतता स्त्री०, प्रभूतत्व न० पुष्कळता प्रभूतवयस् वि० घरडुं) वृद्ध प्रमृति स्त्री० आदि; शरूआत (आ अर्थमां बहुत्रीहि समासने अंते वपराय छ ; उदा ० इंद्रश्रभृतयः = इंद्र वगेरे) **प्रभृति** अ० --थी मांडीने प्रभेद पुं० फाडवुं – चीरवुं ते (२)भाग पाडवाते (३) मद झरवो ते (४) तफावत; भिन्नता (५) नदीनुं मूळ **प्रभव्ट** वि० पड़ी गयेलुं (२) न० वाळनी लटमां लटकावेली फूलमाळा प्रभंश् १ आ०, ४ प० पडी जब्; गबडी पडवुं (२) –ना विनाना थवुं (३) -मांथी नासी छूटवुं प्रमत्त वि॰ मदमत्तः; पीधेलुं (२) गांडुं (३) बेदरकार; प्रमादी (४) भूछ करनार्वः कर्तव्यभ्रष्ट

प्रमय् १, ९ प० वलोववुं (२) अत्यंत पीडवुं; त्रास आपवो (३) कापवुं; चीरी नाखवुं (४) बरबाद करवुं(५) मारी नाखबु [एक वर्ग प्रमय पुं घोडो (२)शिवना पार्षदोनो प्रमथन न० पीडवं ते (२) कचरवं ते (३) वलोववुं ते (४) मारी नाखवुं ते प्रमित वि॰ पीडेलुं; रोळेलुं (२) मारी नाखेलुं (३) बराबर वलोवेलुं (४) न० पाणी न उमेरेली छाश; मठो प्रमिथन् वि० नाश करनारुं प्रमद् ४ प० [प्रमाद्यति] मदमत्त थवुं (२) प्रमाद करवो; बेदरकार रहेवुं (३) भूल करवी; अवळे मार्गे जर्ब् (४) आळस करवुं; समय वेडफवो (५) हर्षित थवुं प्रमद वि० पीघेल; उन्मत्त (२)छाकटुं; भ्रष्ट (३) पु० हर्ष;आनंद प्रमदवन न० राजाना अंतःपुरनी स्त्री-ओने कीडा करवानो बगीचो – उपवन प्रमदा स्त्री० सुंदर युवान स्त्री (२) पत्नी (३) स्त्री प्रमदाजन पुं० युवती (२)स्त्रीजाति प्रमदाबन न० जुओ 'प्रमदवन' प्रमनस् वि० हर्षित प्रमन्यु वि० खीजवायेलुं; गुस्से थयेलुं (२) सिन्न ; दिलगीर वासनारं प्रमदेन वि० मर्दन करनारु; कचरी प्रमंख् १, ९ प० जुओ 'प्रमय्' प्रमा २ प०, ३ आ० मापवु (२) बना-ववुं; रचवुं (३) साबित करवुं (४) गोठवब् (५) जाणवुं; समजव् (६) अटकळ करवी प्रमाण न० माप (२)कद (३) मापवानोः गज (४) पुरावो (५) साचा-खोटानी परीक्षा के निर्णय (६) निश्चित ज्ञान (७) तेनुं साधन (प्रत्यक्ष, अनुमान वगेरे प्रमाणो) कदन् प्रमाणक वि० (समासने छेडे) मापनुं;

प्रमाणपुरुष प्ं० छेवटनो निर्णय आपनार **प्रमाणभूत** वि०प्रमाणरूप ; कबूल राखवुं पडे तेवुं; विश्वासपात्र प्रमाणयति प० (प्रमाणभूत गणवुं, प्रमाणरूपे घरवुं;साबित करवुं) प्रमाणशास्त्र न० प्रमाणभूत शास्त्र (२) तर्कशास्त्र ; 'लॉजिक ' प्रमाणसूत्र न० मापवानी दोरी प्रमाणाधिक वि० हंमेश करतां वधु; वधारे पडतुं [-रूप (२) प्रमाणभूत प्रसाणिक वि० प्रमाण, माप के धोरण प्रमाणीकृ ८ उ० प्रमाणभूत मानवुं (२) विश्वास करवो (३) नियत करवुं; फाळे नाखवुं (४) मानवुं; अनुसरवुं (५) साबित करवुं (६) सलाह के परवानगी मागवी (७)मंजूर राखवुं; गणतरीमां छेवुं प्रमातामह पुं० माताना पिताना दादा प्रमाय पुं० अत्यंत पोडवुं ते (२) वलोववुं ते (३) वधः; हत्याः; विनाश (४)बळात्कार; अत्याचार प्रमायिन् वि०पीडतुं; त्रास आपतुं (२) नाश के वध करतुं (३) क्षुब्ध करतुं; वलोवी नासतु (४) नीचे तोडी पाडतुं (५)कापी∵नाखतुं प्रमाद पुं० बेदरकारी; दुर्लक्ष (२) मदमत्तता; छाकटापणुं (३)बेहोशी; मूर्छा (४) गांडपण (५) भूल; गफलत (६) अकस्मात ; आफत प्रमादिन् वि० गाफेल; बेदरकार (२) ळाकटुं ; पो**घेलुं (३)** गांडुं प्रमापण न० आकृति (२)वधः; कतल प्रमित वि० मापेलुं (२) मयादित; थोडुं (३) जाणेलुं; समजेलुं (४) साबित करेलुं (५) (समासने अंते) अमुक [साचुं ज्ञान मापन् प्रमिति स्त्री० माप (२) निश्चित के प्रमीत वि॰ मरण पामेलु (२) यज्ञमां होमेलूं(३) **पुं**० य**ज्ञ**मां **व**धेरेलुं पशु

प्रमीला स्त्री० घेन;तंद्रा प्रमीलित वि॰ मींचेली भांखवाळु **त्रमुल** वि० सामे मोंवाळुं (२) मुख्य; आगेवान; प्रथम (३) संमाननीय (४) (समासने अंते) -आगेवान होय तेयुं; साथे होय तेयुं (उदा० दासुकि-प्रमुखाः) अागळ प्रमुखतस्, प्रमुखे अ० -नी सामे; -नी प्रमुग्ध वि० मूर्छित (२) अत्यंत सुंदर प्रमुच् ६ प० मुक्त करवु (२) फेंकवुं (३) बहार काढवुं; मोकलवुं (४) छोडवुं (गांठ के बंघन) (५) काढी मूकवुं (६) आपवुं **प्रमुद् १** आ० खूद हिषित थव्ं –प्रेरक० खुश करवुं प्रमुद् स्त्री० अत्यंत हर्ष **प्रमुदिस** वि० अत्यंत आनंद पामेलुं **प्रमुष् ९** प० दूर करवुं; झांखुं पाडवुं (२)लूंटी जवुं;चोरी **जवुं प्रमुखित** वि॰ चोरायेलुं(२)दूर करा-येलुं; लई लेवायेलुं मुर्ख प्रमूढ वि० मूढ बनेलु; मोह पामेलु (२) **प्रमृज्**२ प० लूळी नाखवुं; साफ करवुं (२) दूर करवुं; –विनाना थवुं (३) प्रायश्चित्त करवुं (४)पंपाळवुं प्रमुख्ट वि० साफ करेलुं; लूखेलुं (२) मांजेलुं; ऊजळुं प्रमेष वि० मापी शकाय तेटलुं; मर्यादित (२) साबित करवा योग्य (३) न० प्रमाणथी साबित करवानुं ते (४) निश्चित ज्ञान प्रमेह पुं० ते नामनो रोग - परिमयी **प्रमो**द पुं० आनंद; हर्ष प्रमोह पुं॰ मोह; मूर्छा प्रम्लान वि० करमायेलुं (२) मलिन; **अम्लै १** प० करमावुं (२) उदास बनवुं (३) थाकी जवुं(४) मेला थवुं प्रयत् १ आ० प्रयत्न करवी

प्रयत वि॰ संयमी; निम्नही; तपस्वी (२) उद्यमी ; यत्नवान **प्रयतन न० प्रय**तन; उद्यम प्रयतात्मन् वि॰ संयमी; तपस्वी (२) प्रयत्नशील ; उच्चभी **प्रयत्न पुं**० प्रयास; महेनत; उद्यम (२) श्रम; कष्ट; मुश्केली (३) भारे काळजी (४) प्रवृत्ति प्रयत्नतः, प्रयत्नात् अ० महा महेनते; खंतथी (२)भाग्ये (३)खास प्रयम् १ प० [प्रयच्छति] आपवुं (२) निग्रह करवो (३) प्ररणाववुं (४) भरपाई करवुं (जेम के देवुं) प्रयस्त वि० वीखरायेलुं; आम तेम फॅकायेलुं (२) प्रयत्नशील प्रया २ प० जवुं; चालवुं (२) जवा नीकळव् (३) चाल्या जवु; विदाय थवुं (४) प्रगति करवी प्रयाग पु॰ गंगा-यमुनाना संगम उपरनु तीर्थस्यान (अलाहाबाद) प्रयाण न० जवा नीकळवुं ते; प्रस्थान (२) मुसाफरी (३) प्रगति; आगेकूच (४) शरूआत (५) मृत्यु (६) कोई पण प्राणीनो पृष्ठ-भाग **प्रयाणक** न० प्रस्थान; मुसाफरी प्रयाणकाल पुं० विदायवेळा प्रयाणभंग पुं पडाव (मुसाफरीमां) प्रयात वि० गयेलुं; विदाय थयेलुं (२) मृत (३) पुं० सवारी; चडाई (४) ऊंची भेखड; कराड (५) न० चाल-वानी रीत – **ढ**ब प्रयाम पुं० अछत;तंगी (पाणी, अनाज इ०नी) (२) निग्रह; संयमन (३) लंबाण ; लंबाई प्रयास पुं॰ यत्न (२) मुश्केली; महेनत प्रयुक्त वि० झूंसरीए जोडेलु (२) उप-योग करेलुं; वापरेलुं (३) नीमेलुं; (४) —मांथी जन्मतुं; परिणामरूप

(५) व्यानमग्न (६) प्रेरेलुं (७) गतिमान करेलुं प्रयुज् ७ आ० प्रयोग करवो; वापरवुं (२) निमण्क करवी (३) आपर्वु (४) हलाववुं; गतिमान करवुं (५) प्रेरवुं (६)आचर**वुं ; करवुं (७)** नाट्य-प्रयोग करवो (८) व्याजे घीरवुं (९) झ्सरीए जोडव्(१०)फेंकव् (अस्क) (११)योग्य होवुं; छाजवुं प्रयुत्त न० दश लाखनी संख्या प्रयुद्ध विव उग्रपणे लडनार्ए (२)न० युद्ध प्रयोक्त वि० उपयोग करनार्घ (२) अमल करनार्घ (३) प्रेरनार्घ (४) लेखक; कर्ता (५) नाट्यप्रयोग कर-नारं(६)फेंकनारं(बाण इ०) प्रयोग पुं० उपयोगः; वापर (२) फेंक्व् ते; प्रयोग करवो ते (३) अभिनय करवो ते; भजववुं हे (४) प्रत्यक्ष उपयोग, व्यवहार के अमल ('शास्त्र'थी **अलट्) (५)योजना;युक्ति** प्रयोगचतुर, प्रयोगनिपुण वि० (कळानो) प्रयोग करवामा कुशळ; अनुभवी प्रयोगातिशय पुं० नाटकनी प्रस्तावनानी एक प्रकार (सूत्रधार पोतानुं काम अधू हं राखी बीजा पात्रना प्रवेशनी सूचना करतो चाल्यो जाय ते) प्रयोगिन् वि० प्रयोग करनारुं (२) प्रयोजनवाळुं (३) प्रेरनारुं प्रयोजक वि० योजनार्ह, करनार्ह, प्रर-नारं, नीमनारं इ० (जुओ 'प्रयुज्') **प्रयोजन** म० उपयोग (२) जरूर; अगत्य (३) हेतु; लक्ष (४) उपाय; साधन (५) कारण ; सबब **प्ररुष् १ आ० खुब प्र**काशवु (२) गमवु प्ररुदित वि० खूब विलाप करतुं प्ररह १ प० ऊगवुं (२) रुझावुं (घा वगेरे) प्ररूढ वि० ऊगेलुं; विकसेलुं (२) जन्मेलुं; उत्पन्न थयेलुं (३) वर्षेलुं (४)खूब ऊंडु गयेलु (५)लांबु वधेलु

प्ररोचन वि० रुचि उपजावनार्ष (२)न० प्रेरव् ते (३) उदाहरण; दृष्टांत(४) लोभाववुं ते ; आकर्षवुं ते (५)प्रदर्शन **प्ररोह** पुं० अंकुर; फणगो (२) कुंपळ; पल्लव (३)वंशज (४)तेजनो अंकुर **प्ररूप् १** प० बोलवुं; वात करवी (२) बकबाट करवो (३) फावे तेम असंबद्ध बोलवु (४) विलाप करवो प्रलपन न० बोलवुं ते; वातचीत (२) बकवाट; प्रलाप (३) विलाप -प्रलिपत वि० बोलेलु; बबडेलु (२) न० बोलवु ते प्रलब्ध वि० छेतरायेलुं;ठगायेलुं प्रलभ् १ आ० छेतरबुं;ठगबुं **प्रलय** पुं० विनाश (२) (कल्पने अंते थतो) सृष्टिनो विनाश (३) मोटो विनाश; वरबादी (४) मृत्यु (५) मूर्छा प्रलंब वि॰ लांबुं; लबडतुं (२) ऊर्चुं; देखाई आवे तेवु (३) धीमुं; विलंब करत्(४)पुं० लटकतुं – लबडत् एव् ते (५) शाखा (६) कंटे पहेरेली लांबी माळा (७)कंठी (८)स्तन प्रलंबित वि० लटकत्; झूलत् प्रलंभ पुं० मेळववुं ते (२) छेतरवुं ते प्रलंभन न ॰ छेतरव ते (२) छेतरपिंडो ; दगाबाजी (३) महकरी प्रलाप पुं० वात; वातचीत (२) बक-वाट;बबडाट(३)विलाप प्रलापिम् वि० बोलतुं; बोलनारुं; वात करतुं(२) बबडाट फरतुं ; प्रलाप करतुं प्रली ४ आ० ओगळी जवुं(२) भळी जवु; समाई जवु (३) अदृश्य थवु (४) नाश पामवो प्रलीन वि० ओगळी गयेलुं (२) नाश पामेलु (३) मूछित (४) ढंकाई गयेलुं; छुपायेलुं (५) मृत प्रसुद् १ प० जमीन उपर आळोटवुं (२) क्षुब्ध थवुं; ऊछळवुं **प्रलुप्त** वि० लूंटायेलुं

प्रसुब्ध वि॰ छेतरनार (२) छेतरायेलुं; ललचायेलुं; भ्रष्ट थयेलुं प्रलुम् ४ प० लोभ करवो; लालसा करवी (२) ललचाववु (३) भ्रष्ट करवुं **प्रलून** वि० कापी नाखेलुं; कपाई गयेलुं **प्रलेप** पुं० लेप प्रलेह पु० सूरण आदिनी एक कढी प्रलोभ पुं० अत्यंत लोभ ; लालसा (२) ललचाववुं ते प्रलोभन न० लोभाववुं, आकर्षवुं के ललचाववुं ते (२) ते माटेनी वस्तु प्रलोम्य वि० आकर्षक; लोभावनाएं प्रलोस वि० ख्ब हालतुं – कंपतुं प्रवक्तृ पुं० शिक्षक; समजावनार(२) वक्ता (३) बोलनार प्रवचन न० बोलवुं - जाहेर करवुं ते (२) शीखववुं – समजाववुं ते (३) विवरण; चर्चा (४) वक्तृत्व (५) शास्त्रग्रंथ ; सिद्धांत ; दर्शन प्रवण वि॰ नीचेढळत्; नीचे नमतुं; नीचे वहेतुं (२) एकदम सीघुं - ऊभुं (३)वांकुं वळेलुं(४)वलणवाळुं(५) आसक्त; लागेलुं (६) तत्पर प्रवणीकृ ८ उ० अनुकूळ करवु प्रवद् १ प० बोलवुं; कहेवुं; संबोधवुं (२) जाहेर करवुं प्रवप् १ उ० नाखवुं (२)वेरवुं; विखेरवुं प्रवयण न० परोणो (हांकवा भाटेनो) प्रवयस् वि॰ मोटी उमरनुं (२) पुराणुं प्रवर वि० मुस्य; उत्तम(२) मोटामां मोटुं (३) पुं० गोत्रप्रवर्तक मुनि (४) वंश; कुळ (५) संतति; वंशज **प्रवरकल्याण** वि० घणुं सुंदर प्रवरजन पुं० उत्तम माणस प्रवर्ग पुं॰ यज्ञनो अग्नि (२) विष्णु प्रवर्ग्य पुं॰ सोमयज्ञनो प्रारंभिक विधि प्रवर्तक वि० प्रदर्तावनारुं; स्थापनारुं (२) आगळ वधारनारुं (३) उत्पन्न

करनारं(४)प्रेरनारं(५)पुं० स्थापक; उत्पादक; कर्ता (६) प्रेरनार (७) न० पात्रनुं रंगभूमि उपर आववुं ते प्रवर्तन न० प्रवर्तवुं ते; आगळ खसवुं के वधवुंते (२) शरूआत (३) स्थापना (४)प्रेरणा (५)-मां वळगव्ं ते; --मां प्रयत्नशील थवुं ते (६) बनवुं ते; घटनाः; प्रवृत्ति **प्रवर्तना** स्त्री० कार्यमां प्रेरव्ंते प्रवर्तित वि० प्रवत्विलुं; चलावेलुं; घुमावेलुं(२)स्थापेलुं(३)प्रेरेलुं (४) प्रज्वलित करेलुं (५) बनावेलुं; रचेलुं **प्रवर्तिन्** वि० प्रवृत्त थतुं ; आगळ चालतुं (२) बनावतुं (३)वापरतुं (४)--मांथी नीकळतुं (५) फेलातुं **प्रवर्ष पुं**० भारे वरसाद **प्रवर्षण** न॰ पहेलो वरसाद(२)वरसबुं ते **प्रवर्ह** वि॰ जुओ 'प्रबर्ह' प्रवस् १ प० वास करवो (२) प्रवास करवो; परदेश जबुं प्रवसन न० प्रवासे नौकळवुं ते **प्रवह् १** प० वहन करवुं **प्रवह** पुं० नगरथी बहार जबुं ते (२) एक जातनो पवन (ग्रहोने गतिमान करतो) (३)पाणी जेमां वहीने भेगुं थाय ते प्रवहण न० म्यानो; पालखी (स्त्रीओ माटेनी) (२)वाहन(३)वहाण प्रविद्धिका स्त्री० जुओ 'प्रहेलिका' **प्रवाच् वि० वक्तु**त्वशक्तिवाळुं (२) वातोडियुं (३)बडाश मारनारुं **प्रवात** वि० अतिशय पवन आवे तेवुं (२) न० वहेतो ताजो पवन (३) तोफानी पवन; वंटोळ (४) पवनवाळी जगा **प्रवातशयन** न० पवनवाळी जगामां गोठवेली शय्या प्रवातसुभग वि० ताजा वहेता पवनने कारणे आनंदप्रद एवं प्रवाद पुं ० अवाज करवी ते ; शब्द उच्चा-रवो ते (२) उल्लेख करवो ते; जाहेर

करबुं ते (३) दातचीत (४) लोकवायका (५)दंतकथा(६)पडकार(७) निदा; कलंक (८) बहानुं; मिष अवस्य पुं०, न० फणगो; कूंपळ (२) दूर जब्दं ते परवाळ् श्रवास पुं० परगाम वसवुं ते; मुसाफरीए प्रवासन न०परगाम रहेवुं ते के जवुं ते(२) देशनिकाल करवुं ते (३) वधः, कतल प्रवासिन् पुं० मुसाफर; वटेमार्गु **प्रवाह** पुं० वहेवुं ते (२) वहेण (३) परंपरा (४) घटनाओनी परंपरा (५) प्रवृत्ति प्रविघटित वि० कापी नाखेलुं; छूटुं अागळ वधवुं प्रविचर् १ प० रखडवुं; भटकवुं (२) प्रविचल् १ प० विचलित थवुं; अवळा जवुं(२)कंपवुं; ध्रूजवुं प्रविचारमार्ग पुं० ब० व०(लडती वसते) एक बाजुथी बीजी बाजु ठेकडा भरवा ते **ऋवितत** वि० विस्ती**णं** (२)बीसरायेलुं; अस्तव्यस्त (वाळ) **श्रविधा ३** उ० नक्की करवुं; निर्णय करवो (२) बनाववुं; करवुं (३) चितन करवुं; विचारवुं प्रविभक्त वि० छुटुं पाडेलुं; अलग करेलुं प्रविभाग पुं० जुर्दु पाडवुं ते; वहेंचणी (२) भाग; हिस्सो **प्रविर**ल वि० घणा अंतरवाळुं(२)घणुं थोडुं; भाग्ये ज जोवा मळतुं प्रविलुप्त वि० कापी नाखेलुं; अळगुं करेलुं(२)भूंसी नाखेलुं **प्रविवाद** पुं० वादविवाद; तकरार प्रविविक्त वि० अलग पाडेलुं; अळगुं (२) एकांत; निर्जन -प्रविश्६ प० पेसवुं; दाखल थवुं(२) शरूआत करवी; मंडव्ं प्रविषण्ण वि० खिन्न; उदास प्रविषय पुं० गोचर; क्षेत्र; पहोंच **अविष्ट** वि॰ दाखल **य**येलुं; पेठेलुं(२)

मां रोकायेलुं; गूंथायेलुं (३) ऊंडुं कतरी गयेलुं (जैम के आंख) प्रविष्टक न० रंगभूमि उपर दाखल थवुं प्रविसृत वि० पथरातुं (२) नासी गयेलुं (३)तीव [पाछू भगाडेलुं प्रविहत वि० नसाडी मूकेलुं; मारीने प्रवीण वि० चतुर; कुशळ; निपुण प्रवीर वि॰ मुख्य; उत्तम (२)बळवान; पराक्रमी (३)पुं० वीर पुरुष (४)मुरूय -विशिष्ट माणस प्रवृ ५ उ० ढांकवुं; आच्छादन करवुं (२)पहेरबुं(३)पसंद करवुं प्रवृत् १ आ० आगळ वषवुं (२) –मांथी नीकळवुं; उदय थवो (३) बनवुं; धवुं (४) आरंभ करवो (५) प्रयत्न करवो; प्रयत्नशील धवुं (६) वर्तवुं; आचरवुं (७)होवुं (८) सतत चालु रहेवुं प्रवृत वि० ('प्रवृ'नुं भू० क्र०)पसंद करेलु प्रवृत्त वि० ('प्रवृत्'नुं भू० क्र॰) शरू करेलुं (२) शरू थयेलुं; बेठेलुं (ऋतु इ०)(३)-मां लागेलुं (४) –तरफ जवा नीकळेलुं (५) निश्चित; स्थिर करेलुं (६) वहेतुं **प्रवृत्तवाक् वि०** वक्तृत्वशक्तिवाळुं प्रवृत्ति स्त्री० सतत आगळ वधवुं ते (२) ऊगम; मूळ; उद्भवस्थान(३) देखावुं के प्रगट थवुं ते (४)शरूआत थवी ते; बेसवुंते (ऋतुनुं) (५) दलण; लगनी (६) वर्तन; वर्तणूक (७) घंघो; कामकाज (८) उपयोग; प्रवार(९) कर्ममय जीवन ('निवृत्ति 'थी ऊलटुं) (१०) समाचार; खबर नि इच्छतुं प्रवृत्तिपरा**ङम्ख** वि० समाचार आपदा प्रवृद्ध वि॰ वधेलुं; विकसेलुं(२)पूर्णं; ऊंडुं (३) तुमासीभर्युं प्रवृद्धि स्त्री ० वृद्धिः विकास (२)समृद्धि प्रवेक वि॰ उत्तम;श्रेष्ठ

प्रवेग पुं० मोटो वेग **प्रवेण** वि० अमुक खास जातनी बकरीनुं **प्रवेणि (-जी)** स्त्री० वेणी (२) (पतिना वियोगमां) गूंध्या वगरनी वेणी(३) हाथीनी पीठ उपर नाखवानी झूल प्रवेदित वि॰ जणावेलुं **प्रवेरित** वि० आमतेम फेंकेलुं के देरेलुं प्रवेश पुं० दाखल थवुंते; पेसवुंते (२) रंगभूमि उपर आववुं ते (३) बारणुं; द्वार(४)लगनी; खंत प्रवेशक पुं० वचगाळामां बनी गयेली घटना सूचववा वे अंकोनी वचमां गौण पात्रोनो प्रवेश (प्रथम अंकना आरंभे के छेल्ला अंकने अंते न होय) **प्रवेशित** वि० दाखल करेलुं (२)नीमेलुं (३) (अमुक स्थितिमां) नाखेलुं (४) ⊸नीसमक्षरजूकरेलुं **प्रवेश्य** वि० दाखल करवा योग्य(२) ⊶मांपेसवा के व्यापवा योग्य (३) वगाडवा योग्य (वाजित्र) प्रव्यय् १ आ० व्ययापामवी (२) बीवुं **प्रव्रज् १** प० देशनिकाल थवं (२) सन्यास लेवो; भिक्षु बनवु प्रविज्ञत वि० देशनिकाल थयेलुं (२) संन्यासी थयेलुं (३) पुं० भिक्षु(बौद्ध के जैन (४) संन्यासी; तपस्वी प्रव्रज्य न०, प्रव्रज्या स्त्री० बहार विच-रवुं—भटकवुंते (२) संन्यासी के भिक्षु तरीके विचरवुं ते (३) संन्यास प्रवाज्, प्रवाजक पुं० संन्यासी प्रशम् ४ प० [प्रशाम्यति] शांत थवुं; शांत पडवुं(२)अटकवुं; बंध पडवुं (३)छीपबुं;बुझावुं(४)क्षीण थवुं –प्रोरक० सात्वन पमाडवुं; शांत पाडवुं (२) ठारी देवुं; बुझादी देवुं (३) अंत लाववो (४) हराववुं (५) रुझाववुं; मटाडवुं प्रशम पुं॰ शांति; स्वस्थता (२) विश्वांति (३) निवृत्ति ; अंत ; नाश (४) सांत्वना

अशमन वि० शांत पाडनार्ह; शमावनार्ह (२)न० शांत पाडवुंते;शमाववुंते (३) मटाडवुं के इझाववुं ते (४) निवृत्ति; अंत (५) सुरक्षित करवुं ते **प्रशमित वि० शांत थयेलुं; शांत पाडेलुं** (२) बुझावेलुं (३) धोई प्रायश्चित्त करेलुं प्रशस्त वि० वखाणेलुं (२) वखाणवा योग्य (३) उत्तम; श्रेष्ठ (४) शुभ; भद्र प्रशस्ति स्त्री० स्तुति; वखाण; प्रशंसा (२)कोईनी प्रशंसा माटे लखातुं काव्य **प्रशस्य वि०** प्रशंसा करवा योग्य **प्रशंस् १** प० प्रशंसा करवी (२) जाहेर करवुं (३) भविष्य भाखवुं प्रशंसनीय वि० वक्षाणवा योग्य प्रशंसा स्त्री० स्तुति; वखाण (२) कीति प्रशासा, प्रशासिका स्त्री० डाळसी प्रशास् २ प० शीखववुं (२) हुकम करवी (३)शासन करवुं(४)शिक्षा करवी (५) २ आ० प्रार्थवुं;मागवुं **प्रशासक पु**० शासनकर्ता (२) गुरु **प्रशासन न० राज्य; अ**मल; शासन प्रशासितृ, प्रशास्तृ पु० राज्यकर्ता; हाकेम (२) सलाहकार; निदर्शक **प्रशांत** वि॰ शांत थयेलुं; शांत पाडेलुं (२)नीरव; गंभीर(३)ताबे थयेछुं (४)समाप्त(५)मृत(६)दूर थयेलुं प्रशांतबाथ वि० बधां विघ्नो दूर थयां होय तेवु [चि**त्त**वाळु प्रशांतात्मन् वि० शमयुक्त के शांत प्रशिथिल वि० घणुं ढीलुं, घीमुं के झांखुं प्रशिष्य पुं० शिष्यनो शिष्य प्रश्चोतन, प्रश्च्योतन न० झमवुं ते; टपकव्ंते; छंटकाव प्रश्न पुं॰ सवाल; पूछपरछ(२)चर्चानो मुद्दो (३) उकेलवा माटेनो कोयडो (४) भविष्य जाणवा कराती पूछपरछ प्रथय पुं०, प्रश्रयण न० विनय; आदर-भाव (२)स्तेह (३)आश्रय

प्रिधित वि॰ नम्न; विनयी प्रक्रलेख पुं० गाढ संबंध के आलिंगन **प्रश्वास** पुं० श्वास लेवो ते प्रष्ठ वि० अग्नेसर; मुखियो; आगेवान प्रसक्ल वि० खुब भरावदार प्रसक्त वि० आसक्त; वळगेलुं (२) चोटेलुं (३) लगनीवाळुं (४) नजीकनुं (५) सतत; अखंड प्रसक्तम् अ० सततः; चालु प्रसक्ति स्त्री० आसक्ति (२) संबंध (३) लागु पडवुं ते (४)खंत : प्रयत्न(५)प्राप्ति प्रसत्ति स्त्री० कृपा; प्रसन्नता (२) निर्मळताः; पारदर्शकता प्रसद् १ प० [प्रसीदति] प्रसन्न थवुं; ख़ुश थबुं (२)संतुष्ट थबुं ; शांत थबुं (३) स्वच्छथवु ; निर्मेळ थवुं (४) सफळ थवुं प्रसन्न वि० स्वच्छ; निर्मळ(२)खुद्रा; संतुष्ट (३) कृपावंत (४) स्पष्ट समजाय तेवुं(५)साचुं;खरं [लगभग साचुं प्रसन्नकल्प वि० लगभग शांत थयेलुं (२) प्रसन्नसलिल वि० स्वच्छ जळवाळं प्रसन्ना स्त्री० मदिरा;दारू [पुं० विष्णु प्रसन्नात्मन् वि० कृपावंत ; खुश थयेलुं(२) प्रसन्नेरा स्त्री० एक जातनी मदिरा प्रसम पुं० जुलम; बळात्कार **प्रसभदमन** न० बळात्कारे दमन करवुं ते प्रसभम् अ० बळात्कारे; जोरजुलमथी (२)अत्यंत (३)अनुचितपणे प्रसर पुं० आगळ वधवुं के धपवुं ते (२) निर्विष्न गति (३) विस्तृत थवुं ते (४) कद; जथो (५) प्रवाह; पूर (६) अद-काश;तक(७)गोचर;क्षेत्र (आंखनुं) प्रसरण न० दोडी जबुं ते (२)नासी जबुं ते(३)**फे**लावु ते सरकतुं प्रसर्पिन् वि० आगळ वधतुं; फेलातुं (२) प्रसद पुं॰ जन्म आपवो ते; प्रसूति (२) संतति;फरजंद (३)जन्मस्थान;उत्पत्ति-स्थान (५)फूल (६)फळ; परिणाम

प्रसवन न० बाळकने जन्म आपवो ते **प्रसवबंधन** न० फूल-फळनुं दींटुं **प्रसववेदना** स्त्री० प्रसव वस्ततनी पीडा प्रसवंती स्त्री० प्रसव आपती स्त्री प्रसनित् पुं० पिता प्रसवित्री स्त्री० जननी; माता प्रसदोन्मुख वि० प्रसूति के सुवावडनी तैयारीमां होय तेवुं प्रसच्य वि॰ ऊलटुं (२)डाडी बाजु बळेलुं के फरेलुं (३)अनुकूळ **प्रसह १** आ० सहन करवुं(२)सामनो करवो (३) प्रयत्न करवो (४) हिंमत करवी; शक्तिमान थवुं प्रसद्धा अ० बळात्कारे; जोरजुलमधी (२) अत्यंत (३) जीतीने (४) एकदम; तरतज (५) अवश्य प्रसंख्यान पुं० भरपाई करवुंते (रकम) (२) न० गणतरी (३) चिंतन; मनन (४) कीर्ति; स्थाति **प्रसंग** पुं० आसक्ति;प्रीति(२)संबंघ; समागम (३) व्यभिचार (४) -मां लागु रहेर्नु ते(५)बनाव; घटना(६) परिणाम आवी पडवुं ते प्रसंगवशात् अ० संयोगवशात् प्रसंगिता स्त्री० आसक्ति; लगनी **प्रसंगिन्** वि० आसक्त; संबद्ध (२) प्रासं-गिक; कोईक दार बनतुं(३)गौण **प्रसंज् १** प० [प्रसजति] आसक्त धर्वु –कर्मणि० चोटवुं; वळगवुं (२) परिणामरूपे आवी पडवुं ; प्रसंग आववो प्रसंजित वि० बनावेलुं;अस्तित्वमां आणेलुं प्रसंदास न० दोरडुं; बंधन प्रसाद पुं॰ कृपा (२) शांति; स्वस्थता (३) निर्मळता (४) देव वगेरेने अर्पण करेलुं भोजन (५) बक्षिस; भेट प्रसादक वि० निर्मेळ करनारुं (२) शांत पाडनारं (३) खुश करनारुं प्रसादपराडम् ख वि० कोईनी कृपा न

इच्छतुं (२) कृपा पाछी खेंची लीधी होय तेवुं प्रसादिन् वि० जुओ 'प्रसादक' **प्रसाध्** –प्रेरक० प्राप्त करवु(२)ताबे करवुं (३) सिद्ध करवुं (४) आगळ धपाववुं (५) शणगारवुं; पहेराववुं प्रसाधक पु० मालिकने अलंकार पहेराव-नार सेवक प्रसाधन न० साधवुं के सिद्ध करवुं ते (२) गोठववुं ते (३) शणगारवुं ते-(४) शणगार(५)पुं०, न० कांसको प्रसाधनविशेष पुं० उत्तम शणगार प्रसाधनी स्त्री० कांसकी प्रसाधिका स्त्री० राणी वगेरेने शणगार पहेरावनार स्त्री प्रसाध्य वि० साधवा के सिद्ध करवा थोग्य (२) संपादन करवा लायक (३) वश करवा योग्य **प्रसार** पुं० फेलाबो; फेलाबुं ते (२) वेपारीनी दुकान – हाट प्रसारित वि० फेलावेलुं; विस्तारेलुं(२) बहार मूकेलुं; खुल्लु करेलुं (वेचवा [तेवुं(साप) माटे) प्रसारितभोग वि० फणा फेलावी होय प्रसित वि० सीवेलुं; जोडेलुं (२) लगनी बाळुं; लागेलुं; मचेलुं (३)तलपतुं (४) अस्यंत स्वच्छ (५) न० पर्; पाच प्रसिद्ध वि० जाणीतुं; प्ररूपात (२) शणगारेलुं (३) उत्तम प्रसिद्धि स्त्री० रूपाति (२) सफळता; सिद्धि (३) शणगार प्रसिष् ४ प० सिद्ध थवुं ; मळवुं (२)सफळ थवु(३)प्रसिद्ध थवु(४)साबित थवुं (५) शणगारावुं जन्म आपवो प्रस् १ प०, २, ४ आ० प्रसव करवो; प्रसुप्त वि० गाउँ निद्रामां पडेलुं प्रसू १ प०, २, ४ आ ० जुओे 'प्रसु' (२) ६ प० फेंकवुं (३) प्रेरवुं

प्रसू वि॰ प्रसव करनारुं; जन्म आपनारुं (२) स्त्री० माता **प्रसूत** वि० जन्मावेलुं; उत्पन्न करेलुं **प्रसूति** स्त्री० जन्म आपवो ते(२)ईंडां मूकवां ते (३) जन्म ; उत्पत्ति (४) प्रगट थवुं ते; बेसबुंते (फूल इ०) (५) संतति (६) उत्पादकः, पेदा करनार (७)मा(८)कारण कळी प्रसून वि॰ पेदा ययेलुं (२)नि॰ फूल (३) **प्रसूनबाण** पुं० कामदेव; मदन प्रसू १प० वहेवुं; नीकळवुं; ऊगम थवी (२)आगळ वधवुं(३)फेलावुं;व्या-पवुं(४) लांबुं थवुं(जेम के हाथ) (५) वृत्ति थवी; वलण थवु (६) आरंभ थवो; प्रवर्तवु (६) दृढ के गाढुं थवुं प्रसृज् ६ प० त्याग करवो (छूटु करवुं (२) वाववुं; वेरवुं(३)छोडवुं;फेंकवुं प्रस्त वि॰ आगळ गयेलुं(२)फेलावेलुं; लंबावेलुं (३) फेलायेलुं (४)–मां लागेलुं; निष्ठावान ; आसक्त (५) झडपी (६) प्रगट करेलुं के ययेलुं (७) सूक्ष्म अर्थ जाणनारुं (८) राघेलुं; तैयार थयेलुं (९) पुं॰ अंजलि वाळी लांबो करेलो हाथ (१०) न० फूटी नीकळेलुं ते; घास, छोड इ० (११) खेतीवाडी प्रसृतज्ञ पुं० परस्त्रीयी थयेलो पुत्र प्रसृति स्त्री० प्रगति; आगळ वघवुंते (२) बहेवुं ते (३) अंजिल वाळी लांबो करेलो हाथ (४) खोबा जेटलूं माप (५) झडप; वेग प्रसृत्वर वि० फेलातुं; प्रसरतुं प्रसृप् १ प० आगळ वधवुं (२) फेलाबुं (३) सरकवुं; सरवुं (४) चोतरफथी आवी पडवुं(जेम के अंधारुं) **प्रसृमर** वि० प्रसरतुं; नीकळतुं प्रसेक पुं० झरवुं के टेपकवुं ते (२) सींचवुं के छांटबुंते प्रस्कन्न वि० हुमलो करेलुं के करायेलुं (२)हरावेलुं(३)पडी गयेलुं;खोवायेलुं

प्रस्कंद् १ प० कूदी पडवुं(२)हुमलो करवो प्रस्कंदिका स्त्री० संग्रहणी (रोग) प्रस्कृद पु० चकाकार वेदी प्रस्थल् १ प० हडसेला खावा; धक्का वागवा(२)ठोकर खावी ; लथडियुं खावुं प्रस्तर पुं० पांदडां फूल वगेरेनी शय्या (२)पथारी(३)सपाटी (४)पथ्थर; शिला (५) दर्भनी **एक मु**ठी (६) ग्रंथनो भाग; फकरो प्रस्तार पुं० पांदडां फूल बगेरेनी शय्या (२) पथारी (३)सपाटी (४) झाडी (५) घाट; ओवारो प्रस्ताव पुंज्ञारंभ(२)प्रस्तावना(३) उल्लेख (४) प्रसंग; अवसर(५) चालु मुद्दो; प्रकरण (६) प्रारंभिक स्तवन प्रस्तावना स्त्री० स्तुति; वखाण (२) आरंभ; शरूआत (३) उपोद्धात प्रस्तावसब्श वि० प्रसंगने छाजे तेवुं प्रस्तावे अ० योग्य प्रसंगे प्रस्तावेन अ० योग्य प्रसंगे; योग्य समये (२)प्रसंगवशात्; कोईक प्रसंगे प्रस्तु २ उ० स्तुति करवी; वखाणवुं (२)प्रारंभ करवो(३)उत्पन्न करवुं (४) कहेबुं; प्रतिपादन करवुं प्रस्तुत वि० स्तुति करेलुं; वखाणेलुं(२) आरंभेलुं(३)सिद्ध करेलुं; तैयार(४) बनेलुं (घटना) (५)प्रासंगिक ; उपा-डेलुं(वातचीतना मुद्दारूपे) प्रस्थ वि० जतुं; रहेवा जतुं (२) मसाफरीए नीकळतुं (३) दृढ़; स्थिर (४) पुं०, न० सपाट मेदान (५) पर्वतनी टोच (६) एक माप (३२ पल जेटलुं) (७)तेटला वजननुं जे कई ते प्रस्था १ आ० [प्रतिष्ठते] प्रयाण करवुं; जवा नीकळवुं (२) तरफ जवुं के आगळ धपवुं (३) चालवुं; खसवुं –प्रेरक० विदाय आपवी (२) काढी मूकवुं (३) धकेलवुं

प्रस्थान न ॰ जवा नीकळवुं ते (२) आगमन (३)मोकली देवुं ते(४)सरघस(५) लश्करनी कूच (६) मृत्यु (७) पंथ; संप्रदाय (८) भिक्षावृत प्रस्थानत्रय न०, प्रस्थानत्रयो स्त्री० भग-वद्गीता, उपनिषदो अने ब्रह्मसूत्र -ए त्रणनो समुदाय प्रस्थापन न० मोकलवुं,वळाववुं के विदाय करवुं ते (२) साबित करवुं ते (३) उपयोग करवो ते ्विळाववा योग्य **प्रस्थापनीय** वि० मोकलवा योग्य; प्रस्थापित वि० मोकलेलुं; वळावेल (२) स्थापित करेलुं (३) प्रेरेलुं; घकेलेलुं (४) ऊजवेलुं (उजाणी ६०) प्रस्थायिन् वि० विदाय थतुं; जतुं; मुसाफरी के कुच करतुं प्रस्थित वि० मुसाफरीए नीकळेलुं के ऊपडेलुं(२)मृत (३) निर्मायेलुं (४) न० विदाय थवुंते प्रस्थिति स्त्री० विदाय (२) मुसाफरी **प्रस्तव** पुं० झरवुं के झमवुं ते (२) प्रवाह; धारा (जेमके दूधनी) (३) ब०व० आंसु (४)पेसाब [नरम;कोमळ प्रस्मिग्धं वि० चीकणुं; तेलवाळुं (२) **प्रस्तु २** प० रेडवुं (२) टपकवुं; झमवुं (३) २ आ० दूध आपवुं प्रस्तुत वि० झमतुं; झरतुं (२) आपतुं प्रस्नुतस्तनो वि० स्त्री० जेना स्तनमांथी (वात्सल्यने कारणे) दूध झमे छे तेवी प्रस्तुषा स्त्री० पौत्रवध् प्रस्फुट् १० उ० चीरवुं; फाडवुं (२) ऊघडवुं; खूलवुं (३) ताळी पाडवी प्रस्फुट वि० खीछेलुं (२)खुल्लुं; जाहेर (३) स्पष्ट; उघाडुं प्रस्फुर् ६ प० स्फुरवुं; ध्रूजवुं(२)पहोळुं थवुं ; प्रसरवुं (३)दूर सुधी फेलावुं **प्रस्फुरित** वि० हालतुं; कंपतुं **प्रस्मृति** स्त्री० विस्मृति

प्रस्यंद् १ आ० झरवुं (२) वहेवुं (३) कि वहेवुं ते दोडी जबुं प्रस्थंद पुं०, प्रस्थंदन न० झरवुं, टपकवुं प्रस्यंदिन् वि० आंसु रेलावतुं प्रस्रव पुं० झरवुं, जोरथी नीकळवुं के बहेवु ते (२) प्रवाह ; बहेण (३) आंचळ के स्तनमांथी नीकळतुं दूध (४)पेसाब (५)पुं० ब० व० रेलातां आंसु प्रस्नवर्ण न० झरवुं, वहेवुं के नीकळवुं ते (२)दूध बहेबूं ते (स्तन के आंचळमां-थी) (३) धोध (४) झरो; फुवारो (५) पु० एक पर्वत ('जनस्थान'मां आवेलो) प्रस्नविन् वि० रेलावतुं(२)दूभ आपतुं प्रस्नाद पुं॰ झमवुं के वहेवुं ते (२)पेसाव प्रस्तु १ प० झरवुं; जोसथी नीकळवुं (२) रेलाववुं; वहेवा देवुं प्रस्नुत वि० झरेलुं;टपकेलुं;नीकळेलुं प्रस्वन पुं० मोटो अवाज प्रस्वाप पुं० ऊरंघ (२) स्वप्न(३)एक अस्त्र (ऊंधमां नाखनारुं) प्रस्वापन वि० अंघमां नाखनारं (२)न० तेवी शक्ति धरावत् अस्त्र प्रस्विच वि० ख्ब परसेवो थयो होय तेवुं प्रस्वेद पुं० अतिशय परसेवो प्रहत वि० घायल करेलुं; हणेलुं(२) वगाडेलु (ढोल) (३)पराभव पमाडेलु प्रहति स्त्री० प्रहार; घा प्रहन् २ प० हणवुं; वध करवो (२) मारयुं;प्रहार करवो(३)वगाडवुं (ढोल) प्रहर पुं० आखा दिवसनी आठमी भाग (त्रण कलाक); पहोर प्रहरक पुं० पहोर(२) पहेरो **प्रहरण** न० प्रहार करवो ते(२)फेंकवुं ते (३) दूर करवुं ते; काढी मुकवुं ते (४) गस्त्र ; अस्त्र (५) युद्ध ; लडाई प्रहरत् पुं० योद्धो प्रहरित् पुं० पहेरेगीर प्रहर्त वि० प्रहार के हुमलो करनारुं (२) लडनारुं (३) बाण फेंकनारुं

प्रहर्ष पुं० अतिशय आनंद के हर्ष प्रहर्षण न० अतिशय हर्ष पमाडनार ते (२)इन्छित वस्तु प्राप्त थवी ते प्रहस् १ प० खडखडाट हसवुं (२) हांसी करवी (३) आनंदमां आवर्बु प्रहसन न०खडखडाट हसवूं ते (२) होसी; मश्करी (३) हांसीप्रधान नाटक; फारस प्रहसित वि० खूब हसेलुं; खडखडाट हसत् (२) न० हास्य प्रहा ३ प० त्यागवुं; तजवुं(२) छोडवुं; फेंकवुं(३) – मांथी विदाय थवुं प्रहाण न० त्याग(२)ध्यान प्रहाणि स्त्री० हानि; नाश; अभाव **प्रहापण** न० त्याग(२)विदाय प्रहार पुं० मारबंते; धाकरवोते(२) युद्धः, रणसंग्राम प्रहास पुं॰ अट्टहास (२) हांसी; मजाक (३) नर्तक; नट(४) शिव (५) देखाव (६) रंगोनी शोभा प्रहासिन् वि० हसावनारं (२) हांसी कर-नारं(३)-नी साथे हसतुं(४)प्रकाशित प्रहि५ प० मोकलबुं(२) फेंकबुं(३) -नी तरफ आंख वाळवी प्रहित वि० मुकेलुं(२)फेलावेलुं; लंबा-वेलुं(३)मोकलेलुं; फेंकेलुं(४) काढी [न० हानि; नाश मुकेलुं प्रहीण वि० छोडी दीधेलुं; तजेलुं(२) प्रहु १ प० प्रहार करवो (२) घा करवो (३)हमलो करवो (४)फेंकवुं; मारवुं प्रहुत वि० प्रहार करेलुं (२) न० प्रहार प्रहृष् ४ प० आनंद थवो; हर्षित थवुं (२) रोमांच थवो प्रहुष्ट वि० हर्ष पामेलुं(२)रोमांचित **प्रहेला** स्त्री० रमतियाळपणुं; स्वच्छंद प्रहेलिका स्त्री० कोयडो; समस्या प्रह्लाद १ आ० अति आनंदमां आवी जबुं प्रह्लाद पुं० अत्यंत आनंद(२)अवाज (३) हिरण्यकशिपुनी भक्त पुत्र

प्रह्लादक (-न) वि० हर्ष उपजावनारुं प्रह्व वि० ढाळवाळुं; नमेलुं(२)नीचुं वळेलुं (३) नम्भः ; विनयी (४) आसक्त प्रह्मयति प० (नमाववुं; ताबे करवुं) प्रह्वांजिल वि० कपाळे बंने हाथ जोडीने नमन करतुं (आदर बताववा) **प्रा २** प० भरवुं; पूरवुं प्राक् अ० पहेलां; अगाउः, पूर्वे(२) पहेलेथी ज(३)पूर्व दिशामां (४)सामे (५) सुधी (६) सवारे **प्राकटच** न० प्रगट थवुं ते(२) प्रसिद्धि **प्राकरणिक** वि० प्रस्तुत; जे प्रकरण ऊपडचुं होय तेने लगतुं प्राकाम्य न० मरजी मुजब वर्तवुं ते (२) स्वच्छंदीपणु (३)ते नामनी एक सिद्धि प्राकार पुं० भींत; वाड (२) किल्लो **प्राकारस्य** वि० बुरज उपरयी लडनार्ह प्राकाश्य न० जाहेरात (२) प्रसिद्धि (३)चळकाट **प्राकृत** वि० कुदरती; सहज; अकृतिम (२) सामान्य (३) संस्कार विनानुं; अशिक्षित (४) तुच्छ , अगत्यनुं नहि तेवुं(५)प्रकृति संबंधी(६)देशी के गामठी (भाषा) (७) पुं० सामान्य पामर माणस (८) न० देशी के गामठी भाषा (९) पाछो प्रलय (प्रकृतिमां) प्राकृतिक वि० कुदरती; स्वाभाविक **प्राक्कर्मन्** न० पूर्वजन्ममां करेलुं कर्म (२) प्रारंभमां करवानुं कार्य **प्राक्कृत** न० पूर्वेजन्ममां करेलुं कर्म **प्राक्तन** वि० पहेलांनुं ; पूर्वनुं (२) प्राचीन (३)पूर्वजन्मनुं(४)न० दैव;भाग्य **प्राक्तनकर्मन्** न० पूर्वजन्ममां करेलुं कर्म **प्राक्तनजन्मन् न० पू**र्वजन्म प्राखर्य न० तीक्ष्णता; धार(२)तीव्रता; प्रखरता (३) दुष्टता (४) उत्साह प्रागनुराग ५० पहेलांनी प्रेम

तुमाखी (३) कुशळता (४) विकास; परिपक्वता (५) प्रागटच; देखाव (६) वक्तृता (७) दृढनिश्चयीपणुं प्रागवस्था स्त्री० पहेलांनी अवस्था प्रागुसर, प्रागुर्दच् वि० उत्तर-पूर्वनुं प्राग्जन्मन् न०, प्राग्जाति स्त्री० पूर्वजन्म प्रान्ड्योति पुं० कामरूप देश **प्राग्भव** पुं० पूर्वजन्म प्राग्भार पुं० पर्वेतनुं शिखर (२) आगलो के छेडानो भाग (३) मोटो जथो प्राप्सर वि० अग्रेसर; आगेवान प्रायहर वि० मुख्य; प्रधान प्राक्य वि० मुरूय; श्रेष्ठ **प्राग्वचन** न० पहेलांनां ऋषिओए कहेलुं के ठरावेलुं ते प्राग्वंश पुं० पूर्ववंश के पेढी (२) जेना थांभला पूर्वदिशाभिमुख होय तेवुं यज्ञस्थान (३) यजमाननां सगांसंबंधी जेमां बेसे ते ओरडो प्राप्वृत्त न० पहेलांनुं वर्तन प्राप्वृत्तांत पुं० पहेलांनी घटना के बनाव प्राघुण, प्राघुणक. प्राघुणिक, प्राघुणं, प्राचुणिक पुं महेमान; अतिथि प्राघृणिका स्त्री० आतिथ्य;सत्कार प्राइमुख वि॰ पूर्व तरफ मोवाळु(२) --नी इच्छावाळुं; -ना वरुणवाळुं प्राच् वि० जुओ 'प्रांच्' प्राचंडच न० प्रचंडता **प्राचीन वि० पूर्व तरफन्** (२)पहेलानुं; अगाउनुं(३)जूनुं; पुराणुं(४)पुं० न० पूर्व तरफनो प्रदेश प्राचीनबहिस् पुं० इंद्र **प्राचीमूल** न० पूर्व दिशा तरफन् क्षितिज प्राचीर न० वाड; कोट **प्राचुर्य न० प्रचुरता; पुष्कळपण्** प्राचेतस पुं० मनु (२) दक्ष (३) वाल्मीकि प्राच्य वि० सामेनुं(२)पूर्वं तरफनुं(३) आगळनुं (४) प्राचीन

प्रागलभ्य न० हिंमत; विश्वास (२) गर्व;

प्राष्ट् वि० पूछतुं; तपास करतुं प्राजन पुं०, न० परीणो; चाबुक प्राजापत्य वि० प्रजापति (ब्रह्मा)संबंधी (२)प्रजापतिथी जन्मेलुं(३)पुं० आठ विवाहप्रकारोमांनो एक (जेमा कन्यानो पिता वर पासेथी कशुं लीघा विना कन्यादान करे छे) प्राज्ञ वि॰ प्रज्ञावान; बुद्धिशाळी (२) डाह्युं ; शाणुं (३)पुं० डाह्यो के विद्वान माणस (४) जीव-चेतन (५) परब्रह्म प्राज्य वि॰ घणुं;अतिशय;पुष्कळ(२) मोटुं(३)महत्त्वनुं; ऊंचुं प्राइविवाक पुं० न्यायाधीश **प्राण् २** प० श्वास लेवो (२) जीववुं प्राण पुं० श्वास (२) जीवनशक्ति (३) देहमां रहेला पांच प्राणवायु (ब०व०; प्राण-अपान-समान-ज्यान-उदान) (४) वायु (५) सत्त्व; बळ (६) जीव (७)परमात्मा(८)इंद्रिय (९) प्राण समान प्रिय जे कांई होय ते (१०) जीवन (११) अन्न प्राणकर्मन् न० प्राणीनुं कार्य **प्राणधातक** वि० प्राणनो नाश करनारु प्राणत्याग पुं अरत्महत्या (२) मोत प्राणदक्षिणा स्त्री० जीवतदान **प्राणदियत पुं**० पति प्राणदान न० बीजाने माटे प्राण अर्पण करवा ते (२) जीवतदान प्राणदायक वि० जुओ 'प्राणप्रद' प्राणद्रोह पुं प्राण लेवा ताकवुं ते **प्राणधारण** न० जीवननिर्वाह (२) तेनुं साधन (३) जीवनशक्ति प्राणपति पुं श्रियतम (२) पति (३) जीव (४)वैद्य तिवु प्राणपरिक्षीण वि० मृत्यु नजीक होय प्राणपरिप्रह पुं० जीवन; अस्तित्व **प्राणप्रद** वि० सजीवन करनाहं (२) जीव बचावनारुं

प्राणप्रिय पुं पति (२) प्रियतम **प्राणभृ**त् वि० प्राणशारी (२)पुं० प्राणी प्राणमोक्षण न० मृत्यु (२) आपघात प्राणयात्रा स्त्री० जीवननिर्वाह **प्राणवत्** वि० प्राणयुक्तः, जीवतुं (२) बळवान; शक्तिशाळी प्राणवरुसा स्त्री० परनी (२) प्रियतमा प्राणसभा स्त्री० पत्नी जोखम प्राणसंदेह पुं० जीवनुं जोखमः मोटुं आणसार वि० प्राणवान; सबळ प्राणहर, प्राणहारिन् वि० प्राण हर-नारुं; घातक **प्राणाचात पुं**० हिसा **प्राणातिपात** पुं० प्राणवधः; हिसा **प्राणात्यय** पुं० जीव जवी ते; मृत्यु प्राणायाम पुं० श्वासने रोकवो ते (एक योग-प्रक्रिया) प्राणांतिक वि० प्राणधातक; मारक (२) मरतां सुधीनुं; जीवन साथे पूरूं थाय तेवुं(३)न० खून [सजीव प्राणी प्राणिन् वि० प्राणवाळुं; सजीव (२) प्० **प्राणेश** पुं॰ पति (२) प्रियतम प्राणेशा स्त्री ॰ पत्नी (२) प्रियतमा प्राणेश्वर पुं॰ जुओ 'प्राणेश' **प्राणेदवरी** स्त्री० जुओ 'प्राणेशा ' **प्रातर्** अ० सवारे (२) बीजे दिवसे सवारे **प्रातरा**शः पुं० सवारेकरातो नास्तो प्रातस्तराम् अ० वहेली सवारे **प्रातस्त्य** वि० वहेली सवारन् प्रातःकाल पुं० प्रभातनो समय;परोढ प्रातःप्रहर पु० दिवसनो पहेलो पहोर प्रातिकामिन् पुं० दास के दूत प्रातिपक्ष वि॰ विरोधी; ऊलटुं (२) दुश्मनावटभर्युः; वेरी प्रातिपक्ष्य न० वेर; दुश्मनावट प्रातिपौरुषिक वि० बधा पुरुषोने सामान्य एतुं(२)पुरुषार्थ के पराक्रम संबंधी प्रातिभ न० प्रतिभाषी थतुं साहजिक प्रातिभाष्य न० जामीन(२)विरोध प्रातिलोम्य न० प्रतिलोमपणुं; ऊलटो ऋम (२) दुश्मनावट प्रातिवेशिक, प्रातिवेश्य पुं० पडोशी प्रात्यक्षिक वि० प्रत्यक्ष जोई के जाणी शकाय एवं प्राथमिक वि० प्रथम; पहेलुं प्रादक्षिण्य न० प्रदक्षिणा करवी ते **प्रादुर**स् (प्रादुस्+अस्)२प० प्रगट थवुं **प्रादुर्भाव** पुं० अस्तित्वमां आववुं ते (२) प्रगट थवुं ते प्रादुर्भू १ प० प्रगट थवुं **प्रादुर्भू**त वि० प्रगट थयेलुं **प्रादुष्करण** न० प्रगट थवुं के करवुं ते प्रादुस् अ० प्रगट होय तेम; देखाय तेम प्रादेश पुं०,न० अंगुठा अने तर्जनी वच्चेना अंतर जेटलुं माप **प्रादेशमात्र** वि० थोडुंक ज ; नमूना जेटलुं प्रादेशिक वि० प्रदेशमां ज मर्यादित एवं प्रादोष, प्रादोषिक वि० सांज संबंधी प्राधनिक न० विनाशक हथियार प्राधान्य वि० मुख्य होवापणुं;अग्रेसरपणुं प्राधीत वि० सारी रीते भणेलुं प्राध्व वि० दूरनुं (२) पुं० लांबो मार्ग प्राध्वम् अ० अनुकूळ होय तेम प्राप् (प्र∔आप्) ५ प० मेळवर्बु;पासर्बु (२) पहोंचवुं (३) लंबाबुं; विस्तरवुं –प्रेरक० पहोंचाडवुं; पमाडवुं **प्राप** वि० पहोंचतुं; मळतुं **प्रापक** वि० पहोंचाडनारुं; पमाडनारुं (२)प्राप्त करनाइं प्रापण न० पहोंचवुं ते; प्रामबुं ते(२) पहोंचाडवुं के पमाडवुं ते प्रापणिक पुं० वेपारी;सोदागर प्रापिपियषु वि० पहोंचे के पामे एम करवा इच्छतुं प्राप्त ('प्राप् 'नुं भू० कृ०)वि० पामेलुं; पहोंचेलुं (२) मेळवेलुं (३) जडेलुं;

मळेलुं (४) बेठेलुं; सहन करेलुं (५) हाजर; आवेलुं प्राप्तकाल पुं० योग्य अवसर प्राप्तकालम् अ० योग्य अवसरे प्राप्तकम वि० अनुकुळ; उचित प्राप्तजीवन वि० फरी सजीवन थयेलुं प्राप्तकोष वि० दोषी; अपराधी प्राप्तप्रसव वि० प्रसव थयो होय तेवुं (२) प्रसवकाळ नजीक आव्यो होय तेवुं **प्राप्तबोज** वि० बीज वाववामां आव्युं होय तेव् प्राप्तरूप वि० सुंदर; देखावडुं (२) पंडित; शाणुं(३)योग्य; लायक प्राप्तव्य वि० प्राप्त करवा योग्य (२) पहोंचवा योग्य; पहोंची शकाय तेवुं (३) योग्य; लायक प्राप्तश्री वि० (बीजाने आधारे) जेणे वैभव मेळव्यो होय तेव् **प्राप्तार्थ** वि० इच्छित वस्तु प्राप्त करी होय तेव् होय तेव प्राप्तावसर वि० जेने योग्य तक मळी प्राप्ति स्त्री० मेळववं ते; पामवं ते(२) पहोंचवुं ते(३) मळवुं ते(४) गोचर; क्षेत्र (५) पूर्वकर्मनुं फळ (६) नसीब **प्राप्य वि**० जुओ 'प्राप्तब्य' । **प्राप्यरूप** वि० सहेलाईथी मेळवी सकाय **प्रावल्य** न० जोर; बळ (२) मुख्यता; उत्तमता (३) प्रामाण्य **प्राबोधिक** पृं० प्रभात; परोढ (२) सवारे उचित गीतो द्वारा बीजाने जगाडनार **प्राभव** न० उत्तमता;श्रेष्ठता प्राभंजनि पुं० हनुमान (२) भीमसेन प्राभातिक वि० प्रभातनुं प्राभृत, प्राभृतक न० भेट; नजराणुं प्रामाणिक वि० प्रमाणभूत; शास्त्रसिद्ध **प्रामाण्य** न० प्रमाणभूत होवापणुं(२) साबिती; प्रमाण **प्रामोदक, प्रामोदिक** वि० हर्षेकारक;

प्राप्य पुं० मृत्यु (२) उपवास बडे मोत लाववुं ते (३)मोटो भाग ; मोटो हिस्सो (४) पुष्कळता (५) [समासने अंते नीचेना अर्थोमां वपराय छे : लगभग, मोटे भागे (उदा० मृतप्राय); --थी भरपूर, पुष्कळ होय तेवुं (उदा० कष्टप्राय); –ने मळतुं (उदा० अमृतप्राय)] प्रायण न० शरूआत; प्रारंभ; प्रवेश (२) जीवननो मार्ग (३)जाणी जोईने मोत स्वीकारवुं ते(४)आशरो; आश्रय प्रायभव वि० सामान्यपणे बनतुं प्रायशस् अ० सामान्यपणे; मोटे भागे प्रायदिचल न० पाप धोई काढवा कर-वामां आवतां तप के विधि प्रायस् अ० घणुं करीने; सामान्य रीते (२)कदाच (३)पुष्कळ प्रमाणमां प्रायाणिक, प्रायात्रिक वि० मुसाफरी माटे जरूरी के ऊपयोगी एवं प्रायुध् ४ आ० युद्ध करवुं प्रायेण अ० घणुं करीने; मोटे भागे (२) कदाच; संभवित होय तेम प्राघोपगमन न० आमरणांत उपवास प्रायोपविष्ट वि० आमरणांत उपवास ि प्रायोपगमन ' करवा बेठेलुं प्रायोपवेश पुं०, प्रायोपवेशन न० जुओ प्रायोपवेशिन्, प्रायोपेत वि० जुओ 'प्रायोपविष्ट ' प्रारब्ध ('प्रारभ्'नुं भू० क्व०) वि० आरंभेलुं (२) न० आरंभेलुं कार्य (३) नसीब; भाग्य **प्रारम् १ आ० आ**रमवुं प्रारंभ पुं ॰ आरंभ ; शरूआत (२) प्रवृत्ति ; आरंभेलुं कार्य प्रार्थ् १० आ० विनंती करवी; याचना करवी (२) लग्न माटे मागणी करवी (३) आकांक्षा राखवी (४) तपास करवी (५) हुमलो करवो ; तूटी पडवुं

प्रार्थंक वि० प्रार्थना करनाकः; इच्छनारुं (२) पुं० अरजदार प्रार्थन न०, प्रार्थना स्त्री० याचना; मागणी (२) इच्छा (३) अरजी प्रार्थित पुं भिखारी; याचक (२) अरजदार; उमेदवार प्रार्थित ('प्रार्थ्'नुं भू०कृ०) वि० प्रार्थेलुं; याचेलुं (२) इच्छेलुं (३) शत्रु वडे सामनों के हुमलो करायेलुं प्रार्थिन् वि० प्रार्थना, याचना के इच्छा करतुं (२) हुमलो करतुं प्रालंब वि० लटकतुं; झूलतुं (२) न० छाती सुधी पहोंचतो हार के माळा प्रालेष न० बरफ; हिम प्रालेयाद्वि पुं० हिमालय प्रावरण, प्रावरणीय न० उत्तरीय वस्त्र प्रावार, प्रावारक पुं० उत्तरीय वस्त्र **प्रावारिक** पुं० उत्तरीय वस्त्र बनावनार प्रावीण्य न० कुशळता; निपुणता प्रावृ ५ उ० पहेरवुं (२)वींटी वळवुं;घेरवुं प्रावृद्काल पुं० वर्षाऋतु प्रावृष् स्त्री० वर्षाकाळ सिबंधी प्रायुषेण्य वि ० वर्षाऋतुमां थतुं ; वर्षाऋतु प्रावेष्य न० सुंवाळा ऊननी कामळी **प्रावेशिक** वि० प्रवेश संबंधी(२) प्रवेश माटे शुभ होय तेवुं प्राज्ञ (प्र+अश्) ९ प० खावुं(२) पीवुं प्राश पुं० खावुं ते; —खाईने जीववुं ते (२) अन्नः; भोजन प्राशस्त्य न० प्रशस्त; उत्तम होवापणुं प्राज्ञा स्त्री० तीव्र आशा; इच्छा प्राध्निक पुं० परीक्षक प्रास पुं० फेंकवुं ते; छोडवुं ते(२) एक जातनुं अस्त्र [वखते नंखाती) प्रासंग पुं॰ एक जातनी ध्ंसरी (पलोटती प्रासंगिक वि० गांढ संबंधथी नीपजत् (२) संबद्ध; संकळायेलुं (३) कोईंक वखत होतुं (हंमेश जोवा न मळतुं)

प्रासाद पुं० महेल; हवेली (२) राजमहेल (३)देवालय(४)अगाञ्ची प्रासादगर्भ पुं० महेलनी मध्यनो ओरडो ; महेलनो सुवानी ओरडो प्रासादतल न० महेलनी छत के अगाशी **प्रासादपृष्ठ** पु॰ महेलनी टोचे आबेलुं छज् के अगाशी प्रासादभृंग न० महेल के मंदिरनी टोच **प्रासादिक वि० प्रसाद – कृपा रूपे मळे**लुं (२)मायाळु; मित्रताभर्युं (३)सुंदर प्रास्ताविक वि० प्रस्तावना के उपोद्घात रूप (२) प्रस्तुत (३) प्रसंगोचित प्रास्थानिक वि० प्रस्थान – प्रयाणनाः समयने लगतुं(२)प्रयाण माटे उचित के अनुकूळ एवुं **प्राह** (प्र + अह) (परोक्ष भूतकाळन् रूप 'प्राह' ज वपराशमां छे) जाहेर करव् (२) बोलावव् **प्राहुण** पुं० अतिथि; परोणो प्राह्म पुं० दिवसनो प्रथम प्रहर प्रांग न० 'पणव' नामनुवाद्य प्रांगण (-न) नर्षे आंगणुं; फळियुं(२) माळ (घरनो) प्रांच वि० आगळतुं; सामेतुं (२) पूर्व तरफनुं(३)अगाउनुं [सीधुं; टटार प्रांजल वि० प्रामाणिक; सरळ (२) प्रांजलिन् वि० बे हाथ जोड्या होय तेव् **प्रांत** पुं० छेडो; किनारी (२) खूणो (जेम के, आंखनो) (३) सीमा; हद (४) छेडो; अंत प्रांतर न० निर्जन के वेरान रस्तो प्रांतविरस वि० अंते - परिणामे रस वितानुं नीवडनारुं प्रांतवृत्ति स्त्री० क्षितिज **प्रांश**ेवि० ऊर्चु; उन्नत (२)लंबायेलु; लांबुं (३)पुं० ऊंचो माणस प्राशुप्राकार वि० लांबी दीवालोवाळ प्रिय वि० वहालुं; मानीतुं (२) अनुकूळ;

प्रसन्न करे तेवुं (३) –चाहतुं होय तेवुं (४) मोंघं (५) पति; प्रीतमं(६) न० प्रेम (७) अनुकृळ – मनगमत् ते (८) मनगमता समाचार (९)ख्शी ; प्रसन्नता **प्रियक** पुं० एक जातनुं हरण (२) एक जातनो क**दंब** (नीप) (३) प्रियंगु लता (४) न० एक फूल ('अशन 'वृक्षनुं) **प्रियकारक** वि० प्रिय करनारुं (२) मायाळुतायी वर्तनारुं (३) मित्र ; हितैषी **प्रियकारित्व** न० मायाळुताथी वर्तवु ते प्रियकारिन् वि० मायाळुताथी वर्तनारु प्रियको स्त्री० 'प्रियक'हरणनु चामङ् **प्रियजन** पुं ० वहालुं माणस 🔝 एवी पति प्रियजानि पुं० पत्नी जेने अति प्रिय छे प्रियजीविता स्त्री० जीवन प्रिय होवं ते **प्रियतम** वि० सौमां अत्यंत प्रिय एवं (२) पुं०पति; प्रीतम **प्रियतमा** स्त्री० पत्नी; प्रिया **प्रियतर** वि०वध् प्रिय (बेनी तुलनामां) प्रियदर्श वि० देखवुं गमे तेवुं; मनोरम **प्रियदर्शन** वि० जुओ 'प्रियदर्श' (२) न० प्रियजन जोवा मळवूं ते **प्रियदर्शिन्** वि० कृपाद्ध्यियो जोनारु (२) पुं० अशोक राजा **प्रियदेवन** वि० द्युतप्रिय **प्रियधन्त** पु० शिव प्रियनिवेदन न० सारा समाचार प्रियप्रदन पुं० क्षेमकुराळ अंगे प्रदन **प्रियप्राय** वि० अत्यंत प्रेमाळ के मायाळु प्रियभाव पुं०प्रेमनी लागणी प्रियम् अ० गमतुं होय ते रीते प्रिथमंडन वि० शणगार जेने प्रिय छे तेवुं **प्रियवक्त** वि० खुशामतियुं **प्रियवचन** वि० प्रिय – मधुर बोलनाहं (२) न० प्रिय लागे तेवी वाणी **प्रियवाच्** स्त्री० मधुर वाणी **प्रियवादिन्** वि० प्रियं लागे तेवुं बोलनाहं; ख्शामातय्

प्रियसस पुं० वहालो मित्र **प्रियसस्त्री** स्त्री० वहाली के विश्वासु सस्ती प्रियसंवास पुं प्रियजननो सहबास श्रियसुहु**द्** पुं० प्रिय मित्र; खास मित्र प्रियस्बप्न वि० निद्रा जेने प्रिय छे तेवुं **प्रियहित** वि० हितकर तेम ज प्रिय **प्रियंकर** वि०प्रेमाळ; मायाळु प्रियंगु स्त्री० एक वेल (तेने स्त्रीना स्पर्शयी फूल बेसे छे) बनल प्रियंभविष्णु, प्रियंभावुक वि० प्रेमपात्र प्रियंबद वि० प्रिय लागे तेवुं बोलनारुं (२) पुं० एक पंखी प्रिया स्त्री० पत्नी; प्रियतमा(२)स्त्री (३) एक जातनुंमद्य प्रियास्य वि० सारा समाचार कहेनारुं प्रियाख्यान, प्रियाख्यानिक न० समाचार प्रियातिथि वि० जेने अतिथि प्रिय छे तेवुं प्रियाधान न० प्रिय करवुंते प्रियार्थम् अ० महेरबानी तरीके प्रियाहं वि॰ प्रेम अथवा मायाळुताने पात्र (२) मायाळ् प्रियाल पुं० एक वृक्ष; 'पियाल ' प्रियेण अ० खुशीथी प्रियोपभोग पुं० प्रिय जने (पुरुषे के स्त्रीए) करेलो उपभोग **पी ९** उ० खुश करवुं(२)खुश थवुं(३) स्नेह बताववो(४)राजी रहेवुं(५) ४ आ० संतुष्ट थवुं (६) –ना उपर प्रेम थवो; चाहवुं (७) १ प०, १० उ० ख्श करवु प्रीणन वि० खुश करतुं(२) न० खुश करवुं ते (३) खुश करनार वस्तु प्रीणित वि० खुश थयेलुं; राजी थयेलुं प्रीत ('प्री'र्नुभू० कृ०) वि० प्रसन्न ; खुश(२)राजी; आनंदी(३)संतुष्ट; तृप्त (४) प्रिय (५) मायाळु **प्रीति** स्त्री० खुशी; तृष्ति; **आनंद**;

संतोष (२) कृपा (३) प्रेम; ममता (४)रुचि; लगनी; व्यसन **प्रीतिदा**न न**ः, प्रीतिदाय** पुं० प्रेमथी अापेल धन आपेली भेट प्रीतिधन न० प्रेम के मित्रताने कारणे प्रीतिपूर्वकम्, प्रीतिपूर्वम् अ० प्रेमपूर्वक प्रोतिप्रमुख वि० मार्या**ळु;प्रेमभा**ववाळुं प्रीतिभाज् वि० प्रेमपात्र (२)संतुष्ट;खुश **प्रीतिमय** वि० प्रेम के **प्रीतिने** कारणे उद्भवेलुं(जेम के आं**सु) प्रीतियुज्** वि० प्रिय; **दहा**लूं प्रीतिरसायन न० प्रेम रूपी आंजण (२) प्रेम के आनंद उत्पन्न करनार पेय **प्रीतिसंयोग** पुं० प्रेमनो संबंध **प्रीतिस्तिग्ध** वि० प्रेमभीनुं(आंख) प्रीत्या अ० प्रेमथी; प्रीतिपूर्वक (२) खुशीमां आवीने; खुशीथी **प्रे** (प्र+इ) २ प० जवुं; पहोंचवुं(२) विदाय थवुं (३) मरण पामवुं प्रेक्ष् १ आ० जोवुं; निहाळवुं **प्रेक्षक** पुं० जोनारो (२) निरपेक्षपणे मात्र निहाळनार **प्रेक्षण** न० जोवुं ते;निहाळवुं ते(२) देखाव ; दृश्य (३) आंख (४) जाहेर देखाव के प्रदर्शन(५)नाटकनी रज्ञात प्रेक्षणक न० देखाव; आभास प्रेक्षणीय वि० जोवा योग्य; जोव्ं गमे तेवुं(२)विचारवा योग्य **प्रेक्षणीयक** न० देखाव; दृश्य प्रेक्सा स्त्री० जोवुं ते(२)देखाव(३) जाहेर दश्य के रजुआत(नाटक इ० नी) (४)विचार; विचारणा(५)शोभा; रमणीयता काम करनार्र **प्रेक्षाकारिन्** वि० डाह्युं; विचारीने **प्रेक्षागार** न० नाटचशाला; 'थियेटर' (२)सभागृह [भजवात्ं नाटक **प्रेक्षाप्रपंच, प्रेक्षाविधि** पु**० रंगभूमि** उपर प्रेक्षित ('प्रेक्ष् 'नुं भू०कृ०) वि० जोयेलुं; निहाळेलुं (२)न० दुष्टि; नजर

प्रेक्षिन् वि० जोतुं; निहाळतुं(२)*—*ना जेवी नजर के आंखवाळुं **प्रेत** ('प्रे'नुं० भू०क्रु०) वि**०** मृत्यु पामेलुं (२) पुं० मृत्यु बाद शरीरथी छूटो थयेलो जीवात्मा (३)भूत ; पिशाच(४) नरकनो निवासी जीव (५) पितृओ प्रतिकर्मं न० जुओ 'प्रेतकार्य' प्रेतकाय पुं० मडदुं भ्रे**तकार्य, प्रेतकृत्य** न० मरणपामेलानी अग्निदाह वगेरे उत्तरिकया प्रेतगोप पुं० मृत लोकोनो रक्षक (यमने त्यांनो) प्रेतपटह पुं० अग्निदाह वखते वगाडातुं प्रेतपति पुं० यमराज प्रेतमेध पुं । पितृओना श्राद्ध माटेंनो यज्ञ प्रेतराज पुं० यमराज प्रत्य अ० भरण पछी; परलोकर्मा प्रेत्यभाव पुं ०मृत्यु पछीनी जीवनी स्थिति **प्रेत्यभाविक वि० पारलौ**किक प्रेप्सा स्त्री० प्राप्त करवानी इच्छा **प्रेप्सु** वि० प्राप्त करवानी इच्छावाळुं **प्रेमन्** पुं०, न० स्तेह; हेत(२) प्रीति; रुचि (३)पुं० मजाक; हांसी प्रेयस् वि० वधु प्रिय('प्रिय'नुं तुलनात्मक रूप) (२) पुं० प्रेमी; पति (३)प्रिय मित्र (४) पुं०, न० खुशामत (५) हित (६)स्वर्ग वगेरे जेवुं प्रिय लागतुं फळ (कल्याणकर मोक्ष 'थी ऊलटुं) प्रेयसी स्त्री० पत्नी; प्रियतमा प्रेर्(प्र + ईर्) *–* प्रेरक० गतिमान करवुं (२)प्रेरवुं;धकेलवुं(३)उक्केरवुं(४) फेंकवुं; नाखवुं(नजर)(५)मोकलवुं प्रेरण न०, प्रेरणा स्त्री० प्रेरवं ते(२) प्रोत्साहन (३)आंतरिक स्फुरण (४) नाखबुं ते (५) मोकलबुं ते (६) आज्ञा प्रेरित ('प्रेर्'नुं भू० कृ०) वि० प्रेरेलुं; प्रेरायेलुं(२)मोक्लेलुं(३)पुं० दूत प्रेष् ४प० आगळ हांकवुं(२) उच्चारवुं; बोलवुं(३)फेंकवुं(४)१उ० जवुं

–प्रेरक० फेंकवुं(२)मोकलवुं (३) विदाय करवुं; काढी मुकवुं प्रेषण न० मोकलवुं ते (२) सोंपेलुं काम पार पाडवुं ते प्रेषणकृत् वि० सोपेलुं काम पार पाडनारुं प्रेषणा स्त्री० जुओं 'प्रेषण' प्रेषित ('प्रेष्'नुं भू० कृ) वि० मोकलेलुं (२)प्रेरेलुं; दोरेलुं(आंख इ०)(३) काढी मूकेलुं प्रेष्ठ वि० सीथी प्रिय('प्रिय'नुं श्रेष्ठता-दर्शक रूप) (२)पु० पति ; प्रियतम प्रेष्य वि० आज्ञा करवा लायक (२)पुं० दास (३) दूत प्रेष्यभाव पुं० दासपणुं | झूलवुं **प्रेंख् १** प० हाळवुं; कंपवुं (२) आम तेम **प्रेंख** पुं०, न० झूलो; हींचको (२) झूलवुं के हींचवुं ते [ते(३)हींचको **ब्रेंखण वि० भ**मतुं; घूमतुं(२)न०हींचबुं प्रेंखोल् १० उ० हींचवुं; झूलवुं; कंपवुं **प्रेंखोल** पुं०, प्रेंखोलन न० झूलबुं, हींचबुं के कंपवुंते **प्रैयरूपक** न० सुंदरता **प्रैष्य** पुं० दास; नोकर **प्रेष्यभाव** पुं० दासपणुं प्रोक्त ('प्र + बच्'नुं भ्० क्व) वि० कहेलुं; जाहेर करेलुं; उल्लेखेलुं प्रोक्ष्६प० पवित्र जळ छांटबुं(२) छांटीने शुद्ध करवुं (३)वध करवो प्रोच्चल १ प० चाली नीकळबुं; मुसाफरीए नीकळवुं प्रोच्चंड वि॰ अत्यंत भयंकर प्रोच्चारित वि० मोटेथी अवाज करतुं **प्रोक्वंस** अ० घणा मोटा अवाजथी **प्रोच्छल् १** प० वही नीकळवुं **प्रोच्छून** वि० सूजी के सूणी गयेलु प्रोच्छित वि० घणुं ऊंचुं **प्रोज्स्** (प्र + उज्झ्) ६ प० त्यागवुं ; तजवुं प्रोड़ी (प्र+उत्+डी)४ आ०ऊंचे ऊडवुं

प्रोड्डोन वि० ऊंचे ऊडेलुं के ऊडतुं प्रोत('प्रवे 'नुभू० कु०)वि० सीवेलुं (२) ताणानी पेठे लांबुं नाखेलुं ('ओत 'थी ऊलटुं) (३) बंधायेलुं; जकडायेलुं (४) परोवायेलुं (५)–मां थईने आवेलुं (६) जडेलुं; बेसाडेलुं (जेम के नंग) भीत्कट वि० घणुं मोटुं **प्रोत्कटभृत्य** पुं० मानीतो कारभारी; उच्च अमलदार प्रोत्थित वि० –मांथी नीकळेलुं के फूटेलुं प्रोत्फुल्ल वि० पूरेपुरं विकसेलु (२)खूब पहोळुं ऊघडेलुं (आंख) प्रोत्सारण न०, प्रोत्सारणा स्त्री० दूर करवुं ते (खसेडीने) **प्रोत्सारित** वि० खसेडेलुं; दूर करेलुं(२) धकेलेलुं; प्रेरेलुं(३)आपेलुं; बक्षेलुं **भोत्साहन न०** उत्साह आपवो ते ; उत्तेजन प्रोथ १ उ० बरोबरिया थवुं(२)पूरतुं थवुं(३)पूर्णे थवुं (४) हराववुं (५) वध करवो त्रोथ वि० प्रख्यात (२) मूकेलुं; स्थापेलुं (३)मुसाफरीए नीकळेलुं(४)पुं०,न० घोडानुं नसकोरुं (५) डुक्करना मोंनुं टोचलुं (६) पुं० कूलो प्रोषित (ंप्रवस् 'नुं भू० कृ०) वि० प्रवासे गयेलुं; परदेश गयेलुं प्रोषितभर्तृका स्त्री० जेनी पति प्रवासे गयो छे तेवी स्त्री (विरहिणी) प्रोष्टम वि० अत्यंत उष्ण – गरम प्रोज्यपापीयान् वि० घरथी दूर रहेवाने कारणे पापी के तुच्छ बनेल् प्रोह पुं० तर्क (२) हाथीनो पग के घूंटण **प्रोंछन** न० लूछी के भूंसी नाखबुंते (२)वधेलुं वीणी लेवुं ते प्रौढ वि॰ पूरेपूरुं विकसेलुं; परिपक्व; परिपूर्ण (२) पुरूत; आधेड (३) गाढ (४) भव्य (५) जोसीलुं (६) घृष्ट

(७) व्याप्त; रोकायेलुं (८) –थी परिपूर्ण; -थो भरेलुं(समासने छेडे) **प्रौढजलद** पुं० गाढुं वादळ प्रौढपाद वि० पग अंचे (पाटली उपर) मुक्या होय तेवुं प्रौढपुष्प वि० पूरां खीलेलां फूलवाळुं प्रौडप्रिया स्त्री० धृष्ट प्रियतमा प्रौढयौवन वि० जुवानीना पुरबहारमां होय तेवुं प्रौढाचाराः पुं० ब० व० धृष्ट वर्तण्क प्रौढांगना स्त्री० शरमाळ नहि तेवी -धृष्ट स्त्री प्रौढि स्त्री० प्रौढपणुं; परिपक्वता; परिपूर्ण विकास (२) वृद्धि (३) महानता (४) भृष्टता; गर्व **प्रौढित्व** न० भव्यता (२) धृष्टता **प्रौष्ठ** पुं० सांद्र; आखलो **प्रौष्ठप**र पुंच गानरवी महिनी प्रौष्ठपदा स्त्री०पूर्वाभाद्रपदा अने उत्तरा-भाद्रपदा नक्षत्र (२५ मुं अने २६ मुं) प्लक्ष पुं॰ पीपळो (२) पुराणोक्त सात द्वीपोमानो एक प्लक्षजाता स्त्री० सरस्वती नदी प्लव वि० तस्तुं (२) ठेकतुं (३) पुं० तरवुं ते (४) पूर आववुं ते (५) ठेकडो मारवो ते (६) होडकुं प्लबक पुं० कूदको मारनार (२) वांदरो(३)देडको [वपरातो घडो ष्लवकुंभ पुं० तरवामां (आधार तरीके) प्लबग पुं० वांदरो (२) देडको प्लबगराज पुं र सुग्रीव प्लवन वि॰ ढळतुं; नमतुं (२) न॰ तरवुं ते (३) डूबकुं; स्नान (४) अडवुं ते (५) कूदवुं ते (५) पूर प्लबंग पुं० वांदरों (२) देडको (३) पीपळो (४) हरण प्लवंगम पुं० वांदरो (२) देडको प्लाव पुं० कूदको ; ठेकडो (२) ऊभरावृं ते (३) गाळवुं ते (प्रवाहीने)

प्लाबन न० नाहवुं ते; डूबकुं लगाववुं ते
(२) ऊभरावुं ते (३) पूर
प्लाबित वि० तरतुं करेलुं (२) पूर
परी बळघुं होय तेवुं (३) मीनुं
ययेलुं; छंटकाव थयो होय तेवुं (४)
लंबावेलुं (स्वर) (५) न० पूर
प्लीहन् पुं० बरोळ
प्लु १ आ० तरवुं (२) होडी वडे
तरवुं (३) कूदवुं; ठेकबुं (४)
आमतेम हींचवुं (५) नाहवुं; डूबकी
मारवी (६) फूंकावुं (पवननुं)
--प्रेरक० तरे तेम करवुं (२) घोई
काढवुं (३) पूरमां डुबाडी देवुं
प्लुक्षि पुं० अग्नि; आग(२)तेल

प्लुत ('प्लु 'नुं भू०क्व०) वि० तरत्ं(२)
पूरथी डूबेलुं के ऊभरातुं (३) कूदेलुं
(४) लंबावेलुं (स्वर) (५) ढंकायेलुं;
व्याप्त (९) —मां नाहेलुं (७) न०
कूदको; ठेकडो (८) पूर
प्लुति स्त्री० पूर (२) कूदको;ठेकडो
प्लुष् १, ४, ९, प० बाळवुं; दझाडवुं
(२) ९ प० छांटवुं; भीनुं करवुं(३)
लेप करवो; खरडवुं (४)भरी काढवुं
प्लुष्ट ('प्लुष् ' नुं भू० कृ०) वि०
बळेलुं; दाझेलुं
प्लोष पुं० बळवुं ते; दाह
प्लोषण, प्लोषन् वि० बाळी नावतुं;
भस्मीभूत करतुं

फ

फविकका स्त्री० पूर्वपक्ष; चर्चानो विषय (२) पूर्वेग्रह (३) कपट; जाळ फट् अ० मंत्रतंत्रादिमां वपरातो एक उद्गार फट पुं० फणा; फेण फण् १ प० फरबुं; गमन करवुं –प्रेरक० तारवी लेवुं फण पुं० सापनी फेण (२) पुं०, न० नसकोरानो फेलावेलो भाग फणक पुं० कांसकी; दांतियो फणकर, फणधर पुं० साप फणधरघर पुं० महादेव; शंकर **फणभृत्** पुं ० साप **फणमंडल** न० सापनुं गूंचळुं **फणवत्** पुं॰ साप फणा स्त्री० सापनी फेण फणाकर पुं० साप [फणा फणाटोप पुं० फेलावेली के अंची करेली फणाधर पुं० साप [मनातो मणि फणामणि पुं ० सापनी फणा उपर रहेतो

फणामंडल न० जुओ 'फणमंडल' **फणावत्** पुं० साप फणिन् पुं० फणावाळो साप (२) राह (३) महाभाष्यना कर्ता पतंजिल **फणिपति** पुं० शेषनाग (२) बासुकि नाग फणिमुख न० चोर वापरे छे ते खातरिय् फणींद्र पुं० शेषनाग; अनंत फर्फर वि० अत्यंत चंचळ; चपळ फल् १ प० फळवुं; फळ उत्पन्न थवुं (२) सफळ थवुं (३) -ने हिस्से आवर्ष (४) फाडी नाखर्षु; चीरव् (५) प्रतिबिंब पडवुं फल न० वनस्पतिनुं फळ (२) परि-णाम; पेदाश; फायदो (३) संतति (४)फलक ; पाटियुं (५)फळुं (तरवार इ० नुं) (६) वृषण (७) प्रतिबिंब (८) हांसडी (सभानी) फलक न० पाटियुं; पाटी (चित्र, द्युत इ० माटेनुं) (२) कोई पण

सपाट स्थळ (३) ढाल (४) बाणन्ं

फळुं (५) लाकडानी बेठक; बेसवा माटेनुं पाटियुं (६) वल्कल (पहेरबा माटेनी वृक्षनी छाल) (७) कमळकोश फलतंत्र वि॰ पोतानो ज लाभ ताकनारं फलद वि० फळ आपनाएं(२)लाभदायी फलधर्मन् वि० (फळनी पेठे) परिषक्व थई, नीचे पड़ी, नाश पामतुं फलपूर पुं० बिजोर्स **फलप्रद** वि०फळ आपना हं (२) लाभ-फलप्रेप्सु वि० फळ मेळववानी इच्छा बिसतुं होय तेवुं राखनारु फलबंधिन वि० जेने फळ बंधातुं होय -फलभावना स्त्री० फळ मळवुं ते;सफळता फलभूमि स्त्री० करेलां कर्मोनां फळ भोगववानुं स्थान (स्वर्ग के नरक) फलयोग पुं क फळप्राप्ति; इष्ट वस्त् प्राप्त थवी ते (२) रोजी; महेनताणु फलबत् वि० फळयुक्त; जेने फळ बेसतां होय तेवुं (२) लाभदायी फलशालिन् वि० फळयुक्त; सफळ (२) फळ के परिणामभां हिस्सो मळवानो होय तेवुं फलिसिद्धि स्त्री० फळ प्राप्त थवुंते; इन्छित वस्तु सिद्ध थवी ते फलागम पुं० फळ बेसवां ते(२)फळनी मोसम; शरद ऋतु फलाढच वि० फळथी भरेलुं फलानुमेय वि० परिणामथी जेनुं अनुमान थई शके तेवुं **फलाहार** पुं० फराळ फलित ('फल्'नंभू० क्र०) वि० फळ बेठां होय तेवुं; फळ आपना६ं(२) सिद्ध थयेलुं (इच्छा) फलिन् वि॰ फळ बेसे तेवुं; फळयुक्त (२) लाभदायक; फळदायक (३) लोखंडना फळावाळु (४) पुं० वृक्ष फलिन वि० फळयुक्त; फळ आपे तेवुं फलिनी, फली स्त्री० प्रियंगुलता(आंबानी पत्नी गणाय छे)

फलेग्रहि, फलेग्राहिन् वि० मोसममां फळ आपनारुं (बंध्य न रहेनारुं) फलोदय पुं॰ फळनी उत्पत्ति (२) सफळ थवुं ते; इच्छित सिद्ध थवुं ते फलोब्गम पुं०फळ बेसवांते **फलोपजीविन्** वि० फळ वेचीने जीवनारुं फल्गु वि० तुच्छ; नमालुं; निर्माल्य (२) नकामुं; निरर्थेक; अगत्यनुं नहि तेवुं (३) नानुं; सूक्ष्म **फल्पुता** स्त्री० असारता; त्च्छता फल्गुन पु० फागण महिनो (२) इंद्र (३) अजुन फल्गुनी स्त्री० (एकवचन, द्वि०व० अने ब॰व॰मां)एक नक्षत्र(पूर्वा अने उत्तरा) फाणित न० उकाळेलो शेरडीनो रस; काकवी (२) दूधनी एक बनावट फाल पुं०, न० हळनुं फळुं (२) माथानी दरेक बाजु वाळ छूटा पाडीने ओळवा ते (३) कपाळ; भाल (४) **भारो;** एकत्रित बांधेलो झूडो (घास, लाकडां इ० नो) फालिका स्त्री० टुकडो **फाल्गुन** पुं० फागण मास (२) अर्जुन **फांट** पुं०, स्त्री० उकाळो; क्वाथ फ्टुक न० एक जातनुबस्त्र **फुट्टिका** स्त्री० एक जातना वणाटवाळुं [(३) चीस **फुत्कार** पुं० फूंकवुंते (२) फूंफाडी फुत्कु ८ प० फूंकवुं(२)चीस पाडवी

फुत्कृत वि० फूंकेलुं; फूंकीने ऊभुं

करेलुं (परपोटो) (२) चीस पाडी

होय तेवुं (३) न० फूंकीने वगाडाता

फुत्कृति स्त्री० जुओ 'फुत्कार' (२)

फुल्ल् १ प० खीलवुं;फुलबुं;विकसर्वु

फूंकीने वाद्य वगाडवुं ते (३) फूंफाडो

वाद्यनो अवाज (४) चीस

फुप्फुस पुं० फेकसुं

फुराफुरायते (फफडवुं)

फुल्ल वि० फूलेलुं; खीलेलुं; विक-सेलुं (२) प्रसन्न (३) ढीलुं (वस्त्र) फुल्लन न० फुलावबुं ते (पवनथी) फुल्ललोचन वि० (हर्षथी) विकसेलां नेत्रवाळुं फेण पुं० फीण [पर्वत फेणिसर पुं० सिंधुना मुख आगळनो फेणधर्मन् वि० क्षणभंगुर फेणप पुं० पोतानी मेळे गरी पडेलां फळ खाईने गुजारो करनार तपस्वी फेस्कार पुंचिस; सुसवाटो (बाण, पवन, जानवर इव्नो) फेन पुंच्जुओ 'फेण'; फीण फेनधर्मन् विच्जुओ फेणधर्मन्' फेनप पुंच्जुओ 'फेणप' फेनिल विच्फीणयुक्तत फेरब पुंच्ची शियाळ (२) धूर्त; लुच्चो (३) राक्षस

ब

·**बफ** पुं० बगलो (२) एक राक्षस (भीमे मारेलो) (३) एक राक्षस (श्रीकृष्णे मारेलो) भगत **बक्छतचर** पुं० (बगला जेवो) ठग-बकुल पु॰ एक फूलझाड (स्त्रीना मोना दारूनो कोगळो छंटाता फुली ऊठतो मनाय छे) (२)न० तेनुं फुल **बडि**श प्०, न०, **बडिशा, बडिशी** स्त्री० माछलां पकडवानी आंकडो बत अ० खेद, अनुकंपा, संबोधन, हर्ष, संतोष, आश्चर्य, निदा, सत्यार्थ --ए अर्थ दर्शावतो उद्गार तिनुं फळ बदर पुं० बोरनुं झाड;बोरडी(२)न० **बदरि** स्त्री० बोरडी **बदरिका** स्त्री० बोरडी(२)बोर **बदरी** स्त्री० बोरडी बद्ध ('बंध्'नुं भू० कृ०) वि० बांधेलुं; जकडेलुं (२)केद पकडेलुं; केद करेलुं (३) पहेरेलुं; धारण करेलुं (४) रोकेलुं; अटकावेलुं (५) रचेलुं (६) जडेलुं;चोंटाडेलुं(८)उत्पन्न करेलुं **बद्धकदंबक** वि०टोळे वळेलूं **बद्धग्रह** वि० आग्नहवाळुं **बद्धदृष्टि** वि० स्थिर नजरे जोतुं; जेनी दृष्टि स्थिर थई होय तेवुं बद्धनेपथ्य वि० रंगभूमिना वस्त्र पहेरेलुं

बद्धपरिकर वि० केड बांधेलुं; कटिबद्ध बद्धप्रतिश्रुत् वि० पडघा वडे गाजतुं बद्धभाव वि० -ना उपर प्रेमभाव बंधायो होय तेवुं बद्धमंडल वि॰ कूंडाळां बांध्यां होय तेवुं; कूंडाळामां गोठवायुं होय तेवुं बद्धमुष्टि वि० कंजूस; बांधी मूठीवाळुं **बद्धमूल** वि० ऊंडॉ मूळ नाख्यां होय तेवुं **बद्धमौन** बि॰ चूप रहेलुं बद्धराग वि० प्रेम बंधायो होय तेवुं **बद्धवेपथ्** वि० ध्र्जतुं बद्धवर वि० वेर बंधायु होय तेवुं **बद्धानंद** वि० आनंदयुक्त बद्धानुराग वि० –मां प्रेम बंधायो होय बद्धानुशय वि० पस्तावो करतुं (२) स्थिर संकल्पवाळुं बष् १ आ० [बीभत्सते] अणगमो थवो बिधर वि० बहेरं बिधरयति प० (बहेरुं करी नाखवुं) बिधिरित वि० बहेरं करेलुं बभ्र वि० लालाश पडता पीळा रंगनुं; पींगळुं (२) टालियुं (रोगथी) (३) पुं॰ अग्नि (४) नोळियो(५)पींगळा बाळवाळो माणस (६) चातक **बभुवाहन** पुं० अर्जुन –िचत्रांगदानो पुत्र बभू स्त्री० पींगळा रंगनी गाय

बर्बर पुं॰ (आर्य नहि तेवो) जंगली माणस (२) मूर्ख; जड **बर्बुर** पुं० बावळनुं झाड **बर्ह् १** आ ० बोलवुं(२) दान आ पवुं (३) वध करवो (४) विस्तरवुं **बर्ह** पुं०, न० मोरनुं पूंछ के पींछुं(२) कोई पण पंखीनुं पींछुं(३)पांदडुं बर्हभार पुं० मोरनुं पूंछ (२) तेनां पींछांनुं चामर **बहि** पु० अग्नि (२) न० दाभ ; दर्भ बहिण वि० मोरनां पींछांथी शणगारेलुं (२) पुं०मोर बहिणवासस् वि० मोरपींछवाळुं बाण बहिन् पुं० मोर वहिरुत्य पुं० अग्नि बहिषद् वि० दाभना साथरा उपर बेठेलुं (२) पुं० ब० व० पितृओ **बर्हिष्क** वि० दाभथी छवायेलुं (२) न० दाभ के तेनुं आसन बर्हिस् पुं०, न० दर्भः; कुशः(२)दाभनो साथरो (३) यज्ञ; आहत्ति (४) पुं० अग्नि (५) प्रकाश; कांति बल पुं॰ बलराम (२) कागड़ो (३) (इंद्रे हणेल) एक राक्षस (४) न० वळ; सामर्थ्य (५) बळात्कार; जोर-जुलम (६) लश्कर; सैन्य(७)बळनो देव(इंद्र इ०) (८) हाथ (९) यत्न बलक्ष वि० श्वेत; सफेद रंगवाळु बलक्षम् पुं० चंद्र बलज न० शहेरनो दरवाजो (२) खेतर (३)अनाज;अनाजनो ढगलो बलतापन पुं० इंद्र (बल नामना राक्षसने मारनार) बलद पुं० बलद **बलदेव** पुं० बलराम बलद्विष्, बलिन्ध्या पुं० इंद्र (बल नामना राक्षसने मारनार) बलप्रद वि० बळ आपनार्

बलभन्न पुं० बळराम बलभिव् पुं० इंद्र; जुओ 'बलतापन' **बलमुख्य** पुं ० सेनापति बलराम पुं० बळदेव; कृष्णना मोटा भाई बलवत् वि० बळवानः मजबूत (२) गाढुं (अधारुं इ०) (३) सत्तावाळुं (४) अगत्यनुं; महत्त्वनुं (५) लक्ष्कर-बाळुं (६) अ० मजबूत रीते; दृढ रीते (७) अत्यंत बलशालिन् वि० बळवान बलसमुत्यान न० लश्करनी भरती करवी बलस्थ वि॰ बळवान (२)पुं॰ योद्धो बलहुन् पुं० इंद्र; जुओ 'बलतापन' बला स्त्री० अत्यंत शक्तिशाळी एवी अस्त्रविद्यानो मंत्र(२)एक वनस्पति -- औषधि ('नागवेल'के 'जयंती') बलाक पुं० बगलो बलाका स्त्री० बगली बलाकिन् वि० खूब बगलांवाळुं **बलात्** अ० बळथी; जोरजुलमथी बलात्कार पुं० बळ वापरदुं ते;जोर-जुलम (२) अत्याचार बलात्कृत वि० बळात्कार करायेलुं बलाध्यक्ष पुं० सेनाधिपति बलाबल न० (आपेक्षिक) बळ तथा बलालय पुं० लक्करनी छावणी बलाह पुं० पाणी बलाहक पुं० मेघ; बादळ बलांगक पुं० वसंत ऋतु बलि पुं० होमवानी के देवने अर्पवानी वस्तु (२) पूजन (३) भोजन वखते वधेलो अवशेष (४) देवने चडावेलं प्राणी(५)कर; वेरो(६)विरोचननो पुत्र – प्रसिद्ध राक्षसराज (वामना-वतारे तेने पाताळमां दबावी दीधो ह्तो) (७)स्त्री० वाटो;गडी (जेसके पेट उपरनी) (८) मोभारो (छापरानो) बलिकिया स्त्री० कपाळ उपरनी रेखा बलिदान न० देव इ०ने बिल अर्पनो ते

बलिन् वि० बळवान; मजबूत (२) पं० बलराम बलिन, बलिभ वि० गडी के वाटावाळूं बलिभुज्, बलिभोज, बलिभोजन पुं० [कर्यों होय तेवुं कागडो बलिमत् वि० बलिनो सामान तैयार **व्यक्तिधान** न० बिल अर्पवोते **बलिञ्याकुल** वि० बलि अर्पवामां लागेलुं बलिष्ठ वि० ('बलवत्' के 'बलिन्'-नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) सीयी बळवान बलीक पुं० छापरानी छेडानी भाग बलीयस् वि० ('बलवत्' के 'बलिन्' नुं तुलनात्मक रूप) वधु बळवान बलीवर्द पु० बळद बलीश पुं कागडो (२) कपटी माणस बलेन अ० बळजबरीथी **बलोत्कट** वि० अति बळवाळुं **बलोपपन्न, बलोपेत** वि० बळवान **बलोघ** पुं० मोटुं सैन्य बल्लव पुं० गोवाळियो (२) रसोईयो (३) भीम (विराटने त्यां रसोईया तरीके घारण करेलुं नाम) बल्लवयुवति (-ती) स्त्री० जुवान गोपी बल्लवी स्त्री० गोवाळण बष्कयणी (--नी), बष्कयिणी (-नी) स्त्री० जुवान वाछरडावाळी गाय(२) घणां वाछरडांवाळी गाय बस्ति स्त्री० नाभिनी नीचेनो भाग; पेडु बस्तिक पुं० एक जातनुं बाण(खेंची काढतां पण जेनुं फळुं शरीरमां रहे) बहुल वि० घणुं बधारे; पुष्कळ (२) गाढ (३)गुच्छादार;गूंचळियुं(४)दृढ बहुलित वि० गाढुं थयेलुं; दृढ़ थयेलुं बहिरंग वि० बहारनुं;बाह्य **बहिरुपाधि पुं० बा**ह्य संजोग के परि-स्थिति करनारुं **बहिर्दृश्** वि० उपरचोटियो विचार **बहिर्मुख** वि० बाह्य वस्तुओ प्रत्ये आसक्त (२) विमुख

बहियात्रा स्त्री०, बहियान न० परदेश िविनानुं ; अञ्यय बर्हिविकार वि० विकार के फेरफार बिहिश्चर वि० बहार आवेलुं; बहार फरतुं; बाह्य वहिष्करण न०, बहिष्कार पुं० बहार काढवुं ते (२) नात बहार मूकवुं ते विहिष्कु ८ उ० बहिष्कार करवी **बहिष्प्राण** पुं० शरीर बहार पोतानो बीजो जीव होय तेना जेवुं वहालुं होय ते(२)धन;मालमिलकत **बहिस्** अ० बहार(२)बारणा बहार (३) सिवाय (४) पृथक्; भिन्नपणे बहिःसंस्थ वि० (शहेर)बहार आवेलुं बहु वि० घणुं; पुष्कळ(२)संख्याबंध (३)वारंवार थतुं के करातुं(४)मोटुं (५) (सभासना पूर्वेपदमां)-जेमां घणुं होय तेवुं (उदा० 'बहुकंटक '= धणा कांटावाळुं) (६)अ० अत्यंत बहुकर वि॰ घणी रीते उपयोगी (२) उद्यमी (३) पुं० झाडु काढनार(४) सूर्य **बहुंकार** न० पुष्कळ होवापणुं बहुकारी स्त्री० सावरणी **बहुक्षम** वि० धीरजवाळुं [योगवाळ् बहुगुण वि० घणा गुण, प्रकार के उप-**बहुच्छल** वि० छळकपटवाळुं बहुजन पुं र घणी मोटी संख्यानां माणसो बहुतिय वि० घणुं लांबुं(समय);घणा दिवसी वीत्या होय तेव् **बहुत्ण** न० घास जेवुं त्च्छ निरुपयोगी होय ते **बहुया** अ० बहुधा; धणे प्रकारे **बहुदर्शक, बहुदरिशन** वि० विचारीने काम करनारुं;शाणुं बहुदोष वि० घणा दोष के जोखमवाळुं **बहुधन** वि० अति धनवान **बहुधा** अ० अनेक प्रकारे; विविध रीते (२)वारवार (३)अनेक स्थळे ; अनेक दिशामां

बहुनाडिक पुं० शरीर बहुनाडीक पुं० दिवस (२) थांभलो बहुप्रकारम् अ० घणा प्रकारे बहुप्रपंच वि० घणा विस्तारवाळुं बहुभाष्य न० वातोडियापणुं बहुभूमिक वि० घणा माळवाळुं बहुभोग्या स्त्री० वेश्या **बहुमत** वि० घणाओमां आदर पामेलुं (२) घणो आदर पामेलुं (३) घणा मत के अभिप्रायवाळुं **बहुमति** स्त्री० मोटो आदर; संमान बहुमन् ४ आ० मोटुं मानवु; कीमती मानवुं; मानीतुं गणवुं **बहुमान** पुं० अति आदर; संमान **बहुमाय** वि० तरकटी; दगाबाज **बहुमार्गगा** स्त्री० गंगानदी(२)व्यभि-चारिणी के स्वच्छंदी स्त्री बहुमुख वि० अत्यंत; पुष्कळ **बहुमूल्य** वि० मूल्यवान; कीमती **बहुरूप** वि० घणां रूपवाळुं(२)चित्र-विचित्र; काबरचीतरुं **बहुल** वि० गाढ; घाडुं(२)पहोळुं; विस्तृत (३) अतिशय; पुष्कळ(४) -थी भरेलुं; -थी पूर्ण(५)पुं० कृष्णपक्ष बहुलम् अ० वारंवार **बहुलजितिमन् पुं०** कृष्णपक्षनी काळाश बहुला स्त्री० गाय **बहुलित** वि० वधारेलुं बहुलीफ़ ८ उ० जाहेर करवु; बहार पाडवु(२)गाढ बनाववु(३)वधारवुं बहुलीभाव पुं० नामीचा थवुं ते; जाणीता थवुं ते; जाहेर थवुं ते बहुलीभू १ प० वधवु (२) जाहेर थवुं; प्रसिद्ध थवुं; नामीचा थवुं **बहुविध** वि० बहु प्रकारनुं **बहुद्रोहि** वि॰ पुष्कळ चोखावाळुं(२) पुं० एक समास (व्या०) बहुशस् अ० अत्यंत होय तेम (२) वारं-वार (३) सामान्यपणे

बहुशास वि० घणी शास्त्राओवाळुं(२) फेलातु, एकाग्र के निश्चित नहीं तेवुं **बहुश्रुत** वि० विद्वान; पंडित (२) वैदोमां पारंगत **बहुसस्य** वि० घणां जानवर **के** प्राणी-**बहुसाहस्र** वि० हजारोनी संख्यावाळुं **बहुदक** पुं० एक प्रकारनो भिक्षु(घेरघेर भिक्षा मागीने जीवतो); 'कुटीचक ' **बहुपमुक्त** वि० धणा उपयोगमां आवतुं के लेवातुं **बहुपाय** वि० असरकारक **बह्वपाय** वि० धणां जोस्नमनाळुं बंदि पु॰ बंधन; केद(२)केदी **बंदिन्** पुं० बंदी; चारण बंदिस्थित वि० केदमां पूरेलुं – पडेलुं **बंधी** स्त्री० जुओ 'बंदि' **बंघ् ९** प० बांधवुं ; जकडवुं (२)पकडवुं: केद करवुं ; बेडीमां नाखवुं (३) रोकवुं ; दबाववुं (४) खेंचवुं; पकडी राखवुं (जैम के आंखोने) (५)-उपर स्थिर करवुं; (जेम के आंख के मनने) (६) साथे बांधवु (जैम के वाळने)(७)रचवुं; बांधवुं; गोठववुं (८) उत्पन्न करवुं (फळ इ०) (९) घारण करवुं (भाव; लागणी) (१०) शिक्षा करवी बंध पुं• बंधन;गांठ (२) चोटलानी गांठ (३)सांकळ; बेडी (४)पकडयुं ते (५) केद(६)गोठववुं - रचवुं ते(७)लागणी; भाव(८)संबंध(९)जोडवुं ते(१०) पाटो (११) अभिव्यक्ति; प्रदर्शन (१२)संसारबंधन ('मोक्ष 'थी ऊलटुं (१३)परिणाम (१४)आसन ; बेसवा वगेरेनी रीत(१५)कवितानां चरणोनी गोठवणी (१६) (नदीनी)सामे पार सुधीनो वांध | नाखबुं ते **बंधकरण** न० केद पकडवुंते; बेडीमां बंधकी स्त्री० व्यभिचारिणी; वेदया **बंधन** वि० बांघनारुं(२)रुकावटकर-नारं(३) (समासने अंते) -ने आधारे

रहेलुं(४)न० बांधवुं ते; गांठ वाळवी ते (५) आसपास चींटाळवुं ते (६) गांठ (७)केद (८) सांकळ (९) केदखानुं (१०)रचना (११) दांडी (फूल इ० नी) (१२)स्नायु (१३)संसारबंधन बंधु पु० सगुं; संबंधी (२) सोबती;साथी (३) मित्र (४) पति (५) भाई (६) जन्म अमुक वर्गमां होय पण ते वर्गना गुणो विनानुं ते (उदा० 'क्षत्रबंधु') बंधुकृत्य न० सगा-संबंधी तरीकेनुं कर्तव्य (२) मित्रताभर्युं कृत्य **बंधुजन पुं॰ सगुं**; नातीलुं (२) सगां-संबंधीनो आखो वर्ग **बंधुजीव** पुं० एक फूलझाड (२) न० तेनुं फूल (बपोरना ऊघडे छे) **बंधुता** स्त्री० संबंधीवर्ग (२)संबंधीपणु बंधुत्व न० बंधुपणुं; सगाई;मित्रता बंधुदा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री बंधुप्रीति स्त्री० संगांसंबंधीनो प्रेम (२) मित्र माटेनो प्रेम 🏻 [संबंधीयी **घेरा**येलुं बंधुमत् वि० सर्गासबंधीवाळुं(२)सगा-बंधुर वि॰ असमानः; ऊंचुंनीच्ं (२) नमी गयेलुं (३) बांकुं (४) सुंदर; मनोरम (५) न० ताज; मुगट (६) दोरडुं; बंध **बंधुरित** वि० वळेलुं; नमेलुं बंधुल वि० नमेलुं(२)मनोहर(३)पुं० जारज संतान (परस्त्रीनुं परपुरुषथी) बंधूक पुं०एक वृक्ष (२) न० तेनुं फूल बंधूर वि० असमान; ऊँचुनीचुं (२) मनोहर (३) बांकुं ; नमेलुं (४) न**्बाकुं बंध्य** वि० बांधवायोग्य;केद पकडवा योग्य (२) वंध्य ; निष्फळ बंध्या स्त्री० वंध्या;वांझणी बंध्यापुत्र, बंध्यासुत पुं० वांझणीना पुत्र जेवी असंभवित वस्तु बंहिष्ठ वि० ('बहुल'नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) अतिशय;पुष्कळ(२)घणुंनीचुं के ऊंडुं (३) घणुं मजबूत के दृढ

बाढ वि० दृढ; मजबूत(२)पुष्कळ बाहम् अ० हा, खरेखर, चोक्कस-ए अर्थो बतावे छे **बाण** पूं॰ तीर; शर (२) शरीर (३) पुं०, न० आसमानी रंगनुं एक फूल बाणगोचर पुं० बाण पहोंचे तेटलुं क्षेत्र बाणतूण, बाणि पुं० बाणनो भाथो बाणपात पुं० बाध जाय तेटलुं अंतर (२) जुओ 'बाणगोचर '(३)बाणशय्या बाणयोजन न० बाणनो भायो **बाणरेखा** स्त्री०बाणथी थयेलो लांबो घा बाणसंधान न० पणछ उपर बाण चडाववं ते बाणाश्रय पुं० भाथो **बाणासन** न० धनुष्य बादर वि० बोरडीनुं (२) कपासनुं बनेलुं (३)स्यूल;मोटुं(सूक्ष्म 'थी ऊलटुं) बादरायण पु० ब्रह्मसूत्रना कर्ता मुनि (सामान्य रीते वेदव्यास गणाय छे) **बादरायणसंबंध** पुं० काल्पनिक अथवा पराणे घटावेलो संबंध बाध् १ आ० त्रास आपवो;पीडवुं(२) अटकायत करवी; रोकवु (३)हुमलो करवो (४) ईजा करवो (५) दूर करवुं बाध पुं० जुओ 'बाधा' बाधक वि० पीडनारुं; त्रास आपनारुं; पजवनारुं (२) रद करनारुं (३) अटकायत करनारु **बाधन** न० त्रास; पजदणी बाधा स्त्री० पीडा; त्रास(२)पजवणी (३) ईजा; हानि (४) जोखम(५) सामनो; विरोध; खंडन बाधित ('बाध्'नुभू०कृ०) वि० त्रास, पजवणी के पीडा थयां होय तेवुं (२)खंडन करेलुं; रद करेलुं बाधिर्य न० बहेरापण्

बाध्य वि॰ पीडा, सामनो, विरोध,

अटकायत के खंडन करवा योग्य

बार्हस्यत पुं० **ए**क संवत्सरन् नाम बार्हस्पत्य पु० बृहस्पतिनो एक अनुयायी (नास्तिकवाद शीखवनार) (२) नास्तिक (३)न ० बृहस्पतिनुं अर्थशास्त्र बाल वि० नानुं (उंमरमां के विकासमां) (२) तरतनुं ऊगेलुं (सूर्यं) (३) मोटु थतुं (पडवाना चंद्रनी पेठे) (४) अज्ञ; बिनअनुभवी (५)पुं० बाळक (६)छोकरो; सगीर (सोळ वर्षथी नानी वयनो) (७) मूर्ख (८) वाळ बालक वि० नानी उंमरनुं; बाळक जेवुं (२)अज्ञ (३)पुं० नानो बाळ; छोकरो (४)सगीर (५) मुर्ख (६) बाळहाथी (पांच वर्षनी वयनो) **बालकुंद** न० ताजूं कुंद पुष्प बाल खिल्य पु० जुओ 'वाल खिल्य' बालचरित न० बाळपणनी क्रीडा (२) बाळपणनुं चरित्र बालचर्या स्त्री० बाळकनुं आचरण बालचंद्र, बालचंद्रमस् पु० नानी चंद्र (वधतो जतो)(२) अमुक आकारनुं बाकुं (चोरे भींतमां पाडेलुं) बालचूत पुं० नानी आंबो बालतृण न० नानुं – कुमळुं घास बालिध पुं० बाळवाळु पूछडु बालबोध पुं० बाळकोनुं शिक्षण (२) शिखाउ माटे तैयार करेल ग्रंथ बालभार पुं० वाळना भारवाळुं पूंछडुं बालभाव पु॰ बाळपण (२) घणा वाळ ऊगवा ते (३) बाळको (आखो वर्ग) बालमित्र पुं० बाळपणथी ज मित्र एवो ते बालमृणाल पुं० कमळनो कोभळ तंतु बालसता स्त्री० नानी — कुमळी वेल **बालव्यजन न०** चामर बालहस्त पुं० वाळवाळूं पूछडुं बाला स्त्री० बाळकी; छोकरी(२) सोळ वर्षनी नीचेनी जुवान छोकरी (३)युवती (सामान्यपणे)

बालाप्र न० वाळनी अणी के छेडो (२) छापरा नीचेनुं कबूतरखानुं **बालातप** पुं० सवारनो तडको बालारण वि॰ ऊगता सूर्य जेवुं लाल (२)पुं० सवारनो सूर्य बालार्क पुं० तरतनो ऊगेलो सूर्य बालावबोध पु०, बालावबोधन न० बाळकोनुं – छोकराओनुं शिक्षण बालाबस्थ वि० नानी उंमरनुं; बाल्या-वस्थामां होय तेवुं बालि पुं० वालि; वानरोबो राजा बालिका स्त्री० बाळा; बाळकी **बालिकः** वि० बाळक जेवुं; छोकरवाद (२)नादान; बेसमज(३)पुं० मूर्ख के जड माणस(४)नानो छोकरो बालिशोक् ८ उ० (बालिश जेवुं) नादान के अविचारी करी मूकवुं बालेय वि० बलि – आहुतिने योग्य बालेंदु पुं० (शुक्लपक्षनी शरूआतनी) नानो चंद्र (जे रोज वधे छे) बाल्य न० बाळपण; बाल्यावस्था(२) नानी – वधवा योग्य स्थिति (चंद्रनी) (३) समजशक्तिनी अपरिपक्वता(४) अज्ञान; बेसमज (५) निर्दोष अवस्था (गर्वे इ० दोष विनानी) बाल्हिक, बाल्हीक पुं० बाल्हिक लोकोनो राजा (२) बल्ख जातिनो घोडो (३) ब०व० ते जातिनालोक (४) न० केसर (५) हिंग बाष्प पुं० आंसू(२)वराळ बाष्पकल वि० आंसुने कारणे अस्पष्ट बाष्पकंठ वि० आसूथी रूंधायेल बाष्पदुर्दिन वि०आंस्थी घेरायेल (आंख) बाष्पपूर पु० आंसुनुं जोरथी बहेबं ते बाष्पप्रकर, बाष्पप्रसर पुं० आंसु वहेवां तें बाष्पविक्लव वि० आंसुयी विकळ थयेलं बाष्पाकुल वि॰ आंसुधी झंखवायेलुं के विकळ बनेलुं | काढवी) बाष्पायते आ० (आंसु सारवां; वराळ

बाल्पांब् न० आंसु बास्तिक न० बकरांनुं ट्नेळुं **बाहा** स्त्री० **बाहु; बाहु-**लता **बाहोक** वि० बहारनुं; बाह्य **बाहु** पुं० भुजा; हाथ **बाहुब**ल न० हाथनुं जोर;स्नायुनुं जोर **बाहुबंधन** पुं० पीठना उपरना भागमां आवेलुं सभानुं पहोळुं हाडकुं (२)न० (आसपास) हाथ वींटवा ते **बाहुल** पुं० अग्नि **बाहु**ल्य न० बहुपणुं; पुष्कळपणुं (२) विविधता(३)सामान्य रीत बाहुल्यात्, बाहुल्येन अ० सामान्य रीते (२) धणे भागे **बाहुविक्षेप** पुं० आम तेम हाथ नाखवा के हलाववा ते (२) तरवंते बाहुञ्जुत्य न० बहुश्रुतता; विद्वत्ता **बाह्रस्तेपम् अ**० हाथ ऊंचा करीने बाह्य वि० बहारनुं;बहार आवेलुं(२) परदेशी; अजाण्युं (३) --नी सीमा बहारनुं(४)नात बहार करेलुं(५) जाहेर (६) पुं० अजाण्यो; परदेशी (७)नात बहार मूकेलो माणस बाह्यिक न० केसर **बाह्मिकाः** पुं० **ब**०व० 'बात्हिक' जातिना लोक बाह्मीक न० केसर बाह्मीकाः पुं० ब० व० जुओ' बाह्मिकाः' बाह्वंतर न० छाती(बे बाहु वच्चेनुं स्थळ) बांघव पुं० सगुं; संबंधी(२)भित्र(३) भाई (४) बंधुकृत्य; मित्रनी मदद बांधवजन पुं० सगासंबंधीनी समूह बिडाल पुं० बिलाहो बिडीजस् पुं० इंद्र **बिब्बोफ पुं०** एक कामचेष्टा; गमवा छतां अनादर दाखववो ते (२) अभि-मानमां अनादरनो देखाड करवा ते बिभित्सु वि० भेदवानी इच्छावाळूं

बिभीषण वि० डरावतु; विवरावतु; भयंकर(२)पुं० रावणनो नानो भाई; विभीषण [तेवी वस्तु बिभीविका स्त्री० डर; भय(२) डरावे **विश्वविज्ञव**ुपुं० अग्नि **बिरुद** पुं० जुओ 'विरुद' बिल पु० उच्चैःश्रवा (इंद्रनो अरव) (२) न० बाकुं; छिद्र; दर; बखोल बिलयोनि वि० इंद्रना अश्व -- उच्चै:-श्रवानी जातनुं के वंशनुं बिलेक्सय पुं० साप (२) उंदर (३) ससलूं **बिल्ब पुं॰ बीली**नुं झाड (२)बीलुं बिस न० कमळनो रेसो के रेसावाळो दांडलो (२) कमळनो छोड के वेल **बिसकुसुम** न० कमळ विसगुच पुं० कमळना रेसानी दोरी **बिसतंत्** पुं० कमळनो रेसो **बिसपुरुप, बिसप्रसून** न० कमळ बिसिनी स्त्री० कमलिनी; कमळनी वेल (२)कमळनो समूह बिंदु पुं० टीपुं; टपकुं (२)मींडुं(३) हाथीना शरीर उपर करेलुं रंगनुं टपकुं (४) शून्य (५) अनुस्वार (व्या०) विदुष्युतक पुं० एक जातनी शब्द-रमत विद्वय आ॰ (टीपां बनवां; टपकवुं) बिब पुं॰, न॰ जेनुं प्रतिबिब पड्यं होय ते(२)सूर्यचंद्रनुं मंडळ(३)मंडळाकार कोई पण वस्तु (उदा० नितंबविव) (४)प्रतिबंब; पड़छायो (५)अरीसो (६) मूर्ति(७)बीबुं(८)न० घिलोडुं **विक्फल** न० घिलोडुं **बिक्सार** पुं० मगधनो एक राजा(बुद्धनो समकालीन) **बिबोप्ड, बिबोध्ड** वि० पाका घिलोडा जेवा होठवाळुं (सुंदर गणाय छे) **बीज** न० वियुं; वी (२) मूळ ; मूळकारण (३)वीर्य(४)नाटक के कथानुं मूळ वस्तु (५)पुं० बिजोर्

बीजक पुं० बिजोर्स (२) घणां बीजवाळां केटलांक फळोनुं नाम (३)न० यादी (४) बीज; बी बीजगणित न० अक्षरगणित; 'एल्जिब्रा' बीजनिर्वापण न० बीज वावदां ते **बीजन्यास पुं०** नाटकना वस्तुनुं बीज प्रगट करवुंते **बीजपुष्प, बीजपूरण** पुं० विजोरानुं झाड बीजवाप पुं० बीज बावनारो; खेडूत बीजाकृत वि० बीज वावेलुं(सेतर) **बीजांकुर** पुं० बीजमांथी फूटेलो फ**णगो बीअत्स** वि० चीतरी चडे तेवुं (२) बिहामणुं; घोर (३) पुं र तिरस्कार; चीतरी; अणगमो (४) न० चीतरी चडे तेवुं कांई पण बुक्क पुं०, न०, बुक्कन् पुं० हृदय(२) बुक्कस पुं० चांडाळ **बुक्का** स्त्री० हृदय **बुक्कार** पुं० सिहनी गर्जना **बुक्की** स्त्री० हृदय **बुद्ध** ('बुध् 'नुं भू० कृ०) वि० जाणेलुं; समजेलुं (२) जागेलुं (३) निहाळेलुं (४)समजणवाद्धं; डाह्यं (५)विक-सित (६) पुं• गौतमबुद्ध (७) ज्ञानी के डाह्यो माणस; ऋषि(८) परमात्मा (९) न० ज्ञान बुद्धि स्त्री० वस्तुने जाणवानी चित्तनी आकलन-के समज- शक्ति; अक्कल (२) समज; ज्ञान; माहिती (३) विवेक; डहापण (४) मन(५)तरत-बुद्धि (६) मान्यता; अभिप्राय (७) हेतु; प्रयोजन (९) (मुर्छामांथी) भान-मां आवर्षु ते (१०) उपाय (११) महत् तत्त्व(सांख्य०) **बुद्धिकृत्** वि० मानतुं; धारतुं **बुद्धिकृत** वि० बुद्धिपुरःसर करेलुं **बुद्धिजीविन्** वि० बुद्धि वडे जीवतुं; विचारपूर्वक वर्ततु

बुद्धिपूर्वकम्, बुद्धिपूर्वम् अ० जाणी-बुजीने; समजी-विचारीने बुद्धिप्रागलभी स्त्री० विवेकबुद्धिनी सचोटता के परिपक्वता बुद्धिभेद पुं० बुद्धिन् डामाडोळपण् बुढिमस् वि॰ बुद्धिमानः; बुद्धिशाळी (२) बुद्धिशक्तिवाळुं (३) डाहर्युः; समजदार(४)तीक्ष्ण बुद्धिवाळुं बुद्धिलक्षण न० बुद्धिनी निशानी **बुद्धिलाघव** न० उपरचोटियाके तुच्छ एवी बुद्धि; अपरिपक्व बुद्धि बुद्धिशस्त्र वि० बुद्धि वडे सज्ज **बुद्धिहीन** वि०बुद्धि वगरनुं; बेवक्फ बुद्धोंद्रिय न० ज्ञानेंद्रिय (श्रोत्र, त्वचा, आंख, जीभ, नासिका) बुद्धचवज्ञान न० पोतानी बुद्धिनी अवगणना के अनादर **बुद्बुद** पुं० परपोटो बुष् १ उ०, ४ आ० जाणवुं; समजवुं (२) निहाळवुं; जोवुं (३) मानबुं; धारवुं(४)ध्यान आपवुं(५)विचारवुं (६) जागवुं; ऊंघमांथी ऊठवुं (७) भानमां आववुं –प्रेरक० उ० जणाववुं (२)शीखववुं (३) सलाह आपवी (४) सजीवन करवुं; भानमां लाववुं (५) जाग्रत करवुं (६) खिलाववुं ; विकसाववुं बुध वि० डाह्युं;शाणुं;समजदार(२) बुद्धिशाळी (३)जागतुं (४)पुं० डाह्यो माणस (५) देव (६) एक ग्रह बुध्न पुं० वासणनी नीचेनुं बूधुं – तळियुं **बुभुक्षा** स्त्री० भूख; खावानी इच्छा (२) कांई पण भोगववानी इच्छा **बुभुक्षित** वि० भूरूयुं; भूखयी पी*चा*तु बुभुक्ष वि० भूरुयु (२) भोगनी इच्छा-वाळु(' मुमुक्षु 'थी ऊलटुं) [जारी बुभुत्सा स्त्री० जाणवानी इच्छा; इंते-**बुभुत्सु वि०** जाणवानी इंतेजारीवाळुं

बुभूष् वि० बनवा के यवानी इच्छावाळुं (२)समर्थ के समृद्धिमान बनवानी इच्छावाळुं(३)-नुं हित इच्छतुं **बुंद् १** उ० जोवुं; निहाळवुं विचारवुं; समजवुं (३)सांभळवुं **बुंध् १०** प० बांधवुं(२)**१** उ० जुओ 'बुंद्' बृह १,६प० वधवुं (२) गर्जवुं बृहत् वि० मोटुं; विशाळ (२) पहोळुं; विस्तरेलुं (३) अफाट;पुष्कळ (४) बळ-वान(५)लांबुं; ऊँचुं(६) स्त्री० वाणी (७) न० देद (८) एक साममंत्र बहती स्त्री० मोटी वीणा (२) नारदनी वीणा (३) वाणी बृहद्भानु पुं० अग्नि (२)सूर्य **बृहस्पति** पुं**० दे**वोना गुरु (२) एक ग्रह ब्रंह १,६प० वधवुं(२) गर्जवुं(३) १ प०, १० उ० बोलवुं (४) चळकवुं **बृंहण** वि० पोषतुं(२)न० गर्जना (हाथीनी) (३) पोषवुं ते बृंहित ('बृंह् 'नुं भू०ऋ०) वि० वधेलुं; विकसेलुं (२) गर्जेलुं (३) न० गर्जना (हाथीनी) बेह १ आ० प्रयत्न करवो बैल वि० बिल – दरमां रहेना हं **बेंबिक** पुं० स्त्रीओ प्रत्ये प्रेम-संमान दर्शाववामां प्रयत्नशील माणस बोद्धस्य वि० जुओ 'बोध्य' बोध पुं० समज;ज्ञान(२)विचार(३) समजशक्ति; बुद्धि (४) जागव्ं जाग्रदवस्था बोधक कि॰ जणावनारुं(२)शीखवनारुं (३)दर्शक (४) जगाडना ह बोधतस् अ० समजपूर्वक बोधन वि० जाण – खबर करनारुं(२) समजावनार (३) जगाडनार (४) सळ-गावनारुं (५) पुं० बुध ग्रह (६) न० समजाववुं--जणाववुं--शोखववुं ते (७) अर्थ दर्शाववो ते (८) जगाडवुंते

बोधपूर्व वि० जाणतुं; समजतुं (२) जाणी-बूजीने करेलुं बोधपूर्वम् अ० जाणी समजीने;इरादा-बोधि पुं० पूर्णज्ञान; साक्षात्कार बोधिसत्त्व पु० बौद्ध मुमुक्षु; पूर्ण बोध प्राप्त करवाने मार्गे पळेलो साधक बोध्य वि० जाणवा – समजवा योग्य (२) जाणी—समजी शकाय तेवुं (३) जणाववाके खबर आपवा योग्य **बौद्ध** वि० बुद्धिने लगतुं (२) बुद्ध संबंधी (३) पुं० बुद्धनो अनुयायी **बध्नमं**डल न० सूर्यन् बिब **ब्रह्मकूट** पुं० संपूर्ण विद्वान एवो ब्राह्मण **ब्रह्मको**श पुं० समग्र वेद **ब्रह्मगौरव** न० ब्रह्मास्त्रनो आदर बह्मधातक, बह्मधातिन् पुं० ब्रह्महत्या करनार ब्रह्मघोष पुं० वेदोनुं पठन (२) समग्र वेद **बह्मचर्य** न० जीवननो प्रथम आश्रम, जे दरम्यान वेदो भणे छे तथा ब्रह्मचारी रहे छे (२) इंद्रियनिग्रह; ब्रह्मचारी रहेवानुं वृत (३)पुं ० ब्रह्मचारी विद्यार्थी **ब्रह्मचर्या** स्त्री० ब्रह्मचर्यव्रत **ब्रह्मचारिन्** वि० वेद भणनारुं (२) ब्रह्मचर्यव्रतधारी (३) पु० आश्रमोमांथी पहेला आश्रममां रहेलो; गुरुने घेर रही, ब्रह्मचर्य पाळी, विद्याभ्यास करनार विद्यार्थी **ब्रह्मज वि० ब्र**ह्मने जाणनारुं;ब्रह्मवेत्ता **ब्रह्मज्ञान** न० ब्रह्म अने जगतना अभेदतुं ज्ञान; परमज्ञान; तत्त्वज्ञान **ब्रह्मण्य** वि० ब्रह्म संबंधी (२) ब्रह्मा संबंधी (३) ब्राह्मण मध्टे उचित(४) ब्राह्मणना हितनुं(५)पवित्र(६)पुं० वेदवेत्ता [(३)अभिचार;संत्रतंत्र ब्रह्मदंड पु० ब्राह्मणनी शाप(२)ब्रह्मास्त्र **ब्रह्मदाय** पुं० वेद भणाववा ते (२) वारसामां मळेलुं वेदज्ञान (३) त्राह्मणनो वारसो

बह्मन् न० परब्रह्म; परमतत्त्व (२) स्तुतिनो मंत्र (३) शास्त्रवाक्य (४) वेद (५) ॐकार (६) ब्राह्मण वर्ण (७)ब्राह्मणनुं सत्त्व – तेज (८)तपस्या (९) ब्रह्मचर्य (१०) वेदनी बाह्मण खंड(११)समृद्धि (१२) अन्न(१३) सत्य (१४) पुं० जगतनी रचना करनार - ब्रह्मा (१५) ब्राह्मण (१६) सोमयज्ञना चार ऋत्विजोमांनो एक (१७)गुरु ग्रह्(१८)ब्रह्मलोक **ब्रह्मनिर्वाण** न० ब्रह्म साथे अभेद; मोक्ष (२) ब्रह्मानंद **बह्मनिष्ठ** वि० ब्रह्मना चितनमां लवलीन ब्रह्मसारायण न० पूर्ण वेदनो अभ्यास बह्मपाञ्च पुं० बह्मा जेना अधिष्ठाता छे एवुं एक अस्त्र बह्मपुर न० हृदय(२) शरीर **ब्रह्म**प्राप्ति स्त्री० ब्रह्म साथे अभेद थवो ते **अह्यबंधु** पुं० मात्र जन्मधी ब्राह्मण (पण कर्मथी नहीं) **ब्रह्मभुवन न० ब्रह्म**लोक [तेवुं;मुक्त कह्मभूत वि० ब्रह्म साथे अभेद थयो होय **बह्मभूय** न० ब्रह्मप्राप्ति (२) ब्राह्मणपणुं **बहामय** वि० वेदरूप; वेद संबंधी; वेदमांथी नीपजेलुं (२) ब्राह्मणने योग्य बह्ममीमांसा स्त्री० वेदांत सिद्धांत (ब्रह्मना स्वरूप विषेतो) **ब्रह्मयज्ञ** पुं० वेदनुं अध्ययन-अध्यापन (पंच महायज्ञीमांनी एक) बह्मयोनि वि० ब्रह्माथी उत्पन्न थयेलुं (२)स्त्री० वेदोनो के ब्रह्मानो कर्ता ब्रह्मरंध्र न० मस्तकमां मानेल एक छिद्र, ज्यांथी नीकळेलो जीव ब्रह्म-लोकमां जाय छे ्र**राक्षस** पुं० भूत थयेलो पापी ब्राह्मण **ब्रह्मवर्च**स् (--स) न० ब्रह्मचर्य, वेदा-भ्यास के ब्रह्मज्ञानधी उत्पन्न थतुं तेज बहाबादिन् पुं० वेद भणावनार (२) वेदांत मतनो अनुयायी

बहाविद्या स्त्री० ब्रह्मतुं ज्ञान **ब्रह्मविहार** पुं० शुद्ध-बुद्ध-मुक्त स्थिति बहाबत न० ब्रह्मचर्यव्रत **ब्रह्मसत्र** न**०** वेदनुं अध्ययन-अध्यापन; ब्रह्मयज्ञ (२)ब्रह्मचितन **ब्रह्मसायुज्य** न० ब्रह्म साथे अभेद ब्रह्मसूत्र न० यज्ञोपवीत (२)बादरायण-रचित वेदांतसूत्र **ब्रह्मस्तंब** पुं० विश्व; जगत **ब्रह्मस्यली** स्त्री० वेद भणवानी शाळा **बह्महत्या** स्त्री० द्राह्मणनी हत्या **बह्मानंद** पुं० ब्रह्म साथे अभेदनो आनंद जह्मावर्त पुं० सरस्वती अने दृशद्वती नदी वच्चेनी देश (हस्तिनापुरथी बायव्यमा) **ब्रह्माश्रम** पुं० ब्रह्मचर्याश्रम **बह्मास्त्र** न० ब्रह्मा जेना अधिष्ठाता छे तेवु अस्त्र बह्मांगभू पुं० घोडो (२) मंत्रो बोली जेणे पोताना अवयवोने स्पर्श कर्यो छै ते **द्मह्मांड** न० मूळ अंड, जेमांथी विश्व उत्पन्न थयुं छे(२)विश्व **ब्रह्मांडभांडोदर** न० ब्रह्मांडरूपी पोला**ण ब्रह्मिष्ठ** वि० वेदपारंगत; वेदवेत्ता **बाह्य** वि॰ ब्रह्मा संबंधी (२) ब्रह्म संबंधी (३) ब्राह्मगोनुं (४) वेदा-म्यासने लगतुं; ब्रह्मज्ञानने लगतुं(५) वेदविहित; शास्त्रविहित (६) **ब्रह्म**-लोक संबंधी (७) पुं० विवाहना आठ प्रकारोमांनो एक (कोई पण दायजो विना आभूषणयुक्त कन्या परणावी देवी ते - श्रेष्ठ प्रकार) बाह्मण वि० ब्रह्मने जाणनारुं (२) बाह्मण संबंधी (३) ब्राह्मणने उचित (४) पुं० चार वर्णीमांना प्रथम वर्णनो पुरुष(५)न०यज्ञकियामां कया वेदमंत्रो-नो प्रयोग करवो तेना नियमो वगेरेनी चर्चा करतो वेदनो खंड (मंत्रखंडथो जुदो) (६) ए प्रकारना ग्रंथोनो समुदाय

बाह्यणक पुं० नीच ब्राह्यण बाह्यणबुद पुं० मात्र नामनो ज ब्राह्मण (ब्राह्मणनां कर्म न करनारो) बाह्मणातिकम पुं० ब्राह्मणोनो अनादर बाह्मणो स्त्री० ब्राह्मण वर्णनी के ब्राह्मण-नी स्त्री (२) बुद्धि (३) एक जातनो काचिडो बाह्मण्य न० ब्राह्मणोनो समुदाय बाह्ममुहुतं पुं० दिवसनो शह्यआतनो समय; सूर्योदय पहेलांनी बे घडी बाह्मी स्त्री० ब्रह्मनी शक्ति (२) वाणी (३) सरस्वती (४) धर्माचार; वेद-विधि(५)एक वनस्पति बृव, बुवाण वि० (समासने छेडे)नामनुं ज;नाम प्रमाणेनां आचरणवालुं निहं तेवुं (उदा० 'ब्राह्मणबुव') बूर उ० बोलवुं;कहेवुं(२)जाहेर करवुं (३)नाम आपवुं;नामे ओळखवुं

भ

भ न० तारो; नक्षत्र; ग्रह; राशि भक्त ('भज्' नुंभू०ऋ०) वि०वहेंचेलुं; भाग पाडेलुं (२) भजेलुं; पूजेलुं (३) तत्पर; लीन (४) वफादार (५) रांधेलुं (६) (समासने छंडे) चाहेलुं; गमतुं होय तेवुं (७) पुं० उपासक; भजनारो (८) न० भाग; हिस्सो (९) रांघेलो भात (१०) अन्न; भोजन (११) वेतन; रोजी भक्ताग्र पुं०, न० भोजननो औरडो (साधुओना मठमां) भक्ति स्थी० विभागपाडवाते (२) विभाग; हिस्सो (३) उपासना; भजन (४) विश्वास; श्रद्धा (५) रचना; गोठवण (६) पंक्ति; क्रम (७) शणगार (८) उपचार; लक्षणा भक्तिगंधि वि० भक्तिनो अंश बहु ओछो होय तेवुं; नामनी ज भक्तिवाळुं भिक्तिचित्र न० चितरामण भवितच्छेद पुं० चितरामणनी के शण-गारनी पंक्तिओ – रेखाओ भक्तिपूर्वकम् अ० भक्तिथी भक्तिभाज् वि० एकनिष्ठ; वफादार (२) भक्तियुक्त भक्तियोग पुं० एकनिष्ठ भक्ति

भक्ष १० उ० खावुं; भक्षण करवुं(२) वापरी नाखवं (३) नकामुं खर्ची नाखवुं (४) करडवुं **भक्ष** पुं० खाबुंते (२) भोजन भक्षक वि० खानाहं; - खाईने जीवनाहं (२) लाउधरं भक्षण वि० खानारं(२)न० खावुंते **भक्षणीय** वि० खावा योग्य भक्षिका स्त्री० भोजन (२) (समासने पिण भोज्य अंते) –खावृंते भक्ष्य वि० खावायोग्य (२) न०कोई **भक्ष्यभक्षकौ**पुं० द्वि० व० खावानी वस्तु अने खानार(ए बे) [योग्य पदार्थ भक्ष्याभक्ष्य न० खावा योग्य अने न खावा भग पुं० सूर्य (२) सद्भाग्य; नसीब (३) समृद्धि (ऐश्वर्यं, वीर्यं, यश, श्री, ज्ञान अने वैराग्य -ए छनो समूह) (४)कीर्ति;यश(५)स्त्रीनी गुर्ह्योद्रिय (६) न० उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र भगदेव पुं० अत्यंत कामी पुरूष **भगदैवत न०** उत्तराफल्गुनी नक्षत्र भगनेत्रहर पुं० शिव भगवत् वि० समृद्धिमान (२) पूज्यः पवित्र (देवोने माटे तथा आदरणीय पुरुषो माटे वपराय छे) (३) पुं० देव (४)विष्णु;शिव;जिन, बुद्ध इ०

भगवती स्त्री० दुर्गा (२) लक्ष्मी (३) कोई पण आदरणीय स्त्री भगवदीय पुं० विष्णुभक्त भगिनिका स्त्री० नानी बहेन भगिनी स्त्री० बहेन (२) ऐश्वर्यवाळी के भाग्यवान स्त्री (३) कोई पण स्त्री भगिनोपति पुं० बनेवी भगिनीय पुं० बहेननो पुत्र; भाणो भगीरथ पुं० एक सूर्यवंशी राजा (जे गंगाने पृथ्वी पर लाव्यो हतो) भग्न ('भंज् 'नुं भू० कु०) वि० भागेलुं; तूटेलुं(२)हताश थयेलुं (३) रोकेलुं; अटकावेलुं (४) छेक ज हरावेलुं(५) नष्ट भग्नपरिणाम वि० (कार्य) पूर्व करतां [निराश बनेलुं अटकावायेलु भग्नमनोरथ वि० मनोरथोनी बाबतमा भग्नवत वि० पोतानां वृत-प्रतिज्ञानी भंग करनारुं; व्रत खंडित कर्युं होय तेवुं भग्नाश वि० हताश; निराश भग्नी स्त्री० बहेन | होय तेवुं भग्नोद्यम वि० जेनो प्रयत्न विफळ गयो भज् १ उ० भाग पाडवा ; हिस्सा पाडवा (२)हिस्सो मेळववो (३) स्वीकारवुं (४)-नो आश्वरो लेवो (५) सेववुं; अपनाववुं(६)भोगववुं; अनुभववुं(७) तहेनातमां रहेवुं; सेवा करवी (८) पूजवुं; उपासवुं (९)पसंद करवुं (१०) उपभोग करवो (११)-ने भागे आदवुं (१२) अनुग्रह करवो (१३) –मां मंडवूं ; –मां लागवूं भजन न० भजवुं ते ; सेववुं ते (२)धारण करवुं ते; मालिक होवुं ते(३)भाग पाडवा ते (४)-नी तहेनातमां रहेवुं ते भजमान वि० भाग पाडतुं (२) भोग~ वतुं (३) छाजतुं; उचित भट पुं० दीर; लडवैयो; योद्धो (२) भाडूती सैनिक (३) दास; नोकर भट्ट पुं•स्वामी;मालिक (२)पंडित; विद्वान (३) भाट; चारण

भट्टारक वि० पूज्य; संमाननीय (२) पुं० संत; ऋषि (३) देव (४) राजा **भट्टिनो** स्त्री० पटराणी नहि तेवो राणी (२) खानदान महिला **भण् १** प० बोलवुं; **कहे** दुं(२) वर्णववुं (३)नामथी ओळखवुं(४)अवाज करवी भणन, भणित न०, भणिति स्त्री० बोल; वाणी; वातचीत [संबोधन **भरंत** पुं० बौद्ध भिक्षु माटेनुं मानवाचक भद्र वि० समृद्ध;सुखी(२)शुभ;कल्याण-कर(३)मुख्य; आगेवान(४)अनुकूळ (५) मनोहर; सुंदर (६) मायाळु; कृषाळु (७) प्रशंसापात्र (८) प्रिय (९) कुशळ; प्रवीण(१०)न० सुख; सद्भाग्य; समृद्धि (११)पुं० एक जातनो हाथी भद्रक वि॰ शुभ; मंगळ (२) सद्गुणी (३)सुंदर(४)पुं० एक कठोळ (५) देवदार वृक्ष (६) न० बेसवानुं एक आसन (७) अतःपुर भद्रकांत पुं० सुंदर पति के प्रेमी भद्रदिश् स्त्री० शुभ दिशा (दक्षिण) **भद्रपीठ** न० राजसिंहासन भद्रमुख वि० 'शुभमुखवाळुं' (मान-वाचक संबोधन) **भद्रमुखी** स्त्री० (शुभ मुखवाळी) भली स्त्री; आदरणीय स्त्री भद्रंकर वि० कल्याणकारक; मंगळकारी भद्रा स्त्री० सुभद्रा; कृष्ण-बळरामनी बहेन(२)गाय(३)स्वर्गंगा भद्राकरण न० हजामत भद्राकृ ८ प० हजामत करवी **भद्रासन** न० राजानुं सिहासन(२)योगनुं एक आसन [बोलवु; कहेब् भन् १ प० पूजवं (२) बूम पाडवी (३) भय न० बीक; डर(२)जोखम **भयप्रद**िव ० भय उपजावनारुं; भयंकर **भयस्थान न०, भयहेतु** पुं० भयनुं कारण भयंकर वि० भयजनक (२) जोखमवाळं **भयानक** वि० भयंकर

भयापह वि० भय दूर करनारुं भयालु वि० बीकण; बीनेलुं भयावह वि० भयमां नाखनारुं; जोखम-[सरातुं) भयोत्तर वि० भययुक्त (भय वडे अनु-भर वि० (समासने छेडे) धारण कर-नारुं;भरणपोषण करनारुं इ० (२)पुं० बोजो;भार (३) मोटो जथो-संख्या-समुदाय (४) पुष्कळपणुं (५) उत्तमता; श्रेष्ठता भरण वि० भरणपोषण करनारुं (२) भारण करनारुं (३)न० पोषवुं ते (४) धारण करवुं ते (५) रोजी ; पगार (६) पुं० भरणी नक्षत्र भरत पुं० दुष्यंत – शकुंतलानो पुत्र (जेना नाम परथी 'भरतवर्ष'नाम पड्युं छे) (२) दशरथ – कैंकेयीनो पुत्र (३) नाटचशास्त्रना कर्तामुनि (४) नट (५) भाडुती सैनिक भरतखंड पुं० भरतवर्षना एक भागनुं नाम भरतपुत्र पु० नट भरतवर्ष पुं० भारत (प्राचीन नाम) भरतवाक्य न० संस्कृत नाटकमां अंते मुकातो आशीर्वादनो श्लोक भरताग्रज पुं॰ राम (भरतना मोटाभाई) भरात् अ० जुओ 'भरेण ' भरि वि० (समासने छेडे) भरनाहं; पोषनारुं (उदा० 'उदरंभरि') भरित वि० पोषेलुं (२) –थी भरेलुं (३) भारवाळुं; बोजावाळुं भरेण अ० पूरेपूर्व होय तेम; पोतानी सघळी ताकातथी भर्गपु० शिव (२) तेज; दीप्ति भर्गस् न०तेज; दीप्ति भर्जन वि० शेकनारुं (२) नाश कर-नारुं (३) न० शेकवुं ते (४) तवो भर्तव्य वि० वहन करवा-अंचकवा योग्य (२) भाडे राखवा योग्य

भर्तृ पुं० पति; स्वामी (२) शेठ; मालिक (३) नायक; आगेवान(४) रक्षक; पोषक (५) जगतना स्रष्टा भर्तृचित्त वि० पतिनो विचार करतुं **भर्तृदारक** पुं० राजकुमार; युवराज (नाटकमां संबोधन) भर्तृदारिका स्त्री० राजकुमारी(नाटघ०) भतृंत्रियः भर्तृभक्त वि० मालिकने वफादार एवं |स्त्री भर्तृमती स्त्री० पति जीवतो होय तेवी भर्त्स् १० उ० ठपको आपवो; तिर-स्कारवुं (२) धमकी आपकी भर्त्सन न०, भर्त्सना स्त्री० धमकी (२) ठपको; तिरस्कार भर्मन् न० भरणपोषण (२)वेतन;रोजी भल्ल पुं० रींछ (२) पुं०, न० एक जातनु अर्धचंद्राकार बाण (३) बाणना अमुक भागनुं नाम भल्लूक पुं० रींछ भव वि० (समासने छेडे) –मांथी उत्पन्न थनारुं (२) पुं० सत्ता; अस्ति-त्व (३) जन्म; उत्पत्ति (४) मूळ (५) संसार(६)समृद्धि (७) श्रेष्ठता (८) शिव (९) प्राप्ति भवच्छिब् वि० पुनर्जन्मनो नाश करनारुं भवच्छेद पुं० पूनर्जन्मनी नाश भवत् वि० होतुं; थतुं (२) स० ना० (मानार्थे) आप; तमे (क्रियापदना त्रीजा पुरुषना रूप साथे)

भवती स्त्री० (मानार्थे) आप; तमे

भवन न० अस्तित्व(२)जन्म; उत्पत्ति

भवदीय वि० आपनुं; तमारुं

भवसागर पुं० जुओ 'भवाब्धि' भवात्मज पुं गणेश (२) कार्तिकेय भवावृक्ष, भवावृत्त्, (-श) वि० आपना जेवुं; तमारा समान भवानी स्त्री० पार्वती भवानीगुरु पुं० हिमालय(पार्वतीना पिता) भवानोपति पुं० शंकर भवाष्ययौ पुं० द्वि० व० उत्पत्ति अने भवाब्धि पुं० संसाररूपी सागर भवाभवी पुं० द्वि० व० संपत्ति अने आपत्ति [पाछळनो) भवांतर न० बीजो जन्म (आगळनो के भवितब्य वि०थवा के होवा लायक (२) तरतमां ज थवानुं एवुं (३) न० थवानुं ते; नियत थयेलुं ते भवितव्यता स्त्री० नसीब; नियति भवितृ वि० भविष्यमां थनाहं(२)तरतमां [भविष्यमां बनवानुं ते भविष्य वि० भविष्यमां थनारुं(२)न० भविष्यत् वि० भविष्यमां बनवानुं; बनकानी तैयारीमां होय तेवुं (२) न० भविष्यकाळ **भवोच्छेद** पुं० संसारभ्रमणनो नाश भव्य वि० भविष्यमां बनवानुं (२) संभवित (३) उचित (४) उत्तम (५) शुभ (६) **सुं**दर (७) शांत; स्वस्थ (८) न० अस्तित्व (९) भवि-ष्यकाळ (१०) परिणाम; फळ (११) सुफळ; समृद्धि **भष् १प० भ**सवुं(२) ठपको आपको ; भस वि० प्रकाशतुं; दीपतुं भसित वि० भस्मीभूत करेलुं(२)न० भस्म; राख [(२) चामडानी मसक भस्त्रा, भस्त्रिका, भस्त्री स्त्री० धमण भस्मन् न० राख; भस्म भस्मभूत वि० मृत भस्मसात् अ० राखोडी रूपे **भत्मावशेष** वि० मात्र राखरूपे **बाकी** रहेलुं (बाळी नांखेलुं)

भस्मीकृत वि० राखोडीरूप बनावी दीघेलुं (बाळी नाखेलुं) (२) भस्म बनावेलुं (धातुने मारीने)(३) चूणे-रजरूप बनावेलुं भस्मीभूत वि० राखोडी बनेलुं;बाळी नाखेलुं(२)नकामुं तुच्छ बनी गयेलुं भंग पु॰ तूटवुं-भागवुं-छूटुं पडवुं ते; तोडवुं – छूटुं पाडवुं ते (२) चूटवुं ते (३)टुकडो, हिस्सो (४)नाश; पडती; दिनाश (४) विखेरी नाखवुं ते(५) पराजय; उथलावी पाडवुं ते; पराभव (६)निष्फळता; निराशा (७) नकारवुं ते; ना पाडवी ते (८) हकावट; विघ्न; डखल (९)भागी के नासी जवुं ते (१०) गडी (११)मोजुं (१२)वळांक; मरोड भंगि स्त्री० तूटवुं ते; तोडवुं ते (२) मोजुं;तरंग(३)वळांक; मरोड(४) आडकतरी ितं कहेवुं ते (५) मिष; बहानुं (६) युक्ति; छळ (७) पगिथयं (८)पद्धति ; प्रकार ; रीत **भंगिन्** वि० बरड;भागी जाय तेवुं भंगिनी स्त्री० नदी भंगिभक्ति स्त्री० जुदां जुदां पगिथयां के मोजांरूपे रचना अथवा गोठवण **भंगिभाषण न**० वक्रोक्ति कि चाळो **भंगिविकार** पु०मों मरोडीने करेली चेष्टा **भंगी** स्त्री० जुओ 'भंगि' **भंगुर** वि० बरड; भागी जाय तेवुं(२) क्षणिक; नाशवंत (३) वांकूं(४) कुटिल **; कपटी** भंग्यंतरेण अ० आडकतरी रीते; ज्दी **भंज् ७** प० भांगवुं;तोडवुं;फाडवुं(२) विफळ करवुं(३)रुकावट-डखल करवी (४)हराववुं(५)**१०** उ० प्रकाशित करवुं (६) प्रकाशबुं (७) बोलवुं भंजक वि० भांगनाई; तोडनाई **भंजन** वि० भांगनारुं; तोडनारुं(२) रोकनारुं (३)न० भांगवुं के तोडवुं ते (४)दर करवुं ते(५)हराववुं ते

भंड् १ आ० भांडवुं (२) मजाक करवी (३) १० उ० भाग्यशाळी करवुं के थवुं भंड पुं० मश्करो; भांड भंडिका, भंडी स्त्री० मजीठ भंडीर पुं० वडनुं झाड भा २ प० दीपवुं; प्रकाशवुं जणावुं; देखावुं (३) अस्तित्व होवुं (४)फूंकवुं;फ्ंकावुं(५)खुश थवुं भा स्त्री० प्रकाश; तेज; कांति (२) छाया ; पडछायो (३) सादृश्य भाग पुं हिस्सो; विभाग (२) भाग पाडवी के वहेंचवी ते (३) नसीबे हो व् ते(४)आखानो विभाग के अंश(५) अवकाश; जगा भागधेय पुं० कर; वेरो (२) न० हिस्सो; भाग (३) नसीब (४) सद्भाग्य (५) समृद्धिः; सुख भागवत वि० भगवत् – विष्णुनुं भक्त एबुं(२)देव संबंधी(३)पुं० विष्णुनी भक्त(४)न० ए नामनुं पुराण भागञ्चस् अ० भाग प्रमाणे (२)भागयी भागहर पुं० वारसामां हिस्सेदार **भागायिन्** वि० हिस्सानी इच्छावाळुं **भागिन्** वि० भागवाळुं; भाग पडावतुं (२) मालिक (३) नसीबदार (४) हिस्सेदार; हिस्सानुं अधिकारी भागिनेय पुं० बहेननो दीकरो;भागेज भागीरथी स्त्री० गंगा नदी भाग्य वि० भागवा योग्य; भागी शकाय तेवुं (२) भाग – हिस्साने पात्र (३) भाग्यशाळी; नसीबवान (४) न० नसीब (५) सद्भाग्य (६) समृद्धि भाग्यक्रम पुं० नसीबनो वारोफेरो भाग्यरहित वि० कमनसीब भाग्यवत् वि । नसीबदार (२) समृद्ध भाग्यवज्ञात् अ० दैवयोगे; नसीबजोगे भाग्यविष्ठव पुं० दुर्देव; कमनसीब

भाग्यसंपद् स्त्री० सद्भाग्य; समृद्धि भाग्यायत्त वि० नसीबने अधीन भाग्येन अ० नसीबजोगे; सद्भाग्ये भाग्योदय पुं० सद्भाग्यनो उदय थवो ते भाज १० उ० भाग पाउवो; वहेंचवुं भाज् वि० (समासने छेडे) हिस्सेदार के भागीदार बनतुं के थतुं (२) मालिक एवुं; ⊸वाळुं (३) हकदार (४) भोगवतुं; अनुभवतुं (५) -मां वसतुं (६) -मां लागु रहेतुं (७) -नों आशरो लेतुं (८) पूजतुं (९) करवा योग्य एवं; कर्तव्य भाजन न०भागपाडवोते (२)भागा-कार (३) पात्र; आधारस्यान (४) लायक वस्तु के माणस भाजिन् पुं० नोकर भाट, भाटक न० भाडू भाग पुं० नाटकनो एक प्रकार (तेमां रंगभूमि उपर एक ज पात्र प्रवेशे छे) भात ('भा'नुभू० कृ०) वि० प्रका-शित; उज्ज्वळ (२) पुं• प्रात:काळ भाद्र, भाद्रपद पुं० भादरवो महिनो भान न० ज्ञान (२) देखावुं ते (३) [(३)सूयं **भानु** पुं० प्रकाश (२) प्रकाशनुं किरण **भानुभू** स्त्री० यमुना **भानुमत्** वि० तेजस्त्री(२)सुंदर(३) **भामा** स्त्री० को धीस्त्री भामिनी स्त्री० सुंदर जुवान स्त्री (२) कोधी स्त्री (मुख्यत्वे प्रेमनुं संबोधन) भार पुं० बोजो;वजन (२)ज्यांसौथी वधु घमसाण मच्युं होय ते भाग (रण-भूमिनो) (३) अतिशयता; पराकाष्ठा (४) परिश्रम ; मजूरी (५)मोटो जयो (६) (सोनाना २००० पल जेटलुं) एक वजन (७) कोईना उपर नाखेल कामनो बोजो (८) झुंसरी भारक वि० (समासने छेडे) -नो भार लादेलुं (२) बोजो (३) एक वजन

भारत वि० भरतन् के भरतमांथी ऊतरी आवेलुं (२) पुं० भरतनो वंशज (३) भरतवर्षनो वतनी (४) नट (५) न० भरतवर्ष (६) महाभारत ग्रंथ (७) भरत मुनिए प्रवर्तावेलुं संगीत अने नाटचनुं शस्त्र भारतवर्षन ० जुओ 'भरतवर्ष' भारतो स्त्री० वाणी (२) वाणीनी देवी सरस्वती (३)एक साहित्य-शैली भारद्वाज पुं० द्रोणाचार्य (२) सप्तर्षि-मांना एक ऋषि (३) अगस्त्य (४) मंगळ ग्रह (५) न० हाडकुं भारबाह पुं० भार वहेनारी भारसह वि० भार ऊंचकी शके तेवुं भारसाधन वि० मोटां के अघरां काम पार पाड**नार** भारसाह वि॰ जुओ भारसह भारंड पुं० एक कल्पित पक्षी भाराऋांत वि० अतिभारथी लदायेलुं भारिक, भारिन् वि० भार अंचकनार्ह (२) भारे वजनदार (३) पुं० भार ऊंचकनार **माणस**; हमाल भारोपजीवन न० भार वहीने जीववुं ते; मजूर – हमालनुं जीवन भागंव पुं० शुकाचार्य (२) परशुराम (३) जमदिग्न (४) कुंभार भार्या स्त्री० (विधिसर परणेली) पत्नी भाल न० कपाळ; छलाट भालचंद्र, भालदृश्, भाललोचन पुं० शिव रींछ भालुक, भालुक, भाल्लुक, भाल्लुक पुं० भाव पुं० अस्तित्व (२) बनवुं के थवुं ते (३) स्थिति; स्वरूप;अवस्था(४) प्रकार; पद्धति (५) पद; होहो (६) वास्तविकता; सत्य (७) भक्ति; निष्ठा; भावना (८) मुळ स्वभाव (९) वलण; वृत्ति; अभिप्राय; धारणा (१०) मनोवृत्ति; लागणी (११) तात्पर्यः;

अर्थ; रहस्य (१२) निश्चय (१३) हृदय; आत्मा (१४) कोई पण सत् वस्तुके पदार्थ (१५) प्राणी (१६) चिंतन; भावना (१७) चेष्टा; काम**-**चेष्टा (१८)जन्म (१९)संसार; जगत (२०) संकल्प (२१) आदरणीय व्यक्ति (नाटच०) (२२) कल्याण (२३) रक्षण (२४) प्रारब्ध (२५) वासना (२६) प्रभुत्व भावक वि० निपजावनारुं (२) पोतानुं हित साधनारुं (३)कल्पना करनारुं(४) सींदर्भ माटे कदर के रुचिवाळ् भावगति स्त्री० अंतरमी भाव दर्शादवाः-नी शक्ति भावगम्य वि० मनना भावधी कल्पेल्ं भावत्क वि० आपनुं सर्जेक; निपजावनारुं **भावन** वि० (२) हित के कल्याण साधनारुं (३) पुं० सर्जनार; हेतु; कारण (४) शिव (५)न० सर्जवुं के प्रगट करवुं ते (६) कोईनुं हित वधारवुं ते (७) कल्पना-शक्ति (८) भावना; श्रद्धा; निष्ठा (९) चितन; मनन (१०) ज्ञान; समज (११) पर्यालोचन; तपास भावता स्त्री० सर्जवुं के प्रगटाववुं ते (२) हित के कल्याण साधवुं ते (३) कल्पना; धारणा (४) निष्ठा; श्रद्धा (५) चितन; मनन (६) औषधने कोई रसमा बोळी पुट आपवो ते **भावनायुक्त** वि० विचार करतुं; चिता-भावबंधन वि० हृदयने मोह पमाडनारुं (२) हृदयोने जोडनारुं भावमिश्र पुं० सद्गृहस्थ (नाटच०) भावियत् वि० उत्कर्ष साधनारुं **भावरूप** वि० वास्तविक; खरुं भावविकार पुं० कोई पण सत् पदार्थनो गुणधर्म **भावज्ञून्य** वि० साचा प्रेम विनानुं

भावस्य वि० (एक जण प्रत्ये ज) निष्ठावाळुं; वफादार **भावस्थिर** वि० हृदयमां दृढमूळ थयेलुं भावस्तिग्ध वि० हार्दिक प्रेमवाळुं **भावंगम** वि० सुंदर; मनोहर भाषाकृत न० मनना गुप्त विचार भावात्मक वि० वास्तविक; खरुं भावार्य पुं॰ तात्पर्यः; मतलब (२) िनाजुक;कोमळ ृतत्त्व;सार भावाव वि० स्नेहाळ; दयाळु (२) भाविक वि० साहजिक; कुदरती (२) भावभर्युं (३) भविष्यनुं भावित वि० सर्जायेलुं; पेदा थयेलुं; प्राप्त थयेलुं (२) प्रगट करेलुं (३) चितवेलु; विचारेलुं, कल्पेलुं; धारेलुं (४) ओळखेलुं (५) मनन करेलुं (६) -थी व्याप्त (७) -मां पला-ळेलुं (८) –थी सुगंधित करेलुं (९) प्रेरेलुं; स्थिर करेलुं (१०) वश करेलुं (११) प्रसन्न थयेलुं के करेलुं भावितबुद्धि वि० जुओ 'भावितात्मन्' भाषितभावन वि० पोतानुं तेम ज बीजानुं हित साधनारुं भाविता स्त्री० बनवानी के थवानी दशा (२) भविष्यमां थवानुं नियत होवुं ते भावितात्मन् वि० परमात्माना चितनथी पवित्र थयेला हृदयवाळुं (२) पवित्र ; एकनिष्ठ (३) चितनशील; मननशील (४) –मां लागेलुं भाविन् वि० बनतुं के थतुं (२) भवि-ष्यमां थनारुं; भविष्यनुं (३) बनी शके के थई शके तेवुं (४) नियत होय तेवुं (५) एकनिष्ठ भाविनी स्त्री० सुंदर स्त्री (२) शील-वती के खानदान स्त्री (३) स्वेच्छा-चारिणी के कामुक स्त्री भावक वि० बनवा के थवानी तैयारीमां होय तेवुं (२) समृद्ध; सुखी (३)

शुभ (४) रसिक; कदरदान (५) पुं० बनेवी (नाटच०)(६)समृद्धि **भावेकरस** वि० मात्र प्रेमभावथी प्रवर्तत् **भाव्य** वि० बनवानी के थवानी तैयारीमां होय तेवुं (२) भविष्यनुं (३) आच-रवा के कल्पवा योग्य (४) साबित करवा योग्य (५) तपास करवा के विचारवा योग्य(६) न० जे बनवानुं निश्चित होय ते भाष् १ आ० बोलवुं; कहेवुं (२) – नं विषे कहेवुं(३)बोलाववुं व्याख्यान भाषण न० बोलवुं ते; कहेवुंते (२) **भाषा** स्त्री० वातचीत; दाणी (२) बोली; जबान (३) चालु – बोलाती बोली (४) व्यास्था; विवरण (५) सरस्वती (वाणीनी देवी) भाषांतर न० बीजी भाषा (२) तरजुमो भाषित ('भाष्'नुं भू०कृ०) वि० बोलेलुं; कहेलुं (२) न० वाणी ; बोली ; भाषा **भाषितेशा** स्त्री० सरस्वती भाषिन् वि० (समासने छेडे) दोलतुं; कहेतुं (२) वातोडियुं भाष्य न० बोलवुं ते (२) विस्तृत विवरण भाष्यभूत वि० विवरण के टीकारूप एवं **भास् १** आ ० प्रकाशबुं; चमकबुं (२) स्पष्ट थवुं; समजावुं; देखावुं भास् स्त्री० प्रकाश; तेज; चळकाट (२) प्रकाशनुं किरण (३) प्रतिबिब (४) शोभा; प्रताप **भास** पुं० दीप्ति; कांति (२) तरंग; कल्पना(३) एक कवि(४) एक पक्षी **भासुर** वि० प्रकाशित;तेजस्वी भास्कर पुं• सूर्य(२)अग्नि(३)शिव(४) न० सोन्(५)चोरे भीतमा करेल बाक् भास्कराध्वन् पुं० आकाश **भास्मन** वि० भस्मनुं बनेलुं भास्वत् वि० तेजस्वी; चळकत् (२) पुं० सूर्य (३) प्रकाश

भास्वर वि० प्रकाशित; देदीप्यमान (२) पुं० सूर्य (३) दिवस (४) अग्नि भांड न० पात्र; वासण (२) पेटी; खोखुं; खानुं (३) ओजार; साधन (४) वाजित्र (५) दुकानदार के वेपारीनो मालसामान (६) कीमती माल के वस्तु(७)घोडा उपर नाखवानो सामान (८) चाळा ; चेप्टा(९)आभूषण (१०) साधनसामग्री; उपकरण (११) मृडी; मृळ धन भांडपति पं० वेपारी **भांडम्त्य** न० माल-सामानरूपी मूडी भांडागार पु०, न० भंडार(२)खजानो **भांडार** न० भंडार सामान भांडाः पुं० ब० व० वेपारीनो माल-भांडिनी स्त्री० टोपली; पेटी **भांडीर** पुं० वडनुं झाड भिक्ष १ आ० भीखवुं; मागवुं (२) भिक्षा तरीके मागवु भिक्षा स्त्री० भीख;याचना(२)दानधर्म तरीके आपेलुं के मळेलुं ते (३४)आजी-विकानुं साधन [(२)पुं० भिखारी भिक्षाचर वि० भिक्षा माटे भटकनारुं भिक्षाटन न० भीख माटे भटकवुं ते (२)पुं० भिखारी भिक्षान्न न० भिक्षामां मळेलुं अन्न भिक्षापात्र, भिक्षाभांड न० भीख मागवा माटेन् पात्र भिक्षायण (-न) न० जुओ 'भिक्षाटन' भिक्षाशन न० जुओ 'भिक्षास' भिक्षाशिन् वि० भिक्षा मागीने जीवनारं (२) अप्रमाणिक भिक्षाहार पुंच जुओं भिक्षान्त्र भिक्षित ('भिक्ष्रनुंभू० कु०) वि० भीखेलुं; मागेलुं; याचेलुं भिक्षु पुं० भीख मागनार (२) भिक्षा उपर जीवनार (ब्रह्मचारी, संन्यासी, जैन-बौद्ध परिव्राजक इ०)

भिक्षुक पुं० भिखारी भित्त न० खंड;टुकडो (२) भींत; आ **ड** भित्ति स्त्री० भागतुं के फाडवुं ते (२) भींत; आड (३) चित्र वगेरे माटेनो पडदो के स्थान (४) टुकडो; खंड (५) फाट; चीरो (६) भींत जेवी सपाटी **भिद्** वि० (समासने छेडे) फाडनारु: चीरनारुं; तोडनारुं भिद् १ प० भिंदति कापीने भाग पाडवा (२) ७ उ०भागवुं; फाडवुं; वींधवुं (३) खोदवुं (४) –मां थईने पसार थवुं (५) छूटुं पाडवुं; स्रसेडवुं (६) तोडवुं (करार, प्रतिज्ञा ६०); उल्लंघन करवुं (७)दूर करवुं (८) खंडित करवुं; डखल करवी (९<mark>)</mark> पलटवुं; बदलवुं (१०) विकसावबुं; खिलाववु (११) विखेरी **ना**खव् (१२) छोडी नाखवुं; ढीलुं करवुं (बंधन-गांठ) (१३) भेद के कुसंप ऊभा करवा(१४)समजाववुं के समजवं (रहस्य-तात्पर्य) (१५) छोडवुं ; ढीलुं करवुं (१६) खुल्लुं करवुं (रहस्य) (१७) मूझवर्षु; डरावर्षु भिदा स्त्री० फाडवुं, चीरवुं, भागवुं के तोडवुं ते (२) वियोग; विच्छेद (३)भेद;तफावत (४)प्रकार भिदुर वि० भागी जतुं; तूटी जतुं; चिराई जतुं (२) बरड; झट भागी जाय तेवं (३) मिश्रित भिद्य पु० जोरथी बहेतो नद भिन्न ('भिद्' नुं भू० क्ट०) वि० फाडेलुं;फाटेलुं;चीरेलुं; भागेलुं (२) छूटुं पडेलुं के पाडेलुं (३) बीखराई गयेलुं (४) खीलेलुं (५) जुद्(६) ज्दु जुदु; अनेकविध (७) मिश्रित; भळे वुंके भेळ वेलुं(८) खडुं ययेलुं (जेम के बाळ) (९) फोडेलुं (लांच इ० थी). (१०) उन्मार्गगामी

भिन्नकट वि० मदोन्मत्त भिन्नगति वि० देगे जतुं(२)लथडियां खातुं खा**तुं** जतुं होय तेवुं भिन्नदेश वि० जुदां जुदां स्थाननुं **भिन्नमर्थाद** वि० मर्यादानुं उल्लंघन करनाहं (२) अनियंत्रित भिन्नमंत्र वि० जेणे गुष्त वात खुल्ली पाडी दीधी होय तेवुं भिन्नरिच वि॰ जुदी जुदी रुचिवाळुं भिन्नवर्ण वि०रंग ऊड़ी गयो होय तेवुं (२) जुदा वर्णनुके जातिनु भिन्नवृत्त वि॰दुराचरणी (२) वृत्त के छंदमां दोषवाळुं (काव्य०) भिन्नवृत्ति वि० दुराचरणी (२) जुदी जुदी रुचि के लागणीओवाळूं (३)जुदी जदी आजीविकावाळ् भिन्नहृदय वि० हृदय वींघाई गयुं होय भिन्नार्थ वि० स्पष्ट समजाय तेवु भिन्नार्थम् अ० स्पष्टपणे समजाय तेम भिन्नांजन न० घणा पदार्थों भेगा करीने बनावेल आंजण भिल्ल पुं० एक वन्य जाति; भील भिषज् पुं० वैद्य; हकीम (२) औषध भिषज्य न० उपचार; उपाय (२) मटाइवं के रक्षावबं ते भिड पुंठ, भिडा स्त्रीठ, भिडाक पुंठ भींडोनो छोड (जेना रेसा कढाय छे) भिदपाल, भिदिपाल पुं ० हाथथी फेंकवानुं नानी कटार जेवुं अस्त्र (२)गोफण भी ३,१०प० बीबुं; भय परमवो भी स्त्री० बीक; भय भोत ('भी' नुं भू० हु०) वि० वीनैलुं (२) बीकण (३) जोखममा मुकायेल भोतचारिन् वि० बीतां बीतां वर्ततुं भौतभीत वि० घणुं ज बीनेलुं (२) बीनेला जेवं **भीतंकार वि० भ**यंकर; **ड**र उपजावे तेवुं भीतंकारम् अ० डरपोक कहीने

भौति स्त्री० भय; डर(२) जोखम भोतिनाटितक न० डरनो अभिनय भीम वि० भयंकर(२)पुं०पांच पांडवो-मांनो बीजो भीमकर्मन् वि० भयंकर ताकातवाळ् **भीमनाद** वि० भयंकर अवाजवाळ (२) पुं० भयंकर अवाज भोमरूप वि० भयंकर देखाववाळ भोमसेन पुं० पांडुपुत्र भीम भीरु वि० बीकण ; डरपोक (२) (समा-समां) -थी डरतुं **भोरुक** दि० बीकण;डरपोक(२)बीनेलुं भोरू (-लू) स्त्री० बीकण स्त्री (२) बोनेली स्त्री भोषण, भोषणक वि० भयंकर **भीष्म** वि०भयंक्षर; बिहामणुं(२)पुं० शंतन् - गंगाना पुत्र, भीष्मपितामह भीष्मक पुं० भीष्मिषतामह (२) रुक्मिणीनो पिता (विदर्भेनो राजा) भुक्त ('सुज्' ७ उ० नुंभू० कृ०) वि० खाधेलुं(२)भोगवेलुं; उपभोग करेलुं (३)वेठेलुं; अनुभवेलुं(४)न० खावु ते; भोगववुं ते (५) खाधेलुं ते; भोजन (६) ज्यां कोईए स्ताबुं होय ते स्थान भुक्तभोग वि० जेणे भोगव्यु के अनु-भव्युं होय तेवुं (२) भोगवेलुं; वापरेलुं **भुक्तशेष** वि० खातां वर्षेलुं; उच्छिष्ट भुक्तसुप्त वि० भोजन बाद सूतेल् भुक्ति स्त्री० भोजन; उपभोग (२) भोगवटो; मालकी (३) अन्न (४) सीमा; हद (५) ग्रहनो रोजनी यति **भुक्तिवर्जि**त वि० मोगववा न दीघेलुं भुग्न ('भुज् '६ प० नुं० भू० कृ०) वि० नमेलु; नीचुं बळेलुं; वांकुं (२) भग्न (३) हताश; भागी पडेलूं भुज् ६ प० वांकुं वळवुं (२) वांकुं वाळवुं (३)७ उ० खावुं (४) उपभोग करवो ; भोगववुं (५) शासन करवुं; राज्य करवुं (६) वेठवुं ; अनुभववुं

भुअ वि० (समासने छेडे) खातुं; भोगवतुं (२) शासन करतुं (३) स्त्री० उपभोग (४) फायदो; लाभ भुज पुं बाहु; भुजा(२)हाय(३)हायीनी सूंढ(४)वळांक(५)भूमितिनी आकृतिनी ৰাজু (ডৱা০ সিমুজ) भुजग पुं० सर्प; साप भुजगराज पुं० शेषनाग **भुजगवलय पुं० सापने कडा** तरीके पहे-रवो ते;साप रूपी कडुं [नोळियो भुजगाशन पुं० मोर (२) गरुड (३) **भुजगेंद्र** पुं० शेषनाग **भुजबंधन न० आ**लिंगन भुजमध्य न० छाती **भुजलता** स्त्री० लांबो नाजुक हाथ **भुजविनिष्पेष पुं**० हाय थाबडवा ते (मल्ल पेठे) **भुजञ्चालिन्** वि० मजबूत भुजाबाळ् **भुजशिलर, भुजशिरस्** न० सभो भुंजंग पुं० साप; नाग (२) यार; आशक; प्रीतम (३) पति; स्वामी **भुजंगकन्या** स्त्री० नागकन्या **भुजंगम** पुं० साप भुजंगी स्त्री० नागण **मुँबा** स्त्री० बा**हु (**२) हाथ (३) सापनु गूंचळुं(४) भूमितिनी आकृतिनी बाजु भुजाकंड पुं० शंखनी चूडी भुजाप न० हाय(२)सभो **भुक्तर्यंज न० पगार** आपवी ते भुजांक पुं॰ आलिंगन भुवांतर, भुजांतरास न० छाती भूजिब्य पुं० दास; नोकर (२) साबी **मुजिष्या** स्त्री० दासी(२)वेश्या भुवन न० त्रण के चौदमांनो कोई एक लोक (२) पृथ्वी (३) स्वर्गे (४) प्राणी (५) मानवजाति (६) पाणी (७) समृद्ध थवुं ते [आखु भूमडळ भुवनकोश पुं० जेमां प्राणीओ रहे छे ते

भुवनत्रय न० स्वर्ग-पृथ्वी-पाताल के स्वर्ग-अंतरीक्ष-पृथ्वी ए त्रण लोक **भुवनभावन** पुं० जगतनो स्रष्टा **भुवनौकस्** पुं० देव [अग्नि(४)चंद्र **मुबन्यु पु॰ स्वामी ; मालिक (२) सूर्य (३)** भुषर्, भुवस् अ० अंतरीक्षः, पृथ्वीथी तरत उपरनो लोक(भूर् – भुवः – स्वः ए जणमानो बीजो) (२)एक ब्याहति भृविष्ठ वि० पृथ्वी उपर रहेलुं (स्वर्गमा नहि)(२)जमीन उपर क्रमेलुं(रथमां नहि) भुशुंडि(-डी) स्त्री० एक प्रकारन् अग्न्यस्त्र (२) चामडानी गोफण भू १ प० बनवुं; थवुं(२)जन्मवुं; उत्पन्न थवुं (३) –मांथी नीपजवुं (४) होवुं; जीववुं; जीवता रहेवुं(५)कोई स्थितिमा रहेबुं(६)रहेबुं; स्थिर रहेबुं(७) –तरीके उपयोगमा आववुं (८) शक्य बनवुं (भविष्यकाळमां मुख्यत्वे) (९)कारण-भूत थवुं;निपजाववुं (१०)—ना पक्षमा रहेवुं(११)-नी पासे होबुं;-ने प्राप्त थयेलुं हो बुं; --ने प्राप्त थवुं (१२)--ना काममां रत यवुं;-ना काममां रोकावुं के लागवुं(१३) (विशेषण के नाम पर्छी वपरातां) पहेलां नहोतुं तेवुं थवुं के बनवु (उदा॰ 'मस्मीमू"; 'आविर्भू'; 'तिरोभू'; 'मिथ्या भू') (१४) १० आ० मेळववुं (१५) १० उ० विचारवुं -प्रेरक० बनावबु; निपजाववु (२) प्रगट करवुं (३)पोषवुं ; जोगववुं ; टेक-ववुं (४) मानवुं ; विचारवुं ; कल्पवुं (५) साबित करवुं (६) शुद्ध करवुं(७) भावना देवी (८) भेळववुं (प्रवाही) भू वि० (समासने छेडे)बनतुं; होतुं; —मांथी नीपजतुं (उदा० 'मनोभू') भूस्त्री० पृथ्वी(२)प्रदेश;स्यळ(३) भोंयतळ (मकाननुं) **भूकंप** पुं० धरतीकंप **भूगृह, भूगेह** न० जमीन नीचेनो ओरडो; भूगोल पुं पृथ्वीनो गोळो **भूचर** वि० जमीन उपर फरतुं के **रहे**तुं ('जलचर' थी ऊलटुं) भूत ('भू'नुंभू० कृ०) वि० बनेलुं; थयेलुं(२)वस्तुताए बनेलुं; साचुं(३) योग्य ; उचित(४)भूतकाळनुं (५) मळेलुं (६)समान ; सरखुं (७)पुं० पुत्र ; बाळक (८) न० कोई पण सत् वस्तु (मानव, दैवी के निर्जीव पण) (९) पिशाच; प्रेत (१०) मूळतत्त्व (पांच छे : पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश) (११) भूतकाळ (१२) कल्याण; हित भूतकर्तृ, भूतकृत् पुं० ब्रह्मा भूतगण पुं॰ सृष्टिनां प्राणीओनो समु-दाय (२) भूत-प्रेतनो आखो वर्ग भूतगत्या अ० साचेसाच भूतपाम पुं० बधा प्राणीओनो समुदाय भूतिचितक पुं० जीव के चैतन्य तो पंच-भूतोनो स्वभाव छे, एवं माननारो वादी, 'स्वभाववादी' भूतजननी स्त्री० बधां प्राणीओनी माता भूतवात्री स्त्री० पृथ्वी(२)निद्रा **भूतनाथ** पुं० शिव भूतपति पुं० शिव (२) आकाश (३) [मरी गयेलुं भूतपूर्व वि॰ पहेलानुः; अगाउनुं (२) भूतपूर्वम् अ० अगाउ; पहेलां भूतप्रकृति स्त्री० सौ प्राणीओनुं मूळ भूतभर्तृं वि० सौ प्राणीओने पोषनार भूतभावन पुं० विष्णु (२) ब्रह्मा भृतभृत् वि० महाभूतोने घारण करनारुं (२)प्राणीओनुं भरणपोषण करनारुं भूतवज्ञ पुं ॰ प्राणीमात्रने उद्देशीने अपाती बलि (पंचमहायज्ञो पैकी एक) भूतल न० पृष्तीनी सपाटी भूतसमागम पुं० प्राणीओनुं भेगा मळत्रुं भृतसर्ग पुं० सुष्टिनुं के महाभूतोनुं सर्जन (२)सृष्टिनां प्राणीओनो वर्ग के कोटी

भूतसाक्षिन् पुं० प्राणीओनुं बध्ं जोनार के जाणनारो साक्षी भूतसूज् पुं० ब्रह्मा भूतस्थान न० सौ प्राणीओनुं निवास-स्थान (२) भूतप्रेतनुं निवासस्थान भूतात्मन् वि० पवित्र अंतरवाळुं (२) पंचभूतनुं बनेलुं (जैमके शरीर)(३) पुं० जीवात्मा (४) ब्रह्मा, विष्णु इ० भूतानुकंपा स्त्री० सो प्राणीओ प्रत्ये दया-[स्थिति; हकीकत भाव भूतार्थं पुं० साची वात; साची वस्तु-भूताबास पुं० शरीर(२)शिव(३)विष्ण् भूति स्त्री • अस्तित्व ; हयाती (२) जन्म; उत्पत्ति (३)कल्याण; सुखसंपत्ति (४) सफळता; सद्भाग्य (५) समृद्धि (६) प्रताप; भन्यता (७) राखोडी; भस्म (८) रंगीन पटाओथी करातो हाथीनो शणगार (९) तपश्चर्याथी मळती अलौकिक सिद्धि के सामर्थ्य भूतेश पुं० ब्रह्मा(२) विष्णु(३) शिव **भूतेश्वर** पुं० शिव भूतौदन पु० भूत-पिशाचनी असर दूर करवा खवातो भात भूत्यर्थम् अ० समृद्धि माटे भूदेव पुं० ब्राह्मण भूधर वि० पृथ्वीने टेकवतुं(२)पृथ्वी उपर रहेतु(३) पुं० पर्वत(४) शिव (५)शेषनाग(६)राजा भूष पुं० राजा भूपति पु० राजा(२)शिव(३)इंद्र **भृपाल** पुं० राजा **भूपुत्र** पुं० मंगळ ग्रह(२)नरकासुर **भूपुत्री** स्त्री० सीता भूभर्तृ पुं० राजा(२)पर्वत **भूभुज्** पुं० राजा भूभृत् पुं० पर्वत(२)राजा भूमन् पुं० मोटो जथो के संख्या भूमि स्त्री० पृथ्वी (२) जमीन (३) प्रवेश (४) स्थळ के जगा (५) मकाननो

माळ (६) भूमिका (नाट्य०)(७) पात्र; स्थान ; विषय (८) हद ; सीमा भूमिकंप पुं० धरतीकंप भूमिका स्त्री० भूमि; जमीन (२) प्रदेश;जगा(३)मकाननो माळ(४) पायरी (समाधि इ०नी) (५)नाटकमा अभिनय माटेनी माग के स्वांग (६) प्रस्तावना (ग्रंथनी) भूमिकाभाग पुं० ऊमरो (घरनो) भूमिगृह न० भोंयतळ नीचेनो ओरडो भूमिचल पु०, भूमिचलन न० धरतीकंप **भूमिधर** पुं० पर्वत(२)राजा भूमिपुरंदर पुं० राजा (२) दिलीप राजा भूमिभृत् पुं० पर्वत (२) राजा भूमिरह पुं वृक्ष भूमिलाभ पुं० मृत्यु **भूमिलेपन** न० लींपण भूमिवर्धन पूं०, न० शब; मडदुं भूमिसत्र न० जमीन दानमां आपवी ते भूमिसमीकृत वि० जमीनदोस्त करेलुं भूमिसंनिवेश पुं० कोई पण देशनो सामान्य देखाव के घडतर भूमिसुत पुं॰ मंगळ ग्रह(२)नरकासुर भूमिष्ठ वि० जमीन उपर रहेलुं के ऊभेलुं **भूमिजय** पुं० विराटनो पुत्र;उत्तर **भूमी** स्त्री० जुओ 'भूमि' भूमीक्वर, भूमींद्र पुं० राजा (२) पर्वत भूम्यनंतर पु० पासेना प्रदेशनी राजा भूय न० हो बुंके बनबुंते;—नी स्थिति पामवी ते (उदा० 'ब्रह्मभूय') भूयशस् अ० घणुं करीने ; मुख्यत्वे (२) अत्यंत (३) वळी; उपरांत भूयस् वि॰ वधारे; पुष्कळ(२)वधु मोटुं(३)घणुं मोटुं; संख्याबंध(४) –थी पूर्ण ; – बधु जेमां होय तेवुं (५) अ॰ अत्यंत;खूब(६)वळी; उपरांत (७) वारंवार भूयसा अ० अति; अत्यंत (२) मोटे भागे; सामान्यपणे

भूयस्त्व न ० पुष्कळ होवापणुं(२)प्रधानता **भूषिष्ठ** वि० पुष्कळ;अत्यंत(२)मुख्य; अगत्यनुं (३) वणुं मोटुं; वणुं वधारे(४) मोटे भागे होय तेवुं; मोटा प्रमाणमां होय तेवुं(६)लगभग आखुं [अत्यंत भूबिष्ठम् अ० घणे भागे; मोटे भागे (२) **भूयोदर्शन** न० वारंवार जोवुं ते भूयोभूयस् अ० वारंवार भूर् अ० त्रण ब्याह्तिओमांनी एक (२) सात पाताळोमांथी छेक नीचेनुं भूरि वि० घणु; पुष्कळ (२)मोटुं (३)अ० अत्यंत; अति(४)वारंवार भूरिकालम् अ० लांबा वसत सुधी भूरियामन् वि० घणा तेजवाळुं भूरिव्यय वि० उडाउ; अति खर्चाळ मूरिशस् अ० बहुशः; अनेक प्रकारे भूषह(–ह) पुं० वृक्ष भूजें पुं० भोजपत्रनुं झाड (२) न० लखव माटे वपराती तेनी छाल भूजेंपत्र पुं० भोजपत्रनुं झाड भूलींक पुं॰ पृथ्वी; भूलोक भूष् १ प०, १० उ० शणगारव् **भूषण** न० आभूषण(२)शणगार भूषाय आ० (आभूषण तरीके उपयोगमां आवव्) • [गारे**लुं**;अलं∌त भूषित ('भूष्'नुभू० कृ०) वि० शण-भूष्णु वि० थतुं; बनतुं(२) उत्कर्ष इच्छतुं; समृद्ध थवा इच्छतुं भूसुत पु० मंगळ ग्रह(२)नरकासुर **भूसुता** स्त्री० सीता भृसुर पुं० भूदेव; ब्राह्मण भृ १,३ उ० भरवुं (२) व्यापवुं; भरी काढवुं (३) वहन करवुं; टेकववुं(४) भरणपोषण करवुं(५)धारण करवुं; मालिक होवुं (६)पहेरवुं (७)अनुभववुं ; वेठवं(८) –ने अर्पवुः –मा उपजावव् (शोभा इ०) (९) स्मृतिमा राखव् भृकुदि(-दी) स्त्री० भगर; भव्

भृष्कुंश(–स) पुं० स्त्री-वेशधारी नट भृग् स्त्री० ज्वाळा भृगुपु० एक ऋषि (२)जमदग्नि (३) शुक्राचार्य (४)शुक्र ग्रह (५)शुक्रवार (६)भेखडः, कराड भृगुकच्छ पुं०, न० सरूच (शहेर) भृगुज, भृगुतनय पुं॰ शुकाचार्य (२) [(३)शोनक शुक्र ग्रह भृगुनंदन पुं० परशुराम (२) शुक्राचार्य भृगुपतन न० कराड उपरथी पडवुं ते મૃગુપતિ, મૃગુસાર્વે, મૃગુશ્રેષ્ઠ, મૃગુ-सत्तम पुं० परशुराम भृ**गुसुत, भृगुसुनु** पुं• परशुराम (२) शुक्राचार्य (३)शुक्र ग्रह भृत् वि० (समासने छेडे) घारण करतुं (२)टेकदतुं; पोषतुं(३)लावतुं भृत ('भृ'नुभू० कृ०) वि० ऊचकेलुं; वहन करेलुं(२)टेकवेलुं;पोषेलुं(३) –थी युक्त; –थी पूर्ण (४) भाडे लीघेलुं (५) पुं**० पगारदार** नोकर भृतक वि० पोषेलुं (२) भाडे राखेलुं (३) पूं० पगारदार नोकर भृति स्त्री० धारण करवुं के पोषवुं ते (२) -ने बर्पवुं ते; -मां उपजाववृं ते (३) पगार; भाडुं (४) मूडी भृत्य वि० पोष्य; जेनुं भरणपोषण करवुं पडे ते (२) पुं० नोकर; आश्रित (३) राजानी कर्मचारी भृत्यता स्त्री०, भृत्यभाव पुं० दासपणुं भृत्यर्थम् अ० भरणपरेषण माटे भृत्यवर्ग पुं० परिवार; नोकरवर्ग भृत्यवात्सस्य न० नोकरो प्रत्ये मायाळुता भृत्यायते आ० (नोकरनी जेम वर्तवुं) भूशा वि० मजबूत; गाढ; पुष्कळ (२) वारंबार थतुं भृक्षकोयन वि० झट गुस्से थई जाय तेवुं भुशबंड वि० कडक सजा करनारुं

भृशदुःस्तित, भृशयीडित वि ० अत्यंत दुःस्ती

भृज्ञम् अ० अत्यंत; अति(२)वारंकार भुष्ट ('भ्रस्च्'नुं भू० कृ०) वि० शेकेलुं; भूजेलुं मृंग पुं० भमरो भृंगराज पुं० भांगरो (२)एक जातनो मोटो भमरो(३)एक पक्षी भृंगार पुं०, न० सोनानी झारी (२)झारी भूंगी स्त्री० भमरानी मादा **भॅक** पु०देडको (२)बीकण माणस भेड पुं० घेटो (२) तरापो भेडी स्त्री० घेटी भेतव्य वि० जेनाथी डरवुं जोईए तेवुं भेतुं वि० फोडनार्ह; तोडनार्ह; भाग-नोर्ष (२) डखल करनार्ष (३) रहस्य खुल्लुं करी देनारं भेद पुं० भागवुं, फाडवुं, तोडवुं के चीरवुं ते(२)विभाग पाडदा ते(३)आरपार वींधवुं ते (४) फाट; चीरो (५) फूटवुं ते(६)विभाग (७) घा (८) जुदाई; बिशिष्टता (९) बदलवुं ते; विकृति उत्पन्न करवीते (१०) कुसंप (११) (रहस्य)बहार पाडी देवुं ते (१२)दगो; द्रोह(१३)द्वैत**('गर्द्वै**त[']'थी ऊलटुं) भेंदक वि० भेदनार्ह; फाडनार्ह; तोडनार्ह; जुदुं पाडनारुं; वींबनारुं (२)जुलाब र्लगाडे तेवुं(३)बदलनारुं; फैरवनारुं भेदन वि० जुओं 'भेदक' (२) न० तोडवुं, फाडवुं के चीरवुं ते भेदसह वि० जुदुं पाडी शकाय के फोडी शकाय तेवुं (**लांच इ०** थी) भेदाभेदौ पुं०द्वि०द० संप-कुंसंप; संमति-मतभेद (२) एक रूपता अने तफावत भेदित वि॰ फाडेलुं;तोडेलुं;भाग पाडेलुं भेरिन् वि० भागनारं, तोडनारं इ० भेदिर, भेदुर न० वजा भेदोन्मुख वि० फूटवानी के खीलवानी तैयारीमां होय तेवुं भेडा वि० फाडवा, चीरवा के वींघवा भेरि(-री) स्त्री० नगारुं; ढोल भेरंड वि॰ भयंकर; बिहामणुं(२)पुं० एक पक्षी भेषज वि० मटाडे तेवुं; नीरोगी बनावे तेवुं(२)न० दवा; औषध (३) उप-चार; उपाय भैक्स वि० भिक्षा वडे जीवतुं(२)न० भीख (३) भीखीने मेळवेलुं होय ते भेक्षभुष्य पुं० भिखारी; याचक भैक्षव वि० भिक्षक संबंधी भैसव्सि स्त्री० भीखीने जीववुं ते भेसक न० भिखारीओनो समुदाय भैक्स न० भीखीने मेळवेलुं अझ इ० भैम वि०भीम संबंधी (२) भयंकर परा-ऋम करनारुं (३) पुं० भीमनो वंशज भैमी स्त्री० दमयंती (भीमराजानी पुत्री) **भैरव** वि० भयंकर; बिहामणुं(२)पुं० शिवनं एक स्वरूप (३) भय; डर (४) न० भयः डर भैरवी स्त्री० दुर्गानुं एक स्वरूप **भेषज** न० दवा;ओषध **भॅगडम** न० उपचार करवींते; दवा करवी ते (२) दवा; औषध भोक्त वि० सानारुं; भोगवनारुं(२) अनुभवनारं (३) पुं०मालिक; भोगव-नार (४) पति (५) प्रियतम भोग पुं० खावूं ते (२) भोगववुं ते (३) परिणाम ; फळ(४) मालको (५) आवक ; लाम(६)-नी उपर शासन करवानुं होवुंते (७)कामभोग (८)भोगपदार्य (९)भोज्य पदार्थ (१०) मूर्तिने घरावेलुं भोजन (११) यांक; वळांक (१२) सापनी फेलावेली फणा भोगकर पुं० उपभोग के आनंद आपनार भोगतुष्या स्त्री ० कामभोग के संसार-भोगनी तृष्णा **भोगषर** पुं० साप भोगपति पं० जिल्ला के प्रांतनो हाकेम

भोगभूमि स्त्री० स्वर्ग इ० लोक (ज्यां कर्मोनां फळ ज भोगववानां होय छे) भोगवत् वि० उपभोगं के आनंद आपनारं (२) सुखी; समृद्ध (३) कूंडाळां के वळांकवाळुं (४) पृं० साप (५) पर्वत भोगवती स्त्री०पातालगंगा (२)नागण भोगावली स्त्री० चारणे करेली स्त्रति भोगिन वि० खानारुं; भोगवत् (२)अनु-भवतुं; वेठतुं(३)वापरनारुं; मालिक (आ त्रण अर्थोमां, समासने छेडे) (४) बळांक के कूंडाळांबाळुं (५) मोटा विपुल शरीरवाळुं (६)फणावाळुं(७) कामभोगमां आसक्त (८) समृद्धः; धनवान (९) पुं० साप (१०) राजा भोगिराज पुं० शेषनाग भोग्य वि०भोगववा योग्य (२) अनुभव-वा के वेठवा योग्य (३) लाभदायक भोग्यवस्तु न० भोगपदार्थ भोज वि० शोग आपनार्स (२)भोगनुं जीवन जीवनारं (३) पुं० घारानगरी (माळवा)नो एक प्रसिद्ध राजा भोजकुल न० विदर्भ-वराडना भोज-राजाओनो वंश **भोजन वि०** सदरावतुं;पोषतुं(२)अक-रांतियुं खानारुं (३)न० खादानी वस्तु (४) खावुं ते (५) उपयोगमां लेवुं ते (६) उपभोगनो कोई पण पदार्थ (७) समृद्धिः; मिलकत | भोजन भोजनविशेष पुं० स्वादु के विशिष्ट भोजनाच्छादन न० भोजन अने बस्त्र भोजनाधिकार पुं० भोजन इ० उपर देखरेख राखवानुं काम के अधिकार भोजनीय वि० खादा योग्य(२)खव-राववा योग्य(आश्रित) (३) न० भोजन भोजाः पुं० ब० व० एक जातिना लोक भोजिन् वि॰ (समासने छेडे) खात्, भोगवत् के मालिक एवं(२) खबरावत् ; पोषत्

भोज्य वि० खावानु; खावा योग्य (२) भोगववानुं; भोगववा योग्य (३) अनुभववा के वेठवा योग्य (४) न० अन्न; भोजन (५) खावानी चीजोनो संग्रह (६) मीठाई; पकवान (७) भोग (८) लाभ(९) मर्मस्थानमां घा भोज्या स्त्री० भोज लोकोनी राजकुंवरी (२) कुट्टणी; दूती [खेद बतावे छे) भोस् अ० अरे, ओ, हे, ओहो (प्रश्न के भौत वि० मृतप्राणी संबंधी (२)पचभूत संबंधी (३)भूत-पिशाच संबंधी (४) गांडुं; आवेशयुक्त भौतिक वि० भूतप्राणी संबंधी (२) महाभूतनुं बनेलुं (३) भूत-पिशाच संबंधी (४) वळगाडवाळ् भौभ वि० भूमि – पृथ्वीने लगतुं (२) पृथ्वी उपरनुं(३) माटीनुं बनेलुं(४) मंगळ ग्रह संबंधी (५) पुं॰ मंगळ ग्रह (६) नरकासुर (७) न० माळ (मकाननो) (८) घान्य; अनाज **भौमदिन** न० मंगळवार भौमन पु० विश्वकर्मा भौमबहान् न० वेदो, ब्राह्मणो अने यज्ञो -ए त्रणनी समुदाय भौवन पुं० जुओ 'भौमन' भ्रम् १, ४ प० भमवुं; भटकवुं (२) कूंडाळे फरवुं; आसपास फरवुं (३) अवळे मार्गे जवुं(४)फेलावुं; प्रचारमां आववुं (५) फरकवुं; थरथरबुं (६) डामाडोळ थवुं (७) भूलमां पडवुं –प्रेरक० आसपास के गोळ फेरववुं (२) भटके तेम करवुं (३) भूलमां नाखवं (४)फेरववं; घुमाववं (हाथमां) (५) ढोल पीटीने जाहेर करवुं भ्रम पुं॰ भटकवुं ते (२) गोळ फरवुं ते (३) भूलमां पडवुं ते (४) गूचवण; मृझवण (५)भमरो; वमळ (६)फुबारो **भ्रमण** न० भमवुं, भटकवुं के गोळ फरवुं

ते(२) – मांधी खसवुं ते (३) भूलमां पडवूं ते (४) लथडियुं (५) तंमर भ्रमणीविलास पुं० आनंद-यात्रा भ्रमर पुं० भमरो(२)जार; कामी(३) भगरडो (४) कुंभारनो चाकडो भ्रमरकरंडक पुं० भमराओ भरेली पेटी (राते दीवा ओलववा चोरो राखे) भ्रमरवाधा स्त्री० भमराओधी पजवणी **भ्रमराभिलीन** वि० भगराओं जेने वळग्या होय तेवुं **भ्रमरित** वि० भमराना रंगन् थई गयेलुं भ्रमरी स्त्री० भमरी भ्रमि स्त्री० भमवुं के घूमवुं ते; गोळ फरवुं ते (२)वमळ ; भमरो (३) मुर्छा भ्रमित वि॰ भमावेलुं; गोळ फेरवेलुं (२) भ्रमथी मानी लीघेलुं भ्रष्ट ('भ्रंश्'नुं भू० कृ०) वि० खरी पडेलुं; नीकळी पडेलुं(२)क्षीण थयेलुं (३)नासी गयेलुं(४)दुराचरणी भ्रष्टि किय वि० विहित कर्मीन करनारं भ्रष्टश्री वि॰ दुर्भागी **भ्रष्टाधिकार** वि० काढी मूकेलुं; होद्दा उपरथी दूर करेलुं भ्रस्त् ६ उ० [भृज्जति-ते] भूजवुं; शेकव् भ्रंश १ आ०, ४ प० सरी पडवुं; खसी पडवुं;पडी जवुं(२)ठोकर खावी(३) –मांथी खसी पडवुं (४)खोवुं ; गुमाववुं (५) नासी जवुं (६) क्षीण थवुं (७) अलोप धर्व **भ्रंश** पुं० पड़ी जबुं **के सरी** पड़बुं ते (२) क्षीण थवं ते (३) नाश पामवुं ते (४) अलोप थवुं ते (५) नासी जबुं ते भ्रंशन न० नीकळी पडबुंके पडी जवुंते भंशिन् वि० पडी जतुं; नीकळी पडतुं (२)भ्रष्ट थतुं(३)नाश पमाडतुं भ्राज् १ आ० प्रकाशवुं; चळकवुं भ्राजिन् वि० चमकतुः चळकतुं **भ्राजिष्णु** वि० तेजस्वी; कांतिमान

भ्रातरी पुं० द्वि० व० भाई अने बहेन भ्रातृ पुं० भाई (२) बंधु; मित्र भ्रातृगंधिक (--न्) पुं० नामनो ज भाई भातृजाया स्त्री० भोजाई; भाईनी पत्नी भ्रातृब्ध पुं॰ भन्नीजो (२) प्रतिस्पर्धी; शत्रु; विरोधी भ्राप्त्य न० भाईपणुं भ्राम पु० आम तेम भटकवुं ते (२)भूल; भ्रामक वि० भ्रममा नांखनारुं (२) फेरवनारुं; घुमावनारुं भ्रामरी स्त्री० दुर्गा (२) डाबेथी जमणे प्रदक्षिणा करवी ते भ्रामिन् वि० भ्रममा पडेलुं भाष्ट्रक पुं०, न० तवो; कढाई भ्रांत ('भ्रम्'नुं भू० कृ०) वि० भमेलुं; भटकेलुं(२)गोळ घूमतुं के घूमेलुं(३) भूलमा पडेलुं (४) मूझायेलुं (५)न० भटकवुं ते (६) भूल

भ्रांतबुद्धि वि॰ मूंझायेली के भूलमां पडेली बुद्धिवाळुं भ्रांति स्त्री० भटकवुं ते (२)गोळ फरवुं ते (३) भूल; गोटाळो; भ्रम (४) मूंझवण (५) संशय (६) अस्थिरता भ्रुकुटि(–टी) स्त्री० जुओ 'भ्रूकुटि' भ्रास्त्री० भमर; भवुं भ्रुकुटि(-टी) स्त्री० भवां चडाववां ते भ्रमुक्षेप पुं० भवां चडाववां ते भ्रूण पुं० गर्भ (२) बाळक; छोकरो (३) श्रोत्रिय के विद्वान बाह्मण भ्रूणहत्या स्त्री० गर्भहत्या (२)श्रोत्रिय ुके विद्वान ब्राह्मणनी हत्या भूभंग, भूभेद पुं भवा चडाववां ते **भ्रुभेदिन्** वि० भवां चडावतुं **भूविकार, भूविक्षेप** पुं० भवां चडाववां ते भ्रविवेष्टित न०, भ्रविभ्रम, भ्रविलास पुं० विलासमा भवां नचाववां ते

म

मकर पुं० मगर; मगर्मच्छ मकरकेतन, मकरकेतु, मकरध्वज पुं० कामदेव ; मदन (२) सागर ; समुद्र मकरंद पु॰ फूलमानुं मध (२) एक फूल-झाड; कुंद समुद्र मकराकर, मकरालय, मकरावास पुं० मकरिका स्त्री ० अमुक प्रकारनो माथानो पहेरवेश (खास करीने स्त्रीनो) मकार पुंज मं वर्ण (२) मं थी शरू थता आ पांच पदार्थीमांनो दरेक: मद्य, मत्स्य, मांस, मैथुन अने मुद्रा **मकु**ट न० मुगट मक्षिक पुं०, मक्षिका स्त्री० माखी मक्षिकामल न० मीण मभोका स्त्री० माखी **मल** पुं० यज्ञ (२)उत्सव(३)पूजन

[करनार) **मलद्विष्** पु० राक्षस मलम्गद्धाव पुं शिव (दक्षयज्ञनो ध्वस मस्रांशभाज् पुं० देव मगम पुं० एक प्राचीन देशनुंनाम (बिहारनो दक्षिण भाग)(२)चारण मगधेश्वर पुं० मगध देशनो राजा (२) परंतप नामनो राजा(३)जरासंध मग्न ('मस्ज्'नं भू० कृ०)वि० डूबेलुं (२)तल्लीन मञ्चन० बक्षिस(२)समृद्धि मघव, मघवत् पुं॰ इंद्र मघबन् वि० दानेशरी (२) पुं० इंद्र (३)घुवड(४)व्यास मुनि मस्चित वि० मारामां आसक्त चित्त-**सज्जन्** पुं० मज्जा

मण्डन न० डूबकुं लगाववुं ते (२)स्नान (३) डूबवुं ते (४) मज्जा मज्जा स्त्री० हाडकांमांनो मावो **मटक पुं**०, त० श**ब; मडद्रं** मटचो (–सी) स्त्री० करानी वृष्टि **मठ** पुं०, न० तपस्वीनी कोटडी (२) संन्यासीओने रहेवानुं मकान (३) | जवाबदारी विद्यालय मठिचता स्त्री० मठनी व्यवस्था इ० नी **मठायतन** न० विद्यालय; मठ **मठिका** स्त्री० तपस्वीनी कोटडी **मङ्गडायित** वि० गळी जवायेलुं मणि पुं० रत्न (२) घरेणुं (३) ते ते वर्गमां श्रेष्ठ एवं ते(४)स्फटिक(५) गठ्ठो के ईंट जेवो आकार (घातुनो) मणिक पुं०, न० पाणीनो घडो मणिकार पुं० झंवेरी मणित न० रतिक्रीडा वस्ततनो गणगणाट मणितुस्राकोटि स्त्री ० पगनुं रत्नमय घरेणुं मणिदंड वि० रत्नजडित हाथावाळुं मणिपुष्टपक पुं० सहदेवना शंखनुं नाम **मणिबंघ** पुं० कांडुं (२) –उपर रत्न जडवां के चोटाडवां ते मणिबंधन न० कांडुं(२)वींटी अथवा कडानो ते भाग ज्यां रत्न जडाय छे (३) मोतीनुं घरेणुं मणिभित्ति, मणिमंडप पुं० शेषनागनो मणिमंथ न० खनिज मीठु;सिधव मणिमेखल वि० मणिना कदोरावाळु मणिरत्न न० रत्न मणिविग्रह वि० मणिओ जडेलुं **मणिसर पुं**० कंठहार मतल्लिका, मतल्ली स्त्री ० (नामने छेडे) 'ते वर्गनु श्रेष्ठ' एवो अर्थ दर्शवि छे (उदा० ' गोमतल्लिका ' ≕ उत्तम गाय) मतंग पु० हाथी (२) एक ऋषि (३) त्रिशंकु राजा मतंगज पुं० हाथी

मताक्ष वि० पासा रमवामां कुशळ मित स्त्री० बुद्धि; समज (२) मन; हृदय (३)विचार; मान्यता; धारणा (४) इरादो; प्रयोजन (५) निश्चय (६)संमान;आदर(७)इच्छा; वृत्ति; वलण(८)सलाह(९)याददास्त मतिगति स्त्री० विचारनं वलण मतिगर्भ वि० बुद्धिशाळी; कुशळ मतिप्रकर्षं पुं० बुद्धिमत्ता मतिश्रम पुं० बुद्धिने भ्रम थई आववो ते मतिमत् वि० बुद्धिमान मतिशालिन् वि० बुद्धिशाळी;होशियार मितक ८ उ० विचार के निश्चय करवो **मत्क** वि० मारुं; मारा संबंधी **मत्कुण** पुं० माकण मत्त ('मद्'नुंभू० कृ०)वि० मदमत्त; पीघेलुं (२) गांडुं(३)मद-गळतुं (४) गविष्ठ (५)स्वच्छंदी (६)कामोन्मत्त मत्तकाशिनी, मत्तकासिनी स्त्री० अति मोहक स्त्री मत्तपालक पुं०पीधेलो गांडा जेवो माणस मत्तवारण, मत्तेभ पुं० मद-झर हाथी मित्रिय वि० मने वहालुं एवं मत्या अ० जाणी बूजीने (२) --मानीने ; -वारीने; कल्पीने मत्सर वि॰ इर्ष्याळु; अदेखुं (२)लोभी; तृष्णाळु(३)स्वार्थी(४)पु०अदेखाई; ईर्ष्या (५) वेर; द्वेष (६) गर्व (७) लोभ(८)कोघ मत्सरिन् वि० इर्ष्याळु; अदेखुं (२) वेरी; द्वेषी(३)लोभी; स्वार्थी मत्स्य पुं० माछलु मत्स्यकोश पुं० हाथी मत्स्यगंधा स्त्री ० सत्यवती;व्यासनी माता मत्स्यजीवत्, मत्स्यजीविन्, मत्स्यबंघ, मत्स्यबंधिन् पुं० माछीमार मत्स्यंडिका, मत्स्यंडी स्त्री० उकाळेला शेरडीना रसनी राब

मत्स्याद वि० माछला खानाहं मत्स्यावतार पुं० विष्णुनी माछला तरीकेनो पहेलो अवतार (दशमांनो) मत्स्याशिक वि० माछलां खानारुं मत्स्याः पुं० ब० व० विराट राजानो देश तथा तेनालोको मत्स्योद्धर्तन न० एक जातन् नृत्यः मय् १, ९ प० वलोववुं(२)दळवुं; कचरवुं (३) खूब त्रास आपवो (४) ईजा करवी (५) नाश करवी मथन वि० वलोवी नाखनारुं(२)ईजा करनारुं(३)नाश करनारुं(४) धर्षण करनारुं (५) न० वलोववुं ते (६) घसबुं ते(७) **हानि**; नाश मिथत ('मय्'नुं भू० क्व०) वि० वलो-वेलुं(२) कचरेलुं; दळेलुं (३) पीडेलुं (४)नाश करेलुं(५)न० मठो(पाणी उमेर्या विनानी जाडी छाश) मथिन पुं० रवैयो मथुरा, मथुरा स्त्री व्यमनाकिनारे आवेलुं प्राचीन नगर (श्रीकृष्णन् जन्मस्थान) मद् समासनी शरूआतमां वपरातुं प्रथम पुरुष सर्वनामनुं एकवचननुं रूप (उदा० 'मञ्चित्त', 'मद्भक्त', 'मन्मनाः') **मद्**४ प० पीघेलुं के मदमत्त थवुं(२) गाडा थवु(३)-मा आनंद माणवो; खुशी थवु –प्रेरक०[मादयति[भत्त के गांडु करवुं (२) [मदयति] हर्षित करवुं (३) कामोन्मत्त करवु (४)आ० खुश थवु **मब् १०** आ० खुश करवुं;संतुष्ट करवुं मद् १ ५० गर्वकरवो मद पुं० केफ; नशो(२)गांडपण(३) कामवासना (४) हाथीने मस्तीमां आवतां गंडस्थळमांथी झरतो रस (५) कामना; तृष्णा (६) गर्वे; अभिमान (७) अत्यंत हर्ष (८)सुदरता **मदकल** वि० अस्पष्ट उच्चारकरतं:

धीमेधीमे बोलतुं; मंद अवाज करतुं (२) मदमत्त (३) अस्पष्ट छतां मधुर एवं मदखेंल वि० कामवासनाने कारणे विलासयुक्त बनेलुं मदज्बर पुं० गर्व के अभिमानरूपी ताव **मदन** वि० मत्त करे तेवुं; मादक (२) खुश करे तेवुं(३)पुं० **कत्मदेव** (४) कामवासना (५)वसंतऋह्य मदनकलह पुं० संभोग; मैयुन मदनक्लिष्ट वि० जुओ 'गदनातुर' **मदनतंत्र** न० कामशास्त्र **मदनपोडा,मदनबाधा** स्त्री०कामवासना-नी पीडा िनिमित्ते करातो उत्सव **मदनमह, मदनमहोत्सद** पुं० कामदेव मदनलेख पुं० प्रेमपत्र मदनसंदेश पुं० प्रेमनो संदेशो मदनातुर वि० कामवासनाथी पीडित **मदनावस्य** वि० प्रेममां पडेलुं मदनावस्था स्त्री० प्रेममां पडवुं ते **मदनांतक** पुं० शिव (कामदेवन। नाशक) मदनीय वि० मादक मदनोत्सुक वि० जुओ 'मदनातुर' मदप्रसेक पुं० वीर्य सींचवुं ते मदभंग पु॰ गर्व ऊतरवो ते मदमुख् वि० मद गळतो होय तेव् मदियत् वि० मादक **मदर्वे** अ० मारे माटे **मदवीर्य न० मद के कामना**थी थयेलो जुस्सो(२)प्रेमने कारणे प्रगटेलुं पराक्रम मदस्रुति स्त्री० भद झरवो ते **मदाकुरु** वि० मदझरवाने कारणे गांड् बनेेलुं(२)कामोन्मत्त ्सुस्त बनेलुं मदास्रस वि० मदने कारणे धीमुं के मदांध वि॰ मदमत्तः; मदोन्मत्त (२) **िहर्षे उपजावनार्ह** कामोन्मत्त मदिर वि० मादक; मद उपजावनारुं(२) मदिरदृश्, मदिरनयना, मदिरलोचना स्त्री • जुओ 'मदिराक्षी'

मदिरा स्त्री० दारू; मद मदिराक्षी स्त्री० मादक – मोहक आंखो-वाळी स्त्री । आंखोबाळ मदिरायतनयन वि० लांबी मदिक मदिरेक्षणा स्त्री० जओ 'मदिराक्षी' मिंदरोत्कट, मिंदरोन्मत्त वि० मद्य पीने उन्मत्त बनेल् [(हळ ६०) मदी स्त्री० प्यालो(२)खेतीनुं ओजार **मदीय** वि० मार्च; मारा संबंधी **मदोत्कट** वि० मदमत्तः; मदोन्मत्त (२) कामोन्मत्त मदोत्सव पु० आंबो मदोदय, मदोद्धत, भदोन्मत्त वि० पीघेलुं; नशाथी उन्मत्त बनेलुं (२) मद के गर्वथी जुस्सामां आवेलुं मद्गुपुं० लक्करी जहाज मद्यावि० मादक (२) न० दारू **मद्यप** पुं० दारूडियो ियोण् मद्यपान न० दारू पीवो ते(२)मादक मद्र पुं० एक देश(२)ए देशनो राजा (३) न० हर्ष; आनंद मद्रनाभ पुं० एक मिश्रजाति मद्रिका स्त्री० मद्र देशनी स्त्री मद्वचन न० मारो आदेश के संदेश मध् वि॰ मीठुं;गळचुं;सुखदायक(२) न० मधमाखीओए एकठो करेलो फ्लनो रस; मध (३) एक जातनुं मीठ् मध (४) मधपूडी (५) पुं० वसंतऋतु 😉) चैत्र महिनो (७) विष्णुए हणेला एक राक्षसनुं नाम मधुक वि० मीठुं; गळघं **मधुकर** पुं० (नर) मधमाख (२) व्यभिचारी पुरुष मधुकरी स्त्री० (मादा) मधमाख **मधुकार, मधुकारिन्** पुं० (नर) मथमाख मधुगंधि, मधुगंधिक वि० मधुर वास-वाळुं (२) मधनी वासवाळुं मधुच्युत्(–त)वि० मध झरतुं होय तेवुं

मघुतम वि० अति गळघुंके मादक मधुनिष्दन, मधुनिहंत पुरु विष्णु (मधु राक्षसने हणनार) **मधुप पुं**० मधमाख(२)दारूडियो मधुपर्क पुं० दहीं, पाणी, घी, मध अने साकर - ए पांचनुं मिश्रण (महेमान अथवा वरराजाने अपाय छे)(२) महेमानना स्वागतनो विधि **मधुपान** न० दारू पीवी ते मधुपुर न०, मधुपुरी स्त्री० मधुरा मधुभिव् पुं० जुओ 'मधुसुदन ' मधुमक्षिका स्त्री० मधमाख **मधुमय, मधुमयत** पुं० जुओ ' मधुसूदन ' **मधुमाधवी** स्त्री० एक मादक पीणुं **मधुमाधवी** पुं० द्वि० व० चैत्र अने वैशाख मधुर वि० मीठुं; मळघुं (२) मध्युक्त (३)मनोहर (४) मंजुल अवाजवाळु मधुरम् अ० मीठाशयी ; प्रिय लागे तेम मधुरस वि० गळधा स्वादवाळुं (२) पुं० शेरडी (३) गळपण (४) ताड मधुरा स्त्री० मथुरा नगरी मधुराक्षर वि॰ मीठा अवाजवाळुं **मधुरालाप** वि० मीठा अवाजे बोलतुं (२) पुं• मीठो अवाज; मीठो राग मञ्जिषु पुं० जुओ 'मधुसूदन ' **मध्रिमन्** पुं० माध्ये; मधुरता मधुरेण अ० भलाईथो ; भलमनसाईयो ; [धन के वातचीत मीठाशयो मधुरोपन्यास युं० मीठा शब्दोमां संत्रो-मधुलिह, मवुलेह, मबुलेहिन्, मधु-लोलुप पुं० मधमाख मध्यन न० मधु नामनो राक्षस रहेतो हतो ते बन (यमुनाकिनारे) मध्वार पुं० वारंवार दारू पीत्रो ते (मुरूयत्वे बहुवचनमां वपराय छे) **मध्यत** पुरु मधमास्र मधुशिष्ट, मधुशेष न० मीण **मध्दच्युत्** वि० मध झरतुं होय तेत्रुं

मधुश्री स्त्री० वसंतऋतुनी शोभा मधुसल, मधुसहाय पुं० कामदेव मधुसूदन पुर्व (मधु राक्षसने हणनार) श्रीकृष्ण (२) मबमाख मधुहन् पुं० (मधुपूडानी नाश करी) मध एकठुं करनार (२) जुओ ' मधुसूदन ' मधूक पुं० सथमाख (२) महुडानुं झाड (३)न० महुडानुं फूल(४)जेठीमध मधूच्छिहर, मधूरव, मधूरियत न० मीण मध्द्यान न० वसंतनो बगीचो (रहेठाण) **मध्यव्या न०** मथुरा नगरी (मधु राक्षसनुं मध्य वि० वच्चेनुं; वचलुं (२) वच्चे आवतुं (३) मध्यमसरनुं; मध्यम कोटी के कक्षानुं (४) निष्पञ्ज (५) न्यायसर एवं (६) पु०, न० वच्चेनी भाग (७) केंद्र (८) केड; शरीरनी वचलो भाग (९) पेट (१०) कोई पण वस्तुनी अंदरनो भाग (११) वचली दशा के स्थिति (१२) न० करोड अबज (संख्या) वच्चे मध्यतस् अ० वच्चेथी; –मांथी (२) मध्यनिहित वि० अंदर खोसेलुं मध्यप्रविष्ट वि० वचमां पेठेलुके घूसेलुं (विश्वास मेळवीने) | कमर मध्यभाग पुं० वचलो भाग (२) केड; **मध्यम्** अ० −नी वच्चे ; अंदर **मध्यम** वि० वच्चे आवेलुं के ऊभेलुं (२) वचली कक्षानुं के कोटिनुं (३) वचला कदनुं (४) वच्चे जन्मेहुं; वचेट (५) तटस्थं; निष्पक्ष (६) पुं० स्वरसप्तकनो पांचमो स्वर (७) मध्यनो प्रदेश के भाग (८) निष्पक्ष राजा (९) भीम (१०) न० केड; कमर (११) वच्चेनो भाग मध्यमक वि० छैक वच्चेनुं (२)सहियाह (३) न० वस्तुनो अंदरनो भाग मध्यमलोकपाल पुं० राजा **मध्यमोपल** पुं० हारनो मुख्य के वचलो

मध्यरात्र पुं०, मध्यरात्रि स्त्री० मधरात मध्यलोक पुं० पृथ्वी; मृत्युलोक मध्यस्य वि० वचमा आवेलुं (२) तटस्य; निष्पक्ष (३) निरपेक्ष (४) पुं० वे पक्ष वच्चे न्याय तोळनारो मध्यस्थता स्त्री० तटस्यता(२)व बली स्थिति (३) मध्यमसरता निष्पक्षता (५) निरपेक्षता मध्या स्त्री० वचली आंगळी (२) जुवान स्त्री (रजस्वला थवा लागेली) **मध्यात्** अ० वच्चेयो **मध्याह्न** पुं० बपोर मध्ये अ०वच्चे (२)अंदर (ए अर्थमां समासना पहेला पद तरीके मोटे भागे आदे छे; उदा० 'मध्येगंगम्') मध्येन अ० आरपार के वच्चे मध्यापात दि० गरूआतमां मधनो स्वाद ्रिअहित आपवी ते होय तेवुं मध्वाहुति स्त्री० स्वादु वस्तुओनी यज्ञमां मन् १ प० गर्ने करवो (२) पूजवुं (३) १० आ० गर्वकरवो (४) रोकव् (५) ४,८ आ० मानवुं; धारवुं (६) मानी लेबुं; गगबुं (७) संमान करवुं; आदर करवो (८) समजबुं; जाणबुं (९) कबूल राखवुं;स्वीकारेव्ं (१०) इरादो राखवो –प्रेरक० उ० मान आपवुं; आदर करवो (२) आ० पोतानी जातने मादी मानबी [धारणाः; तर्क मनन न० विचारवं ते; चितन (२) मनस् न० मन (२) समजशक्ति: विचार-शक्ति; विवेकशक्ति (३) कल्पना; धारगा (४)इ**रादो**; हेतु (५)इच्छा; कामना (६)ध्यान (७)वलण; वृत्ति (८) मनोबळ (९) प्राण; जीव मनसा गम् १प० विचारबुं; चितवबुं मनसिज, मनसिशय पुं० कामदेव; मदन मनस्कार पुं० मननी एकस्प्रता

मनस्तः अ० मनमांथी मनस्ताप पुं० मानसिक संताप के पीडा मनस्विन् वि० डाह्यु; बुद्धिशाळी; कुशळ (२) उदार चित्तवाळुं (३) एकाग्न (४) स्थिर के दृढ मनवाळुं मनस्विनी स्त्री० धीर चित्तवाळी स्त्री (२)अभिमानी स्त्री(३)शीलवती स्त्री मनःकृ ८ उ० –नी उपर मन स्थिर करवुं; --नी प्रत्ये मन वाळवुं मनःपुत वि० पोताना अंतरात्माए मान्य करेलु के शुद्ध मानेलुं **मनःप्रसाद** पुं० मननी प्रसन्नता मनःशस्य न०मनसः शुळ जेवी चिता मनःशिल पुं०, मनःशिला, स्त्री० एक खनिज पदार्थ (लाल रंगनो) मनःशीघ्र वि० मन जेटलं वेगवंत मनःस्थैर्यः न० मननी स्थिरता – दृढता मनाक् अ० अस्प के थोडु होय तेम (२) धीमेथी (३) फक्त; मात्र मनाका स्त्री० हाथणी मनीषा स्त्री० इच्छा; कामना (२)बुद्धि; समजशक्ति (३) विचार; रूपाल मनीषित वि० इच्छेलु; चाहेलुं (२) प्रिय;मनगमतुं (३) न० इच्छा (४) इच्छेली वस्तु मनोषिता स्त्री० डहापण मनीषिन् वि० शाणुं; डाहर्युं (२)ज्ञानी; विचारवंत (३)पुं० ज्ञानी ऋषि मनु पुं०विवस्वतना पुत्र; मानवकुळना पिता (२) ब्रह्माना चौद पुत्रोमांना दरेक (३)मंत्र(४)ब०व० मानसिक शक्तिओ मनुज पुं० मनुष्य; माणस मनुष्य वि० माणसने हिनकर एवं (२) पु० मानव; माणस मनुष्यकार पुंज्मनुष्यनो पुरुषार्थ-प्रयत्न मनुष्यजाति स्त्री० माणस जात **मनुष्यता** स्त्री०, **मनुष्यत्य** न० माणस तरीकेनो जन्म

मनुष्यदेव पुं० राजा(२)ब्राह्मण मनुष्यधर्मन् पुरु कुदेर भनुष्ययज्ञ पुं० (मनुष्ये करवाना पांच यज्ञो पैको एक) अतिथिसत्कार **मनुष्ययान** न० पालखी; म्यानो **मनुष्यशोणित** न० माणसनुं लोही **मनुष्येश्वर** पुं० राजा मनोगत वि० मनमां आवेतुं के रहेलुं; मनमां छुपाबेलुं (२) इच्छेकुं (३) न ९ इच्छा (४) विचार; स्थाल मनोप्राहिन् वि० मनने मोहनाएं **मनोज, मनोजन्मन्** वि० मनमां अन्मेलुं के जन्मतुं(२)पुं० कामदेव **मनोजव**ं वि० मनना तरंग जेटलुं झडपी (२)झट समजी ले तेवुं **मनोजिञ्ज** वि० सामाना विचारो समजी के कल्पी लेनार् मनोज्ञ वि० सुंदर; मनगमतुं मनोनिग्रह पुं० मननो संयम के निग्रह मनोनीत वि० पसंद करेलुं; गमतुं **मनोनुग** वि० मनने अनुकुळ; मनगमन् मनोभव वि० मनमां उत्पन्न थपेलुं; मनथी कल्पो लीबेलुं (२) पुं० कामदेव (३) तीव कामना **मनोभिराम**ं वि० मनने प्रसन्न करे तेत्र मनोभू पुं० कामदेव; मदन **मनोयायित्** वि० मनना तरंग प्रमाणे जर्जु (२) मनना विचार जेटहुं वेगीलुं **मनोरय** पुं० इच्छा (२) इच्छे औ वस्तु **मनोरयकृ**त वि० स्वेच्छाए पसंद करेलुं (जेम के पति) मनोरयदायक पुं० एक कल्पवृक्ष मनोरयद्भम पुं० कल्पवृक्ष मनोरयबंध पुं० मनोर्य बांधवा ते **मनोरथबंघबंघु, मनोरथबं**धु पुं० कामना तुप्त करनार मित्र मनोरयसिद्धि स्त्री० इच्छा पूरी यवी ते मनोरयांतर पुं० अंतरथी इच्छेली वस्त् के व्यक्ति

मनोरम वि० सुंदर; आकर्षक मनोरंजन न० मनने राजी करवुं ते (२) मजा; आनंद मनोराग पु॰ (हृदयनो) प्रेम; राग मनोरुज् स्त्री० हृदयनी वेदना के शोक मनोलौल्य न० मननो तरंग मनोबृत्ति स्त्री० मननी वृत्ति (२) इच्छा (३)मननुं वलण मनोहर वि० सुंदर; रम्य मनोहर्तु, मनोहारिन् वि० मनोहर मनोह्नाद पुं० मननो आहलाद – खुशी **मन्मथ** पुं० कामदेव (२) कामवासना मन्मयलेख पुं० प्रेमपत्र मन्मन पुं० धीमेथी (बीजुंन सांभळे तेम) करेली वातचीत (२) कामदेव मन्य वि॰ (समासने छेडे) - पोताने अमुक मानतुं (जेम के 'पंडितंमन्य') मन्यु पुं० कोध; गुस्सो (२) शोक; खेद (३)दीन अवस्था(४)यज्ञ मन्युमत् वि० कोधी (२) दुःखी (३) जुस्सादार मन्बंतर न० एक मंतुनो समय के युग (४३,२०,००० वर्षनो) ममता स्त्री०, ममत्व न० मारापणुं; मालकीपणानो भाव (२) आसर्कित (३) घमंड **मय** वि० '–नुं बनेलुं; '–थी भरेलुं ' (उदा० 'काष्ठमय') (२) पुं० एक दानव; असुरोनो शिल्पी मयुख पुं० किरण मयुखमालिन् पुं० सूर्य मयूखिन् वि० प्रकाशयुक्त; तेजस्वी मयूर पुं० मोर(२) एक कवि मयूरपत्रिन् वि० मोरनां पींछां खोसेलुं (बाण) **मयूरी** स्त्री० ढेल **मरकत** न० लीलो मणि; लीलम मरण न० मृत्यु; मोत

मरणधर्मन् वि० मरणशोल मरणनिश्चय वि० मरवाना निश्चयवाळु मरणमंडन न० (पति पाछळ सती थनारी स्त्री पहेरे छै ते) मरणनां आभूषणो अने पोशाक पहेरवां ते मरणात्मक वि० मोत उपजावे तेवुं मरंद, मरंदक पुं० फ्लमांनुं मध मराल वि० पोचुं; चीकणुं (२) मृदु; कोमळ (३)पुं० हंस (४)कारंडव पक्षी मरिच, मरीच न० मरी मरीचि पुं०, स्त्री ० प्रकाशनुं किरण (२) मृगजळ (३)अग्निनो तणखो(४)पुं० दश प्रजापतिमांना एक (५)श्रीकृष्ण **मरीचिका** स्त्री० मृगजळ मरीचिन् वि० जुओं 'मरीचिमत्' मरीचिप वि० तेजना कण पीनारुं **मरोचिमत्** वि० तेजस्वी (२)पुं० सूर्यं मरीचिमालिन् वि० तेजस्वी (२)पुं० सूर्यं मरु पुं० रेतीनुं रण;पाणी विनानो वेरान प्रदेश (२) खडक; पर्वत(३) मद्यपान न कर्त्यु ते [(३)वायुदेव(४)देव **मरुत्** पुं० पवन; वायु (२)प्राणवायु मस्त पुं० वायु(२)देव मरुत्पट पुं० संढ मरुत्पति पुं० इंद्र **मरुत्पथ** पुं० आकाश मरुत्वत् पु० इंद्र (२) मेघ (३) हनुमान महत्सल वि० पवन जेनो मित्र छे तेव (मेघ) (२) पुं० अग्नि (३) इंद्र मरुत्मुत पुं० हनुमान (२) भीम मरुधन्त्र, मरुधन्त्रत्न् पुं० वेरान प्रदेश; विरान रण मरुपथ पुं०, मरुपुष्ठ न० रण; निर्जळ **मरवक** पुं**० एक फू**ल [बेरान प्र**दे**श मरुस्यल न०, मरुस्थली स्त्री० रण ; मर्केट पुं० मांकडुं मर्तव्यान० मोत मर्त्य वि० मरणधर्मी (२) पुं० मनुष्य (३)मृत्युलोक; पृथ्वी (४)न० शरीर मर्त्यघर्मन् मर्त्यंधर्मन्, मर्त्यंधर्मन् वि० मरणधर्मी (२)पुं० मनुष्यप्राणी 🦠 मर्त्यभुवन न०, मर्त्यलोक पु० मृत्युलोक; मर्दे वि० मर्देन करतुं;दळी नाखतुं(२) पुं० दळवुं के कचरवुं ते मर्दन वि० दळनारं के कचरनारं (२) न० दळवुं के कचरवु ते (३) लेप करवो ते(४)मसळवं ते(५)दाबवं ते;गदडवुं तें(६)नाश करवो ते **मर्दल** पुं० एक जातनुं वाद्य (तबला जेवुं) मर्माच्छद्, मर्मच्छेदिन् वि० मर्मवेधी मर्मज्ञ वि० अंदरनुं रहस्य के तात्पर्यं जाणनारं (२)कोई पण बाबतमां अंडी दुष्टिवाळुं **मर्भत्र न०** बरूतर मर्मन् न० ज्यां वागवाशी मृत्यु थाय तेवी शरीरनी कीमळ भाग(२)कोई पण नबळो के बीधी शकाय तेवी भाग (३) तात्पर्यः; रहस्यः) जाणनारु मर्मपारग वि० ऊंडु रहस्य के तात्पर्य मर्मभोदिन वि० मर्गवेधी (२) पु० बाण मर्मर वि० 'फडफड' एवी अवाज करतुं(पांदडां, कपडां ६०)(२)गण-गणत्(३) पुं० 'फडफड 'एवो अवाज (४)गणगणाट मर्मविद् वि० जुओ मर्मज्ञ '

मर्मिष्ठ् वि० जुओ मर्मज '
मर्मस्थल, मर्मस्थान म० ज्यां वागवाथी
मोत नीपजे तेबु को मळ स्थान (शरीरनुं)
(२)नबळो के वीधी शकाय तेवी भाग
मर्मस्पृश् वि० मर्मस्थानने वीधे तेवुं
शर्मातिंग वि० मर्मस्थानने आरपार
के ऊंडे सुधी वीधतु
मर्माविष्, मर्मोपघातिन् वि० मर्मस्थानने वीधी नाले तेवुं
मर्यादा स्त्री० हद; सीमा (२) अत;
छेडो (३) सीमाचिह्न (४) रूढि के
नीतिए स्थापेली सीमा (५)शिष्टाचारनो नियम (६) करार

मर्यादाव्यतिकम पुं० मर्यादानुं उल्लंबन करवं ते सलाह मर्शे पुं• विचार; मसलत (२) उपदेश; मर्शन न० घसवुं के मसळवुं से (२) तपास; विचारणा (३) सलाह (४) समजावबुं ते (५)स्पर्श;संभोग (स्त्रीनो) **मर्ष, मर्षण** न० सहनशीलता; क्षमा **मधित** वि० सहन करेलुं; क्षमा करेलुं मर्थिन् वि०क्षमा करतुं; सहन करतुं मल वि० गंदुं(२) लोभी; दुष्ट (३) नास्तिक(४)पुं०, न० गंदकी(५)विष्टा; छाण (६) नैतिक दोष ; पाप(७)शरीर-मांथी नीकळती कोई पण गंदी चीज मलन न० दबाववुं के कचरबुं ते मलपंकिन् वि० गंदकीथी ढंकायेलं मलमल्लक त० लंगोटी; कौपीत **मलमास** पुं० अधिक मास **मलय** पुं० दक्षिणनो एक पर्वत(चंदन वृक्ष माटे प्रसिद्ध) ्लाकडुं; चं*दन* **मलयज पुं**० चंदन वृक्ष (२) त० चंदनतुं मलयवात, मलयसमीर, भलवातिल प्० मलय पर्वत उपरक्षी आवतो दक्षिणनो पवन (विरहीने सतावतो गणाय छे) मलिन वि॰ मेलुं; गंदुं(२)काळुं(३) पापयुक्त ; दुष्ट (४) बादळवी ढकावेलुं (५)न० पाप(६)गंदुं वस्त्र मिलनयति प० (मेलुंकरवुं; कर्छकित करवु; अपजश अपाववो) मिलिनिमन् पुं० मेलाशः; गंदकी (२) काळाश (३)पाप मलिनीभू १ प० मेलुं थवुं;गंदु थवुं मिलिम्लुच पुं० चोर; डाकु(२)राक्षस (३)मच्छर [दुष्ट ; पानी मलीमस वि० गर्दु;मेलूं(२)काळुं(३) मलोत्सर्ग प्० मळत्याग मलोपहत वि० गंदुं के मेलुं थयेलुं **मल्ल** वि० मेजबूत; पहेलवान जेवं (२) सार्हः; उत्तम (३) पुं० मजबूत माणस (४)पहेलवान; कुस्तीबाजं

मल्लक पुं•दीती (२) कोडियुं (३) पात्र; वासण मल्लघटी स्त्री० एक जातनुं नृत्य मल्लिका स्त्री० एक फूल-बेल (जाई) (२) तेनुं फूल (३) दीवी (४)अमुक आकारनुं माटीनुं वासण मल्लिकाक्ष पुं० बदामी चांच अने पग-वाळो एक हंस (२) आंख उपर घोळां चाठांबाळो एक जातनो घोडो मल्लिकार्जुन पुं० श्रीशैल उपर आवेलुं शिवलिंग मिश्र पुं० मच्छर; डांस थिली; मसक मशक पुं॰ मच्छर; डांस (२) चामडानी मशकी स्त्री० मादा मच्छर मशी, मषि (-षी) स्त्री० जुओ 'मसि ' **मधीभू १** प० काळ्यं थवं मतार, मसारक पुं॰ इंद्रनील मणि मिस पुं॰,स्त्री॰ शाही (२) धुमाडानी मेश (३) मेश मसिधानी स्त्री० शाहीनो खडियो मसिपण्य पुं० लहियो मसिपय पुं० कलम मती स्त्री० जुओ 'मिस ' मसीगुडिका स्त्री० शाहीनो डाघो मसीघानी स्त्री० शाहीनो खडियो **मसीपटल** न० मेशनुं पड मसृण वि० चीकणुं ; चीकटुं (२)कोमळ ; नाजुक; सुंवाळुं (३) मधुर (४) मनोहर (५) चमकत् ्[(२)नरम करेऌं मसृणित वि०सुंबाळुं करेलुं;चळकतुं करेलुं मस्कर पुं० पोलो बांस मस्करिन् युं० संन्यासी (दंडी) मस्ज् ६ प० [मज्जति] नाहवुं; डूबकुं मारवुं (२) डूबी जवुं (३) खिन्न यवुं -प्रेरक० डुबाडवुं (२) -मां खोसवुं मस्तक पुं०,न० माथुं(२)टोच ; शिख्रनो मस्तिष्क न० भगज; माथानी अंदरनो

मह १ प०, १० उ०आदर करवो; समान केरवुं; पूजवुं (२) खुश करवुं (३)वथा-रवु(४) १ आ० वधवुं; वृद्धिगत थव्ं **मह** पुं॰ उत्सव (२) यज्ञ ; होम **महत्** वि० महान; मोटुं(२)पुष्कळ; संख्याबंध (३) विस्तृत (४) बळवान (५)तीत्र (६)गाढ (७)अगत्यमुं (८) ऊंचुं; खानदान (९) वहेलुं अथबा मोडुं (१०)वधुः; खूब (११) त० ख्झपणुः; अनंतपणुं (१२) राज्य (१३) परमात्मा (१४)अ० खूब; अत्यंत [नी कीणा **महतो** स्त्री० एक जातनी बीणा(२)नारद-महत्तरव न० सांस्थशास्त्रे गणावेला पचीस तत्त्वोमांनुं बीजुं; बुद्धितत्त्व महत्तर वि० वधु मोटुं (२) पुं० मुख्य के वृद्ध माणस (३) गामनो मुखी के वृद्ध अभिवान (४) दरबारी (५) कारभारी महत्त्व न ० मोटाई(२)अगत्य(३)तीवता **महदायुच** न० मोट्रं हथियार महदाशा स्त्री० मोटी आशा महनीय वि० आदरणीय; संमाननीय महर् अ० पृथ्वी उपरना सात लोकमांनो चोयो (स्वर् अने जनस् वच्चेनो) महर्द्धि वि० मोटा वैभव के समृद्धिवाळ् (२) स्त्री • मोटी समृद्धि महर्षभ पुं० मोटो आखलो महर्षि पुं० महान ऋषि(२)शिव(३) महस् न० उत्सव; उत्सवनो प्रसंग (२) आहुति; होम (३)प्रकाश; तेज (४) जुओ 'महर्' (५) आनंद; भोग (६) बळ; सामध्यं समर्थ **महस्विन्** वि० तेजस्वी (२) महान: महा ('महत्'ने बदले कर्मधारय अने बहुत्रीहि समास वगेरेनी शरूआतमां मुकातुं रूप) [(२) पुं० शिव महाकर्मन् वि० महान कृत्यो करबारुं महाकाय वि० मोटा शरीरवाळुं (२)पुं० हाथी (३) शिव

महाकाल पुं० शिवनुं प्रलयकारी रूप (२) बार ज्योतिलिंगमांना एकनुं उज्जियनीमां आवेलुं मंदिर महाकालकल न० काळा बीवाळु एक लाल फळ **महाकाव्य न०** मोट् काव्य (रघुवंश, कुमारसंभव, किरातार्जुनीय, शिशुपाल-वध अने नैषधचरित -ए पाच मुख्यत्वे गणावाय छे) महाकुल, महाकुलीन वि० ऊंचा कुळतुं महाऋतु पुं० (मोटो यज्ञ) अश्वमेध महाक्ष पु० शिव : [(औषघ) महागुण वि० रामकाण के अमोघ एवं महाग्रह पुं॰ राहु (२) सूर्य महाजन पुं० माणसोनो समुदाय (२) टोळु; आखी बस्ती (३) कोई धंघानो के ज्ञातिनो मुखियो (४) वेपारी महाज्ञानिन् पुं० पंडित (२) भविष्य भाखनारो (३) शिव महाज्येष्ठी स्त्री० जेठ महिनानी पुनम **महाक्वर** पुं० मोटी पीडा महातल न० सात पाताळोमानु एक महात्मन् वि० महान आत्मावाळुं; महान (२) महाबळवान महात्यय पुं० मोटो भय; जोखम **महादुर्ग** न० मोटी आफत **महादेव** पुं० शिव महादेवी स्त्री० पार्वती (२) पट्टराणी भहाधन वि० कीमती; मूल्यवान महाघी वि० मोटी बुद्धिवाळूं **महाषुर्य** पु॰ मोटो बळद **महानट** पुं० शिव महानस पुं०, न० रसोड् महानिष्ट वि॰ गाढ निद्रामां पडेलुं **महानि**ल पु॰ वंटोळियो महानील पु० एक जातनो मणि महानुभाव वि०भव्य; बळवान; खान-दान ; यशस्वी ; उदात्त (२) सदाचारी ; न्यायी (३) संमाननीय

महान्यय वि० खानदान कुळनुं **महापथ** पुं० राजमार्ग(२)मृत्यु महापद्म पुं० कुबेरनो एक निधि(२) नारद (३) एक मोटी संख्या महापात पुं० दूर सुधी ऊडवुं ते महापाप्मन् वि० अति पापी -- दुष्ट **महापुरुष** पुं० सज्जन;सत्पुरुष महाप्रलय पुं० ब्रह्मानुं सो वर्षेनुं आयुष्य पूर्ल थतां थतो सकळ सृष्टिनो प्रलय महाप्रश्न पुं० गूंचवाडाभयों सवाल महाप्रस्थान न० मृत्यु (२) मरणनी इच्छ।थी उत्तर तरफ (हिमालयमां) हंमेश माटे चाली नीकळवुं ते महाप्राणता स्त्री० अतिशय बळ के सत्त्ववाळा होवुं ते महाप्लव पुं० मोटुं पूर महाबल वि० घणुंबळवान महाबाब वि० भारे पीडा उपजावनारुं महाबाहु वि० लांबा हाथवाळुं;बळवान (२) पुं० विष्णु महाभाग वि० अति भाग्यवानः; अति समृद्ध(२)अति यशस्वी ; अति विख्यात (३)अति सद्गुणी के सच्चरित्र महाभागिन् वि० महा भाग्यशाळी महाभिजन वि० खानदान कुळनुं (२) पुं० खानदान कुळ महाभुज वि० जुओ महाबाहु ' महाभूत न० पांच महाभूतोमांनुं दरेक (पृथ्वी-जळ-तेज-वायु-आकाञ्च) महाभोग पुं० मोटो उपभोग के सुख(२) मोटी फणा(३)नाग महामणि पुं० अति कीमती रतन महामनस्, महामनस्क वि० उदार चित्त-बाळुं(२)गविष्ठ [मोटो वरघोडो महामह पुं० उत्सव निमित्ते नीकळतो महामंत्र पुं० देदनो पवित्र मंत्र (२) (सापनुं झेर उतारवानो)शक्तिशाळी मंत्र महामात्य पुं० मुख्य प्रधान; वडो प्रधान

महामात्र वि०कदके जयामां मोटुं(२) उत्तम; श्रेष्ठ(३)पुं**० राज्यनो मोटो** अधिकारी; मुख्य प्रधान (४) महावत महामान्य वि० अति आदरने पात्र महामाय वि० मोटी मायावाळुं; मायावी (२)पुं० शिव (३) विष्णु **महामांस** न० मनुष्यनुं मांस **महामृग** पुं० हायी महामृघ न० महा युद्ध महायज्ञ पुं० नित्य करदाना पांच यज्ञ-मांनो दरेक (ब्रह्म-देव-पितृ-भूत-नृ) महायशस् न० घणुं विरूपात **महायान न० नागार्जुने** प्रवर्तावेल बौद्ध संप्रदाय ('हीनयान 'यी भिन्न) महारजत न० सोनुं महारजन न० सोनुं(२)केसूडो(३)हळदर महारथ पुं० मोटो रथ (२)मोटो योद्धो (एकलो दश हजार घनुष्यधारीओ साथे लडी शकेते)(३)मनोरय महाराज पुं॰ मोटो राजा; चक्रवर्ती (२)राजां के तेमना जेवाओ माटे आदरनुं संबोधन महाराजाधिराज पुं० चक्रवर्ती राजा महाराज्य न० सिद्यासनारूढ राजानुं पद के प्रतिष्ठा [महाप्रलय महारात्र (-श्री) स्त्री० मधरात (२) महाचर पुं० एक जातनुं काळियार हरण महार्घ वि० कीमती; मूल्यवान महारुषं वि० अमूल्य; घणुं कीमती **महाचिस्** वि० ऊंची ज्वाळाओ नीक-ळती होय तेवुं **महार्णव** पुं० महासागर महाहं वि० अति कीमती; अमूल्य **महाबराह** पुं० विष्णुनो वराहरूपे त्रीजो अवतार **महाबात** पुं॰ तोफानी पवन **महाविस्तर** वि० मोटा विस्तारवाळुं महावीर पुं॰ महा पराक्रमी योद्धो(२)

सिंह(३) इंद्रतुं वद्य (४) विष्णु (५) गरुड (६) हनुमान महादेग वि० घणुं झडपी के वेगवाळुं **महाबेल** वि० मोटां मोजांवाळुं महाजत न॰ एक मोटुं व्रत (एक महिना सुषी पाणी पण न पीवानुं) (२)कोई पण मोटुं कर्तव्य के नियम महाज्ञान वि० खाउधरुं; तृप्त न थाय तेवुं महाशनिष्यज पुं० वजना चिह्नवाळो मोटो घ्वज (इंद्रनो) महाशय वि० उदार चित्तवाळुं;सञ्जन (२) पुं० तेवो माणस (३) महासागर महाशंख पु० एक मोटी संख्या (१००० अबज) (२) कुबेरनो एक निधि महाञासन वि० मोटी राजसत्तावाळुं (२)मोटा हुकमोबाळूं महाश्मन पुं० मणि महासती स्त्री० शुद्ध, पतिश्रता स्त्री महासस्य वि॰ महान बळशाळी (२) न्यायी;सदाचारी(३)पुं० मोटुं प्राणी(४) शाक्य मुनि (५) कुबेर मुल्यवान महासार वि० महाबळवाळुं(२)कीमती; महासाहसिक पुं० लूंटारो; वाटवाडु महासेन पुं० कार्तिकेय (२) मोटा सैन्यनो सेनापति [(३) शिव महांग वि० मोटा अंगवाळुं(२)पु० ऊंट **महाजन** पुं० एक पर्वत [स्त्री० पृथ्वी महि पुं०,न० महिमा (२) पुं० बुद्धि (३) महिका स्त्री० हिम; झाकळ (२) पृथ्वी महिकांशु पुं० चंद्र [संमानित महित ('मह्'नुं भू०कृ०) वि० पूजायेलुं; महिमन् पुं महिमा; मोटाई (२) महत्ता; सत्ता (३) मोटुं पद (४) आठ सिद्धिओमांनी एक (मरजी प्रमाणे मोटा कदवाळा चवानी) महिला स्त्री० स्त्री (२) मदमत्त स्त्री (३) प्रियंगुलता महिच पुं० पाडो (२) महिचासूर

महिषध्वज पुं० यम महिषासुर पुं० दुर्गाए भारेलो एक राक्षस महिली स्त्री० भेंस(२)पट्टराणी महिष्ठ वि० सौथी मोटुं('महत्'नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) महौ स्त्री०पृथ्वी(२)जमीन(३)राज्य **महोक्षित्** पुं० राजा महोधर, महोध्र पु॰ पर्वत महीत (मही + इन) पुं० राजा महोताथ, महोप, महोपति, महोपाल, महीपुरंदर पुं० राजा महीपुष्ठ न० धरातल महीभुज् पुं० राजा **महीभृत्** पुं० पर्वत (२) राजा महोमंडल न० पृथ्वीनो घेरावो(२)आखी [मान के आदर पामवां) महीयते आ० (खुश थवुं, समृद्ध थवुं; महीयस् वि० ('महत्'नुं तुलनात्मक ह्य)वधु मोटुं (कद, बळ के अगत्यमां) (२)पुं० महापुरुष महोरुह (-ह) पुं० वृक्ष; झाड महोसुर पु० भूदेव; ब्राह्मण महेच्छ वि० महाशय; उदार चित्तवाळुं (२) महत्त्वाकांक्षी महेश, महेशान पुं० शिव; महादेव महेस्यर पुं महाराजा(२)शिव(३) विष्णु (४) परमात्मा महेक्वरसख पुं० कुबेर महेलु पुं० मोटुबाण महेरवास पुं० मोटो बाणावळी महेंद्र पुं० इंद्र(२) एक पर्वत महेंद्रमंत्रिन् पुं० बृहस्पति महेंद्रवाह पु॰ ऐरावत हाथी महोक्ष पुं० मोटो आखलो महोत्सव पुं० मोटो उत्सव के आनंदनो प्रसंग (२) कामदेव महोत्साह वि० उद्यमी; खंतीलुं(२)पुं० खंत; उद्यम (३)मोटूं अभिमान

महोदिव युं० महासागर महोदय वि० अति समृद्ध; भाग्यवान; महायशस्वी(२)पुं० सद्भाग्य; उन्नति; समृद्धि (३) मोक्ष (४) मालिक; स्वामी (५) महापुरुष महोद्यम वि॰ जुओ 'महोत्साह ' महोरग पुं० मोटो साप महोरस्क वि० पहोळी छातीवाळुं महोमिन् पुं० महासागर महीघ वि० मोटा प्रवाहवाळुं (२)पुं० एक घणी मोटीसंख्या (एकडा उपर ५२ मींडां) महोजस् वि० अत्यंत तेजस्वी (२)घणुं पराक्रमी (३) पुं ० पराक्रमी योद्धो (४) न० महाबळ; पराक्रम महौषध न० रामबाण दवा महौषि स्त्री० चमत्कारी शक्तिवाळी वनस्पति (२) दूर्वा; दरो मंक् १ आ० जबुं (२) शणगारवुं **मंकुक** पुं० एक वाजित्र मंभु अ० जलदी; शीघ्र (२) अति; अत्यंत (३) साचे ज; खरेखर मंग् १ उ० जबु(२) शोभवुं मंगल वि॰ शुभ; शुकनियाळ (२) भाग्यशाळी (३) न० शुकनियाळ होवुं ते (४) सुख-समृद्धि; सद्भाग्य; हित; कल्याण (५) शुकन (६) शुकनियाळ पदार्थ (७) मंगळ ग्रह मंगलकाल पुं० मांगलिक समय मंगलक्षौम न० शुभ प्रसंगे पहेरातुं रेशमी वस्त्र मंगलगृह न० पवित्र मकान के मंदिर **मंगलतूर्य** न० शुभ प्रसंगे वगाडातुं ढोल के तूरी जेवुं वार्जित्र [पांदड् मंगलपत्र न० ताबीज तरीके वपरातुं मंगलपाठक पुं० भाट; चारण मंगलपात्र न० शुभ प्रसंगे देवो समक्ष मुकातुं पाणी भरेलुं पात्र

मंगलप्रतिसर पुं० पति जीवे त्यां सुधी परणेली स्त्री वडे गळामा पहेराती सेर के दोरो **मंगलमात्रभूषण** वि० मंगलसूत्र, केसर-तिलक वगेरे मांगलिक आभूषणोथी ज गणगारायेळुं मंगलबादिन् वि० अभिनंदन के आशी-र्वादनां वच**नो** बोलनारं **मंगलवृषभ**्पं० शुभ चिह्नोवाळो बळद मंगलसमालंभन न० मांगलिक वस्तु-ओनो लेप (शुभ प्रसंगे स्नान वखते लगाडाय छे) मंगलसूत्र न० जुओ 'मंगलप्रतिसर' मंगलाचरण न० कोई पण कार्य के ग्रंथरचनानी निर्विच्न समाप्ति माटे शरूआतमां कराती प्रार्थना (२) आशीर्वाद उच्चारवो ते मंगलालंकृत वि० मांगलिक शणगारोथी विभूषित एवं संगलालंभन न० शुभ पदार्थनो स्पर्श मंगलाष्टक न० लग्न प्रसंगे वर-वधुने आशीर्वाद माटे बोलातो श्लोक मंगल्य वि० शुभ;कल्याणकर(२)सुंदर; मनोरम (३)पवित्र;पावन मंगुल न०पाप; अनिष्ट **मंच** पुं० पलंग (२) मांचडो; व्यास-पीठ (३) खेतरमां बांधेलो माळो **मं**चक न० पलंग (२) मांचडो मंज् १ उ० मांजवुं; साफ करवुं मंजरि स्त्री० क्पळ; फणगो फूटनो गुच्छो (३) फूलनी (४) मोती (५) लता मंजरिजामर न० मंजरीरूपी चामर मंजरी स्त्री० जुओ 'मंजरि' मंजरीचामर न० जुओ 'मंजरिचामर'

मंजु वि० सुंदर; रम्य; मधुर **मंजुगिर** वि॰ मधुर अवाजवाळ **मंजु**ल वि० सुंदर;**रम्य** (२) मधुर;मीठुं मंजुबाच्, मंजुबादिन् वि० मीठुं के मधुर बोलनारं मंजुषा, मंजुषिका स्त्री० पेटी; पटारो मंजुस्वन, मंजुस्वर वि० मीठा के मधुर अवाजवाळ मंजुषा, मंजुषिका स्त्री० जुओ 'मंजुषा' मंड् १ प०, १० उ० शणगारवु (२) १ आ० पहेरवुं; धारण करवुं मंड पुं०, न० प्रवाही उपर जामती तर (२)भातनुं ओसामण (३) दूधनी मलाई(४)दारूनो मद्यानेवाळो भाग मंडक पुं• एक जातनो पातळो पूडलो **मंडन** वि० शणगारतुं (२) घरेणांनुं शोखीन (३) न० घरेणां पहेरवां ते (४) घरेणुं; आभूषण मंडनिपय वि० घरेणांनुं शोखीन **मंडप** पुं० मांडवो (२) तंबू (३) देव माटे ऊभूं करेलुं मकान मंडपिका स्त्री० नानो मांडवो **मंडल** वि० गोळाकार **के** वर्त्लाकार एवं (२) पं० साप (३) कूतरो (४) न० कूंडाळुं; वर्तुल; चक्र; कोई पण वर्तुलाकार वस्तु (५) जादुगरे दोरेलुं जादुई कूडाळु (६) बिंब (सूर्य-चंद्रनुं) (७) सूर्य के चंद्रनी आसपासनुं कूंडाळुं (८) गृह-नक्षत्रनी कक्षा (९) टोळुं; समुदाय (१०) जिल्लो; प्रांत (११) राज्यनी पासेना के दुरता पडोशीओथी बनतुं कूंडाळ्ं (१२) ऋग्वेदना १० खंडमांनो दरेक (१३) कूंडाळुं थाय तेवी गति के चाल (१४) जुगारनो पट मंडलनाभि पुं० वर्त्ळनुं केंद्र **मंडलयति प०** (गोळ फरवुं; कूंडाळुं वनाववु) **मंडलवट** पुं० कुंडाळुं **बने** ते रीते जामेलो

मंजिष्ठ वि० खुलता टाल **रंग**तुं

मंजिष्ठा स्त्री० मजीठ

मंजीर पुं०, न० न्पुर

मंडलायित वि० गोळ क्ंडाळुं बनतुं के बनावतुं होय तेवुं (२)न० गोळो; दडो **मंडलावृत्ति** स्त्री० गोळ चक्कर फरवं ते **मंडलिन्** वि० कूंडाळुं बनावतुं; कूंडाळुं बळतुं होय तेवुं (२) प्रांत उपर राज्य करतुं(३)पुं॰ साप(४)प्रांताधिकारी **मंडली** स्त्री ० कुंडाळु (२)टोळी; समुदाय **मंडलीक** पुं० खंडियो राजा **मंडित ('मंड्' नुं भू**०क्व०) वि० शणगारेलुं मंडुक न० ढालनो हाथो **मंड्रक** पुं० देडको **मंडूककुल न०** देडकानी समुदाय मंडूकयोग पुं० देडका पेठे निश्चल बेसी करातुं च्यान मंतव्य वि० विचारवा लायक (२)कल्पी शकाय तेवुं (३) मान्य राखवा लायक **मंतु** पु० अपराधः; दोष(२)मानवजात (३) सलाह(४) स्त्री० बुद्धि;समजशक्ति **मंत्र १०** आ० (कोई बार प**०पण**) मंत्रणा करवी; सलाह करवी; सलाह लेवी (२) सलाह आपवी (३) मंत्र बोलवा (४) बोलवुं; वात करवी मंत्र पुं वेदनुं स्तोत्र के तेनो शब्दसमूह (कोई देवने संबोधायेलो) (२) वेदनो संहिताभाग ('ब्राह्मण' भागथी जुदो) (३) गृढशक्तिवाळो शब्दसमूह (४) मंत्रणा; विचारणा;सलाह(५) गुप्त योजना ; रहस्य (६) उपाय ; युक्ति मंत्रकर्कश वि० कठोर राजनीतिनी तरफण करत् **मंत्रकृत्** पुं० वेद-मंत्रनो रचनारो(२) मंत्र भणनारो (३) सलाहकार(४) राजदुत; एलची **मंत्रकृत** वि० मंत्रोधी पवित्र करेलुं **मंत्रगंडक** पुं०एक प्रकारनुं तावीज (२) **अोरडो** ज्ञान; विद्या मंत्रगृह न० (राजानो)मंत्रणा माटेनो मंत्रप्रह पुं० मंत्रीओनी सलाह लेवी ते

मंत्रजिह्य पुं० अग्ति **मंत्रज्ञ वि० वेद**मंत्र जाणनार्ह (२)सलाह आपवामां कुशळ (३) पु० सलाहकार (४) विद्वान ब्राह्मण मंत्रण त०, मंत्रणा स्त्री० विचारणा (२) मंत्रदक्षिन्, मंत्रदृश् वि० वेदमंत्री जेने स्फुर्याहोय तेवुं (२) श्रोत्रिय; देद जोषनारुं (३) सलाहकार **मंत्रघर, मंत्रधारिन् पुं०** सलाहकार **मंत्रपूत** वि० मंत्र वडे पवित्र करेलू **मंत्रप्रचार पुं० मंत्रणा के स**लाहमी शिरस्तो के ऋम मंत्रप्रयोग पुंच मंत्रशक्तिनो उपयोग मंत्रभेद पु० गुप्त वात प्रगट करी देवी ते (२) मंत्रणा जाहेर करी देवी ते मंत्रयुक्ति स्त्री० मंत्रप्रयोग करवा ते मंत्रवत् वि० मंत्र साथेनुं (२) दीक्षित मंत्रवादिन् पुं० वेदमंत्र पडनारो (२) जादूगर; तांत्रिक **मंत्रक्राक्ति** स्त्री० मंत्रतंत्रनो शक्ति **मंत्रश्रुति** स्त्री० को**ईनी** गुप्त मंत्रणा सांभळी लेबी ते गुप्त राखवी ते मंत्रसंबरण न० कोई योजना के मंत्रणा **मंत्रसाधन** न० मंत्र वडे वश करव्ंते; मंत्र वडे साधवं के सिद्ध करवं ते (२) मंत्रतंत्रथी चमत्कारी शक्ति मेळववी ते **मंत्रसाध्य** वि० मंत्रतंत्रथो वश कराय के असर पहोंचाडाय तेवुं (२) मंत्रणा के विचारणाथी मळे तेवुं **मंत्रसिद्ध वि० मंत्रतंत्रनी शक्ति प्राप्त** करेलुं; तेनाथी असरकारक बनेलुं **मंत्रसिद्धि स्त्री० मंत्र सिद्ध करवा ते** (२) मंत्र साधवाश्वी मळती शक्ति मंत्राधिराज पुं० मंत्रोनो अधिनायक (वेताल) प्रयस्त करवो ते **मंत्राराधन** न० मंत्रना बळे मेळववा

मंत्रि ५० जुओ 'मंत्रिन्'

मंत्रित ('मंत्र्'नुं भू० कृ०) वि० सलाह लीघेलुं (२) सलाह आपेलुं (३) कहेलुं (४) मंत्रेलुं (५) नक्की करेलुं (६) न० सलाह मंत्रिता स्त्री०, मंत्रित्व न० मंत्रीपण् मंत्रिधर वि० मंत्रीपद वहन करे तेवुं **मंत्रिन्** वि० सलाह आपवामां कुशळ (२) मंत्रो जाणनारुं (३) पुं० मंत्री; सलाहकार(४)मंत्रप्रयोग जाणनारो मंत्रिपति, मंत्रिप्रधान, मंत्रिप्रमुख, मंत्रि-मुख्यः मंत्रिवर, मंत्रिश्वेष्ठ पु० मुख्य प्रधान; वडी प्रधान **मंत्रोक्त** वि० मंत्रमां के सूक्तमां कहेलुं मंथ् १,९ प० जुओः 'मथ्' मंथ पुं० वलोववुं ते (२) नाश करवो ते (३) रवैयो (४) एक मिश्र पीणुं मंथन पुं० रवैयो (२) न० वलोववुं ते (३) घसीने अग्नि उत्पन्न करवो ते मंथर वि० सुस्त; मंद; निष्क्रिय (२) मुर्ख (३) मोटुं; पहोळुं (४) बांकुं वळेलुं (५) सूचक मंचरविके वि० विवेकशक्तिमां मंद मंथरा स्त्री० कैकेयीनी दासी मंथाचल, मंथाद्रि पु० मंदर पर्वत (रवैया तरीके समुद्रमंथन वखते वापर्यो होवाथी) मंथान पुं० रवैयो मंद वि० धीमुं; सुस्त (२) बेदरकार (३) जड; मूर्ख (४) ऊंडु-पोलुं (अवाज) (५) धीमुं, हळवुं (जेम के स्मित) (६) नानुं; अल्प (जेम के पेट) (७) कमजोर(जेम के मंदाग्नि) मंदक वि० मूर्ख (२) राग-द्वेष के मान-अपमाननी लागणी विनानं **मंदकर्ण** वि० ओछुं सांभळतुं **मंदकारिन्** वि०धीमी गतिथी के मुर्खपणे काम करतु मंदचेतस् वि० जड बुद्धिनुं (२)बेध्यान (३)लगभग मुख्ति एवं

मंदच्छाय वि० झांखुं; कांति विनानुं मंदता स्त्री०, मंदत्व न० धीमापणुं; सुस्ती (२) जडता (३) मूर्खता(४) नबळापणुं (५) नानापणुं; ओछापणुं **मंदघी** वि० मंद बुद्धिवाळुं; मूर्ख मंदप्ण्य वि० कमनसीब; दुर्भागी मंदप्रज्ञ, मंदबुद्धि वि० जुओ 'मंदघी' मंदभागिन्, मंदभाग्य, मंदभाज् वि० अभागियुं; दुर्भागी; दुखियारुं मंदभास वि० झांखुं [धीमेथी मंदम् अ० धीरे धीरे (२) हळवेथी; मंदमति, वि० जुओ 'मंदधी' मंदमंदम् अ० धीमे धीमे मंदमेधस् वि० जुओ 'मंदधी' मंदर वि० धीम्; जड (२) गाढुं(३) मोटा कदवाळुं (४) पुं० एक पर्वत (जेने समुद्रमंथन वखते रवेया तरीके वापर्यो हतो) मंदरम् अ० धीमेथी मंदिवभव वि० गरीब; दरिद्री मंदिवसिंपन् वि० धीमे धीमे सरकतुं मंदवीर्य वि० नबळ् मंदाकिनी स्त्री० गंगा नदी (२) स्वर्गगंगा **मंदाक्ष** न० लाज;शरम मंदाग्नि वि० भंद पाचनशक्तिवाळ् (२) पुं० मंद जठराग्नि **मंदायते** आ०(धीमा चालवुं;ढील करवी) मंदार पुं० स्वर्गनां पांच वृक्षोमांनुं. एक (२) न० एनुं फूल **मंदारमाला** स्त्री० मंदार फूलोनी माळा मंदास वि॰ मंद पडी गयेला प्राणवाळुं; मरवानी तैयारीमां होय तेवुं मंदिर न० निवासस्थान; घर (२) महेल (३) देवमंदिर मंदीकृ ८ उ० धीमुं करवुं; ओ छुं करवुं **मंदीभू १** प० धीमुं पडवुं, ओछुं थवुं **मंदुरा** स्त्री० तबेली , उपरी मंदुरापति, मंदुरापाल पु०

मंदोत्साह वि० उमंग विनानुं; उत्साह मंद पड़ी गयो होय तेवुं मंदौत्सुक्य वि० नामरजीवाळुं; उत्सु-कता न रही होय तेवुं मंदोदरी स्त्री० रावणनी पटराणी मंद्र वि॰ घेरुं; गंभीर (अवाज) (२) पुं० घेरो अवाज (३) एक जातनो हाथी (४) एक जातनुं ढोल मा २ प०, ३, ४ आ० मापवुं(२) मर्या-दित करवुं (३) तुलना करवी (४) समावुं; समावेश थवो (५) गोठववुं (६) अनुमान करवुं (७) रचवुं मा अ० नहि; ना(२) रखे मा स्त्री० लक्ष्मी (२)माता माकर वि० (मकर अर्थात्) मगरमच्छने माकरंद वि० (मकरंद अर्थात्) फूलोना मधने लगतुं के तेनुं बनेलुं (२) मकरंदथी भरेलुं माकराकर पुं० महासागर (मकर-मगरमच्छनी खाण के भंडार) माकंद पुं० आंबो माक्षिक, माक्षीक वि० मधमाखने लगत् (२) न० मध (३) एक उपधातु (औषधिमां वपराय छे) मागध वि० संगध देश संबंधी (२)पुं० मगधनो राजा (३) एक मिश्रजाति (वैश्य पिता अने क्षत्रिय माताथी थयेलां संतानो) (४) भाट; चारण मागधी स्त्री० मगधनी राजकुमारी (२) मगधनी भाषा (चार मुख्य प्राकृत भाषाओमांनी एक) (३) साहित्यनी एक शॅली माघ पुं० महा महिनो (२) एक कवि ('शिशुपालवध' महाकाव्यनो कर्ता) माघमा स्त्री० करचली माघवत वि॰ इंद्र संबंधी; इंद्रनुं माघवतचाप न० मेघधनुष्य माघवन वि० इंद्र संबंधी के इंद्र वडे शासित एवं

माचिरम् अ० तरतः, विलंब विना माणवक पुं० छोकरो; किशोर (२) वामन; ठींगणो (३) भणतो विद्यार्थी (४) सोळ सेरनी मोतीनी माळा माणिवय न० माणेक **मातरिश्वन्** पुं० वायु; पवन भातिल पुं० इंद्रनो सारिथ मातलिसारिथ पुं० इंद्र मातंग पुं० हाथी (२) चांडाळ (३) किरात (४) ते ते वर्गनी श्रेष्ठ व्यक्ति मातंगनक, मातंगमकर पुं० हाथी जेवडो मोटो मगर मातंगी स्त्री० पार्वती (२) चांडाळ स्त्री माता स्त्री० मा; जननी मातामह पुं० माना पिता मातामही स्त्री० मानी मा मातुल पुं० मामो मातुलिंग, मातुलुंग पुं० बिजोरानुं झाड मातुल्य न० मामानुं घर मातु स्त्री० माता; मा (२) लक्ष्मी (३) दुर्गा (४) गाय (५) पृथ्वी (६) ब॰ व॰ दिव्य माताओ (८,७ के १६) भातक वि० मा पासेथी मळेलुं (२) मोता संबंधी (३) पुं० मामो मातुका स्त्री० माता (२) दादी (मानी मा) (३) धावमाता (४)मूळ; जन्म-स्थान (५) चमत्कारी शक्तिवाळी मनाती आकृतिओं के वर्णीमांथी दरेक मातृगंधिनी स्त्री० कुमाता; दुष्ट माता मात्रदेव वि० माताने देव गणतुं **मातृबंधु** पुंच माना पक्षनी संगी **मातुमंडल** न० दिव्य माताओनुं मंडळ मातृष्वस् स्त्री० माशी; मानी बहेन मातुष्वसेय पुंच माशीनो दीकरो **मात्रे** अ० (–ना जेवड्'; (–ना कदर्नु – मापनुं' (२) '--सुधी पहोंचतुं' (आ अर्थमां एने समासमां थतुं 'मात्रा' शब्दन्रूपण गणी शकाय)

मात्र न० (ळंबाई-पहोळाई-अंचाई-कद–अंतर–संख्या वगेरेन्) (उदा० 'अंगुलिमात्रम्', 'क्षणमात्रम्') (२) (कोई पण बाबतन्) समस्तपणुं के आस्तो वर्ग (उदा० 'जीवमात्रम्') (३) (कोई पण बाबतमां)ए एक ज; बीजुं वधु नहि ते (उदा० वाचा-मात्रेण) (४) (भूतकृदंत साथे) अमुक किया थई के तरत ज, एवो अर्थ बतावे छे (उदा० भुवतमात्रे) मात्रा स्त्री० माप (२) धोरण; नियम (३) मापनो एकम(४)अंश(५)अणु (६) छेक नहि जेवु ते (७) हिसाब ; गणतरी (८) मालमिलकत (९) काव्य के संगीतमां समयनी गणनानो एकम(१०)मूळ भौतिक तत्त्व(११) भौतिक सुष्टि (१२) नागरी वर्णीना मथाळे आवतुं 🔭 🏿 इ० चिह्न मात्राभस्त्रा स्त्री० पैसानी कोथळी मात्रालाभ पुं० धनप्राप्ति मात्रास्पर्श पुं० बाह्य भौतिक पदार्थीनो इंद्रिय साथेनो संयोग मात्सर्य न० अदेखाई (२) अणगमो माथक पुं० नाश करनारो माथुर वि० मथुरामां बनेलुं के मथुरानुं मादक वि॰ मदमत्त करनारुं (२) मारा सरख् हषित करनार मावृक्ष,मावृ्श् (-श) वि० मारा जेवुं; माद्री स्त्री० पांडु राजानी बीजी राणी (सहदेव-नकुलनी माता) **माधव** वि०मध जेवुं ~ गळघुं(२) मधनुं बनेलुं (३) वसंत ऋतुने लगतुं(४) प्० श्रीकृष्ण (५) वसंत**ऋ**तु (काम-देवनो मित्र) (६) वैशाख महिनो (७) इंद्र (८) (ब० व०) यादवो माधविका स्त्री० एक लता माधनी स्त्री० मधमांथी बनावेलुं पेय (२) वासंतीलता (सफेद सुगंधी **फ्**ल थाय छे) (३) पथ्वी (४) तुलसी

माधुकर वि० मधुकर -- मधमाख संबंधी के तेना जेवुं (उदा० 'माधुकरी वृत्तिः') माधुकरी स्त्री० घेर घेरथी थोड लईने भिक्षा भेगी करवी ते (जेम मधमाख अनेक फूलोमांथी मध एकठुं करे छे) (२) पांच घेरथी मांगेली भिक्षा माधुर न० मल्लिकालतानुं फूल माधुरी स्त्री० मीठाश; मधुरता (२) शराब; मध माधुर्य न० मधुरता; मीठाश (२) आंकर्षक सौंदर्य (३) (स्त्रीने तेना प्रियतम माटे होय तेवो) श्रीकृष्ण प्रत्ये प्रेमभाव माध्यम वि० वच्चेनुं, वचलुं; मध्यनुं माध्यस्थ, माध्यस्थ्य न० निष्पक्षता (२) अपेक्षान राखवीते (३) झघडामां पतावट माटे वच्चे पडवुं ते माध्वीक न० महुडांनी दारू (२) द्राक्ष-नो दारू (३) द्राक्ष **मान् १** आ० [मीमांसते] विचारवुं (२) १प०,१० उ० मान आपर्वु **मान** पुं० आदर, संमान (२) आत्म-संमान; आत्मविश्वास (३) घमंड; अभिमान; मोटाई (४) मान घवा-यानी लागणी (५) अदेखाईथी चडेलो गुस्सो (स्त्रीने) (६) गुस्सो (७) नं । माप ; भोरण (८) प्रमाण ; साबिती (९) सरखापणु मानकलह, मानकलि पुं० अदेखाई-भरेला गुस्साथी ऊभी थयेली तकरार मानग्रहण न० रूठवुं ते मानद वि० मान - आदर करतुं (२) ग्विष्ठ (३) अभिमान तोडनारुं मानदंड पं० मापवानो गज मानधन वि० खुब मान मळचुं होय के मळतुं होय तेवुं मानन न०, मानना स्त्री० मान; आदर; संमान (२) वध करवो ते **माननीय** वि० मान आपवा योग्य

मानपर, मानभृत् वि० अति गाँवष्ठ मानमहत् वि० अति गविष्ठ मानव वि० मनुनुं अथवा तो मनुना वंशनं (२) मनुष्य संबंधी (३) पुं० मनुष्य; माणस (४) ब० व० प्रजाना माणसो (५) माणसजात मानवत् वि० अभिमानी; गर्विष्ठ मानवदेव पुं० राजा; नृपति माणसना मानबराक्षस पुं० राक्षस - पिशाच मानस वि० मनने लगतुं; मानसिक (शारीरिकथी भिन्न) (२) मनमांथी जन्मेलुं; संकल्पथी पेदा करेलुं (३) मानस सरोवर उपर रहेतुं (४) न० मन; हृदय;जीव (५) कैलास पर्वत उपरनुं पवित्र सरोवर मानसजन्मन् पुं भदन; कामदेव (२) हंस (मानस सरोवर तेमनुं वतन छे मिश्या के कोटी तेथी) मानसार पुं०, न० अभिमाननी मोटी मानसिक वि० मन संबंधी (२)काल्प-निक (३) मनमां आचरेलुं (पाप) मानसूत्र न०सोनानो के रूपानो कंदोरो (२) मापवानो गज [रहेती) मानसोकस् पुं० हंस (मानसः सरोवरे मानसोत्क वि० मानस सरोवर तरफ जवा उत्सुक **एव**ुं मानावभंग पुं० मान अथवा गुस्सानी मानांध वि० मान के अहंकारमां मत्त **मानित** वि० संमानेलुं; आदर करेलुं (२) न० मान के आदर बताववां ते मानिता स्त्री०, मानित्व न० अभिमान (२) आदर; संमान **मानिन् वि०** मानतुं; धारतुं; गणतुं (समासने छेडे) (२) मान आपत् (समासने छेडे) (३) अभिमानी; स्वमानवाळुं (४) संमाननीय; आदर-णीय (५) रूठेलुं (६) पुं० सिंह

मानिनी स्त्री० स्वमानी स्त्री (२) (मान-भंग थवाथी पति प्रत्ये रूठेली स्त्री) मानुष वि० मनुष्यनुं; मनुष्य संबंधी (२) मायाळु; माणसाईभर्युं(३) पुं० मनुष्य; माणस (४) न० मानवजात (५) मानव प्रयत्न (६) मनुष्यपण् मानुषता स्त्री०, भानुषत्व न० माण-सपणुं (२) माणसजात मानुबराक्षस पुं० जुओ 'मानवराक्षस' मानुषी स्त्री० मनुष्य स्त्री **मानुष्य, मानुष्यक** न० माणसपणुं (२) मनुष्यनुं शरीर (३) मानवजात (४) मन्ष्यलोक (५) मनुष्योनो समूह मानोत्साह पुं० आत्मविश्वासथी उत्पन्न थतुं जोस के पराक्रम **मानोन्नति** स्त्री० खूब सन्मान मान्मथ वि० मन्मथे - कामदेवे उत्पन्न करेल; प्रेमने लगत् मान्य वि० मान आपवा योग्य माप, मापति पुं० विष्णु (लक्ष्मीपति) मापन न०, मापना स्त्री० मापवुं ते; मापणी (२) बनाववुं - रचवुं ते **माम** वि० मारुं; मारा संबंधी (२) प्रिय मित्र, मामो (संबोधनमां) मामक वि० भारुं; मारा पक्षानुं (२) स्वार्थी (३) पुं० मामो मामकीन वि० मारुं भाष थि० मायाशक्ति धरावनारुं(२) पुं० मायावी;जादुगर (३) पिशाच माया स्त्री० छळ; प्रपंच(२)इंद्रजाळ (३) आभास; भ्रम (४) अविद्याशनित, जेने कारणे आ मिथ्या जगत देखाय छे (वेदांत०) (५) कुशळला मायाजल न० आभासरूप जळ मायाप्रयोग पुं० माया - छळकपट वाप-रवांते (२) जादुई करामत करवीते मायामय वि० माया, आभास के भ्रमुरूप (२) मिथ्या (३) जादुई

मायामृग पुं मायावी हरण मायायोधिन् वि० माया के छळकपटथी लंडनार वापरेला शब्दो मायावचन न० लोटा – छळकपटथी भाषाविन वि० माया, छळकपट के वापरनार्ह;तेमां कुशळ (२)मिथ्या; भ्रम के आभासरूप(३) पुं० जादुगर भायिन् वि॰ जुओ 'मायाविन्' (२) पुं० जादुगर (३) छळकपट करनारो (४) शिव (५) ब्रह्मा (६) कामदेव मायूर वि० मीरनुं; मीर संबंधी; मीर-मांथी उत्पन्न थयेलुं (२) मोरनां पींछानुं बनेलुं(३) मोर जोडेलुं(वाहन)(४) मोरने प्रिय (५) न० मोरनुं टोळुं मायूरक, माय्रिक पुं० मोर पकडनारो (२) मोरनां पींछांनी वस्तुओ बना-वनारो जीवनारु मायोपजीविन् वि ० माया - छळकपटथी मार पुं० हिंसा; वध (२) विघ्न; डखल (३) कामदेव(४)कामविकार (५)पृत्यु (६) शयतान जेवो ललचावीने नाश करनार देव (बौद्ध०) मारक वि० हणनारुं; मारनारुं (समा-सने छेडे) (२) पुं० कामदेव (३) महामारी (४) न० बधां प्राणीओनो प्रलयकाळे नाश **मारकत** वि० मरकत मणिनुं मारजिल् पुं० शंकर (२) बुद्ध भगवान मारण न० वध; हिंसा (२) शत्रुनो नाश करवा मंत्रतंत्रनो प्रयोग करवो ते भारव वि० मरुभूमि संबंधी मारात्मक वि० खुनी; हिंसक मारारि पुं० शिव (कामने बाळनार) **मारांक** वि० कामविकारनां लक्षणवाळुं मारि स्त्री० महामारी; मरकी मारित वि०हणेलुं (२) नष्ट करेलुं मारिष पुं० (सूत्रधार वडे मुख्य नटने करातुं) मानवाचक संबोधन (नाटघ०)

मारी स्त्री० जुओ 'मारि' मारीच पुं० एक राक्षस (जेणे मायावी मृगनुं रूप धरी सीताना हरणमां मदद करी हती) (२) कश्यप ऋषि (३) न० पीपरनी वेलोनुं झुंड **मारुत** वि० मरुत् देवो संबंधी (२) पवन संबंधी; पवनवाळुं (३) पुं० पवन (४) वाय्देव (५) प्राणवायु मारुतसूनु पुं० हनुमान (२) भीम मारतायन न० बारी (गोळ आकारनी) मारुति पुं॰ हनुमान (२) भीम मारुती स्त्री० वायव्य खुणो (२) मरुतो – देवोनी पुत्री मार्कट वि० मर्कट - मांकडा जेवुं मार्ग् १ प०, १० उ० शोधवुं; खोळवुं (२) –नी पाछळ पडवुं (३) मेळववा प्रयत्न करवो (४) मागर्वु; याचर्वु (५) १० उ० जवुं (६) शणगारवुं मार्ग वि० मृग संबंधी; मृगनुं मार्ग पु० रस्तो (२)गोचर; क्षेत्र(३) (घानो) डाघ; चिह्न (४) पद्धति; रीत; शैली (५) रूढि (६) नृत्य, संगीत के अभिनयनी उच्च शैली (७) न० हरणोनुं टोळूं मार्गण वि० शोधतुं; खोळतुं (२) पूछतुं (३) मागतुं(४) न० भीखवुं के मागवुं ते (५) आजीजी करवी ते (६) तपास (७) पुं० भिखारी (८) बाण मार्गणा स्त्री० मागवुं के याचवुं ते (२) तपास करवी ते (३) शोधवुं ते **मार्गतोरण** न० रस्ता उपर ऊभी करेली अभिनंदन माटेनी कमान के दरवाजी मार्गद्रम पुं० रस्तानी बाजुए ऊपेलुं झाड मार्गविनोदन न० मुसाफरीमां आनंद-प्रमोदनुं साधन मागशर महिनो मार्गेद्दार, मार्गेद्दारस्, मार्गेद्दीर्षे पुं० मार्गस्थ वि० म्साफरी करतु; मार्गे चडेल मार्गागत, मार्गायात पुं० मुसाफर

मार्गारव्ध वि० योग्य मार्गे आरंभेलुं मार्गित ('मार्ग्'नुं भू० कृ०)वि० शोधेलुं; खोळेलुं (२) इच्छेलुं मार्गिन् पुं भोमियो (२) मार्ग शोध-नारो (३) रस्तो साचवनारो मार्जन वि० साफ करनारुं (२) न० साफ करवुं ते (३) लूछी काढवुं ते (४) लेप लगडी साफ करवुं ते (५) दाभ वडे पाणी छांटवुं ते [मृदंगध्दनि मार्जना स्त्री० साफ करवुंते (२) **मार्जनी** स्त्री० सावरणी **मार्जार** पुं० बिलाडो **मार्जारी** स्त्री० बिलाडी मार्जित ('मार्ज्'नुं মু০ ক্ল০) বি৹ लूछेलुं; साफ करेलुं(२)वाळेलुं झुडेलुं (३) मांजेलुं (४) घोयेलुं मार्तंड पुं० सूर्य **मातिक** वि० माटीनुं; माटीनुं बनाबेलुं (२) त० माटीनुं ढेफूं मादंव न० मृदुता; कोमळता मार्देशिक पुं० एक वृक्ष (२) मृदंग वगाडनारो मिद्य; दारू मार्ढीक वि० द्राक्षनुंबनेलुं(२) न० मार्मिक वि० मर्मज्ञ; रहस्य जाणनारुं माल न० खेतर(२) ऊंची जमीन; माळ मालति(–तो) स्त्री० सफेद स्गंधी फूलनी एक वेल (२) तेनुं फूल (३) कळी (४) चांदनी **मालय** वि॰ मलय पर्वतमांथी आवतुं (२)पुं० चंदन(३)न० चंदननो लेप माला स्त्री ॰ माळा; हार(२)पंक्ति; श्रेणी मालाकर, मालाकार पुं० माळा बना-वनारो; माळी [(२) रंगनारो मालिक पुं॰ माळा बनावनारो; माळी मालिन् वि० माळा पहेरी होय तेवुं (२) घेरायेलुं; वींटळायेलुं (समासने छेडे) (३) पुं० माळी **मालिनी स्त्री० माळण**

मालिन्य न० मलिनता;गंदकी (२)मेल; कलंक (३) दु:ख; वेदना **मालूर** पुं० बीलानुं झाड (२) कोठानुं **झाड (३) न० बी**लुं **भाल्य** वि० माळा संबंधी (२) न० माळा; हार (३) पुष्प (४) माथा उपर पहेरातो फूलनो तोरो माल्यधारय वि० माळा धारण करता**रु माल्यवत्** वि० माळावाळुं (२) पुं० एक पर्वत (३) एक राक्षस (रावणनो प्रधान अने मामो) माल्यापण पुं० फूलनुं बजार **मावर** पुं० विष्णु (लक्ष्मीपति) माष पुं० अडद (२) सोनानुं एक तोल मायपेशम् अ० अडद भरडाता होय तेम मास् पुं० महिनो (पहेलां पांच रूप नथी; द्वितीया बहुवचनथी 'मास'ने बदले विकल्पे मुकाय छे) मास पुं०, न० महिनो मासानुमासिक वि० दर महिने आवतुं मासावधिक वि० एक महिनो चाले तेवुं (२) एक महिने थतुं के आवतुं मासाहार वि०महिने एक जवार खातुं सासिक वि० महिना संबंधी (२) दर महिने थतुं, करातुं के अपातुं(३) एक महिनो चालतुं माहात्म्य न० मोटापणुं; मोटाई(२) मोट् पद; महत्ता (३) देव के तीर्थनी चमत्कारी शक्ति के ते वर्णवतो ग्रंथ माहिष वि० भेंसनुं; भेंस संबंधी माहिष्मती स्त्री० एक नगरी (हैहयोनी राजधानी) माहेय वि० पृथ्वी संबंधी (२) माटीनुं माहेक्बर वि० शिवनुं (२) शिवपूजक माहेंद्र वि० इंद्र संबंधी (२) पूर्व दिशानुं मांगलिक वि० शुभ; शुकनियाळ; भाग्योदय करनाहं (२) भाग्यवंत मांगल्य वि०शुभ; कल्याणसूचक (२)

न० मांगलिकता; सद्भाग्य (३) आशीर्वाद (४) उत्सव (५) तावीज मांगल्यम्दंग पुंच शुभ प्रसंगे वगाडातुं मिजीठयी रंगेलुं मांजिष्ठ वि॰ मजीठ जेवुं रातुं(२) **मांजिष्टिक वि० म**जीठथी रंगेलूं मांडलिक वि० प्रांत संबंधी (२) पुं० प्रांतनो सूबो (३) त्रणथी दस लाखनी आवकवाळो राजा मांत्रिक पुं० मंत्रतंत्र जाणनारो मांथर्य न विभाषणुं सुस्ती (२)नबळाई **मांदुरिक** पुं० घोडानी मावजत करनारो मांद्य न॰ भीमापणुं; सुस्ती (२) मूर्खता; जडता (३) नवळाई; बीमारी मांद्यभ्याज पुं० मांदगीनो ढोंग मांस् न० मांस (पहेलां पांच रूप नथी; बाकीनां रूप 'मास'नी बीजी विभक्ति बहुवचनथी विकल्पे मुकाय छे) मांस न० प्राणीना शरीरनो स्नायु-रूप भाग (२) फळनो गर मांसक्षय पुं० शरीर (मांसनुं धाम) **मांसल** वि० मांसवाळुं(२)**भराव**दार; जाडुं (३) ऊंडुं (ध्वनि) (४) कदमां के जथामां वधेलुं (५) गाढुं मांसलता स्त्री०करचली (चाम**डी**नी) मांसाद वि० मांसाहारी मांसीदन पुं॰ भात मिश्रित मांस (२) मांसनुं भोजन मित ('मा' नुं भू० कृ०) वि० मापेलुं(२) सीमा आंकेलुं (३) थोडु; मर्यादित मितद्र पुं० समुद्र मितभाषिन, मितवाच वि० मर्यादित [राधनारु) मितंपच वि० कंजुस;कृपण (बहु थोडुं मिताक्षर वि० टूंकुं (२) पद्यमां रचेलुं मिताहार वि० मर्यादासर खानारुं मित्र पुं० सूर्य (२) न० दोस्त मित्रकर्मन्, मित्रकार्य, मित्रकृत्य न०

मित्रनुं कार्यं (२) मित्र तरीकेनुं कृत्य ; मित्रताभयुँ कृत्य मित्रता स्त्री०, मित्रत्व न० दोस्ती **मित्रविद**्यु० अग्निः मित्रसाह वि० मित्र प्रत्ये उदार मिथस् अ० अरसपरसः; एकबीजाने (२) खानगीमां (३) वाराफरती मिथिला स्त्री० विदेह देशनी राजधानी मिथुन वि० जोडकारूप(२)न०जोडकूं मिथुनेचर पुं० चक्रवाक मिथ्या अ० खोटी रीते; छळकपटथी; अयथार्थपणे (२) ऊलटुं (३)नकामुं; निष्प्रयोजन मिथ्याकारुणिक वि० करुणाळुतानो ढोंग मिथ्याक्रय पुं० खोटी किमत मिथ्याचार वि० दांभिक; मिथ्याचारी (२)पुं० दाभिक के अघटित व्यवहार मिथ्याजिल्पित न० खोटी अफवा मिथ्याद्ष्टि स्त्री० खोटा सिद्धांतने वळगव् ते; नास्तिकता मिथ्यापवाद पुं० खोटुं आळ **मिथ्यापंडित** पुं० मात्र देखावमां ज पंडित के विद्वान एवं **मिथ्याप्रतिज्ञ** वि० प्रतिज्ञानो **मिथ्याफल न०** काल्पनिक लाभ **के** फायदो मिथ्याभिशंसन न० खोटुं आळ **मिथ्यावादिन्** वि० जूठुं बोलनारं **मिथ्यावृत्त** वि० दुराचारी **मिथ्याव्यापार पुं**० बीजानां नाहक घालमेल करनारो **मिश्योपचार** पुं० दंभथी बतावेली मायाळ्ता; दंभणी करेली सेवा मिमंक्षु वि० नाहवानी के डूबकूं मार-वानी इच्छावाळ मिल् ६ उ० मळवुं; जोडावुं; साथे थवुं; भेगा थर्बु (२) बनवुं; थवुं (३) भेटबुं (४) मळता थवुं (अभिप्राय साथे) िबनतुं (५) मेळ खावो मिल**त्** वि० मळतुं; जोडातुं(२)थतुं;

मिलब्ब्याच वि० शिकारीओथी घेरा-येलुं; शिकारीओ एकठा थया होय तेवुं मिलन न० मळवुं - एकठा थवुं ते मिलित ('मिल्' नुं भू० कु०ँ) वि० मळेलुं; एकठुं थे ें (२) जोडायेलु (३) भेगुं करेलुं; मिश्रित मिलिंद पुं० भमरो; नर मधमाख मिलीमिलिन पुं० शिव **मिश्र् १०** उ० मिश्रण करवुं (२) उमेरवुं मिश्र वि० मिश्रित; भेगुं ययेलुं के करेलुं (२)संबंधी ; जोडायेलुं (३)अनेकविध (४) पुं० आदरणीय पुरुष (मोटा पुरुषो तथा विद्वानोना नाम पछी सामान्यपणे लगाडाय छे) मिश्रण न० मिश्र करवुं ते (२) सरवाळो मिश्रित (मिश्र् नुं० भू० कृ०) वि० मिश्र करेलुं; भेळवेलुं (२) उमेरेलुं **मिख् ६** प० आंखनो पलकारो मारवो (२)असहायपणे जोई रहेवं (३)स्पर्धा करवी (४) १ प० छाटवुं; भीनुं करवुं मिष पुं॰ स्पर्धा (२) त॰ बहा नुं (३) छळ **मिष्ट** वि० मीठुं; गळचुं(२)मिष्टान्न मिष्टास न० स्वादिष्ट वानी; मीठाई भिहिका स्त्री० हिम; झाकळ (२) कपूर मिहिकारुच् पुं० चंद्र (श्वेत किरणवाळो) मिहिर पुं० सूर्य **मी** ४ आ० मरवुं; नाश पामवुं मीन पुं० माछलुं (२) मत्स्यावतार मोमांसक पुं० मीमांसा-तपास-विचा-रणा करनार (२) पूर्वमीमांसा मतनो [(२)पूर्वमीमांसा दर्शन अनुयायी **मीमांसा** स्त्री० ऊंडी विचारणा; तपास **मीमांसामांसलप्रज्ञ** पुं ॰ मीमांसा दर्शनना सेवनथी जेनी बुद्धि जाडी थई गई छे ते मील १ प० मींचवुं (आंख) (२)मींचावुं; —बंध थवं (आंख के फूल) (३)ऊडी जबुं; झांखुं थबुं; नाश पामवु -प्रेरक० बंध करवुं

मीलन न० आंख मींचवी ते (२) बिडाव् [मींचायेलुं(२)बिडायेलुं ते (फुलन्) मीलित ('मील्'नुंभू० कृ०) वि० मुकुट न० मुगट; ताज (२) शिखर; टोच मुकुर पु० अरीसो (२) कळी मुकुल पुं॰, न॰ फूलनी कळी (२) कळीना आकारन जे कंई ते **मुकुलयति** पुं० (बंध कराववुं के करवुं) मुकुलित वि॰ कळीओ बेठी होय तेवुं (२) अर्धुं मीचायेलुं(३) विडायेलुं; बंध **मुकुंद** पुं० विंष्णु के श्रीकृष्ण (मुकु --मोक्ष आपनार) मुकुंदा स्त्री० एक जातनुं मृदंग मुक्त ('मुच्'नुं भू० कृ०) वि० ढीलुं करेलुं (२) छूटुं करेलुं; छोडी मूकेलुं (३)तजी दीधेलुं;काढी नाखेलुं;फेंकी दीघेलुं(४)नीचे पडी गयेलुं(५)नमी पडेलुं; ढीलुं थई गयेलुं (६) मोक्ष के उद्धार पामेलुं (७) खीलेलुं (८) प्रक्तविलुं (९) पुं० जीवन्मुक्त मुक्तक न० एक अस्त्र(२)पूर्ण अर्थ-वाळो स्वतंत्र ३लोक मक्तकर वि० उदार; दानेशरी मुक्तकं**ठम्** अ० ऊंचा सादे; मोटा अवाजे मुक्तबंधन वि० बंधनमांथी छूट् थयेल् के करेल मुक्तलज्ज वि० बेशरम मुक्तकौंदाय वि० युवान; पुस्त मुक्तसंग वि० राग के आसक्ति रहितः **मुक्तहस्त वि० जुओ 'मुक्तकर**ं मुस्ता स्त्री० मोती मुक्ताकलाप पुं० मोतीनी माळा मुक्ताकारता स्त्री० मोती जेवो आकार के देखाव होवो ते **मुक्तागार** न० मोतीनी छीप मुक्तामुण पुं० मोतीनो हार मुक्ताजाल न० मोतीनो कंदोरो

मुक्तापटल न० मोतीनो जध्यो

मुक्ताफल न० मोती मुक्तामणि पुं० मोती **मुक्तामणिसर** पुं० मोतीनो हार मुक्तावलि (-ली) स्त्री० मोतीनी माळा मुक्तासन वि० आसन उपरथी ऊभुं थतुं (२)न० योगनुं एक आसन; सिद्धासन मुक्ताहार पुं० मोतीनो हार मुक्ति स्त्री० मुक्त थवुं – छूटबुं ते (२) संसारमांथी छूटवुं ते;मोक्ष(३)तजवुं ते (४) छोडवुं के फेंकबुंते (५)ऋरण भरपाई करवुं ते [सिवाय मुक्त्वा अ० तजीने(२)बाद राखीने; **मुख**न० मों (२) चहेरो (३) अग्रभाग (४)अणी; घार(४)टोचडुं; दींटडी (५) दिशा(६)खुल्लो भाग(७)नदी समुद्रने ज्यां मळे ते भाग (८)बारणुं(९) आरंभ; शरूआत (१०) उपोद्घात (११) (समासने अंते) मुख्य -- अग्रेसर मुखपहण न० मुख चूमवुं ते मुखर्चद्र पुं० चंद्र जेवुं मुख मुखचूर्ण न० मों उपर लगाडवानुं सुगंधी मुस्रतस् अ० मुखथी; मोढाथी मुखदोष पुं० जीभ के अवाजनो अपराध मुखपट पु० मों उपरनी बुरखो मुखर्पिड पुं० (अञ्चनो) कोळियो मुखप्रसाधन न० मों शणगारवुं ते मुखभंग पुं० मों पर तमाच के प्रहार (२) मोंनो चाळो मुखभंगी स्त्री० मींनी चाळी मुखमधु वि॰ मोंढे मीठुं बोलनार्ह मुलमारुत पुं० श्वास मुखमुद्रा स्त्री० चूपकीदी; चूप रहेवुं ते मुखर वि० वाचाळ; वातोडियुं (२) चालु अवाज् करतुं (३) गाजतुं (समासने छेडे) (४) प्रगट करतुं; दर्शावतुं (५) पुं० आगेवान मुखरपति प० (गाजे तेम करवुं; बोले तेम करवुं; जाहेर करवुं)

मुखराग पुं० मों के चहेरानी रंग **मुखरित** वि० अवाजवाळु करेलुं के थयेलुं मुखरीकृ ८ उ० अवाज के व्वतिवाळुं करवुं (२) बोले तेम करवुं मुखलेप पुं० मदंगना मों पर काळो लेप चडाववो ते **मृखवास** पुं० श्वासने सुगंधीदार करे तेवी सुगंध मुखव्यादान न० बगासुं खाबुं ते **मुखकोष** पुं० राहु ग्रह **मुखस्राव** पुं० लाळ **मुखहास** पुं• मुखनुं हास्य के प्रसन्नता **मुखासव** पुं० अधररस **मुख्य** वि॰ मोंने लगतुं (२) प्रमुख; आगेवान (३) पुं० मुखी; आगेवान मुख्यतः, मुख्यदाः अ० मुख्यत्वे करीने **मुग्ध** वि० मूछित ; बेभान (२) मूझायेलु; मूढ (३) मूर्ब; अज्ञ (४) भोळ् (५)कामविकारथी अणजाण; निर्दोष; बाळक जेवुं(६)सुंदर; मनोहर (७) नवुं -- शरूआतनुं (चंद्र) मुग्धत्व न० भोळपण; निर्दोषता (२) सुंदरता; मनोहरता **मुग्धवृ**ञ् वि० सुंदर आंखोबाळुं मुख्या, मुख्यमित वि० मूर्खं; भोळुं मुग्धविलोकित न० सुंदर कटाक्ष मुग्धस्वभाव पुं० भोळपण; निर्दोषता मुग्धा स्त्री० भोळी जुवान छोकरी **मुग्धाक्षी** स्त्री० मनोहर आंखोवाळी स्त्री **मुग्धालोक** वि०देखवामां मनोहर **एव्ं** मुच् १ आ० [मोचते] छेतरवुं (२) ६ उ० [मुंचित – ते] छूटुं करवुं; मुक्त करवुं; जवा देवुं; ढीलुं मूकवुं (३) खुल्लुं करवुं; काढवुं (अवाज) (४) तजबुं; छोडी देवुं (५) बक्षवुं –प्रेरक० छोडाववुं; छूटुं कराववुं (२)मृक्त करवुं; उद्घारवुं (३)बक्षवुं (४) छुटुं करवुं (धूंसरीमांथी)

मुच् वि० (समासने छेडे) छूटुं करतुं (२) मोकलतुं;फॅकतुं; काढतुं;तजतुं **मुचुलिंद** पुं० एक जातनुं मोटुं संतर्ह **मृत् १**प०,**१०** उ० कचरवुं(२)मारवुं (३)ठपको आपवो (६,प० पण)(४) १० उ० भेळववुं (५) साफ करवुं (६) १ आ॰ आनंद पामवो ; हिषत थवुं **मुद्, मुदा** स्त्री० हर्ष; आनंद(२)तृप्ति मृदित ('मुद्'नं० भू० कृ०)वि० हर्षित; आनंदित (२) न० आनंद; हर्ष मुद्दिर पुं० मेघ; वादळ मुद्ग पुं० सग (२) मुद्गर; गदा मुद्गर पुं० हथोडो (२) एक जातनी गदा मुद्गरक पु० हथोडो; घण मुद्र वि० आनंददायक मुद्रण न० मुद्रा – महोर मारवी ते (२) छाप मारवी -- छापवुं ते (३) बंध करवं ते मुद्रवति प० (छाप मारवी, महोर मारवी; बंध करी देवुं) मुद्रा स्त्री० सील के महोर;तेने माटेनी वींटी (२) छाप; चिह्न; निशानी (३) परवानो (४) चलणी सिक्को (५) चांद; पदक (६) बंध करव् के वासी देवुंते (७) पूजा वखते आंगळीओ वाळीने कराती आकृति (८) विशिष्ट रेखाओथी कराती आकृति (९) जळपरी मद्रास्यान न० ज्यां मुद्रा (माटेनी वींटी) पहेराय छे ते स्थान (आंगळीनुं) मुद्रांकित वि० महोर मारी होय तेवुं मुद्रिका स्त्री० नानी महोर के सुद्रा(२) मुद्रा भाटेनी वींटी (३) छाप (४) चलणी सिक्को मुद्रित वि० छाप मारेलुं; महोर करेलुं (२)बंध करेलु (३) अणखील्युं मुधा अ० व्यर्थ; फोगट; नाहक (२) बोटी रीते; मिथ्या

मुनि पु०ऋषि;तपस्वी(२)व्यास(३) अगस्त्य (४) पाणिनि (५) बुद्ध **मुनिभेषज** न० हरडे (२) उपवास **मुनिवृत्ति** स्त्री० तपस्त्रीनुं जीवन जीववुं ते; वानप्रस्थाश्रम **मुनिव्रत न० मौन रहेवानुं तपस्वीओनुं** मुमुक्षा स्त्री० मोक्षनी इच्छा **मुमुक्षु** वि० मोक्षनी इच्छावाळुं (२) तजवा, छोडवा के फेंकवानी इच्छावाळुं (३) पुं० मोक्षनी इच्छावाळो **मुमूर्षा स्**त्री० मरवानी इच्छा मुमूर्ष वि० मरवानी अणीए होय तेवुं मुर पुं० श्रीकृष्णे मारेलो एक राक्षस **मूरज** पुं० ढोल; मृदंग **मुरजित्** पुं० मुरारि; श्रीकृष्ण मुरला स्त्री० केरल देशनी एक नदी **मुरली** स्त्री० वांसळी **मुरलीघर प्ं**० श्रीकृष्ण मुरवेरिन् पुं० मुरारि; श्रीकृष्ण मुरारि पुं० श्रीकृष्ण (मुर राक्षसने मारनार) मुर्छ् १ प० मूर्छा पामवी (२) वधवुं तीव्र थवु; गाढ थवुं(३)-नी उपर असर करवी (४) —नी सामे शक्ति होवी -प्रेरक० मूर्छित करवुं (२) तीम्र करवुं; वधारवुं (३) मोटो अवाज काढवो-दगाडवं (वार्जित्र) मुर्मुर पुं० ढूंणसां - फोतरांनो अग्नि मुज्ञल न० दंडो मुष् ९ प० चोरवुं; लूंटवुं; लई लेवुं(२) अपहरण करवुं(३)दूर करवुं(४)बर-बाद करवुं (५)ग्रस्त करवुं; ढांकी देवुं (६) मोहित करवुं (७) पाछळ पाडी देवुं (८) छेतरवुं (९) १ प० मारव् (१०)४ प० चोरवुं (११) भागी नाखवुँ **मुख्** वि० चोरतुं (२) दूर करतं (३) पाछळ पाडी देत् **मुषक** पुं० उंदर

मुबल पुंठ सांबेलुं मुषलिन् पुं० बळराम मुर्षित ('मुष्'नं भू० कृ०) वि० चोरायेलुं; लूंटी जवायेलुं; उपाडी जवायेलुं (२) –थी रहितं करायेलुं (३) छेतरायेलुं मुर्षितक न० चोरायेली मिलकत **मुखितत्रप** वि० बेशरम; शरम विनानुं मुख्ट ('मुष्'नुं० भू० कृ०) वि० चोरायेलुं(२)आकर्षायेलुं मुष्टि पुं०, स्त्री० मुक्की ; मूठी (२) मूठी भरीने थाय ते माप(३)हाथी मु**ष्टिकाः** पुं०ब०व० एक बहिष्कृत जातिना लोक (डोंब) मुष्टियुद्ध न० मुक्काबाजी **मुख्टिबध** पुं० पाक बरबाद थवो तै **मृष्टीमुष्टि** अ० सामसामा मुक्का मारीने मुसस्र पुं०, न० साबेलुं(२) गदा(३) घंटनुं लोलक **मुसलायुष पुं**० बळराम **मुस्त** पुं०, न०, **मुस्ता** स्त्री० एक जातनुं घास – मोथ मृह ४ प० मूर्छा पामत्री; बेभान थवुं (२) मूझाई जवुं (३) मूढ बनवुं(४) भुल करवी महर्मुहुः अ० फरी फरीने; वारंवार मुहुस् अ० वारंवार; पुनःपुनः (२)

मृहुर्मुहुः अ० फरी फरीने; वारंवार
मृहुर्मुहुः अ० फरी फरीने; वारंवार
मृहुर्मु अ० वारंवार; पुनःपुनः (२)
क्षणभर; घडीभर(३)वाक्यमां जुदा
जुदा खंडमां वपराय त्यारे—'एकवार (आम)'—एवो अर्थ बतावे छे
मृहूर्त पु०, न० क्षण; पळ (२) ४८
मिनिट जेटलो समय (३) समय(शुभ
के अशुभ) [वगेरे बनावाय छे)
मुंज पु० एक घास (जेनी जनोई, दोरी
मुंड १ प० मूंडवुं(२)कचरवुं
मुंड वि० बोडेलुं; मूंडेलुं (२) टोचनां
पांदडां तोडी नाखेलुं (३) बूठुं; अणी

वगरनुं (४) पुं० बोडेला माथावाळो माणस (५) उपरती डाळो विनानुं वृक्षनुं थड (६) न० माथुं मुंडन न० माथुं बोडाववुं ते **मुंडमंडली** स्त्री० बोडेलां बाळाओनुं टोळुं (२) सैनिक तेवाओनुं खाली टोळुं मुंडित वि० बोडेलु; मूंडेलुं **मुंडिन्** वि० हजामतः करेलुं;बोडेलु मूक वि० मूंगुं; चूप(२)दीन(३)पुं० मुंगो(४)दीन माणस **मूकांडज** वि० चूप पंखीओ**वाळुं**(वन) मूढ('मुह्'नेुभू० कृ०) वि० मूंझाई गयेलुं (२)शुं करवुं न करवुं ते न समजातुं होय तेबुं;विवेकरहित(३) मुर्ख ; अज्ञ (४) भ्रमित ; भूलमां पडेलुं (५)पुं पूर्ख के अज्ञ माणस (६) न० मननी मूढता; विवेकरहितता मृदग्राह पुं० गेरसमज; खोटी समज मुढचेतन (-स्), मुढधी वि० मूर्ख; अज्ञ मूढप्रभु पुं० मूर्ख शिरोमणि **मृढवात** वि० तोफाननां सपडायेलुं **मूत्र** न० पेशाब मूत्रयति प० (पेशाब करवो) **मूर्ल** वि० बेवकूफ (२) जड बुद्धिनुं (३) पुं० जड, बेवकूफ माणस मूर्खपंडित पुं० भणेलो मूर्ख म्बंमंडल न० मुखीओनी मंडळी **मूर्च्छ् १** प० वधचुं;वृद्धिगत थवुं **मूर्च्छंन** वि० मूर्छा लावना**र्ह** (२) वधारनारुं (३) न० मूर्छित थवु ते (४)वृद्धि(५)पारा वगेरेने मारवानी प्रक्रिया मुच्छना स्त्री० मूच्छी (अर्थ १, २) (२) सात स्वरोनो कमसर आरोह अवरोह – थाट (३) रागप्रतिपादक – वादी स्वरने तेनी जोडेना उदर सुधी

लई जबो ते ; तेने कंपावबो ते(संगीत०)

मुच्छा स्त्री० बेशुद्धि; बेभान दशा (२) पारा वगेरेने मारवानी प्रक्रिया(३) मूर्च्छना (अर्थ २,३) मुच्छीपगम पुं० मूर्छादूर थवी ते **मूज्छित** ('मूर्च्छ्'नुं भू० कृ०)वि० सूर्छा पामेलुं; बेशुद्ध (२) मूर्खं;अज्ञ (३) वधी गयेलुं (४) मूझायेलुं **मूर्छ्१** प० जुओ 'मूर्च्छ्' मूर्त वि० बेभान (२) मूर्ख (३) मूर्ति-मान; शरीरघारी(४)भौतिक; स्थूल मूर्ति स्त्री० आकृति;देह(२)अवतार; मूर्तिमान स्वरूप (३) (देव-देवीनी) प्रतिमा (४) शरीरनो अवयव मूर्तिधर वि० मूर्तिमान; देहधारी मृतिमत् वि० भौतिक; स्थूल (२) शरीरधारी; मूर्तिमंत मूर्तिसंचर वि० जुओ 'मूर्तिघर' मूर्घग वि० माया उपर बेठेलूं मुर्घेज पुं० माथाना वाळ; केश (२) माथा उपरनो टोप मुर्घन् पुं० मार्थुः; मस्तके (२) ऊँचामां **ऊंचो के आगळ पडतो भाग; टोच (३)** आगेवान (४) मोखरानो भाग मुर्धन्य वि० माथामां रहेलुं के माथा उपरनुं (२)मुख्य (३) मूर्घस्थान सबंधी के त्यांथी उच्चारातुं (ऋ,ऋ,ट्,ठ्,ड्, द, ण, र् अने ष् -ए वर्णीनो वर्ग) **मूर्घाभिषक्त** वि० राज्याभिषेक करेलुं (२) मुख्य के खास (उदाहरण) (३) पुं० अभिषिक्त राजा **मृषांत** पुं० माथानी टोच मुद्या, मूर्विका, मूर्वी स्त्री ० मोरवेल (जेना तंतुनी धनुष्यनी पणछ के क्षत्रियनी जनोई बनावाय छे) मूल न० मूळियुं; जड (२) कोई पण वस्तुनो नीचेनो भाग (३) कोई पण वस्तुनो छेडो (ज्यांथी ते बीजी साथे

(५) पायो; मूळ स्थान (६) को ६ पण वस्तुनं तळियु के तळियानो भाग (७) पूंजी; मुडी (८) राजानो पोतानो प्रदेश (९) मूळ कारण (१०) वर्गमूळ (गणित०) (११) मूळ ग्रंथ के वाक्य (जेना पर टीका के भाष्य लखाय) **मूलक** वि० –मांथी नीकळतुं; –ने आधारे रहेलु (समासने अंते) मूलकारण न० मुख्य के मूळ कारण मुलघातिन् वि० समूळ नाश करनारु मुल च्छिन वि० मूळ के शरूआतमांथी ज कापी नाखेलुं के कपाई गयेलु मूलज वि० वृक्षीनां मूळ आगळ थयेलुं (जेम के राफड़ो) (२) मूल नक्षत्रमां जन्मेलू मूलब्रध्य, मूलधन न० मुद्दल; मूडी **मूलपुरुष** पुं० वंशनो मूळपुरुष म्लप्रकृति स्त्री० प्रकृति; जगतनुं आदि कारण (सांख्य०) मूलप्रतीकार पुं० मालमिलकत अने स्त्रीनी रक्षा करवी ते; धनदाररक्षा मुलबल न० मुख्य अथवा वंशपरंपरा चालतुं आवेलुं लश्कर **मूलभृत्य** पुं० जूनो के वंशपरंपराथी चालतो आवेलो नोकर **मूलसाथन** न० मु**रू**य सा**धन** ; मुरूय उपाय मूलहर वि० निर्मूळ करनारु; समूळ नाश करनारं मूलाधार न० दूंटी(२)गुदा अने उपस्थनी बच्चे आवेलुं चक्र (योग०) मुलायतन न० मूळ निवासस्थान मुलोच्छेद पुं० समूळ नाश **मूल्य** न० किंमत (२) वेतन; रोजी (३) मूळ मूडी मूख पुं० उंदर (२) मूस **मूषक, मूषिक** पुं० उंदर (२) चोर मृ**षिकोत्क**र पुं० (उंदर वगेरेए) दर खोदतां करेलो माटीनो टेकरो

जोडाती होय) (४) शरूआत; प्रारंभ

मुषी स्त्री० उंदरडी मृ६ आ० [स्रियते] (अमुक काळनां रूपोमां प० पण)मरवुं; नाश पामवुं मृग् ४ प०, १ आ० शोधवुं; खोळवुं (२) शिकार करवा पाछळ पडवुं(३) मेळववा प्रयत्न करवी (४) तपासवुं (५)याचवुं (६) वारंवार जवुं–आववुं मृग पुं० चोपगुं प्राणी;पशु(२)जंगली प्राणी(३)हरण(४)चंद्र उपरनुं तेवा आकारनुं चिह्न (५) मागशर महिनो मृगकानन न० घणां मृगोदाळुं वन मृगचर्या स्त्री० मृगनी पेठे जीवव ते (वनमां रहेवुं इ०, एक तप) मृगचारिन् वि० मृगचर्या आचरतुं (भक्त); तपस्वी मृगजल न० मृगजळ **मृगजीवन पुं**० पारधी मृगतृष्णा, मृगतृष्णिका स्त्री० मृगजळ मृगवृश् स्त्री० मृग जेवी आंखोवाळी स्त्री मृगद्युव वि० मृगनो शिकार करवामां जाननो सट्टो खेलतुं; मृगयानुं रसियुं मृगधर पुं० चंद्र मृगनयना स्त्री० हरिणाक्षी स्त्री मृगनाभि पुं० कस्तूरी(२)कस्तूरी मृग मृगपति पुं० सिंह मृगपोत, मृगपोतक पुं० हरणनुं बच्चुं मृगप्रभु पुं० सिंह **मृगमद** पुं० कस्तूरी मृगमंत्र पुं । हाथीओनी एक जात मृगया पुं० शिकारेनीकळवुंते मृगयाघर्म पुं० शिकारना नियमो मृगयु पुं० शिकारी; पारघी मृगराज पुं० सिंह (२) चंद्र मृगराजधारिन् पुं० शिव **मृगराजलक्ष्मन्** वि० चंद्रजेना मस्तक पर छे तेवुं (शिव)(२) 'सिंह'ना नाम के चिह्नवाळुं मृगरोचना स्त्री० गोरोचन

रिखा मृगलांखन पुं० चंद्र मृगलेखा पुं० चंद्र उपरनी मृग आकारनी **मृगव्य** न० शिकार **मृगशाव** पुं० हरणनुं बच्चुं **मृगशीर्ष** पुं० मागशर महिनो मुगाक्षी स्त्री० हरण जेवां नेत्रोवाळी स्त्री मृगाजिन न० हरणनुं चामडुं मृगाधिप, मृगाधिपति, मृगाधिराज पुं० सिंह (जानवरोनो राजा) मृगाराति, मृगारि पुं० सिंह मृगावित्(-व्) पुं० शिकारी मृगांक पुं० चंद्र मृगांगना, मृगी स्त्री० मृगली; हरणी **मृगेक्षण** न० हरण जेवी आंख मृगेक्षणा स्त्री० जुओ 'मृगाक्षी' मुगेंद्र पुं० सिह मृच्छकटिका (मृद्+शकटिका) स्त्री० माटीनी गाडी (रमकडुं) मृज् २, ५०, १० उ० साफ करवुं; वाळी के लूछी काढवुं (२) मसळवुं**; थाबडवुं** (३) पाणीथी घोवुं; मांज**वुं** मृजा स्त्री० साफ करवुं, धोवुं के मांजबुं ते(२)शुद्धि **कपडांवाळुं** मृजावत् वि॰ चोल्खाईवाळुं(२)सारां मृड्६,९, प० माफ करवुं (२) खुश करवुं(३) खु**रा थ**वुं मुडा, मुडानि, मुडी स्त्री० पार्वती मुणाल पुं०, न० कमळ वगेरेनी नाळमां होतो तंतु (३) एक जातनां कमळोनुं तंतुवाळुं मूळियुं मृणालभंग पुं० कमळनां तंतुनी दुकडो मृणालसूत्र न० कमळ-नाळनो तंतु मृणालिका स्त्री० कमळनो दांडो अथवा तंतु (२) कमळनी वेल के फूल मुणालिनी स्त्री० कमळनी वेल (२) कमळनो समूह(३)कमळो घणा यता होय तेवुं स्थान मुणाली स्त्री० जुओ 'मृणालिका'

मुप्सय वि० माटीनुं; माटीनुं बनावेलुं मृत ('मृ'नुं भू० कृ०) वि० मरण पामेलुं (२) मरण पामेला जेवुं (३) मारेलुं (पारो इ०) (४)न० मोत मृतक पुं०, न० मडदुं (२) न० मुरणनुं बिभान सूतक मृतकल्प वि० लगभग मरेला जेवुं; मृतनियातिक पुं० शबने स्मशानमां वहन करी ज्नार ⊷डाघु मृतपा पुं० हलकी वर्णनालोक (जेओ मडदाने साचवे छे, उपाडे **छे, तथा** तेनां कपडां इ० ले छे) **मृतसंजीवनी** स्त्री० मरेलाने जीवर्तु करवानी विद्या मृत्तिका स्त्री० माटी मृत्पिड पुं० माटीनुं ढेफुं मृत्पिडबुद्धि वि० जड बुद्धिनुं मृत्यु पुं० मरण;मोत (२) यम [मर्त्यकोकः मृत्युनाशन न० अमृत मृत्युलोक पुं० यमलोक (२) पृथ्वी; **मृत्युंजय पुं**० शिव मृत्सना स्त्री० माटी मृद् ९ प० दबावबुं;मसळवुं (२)कचरवुं; चूर्ण करी नाखवु(३)धसवु; -ने घसावु (४)चडियाता थवुं(५)लूछी नाखवुं मृद् स्त्री० माटी (२) ढेफुं; रोडुं मुदंग पुं० बंने बाजुएथी वगाडाय तेवुं तबला जेवुं वाद्य **सृदंगकेतु** पुं० युधिष्ठिर मृदित ('मृद् 'नुं भू० कु०) वि ०दबाये छुं; कचरायेलुं (२) लूछी नाखेलुं मुद्रु वि० नरम; कोमळ; पोचुं (२) नबळुं (३) मध्यम (४) धीमुँ (५) अ० धीमेथी; मधुरताथी **मृदुगिर्** वि० मृदु – धीमा अवाजवाळुं मृदुपूर्वम् अ० धीमेथी; कोमळताथी मृदुल वि० मृदु; कोमळ (२) न० पाणी मुद्भूषं वि० सूर्यं धीमेथी तपतो होय तेंबुं (दिवस)

मृद्ग वि० माटीमां ऊगतुं के यतुं मृद्वंगी स्त्री० नाजुक स्त्री मृद्वी, मृद्वीका स्त्री० द्राक्षनी वेल के द्राक्षनु झूमखुं मृध न० लडाई; युद्ध मृन्मय वि० जुओ 'मृण्मय' **मृज़्६** प० स्पर्शकरको (२) दबावबुं (३) विचारणा करवी मृष् १ प० छांटवुं (२) १ उ० सहन करवुं; वेठवुं (३) छांटवुं (४) **४, १०** उ० सहन करवुं ; वेठी लेवुं (५) आवदा देवुं; परवानगी आपवी (६) क्षमा आपवी (७) भूली जतुं मृषा अ० फोगट;नाहक(२)खोटेखोटुं **मृषावाच्** स्त्री० कटाक्षमां बोलवुं ते मृषाबाद पुं असत्य कथन **मृषोद्य** न० जूठुं; जूठ मृष्ट ('मृज्' के 'मृश्' तुंभू० क०) वि० साफ करेलुं; स्वच्छ बरडेलुं; लेपेलुं (३) स्पर्शेलुं (४) विचारेलुं (५) भावे तेवुं मेखला स्त्री० कंदोरो (२) वींटनारी कोई पण वस्तु (३) ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वैदय ए त्रण वर्णों जे त्रण सेरनो कंदोरो पहेरे छे ते (४) पर्वतनो नितंब भाग मेखलापद न० नितंब मेखलिन् पुं० ब्रह्मचारी (विद्यार्थी) मेघ पुं० वादळ [(रावणनो पुत्र) **मेघनाद** पुं० मेघगर्जना (२) इंद्रजित मेघराजि स्त्री० वादळोनी पंक्ति मेघवाहन पुं० इंद्र **मेधक्याम** वि० मेव जेबुं क्याम (राम अथवा कृष्ण) मेघसंघात पुं० वादळ एकठा थवा ते **मेघस्तन्ति** न० मेधगर्जना मेघागम पुं० वर्षऋतु **मेघाटोप** पुं० गाढ वादळ **मेघाडंबर** पुं० वीजळीनो काटको

मेघालोक पुं० वादळ नजरे पडवां ते मेघोरय पुरु वादळ ऊंचे आववां ते **मेचक** वि० काळा रंगनुं (२) पुं० काळो रंग(३)मोरना पींछामांनो चांदो मेचिकित न० काळा रंगनुं **मेड** पुं० घेटो (२) महादत मेडी स्त्री० थांभलो (पशु बांधवानो) मेडीभूत वि० मूळ केंद्र (जेनी आसपास बध् फरे) मेथि पुं० जुओ 'मेढी' मेद पुं० चरबी मेदस् न० मेदघातु (२) शरीरनी जाडाई मेर्बस्वन् वि० चरबीवाळुं (२) जाडुं; स्थळ; जगा मजब्त मेदिनी स्त्री० पृथ्वी (२) जमीन (३) मेदुर वि० जाडुं (२) स्निग्ध; सुंवाळूं (३) गाढुं; छवायेलुं; पूर्ण **मेकु**रित वि० गाढुं थयेलुं (२) चीकणुं मेष पुं० यज्ञ (२) यज्ञमां होमवानुं पशुं (३) आहुति **मेध**ज पुं० विष्णु **मेखा** स्त्री० बुद्धि (२) यादशक्ति मे**षायिन्** वि०बुद्धिमान; डाह्युं (२) सारी स्मरणशक्तिवाळुं (३) पुं० पंडित; विद्वान मेण्य वि०यज्ञने योग्य (२) यज्ञ संबंधी (३) पवित्र (४) बुद्धिमान मेनका स्त्री० स्वर्गनी एक अप्सरा (२) हिमालयनी पत्नी मेना स्त्री० हिमालयनी पत्नी मेय वि० मापवा योग्य; मापी शकाय तेवुं (२) ज्ञेय; जाणी शकाय तेवुं **मेर** पुं० एक काल्पनिक पर्वत (जेनी आसपास ग्रह-नक्षत्र फरे छे) (२) माळानो मुख्य मणको मिळावडो **मेल, मेलक** पुं० मिलाप(२)मेळो(३)[.] मेलन न०मिलाप (२) जोडाण (३) मिश्रण (४) लडाई; सामनो

मेला स्त्री० संयोग (२) एकठा थवुं ते; मंडळी; सभा(३)सुरमो (४) शाही (५) गळी (६) एक मोटी संख्या **मेव** वि० पुष्कळ ; घणुं **मेष** पुं० घेटो (२) मेष राशि **मेषपालक** पुं० भरवाड **मेषय्य** न० घेटांनुं टोळुं मेह पुं० मूतरबुंते (२) मूतर(३) मधुप्रमेह (४) घेटो; बकरो भैत्र वि० मित्रनुं; मित्र संबंधी (२) मित्रे आपेलुं (३) मित्रताभर्युं (४) मित्रदेव संबंधी (मुहूर्त) (५)पुं० मित्र (६) उत्तम ब्राह्मण (७) न० भित्रता **मंत्रक** न० भित्रता मैत्रायरण (-णि) पुं० दाल्भीकि (२) अगस्त्य (३) वसिष्ठ मेत्रेय वि० मित्रनु; मित्र संबंधी **मेत्र्य** न०मित्रता;दोस्ती **मेथिल** पुं० मिथिलानो राजा – जनक **मंथिली** स्त्री० सीता मैथून वि० लग्नथी जोडायेलुं (२) न० लग्न (३) कामसंभोग **मैयुनीभाव** पुं० कामसंभोग मैनाक पुं० एक पर्वत (हिमालयनो पुत्र; समुद्रनी मित्रताने कारणे तेनी पांखी कपाती बची गई छ) **मेरेय, मेर्ट्यक** पुं०, न० एक जातनुं नशाकारक पेय (सुरा अने आसवनुं मिश्रण) | चामडी मोक न० प्राणीनी उतारी **मोक्तव्य** वि० छूटुंकरवायोग्य (२) त्यागवा योग्य (३)उपर फेंकवा योग्य मोक्ष् १ प०, १० उ० मुक्त करवुँ; छूटुं करवुं (२)फेंकवुं (३)तजी देवुं मोक्षा पुं० मुक्ति (२) बचाव (३) नीचे गरी पडवुं ते (४) छूटुं के ढीलुं करवुं ते (५) फ्रेंकवुं के वेरवुं ते भोक्षण न० मुक्त के छुटुं करदुं ते

(२) बचाववुं ते (३) ढीलुं करवुं ते (४) तजवुं ते (५) फेंकबुं के वेरवुं ते मोक्षद्वार पुं० सूर्य मोघ वि०व्यर्थ; निरंथंक (२) असफळ (३) हेतु-प्रयोजन विनानुं (४) तजी दीधेलुं (५) आळसु मोधकर्मन् वि० व्यर्थे कियाविधिमां रत मोघम् अ० नाहकः; व्यर्थ भोधीक् ८ उ० निष्फळ बनाववुं **मोचन**ि० –मांथी मुक्त के छूटुं करनाई (२) न० मुक्त के छुटुं करवुं ते मोटन न० कचरवुं, दळवुं, दबाववुं के मरही नाखवुं ते (२) पुं० पवन मोट्टायित न० गेरहाजर प्रियतमनो उल्लेख थतां के तेनी याद आवता स्त्रीथी अजाप्ये दर्शावातां भाव-चेष्टा मोद पुं० हर्ष ; आनंद ; खुशी (२) सुगंध मोदक वि० खुश करतुं; आनंद आपतुं (२) प्रसन्न; खुशी (३) न० लाडु मोवककार पुं० कंदोई मोदन वि० खुश करनारुं (२) न० आनंद (३) खुश करवानी क्रिया मोष पुं० चोर; डाक् (२) चोरी; लूंट (३) चोरेली वस्तु मोह पुं० मूर्छा; बेहोशी (२) मूंझवण (३) मूर्खेता; मूढता (४) भूल मोहकलिल न० मोहरूपी कीचड मोहन वि० मूढ बनावनारुं; मूंझवणमां नाखे तेवुं (२) मोहित करनाष्टं (३) भ्रमित करनारुं (४) पुं० शिव (५) कामदेवनां पांच बाणोमांनुं एक (६) न० मूढ बनाववुं ते; भ्रममां नाखवुं ते मोहित करवुं ते (७) संभोग (८) शत्रुने भ्रमित करवा वपरातो जादुमंत्र मोहित वि० मृढ बनेलुं; मूंझायेलुं (२) मोहित थयेलुं; भ्रमित थयेलुं मोहिन् वि० मृढ बनावनारुं; मूंझवणमां नाखनारुं (२) मोहित करनारुं

मोहिनी स्त्री० समुद्रमंचन वस्तते विष्णुए राक्षसोने मोहित करवा माटे लीघेलुं सुंदर स्त्रीनुं स्वरूप मौकलि, मौकुलि पुं० कागडो **मौक्तिक** न० मोती मौक्तिकसर पुं० मोतीनो हार **मौक्तिकावली** स्त्री० मोतीनी सेर **मौलयं** न० वाचाळपणुं(२)गाळ;निंदा **मौस्य** न० प्रधानपणुं; मुख्यपणुं भौज्य्य न० अज्ञता; अणसमज (२) निर्दोषता; भोळपण (३) सुंदरता मौडप न० मूढता; मूर्खता (२) मूर्छी मौन न० चुपकीदी; चूप रहेवुं ते (२) खील्या विनानी दशा **मोनिन्**वि० मौनव्रत पाळनार (२) पुं० ऋषि; मुनि **मौर्स्य** न०मूर्खता [राजवंश मौर्य पुं० चंद्रगुप्तथी शरू थयंली मौर्व वि० मूर्वा घासनुं बनावेलुं मौर्बी स्त्री० धनुष्यनी पणछ (२) मूर्वी घासनो बनावेलो कंदोरो (क्षत्रियो भारण करे छे) **भौल** वि० मूळनुं; प्राचीन (२) खानदान कुळनुं(३)वंशपरंपरायी ते पद उपर चालतुं आवेलुं (४)आर्थिक (५) पुं० घरडो के वंशपरंपराधी चाल्यो आवेलो प्रधान **मौ**लि वि० मुख्य; उत्तम (२) पुं० मस्तक; माथानी टोच (३) कोई पण वस्तुनो टोचनो भाग (४)पुं०, स्त्री० मुगट (५) जटा (६) ओळेला वाळ के अंबोडो मौलिक वि० मुरूप;प्रधान (२)हलका कुळन्ं ('कुलीन' थी ऊलटुं) **मोल्य** न० मूल्य; किंमत मौसल वि० गदायी लडायेलुं (युद्ध) मोहूर्त, मोहूर्तिक पुं० ज्योतिषी; जोषी मौजी स्त्री० मुंजनी त्रण

बनावेलो(ब्राह्मण वडे पहेरातो)कंदोरो

मौडप न० माथुं मूंडी काढवुंते (२) टालियापणुं
म्ना १ प० मिनति] मनमां गोखवुं(२) खंतथी अभ्यासवुं
प्रक्ष १ प० घसवुं (२) ढगली करवुं
(३) मारवुं (४) १० उ० ढगली करवों (५) घसवुं (६) अस्पष्ट बोलवुं
प्रक्षित ('ग्रक्ष्' नुं भू० कु०) वि० घसेलुं; खरडेलुं
प्रक्षित ('ग्रक्ष्' नुं भू० कु०) वि० घसेलुं; खरडेलुं
प्रक्षित ('मलें' नुं भू० कु०) वि० करमायेलुं; ऊडी गयेलुं 'म्लान ('मलें' नुं भू० कु०) वि० करमायेलुं; चीमळायेलुं (२) धाकेलुं (३) कुश के क्षीण थयेलुं (४) खिन्न थयेलुं (५) मेलुं; काळुं

म्लानबीड वि० बेशरम म्लानि स्त्री० झांखुं पडवुं, करमावुं के चीमळावूंते (२) थाक; खिन्नता [ओछुं यतु (३) काळापणुं म्लायिन् वि० कृश थतुं;करमातुं (२) म्लेच्छ् १ प०, १० उ० अस्पष्ट बोलवुं; जंगलीनी पेठे बोलवं म्लेच्छ पु० आर्यनहि तेवो (संस्कृत भाषा स्पष्ट न बोलतो); परदेशी (२) बहिष्कृत माणस; दुष्ट; पापी म्लेच्छभोजन पुं० घउं (२) न० जव म्रुं १ प० करमावुं; चीमळावुं (२) खिन्न थवुं (३) थाकी जवुं (४<u>)</u> दूबळा पडवुं (५) अदृश्य थवुं; ऊडी जवुं (६) क्षीण थवुं **म्लैच्छ्१**प०,**१०** उ० जुओ 'म्लेच्**छ्'**

य

यकृत् न० काळज्; 'लीवर' **यस् १** क्षा० पूजवुं; आदर करको (२) १ प० झडप करवी यक्ष पुं० कुबेरना सेवक गणता देवोनी वर्ग (२) न० प्रेत यक्षकर्दम पु॰ केसर, अगर, कस्तूरी, कपूर अने चंदन ए पांच पदार्थीनो समभागे बनावेलो खुशबोदार लेप यक्षराज्(-ज) पुं० कुबेर यक्षिणी स्त्री० यक्ष स्त्री यक्षी स्त्री० यक्ष स्त्री (२) कुबेरनी पत्नी (३) यक्षोनो वर्ग **यक्षेत्रवर, यक्षेत्र** पुं० कुबेर यक्ष्म, यक्ष्मन् पुं० क्षयरोग यज् १ उ० यज्ञ करवो (२) होम करवो (जे देवने अर्थे होम कराय ते द्वितीया विभवितमां आवे, जे वस्तुनी होम कराय ते तृतीयामां) (३) पूजवं यजज्ञ पु० अग्निहोत्र करनार

यजन न० यज करवो ते (२) यज्ञ (३) यजस्यान यजमान पुं० पैसा आभी ऋदिवज पासे यज्ञ करावनारो (२) मिजमान (३) कुटुंबनी वडी यजिन् वि० यज्ञ करनारं (२) पूजनारं यजुर्वेद पुं० त्रणमांनो बीजो वेद (ऋग्-य**जुर्-**साम०) [छे)(२)यजुर्वेद यजुस् न० यजुर्वेदनो मंत्र (गद्यमां होय यज पुं० आहुति होमी देवने पूजवानुं वेदोक्त कर्म (२) वैश्वदेवादि स्मार्त कर्म (३) विष्णु (४) अग्नि यज्ञद्रव्य न० यज्ञमां वपराती वस्तु यज्ञभीर वि० यज्ञविधिनुं जाणकार यज्ञभागभुज् पुं० देव यज्ञभागेश्वर पुं० इंद्र यज्ञभावित वि० यज्ञ वडे पूजेलुंके सत्कारेलुं; यज्ञ वडे संतुष्ट थयेलुं यज्ञभृत् पुं० विष्णु

यज्ञवाट पुं॰ यज्ञ माटे आंतरेली तथा तैयार करेली जगा यज्ञवेदि (-दी) स्त्री० यज्ञनी कुंड यज्ञशरण न० यज्ञ माटेनो मंडप यज्ञक्तिष्ट स०, यज्ञकोष पुं०, त० यज्ञमां वधेलुं – बचेलुं ते (भोजन) यशसूत्र न० यज्ञोपवीत **यज्ञसेन** पुं० द्रुपद राजा यज्ञात्मन् पुं० विष्णु यज्ञांग न० यज्ञनुं अंग -- भाग (२)यज्ञ करवामां उपयोगी कोई पण साधन यज्ञाञ्च पुं ० देव (यज्ञमां तेमने हिस्सो अपाय छे) यज्ञिय वि० यज्ञ संबंधी; यज्ञने योग्य (२) पुं० देव (३) द्वापर युग (४) न० यज्ञसामग्री यज्ञीय वि० यज्ञ माटेनुं; यज्ञ संबंधी यज्ञोपवीत न० जनोई यज्वन् वि० यज्ञ करतुः यज्ञ करनारुं (२) पुं० विधि प्रमाणे यज्ञ करनारो यत् १ आ० यत्न करवो (२) सावचेत के जाग्रत रहेवूं यत ('यम्' नुं भू० क्र०) वि० संयत; निग्रह करेलुं (२) प्रयत्नशील (३) मर्यादित; मध्यमसरन् यसगिर् वि० वाणीनो निग्रह करनाहं यतिवत्तात्मन् वि० मन अने शरीर जेनां काबूमां छे तेवुं यतम स॰ ना॰, वि॰ (घणांमांथी) जे यतर स॰ ना॰, वि॰ (बेमांथी) जे यतव्रत वि० व्रतो पाळतुं यतस् अ० ज्यांथी (२) जे कारणे (३) कारण के (४) ज्यारथी मांडीने यतस्ततः अ० ज्यांशी त्यांशी (२)ज्यां त्यां (३) जेनी तेनी पासेथी यतात्मन् वि० संयमी यति स० ना०,वि०(ब०व० नांज रूप चाले छे; प्रथमा अने दितीयामां 'यति' रूप थाय) जेटलु (संख्या, कद)

यति पुं० संयमी; तपस्वी; त्यागी (२) स्त्री० निग्रह; काबू (३) विरमवुं ते (४) दोरवणी (५) गायनमां के रलोकमां अप्वतो विराम यतो यतः अ० गमे त्यांथी; ज्यां त्यांथी (२)ज्यां ज्यां; जे जे दिशामां यत्कारणम्, यत्कारणात् अ० कारण के ; कारण जे; -ने कारणे; सबबधी **यत्कृते** अ० जेने कारणे **यस** वि० यत्न करतुं (२) तत्पर (३) निश्चयवाळुं (४) संभाळ के **त**हेनात राखी होय तेव् **यत्न** पुं० प्रयत्न; खंत (२) काळजी (३) श्रम;कष्ट यत्नतः अ० काळजीयी; खंतथी यत्नवत् वि० काळजीपूर्वकन् होय तेवुं यत्नात् अ० महाप्रयत्ने (२) खंतथी; काळजीथी(३)दरेक प्रयत्न करवा छतां यत्नेन अ० महाप्रयत्ने; खंतथी यत्र अ० ज्यां(२)ज्यारे यत्र तत्र अ० दरेक ठेकाणे ; ठेर ठेर **यत्रत्य** वि० ज्यांन्; ज्यां रहेतुं यत्र यत्र अ० ज्यांज्यां वासो करत् **मत्रसायंगृह** वि० ज्यां रात पडे त्यां **थत्सत्यम्** अ० खरेखर; खर्र कहुंतो ययर्तु (यथा + ऋतु) अ० ऋतु - मोसम प्रमाणे; योग्य ऋतु वैळाए यथा अ० जेम (२) जेम के (३) जेवुं के (४) दाखला तरीके (५) जेथी करीने (६) ('तथा' नी साथे संबंधमां) जेवुं (तेबुं); जेम (तेम); जेथी करीने (तेथी करीने); जेम जेम (तेम तेम); जो आ खरुं होय (तो) यथाकथित वि० पहेलां कह्युं छे तेवुं यथाकर्तव्य वि० करवाने योग्य होय तेवुं यथाकर्म अ० कर्म प्रमाणे ; संजोग प्रमाणे यथाकरूपम् अ० नियम के विधि मुजब यथाकामम् अ० मरजी मुजब यथाकाल पुं० योग्य समय

यथाकालम् अ० योग्य समये ययाकृत वि० रूढि के आचार प्रमाणे करेलुं यथाकृतम् अ० रूढि मुजब ययाकमम् अ० कम प्रमाणे ; अनुक्रमे ययाक्षमम् अ० शक्ति मुजब यथाक्षेमेण अ० अनुकूळता प्रमाणे; सहीसलामतीथी ययाखेलम् अ० रमतां रमतां यथारूयानम् अ० पहेलां कह्या के जणाव्या मुजब यथागत (यथा + आगत) वि० मूर्ख यथागतम् अ० आव्यं होय ते ज मार्गे यथाचित्तम् अ० मरजी मुजब ययाजात वि० मृर्खे ययाज्ञानम् अ० समज प्रमाणे; जाण यथाज्येष्ठम् अ० पदवी के उंमर मुजब ययातथ वि० यथार्थ; खरेखहं (२) बराबर;चोक्कस (३) न० कोई वस्तुनो विगतवार साचो अहेवाल ययातथम् अ० जेम होय तेम; बराबर; खरेखर (२) उचितपणे ययातथा अ० फावे तेम; गमे तेम यथातथ्यम्, यथातथ्येन अ० खरेखर; बराबर; साचेसाच यथादर्शनम् अ० जोया प्रमाणे यथानिविष्ट वि० उपर - अगाउ जणाव्युं छे तेवुं (२) विधि – नियम मुजबनुं ययानुषुव्या अ० ऋम प्रमाणे यथानुकपम् अ० उचित होय तेम ययःपुरम् अ० पहेलांनी पेठे यथापूर्व, यथापूर्वक वि० पहेलांना जेवुं यथापूर्वकम्, यथापूर्वम् अ० पहेलानी जेम (२) यथा कमे यथाप्रदेशम् अ० उचित स्थाने (२) दर्शाव्या मुजब (३) बधी बाजुए यथाप्रधानतः, यथाप्रधानम् अ० दरज्जा प्रमाणे; ऋम प्रमाणे

यथाप्रस्तुतम् अ० शरू कर्या मुजब ; अंते ; **छेद**टे (२)संजीगो अनुसार ययाप्राणम् अ० ताकात प्रमाणे ; पोतानी सर्व ताकातयी ययात्राप्त वि० संजोगो अनुसारनुं(२) पहेलांना नियम अनुसार यथाबलम् अ० जुओ 'यथाप्राणम्' ययाभागम्, यथाभागज्ञः अ० भाग प्रमाणे (२) पोतपोताने स्थाने (३) योग्य स्थाने यथाभिप्रेतम् अ० मरजी मुजब यथाभिमत वि० इच्छा मुजबनुं यथाभिमतम् अ० मरजी मुजब ययाभीष्ट वि० इच्छा मुजबनुं यथामति अ० बुद्धि – समज प्रमाणे ययामुखीन वि०-नी बराबर सामुं जोतुं होय तेवुं (छठ्ठी विभक्ति साथे) यथाम्नातम्, यथाम्नायम् अ० वेदमां कह्या के फरमाव्या मुजब ययायथम् अ० उचित होय तेम (२) अनुक्रमे (३) धीमे धीमे **ययायोग्य** वि० योग्य; उचित यथारसम् अ० रस प्रमाणे यथारुचि अ० रुचि प्रमाणे यथारूपम् अ० देखाव मुजब (२) योग्य-यथार्थ वि० साचुं; बरुं (२) अर्थ प्रमाणेनु ; अन्वर्थ ; सार्थ(३)योग्य ; घटतुं ययार्थता स्त्री० छाजतु होवापणुं; उचितता (२) खरुं होवापणुं यथार्थनामन् वि० नाम प्रमाणे जेनां कृत्य छे तेव् यथार्थाक्षर वि० अक्षर प्रमाणेनुं; अक्षर-मां जणाव्या मुजबनु यथाई वि० लायकात मुजबनुं (२) योग्य; घटतुं (३) अनुकूळ यथाहम् अ० लायकात के किंभत मुजब यथालक्ष वि० हाथमां आवी गयुं होय तेवुं ; प्राप्त थई चूक्युं होय तेवुं

ययावकाशम् अ० अवकाश प्रमाणे (२) प्रसंग प्रमाणे (३) उचित स्थाने यथावत् अ० उचित होय तेम (२) नियम प्रमाणे (३) बराबर यथावस्थम् अ० संजोग प्रमाणे यथाविधि अ० विधि म्जब यथाबीर्य वि० गमे तेवी ताकातवाळुं **यथावीर्यम्** अ० ताकातनी बाबतमा (२) ताकात प्रमाणे यथावृत्त वि० बन्युं होय ते मुजबनुं (२) न० कोई पण बनावनो साचो अहेवाल (३) पहेलांनी बनाव यथावृद्धम् अ० उंमरना ऋम प्रमाणे यथाशंक्ति,यथाशक्त्या अ० शक्ति प्रमाणे यथाशी झम् अ० जेम बने तेम जलदी यथाश्रुतम्, यथाश्रुति अ० सामळ्या प्रमाणे (२) वेदविधि प्रमाणे यथासमयम् अ० उचित समये (२) करार मुजब; रूढि मुजब यथासर्वम् अ० बधी विगतोमां ययासुलम् अ० लुशी प्रमाणे ; सुल थाय जिचित; योग्य यथास्थित वि० खरेखरुं; साचुं (२) यथास्थितम् अ० साचेसाच् (२)संजोग अनुसार यथास्थिति अ० हंमेश मुजब; संजोग यथास्वम् अ०पोतपोतानु होय ते मुजब (२) व्यक्तिगत रीते (३) घटतुं होय तेम; उचित होय तेम यथेक्षितम् अ० नजरे जोया मुजब **यथेच्छ** वि० इच्छा मुजबनुं यथेस्टम् अ० सर्जी मुजब यथेष्ट वि० इच्छा मुजबनुं यथेष्टम् अ० मरजी मुजब यथंव अ० जेम यथोक्त वि० कह्या प्रमाणेनुं यथोचित वि० योग्य; लायक ययोजितम् अ० उचित होय तेम ययोत्तरम् अ० कम् प्रमाणे

यथोदित वि० कह्या प्रमाणेनुं यथोदितम् अ० कह्या प्रमाणे यथोद्गमनम् अ० चढता प्रमाणमां यथोद्दिष्ट वि० उल्लेख्या मुजबनुं यथोद्दिष्टम् अ० उल्लेख्या मुजब **यथोद्देशम्** अ० उल्लेख्या-दर्शाव्या मुजब **ययोपपन्न** वि० जेवुं हाजर हतुं तेवुं; मळी आव्युं तेवुं(२) स्वाभाविक ययोचित्य न० उचितताः योग्यता यद् वि० जे (२) (बेवडाय त्यारे) समूचुं; तमाम (उदा० यो यः) (३) ('वा' साथे) जे कोई पण (उदा० 'यो वा'; 'को वा') (४) ('किम्' साथे) गमे ते; कोई पण (उदा० 'येन केन') यद् अ० ′आ जे...' (एम शरूआत करवा) (२) कारण के **यवपि** अ० जोके यवर्थम्, यदर्थे अ० कारण के; जे कारणे यदा अ० ज्यारे यदाप्रभृति अ० ज्यारथी मांडीने यदा यदा अ० ज्यारे ज्यारे **यदि** अ० जो (२) कदी पण (३) जो कदाच **यदिवा** अ० के; अथवा कदाच;जरूर यदीय वि० जेनुं; जेना संबंधी **यद** पुं० ययातिनो देवयानीथी उत्पन्न थयेलो पुत्र (२) मथुरा नजीकनो प्रदेश **यदुनंदन** पु०श्रीकृष्ण यबुच्छा स्त्री० मरजी मुजब वर्तवुं ते; स्वेच्छाचारिता (२)अकस्मात (त्रीजी विभिन्त एकवचनमां - 'अकस्मातथी' एवा अर्थमां वपराय छे) यद्ग्लातस् अ० अकस्मातथी यद्च्छाञ्चद पुं० अर्थ विनानो तथा प्रमाणसिद्ध नहि तेवो शब्द (जेम के विशेषनाम) य च्छासंवाद पुं० आकस्मिक संभाषण

(२) अकस्मात मिलाप

यक्भिजिष्य पुं० 'जे थवानुं छे ते यही' एवं मानीने बेसी रहेनारो यद्यपि अ० जोके; अगर जो यहत् अ० जे प्रभाणे यद्वा अ० अथवातो यहा तद्वा अ० गमे तेम; एलफेल यद्वृत्त न० साहस (२) घटना यम् १ प० संभोग करवो यम् १ प० [यच्छति] अंकुशमां राखवुं; निप्रह करवो (२) आपव् यम वि० जोडकारूपे जन्मेलुं (२) पुं० नियंत्रण करवुं ते; अंकुशमां राखवुं ते (३) आत्मनिग्रह (४) कोई पण मोट् नैतिक के धार्मिक कर्तव्य (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, ए पांच) (५) मृत्युनो देव; यमराज (६) जोडकुं (७) द्वि० वि० जोडकारूपे रहेला के जन्मेला (अश्विनीकुमार, नकुल-सहदेव) (८) न० जोडकुं ; जोडुं यमक वि० जोडकामां जन्मेलुं (२) वेवडुं (३) पुं० निग्रह; अंकुश (४) न० (भिन्न अर्थना समान शब्दोनी पुनरावृत्ति थती होय तेवो) एक शब्दालंकार (काव्य०) **यमज** वि० जोडकारूपे जन्मेलुं यमद्वितीया स्त्री० भाईत्रीज यमधानी स्त्री० यमनु धाम यमपट पु०, यमपट्टिका, स्त्री०कपडानी पडदो, जेना पर यमपुरीनी सजाओनां चित्र बताव्यां होय छे यमराज् पुं वयसराज (मृत्युना देव) यमल वि० जोडकामानु एक एवं (२) पुं० वे (संख्या)(३) द्वि०व० जोडकूं यमलार्जुनौ पुं० द्वि० व० श्रीकृष्णे खांडणियो भरावी तोडी पाडेलां बे अर्जन वृक्षो यसवत् वि० संयमी; जितेंद्रिय यमशासन पु० शिव यमशासनालय पुं० हिमाछय

यमश्राय न० यमनुं धाम यमायते आ० (यम जेवा थवुं) यमांतक पुं० शिव (२) यमराज दिभित वि० संयम -- अंकुशमां आणेलुं के राखेलुं (२) बांधेलुं;पकडी राखेलुं **यमिन्** वि० संयम-निग्रहमां राखनारुं (२) पुं० संयमी; यति यमी स्त्री० यमनी जोडिया बहेन; यम्ना नदी थयाति पुं० एक चंद्रवंशी राजा (नहुषनो पुत्र; देवयानी अने शर्मिष्ठानो पति) **य**हि अ० ज्यारे (२) कारण जे यद पुं० जब (२) एक जब जेटलुंबजन (३) आंगळी उपरनी यवाकार रेखा (शुभ गणाय छे) यवद्वीप पुं० जावा बेट यवन पुं० ग्रीस देशनो रहेवासी - ग्रीक (२) परदेशी; म्लेच्छ यवनिका, यवनी स्त्री० यवन स्त्री (प्राचीन काळमां राजाओ पोतानां धनुष्यबाण अञ्चलवा तहेनातमा राखता) (२) पडदो (३) बुरखो यवप्ररोह पुं० जवनो अंकुर यवस न० चरवानु घास यवागु स्त्री० चोखा के जवनी कांजी **यवांकुर** पुं० जवनो अंकुर यविष्ठ वि० ('युवन्' नु श्रेष्ठतादर्शक रूप) सौथी वधु जुवान; नानुं (२) पु० नानो भाई यवीयस् ('युवन्' नुं तुलनातमक रूप) बेमां वधु जुवान के नान् यशस् न० ख्याति; कीर्ति; यश (२) गुणसमुदाय **यशस्कर** वि० यश आपनारूं यशस्य वि० कीर्ति करनारुं यशस्विन् वि॰ जाणीतुः, प्रख्यात (२) उत्तम; श्रेष्ठ **यशःकाय** त० यशरूपो शरीर यशःप्रस्थापन न० यश फेलाववो ते

यज्ञः शरीर न० जुओ 'यशःकाय' यशःशेष वि० (जेनी मात्र कीर्ति बाकी रही छे तेव्) मृत यशोदा स्त्री० नंदनी पत्नी; श्रीकृष्णनी पालक माता विख्यात यशोषन वि० यशरूपी धनवाळुं; अति यष्टि स्त्री० लाकडी (२) गदा (३) दांडो (धजानो) (४) शाखा ; डाळी (५) दोरो (सेरनो) (६)कोमळ के नाजुक एवं जे कंई ते (उदा० 'अंगयष्टि') याष्टिनिवास पुं० मोर वगेरेने बेसवा माटेनी लाकडी (२) ऊंचा दंडा उपर ऊभुं करेलुं कबूतरखानुं यष्टिप्राण वि० नबळु; ताकात वगरनुं (लाकडीरूपी आधारवाळुं) यच्टी स्त्री० जुओ 'यष्टि' यष्ट्र पु० यज्ञथी यजन-पूजन करनारो यष्टयुत्थान न० लाकडीने टेके ऊठवुं ते यस् १,४ प० आयास - प्रयत्न करवी –प्रेरक० त्रास उपजाववो यस्मात् अ० जेथी; जे कारणे यंत् वि० नियंत्रण करनार्ह; अंकुशमा राखनारुं (२) दोरनारुं (३) पुं० नियामक; शासक (४) हांकनार (रथ – वाहन इ० नो) (५) महावत यंत्र् १, १० उ० नियंत्रण करवुं;अंकुश-मा राखवु(२)बाधवु(३)फरज पाडवी **यंत्र** न० जकडी-पकडी राखनार के टेकारूप जे होय ते (२) बंधन;बंध; गांठ; लगाम (३) कोई पण किया करवा माटे संचा जेवी युक्ति, रचना के साधन (४) आगळो;ताळुं; चावी (५) ताबीज तरीके वपराती आकृति (६) काणुं पाडवानुं साधन; सारडो **यंत्रक** पुं० यंत्रविद्या जाणनारो (२) नियामक; अंकुशमां राखनारो (३) न॰ पाटो (घानो) (४)कोथळो; झोळो यंत्रकरंडिका स्त्री० जादुई करंडियो **यंत्रकर्मकृत्** पुं० कारीगर

यंत्रकोबिद पुं० यंत्र चलाववानुं के वापरवानुं जाणनारो तेल काढवानी घाणी यंत्रगृह न० (२) त्रास गुजारवानो ओरडो यंत्रवेष्टित न० जाद्दोणांनी प्रयोग **यंत्रण न०, यंत्रणा स्त्री०** रुकावट; नियंत्रण; अंक्रुश (२) बंध; बांधर्यु ते (३) पीडा; त्रास (४) पाटो (५) रक्षण करवुं ते **यंत्रणी** स्त्री० पत्नीनी नानी बहेन; **यंत्रतक्षन्** पुं० यंत्र बनावनारो (२) जादुदोणां करनारो ∐(बारणु) यंत्रदृढ वि० आगळाथी बंघ करेलुं <u>फुवाराओवाळ्</u> यंत्रघारागृह न० किराती पुतळी स्नानगृह **यंत्रपुत्रिका** स्त्री० दोरीयी संचालित यंत्रप्रवाह पुं० पाणीनो कृत्रिम प्रवाह **यंत्रमुक्त** न०एक जातनुं हथियार–अस्त्र **यंत्रशर** पुं० यंत्र वडे छोडातुं बाण **बंत्रारूढ** वि० रेंट जेवां चक पर चडावेलं के चडेलं यंत्रिका स्त्री० जुओ 'यंत्रणी' यंत्रित ('्यत्र' नुभू०कृ०) वि० जकडेलुं; बाधेलुं (२) नियंत्रित; अंकुशमां राखेळुँ (३) प्रेरायेलुं (४) नियमना शिस्तमां रहेलुं (५) बराबर खेंचेलुं (६) आकर्षायेल् यंत्रितकथ, यंत्रितत्राच् वि० पराणे चूप करेलुं के थयेलुं; जोम जाणे पकडी राखी होय तेवुं या २प० जवं (२) चडाई करवी (३) जबा देवुं;पडतुं मूकवुं (४) लुप्त थवुं (५) व्यतीत थवुं; चाल्या जवुं (६) माये लेवुं; वहोरवुं(७)संभोग करवो - –प्रेरक० जाय तेम करवु (२)हांकी काढपुँ; दूर करवुँ (३) व्यतीत करवं पसार करवं याग प्रयज्ञ; होम

यागेश्वर पुं० शिवनुं स्फटिकनुं एक लिंग याच् १ उ० भीख मागवी; आजीजी करवी (२) लग्न माटे मागुं करवुं याचक पुं भिखारी (२) अरजदार याचन न०, याचना स्त्री० भीख मागवी ते (२) आजीजी करवी ते याचित ('याच्' नं भू० कृ०) वि० याचेलुं , भीखेलुं (२) जरूरी ; आवश्यक (३) न० याचना; भीख (४) मागीने मेळवेली भिक्षा याचितक न० मागीने मेळवेलुं अर्थात् वापरवा *उन्ही*नुं आणेलुं ते **या**चितृ पुं० भिखारी (२) अरजदार (३) (लग्न माटे) मागुं करनारो यास्जा स्त्री० याचना; भीख (२) भिखारीवेडा (३) अरज; आजीजी (४) लग्न माटेनुं मागुं याच्ञाभंग पुं भागणी निष्फळ जवी ते याच्य न० याचना-विनंती करवी ते याच्यता स्त्री० -नी इच्छा के प्रार्थना करे तेवी स्थिति; प्रार्थनीयता याजक पु०यज्ञ करावनारो; पुरोहित याजन न० यज्ञ कराववी ते **याजिन्** वि० (समासने छेडे) करनारुं (उदा० सोमयाजिन्) याज्ञवल्क्य पु० वाजसनेयी सहिता (शुक्ष्म यजुर्वेद) ना प्रवर्तक प्राचीन ऋिष (२) एक स्मृतिकार याज्ञसेन (-नि) पुं० शिखंडी याज्ञसेनी स्त्री० द्रीपदी याजिक वि० यज्ञ संबंधी; यज्ञनुं (२) पुं० यज्ञ करनार के करावनार पुरोहित याज्य वि० यज्ञ संबंधी; होमवानुं (२) जेने माटे यज्ञ कराय छे ते (३) यज्ञ करवानी जेने शास्त्र प्रमाणे परवानगी छे ते (४) पुं० यज्ञ करनारो के करावनारो (५) बीजा माटे यज मित्र के ऋचा याज्या स्त्री० (आहति वेळाए) बोलातो

यात् वि० जत् **यात** ('या' नुंभू० कृ०) वि० गयेलुं (२) व्यतीत थयेलुं (३) – दशाने पामेलुं (४) न० गभन; गति (५) कूच (६) भूतकाळ यातन न० बदलो वाळवरे ते (वेर इ०नो) यातना स्त्री० बदलो (वेर इ० नो) (२) तीत्र वेदना; त्रास (३) यम नरकमां पापीओ उपर जे वेदनाओ नाखे छेते यातयाम, यातयामन् वि० वासी थये छुं; वपरायेलु; निरुपयोगी बनेलुं (२) अर्धुपर्यं रंघायेलुं (३) थाकी गयेलुं; घसाई गयेलुं; वृद्ध; जीणें यातव्य वि० जवा लायक (२) चडाई करवा योग्य (३) राक्षसो के तेमनी माया सामे उपयोगी ('यातु' उपरथी) (४)पु० शत्रु **यातु** पुं**०** मुसाफर (२) राक्षस (३) यातुभान पुं० राक्षस यातुनारी स्त्री० राक्षसी यात् स्त्री० पतिना भाईनी पत्नी (देराणी **के** जेडाणी) (२)पुं० वटेमार्गु (३) हांकनारो (४) देर वाळनारो यात्रा स्त्री० जवुं ते; मुसाफरी; प्रवास (२) लक्करनी कूच (३) तीर्थंयात्रा (४) उत्सव; मे⊅ो (५) सरवस (६) आजीविका; निर्वाह (७) समयनुं व्यतीत थवुं ते (८) व्यवहार; कृढि; रीत (९) एक प्रकारनुं नाटक यात्रिक वि० कूच करतुं (२) यात्रा के कूच संबंधी (३) जीवनयात्रा माटे जरूरी (४) रूढिगत; चालु; सामान्य (५) पुं० वटेमार्गु; मुसाफर (६) न० कूच (लश्करनी) (७) (कूच माटेनो) पुरवठो; साधनसामग्री यात्रोत्सव पुं० उत्सव के समारंभनुं [प्रमाणिकता याथातथ्य न० साची दात; सत्य (२)

याथातम्य न० तत्त्व; साचुं स्वरूप याथार्थ्यं न० यथार्थपणुं; साचुं स्वरूप (२) उचितपणुं (३) इच्छेलो अर्थ सिद्ध के प्राप्त थवी ते यादव वि० यदुना वंशनुं यादस् न० जलचर प्राणी यादक्ष वि० जेवुं याद्दिछक वि० आपोआप - स्वेच्छाए प्राप्त थयेलुं के करायेलुं (२) आकस्मिक (३) स्वेच्छाचारी **याद्श् (~श**)वि० जेवुं यावृश-तावृश वि० जेवं तेवं; सामान्य यादोनाथ पुं० समुद्र (२) वरुण यान न० जवुं ते; सवारी करीने जवुं ते (२) मुसाफरी (३) सामे चडाई करीने जबुं ते (४) सरघस (५) वाहन (६) पालखी; म्यानो (७) वहाण; जहाज (८) ज्ञाननुं के मोक्षनुं साधन (उदार्॰ 'हीनयान', 'महायान') (९) [बहाण; नौका यानपात्र न०, यानपात्रिका स्त्री० **यानमुख** न० रथनो अग्रभाग; धुरा **यानशाला** स्त्री० गाडी या रथ राखवानुं मकान: 'गॅरेज' गिदी **यानस्तरण** न० वाहनमां पाथरवानी यापक वि० जाय एम करनार्ह (२) आपनारुं; बक्षनारुं यापन वि० जाय एम करनारुं (२) मटाडनार्ह (३)टेकवनार्ह;जोगवनार्ह (जीवनने) (४) न० काढी मुकवुं ते (५) मटाडवुं ते (रोगने) (६) व्यतीत करवुं ते (समयने) (७) विलंब (८) निर्वाह (९) प्रयोग; अमल (१०) उपदेश यापना स्त्री० जुओ 'यापन' याप्य पुं० बापनी मोटो भाई **याप्ययान** न॰ पालखी; डोळी याभ पुं॰ संभोग; मैथुन

थाम पुं० संयम; निग्रह (२) त्रण कलाक जेटलो समय – प्रहर (३) वाहन; गाडी (४) देवोनो एक दर्ग यामतूर्य न०, यामबुंदुभि पुं० प्रहर बताववा वगाडातुं घडियाळ - घंट **यामवती** स्त्री० रात्री **यामवृत्ति** स्त्री० पहेरा उपर होवुं ते यामि स्त्री० बहेन (२) रात्री (३) पुत्रवध् (४) नरकयातना यामिक पुं० पहेरेगीर यामिका, यामिनी स्त्री० रात्री यामिनीनाथ, थामिनीपति पुं० चंद्र यामी वि० स्त्री० यमे करेली; यम संबंधी (२) स्त्री० जुओ 'यामि' **यामुन** वि० यमुनानुं याम्य वि०दक्षिण दिशानुं(२)यमनुंके यम जेवुं (३) पुं वसनो दूत (४) जमणो हाथ (५) शिव के विष्णु (६) न० भरणी नक्षत्र याम्या स्त्री०दक्षिण दिशा (२) रात्री **यायजूक** पुं० वारंवार यज्ञ करनारी यायावर वि० भटक्या करतु; स्थिर निवास विनानुं (२) पुं ० विचर्या करतो भिक्षु (३) अश्वमेध माटेनो अश्व यायिन् वि० (समासने छेडे) मुसाफरी करतु (२) जतु (३) चडाई करतुं यावक पुंज, न० जवनुं भोजन (२) अळतो (३) छाणमांथी मळता जब वीणीने जीवनारो (व्रतधारी) यावज्जन्म, यावज्जीवम्, यावज्जीवेन अ० जीवतां सुधी;आखी जिंदगी सुधी **यादत्** वि० जेटलुं; जेटला प्रमाणनुं (२)अ० ज्यां सुधी (३)दरम्यान (४) जेटलुं(५) जेयी करीने यावत्कालम् अ० ज्यां सुधी(२) क्षण वार यावत्-तावत् अ० ज्यां सुधी – त्यां सुधी (२) जेवुं – के तरत ज (३) दरम्यान (४) ज्यारे – त्यारे

समजाय ते माटे जोईए तेटलुं (शब्दो) यावदर्थम् अ० बघा अर्थमां (२) जरूरी होय तेटलुं ्छिवट सुधी यावदंतम्, यावदंताय अ० अंत सुधी; यावदंत्य वि० जीवता सुधीनु यावन वि० यवन संबंधी; ययनन् (२) पुं० दुश्मन; हुमलाखोर यावन्मात्र वि०जेटला कद के विस्तारनुं; जेवडुं मोटुं (२) तुच्छ याष्ट्रीक पुं० गदाधारी योद्धो (२) छडीवाळो पहेरेगीर यांजिक वि० यंत्र संबंधी (२) यंत्र वडे करेलुं (३) कृत्रिम ('साहजिक 'थी ि करवानी इच्छावाळुं यियक्षत्, यियक्षमाण, यियक्षु वि० यज्ञ यियासा स्त्री० जवानी इच्छा वियासु वि० जवानी इच्छावाळु (२) चडाई के कूच करवा इच्छतुं यु २ प० जोडवुं (२) मिश्चित करवुं (३) ३ प० छूटुं पाडवुं (४) ९ उ० बांधवुं (५) जोडवुं (६)मिश्रित करवुं (৩) १० आ० निदवुं **युक्त** ('युज्' नुं भू० कृ०) वि० जोडेलुं; वळगाडेलुं (२) बांधेलुं (३) गोठवेलुं(४)साथेनुं ; सहित(५) लागेलुं ; लगनोबाळु (६)उपयोगमां लीधेलुं (७) नियुक्त (८) संबंधी (९) कुशळ; चतुर (१०) योगयुक्त (११) नियमवान (१२) वाजबी; योग्य; खरुं; साचुं (१३) पुं० योगी युक्तचेतस् वि०योगयुक्त;योगाभ्यासी युक्तचेष्ट वि॰ योग्य रीते वर्तनारुं युक्तदंड वि० योग्य रीते सजा करनारुं **युक्तम्** अ० योग्य होय तेम; खरेखर **युक्तरूप** वि०योग्य; घटित; छाजतुं युक्तवादिन् वि० योग्य रीते वोलतुं; योग्य एवं बोलत्

यावदर्थ वि० जरूरप्रमाणेनुं(२)अर्थ

युक्ति स्त्री० जो डाण ; संबंध(२) उपयोग ; वापरवुंते (३) झूंसरीमां जोडवुं ते (४) रूढि; प्रयोग (५) उपाय; योजना (६) करामत (७) छाजवुं ते; घटित होवुं ते (८)दलील (९) तर्क; प्रमाण (१०) हेतु; कारण (११) रचना; गोठवणी युक्तिकथन न० दलीलो कही बतावबी ते युक्तिमत् वि० चालाक; चतुर (२) दलीलवाळुं (३) 🗕 नी साथे जोडेलुं युक्त्या अ० -ना साधनथी (२) कुशळता के चालाकीथी (३) योग्य रीते युग पु०न० झूंसरी (२) न० जोडकूं; युग्म (३) समयनो विभाग (कृत, सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि – ए चारमांनी दरेक) (४) वहु लांबो समय युगपब् अ० एकी साथे; एकी वखते **युगबाह** वि० लांबा बाहुवाळुं **युगमात्र** न० ध्ंसरीनी लंबा**ई** जेटलुं माप (चार हाथ जेटलुं) **युगल, युगलक** न० जोडुं; जोडी **मुगावधि पुं**० जगतनो प्रलय **युगांत पुं**० घूंसरीनो छेडो (२) युगनो अंत – प्रलय (३) मध्याह्न युगांतर न॰ एक जातनी झूंसरी (२) पछीनो पेढी (३)आकाशनो बोजो भाग युगी स्त्री० पुष्कळता;समृद्धि युग्म वि० बेंकी संवरनुं (२) न० जोडुं; जोडकुं (३) जोडाण (४) संगम युग्मचारिन् वि० जोडकामां फरनारुं युग्य वि० धूंसरीए जोडवा लायक (२) धूंसरीनुं (३)धूंसरीमां जोडेलुं(४)–थी खेंचातुं (वाहन) (५) पुं० वाहने जोडेलुं के जोडवानु प्राणी (खास करीने रथनो घोडो) (६) न० वाहन; रथ **युज् ७** उ० जोडवुं; वळगाडवुं; उमेरवुं (२)धूसरीए जोडवु(३)-बाळु होव् (४) उपयोगमां लेवुं; प्रयोजवुं (५) नियत करवुं (६) लक्ष एकाग्र करवृ

(७) सज्ज करवुं (८) आपवुं; बक्षवुं (९) १ प०, १० उ० जोडवुं (१०) ४ आ० मनने एकाग्र करवुं (११) १० आ० निदवुं युज् वि० (समासने छेडे) -थी जोडायेलुं; —थी खेंचातुं (२) युक्त; सहित; -बाळु (३) बेकी संख्यान् **युत** (ँयु^{र्र}नुंभू०कृ०) वि० जोडेलुं; जोडायेलुं (२) यु≆त; –वार्श्व; सहित (३) बांधेलुं; लागेलुं (४) छूटुं पाडेलुं के पडेलुं (५) न० चार हाथनुं माप **युतक** वि० जोडेलुं; जोडायेलुं (२) न० जोडुं (३) मित्रता; संबंध (४) स्त्रीओनो एक पोशाक (५) स्त्रीना वस्त्रनो छेडो – अंचळ (६)लग्ननी भेट युति स्त्री० जोडाण; संबंध(२)सहित होवुं ते(३) सरवाळो **युद्ध** ('युध्'तुभू० कृ०) वि० लहाई करेलुं (२) हरावेलुं (३) न० छडाई। **युद्धक न०** युद्ध; लडाई **युद्धचूत** न० युद्धरूपी सट्टी युद्धावहारिक न० लडाईमां मेळवेली लूंट युध् ४ आ० लडाई करवी; युद्ध करवुं (२) लडाईमा हराववुं **युध्** स्त्री० युद्ध (२) पुं० योद्धो;वीर युधिष्ठिर पुं० पांच पांडवोनां सौथी मोटो (कुंतीनो पुत्र) युरुसा स्त्री० लडवानी इच्छा युयुत्सु वि० लडवा इच्छतुं ययुधान पुं० सात्यिक युवक पुं० जुवानियो **युंबजानि** पुं० जेनी पत्नी युवान छे ते युवति (-ती) स्त्री० तरुण स्त्री के मादा **युदन्** वि०जुवान उंभरनुं(२)मजबूत; नीरोगी (३) उत्तम (४) पुं० जुवानियो (५) ६० वर्षनी उंगरनो हाथी **युवराज** पुं० पाटवी कुंबर युष्मद् स० ना० (बीजो पुरुष सर्वनामनुं मूळ पद) तुं; तमे

युष्मदर्यम् अ० तमारे माटे **युष्मदीय** वि० तमारुं;तमारी मालकीन् (२) पुं० तमारो देशबंधु **युष्मादृश्(–श)** वि०तमाराजेब् **युंजान** वि० जोडतुं (२) योग्य (३) सफळ; समृद्ध (४) पुं० सारथि (५) योगी (६) ब्राह्मण (योगसाधक) युक पु०, युका स्त्री० जू **यूकालिक्ष** न० जू अने लीख (२) लीखना जेटलुं बजन के माप यूति स्त्री० संयोग; मेळाप यूथ न० टोळुं;समुदाय वादरा यूथचारिन् वि० टोळामां फरत् (जेम वे **यूथनाथ, यूथप, यूथपति** पुं० टोळानी नायक (सामान्य रीते हाथीनो) **यूथबंध** पुं० टोळुं; समुदाय यूथशः अ० टोळामां यूथिका, यूथी स्त्री० जूई **यूथ्य** वि० (समासने छेडे) टोळामांनुं: —ना टोळानुं (२)टोळानुं अग्रेसर एः यूष्या स्त्री० टोळ् यूप पुंज्यज्ञ मादेनी स्तंभ(ज्यां बलिदानन पशुबंधाय छे) **यूपद्विप** पुं ० यज्ञस्तंभनी आसपास वींटात **यूष, यूषन् पुं**०, न० मग वगेरेन उकाळो-ओसामण ('यूषन्'नां प्रथम पांच रूप नथी; 'यूष'ना द्वि०ब०र्थ तेनुं रूप विकल्पे जोडाय छे.) **येन** अ० जेथी करीने; जे कारणे **योक्तव्य** वि० जीडवा लायक **(**२) सोंपवा लायक (३) उपयोगमां लेव योग्य (४) (सजा) फरमाववा योग्य योक्तृ पुं० झूसरीए जोडनारो (२) गार्ड हांकनारो (३) उक्केरनारो **योक्त्र** न० दोरडूं (झूंसरीनुं) ; जोतर (२) नेतरुं योग पुं० जोडवुं ते (२) जोडाण ; संबंध (३)स्पर्श (४) उपयोगमां लेवं ते (५) साधन; रीत; पद्धति (६) परिणाम

(७) युक्ति; छळ (८) योजना (९) प्रयत्न; उद्यम (१०) उपाय; उपचार (११) जादु; मंत्र (१२)प्राप्ति (१३) व्यवहार; अमल (१४) शब्दनो रूढिथी थतो अर्थ (१५)ध्यान ; समाधि (१६) पतंजलिए प्रवर्तावेलुं दर्शन (१७)योग-दर्शननो अनुयायी (१८) ताकात; शक्ति (१९) समत्व योगक्षेम पुं० जे वस्तुन मळी होय ते मेळववी तथा जे मळी होय तेनुं संरक्षण करवुंते (२) कुशळता; आबःदी योगचूर्ण न० जादुई चूर्ण; जादुई शक्तिओवाळुं चूणे योगतस् अ० -ने परिणामे; -ना उपायथी (२) योग्य रीते (३) समयसर (४) प्रयत्न करीने; सर्व ताकातथी योगधारणा स्त्री० समाधियोग योगनिद्वा स्त्री० अर्धी निद्रा अने अर्धी समाधि एवी अवस्था; जाग्रत अने निद्रा वच्चेनी अवस्था (२) युगने अंते विष्णुनी निद्रा (३) प्रलय अने उत्पत्ति वच्चेनी ब्रह्मानी महानिद्रा योगपट्ट पुं० समाधि दखते पीठ अने ढींचण आसपास रखातुं वस्त्र योगपादका स्त्री० पवनपावडी योगबल न० समाधिमां स्थित थवानी शक्ति(२)**अलौकिक** सिद्धि योगभ्रष्ट वि० योगसाधनामांथी च्यत थयेलु; साधना अधूरी रही होय तेवुं योगमाया स्त्री० योगसिद्धिनुं अलौकिक बळ (२) सुष्टिना सर्जन माटे ईश्वरे धारण करेली शक्ति;तेनुं साकार स्वरूप योगयात्रा स्त्री० योग सिद्ध करवानो - परमात्मा साथे एक थवानो मार्ग योगरोचना स्त्री० अदस्य के अभेद्य बनाववानी चमत्कारी ताकातवाळ् मलम के लेप योग जाणनारु योगविद वि०योग्य उपाय जाणनारुं (२)

योगविधि पुं०योग - समाधिनी साधना योगसमाधि पुं० समाधिमां जीवनुं लव-लीन थई जवुंते िमळवनारो योगसंसिद्ध पुं॰ योगमां सिद्धि - पूर्णता योगाचार पुं० योगसाधना (२) विज्ञान-वादी बौद्धोनो सिद्धांत (३) जादु के मायानो प्रयोग विशेषमां सिद्ध थयेलुं योगारूढ वि० योगाभ्यासमा पावरघुं; थोगिन् वि० युक्त; संबद्ध; –वाळुं (२) योगसिद्धिवाळ् (३) योग साधनारुं (४) पुं० योग साधनारो योगिनी स्त्री० चमत्कारी शक्तिवाळी जोगणी (२) शिव के दुर्गानी तहेनातमां रहेनारी देवीओनो वर्ग (सामान्य रीते आठ गणाय छे) **योगेश्वर** पुं० योगमां सिद्ध थयेली (२) सिद्धिक्षो प्राप्त करनारो(३) जादुगर योग्य वि० उचित ; लायक (२) छाजतुं ; घटतुं (३) उपयोगी (४) —ने माटे **शक्तिमान एव्ं(५)योग माटेलायक** (६) न० वाहन योग्यता स्त्री० शक्ति; सामर्थ्य (२) लायकात ; उचितपणुं (३) पवित्रता योग्या स्त्री० अभ्यास; महावरो (२) शस्त्रविद्यानो अभ्यास योजक वि० धूंसरीमां जोडनारं (२) जोडनारुं; जोगवनारुं (३) योजना करनारुं; गोठवनारुं योजन न० जोडवुं ते (२) उपयोगमां लेवुंते(३)तैयारी; गोठवण(४)चार क्रोश अथवा अठिके नव माईल जेटलुं अंतर (५) उश्केरवुं के प्रेरवुं ते योजनगंषा स्त्री० कस्तूरी(२)व्यासनी माता सत्यवती योजना स्त्री० जोडोण; संबंध (२) उपयोग (३) रचवुं ते **योजनीय** वि० जोडवा योग्य;गोठववा योग्य (२) उमेरवा योग्य (३) उपयोगी (४) नीमवा योग्य

योजियत् वि० जोडतुं(२)योजना कर-नारुं;गोठवनारुं (३) पुं० रत्न जडनारो योजित वि० झूंसरीमां जोडेलुं (२) उपयोगमां लीधेलुं (३) संबद्ध **योत्र** न० जुओ 'योक्त्र' योद्धव्य न० युद्ध करवा योग्य **घोड़** पुं० योद्धो[°], सैनिक योध पुं० लडवैयो; योद्धो(२)लडाई; संग्राम; युद्ध योषन न० युद्ध; लडाई(२)शस्त्र(३) पुं० योद्धो ['बॅरेक ' **योधागार** पुं०, न० सैनिकोनो निवास ; योधिन् पुं० योद्धो **योनि** स्त्री० जननस्थान ; गर्भाशय (२) स्त्रीनुं गुह्यांग (३) उत्पत्तिस्थान; मूळ स्थान (४) जाति; जन्मनो प्रकार (५)मूळ कारण (६) वासना (७) बीज **बोनिज वि० गर्भाशयमांथी जन्मेलुं** योनिसंकट न० पुनर्जन्म योषा, योषिस्, योषिता स्त्री० नारी; स्त्री; तरुण स्त्री यौगपद्येन अ० एकीसाधे **मौ**गिक वि० उपयोगी (२) सामान्य;

चालु (३) व्युत्पत्तिसिद्ध (४) योग संबंधी के योगथी नीपजेलुं यौतक न० खानगी मिलकत (२)लग्न वखते स्त्रीने (पोतानी मालकीनी राखवा) अपाती पहेरामणी **यौन** वि० योनि संबंधी (२) लग्नथी ऊभुं थयेलुं (३) न० लग्न (४) योनि; उत्पत्तिस्थान (५) **गर्भाधा**न संस्कार यौवत न० जुवान स्त्रीओनो समुदाय (२) जुवान स्त्रीनो गुण (सौंदर्य इ०) यौवन न० युवानी; जोवन **यौवनदर्प** पुं० जुवानीनुं अभिमान (२) जुवानने स्वाभाविक एवं साहस **यौबनवत्** वि० जोबनवाळुं; युवान यौवनश्री अ० जुवानीनी सुंदरता **यौवनस्थ** वि० जुवान (२) परणाववा योग्य (३) ताजुं **यौवनारंभ** पुं बीलती जुवानी **यौबनांत** वि० जुवान अवस्था ज छेवट सुधी रहे तेवुं **बौबनीय** वि० जुवानीभर्युं **धौबराज्य** न० युवराजनुं पद योज्माक, योज्माकीण वि० तमार्थ

₹

रक्त ('रंज्'नुं भू० क्र०) वि० रंगायेलुं;
रंगेलुं (२) रातुं; ठाल (३) अनुरक्त;
आसक्त (४) प्रिय (५) सुंदर; मनोहर
(६) न० लोही
रक्तकंठ, रक्तकंठिम् वि० मधुर अवाजवाळुं (कोयल)
रक्तपद पुं० एक जातनो याचक
रक्तमंडल वि० राता विववाळुं (२) अनुरक्त प्रजावाळुं (३) न० रातुं कमळ
रक्ताक पुं० पाडो (२) कबूतर (३)
सारस (४) चकोर पक्षी
रक्ताघरा स्त्री० किन्नरी

(३) बचाववुं (४) टाळवुं (न करवुं)
(५) पालन करवुं (वत के प्रतिज्ञा)
(६) -श्री सावचेत रहेवुं
रक्ष वि० रक्षण करनारुं; बचावनारुं
रक्षक वि० रक्षण करनारुं; बचावनारुं
(२) पुं० पालक (३) पहेरेगीर
रक्षण न० बचाववुं ते; साचववुं ते
(२) पुं० विष्णु
रक्षणा स्त्री० रक्षण करवुं ते
रक्षपाल पुं० रक्षण के बचाव करनारो
रक्षस् न० राक्षस

रक्ष् १प० रक्षण करव् (२) गुप्त राखवुं

रक्षः प्रकांडक पुं० श्रेष्ठ राक्षस रक्षा स्त्री० रक्षण (२) राखडी; तात्रीज (३) राखोडी रक्षाकरंड पुंठ रक्षा माटे बंधातुं अलौकिक शक्ति **धरावतुं** तावीज रक्षागृह न० प्रसूतिगृह रक्षापरिच पुं० आगळो; भोगळ रक्षापाल, रक्षापुरुष पुं० पहेरेगीर रक्षाप्रतिसर पुं० ताबीज **रक्षाप्रदीप** पुं० भूत-पिशाच दूर राखवा सळगतो रखातो दीवो रक्षामणि पुं० भूत-पिशाचथी बचवा पहेरातु रत्न के घरेण् रकामंगल त० भूत-पिशाचा दिथी बचवा करातो विधि रक्षारत्न न० जुओ 'रक्षामणि' रिक्षक पु॰ रक्षक (२) पोलीस रक्षिजन पुं० रक्षकोनी टुकडी रक्षित ('रक्ष् 'नुं भू० कृ०) वि० रक्षेलुं रक्षितक न० संरक्षण रक्षित, रक्षिन् वि० रक्षण करनारुं (२) पुं० रक्षक (३) पहेरेगीर **रक्षोघ्न** पुं० राक्षसोनो नाश करनार एक मंत्र (२) न० हिंग **रक्ष्ण** पुं० रक्षण रघु पुं० एक सूर्यवंशी राजा (दिलीपनी पुत्र; अजनो पिता) (२) ब० व० रघुना वंशजो रघुनंदन, रघुनाथ, रघुपति पुं० राम रघुप्रतिनिधि पुं० अज राजा रधुश्रेष्ठ, रधुसिंह पुं० राम रचंद्रह पुं० (रघुओमां श्रेष्ठ) राम **रच् १०** उ० गोठववुं; तैयार करवुं; योजवु(२)बनाववुं;सर्जवुं; उत्पन्न करवुं (३)लखबुं;ग्रंथ रचवो(४)उपर मूकबुं, खोसवुं के चोटाडवुं (५) शणगारवु रचन न०, रचना स्त्री० गोठवणी (२) रचव् ते; सर्जेन (३)अमल; व्यवहार

(४) प्रंथ; निबंध (५) वाळ ओळीने गोठववा ते (६) लक्करनी व्यूहरचना रिचत ('रच्'नुं भू० कु०) वि० रचेलुं (२)गोठवेलुं(३)ग्थेलुं(४)लखेलुं रिचतपूर्व वि० पहेला भजवेलुं रिचतार्थ वि० कृतार्थ रज पुं० जुओ 'रजस्' रजक पुं० घोबी रजत वि॰ श्वेत; धोळुं (२) चांदीनुं बनावेलुं (३) न० चांदी ; रूपुं (४) सोनु (५) मोतीनुं घरेणुं के हार रजतकृट पुं० मलय पर्वतनुं एक शिखर रजताद्वि पुं० कैलास रजनि स्त्री० रात्री **रजनिकर** पुं० चंद्र रमनिचर पुं॰ निशाचर; राक्षस(२ भोर(३)(रातनो) रखवाळ रजनिमन्य वि० रात जेवुं देखातुं रजनी स्त्री० रात्री रजनीकर पुं० चंद्र रजनीचर पुं० जुओ 'रजनिचर' रजनीपति, रजनीरमण पुं० चंद्र **रअस्** न० रज; धूळ(२)फूलनो पराग (३) सूक्ष्म कण (४) विकार; विकृति (५) रजौगुण (६) स्त्रीनो मासिक रजस्राव (७) पाप रजस्यल वि० रजवाळुं; रजवी छवा-येलुं(२)रजोगुण के विकारथी भरेलुं रजस्वला स्त्री० मासिक ऋतुधर्ममां आवेली स्त्री (२) परणाववा योग्य थयेली कन्या **रजोगुण** पुं० प्रकृतिना त्रण गुणोमांनो बीजो (सत्त्व, रजस्, तमस्) **रजोजुष्** वि० रजोगुण सेवतुं **रजोनिमी**लित वि० विकारथी अंध बनेलुं रज्जु स्त्री० दोरडुं; दोरी रज्जुक पुं० रज्जु;दोरडुं रक्षुपेडा स्त्री० दोरडीनो बनावेलो

रह् १ प० चीस पाडवी; बूम पाडवी (२) मोटेथी जाहेर करवुं (३) आनंदथी बूम पाडवी (४) वगाडवु; अवाज करवो रिटित न० बूम; चीस रण् १ प० रणकार करवो; खखडवुं रण पुं॰, न॰ युद्ध (२) रणांगण रणक्षिति स्त्री०, रणक्षेत्र न०, रणक्षोणी, रणक्षीणो, रणक्ष्मा स्त्री ०, रणखल पुं० रणभूमि; लडाईनुं मेदान रणस् वि० युद्ध करतुं(२) अवाज करतुं (३)गमन करतुं; जतुं रणत्कार पुं० रणको; रणकार (२) अवाज (३) गुंजारव रजधुर्(-रा) स्त्री० युद्धनो मोखरो रणपंडित वि० युद्धकुशळ(२)पु० योद्धो रणभू, रणभूमि स्त्री० लडाईनुं मेदान रणमूर्धन् पुं युद्धनी मोखरों (२) लक्करनी आगली हरोळ रणरणक पुं०, न० राग; प्रेम (२) चिंता; उद्देग; चचराट (प्रिय वस्तु माटे) (३) पुं० कामदेव रणलक्ष्मी स्त्री० युद्धनी देवता (२) युद्धमां जीतवा के हारवानुं भाग्य रणशिरस्, रणशीर्षं न० जुओ 'रणमूर्धन्' रणशौंड वि० युद्धमां कुशळ **रणाजिर** न० रणभूमि रणातिथि पुं ० रणभूमि उपरनो महेमान (जेनी साथे लडवं जोईए) रणातीस न० रणभूमिनुं नगारुं रणापेत वि० रणभूमिमाथी भागी गयेलुं रणांग न० हथियार; तरवार रकांगण (-न) न० रणभूमि रणांतकृत् पुं० विष्णु रणित न० रणकारो रत ('रम्'नुंभू० कृ०) वि० खुश; संतुष्ट (२) अनुरक्त; आसक्त (३) न॰ आनंद (४) संभीग रित स्त्री० आनंद; तृप्ति; प्रीति(२)

आसक्ति; अनुराग(३)प्रेम(४)रति-सुख; संभोग (५) कामदेवनी पत्नी रतिकर वि० आनंद आपनारुं (२) [जनारी अनुरक्त; कामी रतिदूति (-ती) स्त्री० प्रेमनो संदेश लई रतिपति, रतिप्रिय, रतिरमण पुं० काम-[जेमां छेते देव; मदन रतिसर्वस्य न०रतिसुखनुं सर्वोत्तम तत्त्व रत्न न० मणि वगेरे कीमती पथ्थर (२) रत्न जेवुं मूल्यवान जे कई ते (३) ते ते वर्गमां श्रेष्ठ होय ते **रत्नगर्भा** स्त्री० पृथ्वी रत्नच्छाया स्त्री० रत्नोनो प्रकाश रत्ननख पुं०रत्नजडित हाथावाळी कटार रत्ननाभ पुं० विष्ण् रत्निनिधि पुं० समुद्र (२) मेरु पर्वत रत्नपारायण न० रत्नोनी पराकाष्ठा रूप एवं ते; बघां रत्नोमां श्रेष्ठ एवं ते रत्नप्रदीप पुं० रत्नरूपी दीवो रत्नवत् वि० रत्नोवाळुं; रत्नोथी भरपूर (२) रत्नोथी सुशोभित रत्नवष्ठी स्त्री० अमुक पखवाडियानी छठ्ठी तिथिए पाळवानुं एक बत के उपवास (एक ग्रीष्मव्रत) रत्नसानु पुं मेरु पर्वत रत्नसू वि० रत्नो पेदा करनारुं (२) स्त्री० पृथ्वी रत्नाकर पुं० रत्ननी खाण (२) समुद्र रत्नाचल पु० लंकामांनो एक काल्पनिक पर्वत (मेघगर्जना थतां जे रत्नो पेदा करे छे); 'रत्नरोहण 'पर्वत रत्नाढच वि० रत्नोथी भरपूर रत्नावली स्त्री० मोतीनी माळा रित्न स्त्री०कोणी(२)कोणीथी मांडीने बाळेली मूठी सुधीनुं अंतर के माप (३) पुं० बाळेली मूठी **रथ** पुं० उपर घुमटवाळुं **सवारीनुं** एक वाहन (२) लडाई माटनुं घोडा जोडेलुं एक वाहन

रथकर, रयकार पुं० सुतार रयकुटुंबिन् नुं० सार्राय रयकुबर पु०, न० रथनो धोरियो रथक्षोभ पुं॰ रथमां आवतो आंचको रयचरण पुं० रथनुं पेंडुं (२)सुदर्शनचक करवी ते (३) चक्रवाक पक्षी रथचर्या स्त्री० रथमा बेसी मुसाफरी रथपाद पुं० जुओ 'रथचरण रथपंगव पं० उत्तम योद्धो रथशक्ति स्त्री० रथनी व्वजानो दंड रथिशक्षा स्त्री० रथ हांकवानी विद्या **रथारि**थ अ० रथ सामे रथ आवी जाय तेम (नजीक नजीकनुं युद्ध) रथांग पुं०चकवाक पक्षी (२)न० रथनुं चक्र के पैडुं (३) रथनो कोई पण भाग (४)चक्र(खास करीने विष्णुनुं) (५) क्रंभारनी चाकळी रथांगपाणि पुं० विष्णु (सुदर्शन-धारी) **रियन्** वि० रथनुं मालिक (२) रथ हांकनार्ह (३) रथमां बेसनार्ह (४)पुं० रथवाळो (५) रथमां बेसी लडनारो रथेश पुं० रथमां बेसी लडतो योद्धो रथेशा(-षा) स्त्री० रथनो घोरियो रयोपस्य पुं० रथनी बेठक रथ्य पुं० रथनो घोडो (२) रथनो भाग रथ्यचय पुं० घोडाओनी टुकडी रथ्या स्त्री० रथ जाय तेवो मार्ग -भोरी मार्ग (२)घणा रस्ता भेगा यता होय ते स्थान (३) रथोनो समुदाय रथ्यापंक्ति स्त्री० शेरीओनी पंक्ति रथ्यामुख न० रस्तानो प्रवेशभाग रद पु॰ चीरवुं ते (२) खणवुं ते (३) दांत रदखंडन न०दंतक्षत; दांत बेसाडवा ते रदन पुं० दांत (२) न० - चीरव्ं के खणवं ते रघ् ४ प० ईजा करवी; मारी नाखयुं -प्रेरक∘ [रंधयति **] ईजा कर**वी; पीडवुं (२) रांधवुं

रम् १ आ० आरंभ करवो (२) आलिंगन करवुं (३) उत्सुक थवुं (४) साहस करवुं रभस वि० झनुनी ; जुस्सावाळुं (२)तीव; गाढ (३)अविचारी; साहसिक (४)पुं० जुस्सो; वेग (५) साहस; अविचारीपणुं (६)गुस्सो (७)खेद; दिलगीरी (८) आनंद;हर्ष (९)तीव इच्छा; उत्स्कता रम् १ आ० आनंद पामबुं;आनंद माणवो (२) -मां रत थवुं; -श्री हर्षे पामवो (३) ऋीडा करवी (४)संभोग करवो (५) विरमवुं; थोभवुं रमण वि० आनंद अरपनारुं; मनोरंजक; मनोहर(२)पुं० त्रियतम; पति(३) कामदेव (४) न० संभोग; रतिकीडा रमणी स्त्री० सुंदर जुवान स्त्री (२) पत्नी; प्रियतमा (३) कोई पण स्त्री रमणीय वि० मनोहर; सुंदर रमा स्त्रो० प्रियतमा; पत्नी (२) लक्ष्मी देवी; समृद्धिनी देवी (३) सद्भाग्य (४) शोभा (५) संपत्ति रमाकांत, रमानाथ, रमापति पुं० विष्णु रम्य वि॰ सुंदर; रमणीय (२)प्रिय; मुखकर; मनगमतुं रम्या स्त्री० रात्री रम्यांतर वि० वच्चेनां स्थान रम्य के मनोहर करायां छे तेवुं रय पुं॰ नदीनो प्रवाह(२)वेग; झडप (३) खंत; उत्स्कता रिय पुं•, न० पाणी (२)संपत्ति (३) रल्लक पुं० ऊननुंवस्त्रः; कामळो (२) पांपण (३) एक जातनो मृग रव पुं० चीस; बूम; गर्जना (२) पंर्खीओनो कलरव (३) अवाज रवण वि० चीस पाडतुं; गर्जतुं;अवाज करतुं (२) पुं० ऊनंट (३) कोयळ (४) भमरो रवि पुं० सूर्य (२) आकडानुं झाड रवितनय पुं० कर्णं (२) शनिग्रह

रविवंश पुं० सूर्यवंश(राजाओनो) रक्षना स्त्री० जुओ 'रसना ' रिम् पुं॰ दोरडुं; दोरो(२)लगाम(३) परोणो; चाबुक (४) किरण (५) पांपण रिमग्राह पुं० सारथि रिश्ममत्, रिश्ममालिन्, रिश्ममुच रश्मिदत् पुं० सूर्य रस् १ प० बूम पाडवी; अवाज करवो (२)रणकवुं(३)१० उ० स्वाद लेवो ; चाखवुं; **अनुभववुं** (४)चाहवुं रस पुं० प्रवाही; द्रव(२)ज्ञाड वगेरेनुं घटक प्रवाही (३) पाणी (४)स्वाद (५) स्वाद माटेनो पदार्थ(६) कोई पण बाबत माटेनी रुचि (७) प्रेम; स्तेह (८) आनंद (९) काव्य जोदा--सांभळवायी स्थायी मावोनो उद्रेक यतां यतो अलौकिक आनंद (शृंगार, हास्य, करुण, वीर, रौद्र, भयानक, अद्भूत, बीभत्स अने शांत ए नव प्रकारनो)(१०) सार; सत्त्व(११) पारो;पारा वगेरे बातुनी भस्म (१२) जीभ (१३) शरीरनी घटक सात घातुओमांनी प्रथम; असनुं प्रयम रूपांतर (१४) झेर; झेरी पेय रसक न० मांसनो सेरवी रसम्र वि० रसनी कदर-परख करनारुं (२)पुं० वैद(३)कीमियागर रसमास्त्री० जीभ रसद पुं० वैद्य रसन न० चीस पाडवी ते; अवाज करवो ते;रणकार(२)मेघगर्जना (३)स्त्राद (४) जीम **(५) अनुभव – जाण** रसना स्त्री० दोरो; दोरडुं(२)लगाम (३) स्त्रीनी कटिमेखला के कंदोरो (४) जीभ (५) स्वादनी इंद्रिय **एसप्रबंध** पुं० काव्य के नाटकनी रचना **रसभय** वि० रसात्मकः; रसनुं **ब**नेलुं(२) रसवाळुं; प्रवाही (३)सुंदर; मनोहर (४) प्रेममांथी नीपजत्

रसवत् वि॰ रसमयुँ (२) स्वादु (३) संदर(४) प्रेमभयुँ (५) भेजभयुँ रसक्ती स्त्री० रसोडुं (२) रसोई रससिद्ध वि० काव्य के रसनुं जाणकार रसा स्त्री० एक पाताळ; नरक(२) भूमि; जमीन (३) जीभ रसातस न० सात पाताळोगांनुं एक (२) नरक(३)जमीन; भूमि रसात्मक वि० रसनुं बनेलुं; रसवाळुं (२)स्वादवाळुं (३) अमृतमय (४) प्रवाही (५) सुंदर; मनोहर रसाधिक वि० रसाळ; स्वादु (२) आनंदोथी भरेलु; भोगपदार्थीयी भरपूर रसायन न० वृद्धावस्थाने अटकावनार तथा आयुष्य बघारनार कोई पण औषधि (२) ए प्रमाणे आनंद के तृप्ति आपनार कोई पण वस्तु रसाल पुं० आंबो (२) न० छाशनी एक बनावट (३) घूप रसालवनी स्त्री० आंबावाडी;आंबानुं वन रसालसाल पुं० आंबानुं झाड रसाला स्त्री • जीभ (२) दहींनी एक मीठी वानी (३) दूर्वा; दरो (४) द्राक्ष रसास्वाद पु॰ रस चासवो ते (२) काव्यनो रस माणवो ते रसांतर न० वीजो स्वाद (२) वीजो भाव के रस (३) बीजो आनंद वि० स्वादुः रसभर्यु (२) सुंदर(३)रसनुं कदरदान(४) –मां रस लेतुं; –मां आसक्त (सनासने छेडे) (५)पुं० रसनी कदरवाळो(६) भोगासक्त – कामुक पुरुष रसित ('रस्'नुंभू० कृ०)वि० वासेलुं (२) रसयुक्त (३)अस्पष्ट अवाज करतुं (४)न० बुम;अवाज(५)गर्जना रस्य वि० रसभयुँ; स्वादु **रहु १ प०, १०** उ० तजी देवुं **प्रहम** न० तजी देवुंते **रहस्** अ० छानी रीते; गुप्तवणे

रहस् न० एकांत स्थान ; गुप्तस्थान (२) निर्जनस्थान (३)गुप्त वात; रहस्य रहस्य वि० छानुं; गुप्त(२)न० गुप्त वात (३) गुप्त मंत्र के प्रयोग (अस्त्रनो) (४) गूढ सिद्धांत (५) उपनिषद रहस्यम् अ० गुप्त रीते; छानी रीते रहस्याख्यायिन् वि० गुप्त वात कहेतुं **रहाट पुं० अमात्य (२) झर**णुं (३) पिशाच रहित वि० तजायेलुं (२) छूटुं पडेलुं; विनानुं बनेलुं (३) एकलुं (४) न० एकांत गुप्तस्यान रहीभूत वि० एकांतमां के खानगीमां **रंक** वि० दरिद्र;दीन(२)पुं० भिलारी (३)भूखे मरतो माणस **रंकु** पुं० हरण; मृग **रंग** पुं॰ रंग;वर्ण(२)राग;प्रीति(३) रंगभूमि(४)रणभूमि (५) अखाडो (६) प्रेक्षकगण ; सभासदो (७) नाच ; नृत्य ; खेल(८)पु०, न० कलाई रंगदेवता स्त्री० रणभूमि के अखाडो वगरेनी अधिष्ठाता देवी रंगपीठ न० नृत्यभूमि रंगप्रवेश पुं० अभिनय माटे पात्रनुं रंगभूमि उपर दाखल थवुं ते रंगबीज न० रूपुं रणक्षेत्र रंगभूमि स्त्री० नाटकनो तस्तो(२) रंगमंडप न० नाटकशाळा रंगबाट पुं० नाटक, नृत्य वगेरे माटे आंतरेली जगा **रंगसंगर** पुं० रंगभूमि उपर हरीफाई रंगाजीव पुं० नट (२) रंगरेज रंगाधतरंग न० रंगभूमि उपर प्रवेश करवो ते (२) नटनो षंधो रंगावतारक, रंगवतारिन् पुं० नट रंगांगण(-न) न० अखाडो; हरीफाई वगेरे बवाना होय ते स्थान रंगोपजीविन् पुं० रंगरेज रंष् १ उ० जवुँ;वेगथी जवुँ (२) **१०** उ० प्रकाशवं(३)बोलवं

रंघस् न० वेग; झडप **रेज् १,४** उ० राता रंगवाळुंथवुं(२) रंगवुं (३) प्रेममा पडवुं (४) खुशी थवुं; राजी थवुं –प्रेरक० रंगवुं (२) खुश (३) मनावी लेव् रंजक वि० रंग करनाह(२)राग के प्रीति उत्पन्न करनारुं (३) खुश करनारुं रंजन वि० रंगनारुं(२) खुश करनारुं (३)न० रंगवुं ते (४) रंग (५) **राजी** करवुं ते; संतुष्ट करवुं ते रंजित वि० रंगेलुं (२) खुश थयेलुं रंड वि० अपंग बनेलुं(२) बेवफा **रंडा**स्त्री० विधवा (२) वेश्या **रंतब्य** वि० रमवा के कीडा करवा योग्य (२) न० कीडा; उपभोग; रमत रंतिदेव पुं० एक चंद्रवंशी राजा (मोटा पशुयक्को करनार) रंष् ४ प० जुओं 'रध्' **रंघन** न०, रंधि स्त्री० ईजा करवी के नाश करवो ते (२) रांधवुं ते रंध्र न० छिद्र;कार्णु;फाट(२)ज्यायी हुमलो करी शकाय तेवी नबळी जगा .(३) दूषण; दोष (४) तोफान रं**ध्रप्रहारिन्** वि० नबळे स्थाने हुमलो करनारं निबर्द्ध स्थान शोधनारं रं**ध्रानुसारिन्, रंध्रान्वेषिन्** वि० छिद्र के रंभा स्त्री० केळ (२) गौरी (३) एक अप्सरा (४) बांधडवुं के बराडवुं ते रंभोरु वि० केळना जेवी **मनो**हर **– भरेली –** जांधवाळुं; सुंदर **रह_{् १ प० जलदो ग**ति करवी;} उताबळ करवी (२) बहेबूं **र्राह्म** न० वेग; झडप राका स्त्री० पूर्णिमा; पूनमनी सुत राकाचंद्र, राकापति, राकारमण, राकेश प्० पूर्ण चंद्र रासस वि॰ राक्षसनु; राक्षसी (२) पुं• दानव; दैत्य; असुर (३) विवाहना

आठ प्रकारोमांनो एक (कन्यानां सर्गावहालांने मारी-कापीने कन्याने रडती बळजबरीथी उपाडी जबी ते) राग पुं० रंगबुंते (२) रंग (३) लाल रंग (४) लाल अळतो (५) प्रेम ; आसक्ति ; कामवासना (६) लागणी (७) आनंद (८)गुस्सो; क्रोध(९)मनोरंजन थाय तेवी गावानी रीत (मुख्य राग ६ गणाय छे) (१०) मत्सर; ईर्ध्या (११) रजोगुण रागमय वि॰ रातुं; लाल (२) प्रिय (३) प्रेमयुक्त रागबंध पुं० प्रेम प्रगटावबी ते रागलेखा स्त्री० रंगनी रेखा के निशानी रागवत् वि० जुओ 'रागमय' रागात्मक वि० राग उत्पन्न करनाहं; [गणाय छे) रागमय रागिणी स्त्री० रागणी (३०के ३६ रागिता स्त्री० रंगवाळुं होवुं ते (२) प्रेमयुक्त होवुं ते (३)-ने माटे आसक्ति रागिन वि० रंगेलु (२) रंगनार्ष (३) रातुं; लाल (४) प्रेमयुक्त (५) अति आसक्त (६) पुं० रंगारो (७) प्रेमी (८) विषयासक्त - कामी राघ पुं० शक्तिमान के कुशळ माणस राघव पुं० रघुनो वंशज (खास करीने राम) (२) एक जातनुं मोटुं माछलुं राज् १ उ० चळकवुं; प्रकाशवुं; शोभवुं (२) – ना जेवुं देखावुं के शोभवुं **राज्(-ज)** पुं० राजा (२) ते ते वर्गनुं श्रेष्ठ ते (उदा० शंखराज्) राजक पुंजनानी - सामान्य राजा (२) न० राजाओनो समुदाय राजकरण न० अदालत करनारो राजकर्तृ पुं० राज्याभिषेक वखते मदद राजकला स्त्री० चंद्रविवनो सोळमो भाग (चंद्रनी प्रथम कळा) राजकलि पुं० खराब राजा राजकुमार पुं० राजानी कुवर

राजकुल न० राजानुं कुल (२) राज-दरबार (३) कचेरी; अदालत (४) राजमहेल (५) राजा (मानवाचक **उल्लेख) (६) राजसेवक** अमात्य **राजगुरु** पुं० राजानो सलाहकार के राजगुह्य न० महागूढ वस्तु राजगृह न० राजानो महेल (२) मगधनी राजधानीनुं नाम (पाटलिपुत्रथी ७५ थी ८० माईल दूर आवेलुं) राजघ पुं० राजानो वध करनारो राजत वि० रूपानुं बनेलुं (२) न० रूपुं राजतस् अ० राजायी; राजा पासेथी पुं०, **राजताली** राजताल सोपारीनुं झाड **राजदंड** पुं० राजसत्तानो सूचक दंड (२) राजाए करेलो दंड के शिक्षा **राज्यंत** पुं• आगलो दांत राजदूत पुं० राजानो प्रतिनिधि **राजदेय** न० राजाने भरवानो कर राजद्रोह पुं० राजा सामे बळवो राजद्वार् स्त्री०, राजद्वार न० राज-महेलनो दरवाजो. राजद्वारिक पुं० राजानी द्वारपाळ **राजधर्म** पुं० राजानुं कर्तव्य राजधानिका स्त्री०, राजधानी स्त्री० राजान् निवासस्थानः; ते शहेर राजन् पुं० (तत्पुरुष समासने अंते 'राज 'थई जाय) राजा (२)क्षत्रिय (३) चंद्र (४) यक्ष (५) सोमबल्ली **राजनय पुं०, राजनीति** स्त्री० राज्य-वहीवट (२) राजकारण; 'पोलिटिक्स' राजन्य पुं० क्षत्रिय (२) राजकृदुंबनो माणस (३) अग्नि राजन्यक न० क्षत्रियोनो समुह राजन्वत् वि० सारा राजावाळो देश **राजपथ** पुं० राजमार्ग **राजपुत्र** पुं∘ राज्कुंवर (२) क्षत्रिय राजपुत्री स्त्री० राजकुवरी (२)रजपूत जातिनी स्त्री

राजपुरुष पुं० राजानो नोकर(२)वजीर राजप्रकृति स्त्री० राजानो अमात्य राजमार्ग पुं० धोरी रस्तो; मुख्य मार्ग (२) राजानो व्यवहार – रीत राजमुद्रा स्त्री० राजानी महोर - 'सील' **राजयक्ष्म, राजयक्ष्मन्** पुं• (चंद्रने थयेलो रोग) क्षयरोग **राजराज्** पुं० राजाधिराज(२)चंद्र **राजराज** पुं० सम्राट; राजाधिराज (२) चंद्र (३)कुबेर राजराज्य न० कुबेरनुं पद राजींच पुं० ऋषि जेवो राजा;क्षत्रिय छतां तपस्वी जीवन गाळनार (उदा० पुरूरवस्, जनक, विश्वामित्र) राजलक्ष्मन् न० राजचिह्न राजलक्ष्मी स्त्री० राजानी विभूति-वैभव **राजवंश** पुं० राजानो वंश राजविद्या स्त्री० राज्यशास्त्र; राज-नीति (२) विद्याओमां श्रेष्ठ विद्या राजवृक्ष पुं० गरमाळानुं झाड (२) चारोळीनुं झाड राजवृत्त न० राजानो व्यवहार राजशासन न० राजानो हुकम – आज्ञा राजशास्त्र न० राजनीतिशास्त्र राजस वि॰ रजोगुण युक्त राजसभा स्त्री० अदालत; कचेरी राजसंसद् स्त्री० अदालतः; कचेरी **राजसूय** पुं० सर्वोप**री** राजा वडे करातो यज्ञ (तेना राज्याभिषेक वखते) राजस्व न० राजानी मिलकत (२) राजाने आपवानो कर [धोळो हंस राजहंस पुं० लाल पग अने चांचवाळो राजासन न० राजगादी; सिंहासन राजि स्त्री० पंक्ति; रेखा (२) राई राजिका स्त्री० पंक्ति (२) राई राजित वि० प्रकाशित राजिल पुं० एक जातनो (झेरी नहि तेवो) साप

राजीव पुं० एक जातनुहरण(२)न० **्रिजेवी** आंखवाळुं नीलकमळ राजीवनेत्र, राजीवलोचन वि० कमळ राजेंबु पुं० उत्तम राजा **राजोपकरण** न०ब०व० छत्र चाम**र** वगेरे राजचिह्न **राज्ञी** स्त्री० राणी **राज्य** न० राजसत्ता (२) राजानी हकूमतनो प्रदेश (३) राजशासन राज्यपरिकिया स्त्री० राजशासन राज्यभंग पुं० राजशासन ऊखडी जबुंते राज्यभाज् पुं० राजा [ययुंते **राज्यभ्रंश** पुं० राजगादीएथी पद**भ्र**ष्ट **राज्याधिदेवता** स्त्री ० राज्यनी कुळदेवता ्षं० राजाने गादीए राज्याभिषेक बेसाडवानो विधि राज्याध्रममुनि पुं० पवित्र राजा राज्यांग न० राजशासनमां जरूरी अंग (राजा,प्रधान, मित्र, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, अने सैन्य) (२) किल्लो (३) लश्कर रात्रि स्त्री० रात(२)रातन् अंधारं रात्रिक वि० (समासने छेडे)अमुक रात (के दिवस) सुधी चालतुं **रात्रिवर** पुं० राक्षस(२)चोर(३)पहेरेगीर रात्रिचरी स्त्री० पिशाचिनी **रात्रिचर्या स्**त्री० राते फरवुं ते रात्रिजागर पुं० राते जागवुं ते(२)कूतरो **रात्रिरक्षक** पुं० चोकीदार रात्रिविवम्, रात्रिविवा अ० रातदिवसः रात्री अ० जुओ 'राति' राज्यंघ वि० रतांधळुं राज्ञ्यागम पुं० रात आववी – पडवी तै राद्ध ('राध्'नं भू० कृ०) वि० आरावेलुं; खुश करेलुं(२)सिद्ध करेलुं (३) संधेलुं(४)तैयार – सज्ज करेलुं राद्वांत पुरु पुरवार थयेलो – निश्चित सिद्धांत; साबित ययेली हकीकत राष्ट्र ५ प० आराधर्वु; खुश करवुं; शांत करवुं (२) सिद्ध करवुं (३) तैयार करवुं

(४)-ने भागे आवी पडवुं (४ प० पण) (५)वध करवो; ईजा करवी; नाश करवो (६) ४ प० अनुकूळ थवुं (७) सिद्ध-पूर्ण थवं (८) -नं हित जोवं (९) सफळ नीवडवुं राध पुं० वैशाख महिनो राधा स्त्री० समृद्धि; सिद्धि(२)एक प्रसिद्ध गोपी (३) कर्णने उछेरनारी पालक माता राधेय पुं० कर्ण **राम** वि० आनंद आपनारुं (२) सुंदर (३) श्याम (४) श्वेत (५) पुं० परशुराम (६) बळराम(७) रामचंद्र (दशरथना पुत्र) रामगिरि पुं० एक पर्वत (केटलाकने मते बुंदेलखंडनो चित्रक्ट; अथवा नागपुर नजीकनो रामटेक) **रामचंद्र पुं**० राम (दशरथना पुत्र) रामणीयक वि० सुंदर; रम्य(२) न० सुंदरता; रमणीयता रामण्यक न० रमणीयता रामभद्र पुं॰ राम; रामचंद्र रामा स्त्री० सुंदरस्त्री(२)प्रिया(३) कोई पण स्त्री (४) खानदान स्त्री राव पुं बूम; चीस(२)अवाज; नाद रावण वि॰ चीसो पाडतुं (२) पुं० लंकानी राक्षस राजा रावणि पुं० इंद्रजित (रावणनो पुत्र) (२) रावणनो कोई पण पुत्र रावित न० अवाज राशि पुं०,स्त्री० ढगली; समूह (२) मक्षत्रना बार झूमखामानुं प्रत्येक (मेष, वृषभ, मियुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ अने मीन) (३) गणितनो आंकडो (सरवाळा, गुणाकार इ० थी मळतो) राष्ट्र न० राज्य; साम्राज्य(२)प्रांत; प्रदेश (३) लोक; प्रजा

राष्ट्रभेद पुं० राज्यना भागला **यवा** ते राष्ट्रिक पुं० देश के राज्यनो वतनी (२) शासकः; 'गवर्नर' **राष्ट्रिय, राष्ट्रीय** वि० राज्यनुं; राष्ट्रनुं (२) पुं॰ राजा (३) राजानो साळो (४) राज्यनो अमलदार रास् १ आ० चीस पाडवी; बूम पाडवी रास पुं० बूमाबूम; घांधळ(२)अवाज (३)एक जातनुं गोळ कूंडाळामां करातुं नृत्य (जेमके, श्रीकृष्ण-गोपिकाओन्) रासक न० एक जातनुंगौण नाटक रासभ पुं० गधेडो **राहित्य** न० रहितपणुं; अभाव राहु पुं० एक राक्षस; सूर्य-चंद्रने ग्रसे छेते ग्रह (२) ग्रहण **राहुग्रसन** न० ग्रहण (सूर्य-चंद्रतुं) राहुशत्रु पुं० चंद्र रांकव वि० रंकु मृगना वाळनुं बनेलुं (२) न० रंकु मृगना वाळनुं बनावेलुं वस्त्र (३)कामळो ्वांसनो दंड **रांभ** पुं० संन्यासी के ब्रह्मचारीनी **रिक्त** ('रिच्'नुं भू० कृ०)वि० खाली करेलुं(२)खोली(३)छूटुं पाडेलुं(४) निरूपयोगी (५) न० खाली जगा (६) निर्जन स्थळ; वेरान **रिक्तपाणि, रिक्तहस्त** वि॰ खाली हाथवाळुं; कशी भेट न लावनार्ह रिक्तीकृ ८ उ० साली करवुं (२) छोडी देवुं(३)चोरी जवुं रिक्थ न वारसो (२) मिलकत (३) रिच् ७ उ० खाली करवुं (२) – रहित करवु; -विनानं करवु (३) छूटुं पाडवुं (४) तजी देवुं (५) १, १० प० तजी देवुं (६) छूटुं पाडवुं **रिपु** पुं० शत्रु; दुश्मन रिपुकाल पुं० मृत्युनी देव रिपुसूदन वि० शत्रुनो नाश करनार्छ रिरंसा स्त्री० कीडा करवानी इच्छा रिष् १,४ प० ईजा करवी (२) हणवुं

रिष्ट ('रिष् 'नुं भू० क्र०) वि० ईजा करेलुं; हणेलुं(२)कमनसीब(३)न० ईजा; नुकसान (४) कमनसोब (५) पाप (६) हानि (७) समृद्धिः; क्षेम रिह् १ प० [रेहति] हणब् **रिग् १** प० सरकवुं; खसवुं रिंगि स्त्री० जवं के सरकवं ते रीहा स्त्री० अपमान; अवज्ञा **रीण** ('री 'नुं भू० कृ०) वि० टपकेलुं; झमेल (२) नष्ट; क्षीण रीति स्त्री० जवुं – बहेबुं ते (२) गति (३) वहेण (४) सीमा; रेखा (५) पद्धति; रीत (६) रूढि (७) कांसुं रु २ प० बूम पाड्वी; चीस पाडवी; गर्जना करवी ; गुंजारव करवो ; अवाज करवो (२) १ आ० जवुं (३) ईजा करवी; मारी नांखवुं रुक्म वि० चमकतुं; प्रकाशित (२) सोनेरी (३) पुं० सोनानुं घरेणुं (४) न० सोनुं (५) लोहुं रवमपात्री स्त्री० सोनानी थाळी रुष्मपुंख वि० सोनानां पींछांवाळुं(जेम के बाण) **रुक्मपृष्ठक** वि० सोनानो ढोळ चडावेलुं रुक्मरथ, रुक्मदाहन पुं० द्रोणाचार्य रुक्मिणी स्त्री० विदर्भना भीष्मकनी पुत्री;श्रीकृष्णनी पत्नी;प्रद्यम्ननी भाता रुक्तिनन् वि० सोनानां घरेणांवाळुं(२) सोनानो ढोळ चडावेलुं (३) पुं• रुविमणीनो भाई रुग्ण ('रुज्'नुभू० कृ०) वि०भागेलुं; तूटेलु (२) बांकुं बळेलुं (३) ईंगा पामेलुं (४) बीमार; मांद् **रुच १** आ० प्रकाशवुं; शोभवुं(२)गमवुं (जे वस्तु गमे ते प्रथमा विभक्तिमां; अने जेने गमे ते चतुर्थीमां) रुच्(-चा) स्त्री० तेज; कांति(२) शोभा; सुंदरता (३) वर्ण; देखाव (समासने अंते)(४)रुचि; इच्छा

रुचि स्त्री० प्रकाश; तेज; कांति(२) प्रकाशनुं किरण (३) देखाव; वर्णे (समासने छेडे) (४) स्वाद(५)भूख (६) इच्छा (७) गमवुं ते; प्रीति रुचिकर वि० स्वादु; भावे तेवुं (२) इच्छा कभी करनाहं (३) भूख लगाडनाहं रुचित वि० प्रकाशित; कांतिमान (२) स्वादु (३) प्रसन्न रुचिधामन्, रुचिभर्तृ पुं० सूर्य रुचिर वि० तेजस्वी; कांतिमान (२) स्वादु (३) भूख लगाडनारं(४) प्रसन्न रुची स्त्री० जुओ 'रुचि' रुज्६ प० टुकडा करवा; नाश करवी (२)हानि करवी;पीडवुं(३)वाळवुं; नमाववुं (४) १० उ० वध करवो रुज्(-जा) स्त्री० भागवुं ते; तूटी जवुं ते (२) पीडा; वेदना (३) बीमारी; मांदगी (४) थाक; परिश्रम क्त ('रु'नुंभू० कृ०) वि० अवाज करेलुं (२)भागीने टुकडा करेलुं(३) न० बूम; अवाज; गुंजारव(घोडानो, पंखीनो, भमरानो इ०) रुतज्ञ पुं० पक्षी वगेरेना अवाज उपरथी भविष्य भाखनारो **रुद् २** प० रडवुं(२)चीस पाडवी **रुदन, रुदित**्न न० रडवुं ते; विलाप रह ('रुध्'न भू० क०) वि० रोकेलुं; अटकावेलुं (२) घेरेलुं (३)बंघ करेलुं (४) ढांकेलुं **रुद्र वि० भयंकर**;बिहामणुं(२)अनिष्ट दूर करनारुं(३)पुं० शिवना गौणरूप मनाता ११ देवोनो वर्ग (४) शिव (५) अग्नि (६) व० व० प्राणो – इंद्रियो रुद्रदर्शन वि० भयंकर; बिहामणु रुद्राक्ष पुं० एक वृक्ष (२) न०तेनुंबी (जेनी माळा बने छे) रुष् ७ उ० रोघवुं; रोकवुं; अटकावर्बु (२)टकावी राखवुं (३) बंघ करवुं

(४)वच्चे घेरी लेवुं(५)बांघवुं;पूरवुं (६) ढांकवुं; संताडवुं (७) पीडवुं रुषिर वि० लाल रंगनुं(२)न० लोही (३)पुं० लाल रंग(४)मंगळग्रह(५) [लोहीथी तरबोळ एक रत्न रुधिरप्लाबित वि० लोहीथी खरडायेलुं; रुरु पुं० एक जातनुं हरण रुशत् वि० मर्मवेधी (शब्द) रुष् ४ प० रोष करवो; रोषं भरावुं (२)१ प० ईजाकरवी; दध करवो (३)पजवबुं; चिडवबुं रुष्(-षा) स्त्री० रोष; गुस्सो रुषित, रुष्ट ('रुष् 'नुं भू० कृ०) वि० गुस्से थयेलुं; रोषे भरायेलुं रुह १ प० ऊर्गवुं;फणगो फूटवो (२) वंधवुं; विकसवुं(३) घा रुझावो(४) पामवु; पूर्ण थवु (इच्छा) -प्रेरक० रोपयति-ते, रोहयति-ते रोपवुं; वाववुं (२) ऊँचुं करवुं (३) --ने सोंपवुं (४)--तरफ ताकवुं के फेंकवुं रुह(–ह) वि० (समासने छेडे)-मां ऊगतुं; --मां थतुं (उदा० 'पंकेरुह') **र्ड** वि० अपंग थयेलुं – करायेलुं(२) पुं०, न० घड (माथा विनानुं) रक्ष वि० खडबचडुं; कठण; कठोर (२) कूर (३) लूखुं; चीकाक्ष वगरन् (४) उग्र (स्वाद) (५) सूकुं रूढ ('रुह् 'तुं मू० कु०) वि० ऊगेरु; फूटेलुं (२) उत्पन्न थयेलुं (३) वधेलुं (४) अंचुं चडेलुं (५)मोटुं; दृढ(६) रूढि प्रमाणेनुं; प्रचलित (७)लादेलुं; भार भरेलुं (८) प्रख्यात रूढप्रंथि वि० गंठाई गयेलुं **रूढयौवन** वि० युवावस्था पामेलूं रूढवण वि० घारझाया होय तेवुं **रूढसौह**ट वि० दढ मित्रतावाळुं रूढि स्त्री० रुढ थयेली रीति के रिवाज (२) उत्पत्ति; जन्म (३) विकास;

वृद्धि (४)स्थाति; प्रसिद्धि (५) रूढ -प्रचलित थयेलो अर्थ रूप उ० १० घडवुं; आकार आपवो (२) मजववुं; अभिनय करवो (३) निहाळीने जोवुं (४) वर्णन करवुं रूप वि० अनुरूप (२) न० आकृति; देखाव(२)वर्ण(३) कोई पण दृश्य पदार्थ (४) सुंदर आकृति (५)कुदरती स्थिति (देश, काळथी भिन्न) (६)एक चलणी सिक्को (७)रूपुं(८) (समासने अंते) '–नुं बनेलुं;⊸ना देखायवाळुं′एवा अर्थमां (उदा० 'तपोरूप', 'धर्मरूप') रूपक वि० शरीरी;स्थूल (२) लाक्षणिक (शब्द इ०) (३) पुं० एक सिक्को; रूपियो (४) न ० आकृति; रूप (समासने अंते) (५)आविष्कार(६)मूर्ति(७) नाटक (८) एक अलंकार (काव्य०) **रूपकार, रूपकृत्** पुं० सलाट; शिल्पी **रूपण न०** रूपकवाळूं वर्णेन (२) तपास ; परीक्षण **रूपघर वि० –**मुंरूप धारण करनारुः --ना वेशमां छुपायेलुं िकरवुं है रूपवरिकल्पना स्त्री० -नुरूप धारण रूपवती स्त्री० सुंदर स्त्री रूपविपर्यं य पुं० रूप बगडी जवुं ते **रूपसंपत्ति,** रूप**संपद्**स्त्री० श्रेष्ठ रूप रूपाजीवा स्त्री० वेश्या (रूप वर् जीवनारी) [मृतिमाः **रूपिन्** वि० —ना जेवुं देखातुं (२ **रूपोच्च**य पुं० सुंदर स्वरूपोनो संग्रह **रू**ण्य वि० सुंदर; मनोहर (२) छा_ः मारेलुं (३) न० रूपुं (४) रूपानुं के सोनानुं चलणी नाणुं (५) सोनुं रूषित ('रूष्'नुंभू०कृ०) वि० शण-गारायेलुं(२)खरडायेलुं; लेपायेलुं(३) मेलुं थयेलुं (४) सुगंधित करेलुं रे अ० संबोधनार्थे वपरातो अन्यय रेक पुं० संदेह; संशय (२) हलको – बहिष्कृत माणस

रेखा स्त्री० लीटी; लेखा (२) पंक्ति (३) चित्रनी रेखा रेखामात्रम् अ० रेखा जेटलुं – थोडुं पण रेचक पुं० ब्वास बहार काढवो ते (पूरक 'थी ऊलंटुं) (२) पिचकारी (३) ন০ সুলাৰ रेचित वि० साफ – खाली करेलुं रेगु पुं०, स्त्री० घूळ; रज (२) पराग **रेणु**क पुं० शस्त्रो उपर बोलातो एक मंत्र रेगुका स्त्री० परशुरामनी माता; जमदग्निनी पत्नी रेतस् न० वीर्ये; शुक्र रेफ वि० दुष्ट; नीच (२) पुं० 'र्' वर्ण रेभ वि० मोटो अवाज करतुं रेवती स्त्री० २७ मुं नक्षत्र (३२ ताराओ-वाळुं) (२) बलरामनी पत्नी (३)गाय रेव! स्त्री० नर्मदा नदी रं पुं० द्रव्य; धन(२)सोनुं(३)अवाज रमय न० सोनुं रैवत वि० समृद्ध(२)पुष्कळ(३)सुंदर रैवतक पुं० द्वारिका नजीकनो पर्वत रोज पुं० व्याधि; बीमारी रोगभाज् वि० मांदुं; बीमार रोगित् वि० मांदुं; बीमार रोखक वि० प्रकाशित करतुं (२) अनुकूळ; मनगमतु (३) भूख वघारतुं (४) न० भूख (५) भूख वधारनार औषध (६) पुं० काचनां के कृत्रिम घरेणां बनावनारो रोचन वि॰ प्रकाशित करनारुं (२) प्रकाशित; सुंदर; रमणीय; मनगमतुं (३) भूख वधारनारुं रोजनः स्त्री० सुंदर स्त्री(२)उज्ज्वळ आकाश (३) गोरोचना रोचमान वि० तेजस्वी (२) मनोहर; सुंदर(३)न० घोडानी गरदन उपरनो वाळनो गुच्छी रोचिती स्त्री० गोरोचना रोचिस् न० प्रभा; तेज; कांति

रोदस् न०, रोदसी स्त्री० पृथ्वी तथा रोध पुं० अटकाववुं – रोकवुं ते (२) अटकायत; प्रतिबंध (३) बंध करवुं ते (४) घेरो (५) बंध रोधक वि० रोकनार्ह; अटकावनार्ह रोधन पुं० बुधग्रह (२) न० अटकायत, रुकावट, प्रतिबंध, केद इ० रोबस् न० बंध (२) किनारो (३) पर्वतनो ढोळाव (४) स्त्रीनो नितंब रोधिन् वि० अटकावनारुं; रोकनारुं (२) भरी काढतुं; ढांकी देतुं रोप पुं० रोपबुं ते (२) ऊंचुं करबुं ते (३) बाण (४) छिद्र रोपण न० रोपवुं – ऊभुं करवुं ते (२) वाववुं ते (३) रझावुं ते(४)पु० बाण रोपशिक्षित् पुं० बाणोथी थयेलो अग्नि रोपित विः रोपेलुं; ऊभुं करेलुं(२) ताकेलुं (बाण) (३) जडेलुं (रत्न) रोसक पुं० रोम शहेर (२) रोमवासी रोमकूप पुं॰, न॰ चामडी उपरनुं छिद्र (ज्यांथी वाळ नीकळे छे) रोमन् न० रुवांदुं; रूंबुं रोमराजि, रोमलता स्त्री० (दूंटी उपरनी) रुवांटांनी पंक्ति रोमवत् वि० स्वाटांवाळुं रोमविकार पुं०, रोमविकिया स्त्री०, रोभविभेर पुं० रोमांच रोमज्ञ वि० वाळवाळुं; हवांटीवाळुं (२) पुं० घेटुं (३) भूंड रोमहर्ष पु० रोमाच रोमहर्षण वि० रोमांचकारक;दंग करी मूके तेवुं (२) न० रोमांच रोमंच पुं० पशुओनुं वागोळवुं ते रोमावलि (-ली)स्त्री० खांटांनी पंक्ति (दूंटी उपरनी) रोमांक पुं० रोम -वाळनुं चिह्न रोमांकुर, रोमांच पुं० रूवाडां खडां यई जवां ते

रोमोद्गम, रोमोद्भेव पुं० रोमांच रोष्टा स्त्री० अतिशय रोवु ते रोलंब पुं० भमरो रोष पुं० गुस्सो; क्रोध रोषफ वि० कोघी; झट गुस्से यतुं रोषणता स्त्री० कोघ;गुस्सो रोषित वि० गुस्से थयेलुं रोह वि० ऊगतुं (२) ऊंचुं यतुं – चडतुं (३) सवारी करतुं (४) पूं० ऊंचाई (५) ऊंचुं चडवुं ते (६) फणगो; कळी (७) उत्पादक कारण (८) सवार (घोडा इ० नो) [(लंकामां) रोहण, रोहणगिरि पुं० एक पर्वत रोहि पुं० एक जातनो मृग रोहिण पुं० वड रोहिणी स्त्री० राती गाय (२) ४थुं नक्षत्र; एक दक्ष कन्या (चंद्रने अतिशय प्रिय छे) (३) बलरामनी माता (४) जेने ऋतुस्राव तरतमां ज शरू ययो होय तेवी कन्या

रोहिणीतनय पुं० बलराम रोहिणीपति पुं० चंद्र रोहिणीशकट पुं० रोहिणी नक्षत्र (गाल्ली जेवा आकारनुं) रोहित वि० लाल रंगनुं; रातुं (२) पुं० रातो वर्ण (३) हरिश्चंद्रनो पुत्र रोहिताश्व पुं० अग्नि रौक्म वि० सोनानुं रौक्मिणेय पुं० प्रद्युम्न रौक्ष्य न० रूखापणुं; सूकापणुं (२) कठोरता; ऋरता (३) गरीबाई रौचनिक वि० पीळाश पडतु रौद्र वि० रुद्र जेवुं; भयंकर; कोधी (२) रुद्र संबंधी (३) अनिष्ट लावनारुं रौघिर वि० लोहीबाळुं; लोहीनुं **रौ**ष्य वि० रूपानुं रौरव वि० रुह मृगना जामडानुं (२) भयंकर (३)कपटी (४) पुं० एक नरक रौहिणेय पु० बलराम रौही स्त्री० रोहि मृगनी मादा

ल

लक्षुट पुं० गदा; दंडो लक्ष्म् १ आ० जोवुं; निहाळवुं(२) १० उ० देखवुं (३) दर्शाववुं (४) व्याख्या करवी (५) गौण अर्थं बताववो — थवो (६) ताकवुं (७) विचारवुं लक्ष्म न० लाख (संख्या) (२) लक्ष्य; निशान (३) चिह्नं (४) बहानुं; मिष लक्षाण न० चिह्नं; विशिष्टता (२) निशानी (रोगनी) (३) गुण; विशिष्ट धर्मं (४) तेवा धर्मनुं कथन के व्याख्या (५) शरीर उपरनुं शुभ के अशुभ सूचक चिह्नं (६) नाम; विशेषनाम (७) उत्तमता; श्रेष्ठता; सारो गुण (८) हेतु; लक्ष (९) ढोंग; बहानुं (१०) गृह्येंद्रिय लक्षणसंनिपात पुं० छाप लगावनी ते लक्षणा स्त्री० उद्देश; हेतु (२)लक्ष्यार्थयी शब्दनो बोध करावनार शक्ति (व्या०) लक्षणिन् वि० लक्षणो युक्त लक्षणि (क्ष्म् 'नुं भू० कृ०) वि० नजरे पडेलुं; देखायेलुं (२) दर्शविलुं (३) अंकित करेलुं (४) व्याख्या करेलुं (५) तपासेलुं (६) विचारेलुं लक्षाकृ ८ उ० लक्ष्य करवुं (२) उद्देशवुं लक्ष्मण् वि० लक्षणवाळुं (२) शुम लक्षणवाळुं(३)नसीबदार; समृद्ध(४)पुं० रामना नाना भाई; सुमित्राना पुत्र (५) न० निशानी; चिह्न (६) नाम

लक्ष्मन् न० चिह्नः; निशानीः;विशिष्ट गुण (२)डाघ (३) व्याख्या (४) मुख्य एवं ते लक्ष्मी स्त्री० सद्भाग्य; समृद्धि (२) सिद्धि (३) सींदर्य; कांति (४) विष्णुनी पत्नी; श्री (५) राज्यलक्ष्मी लक्ष्मीनिरीक्षित वि० लक्ष्मी देवीनुं कृपापात्र; अति धनवान लक्ष्मीपति पुं० विष्णु (२) राजा लक्ष्मीवत् वि० भाग्यवानः; समृद्धः (२) सुंदर; मनोहर [धनवान माणस लक्ष्मीञ पुं० विष्णु (२) आंबो (३) लक्ष्य वि० जोवा लायक; जोई शकाय तेवुं (२)ओळखी शकाय तेवुं (३)जाणी शकाय तेवुं (४) निशानी करवा योग्य (५)ताकवा योग्य (६)व्याख्या करवा योग्य(७)विचारवा योग्य(८)पुं० शस्त्रो उपर बोलवानो मंत्र (९) न० निशान (१०) चिह्न (११) जेनी व्याख्या करवानी छे ते (१२) लक्षणाथी प्राप्त थतो गौण अर्थ (१३) मिष; ढोंग (१४) लाख (संख्या) लक्ष्यभेद, लक्ष्यवेष पुं० निशान वींघवुं ते लक्ष्यसुप्त वि० ऊघवानो ढोंग करत लक्ष्यालक्ष्य वि० भाग्ये देखातुं लग् १ प० लागवुं; बळगवुं (२) ~ना संबंधमां आववुं (३) असर थवी (४) जोडायेला होवुं (५) −नी पछी तरत बनवुं (६) समय लागवो – व्यतीत थवो (७) १० उ० चाखवुं (८) मेळववुं लगित वि० चोटेलुं; बळगेलुं; जोडायेलुं लगुड(-र, -ल) पुं० लाठी; लाकडी लग्न ('लग्'नुं भू० कृ०) वि० चोटेलुं; बळगेलुं; संबद्ध (२) तरत ज पछी आवतुं-बनतुं (३) न० ग्रहो वगेरेनो मार्ग मळतो होय ते बिंदु (४) सूर्यं राशिमां दाखल थाय ते क्षण (५) शुभ क्षण (कोई काम करवा माटे) लम्बक पुं० जामीन

लग्नकाल पुं० जुओ 'लग्नवेला' लग्नदिन, लग्नदिवस पुं० कोई पण कार्य करवा माटे शुभ दिवस लग्नवेला स्त्री०, लग्नसमय पुं० (लग्न वगेरे किया माटे) शुभ मुहूर्त - समय लग्नाह पुं० कोई कार्य माटे शुभ दिवस लघयति प० (हळवुं करवुं; ओछुं करवुं; अवगणवुं; पाछुं पाडी देवुं) ल**घिमन्** पुं० हलकापणुं (वजनमां) (२) तुच्छता; अल्पता (३) हीनपणु; नीच-पणुं (४) हलका थई जवानी योगसिद्धि लिघष्ठ वि०सीथी वर्षु हरूकुं ('लघ्'नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) लघीयस् वि० बेमां वधुं हलकुं ('लघु'नुं तुलनात्मक रूप) लघु वि० हलकुं(२)नानुं(३)टूंकुं(४) तुच्छ (५)नीच ; हीन (६)नबळुं(७) झट वळी शके तेवुं; चपळ (८)झडपी (९)सहेलुं (१०)पचवामां हलकुं (११) ह्रस्व – टूंकुं (१२) इष्ट; अनुकुळ (१३) सुंदर (१४) नानुं (उंमरमां) १५) भार के परिवार विनानुं (१६) अर० जलदी (२) तुच्छकारयी लघुक्रमम् अ० झडपी पगले लघुचेतस् वि० हलका मनन् (२)अस्थिर लघुता स्त्री०, लघुत्व न० नानापणुं (२) हरूकापणुं (३) तुच्छपणुं (४) ऊंचा कुळनुं न होवुं ते (५)अवगणना (६) चपळता (७) दूंकापणुं (८) कुशळता (९) अविचारीपणुं रु**घुभव पुं**० हलका कुळमां जन्मवाळो लघुभोजन न० हळवुं भोजन – नास्तो लघुविकम वि० झडपी पगलांवाळुं वि० लघुवेधिन् कुशळताथी ताकी [झडपी पगलांवाळु शकनारु लघुसमुत्थान वि० झट ऊभुं यतुं (२) लघुहस्त वि० कुशळ; चालाक; निष्णात

लघ्कु ८ उ० अवगणवुं; तुन्छकारवुं

(२) (वर्जनमा) हलकुं करवुं(३)टूंकुं करवुं; ओछुं करवुं (दिवसोनें) लघ्वो स्त्री० नाजुक स्त्री (२) नानी गाडी (३) वि०स्त्री० टुंकी **लज् १,६** आ० शरमाबु; लज्जा पामवी (२) १ प० निंदा करवी (३) १०प० देखावुं; प्रकाशवुं (४)ढांकवुं; संताडवुं लज्ज् ६ आ० लज्जा पामवी; शरमावुं लण्जा स्त्री० लाज; शरम(२) शरमाळ-िनिदनीय लज्जाकर वि० शरमावुं पडे तेवुं – लज्जान्वित वि० शरमाळ; लज्जाळु लज्जारहित वि० वेशरम लज्जालु वि॰ शरमाळ (२) लजामणीनो छोड लज्जावह वि० जुओ 'लज्जाकर' लिजित वि० शरमाळ (२) शरमायेलुं (३) न० शरमावानी चेष्टा के भाव लटभ वि० सुंदर; लावण्यवान लट्वा स्त्री० वाळनी लट व्यभिचारिणी स्त्री लडु, लडुक पु० लाडु लता स्त्री० वेल; वेलो (२) समासने छेडे कोमळ, नाजुक, पातळुं –ए अर्थमां बाहु, भुज वगेरे शब्दो साथे वपराय छे (३) शाखा (४)चाबुकनी दोरी(५) नाजुक स्त्री (६) मोतीनी सेर स्रतागृह पुं०, न० वेलोनो मंडप लताप्रतान पुं० केटलीक वेलमां फुटतो पान विनानो अंकोडो (जे बीजा आधारने वींटळाय छे) लताबेष्टन, लताबेष्टितक न० लता पेठे वींटळावारूपी आलिंगन लतात न० फूल (पांच फूलरूपी लतांतबाण पु० बाणवाळो) कामदेव लितका स्त्री० नानी वेल **रुप् १ प०** बोलवुं; वातचीत करटी

(२) कानमां गुसपुस करवी (३) विलाप करवी लपन न० मों (२) बोलवुं ते लब्ध ('लभ्'नुंभू० कृ०) वि० प्राप्त करेलुं (२) लीधेलुं (३) जोयेलुं (४) न० मेळवेली वस्तु (५) लाभ ; नफो लब्धकाम वि० इच्छेलुं मळचुं होय तेवुं लब्बनामन् वि० यशस्वी लड्धप्रत्यय वि० विश्वास मेळव्यो होय | छूटवाळु **लब्धप्र**सर वि० रुकावट विना फरवानी लब्धप्रसाद वि० मानीतुं लब्धलक्ष वि० जेणे निशान ताक्युं होय तेवुं (२) अस्त्रविद्यामां कुञळ लब्धलक्षण वि० जेने तक मळी होय तेवुं (कंईक करवानी) लब्धलक्ष्य वि० जुओ 'लब्धलक्ष ' लब्धवर्ण वि० विद्वान (२) प्रख्यात लब्धवर्णभाज् वि० विद्वानीनी आदर करनारुं; विद्वानोने सेवनारुं लब्धश्रुत् (-त) वि० बहुश्रुत; विद्वान लब्धावकाश, लब्धावसर वि० जेने तक मळी छे तेवुं (२) जेने (काम करवा) क्षेत्र मळघुं छे तेवुं (३) अवकाशे के फुरसदवाळू लब्बास्पद वि० स्थान मळचुं होय तेवुं लब्बांतर वि॰ तक मळी होय तेवुं (२) प्रवेश मळघो होय तेवुं लब्ध स्त्री० प्राप्ति (२) नफो; लाभ लब्धोदय वि० उत्पन्न थयेलुं; ऊगेलुं; ऊंचुं आवेलुं (२) उन्नति पामेलुं लिक्शिम वि० मेळवेलुं; प्राप्त करेलुं लभ् १ आ० मेळववुं ; पामवुं (२) मालिक होवुं(३)लेबुं; स्वीकारवुं(४)पकडवुं (५) मळवुं; जडवुं (६) जाणवुं; समजवुं (७) शक्तिमान यवुं; परवानगी होवी (कशुं करवानी) –प्रेरक० लिभयति–ते | ले एम करवु: लेवराववुं (२) आपवुं (३) मेळववुं

लम्य वि० प्राप्त करी शकाय तेवुं (२) जडी शके तेवुं (३)उचित;योग्य (४) पहोंचाडवा लायक

लय पुं॰ चोंटवुं ते; जोडाण(२)संताबुं ते (३) पीगळी जवुं ते (४) देखाता बंध थवुं ते; नाश; लोप; प्रलय (५) एकाप्र घ्यान⊶चितन(६)विश्राम; थोभवुं ते (७) विश्रांतिनुं स्थान (८) नृत्य, गीत अने वाजित्रनो मेळ – संबंध (९) संगीतमां कोई स्वर काढवामां लागतो समय (द्रुत, मघ्य, विलंबित) (१०) मुर्छा (११) बाणनी झडपी गति लयन वि० विश्वातिस्थान; घर (२) विश्वांति (३) बळगवुं-चोंटवुं ते लल् १ उ० लीला–कीडा करवी (२) १० उ० के प्रेरक० [लालयति—ते] रमाडवुं; लाड लडाववां (३) इच्छवुं (४) १० उ० [कलयति—ते∫ लालन करवुं (५) इच्छवुं (६) जीभ हलाववी लर्लाडुब न० भगरडो ललत् वि० रमतुं; कीडा करतुं (२) आम तेम फरकतुं-हालतुं-धूमतुं लस्त्रना स्त्री० स्त्री (२) पत्नी (३) स्वच्छंदी स्त्री (४) जीम ललिका स्त्री० नानी अथवा दुःखी स्त्री ललंतिका स्त्री० लांबो हार के माळा ललाट न० कपळि ललाटपट्ट पुं० कपाळनी सपाटी ललाटंतप वि० कपाळने तपावतुं (२) अति त्रास आपनारुं (३) पुंच पूर्व ललाटिका स्त्री० कपाळ उपर पहेराती सोनानी सेर (२) चंदन वगेरेथी करेलुं कपाळ उपरनुं तिलक ललाम वि०संदर; मनोहर(२)कपाळ उपर सफेद डाघ – निशानवाळुं(३) न० कपाळनुं आभूषणः, शणगार (४) ते ते वर्गन् श्रेष्ठ ते (५)कपाळ उपरन् निशान (६) तिलक; टीलुं (७)

निशानी (८) धजा (९) पुं० घोडो (१०) पुं०, न० शणगार ललामन् वि० अलंकार; भूषण (२) ते ते वर्गेनुं श्रेष्ठ ते (३)ध्वजा (४) तिलक लिलत वि० क्रीडा करतुं (२)विलासी (3) सुंदर; रम्य(8) इंग्ट(9) हळवुं; नरम (६) न० कीडा; लीला (७) विलासनी चेष्टा (८) मनोहरता; सुंदरता (९) कोई पण साहजिक चेंष्टा (१०) निर्दोषता; सरळतां ललितपद वि० श्रृंगार रसना शब्दोवाळुं लितललित वि० अति सुंदर ललितलुलित वि० शिथिल छता सुंदर लेलिता स्त्री० सुंदर स्त्री(२)स्वच्छंदी स्त्री (३) दुर्गानुं एक स्वरूप ललिताभिनय वि० सुंदर अभिनयोवाळुं स्रहितार्थ वि० शृंगार रसना शब्दोवाळु ਲਬ पुं॰ चूंटवुं ते(२)छणबुं ते(पाक) (३)भाग; अंश(४)कण; टीपुं; बहु नानुं प्रमाण (समासने अंते) (५) समयनो बहु सूक्ष्म अंश (पलकारानो छठ्ठो भाग) (६) वाळ; ऊन (७) रामना एक पुत्रनुं नाम स्तवण वि० खारुं (२) सुंदर (३) पुं० खारो रस – स्वाद (४) खारो समुद्र (५) मघु राक्षसनो पुत्र (शत्रुध्ने मार्यो हतो) (६) एक नरक (७) न० मीठुं लवणजल पुं० समुद्र लवणस्यति प० (मीठानी इच्छा करवी) लवणार्णव, लक्ष्णालय पुं० समुद्र लवणांतक पुं० शत्रुध्न (लवण राक्षसने भारनार) लवणां**बुरा**शि पुं० समुद्र; महासागर लवणांभस् पं० समुद्र लवणिमन् पं० खारापणुं(२)लावण्य लवन न० कापव्-लणव् ते (२) दातरहं लवम् अ० थोडुं पण लवली स्त्री० एक वेल

लबंक पुं० एक झाड लवंग पुं० लवंगनुं झाडवुं (२) न० लवंग लवित्र न० दातरडुं लश् १० उ०कोई कळा अभ्यासवी लशुन, लशून न० लसण **लष् १,४** प० इच्छवुं ; अभिलाषा करवी (२) १० उ० जुओ 'लश्' लिषत ('लष्'नं भू० कृ०) दि० **अभिल्पित; इच्छे**ल् लस् १ प० चळकयुं; चमकवुं (२) देखावु; नजरे पढवु (३) आलियवुं (४) नाचवुं; कूदवुं -प्रेरक० नाचतां शीखवे एम करवुं (२) जुओ 'छश्' [(सूर्य) स्रसदंशु वि० चमकतां किरणोवाळुं स्रसितं ('स्रस्'नुं भू० कृ०) वि० नाचेलुं; कूदेलुं; नाचतुं; कूदसुं(२) देखायेलु; नजरे पडलु लस्ज् १ आ० [लज्जते] शरमावुं –प्रेरक० शरमावव लहरि(-रो) स्त्री० मोजुं; लहेर लंका स्त्री० रावणनी नगरी लंकाधिपति, लंकानाय, लंकापति पुं० रावण अथवा विभीषण लंकारि पुं० राम **लंके**क पुं० जुओ 'लंकाघिपति'' लंगिमन् पुं० सुंदरता लंघ् १ उ० कूदवुं; उच्छळवुं(२)उपर चडनुं (३) ओळंगर्यु (४) लोघो के उपवासः करनो (५)हुमलो करनो ; साई जबुं; ईजा करकी (६) १० उ० उपर यईने कूदी जबुं; ओळंगबुं (७) उपर चडवुं (८) उल्लंघन करवुं; न मानवुं (९) अनादर करवो (१०) रोकवुं; अटकाववुं(११)हुमलो करवो; पक-ढवुं; ईजा करदी (१२) खावुं (१३) चडियाता थवु; झांखुं पाडी देवुं लंघन न० क्दबुं ते; ओळंगबुं ते; नवुं

ते (२) उपर चडवुं ते (३) हुमलो करबो ते (४) उल्लंघन करवुं ते ; अवगणवुं ते (५)अपमान (६)ईजा (७) उपवास (८) संभोग (९) घोडानी एक चाल **लंब**नीय वि० ओळंगी शकाय तेबुं (२) आगळ नीकळी जवा योग्य(३) अनादर करी शकाय तेवुं संघित ('लंघ्'नुं भू० कृ०) वि० ओळंगेलुं; कूदी जवायेलुं(२)उल्लंबन करायेलुं (३) अनादर करेलुं (४) हुमलो करायेलु; पीडायेलु; प्रस्त लंध्य वि० जुर्जो 'लंघनीय ' लंपट वि० लोभी (२) विषयासक्त (३) पुं० कामी पुरुष; जार लंब् १ आ० लटकवुं; लबडबुं(२) –ने वळगी रहेवुं; -ने आघारे रहेवुं (३) नीचे नमवुं; नीचे जवुं (४) पाछुं पडवुं; विलंब करवो –प्रेरक० लवडाववुं;लटकाववुं(२) लांबु करवुं (जैम के हाथ) (३) जोडबूं लंब वि० लटकतुं; लबहतुं(२) ने वळगेलुं; –नी उपर झझूमतुं (३) मोटुं; लाबुं; ऊंचुं लंबित ('लंब्'नुं भू० कु०) वि०लट-कतुं; लबडतुं (२) नीचे गयेलुं-डुबेलुं (३) -ने आधारे रहेलुं; वळगेलुं लंबोदर वि० मोटा पेटवाळुं (२) पुं• गणेश (३) खाउधरो लंबोदरजननी स्त्री० पार्वती **लंभ** पुं० प्राप्ति (२) मळवुं ते (३) लाभ लंभन न० प्राप्ति (२) पाछु मेळववुं ते लंमनीय वि० मेळवी शकाय तेवु; मेळववा योग्य लंभित वि० मेळवेलुं; प्राप्त करेलुं(२) आपेलु (३) लगाडेलु; उपयोगमां लीघेलुं (४) जन्मेलुं सा २ प० लेवुं; मेळववुं; उगामवुं साकुटिक वि० दंडो के लाकडीयी सज्ज एवं (२) पुं० पहेरेगीर

लाक्षणिक वि० लक्षण जाणनारं(२) सूचक; खास लक्षण सूचवनाहं (३) रुक्षणायी सूचित यतुं (४) गौण लासा स्त्री० लाख (२) अळतो लागुडिक वि० जुओ 'लाकुटिक' लाघव न० रुघुता; अल्पता; नानापणुं (२)अविचारीपणुं (३) तुच्छता (४) अनादर; अवगणना (५) झस्प; वेग (६)चपळता (७) ट्रंकापणुं ; संक्षिप्तता लाधवकारिन् वि० लघुता पमाडनारुं; अनादरने पात्र बनावनारु लाघविन् न० जादुगर **साम** न० वीरणवाळो काजाः पुं० ब० व०, स्त्री० ब० व० भीना के घाणी फोडेला दाणा स्राटाः पुं० द० द० एक प्रदेश अने तेना [एक प्राकृत बोली साटिका, साटी स्त्री० एक शैली (२) स्रात ('स्रा'न् भू० कृ०) वि० लीघेलुं लाभ पुं॰ मळवुं ते; प्राप्ति (२) नफो; फायदो (३) भोगवबुं ते (४) जीतवुं ते (५) समृद्धिः; संपत्ति **स्नासन** न० लाड लडाववां ते स्रालस वि० लालसावाळू (२) आसक्त ; बनुरक्त (३) पुं॰ लालसा लालमा स्त्री० उत्कट इच्छा (२) बाजीजी ; विनंती(३)दोहद(गभिणीनो) लाला स्त्री० लाळ; यूक कालाटिक वि० कपाळ संबंधी; कपाळ उपरनुं (२) नसीबने आधीन लालायते आ॰ (लाळ काढवी) नानित वि॰ लाड लडाबेलुं (२**) इच्छे**लुं (३) न० आनंद; प्रेम क्षालित्य न० सुंदरता; मनोहरता; मधुरता (२) शृंगारवेष्टा **लाव वि०** कापी नाखतुं(२)नाश करतुं लाबक पुं० कापनारो (२) लणनारो (३) एक पंखी; लावरी

लाविषक वि० मीठावाळुं(२)मीठानो वेपार करनाहं (३) लावण्यवान लावण्य न० खारापणुं (२) सौंदर्य लावच्यलक्ष्मी स्त्री० अति सुंदरता रुस्स पुं० नाचवुं – कूदवुं ते स्नासक वि०रमतुं; कूदतुं(२) आम तेम घूमतुं (३) नचावतुं; कुदावतुं लासन न० आम तेम घुमाववुं ते स्नासिक वि० नाचतुं लासिका स्त्री० नाचनारी (२) वेश्या लास्य न० नृत्य; नाच(२)गायन अने वाजित्र सायेनु नृत्य (३) हावभाव-युक्त नृत्य (४) पुं॰ नाचनारो; नट स्रांगस न० हळ लांगलध्यज, लांगलिन् पु० बळराम स्रांग्ल न० पूछहु पटपटावबी ते लांगूलबालन, लांगूलविक्षेप न० पृंछडी लांछन न॰ चिह्न; निशानी (२) नाम (३) कलंक (४) चंद्रनो डाघ सांखित वि॰ चिह्नवाळुं; (२) नामधी ओळखातुं (३) शोभावेलुं; सजावेलुं लांठनी स्त्री० कुलटा लिक्षा स्त्री० ठीस लिस् ६ प० सम्बवुं (२) चीतरवुं (३) स्रोतरवुं; खणवुं [स्रोतरवुं ते लिखन न० लखवूं ते (२) चीतरवं ते (३) लिखित ('लिख्'नुभू०कु०) वि० लखेलुं (२) चीतरेलुं (३) खोतरेलुं; कोतरेलुं(४)न० लखाण; दस्तावेज(५) चित्र(६)ग्रंथ ; निबंध वर्णवायेलं लिखितपठित वि० लखायेल्-वंचायेल लि**स्पा**स्त्री० लीख लिप् ६ उ० [लिपति – ते] लीपयुं (२) लेप करवो (३) सरडवुं; मेलुं करवुं (४) सळगाववु; बाळी नासव् –प्रेरक० दोष ढोळवो (२) खरहव् लिपि स्त्री० लेपवुं ते (२) लखवुं ते; लखाण (३) भाषाना वर्णो लखवानी रीत (४) ल्खाण; दस्तावेज

लिपिक पुं० लहियो लिपिकर पुं० लहियो (२) लेपनारो, घोळनारो, कडियो इ० लिपी स्त्री० जुओ 'लिपि' लिप्त ('लिप्' नुं भू० कृ०) वि० लीपेलुं (२) चोपडेलु; खरडेलुं (३) विष चोपडेलुं (बाण इ०) लिप्सा स्त्री • पाछुं मेळववानी इच्छा (२) लिप्सु वि० लाभनी इच्छावाळुं; मेळववानी इच्छावाळ् लिह् २ उ० चाटवुं (२) चासवुं लिंग न० चिह्न; निशानी; प्रतीक (२) स्रोटुं निशान; ढोंग (३) पुरावो; साबिती (४) हेतु (न्या०) (५) जाति-दर्शक चिह्न (६) शिवनुं प्रतीक (जे पूजाय छे) (७) सूक्ष्म शरीर; लिंग देह (८) अनुमान (९) उपाधि लिंगदेह प्०, लिंगशरीर न० देहथी छुटो पडेलो जीव जेनो आश्रय करीने रहे छे ते सूक्ष्म शरीर (पांच प्राण, पांच भानेदिय, पांच सूक्ष्मभूत, मन अने बुद्धि -ए सत्तरनुं बनेलुं) लिंगिन् वि० चिह्नवाळुं (२) –ना वेशवाळुं;ढोंगी (३) सूक्ष्म शरीरवाळुं (४) पुं० ब्रह्मचारी; ब्राह्मण तपस्वी ली १प०,४ आ० पीगळवुं; ओगळवुं (२) ९ ५०, ४ आ० चोटवुं; वळगवुं (३)४ आ० भेटवुं (४)अढेलीने बेसवुं के सूर्व (५) छुपावुं ; छुपाईने रहेवुं (६) —मा लवलीन के आसक्त यवु (७) अलोप यवु | चार्षल् लोड ('लिह्' नुं भू० कृ०) वि० चाटेलुं; लीन ('ली 'नुं भू० क्र॰)वि॰ चोटेलुं; वळगेलुं (२) छुपायेलुं (३) आराम करतुं; अडेलीने सूतेलुं (४) पीगळेलुं (५) एकरूप थयेलुं; निकट संबंधयी ·जोड़ायेलुं(६)लवलीन(७)लुप्त ययेलुं लीनता स्त्री० --मा खुपाई जवु ते

लुठित लोला स्त्री० कीडा; रमत (२) शृंगार-चेष्टा; विलास (३) सुगमता; सरळता रमतमां के सहेलाईथी थव्ं ते (५) देखाव; मळतापणुं (६) सौंदर्य (७) ढोंग; वेष (८) अनादर; तुच्छकार लीलाकमल न० हाथमां लीला अर्थे राखेलुं कमळ लीलाखेल बि० लीलाथी खेलतुं के फरतूं लीलागार पुं०, न०, लीलागृह, लीलागेह न॰ क्रीडागृह; आनंद-प्रमोदनुं स्थान लोलाचतुर वि० लीलायुक्त हावभावधी सुंदर देखातुं लीलातामरस न० जुओ 'लीलाकमल' लीलाइग्घ वि० प्रयत्न विना-एमतमां ज बाळी नाखेलुं लीलानटन, लीलान्त्य न० आनंद⊸ माटे करेलुं नृत्य; लीलायुक्त नृत्य लीलापद्म न० जुओ 'लीलाकमल' लीलाभरण न० मात्र खुशी खातर पहेरेलुं (किंमत विनानुं) आभूषण लीलायित २० लीला लोलारविंद न० जुओ 'लीलाकमल' लीलावज्ञ स॰ इंद्रना वज्ञ जेवा आकारनुं एक ओजार लीलावती स्त्री० सुंदर-मनोहर स्त्री (२) विलासी स्त्री (३) दुर्गा लीलाशुक पुं ० लीला अर्थे पाळेलो पोपट लोलासाध्य वि० सहेलाईथी सिद्ध करी शकाय तेवुं लीलांग वि० रमणीय अवयवीवाळुं लुट् १, ४ प० लोटबुं; आळोटबुं (२) लूंटवुं (३) १ आ० सामनो करवो लुठ् १ प० मारवुं; ठोकी पाडवूं (२) १ आ० जमीन उपर आळोटवुं (३) १० उ० लूंटवुं (४) ६ प० आळोटवुं; गबंडवुं सुठित वि०आळोटतुं; गबडतुं (२)न० जमीन उपर आळोटवूं ते (घोडानुं)

लुड् १ प० वलोववुं; डलोळवुं **लुप् ४** प० मूंझाबुं (२) लोपाबुं; नाश पामवं(२) ६ उ० तोडी नाखवं;कापी नाखवुं (३) लूंटी जवुं (४) लोपवुं – प्रेरक ० भागवुं; तोडवुं (२) बाद करवुं; अवगणवुं (३) च्युत करवुं लुप्त ('लुप्'नुं० भू० कृ०) वि० भागेलु; तोडेलुं (२) खोई बेठेलुं; विनानुं थयेलुं (३) लोपायेलुं; वपराश विनानुं थई गयेलुं लुप्तपिडोरकिकय वि० पिंडदान, श्राद्ध बगेरे विनानुं थयेलुं लुब्ध ('लुभ्'नुं भू० कृ०) वि० लोभायेलुं; लोभी (२)पुं० शिकारी (३) व्यभिचारी – कामी पुरुष लुब्धक पुं० शिकारी (२) लोभी माणस (३) कामी – व्यभिचारी पुरुष लुभु६ प० मूंझवृबुं (२) ४ प० लोभावु; तीव्रपणे इच्छवुं (३) लोभाववुं: आकर्षवुं लुल् १ प० चकळ-वकळ थवुं; गोळ फरवुं(२)क्षुब्ध करवुं; डखोळवुं (३) दबाववुं; कचरवुं – प्रेरक० हलाववुं **लु**जित ('लुल्'नुंभू० कृ०) वि० कंपावेलुं; आम तेम हलावेलुं (२) स्पर्शायेलुं; डलोळायेलुं(३)वीखरायेलुं (जेम के वाळ) (४) कचरायेलुं; रगदोळायेलुं(५)दबातुः; अडकतुं(६) थाकेलुं; नमी गयेलुं (७) सुंदर लुंच् १ प० तोडवुं; चूंटवुं; खेंची काढवुं **लुंचन** न० खेंची काढवुंते लूँचित (' लुंच् ' नुं भू० कृ०) वि० खेंची काढेलुं; तोडी लीघेलुं लुंद् १ प०, १० उ० लूंटवुं; चोरवुं **लुंटा**क वि० लूंटी लेतुं(२)पुं० लूं<mark>टार</mark>ो लुं**र् १**प० जवुं (२) हलाववुं; इखोळवुं (३)लूंटवूं (४)आळसु थईने बाळोटवुं

लुंठन न० लूंटवं-चोरवं ते (२) सामनो करवों के रोकवुं ते लू ९ उ० कापवुं; तोडवुं; लणवुं(२) तद्दन नाश करवो लूता स्त्री० करोळियो (२) कीडी लूतातंतु पुं० जाळुं (करोळियानुं) लून ('लू′नुंभू०कृ०) वि० कापेलुं; छेदेलुं (२) चूंटेलुं (३) न० पूंछडी लेख पुं० लखाण;दस्तावेज;पत्र(२) देव (३)उझरडो **िचित्रकार** लेखक पुं० लखनार; लहियो (२) लेखन न०लखबुंते(२)वलूरवुंते(३) कोतरवं ते; खोतरवं ते लेखनी स्त्री० लेखण; कलम लेखपट्ट, लेखपत्र न०, लेखपत्रिका स्त्री० लेख; पत्र (२) दस्तावेज लेखप्रभुपु० इंद्र कासद लेखहार,लेखहारिन् पु०पत्र लई जनारो लेखा स्त्री० लीटी; रेखा; पंक्ति(२) लखबु ते; चीतरबु ते (३) चंद्रनी रेखा (४) छाप (५) छेडो; किनार (६) पटो; चास; लींटो लेखानुजीविन् पुं० तरीकेना दास अधिकारवाळों देव लेखिका स्त्री० नानी रेखा लेखिन् वि० खोतरतुं; खणतुं लेखिनी स्त्री० कलम (२) कडछी लेख्य वि० लखवानुं के चीतरवानुं होय तेवुं (२) न० लखवानी कळा (३) लखबुं ते (४) दस्तावेज (५) लेख **लेप** पुं ० लीपवुं-खरडवु-चोपडवुं ते (२) मलम (३) छो; 'प्लास्टर'(४)हाये चोटेलुं भोजन (५) डाघ ; कलंक ; दोष लेप्य वि० लेप करवा योग्य (२) छांदीने बनावेलुं (मूर्ति) लेलिह पुं० साप (२) एक जातनो कीडो लेलिहान पुं० साप (२) शिव लेश पुं० अल्प अंश; रजकण

अल्पता; नानापणुं (३)समयनो एक सूक्ष्म विभाग (वे कठा जेटलो) लेष्ट्रपुं ० ढेफ्रुं लेह पुं० चाटनारो; चाखनारो लेह्य वि॰ चटाय तेवुं; चाटवा योग्य (२) चाटीने खावानी वस्तु (३) अन्न लेंड न० लींडी; लींड् लोक् १ आ० जोवुं (२) १० उ० दीपवुं; प्रकाशवुं (३) जाणवुं (४) निहाळवुं जोक पुं॰ भुवन; विश्वनो विभाग (स्व-र्ग-पृथ्वी --पाताळ ए त्रण; के चौद अथवा सात) (२) भूलोक; पृथ्वी (३) मानवजात (४) प्रजा (५) समुदाय; वर्ग (६) प्रदेश; प्रांत (७) लोकोनो सामान्य व्यवहार (८) निजस्वरूप (९)प्रकाश (१०) भोग्य वस्तु (११) चक्षुरिद्रिय (१२) इंद्रियविषय लोककंटक पुं० दुर्जन मनुष्य लोककांत वि० लोकप्रिय लोकगति स्त्री० माणसोन् वर्तन लोकचारित्र २० लोकोनो व्यवहार लोकतंत्र न० जगतव्यवहारनुं चक्र लोकत्रय न०, लोकत्रयी स्त्री० स्वर्ग-मृत्यु → पाताळ ए त्रण लोक लोकघातु पुं० शिव लोकनाथ पुं० ब्रह्मा (२) विष्णु (३) शिव (४) राजा; सम्राट (५) बुद्ध लोकप पुं० जुओ 'लोकपाल' लोक्पव्ति स्त्री० लोकमां आदर-कीर्ति लोकपथ पुं०, लोकपद्धति स्त्री० जगतनी चालु रीत - व्यवहार लोकपरोञ्ज वि० जगतथी छानुं – अदृस्य लोकपाल पुं० दिक्पाल (२) राजा लोकपितामह पुं० बह्या लोकप्रवाद पुं० लोकवायका लोकभनं वि० लोकने पोषनारं – टकावनार लोकभावन, लोकभाविन् वि० जयतन् हित करनारं – वधारनारं

लोकमार्ग पुं० रूढि लोकयज्ञ पुं० लोकमां नामना माटेनी इच्छा; लोकैषणा लोकपात्रा स्त्री० लोकव्यवहार (२) रूढ़ि (३) संसारयात्रा (४) आजी-विका; निर्वाह लोकरब पुं० लोकवायका; किंवदंती लोकरावण वि० लोकने पीडनारुं लोकवचन न० लोकवायका; किवदंती स्रोकवर्तन न० जगतनो जेनायी निर्वाह ['लोकवचन ' थाय छे ते साधन लोकवाद पुंo, लोकवार्ता स्त्री० जुओ लोकविरुद्ध वि० लोकमतथी ऊलट् लोकविश्रुत वि० प्ररूपात; विश्वविरूपात लोकविसर्गे पुं० जगतनो अंत (२) जगतन् सर्जेन [रूढि(२)गपसप लोकवृत्त न० जगतनो सामान्य व्यवहार; लोकवृतात, लोकव्यवहार पुं० सामान्य रुढि; लोकाचार (२) घटनाओनो कम **लोकश्रुति** स्त्री० किनदंती ; लोकवायका (२) चोतरक प्रसिद्धि **लोकसंग्रह** पुं० आखुं विश्व (२) जगतनुं हित-कल्याण (३)लोकने संतुष्ट करवा ते (४) लोक साथेना संबंधयी मळतो अनुभव लोकसंपन्न वि० व्यावहारिक इहापण्यी लोकसंबाध पुं॰ लोकोनी भीड; लोकनी साक्षी छे तेव अवर-जवर **लोकसाक्षिक** वि० आखुं जगत जेनुं लोकसाक्षिकम् अ० साक्षीओनी समक्ष लोकसाक्षिन् पुं० ब्रह्मा (२) अस्ति लोकसात् अ० लोकोना भला माटे **स्रोकसाधारण** वि० लोकप्रचलित लोकसीमातियतिन् वि० अलौकिक **लोकस्थिति** स्त्री० संसारदशा (२) संसारव्यवहार (३) जगतन् रहेवापणुं (४) सार्वत्रिक नियम लोकहास्य वि० लोकोमां हास्यपात्र एवं

लोकहित वि० जगत के मानवजातने हितकर एवं (२) न० लोकोनं हित **लोकंपुण वि**० लोकव्यापी लोकाचार पुं० प्रचलित आचार – रूढि लोकातिग, लोकातिशय, लोकातीत वि० असामान्य; अलौकिक मात्मा लोकात्मन् पुं० विश्वनो आत्मा; पर-**स्रोकाधिक** वि० जुओं 'स्रोकातिग' लोकानुषह पुं० लोकोनुं कल्याण – हित लोकानुराग पुं० परमार्थवृत्ति लोकापवाद पुं० लोकोमां वगोणुं लोकायत न० चार्वाक मत लोकायतिक पुं० चार्वाक मतनो अनुयायी लोकालोक पुं० लोक - पृथ्वीने किनारे गोळ फरतो आवेलो एक काल्पनिक पर्वत (सूर्य एनी अंदर रहेतो होवाथी तेनी बहार केवळ अंधकार छे) **लोकांतर न० परलो**क लोकांतरित वि० मृत लोकोत्तर वि० असामान्य; असाधारण लोकोपकोशन न० लोकोमां अपकीर्ति फेलाववी ते लोक्य वि० लोकव्यापी (२) प्रचलित; रूढ (३) साचुं (४) उत्तम लोक प्राप्त [कीको (३)काजळ करावनार्र लोचक प्रमुखं माणस (२) आंखनी लोचन न० जोवुं ते (२) आंख लोचनपरुष वि० कदरूपुं **लोचनापात पुं**० कटाक्ष; नजर लोचनांचल पुं० आंखनो खुणो लोड् १५० मूर्ख के गांडा थर्बु –कर्मणि० मूझावुं; गूचावुं लोत्र न० चोरेलुं घन; लूंट लोध्र पुं० एक फूलझाड लोप पुं० लई लेवुं के लूंटी लेवुं ते (२) नाश; हानि (३) लुप्त थई जबुं ते; वपराशमांथी नीकळी जवुं ते (आचार) (३) उल्लंघन; भंग (४) अभाव (५) बाद करवुं – पडतुं मृकवुं ते

लोपामुद्रा स्त्री० अगस्त्य ऋषिनी पत्नी लोपिन वि० हानि-ईजा करतुं (२) रुकावट करतुं (३) ओछं करतुं; घटा**डतुं** लोभ प्ं० लालच; तृष्णा **लोभनीय** वि० लोभावे – आकर्षे तेवुं लोभमोहित वि० लोभथी मूढ बनेलुं लोभविरह पुं० लोभनो अभाव लोमन् पुं० मनुष्य के जानवरना शरीर उपरना बाळ लोमपाद पुं० अंग देशना एक राजानुं लोमवाहिन् वि० पींछांवाळुं लोमश वि० बहु रूंबावाळु (२) पु० एक मुनि (३) घेटो लोमहर्ष पुं० रोमांच लोमहर्षण, लोमहर्षिन् वि० रोमांचकारी लोमहारिन् वि० जुओ 'लोमवाहिन्' (२) बधानो क्रममां संग्रह करनारुं लोल वि० हालतुं; **कं**पतुं; फरफरतुं (२) क्षुब्ध; अस्थिर (३) चंचळ (४) क्षणिकः; क्षणभंगुर (५) उत्सुक (६) लोभी; कामी लोलंब पुं० मोटो काळो भमरो लोला स्त्री ० लक्ष्मी (२) बीजळी (३) जीम (चपळ होवाथी) लोलाक्षि न० चकळ-वकळ थती आंख लोलाक्षिका स्त्री० कचळ-वकळ यती आंखोबाळी स्त्री **स्रोलित** वि० हालतुं; कंपतुं लोलुप वि०अति लोभी; लालच् लोलुपा स्त्री० ललुता लोलुभ वि॰ अति लोभी; लोलुप लोष्ट पुं०,न० माटीनुं ढेफुं; रोडुं लोब्टक पुं० माटीनुं ढेफूं; रोडुं लोष्टघातम् अ० ढेफां-रोडां वडे मारीने लोह वि० रातुं ; रताश पडतुं (२) तांबानुं (३) लोढानुं बनावेलुं (४) पु०, न० तांबुं (५) लोढुं (६) पोलाद (७) कोई पण घातु (८) सोनुं (९) हथियार

लोहबद्ध वि० लोढाना खीलावाळुं;
लोढानी अणीवाळुं
लोहमणि पु० सोनानो गठ्ठो
लोहाप्र न० बाणनुं लोढानुं फळुं
लोहित वि० लाल; रातुं (२) तांबानुं
(३)पु० लाल रंग(४) मंगळ प्रह (५)
एक जातनो मणि; माणेक (६) न०
तांबुं (७) लोही (८) एक जातनुं चंदन
लोहितक वि० रातुं (२) पु० एक जातनो; मणि; माणेक (३) मंगळ प्रह
लोहितकृष्ण वि० काळाश पडतुं लाल
लोहिताश्य पु० अग्नि
लोहितांग पु० मंगळ प्रह
लोहितांग पु० मंगळ प्रह
लोहितांग पु० मंगळ प्रह
लोहितांग पु० मंगळ प्रह

लोहनी स्त्री० रक्तवर्णी स्त्री लोकायतिक पुं० चार्वाक मतनो अनुयायी लोकिक वि० ऐहिक; आ लोकनुं(२) सामान्य; प्राकृत (३) रोजिंदुं; सर्वत्र रूढ (४) भौतिक; दुन्यवी (५) न० कोई पण दुन्यवी आचार – रूढि लोकिकज वि० दुनियानी रीत के व्यव-हार जाणनारुं [जनता लोकिका: पुं० व० व० सामान्य लोको; लोल्य न० लोलुपता; उत्सुकता (२) चंचळता; अस्थिरता लोह वि० लोखंडनुं (२) तांबानुं (३) धातुनुं (४) ताम्र रंगनुं (५) न० लोढुं लौहित्य पुं० बह्मपुत्रा नदी(२)न० रताश लौही स्त्री० देगडी

व

वा अ० — नी पेठे वक्तक्य वि० कहेवा लायक; जणाववा लायक (२) निदवा लायक (३) नीच ; हीन (४) जवाबदार (५) आश्रित (६) न० वातचीत (७) निंदा; ठपकी वक्तव्यता स्त्री० निंदा; ठपको (२) दासपणुं; पराधीनता वक्तु पुं० वक्ता; बोलनारो(२)भाषण करनारो (३) अध्यापक; शिक्षक (४) विद्वान – ज्ञानी – डाह्यो माणस वक्त्रान० मुख; मों वक्त्रपरिस्पंद पुं० वातचीतः; भाषण वक वि० वांकुं(२) आडकतर्ष(३) वांकडियुं (४) अप्रमाणिक; दगाबाज (५)ऋर(६)पुं० मंगळ ग्रह(७)शनि वक्रप्रीव पुं० ऊंट वक्रचंचु पुं० पोपट बक्रतुंड पुं० गणपति (२) पोपट **बऋपुच्छ** पुं० कूतरो वक्रप्लुत वि० आडा अवळा कूदका मारत्

वक्रभणित न० वांकुं बोलवुं ते (२) आडकतरुं कहेवुं ते **बक्तित** वि० वांकुं; बळेलुं **विक्रमन्** पुं० वोकापणुं; वळांक (२) आडकतरं बोलवुं ते (३) बेवचनीपण्; लुच्चाई; बोलीने फरी जवुं ते विकासित स्त्री० कटाक्षनुं वचन (२) वांको बोल (३) एक काव्यालंकार, जेमां काकु के श्लेषथी वाक्यनो जुदो ज अर्थ करवामां आवे छे (काव्य०) **वक्रोष्ठि** स्त्री० मंद हास्य; स्मित **वक्षस्, बक्षःस्थल** न० छाती वक्षोज, वक्षोरुह् (-ह) पुं० स्तन वच् २ प० बोलवुं; कहेवुं(२) वर्णववुं; जणाववुं (३) बोलाववुं (४) अर्थं दर्शा-बबो (५) निंदबु; ठपको आपवो (६) **१**० प० जणाववुं; कहेवुं –प्रेरक ० बोले तेम करवुं; बोलाववुं (२) वांचवुं (३) कहेवुं; जणाववुं **वचन न**० बोलवं – कहेवुं ते (२) वाणी ;

कथन; बोलेलुं ते (३) फरी बोली जबूं ते (४) शास्त्रवाक्य (५)आज्ञा ; हुकम (६)सलाह; उपदेश (७) अर्थ थवो ते (शब्दनो) (८) संस्था (व्या०) **दचनकर** वि० आज्ञानुं पालन करनारुं वचनिक्रया स्त्री० आज्ञापालकपण् वचनगौरव न० आज्ञा प्रत्ये आदर; आज्ञा शिरोधार्य करवी ते वचनपदु वि० बोलवामां होशियार; वक्तृत्वशक्तिवाळु किहेवुं ते वचनशत न० सो वार -- वारंवार वसनसहाय पुं वातचीतनो सोबती वचनस्थित वि० आज्ञापालक वचनावक्षेप पुं० गाळ देवी ते वचनीय वि० कहेवा योग्य(२)ठपको आपवा योग्य (३) न० निंदा; ठपको वचनेस्थित वि० जुओ 'वचनस्थित ' वचनोपन्यास पुं० सूचक आडकतरी रीते सूचववुं ते वचस् न० वाणी; शब्द; वाक्य (२) आज्ञा; हुकम (३) सलाह; उपदेश वचसांपति पुं० बृहस्पति (२) गुरुग्रह बचस्विन् वि० वक्तृत्व शक्तिवाळुं वचःकम पुं वात चीतनो कम; वातचीत वचःप्रवृत्ति स्त्री० बोलवानी कोशिश वचोमार्गातीत वि० शब्दोमां कही शकाय तेथी मोटुं के तेथी पर वचोहर पुं० दूत बजा वि० कठण (२) कठोर (३) पुँ०, न० इंद्रन् आयुध (दधीचिनां हाडकांमांथी बनावेलुं) (४) वज्रा जेवुं कोई पण भेदक हथियार (५) मणि वगेरे वींधवानी हीरानी शारडी (६) हीरो (७) पुं० सैन्यनो एक व्यूह (८) न० पोलाद (९) कठोर भाषा वज्रकीट पुं० लाकडामां के पथ्थरमां काणुं पाडनार एक कीडो **बजा**कील पं० वजा

यज्ञघोष वि० वज्र के वीजळीना कडाका जेवा अवाजवाळुं वजाबर पुं० इंद्र (२) घुवड वजानाभ पुं० कृष्णनुं चक **वद्यप**तन न० वद्यनुं पडवुं ते(२) वीजळी पंडवी ते वज्रपाणि पुं० इंद्र (२) घुवड वजापात पुं जुओ 'वजापतन' व**ञ्रमणि** पुं० हीरो वज्रमय वि॰ अत्यंत कठण (२) कूर; वज्रमुख पुं ० एक जीवडुं(ऊंडुं कोतरनारुं) वजालेप पुं० एक जातनो सखत चोटी जनारो लेप (२) कदी उखेडी न शकाय तेम चोटी जबूं ते वज्रव्यूह पुं० एक जातनो लक्करी व्युह वज्रसंघात वि० वज्रनी कठिनतावाळ् वज्रसार वि० वज्र के हीरा जेवुं कठण वजाकर पुं० हीरानी लाण बजाघात पुं० वछनो के वज्र जेवो प्रहार वज्रायुष पुं० इंद्र बजाशनि पुं० इंद्रनुं वज्र वज्यांक वि० हीराजडित विज्ञिन् पुं० इंद्र (२) घुवड बद् १ प० वींटाळवुं ; वींटवुं (२) १० उ० कहेवुं (३)बॉटवुं; भागपाडवा (४) बांधवुं; जोडवुं –कर्मणि० वटावुं; कचरावुं बट पु॰ वडनुं झाड (२) गोळी (३) वर्तुलाकृति (४) वडु (खावानुं) वटाकर, वटारक पुं० दोरडुं वटी स्त्री० दोरी (२) गोळी वट् पुं० छोकरो (२) ब्रह्मचारी बडिम (-भी) स्त्री० जुओ 'वलिभ' वडवा स्त्री० घोडी (२)दासी (३)वेश्या (४) अश्विनी अप्सरा, जेने घोडीरूपे सूर्यंथी बे अश्विनो रूपी पुत्रो थया हता

वडवाग्नि, वडवानल

रहेलो मनातो अग्नि (दक्षिण ध्रुव

पुं० समुद्रमां

आगळ वडवामुख नामनी बखोलमांथी भभूके छे) **वडवाभर्त् पुं० उच्चै**:श्रवा घोडो वडवामुख पुं० दक्षिण ध्रुव पासे पाताळ लोकमां जवानुं प्रवेशद्वार (२) त्यांथी भभूकतो वडवाग्नि विणिक्कटक पुं० काफलो; संघ विणिग्याम पुं वेपारीओन् मंडळ **अणिग्वृ**त्ति स्त्री० वेपार विणिज् पुं० वेपारी; विणिक विणज्य न०, विणज्या स्त्री० वेपार वत् वि • मालकी, --युक्त होवापणुं वगेरे अर्थो बताववा लगाडातो प्रत्यय (२) अ० --नी पेठे; प्रमाणे --एवो अर्थ बता-बवा नाम के विशेषणने लागे छे **वतंस** पुं० जुओ 'अवतंस '; आभूषण **बतु** अ० 'चूप 'एवा अर्थनो उद्गार बरस पुं० वाछरडुं; पशुनुं बच्चुं (२) दीकरो; बेटो (वहालमां संबोधन) (३) संतान (४) एक देश (उदयन राजानी; कौशांबी तेनी राजधानी) (५)व०व० ते देशना लोको बत्सतर पुं० वाछरडो; जुवान बळद **यत्सतरी** स्त्री० वाछरडी; जुवान गाय (जेणे बच्चांने हजु जन्म नथी आप्यो) बत्सर पुं० वर्ष; साल बरसराज पुं० वत्स देशनो राजा **बत्सरूप** पुं॰ नानुं वाछरडुं **बत्सल** वि० संतान प्रत्ये मायाळु (२) स्नेहाळ (३) न० ममता; बत्सलता वत्सरुयति प०(वात्सल्यभाववाळुं करवुं) वत्सा स्त्री ० वाछरडी (२)नानी छोकरी (वहालमां) वस्था वित्सन्,वित्समन् पुं० बाळपणः, किशोरा-वद् १ प० बोलवुं; कहेवुं (२) जाहेर करव् (३)वर्णवव् (४)विधान करव् (५) दशविवुं (६) अवाज करवो; गावुं (७) आ० प्रकाशवुं (८) प्रावीण्य के प्रामाण्य दाखवव्

–प्रेरक० वगाडवु (वाजित्र) (२) पाठ करवो; बोलवुं **वदत्** वि० बोलतुं; कहेतुं वदन न० मुख; चहेरो **वदनपवन** पुं० श्वास बदनोदर न० जडब् वदान्य वि० वक्तृत्व-शक्तिवाळुं (२) मायाळुपणे बोलनार्ह (३)उदार(४) पुं० उदार माणस वदावद वि० बोलकणुं; वाचाळ **वदि** अ० कृष्णपक्षमां वर्ष्ट १ प० वध करवो ('हर्न्'ना विकल्प तरीके मुख्यत्वे वपराय छे) बघ पुं० मारी नासवृते (२) प्रहार (३) गुणाकार (४) विजेता (५) वधक विधक वि० वध करनारुं; नाश करनारुं (२) पुं० फांसीगरो (३) खूनी वधनिग्रह पुं० देहांतदंड विधस्तंभ पुं० फांसी देवानो मांचडो वधार्थीय वि० वध माटेन् होय तेवुं; कतल माटेनुं (२) वध्य (३) वधक वधु स्त्री० पुत्रवधु (२) जुदान स्त्री वधुटी स्त्री० जुओ 'वधूटी' वधु स्त्री० परणनार कन्या (२) पत्नी (३) पुत्रवधू (४) कोई पण स्त्री के कन्या (५) पोतानायी नानी उंमरना सगानी पत्नी (६) मादा (पशुनी) वधूटशयन पुं० कठेरो; बारी वध्टी स्त्री० युवान स्त्री (२) पुत्रवधू बध्य वि० वध करवा योग्य (२) देहांत-दंडनी शिक्षा पामेलुं (३) पुं० जेनो वध करवानो छे ते (४) शत्रु वध्यभू, वध्यभूमि स्त्री० ज्यां फांसी के शुळी अपाय ते स्थान वध्यमाला स्त्री० देहांतदंड आपवानी होय तेने पहेराववानी माळा बध्यशिला स्त्री० कापी नाखवा मार्थु जेनी उपर रखाय ते शिला (२) कतलखान्

वध्यस्यान न० जुओ 'वघ्यभू' षप्र न०, बधी स्त्री० चामडानी दोरी दन् १प० संमानवुं; आदर करवो (२) मदद करवी (३) अवाज करवी(४) लीन होवुं(५) ८ उ० याचवुं; भागवुं (६) शोषवुं; मेळववा इच्छवुं वन न० जंगल(२)झुंड; समुदाय(३) पाणी (४) निवासस्यान वनकाम वि॰ वननी रुचिवाळुं; वनमां वनग वि० जंगलनुं वतनी वनगण पुं० जंगली हाथी वनगहन न० जंगलनो गीच भाग वनप्रहण न० वनने घेरो घाली अवर-जबर बंध करवो ते वनपाहिन् पुं० वनने घेरीने हाकोटा करनारो (शिकार माटे) वनचर वि० वनमां रहेनारुं-विचरनारुं (२)पुं० अरण्यवासी (३)जंगली प्राणी **वनज्योत्स्ना** स्त्री० एक प्रकारनी फूलवेल वनदेवता स्त्री० धननी अधिष्ठाता देवता दनधारा स्त्री० झाडोनी पंक्ति वनप पुं० वननो रखवाळ वनप्रस्य वि० वानप्रस्य (२)पुं० माळनी ऊंची जमीन उपरन् जंगल वनवहिष पुंठ जंगली मोर वनमाला स्त्री० वननां पुष्पोनी माळा (ढींचण सुधी लटकती) वनमालिन् पु० श्रीकृष्ण वादळ वनमुच् वि० पाणी वरसावत् (२) पुं० वनराजि(-जी) स्त्री० वृक्षोनी पंक्ति के जूथ (२) वननो छांबो प्रदेश(३) वननी पगदंडी वनरह न० कमळ

वनरह न० कमळ वनलता स्त्री० वननी वेली वनवर्तिका स्त्री० बटेर पक्षी वनवास पुं० वनमां वसवुं ते (२) जंगलनुं जीवन (३) वनवासी माणस वनश्वन् पुं० वाघ (२) शियाळ

वनसब् पुं० वनदासी; जंगलनो माणस वनस्य पुं० तपस्वी (२) हरण वनस्पली स्त्री० वननो प्रदेश के भूमि **बनस्पति** पुं० मोटुं जंगलनुं झाड(खास करीने जेने फूल बगर फळ देसे) (२) कोई पण वृक्ष (३) घड (४) थां भलो वनापमा स्त्री० जंगलनो वहेळो वनाक्जिनी स्त्री० पाणीनी अंदर यती कमळनी वेल वनायु पुं० जेना घोडा वसणाय छे तेवो एक प्रदेश (२) पुरूरवानो पुत्र बनायुज पुं० 'वनायु 'प्रदेशनो घोडो (अरबी?) विनमां उजाणी बनाझ वि० पाणी उपर जीवतुं(२)पुं० वनांत पुं० वननो छेडो-किनारो (२) वनप्रदेश भाग वनांतर न० बीजुं वन(२)वननी अंदरनो वनिका स्त्री० उपवन पुजेल् वनित वि० याचेलुं; मागेलुं(२)सेवेलुं; वनिता स्त्री०स्त्री(२)पत्नी(३)प्रिया **धनिष्ण्** वि० याचनारुः; याचतु वनी स्त्री० झाडी वनीयक, वनीयक पुं० मागण; याचक वनेचर वि० वनमां रहेतुं-फरतुं (२)पुं० वनवासी माणस (३) तपस्वी (४) जंगली प्राणी (५) राक्षस वनोपप्लव पुं॰ दावानळ जिंगली प्राणी वनौकस् पुं ० वनवासी (२) तपस्वी (३) वन्य वि० वनने लगतुं;वनमां पेदा थतुं (२) पाळेलुं नहि तेवुं; जंगली (३) लाकडानुं (४)पुं० जंगली प्राणी (५) जंगली छोड (६) वानर (७) न० वननी पेदाश (फळ, फूल इ०) वन्यवृत्ति वि० जंगलना आहारथी जीवत् वन्धा स्त्री० मोट् वन; झाडीओनो समुदाय (२) पूर वन्याध्यम पुं० वानप्रस्थाश्रम **बन्धेतर** वि० जंगली नहि तेव – पाळेलुं

वप् १ उ० वाववुं; रोपवुं(२)फेंकवुं; नाखवुं (पासा) (३)वाळ कातरवा वपन न० वाववुं ते(२)हजामत करवी ते वपा स्त्री० दर; छिद्र (२) कीडीनो राफडो (३) चरबी; मज्जा वपु पुं० शरीर वपुर्गुण पुं० जुओ 'वपु:प्रकर्ष' वपुर्धर वि० मूर्तिमंत;देहधारी (२)संदर वपुष्मत् वि० मूर्तिमंत; देहधारी (२) सुंदर; मनोहर (३) हृष्टपुष्ट (४) अक्षत; नहि भागेलुं (५) देहात्मवादी वपुस् न० शरीर(२)स्वरूप; आकृति (३) सार; तत्त्व (४) सुंदर स्वरूप वपुःप्रकर्ष पुं० सुंदर स्वरूप के आकृति **वप्तृ** पुं०बी वावनारो;खेडूत(२)पिताः (३) हजाम; वाळ कापनारो वप्र पुं०, न० माटीनी दीवाल; कोट(२) तट; किनारो (३) कराड; भेखड; टेकरीनो ढोळाव (४) शिखर (५)पायो (६)खाई(७)ख़ेतर(८)सांढ के हायी भेखड सामे गोथुं मारी घा करे ते वप्रक्रिया, वप्रकोडा स्त्री० किनारा के भेखडमां गोथुं मारी घा करवानी (सांढ, हाथी इ० नी) रमत वप्राभिघात पुं० किनारा के भेखड साथे अयडावुं – अफळावुं ते ' वम् १ प० वमन - ऊलटी करवी (२) बहार काढवुं; फेंकवुं; छोडवुं(तेज, किरण इ० पण) (३) फेंकी देवुं; काढी नाखवुं वमयु पुं० थूंकी काढवुं; काढी नाखवुं (२)हाथी सूढमांथी पाणी बहार काढे ते वमन न० बहार काढवुं ते(२)ऊलटी करवी ते (३) पीडा (४) होम वयन न० वणवुंते कागडो वयस् न० वय (२) जुवानी (३) पंखी(४) वयस्य वि० जुओ 'वय:स्थ' वयस्य वि० समान वयनुं (२) समोवडियुं (३) पुं० भित्र; समोवडियो

वयःप्रमाण न० आयुष्यनी लंबाई के माप वयःस्य वि० जुवान (२) उंमरे पहोंचेलुं (३)सञक्त (४)पुं० मित्र; समोवडियो वयुन न० ज्ञान; डहापण (२) मंदिर (आ: अर्थेमां पुं० पण) (३) विघि; आदेश (४) पद्धति (५) कर्मे; कृत्य वयोदाल वि० उमरमा नानुं वयोवस्था स्त्री० उंमर; उंमरनुं माप **वयोवृद्ध** वि० उंमरमां मोटुं; वृद्ध वर वि॰ उत्तम; श्रेष्ठ (२) –थी वधु सारं(३)पु॰ पसंद करवुं ते (४)पसंदगी (५) वरदान (६) बक्षिस; इनाम; बदलो (७) इच्छा (८) विनंती (९) परणनारो; पति (१०) जमाई वरगात्र वि० सुंदर अंगवाळुं बरट पुं० हंस (२) न० कूंद पूष्प वरदा(न्दी) स्त्री० हंसली (२) पीळी भमरी (करडे छे ते) वरण न० पसंद करवं ते (२) आजीजी करवी ते(३)वींटवुं-आवरवुं ते(४) कन्या पसंद करवी ते (५) पुरोहित वर्गेरेने पूजवा ते (६) अटकाववुं ते (७) पुं० कोट; भीत (८) 'वरुण' वृक्ष (९) कोई पण वृक्ष (१०) इंद्र वरतनु वि० सुंदर अवयववाळ् (२) स्त्री० सुंदर अंगवाळी स्त्री वरत्र न० दोरी वरत्र न०, वरत्रा स्त्री० चामडानो पटो (२) हाथी के घोडानो पटो बरद वि० वरदान आपनारु वरदा स्त्री० एक नदी वरदान न० देव देवी के संते प्रसन्न थई इच्छेलुं आपवुं ते वरदानिक वि० वरदानथी मळेलं **वरपक्ष** पुं० वरनां सगां**सा**गवां वरपुरुष पुं० पुरुषोमां उत्तम वरम् अ० 'वधु सारुं', 'पसंद कराय' -एवो अर्थ बतावे

वररुचि वि० वरदानमां प्रीतिवाळुं (शिव) (२)पुं० पाणिनीय अष्टाध्यायी सूत्र पर वार्तिक करनार एक मुनि (कार्त्यायन); विक्रम के भोजना दरबारनां नव रत्नोमांनो एक;प्राकृत भाषाओनो मुख्य वैयाकरणी वरलक्षण न० सम्नविधिमां आवश्यक बाबत दुर्गा वरवणिनी स्त्री०स्त्री (२)सुंदर स्त्री(३) वरसुरत वि० कामक्रीडानुं रहस्य जाणनार् वरंड पुं॰ समुदाय (२) मों उपरनो स्रील (३) वरंडो; ओसरी (४) माछली पकडवाना आंकडानी दोरी(५)झझूमती दीवाल (६) घासनी गंजी वरंडक वि० विशाळ(२)बीनेलुं; दीन (३) पु० माटीनो टिंबो (४) हाथी उपरनो बेसवानो होदो (५)दीवाल (६) वेदीनो मध्य भाग(७)मों उपरनो खील वरंडी स्त्री० घासनी पूळी वराक वि० विचार्छ; बापडु (२) कम-नसीब (३) हीन; नीच बराट पुं० कोडी(२) दोरडुं(३)बीजकोश वराटक पुं० कोडी (२) कमळनो बीज-कोश (३) पुं०, न० दोरडुं वराटकरजस् पुंज नागकेसरन् झाड वराटिका स्त्री० कोडी(२)तुच्छ दस्तु वरानना स्त्री० सुंदर मुखवाळी स्त्री वरारोह वि॰ सुंदर नितंबवाळुं वरारोहा स्त्री० स्वरूपवती स्त्री (सुंदर नितंबबाळी) वरार्ह वि० वरदानने लायक (२) लायक; आदरणीय (३) मूल्यवान वरासन न० उत्तम आसन – बेठक वराह पुं० डुक्कर; सूबर (२) ए रूपे विष्णुनो त्रीजो अवतार वराहकर्ण पुं० एक जासनुं बाण

(३)कामदेव (४)हाथी (५)न० मार्थु (६) उत्तम अवयव(७)सुंदर स्वरूप वरांगक न० तज; दालचीनी वरांगना स्त्री० सुंदर स्त्री वरिवसितृ वि० पूजनारुं; भक्त वरिवस्यति प० (कृपा करवी) वरिवस्पा स्त्री० सेवा; भक्ति; पूजा वरिष्ठ वि०श्रेष्ठ; उत्तम (२) सीथी वधु विशाळ, मोटुं, पहोळुं, भारे ('उरु'नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) वरीयस् वि० वधु सारुः; वधु पसंद करवा योग्य (' उरु 'नुं तुलनात्मक रूप) वरण पुं० समुद्र तथा पश्चिम दिशानो अघ्यक्ष देव (हाथमां पाश होय छे) वरणात्मज पुं० जमदिनि वरूष न० अथडाय नहि माटे रथने करेलुं कठेरा अंबु रक्षण (२)बस्तर (३)ढाल (४) समुदाय; टोळुं वरूपरास् अ० टोळाबंघ; ढगलाबंघ वरूषिन् वि॰ कवचयुक्त (२) रक्षण माटे करेला कठेरावाळुं (रथ) (३) रक्षतुं (४) सेनाथी घेरायेलुं (५) बाहनमां बेठेलुं (६) पुं० रथ (७) रक्षक वरूपिनी स्त्री० सेना वरेण्य वि० पसंद करवा-इच्छवा योग्य (२) उत्तम; श्रेष्ठ; मुख्य वर्ग पुं विभाग; समूह; समुदाय(२) पक्ष (३) 'स्क्वॅर' (गणित०) वर्गणा स्त्री० समुदाय; जयो वर्गस्य वि० एक पक्षने टेकवतुं वर्गिन् वि० एक वर्गन् ; एक पक्षन्ं(२)पुं० वर्गनो नायक | जोडीदार वर्ग्य वि० एक ज वर्गनुं(२)पुं०सायीदार; वर्चेस् न०तेजः; बळः;वीर्यः;कांति(२) आकृति; स्वरूप (३) विष्टा; मळ वर्वस्क पुं० तेज; वीर्य; कांति वर्चेस्यिन् वि०तेजस्वी;कांतिमान (२) वीयवान; पराक्रमी

वरांग वि०सुंदर अंगवाळुं(२)पुं० विष्णु

वर्ज वि० विनानुं; रहित वर्जंक वि॰ (समासने छेडे) त्यागतुं; छोडतुं (२) विनानुं; रहित वर्जन न० छोडवुं ते; त्यागवुं ते अर्थम् अ० बाद करीने; छोडीने; सिवाय (समासने अंते) बर्जित ('वृज्'न भू०कृ०)वि० त्यागेलुं; छोडेलुं (२) बाद राखेलुं (३) विनानुं वर्ज्यं वि० त्यागदा योग्य; छांडवा योग्य (२) –सिवायनुं वर्ण् १० उ० रंगवुः, चीतरवुं(२)वर्ण-बबुं (३) बस्राणवुं (४) फेलावबुं वर्ण पुं॰ रंग (२) सूरत; देखाव (३) माणसोनो विभाग - जाति (चार वर्ण) (४) जात; प्रकार (५) अक्षर; शब्द (६) प्रशंसा (७) गीतमां वस्तुनी कम (८) ध्वनि; अवाज वर्णंक पुं ० नटनो वेश (२) रंग (चीतरवा माटे) (३) लेप भाटे वपराती कोई पण वस्तु; सुगंधी लेप (४) भाट; चारण (५) वक्ता (६) वर्णे; अक्षर (७) नमूनो (८) न० रंग (९) प्रकरण; विभाग (१०) कूंडाळुं; वर्तुळ वर्णतस् अ० वर्णयी [(२)कलम वर्णतुस्तिका स्त्री० चित्रकारनी पीछी वर्णधर्म पुं० दरेक वर्णनुं पोतानुं कर्तेव्य वर्णन न० चीतरवुं ते (२) वर्णववुं के वर्णवेलुं ते; बयान वर्णना स्त्री० वर्णन (२) प्रशंसा वर्जपरिचय पुं० संगीतमां कुशळता वर्णमाला स्त्री० भाषाना मूळाक्षर वर्णवर्ति, वर्णवर्तिका स्त्री० चितारानी पींछी (२) कलम; लेखणी अर्जविकिया स्त्री० वर्णो सामे वेरभाव वर्णवृत्त न० अक्षरमेळ छंद ('मात्रा वृत्त 'थी भिन्न) वर्णभेष्ठ पुं० ब्राह्मण वर्णसंकर पुं० भिन्न वर्णनां स्त्री पुरुषना

लग्नयी यती वर्णनी भेळसेळ (२)जुदा जुदा रंगोनी मिलावट वर्णावकृष्ट पुं० शूद्र **वर्णावर** वि० वर्णमां हलकुं – ऊतरतुं वर्णाभमाः पुं०ब०व० चार वर्ण अने चार आश्रम विणिका स्त्री० नटनो स्वांग(२)रंग (३) द्याही (४) कलम (५) खडी विकापरिग्रह पुं० पात्रनो स्वांग के भूमिका [(२) चीतरेलुं(३)प्रशंसेलुं **वर्णित** ('वर्ण्'नुं भू०क्व०) वि० वर्णवेलुं **वर्णन्** वि० (समासने अंते) –ना रंगके देखाववाळुं (२) –ज्ञातिनुं; –वर्णनुं (३) पुं० चितारो (४)लहियो (५) ब्रह्म-चारी; विद्यार्थी (६) चारमांथी कोई पण वर्णनो माणस **यॉणिलगिन्** वि० ब्रह्मचारी-विद्यार्थीनो स्वांग के चिह्नो घारण करनार वर्णोदक न० रंगीन पाणी वर्ण्यं वि० वर्णववानुं; प्रस्तुत(२)ूरंग-संबंधी [आजीविका वर्त पुं॰ (मुख्यत्वे समासने छेडे)निर्वाह ; वर्तक वि० जीवतुं; अस्तित्व घरावतुं (२)-मां रुगनीवाळुं; उपासक (३) पुं० बटेर पक्षी (४) घोडानी खरी वर्तन वि० रहेतुं;होतुं(२)पुं वामन; ठींगणो(३)न० होबुं ते; जीववुं ते (४) रहेवुं ते; निवास (५)हालचाल; कर्मं (६) निर्वाह ; आजीविका (७) पगार ; रोजी (८) वेपार; लेवड-देवड (९) गोळो; दडो (१०) रंगवुं — चोपडबुं ते **वर्तमान** वि० जीवतुं; अस्तित्वमां होय तेवुं; समकालीन (२)गोळ फरतुं (३) –मां रहेतुं(४) पुं० वर्तमानकाळ(५) न॰ वर्तमानकाळ (६) हाजरी वर्ति स्त्री० गोळ वींटीने बनावेलुं ते; (२) अंजन–लेप जेवी शृंगारनीं कोई चीजनी गोळी के गोळो (३) दीवानी दिवेट (४) वर्णेला कपडानी दशी

वर्तिका स्त्री० चीतरवानी पींछी (२) दीवानी दिवेट; मसाल उपर वींटेली वाट (३) रंग (४) बटेर पक्षी (मादा) (५) लाकडी वर्तित वि० वींटेलुं; आमळेलुं (२) अस्तित्वमां आणेलुं (३) सिद्ध करेलुं (४) वितावेलुं (समय) वर्तिन् वि० (मुख्यत्वे समासने छेडे) रहेनारुं; रहेतुं(२)जतुं(३)वर्ततुं(४) बाचरतुं (५) पालन करतुं (आज्ञानुं) **भर्ती** स्त्री० जुओ 'वर्ति' [न० कूंडाळुं वर्तुल वि॰ गोळाकार; वर्तुलाकार (२) वर्त्मन् न० रस्तो; मार्ग (२) चीलो; रूढि (३) अवकाश; तक वर्त्सपात पुं मार्गमां वच्चे आवबुं ते (२) मार्गमांथी आडा फंटावुं ते वस्र्यंत् वि० बनवानी के वघवानी तैयारीमां होय तेवुं वर्षक, वर्षकि, वर्षकिन् पुं० सुतार वर्षकी स्त्री० वेश्या बर्षन वि० वधारनारुं (२) न० वधवुं ते (३) कापवुं ते (४) विनाश वर्षमान वि० वयतुं (२)पुं० एक जिल्लो (आजनो बर्दवान) (३) २४ मा जैन तीर्थंकर (४) पु॰, न॰ अमुक आकारनुं पात्र वर्षमानक पुं० एक जातनुं ढांकणा जेवुं पात्र (२) माथे के हाथमां दीवा राखी नाचनार लोकोनो एक वर्ग वर्षमानगृह न० कीडागृह **वर्षित** वि० वधेलुं (२) मोटुं करेलुं (३) कापेलुं (४) भरेलुं विधिष्णु वि० वृद्धि पामतुं; वधतुं बर्धन ० चामडानी पटो (२) चामडुं विभिका, वर्भी स्त्री० चामडानो पटो वर्मन् पुं० क्षत्रियोना नामने लागतो एक शब्द ('चंडवर्मन्') (२) न० कवच; बस्तर (३) छाल

वर्महर वि० बस्तर घारण करवा के युद्धमां कतरवा जेटली उमरनुं वर्षे वि० मुख्य; श्रेष्ठ; प्रधान (धणुं-खरुं समासने अंते) वर्ष पुं०, न० वरसाद (२) कोई पण वस्तुन् वरसादनी पेठे वरसव् ते (बाण, फूल इ०) (३)संबत्सर(४)दुनियानो विभाग-खंड (कुरु, हिरण्मय, रम्यक, इलावृत, हरि, केतुमाल, भद्राश्व, किनर, भारत) (५) भारतवर्ष (६) दिवस (७) निवासस्थान वर्षेगिरि पुं० जुओ 'वर्षेपर्वत ' वर्षेष्न वि० वरसादमांथी रक्षतुं वर्षण न० वरसवृते **বর্তম** ন০ গুরী **वर्षेषर** पुं० वादळुं (२) अंतःपुरनो नपुं-सक रखवाळ के नोकर वर्षपर्वत पुं० दुनियाना जुदा जुदा विभा-गोने जुदा पाडती पर्वतमाळामांनी दरेक (हिमवान्, हेमकूट, निषध, मेरु, चैत्र, कर्णी, शृंगी - ए सात) **वर्षप्रवेग** पुं० वरसादनुं सखत झापटुं वर्षवर पुं० अंतःपुरनो नपुंसक रखवाळ के नोकर वर्षा स्त्री० वरसादनी ऋतु; चोमासुं वर्षाकाल पुं० वर्षाऋतु **वर्षाधोष** (वर्षा+आद्योष) प्रुं० देडको **वर्षामद** (वर्षा+आमद) पुं० मोर **वर्षारा**त्र पुं० चोमासानी रात (२) वर्षाऋतु वर्षावसान न०, वर्षावसाय पुं० शरद **वर्षिष्ठ** वि० ('वृद्ध'नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप)अति वृद्ध(२)बलिष्ठ(३)समृद्ध वर्षीयस् वि० ('वृद्ध'नं तुलनात्मक रूप) वधु मोटुं – वृद्ध – बलवान – अगत्यनुं वर्षुक वि० वरसतुं; पाणी वरसावतुं वर्षीपल पुं० करों (२) एक मीठाई वर्ष्मन् न० देह; शरीर(२)कद; ऊंचाई

(३) सुंदर आकार (४)तळ; सपाटी जेमके पर्वतनां) वर्ह् १ आ० जुओ बर्ह् (२) १० उ० दीपवु; प्रकाशवुं (३) बोलवुं वहं पुं, न० जुओ वहं **वर्हिण** वि०,पुं०, वर्हिन् पुं० जुओ 'बहिण ', 'बहिन् ' विहिस् पुं०, न० जुओ 'बर्हिस् ' वर् १ आ० उतावळे जवुं(२)वळवुं; गोळ फरवुं (३) आसक्त थवुं (४) वधवुं (५) ढांकवुं; ढंकावुं वलक न० सरघस वलक्ष वि० सफोद वलक्षगु पुं० चंद्र वलग्न पु०,न० कमर; केड वलज पुं॰ अनाजनो ढगलो (२) न० खेतर (३) अनाज (४) युद्ध बलजा स्त्री० सुंदर स्त्री वलन न० –तर्फ वळवूं ते (२) गोळ कुंडाळामां फरवुं ते (३) क्षोभ वलना स्त्री० तरफ फरवुं-वळवुं ते (२) चित्रनी आकृतिओ दोरवी ते वलिभ (-भो) स्त्री० छापरानो ढाळ; छापरानुं लाकडानुं छाज (२) धरनी **छेक टोचनी मेडी (३) सौराष्ट्रनी** एक नगरी बस्रय पुं०,न० कडुं; कंकण(२)जाळुं, गूंचळुं (३) परणेली स्त्रीनो कंदोरो (४) वर्तुळ; घेरावो (समासने अंते) (५) गोळ कूंडाळुं करतुं वलियत वि० वींटायेलुं; घेरायेलुं(२) वलयोक्ट ८ उ० कंकणनी पेठे गोळ वींटव् वलंतिका स्त्री० एक चेष्टा -- अभिनय विक्त स्त्री० करचली; करचोली (२) पेट उपरनो वाटो (स्त्रीनी सुंदरतानी निशानी गणाय छे) (३) छाप्रानो टोचनो भाग (ज्यां बे ढाळ भेगा थाय छे)(४) सुगंधी लेप वडे शरीर उपर करेली रेखा (५)चामरनो हाथो

वलित ('वल्' नुं भू० कृ०)वि० वळेलुं; गोळ फरेलुं (२)घेरायेलुं (३)करचली पडेलुं (४) फेंकेलुं; नाखेलुं विलन, विलभ वि० करचलीवाळ् **वली** स्त्री० जुओ 'वलि' वलीक न० छापरानो बहार नीकळतो किनारीनो भाग वलीपलित न० करचली अने घोळा वाळ वलीभृत् वि० वांकडियुं (वाळ) वलीमुख, वलीवदन पुं० वानर बल्क पुं०, न० झाडनी छाल (२) वस्त्र (३) खंड (४) माछलीनुं भींगडुं बल्कल पुं०, न० झाडनी छाल (२) तेनुं बनावेलुं वस्त्र वल्कलिन् वि० छाल आपतुं; छाल यती होय तेवुं (२) वल्कल पहेरनारुं वस्कवासस् न० छालन् बनावेल् वस्त्र वल्ग् १ प० जवुं (२) हलाववुं; कंपाववूं (३) ठेकडो भरवो (४)नाचवु (५) खुश थवुं (६) खावुं (७) बडाश मारवी वल्यक पुं० ठेकडा मारनारो; कूदनारो वल्गन न० ठेकडामारवा – कूदवुंते **बल्गा स्त्री**० लगाम **द्यल्गित** ('वल्ग्'न् भू०कृ०) टेकडो मार्यो होय तेवुं; कूदेलुं(२)नचावेलुं; क्दावेलुं (३) न० घोडानी ठेकडावाळी चाल (४) बडाश मारवी ते बल्गु वि॰ मनोहर; सुंदर (२)मधुर; मीठुं(३)मूल्यवान(४)अ०सुंदर रीते वल्पुनाद वि० मधुर अवाज करतुं बल्गुलिका स्त्री० वंदो(२)कुप्पी (तेलनी) वल्मीक पुं०, न० कीडीनो राफडो (२) पुं० वाल्मीकि मुनि वल्ल पुं० त्रण मुंजा जेटलुं बजन बल्लको स्त्री० वीणा वल्लभ वि०वहालुं;प्रिय(२)प्रियतम; पति (३) मानीतो माणस (४) शुभ लक्षणवाळो घोडो

बल्लभजन पुं० प्रियतमा वल्लभपाल पुं० अश्वपाल; खासदार वल्लभा स्त्री० प्रियतमा; पत्नी बल्लरि(-री) स्त्री० वेळ; लता(२) शाखाओवाळी दांडी वल्लव पुं० गोवाळियो वल्लि स्त्री० वेल (२) पृथ्वी **वल्ली स्त्री० वे**ल **वश् २** प० इच्छवुं (२) प्रकाशवुं वश वि० ताबे;-नी असर के अंकुश हेठळतुं (२)आज्ञापालक (३) मोहित (४)पु०, न० काबू; सत्ता; ताबेदारी बशग वि० बीजानी मरजीने अनुसर-नारुं; वश–ताबे थयेलुं(२) पुं० दास; नोकर वशवतिन् वि० बीजानी मरजीने अनु-वर्शगम् १ प० दश थवुं; ताबे थवुं वशंबद वि० वश - ताबे थयेलुं; -नी असर हेठळ आवेलुं वशा स्त्री ० स्त्री (२) पत्नी (३)कन्या (४) हाथणी (५) वंध्या (स्त्री) विश्वता स्त्री०, विश्वत्व न० वश करवुं ते (२)मोहित करवुं ते (३)बीजाने वश करवानी सिद्धि(४)जात उपर काबू **विश्वन्** वि० समर्थ (२) वश थयेलुं; ताबेदार (३) वासनाओ काबूमां लीघी होय तेवुं णनुं साधन – कारण **बद्यीकरण** न० वश करवुं ते (२)आ**कर्प**-**बक्षीकृ ८ उ० ता**बे करवुं; वश क**र**वुं (२) मोहित करवू थयेलु वशीकृत वि० वश थयेलुं (२) मोहित बश्य वि० वश करी शकाय तेवुं (२) दश करेलुं; वश थयेलुं(३) काबू हेठळनुं; आज्ञापालक (४) पुं० दास; नोकर वश्या स्त्री० आज्ञापालक पत्नी वबर् अ० देवने आहुति आपती वखते बोलातो शब्द (देवनी चतुर्थी साथे) **बषर्कृत** वि० ('वषट्' उच्चार साथै) होमेल्

वस् १प० रहेवुं; वसवाट करवो (२) होवुं; मळी आववुं(३)२ आ० धारण करवुं; पहेरवुं(४)४प० स्थिर होवुं (५)१० प० रहेवुं (६) १० उ० कापवुं; छेदवुं (७)चाहवुं (८) स्वीकार**वुं** (९) १० उ० [वसयति—ते] सुगंधित कर<mark>य</mark>ु वसति (–तो) स्त्री०वास ; निवास (२) घर; निवासस्थान (३) शिबिर (४) रात्रि (ज्यारे पडाद कराय छे) वस्य न० माळो (पंखीओनो) वसन न० वसवुं ते; निवास (२) घर (३) वस्त्रः; (४) कंदोरो (स्त्रीनो) वसनपर्याय पुं० वस्त्र बदलवां ते वसना वि०, स्त्री० (समासमा) वस्त्रधी आच्छादित एवी (२) वींटळायेली वसंत पुं० वसंत ऋतु(चैत्र अने वैशाख) (२)विदूषकन्ं उपनाम (नाटकमां) वसंतबंधु, वसंतयोध पुं ० कामदेव दसंतसख पुं० कामदेव (२) मलयानिल वसंतावतार पुं० वसंत ऋतु बेसवी ते वसंतोत्सव पुं० होळीनो उत्सव वसा स्त्री० मेद; वरबी वसान वि० रहेतुं वसिष्ठ पुं० ते नामना एक ऋषि ; सूर्य-वंशी राजाओना पुरोहित वसु वि० मधुर(२) सूकुं(३) न० धन; समृद्धि (४) रत्न (५) सोनुं (६) पाणी (७) घी (८) पुं० (ब०व०) देवोनो एक वर्ग (आठ छे) (९) किरण (१०) कोणीथी मूठी सुधीनुं माप वसुक पुं० आकडो (२) न० दरियानुं मीठुं वसुदा स्त्री० पृथ्वी वसुदेव पुं० श्रीकृष्णना पिता वसुद्रुम पुं० उद्वंबर वृक्ष वसुधा स्त्री ० पृथ्वी (२) स्वर्ग (३) जमीन वसुघाघर पुं० पर्वत वसुघाधिप पुं० राजा वसुधारा, वसुभारा स्त्री ० कुबेरनी राज-

वसुमत् वि० घनवान वसुमती स्त्री० पृथ्वी वसुरेतस् पुं० अग्नि वसुश्रेष्ठ न० घडतर सोनुं(२)रूपुं वसुषोण पुं० कर्णे **वसुंघरा** स्त्री० पृथ्वी वसूक पुं०, न० जुओ 'वसुक' वसोर्घारा स्त्री० वसुओ माटे घीनी धारा (२) घी होमवानुं पात्र (३) मंदाकिनी (स्वर्गेनी गंगा) वस्तब्यता स्त्री० निवास; रहेठाण वस्ति पुं०,स्त्री० जुओ 'बस्ति ' बस्तु नं पदार्थ; चीज; सत् पदार्थ (२) मालमिलकत (३) सार; तत्त्व (४)घटक द्रव्य (५)नाटक के कथानो विषय; 'प्लॉट' वस्तुतम् अ० वस्तुताए; खरेखर बस्तुपृक्ष पुं ० नायक (नाटक के कथानो) वस्तुरचना स्त्री० वस्तुनी गोठवणी के खिलवणी (नाटक इ० मां) वस्तुवृत्त न० साची बाबतं के बीना (२) सुंदर प्राणी वस्तूपहित वि० योग्य पदार्थने लागु करे-लुं; योग्य पदार्थमां अजमावेलुं **वस्त्य** न० निवासस्थान; घर वस्त्र त० कपडुं; कापड वस्त्रधाविन् वि० वस्त्र शोनारं बस्त्रपरिधान न० वस्त्र पहेरवां ते वस्त्रपूत वि० कपडाथी गाळेलुं वस्त्रोत्कर्षेण न० वस्त्र उतारी नाखवां ते वस्य पुं० धर वस्था स्त्री० अवस्था वस्वोकसारा, वस्वौकसारा स्त्री० इंद्रनी नगरी-अमरावती (२) कुबेरनी नगरी अलका (३) ते बंनेने स्पर्शती नदी बह् १ उ० ऊंचकवुं; वहन करवुं; उपाडी जवुं (२)आगळ घकेलवुं -- लई जवूं(३) लाववुं; लई आववुं(४)धारण करवुं; टेकववुं(५)हरी जवुं(६)परणवूं(७)

मालिक होवुं - पासे होवुं (८)काळजी राखवी (९) अनुभववुं (१०) (अकर्मक अर्थ) समनुं; चालवुं (११) वहेवुं (नदी-नुं) (१२) दावुं (पवननुं) –प्रेरक० ऊंचकाववुं; लेवराववुं(२) हांकवुं ; धकेलवुं (३) उपर थईने जवुं ; पसार थवुं(४)वापरवुं; धारण करवुं वहन न० वहन करवुं -- लई जबुं ते (२) वहेवुं ते (३) बाहन (४) नौका वहनभद्भग पुं० वहाण तूटी जबुंते वहनीय वि० वहन करवा योग्य; लई जवा लायक [(३)प्राप्त ययेलुं वहित वि० वहन करायेलुं(२)विख्यात वहित्र न० वहाण; नौका वह्नि पुं॰ अग्नि (२) जठराग्नि बह्निषौत वि० अग्नि जेवुं शुद्ध बह्निसंस्कार पुं० शबनो अग्निसंस्कार वहिसाक्षिकम् अ० अग्निनी साक्षीए बह्य न० गाडी (२) वाहन; सवासी वंक पुं० नदीनो वांक (२) वळांक बंका स्त्री० जीन के पलाणनी आगळनी ऊभो भाग वंक्षु स्त्री० गंगा नदीनी एक शाखा (२) (पामीरमांथी मीकळती) आमुदरिया नदी; 'ऑकसस' बंग पुं० (ब०व०) बंगाळ देश (२) न० कलाई (३) सीसुं [टोपली वंगेरिका, वंगेरी स्त्री० नेतरनी नानी वंच् १ प० जवुं;पहोचवुं (२) गुपचुप जवुं --प्रेरक० -थी दूर रहेवुं; -थी बची नीकळवुं (२) छेतरवुं (३)-थी रहित करवुं; विनानुं राखवुं **दंचक** वि० लुच्चु; छेतरनार्ह (२) पु० ठग; लुच्चो (३) शियाळ वंचन न०, वंचना स्त्री० ठगवुं – छेतरवुं ते (२) युक्ति; छेतरपिंडी (३) भ्रम (४)-विनानुं करवुं ते;रुकावट करवी के थवी ते | करायल **वंचित** वि० छेतरायेलुं (२) विनानुं

वंचुलक पुं० एक पंस्ती **वंज़ुरू** वि० वांकुं (२) पुं० नेतर; बरु (३) एक फूल (४) अशोक वृक्ष (५) एक पंखी **वंजुलक** पुं० जुओ 'वंचुलक ' **बंट् १** प०, **१०** उ० भाग पाडवा; हिस्सो वहेंचवो बंट वि० बांडु; पूंछडी विनानु (२)वांढुं **बंद् १ आ० ए**कला जवुं वंद वि० वांढुं [(२)स्तुति करवी बंब् १ आ० वंदन करवुं;नमस्कार करवा बंदन न० नमस्कार; प्रणाम (२) स्तुति **वंदनमालिका स्त्री० दरवा**जे लटका-वाती माळा; तोरण स्तुति वंदना स्त्री० नमस्कार; प्रणाम(२) वंदनीय वि० वंदन करवा योग्य बंदरक वि॰ स्तुति करतुं (२) वंदन करतुं; नम्न; विनयी वंदि स्त्री० केंद्र (२) स्त्री केंद्री वंदिन् पुं० बंदी; भाट (२) बंदीवान बंदी स्त्री० जुझो 'वंदि' वंद्य वि० पूज्य; वंदन करवा योग्य(२) [नमेलुं (३) सुंदर प्रशंसापश्**त्र बंघुर** वि० अस्थिर; चंचळ(२)वांकुं; **बंध्य** वि० बांधवा के केद पकडवा लायक (२) जोडवा लायक (३) जेने संतान के फळ न थाय तेवुं | गाय वंध्या स्त्री० वांझणी स्त्री (२)वांझणी बंश पुं ॰ वांस (२) कुळ; पुत्रपुत्रादिनो कम (३)वांसळी (४)समुदाय (सरखी बस्तुओनो) (५) पाटडो (६) गांठ; साधी (वांसमा) वंशकर वि० वंशनी स्थापना करनार्ह (२)वंश चालु राखनारुं(३) पुं० पुत्र **वंशकर्मकृत्** पुं० वांसनुं काम करनारो वंशकृत्य न० वांसळी वगाडवी ते **बंशचर्मकृत्** पुं० वांस साथे चामडानुं काम करनारो **र्वज्ञज** वि० —नावंशमां उत्पन्न थयेलृं

(२) वांसनुं बनेलुं (३) सारा वंशमां जन्मेलुं (४) पुं० वारसदार; संतान **बंशघर** वि० वंशने टकावनारुं–चालु राखनारुं (२) कुटुम्बने पोषनारुं(३) | भूंगळी पु० वारसदार वंशनाडिका, वंशनाडी स्त्री० वांसळी के वंशबाह्य वि० कुटुंबमांथी बहिष्कृत बंशभृत् पु० कुळनो वडो (२) कुळने पोषनारो **बंदाभोज्य** वि० परंपराधी मळेलुं (२) न० यंशपरंपराथी चालती आवेली मिलकत वंशवन न० वांसन् वन वंशवर्षन वि० वंशनी उन्नति करनारं (२) पुं० पुत्र (३) न० वंशनी उन्नति करवानु काम वंशवितति स्त्री० वांसनी झाडी (२) वंश-विस्तार [होबुं ते **वंशसंप**त् स्त्री० ऊंचा कुळनुं – खानदान वंशस्यिति स्त्री० वंश चालु रहेवो ते वंशागत वि० वंशपरंपराथी-वारसामां मळेलुं वंशावली स्त्री० पेढीनाम् वंशी स्त्री० वांसळी **बंश्य** वि०सारा कुळनुं(२) पु०वारस-दार; संतति (ब०व०) (३)पूर्वज (४) कुटुंबनो कोई पण माणस (५) पाटडो वा २ प० फूंकावुं(२) जवुं(३) ४ प० सुकाई जवुं (४) बुझाई जवुं (५) १० उ० खुश थवुं (६) पूजवुं विकल्पे **बा** अरु अथवा(२)वळी(३)पेठे(४) वा—वा अ० कांतो आम के कांतो तेम वाक पुं० वाणी (२) संहिता (वेद) (३) न० बगलाओनो समूह बाकोबाक्य न० तर्कशास्त्र वाक्चपल वि० गमेतेम – अविचार्युं [छुपावीने बोलवुं ते बोलनार **वाक्छल** न० वाणीनुं छळ;साची वात वाक्षट् वि० बोलवामां चतुर एवं

वाक्पारीण वि० वाणीथी पर एवं; वर्णन न करी शकाय तेव वाक्पारुख्य न० कठोर वाणी (२) आक्षेप ; आळ ; बदनक्षी वाक्प्रचोदनात् अ० मौखिक आज्ञा अनुसार; हुकमने कारणे वाक्प्रतोद पु० वाणीरूपी परोणो; परोणानी पेठे भोंकाय तेवुं बोलवुं ते वाक्प्रलाप पुं० ख्ब बोलवुं ते वाक्य न० पूर्ण अर्थे बतावती शब्द-समूह (२) वचन; कथन (३) आजा (४) नियम किहेर्बुते वाक्यभेद पुं० पहेलां कहेलायी जुदुं वाक्यशेष पुं० बोलतां शेष रहेलुं होय ते; अधूरं वाक्य वाक्यसारिथ पुं० आगळ पडीने बोल-नारो; मुख्य बोलनारो **वाक्योपचार** पुं० बोलवुं ते याक्शलाका स्त्री०, याक्शल्य न० वीधे तेवी वाणी वाक्शस्त्र न० शीप वाक्संतक्षण न० कटाक्षवाळी वाणी **क्षागर्थ** पुं० (द्वि० व०) शब्द अने तेनो अर्थ वाणी **बागिस** पुं० तरवारनी पेठे कापे तेवी **वागात्मन्** वि० शब्द के वाणीरूप एवं वागीश पुं० वक्तृत्व-शक्तिवाळो (२) बृहस्पति (३) ब्रह्मा **बागुरा** स्त्री० जाळ; फांदो वागुरिक पुं० पारघी; व्याघ वागुषभ पुं० पंडित ; विद्वान ; वक्ता वाग्जाल न० खाली भारे शब्दो बोलवा ते (कार्य के अमल कर्या विना) बाग्दत्ता स्त्री० वाग्दानथी विवाह कर्या होय तेवी कन्या **बाग्दंड** पुं० ठपको (२) वाणीनो निम्नह बाग्दान न० सगाई; विवाह करवानु वचन आपवुं ते

वाग्दुष्ट पुं० गाळ भांडनारो (२) यथाकाळे जनोई न दीधेलो आहाण वाग्वोष पुं० वाणीमो दोष (न बोलवानुं होय त्यां बोलवुं ते) **वाग्बंधन न०** बोलतुं बंध करवुं ते वाग्मिन् वि० वस्तृत्वशक्तिबाळुं (२) बाचाळ (३) पुं॰ तेवो माणस वाग्वज्र पुं० वद्य जेवी कठोर भाषा वाग्विद् वि० वक्तृत्वशक्तिवाळुं वाग्विभव पुं० भाषा उपरनी काबू; वर्णन करवानी शक्ति वाग्व्यवहार पुं० मोढानी चर्चा **काञ्यापार** पुं० बोलवानी रीत (२) बोलवानो अभ्यास के टेव वाङ्मनस न० वाणी अने मन वाङमय वि॰ वाणी के शब्दनुं बनेलुं(२) वाणी – शब्द संबंधी (३) वाणीयुक्त (४)वक्तृत्व-छटावाळु (५)न० वाणी; भाषा (६) वक्तृत्वछटा **वाङ्मात्र** न० मात्र वाणी के शब्द वाच्स्त्री० वाणी; भाषा (२) शब्द; ध्वनि (३) वचन; खातरी (४) सरस्वती देवी वाचक वि० बोलतुं; कहेतुं; खुलासो करतुं (२) अर्थे दर्शावतुं (३) पुं० बोलनारो (४) बांचनारो (५) संदेशो लई जनारो बोलवु ते वाचन न० वांचवुंते (२) कहेबुंते; वाचस्पति पुं० बृहस्पति (२) वेद वाचस्पत्य न० भाषण; वक्तृत्वछटा-वाळुं कथन मौन रहेनारुं वाचंयम वि० जीभ पकडी राखनाएं; वाचा स्त्री० वाणी; बोली (२) शास्त्र-वाक्य (३) शपथ वाचाट वि० वातोडियं; वधारे पडती अथवा नकामी वातो कर्या करनारुं (२) बडाश मारनारुं बाचाल वि० अवाज करतुं; घोंघाट

करतुं (२) वातोडियुं (३) बडाश िकया मारनारु वाचालना स्त्री० वाचाळ बनाववानी वाचासहाय पुं० वातो करीने आनंद पामी शकाय तेवी सायी - सोबती वाचिक वि० वाचाने लगतुं शाब्दिक; मोढानुं (३) पुं० वक्तृत्व-छटावाळुं भाषणं (४) न० मोंए कहेवरावेलो संदेश वाचोय्वित वि० बोलवामां कुशळ एवं (२) स्त्री० बोलछा; भाषण (३) चतुराईभरी वातचीत वाच्य वि० जेने कहेवानुं के संबोधवानुं छे तेवुं; कहेवा योग्य(२)शब्द वडे सीधुं कहेवायेलुं (लक्ष्य के व्यंग्य नहि तेवु) (३) निंदा करवा योग्य;ठपको आपवा योग्य (४) न० निदा ; ठपको (५)शब्दनो अभिधाशनितयी नीकळतो अर्थ वाच्यता स्त्री०, वाच्यत्व न० निदा; ठपको (२) अपकीर्ति बाज पुं० पांख (२) पींछुं (३) बाणनुं पींछुं (४) न० घी (५) अन्न वाजसनि पुं० सूर्य (२) अन्नदासा वाजसनेयिन् पुं० याज्ञवल्क्य बाजिन् वि० वेगीलुं; झडपीं (२) मजबूत (३) पांखवाळुं (४) **पुं०** घोडो (५) सूर्य (६) पंसी व।जिभू, वाजिभूमि स्त्री० ज्यां घोडा बहु होय तेवी जगा धाजिमेध पुं० अश्वमेध यज्ञ बाजीकरण न० कामभोगनी शक्ति वधारनार औषध के प्रयोग वाट पुं०, न० वाडो; वाड के भींतथी घरेली जगा (२) वाडी (३) जिल्लो बाटक पुं० जुओ 'वाटिका' **बाटघान** पुं० जमीनदार बाटिका स्त्री० वाडी; उपवन (२) घरथाळनी जमीन

बाडव पुं० ब्राह्मण (२) वडवाग्नि व्याण पुं० अवाज (२) बाण (३) सो तारवाळी वीणा वाणिज, वाणिजिक पुं० वेपारी वाणिज्य न०, वाणिज्या स्त्री० वेपार वाणिनी स्त्री० चतुर – तरकटी स्त्री (२) नटी; नाचनारी (३) स्वच्छंदी अने मदमत्त स्त्री वाणी स्त्री० बोली; भाषा (२) बोल-वानी शक्ति (३) अवाज (४) ग्रंथ (५) स्तुति (६) सरस्वती देवी -बात वि० फूंकायेलुं; फूंकेलुं (२) पुं० वायु; पवन (३) शरीरनी त्रण धातुमांनी एक - वायु (३) संधिवा (४) **देवफा** के धृष्ट गार वातिकन् वि० संधिवावाळुं वातपट पुं० सढ वातात्मज पुं० हनुमान (२) भीम वातायन पुं० घोडो (२) न० बारी; हवा माटेनुं बाकुं (३) झरूखो वातायमान वि० पवननी पेठे दोडत् बातालि (-ली) स्त्री० वंटोळियो बाताञ्च पुं० पवनवेगी घोडो वाताहति स्त्री० पवननी तीव सपाटी वातिक वि० पवनना तोफानवाळुं (२) संधिवाबाळुं (३) गाँडुं (४) पुं वातव्याधियी थयेली ताव (५) खुशामतियो (६) एक देवयोनि वातुल, वातूल विक वातव्याधिवाळ् $(\bar{\lambda})$ गांडु $(\bar{\lambda})$ बडाईखोर $(\bar{\lambda})$ पु॰ पवननो वंटोळ **वात्या स्त्री०** पवननुं तोफान बात्सल्य न० संतान प्रत्येनु बहाल वात्सस्यवंधिन् वि० संतान प्रत्ये ममता के वहाल देखाडतुं वात्स्यायन पुं० न्यायभाष्यना कर्तान् नाम (२) कामसूत्रना कर्तानुं नाम बाद पुं० बोलवुं ते; वातचीत करबी

ते (२) बाणी; बातचीत (३) विधान; कथन (४) अहेवाल (५) चर्चा; यिवाद (६) जबाव (७) विवरण; खुलासो (८) सिद्धांत वादक पुं ० वक्ता(२)वाजित्र वगाडनारो वादग्रस्त वि० चर्चास्पद वादचंचु वि० हाजरजवाबी वादत्र न० वाजित्र वगाडवुं ते (२) पुं० **िस्तुतियाठक** वाजित्र वगाडनारो वादिक पुं० जादुगर;मदारी(२)भाट; बादित्र न०वाद्य; वार्जित्र(२)वार्जित्र उपर बगाडेलुं संगीत वादिन वि० बोलनाहं; वातचीत कर-नारुं (२) वाद-विवाद करनारुं (३) कहेवातुं; --ने नामे ओळखातुं (४) मनोरंजन थाय तेवी रीते बोलनारं -वात करनारुं (५) पुं० बोलनारो (६) वाद-विवाद करनारो (७) उपदेशक (८) समजावनारो वाद्य न० वाजित्र (२) वाद्य-ध्वनि वाध्नीणस पुं० गेंडो वान ('वा'तथा 'वै' नुं भू० कृ०) वि० ऊडी गयेलुं; उडावायेलुं(२) (पवन-थी) सुकायेलुं वान वि० वनन्; वन संबंधी वानप्रस्थ पु० त्रीजा आश्रममा आवेलो; बानप्रस्थाश्रमी (२) तपस्वी बानर पुं० वांदरो **वानरी स्त्री०** बांदरी वानरेंद्र पुं० सुग्रीव के हनुमान वानस्पत्य वि० लाकडानुं (२) झाड नीचे | एक देश करेलुं (यज्ञ) वानायु पुं० हिंदनी वायव्ये आवेलो बानायुज पुं० वानायु देशनो घोडो वानीर पुं० एक जातनुं नेतर – बर वानीरक पुं मुंज घास वानेय वि० वनमा थतु के रहेतु (२) प्राणी संबंधी

बान्य वि० वननुं; वन संबंधी वान्या स्त्री० वन-उपवननुं झुंड बाप पुं•्वाबबुंते (२) वणबुंते (३) मूंडवृंते वापि, वापिका स्त्री० वाव; **बापिविस्तीर्ण** न० वाव जेवा आकारनुं बाकुं (भीतमां चोरे पाडेलु) वापी स्त्री० जुओ 'वापि' वाम वि० डाब्रुं (२) डाबी वाजुए आवेलुं (३) ऊलटुं; विरुद्ध; प्रति-कूळ (४) हीन; अधम (५) सुंदर; मनोहर (६) पुं० डाबो हाथ (७) शिव (८) न० दुर्भाग्य (९) धन; मिलकत (१०) सुंदर वस्तु वामक वि० डाबुं(२) ऊलटुं; प्रतिकूळ (३)पुं० एक मिश्र जाति । तरफथी वामतस् अ० डाबी बाजुए (२) डाबी वामदृश् स्त्री० (सुंदर आंखोवाळी)स्त्री वामन वि० ठींगणुं (२) नानुं; टूकुं (३) नम्र; नमेलुं (४) हीन; अधम (५) पुं० ठींगणी माणस (६) विष्णुनो पांचमो अवतार (बलिराजा-ने नमाववा माटे थयेलो) वामनयना स्त्री० जुओ 'वामदृश्' **बामनिका** स्त्री० ठीगणी – वामन स्त्री वामनी वि० संपत्ति लावनारुं बामनीकृत वि० ठींगण बनावेलुं (२) दवावी दीघेलुं वामभ्र स्त्री० सुंदर आंखोवाळी स्त्री बाममार्ग पुं० तंत्रोक्त-पंच 'मकार' नी साधनावाळी मार्ग बामलूर पुं० कीडीनो राफडो **बामलोचना** स्त्री० सुंदर आंखोबाळी स्त्री वामशील वि० वक्ष स्वभावनुं (२) पुं० कामदेव वामस्वभाव वि० उमदा चारित्रवाळुं **वामा** स्त्री० स्त्री(२)सुंदर स्त्री वामाचार पुं० जुओ 'वाममार्ग'

वामांगी स्त्री० सुंदर स्त्री बामी स्त्री० घोडी (२) हाथणी (३) शियाळवी (४) गंधेडी वामेतर वि० जमणुं स्त्री बामोर (-रू) स्त्री० सुंदर जंघावाळी वाम्य न० उच्छृंखलता; उद्दंडता वायक पुं०ढगलो; समूह (२) वणकर बायन, वायनक न० देव-न्नाह्मणने उत्सव के पारणांने प्रसंगे अपाती मिष्टान्न वगेरेनी भेट वायव वि० वाय्नुं; वाय् संबंधी **धायवी** स्त्री० वायव्य दिशा वायवीय, वायव्य वि० वायुनुं; वायु संबंधी; बायुने लगतुं वायव्या स्त्री ० उत्तर-पश्चिम ख्णो वायस पुं० कागडी (२) न० कागडा-ओनी समुदाय वायु पुं०पवन; वात (२) वायुदेवता (३) वातरोग (४) शरीरना पांच | गांडु वायुमांनो दरेक वायुग्नस्त वि० वातव्याधिवाळुं (२) **वायुनिघ्न** वि० गांडुं **बायुपुत्र** पुं० हनुमान (२) भीम बायुभक्ष पुं० वायु भक्षण करीने जीव-नारो – तपस्वी (२) सर्प; साप बायुरुग्ण वि० पवन वडे तूटी पडेलुं बार्न० पाणी; जळ वार पुं० ढांकण (२) समुदाय; मोटी संख्या (३) ढगलो (४) टोळुं (५) अठबाडियानो दिवस (६) वारो (७) वार; वस्तत (ब॰ व॰मा 'घणी वार' अर्थथाय) (८) तक; प्रसंग (९) दरवाजो (१०) नदीनो सामो किनारो वारक वि० रोकनारुं; अटकावनारुं (२) पुं० वारो (३) घोडो वारण वि० निवारनारुं; रोकनारुं (२) न ० रोकवुं के निवारवुं ते (३) विघ्न (४) सामनो (५) कमाड (६)

पुं० हाथी (७) हाथीनी सूंढ (८) अंकुश (हाथी माटेनो) (९) कवच **वारणपुरुष** पुं० एक जातनो छोड **वारणसाह्वय** न० हस्तिनापुर वारनारी स्त्री० वेदया; गणिका वारबाण पुं०, न० कवच; बस्तर **वारमुख्या** स्त्री ० मुख्य वेश्या वारियतृ पुं० पति; घणी वारयुवति स्त्री० गणिका; वेश्या वारयोषित्, वारवधू, वारवनिता,वार-विलासिनी स्त्री० वेश्या;गणिका वारंवारम्, वारंवारेण अ० फरी फरी; वारे वारे; पुन:पुन: बाराणसो स्त्री० काशी; बनारस **बाराशि** (वार्+राशि) पुं० समुद्र **बाराह** वि० वराहने लगतुं; वराहनुं (२) पुं० डुक्कर; भूंड वाराहकल्प पुं० अत्यारनो कल्प (ब्रह्मना आयुष्यना बीजा अर्धनो पहेलो दिवस) बारांगना स्त्री० वेश्या; गणिका वारांनिधि पुं० समुद्र बारि न० पाणी (२) स्त्री० हाथीने वांधवानुं दोरडुं(३)हाथीने पकडवा तैयार करेलो खाडो **वारिगर्भ** पुं० वादळ बारिचर वि० जलचर (२)पुं० तेवुं प्राणी वारिज वि० पाणीमां उत्पन्न थयेलुं (२) पुं० शंख (३) न० कमळ वारित वि० रोकेलुं; अटकावेलुं; वारेलुं (२) रक्षेलुं; बचावेलुं वारिद पुं० वादळ; मेघ (२) पूर्वजोने जलांजलि अर्पनारो वारिधर पुं० वादळ वारिधि पुं०समुद्र वारिपय पुं०, न० दरियाई मुसाफरी वारिमुच पुं० मेघ; वादळ वारियंत्र न० पाणी काढवानी रेंट वारिराज्ञि पुं० समुद्र(२)सरोवर वारिरुह न० कमळ बारिवाह, बारिवाहन पु० मेघ वारी स्त्री० जुओ 'वारि' स्त्री० वारीट पुं० हाथी वारीश पुं० समुद्र (२) विष्णु वारण वि० वरुणदेवनुं; वरुण संबंधी (२) वरुणने अपित एवं (३)पाणीन् ; पाणीमान् (४) पश्चिम दिशान् (५) न०पाणी (६) शतभिषंज् नक्षत्र (७) पुं०, न० पश्चिम दिशा **बार्खण** पुं० अगस्त्य मुनि(२)भृगु बारणी स्त्री० पश्चिम दिशा(२)मदिरा वारुण्य वि० वारुणी-मदिरा संबंधी वार्क्ष वि० झाडनुं; झाडनुं बनेलुं(२) झाडनी छालनुं बनेलुं (३) न० जंगल वार्ता स्त्री ० जओ 'वार्त्ता' **धार्त** वि० नीरोगी(२)असार(३)न० आरोग्य;क्षेम(४)कुशळता **वार्ता** स्त्री० रहेवुं ते(२)समाचार;खबर (३) आजीविका; धंधो (४) खेती (वैश्यनो धंधो) वाहकः, कासद वार्त्तानुकर्षक पुं० जासूस (२) संदेश-वार्त्तामात्र न० मात्र ऊडती वात (२) उपरचोटियुं ज्ञान वार्त्तावह पुं० दूत;कासद [समाचार बार्साव्यतिकर पुं० किवदंती (२) खराब वार्त्ताहर पुं० दूत;कासद कातिक वि० समाचारने लगतुं (२) विवरणरूप एवं (३) पुं० जासूस (४)वैश्य;वेपारी (५) न० कहेवायेल -- नहीं कहेवायेल -- अधूरा कहेवायेल अर्थनुं विवरण करनार ग्रंथ वार्त्रध्न पु० अर्जुन समुदाय बार्द्धक न० वृद्धावस्था(२)घरडाओनी बार्द्धक्य न० घडपण वार्द्ध, वार्द्धविक पुं० व्याजसीर **वाधि** पुं० महासागर [डानी दोरी बार्झ न०, बार्झी स्त्री० वाधर; चाम- **वार्मुच्**पुं० मेघ; वादळ वार्य वि॰ पसंद करवानुं (२) मूल्य-वान (३) पुं० दीवास्ट;कोट(४) न० वर;वरदान(५)(ब०व०) मिलकत वार्वाह पुं० मेघ; वादळ वार्षिक वि० वर्षा ऋतुनुं(२)दर वरसे थतुं(३)एक वरस टकी रहेनारुं वार्षिको स्त्री० आखुवरस जेनां पाणी वहे छे तेवी नदी **बाब्पेंग्र** पुं ० वृष्णिनो वंशज (२)श्रीकृष्ण बालखिल्य पुं० अंगुठाना कदना ६०,००० देवताओ (ब्रह्माना शरीर-मांथी उत्पन्न थयेला तथा सूर्यना रथनी आगळ जता मनाय छे) **बालि**ष पु० वाळवाळ पुछडु वालि पुं० वानरोनो राजा; सुग्रीवनो मोटो भाई बालुका स्त्री० रेती (२) चूर्ण वार्त्मिकी, वाल्मीक, वाल्मीकि पुं० रामायणना रचनार ऋषि वाल्लभ्य न० वल्लभ – प्रिय होवापणुं वाव अ० आगाउना शब्द उपर भार मुकवा वपरातो प्रत्यय **चाबदुक** वि० वातोडियु; वाचाळ वादात वि० प्रिय; मानीतुं बाबाता स्त्री० मानीती राणी(शूद्र वर्गनी बाबत ४ आ० पसंद करवं वार्घ ४ आ० बूम पाडवी; चीस पाडवी (२) गुजारव करवो; कूजवुं (पक्षी ओए) (३) बोलाववुं बाज्ञक वि० बूम पाडतुं; गाजतुं वाशित न० पक्षीओनी चीस - बूम (२)बोलाववुं ते | पत्नी वाज्ञिता स्त्री० हाथणी (२) स्त्री (३) बाक्षी स्त्री० फरसी – भालो वगेरे जेंबुं हथियार (२) अवाज; वाणी वाष्प पुं०, न० जुओ 'बाष्प ' बास् १० उ० सुवासित करवं (२)

मसालावाळु करवु; आथवुं (३) ४ आ० जुओ 'बार्ग्' बास पु० सुगंघ; गंघ (२) निवास; रहेठाण (३) घर (४) वस्त्र वासक वि० सुगंधित करनार्घ (२) वसावनारुं (३) पुं० सुगंध (४) न० कपडां; वस्त्र वासकसज्जा स्त्री० मुलाकाते आवनार प्रियतमने मळवा सज्ज थई रहेली [ओरडो स्त्री (नायिका) बासका स्त्री० निवासस्थान (२) सूवानी बासगृह न० अंदरनो ओरडो (२) सूवानो ओरडो; शयनगृह वासतांबूल न० सुगंधी पदार्थीवाळुं पान वासतेय वि० रहेवा योग्य बासतेयी स्त्री० रात (२) घर वासन न० सुवासित करवुं ते (२) रहेवुं ते (३) निवासस्थान (४) पेटी-करंडियो-वासण इ०(५) कपडां; वस्त्र (६) ढांकण वासना स्त्री० स्मृतिमांथी प्राप्त थतुं ज्ञान (२) पूर्वे करेलां सारां नरसां कर्मोनो रहेतो संस्कार (३) कल्पना (४) अज्ञान; खोटो ख्याल (५) इच्छा; अपेक्षा; वलण (६) गमवुं ते; रुचि (७) सुगंधित करवुं ते बासपर्यंग प्० रहेटाण वदलवुं ते वासभवन न० निवासस्थान; घर बासयष्टि स्त्री० पाळेला पंखीने बेसवा माटेनी लाकडी के थंभ वासयोग पुं० अबील [वारो बासर पुंठ, न० दिवस; वार (२) बासरमणि पुं० सूर्य वासरसंग पुं प्रभात ्षुं० इंद्र बासव वि० वसुओ संबंधी (२)इंद्रनुं(३) बासबदत्ता स्त्री० उज्जयिनीना राजानी पुत्री; वत्सराज उदयननी पत्नी वासवदिश् स्त्री० पूर्वदिशा

बासवानुज पुं० विष्णु; श्रीकृष्ण वासवि पुं० इंद्रनो पुत्र जयंत (२)अर्जुन (३) एक वानरनुं नाम वासवी स्त्री० व्यासनी माता **बासवेय** पुंच व्यास वासवेश्मन् न० जुओ 'वासगृह' वासस् न० वस्त्र; कपडां (२)पडदो वासंत वि० वसंतऋतुनुं; वसंत ऋतुमां थतुं (२) युवान (३) काळजीवाळुं; स्रंतीलुं (४) पुं० मलयानिल वासंतिक वि॰ वसंत ऋतुनुं (२) पुं॰ विदूषक (३) नट थासंती स्त्री० एक फूलवेल (सुगंधी फूलवाळी) (२) एक वसंतोत्सव वासंतीपूजा स्त्री० चैत्रमासमां थती दुर्गानी पूजा वासागार न० जुओ 'वासगृह' वासि पु०, स्त्री० फरसी-वांसलो बासित ('बास्' नुभू० कृ०) वि० सुगंधित करेलुं (२) आथेलुं; मसालो चडावेलुं (३) वस्त्रो पहेरेलुं (४) वसवाट करायेलुं (५) स्वच्छ करेलुं (६) न० पक्षीओनो कलरव वासिता स्त्री० जुओ 'वाशिता' वासिष्ठ वि० वसिष्ठनुं वासिष्ठी स्त्री० उत्तरदिशा (२)गोमती वासी स्त्री० जुओ 'वाशी' वासुकि, वासुकेय पुं० सर्पोनो राजा **बासुदेव** पुं० (वसुदेवनो वंशज)श्रीकृष्ण (२) कपिल ऋषि वासू स्त्री० कन्या; जुवान छोकरी (मुख्यत्वे नाटकमां वपराय छे) वास्तव वि० वास्तविक; खर्रु **बास्तवा** स्त्री० प्रभात बास्तविक वि० साचुं; खरुं बास्तब्य वि० रहेतुं; वसतुं; वतनी (२) रहेवा योग्य (३) पु० रहेवासी निवासी (४) न० निवासस्थान; घर

वाहलिक वाहलीक पुं० एक देश

(आजन् बल्ख) (२) ते देशनो घोडो

वास्तु पुं०, न० घर बंधायुं के बांधवानुं होय ते भूमि (२) घर; रहेठाण वास्तुकर्म न० मकान बांधवानी विद्या वास्य वि० ढांकवा योग्य (२) वसा-ववा योग्य (३) पुं०, न० फरसी वाह् १ आ० प्रयत्न करवो बाह वि० वहन करनारुं (समासने अंते) (२) पुं० ऊंचकनारो (३) भार वहन करनार प्राणी (४) घोडो (५) आखलो; सांढ (६) पाडो (७) वाहन (९) प्राप्त करवुं ते (१०) दश कुंभ के चार भार जेटलुं माप वाहक वि० वहन करनार्ह; अंचक-नारुं (२) पुं० हमाल (३) घोडे-सवार (४) बाहन हांकनारो बाहन न० ऊंचकवुं ते; वहन करवुं ते (२) हांकवुं ते (जेम के घोडाने) (३) सवारी माटे के भार खेंचवा वपरातुं गाडी बगैरे साधन (४) ते माटे वपरातुं प्राणी (५) हलेसुं वाहनप पुं० घोडा वगेरे प्राणीओने संभाळनारो; खासदार बाहना स्त्री० सेना **बाह्यान** वि० हांकनारुं (घोडाने) वाहवाह पुं० घोडेसवारी **वाहिन्** वि० वहन करनारुं (२) पुं**० रथ** वाहिनी स्त्री० सेना (२) ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोडा अने ४०५ पायदळनो बनेलो सैन्य-विभाग (३) (४) वळावा तरीके मोकलाती टुकडी बाहिनीपति पुं सेनापति (२) समुद्र वाहीक वि० अधर्मी वर्तनवाळुं(२)पुं० (ब॰ ब॰) पंजाबनी एक तिस्कृत जाति (३) वळद बिळद संबंधी बाहेयिक वि० धाहीक लोक संबंधी (२) बाह्य वि० वहन करायेलुं; खेंचायेलुं (२)पुं०(बळद वगेरे)बोजो खेंचनार प्राणी (३) न० गाडी ; गाडुं

(३) न० हींग वांछ् १ प० वांछना राखवी; इच्छवुं **वांछा** स्त्री० वांछना; इच्छा ষাভিনে ('বাভ্'নুমু৹ ছঃ৹) বি৹ वांछेलुं; इच्छेलुं (२) न० वांछना वांत ('वम्' नुभू० कृ०) वि० वमन करेलुं; ओकेलुं (२) बहार काढेलुं नीकळेलुं (३) नाखी दीधेलुं; पडी गयेलुं वांतीकृ ८ उ० ओकी नांखवं; तजी वि अ० छूटापणुं, ऊलटापणुं, विभाग, विशेषता, व्यवस्था, गोठवणी, विरोध, दूर लई जबुं, रहित करवुं, विचारणा, गाढपणुं वगेरे अर्थ बताववा नाम तथा कियापदने लागतो पूर्वग (२) नाम तथा विशेषणने लोगी अभाव – रहितता, तीव्रता, मोटापणुं, विविधता, तफावत, ऊलटापणु – विरोध, फेरफार, अघटितता वगेरे अर्थ बतावे वि पुं०, स्त्री० पक्षी (२) घोडो विक वि० जळरहित (२) सुख विनानुं विकच वि० खीलेलुं; ऊघडेलुं (कमळ इ०) (२) दीखरायेलुं (३) वाळ विनान् (४) प्रगट (५) उज्ज्वळ **विकचित** वि० खूलेलुं; खीलेलुं विकट वि० कदरूपुं (२) भयंकर; उग्र; अंगली (३) मोटुं; विशाळ (४) गविष्ठ (५) सुंदर (६) मोटा दांतवाळुं (५) पुं० गणेश विकटायित न० चमकारो; झबकारो विकत्य १ आ० बडाई मारवी (२) कटाक्षमां स्तुति करवी विकत्थन वि० बडाईखोर(२)कटाक्षमां स्तुति करतुं (३) न० वडाई (४) खोटी स्तृति

विकत्था स्त्री० वडाई मारवी ते (२) कटाक्षमां स्तुति करवं। ते (३) मोटे-थी जाहेर करबुंते विकरण पुं० संस्कृत धातुना गणनी विकराल वि० भयानक; डरामण् विकर्तन पुं० सूर्य (२)आकडानो छोड विकर्त वि० विघ्न करनारं **विकर्मन्** वि० दुराचारी (२) न० निषिद्ध **विकर्मस्थ** वि० द्राचारी विकर्षण पु० कामदेवना पांच बाणी-मानु एक (२) न० खेंचवु ते; खेंची काढवुं ते (३) न खावुं ते; उपवास विकल् १० उ० विकळ - पांगळुं करवुं विकल वि० पांगळु; अपंग; खोडीलुं (२) गभरायेलुं; व्याकुळ (३) −रहित; –विनानुं (समासमां)(४) खिन्न; हताश (५) निरुपयोगी विकलकरण वि० नंखाई गयेला अव-यववाळुं; सुस्त विकलकरण वि० दयामण् विकलयति प० (व्याकुळ – हताश करवुं) विकला स्त्री० कलानो ६० मो भाग विकलांग वि० अपंग; वधाराना नकामा अवयववाळ विकल्प पुं० शंका; संदेह (२) अनि-श्चय; आनाकानी (३) करामत; युक्ति (४) चाली शके तेवी अनेक बाबतोमांथी एक पसंद करवानी छूट होवी ते(५)विविधता; अनेक प्रकार (६) कल्पनो विभाग (७) उत्पत्ति विकल्पक वि० वहेंचनारुं; हिस्सो पाडनारुं (२) बदली नाखनारुं धिकल्पिन् वि० संदेहवाळुं विकल्मष वि० निष्पाप; निष्कलंक **धिकस् १ प० खीलव्**; विकसव् विकसित ('विकस्'न भू० कृ०) वि० विकसेलु; खीलेलु विकस्वर वि० खीलतुं; विकसतुं(२) मोट – स्पष्ट संभळाय तेवं (अबाज)

विकंकट पुं० एक वृक्ष (जेना लाकडानी कडछी - सूचा बनावाती) विकंप् १ आ० कंपवं; ध्रूजवं विकंपित वि॰ ध्रूजत्; कंपावेलु (२) अस्थिर (३) ऊछळतुं विकार पुं० स्वभाव के स्वरूपमां फेर-फार; कुदरती स्थितिमां पलटो थवी ते, (२) फेरफार; विकिया (३) वीमारी; रोग (४) वलण अथावा प्रयोजन बदलाई जवां ते (५) लागणी (६) क्षोभ (७) बहेरामां फेरफार थवो ते (८) मूळ प्रकृतिमांथी विक-सेट्टं -- ५रिणमेलुं ते 🔻 [योजन **विकारण** वि० कारण विनानूं; निष्प्र-विकारहेलु पुं० प्रलोभन थयलं विकारित वि० बदलायेलुं; विकारवाळुं विकारिन् वि० फेरफार के विकार थाय तेवुं(२)बदलातुं(३)भ्रष्ट यतुं (४) प्रेमनी असरवाळ बनेलुं | शके एवं विकार्ष वि० जेमां विकार-फेरफार थई विकाल, विकालक पुं० संध्या; सांज (२) अयोग्य सम**य** [(३)प्रकाशवू विकाश १ आ० देखाव (२) खीलवुं विकास पुं० प्रदर्शन; देखाडवुं ते (२) खीळवुं – विकसवुं ते (३) सीघो के खुल्लो मार्ग (४)वांको के तीरछो मार्ग (५) हर्ष ; अनिद (६) आकाश (७) तीन इच्छा विकाशिन्, विकाषिन् वि० नजरे देखातुं; प्रकाशी ऊठतुं (२)खीलतुं(३)प्रकाशतुं विकास पुं० खीलवुं ते (२) वृद्धि **विकासिन्** वि० जुओ 'विकाशिन्' **विकांक्षा** स्त्री० विसंवाद (२) आना-कानी ; अनिश्चय (३) कांक्षा रहितपणुं विकिर पुं० वीखरायेलो के वेरेली भाग (२) फाड़ी खानार के वेरनार ते; पंखी [बीखरायेलुं(बाळ) विकीर्ण वि० विखेरेलुं; बेरेलुं (२) विकोर्णमुर्धज वि० वीखरायेला वाळवाळूं

विकुक्षि, विकुक्षिक वि० मोटी फांद के पेटवाळ् विकुंठा स्त्री० विष्णुनी मातानुं नाम विकुंठित वि० बुठ्ठुं (२) नबळुं विक्बर वि० धोरिया विनान् विकृ ८ उ० विकारथवी; बदलावुं; विकिया थवी (२) कदरूपुं करवुं (३) उपजाववुं (४) हानि करवी (५) अवाज करवो (६) उच्चारवुं; विविध प्रकारे शणगारवुं (७) निदवुं बदलायेलुं ; वि० पामेलुं (२) रोगी; बीमार (३) खंडित; कदरूपुं(४) अपूर्ण (५) न० फेरफार; विकार (६) बीमारी (७) अणगमो; तिरस्कार (८) अपकृत्य; ईजा; हानि (९) गभेस्नाव विकृति स्त्री० (मन, आकृति वगेरेमां) फेरफार; विकार (२) अस्वाभाविक के आकरिमक घटना (३) बीमारी; रोग (४) क्षोभ; गुस्सो (५) लागणी; आवेश विकृष् १ प० खेंचवुं (२) वाळवुं (धनुष्य) (३) खेंची लेवु;-रहित करवुं (४) नाबुद करवुं विकृष्ट वि० आम तेम खेंचेलुं (२) खेंचायेलुं - आकर्षायेलुं (३) विस्तृत ; विकृष्टसीमान्त वि० विस्तृत सीमाओ-विक् ६ ५० [विकिरति] विखेरवुं; वेरवुं (२) फाडवुं;टुकडा करवा (३) विकृत – भ्रष्ट करवुं (४) उकेलवुं विकल्प होबा विक्लुप् १ आ० शंका करवी (२) –प्रेरक० शंका करवी (२) विचारवुं; चितववुं (३) धारवुं; मानवुं (४) जुदी रीते गोठववुं (५) रचवुं विकेश वि० छूटा वाळवाळुं (२) वाळ विनानुं (जैमके माथुं)

विकोश (--ष) फोतरा विनानुं (२) म्यान विनानुं; स्थान बहार काढेलुं विक्रम् १ आ० डगल् भरवुं (२) हराववुं; जीतवुं (३) पराक्रम करवुं के बताबवूं (४) आगळ धपव् विक्रम पुं० डगलुं; पगलुं (२) गति; चालवुं ते (३) हराववुं ते (४) पराक्रम (५) उज्जयिनीनो प्रस्थात राजा (६) बळ; ताकात **विक्रमण**्न०डगलुं;पगलुं(२)पराक्रम विक्रमार्क पुं० विक्रम राजा **विकमिन्** वि० पराक्रमी; शूर विकय पुं० वेचाण ; विनिमय **विकायक** वि० वेचतुं; वेचनारुं विकात वि० ओळंगायेलुं;ओळंगेलुं(२) पराक्रमी; बळवान(३) विजयी(४) पुं० वीर (५)न० डगलुं; पगलुं(६) बळ; पराक्रम (७) वैकांत मणि विकिया स्त्री० विकार; फेरफार(२) क्षोभ ; लागणीनो आवेश (३) गुस्सो (४) ऊलटुर्थवुंते; अनिष्ट (५) (भवां) संकोचवां-चडाववां ते (६) | विनिमय करवी विकी ९ आ० [विकीणीते] वेचवुं; **विक्रीत** वि० वेचायेलु; वेचेलु **विकुश् १** प० मोटेथी बोलाववुं; हाक मारवी (२) बोलवुं; उच्चारवुं (३) गाळ देवी; निंदवं विकोश पुं०, विकोशन न० बोलाववुं ते; बूम पाडवी ते (२) गाळ भांडवी ते **विष्लव** वि० बीनेलुं;चमकेलुं; गभरायेलुं (२) बीकण (३) -शी दबायेलुं;-शी अभिभूत थयेलुं (४) क्षुब्ध; विह्वळ (५) दुःखित; पीडित (६)अणगमा-वाळु (७)ठोकर खातुं (८)न०क्षोभ ; व्याकुळता (९) डर **विक्लवता** स्त्री० डर **विक्लिष्ट** वि० अत्यंत पीडित;दुःखित (२)हानि पामेल्

विगत वि० विदाय थयेलुं;

गयेलुं; लुप्त थयेलुं (२) मृत (३)

विनानुं; -- रहित (समासमा)

विक्लेब पुं० पूरेपूरुं भीजाई जवुं ते (२) भेज (३) क्षय पामवुं ते विक्षत वि॰ घवायेलुं; हणायेलुं (२) खणायेलुं; छाप पडी होय तेवुं (खरी वगेरेथी) (३) ग्रस्त; पीडित (४) न० घा; प्रहार विक्षाव पुं० घ्वनि;अवाज (२)खांसी, र्छीक वगेरेथी थतो अवाज विक्षित वि० वरबाद थयेलु; दुःखी **विक्षिप्** ६ प० विखेरवुं; वेरवुं (२) फेंकव (३) भीसबु (४) बाळवु; नमाववं (धनुष्य) विक्षिप्त वि० विखेरायेलु; आमतेम फेंकायेलुं(२)तरछोडेलुं(३)मोकलेलुं (४) क्षुड्घ; व्यग्र; व्याकुळ (५) विस्तृत; पहोळुं करेलु **विक्षुभ्** १ आ०, ४, ९ प० क्षुब्ध – ब्याकुळ थवु (२) मूझववु; गूचववु **विक्षेप** पुं० विखेरवं – आमतेम फेंकवुं ते (२) आमतेम हलावव – फेरववुं ते (३) मोकलवं ते (४) व्यग्रता; मूंझवण (५) भय; डर (६) नकामूं जवा देवुं ते (समय) विक्षोभ पु० ऊछळव्ं ते; खळभळव्ं ते (२) मननो क्षोभ (३) झघडो (४) फाडव-चीरवु ते विखनस् पुं० ब्रह्मा **बिखंडित** वि० तोडेलुं; फोडेलुं (२) चीरेलुं (३) खंडित करेलुं; अमुक अंग कापी नाखेलुं विखानस पुं० एक जातनो तपस्वी विख्या २ प० प्रसिद्ध थवुं (२) जोवुं; निहाळवुं (३) बोलाववुं; नाम देवुं (४) प्रकाशित करवुं विख्यात वि० प्रस्थातः विख्याति स्त्री० प्रसिद्धि; स्याति विगण् १० प० गणतरी करवी (२) गणनामां लेवुं; मानवुं; विचारवुं (३) उपेक्षा करवी

विगतकस्मष वि० पापरहित; निर्दोष विगतभी वि० निर्भय विगतलक्षण वि० कमनसीब; भाग्य-**विगतस्पृह** वि० निःस्पृह विगतासु वि० मृत; प्राणरहित विगद वि० नीरोगी; आरोग्यवान विगम् १ प० [विगच्छति] चाल्या जवुं; व्यतीत थवुं (समय) (२) विदाय थवुं (३) लुप्त – अदृश्य धवुं –प्रेरक०-व्यतीत करत्रुं ; पसार करत् विगम पुं० अंत; समाप्ति (२) विदाय-अदृश्य थवुं ते (३) तजी देवुं ते (४) विनाश (५) मृत्यु (६) वियोग विगर्ह १ उ० ठपको आपवो; निदवुं (२) तिरस्कारवुं विगर्हण न०, विगर्हणा, विगर्हा स्त्री० निंदा; ठपको; तिरस्कार **विर्गाहरत** वि० निदेलुं; तुच्छकारेलुं (२) ठपको आपेलुं (३) निद्य; दुष्ट (४) न० निंदा **विगल् १** प० गळवुं; टपकवुं; झरबुं (२) छूटी पडवुं; नीकळी जर्बु (३) ओगळी जवुं (४) अदुश्य थवुं **विगलित** वि० झमेलुं; टपकेलुं (२) लुप्त थर्बु; अदृश्य थर्बु (३) छूटी पडेलु; नीकळी पडेलुं (४) ओगळी गयेलुं (५) वीखराई गयेलुं (वाळ) विगाद वि० नाहेलु; डूबकी मारेलुं; डूबेलुं (२) गाढ; अत्यंत विगान न ० ठपको ; निंदा ; आळ (२) विरुद्ध – विरोधी वचन विगाह १ आ० स्नान करवुं (२) डूबकी मारवी (३) पेसवु; प्रवेश करवो (४) डखोळवुं; क्षुब्ध करवुं (५)आचरव्(६)बेसव् (ऋत् इ०न्)

विगोत वि० निदित (२) विरुद्धः; असंबद्ध (३) खराब रीते गवायेलुं विगुण वि० गुणरहित; तुज्छ (२) दोरी के पणछ विनानुं (३) निष्फळ **विगृहोत** वि० छूटुं पाडेलुं (२) पकडेलुं (३) सामनो करेलुं विग १ प० निंदवु (२) वेसूरुं गावुं विग्न ('विज्' नुं भू० कृ०)क्षुब्ध; ध्रूजतुं (२) बीनेलुं; भडकेलुं विग्रह् ९ प० [विगृहणाति] पकडवुं (२) लडवुं; तकरार करंबी (३) (अवयवो) छूटा पाडवा -विग्रह पुं० फेलाववुं ते (२) आकृति; मूर्ति (३) शरीर; देह (४) छूटुं पाडवुं ते (५) लडाई; टंटो (६) विभाग; संड; अंश **विग्रहवत्** वि० देहधारी; मूर्तिमान विग्रहिन् पुं० युद्धमंत्री वि**घट् १** आ० छूटा पडवुं (२) बर-बाद थवुं; विनाश थवो (३) अटकी पडवुं; भागी पडवुं (४) तिविध आकार धारण करवा –प्रेरक० छूटुं पाडबुं; विखेरी नाखबुं (२) खसेडबुं (३) विफळ बनाववुं विघटन न० छूटुं पाडवुं ते (२) विघ्वंस विघटित वि० जुदुं करेलुं (२) विभाग पाडेलुं (३) भांगेलुं; छिन्नभिन्न थयेलुं विघट्ट १० उ० विखेरतुं; भगाडी मूर्कवुं (२) घसावुं; अफळावुं (३) तोडी नाखवुं (करार) (४) उघाडी नाखवं (बारण्) विघट्टन न०, विघट्टना स्त्री० धक्को मारी छूटुं पाडवुं ते (२) अफळावुं ते (३) उकेली नाखवु ते; छोडी नाखवुं ते (४) खोटुं लागे ते करवुं **विघट्टित** वि० विखेरी नाखेलुं; छूटुं पाडेलुं (२) छोडी -- उकेली नाखेलुं (गांठ ६०) (३) घसायेलुं; अफळायेलुं (४) खोटूं लाग्युं होय तेवुं

विघस पुं० खातां मोहामांथी नीकळेलो ओगाट (२) खातां वधेलुं ते (३) खोराक; अन्न विधसाश, विधसाशिन् पुं० देवो-पितृ-ओने आपेला बलिमांथी वघेलुं खानारो; खातां वधेलुं खानारो (कृतरो, कागडो) विधसीकृत, विधसीभूत वि० एठुं थयेलुं के खातां छांडेलुं होय तेवुं विघात पुं० वध ; नाश ; निवारण (२) विष्न; नडतर; रुकावट (३) प्रहार (४) निष्फळता विघूर्णन न० आमतेम धुमाववुं ते विघूर्णित वि० गोळ फेरवेलुं; घुमावेलुं **विघृष्ट** वि० खूब घसेलुं **विघ्न पुं० हरकत**; दखल; अंतराय विघ्नकर, विघ्नकर्तृ, विघ्नकारिन् वि० विघ्न-हरकत करनार विष्नप्रतिक्रिया स्त्री०विष्न दूर करवां ते **विध्नित** वि० विघ्न करायेलं विष्नेश पुं गणपति **विच्**३, ७, उ० छूटुं पाडवुं ; जुदुं पाडवुं विचक्ष २ आ० कहेवुं (२) दर्शाववुं (३) निहाळवुं विचक्षण वि० कुशळ; निपुण (२) डाह्युं; समजणुं; विद्वान **विचट् १** प० भागी जबुं; तुटी जबुं विचय प्० शोधव् – सोळव् ते **विचर् १** प० विचरवुं; भमवुं; फरवुं (२) आचरवं (३) वर्तवं (४) अवळे मार्गे जवु (५) हुमलो करवो (६) भूल करवी –प्रेरक० विचारवुं; चितववुं (२) चर्चेयुं (३) गणतरीमां लेबुं (४) आनाकानी करवी **विचर** वि० मार्गथी भ्रष्ट ययेलुं विचर्चित वि० लेप करेलुं;खरडेलुं **विचर्षण** वि० चपळ; चंचळ विचल् १ प० ध्रूजवुं;कंपवुं(२)जवा

नीकळवं (३) क्षुब्ध थवं ; खळभळवं (४) भ्रष्ट थवुं, चलित थवुं विचलित वि० संसेलुं; चलित थयेलुं (२) (आंखे) झांखप वळी होय तेवुं; अंध विचार पुं० सनथी चिंतववुं ते (२) तपास; चर्चा (३) काम चालवुं ते (अदालतमां) (४) विवेक-विचार (५) निश्चयः; निर्णय (६) परिणामनो स्याल; अगमचेती विचारक पु० तपास करनारु; परीक्षा करनार्ह (२)नेता; भोमियो (३)जासूस **विचारण** न० विचारणाः; तपासः; परीक्षा (२) संशय; आनाकानी विचारणा स्त्री० तपास;परीक्षा;चर्चा (२) आनाकानी; संशय विचारमूढ वि॰ मूर्ख (२)विचारवामां भूलेलु [तपासेलुं; चर्चेलुं विचारित वि० विचारेलुं; चितवेलुं; विचारिन् वि० भटकतुं (२) स्वच्छंदी (३) विचार करतुं; तपास करतुं विचि ५ उ० एकठुं करवुं; संग्रह करवो (२) शोधवुं; खोळवुं (३) तपासवुं (४) त्रीणवुं; पसंद करवुं विचि पु०, स्त्री० मोजुं; तरंग विचिकित्सा स्त्री० संशय;अनिश्चितता (२)भूट(३)साचुं स्वरूप शोधवुं ते विचित्र वि० चित्रविचित्र ; विविध रंगनं (२) विविध (३) चीतरेलुं (४) सुंदर; मनोहर (५) आश्चर्यकारक; चिकत करे तेवं (६) न० आश्चर्य विचित्ररूप वि०विविध;विविध रूपवाळुं विचित्रवीर्य पु० शांतनु राजानी पुत्र विचिन्वत्क प्० शोध; तपास (२) वीर माणस विचित् १० उ० दिचारवं (२) याद करवुं; चितववुं (३) मानवुं; गणवुं विचितन न०, विचिता स्त्री० विचार (२) काळजी; दरकार विची स्त्री० मोजु; तरंग

विचीर्ण वि० वसवाट कर्यो होय तेवुं –मां विचर्या होय तेवुं (२) प्रवेशायेलुं विचेतन वि० भान वगरनुं; मृत(२) जड (३) मूझायेलुं (४) मूर्ख विचेतस् वि० मूर्खः; अज्ञ (२) मूंझा-येलुं; गूचवायेलुं; खिन्न (३) दुष्ट **विचेय** न०तपास विचेष्ट् १ आ० हिलचाल करवी; हालवुं (२) वर्तवुं (३) प्रयत्न करवो **विचेष्ट** वि० हिलचाल विनानुं विचेष्टम न० अवयवी हलाववा ते (२) लात मारवी ; आळोटवुं (घोडानु) विचेष्टा स्त्री० प्रयत्न (२) हालचाल (३) वर्तणूक **विचेष्टित** वि॰ प्रयत्न करेलुं (२) तपासेलुं (३) मूखईभरेली रीते करेलुं (४) न० कृत्य; कार्य (५) प्रयत्न (६) करतूत विच्छ् ६५० जर्बु; खसवुं(२)१० उ० प्रकाशवुं (३) बोलवुं विच्छर्दक पुं० जुओ 'विच्छंद' विच्छर्दन न०, विच्छर्दिका स्त्री० वसनः ऊलटी (२) तेना रोग विच्छदित वि० वमन करेलुं (२) अवगणेलुं (३) तजेलुं; छोडी दीघेलुं (४) घटाडेलुं; ओछुं करेलुं विच्छंद, विच्छंदक, पुं० महेल; घणा माळवाळूं मकान विच्छाय वि० छाया विनानु (२) झांखुं (३) पुं० रत्न (४) न० पंखीओना टोळानी पडछायी विच्छाया स्त्री० जुओ 'विच्छाय'न० विज्ञिति स्त्री० कापी नाखवुं ते;तोडी नाखबुं ते (२) जुदुं पाडबुं ते (३) अभाव; न होवुं ते (४)अटकवुं ते (५) शरीरने रंग-लेप इत्यादिथी रंगवुं ते(६)सीमा (घर इ०नी) (७**)स्त्री** वडे सौं**दर्यमदथी** कराती पोशाक, शणगार इ० प्रत्ये बेदरकारीरूपी विलासचेष्टा

विच्छिष् ७ उ० कापवुं; तोडवुं; छूटुं पाडवुं (२) उच्छेद करवो विक्छिन्न वि॰ कापी नाखेलुं (२) छूटुं पाडेलुं; तोडेलुं (३) रोकेलुं; अटका-वेलुं (४) समाप्त करेलुं (५) ढंकायेलुं विच्छुर् ६ प० लेप करवो; खरडवुं; रजथी ढांकवुं (२) जडवुं --बेसाडवुं विच्छुरण न० (रजन्मुर्ण) छांटबुं ते विच्छुरित वि० (रज-चूर्णथी) छांटेलुं; खरडेऌुं (२) बेसाडेऌुं; जडेेऌुं **विच्छेद पुं०** कापवुं–छूटुं पाडवुं ते (२) भागवुं ते (३) अटकवुं ते; वंघ पडवुं ते (४) ग्रंथन प्रकरण विच्युति स्त्री० च्युत थवुं ते; छूटुं पडवुं ते (२) अधोगति थवी ते (३) गळी जब्ं ते (गर्भ इ० नुं) विज् ३ उ० भाग पाडवा (२) छूट् पाडवुं; विवेक करवो (३) 🧯 अ०, ७ प० झ्जबुं (४) क्षुब्ध थवुं; भयथी कंपवुं (५) पीडाबुं; त्रासवुं विजन् ४ आ० जन्मवुं; उत्पन्न थवुं (२) उत्पन्न करवुं (३) ऊगवुं; फूटबुं विजन वि॰ निर्जन; एकांत (२) न॰ निजेन -- एकांत स्थळ विजय पुं० जय; फतेह; हरावबु ते (२) देवोनो रथ (३) अर्जुन (४) एक महर्त (५) एक व्यूह **विजयदंड** पुं० लक्ष्करतो अमुक विभाग विजयंत ५० इंद्र **विजया** स्त्री० दुर्गा (२) तेमनी एक अनु-चरी (३) विश्वामित्रे रामने शीखवेली एक विद्या (४) हरडे विजयाम्युपाय पुं विजयनो उपाय विजयाह्वय वि० 'विजय' नामवाळुं (जेमके बिजापुर) विजयिन् पुं० विजेत. विजयोजित वि० विजयथी उन्मत बनलुं विजल्प पुं० बकवाद (२) वातचीत

विजल्पित वि० बोलेलुं; वातचीतमां कहेलुं (२) बकबाद करेलुं विजात वि॰ जन्मेलुं (२) व्यभिचारथी जन्मेलुं (३) सद्गुणी **विजान**त् वि० जाणकार; डाहर्चु विजानता स्त्री० कुशळता; चालाकी विजि १ आ० जीतवुं; हराववुं (२)--शी चडियाता थवुं;पाछळ पाडी देवुं(३) जीतीने मेळववुं (४) विजयी थवुं **विजिगीषा** स्त्री० जीतवानी इच्छा(२) हरीफाई; चडियाता थवानी इच्छा विजिगीषु वि० जीतवानी इच्छावाळुं (२) महत्त्वाकांक्षी (३) पुं० योद्धो (४) हरीफ; विरोधी विजिज्ञासा स्त्री ० स्पष्ट जाणवानी इच्छा **विजित** वि० जीतेलुं; हरावेलुं विजितात्मन् वि० आत्मनिग्रही; संयमी विजिति स्त्री० विजय विजिहीषां स्त्री० विहरवानी इच्छा विजिह्य वि० वांकुं वळेलुं (२) अप्रमा-णिक (३)तीरछुं(नजर; कटाक्ष) (४) शून्य (५) फीकुं; झांखुं विज़ंभ् १ आ० बगासुं खावु (२) खीलवुं; विकसर्वु (फूछ) (३) व्यापर्वु; भरी काढवूं (४) देखावूं; प्रगट थवुं (५) वृद्धिगत थवुं-विकसवं **विजृंभण** न० बगासुं (२) खीलवुं के खूलवुं ते (३)प्रगट करवुं ते; व्यक्त करवुं ते (४) श्रृंगारक्रीडा विजृंभिका स्त्री० बगासुं खावुं ते; (स्वास माटे) मों पहोळुं करवुं ते विज्भित वि० बगासुं खातुं होय तेवुं; मों पहोळुं कर्युं होय तेवुं(२)खीलेलुं; खूलेलुं(३)प्रगट करेलुं(४)न० रमत; कीडा (५) इच्छा (६) प्रदर्शन; देखाड (७) आचरण ; वर्तन(८) फळ ; परिणाम (९) बगासुं **विज्ञ** वि० जाणकार; डाह्युं; समजणुं

(२)चतुर; होशियार(३)पुं० डाह्यो के विद्वान माणस **विज्ञप्त** वि० वीनवेलुं (२) जणावेलुं विजिप्त स्त्री० विनंति (२) जाहेरात (३) उपदेश विज्ञा ९ उ० जाणवं (२)समजवं (३) —नी पासेथी शीखी लेवुं—जाणी लेवुं (४)मानवुं; गणवुं(५)परिचित होवुं (६)परखवुं (७) समजाववुं --प्रेरक० [विज्ञापयति|अरज करवी; विनंती करवी (२) जणाववुं; कहेवुं (३) शीखवर्दुं प्रस्यात विज्ञात वि॰ जाणेलुं; समजेलुं (२) विज्ञान न० ज्ञान; इहापण; समज (२) परस (३) कुशळता; प्रवीणता(४) खीकिक अनुभवधी मळेली समज (आध्यात्मिक के परमतत्त्वनी समज ते 'ज्ञान') (५) ज्ञानेद्रिय (६) माहिती. (७) अतीद्रिय विपयक ज्ञान विज्ञानयोग पुं० यथार्थं ज्ञान मेळववानुं साधन -- प्रमाण [उपदेशक विज्ञापक वि॰ माहिती आपनारुं (२) विज्ञापन न०, विज्ञापना स्त्री० अरज; विनंती (२) जाण करवी ते; आदर-पुर्वक माहिती आपवी ते (३) उपदेश विज्ञापित वि० आदरपूर्वक निवेदन करेलुं - जणावेलुं (२) विसंति करेलुं (३)माहितगार करेलुं(४) उपदेशेलुं **विज्ञाप्य न०** विनंति विज्ञेष वि० जाणी शकाय तेवुं(२)शीखवु पडें तेवुं (३) गणनामां लेवा योग्य विज्वर वि० ज्वर - चिता - पीडाधी रहित एव् दिट पुं जार;कासुक (२) (नाटकमां) विदूषक जेवो. नायक के गणिकानी साथी (संगीत-कविता इ०मां निष्णात मनाय छे) (३) धूर्त ; ठग विटप पुं॰ डाळी; शाखा (२) झाडवूं (३) कुंपळ (४) झुंड (५) लता

विटपिन् पुं० झाड; वृक्ष (२) वड **विटंक** वि० मनोहर ;पुं० रमणीय (२) पुं० घर वगेरेनी टोच उपर कबूतरो माटे रखातो भाग (३) ऊंचामां ऊंचुं स्थान; टोच **बिटंकित** वि० अंकित (२) अलंकृत विट्पति पुं० (विस्+पति) जमाई (२) राजा (३) वैश्योनो मुखियो विडंब् १० उ० अनुकरण करवु; नकल करवी (२) उपहास करवी; मजाक करवी (३) छेतरवुं ; ठगवु (४) पीडवुं ; संतापवुं (६) रूपांतर करवुं विडंब पु॰ अनुकरण; नकल (२) पीडवं के संतापवं ते **विडंबक** वि० नकल करतुं; अनुकरण करत् (२) उपहास के फजेती करत् विडंबन च०, विडंबना स्त्री० अनुकरण ; नकल (२) डोंग ; वेष (३) छळ (४) पीडा ; संताप ; त्रास(५)उपहास: फजेती विडीन न० पंखीओनी ऊडवानी एक रीत विडोजस् विडोजस् पु० इद्र **बितड् १**० प० ताडन करवुं; मारवुं वितत वि० फेलायेलुं; विस्तरेलुं (२) लांबु; पहोलुं(३)अनुष्ठित; आचरेलुं (४)आच्छादित (५)खेचेऌं (पणछ) (६)वाळेलुं;पणछ चडादेलुं(७) न० तारवाळुं बाद्य (८) बेलनो फणगो अथवा वीटळातो तंतु वितित स्त्री० विस्तार; फेलावो (२) जथो; समूह (३) पंक्ति विततोत्सव वि० जेणे उत्सवनुं आयोजन कर्युं होय तेव् निरर्घक वितथ वि॰ जुठुं; खोटुं (२) मिथ्या; वितथयति प० (मिथ्या करवु) वितन् ८ उ० फेलाववुं ; विस्तारवुं (२) व्यापवुं;भरी काढवुं(३)रचवुं;बना-ववुं (४) खेंचवुं ; पणछ चडाववी (५) उत्पन्न करवुं; अर्पेवु(६)रचवुं – लखवुं (ग्रंथ) (७) प्रगट - व्यक्त करवुं (८)

सिद्ध करवुं; पार पाडवुं (९) सज्ज-[पु० कामदेव तैयार करवु **वितन्** वि०पातळुं; नाजुक; सुंदर(२) वितप् १ आ० तपवुं;प्रकाशवुं (२) तापवुं वितमस्, वितमस्क वि० अंधकार विना-न्; प्रकाशित (२)शुद्धः; निष्कलकः वितरण न० पार करी जबूं ते (२) बक्षिस; भेट (३) तजी देवुं ते वितर्क १० उ० तर्क के फल्पना करवी (२)मानवुं;धारवुं(३)अपेक्षा राखवी (४) शाथी कढ़िबुं ; निश्चित करवुं वितर्क पु॰ दलील; तर्क; अनुमान (२) धारणाः; मान्यता (३) कल्पना (४) संशय (५)चर्चा-विचारणा (६)खोटी कल्पना के धारणा(७)हेतु; प्रयोजन विर्ताद, विर्तादका, विरादी, विराद्धि (-द्धी)स्त्री० चोक के आंगणामां ऊभी वरेलो चोतरो ; बेसवानी ऊंची चोखंडो जगा(२)ओसरी; वरंडो **वितल न०** सात पाताळ पैकी बीज् वितंडा स्त्री० पोतानी पक्ष ज न हैं।य अने सामा पक्षनु खंडन कर्या करवु ते (२) खोटो बकवाद; नकामी माथाझीक वितंत्री स्त्री० वेसुरी वीणा (तार ऊतरी जवायी) वितान वि॰ खाली; शून्य (२) मूर्ख (३) खिन्न; उदास (४) दुप्ट; स्व-च्छंदी (५) पुं०, न० विस्तार (६) चंदरवा (७) ओशीकुं (८) जथा; समूह (९) यज्ञ ; आहुति (१०) न० विश्रांति; फुरसद विसानक पुं०, न० विस्तार (२) ढगलो जथो (३)चंदरवो (देवु) वितानायते आ० (चंदरवा तरीके काम **वितायमान** वि० फेलातुं वितीर्ण वि॰ ओळंगी गयेलुं(२)आपेलुं; बक्षेलुं (३) नीचे ऊतरेलुं

वितृष्ण वि० तृष्णारहित वितृष्णा स्त्री० तीव इच्छा वितः १प० ओळंगवुं; पार करवुं(२) आपवुं; बक्षवुं(३)उत्पन्न करवुं बित्त वि० ('विद्'नुं भू० क्रु०) यो बेलु; जडेलुं (२) मळेलुं; मेळवेलुं (३) नपासेलुं (४) जाणीतुं; प्रसिद्ध(५) न० धन ; मिलकत (६) शक्ति(७)सोन् वित्तक वि० प्रस्थात (२) कीर्तिवान वित्तप, वित्तपति, वित्तपाल पु० कुबेर वित्तपेटा (-टी) स्त्री० पैसानी कोथळी वित्तमात्रा स्त्री० मिलकतः, रकम वित्तसमागम पुं० धनप्राप्ति; आवक वित्तेश पुं० कुवैर **वित्तेहा** स्त्री० श्रननी इच्छा वित्रस् १,४प० वीर्युः, त्रासवुं वित्रास पुं० भय; त्रास; डर बिद् २ प० जागवुं; समजवुं; खोळी काढवुं; नवकी करवुं (२) अनुभववृं (३) गणवुं; मानवु ~प्रेरका० जणाववुं; कहेवुं (२) शीखवबु; समजावबुं (३) अनुभवबुं **विद्४ आ**० विद्यशान होत्रुं (२) थर्यु विद्६ ७० विद्वि-ते (मळवव् प्राप्त करव् (२) खोळी काढवं, अळखवं (३) अनुभवव् (४) परणव् **विद् ७** आ० | विन्ते | जाणवुं; समजवुं (२) गणवुः मानवु (३) मळवु (४) विचारवुं; चितववुं (५) तपामवुं **बिद् १०** आ० कहेबुं; जणावबुं (२) अनुभववु (३) रहेवु विद् वि० (समासने अते) जाणकार; परिचित (२) पुं० डाह्यो माणस; विद्वान (३) स्त्री० ज्ञान (४) बुद्धि विद पुं० पंडित; डाह्यो भाणस विदग्ध वि० बळी गयेलुं(२)रांधेलुं (३) पची गयेलुं (४) नाश पामेलुं (५) होशियार; चतुर (६) चालाक;

वित्रन वि॰ भोंकायेलुं; चिरायेलुं

युक्तिबाज (७) सुंदर (८) पुं० डाह्यो के विद्वान माणस (९) जार; कामी विदग्धता स्त्री०, त्रिदग्धःव न० एव चालाकी; कुशळता विदग्धवचन वि० बोलवामा कुशळ **विदर** पूं० फाडवुं – चीरवुं के फाटवुं ते (२)फाट;चीरां नळनी राणी विदर्भजा, विदर्भतनया स्त्री० दम्यती; विदर्भाः पुं० ब०व० आजना वराड प्रांतन् प्राचीन नाम (२) ते देशना वतनी लोक विदल् १प० भागवुं; चीरबुं; फाडवुं (२) खोदवुं (३) ऊघडवुं ; पहोळु थवुं विदलन न० फाइवुं -- कापवुं -- चीरबं ते विवंश पुं• तरस लगाडे तेवुं तीर्ख् खावानुं ते (चटणी-अथाणुं) विदारण न० फाइव - चीरव - तोडव ते (२) पीडवुं; त्रास आपवो ते (३) दघ; कत्रळ विदार पु० सरडो; काचडो विदासिन वि० नाश पामत् विदाहिन् पुं० बळतरा ऊभी करे तेवी खाद्य पदार्थ **बिदिक्चंग** पुँ० एक जातनुं पीळुं पंखी बिदित ('विद्`नुंभू० कृ०)वि० जाणेलुं समजेलुं; भणेलुं (२) जणावेलुं (३) प्रसिद्धः, जाणीतुं (४) कब्लेखुं (५) पुं० पंडितः; विद्वानः (६) न० ज्ञानः; माहिती (७) प्रसिद्धि (८) मेळववुं ते; प्राप्ति विदितात्मन् वि० प्रसिद्धः; जाणीतुं (२) आत्मज्ञानी (३) पुं० परमेश्वर विदिथ पु॰ ज्ञानी (२) ऋषि विदिशा स्त्री० दशार्ण देशनी राजधानी (२) माळवानी एक नदी विदीपक पुं० दीवो; फानस विदीर्ण वि० फाडेलुं; चीरेलुं विदुर पुं० धृतराट्र तथा पांडुनो नानो भाई (दासी-पुत्र)

विद्रुल पु० एक जातनुं नेतर विदुष पुं० ज्ञानी; पंडित विदुषी स्त्री० पंडित स्त्री विदूर वि० आवेनुं; दूरनुं(२)पु०एक पर्वतनुं के शहरनुं नाम, ज्यांथी वैदूर्य मणि मळे छे विदूरभूवर, विदूरादि पु॰ एक काल्प-निक पर्वत (लंकानी) ज्यां मेघगर्जनाथी रत्त पेदा थतां मनाय छे विदुषक वि० भ्रष्ट करनार्गः कलंक लगाडनार्च (२) गाळ के आळ देनार्च (३) मक्करुं (४) पुं० मक्करो (खास करीने नाटकमां नायकना रमुजी अने विस्वासु भित्र) (५) टीका करनारो; प्रतिपक्ष करनारो विदूषण न० भ्रष्टता (२) कलंक (३) ं टुकडा करवा ठपका ; गाळ बिद् ९प०,६,१उ०फाडवुं; चीरवु; –कर्मणि० चिराई जवुं; फाटी जवुं (दुःख इ०र्था) –प्रेरवः० फाडी नाखवु ; चीरी नाखवुं विदेश पुँ० परदेश विदेह वि० देह के देहमंत्रंध विनानुं (२) मृत (३) पुं० निदेह प्रांत (४) जनक राजा प्राचीन देश विदेहाः पुं० व० व० मिथिला नामनो **बिह** ('व्यघ्'नुं भू० कृ०) वि० वीधा-येलुं; घवायेलुं (२) फटकारायेलुं (३) फेंकायेलुं; मोकलायेलुं (४) एक वीजाने वळगेलुं – चोटेलुं (५) सदृश विद्यमान वि० हयात; वर्तमान; हाजर (२) खरु; वास्तविक विद्याः स्त्री० झानः; शास्त्र (२) साच् ज्ञान; तत्त्वज्ञान(३)मंत्र;तंत्रविद्या **विद्यागम** पुं० विद्या प्राप्त करवी ते **विद्यागुरु** पुं० ज्ञान आपनार गुरु विद्यापन न० विद्यारूपी धन (२) विद्या वडे मेळवेलुंधन विद्याधर पुं० एक देवयोनिनो देव

विद्याधार पुं० मोटो पंडित विद्याबल न० जादुई शक्ति विद्याभ्यास न० विद्या भणवी ते विद्यार्जन न॰ विद्या प्राप्त करवी ते विद्यार्थिन पु० भणनारो; क्षिष्य विद्यावंश पुंज कोई पण विद्या के शास्त्र शीखवनारा गुरुओनो वंशानुक्रम विद्याविहीन वि० अभण; अज्ञानी विद्यावृद्ध वि० ज्ञाननी बाबतमां मोट्ं; ज्ञानमां घणुं आगळ वघेलुं विद्याहीन वि० जुओ 'विद्याविहीन' विद्युत् १ आ० प्रकाशवुं; दीपवुं (२) प्रकाशित करवुं; चमकाववुं(आ अर्थमां सामान्यपणे प्रेरक०) बिद्युत् स्त्री० वीजळी (२) कडाका साथै पडती वीजळी विद्युता स्त्री० वीजळी विद्युत्त न० वीजळीनो चमकारो विद्युत्वत् वि० वीजळीओवाळु (२) पु० बादळूं; मेघ विद्युत्संपातम् अ० क्षणवारमां विद्युदुत्मेष पु० वीजळीनो चमकारो विद्युल्लता, विद्युल्लेखा स्त्री ॰ वीजळीनो लांबों के बांकोचूंको लिसोटो विद्योत वि० चमकत्; झळकत् विद्रधि पुं० गूमडुं; फोल्लो विद्रव पुं० नासी जवुं-भागी जवुं ते (२) भय; डर(३)वही जबुंते(४) ओगळी जबुं ते (५) निदा; गळ विद्रावित वि० नसाडी मुकेलुं (२) विखेरी नाखेलुं (३) पिगळावेलुं विद्व १ प० नासी जवु; दोडी जवु (२) पीगळवु (३) भागी जबुं; तूटी जबुं –प्रेरक० भगाडी मूकवुं; विखेरी नाम्बव् विद्वत वि० नासी गयेलुं; पलायित (२) गभरायेलु; बीनेलुं (३) ओगळीने प्रवाही बनेलुं (४) न० नासी जबुं ते

विद्वति स्त्री० हासी जवुं ते; पलायन विद्रुम पुं० परवाळुं (२) फणगो विद्वजन पुं विद्वान माणसः; पंडित विद्वत्त्व न० विद्वत्ता; पंडिताई विद्वस वि० जाणतुं; जाणनारुं (२) डाहचु ; ज्ञानी (३)पुं० विद्वान ; पंडित विद्विष्(-ष) पुं० शत्रु; दुश्मन विद्विष्ट वि० धिवकारेलुं; अणगमतुं विद्वेष पु०द्वेष; वेर (२) अनादर (गर्वथी करेलो) विद्वेषण पुं ० दुश्मन ; वेरी (२) न ० द्वेष कराववी ते; एक तंत्रविद्या विष् ६ प० वींधवुं; छेदवुं (२) पूजवुं; सत्कारवं (३) १ आ० याचवं विध पुं•प्रकार; जात (२) रीत; पद्धति (३) गडी - पड (समासने अंते; उदा० त्रिविध) विधनता स्त्री० गरीबाई विधर्मन् वि० खोटी रीते वर्ततुं; बेदफा विधवा स्त्री० जेनो पति मरी गयो होय तेवी स्त्री विधा ३ ७० करवुं; वनाववुं; उत्पन्न करवु; आचरवु; सिद्ध करवुं(२) विधान करवु; (शास्त्रे) आज्ञा करवी (३)बनाववु; घडवु(४)नीमवु(५) पहेरवुं (६) –तरक प्रेरवुं (मनने); – उपर स्थिर करवु (७) गोठववुं (८) तैयार करवुं (९) आपवुं (१०) मूकवुं (११) ग्रसवुं विधा स्त्री० प्रकार; रोत; पद्धति विधात पुं• विधाता; येदा करनारो; सर्जनारो (२) ब्रह्मा (३) बक्षनारो (४) नसीब (५) विश्वकर्मा (६) माया ; भ्रम विधान न॰ गोठववं ते (२)आचरवं-करवुं ते(३)सृष्टिरचना(४) योजव् ते; प्रयोग करवो ते (५)आज्ञा;हकम (६)नियम; शास्त्राज्ञा (७)पद्धति; रीत (८) उपाय (९) हाथीओने मत्त

करवा अपातुं भोजन (१०) कृति ; कार्य (११)यत्न (१२)चिकित्सा (१३) प्रतीकार (१४) दान;बक्षिस (१५) दैव विधायिन वि० गोठवनारुं; करनारुं; सर्जनारुं (२) हुकम करतुं (३)--ना हाथमां सोंपत् |(बाहनने) विघारण न० रोकवुं के अटकाववुं ते विधि पुं० करवुं ते; कृत्य; किया (२) पद्धति; रीत (३) विधान; हुकम; नियम (४) कोई पण धार्मिक किया (५) वर्तणूक; वर्तेन (६) सर्जेन; रचना (७) विधाता; ब्रह्मा (८) नसीब; दैव (९) उपाय **विधित्सा** स्त्री० करवानी इच्छा -इरादो विधिद्घट वि० जेनो नियम के विधान होय तेवुं (शास्त्रमां) विधिपूर्वकम् अ० विधि – रीत प्रमाणे विधियोगतः विधियोगात् अ० दैव-वशात्; नसीबजोगे विधिलोप पुं० विधि के विधाननुं उल्लं-विधिवशात् अ० नसीबजोगे विधिविषयंय पुं० कमनसीब ; दुर्दैव विधुपु० चंद्र विध्ति स्त्री० कंपर्वु ते; हलाववुं ते (२) दूर करवुं ते; नाश विधुर वि० धुरा विनानुं (रथ) (२) पीडित; दुःखित (३) वियोगयी पीडित (४)⊸विनान्; –रहित(५)विरोघी; शत्रुवटवाळुं (६)अशक्तिमानः; करी के आचरी न शके तेवुं(७)नमी पडेलुं; झुकी गयेलुं(८) पुं० जेनी पत्नी मरी गई होय तेवो पुरुष (९) न० भय; चिंता डर (१०) त्रियोग (पतिथी के पत्नीथी) (११) दु:ख; आफत विषरदर्शन न० आपत्ति आवी पडवी ते विघुरित वि० फीक्टुं; निस्तेज **विध्वन न**० कंप; धुजारी विध्ंतुब पुं० राहु (चंद्रने पीडनारो)

विध् ५, १० उ०, ६ प० हलाववुं; कंपाबवुं (२) दूर करवुं: खंखेरी नाखवुं (३) अनादर के तिरस्कार करवो (४) तजवुः; छाउवु **विधृत** वि० हलावेलुं; कंपावेलुं (२) अस्थिर (३) दूर करेलु; खंखेरी नाखेलुं (४) तजेलुं (५) न० अनादर: तिरस्कार विध्तकल्मच वि० पायमांथी मुक्त थयेलुं विभूतकेश वि० पोताना वाळ आमतेम हलाव्या होय तेव् विध्तनिद्र वि० जागेलुं विधूति स्त्री०, विधूनन न० क्षोभ; कंप; ध्रुजारो (२) अनादर (प्रेमनो) **विध्**म वि० थुमाडा विनानुं विधु १० उ० पकडवुं (२) धारण करवुं; पहेरवुं(३) टेको आपवो(४) अटकाववुं; रोकवुं **विधृत** वि० पकडेलुं (२) छूट् पाडेलुं (३)धारण करेलु; धरेलु(४)अटकावेलुं (५) टेको आरेल् **विघेय** वि० करवा के आचरवा योग्य (२) हुकम, आज्ञा के नियम करवा योग्य (३) –नुं परवश होय तेवुं; —नी असर, काबू के बळ हेठळ होय तेवुं (४) आज्ञाधारक; वश (५) कर्मचारी; कशुं काम सोपवामां आब्युं होय तेवुं (६) न० कर्तव्यः; करवानुं कार्य (७) पुरु दास; नोकर विधेयज्ञ पुं० पोतानुं कर्तव्य जाणनारं विध्वंस १ आ० मागी पडवु (२) विखेराई जवं (३) नाश पामवं विध्वंस पुं० विनाश; बरबादी (२) शत्रुता; अणगमो (३) अपमान विध्वंसिन् वि० नाश पासतुं (२)नाश करतुं (३) भ्रष्ट करनारुं (स्त्रीने) विष्यस्त वि० नष्ट करेलुं (२) विखेरी नाखेलु (३) ग्रस्त; झांखु पडेलु

विनत वि० वांकुं बळेलुं; नमेलुं (२) नीच् ढळतुं (३) ऊंडु ऊतरेलुः नीचु गयेलुं (४) बांकुं (५) विनयों; नम्र विनता स्त्री० अरुण अने गरुडनी माता **विनतात्मज** पुं० गरुड के अरुण विनति स्त्री० तमवुं – बळवुं ते (२) नम्रता (३) विनंती **विनद् १** प० अवाज करवो ; रणकवुं (२) गर्जना करवी (३) चीसोथी भरी काढवुं –प्रेरक० टहुकार करे तेम करवुं **विनद** पुं० अवाज; सब्द विनम् १ प० वळवु; नमवु –प्रेरक० बाळवूं (धनुष्य) **विनम्न** वि० वांकुं वळेलुं (२) नीचुं नमेलुं (३) अंड्र गयेलुं (४) नम्र विनय पुं० तालीम; उपदेश; शिक्षण (२)सभ्यता; शिष्टाचार(३)नम्रता (४)दूर करवुं --काढी नाखवुं ते (५) दंड; शिक्षा (६) धंधो; कामकाज विनयकर्मन् न० शिक्षण; तालीम विनयन न०दूर करवुं ते; काढी नाखवुं ते (२) शिक्षण; तालीम विनर्दे १ उ० गर्जना करवी; गाजवं **विनदिन्** वि० अवाज करतुं; गर्जतुं **धिनञ् ४** प० नास पामवु; मरी जवृं (२) लुप्त थवुं; अदृश्य थवुं (३) निष्फळ थवु; वरबाद थवु विनशन पुं० सरस्वती नदी ज्यां लुप्त थाय छेते स्थान (२) न० नाशः; लुप्त थवुं ते विनष्ट दि० नाश पामेलुं (२) खोवा-येलुं; लुप्त ययेलुं (३) भ्रष्ट थयेलुं विनष्टि स्त्री० नाश; पायमाली **विनस** वि० नाक बगरन् **बिना** अ० सिवाय; वगुर **विनाकृत** वि० विनान् ; –रहित ययेलु ; तजायेलुं (२) एकलुं

विनाभव, विनाभाव पुं० वियोग विनायक पुं० दूर करनारो (विघ्नोने) (२) गणेश (३) नायक; मार्गदर्शक (४) गुरु (५) गरुड विनाश पुं० नाश; बरबादी (२) दूर करवुं ते (३) मृत्यु (४) कार्यब्रह्म; क्षणभंगुर दुनिया विनाशधर्मन्, विनाशधीमन् वि० क्षण-भंगूर; नाश पामे तेव् विनाशोनमुख वि० नाश पामवानी तैयारीमां होय तेवुं विरायेल विनिकीर्ण वि० आम तेम वीखरायेलुं के **विनिकृत** वि० अनादृत; अपमानित(२) ईजा के हानि पामेलुं विनिक् ६ आ० फेंकी देवुं; दूर करवुं; तजवुं (२) विखेरवुं; वेरवुं विनिक्षिप् ६ आ० सोंपवुं; आपी देवुं (२) उपर के अंदर मूकवुं (३) फेंकी देवुं; जयलादी काढवुं विनिगड वि० सांकळ के बंधन विनानु विनिग्रह् ९ प० विनिगृह्णाति विग्रह करवो; अटकायत करवी; इसल करवी (२)पकडवुं ित; दबाववुंते विनिश्रह पुं० काबूमा के नियंत्रणमां लेव विनिद्र वि० निद्रारहित; जागतुं (२) खीलेलुं; <mark>ऊघडेलुं; विकसेलुं</mark> विनिपत् १ प० नीचे पडवुं; तरफ धसर्व - अतरवुं (२) हुमलो करवो –प्ररक्त० वरबाद करवुं (२) नीचे पाडवुं (३) मारी नाखवुं **विनिपन्न** वि० नष्ट **विनिपात** पुं० पतन; पडवुं ते (२) अपित्ति; बरबादी (३) क्षय; मृत्यू (४) नरक; अधोगति (५)बनव् के थवुते (६) दुःखः, कष्ट विनिपातगत वि० मुक्केळीमां आवी पडलुं; दुर्भागी [विघ्वंसक विनिबर्हण वि० कचरी नाखनाहं:

विनिमय पुं० लेवड-देवड; अदलो-बदलो विनिमेष पुं० (आंखनो)पलकारो (२) इशारो

विनियत वि॰ काबूमां लीधेलुं के राखेलुं (२) मर्यादित; प्रमाणसर एवुं विनियम् १ प॰ [विनियच्छति] काबूमां लेवु (२) मर्यादित करवु

विनियुज् ७ आ० वापरवुं; उपयोगमां लेवुं (२) नीमवुं (३) वहेंचवुं; भाग पाडवा (४) छूटुं – जुदुं करवुं (५) छोडवुं (वाण)

-प्रेरक • नीमवुं; योजवुं(२) हुकम करवो (३) अर्पवुं (४) उपयोग के अमल करवो

विनियोक्तृ वि० नीमनारुं; योजनारुं विनियोग पुं० जुदुं पाडवुं ते (२) तजवुं ते (३) उपयोग करवो ते; उपयोगमां ठेवुं ते (४) निमणूक (५) विघ्न विनिर्गम् १ प० [विनिर्गच्छति] बहार

जवं (२) अदृश्य थवं ; देखाता बंध थवं (३) चाल्या जवं ; विदाय धवं (४) -मांथी छूटवं [धवं ते विनिगंम पुं० अदृश्य थवं ते (२) विदाय

विनिजंय पुँ० विजय; फतेह विनिजंब १ प० जीतबुं; ताबे करबुं विनिजंब पुं० पूरेपूरो निजंय-निश्चय

(२) खातरी (३) निश्चित नियम विनिमित वि० –नृ बनावेलु (२) रचेलु; सर्जेलु (३) निर्माण थयेलु

विनिर्वृत् १ आ० बंध पडवुं; अटकवुं; समाप्त थवुं (२) सिद्ध थवुं; पूरुं थवुं (३) न बनवुं के थवुं

–प्रेरक० सिद्ध करवुं; पूरुं करवुं विनिर्वृत्त वि० बहार नीकळेलुं; प्रगट थयेलुं (२) कृतकृत्य; पूर्णं; सिद्ध

विनिविद् २ प० जणाववुं; कहेवुं (२) पोतानी जातने जाहेर करवी (३) दर्शाववुं; देखाडवुं (४) अर्पवुं

विनिविञ् ६ प० -मां बेसवुं;-मां मुकावुं -- प्रेरक० मूकवुं; स्थापवुं (२) वसाहत करवी (३) दाखल करवु विनिवृ १० उ० (के प्रेरक०) निवा-रवुं; रोकवुं (२) मना करवी विनिवृत् १ आ० पाछा फरवुं (२) थोभवुं;समाप्त थवुं(३) -यी विमुख थवुं; –यी अटकवुं --प्रेरक० अटकाववुं;बंध करवुं(२) रोकवुं (३) त्यागवुं विनिवृत्त वि० पाछुं फरेलुं (२) अट-केलु; थोभंलु; विरमेलुं विनिवृत्ति स्त्री० अटकाववुं, योभाववुं के दूर करवुं ते (२) समाप्ति विनिवेश पुं० प्रवेशवुं के वसाहत करवी ते (२) छाप पडवी ते विनिदिच ५ उ० निश्चय करवो विनिध्यितम् अ० चोकसः; नक्की विनिष्पत् १ प० धसी जवुं; ऊडी नीकळव् (२) नासी जबु **विनिह**त वि० हणायेलु; घवायेलुं; मरायेलुं (२) तद्दन ताबे थयेलुं (३) पुं० दैवी आपत्ति (४) दुश्चिह्न **विनिहतात्मन्** पुं० जेना आत्मा नाश पाम्यो होय तेवुं िमायेल् **विनिहित** वि० मुकायेलुं; मूकेलुं (२) विनिहितदुष्टि वि० उपर दुष्टि स्थिर करी होय तेवुं; उत्कंठापूर्वक जोतुं विनिहितमनस् वि० –मां लागेलुं विनिह्नत वि० ना पाडेलुं; इन्कारेलुं (२) छुपावेलुं; संताडेलुं विनी १ उ० दूर करवुं; नाक्ष करवुं (२) शीखववुं; तालीम आपवी(३) ताबे करवुं; वश करवुं (४) शांत पाडवुं; (गुस्सो; आ०) (५) व्यतीत करवुं (समय) (६) खर्चवुं; वाप-रवु (आ०) (७) आपी देवु (खंडणी तरीके; आ॰) (८) दोरी जवुं;

लई जवुं (९) प्रेरवुं; हकम करवो

विनीत वि० लई जवायेलुं; दूर करा-येलुं (२) सुशिक्षित; तालीम पामेलुं (३)सभ्य; शिष्टाचारवाळुं(४)नम्न; विनयी (५) काढी मुकेलुं; मोकली दीघेलुं (६) केळवेलुं (७) शिक्षा करी होय तेवुं (८) संयमी (९) सुंदर (१०) फेलावेलुं; पाथरेलुं विनीतवेष पुं० सादो पोशाक विनोति स्त्री० शिष्टाचार (२) आदर विनुद्६ प० भोंकवुं (२) (वीणा वगेरे) वगाडवुं (३) दूर करवुं प्रोरक० हांकी काढवुं; दूर करवुं (२) व्यतीत करवुं (समय) (३) आनंद पमाडवो (४) आनंद मानवो विनेतृ पुं० नायक; नेता (२) मुरु; शिक्षक (३) राजा (४) शासक; शिक्षा के सजा करनारो विनेय पुं० शिष्य विनोद पुं दूर करवु ते (२) आनंद; रमत; कीडा [करवुंते विनोदन न० कीडा; खेल (२) दूर विनोदरसिक वि० सुख -- आनंदमां प्रीतिवाळ् दिर करेल विनोदित वि० आनंद पमाडेलुं (२) विम्न ('विद्'नु भ०कृ०) বি৹ जाणेलु (२) मळेलुं; मेळवेलुं (३) चर्चेलुं; तपासेलुं (४) मूकेलुं; स्थापेलुं (५) परणेलुं विन्यस् ४ प० मूकवु (२) -तरफ प्रेरवुं; –मां लगाडवुं (३) थापण तरीके सोपवु (४) गोठववुं विन्यस्त वि० मूकेलुं; नीचे मूकेलुं(२) जडेलुं; बेसाडेलुं (३) गोठवेलुं (४) थापण तरीके मूकेलुं (५) न० गोठ-वणी: स्थापना विन्यास पुं० यापण तरीके सोंपवुं ते; थापण (२) गोठवणी; रचना (३)

विष् १० उ० फेंकवुं (२) १ आ० ध्रूजवुं; कंपवुं विकसेलु;परिपूर्ण थयेलुं विपक्व वि० पूरेपूर्हं यक्व थयेलुं (२) विपक्ष वि० सामा पक्षानुं; विरोधी; वेरी (२) पुं० दुश्मन; सामावाळियो (३)हरीफ स्त्री के शोक (४)चर्चामा सामो पक्ष लेनारो (५) निष्पक्षता; निरपेक्षता विषक्षभाव पुं० शत्रुवट; वेरभाव विपक्षरमणी स्त्री ० हरीफ स्त्री (प्रेममा) विपच् १ प० परिपक्व थवुं; परिणत थवुं; फळ नीपजवुं (२) पचाववुं(३) बाफवुं; पकाववुं विपट् १० उ० फाडी काढवुं; चीरी नाखवुं(२)खेंची काढवुं ; निर्मृळ करवुं (३) खुल्लु करवुं (४) हांकी काढवुं **विपण् १** प० वेचवुं (२) होड बकवी **विषण पुं०, विषणत** न० वेचाण ; वेचवुं ते(२)नानो वेपार(३)नानुं बजार के हाट(४)सोदो [माल(३)वेपार विपणि स्त्री० बजार (२) वेचवानी **विपणिन् पुं**० वेपारी; दुकानदार विषणी स्त्री० जुओ 'विषणि' विपत्काल पुं अरपत्तिनो समय;द्भाग्यनो विपत्ति स्त्री० आफत; मुक्केली (२) मोत; विनाश (३) यातना (४) अंत (५) पुं वीर पायदळ सैनिक विपत्तिकाल पुं जुओ 'विपत्काल' विषय पुं० आडो मार्ग;अवळो मार्ग विपद् ४ आ० निष्फळ जवुं; शून्य परिणाम आववुं (२) आपत्ति –दुर्भा-ग्यमां आवी पडवुं (३) अपंग के अशक्त यवुं (४) मरी जबुं ; नाश पामबुं विपद, विपदा स्त्री० विपत्ति; आफत; मुश्केली (२) मोत विषम्न ('विषद्'नुं भू० कृ०) मृत(२) नष्ट (३) आपद्ग्रस्त (४) अशक्त: मुखित होय तेव्

विपन्नवीयिति वि० जेनुं तेज चाली गयुं

(अवयवोनी) स्थापना (४) प्रदर्शन

विपन्नदेह वि० मृत विपरिकान्त वि० पराक्रमी; बहादुर विपरिगा ३ ५० ऊथली पडवुं; ऊंधुं पडवुं (जेमके गाडुं) **विपरिणम्** –प्रेरक० –मां रूपांतर करवें --कर्मणि० --मां परिणमवु; --मां रूपांतर थवुं (२) खोटुं परिणाम के रूपांतर थवुं विपरिवर्तनविद्या स्त्री० कोई माणस पाछो फरे ते माटेनी विद्या - मंत्र विपरिवृत् १ आ० गोळ फरवुं; भमवुं (२) गबडवं (३) आम तेम भटकवं (४) घंरी वळवुं विपरिश्रमता स्त्री० थाक न लागको ते ; थाक न लाग्यो होय तेवी स्थिति **विपरी** (विपरि+इ) २ प० **ऊ**लटी दिशामां फरवं (२) निष्फळ जवं (३) खराब परिणाम आववुं (४) गोळ फरवुं; पाछा फरवुं विपरीत वि॰ ऊलटुं; अवळुं;ऊंधुं(२) विरुद्धः; सामेनुं (३) नियमधी ऊलटुं (४) खोटुं; जूठुं (५) प्रतिकूळ (६) अवळी रीते वर्तनारं विपरीतकारक वि० अवळ् -- प्रतिकूळ विपरीतता स्त्री०, विपरीतत्व न० अवळापणुं ; ऊलटापणुं ; विरोध विषयंय वि॰ ऊलटुं; अवळूं (२) पुं॰ विरुद्धपणुं ; अलटापणुं ; अवळापणुं (३) पलटो; बदलो(४)अभाव; रहितपणुं (६) विनाश (७) विनिमय (८) भ्रम; भूल(९)दुर्भाग्य(१०)शत्रुता (११)प्रलय **विपर्यस् ४ प०** उलटाववुं;अवळ् करबुं; ऊंधुं करवं (२)पलटाववुं;बदलवुं (३) खोटुं समजवुं (४) विपरीत थवुं; बदलाव् विपर्यस्त वि० पलटायेलुं; ऊंधुं –अवळ् करेलु (२) बिरुद्ध ; ऊलटुं (३) खोटी रीते साचुं मानेलुं विषयंय विषयीय पुं• अवळापणुं; ऊलटापणुं;

विपर्यास पुं ॰ पलटो;बदलो (२) अवळा-पण्; ऊलटापण्; प्रतिकूळ होवापण् (४) विनिमय (५) भ्रम; भूल (६) (समयन्) व्यतीत थवुं ते विपल न० पळनो ६० मो के छठ्ठो भाग; समयनो अति सूक्ष्म अंश विपदिचत् वि० विद्वानः; डाह्युः; पंडित (२) पुं० ज्ञानी माणस विपंचिका, विपंची स्त्री० वीणा (२) रमत; क्रीडा विपाक पुं० रांधवूं ते (२)पचवुं ते (३) परिपक्व थवं ते (४) फळ; परिणाम (५) पलटो; बदलो (६) अणधारी आफत (७) करमावु-चीमळावु ते **विपाट** पुं० एक प्रकारनुं बाण विपाटल वि० घणुं ज रातुं विपाटित वि० उखाडी काढेलुं; फाडी विषाठ पुं० एक जातनुं मोटुंबाण विपादन न० वध; नाश विपाश, विपाशा स्त्री० पंजाबनी पांच नदीओमांनी एक (आजनी बियास) विषांडु, विषांडुर वि० पीळाश पडतुं विषित वि० गहन; गाढ (२) न० अरण्य; झाडी (३) समूह; जथो **विपिनौक**स् पुं० वांदर्र विपुरुष वि० निर्जन; खाली विपुल वि० मोटुं; विशाळ (२)घणुं; पुष्कळ (३) गाढ; ऊंडुं (४)रोमांच-युक्त (५) पुं० मेरु (६) हिमालय विपुष्ट वि० पूरुं पोषण न पामेलुं विपुंसक वि० नपुंसकः; नामदे । घास **विपूर्य** वि०पवित्र करनारुं (२) न**० मुंज** वित्र पुं० ब्राह्मण (२) ऋषि; डाह्मी माणस (३) अश्वत्थ वृक्ष विप्रकर्ष पुं० अंतर; दूरपणुं(२) तफावत (३) खेंची जब के हरण करी जब ते विप्रकार पुं० अपमान; अनादर (२) अपकार; अपक्टत्य (३) दुष्टता (४) विरोध; सामनो

विप्रकीर्ण वि॰ वीखरायेलुं; पथरायेलुं (२) छुटुं; ऊडतुं (वाळ) विष्रकृ ८ उ० पजववं; त्रास आपवो; पीडवुं(२)खोटुं लगाडवुं; खोटी रीते वर्तवु(३)असर करवी; बदलवु(४) कदरूपु बनाववु; बगाडव् (५) (शाहेद तरीके) लाववुं; नीमवुं विप्रकृत वि० हणायेलुं; पीडायेलुं(२) अनादर करायेलुं (३)छछेडेलुं; पजवेलुं **विप्रकृष् १** प० दूर करवुं; दूर खेंची जवुं **विप्रकृष्ट** वि० खेंची जवायेलुं;दूर करेलुं (२) आर्घु; दूरनुं (३) लंबायेलुं विप्रणश् ४ प० नाश पामवुं; लुप्त थवुं विप्रतिपत्ति स्त्री० मतभेद; विरोध (२) गूंचवण; मूंझवण(३)दुश्मनावट(४) भूल; खोटुं समजवुं ते (५)संशय (६) निपुणता; प्रवीणता विप्रतिपद् ४ आ० मतभेद के विरोध होवो (२) आनाकानी करवी (३) खाटो जवाब आपवो विप्रतिपन्न वि० परस्पर विरोधी एवं (२)मूंझायेलुं (३)अवरोघायेलुं(४) विरोध के प्रतीकार करायेलुं विप्रतिषेष पुं० निग्रह;काबू(२)सरसी अगत्यतां बे कार्यों नो परस्पर विरोध विप्रतिसार, विप्रतीसार पुं० पस्तावो (२) गुस्सो (३) दुष्टता विप्रत्यय प्० अविश्वास विप्रदह पुं० फळ-मूळ वगेरेनो सुको विश्रदुष्ट वि० भ्रष्ट; दुराचारी विप्रवर्ष पुं० पजवणी; छेडती **विप्रनष्ट** वि० खोवायेलुं (२) नकामुं विप्रपात पुं० कराड; ज्यांथी आगळ भवंकर खाडो आवतो होय तेत्री जगा विप्रमुक्त वि० मुक्त के छूटुं करेलुं(२) ढीलुं करेलुं; छोडी नाखेलुं(३)फेंकेलुं; छोडेलुं; तांकेलुं(४) (समासमां) --शी रहित; –विनान्

विप्रमुख् ६ प० |विप्रमुञ्चति | छोडवुं; मुक्त करवुं (२) फेंकबुं; ताकबुं **विप्रयुक्त** वि० छुटुं पाडेलुं (२)–विनानुं (३)-मांथी मुक्त करेलू विप्रयुज् ७ आ० छुटुं पाडवुं;(कोईने) –विनानुं करवुं -कर्मणि० -थी छूटु पडवु विप्रयोग पुं । छूटुं पडवुं ते(२)प्रेमीओनो वियोग – विरह (३)तकरार (४)अभाव विप्रलप्त न० वादविवाद(२)बकवाद(३) िनासीपास थयेल् विलाप विप्रलब्ध वि० छेतरेलुं; ठगायेलुं(२) विप्रलब्ध् वि० छेतरनारुं विप्रलभ् १ आ० छेतरवुं; ठगवुं(२) अनादर करवो (३) उल्लंघन क**र**वुं **विप्रलय** पुं॰ पूरेपूरो प्रलय विप्रलंभ पुं॰ छेतरवुं ते; ठगवुं ते(२) निराशा (३) भ्रम (४) खोटुं बोलीने के वचन न पाळीने छेतरवं ते (५) तकरार (६) छुटा पडवुं ते; वियोग; विरह **वि**प्रलं**भन** न० छेतरामणी; ठगाई **विप्रलुप्त** वि० झंटवी लीघेलुं(२)दखल करायंत्र विप्रलून वि० कापेलु; चूटेलु; वीणेलुं विप्रवस् १ प० (घरथी दूर)प्रवासे होवुं (२) प्रवासेथी पाछा फरव्ं –प्रेरक० दूर करवु; काडी मूकवु विप्रवाद पुंज मतभेद; जुदो अभिप्राय विप्रवास पुं० (घरथी दूर) परदेशमां रहेबुं ते [जुआ 'वि<mark>प्रव</mark>ास' **विप्रवासन** न० देशनिकाल करवुं ते (२) विप्रदिनक पुं० दैवज्ञ; भविष्य भाखनारो विप्रसन्न वि० खूब खुश थयेलुं विप्रस्व न० ब्राह्मणनी मिलकत विप्रहत वि॰ मारी पाडेलुं; हरावेलुं (२) रोळी नाखेलुं वित्रहाण न० लुप्त थवं ते; वंध थवं ते विप्रहीण वि० च्युत; भ्रष्ट (२) लुप्त

विप्रिय वि० अप्रिय;अगगमतुं(२)न० अणगमत् कार्यः अपराध विश्रुष् स्त्री० बिंदु; टपकुं विप्रोषित ('विप्रवस्' नुं मृ० कु०) वि० प्रवासे गयेलुं; गेरहाजर (२) देश-निकाल करायल विष्लव पुं० आमतेम ऊछळवुं के तणावुं ते (२) विरुद्धता (३) तोफान; वांधळ (४) हानि; नाश (५) प्रतिकूळता (६)अंघाधूंबी (७)शत्रु तरफवी भय (८)दर्पण उपरनी मेल (९) उल्लंघन (१०) नौकान् तोफानमां ड्बी जब ते विष्लु १ आ० आमतेम ऊछळवुं --तणावुं (२)मूंझावुं(३)वरबाद थवुं –प्रोरक० तरे के तणाय तेम करव् (२) अपात्रने शीखववुं (३) बगाडी मूकवुं; बरबाद करवुं (४) मूंझवबुं विष्लुत वि० आमतेम तणातुं (२) डूबी गयेलुं; उपर पाणी फरी वळघुं होय तेवुं(३)मूंझायेलुं(४)बरबाद करेलुं (५)लुप्त(६)भ्रष्ट;स्वच्छंदी; दुरा-चारी (७) खोटुं ठरे तेवुं (८) क्षुब्ध ; व्याकुळ (९)न० कूदवुं-ऊछळवुं ते; तोडीने नीकळी ज है ते **विप्लुतनेत्र** वि० (आंसु वगेरेथी)आंखो ऊभराई गई होय तेव् विष्लुतभाषिन् वि० न समजाय तेत्रुं बोलतुं; तोतडातुं विष्लुष् स्त्री० विदु; टपकुं (पाणीनुं) विफल वि० निष्फळ; नकामुं विबुद्ध वि॰ जगाडेलुं; जागतुं (२) विकसेलुं; खीलेलुं(३)कुशळ; होशियार विव्य १ पा०, ४ आ० जागव (२)भानमां आववं (३) जोवं ; कोळी काढवं –प्रेरक० जगाडवुं (२)भानमां लाववुं विबुध पुं० डाह्यों के ज्ञानी माणस; ऋषि (२) देव (३) चंद्र

विवोध पुं० जागवुंते; जगाडवुंते(२) जोबंते; खोळवंते (३) ज्ञान (४) भानमां आववं ते (५) दुर्रुक्ष (६) खुल्लुं करवुं ते; प्रगट करवुं ते **विब्र** २ उ०बोलवुं (२)—विषे कहेवुं (३) खोटं कहेवं (४) समजाववं; अर्थ करी बताववो (५) झघडवुं (६) असमत थवुं **विभक्त** वि० वहेंचेलुं; हिस्सा पाडेलुं (२) छूटुं पडेलुं (३) विविध (४) शण-गारेलुं(५)मापेलुं (६) पुं० कार्तिकेय विभक्ति स्त्री० विभाग; हिस्सो; भाग (२)नामनो किया साथै संबंध देखा-डनार प्रत्यय(व्या०) विभज् १ उ० भाग पाडवा; वहेंची आपवं(२)विवेक करवो; सारासार विचारवो (३)–मांथी छूटुं पाइवुं **विभज्य** अ० भाग पाडीने ; जुदु पाडीने विभव पुं० संपत्ति; वैभव (२)शक्ति; सामर्थ्य (३) ऊंचुं पद (४) पालन (५) मोक्ष (६) विकास; उत्क्रांति विभंग पुं० भागवुं ते; तूटवुं ते (२) अट-काववं -रोकवं ते (३) बाळवं -ऊंचु चडाववुं ते (भमर)(४)गडी ; करचोली (५) पंगिथयुं; निसरणी (६) प्रगट **अव्**-करव् ते(७)विभागः; खंड विभंगुर वि० अस्थिर; चंचळ (नजर) **विभंज्** ७ प० भागवुं;टुकडा करवा विभा २ प० दीपवुं; प्रकाशवुं (२) देखावुं; नजरे पडवुं(३)परोढ **थव**ुं विभा स्त्री० तेज; कांति (२)किरण (३) सौंदर्य; शाभा विभाकर पुं० सूर्य (२) अनि विभाग पुं० भाग; हिस्सो (२) टुकडो; खंड; अंश (३)गोठवणी विभात न० परोड; प्रभात विभाव पुं० स्थायी भावोने उद्दीप्त करनार वस्तु के परिस्थिति (काव्य०) विभावक वि० प्रगट करतुं; दर्शावतुं (२) चर्मत् (३) मेळवी आपत्

विब्धद्विष्, विब्धशत्रु

Ψo

विभावन न०, विभावना स्त्री० तत्त्व-निर्णय (२) चर्चा; परीक्षणं (३) कल्पना; धारणा (४) विकास (५) पालन (६) दर्शन (७) प्रगट करवुं ते विभावनीय वि० दृश्य विभावर वि० प्रकाशित; तेजस्वी विभावरी स्त्री० रात्रि (२)वाचाळ स्त्री जातनो हार (३)दुराचारी स्त्री विभावसु पुं० सूर्य (२) अग्नि (३) एक विभावित वि० प्रगटकरेलुं; देखाय तेम करेलुं (२) जाणेलुं; समजेलुं; अवधारित करेलुं (३)क्ल्पेलुं; अनु-मान करेलुं (४) सिद्ध थयेलुं के करेलुं विभावितेकदेश वि० एक अंशमां जे पकडाई गयुं छे–दोषित पुरवार थयुं छे तेव् शिकाय तेव् विभाव्य वि० समजी शकाय - चित्रवी विभास स्त्री० प्रकाश; तेज विभिद् ७ उ० भागवुं; तोडवुं (२) भोंकवुं; वींघवुं(३) जुदुंपाडवुं (४) छोडवुं (गांठ) (५)भंग करवो (६) भेदभाव ऊभो करवो –कर्मणि० बदलावुं -प्रेरक० जुदुं करवुं (२) भेदभाव क्रमो थाय तेम करवुं(३)दूर करवुं; हांकी काढव् विभिदा स्त्री० भेद विभिन्न वि० भांगेलुं; तूटेलुं वीधायेलुं, घवायेलुं (३) हांकी काढेलुं; विखेरी काढेलुं; दूर करेलुं (४) हताश (५) मिश्रित प्रगट करेलुं के थयेलुं (६) बेदफा नीवडेलुं (७) पुं० शिव विभी वि० निर्भय विभीतक पुं० बहेडानुं झाड **विभोषण** वि० भयकारक (२) पुं० रावणनो भाई (रामनो भक्त) विभीषा स्त्री० डराववानी इच्छा

विभीषिका स्त्री० डर; भय (२) डराववानुं साधन (चाडियो) विभु वि० बळवान; शक्तिशाळी (२) मुख्य; श्रेष्ठ (३) शक्तिमान (४) संयमी; आत्मनिग्रही (५) सर्वेव्यापी (६) पुं० आकाश (७) स्वामी ; राजा (८) सम्राट; राजा (९) शिव विभुग्न वि० वळेलुं; वाळेलुं विभुता स्त्री० सामर्थ्य; प्रभाव विभू १ प० देखावुं; प्रगट थवुं(२) व्यापवुं (३)पूरता थवुं ; शक्तिमान थव्ं –प्रेरक विचारवु; चितववुं(२) जाणवुं (३) निहाळवुं (४) प्रगट करवुं(५)धारवुं; कल्पवुं(६)पुरवार करवुं (७) रक्षवुं विभूति स्त्री० शक्ति; सामर्थ्य (२) ऐश्वर्य; संपत्ति (३)अलौकिक शक्ति –सिद्धि (४) विस्तार विभूष १०उ० शणगारव् विभूषण न० आभूषण; अलंकार विभूषा स्त्री० आभूषण; अलंकार विभूषित वि० शणगारेलुं; अलंकृत (२) न० आभूषण; शणगार विभेद पुं० भागवुं; जुदुं पाडवुं; टुकडा करवा(२)विभागः, भागलाः; जुदा-पणुं (३) वींधवुं – घायल करवृं ते (४) विरोध (५) वेर (६) भेवा चडाववां ते (७) विविधता विभ्रम् १,४,प० भटकवुं; भमवुं(२) गोळ फरवुं(३)मृझावु; गूचवावुं(४) पटपटाववं (पूछडो) विभ्रम पुं० आमतेम भटकवुं ते (२)गोळ फरवुंते(३)भ्रम; भूल (४)व्याकु-ळता (५) व्याकुळताने कारणे घरेणां बगेरे अस्थाने पहेरवां ते (६) विलास-चेष्टा (७)सौंदर्य ; शोभा (८) क्षोभ ; गाभरापण्(९)गर्वः अभिमान **विभ्रष्ट** वि० पडी गयेलुं; जुद्रं पडेलुं;

नीकळी गयेलुं(२)विनष्ट (३) लुप्त (४)–विनानुं; रहित विश्रंश् १ आ० [विश्रंशते], ४ प० [विभ्रश्यति] नीचे गरी पडवुं – सरकी यडवुं – टपकी पडवुं (२) विना**श** पामवी (३) अवनत थवं (४) स्रोवं (५) लुप्त थवुं (६) निष्फळ नीवडवुं **विश्रंश पुं ०** नीकळी – सरी पडवुं ते (२) अवनति; विनाश(३)कराड(ज्यांयी नीचे पडी जवाय) विभाज् १ आ० दीपवुं; प्रकाशवुं विश्वांत वि० गोळ फरेलुं~फरतुं(२) क्षुब्धः; व्याकुळ (३) भूल करतुं(५) चौतरफ फेलायेलुं (यश) विमत वि० जुदा अभिप्रायवाळुं (२) असंगत (३) अपमानित (४) संशयग्रस्त विमति वि० मूर्ख (२) स्त्री० मतभेद (३) अणगमो (४) मूर्खता (५) क्षघडो; तकरार विमत्त वि० मद झरतुं; उन्मत्त विमय् १प० जुओ विमय् विमद वि० मद - अभिमान रहित (२) आनंदरहित; खिन्न **विमन्** --प्रेरक० अपमान करवुं विमनस्, विमनस्क वि० नाखुश; खिन्न (२) बेध्यान (३) ध्याकुळ; गाभकं विमनीकृत वि० नाखुश थयेलुं (२) मनोभाव बदलायो होय तेवु (३) खिन्न विमन्य वि० कोधरहित (२)शोकरहित **विभर्द** पुं० दबाववुं -कचरवुं - छूंदवुं ते (३) मसळवुं - धसवुं ते (४) बगाडवुं ते (५)स्पर्शकरवो ते (६) खरडवुं ते (७) युद्ध ; लडाई (८) विनाश ; बरबादी विमर्दन न०, विमर्दना स्त्री० दबाववुं-कचरवुं-छूंदवुं ते (२) घसवूं ते (३) विनाश; वध (४) युद्ध **विमर्दित** वि० दबावेलुं; कचरेलुं; खांडेलुं(२)घसेलुं(३)खरडेलुं

विमर्श पुं० विचारणा (२) नाटकमां बस्तुना फल्टित यता जता विकासमां कोई अकस्मातथी रुकावट के पलटो थवो ते (नाटच०)(३)जुओ 'विमर्शन' विमर्शन न० विचारणा; तपास; चर्चा (२) तर्क (३) आनाकानी; संशय (४) पाछलां कर्मोनो संस्कार–वासना **विमर्शिन्** वि० विचार के तपास करतुं विमर्खपु० नाखुशी; अणगमी (२) अघीरता; असहनशीलता **विमर्षिन्** वि० असहनशील; अघीर (२) अणगमावाळ् विमल वि० निर्मळ; स्वच्छ; पारदर्शक (२) सफेद; उज्ज्वळ विमलाक्ष वि० वाळनां दश गूचळां -आवर्तवाळुं (घोडो) विमलाद्वि पुं० गिरनार पर्वत विमंथ् ९ प० विखेरवु(२)विनाश करवो (३) गूंचववुं; गामकं बनाववुं विमात् स्त्री० सावकी मा; अपर माता विमान वि॰ मानरहित; अनादृत (२) पुं०, न० अपमान (३) आकाशमां फरी शके तेवुं वाहन (४)कोई पण वाहन (नौका ६०) (५) सात माळनो महेल (६) म्याना विमानगामिन् पुं० देव विमानचारिन वि० विमानमां फरत् **विमानधुर्य** पुं० म्यानो अंचकनार्छ विमानन न०, विमानना स्त्री० अनादर; अपमान; तिरस्कार(२)ना पाडवी ते; नकार **विभानयान** वि० विमानमां फरतुं विमानराज पुं० उत्तम देवी वाहन विमानवाह पुं० म्यानो ऊंचकनारो विमानित वि० अपमानित; अनादृत विमार्ग पुं॰ खराब रस्तो (२) अवळो मार्गः; दुराचार विमार्गगा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री

विमार्गगामिन्, विमार्गप्रस्थित मिश्रणवाळ् दुराचारी विमिश्र, विमिश्रित वि० सेळभेळ थयेलुं, **विमुक्त** वि० छूटुं करेलुं; मुक्त करेलुं– थयेलुं(२)तजी दीघेलुं; छोडी दीघेलुं (३) फेंकेलुं; नाखेलुं (४) युक्त विमुक्तमीनम् अ० मीन तजीने **विमुक्ति** स्त्री० छुटकारो (२) मो**क्ष** विमुख वि० मों फेरवी लीधुं होय तेवुं (२) पराङमुख ; निवृत्त (३) विरुद्ध ; प्रतिकूळ (४) –रहित; –विनानुं (समासमां; उदा० 'करुणाविमुख') विमुख वि० मूंझायेलुं; मूढ बनेलुं विमुच् ६ प० [विमुचिति] मुक्त करवुं; छ्टं करवुं(२)छोडवुं; गांठ स्रोली नाखवी (३)तजबु; छोडबुं(४)अना-मत राखवुं; बाजुए काढवुं (५)टपका-ववुं (आंसुं) (६) फेंकवुं (७) उतारी नाखबुं (कपडां) **विम्ह**्४ प० मूं झावुं(२)मो हित थवुं(३) मूढ बनवुं; मूर्खं वनवुं विमृद् ९ ५० दबाववुं (२) कचरवुं; छूदवुं (३)नाश करवो ; बरबाद करवुं विमृद्ध वि० मूझायेलुं; मूद्ध बनी गयेलुं (२) लोभायेलुँ; मोहित थयेलुं (३) मूर्ख (४) डाह्युं; पंडित विमुढात्मन् वि० मूढ बनेलुं; मूर्ख विमोक्ष पुं० मोक्ष; छुटकारो (२)फेंकवुं ते(३) अर्पण; बक्षिस **विमोचन** न० छोडवुं ते (जेमके इंसरीमांथी)(२) छुटकारो (३) मोक्ष वियत् न० आकाश वियत्पताका स्त्री० वीजळी **वियन्मध्यहंस** पुं० सूर्य विषु ३ प० छूटा पडवं (२) -थी रहित बनवुं (३) रोकवुं वियुक्त वि० छूटुं पडेलुं (२) –थी तजायेलुं (३) –थी रहित

वियुज् ७ आ० तजवं(२)छूटुं पाडवृं; **~र**हित करवु वियुज्य अ० छुटु छुटु; एक साथे एक वियुत वि० जुदुं पाडेलुं (२) – रहित वियोग पुं० छुटा पडवूं ते (२) अभाव वियोगिनी स्त्री० प्रेमी के पतिना विरहवाळी स्त्री वियोजित वि० छूटुं पाडेलुं –थी रहित | पशुआती योनि वियोनि वि० अत्रम कुळन् (२)स्त्री० विरक्त वि० घणुं लाल (२) रंग बगडी गयो होय के ऊडी गयो होय तेवुं (३) आसक्तिरहित; अणगमावाळ् (४) वैराग्ययक्त विरक्ति स्त्री० असंतोष ; अणगमो (२) वैराग्य; आसक्तिनो अभाव विरच् १० उ० गोठववुं (२)रचवुं; लखबुं (३) उत्पन्न करबुं विरचन न०, बिरचना स्त्री० गोठवणी (२)रचवुते; आयोजन(३)लखाण विरचितः वि० रचेलु(२)गोठवेलु(३) **स्रबे**लु (४) शणगारेलुं विरज वि० रज,दोष के वासनाथी रहित विरजस, विरजस्क वि० रजरहित (२) **भासना** रहित विरजा स्त्री० दुवी(२)एक नदी विरत वि० योभेलुं; अटकेलुं (२) [मांथी अटकेलुं समाप्त विरतप्रसंग वि० ~ना व्यापार के किया-विरति स्त्री० अंत; समाप्ति(२)संसार-नी आसक्तिओ मांथी विरत थवुं ते विरम् १ प० अंत आववो (२)थोभवुं; अटकव्;बंध पडव् (बोलता इ०) विरम पुं० अंत; समाप्ति(२)सूर्यास्त **बिरल** वि० वच्चे खाली अंतर होय तेवुं;गाढ नहिं तेवुं(२)भाग्ये मळतुं; वारवार जोवा न मळत् (२)अत्पः थोडुंक ज (संख्या के जथो) (४)दूरनुं (अंतर के समय)

विरलभक्ति वि० विविधता विनानुं; एकसरख् विरलम् अ० भाग्ये; वारंवार नहि तेम विरस वि० स्वाद विनानुं (२)न गमे तेवुं; त्रास उपजावे तेवुं (३) कूर; लागणी रहित विरह पुं• वियोग; छूटा पडवुं ते (खास करीने प्रेमीथी)(२)अभाव ; न होवापणुं विरहित वि० विहोणुं; विनानुं (२)-थी छूटुं पडेलुं(३)एकाकी 💹 (२)एकाकी बिरहिन् वि० प्रेमीजनथी छुट् पडेलुं **विरंच, विरंचि** पुं० ब्रह्मा **विरंज् १,४ उ**० रूखा थई जवुं के रंग ऊडी जवो (२)धिक्कारवुं; अणगमो थवो (३)वैराग्य थवो विरंजित भ्वि० स्नेह ोछो थयो होय तेवुं; विरक्त थयेलुं विराग पुं० रंग बदलावो ते (२) वलण बदलावुं ते; असंतोष; अणगमो (३) वराग्य;आसक्तिनो अभाव विराज् १ उ० दीपवुं; प्रकाशवु (२) –ना जेवं देखावं (३) शोभी ऊठवं विराज् वि० उत्तम; श्रेष्ठ(२)शासक-राजकर्ता एवं (३) पुं० क्षत्रिय(४) ब्रह्मांड (५) ब्रह्मानुं प्रथम संतान विराज् पुं० गरुड (पंखीओनो राजा) विराजित वि॰ प्रकाशित; प्रकाशतु(२) प्रगट थयेलुं के करेलुं विराट पुं० मत्स्य देशनो राजा (पांडवो तेने त्यां गुप्तवास रहेला) विरात्र पुं०, न० रातनो अंतभाग **बिराघ् ४प०** अपराघ करवो; खोटुं लगाडव विराम पु॰ अंत; थोभव ते (२)विश्रांति विराव पुं० अवाज; कोलाहल **विराद्यण** वि० राव --पोकार करावनार्ह **विराविणी** स्त्री० अवाज; रणकार विरिक्ष पुं० स्वर; ध्वनि

विरिच, विरिचि पुं० ब्रह्मा विच २ प० रडवुं; विलाप करवो (२) अवाज करवो (३)बूम पाडवी विरुग्ण वि० भागीनेटुकडा थयेलुं(२) बुट् थयेलुं विरुच् १ आ० दीपवुं; प्रकाशवुं (२) प्रगट थवुं; देखावुं(३)आगळ पडता थवुं(४)खुश करवुं विरुच पु० अस्त्र उपर बोलातो मंत्र विरुत वि० चीस पाडेलुं (२) अवाज भरेलुं; गाजतुं (३) न० चीस के बूम पाडवी ते (४) कोलाहल (५) गुजारवः; कलरव विरुति स्त्री० चीसो पाडवी ते विरुद्ध पुं०, न० राजानी स्तुति – प्रशंसा विरुदित न० मोटी चीस (२) विलाप विरुद्ध वि० रूंधेलुं; अटकावेलुं (२) **अलटुं; प्रतिक्**ळ; सामेनुं (३) न० विरोध; दुश्मनावट विरुध् ७ उ० विरोध करवो –कर्मणि० विरुद्ध होवुं ; विरोध होवो विरुह् १५० ऊगवुं (२) ऊचे चडवुं –प्रेरक० रुझावुं(घानुं)(२)रोपवुं (३**)**देशनिकाल **कर**व् विरुद्ध वि॰ ऊगेलुं; फूटेलुं(२) नीक-ळेलुं; जन्मेलुं(३)वघेलुं(४)सीलेलुं (५) उपर चडेलुं(६) रुझायेलुं(घा) विरूप वि० कदरूपुं; बेडोळ(२)जुदा रूप के स्वभाववाळ विरूपक वि० कदरूपुं; भयंकर विरूपक्ष पुं• शिव (त्रिलोचन) विरेचन २० जुळाब; रेच विरोक पुं०, न० छिद्र; काणुं विरोचन पुं० सूर्य (२)चंद्र (३)अग्नि (४) प्रहलादनो पुत्र; बलिनो पिता विरोचनसुत पुं० बलिराजा बिरोध पुं विरुद्धता (२) सामनो; दलल (३) घेरो (४) नियंत्रण (५) द्वेष; शत्रुवट(६)कजियो; तकरार

विरोषन न॰ विरोध; सामनो; दसल (२) घेरो (३) द्वेष; कजियो (४) असंगतता

विरोधिन् वि० विरोध, सामनो के दखल करनारुं (२) घेरो घालनारुं(३)विरुद्ध; असंगत (४) द्वेष – शत्रुवट राखनारुं (५) कजियाखोर

विरोपण, विरोहण न० रूझ लाववी ते (२) रोपवुं ते

विलक्षे १० उ० लक्षमां लेवुं; जोबुं (२)जुदुं पाडवुं(३)मूंझावुं

विरुष्ठ वि॰ मूझायेलुं (२) विस्मित (३) लज्जित (४) अस्वाभाविकः; कृत्रिम (५) लक्ष चूकेलुं(बाण)(६) विशिष्ट लक्षण के लक्ष रहित

बिलक्षण वि० विशिष्ट लक्षण विनानं (२) बीजं; जुदं(३) विचित्र; असा-मान्य(४) अशुभ लक्षणवाळुं(५) निस्तेज बिलग् १ प० वळगवं पातळं बिलग् व० वळगेलं; चोटेलं (२) कशः; बिलज्ज् ६ आ० शरमावं; लज्जित थवं बिलप् १ प० कहेवं; बोलवं(२) विलाप करवो; शोक करवो (३) नकामो बडबडाट करवो

विलपन न० शोक; विलाप; आकंद (२)नाहक वडवडाट करवो ते विलपनविनोद पु० हदन वडे शोक दूर विलपित न० शोक; आकंद; विलाप विलभ् १ आ० दूर करवं(२) बक्षवं (३)पसंद करवं [नाश;अंत;मृत्यु विलय पु० ओगळी जवं ते(२)लय; विलस् १ प० प्रकाशवं(२) देखावं(३) विलास करवी; कीडा करवी(५) गरजवं; पडघो पडवो

विलसत् वि० प्रकाशतुं; चळकतुं(२) विलास करतुं(३)पडघो पडतो होय तेयुं;गरजतुं [विलास विलसन न० चमकवुं–प्रकाशवुं ते(२) विलसित वि० प्रकाशितं; चमकतुं (२) देखातुं; व्यक्त (३) न० चमकवुं ते; चमकारो (४) प्रागटच (५) विलस (६) परिणाम

विलंघ १० उ० ओळगवु; अतिक्रमण करवुं(२)—तरफ ऊंचे जवुं(३) तजबुं बाजुए राखवुं (४) चिडियाता थवुं; पाछळ पाडी देवुं(५)अनादर करवी विलंघन न० ओळगवुंते; उल्लंघन विलंघत वि० ओळगेलुं; उल्लंघेलुं (२)—ने पाछळ पाडी दीधेलुं (३) विफळ करेलुं

विलंब १ आ० लबडवुं; लटकवुं(२) नीचे नमवुं — आयमवुं (सूर्यनुं)(३) विलंब करवी (४) अवलंबवुं विलंब पुं० लटकवुंते(२)डील;धीमाश

विलंबन ग० लटकवुं ते (२) विलंब विलंबन ग० लटकवुं ते (२) विलंब विलंबित वि० लटकतुं; लबडतुं(२) अवलंबित(३) विलंब करतुं; विलंब थयो होय तेवुं (४) घीमुं (५) न० ढील; विलंब

विलंबिन् वि० लटकतुं; लबडतुं(२)
ढील-विलंब करतुं | रुदन
विलाप पुं० शोक करवों ते; कल्पांत;
विलापन न० शोक करावे तेवुं कृत्य
विलास पुं० रमत; कीडा(२)शृंगारचेष्टा (३) सौंदर्य (४) आनंदीपणुं
विलासचेष्टित न० शृंगारचेष्टा; शृंगारिक हादभाव

विलासन न० विलास; कीडा विलासवती स्त्री० शृंगारिक हावभाव वाळी स्त्री; विलासी स्त्री विलासिन् वि० विलासपुक्त (२) पुंष् कामी पुरुष [प्रिय स्त्री (३) वेश्य विलासिनी स्त्री० स्त्री (२) विलास विलिख् ६ प० लखवुं (२) चीतरबुं (३) खणवुं (४) अंदर खोसवुं

खरानु (०) जपर खातपु विलिप् ६ प० [विलिपति] चोपडवुं: लीपवुं; खरडवुं विली ४ आ० चोटवं (२) नीचे ऊतरवं; उपर वेसव्(३)ओगळी जवुं ; लय पामवुं (४) लुप्त थई जवुं (५) ९ प० ओगळवुं विलोन वि० चोटेलु; बळगेलु (२) उपर बेठेलुं ; उपर अतरेलुं (३)ओगळी गयेलुं (४) मृत; तष्ट; लुप्त थयेलुं विलुड् –प्रेरक० क्षब्ध करवुं; उछाळवुं (२) उथलावर्बु विलुप् ६ प० खेंची नाखवु; तोडी नाखवुं; कापी नाखवुं(२)लूंटी जवुं (३) बगाडवुं (४) नष्ट करवुं; अदृश्य याय तेम करवुं(५)खाई जवुं(६)भूसी नाखवुं --कर्मणि० नष्ट थवुं; लुप्त थवुं विलुप्त वि० तोडी नाखेलु; भागी नाखेलुं(२)झूंटवी लीधेलुं(३)नष्ट विलुम् ४ प० अस्तव्यस्त थव् –प्रेरक० लोभाववुं (२) आनंद पामे तेम करवु विलुल् १ ५० हलाववुं; कंपाववुं(२) अस्तेव्यस्त करवुं [(२)अस्तव्यस्त विलुलित वि॰ हालतुं; अस्थिर; ऊछळतुं **विलुंटन** न० लूंटवुं ते विलेख पु॰, विलेखा स्त्री॰ बाकु; खणवा खोतरवाथी पडेंलो खाडों विलेपन न० चोपडवुं-खरडवुं ते(२) लेप; सुगंधी पदार्थोनो लेप विलेपिन् वि० चोटे तेवु; चीकण् बिलोक् १० उ० जोवं; निहाळवं(२) तपास करवी [निहाळवुं ते(२)दर्शन विलोक पुं०, विलोकन न० जोवं-**बिलोकित** वि० जोयेलुं(२)तपासेलुं (३)न० दुष्टि; नजर विलोचन वि० विपरीत दृष्टिवाळुं (२) न॰ आंख(३)नजर; दृष्टि विलोचनपात पुं० नजर नाखवी ते विलोडन न० क्षुय्थ करवुं ते; वलोववुं ते (२) (पाणी) उछाळवुं ते विलोप पुंठ, विलोपन न० लूटी जबूं ते (२) नाश; लोप

विलोप्नु पुं ० लूटारी विलोभन न० लोभावव्ंते; प्रलोभन (२) प्रशंसा; खुशामद विलोम वि॰ विपरीत; ऊलटुं (२) अवळा कमन् | अस्तव्यस्त विलोल वि॰ चंचळ; अस्थिर (२) विलोलन न० हलाववुं – इसोळवुं ते बिलोहित वि० राता रंगन् विख .वि० पंखी उपर सवारी करतुं विवक्षा स्त्री० कहेवानी इच्छा (२) इच्छा (३) अर्थ; हेतु (४) आना-कानी; संशय [(३) न० हेतु; अर्थ विवक्षित वि० कहेवा धारेलु (२)इच्छेलु विवक्षु वि० कहेवानी इच्छावाळुं; कहे-वाने तत्पर थयेलुं करवो विवद् १ आ० विवाद करवो (२) झघडो विवदन न० तकरार; फरियाद विवर न०काणुं; छेद (२) खाली जगाः; पोलाण (३) निर्जन स्थळ (४) दोष; छिद्र (५) पाताळ विवरण न० प्रगट करवु ते (२) खुल्लुं करवुं ते (३)व्याख्या; समजूती; टीका विवरप्रवेश पुं० (इच्छित प्राप्त कर-वाना उपाय तरीके) ऊंडी बखोलमां प्रवेश करवी ते विवर्जित वि० छोडेलुं; तजेलुं (२) रहित; विनान् (३) वहेंचेल् विवर्ण वि० फीकुं; रंग विनानुं; निस्तेज (२)खराव रंगनु(३)पुं० वर्णं बहार काढेलुं; बहिष्कृत विवर्त पुं० गोळ -- चकाकार फरवं ते (२) पाछा मबडवुं – फरवुं ते (३) रूपांतर; अवस्थांतर (४) भ्रम; आभास (वेदांत०) विवर्तन न० गोळ - चकाकार फरवूं ते (२) गबडवुंते – फरवुं ते (३) नीचे गबडवुं -- ऊतरवुं ते (४) पाछुं गबडव के फरवं ते (५) बदलायेली स्थिति; परिवर्तन

विवर्तवाद पुं० बाह्य जगत भ्रम --आभास छे, बह्य ज सत्य छे एवी वेदांतदर्शननी सिद्धांत विवर्तित वि॰ गोळ फरेलुं के फेरवेलुं (२) घुमावेलुं (३)कापीने टुकडा करेलुं विवर्धन न॰ वृद्धिः, वधारवं ते (२) कापवुं ते विवल्ग् १प० क्दर्वुः ऊछळवुं विवज्ञ वि० परवंश; असहाय; जात उपर काबू विनानुं (२) स्वतंत्र; साबे न थयेलुं (३) बेशुद्ध (४) मृत विवस् १ प० परगाम के परदेशमां रहेवुं (२) वसवाट करवो (३) २ आ० कपडां बदलवां (४) पहेरवं –प्रेरक० देशनिकाल करव् विवस्वत् पुं ० सूर्य (२) आ मन्वंतरना मनु विवह १५० हांकी काढवुं; दूर करवुं (२) परणवुं विवाद पुं०तकरार; झघडो; फरियाद (२) चर्चा (३) विरोध (४) आजा **विवादिन्** वि० झघडतुं;तकरार करतुं; फरियाद करनार विवास पुं०, विवासन न० देशनिकाल करवुं ते (२) वियोग; विच्छेद विवाह पुं•परिणय; लग्न विवाहदीक्षा स्त्री० लग्नविधि विवाहनेपथ्य न० लग्न माटेनो पहेरवेश **विवाहित** वि० परणेलुं विविक्त ('वि+विज्' तथा 'वि+ विच् 'नुं भू० कृ०) वि० जुदुं करेलुं; अलग पाडेलु (२) निर्जन; एकात (३) एकलुं (४) जुदुं तारवेलुं (५) निर्दोष (६) -थी मुक्त; विनानुं (७)

विवरण करवुं (५) जाणकार (६) न० निर्जन-एकांत स्थान विवित्सा स्त्री० जाणवानी इच्छा **विविध** वि० अनेक प्रकारनुं ; भातभातनुं **बिवृ ५, ९** उ० ढांकवुं (२) उघाडवुं; खुल्लु करवुं (३)प्रगट करवुं; दर्शाववृं (४)बोलवुं(५)विवरण करवुं(६) फेलावव् विवृज् १० उ० के प्रेरक० वर्जवुं;त्या-गवुं(२) –विनानुं करवुं (३) बातल राखवुं (४) वहेंचबुं **दिवृत् १** आ० गोळ-चकाकार फरव् (२) गबडवुं(३)बाजुए खसेडवुं ; वाळव् (४) बनवुं; थवुं (५) पाछा वळवुं (६) जुदां अुदां रूप धारण करवां विवृत वि० खुल्लु ; प्रगट (२)स्पष्ट (३) जाहेर करेलु(४)विवरण करेलुं **विवृतद्वार** वि० उघाडा दरवाजा -बारणांवाळु **बिदृतभाव** वि० खुल्ला दिलनुं विवृतम् अ० खुल्ले खुल्लुं; प्रगटपणे **विवृत्त** वि० गोळ फरतुं; गबडतुं;घूमतुं विवृत्ति स्त्री०गोळफरवं ते (२)गबडवं ते (३) वेगळुं खसी जवुं ते (४) विकास विवृद्ध वि० वधेलुं; मोटु थयेलुं (२) ((२)समृद्धि पुष्कळ ; घण् विवृद्धि स्त्री० वृद्धि; वधारो; विकास **विवृष् १** आ० वधवुं (२) समृद्ध थवुं(३) अंच् जव् –प्रेरक० वधारबुं;विकसाववुं(२) ऊंचु करवुं(३) —ना निमित्ते (ँ−नै) अभिनंदवुं विवेक पुं० सारासार समजवानी - छूटा पाडवानी बुद्धि(२)विचारणा ; तपास (३) साचुं ज्ञान **विवेकज्ञ** वि० विवेकबुद्धिवाळुं विवेकदृश्वन् पुं ० विवेकबुद्धिवाळो माण्य विवेकपदवी स्त्री० विचारणा

ज्ञानयुक्त

विविक्तसेविन् वि० एकांत स्थान इच्छ-

विवि**थ्** ३, ७ ड० छूटूं–जुदुं करवुं(२) विवेक करवो (३) निर्णय करवो (४)

विविग्न वि० बीनेलुं; गाभर्ष

[तूं; एकाकी

विवेकपरिपंथिन वि० विवेकशक्तिने -विवेकबुद्धिने रूंधनारुं विवेकविश्रांत वि०मूर्ख; डहापण विनानुं विवेकिन् वि॰ विवेकबुद्धिवाळुं;समजु विवेचन न०, विवेचना स्त्री० विवेक-विचार (२)विचारणा; चर्चा(३) निश्चय; निर्णय विवोद्ध पुं० वर(२)जमाई **विञ्चोक** पुं० जुओ 'बिब्बोक ' **विज्ञ्**६ ५० प्रवेशवुं; पेसवुं(२)प्राप्त थवुं; भागे आववुं **विञ्** पुं० वैश्य(२)माणस (३)लोक (४)स्त्री० प्रजा (५) जाति; वंश (६)पुत्री (७)संपत्ति विशद वि० स्वच्छ; निर्मळ(२) इवेत (३)कांतिमान ; सुंदर(४)स्पष्ट ; प्रगट (५)चिंतारहित; प्रसन्न (६)कुशळ (७)पूं० सफेद रंग (८)एक जातनी गंध (९)एक जातनो स्पर्ध विशन न० -मां पेसवुं ते विशल्य वि० चिंता के मुश्केलीमांथी मुक्त एवं (२)कांटा के बाण विनानं विशस् १ ५० कापी नाखवुं विश्वसन न० वथ; कतल (२)नाश (३) युद्ध (४) पु० तरवार विशस्त वि० कापेलुं(२)उद्धत (३) प्रशसित; प्रसिद्ध कल्पना करवी विशंक् १ आ० शंका करवी; बीवुं(२) विशंक वि॰ डर विनानु **विशंकट** वि० मोटुं (२) ताकातवाळुं विशंकम् अ० बीन्या विना विशंका स्त्री० संशय; डर विशाख पुं॰ कार्तिकेय विशाखा स्त्री० १६ मुनक्षत्र (बेतारा होवाथी द्वि०व०मां वपराय छे) विशातन न० संहार करवी ते(२) मुक्त-छूटु करवु ते कतल, वध विज्ञारण न० फाडवूं-चीरवूं ते (२)

विशारद वि० कुश∄; होशियार; प्रवीण (२) विद्वान ; डाह्युं (३) प्रसिद्ध (४)प्रगस्भ ; धृष्ट (५)पुं० बकुल वृक्ष विशाल वि० त्रिस्तृत; मोटुं; पहोळुं (२)-श्री भरपूर(३)प्रस्यात **विज्ञालकु**स्न न० खानदान कुटुंब विशासा स्त्री० उज्जयिनी नगरी विशालाक्ष पुं० महादेव (२) विष्णु (३) पुं० बाण विशिख वि० शिखा -- टोच विनानुं(२) **विज्ञिष् ७** प० जुर्दु पाडवुं —तारववुं (२) वधारवं (३) चडियाता थवं --कर्मणि० जुदा होबुं;चडियाता होबुं विशिष्ट वि० निशेषनावाळुं; असाधा-रण (२) निराळु; खास (३) –थी युक्त (४) उत्तम; विलक्षण (५) पु० विष्णु विशीर्ण वि० टुकडा थई गयेलुं (२) क्षीण थयेलुं; करमाई गयेलुं (३) गरी पडेलुं(४)खर्ची के उडावी दीधेलुं विशोर्णमूर्ति वि० जेनुं शरीर नाश षाम्युं छे तेवुं(२)पुं० कामदेव विशुद्ध वि० शुद्ध करेलुं के थयेलुं(२) निर्दोष; पापमुक्त (३) निष्कर्छक; निर्मळ शीलवाळ् विशुद्धसत्त्व वि० पवित्र अंतःकरणके विशुद्धि स्त्री० शुद्धि; निर्मळता;भेळ-सेळरहित होवापणुं (२) खरापणुं; चोकसाई (३) भूल दूर करवी ते(४) समानता विशुध् ४ प० पवित्र -- शुद्ध थवुं --प्रेरक० शुद्ध करवुं (२)शंकामांथी मुक्त करवुं (३) योग्य छे एम पुरवार करवु विश्वन्य वि० तद्दन खाली विश्वल वि० भाला विनान्: विश्<u>वं</u>सल वि० शृंखला,–बंधन–नियंत्रण विनानुं (२)स्वच्छंदी

विश **धिशु** –कर्मणि० [विशीयंते] शीर्ण थई जवु; टुकडे टुकडा थई जवु(२)क्षीण थई जवुं; करमावुं(३)लुप्त थई जवुं विशेष वि॰ खास(२)पुष्कळ(३)पुं॰ जुदुं तारववुं ते (४) तफावत ; भेद (५) स्नास विशिष्टता; स्नास लक्षण(६) मांदगीमां सुधारो (७) अवयव (८) एक प्रकार; एक जात (समासने अते; उदा० 'वृक्षविशेष:') (९) उत्तम; श्रेष्ठ (समासने अंते; उदा० 'अतिथि-विशेषः') विशेषक वि० जुदुं पाडनारं (२) भर्यादित करनार्स (३)पुं०, न० विशेष लक्षण, चिह्न के गुण (४) केसर-चंदन वगेरेथी करेल् - तिलक (५) मुगंधी द्रव्योथी मो अने शरीर उपर चित्ररेखाओं करवी

समुदाय (जेमां व्याकरणनी रीते एक ज बाक्य थतुं होय छे) विशेषकरण न० सुधारो

विशेषज्ञ वि० विद्वान ; डाहचुं(२)कदर-दान ; परख करनारु

ते (६) न० इलाकनी त्रण कडीओनो

विशेषण वि० विशेष बतावनारुं; जुदुं पाडनारुं (२) न० तफावत; भेद; विशिष्ट लक्षण (३) विशेष्यनो गुण बतावनार शब्द (व्या०) (४) --चडियाता थवं ते

विशेषणपद न० खिताब; इलकाब **विशेषतस्** अ० खास करीने (२)−ना प्रमाणमां (३) व्यक्तिगत; जुदुं जुदुं विशेषविद् वि० जुओ 'विशेषक्त*'* विशेषित वि० जुदुं – अलग पडेलुं(२) व्याख्या - मर्यादा करेलु(३)कोई गुण-थी विशिष्ट(४)उत्तम; श्रेष्ठ

विशेष्य वि० विशिष्ट करवा योग्य (२) उत्तम;श्रेष्ठ (३)न० विशेषणथी जेनो गुण बतावातो होय ते शब्द (व्या०) विशोक वि० शोक विनानुं (२) पुं० शोकरहित थवुं ते (३) अशोकवृक्ष

विशोधन न० साफ करी नाखवुं ते; निर्मूळ करवुं ते (२) पाप, अपूर्णता वगेरे दूरकरवां ते (३) प्रायश्चित्त **विश्रण् १०** उ० आपी देवुं विश्रब्ध ('वि + श्रंभ् ' नुं भू० कृ०) वि० विश्वासु; –मां विश्वासवाळुं(२)डर विनानुं; खातरीवाळुं (३) शांत; चिंतारहित(४)दृढ; स्थिर विश्रब्धम् अ० विश्वासपूर्वेक;खातरी-√रीते ऊंघतुं पूर्वक विश्वव्यसुप्त वि० शांतिथी – नि:शंक **विश्रम् ४** प० विश्रांति करवी; आराम करवो (२) अटकवुं; थीभवुं विश्रम, विश्रमण पु० विसामो ; विश्रांति विश्ववस् पुं० रावणनो पिता **विश्रंभ् १** आ० विश्वास मूकवो –प्रेरक० विश्वास ऊभो करवो; आश्वासन आपवु विश्रंभ पु॰ खातरी; विश्वास (२) रहस्य; खानगी वात (३) विसामो; विश्वांति (४) प्रणयकलह विश्वंभकथा स्त्री व खानगी के परिचिती वच्चेनी वातचीत **विश्रंभप्रवण वि०** विश्वासु; विश्वास विश्वंभभूमि पुं० विश्वासपात्र माणस विश्रंभालाप पुं० जुओ 'विश्रंभकथा' **विश्रंभिन्** वि० विश्वास करतुं (२) विश्वासपात्र **विश्राणन** न०दान; बक्षिस विश्राणित (विश्रण्'नुंभू० कृ०) वि० बक्षेत्रुं; दानमां आपेलुं विश्राम पुं० थोभवुं–अटकवुं ते (२) विसामो; आराम (३) शांति; स्वस्थता (४) विश्वांतिस्थान विश्राव पुं० ख्याति; प्रसिद्धि (२) अवाज; ध्वनि विभात वि० योभेलुं; अटकेलुं (२) विश्रांति पामेलु(३)शांत; स्वस्थ **विभांतकण** वि०म्गुं; चूप

विश्वांति स्त्री० आराम; विसामो (२) थोभवुं -- अटकवुं ते विश्रुत वि॰ प्रख्यात; प्रसिद्ध (२) न॰ प्रसिद्धिः स्थाति विश्वति स्त्री० ख्याति; प्रसिद्धि **विक्लय** वि० शिथिल; ढीलुं (२) मुस्तः नमी गयेल् विश्लिष् ४ प० छूटा पडवुं (२) छूटी के तूटी जवुं –प्रेरक० छूटा पाडवुं (२) –रहित विक्लिक्ट वि० छूटुं पडेलुं के पाडेलुं (२) ढीलुं करेलुं (३) ऊतरी गयेलुं (अवयव) विक्लेष पं० वियोग विश्लेषित वि० छूटुं पडेलुं – पाडेलुं (२) फाडी – चीरी नाखेलुं विक्य वि० आखुं; समग्र (२) दरेक; तमाम (३) व्यापक (४) पुंज्ब ज्व ज् अमुक वर्गना दश देवो (५) प्ं० जीवात्मा (५) न० समग्र जगत विश्वकर्मन् पुं० देवोनो शिल्पी (२) सूर्य विश्वजनीन, विश्वजनीय, विश्वजन्य वि० समग्र मानव जात माटे हितकर विश्वजित्पुं० एक यज्ञ विश्वतस् अ० चोतरफ; बधी बाजुयी विश्वतोम्ख वि० दरेक बाजुए मुखसाळु विश्वपा पु० बधानी रक्षण करनारो (२) अग्नि (३) सूर्य (४) चंद्र विश्वमृति वि० बधा रूपो धरनारुं; सर्वेव्यापी विश्ववेदस् वि० सर्वज्ञ (२) ऋषि एवं विश्वव्यापक, विश्वव्यापित वि० सर्व-व्यापक ऐव् विश्वस् २ प० विश्वास राखवो के मूकवो (२) निंचत के डर विनाना यवं -प्रेरक० विश्वास ऊभो करवी विश्वसनीय वि० विश्वास करवा लायक (२) विश्वास ऊभो करे तेर्व्

विज्ञ्यसुम् पुं० ब्रह्मा (२) मयासुर विश्वस्त ('विश्वस्' नुं भू० कृ०) --मां विश्वास मूक्यो होय तेवुं (२) विश्वास राखतुं (३) नीडर; खातरीवाळुं (४) विश्वास मुकवा योग्य **विश्वस्ता** स्त्री० विधवा विश्वंभर वि० वधाने पोषनारं (२) पुं॰ परमात्मा (३)विष्णु(४)अग्नि विश्वंभरा स्त्री० पृथ्वी **विश्वात्मन्** पु० परमात्मा(२)शंकर(३) विश्वाधार पुं० जगतनो आधार विश्वामित्र प्०एक प्रसिद्ध मुनि विक्वास पुं० भरोसो; श्रद्धा; पतीज विश्वासघात पु० विश्वासनी भंग करवो ते विक्यासपात्र न० रोसापात्र माणस विश्वासभंग पुं० जुओ 'विश्वासघात' विश्वासभूमि पुं० विश्वासपात्र माणस विश्वेदेवाः पु० ब० व० अमुकः दश देवोनो वर्ग विष् स्त्री० विष्टा (२) कन्या विद न० झेर (२) पाणी (३) कंमळ-तंतु (४) झेरी हथियार विवक्त पुरु झेर भरेली घडी विषकृत वि० झेर भेळवेल विद्यवत ('विषंज्'नं भू० कृ०) बरा-बर चोटाडेलुं (२) बराबर वळगेलुं (३) लटकावेलुं (४) उत्पन्न करेलुं (५) रोकायेलु; लीक विषघ्न वि० झेरनो नाश करनारः; झरनी असर दूर करनारं विषण्ण ('বিषद्'नं মৃ৹ কূ৹) বি৹ उदास; खिन्न; हताश **विषण्णम्स** वि० सिन्न मुसवाळु विषण्णरूप वि० सिन्न; उदास विषद् १ प० [विषीदति] खिन्न थवुं; हताश थवुं; दु:खित थवुं (२) डरवुं विषद प्०मेघ

विषविष्ध वि० झेरथी लरडेलु; झेरी विषद्भ पु० झेरी वृक्ष विषधर, विषभुजंग, विषभृत् पु० साप विषम वि० लरबचडु; लाडा टेक-रावाळु (२) अनियमित; असमान (३) एकी (संख्या) (४) मुश्केल (५) दुर्गम (६) वांकुं (७) त्रास-जनक (८) भयंकर (९) प्रतिकूळ (१०) एकांतरुं (११) पु० एक ताल (संगीत०) (१२) न० लाडा टेकरा-वाळुं स्थान (१३)दुर्गम स्थळ(१५) संकट; मुश्केली

विषमज्यर पु० आंतरे आवतो ताव विषमपत्र पु० सप्तपर्ण वृक्ष विषमशर पु० जुओ 'विषमेषु' विषमशील वि० चीडियुं (२) पु० विकमादित्य राजा

विषमायुष पु० कामदेव (पांच बाणो-वाळो होवाथी)

विषमावतार पुं० खाडा-देकरावाळी जमीन उपर ऊतरवुं ते (२) साहस करवुं ते

विषमित वि० वाकुं; सरख नहि तेवुं (२) भया चडावेलुं (३) दुर्गम बनावेलुं विषमीभू १ प० विषम बनवुं (२) ठोकर खाबी; आमतेम पडवुं विषमुख् पुं० साप

विषमेक्षण पुं० शिव (त्रण लोचनवाळा)
विषमेषु पुं० कामदेव (पांच बाणवाळो)
विषम पुं० दरेक इंद्रियनो ग्राह्म के
भोग्य पदार्थ (२) लौकिक वस्तु के
व्यवहार (३) सांसारिक भोग; कामभोग (४) पदार्थ (५) लक्ष; घ्येय (६)
गोचर; क्षेत्र (७) वस्तु; प्रकरण;
मुद्दो; बाबत (८) स्थान स्थळ (९)
प्रदेश; देश; राज्य (१०) आश्रयस्थान
विषयक वि० कोई बाबतने लगतुं (२)
विषय के वस्तुवाळु; ते वस्तुने चर्चतुं

विषयपाम पुं भोगविषयोनो समूह विषयपराङ्गमुख वि॰ लौकिक व्यव-हारो तरफ वैराग्यवाळु विषयस्नेह पुं० विषयोमा आस्वित विषयाधिकृत पुं० प्रदेश के प्रांतनो सूबो विषयाधिपति पुं० राजा विषयाभिरति स्त्री०,विक्षयाभिलाष पुं० भोगविषयमा आस्वित

विषयिन् वि० विषयभोगने लगतुं(२) पुं० विषयासक्त पुरुष (३) कामदेव (४) राजा (५) विषयोनुं ज्ञान कर-नारो – जीवात्भा

विषयंषिन् वि० विषयासकत विषयोपसेवा स्त्री० विषयासकित विषयस पु० झेरी प्रवाही विषवृक्ष पु० झेरी वृक्ष विषवेग पु० झेरनुं पसरवृंते; झेरनी असर विषवेद्य पु० मंत्रथी झेर उतारनारो (२) झेरनी दवा वेचनारो विषव्यवस्था स्त्री० झेर देवायुं होय वेवी अवस्था (२) खेरनी असर

तेवी अवस्था (२) झेरनी असर विषह् ('वि+सह्') १ आ० सहन करबुं (२)सामनो करवो; टकी रहेवुं(३) शक्तिमान थवुं

विषह्य वि० शेरी हृदयवाळुं; शेरीलुं विषह्य वि० सहन करी शकाय तेवुं(२) सामनो करी शकाय – जीती शकाय तेवुं विषंज् १ प० [विषजति] चोटाडवुं; वैळगाडवुं; लटकाववुं

विषाक्त वि० विष चोपडेलुं;झेरी विषाण पुं०, न० सिंगडुं (२) हाथी के सूवरनो दंतूशळ (३) फूंकीने वगाडवानुं सिंगडाना आकारनुं वाद्य (४)सिखर;टोच

विषाणिन् वि० मोटा दंतूशळ के शिगडा-वाळुं (२) पुं० तेवुं प्राणी (३)हाथी (४)आखलो विषाणी स्त्री० जुओ 'विषाण' विषाव पुं० खेद; दिलगीरी (२) हताशा; निराशा (३) म्लानि; सुस्ती विषादिन् वि॰ हताशः, उदासः, सिन्न विषुव म० मेष अने तुलामां संक्रांति (ज्यारे दिवसरात सरखां होय छे) विष्वसमय पु० संक्रांतिनो काळ **विष्चिका** स्त्री० कोगळियुं; 'कॉलेरा' विष्क पुं० २० वर्षनी उमरनो हाथी **विष्कंभ् ५,९** प० दखल करवी (२) टेको आपवो विष्कंभ पुं॰ दरवाजानी आगळो (२) विस्तार ; लंबाई (३) जुओ 'विष्कंभक' विष्कंभक पुं० बे अंको वच्चे आवतो भाग, जेमां हलकां के मध्यम पात्रो नाटकनी वातोने अने वस्तुना त्रिभागोने बच्चे शुंबनी गयुं ते ट्कमां कही बतावीने जोडी **छे (नाटघ०) (२)विस्तार**; लंबाई विष्कर पुं० विखेरवुं ते; खोतरवुं -खणवंते (२) कुकडो वगेरे पंखी विष्टप पुं०, न० लोक; भुदन विष्टपहारिन् वि० जगतने खुश करनार्<u>ष</u> विष्टब्ध ('विष्टभ्'नुभू०कृ०) वि० टेकवेलुं;स्थिर करेलुं(२)रोलेंं:(३) जड – अक्कड बनेल् **बिष्टर** पुं॰ आसन; बेठक (२) **कु**श-दामनी पूळी (३) कुशनुं बनावेलुं तपस्वीनं आसन **विष्टरभाज् वि०** बेठक उपर बेठे<u>ल</u>ं **बिष्टरश्रवस्** पुं० विष्णु; कृष्ण विष्टंभ् ('वि+स्तंभ्') ५, ९ प० रोकवुं; अटकाववुं (२) टेको लेबो (३) टेको आपवो (४) व्यापवुं(५) निश्चित – स्थिर करवं -प्रेरक० रुकावट करवी (२)जड-अक्कड बनावव् विष्टंभ पुं० स्थिर – दृढ करवुं ते (२) नडतर; विघ्न (३) लक्क्वो(४)टेको (५) सहन करवं ते; सामनो करवो ते विष्टा स्त्री० विष्ठा; मळ विष्टि स्त्री० धंधी; उद्योग (२) वेतन (३)वेठ (४) मोकलवं ते | मालिक **विष्टिकर** पुंच वेठियाओनो –गुलामोनो विष्टिकर्मान्तिक पुं० वेठियो विष्ठा स्त्री० मळ;विष्टा(२)पेट विष्ठित वि० स्थित (२) हाजर के नजीक होय तेवुं विष्णु पु० ब्रह्मा-विष्णु-महेरवर ए त्रिमृतिमांना बीजा देव, जे जगतनुं पालन करे छे तथा अवतारो ले छे विष्णुगुप्त पुं० चाणक्य क्षीरसागर विष्णुपद न० आकाश; अंतरिक्ष(२) विष्णुपदी स्त्री० गंगा नदी विष्फार पुं० धनुषनो टकारव **विष्यंद् १ आ**० वहेबुँ; टपकर्यु **विष्यंद** पुं० वहेवुं -- टपकवुं ते विष्वक् अ० बधे ठेकाणे; बधी बाजुए विष्वक्षेण, विष्वक्सेन पुं० विष्णु विध्वगाति वि० सर्वव्यापी; दरेक विषयभां प्रवेशवाळ **विष्यच**्वि० व्यापक विष्वद्रधन्, विष्वद्रघंच् वि० बधी बाजु जतु - पहोचतुः, सर्वव्यापी विष्यंच् वि॰ जुओ् 'विष्वच्' विसर ५० मोटो जथो; हमलो (२) टोळुं(३)फेलावुं ते विसर्ग पुं छोडवू - काढवू - फेंकवूं ते (२) वरसाववुं ते (३) आपी देवुं ते; दान (४) विदाय आपवी ते (५) सर्जन; सृष्टि (६) त्याग (७) मळत्याग करवो ते (८) सुष्टि-व्यापार विसर्जन न० काढवुं – फेंकवुं – वरसा-ववुं ते (२) आपी देवुं ते; दान (३) मळत्याग करवो ते (४) त्याग करवो ते (५) विदाय आपवी ते (६) सर्जन **दिसर्प** पुं० सरकवुं – खसवुं ते (२) आमतेम फरवुं ते (३) फेलाबुं ते न इच्छेलो अंत

भटकतुं; फरतुं (३) वघतुं; फेलातुं **विसंकट** वि० भयंकर; बिहामणुं **विसंकुल** वि० गाभर्छ – व्याकुल नहि तेवु; स्वस्थ विसंज्ञ वि० मूर्छित (२) भ्रांत विसंवद् १ प० विरुद्ध के विसंगत होवुं (२) वचनभंग करवो (३) छेतरवुं (४) खोटुं के विरुद्ध कहेवुं –श्रेरक० निष्फळ जाय तेम करवुं (२) विरुद्ध करवुं (३) साबित करवामां निष्फळ जव् विसंवाद पुं० वचनमंग करवो ते; छेतरवुं ते (२) विरुद्ध के असंगत होबुं ते **विसंवादन** न० वचनभंग करवो ते विसंवादिन वि० छेतरतुं (२) असं-गत; विरुद्ध (३) जुदुं पडतुं विसंष्ठुल, विसंस्युल वि० क्षुन्ध; अस्थिर (२) समान – सरखुं नहि तेवुं विसारिन् वि० फेळातुं; वीखरातुं(२) सरकत् (३) विस्तृत । शोक विसूरण न०, विसूरणा स्त्री० दुःख; **विस् १** प० फेलावुं; प्रसरवुं (२) पाछा फरब् विस्ज़ ६ ५० तजी देवुं (२) जवा देवुं (३) मोकलवुं – विदाय आपवी (४) आपवुं (५) फेंकवुं; छोडवुं (६) उच्चारवुं (७) सर्जवुं (८) --मांधी जातने मुक्त करवी विसृतं वि० फेलायेलुं; पथरायेलुं (२) लंबायेलुं (३) मोकलेलुं (४) गरी पडेलूं (५) उच्चारेलुं सरकतु विसृत्वर वि॰ फेलातुं; पथरातुं (२) विसुप् १ प० जबुं; खसबुं(२)चोतरफ ऊडवुं के भटकवुं (३) फेलावुं (४) पडवुं (५) नासी जवूं

(४) कोई पण कार्यनो आणधार्यो के

विसर्पिन् वि० सरकतुं; खसतुं (२)

विसुमर वि० सरकतुं; धीमेथी खसतुं **विसृद्**ट ('विसृज्'न भू०कृ०) वि० छोडेलुं ← काढेलुं – फेंकेलुं (२)सर्जेलुं (३) त्यागेलुं (४) मोकलेलुं (५) विदाय करेलुं (६) आपेलुं विस्तर पुं० फेलावो; विस्तार (२) बारीक विगतो; विगतवार वर्णन (३) पुष्कळता; जयो; संख्या (४) बेठक; पथारी **विस्तार** पुं० प्रचार; फेलावो (२) पहोळाई; मोटाई (३) फेलायेंलो प्रदेश (४) बारीक विगतो **विस्तोर्ण** वि० फेलायेलुं; प्रसरेलुं (२) पहोळुं; मोटुं; विशाळ विस्तृ ५ उ० विस्तारवुं; फेलाववुं (२) ढांकवुं (३) विखेरवुं विस्तृत वि० फेलायेलुं; प्रसरेलुं (२) पहोळुं; मोटुं (३) विकसेलुं **विस्तृ ९** उ० जुओ 'विस्तु' विस्था १ आ० [वितिष्ठते] जुदा ऊभा रहेवुं (२) रहेवुं; स्थिर रहेवुं (३) [टीपुं; कण फेलाबु विस्पंद पुं० टपकवुं – झरवुं ते (२) **विस्फर् ६ प० जुओ '**विस्फुर्' विस्फार पुं० कंप; ध्रुजारी; धडकाट (२) धनुष्यनो टंकार (३) पहोळु –करवं उघाडवं ते विष्फारित वि० ध्रुजावेलुं; कंपावेलुं (२) ध्रूजतुं; कंपतुं (३) टंकार करेलुं (४) पहोळु – खुल्लु करेलुं **विस्फुर् ६ प० धूजवुं; कंपवुं; घड-**कवुं (२) आमतेम खसदुं; छूटवा प्रयत्न करवो (३) चळकवुं; चमकवुं (४) धनुष्यनो टंकार करवो (५) (आंखो) पहोळी करवी-फाडवी विस्फुरित वि॰ ध्रूजतुं; कंपतुं (२) फूलेलुं; मोटुं थयेलुं (३) चमकत् विस्फुर्ज् १ ५० जुओ 'विस्फूर्ज्'

विस्फुलिंग पुं० तणसो विस्कृत्ं १ प० गाअवं (२) पडधो पडवो (३) वधवुं (४) चमकवुं; देखावुं; प्रकाशवुं **विस्फूर्ज** पुं गाजवुं ते विस्फूर्जयु पुं० गर्जना; गडगडाट (२) घृषवाट करत् घसी बाववुं ते (मोजान्) (३)वीजळीनी जेम अचानक देखावुं ते विस्फूजित न० गर्जेना; गडगडाट(२) परिणाम (३) सपाटो (पवननो)(४) (भवां) संकोचवां ते **विस्फोट** पुं० फोडलो (२) फूटबुं – कडाको थवो ते **विस्फोटक** पुं• फोडलो विस्मय पुं० अचंबो; आश्चर्य; नवाई (२) गर्व (३) संदेह विस्मयपद न० नवाई पामवा जेवी वस्तु विस्मर्यकर, विस्मयंगम वि० आश्चर्य-चिकत करे तेवुं [चिकत विस्मयाकुल,विस्मयाविष्ट वि ० आश्चर्य-विस्मरण न० भूली – वीसरी जवुं ते **विस्मापन** वि० नवाई पमाडे तेवुं विस्मि १ आ० आश्चर्य पामवुं; नदाई पामवी (२) गर्व करवो विस्मित वि॰ आश्चर्यचिकत (२)अभि-विस्मृ १ प० वीसरी जवुं; भूली जवुं विस्मृत वि० भूली जवायेलुं **विस्मृति** स्त्री० विस्मरण ; भूली जबुं ते विस्मेर वि० आश्चर्यचिकत **विस्न** वि० —नी गंधवाळुं (२) न० काचा मांसनी दुर्गध विस्तर्गंष, विस्नर्गंषि, विस्तर्गंषिन वि० काचा मासनी दुर्गघवाळुं विश्वब्ध विञ्जुओ 'विश्वब्ध' विना विसम्बम् अ० विश्वासपूर्वक; संकोच विस्नव, विस्नाव पुं० झरबुं - टपकबुं ते विस्नस्, विस्नसा स्त्री० क्षीणता; क्षय विम्नस्त वि॰ ढीलुं; अशक्त (२) छुटी गयंलु

विक्रांभ पुं॰ जुओ 'विश्रंभ' विस्नंस् १ आ० सरी पडवुं ; ढीलुं यई जवुं **विस्नंसन** वि० नीचे गरी पडे तेम करत् (२) डीलुं करतुं; छोडी ना**स**तुं (३) न० गरी पडबुं ते (४) दीलुं करवुं के छोड़ी नाखवुं ते विस् १ प० टपकवुं; झरवुं (२)पीगळी जवुं; ओगळी जवुं विस्वन् १ प० गर्जवु; चीस पाडवी विस्वर वि० बेसूरुं (२) अवाज विनानुं बिहग पुं॰ आकाशगामी एवं ते (२)पंखी (३) बाग (४) मेध विहत वि० पूरेपूरुं हणेलुं (२) ईजा पामेलुं (३)सामनो के स्कावट करायेलुं विहति स्त्री० हणवुते(२) निष्फळता; पराजय (३) हताशा; अनादर बिहन् २ प० हणवुं; वघ करवो; नाबूद करवुं (२) सखत प्रहार करवो –मारवुं (३) विघ्न करवुं (४) ना पाडवी; नकारवुं (५) निराश करवुं (६) छूटुं पाडवुं बिहर पुं॰ लई जवुं ते (२) छूटुं पाडवुं ते (३)बदलवुं ते (४) विहार; ऋडा विहरण न० हरण करवुते (२) फरवु ते; चंक्रमण (३) विहार; क्रीडा विहर्तृ पुं० भटकनारो (२) लूंटारु विहस् १ प० धीमेथी हसवुं; स्मित करवुं (२) हसी काढवुं; मजाकमां उडाववु विहसित न० स्मित; धीमुं हास्य विहस्त वि० हाथ विनानुं (२) मूंझा-येलु; गाभरु; व्याकुळ (३) असमर्थ; अशक्तिमान विहंग पुंज्यक्षी (२) बाण (३) मेघ **विहंगम** वि० आकाशमां फरतुं (२) पुं• पंखी (३) सूर्य बिहंगमा, बिहंगमिका, बिहंगिका स्त्री ० कावडनी दांडी विहा३ ५० तजब्

विहाय अ० छोडीने; तजीने ∵छतां (३) ≕नो अपवाद करीने (४) —थी वधु होय तेम *ं* पंखी **षिहायस्** पुं०, न० आकाश (२) पुं० **विहायस** पुं**० आ**काश विहार पुं० लई जबु – हरी जबुं ते (२) भटकवुं ते; फरवुं ते; चंक्रमण (३) क्रीडा, खेल; रमत (४) (हाथ – पगइ०)हलाववुं ते; फेरववुं ते (६) बगीचो; उपवन (६) जैन के बौद्ध मंदिर के मठ (७) बिहार देश (८) (यज्ञ करनार) यजमाननुं घर विहारदासी स्त्री० भिक्षुणी विहारदेश विहारभूपि पुं० (ढोरने) चरवानुं बीड; चरो विहारवत् वि० –नो आनंद लेतु विहारिन् वि० विहार – कीडा करतुं; आनंद करतुं (२) वधतुं (३) सुंदर **विहित** ('वि+धा' नुं भू० कृ०) वि० करेलुं; आचरेलुं (२) गोठवेलुं; नियत (३) आज्ञा करेलुं (४) मूकेलुं (५) न० आज्ञा; विधान विहिति स्त्री० आचरण; ऋत्य (२) गोठवणी विहीन वि० तजायेलुं (२) विनानुं; रहित (३) हीन; हलकट विद्व १ प० हरी जबु; लई जबुं (२) दूर करवुं; नाबूद करवुं (३) पडवा देवुं (आंसु) (४) व्यतीत करवुं (समय) (५) आनंद करवो; ऋडा करवी (६) रहेवुं विहत वि० विहार कर्यो होय तेवुं (२)न० विहार; क्रीडा(३)चंक्रमण बिहुति स्त्री० दूर करवुं – छई जबुं ते (२) विहार; क्रीडा (३) विस्तार विहेठक पु० हानि करनारो (२)निदक **विहेल्** – प्रेरक० आ० पजववुं **विह्वल् १** प० हाल**व्**; कंपव्ं

विह्वल वि० क्षुब्ध; व्याकुळ गाभरुं (३) पीडित **बिंद** वि० मेळवनारुं; पामनारुं (२) पुं॰ दिवसनुं एक खास मुहूत विध्यापु० एक पर्वत विध्यवासिनी स्त्री० दुर्गानुं एक नाम विश्वति स्त्री० वीस (संख्या) **वी** (वि+इ) २ प० चाल्या जबुं; दूर थवुं (२) व्यय – फेरफार थवो (३)खर्च करवु वीकाश पुं० प्रकाश; तेज; कांति **बीक्ष् १** आ० जोवुं; निहाळवुं (२) गणवुं; मानवुं बीक्षा स्त्री० –तरफ जोवुं ते (२) तपास (३) ज्ञानशक्ति (४) बेहोशी **वीक्षण** न० आंख **वीक्षणः** स्त्री० दृष्टिः; नजर (२) तपास **वोक्षित** न० दृष्टि; नजर बीचि पुं०, स्त्री० तरंग; मोजुं (२) फुरसद (३) आनंद (४) चंचळता **वीचिक्षोभ** पुं० मोजांओनुं ऊछळवुं ते वीची स्त्री० मोजु; तरंग बोज् १ आ० जवुं (२) १० उ० पेक्स-थी पवन नाखवो (३) पंपाळवुं **बीजन** न० पंखी नांखवीते (२) पंखी बीटा स्त्री • गिल्ली दंडो (२) तप माटे मोंमां रखातो घातु के पथ्थरनो गोळो वीटि, वीटिका, बीटी स्त्री० पाननी बीडी (२) चोळीनी गांठ **वीणा** स्त्री० एक तंतुवाद्य **वीगापाणि** पुं० नारद वीणावाद पुं० वीणा वगाडनारो वीणित् वि० वीणा वगाडत् बीत ('वि+इ'नुं भू० कृ०) वि० मझेलुं; विदाय थयेलुं (२) जवा दीधेलुं; छूटुं करेलुं (३) वाद राखेलुं (४) –विनानुं; –रहित (मोटे आगे समासमां उदा० 'वीतशंक') (५)

पहेरेलुं (६) न० (हाथीने) अंकुश भोंकवु ते वोतभय वि० निर्भय; भयरहित वोतराम वि० आसक्ति के तृष्णा विनानुं (२) रंग विनानुं वातसूत्र न० जनोई; उपवीत बीति पुं० घोडी (२) स्त्री० जवुंते (३) उत्पत्ति (४) भोग; भोजन (५)कांति; तेज (६) निवृत्ति; अंत बीथ स्त्री० रस्तो; मार्ग (२) पंक्ति (३) बजार; दुकान (४) घोडाने केळववानुं मेदान वीथिका स्त्री० मार्ग; रस्तो (२)चित्रो दोरेली भींत; कागळनो वींटो, जेना उपर चित्रो दोर्यां होय वीषी स्त्री० जुओ 'वीथि' वीयोक्टत वि० पंक्ति के ढगलामां गोठ-**वीनाह** पुं० कूवानुं ढांकण के मथाळुं वोप्सा स्त्री० व्याप्ति (२) पुनरुक्ति **बीर** वि० शूरवीर; बलिष्ठ (२) उत्तम; श्रेष्ठ (३) पुं• पराऋमी योद्धो (२) वीररस (३) नट (४) पुत्र (५) पति (६) यज्ञनो अग्नि बीरण न० सुगंधी वाळो बोरपट्टिका स्त्री० कपाळ उपर पुरुषो वडे पहेरातो सोनानो पटो बीरपान न० सैनिको युद्ध पहेलां के पछी जे स्फूर्तिदायक पीणुं पीए छे ते बीरलोक पुं० इंद्रनुं स्वर्ग (वीर लोको पामे छेते) | होय तेवी स्त्री वीरवती स्त्री० पति अने पुत्र जीवता **बीरस्थान** न० वीरासन (२) **स्वर्ग** वीरहन् पुं० अग्निहोत्र न करनार ब्राह्मण (२) बालहत्या करनारो बीरायते आ० (वीरनी पेठे पराक्रम करवु) वीराशंसन न० रणभूमि वीरासन न० योगनु एक आसन (२) एक ढींचण टेकवीने बेसवुं ते

वीरम् स्त्री० लता; फेलाती वेल वीरुष पुंचवृक्ष वीरधा स्त्री० जुओ 'वीरुध्' **बीर्यः** न० बळ; ताकात (२) शुक्रघातु (३) तेज (४) सोनुं मेळवेल् वीर्यशुल्क वि० पराक्रम वडे खरीदेलुं-**बीवम** पुं० भार; बोजो (२)अनाजनो संचय (३) मार्गः; रस्तो (४) भार बहेवानी जूंसरी [इच्छावाळु बुबूर्षु वि० वरवानी - पसंद करवानी व्या १ प० ९ उ० पसंद करवें (२) वरदान भागवुं (३) लग्न माटे पसंद करवुं (४) मागवुः, याचरुं (५) ढांकवुं (६) घेरवुं (७) निवारवुं (८) १० उ० पसंद करवुं (९) लग्न माटे पसंद करवुं (१०) याचवुं वृक्त पुं० वर वृकोदर पुं० भीमसेन वृक्षा पु० झाड **वृक्षक** पुं० नानुं झाड (२) झाड वृक्षतसम पुं० झाड कापनारो वृक्षांध्रि पुं० वृक्षनुं मूळ बुब्ब् २ आ० तजवुं; छांडवुं (२) ७ पे तजबुं (३) पसंद करवुं (४) प्रायश्चित्त करवुं (५) हरी जबुं; कई छेवुं (६) १ प०, १० उ० तजवुं (७) बाद राखवुं; छांडवुं वृज्जिन वि० वांकुं; वळेलुं (२) दुष्ट; पापी (३) पु० वाळ (४)दुष्ट माणस (५) न० पाप (६) दुःखः; आपत्ति (आ। अर्थमापु० पण) वृत् ४ आ० पसंद करवुं; गमवुं (२) वहेंचवुं (३) १० उ० प्रकाशवुं **वृत् १** आ० होवुं; रहेवुं (२) बनवुं; थवुं (३) प्रवर्तमान थवुं (४) निर्वाह थवो (५) घूमबुं; फरवुं (६) लव-**ळीन धवुं (७) वर्तन राखवुं (८)** अनुसरवु (९) अर्थ धवी – होवो (१०) परिणाम लाववुं

−प्रेरक∘ घुमाववुं(२)आचरवुं(३) निर्वाह करवो (४) वर्णवी बताववुं (५) टपकाववुं (आंसु) **वृत** ('वृ' नुं भू० क्व०) वि० वरेलुं; पसंद करेलुं (२) ढांकेलुं; छुपावेलुं (३) वीटळायेलुः घेराजेल् **वृति** स्त्री० पसंद करवुं ते (२) छुपा-बबुंते (३) याचवुंते (४) बाड **वृत्त** ('वृत्' नुंभू० कृ०) वि० थयेलुं; बनेलुं; अस्तित्वमां आवेलुं (२)पूर्ह थयेलु (३) आचरेलुं (४)ब्यतीत; भूत (५) गोळ आकारनुं (६) मृत (७) दृढ; स्थिर (८) ढांकेलुं (९) न० घटना ; बनाव (१०) अहेवाल ; वृत्तांत; समाचार(११)धंधो; रोज-गार (१२) वर्तन; आचरण (१३) सद्वर्तन (१४) रूढि; परंपरा (१५) बतुंळ (१६) छंद **वृत्तचूड(**-ल), वृत्तचौल वि० चूडा-करण – वाळ उतारवानो संस्कार थयो होय तेवं । आकारन **वृत्तवत्** वि० चारित्रवान (२) गोळ **वृत्तशस्त्र** वि० शस्त्रविद्यामां पारंगतं एवं **युत्तसमाप्तिलिपि स्त्री० हस्त**प्रतने अंते मुकाती नागरी 'छ' जेवी गोळ आकृतिओ [होय तेवुं गोळ वृत्तानुपूर्व वि० घीमे धीमे सांकडुं धत्ं

(३) अहेवाल

वृत्ति स्त्री० अस्तित्व (२) अमुक
स्थितिमां होयुं – रहेवुं ते; स्थिति (३)
क्रिया; गति (४) वर्तन (५) व्यवसाय; धंघो (६) जीवनयात्रा; निर्वाह
(७) पगार; वेतन (८) व्यवहार;
वर्ताव (९) विवरण; व्याख्या (१०)
गोळ फरवुं ते (११) चक्रतो घेराघो
(१२) भिन्न रसोमां उपयोगी मानेली

वृत्तांत पृं० घटना;बीना(२)समाचार

वृत्तानुवर्तिन् वि० आज्ञापालक

वर्णन करवानी शैली (कौशिकी, सात्वती, आरभटी अने भारती) (१३) शब्दनी अर्थ सूचवनारी सक्ति (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना) **वृत्तिचक्र** न० परस्पर वर्तावनी परि-पाटी; एक बीजा साथेनुं वर्तन वृत्तिभंग पुं० आजीविकानी अभाव **वृत्तिभाज्** वि० होमादि रोजिदा व्यापार के पुण्य-पाप आदि प्रवृत्ति करनाहं **यृत्तिवैकल्य** न० जुओं 'वृत्तिभंग' बुत्र पुं० इंद्रे मारेली एक राक्षस(अंध-कारनुं मूर्त रूप) (२)वादळ;मेघ बुजराजु, बुजहन् पुं० इंद्र **वृत्वन्** पुं० आकाश **वृथा** अ० फोगट; व्यर्थ; नाहक; अघटितपभे ; मूर्खेताथी ; खोटी रीते **वृथाकार** पुं० मिथ्या – खाळी देखाव; वास्तविक नहीं पण आभासरूप एवं **यृथाम**ति वि० मिथ्या बुद्धियाळुं; मूर्ज **বৃত্ত** ('বৃত্ব' বুমু০ কূ০) বি০ **বधे**लुं; मोटुं थयेलुं (२) घरडुं (३) वर्धी गयेलुं के मोट् थयेलुं (समासने अंत उदा० 'वयोवृद्ध'; 'ज्ञानवृद्ध') (४) मोटुं (५) भेगुं थयेलुं (६) डाहचुं; समजण् (७) पुं० घरडो मागस(८) आदरपात्र माणस **बृद्धयुव**ति स्त्री० कुट्टणी (२) दायण (प्रसूति करावनारी) वृद्धभवस् ए० इंद्र वृद्धि स्त्री० वत्रवृते; विकास; वधारो (२) चंद्रनी कळानुंबबाबुं ते (३) समृद्धि (४) उन्नति (५) व्याज (६) नफो (७) कापी नाखवुं ते (८) पीडा वृद्धिमत् वि० वृद्धि पामतु (२)समृद्ध वृष् १ आ० वधवुं;वृद्धि थवी (२) चालु रहेवुं; टकवुं (३) ऊंचुं चडवुं (४) ('दिष्ट्या' साथे) अभिनंदनर्ने पात्र थवं (५) १० उ० बोलवं (६) प्रकाशव्

वृश्चिक पुं० वीछी | र्थ्यवान थवुं बृष् १प० वरसवु (२) १० आ० साम-**वृष पुं**० सांढ; आसलो (२) **दरेक** वर्गनुं मुख्य ते (समासने अंते; उदा० 'मुनिवृष') (३) इंद्र (४) पुण्य(५) कोई पण नर जानवर(६) उंदर वृषण पुं० अंडकोष **वृषदर्भ** वि० इंद्रनो गर्व हरनारुं **ब्दरा, ब्दराक** पु॰ बिलाडी वृषघ्वज पुं० शिव **कृषन्** पुं० आखलो; सांढ (२) कोई पण वर्गनुं श्रेष्ठ ते (३) इंद्र वृषभ पुं० आखलो (२) कोई पण नर जानवर (३) कोई पण वर्गनुं श्रेष्ठ ते (समासने अंते ; उदा० 'द्विजवृषभ') वृषभध्यज पु० शिव **वृषभस्कंध** वि० पहोळा सभावाळुं **बृषल** पु॰ शूद्र; बहिष्कृत माणस(२) चंद्रगुप्त मौर्य **वृषली** स्त्री० शूद्रा वृषलीपति पुं० सूद्रानी पति **बुषसेन** पुं० कर्ण | वाळु वृषस्कंध वि० सांढ जेवा पहोळा खभा-वृषस्यंती स्त्री ० पुरुष-समागमनी इच्छा-वाळी स्त्री वृजाकपि पुं० शिव (२) विष्णु (३) इंद्र (४) अग्नि (५) सूर्य 🚽 (कुशनुं)आसन वृद्यांक पु०शिव वृजी स्त्री० तपस्वी के ब्रह्मचारीनुं वृष्ट ('वृष्'नुं भू०कृ०) वि० वरसेलुं बृष्टि स्त्री० वरसेवु ते; वरसाद वृष्णि वि॰ नास्तिक (२) क्रोधी (३) पुं० श्रीकृष्णना पूर्वजनुं नाम (४) श्रीकृष्ण (५) घेटो **वृष्टिणगर्भ** पुं० श्रीकृष्ण विष्णपाल पु० भरवाड वृष्य वि० पौष्टिक; वीर्यवर्धक वसी स्त्री॰ जुओ 'वृषी'

बृहत् वि० जुओ 'बृहत् **बृहती** स्त्री० नारदनी वीणा (२) वाणी **वृहतीपति** पुं० बृहस्पति बुंत पुं० दींटुं **वृंताक** पुं० वंताक [झूमखुं ; गुच्छो **बृंद** न० टोळुं; समूह(२)ढग; जथो(३) **वृंदा** स्त्री० तुलसी(२)राधिका **बृंदार** पुं० देव <mark>र्वृदारक</mark> वि० घणुं; मोटुं (२) उत्तम (३) मनोहर (४) आदरणीय (५) पु॰ देव (६) कोई पण वर्गमां श्रेष्ठ (समासने अंते) **वृंदावन** न० गोकुळ नजीकनुं वन बृंदिष्ठ वि॰ धणुं मोटुं (२)अति सुंदर ('वृंदारक' नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) **वृंदीयस्** वि० (बेमां) वृधु मोटुं के स्ंदर ('वृंदारक' नुं तुलनात्मक रूप) **बृ ९** उ० पसंद करवुं; बरबुं **वे १** उ० वणवुं (२) गूंथवुं; बांधवुं वेक्षण न० देखरेख राखवी ते **वेग** पुं० जुस्सो (२) गति; झडप(३) क्षोभ (४) प्रवाह (५) बळ ; ताकात (६) प्रसरवुं ते (जेम के झेरनु) (७) साहस; अविचारी कृत्य(८) बाणुनी गति वेगतस् अ० वेगथी; उतावळथी वेगवाहिन् वि० वेगयी जतुं **वेगसर** पुं० खच्चर **वेगानिल** पुं० वेगथी ऊभी थयेली बंटोळ वेगित वि० वेगवाळ करेलू (२) देग-बान (३) क्षुब्ध [वृद्धिगत वेजित वि० गाभरुं; व्याकुळ (२) वेणा स्त्री० एक नदी (कृष्णाने मळे छे) **बेणि** स्त्री० वाळनो गूथेलो चोटलो (२) शणगार वगर एक ज जुडामां वाळ गूंथी पीठ उपर लटकता राखे ते (पतिवियोगमां) (३) प्रवाह (४) बे के वधु नदीओनो संगम वेणिका स्त्री० वेणी (२) चालु प्रवाह वेणिबंध पुं० वाळनो गूंथेलो चोटलो **वेणिसंहार** पुं० छूटा वाळने वेणीमा बांधवा ते **वेणी** स्त्री० जुओ 'वेणि' **वेणु** पुं० वांस[े](२) नेतर; बरु (३) बांसळी (४) पताका **वेणुक** पुं० वांसळी (२) वांसळी वगा-डनारो (३) न० वांसनो परोणो **वेतन** न० पगार; रोजी **वेतस** पुं• नेतर; बरु **वेतस**गृह न० नेतरनो बनेलो मंडप वेतसवृत्ति वि० नेतरनी पेठे वळी - नमी जतुं वैतसी स्त्री० नेतर; बरु वेतंड पुं० हाथी बेताल पु० एक जातनुं भूत; मडदामां पेठेलुं भूत (२) द्वारपाळ वेताससाधन न० वेताळने साधी तेनी मदद मेळववी ते मेळवनारो वेतु पु॰ ज्ञाता (२)ऋषि (३)पति (४) **बेत्र** पुं०,न० नेतर; बरु; वांस (२) दंडो (३) वृत्रासुर विकीदार **वेत्रधर, वेत्रधारक** पुं० छडीदार; **वेत्रयष्टि, वेत्रलता** स्त्री० नेतरनो दंड **वेत्रवती** स्त्री० एक नदी (आजे जेने बेटवा कहे छे) वेत्रवल्ली स्त्री० एक जातनो सुंदर वांस (जेमांथी मोती मळतुं कहेवाय छे) वेद पुं० ज्ञान (२) पवित्रः ज्ञान ; हिंदु-ओना प्राचीन धर्मग्रंथ (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अने अथवंवेद) (३) कर्मकांड; यज्ञप्रक्रिया (४) स्मृति साहित्य ('आम्नाय' ने आधारे प्रवर्तेलुं) **वेवदृष्ट** वि० वेदोए फरमावेलुं के ामान्य राखेल् **बेदन न०, बेदना** स्त्री० जाणवुंते (२) लागणी (३) पीडा; दुःस

वेदमात् स्त्री० गायत्रीमंत्र (२) सर-स्वती, सावित्री अने गायत्री वेदवाद पु० कर्मकांड वेदविद्वस् वि० वेद जाणनारुं **वेदञ्यास** पु० (वेदोने गोठवनार) व्यासमुनि **बेदस् न०** धनः; मिलकत **बेदांग** न० वेदनां छ अंगी (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष) –मान् दरेक वेदांत पुं० हिंदु तत्त्वज्ञाननां छ दर्शनो-मानुं छेल्लुं दर्शन; उत्तरमीमासा वेदि स्त्री० यज्ञ माटेनो कुंड (२)वच्चेथी सांकड़ो एवी अमुक आकारनो कुंड (जेथी स्त्रीनी कमर तेनी साथे सरखावाय छे) (३) मंदिर महेलना आंगणानो चौतरो (४) ऊंचुं आसन (५) मुद्रा; महोर वेदिका स्त्री० यज्ञकुंड (२)जुओ 'देदि' अर्थ २ (३) वेठक (४) आंगणानी वच्चे आवेलो छाजवाळो चोतरो (५)मंडप (थयंली) **वेदिजा** स्त्री० द्रौपदी (यज्ञकुंडमां उत्पन्न **वेदित** वि० जणावेलुं **वेदिन्** वि० जाणनार्ध (२) परणनार्ह वेदी स्त्री० जुओ 'वेदि' वेद्य वि० जाणवानुं; जाणवा लायक (२) शीखवा -- समजवा योग्य (३) परणाववानु वेष पुं० वीधवुते (२) दर; छिद्र; खाडो (३) ऊंडाई (खाडानी) (४) सूर्य, ग्रह, नक्षत्र वगेरेन् स्थळ नक्की करवुते वेषक पुं० (रत्नो) वीधनारो वेधस् पुंग्सन्दा (२) ब्रह्मा (३) ब्रह्मा पछीने। गौण स्रष्टा (दक्ष इ०) वेषिन् वि० वीधनार बेप् १ आ० ध्रुजवु; कपवु

(४) मिलकत (५) लग्न

वेषषु पुं० कंप; ध्रुजारी वेपन न० कंप; ध्रुजारी (२) पणछनो टंकार करवां ते **वेम** पुं॰, **बेमन्** न० साळ (वणवानी) देला स्त्री० देळा; समय (२)मोसम; तक (३) फुरसद; अवकाश (४) प्रवाह (५) दरियाकिनारो (६) सीमा; मर्यादा | कंपव **बेल्ल् १ ५० जबुं**;स्रसर्वु (२) हालबुं; **वेल्लन न०, बेल्लना** स्त्री० हालबु-कपबु ते(२) गबडवुं ते (जमीन उपर)(३) मोजानुं ऊछळवुं ते(४)जोरथी घूमडवुं ते वेल्लित (विल्ल्' नुं भू० इः०) वि० कंपतु; कंपेलुं (२) बांकुं **वेश पुं**० प्रवेश (२) घर; रहेठाण (३) वेश्यावाडो (४) पोशाक (५) सोंग (६) वेश्याजन वेशनारी, वेशवधू, वेशवनिता स्त्री० | अग्नि **वेशंत, वेशांत पुं**० नानुं खाबोचियुं(२) वेश्मन् न० घर; निवासस्थान **वेक्सवास** पुं० सूत्रानो ओरडो वेश्या स्त्री० गणिका **बेक्यापण** पुं० वेक्याने आपवानो दर वेष पुं• पोशाक; पहेरवेश **वेष्ट् १** आ० वींटवुं; घेरवुं (२)पहेरवुं –प्रेरक० वींटाळवुं; घेरवुं वेष्टन न० वींटवु ते; वींटळावु ते (२) ढांकण (३) फेंटो **देख्टित** ('वेष्ट्' नुंभू० कृ०) वि० वींटेलुं; घेरेलुंः(२) पहेरेलुं (३) रोकेलु; अटकावेलु **वेसर** पुं० खच्चर **वेसवार** पुंच गरम मसालो वेहत् स्त्री० वंघ्या गाय (२)गर्भ गळी जतो होय तेवी गाय वे १ प० सुकावुं (२) सुस्त थवुं वै अ० पादपूरण, संबोधन तथा अनुनय एवा अर्थ बतावतो अव्यय

वैकक्ष, वैकक्षिक न०, वैकक्षिकी स्त्री : जनोई पेठे पहेरातो हार **वंकटच** न० विकटता (२) मोटापणुं वैकर्तन पुं० कर्णनुंनाम **वैकर्तनकु**रु न० सूर्यवंश **वैकल्पिक** वि० विकल्पे यतुं के लेवातुं (२) अनिश्चित **वैकल्य** न० दोष; खामी (२) अपं-गता (३) असामर्थ्य; अञ्चावित (४) व्याकुळता (५) अभाव **वैकालिक** वि० समीसांजने लगतुं वेकिकर पु० मृत्यु **बैकुंठ** वि० दुर्धर्ष (२) पुं० विष्णु (३) न० विष्णु लोक **वैकुंठीय** वि० विष्णु के वैकुंठने लगतुं **बैकृत** वि० बदलायेलुं (२) विकार पामेलुं (३) सात्त्विक (४) न० फेरफार; परिणाम (५) धिक्कार; तिरस्कार (६) स्थिति के देखावमां थयेलो फेरफार; कद्रूपापणुं (७) अनिष्टसूचक घटना(८)कपट. वैकृतविवर्त पुं० शोचनीय स्थिति: दुःखी अवस्था वैकृत्य न० फेरफार; परिणाम (२) दुःखी अवस्था (३) अकुदरती बनाव (४) वेर; धिक्कार **बैकान्त** न० एक जातनुरत्न वैक्लव, वैक्लब्य न० व्याकुळता; गभ-राट; क्षोभ (२)दुःख; विकळता वंखरी स्त्री० वाणीनी चोथी कोटी – स्पष्ट उच्चारायेली वाणी (२) वाणी; बोलवानी शक्ति वैखानस वि॰ तपस्वीने लगतुं; तप-स्वीए आचरवानुं (२) पुं० वान-प्रस्थ तपस्वी (३) प्रजापति - ब्रह्माना वाळ अने नखमांथी पेदा थयेल तपस्वी वेगुण्य न० गुणरहितता (२) कुशळ-तानो अभाव (३) गुणोमां भेद के विरोध होवापणुं (४) हीन होबापणुं

वैघसिक वि० वघेलु भोजन स्नानारुं (तपस्वीओनो एक वर्ग) **बेबक्षण्य** न० विचक्षणता; कुशळता वैचित्त्य न० दुःखः; खेद वैचित्र, वैचित्र्य न० विचित्रता (२) विविधता (३) आश्चर्य (४) विकळता **बॅजन्य** न० एकांत; निर्जनता **बेंक्यंत** पुं॰ इंद्रनो महेल (२) इंद्रनो घ्वज (३)ध्वज (४)इंद्र वैजयंतिका स्त्री० धजा; पताका (२) मोतीनो एक जातनो हार वैजयंती स्त्री० धजा; पताका (२) हार; माळा (३) विष्णुनी माळा वैद्धर्य न० एक मणि **बैणव** वि० वांसनुं (२) वांसनो दंड (३) बांसनुं फळ के बीज वेणिक पुं० वांसळी वगाडनारो **बैणिक** पुं० वीणा वगाडनारो **वैतथ्य**ेन० खोटापणुं; जुठापणुं वैतनिक वि० पगारथी - वेतनथी काम करनारुं (२) पुं० मजूर;नोकर **यंतरणि (⊸णो)** स्त्री० नरकनी एक नदी वैतस वि॰ नेतर संबंधी (२) नेतर जेवुं (बळवान सामे नमी जनारुं) **बैतस्तिक** वि० देंत लांबु (बाण) **वैतंत्रिक** पुं० पारधी; पंखी पकडनारो (२) खाटकी; मांस वेचनारो (३) न० फांदामां नांखवुं ते **बैतान** वि० यज्ञ संबंधी (२) न० यज्ञकर्म (३)चंदरवो । ∤आहृति वैतानिक वि० यज्ञ संबंधी (२) न० **वेतान्य** न० खिन्नता वैतालिक पुं० भाट; चारण; स्तुति-गानथी राजाने जगाडनारो (२) जादुगर; वेताल साघनारो (३) न० ६४ कळाओमांनी एकनुं ज्ञान **बैतुष्ण्य न० तृष्णानी शांति;तृष्णा**नो अभाव(२)तरस छीपवी ते

वंत्तपाल्य वि० कुबेर संबंधी बंद पुं० डाह्यो माणस वेदग्ध, न०, वेदग्धी स्त्री०, **देदग्ध्य** न० निपुणता; कुशळता (२) गोठवणीनी कुशळता(३)चतुराई; चालाकी वैदर्भ पुं० दिदर्भ देशनो राजा (२) न० संदिग्ध वाणी **बंदर्भो** स्त्री० दमयंती (२) रुक्मिणी (३)साहित्यनी अमुक शैली (काव्य०) **वैविक** वि० वेदोने लगतुं; वेदविहित (२) पवित्र (३) पुं० वेद जाणनारो ब्राह्मण (४) न० वेदवाक्य **बंबुषी** स्त्री०, **बंदुष्य** न० विद्वत्ता **बेदूर्य** न० एक मणि **वैदेशिक** वि० विदेश – परदेशनुं (२) पुं॰ परदेशी माणस **बंदेश्य** वि० विदेशी (२) न० परदेशीपणुं **वैदेह** पुं० विदेहनो राजा (जनक) (२)विदेहनो वतनी(३)वेपारी(४) वैश्यनो ब्राह्मण स्त्रीयी थयेलो पुत्र **बैदेहाः** पुं० ब० व० दिदेहना लोको **वैदे**ही स्त्री० सीता वैद्य वि० वेदो संबंधी; आध्यात्मिक (२) वैदा संबंधी (३) पुं० डाह्यो – पारगत प्राणस(४)वैद् करनार(५) ब्राह्मणथी वैश्य स्त्रीने थयेलो पुत्र (६)शूद्रने वैश्य स्त्रीथी थयेलो पुत्र वैद्यक न० वैदक; वैद् **धैद्युत** वि० विद्युतने लगतुं (२) **न०** बीजळीनुं तेज - प्रकाश बैघ वि० विधि – घाराघोरण मुजबनुं वैधर्म्य न० भिन्नता; विशिष्ट गुणोनो भेद (२) विरुद्धता (३) विरुद्ध धर्म के कर्तेव्यवाळा होवापणुं (३) अधार्मिकता **बैभव** वि० चंद्र संबंधी (२)पुं० **बुधग्रह** वैधवेय पु० विधवानो पुत्र **वेघव्य** म० विधवापणु **बंघस** वि० ब्रह्माए रचेलुं (२) विधि – नसीबयी वनेलु

वैषुर्यं न० वियोग (२) चित्तक्षीभ वैष्त न०, वैष्ति स्त्री० सूर्य अने चहनो .अमुक योग (अशुभ गणाय छे) बंबेय वि० विधि प्रमाणेनुं (२) मूर्ल (३) पुं० बेवकूफ माणस **वेनतेय पु**० गरुड(२)अरुण **बॅनत्य** न० विनय; नम्रता **बेनयिक** वि० विनय – शिष्टाचारने लगतुं (२) शिष्टाचार प्रमाणे वर्ते तेम करनारुं (३) पुं० रणगाडी वैनायक वि० गणेश संबंधी **वैपरीत्य** न**० विपरीतपणुं (२)** असंब**द्धता येप्रतिसम** वि० प्रतिस्पर्धी विनान् बेफस्य न० विफळता; निष्फळता वंबोधिक पुं० पहेरेगीर (२) समय जणावी जगाडनारो वैभव न० समृद्धिः; ऐश्वयं (२) बळः; वैभाज न० एक देवोद्यान **बैमनस्य न०**खिन्नता;खेद(२)बीमारी बैमातुक, बैमात्र, बैमात्रक, बैमात्रेय प्० ओरमान भाई वैभानिक वि० दैवी विमानमां लई जबातुं के सवारी करतुं (२) पु० देव वंसानिकी स्त्री० देवांगना **वैमुख्य** त० विमुखता; पाछा फरवुं ते (२) अणगमो किरेलुं नृत्य **बैम्डक** न० स्त्रीना वेशमां पुरुषीए **बैयद्र, वेयग्ध न**० व्यद्रता; मूंझवण (२) कोई पण वस्तुमां स्वन्धीनता – भिनत **धेयर्थ्य न०** व्यर्थता; निरुपयोगीपण् **वैयवहारिक** वि० रुढि प्रमाणेनुं ; सामान्य **वैद्याकरण** पुं० व्याकरणशास्त्री **वैधास्य** पुं० व्याख्याः विवरण वैयाद्य वि० वाघनुं; वाघ संबंधी (२) व्याघ्रचर्मयी ढांकेलुं. **बैयात्य** न० निर्रुज्जता; धृष्टता **वैयास** वि० व्यासमायी आवेल् **वैयासकि** पुं० शुकदेव

वैद्यासिक वि०व्यासनुं; व्यास संबंधी **बैर** न० वेर; शत्रुवट; द्वेष; झेर (२) शत्रुसैन्य (३) वीरता; शौर्य **बैरकृ**त् वि० झघडाखोर(२)पुं० दुश्मन **वैरक्त, वैरक्त्य** त० विरक्ति (२) अप्रीति वैरनिर्यातन न०, वैरयातना, वैरशुद्धि स्त्री०, **वैरसाधन** न० वेरनी वसूलात **वैरागिक, वैरागिन्** पुं० वेरागी; वैरा-ग्ययुक्त एवी ते (२) बाबी; साधु **बेराग्य** न० सांसारिक वासनारहितपण् (२)विरक्ति;अणगमो (३)खेद (४) रंग वदलाई के ऊड़ी जको ते वैराज वि० ब्रह्मा संबंधी **बैराट** वि० विराट संबंधी (२) धा विनानुं (३)घरडुं (४) पुं० इंद्रगोप **वैरानुबंधिन्** वि० वेर ऊभुं करनारु वैरिन् वि० वेरी (२) पुं० शत्रु (३) वीर **बेरूप्य** न०कुरूपता (२) विविध रूप होवां ते वैरोचन वि० सूर्य संबंधी (२)पुं० बुलि-**वरोचनि** पुं० विरोचननो पुत्र – बलि वैलक्षण्य न० विलक्षणता; विचित्रता (२) विरुद्धता (३) भिन्नता वैलक्ष्य न० मूंझवण ; गूंचवण (२) दंभ ; ढोग (३) शरम (४) विपरीतता वैवक्षिक वि० कहेवा धारेलुं **बंबर्ण** वि० (भूरो-पीळो इ०) रंग विनानुं वैवर्ण्य न० विवर्णता; फीकाश(२)भेद; विभिन्नता (३) वर्णथी च्युत थवं ते वैवस्वत पुं० यम (२) सातमा मनु (आ मन्वंतरना अधिष्ठाता) वैवाहिक वि० विवाह संबंधी (२)पुं०, न० लग्न (३)लग्ननो उत्सव; लग्ननी तैयारीओ (४) पुं० पुत्रवधूनो के जमाईनो बाप **बैवाह्य** वि० लग्न संबंधी(२)लग्नने योग्य **बेशद्य** न**०** स्वच्छता; स्पष्टता वैशस वि० मोत के विनाश उपजावनारुं (२)न० वध; कतल (३)पीडा; त्रास

वेशसन न० कतल; वध **वैशंपायन** पुं० व्यासना एक शिष्य (जनमेजयने महाभारतनी कथा तेमणे नो रवयो संभळावी हती) **बैशाख** पुं० वैशाख महिन्मे (२)वलोबवा-**बैशारट** वि०कुशळ; निपुण (२)ज्ञानी (३) न० गाढ ज्ञान **बेशारद्य न**० निपुणता वैशिक वि० वेश्याओं वडें सेवातुं -आचरातुं (२) पुं ० वेश्याओनो संगी वैशिष्टच न० विशिष्टता; खासियत (२)उत्तमता वैशेषिक वि० विशिष्ट; खास (२) वैद्योपिक दर्शन संबंधी (३)न० छ दर्शनोमानुं एक; कणाद-दर्शन वैश्य पुं० चार वर्णोमांनो त्रीजो (खेती, वेपार अने गोरक्षा करनारो वर्ण) **वश्यवण** पुं० कुबेर(२)रावण वैश्वदेव वि० विश्वेदेव संबंधी(२)न० विश्वेदेवोने अपातो बलि **बैश्वस्त्य** न० विधवापण् वैद्यानर वि० सर्व मानवजात संबंधी; सर्व मनुष्योने माटे योग्य एवं (२) सामान्य; सार्वत्रिक (३) ज्योतिश्चक्र संबंधी (४) पुं० अग्नि (५) जठराग्नि (६) परमात्मा (स्थूल शरीरोनो अभिमानी) वैद्यानरी स्त्री० चंद्रना मार्गनी एक विभाग (भाद्रपदा अने रेवती नक्षत्रो) (२) वर्षना प्रारंभे करातो एक यज्ञ वैश्वासिक वि० विश्वास् वैष पु० कतल **बंखमेषव** वि० विषमेषु – कामदेव संबंधी वेषम्य न० विषमता (२) खरबचडा-पणुं; खाडाखैयावाळा होवापणुं(३) आफत ; संकट (४) अन्याय (५) भूल **बंबियक** वि० विषय-वस्तु सबंधी (२) इंद्रियविषय संबंधी

वैष्णव वि० विष्णुसंबंधी(२)विष्णुनी उपासना करनारुं (३)न० वैकुंट **वैसारिण** पु**०** माछलु वैसारिणकेतन पुं० मीनकेतन -- कामदेव **वेहायस** वि० आकाशमां होबुं ते; आकाश संबंधी (२)न० आकाश ; अंत-रिक्ष (३)आकाशमां ऊडवुं ते **बैहारिक** वि० विहार → कीडा माटेनुं **बेहार्य** वि०मजाक करवा योग्य (साळो के पत्नीनां सगा) वेहासिक पुं० विदूषक; मश्करो **बोढ़** पुं० हमाल (२) आगेवान (३) पति (४)बळद (५)सारथि **व्यक्त** ('व्यंज्'नं भू०कृ०) दि० खुल्लुं; प्रगट; स्पष्ट (२) ज्ञानी (३) न० अव्यक्त तत्त्वमांथी विकसित कार्य **व्यक्तम्** अ० स्पष्टताथी; निश्चितपणे **व्यक्ति** स्त्री ० प्रगट -- स्पष्ट करवुं के थवुं ते (२) भेद; विवेक (३) साचुं स्वरूप (४) कोई पण वर्ग के जातिमांनुं एक **ब्यग्र** वि० व्याकुळ; मूंझायेलुं(२)गभ-रायेलुं(३)व्यापृत; लवलीन व्याप्रता स्त्री०, व्यप्रत्व न० व्याकुळता; गभराट; मृंझवण (२) उत्सुकता; **लव**लीनता **व्याच् ६** प० [विचति] छेतरवुं;ठगवुं व्यक्रन न० पंखी **व्यक्तिकर** पुं० संयोग; संबंध; जोडाण (२) मिश्रण; एकठुं करवुं ते (३) अथडावुं ते (४) रुकावट ; विघ्न (५) प्रसंग;बनाव; धटना (६) विनिमय (७)क्षोभ (८)विनाश (९)व्यापवुं ते **व्यतिकरित** वि० व्याप्त व्यतिकीर्ण वि० मिश्रित (२)संबद्ध (३) आम तेम हलावेल् **व्यतिकम् १ उ० उ**ल्लंघन करवाः; अपराध करवो (२)टाळवुं; बेदरकार रहेवु(३)व्यतीत करवु (समय)

व्यतिक्रम पुंज उल्लंधन (२) लोप (३) अनादर(४) ऊलटापणुं (५) दाप ; पाप व्यतिक्षेप पुं० झघडो; टंटो क्यतिचुंबित वि० संबद्ध; स्पर्शतुं **व्यतिपात पुं** जुओ 'व्यतीपात ' **क्यतिय**्२ प० भेळववुं; मिश्चित करवुं व्यतिरिक्त वि० छूटुं; जुदुं; भिन्न (२) | चडियाता होव् चडियातुं व्यतिरिच् - कर्मणि० छूटा पडवुं(२) व्यतिरेक पु० भिन्नता; भेद (२) अलगपणुं (३) उत्तमताः; श्रेष्ठताः (४) अमुक एक वस्तु न होय तो बीजी अमुक पण न होय एवी संदंध के नियम (न्याय०) (५) एक अर्थान्त्रकार, जेमां उपमेयने उपमान करतां श्रेष्ठ बताव्युं होय (काव्य०) व्यतिरेकिन् वि॰ जुदुं; भिन्न (२) चडियातुं; उत्तम (३) बाद करतुं **व्यतिविद्ध** वि० वींटळायेलुं बीधायेल् **व्यतिषक्त** वि० अरसपरस जोडायेलुं – संबद्घ (२) मिथित व्यतिषंग पुं० परस्पर संबंध (२) एक्रबीजामां जोडावुं – अटवावुं ~ गूंच-वाव् ते (३) शत्रुवटथी सामनी – अथडामण (४) विनिमय व्यतिषंज् १ प० [व्यतिषजति] साथे जोडवुं; संबंधमां लाववुं(२)संडोबबुं (रमतमां) **ध्यतिषंजन** न० एकवीजाने जोडवुं ते **ब्यतिहार** पुं० विनिमय; अदलोवदलो **व्यतिहत** वि० विरहित ब्यती २ प० ओळंगवुं; उल्लंघन करवुं (२) व्यतीत थवुं (समय) (३) पाटळ मूकवुं; आगळ जवुं व्यतीत वि० पसार थयेलुं; त्रीती गयेलुं (२) मृत (३) तजेलुं व्यतीपात पु० अनिष्टसूचक चिह्न;

उत्पात (२) ज्योतिषमां अश्भ मनातो १७ मो योग **व्यतीहार** पुं० जुओ 'व्यतिहार' व्यत्यय पुंजपसार थवुं ते (२)विरोध (३) ऊलटापणुं (४) अदलीबदली **व्यत्यस् २ आ०** व्यतिहे, व्यतिसे, व्यतिस्ते] चडियाता थवुं (२) ४ उ व्यित्यस्यति –ते जिलटु करवुं **ज्यत्यस्त** वि० ऊलटुं करेलुं विरुद्ध (३) असंबद्ध (४) चोकडी पडे तेम गोठवेलुं (हाथ, पग इ०) **व्यत्यास** पुं० अलटो ऋम (२) विरोध (३) अदलोबदलो करवो ते व्यथ् १ आ० व्यथा पामवी; दु:सी थवं (२) क्षुब्ध थवु ट्यथक वि० व्यथा करनारुं **ज्यथन** वि० भारे व्यथा करनारुं व्यथा स्त्री० दुःख; पीडा (२) डर; वीक (३) क्षोभ; मुझवण क्यथित ('ब्यथ्' नुभू० कृ०) ब्यथा-पामेलुं; पीडित (२) भय पामेलुं; गभरायेल् **ब्यघ्** ४ प० [बिष्यते] वीषवु (२)आरपार भोंकवुं (३) फरकाववुं (विजयमां) व्याध प्० वीधवृते **व्यक्षिक्षेप** पुंच गाळ भांडवी ते **ध्यपकृष् १**५० खेंची अवुं (२) अवळे मार्गे लई जबुं व्यपगत वि० चाल्युं गयेलुं; थयेलुं (२) – मांथी पडी गयेलुं; विनानु बनेलु ब्यपगम् १ प० व्यिपगच्छति दूर जवं खसी जवुं(२)अदृश्य थवुं; लुप्त थवुं **ब्यपगम** पुं० दूर थवुं ते; खुप्त बहुं ते व्यपत्रप् १ आ० शरमयी मों फेरवी लेवुं (२) शर्रामदा थवुं व्यपत्रप वि० निर्लज्ज: वेशरम व्यपत्रपा स्त्री० शर्रामदगी

व्यपिक्स् ६ प० कहेवुं; — नामथी बोलाववुं (२) खोटुं कहेवुं (३) ढोंग करवो (४) दर्शाववुं; जणाववुं क्यपदेश पुं० कहेवुं - जणाववुं ते (२) नाम; उपनाम (३) कुळ; वंश (४) ख्याति; कीर्ति(५) बहानुं; मिष वि० (समासमां) ⊷नी **ठ्यपदे**शिन् सलाहरे अनुसरतुं (२) नामवाळुं व्यपदेश्य वि० नामथी ओळखवा लायक **व्यपनय** पुं० लई जवुं – दूर करवुं ते (२) गेरवर्तेणूक व्यपयान न० नासी - भागी जबुं ते क्यपरह् -प्रेरक० व्यिपरोपयति निर्मूळ करवुं (२) रहित करवुं व्यपरोपण न० निर्मूळ - नाबूद करवुं ते (२) काढी मूकवुं ते (३) तोडी लेव – कापी नाखवुत क्यपर्वृत् १ आ० पाछा फरवुं (२) तजवु; छोडी देवूं व्यपिध १ उ० विनंती करवी **क्यपाय** पुं० अभाव (२) अंत; लोप व्यपाध्य पुं० आशरो; आधार व्यपाध्यणा स्त्री० विनंती ध्यपास्त वि० काढी मूकेलं; हांकी काढेलुं; दूर करेलुं **व्यपे** (वि+अप+इ)२ प० जुदा पडवु; छूटा पडवुं(२) →थी मुक्त थवु व्यपेक्ष १ आ० अपेक्षा राखवी (२) दरकार राखवी; गणनामां लेवुं **व्यपेक्ष** वि० अपेक्षा राखतुं; उत्सुक (२) निरपेक्ष (३) गणनामां लेतुं क्यपेक्षक वि० निरीक्षण करनारु; लक्ष राखनारु **ध्यपेक्षा** स्त्री० अपेक्षा; आकांक्षा (२) आदर; लक्ष; काळजी (३) अरसपरस संबंध के आधार **व्यपेत** वि० छूटुं पडेलुं; दूर गयेलुं(२) **ऊलटुं (३)अनीतिमान**

व्यपोढ वि० हॉकी काढेलुं; दूर करेलुं (२) विरुद्ध; ऊलटुं (३) दर्शावेलुं व्यपोह् १ उ० धोई काढवुं, प्रायश्चित्त करवं(२)हांकी काढवं; दूर करवं **ब्यपो**ह पुं० हांकी काढवु – दूर करवु ते (२)समूह(३)इनकोर;नकार **व्यभिचर् १ प०** उल्लंघन करवुं; बेवफा नीवडवुं (२) अपराध करवो (३)मार्ग के नियमथी ऊलटा जबुं व्यभिचार पुं० मार्ग, मर्यादा के नियमथी भ्रष्ट थवुं ते; उल्लंघन; मंग (२) **अ**पराध; दोष (३) बेबफापणुं (४) नियममां अपवाद-अनियभितता **व्यभिचारिन्** वि० मर्यादा के नियमनुं उल्लंघन करतुं (२) अनियमित (३) खोटुं; जूठुं (४) बेवफा (५) स्वच्छंदी (६) अस्थिर; बदलाय तेवू व्यभिचारिभाव पुं० रसनी उत्पत्तिमां जे स्थायी भावने पुष्ट करी चाल्यो जाय छेतेक्षणिक भाव व्यभीचार पुं० जुओ 'व्यभिचार' व्यय १० उ० व्यययति—ते जनुः गमन करवुं(२)खर्चवुं;आपी देवुं(३)१ उ० [व्ययति—ते] जवुं(४) १० उ० व्या-पयति-ते| फेंकवुं (५) हांकवुं **व्यय** वि० बदलाय तेवुं; नाश पामे तेवुं (२) पुं० नाश (३) खर्च (४) विघ्न (५) किमत ; बलिदान (६) उडाउपण् (७) धनः; मिलकत व्यवगुण वि० खरवाळ; उडाउ **व्ययपर** वि० उडाउ [अर्थहीन व्यर्थवि० निरुपयोगी; फोगट (२) **व्यलीक** वि० खोटुं; जूठुं (२) अप्रिय (३) जूठुं नहि तेवुं (४) न० अप्रिय– प्रतिकूळ एवं ते (५) दुःख-शोकनुं कारण एवं ते (६) अपराधः दोष (७) युक्ति; छेतर**पिंडी** (८) पाप **व्यविच्छब् ७** उ० कापी नाखबु; छूटुं

पाडवुं; चीरी नाखवुं (२) निश्चित करवुं (३) जुदुं तारववुं व्यवच्छेद ए० कापी नाखवं – चीरी नाखबं ते (२) जुदं – छूटं पाडवुं ते (३) निर्णय (४) नाश (५) प्रकरण **व्यवदान** न० शुद्धि क्यवधा ३ उ० वच्चे – आडे मूकवुं(२) छुपाववुं; ढांकवुं; (३) छूटुं पाडवुं **व्यवधान** न० आड; पडदो; ढांकण व्यविध पुं० व्यवधान; आड; पडदी व्यवसाय पुं० उद्योग; उद्यम (२) निश्चय; निर्णय(३) अनुष्ठान; कार्य (४) बंधो; व्यापार (५) व्यवहार; आचरण (६) युक्तित व्यवसायिन् वि॰ उद्यमी (२) निश्चयी (३)आचरनारुं; करनारुं(४)धंधामां बळगेलुं (५)पुं० वेपारी **व्यवसित** वि० प्रयत्न करनारं(२)माथे लीधेलुं (३) निश्चय करेलुं (४) न० निश्चयः; निर्णय (५) युनितः करामत **व्यवसिति** स्त्री० निर्णय(२)प्रयास **व्यवसो** ४ प० प्रयास करवो (२) इच्छव् (३) निश्चय करवो (४)माथे लेवुं व्यवस्था १ आ० व्यवतिष्ठते। ऋम-सर गोठवावुं (२) अलग मुकावुं (३) स्थिर थवुं (४) – ना उपर अवलंबवुं –प्रेरक० –नी उपर मूकवुं; तरफ प्रेरवुं (२)गोठववुं(३)निश्चित करव् व्यवस्था स्त्री० गोठवणी (२) निश्चित-पणुं (३) स्थिरता (४) नियम; विधि; कानून(५)करार **व्यवस्थान** न०गोठवण; बंदोबस्त (२) नियम; निर्णय(३) स्थिरता; दृढता

द्यसन **व्यवहार** पुं० वर्ताव; आचरण (२) धंधो; कामकाज (३) वेपार (४) व्याजवट् (५) रूढि; परंपरा (६) संबंध (७) अदालती तपास (८) फरियाद **व्यवहारक** पुं० वेपारी व्यवहारतंत्र न० रोजिंदा व्यवहारनी प्रक्रिया **व्यवहारायिन्** वि० फरियादी व्यवहारासन न० न्यायासन **व्यवहारिन्** वि० वेपार-धंघो-कामकाज करतुं (२) फरियादी (३) रूढि प्रमाणेनुं (४) पुं० वेपारी **ब्यबहित** वि० दूरमूकेलुं (२) (वच्चे आडथी) जुदु पडेलुं(३)विध्नित (४) ढंकायेलुं; छुपायेलुं (५) निकट संबंध-वाळुं नहि तेवुं (६)करायेलुं(७)दूरनुं **थ्यवह** १ प० व्यवहार–धंघो–कामकाज करवां (२)अदालतमां फरियाद करवी व्यवहति स्त्री० प्रक्रिया; व्यवहार; आचरण (२) वेपार; धंधो **ब्यवाय** पुं० पृथक्करण; घटक छूटा पाडवा ते (२) ढांकवुं – छुपाववुं ते (३) विघ्न (४) ऊंडा पेसबुं ते (५) मैथुन ; संभोग व्यक्ष ५ आ० भरी काढवुं;व्यापवुं व्याष्टि स्त्री० समष्टिनो प्रत्येक अंश के **व्यस्** ४ प० उछाळवुं; विखेरवुं; दू**र** फेंकवुं (२) नाश करवो (३) भाग पाडवा; गोठववुं (४) ऊंधुं वाळवुं (५) हांकी काढवुं; दूर करवुं व्यसन न० दूर फेंकबुंते; दूर करबुंते (२)जुदु पाडवुं ते (३) उल्लंघन ; भंग (४) नाश ; पराजय; पडती (५) नवळी बाजु (६) आफत; जोखम; संकट; दुःख (७) आथमवुं ते (सूर्य इ० नुं) (८) कुटेव (९) खूब मंडवुं ते (१०) टंब; लत

निश्चित; नियत

(४)मर्यादा; निश्चित हद

व्यवस्थापित वि० गोठवेलुं; निश्चित

व्यवस्थित वि० कमसर गोठवेलुं (२)

व्यवस्थिति स्त्री० जुओ 'व्यवस्थान '

व्यसनब्रह्मचारिन् पुं० साथे दुःख भोगवनारो िलागेलुं **ब्गसनसंस्थित वि० पोतानी लतमां ब्यसनातिभार** पुं**०** भारे विपक्ति के संकट व्यसनिन् वि० कशानी खोटी लते चडेलुं (२)कमनसीब;⊸नी पीडावाळुं(३) कोई पण बाबतमां अतिशय लागेलुं (समासमां) **व्यसु** वि० प्राणरहित;मृतः **व्यस्त** वि॰ उछाळेलुं; फेंकेलुं (२) विखरी नाखेलुं (३) दूर करेलुं (४) जुद् पाडेलुं (५) 'समस्त 'थी ऊलटुं --जुदुं जुदुं एक एक एवं (६) विविध (७) ऊल्टुं (जेम के प्रमाण) (८) सादुं; समासमां जोडायेलुं नहि तेवुं (शब्द) **व्यस्तन्यास** वि० करचली पडी गयेलु; पीखाई गयेलु **व्यस्तवृत्ति** वि० जेनो अर्थ बदलाई गयो व्यंग वि० शरीर विनानुं (२) एकाद अवयव विनानुं; पांगळुं **व्यंगार** वि० अंगारा विनानुं ; ठंडा चूला-**व्यंगिता** स्त्री० एकाद अंग विनाना थवुं के होवुं ते **व्यंग्य** वि० आडकतरी रीते सूचित थत् (२)न० सूचितार्थ; गर्भितार्थ **रुयंज् ७** प० स्पष्ट करवुं (२)दर्शाववुं **व्यंजक** वि० स्पष्ट करनारुं; व्यक्त करनारुं(२) आडकतरी रीते सूचवनारुं (बाचक के लाक्षणिकथी भिन्न)(३) प्० योग्य चेष्टायी अंतरनो भाव प्रगट करवो ते(नाटघ०) **व्यंजन** न० प्रगट–स्पष्ट करवुं ते (२) निशान; चिह्न (३) याद करावनार वस्तु(४)वेश;सोंग(५) स्वरनी मदद विना जेनो उच्चार नथी थतो ते वर्ण (६) उंमरमां आव्यानी निशानी (७) मसालावाळी – चटणी जेवी वानी (८) मसाला माटे वपराती वस्तु (९) शब्दनी व्यंजनाशक्ति

व्याजनधातु पुं० बाद्य बगाडवुं ते; बीणा वगाडवी ते शब्दनी शक्ति **घ्यंजना** स्त्री० व्यंग्यार्थनो बोध करवानी व्यंतर पु० भूत; एक पिशाच योनि व्यांशुक वि० नग्न; वस्त्ररहित व्यांस् १० उ० विभाग करवो ; वहेंचवुं (२)छेतरवुं व्यंसक पुंच ठग **व्यंसन** न० ठगवुं ते (२) वहेंचवुं ते **व्यंसित** वि० छेतरायेलुं(२)हारेलुं(३) निष्फळ –िबनअसरकारक बनावेलुं **क्याकरण** न० भाषाना शुद्ध प्रयोगो, नियमो वगेरेनुं शास्त्र (२) पृथक्करण (३) प्रगट करवुं ते व्याकीर्ण वि० आमतेम फेंकायेलुं, वेरा-येलुं के बीखरायेलुं(२)अस्तव्यस्त **व्याकुल** वि० गभरायेलुं; गाभरं (२) क्षुब्ध ; मूंझायेलुं (३) व्यापृत ; रोका-येलुं (४) चमकतुः, फरकतुं **ब्याकुलित** वि० व्याकुळ के गाभरुं बनेलुं **व्याकृ ८** उ० प्रगट करवुं; स्पष्ट कर**वुं** (२)समजाववुं (३)कही बताववुं (४) छूटुं पाडवुं विकसित व्याकोश (--ष) वि० प्रफुल्लित; व्याक्षिप् ६ ५० आम तेम उछाळवुं -फेंकवुं (२) आकर्षवुं (मनने) **ब्याक्षेप** पुं• आमतेम उछाळव् ते (२) विष्न; रुकावट (३) विलंब (४) बीजी बाजु खेंचाई जबुं ते (लक्षनुं) (५) गाळ (६) फेंकवुं -- नाखवुं ते **व्याक्षेपिन्** वि० हांकी काढतुं **व्याख्या** २ प० कहेबुं; जणाववुं(२) समजाववुं (३) नाम पाडवुं; कहेवुं (४) विवरण करवुं **व्याख्या** स्त्री० कहेवुंते(२)विवरण **ड्यास्यान** न० निरूपण (२) विवरण (३) भाषण **व्याधद्रन** न० वलोववुंते(२) घर्षण

व्याधात पुं० प्रहार करवो ते (२) अफा-ळवं ते(३) विघ्न(४) विरोध (५) भंग; उल्लंघन(६)पराजय **ट्याधूणित** वि० अमळातुं; पडुं पडुं थतुं **व्याध्न** पुं० वाघ (२) उत्तम (समासमां ; जेमके 'पुरुषव्याद्य') **ट्याच्री** स्त्री० वाघण **व्याज** पुंज्कपट (२)बहानुं (३)करामत व्याजगुरु पुं० देखाव मात्रमां गुरु एवो ते व्याजपूर्व वि० -ना मात्र देखाववाळुं स्याजस्तुति स्त्री० देखीती स्तुति मार-फते निंदा; एक अलंकार (काव्य०) च्याजिहा वि० वांकुं(२)मेलुंथयेलुं व्याद पुं० हिंसक पशु(२)ठग(३)इंद्र ब्यात्त ('ब्यादा 'नुं भू० कृ०)वि० पहोळुं; खुल्लुं करेलुं वानी रमत व्यात्युक्षी स्त्री० सामसामे पाणी उछाळ-क्यादा ३ उ० उघाडवुं; पहोळुं करवुं व्यादान न० उधाडवुं ते; पहोळुं करवुं ते क्यादिश् ६ प० आदेश आपवी(२) नीमवु(पद उपर)(३)उपदेशवु(४) भाखवं (भविष्य) व्याध पु॰ पारधी(२)दुष्ट; दुर्जन व्याघंट्याघम् अ० वीधी वीधीने व्याधि पुं० रोग; बीमारी **च्याधित** वि० बीमार; मांद् **ब्याधूत** वि० हलावेलुं; कंपतुं **ब्यान** पुं० शरीरमांना पांच प्राणमांनो एक(आखा शरीरमां व्यापीने रहे छे) **व्याप् ५** प० भरी काढवुं; व्यापवुं(२) -मुधी पहोचव **ध्यापक** वि० व्यापनारुं; फेलायेलुं व्यापत्ति स्त्री० आपत्ति; कमनसीव; वरबादी (२) मृत्यु **ब्यापद् ४ आ० नाश पामवुं ; मरी जवुं** --प्रेरक ॰ मारी नाखवुं (२) हानि पहोंचाडवी **व्यापद्** स्त्री० संकट; विपत्ति

ब्यापन न० व्यापवुं – फेलावुं ते **ब्यापन्न** वि० विपक्तिमां आवी पडेलुं(२) निष्फळ गयेलुं(३)ईजा पामेलुं(४) मृत (५) नष्ट; भ्रष्ट; अभक्ष्य क्यापादन न० हणवुं ते (२) नाश **व्यापादित** वि० हणेलुं; मारी नाखेलुं (२)ईजा पामेलुं **च्यापार** पुं० धंधों; वेपार(२)वापरवुं काममां लेवुं ते (३) प्रवृत्ति; कायं; असर (४) प्रयत्न, उद्यम (५) माथु मारवुं ते (६) –उपर मूकवुं ते **ट्यापारित** वि० निमायेलुं; कामे लागेलुं **ब्यापृ** ६ आ० [ब्याप्रियते] --मां रोकार्युः; –ना कामे लागवुं (२)कोई पदे निमावुं –प्रेरक०–नीमवुं ; कामे लगाडवुं (२) मूकवुं; स्थिर करवुं; नाखवुं; प्रेरवुं (३)बापरवुं; उपयोगमां लेवुं **व्यापृत** वि० काममां लागेलुं – रोकायेलुं (२)मूकेलुं; प्रेरेलुं; स्थिर करेलुं **व्यापृति** स्त्री० कामकाज; धंधो(२) कार्यः; प्रवृत्ति (३) उद्यम **ब्याप्त** वि० व्यापेलुं; विस्तरेलुं (२) -- थी पूर्ण (३) मेळवेलुं ब्याप्ति स्त्री० ब्यापवुं ते (२) नित्य साहचर्य (साध्य अने साधननुं; न्याय०) ब्याम पुं ०, ब्यामन न० वाम(हाथ पहोळा करतां थतुं अंतर) व्यामिश्र वि॰ मिश्रित (२)विविध (३) संदिग्ध (४) ब्यग्र व्यामिश्रक न० प्राकृत वगेरे मिश्र भाषाओवाळुं नाटक इ० व्यामोह पुं० मोह (२) मूंझवण **ध्याय पुं**० बाण छोडतां पहेलां धनुष्य खेंचवानी रीत **व्यायत** वि० लांबुं; दीर्घ(२)विस्तृत (३) काममां रोकायेऌं (४) दृढ (५) तीव्र; गाढ (६) बळवान (७) ऊंडुं व्यायतस्य न० स्नायुओनो विकास -मजब्ताई

स्थायम् १ प० [ब्यायच्छिति] लांबुं करवुं (२) लडवुं (३) प्रयत्न करवो (४) कीडा करवी

च्यायाम पुं० लांबुं करवृंते (२)कसरत (३) थाक; महेनत (४) प्रयत्न (५) लडाई; झघडो

व्यायोग पुं० एक प्रकारनुं एकांकी नाटक व्यास वि० दुष्ट; कूर; जंगली (२) पुं० तोफानी हाथी (३) हिंसक पशु (४) साप (५) वाघ (६) चित्तो व्यालग्राहिन् पुं० साप पकडनारो— गारुडी [भक्षी चित्तो व्यालमृग पुं० जंगली प्राणी (२) मनुष्य-व्यालोल वि० चंचळ; अस्थिर; ध्रुजतुं

(२) अस्तव्यस्त; वींखायेलुं व्याविजत वि० वांकुं वळेलुं व्यावर्तन न० घेरी लेबु ते (२) आसपास घूमबुं ते (३) गूंचळुं (सापनुं) (४) आंटो; वींटो (५) रस्तानो वळांक व्यावला १ ५० ठेकडो भरवी; कूदबुं व्याविलात वि० क्षुब्ध; ऊछळतुं; कूदतुं व्यावहारिक वि० व्यवहार संबंधी (२) बहेवार; वहेवारमां चाली शके तेवुं (३) चालु रिवाज मुजबनुं (४) भ्रमथी देखाता संसार विषयक एवुं (५) पुं० अभात्य; सलाहकार

व्यावहासी स्त्री० परस्पर हसवुं ते
व्याविद्ध वि० बंधायेलुं (२) परस्पर
विरोधी (३) आमतेम धुमावेलुं के
उछाळेलुं (४) अवळे ठेकाण मुकायेलुं
व्यावृ ५ उ० पसंद करवुं (२) संताहवुं; ढांकवुं (३) क्काबट करवी
व्यावृत् १ आ० पाछा फरवुं (२) विमुख
। थवुं (३) दूर थवुं; जुदा पडवुं (४)
आसपास घूमवुं (५) आथमवुं (६)
पुनरावृत्ति थवी

--प्रेरक० बाकात राखवुं; रद करवुं; मर्यादित करवुं(२) --मांथी पाछुं फरे

तेम करवुं (३) नाबूद करवुं (४)जुदुं पाडवं (५) आसपास घुमाववं व्यावृत वि० ढांकेलु; संताडेलु (२) उघाडेलुं; खुरलुं करेलुं (३) बाद करेलुं; बाद राखेलुं व्यावृत्त वि० पाछुं फेरवेलुं; पाछुं खेंचेलुं (२)जुदुं पाडेलुं(३)बाकात राखेलुं; भिन्न (४) - मां अभाव होय तेवुं (५) --मांथी विरमेलुं(६)पलटायेलुं व्यादित स्त्री० ढांकी देवुं ते (२) बाकात राखवुं ते; जुदुं पाडवुं ते(३)मां न होब्ं ते (४) स्तुति (५) पुनरावृत्ति व्यास पुं० भाग पाडवा ते (२) समास छुटोपाडवो ते(३)विस्तार; पहोळाई (४) वर्तुळना मध्यबिदुमांथी पसार थई तेना परोघने वे बाजु अडती छोटो (५)गोठवणी; संकलन(६)गोठवणी के संकलन करनारो (७) वेदव्यास ब्यासक्त वि० अति आसक्तः निमग्न (२) संलग्न (३) छूटुं पाडेलुं **ब्यासंग** पुं ० दृढ आसक्ति (२)तत्परता; भक्ति(३)दृढ अभ्यास (४) ध्यान; लक्ष (५) अळगापणुं व्यासंज् १ प० [ब्यासजित] आसक्त थवुं; चोटवुं **व्यासिद्ध** वि० मनाई करेलुं **व्यासिध् १ प**० वेगळुं राखवुं; रोकर्वु **व्याह**त वि० रुकावट करेलुं (२) पार्छुं धकेलेलुं (३) विफळ फरेलुं (४)गाभर्ष **ध्याहन्** २ प० दखल करवी; सामनो करवो (२) अतिशय हणबुं (३) उल्लं-घन करवुं; भंग करवो (४) विफळ --हताश करवुं (५) पजवबुं **ड्याहरण** न० बोलवुं ते; उच्चारग व्याहार पुं० बोळवुं ते;कथन; उनित (२) अवाज; ध्वनि **व्याहित** वि० व्याधिग्रस्त व्याह १ ५० बोलवुं; उच्चारवुं (२)

समजाववुं (३) चीस - बूम पाडवी (४) विहरवुं; खूब आनंद करवो (५) कापी नाखवु; जुदुं करवुं ब्याहृत वि० बोलेलुं; उच्चारेलुं (२) न० बोलवुं ते (३) शब्दोच्चार विनानी वाणी के गीत (पशु-पंखीनां) **ब्याहृति** स्त्री० वाणी; शब्दो(२) कथन; उक्ति (३) संध्या वखते उच्चारातो पवित्र शब्द (भूर्, भुवस् अने स्वस्) **व्युच्चर् १** प० उल्लंघन करवुं (२) वेवफा नीवडवुं (३)व्यभिचार करवो व्युच्छित्ति स्त्री० समुळ नाश; उच्छेद ब्युत्ऋम् १ ५० [ब्युत्कामित] उल्लंघन करव् **ब्युत्क्रम** पु० अतिक्रमण; उल्लंघन (२) कलटो कम (३) अव्यवस्था **क्युत्क्रांत वि०** उल्लंघेलु (२) चाल्युं गयेलुं व्युत्त्रजांता स्त्री० एक जातनी समस्या **व्युत्था १** आ० [व्युत्तिष्ठते] ऊठवुं; ऊभा थवुं (२) बळमा वधवुं; शक्ति-मान थवुं (३) विरोधमां कहेवुं व्युत्थान न० प्रबळ उद्योग (२) —नी सामे थवुं ते ; बंड (३)स्वतंत्रपणे कार्य करवूं ते (४) समाधिमांथी ऊठवुं ते (५) उठाडवुं ते (हाथीने) ब्युत्थित वि० विरुद्ध अभिप्रायनुं (२) शास्त्र विरुद्ध वर्तनारुं व्युत्थिति स्त्री० जुओ 'व्युत्थान' **व्युत्पत्ति** स्त्री० उत्पत्ति; मूळ (२) शब्दनी मूळ उत्पत्ति (व्या०) (३) पारंगतताः, निष्णातपणुं (४) विद्वत्ता **ब्युत्पद् ४ आ० --**मांथी उत्पन्न थवुं(२) (धातुमांथी)नीकळवुं (३)--मां प्रवीण थवुं (४) पाछा आववुं (समुद्रमांथी) ब्युत्पन्न वि० अनुभवी; प्रवीण (२) व्युत्पत्ति शोधेलुं (शब्द) व्यादस् ४ ५० विखेरवृं(२)दूर फेंकवृं (३)बाजुए मूकवुं(४)तजी देवुं

ब्युदस्त वि० दूर -- बाजुए फेंकी दीधेलुं **अपुदास** पुं० बाजुए फेंकी देवुं ते (२) बाकात राखवुं ते (३) निषेध (४) उपेक्षा; उदासीनता (५) वध; नाश **ब्युपरत** वि० अटकेलुं; थोभेलुं **व्युपरम** पुं० उपशम; विराम; अंत व्युपशम पुं० पूर्ण विराम – अंत (२) अंशांति (३) विरमवुं नहि ते **ब्युप्त** वि० बोडेलुं (२) वीखरायेलुं **व्युषित** वि० प्रभातकाळ थयेलुं **व्युष्ट** वि० बळेलुं (२) प्रभातकाळ थयेलुं (३)वासो रहेलुं(४)न० प्रातःकाळ **व्युष्टि** स्त्री० प्रातःकाळ (२) समृद्धि (३)लावण्य(४)फळ; परिणाम व्युद्ध वि० विशाळ; विकसित(२)दृढ (३) ऋममां गोठवेलुं (४) अव्यवस्थित (५) परणेलुं (६) मोटुं व्यूह् १ उ० सैन्यनी व्यूहरचना करवी (२)क्रममा गोठववुं -- मूकवुं(३)जुदुं पाडवुं (४) अव्यवस्थित करवुं व्यूह पुं० लश्करनी गोठवणी(२)लश्कर; सैन्यविभाग (३) टोळुं; जूथ(४)विभाग व्यो १ उ० सीववुं (२) ढांकवुं **व्योकार** पुं० लुहार **व्योमग** पुं० आकाशचारी – देव व्योमगमनीविद्या स्त्री० आकाशमां ऊडवानी विद्या व्योमन् न० आकाश; अंतरिक्ष व्योमसद् पुं० देव (२) गंधर्व **अज् १** प० जवुं (२) पासे जवुं (३) विदाय लेवी; पाछा फरवुं (४)पामबुं (स्थिति) (५) १० ४० ब्राजयति–ते] जवुं(६)साफ – शुद्ध करवुं; संस्कारवुं व्रज पुं० टोळुं; समूह (२) गोवाळोनो वास (३) गायोनो वाडो (४) निवास-स्थान (५) मथुरा नजीकनो प्रदेश वजन न० जवुंते; भटकवुंते(२) देश-निकाल थवुं ते

क्रजांगना स्त्री० व्रजनारी; गोपी विजित न० जवुंते; भटकवुंते **व्रण्** १ प० अवाज करवो (२) **१० उ०** घायल करवु; ईजा करवी व्रण पुं०, न० जस्तम, घा (२) चाठुं व्रणन न० वींधवुं ते व्रणविरोपण वि० धा रूझवनारु वर्णित वि० धवायेल् वत पु०, न० नियमपूर्वक आचरवानुं पुण्यकर्म (२) अम्क करवा न करवानो धार्मिक निश्चय (३) भक्ति के श्रद्धानो विषय (४) विधि; अनुष्ठान; कार्य (५) नियम; कानुन (६) ब्रह्मचर्यव्रत व्रति (-ती) स्त्री० वेल (२) विस्तार व्रतपारण न० व्रत के उपवासनी समाप्ति; उपवास पछी खावुं ते व्रतवंकल्य न० वत-नियमनी अपूर्णता अतिक, व्रतिन् वि० व्रत धारण करनारुं (२) पुं० ब्रह्मचारी विद्यार्थी (३) सपस्वी (४)यजमान (यज्ञ करावनारो) **द्रात** पुंच टोळुं; मंडळी (२) न० रोजे करवानी मजूरी (३) शारीरिक अम (४) बरात; जान बातीन वि॰ दहाडियुं; रोजे मजूरी करतु (२) हिसा-लूटफाटथी जीवनार वात्य पुरुसंस्कार न करवामां आव्या होबाधी पोतानो वर्ण गुमावी वेडेलु (प्रथम त्रण वर्णनु माणस) (२) भामटो; अधम माणस (३) शूद्र पिता अने क्षत्रिय मातानो पुत्र **ब्रीड्** ४ प० शरमावु (२) फेंकवुं **ब्रोड** पुं**०, ब्रोडा** स्त्री**०** शरम; लज्जा **ब्रोडित** वि० शर्रामेदुं करायेलूं **ब्रोल** पुं० शरम;व्रीडा ब्रीहि पुं० डांगर; चोखा **क्लो ९ प०** [ब्लिनाति] टेको आपवो (२) पसंद करवुं (३) दबाववुं; तोडी पाडवुं -कर्मणि० भागी पडवुं; वेसी पडवुं

হা

शा न० सुख; कल्याण शक् ५ प०, ४ उ० शक्तिमान थवुं; शक्वं (२) सहन करवुं -कर्मणि० शकाबुं शक पु० एक राजा (२) शालिवाहन राजाथी शरूथयेलो संवत(स्थिस्ताब्दथी ७८ वर्ष बाद) शकट पु०, न० गाडुं; गाडी (२) पु० कृष्णे मारेलो एक राक्षस शकटिका स्त्री० नानी गाडी (रमकडुं) शकन् न० मळ; छाण (शकृत्गां रूपमां वीजी विभक्ति द्विचन पछी विकल्पे आवे छे) शकल पु०, न० टुकडो; भाग (२) घडानुं ठींकरुं (३) तणखो शकार पुं० राजानी रखातनी भाई (नाट्य०; मूर्ख अने गविष्ठ हो प छे) शकाः पुं० बं० वं० एक देश (२) एक जातिना लोक शकुन पुं० पक्षी (२) नं० भावि शुभा-शुभ सूचक चिह्न (४) शुकन शकुनि पुं० पक्षी (२) दुर्योधननो मामो — गांधार देशनो राजा शकुंत पुं० पक्षी श्वामत्र अने मेनकानी पुत्री; दुष्यंत्तनी पत्नी शकुंति पुं० पक्षी राजांतिका स्त्री० पक्षी (२) तीड; तमहं शकुंति पुं० विष्टा; छाण शकुंति पुं० छाणनो पोदळो

शक्त ('शक्' नुभू० कृ०) वि० शक्ति-मान; समर्थ (२) बलिष्ठ (३) समृद्ध (४) अर्थ बताववानी शक्तिवाळूं शक्ति स्त्री० बळ; सामर्थ्य (२)राज-सत्ता (३) कवित्व शक्ति (४)देवनी मृतिमंत ताकात (तेनी पत्नी तरीके) (५)एक अस्त्र(६)भालो(७)शब्दनुं अर्थ सूचववानुं सामर्थ्य (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना)(८) (शाक्तो पूजे छ ते)जगतना मूळ कारणरूप योनि **क्षक्तिधर** पुं० भालावाळो (२)कार्तिकेय शक्तिध्वज पुं० कार्तिकेय शक्तिनाथ पु० शिव **शक्तु** पुं०,न० सक्तु; साथवो शक्त्यपेक्ष वि० शक्ति इच्छतुं **शक्य** वि० बनी शके के करी शकाय एवं (२) सीघुंदर्शावातुं (जेम के शब्दनी अर्थ) (३) मधुरभाषी **क्षक** पुं० इंद्र (२)स्वामी (३)घूवड (४) कुटज वृक्ष (५) अर्जुन वृक्ष **राक्रनोप** पुं० इंद्रगोप; गोकळगाय **क्षक्रजित् प्**० रावणनो पूत्र मेघनाद ('इंद्रने जीतनार') ि कराती ध्वज शक्रध्वज पु० इंद्रना मानमां अभी शक्रिय पुं जुओ 'शक्रजित्' काक्स पुं० हाथी शिच (-ची) स्त्री० इंद्राणी **बाट** वि० ठग; धूर्त (२) दुष्ट; दुरा-चारी (३) पुं० ठग-धुर्त माणस (४) जूठो प्रेमी (५) मूर्ख के आळसु माणस **क्षठोदर्क** वि० अंते छेतरनारं **ञण** न० भींडीनी जातनो एक छोड **शत न**० सो (संख्या) (२) कोई पण मोटी संख्या **शतक वि०सो** (२)सो संख्यावाळ (३) न० सैकुं (४) सो श्लोकनो संग्रह **शतकुंभ** पुं ० एक पर्वत-ज्यां सोनुं मळत् कहेवाय छे (२) एक यज्ञ (३) न० सोनु

शतकृत्यस् अ० सो वखत **ञतकोटि** वि० सो धारवाळुं (२) पुं० इन्द्रनुं वस्त्र (३) स्त्री० सो करोड शतऋतु पुं० इंद्र **शतष्र्वी** स्त्री० एक अस्त्र; लोखंडना खीलावाळी मोटी शिला शतचंद्र पुं० सो चंद्रबिवधी शणगा-रेली तरवार के ढाल **शतदल** न० कमळ **अतधृ**ति पुं० ब्रह्मा (२) इंद्र (३)स्वर्ग **शतपत्र** पु॰ मोर (२)लक्कडखोद पक्षी (३) सारस (४) एक जातनो पोपट (५) न० कमळ शतपत्रयोनि पुं० ब्रह्मा **श्रतपथ** पुं० शुक्ल यजुर्वेदनो ब्राह्मण ग्रं**थ** (सो खंडवाळो) **शतपाक** वि० सो वखत उकाळेलुं शतमख, शतमन्यु पुं० इंद्र **शतमान** न० पल वजनन् रूप् **शतमुख** वि० सो मुखवाळु ; सो मार्गवाळु शतयज्वन् पुं इंद्र (सो अश्वमेध यज्ञ करनारो होवाथी) **शतलोचन** पुं० इंद्र('सहस्रलोचन 'पण) **शतशस्** अ० सो वखत (२) सेंकडो प्रकारे (३) सेंकडो – अनेक होय तेम शतसुल न० भार वगरनु सुख शतह्रदा स्त्री० बीजळी (२) वज्र शताक्ष वि० सो आंखवाळ् शताक्षीस्त्री० रात्री शतानंद पुं० गौतम - अहल्यानो पुत्र; जनकनो पुरोहित शताब्द न० सेकुं **शतायुस्** वि॰ सो वर्ष जीवतुं ज्ञातिन् वि० सो; असंस्य (३) पुं० सो (सिक्का के चीजो) नो मालिक क्षत्रु पुं० हरावनारो, विजेता; नाक्ष करनारो (२) दुश्मन; विरोधी;

हरीफ (३) पडोशनो हरीफ राजा

शत्रुकर्षण वि० शत्रुने नमावनारुं; शत्रुनो नाश करनारुं शत्रुष्त पुं० सुमित्रानो पुत्र; लक्ष्मणनो जोडियो भाई | पर्वत **शर्त्रुजय** पुं० हाथी (२) गुजरातना एक **शब्** १ उ० नाश पामवु; क्षीण थवुं (२) पडी जवुं –प्रेरक० नीचे फेंकबुं;कापी नाखबुं (२) दूर करवुं; नाश करवो शनकैस् अ० धीमेथी शनि पुं० ए नामनो ग्रह (२) शनिवार **शनिर्भाव** पुं० धीमापणुं शनैश्चर वि० हळवे हळवे चालनाहं (२) पुं० शनिग्रह **शनैस्** अ० धीमेथी; चुपकीदीथी(२) धीमे धीमे (३) कमे कमे **भप्** १,४ उ० शाप आपवो (२) सोगंद खावा (३) ठपको आपवो –प्रेरक० सोगंदथी बांधवं **शपथ** पुं० शाप (२) सोगंदं **शपथोत्तरम्** अ० सोगंदपूर्वक **क्षपमान** वि.० शाप देतुं (२) सोगंद खातुं (३) गाळो देतुं; निंदतुं **श्चित** वि० शाप आपेलुं **হাদে** ('হাप্' नुं মৃ৹ ক্ত৹) হাাদ दीधेलुं (२) सोगंद दीधा होय तेवुं (३) न० शाप (४) सोगंद **शफ** पुं०, न० खरी **शफर** पुं०, शफरो स्त्री० एक नानी चळकती माछली [भाणस **शबर** पुं० पहाडी जातिनो जंगली शबरी स्त्री० किरात जातिनी एक स्त्री (रामनी भक्त हती) शक्त वि० काबरचीतरुं (२) मिश्रित (३) म्लान; फीकुं (४) क्षुब्ध शबलिमन् पुं० काबरचीतरो देखाव **शब्द १०** उ० अवाज करवो; नाद करवो (२) बोलाववुं

शब्द पुं० अवाज; ध्वनि; नाद (२) अर्थयुक्त एक के वधारे अक्षरोनो समुज्यय (३) नाम; संबोधन (४) शास्त्रवाक्यरूपी प्रमाण (न्याय०) (५) व्याकरण (६) कीर्ति(७)प्रणव **शब्दगुण** वि० शब्दरूपी गुणवाळु शब्दपति पुं व नामनो - कहेवातो पति के मालिक ताकनार **शब्दपातिन्** वि० अवाज उपरथी **शब्दब्रह्मन्** न० वेदो (२) परामात्मानुं ज्ञान (३) परमतत्त्व; परमात्मा शब्दवेधिन् दि० अवाज उपरथी निशान ताकनारुं(२)पुं० एक जातनुं बाण (३) धनुर्धारी (४) दश्ररथ (५) अर्जुन शब्दवेध्य वि० जोया विना मात्र अवाजथी वींघवानुं एवं शब्दशास्त्र न० व्याकरणशास्त्र **शब्दसा**ह वि० जुओ 'शब्दवेधिन्' **दाब्दाख्येय** वि० शब्दोमां कही शकाय तेवुं शब्दानुरूप वि० अवाजना प्रमाणमां होय तेवुं; अवाज जेवुं के जेटलुं शब्दायते आ० अवाज करवो (२) गर्जवुं (३) बोलाववुं श्चब्दित ('शब्द्' नुं भू० कृ०) वि० बगाडेलुं ; बजाबेलुं ; (२)उच्चा रेलुं (३) बोलावेलुं(४)नाम आपेलुं(५)शीखवेलुं; समजावेलुं(६)न० अवाज; बूम **क्षम् ४** प० रिशास्यति } शांत यवुं(२) बंध पडवुं ; अंत आववो (३) बुझाई जवुं (४) १० उ० नीरखवुं (५) दर्शाववुं –प्रेरक० शांत पाडवुं; बुझाववुं (२)अंत लाववो; नाश करवो (३) आश्वासन आपवुं (४) हराववुं; वश करवुं (५) तजी देवुं; अटकवुं **शम्** अ० सुख, आरोग्य, समृद्धि बता-वतो प्रत्यय; आशीर्वाद के शुभ अंत इ० बताववा वपराय छे (चोथी के छठ्ठी विभक्ति साथे)

शम पुं० शांति; निविकारपणुं (२) तृप्ति; संतोष; आश्वासन (३)मोक्ष (४) रोगनुं शमन **शमन** वि० शांत पाडनारुं (२) न० शांत पाडवुं ते (३) चित्तशांति; समाधि (४) ईजा करवी ते; नाश करवो ते (५) यज्ञमां पशुने वधेरवु ते (६)पुं० यमराजा छि तेवुं **शमप्रवान** वि० जेगां शम-शांति विशेष शमल न० विष्ठा (२) पाप **शमित** वि॰ शांत पाडेलुं (२) छिपा-वेलुं; मटाडेलुं (रोग, तरस इ०) (३) शांत (४) हणेलुं;नाश करेलुं शिमतृ पुं० वध करनारो श्रमिन् वि० शांत; जितेंद्रिय इससी स्त्री० एक झाड; समडो (२) फळी; सींग शमोपन्यास पुं० शांतिनुं कहेण श्रम्या स्त्री० एक जातनुं छबलीकुं (२) लाकडी; दंडो (३६ आंगळनो) **ज्ञम्याक्षेप पुं**० जुओ 'ज्ञम्यापात' श्रम्याग्राह पुं० छबलीकां वगाडनारो श्रम्यानिपात, शम्यापात पुं० एक दंडो फेंकी शकाय तेटलुं अंतर शय वि॰ सूतु; ऊंघतुं (समासने अंते) (२) पुं० ऊँघ (३) शय्या (४) हाथ (५)लंबाईनुं एक माप(६)ंसॉप **क्षयन** न० सूतुं ते(२) पथारी शयनभूमि स्त्री० सूवानो ओरडो शयनसर्खी स्त्री० साथे सूनारी सर्खी [शयनगृह (स्त्रीनी) **शयनीय** न० शंख्या; पथारी (\bar{x}) **शयनेकादशी** स्त्री० अषाढ सुद अगि-यारस; देवपोढी शयालु वि०ऊंघे भरायेलुं (२) ऊंघणशी **शयित** वि॰ सूतेलुं; निद्राधीन (२) न० निद्रा; ऊंघ शब्या स्त्री० सेज; पथारी (२) परो-ववुं ते; गूंथवूं ते

शब्यागृह न० सूवानो ओरडो शब्यापाल, शब्यापालक पुं० राजाना शयनगृहनो संरक्षक अधिकारी शम्यांत पुं॰ सूवानुं स्थळ शम्योत्यायम् अ० वहेली सवारे शय्योत्संग पुं० पथारीनो मध्य भाग **कर** पुं० बाण (२) एक जातनुंबर (३) तर; मलाई (४) कुश; दाभ (५) पांचनी संख्या (६) न० पाणी **शरक्षप** पुं० बाण जाय तेटलुं अंतर शरच्चंद्र पुं० शरद ऋतुनो चंद्र **शरजन्मन्** पुं० कार्तिकेय शरजाल न० वरसतां वाणीनुं जाळुं शरज्योत्स्नास्त्री० शरद ऋतुनी चांदनी शरट पुं० काचंडो शरण वि० जुओ 'शरण्य' (२) न० आशरो; संरक्षण (३) आशरो के शरणनुं स्थान (४) घर;ओरडो(५) झूंपडी; मांडवो शरणागत, शरणापत्र वि० शरणे आवेलु **शरणायिन्, शरणैषिन्** वि० आश्रये शोधनारं (२) कमनसीब **शरणोन्मुस** वि० शरण इच्छतुं **शरण्य** वि० रक्षण - शरणुं आपनार (२) शरण इच्छतुं; दीन (३) न० आश्रयस्थान (४) आशरो आपनारो (५) आशरो (६) हानि; ईजा शरद् स्त्री० आसो-कार्तिक महिना बाळी ऋतु (२) वर्ष शरिबज वि॰ शरद ऋतुमां थतुं शरदुदाशय पुं० शरद ऋतुनुं सरोवः शरदुर्विन नर्व बाणोनो वरसाद शरिष पुं० बाणनो भाषो **शरन्मेच** पुं० शरदऋतुनुं वादळ शरपुंख पु॰ बाणनो पीछावाळो छेड **शरप्रवेग** पुं० बाणनो वेग शरभ पुं० हायीनुं बच्चुं(२)आठ पर वाळुं एक बळवान काल्पनिक प्राण (३) ऊंट (४) तीड (५) तीतीषोडं

शरभंग पुं० दंडकारण्यना एक मुनि **शरवण** न० बरन् झुंड शरवणभव पुं कार्तिकेय **शरवन** पृं० जुओ 'शरवण' **द्यारवर्ष पुं**० बाणनो वरसाद (२) जोरथी पडतो पाणीनो वरसाद **शरव्य** न० निशान; लक्ष्य (बाणनुं) **शरस्रात पुं**० बाणनो समुदाय **शरसंधान न० बाण** ताकवुं ते शरसंबाघ वि० बाणोथी ढंकायेल् शरस्तंब पुं० बरुनुं झुंड **झरार** वि० घातक; हिंसक (२) पूं० हिंसक पशु | ढांकण् **शराव** पुं० न० शकोरुं; चपणियुं(२) **शरावर** (शर+आवर) पुं० बाणनो भाषो (२) न० बस्तर **शरावती** स्त्री० एक नगरी (रामे छवने तेनो राजा बनाव्यो हतो) [भायो **शरावरण** न० ढाल **शराबाप** पुं० धनुष्य (२) बाणनो **श्वरासन** पुंजधनुष्य शरीर न० देह; अंग(२) घटक तत्त्व (३) शारीरिक बळ (४) शव (५) पोतानी जात; जीवात्मा **कारीरक** पुं० जीव (२) न० नानुं – तुच्छ शरीर (३) शरीर **शरीरज** पुं० बीमारी (२) आवेग; कामवासना (३) कामदेव (४) पुत्र श्वरीरपात पुं० मोत **शरीरप्रभव** पुं० पिता शरीरबद्ध वि० देहधारी; मूर्तिमंत <mark>शरीरबं</mark>घ पुं० देहनुं चोकठुं -- बंधारण (२) देहधारी तरीके जन्म **शरीरभाज्** वि० देहधारी; मूर्ते (२) पुं० देहधारी प्राणी शरीरयात्रा स्त्री० निर्वाह; आजीविका शरीररत नव उत्तम शरीर **ज्ञारीरवृ**त्ति स्त्री० शरीरनुं धारण-पोषण

शरीरसंपत्ति स्त्री० शरीरनु आरोग्य शरीरसाद पुं० शरीर सुकावुं ते शरीरस्थिति स्त्री० शरीरनुं पोषण के आधार(२)भोजन लेवुं ते **शरीराकार** पुं० शहरीरिक चेष्टा **शरीरांत** पुं॰ शरीरना वाळ **शरीरिन्** वि० शरीरधारी; मूर्त (२) जीवतुं (३) पुं० देहधारी प्राणी (४) मनुष्य (५) जीवातमा **शरोपासन** न० धनुविद्यानो अम्यास **शरीध** पुं० बाणनी वरसाद **शर्करा** स्त्री० साकर; खांड (२) नानो पध्थर; कांकरो (३) कांकरावाळी जमीन(४)टुकडो (५)ठींकरुं(६)कोई पण कठण वस्तु (७) सोनावाळी जमीन **शर्कराचल** पुं० आठ भार साकरनो **पर्व**त (दानमां अपाय छे ते) **शर्करा**ल वि० रेताळ; रेतीना वाळुं (जेम के पदन) **क्षमंन्** वि० सुखी (२) समृद्ध (३) पुं० ब्राह्मणना नामने लगाडानो शब्द (उदा० विष्णुशर्मन्) (४) न० सुख; हर्ष (५) आशीर्वाद (६) रक्षण (७) घर शर्मिच्छा स्त्री० ययाति राजानी बीजी राणी (प्रथम राणी देवयानी) **গ্লব**ুত্থিৰ (২) ৰিজ্জু **शर्वरी** स्त्री० रात्री (२) सांज **शर्वाणी** स्त्री० पार्वती; दुर्गा **शस्त्रभ पुं० पतं**गियुं (२)तीड ; तीतीघोडो शसल न० साहुडीनुं सळिया जेवुं पींछुं **झर्लग** पुं० राजा (२) एक जातनुं मीठुं इालाका स्त्री० सिळयो; सळी (२) आंजवानी सळी (३)बाण (४)छत्रीनो सळियो (५) फणगो; अंकुर (६) खींटी; खीली (७) आंगळी शलाकापुरुष पुं० नमूनारूप---मापवाना गज रूप – उत्तमपुरुष (जैन) **श्चल्य** पुं० मद्र देशनो राजा; नकुल-

सहदेवनो मामो (२) पुं०; न० भालो (३) बाण (४) कांटो (५) खींटी; खीलो (६) न० शरी**र**मां बहारथी खूंपेली अने पीडा करती वस्तु (६)हृदयदारक पीडा करतुं काई पण **ज्ञल्यक** पुं० बाण; तोमर (२) कांडो (३) साहुडी (४) व्याघ श्चरवन्त्र वि० अणीदार मोवाळुं शल्यत्रोत वि० बाणधी बीधायेलुं शल्यत वि० वींधायेखं शल्ल् १प० जवुं **शत्लको** स्त्री० साहुडी (२) एक झाड (हाथीओने बहु गमे छे) शव पुं०; न० शब; मडदुं **शवाश** वि० मडदुंखानारुं **शज् १ प०** कूदवुं; ठेकडो भरवो श्रञ्जा पुं० ससलुं (२) चंद्रमां देखातो मृग शशधर, शशभृत्, शशलक्ष्मण,शशलांखन पुं० चंद्र (मृगना चिह्नवाळी) **द्यादावाण, द्यादार्गुग न०** ससलानुं शिगडुं (असंभवित वस्तु) शशांक पुं० चंद्र शशांकलेखा स्त्री० बीजनो चंद्र शशिकला स्त्री० चंद्रनी कळा **शशिकांत** पुं० चंद्रकांत मणि न० पोषणुं शक्तिज पुं० बुधग्रह **शक्तिन्** पुं० चंद्र **शक्षिप्रभ** वि० चंद्रना जेवा तेजवाळुं श्रीक्षिमौलि, शशिशेखर पुं० शिव **द्यादवत्** अ० निरंतर; सदा; हमेश (२) जातनो मालपूडो इाब्बुली स्त्री० काननी नळी (२) एक शब्प न० कुमळुं घास **शल्पभुज्, शब्पभोजन** पुं० धास खानारुं प्राणी वधेरवु ते **शसन** न० कतल करवी ते (२) यज्ञमां शस्त ('शंस्' नूं भू० कृ०) वि० प्रशंसेलुं

र्शस (२) शुकनियाळ; शुभ (३) उत्तम (४) हणायेलुं (५) घवायेलुं **शस्त्र** न० हथियार (२) ओजार(३) लोखंड; पोलाद शस्त्रग्राहिन् वि० शस्त्र धारण करनाहं **शस्त्रन्यास** पुंच शस्त्र हेठा मूकवां–छोडी देवां ते शस्त्रपूत वि० रणभूमि उपर शस्त्र वडे हणायेलुं होवाथी दोषरहित एवं **ज्ञस्त्रभृ**त् पुं० शस्त्रधारी; योद्धो **शस्त्रव्यवहार** पुं० शस्त्रनो अभ्यास **शस्त्रसंपात** पुं० एकदम शस्त्रो पडवा के वरसवा लागवां ते **शस्त्रका, शस्त्री** स्त्री० छरी; कटार **शस्य** वि० वखाणवा लायक शस्य न० धान्य; अनाज (२) छोड के झाडनो पाक के फळ **शंक् १** आ० शंका करवी (२) बीवु (३) अविश्वास करवो (४) मानवुं ; घारवुं शंकनीय वि० शंका करवा योग्य (२) कल्पवा योग्य **शंकर** वि० कल्याणकर; शुक्रनियाळ (२) पुं० शिव (३) शंकराचार्य **शंका** स्त्री० शक; संदेह; वहेम(२) भय; डर (३) आशा; अपेक्षा (४) भ्रम; खोटी मान्यता शंकित ('शंक्'नुं भू० कृ०) वि० शंका करेलु (२)अविश्वासु (३)संदिग्ध (४) डरतुं; बीनेलुं (५) निर्बळ; अदृढ शंकिन् वि० शंका करतुं; बहेम राखतुं; (समासने अंते) (२) जोखम भरेलुं शंकु पुं० बाण; भालो; कटार (२) थांभलो (३) खींटी; खीलो (४) बाणनी अणी (५) झाडमुं ठूंठुं (६) १०,००० अवजनी संख्या **झंख** पुं०, न० एक जातना दरियाई प्राणीनुं कोटलुं, जेने फूकीने वगाड-वामां आवे छे (२) कपाळ उपरत्

हाडकुं (३)हाथीना वे दंतूशल वच्चेनो भाग (४) कुबैरना नव निधिमांनो एक शंखक पुं०, न०शंख(२)न०शंखनी चूडी शंखध्म (-ध्मा) पुं० शंख फूंकनारो शंखनल पुं० एक दरियाई प्राणी **शंखबलय** पुं० शंखनी चूडी **शंखांतर** न० कपाळ **शंक्षिनी** स्त्री० स्त्रीओना चार वर्गमांनी एक (पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी; सुंदर, गुणकीलयुक्त तथा ्कामोपभोगरसिक एवी स्त्री) शंतनु पुं० एक चंद्रवंशी राजा;भीष्मना पिता (गंगा अने सत्यवतीना पति) **शंतम** वि० हितकर; कल्याणकर एवं शंब वि० सुखी; भाग्यवान (२)दरिद्री (३) पुं० वज्र (४) खेतरने बीजी वार खेडवं ते (५) लंबाईनं एक माप शंबपाणि पुं० इंद्र एक राक्षस **शंबर** वि॰ उत्तम (२)पु॰ प्रद्युम्ने हणेलो **शंबल** पुं० न० किनारो; तट (२) 🛘 उखेडेलुं(घाने) प्रवासनुं भार्यु शंबाकृत वि० वे वखत खेडेलुं(२)फरी **शंद्रक** पुं० एक जातनी छीप (२)नानो शंख(३)एक शूद्र तपस्वी (शूद्रने निषिद्ध एवी तपस्याओं करवा बदल रामे तेनं हण्यो हतो) शंभ वि० कल्याणकर; सुखप्रद (२) पुं० शिव (३) आदरणीय ऋषि **शंयु** वि० सुखी; समृद्ध(२)पुं० यज्ञनी अधिष्ठाता देवता शंस् १ प० कहेवुं; वर्णन करवुं (२) प्रशंसा करवी (३) ईजा करवी श्रांसा स्त्री० प्रशंसा (२) इच्छा;आशा (३) मान्यता; धारणा शंसित ('शंस्' नुं भू० कृ०) वि० क्खाणेलुं (२)कहेलुं (३) इच्छेलुं(४)निश्चित करेलुं (५) खोटो आक्षप मूकेलुं (६) अनुष्ठान करेलुं; आचरेलुं

शंसिन् वि० (समासने अंते) वखाणतुं (२) कहेतुं (३) दर्शावतुं(४)भाखतुं **द्याक** पुं०, न० खाई शकाय तेवां कंद, फळ, भाजी (२)पुं० सायनुं झाड (३) शक लोकोनुं नाम (४) शालिवाहन संवत (५) (सातमांथी) छठ्ठो द्वीप **झाकटिक** पुं० गाडी हांकनारो **शाकल** वि०ट्कडासंबंधी (२)पुं० ऋग्वेदनी एक शाखा शाकंभरी स्त्री० दुर्गा शाकिनी स्त्री० दुर्गानी तहेनातमां रहेती दासी (पिशाचणी) ्रिने छगत् **शाकुन** वि० शुकनने लगतु (२) पक्षी-**शाकुनिक** पुं० (पक्षी पकडनारो)पारधी **शाकुल, शाकुलिक** वि० माछलानुं **शाक्त** वि० शक्ति संबंधी (२) पुँ० जगतना परम तत्त्व रूपे श**िनना** देवी रूपने पूजनारी शाक्तीक पुं० शक्ति-भालाथी लडनारी **ज्ञाक्तेय, शा**क्त्य पुंच जुओ 'शाक्त' पुंच शाक्य पुं० बुद्धना कुळनुं नाम शाक्यमुनि ५० बृद्ध शाक वि० इंद्र संबंधी **शाक्वर** पुं० बळद शाख पु०कातिकेय शाखा स्त्री० डाळी (बुक्षनी) (२) हाथ (३) विभाग; तड (४) ग्रंथनो विभाग (५) अमुक गोत्र के मंडळमां चालतो बेदनो पाठ (६) कोई पण शास्त्रनो विभाग **द्याखानगर** न० शहेरनुं पर्ह **शाखाबाहु** पुं० डाळी जेवो कोमळ हाथ **शाखाभृत्** पुं० वृक्ष शाखामृग पुं० वांदर्ह **शाखाविलीन** वि० डाळ उपर वेठेलुं

(जेम के पंखी)

शासिन् वि० शासावाळुं (२) वेदनी

कोई शाखा**ने अनुसर**तुं (३) पुं०

वृक्ष (४)वेद (५)वेदनी कोई शालानो अनुयायी क्षाट पुं०, शाटक पुं०, न०, शाटी स्त्री० बस्त्र (२) स्त्रीनुं अमुक वस्त्र (अंदर पहेरातुं) (३) चोळी; कंचुकी शाठ्य म० शठता; लुच्चाई; **क्षाण** वि० शणनुं बनादेलुं (२) पुं० कसोटीनो पथ्यर (३) सराण(४) चार मासानुं वजन(५)न० शणनुं बस्त्र **भाणी** स्त्री० कसोटीनो पथ्थर (२) सराणनो पथ्थर (३) शणनुं वस्त्र (४) कथा; चींथरांनु वस्त्र (५) नानो पडदो के तंबू **शास** ('शो'नुंभू०कृ०) वि० तीक्ष्ण धार काढेलुं (२) पातळुं; नाजुक (३) कृश; अशक्त (४) सुंदर शातकुंभ न०सोन् शातकोंभ वि० सोनानुं शातकतय वि० इंद्रनुं **भातन** न० धार काढवी ते (२) कापी नाखवं ते (३) चीमळावं - क्षीण थवं ते **कातमन्यव** वि० इंद्रन् शातहृद वि० विद्युत संबंधी **शामव** वि० रात्रु संबंधी (२) शत्रुवट-भर्युं (३) पुं० शत्रु (४) म० शत्रु-ओनो समुदाय (५) दुश्मनावट शाद्वल पुं०, न० घासनुं मेदान **ज्ञाप** पुं० श्राप; शराप (२) शपथ; सोगंद (३) उपद्रव शापयंत्रित वि० शापथी नियंत्रित **शापास्त्र** पुं० मुनि; ऋषि जेनुं हथियार छे ते) **शापांत** पुं• शापनो अंत **शापित** वि० सोगंदथी बंधायेलं **ञापोत्सर्ग** पुं० शाप आपवो ते **क्षाब्द, शाब्दिक** वि० शब्दनुं; शब्द-संबंधी (२) मोंए कहेलुं क्षायिका स्त्री० ऊंघ; निद्रा (२) सूवानी

शार वि०काबरचीतरुं(२)शेतरंजनुं महोर शारणिक वि० शरण-आश्रय इच्छतु **बारितल्पिक** पुं• भीष्म(बाणशय्यावाळा) **शारता** स्त्री० काबरचीतरापणुं शारद वि० शरद ऋतुनुं (२) वार्षिक (३) कुशळ; समर्थ (४) पुं० वर्ष शारदा स्त्री० एक जातनी वीणा (२) दुर्गा (३) सरस्वती शारि स्त्री० शेतरंजनुं महोरुं (२) सारिका (पक्षी) (३) कपट (४) हाथीनुं बस्तर के जीन शारिका स्त्री० मेना (२) सारंगी वगेरे वगाडवानी कामठी (३) शेत-रंज-बाजी इ० रमवां ते शारित वि० काबरचीतरुं शारीर वि० शरीर संबंधी (२) देह-धारी; मृतिमत (३) पु० जीवात्मा शारीरक न० जीवात्मा (२) तेना साचा स्वरूप संबंधी तपास (शंकराचार्यना भाष्यनुं नाम) **ञार्गा**ल वि० शियाळन् ज्ञाङ्ग वि० शीगडानुं (२) धनुष्यथी सज्ज (३)पु०,न० धनुष्य (४) विष्णुना धनुष्यनुं नाम (५) एक पंखी **शार्ङ्गघर, शार्ङ्गपाणि** पुं० विष्णु **क्षांङ्गन्** पु० धनुर्घारी योद्धो (२) विष्णु (३) शिव **शार्द्**ल पुं० वाघ (२) (समासने अंते) ते ते वर्गनो श्रेष्ठ माणस (उदा० 'नर-शार्दूल') (३) राक्षस शार्व वि० शिवनुं **शार्वर** वि० रात्रीनुं; रात्रीने लगतुं(२) न० गाढ अंधकार **शार्वरी** स्त्री० रात्री शाल् १ आ० प्रशंसा-खुशामत करवी (२) -युक्त होवुं; प्राप्त थयेलुं होव **ज्ञाल** वि० कहेतुं; बडाश मारतुं (२) अवाज करतुं(३)पुं० एक वृक्ष (ऊचुं अने भव्य) (४) वृक्ष (५) शालिबाहन

ज्ञालनिर्यास पुं० शाल वृक्षनो गुंदर शालभंजिका स्त्री० पूतळी (२) वेश्या शास्त्र स्त्री० ओरडो (२) मकान (३) वृक्षनुं थड (४) तबेली **झालावृक** पुं० कृतरो **शालि** स्त्री० डांगर साचवती स्त्री **शालिगोपी** स्त्री० डांगरनो क्यारडो **शालिग्राम** पुं० विष्णुनुं प्रतीक मनातो पवित्र पथ्थर; शालग्राम **क्वालिन्** वि० (मुख्यत्वे समासने अंते) -थी युक्त; -वाळुं; -थी शोभतुं (२) सद्वर्तनवाळुं ; सुशील **शालिभदन** न० डांगरनुं खेतर **कालिबाह** पुं० डांगर वहन करवा माटेनो **शालिबाहन पुं**० जेना नामनो शक (ई० स॰ ७८ थी शरू थाय)छे ते प्रसिद्ध राजा **झालिहोत्र** पुं बोडो (२) पशुचिकित्सा शास्त्रनो लेखक(२)न० पशुचिकित्सानुं शास्त्र **ज्ञालीन** वि० शरमाळ(२)तुल्य; समान (३) पुं० गृहस्थ (४) न० अजाचक-वृत्ति (५) शरमाळपणु **शालूक न**० कमळनो कंद (२)पुं० देडको **क्षालेय** न० डांगरनुं खेतर **शास्मलि** पुं०, स्त्री०, **शाल्मली** स्त्री० समडानु झाड शाल्य पुं ० एक देश (२) ते देशनो राजा **ञाब** वि० शब संबंधी(२)घेरा पीळा रंगन् (३)पुं० पशुनुं बच्चुं (४)पुं०,न० शब शावक पुं० पशुनुं बच्चुं ्**शाश वि०** ससलानुं **ज्ञाञ्चत** वि० नित्य;कायमनुं(२)न ः शाश्वतपणुं (३) स्वर्ग शाइवतिक वि० कायमनुं; हमेशनुं शास् २ प० शीखववुं; उपदेश आपवो (२)राज्य चलाववुं(३)हुकम करवो (४) कहेवुं ; जणाववुं(५)सलाह आपवी

शासक पुं० राजा (२) सजा करनारो शासन वि० उपदेश आपनारुं (२) सजा करनारुं (३) न० उपदेश; तालीम; शिक्षण (४) राज्य; अमल;शासन (५) आज्ञा; हुकम (६) दानपत्र (राजाए आपेलुं) (७)लेखित करार; दस्तादेज **शासनदूषक वि**०आज्ञान् उल्लंघन करनाः **शासनहारिन्** पुं**०** संदेशवाहक ; दूत **शासनीय** वि० शिक्षा करवा योग्य(२) जेना उपर शासन करवुं जोईए तेवुं **शासित वि०** शासन के अमल चलाव-वानो होय तेवुं (२) शिक्षा कराई होय तेवुं (३) काबूमां रखायेलुं **शासितृ** पुं० राजा; हाकेम (२) सजा-करनारो (३) शिक्षक शास्तु पुं । शिक्षक; गुरु (२) पिता (३) राजा; हाकेम शास्त्र न० आज्ञा; हुकम (२) धर्मशास्त्र-नी आज्ञा (३) धर्मशास्त्र (४) कोई पण विषयनुं तास्विक तेम ज व्यवस्थित ज्ञान (५) ग्रंथ (६) सिद्धांतज्ञान ('प्रयोग' थी ऊलटुं) **शास्त्रज्ञ** वि० शास्त्रनुं जाणकार (२) मात्र सिद्धांत जाणनारुं त्रिमाणे शास्त्रतस् अ० शास्त्रानुसार; **शास्त्रदृष्ट** वि० धर्मशास्त्रोमां कहेलुं शास्त्रविमुख वि० शास्त्राभ्यास न गमतो होय तेवुं शास्त्रशिल्पन् पुं ० काश्मीर देश **शास्त्राननुष्ठान** न० शास्त्रनी आज्ञानो भंग - उल्लंघन पिंडित **द्यास्त्रिन्** वि० शास्त्रनुं जाणकार; **शास्त्रीय** वि० शास्त्र संबंधी (२) शास्त्र अलंकार बनावनारो अनुसार शांखिक पुं० शंख फूंकनारो (२) शंखना **क्षांत** ('शम्'नुभू० कृ०) वि० शांति-युक्त (२) मटी गयुं होय तेवुं (रोग) (३) ओछुं थयेलुं; दूर थयेलुं; बुझा-

(६)शिक्षा करवी (७)ताबे करवु

येलुं (४) बंध पडेलुं; अटकेलुं (५) पाळेलुं; वश करेलुं (६) मंद; मधुर (७) नम्र (८) बिनअसरकारक बनेलुं शांतगुण वि० मृत **ज्ञांतनव** पुरु भीष्म (ज्ञांतनुना पुत्र) भारतन् पुरुभीष्मना पितान् नाम भारतम् अ० अरे ना!, 'एम ते होय!' 'ईश्वर एम न करे' —एम निवारणना अर्थमां वपरातो अन्यय **ज्ञांतरजस्** वि० रज; घूळ विनानुं; रजोगुण के तृष्णाओ विनानुं **झांता** स्त्री० दशस्य राजानी पुत्री; ऋष्यशंगनी पत्नी **भांति** स्त्री० शांत पाडवुं, घीमुं पाडवुं के दूर करवुं ते (२) देग, क्षोभ के क्रिया न होवां ते (३) क्लेश कंकास के युद्धनो अभाव (४) विश्वाति; निवृत्ति (५) मानसिक के शारीरिक उपद्रव के विकारनुं मटी जवुं ते (६) सांसा-रिक तृष्णानो अभाव शांतिमार्ग पुं० मोक्षमार्ग **शांत्युदक** न० शांति माटेनुं पवित्र जळ **शांबरी स्त्री०** इंद्रजाळ; माया **शांभव, शांभवीय** वि० शिवने लगतुं **शिक्य** न०, शिक्या स्त्री० शींकुं **ज्ञिल् १** आ० शीखवुं; अम्यास करवो **ज्ञिसक** पुं० शीखनारो (२) शीखवनारो **क्षिल न०** शीखवुं ते (२) शीखवबुं ते **ज्ञिक्षा** स्त्री० शीखवुं ते; अम्यास (२) कशु करवाने शक्तिमान थवानी इच्छा (३) शिक्षण; उपदेश (४) एक वेदांग; उच्चारशास्त्र (५) शास्त्र **লিদিন** ('যিহ্ণ' বুমু০ কূ০) বি৹ शीखेलुं; अभ्यास कर्यो होय तेवुं(२) शीखबेलुं (३) तालीम आपेलुं (४) कुशळ ; प्रवीण शिक्षितव्य, शिक्ष्य वि० शिक्षण आपवा योग्य (२) शीखवा लायक

शिलर पुं०, न० पर्वतनी टोच (२) **झाउ**नी टोच (३) कलगी **शिखरिन्** वि० कलगीवाळुं (२) अणी-दार (३) पुं० पर्वत (४) झाड शिखंड पुं० चूडाकर्म वखते माथा उपर के बे बाजुए जे कानशेरियां रखाय छे ते (२) मोरन् पींछांबाळ् पुञ्छ (३) कलगी शिखंडक पुं० माथानी बाजुओ उपर रखातां जुलफां (क्षत्रियो त्रण के पांच राखे छे) (२) कलगी (३) मोरपुच्छ **ञिलंडिन्** पुं० मोर (२) द्रुपदनो पुत्र **ज्ञिसंडिनी** स्त्री० ढेल शिखा स्त्री० माथा उपर रखाती वाळनी लट(२)कलगी(३)शिखर; टोच (४) तीक्ष्ण अणी (५) वस्त्रनो छेडो (६) ज्योत (७) किरण (८) मोरनी कलगी **ज्ञिलादामन्** न० माथानी टोचे पहेराती शिखाधर पुं० मोर **शिखाघरज** न० मोरनुं पींछुं **जिखामणि** पुं० माथानी टोचे पहेरातो मणि; चूडामणि **शिक्षावत्** वि० कलगीवाळुं(२)ज्योत-वाळुं (३) अणीदार (४) पुं० अग्नि (५) दीवो शिखावल पुं० मोर **शिक्षिध्वज** पुं० कार्तिकेय **ज्ञिल्पिन्** वि० अणीदार(२)कलगी के चोटोवाळुं(३) पुं० मोर(४)अग्नि क्षित ('शो'नुं भू० कु०) वि० धार काढेलुं(२)पातळुं ; कृश(३)क्षीण; अशक्त **ज्ञितघार** वि० तीक्ष्ण धारवाळुं **झितञ्क पुं० जव (२) ध** उं **ज्ञिताग्र**ंपु० कांटो **क्षिति** वि० श्वेत (२) काळुं(३) घे**रुं** भूरुं; नील रंगनुं **शितिकंठ** पूं० नीलकंठ; महादेव

शितिरत्न न० नीलम [घारी) **ज्ञितिवासस्** पुं० बळराम (नौलवस्त्र-शिथिल वि० ढीलुं के मंद (२) (बांघेलुं) छोडी नाखेलुं(३) खरी के गरी पडेलुं (४)सुस्त;नबळुं नाखवुं;तजी देवुं) शिथिलयति प० (ढीलुं पाडवुं; छोडी **शिषिलीकृ ८ उ०** ढीलु करवुं; छोडी नाखवुं (२) नबळुं पाडवुं (३) तजी देवुं शिथिलीभु १ प० ढीला पडवुं(२) खरी के गरी पडवं छि ते नदी शिष्रा स्त्री ॰ उज्जयिनी जेने कांठे आवेली शिका स्त्री० (बडपीपरना जेवुं) लांबुं लटकत्ं मूळ(२)कमळ कंद(३)कोई पण मूळ (४) चाबुकनो प्रहार **क्षिकाषर** पुं० शाखा; डाळी **क्षिफारुह** पुं० वडनुं झाड शिबि पुं० एक देशनुंनाम (ब०व०) (२)एक राजा जेणे शरणागतनी रक्षा माटे पोताना शरीरनु मांस कापी आप्युं हतुं शिक्का स्त्री० पालखी (२)ठाठडी शिबिर न० लक्करी छावणी श्चिरस् न० माथुं (२)टोच; शिखर (३) लक्करनी आगली हरोळ (४) (समा-सने अंते)मुख्य के अग्रेसर एवं ते **शिरसिज** पुं० केश; वाळ **शिरसिजपा**श पुं० केशपाश; चोटलो शिरस्तम् अ० मायामांथी **क्षिरस्त्र, शिरस्त्राण** न० माथा माटेनो लोखंडी टोप (२) पाघडी इ० माये पहेरवानुं ते शिरस्य वि० माथानुं(२)पुं० चोस्खा वाळ **शिरःस्थान** न० मुख्य ओरडो शिरा स्त्री० रक्तवाहिनी; नस **क्षिरीय** पु॰ एक फूलझाड(२)न० तेनुं फूल (कोमळतानुं दृष्टांत गणाय छे) शिरोधरा स्त्री o, शिरोधि, शिरोध पुं o ग्रीवा ; डोक

ज्ञिरोमणि पुं० माथे धारण करवानो मणि; चूडामणि (२) पंडितोनी एक इलकाब शिरोरुह् (-ह) पुं० वाळ, केश शिरोवेष्ट पुं०, शिरोवेष्टन न० पाघडी ; फेंटो इ० माथे पहेरवानुं ते **क्षिल** पुं०,न० खेतरमां पडेला कण वीणवा ते पथ्थर **ज्ञिला** स्त्री० पथ्थर;खडक(२)घंटीनो **शिलाकुसुम** न० मनःशिल **शिलाबेश्मन् न० पर्वतमां कोतरेली** सुशोभित गुफा क्षिलाक्षित वि० पथ्यर घसीने भार **ज्ञिली** स्त्री० उमरो (२) बाण (३) थांभलानुं माथुं (४) देडकी **शिलीमुल** पुं० भमरो (२) बाण **ज्ञिलों**ध्र्य न० बिलाडीनो टोप (२) केळन् फूल **शिलोच्चय** पुं० पर्वत; मोटो खडक **शिलोंछ** पुं० खेतरमां गरो पडेला कण बीणवा ते (२) अल्प संग्रह शिल्प न० कळा-कारीगरी (६४ गणा-वाय छे) (२) कोई पण कारीगरीनी कुशळता; हुन्नर जिल्पक न० एक जातनुनाटक (जेमां जादुना अने गूढ मंत्रतंत्रना प्रयोग निरूपाय छे) **शिल्पिन्** वि० शिल्पने लगतुं(२)यांत्रिक (३) पुं० कारीगर; शिल्पी **ज्ञिद** वि० शुभ; कल्याणकारी (२) सुखी; भाग्यशाळी; तंदुरस्त (३) पु॰ शंकर (४) वेद (५) न० कल्याण; सुख (६) मोक्ष **शिवताति** वि० शुम-सुखद अंतवाळुं शिवपद न० मोक्ष **शिवल्पि** न० शिवनुं लिंग स्वरूपी प्रतीक शिवंकर वि० कल्याण के सुख करनाई शिवा स्त्री० पार्वती (२) शियाळ

शिवादेशक पुंच भविष्य भाखनारो (२) शुभ समाचार लावनारो **शिवालय** पुं० शिवनुं रहेठाण (२) न० शिवनुं मंदिर (३) स्मशान **क्षिची** पुं० द्वि० व० शिव अने पार्यती शिशिर वि॰ ठंडुं; शीतळ(२)शिशिर ऋतुने लगतुं (३) पुं०, न० ठंडी ; हिम (४)माघ अने फागण मासनी ऋतु शिशिरकिरण, शिशिरदीधिति पुं० चंद्र **शिशिरमथित वि०** ठंडीयी पीडातुं शिशिरात्यय, शिशिरापगम पुं० वसंत ऋतु (शिशिर ऋतुजतां आवे ते) शिशिरांशु पुं० चंद्र शिशु, शिशुक पुं० बाळक; बच्चुं **बिब्रुपाल** पुं० चेदि देशनो राजा **क्षिशुमार** पुं० एक जळचर प्राणी(२) ध्रुव पासेनुं ताराचक **शिशुमारशिरस्** न० ईशान खूणो शिश्न न० पुरुषनी गुह्येंद्रिय **शिश्नोदरपरायण** वि० जीभना स्वादमां अने कामवासनामां रत शिष् १० उ०, ७ प० शेष - बाकी राखवुं (२) ७ प० भेद बताववो शिष्ट ('शिष्'नुंभू०कृ०) वि० **बाकी** रहेलु; वधेलु (२) आज्ञा करेलु (३) सुशिक्षित; डाहचुं (४) मुख्य; आगेवान **शिष्टाचार** पुं० डाह्या-विद्वान-माणसोनो व्यवहार (२) सम्य रीतभात **क्षिष्टि** स्त्री० शासन(२) हुकम(३) सजा: शिक्षा **ज्ञिष्ट्यर्थम्** अ० सुधारणा – शिक्षण माटे **शिष्य पु॰** विद्यार्थी(२)चेलो **शिध् १**५० सूंघवुं गरजव् **ज्ञिल् १,**२ आ०,१० उ० रणकवुं(२) शिज पुं० रणकार(घरेणांनी) **क्षिजित** ('शिज्'नुं भू० कृ०) रणकतुं (२) न० (घरेणांना) रणकार **शिजिनी** स्त्री० धनुष्यनी दोरी

शिबा, शिबि, शिबी स्त्री० शिग;फळी ফিহাদা स्त्री० एक झाड (२) अशोक वृक्ष झी २ आ ० शयन करवुं; सूर्वु शीक् १ आ० छोटवुं क्षीकर पुं० फर फर (पाणीनी) (२) टीपुं; फोरुं (पाणी के वरसादनुं) **शीकरवर्षिन्** वि० फरफर रूपे वरसतुं **श्लीकरिन्** वि० फरफर वरसावत् शीझ वि० झडपी; वेगवंत शीद्रचेतन पुं० कृतरो शीष्रता स्त्री०, शीष्रत्य न० झडप; वेग: उतावळ शीझम् अ० जलदीयी; वेगयी श्रीघ्रलंघन वि० जलदी रस्तो कापतुं **झोत** वि० ठंडुं; टाढुं (२) मंद; सुस्त (३) न० टाढ; ठंडी (४) कफ (धातु) शीतकिरण, शीतगु,शीतद्युति, शीतरिशम, शीतरच्(-चि) पुं० चंद्र क्षीतल वि० ठंडुं(२)पीडान थाय तेवुं शीतला स्त्री० बळियाना रोगनी देवी; ते रोग (२) रेती शीताल वि० टाढथी अकडाई गयेलुं शीतांशु पुं० चंद्र **शीतीभू १**प० टाढुं पाडवुं **शीष्** पुं०,न०मद्य (शेरडीनुं) शीफर वि० रम्य क्षीर पुं० अजगर क्षीर्ण ('शृ'नुं भू० कु०) वि० चीमळाई गयेलु; सडी गयेलुं (२) तुटी-फाटी गयेलुं (३) सुकाई गयेलुं; कृश शीर्ष न० मायुं लायक शीर्षच्छेद्य वि० माथु कापी नाखवा शीर्षत्राण न० लोखंडी टोपो शील् १ प० मनन करवुं; चितववुं(२) भजवुं; पूजवुं(३)आचरवुं (४) १०। उ० आदर करवो (५) अभ्यास-पुनरा-वृत्ति करवी (६) बारंबार मुलाकाते जबु (७) पहेरबुं

शील न० स्वभाव; बलण (२) टेव; रिवाज (३) वर्तन (४) सदाचार **शीलखंडन** न० चारित्र्यभ्रष्ट-नीति-भ्रष्ट थवुं ते शीलगुप्त वि० लुच्चुं **शीलन** न० वारंवार अभ्यासवुं ते **शीलभंश** पुं० चारित्र्यभ्रष्टता शीलवंचना स्त्री० चारित्र्यभ्रष्ट करवुं ते शीलवृत्त न० सद्वर्तन **भीलित** वि० अम्यासेलुं (२) पहेरेलुं (३) वारंबार मुलाकात लीधी होय [शुकदेवजी तेवुं (४)-श्वी युक्त **शुरू पुं**० पोपट (२) व्यासना पुत्र--**शुकच्छद** पुं० पोपटनी पांख शुकपितृ पुं० व्यासम्नि शुक्त ('शुच्'नुं०भू० कु०) निर्मळ; स्वच्छ (२) खारुं शुक्ति स्त्री० छीप (२)घोडानी छाती के गरदन उपरना बाळनो गुच्छ **शुक्र** वि० तेजस्वी (२) शुद्ध; शुभ्र (३) पुं० शुक्रग्रह (४) शुक्राचार्ये; असुरोना गुरु(५)न० बीर्य (६) तेज **शुक्ल** वि० सफेद ; तेजस्वी(२)निष्कलंक; निर्मळ (३) सास्विक (४) यशस्कर (५)तेज आपनार्स(६)पुं० स्वेतवर्ण **शुक्लजीव** पुं० एक छोड (वज्री) **शुक्लदेह** वि० पवित्र शरीरवाळु **ज्ञुबलपक्ष** पुं• अजवाळियुं शुक्लापांग पुं० मयूर; मोर **शुच् १** प० शोक करवो (२) पस्तावो करवो(३) ४ उ० शोक करवो (४) पवित्र-स्वच्छ थवुं (५)प्रकाशित करवृं **शुच्, शुचा** स्त्री० शोक (२) आंसु शुंचि वि॰ निर्मळ, स्वच्छ (२) श्वेत (३) तेजस्बी (४) निष्कलंक; पवित्र (५) प्रमाणिक (६) पु० क्वेतवर्ण (७) उनाळो (८) जेठ महिनो (९) अषाढ महिनो (१०) अग्नि (११) आकाश

शुचिषद् वि० सदाचारने मागं जनारुं **शुचिसमाचार** वि० पवित्र आचारवाळ् **बुचिस्मित** वि० मधुर स्मितवाळुं शुद्ध ('शुध्'नं भू० कृ०) वि० स्वच्छ (२) निर्मेळ; पवित्र (३) श्वेत; कांति-मान (४) डाघ विनानुं (५) निर्दोष ; निष्कपट(६)चूकवी दीधेलुं(७)धार काढेलुं (८) पुं० शुक्लपक्ष (९)शिव **शुद्धवंश्य** वि० पवित्र कुळमां जन्मेलुं **शुद्धांत पुं**० राजानुं अंतःपुर (२) राणी **शुद्धांतचारिन्** पु० अंतःपुरनो रक्षक शुद्धि स्त्री० पवित्रता (२) तेजस्विता (३) प्रायश्चिस **शुध्** ४ प० पवित्र थवुं (२)शुभ--अनुकूळ होवुं (३) निःसंदेह बनवुं (४) चूकवी देवुं **द्युन** पुं० कूतरो **शुनी** स्त्री० कृतरी **ज्ञाभ् १** आ० दीपवुं, शोभवुं **शुभ** वि० सुंदर(२)तेजस्वी(३)मांग-ळिक; कल्याणकारी (४) नीतियुक्त (५) न० कत्याण; मंगळ; सुख शुभदर्श, शुभदर्शन वि० सुंदर श्ममंगल न० कल्याण ; सद्भाग्य **ञ्चभलग्न** पुं०, न० शुभक्षण **शुभशंसिन्** वि० भावि शुभ दर्शावनार्ष शुभंयु वि० भाग्यशाळी; सुखी **शुभाशुभ** न० सुख-दुःखः; इष्ट-अनिष्ट शुभेतर वि० अशुभ (२) अनिष्ट **इाुभोदर्क** वि० सुखकर परिणामवाळुं **शुभ्र** वि॰ उज्ज्वल;तेजस्वी(२)सफे**द** शुल्क पुं०,न० जकात; दाण(२)नफो; स्राभ (३) कन्यानां मातापिताने अपाती किंमत (४) लग्न दलते भेट (५) परठण; दहेज (६) मूल्य; किमत (७) बानुं शुल्ब(-ल्ब) न० दोरी; दोरडुं(२) पाणीनी नजीकनु स्थान शुश्रू स्त्री० माता शुश्रुषक वि० तहेनातमां रहेनारं (२) पुं० सेवकः; हज्रियो

शुध्रुषः स्त्री० सेवा; चाकरी (२) सामळवानी इच्छा (३) आज्ञांकितपणु शुभूषु वि॰ सांभळवाने आतुर एवु (२) सेवा करवाने तत्पर एवं शुष् ४ प० सुकावुं (२) चीमळावुं (३) क्षीण थवुं (४) दुःखी थवुं; पीडावुं शुषिर वि॰ छिद्रोवाळुं(२)न॰ फूंकीने वगाडवानुं वाद्य शुषो स्त्री० सुकावुं ते(२) दर (जमीनमां) शुष्क ('शुष्'नं भू० कृ०) वि० सुकाई गयेलुं; सूकुं(२)चीमळाई गयेलुं(३) ढोंगथी करेलुं (४) पोकळ; फोगट; नाहक (५) कठोर **शुष्ककलह** पुं० फोगट तकरार (२) िकेवळ गावुं ते ढोंगी तकरार शुष्कगान न० (नृत्य वगेरे विनानुं) **शुष्मन्** पुं० अग्नि (२) न० तेज (३) बळ शुष्मिन् वि॰ शक्तिशाळी; तेजस्वी **शुंग न**० अंकुरनो दोडो **शुंठि(−ठो**) स्त्री० सूठ शुंडा स्त्री० हाथीनी सूंढ(२)मद्य;दारू (३) वेश्या (४) दारूनुं पीठुं शुंडार पुं॰ हाथीनी सूंढ(२)कलाल शुंभ पुं० दुर्गाए मारेलो एक राक्षस ज्ञूक पुं०, न० तीक्ष्ण अणी के छेडो (२) अणियाळो वाळ शूकर पुं० भुंड; डुककर श्कशिखा स्त्री० (जव वगेरे)अनाजना पोपटा उपरनी तीव्र अणी **ञूद्र पुं०** चतुर्थ वर्णनो भाणस <mark>शून (</mark>'श्वि'नुंभू०कृ०) वि० सूजी गयेलुं (२) वधी गयेलुं शूना स्त्री ० कतलखानु (२)जेनाथी जीव-हिंसा थाय तेवुं कोई पण घरगथु साधन शून्य वि० खाली(२)लक्ष के विषय विनानुं (दृष्टि, हृदय ६०) (३)अभाव होय तेव (४) निर्जन (५) हताश (६) –विनानु; –रहित (७) अर्थहीन (८)

न० निर्जन स्थान (९) आकाश (१०) मीडुं (११)अभाव(१२)एरिंग शून्यपाल पुं० अवेजी; प्रतिनिधि शुन्यमय वि० निष्फळ; बिनअसरकारक शून्यवादिन् पुं० (दरेक वस्तुनो अभाव माननारो) बौद्ध (२) नास्तिक ञ्चन्यहृदय वि० शुन्य मन के चित्तवाळुं; बेघ्यान (२) खुल्ला दिलवाळुं; संदेह विनानुं (३)लागणी विनानुं; ऋूर ज़ूर् ४ आ० ईजा करवी; हणवुं(२) १० उ०शौर्य दाखववुं **शूर** वि० शूरवीर; पराऋ**मी(२)पूं०** शूरवीर माणस (३)श्रीकृष्णना **दादा** भूरकोट पुं० तुच्छ योद्धो (जंतु जेवी) शूरता स्त्री०, शूरत्व न० शूरपणुं श्रूरमानिन् पुं० पोताना शौर्यनी खोटी बडाई मारनारो शूरसेनाः पुं० ब० व० मथुरा नजीकनो एक प्रदेश के तेना लोको **शूर्प** पुं०,न० सूपडुं **शूर्पकर्ण** पुं० हाथी (२) गणेश **ज्ञूल** पुं० भाला जेवुं अणीदार हथियार (२) त्रिशूल (३) मांस सेकवानो सिळियो (8) शूळी (4) शूळ; तीव वेदना(६)विकय [देव(त्रिशूलघारी) जूलधृक्, जूलपाणि, जूलभृत् पुं० महा-शूलाधिरोपित वि० शूळीए चडावेलुं <mark>शूलारोपण</mark> न० शूळीए चडाववुं ते शूलावतंसित वि० शूळीए चडावेलुं **शूलांक** पु० शिव (त्रिशूल**घारी**) श्रृह्मिन् वि० भालाधारी(२)पुं**० शिव** ज्ञूल्य वि० सळिया उपर शेकेलुं **भुगाल** पुं० शियाळ शृणि स्त्री० अंकुश (हाथी माटेनो) **शृत** वि० रांघेलुं(२)उकाळेलुं ब्रुंखल पुं०, न० लोढानी सांकळ (२) सांकळ (लाक्षणिक पण)(३) कमरे पहेरवानी सांकळी

भृंखलक पुं॰ सांकळ(२)पगे डेरावाळुं प्राणी (दूर चाल्युं न जाय ते माटे) शृंखला स्त्री० जुओं 'शृंखल' **शृंग** न० शिगडुं(२) शिखर; टोच (३) ऊंचाई(४)प्रभुत्व(५) रणशिंगु (६) अभिमान (७) बाणनी शींगडाना आकारनी सोटी-कांड **शृंगक पुं**०, न० शिगडुं (२) पिचकारी **भूगवेर** न० गंगा नदी उपरनु एक शहेर (आजना मीरझापुर नजीक) **शृंगाटक** न० चार रस्ता भेगा थता होय ते स्थान (२) बारणुं शुंगार पुं० कीडा के रित माटेनी स्त्री-पुरुषनी एक बीजा प्रत्येनी स्पृहा (२) र्श्वगाररस (३) विलास; रति (४) शणगार (५) हाथीना शरीर उपर सिंदूरथी करेलो शणगार **शृंगारचेष्टा** स्त्री० शृंगारिक हावभाव **शुंगाररस** पुं० काव्यशास्त्रमां प्रसिद्ध आठ के नव रसमांनो प्रथम शंगारलज्जा स्त्री० प्रेमने कारणे ऊभी थयंसी लज्जा **शुंगांतर** न० शिंगडांना **बे** ऊंचा छेडा वच्चेनुं अंतर (गाय इ० नां) भृगिका स्त्री० एक अस्त्र (२) जिला वगेरे फेंकवानु यंत्र श्रृंगिन् वि० शिगडांबाळुं (२) शिखर-वाळु (३) पु० पर्वत (४) हाथी (५) आखलो (६) शिव के तेमनो एक गण **शृ९ प०** चीरोने टुकडा करवा (२) हणवुं;ईजा करवी [(३)शिखर;टोच **शेखर पुं**० कलगी; तोरो (२) मृगट क्रोफ पुं०,न० पुरुषनी गुह्यंद्रिय (२) वृषण ; गोळी [फूलछोड ; शहाळी शेफालि, शेफालिका, शेफाली स्त्री ० एक **शेमुखी** स्त्री० बुद्धि; समजण **होबधि** पुं० कीमती खजानो **शेष** वि० बाकी रहेलुं (२) पुं०, न० बाकी

रहेलुं ते (३) बधेलुं ते(४)पुं ० परिणाम; असर (५)अंत (६)मोत (७)शेषनाग (८) हाथी (९) प्रसाद; कृपा **शेषशायिन् पुं**० विष्णु शेषा स्त्री० देवने चडावेलां फूल वगेरेनो शेषे अ० अंते, छेवटे (२) बाकीनी बधी बाबतमां (उदा० 'शेषे षष्ठी') शेष्य वि० उपेक्षा करवा योग्य **शैक्य** वि० शींकामां लटकावेलुं (२) अणीदार (३) पुं० शींकुं(४)शींकामां राखेलुं पात्र **शंक्यायस** न० लोही जेवा रंगनुं पोलाद **शेक्ष** वि० शास्त्रादिना अम्यासवाळ् **शैद्ध, शैक्ष्य** न० त्वरा; वेग शेल्प न० ठंडक मंदता; आळस शैथिल्य न० शिथिलता; ढीलापणुं(२) शेनेय पुं० सात्यकि शैल वि० पथराळ; पथ्यरनुं बनेलुं (२) शिलायुक्त (३) पुं• पर्वतः; खडक (४) पथ्थरनो ढगलो **शंलगुरु वि० प**र्वत जेटलुं भारे (२) पुं० हिमालय **शैलजन** पुं० पर्वेतवासी शंसतनया, शैलपुत्री स्त्री० पार्वती **शैलसार** वि० पर्वत जेटलुं दृढ के बळवाळ वर्तणुक शैली स्त्री० ढब; रीत; पद्धति (२) **शेल्प** पुं० नट **शैलूषी** स्त्री० नर्तिका; नटी **शैलेय** वि० घणा खडकवाळुं(२)पर्वत-माथी उत्पन्न थयेलुं (३) पर्वत जेवुं कठण (४) न० एक सुगंघी द्रव्य इरोब वि० शिव संबंधी **शैबल** पुं० शेवाळ; लील **शैवाल** पुं• शेवाळ; लील (२) न० एक जातनुं सुगंधी लाकडु **হাহাৰ দ**ে ৰুখ্যুণ क्षेंज्ञिर वि० शिशिर ऋतुसंबंधी (२) हिममय; बरफथी आच्छादित

शो ४ प० { श्यति }तीक्ष्ण करवुं शोक पुं० खेद; दिलगीरी; संताप **शोकनिहत** वि० शोकथी भागी पडेल शोकस्थान म० शोकनुं कारण शोचिस् न० कांति; तेज शोष्य वि० अफसोस करवा योग्य **शोण** वि० लाल रंगनुं; रातुं (२)पाट-लिपुत्र नजीक गंगाने मळतो नद **शोणहय** पुं० द्रोणाचार्य **द्योणित** वि॰ रातुं (२) न॰ लोही **शोणितपारणा** स्त्री० लोही-मांसनो नास्तो के भोजन **शोणितपुर न० बाणासुरनी राजधानी शोणितभृत्** पुं० देहघारी – शरीरी ते **क्षोणिमन्** पुं रताश शोध पुं० सोजो **क्षोध पुं॰** शुद्ध करवुं ते (२) सुधारवुं ते (३) छूटवुं ते (देवामांथी)(४) वेरनी वसूलात **भोषन** वि० शुद्ध करनारुं (२) न० शुद्ध करवं ते; साफ करवं ते (२) भूल सुधारवी ते (४)(देवं) भरपाई करवुं ते (५) (वेरनी)वसूलात (६) भातु शुद्ध करवी ते **शोधित** वि० साफ करेलुं; शुद्ध करेलुं (२) (भूल) सुधारेलुं (३) चूकवी दीघेलुं (४) बदलो वाळेलुं (५) (दोष के पापमांथी) मुक्त करायेलुं शोफ पुं० सोजो; गांठ **शोभन**ेवि० तेजस्वी (२) सुंदर(३) शुभ (४) नीतियुक्त शोभना स्त्री० सुंदर के सद्गुणी स्त्री **क्षोभनीय** वि० सुंदर; मनोहर शोभा स्त्री ० प्रभा; तेज (२) सौंदर्य (३) शणगार शोभिन् वि० प्रकाशतुं (२) शोभतुं; ∫जवुंते; क्षीणता

शोष पुं० सुकाई जवुं ते (२) चीमळाई

शोषण वि॰ सूकवी नाखवुंते (२) चिमळावर्वुं ते (३) पुं० कामदेवनुं एक बाण (४) न० सूकवी नाखवुं ते (५) चूसवुं ते थयल शोषित वि० सुकाई गयेलुं (२) क्षीण **शोषिन्** वि० सूकवनाहुं-क्षीण करनाहं शीवल्य न० भोळापणुं शौच न० स्वच्छता (२) शुद्धि (सूतः वगेरे मांथी) (३) साफ करवे ते(४) मळत्याग करवी ते **ज्ञौटीर** वि॰ अभिमानी; गर्विष्ठ(२) उदार; दानेशरी (३) पु॰ अभि मानी माणस (४) त्यागी; तपस्वी **शौटीर्य** न० गर्व (२) पराक्रम **शौद्र** वि० शूद्र संबंधी **शौधिका** स्त्री० सफेद कांग मांस **बौन** वि०क्**तरानुं (२) न०कतलखाना**न् **बौनिक** पुं० कसाई (२) पारधी शौभनेय वि० सुंदर पदार्थने लगतुं(२) पुं० सुंदर स्त्रीनो पुत्र **इतेभिक** पुं० जादुगर(२)पारघी **शौरि** पुं॰ कृष्ण (२) बळराम (३) वसुदेव (४) शनिग्रह शौर्य न० पराक्रम (२) बळ; शक्ति झौँगेय पुं० गरुड (२) शकरो बाज क्रोंड वि० दारूडियुं (२) मदमत्तः; उन्मत्त (३) कुशळ; प्रवीण शौंडिक पुं० कलाल शौडिकी स्त्री० कलालण **शौंडिन्** पुं० कलाल **शौंडिर, शौंडीर** वि० गर्विष्ठ(२)ऊंच् (३) समर्थं (४) न० गर्वः; अभिमान **झोंडीयं** न० पराक्रम (२) अभिमान **क्च्युत् १ प० टप**कवुं; झर्वुं (२) रेडवुं; छांटयुं झिमवुं ते ; बहेवुं ते क्च्योत पुं०, क्च्योतन न० झरवुं ते; इमशान न० मसाण **इम**ञानञ्जूल पुं०, न**०** स्मशानमां रोपेली इ**मश्रु**न० मूछ (२) दाढी (बाळ) क्मश्रुप्रवृद्धि स्त्री० दाढी वधवी ते **रमञ्जल वि० दाढी**वाळुं क्यान ('क्यें'नुंभू०कृ०) वि०नमी गयेलुं (२) गाढुं; चीकणुं (३) सुकाई गयेलुं; पातळुं थयेलुं व्याम वि० शामळुं;घेर्चभूरं (२)पुं० अल्हाबाद पासे यमुना तीरे आवेलो वड (२) तमालवृक्ष **श्यामल** वि० शामळ् **श्यामलिमन्** पुं० काळाश श्यामा स्त्री० अंधारी रात(२)छाया; छांयडो (३) काळी स्त्री (४) युवानीनी मध्यमां आवेली स्त्री;अमुक वर्ण-गुण वाळी स्त्री (५) संतान न थयेली स्त्री (६) प्रियंगुलता (७) कोयलनी जातनी एक पंखिणी **रवामाक** पुं० सामो (भ्रान्य) **क्यामायते** आ० (काळुं थवुं; अशुद्ध साबित थवुं; जेम के सोनुं इ०) **क्यामिका** स्त्री० काळाश(२)अशुद्धिः; मिश्रण (सोना वगेरेमां) रयामित वि० काळूं थयेलुं **श्याल** पुं० साळो इयालक पुं॰ साळो(२)दुष्ट साळो **इयालकी, इयालिका, इयाली** स्त्री० साळी क्याव वि० काळाश पडता पीळा रंगनं क्यावदत्, क्यावदंत वि० घेरा पीळा रंगना दांतवाळ् **रुयेत** वि० घोळुं; सफेद क्येन पु०शकरो बाज (२) सफेद रंग क्येनपात पु० बाजे एकदम झडप मारवी ते **क्येनावपात** पुं० जुओ 'क्येनपात ' **इयेनंपाता** स्त्री० बाज पक्षी वडे शिकार करवो ते (२) शिकार **भद्दधान** वि० श्रद्धावाळ् **अह वि**० श्रद्धावाळ्

श्रद्धा ३ उ० - मां विश्वास मूकवो (२) कबूल राखवुं;हा पाडवी श्रद्धा स्त्री० आस्था; विश्वास (२) तीव **अद्धालु** वि० श्रद्धायी भरेलुं (२) तीव इच्छा राखतुं(३)स्त्री० दोहदवाळी स्त्री **भद्रेय** वि० विश्वासने योग्य **श्रपित** वि० अकळेलुं; उकाळेलुं ४ प० [श्राम्यति] महेनत करवी; प्रयत्न करवी (२) तपस्या करवी (३) पीडावुं; कष्ट पामवुं अम पु० परिश्रम; प्रयत्न (२) याक (३) दुःख; पीडा (४) तप (५) कसरत; लश्करी कसरत – कबायत (७) सखत अभ्यास (८) आश्रम श्रमजल न० परसेवो **क्षमण** वि० श्रम करनारुं (२) पुं० तपस्वी (३) भिक्षु (जैन के बौद्ध) अमणायते आ० (भिक्षु के तपस्वी धवुं) **धमस**लिल न०, **ध्रमसीकर** पुं० परसेवो अमांच न० परसेवी **श्रव** पुं० सांभळवुं ते (२) कान **श्रवण** पुं०, न० कान (२) पुं० एक नक्षत्र (३) न० सांभळवुं ते (४) अम्यास (५) कीर्ति | इतेजारी **श्रदणकातरता** स्त्री० सांभळवानी अवणगोचर वि० सांभळी शकाय तेवा अंतरमां आवेलुं(२)पुं० कान सांभळी शके तेटलुं अंतर **श्रवणपय पुं**० काननो सांभळवानो **मार्ग** श्रवणपरुष वि० कानने कठोर लागे तेवुं (२) सांभळवुं मुश्केल **श्ववणपालि (-ली**) स्त्री० काननुं टेरवुं श्रवणप्राघुणिक पुं० कोईने पण काने अंतर पडत् अवणविषय पुंज्ञान सांभळी शके तेटलूं **श्रवणसुभग** वि० कानने प्रिय लागे तेवुं **अवणोदर** न० काननो खाडो **ध्यवप**न्न न० एरिंग

श्रवस् न० कान (२) कीर्त (३) धन (४) अवाज (५) स्तीत्र श्रव्य वि० सांभळवा लायक; प्रशंसापात्र श्रद्ध वि० श्रद्धाळु (२) न० पितृओनी तृष्ति माटे श्रद्धाशी करवानी तपंण-क्रिया (३) श्राद्धित्रयामां अपातुं दान श्राद्धेय वि० श्राद्धते योग्य श्राव पुं० लक्षशी सांभळवुं ते (२) वहेवुं के समवुं ते श्रावक पुं० सांभळनारो (२) शिष्य (३) जन के बौद्ध मतनो अनुयायी

(३) जैन के बौद्ध मतनो अनुयायी

श्रावण वि० कान संबंधी (२) वेदे

फरमावेलुं (३) पुं० श्रावण महिनो

(४)न० संभळाववृंते; जाहेर करवृंते

श्रावस्ति, श्रावस्ती स्त्री० गंगानी उत्तरे

आवेलुं एक शहेर

श्रावित वि॰ कहेलुं; संभळावेलुं श्राच्य वि॰ सांभळवा लायक ('दृश्य'थी ऊलटुं) (२)सांभळी शकाय तेवुं(३) संभळाववा के जाहेर करवा योग्य श्रांत ('श्रम्' नुं' भू० कु०) वि० थाकेलुं (२) शांत पडेलुं (३) पुं० तपस्वी श्रि १ उ० पासे जवुं (२) आशरो लेवो (३) स्थितिए पहोंचवुं (४) —ने वळगवुं (५) —नो आधार राखवो (६) वसवुं (७) योजवुं; उपयोगमां लेवुं श्रित ('श्रि' नुं भू० कु०) वि० आशरा माटे पहोंचेलुं (२) —नो आधार लेतुं;

-ने आधारे रहेलुं श्वित वि॰ जुओ 'शृत'; रांघेलुं; मूंजेलुं श्वी स्त्री॰ संपत्ति; समृद्धि (२) लक्ष्मीदेवी (३) राजलक्ष्मी (४) पदवी; होहो (५) सौंदर्य; शोभा (६) वर्ण; देखाव (७) त्रण वेदनो समूह (८) सरस्वतीदेत्री (९) देव वगेरेनां नाम पूर्वे मंगळवाची शब्द तरीके मुकाय छे (उदा॰ 'श्री राम') श्रीकंठ पुं॰ शंकर (२) भवभूति किंव

श्रीसंड पुं०, न० चंदन
श्रीसर, श्रीपति पुं० विष्णु
श्रीपतंत पुं० एक पर्वत
श्रीपुत्र पुं० कामदेव
श्रीफल न० बीलुं (२) नारियेळ
श्रीमत् वि० धनवान(२)भाग्यशाळी;
सुर्ह (३) सुंदर (४) सुप्रसिद्ध
श्रीवत्स पुं० विष्णु(२)विष्णुनी छाती
उपरनुं चिह्न (वाळनो भमरो)
श्रीवत्सकिन् पुं० छातीमां वाळना

भगरावाळो घोडो
श्रीवत्सलक्ष्मन् पुं० विष्णु [माणस
श्रीवत्लभ पुं० भाग्यशाळो के सुसी
श्रीवृक्ष पुं० बीलीनुं झाड (२)पीपळानुं झाड (३)घोडानी छातीए अने माथे होतुं वाळनुं गूंछळुं [गूंछळावाळुं श्रीवृक्षिकन् छातीए ने माथे वाळना भु ५ प० सांभळवुं (२) अम्यास करवो; शीखवुं

-कर्मणि० [श्रूयते] शास्त्रनी आज्ञा होबी; शास्त्रमां कहयुं होबुं

े–प्रेरक० संभळावेवुँ; माहितगार करवुं

—इंच्छा० [शुश्रूषते] सांभळवानी इच्छा करवी (३) शुश्रूषा – सेवा-चाकरी करवी

श्रुत ('श्रु' नुं भू० क्व०) वि० सांभ-ळेलुं (२) सांभळवामां आवतुं (३) जाणेलुं; समजेलुं (४) प्रसिद्धः; जाणीतुं (५) कहेबातुं; नामथी ओळ-खातुं (६) वचन आप्युं होय तेवुं (७) न० सांभळवानो विषय (८) वेद (९) विद्या (१०) सांभळवानी किया श्रुतधर वि० सांभळेलुं याद राखे तेवुं; यादशक्तिवाळुं

श्रुतवत् वि० वेदशास्त्र जाणनारं श्रुति स्त्री० सांभळवुं ते (२) कान (३) अफवा; किंवदंती (४) समा-

चार (५) अबाज (६) वेद; वेद-वाक्य (७) वाणी (८) कीर्ति (९) ब्रह्म-विद्या (१०) फलश्रुति (११) नाम (१२)अभ्यास; विद्वत्ता(१३)नादनो एक भेद (संगीतमां तेवी २२ श्रुति छे) **भृतिपय** पुं० काने पडवुं ते **श्रुतिप्रसादन** दि० कानने गमे तेवुं **श्रुतिमहत्** वि० सारी पेठे वेद जाणनार्ह **श्रुतिमू**ल न० कानमुं मूळ(२)वेदवाक्य **अृतिविप्रतिपन्न** वि० अनेक प्रकारनी श्रुतिओ –सिद्धांतो सांभळवाथी व्यग्र थई गयेलुं (२) वेदने न प्रमाणतुं **श्रुतिविषय** पु॰ कान(२)कान सांभळी शके तेटलुं क्षेत्र के अंतर **श्रुतिसुंख** वि० कर्णप्रिय **अुतिहारिन्** वि० कानने आकर्षे – गर्मे **श्रोण पुं०,** स्त्री०, श्रे**णी** स्त्री० पंक्ति हार (२) टोळुं; समुदाय महाजन; मंडळ (४) कोई पण वस्तुनो अग्र भाग **ओणिबद्ध, ओणिबंध** वि० हारबंध **श्रेयस्** वि० वधारेसार्हः, पसंद करवा योग्य (२) उत्तम; श्रेष्ठ (३) बधु नसीबदार (४) न० पुण्य (५) सद्-भाग्य; सुख; समृद्धि (६) कल्याण; मोक्ष (७) शुभ के मंगळ प्रसंग **अयस्कर** वि० सुख के कल्याण करनारुं **अंच्ठ** वि० सौथी उत्तम (२) सौथी सुस्ती (३) सौथी प्रिय (४) सौथी भोटुं (उंमरमां) **श्रेष्ठवाच् वि० वक्तु**त्वशक्तिवाळुं **भेष्ठान्यय** वि० उत्तम कुळ के वंशनुं **भेठिचत्वर** न० शेठ लोको रहेता होय ते भाग ⊸चकलूं **श्रेष्ठिन् पुं०** शेठ (२) महाजननो वडो श्रोणि स्त्री० कुलो; नितंब (२) मार्ग **श्रोणिविंब न**० गोळ नितंब (२) कमरपटो **श्रोणिसूत्र** न० कमरे बांधवानी दोरो (२) तरबारनो पटो

श्रोणी स्त्री० जुओ 'श्रोणि' **भोतस्** न० कान (२) हाथीनी सूंढ (३) इंद्रिय **श्रोतृ** पुं० श्रोता;सांभळनारो(२)शिष्य श्रोतोरन्ध्र न० सूंढनुं काणुं-नसकोहं **श्रोत्र** न० कान (२) देद **श्रोत्रपरंपरा** स्त्री० एकने कानेथी बीजाने काने आवेली बात श्रोत्रपेय वि० लक्षपूर्वक सांभळवा योग्य श्रोत्रिय वि० वेदमां पारंगत एवुं (२) पुं० विद्वान ब्राह्मण **औत** वि० कानने छगतुं (२) वेदने लगतुं (३) यज्ञने लगतुं (४) न० कोई पण वेदोक्त कर्म (४) त्रण अग्नि (गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिण) इलक्ष्ण वि० नरम; मृदु (२) लीसुं; सुवाळुं (३) नानुं; पातळुं; नाजूक (४) सुंदर; रमणीय इलथ् १० उ० शिथिल –ढीलुं थवुं (२) अशक्त थवुं (३) ईजा करवी -प्रेरक० ढीलुं करवुं; छोडवुं इलथ वि० छोडी नाखेलुं (२) छूटुं पडेलुं; सरी पडेलुं (३) अस्तव्यस्त **इलयबंघन** न० स्नायुओ ढीला करवा ते **इलथलंबिन्** वि० ढीलुं; लबडतुं **इलाघ् १ आ० दलाण**वु (२) खुशामत करवी (३) बडाई हांकवी इलाघन वि० बडाश मारतुं(२) न० वलाण; खुशामत इलाघा स्त्री० वस्राण (२) बडाश; आत्मप्रशंसा (३) खुशामत इला**घाविपर्यय** पुं० बडाश न मारवी ते इलाधिन वि० गविष्ट; उद्धत (२) बडाश मारतुं (३) प्रसिद्ध इलाघ्य वि० वखाणवा लायक (२) आदरणीय दिल**ष्** ४ प० भेटवुं (२) चोंटवुं; बळगवुं (३) ग्रहण करवुं; समजेबुं হিলছে ('হিলৰ্'নু মু০ ক্ত০) বি**০** भेटेलुं (२) बळगेलुं (३) अवलंबेलुं (४) श्लेष थती होय तेवं (५) बराबर चोटीने पहेरातुं होय तेवुं इलेष पुं० आर्लिंगन (२) वळगवुं ते (३) संयोग; संबंध (४) बे अर्थमां शब्द वापरवाथी ऊपजतो अलंकार इलेध्मन पुं० कफ(२)आंखनो पियो इलोक् १ आ० वखाणवुं (२) काव्य रचवुं(३)ढगलो करवोः;भेगुं करवुं इलोक पुं० काव्य वडे वलाणवुं ते (२) वखाणने काव्य (३) प्रसिद्धिः; कीर्ति (४)अनुष्ट्रभनी कडी (५)पद;कडी **व्वन्** पुं० कूतरो इसपन् (-च) पुं० चांडाल; हीन कोटीनो बहिष्कृत माणस (२) फांसी-गरो; जल्लाद **स्वपाक** पुं० चांडाल इबभ्रान० काणुं; छिद्र (२) गुफा; बखोल (३) नरक ∫नोकरी क्व**बृत्ति** स्त्री० कूतरानुं जीवन (२) **श्वश्र** पुं० ससरी **रबज़्रो** पुं० द्वि० व० सासु अने स**सरो** व्वशुर्य पुं॰ साळो (२) दियर **क्वश्रं**स्त्री० सासु **इबस्** २ प० स्वास लेवो (२) निसासो नाखवो; हांफबु **इवस्** अ० आवती काले(२)भविष्यमां **दवसन** पुं० पवन; हवा (२) न० श्वासोच्छ्वास (३) निसासी (४) स्पर्शः; स्पर्शनो विषय **रवसनसमीरण** न० रवासोच्छ्वासनो **क्विसित** ('श्वस्'नं भू० कु०) वि०

श्वास लेतुं (२) निसासो नाखतुं(३) न० श्वासोच्छ्वास (४) नि:श्वास **श्वस्तन** वि० आवती काल संबंधी (२) भविष्यनु **क्वान पुं**० कूतरो **इवापद** वि० जंगली; ऋूर —हिंसक — जंगली पशु (२) वाघ इबावराह वि० कूतरा अने सूवर वच्चेनुं (युद्ध; बेमांथी कोई पण मरे तो पण शिकारीने तो लाभ ज) **श्वाविध्** पुं० साहुडी **क्वास** पुं•ेरवासोच्छ्वास(२)निःस्वास **स्वासोच्छ्वास** पु० श्वास लेवो अने मूकवो ते समृद्ध श्व **दिव १** प० वधवुं; सोजो आववो (२) **दिवत् १** आ० सफेद थवुं **डियम** न० सफेद कोढ **क्ष्वेत** वि० सफेद;धोळुं(२)पुं**० सफेद** रंग (३) शुक्र ग्रह (४) धूमकेतु इवेतकाकीय वि० (सफेद कागडानी जेम) असाधारण; सांभळवामां न आवेलुं **क्वेतच्छ**द पुं० हंस **इबेसद्वीप** पुं० वैकुंठ **रवेतभानु** पुं० चंद्र इवेतभिक्षु पुं० श्वेत वस्त्रवारी भिक्षु इवेताचिस् पुं० चंद्र **इबेताइट पुं० अ**र्जुन इवेतांबर पुं० जैनोमां सफेद वस्त्रधारी साधुओनो एक पंथ **इवेतिमन्** पुं० घोळाशः घोळो रंग इबोधसीय, इबोवसीयस् वि० शुभ; मांगलिक (२) न० सुख; सद्भाग्य ष

षट्क पुं० छ (२) न० छनो समूह (३) काम कोध वगेरे षड्रिपु षद्कर्ण वि० छ कानथी संभळायेलुं (त्रीजा-त्राहित दडे संभळायेलुं) **षट्कर्मन्** न० ब्राह्मणोनां छ कर्म (अध्यापन, अध्ययन, यजन, याजन, दान, अने प्रतिग्रह) (२) ब्राह्मणोने आजीविका माटेनां शास्त्रोक्त छ कर्म (उंछ, प्रतिग्रह, भिक्षा, वाणिज्य, पशुपालन, कृषिकर्म) (३) योगा-म्यास माटेनां छ कर्म (धौति, बस्ती, नेती, नौलिक, त्राटक,अने कपालभाती) (४) मंततंत्रथी थतां छ कर्म (शांति, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेष, उच्चाटन अने मारण) षदकोण न० बज्र (२) हीरो (३) छ खूणावाळी आकृति षट्चक न० तंत्रोक्त छ शारीरिक चको (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञास्य) षद्धरण, षट्पद पुं० भमरो (छ-पगो) षट्पदज्य वि० भमराओ रूपी पणछ-वाळुं (कामदेवनुं घनुष्य) षट्पवी स्त्री० छ पंक्तिओनी बनेली कड़ी (२) भगरी (३) छ अवस्थाओ (भूख, तरस, शोक, मोह, जरा, मृत्यु ; अथवा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मान) **धक्रधिक** वि० छ वधु होय तेवुं **षडंग** न० छ भागवाळुं शरीर (वें जांध बे बाहु, शिर अने कमर) (२) वेदनां सहायक छ शास्त्रो (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष) (३) गायनी छ मांगलिक वस्तुओ (गोमूत्र, छाण, दूध, घी, दहीं,

गोरोचन) (४) कोई पण छ पदार्थनो समूह **षडं**च्रि पुं० भमरो **षडानन** पुं० कार्तिकेय षड्गबीय वि० छ बळदथी खेंचातुं षड्गुण वि० छ गणुं (२) छ गुणवाळुं (३) न० छ गुणनो समुदाय (४) विदेश-नीतिमां राजाए आचरवा योग्य छ कार्यो (संघि, विग्रह, यान के चडाई, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय) षड्ज पुं० संगीतना स्वरसप्तकमानो पहेलो – 'सा ' (२) मोरनो अवाज षड्दर्शन न० हिंदु तत्त्वज्ञानना छ शास्त्रीनो समुदाय (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत) **षड्भाग** पुं॰ छठ्ठो भाग षड्स न० (मीठो, खारो, तीखो, तूरो खाटो, अने कडवो ए) छ रसनो समूह षड्साः पुं०ब०व० छ रसो **षड्वर्ग** पुं० छ वस्तुओनो समूह (२) मानव जातना छ शत्रु (काम, क्रोच लोभ, मद, मोह अने मत्सर) (३) पांच इंद्रियो अने मन षड्विघ वि० छ प्रकारनुं षण्मासिक वि० छ महिनानुं; छ महिने आवतुं **षण्मुख** पुं० कार्तिकेय আমে(বি৹ (ব৹ ব৹) হয **चष्टि** स्त्री०साठ (संख्या) षष्टिक पुं०, षष्टिका स्त्री० एक जातना चोखा (जलदी ऊंगे एवा) षष्टिभाग पुं० शिव षष्टिहायन पुं० साठ वर्षनेः हाथी षष्ठ वि० छठ्ठुं

षष्ठांश पुं० प्रजा पासेयी खेतीना उत्पादनमांथी राजा कर तरीके छठ्ठो भाग छेते (२) छठ्ठो भाग बष्ठांशवृत्ति पुं० राजा (प्रजाना उत्पादनना छठ्ठा भाग उपर जीवतो) षष्ठी स्त्री० छठ्ठी तिथि(२)बाळकना जन्मथी छठ्ठा दिवसे पूजाती देवी षंड पुं० सांढ; आखलो (२) हीजडो; व्यंडळ (३) समुदाय; टोळुं (४) पुं०, न० टोळुं (बकरां इ० नुं) खंड पुं० हीजडो षाङ्गुष्य न० जुओ 'षड्गुण' न० षाण्मासिक वि० छ महिने आवतु; छमासिक (२) छ महिनानी उमरनुं

षिड्ग पुं० रंडीवाज - व्यभिचारी माणस
(२) विट; बेवफा यार

षोडशन् वि० (ब० व०) सोळ

षोडशन् वि० सोळमुं

षोडशन् वि० सोळमुं

षोडशन्त्वाः स्त्री० व० व० गौरी,
पद्मा, शची, मेवा इ० सोळ देवीओ

षोडशोपचार पुं० (ब० व०) देवनी
पूजाना सोळ प्रकार (आसन, स्वागत,
पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयक, मधुपर्क,
आचम, स्नान, वस्त्र, आभरण, गंघ,
पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, वंदन)

षोढा अ० छ प्रकार

पोढामुख पुं० कार्तिकेय [थूकवुं
रिठव् १, ४ प० [ध्टीवति, ध्टीव्यति]

ध्टीवन न० थूंकवुं ते (२) थूंक

स

स अ० 'सह' के 'सम्', 'सम', 'तुल्य' के 'सद्दा' अने 'एक' अथवा 'समान'-ने बदले नाम साथे जोडाई विशेषण के क्रियाविशेषण बनावे छे (अ) —नी साये, –थी युक्त ए अर्थमां (उदा० 'सपुत्र', 'सरोषम्') (आ) 'समान', 'सरखं' ए अर्थमां (उदा० 'सजाति', 'सवर्ण') (इ) -'ए ज', 'एक ज' ए अर्थमां (उदा० 'सोदर', 'सपक्ष') सकरण वि०दयाळ सकस्य वि० आखुं; पूर्वः; समग्र सकाम वि० कामना, वासना के प्रेमवाळुं (२) जेनी कामनाओं पूर्णे थई छे तेवुं सकार वि० क्रियाशील; सक्रिय सकाल जि॰ समयोचित; प्रसंगोचित सकालम् अ० वेळासर; वहेली सवारे **सकाश** वि० नजरे पडतुं; नजीकनुं (२) पुं० सांनिध्य सकादाम्, सकाशात् अ० नजीकमां (२) नजीकथी; पासेथी

सकुल्य वि॰ समान; सरखुं **सकृत्** अ० एक वार (२) एक वखत **सक्रपणम्** अ० दीनताथी सक्त ('सज्' नुं भू० कृ०) वि० चोटेलुं; बळगेलुं (२) आसक्त(३)विघ्नित; डखल करायेलुं सक्तवैर वि० सतत वेर राखनारुं सक्ति स्त्री० जोडाण ; संबंध(२)आसक्ति सक्तु पुं० (ब० व०) साथवो **सक्यि** न० साथळ सिक्यं वि० कियायुक्त सिंख पुं मित्र; सोवती (समासने अंते 'संख' थाय; पहेली ए० व० नुं रूप 'सन्ना') सखी स्त्री० साहेली **संख्य** न० मित्रता स्येवंशी राजा सगर वि० झेरवाळुं (२) पुं० एक **सगर्भ** पुं० सहोदर; सगो भाई सगंध वि० सुगंधीदार (२) संबंघी; सगु (३) गविष्ठ (४) पुं० सगो

सगुण वि० गुणवाळुं (२) सद्गुणी (३) पणछवाळुं (धनुष्य) सगोत्र वि०एक ज गोत्र –कुटुंबनुं (२) पुं० समान वडवामांथी आवेलो सगो (३) न० कुटुंब सचिकत वि० बीधेलुं; छळेलुं सचिकतम् अ० छळचं - बीन्युं होय तेम सचराचर वि० पूरेपूर्व; तमाम (२) न० आखुं विश्व सचित्र वि० रंगेलुं; चित्रविचित्र **संचिव पुं० मित्र**; साथी (२)वजीर; प्रधान; सलाहकार **सचेतस्** वि० बुद्धिमान (२) लागणी-वाळुं (३) होश के भानमां आवेऌं **सज्यरित (-**-त्र) वि० सारां आचरण-वाळुं; सदाचारी (२) न० सार्ह आचरण(३)सारा पुरुषोना चरित्रनुं वृत्तांत के तेनो इतिहास सच्चिदानंद पुं० (सत्, चित् अने आनंद स्बरूपवाळुं) परब्रह्म सजल वि० भीनुं; पाणीवाळुं सजुष् (-स्) वि० आसक्त ; प्रेमाळ (२) सोबती; साधी सज्ज वि० सुसज्ज; तैयार; सुसज्जित (कपडां के हथियार इ० थी) (२) पणछ उपर चडावेलुं सज्जन (सत्+जन) वि० सदाचारी; माननीय (२)पुं० सदाचारी माणस सिज्जित वि० (कपडां-घरेणां आदि पहेरीने) तैयार थयेलुं (२) सजा-वेलुं; तैयार करेलुं (३) हथियारबंध (४) आसक्त सज्जीकृ ८ उ० सज्ज करवुं; तैयार करवुं (२) शणगारवुं (३) पणछ चडाववी सज्य वि० पणछवाळुं (२) पणछ चडावेलुं सद न०, सदा स्त्री० तापसनी जटा (२) (सिंहनी) केशवाळी (३)

डुक्करना वाळ (४) वाळनी लट (५) कलगी (६) छटा; प्रभा सत् वि० अस्तित्ववाळुं; हयात (२) साचुं; सर्ह (३)सद्गुणी; पवित्र (४) उच्च (कुळ) (५)उचित;योग्य(६) उत्तमः; श्रेष्ठ (७)माननीयः; आदरणीय (८) डाह्युं;विद्वान (९) सुंदर; मनोहर (१०) स्थिर; दृढ़ (११) पुं० सज्जन (१२) न० अस्तित्वमां होय ते(१३) साचु - खरं - तात्विक एवं ते (१४) परब्रह्म ; परम तत्त्व (१५) मूळ कारण सतत वि० हंमेशां-कायम होय तेवुं;चालु सततन, सततगति पुं० पवन सततदुर्गत वि० हंमेशां दुःखी सततम् अ० हंमेशाः; कायम सततयुक्त वि॰ सतत तन्मय रहेतुं सतस्व न०स्वभाव (२)स्वरूप सती स्त्री० सदाचारिणी-पतिवृता स्त्री (खास करीने पति पाछळ जे सहगमन करे छे ते) (२) दुर्गा; पार्वती सतीर्थ, सतीर्थ्य पुं० गुरुभाई; एक ज गुरुनी शिष्य **सत्करण न**० उत्तरिकया; अग्निदाह सल्कार पुं० आतिथ्य (२) आदर;संमान सत्कुल न० उत्तम कुळ सत्कृ ८ उ० सत्कार करवो सत्कृत वि० सारी रीते करेलुं (२) आतिथ्य-सत्कार करेलुं (३) आदर करेलुं;पूजित(४)स्वागत करेलुं(५) न० आतिथ्य (६) आदर सत्त्रिया स्त्री० सत्कर्म; पुण्य के पवित्र कर्म; सदाचार (२) आतिथ्यसत्कार (३) शणगारवुं ते सत्तम वि० अत्युत्तमः; श्रेष्ठ सत्ता स्त्री ॰ अस्तित्व ; होवापणुं ; हयाती (२)सारापणुं ; उत्तभता सत्त्र न० जुओ 'सत्र' सत्त्रा अ० साथे; सहित

सत्त्रिन् पुं० वारंवार यज्ञो करनारो गृहस्थ (२) यज्ञ करावनार ऋत्विज (३) शाळामां साथे भणनारो सत्त्व न० अस्तित्व; हयाती (२)सार; तत्त्व (३) गर्भ (४) प्राण; जीव (५) अंतःकरण (६) माल; मिलकत (७) महाभूत (८) सद्गुण (९) बळ; पराऋम (१०) सत्यता; वास्तविकता (११) डहापण (१२) त्रण गुणोमांनो प्रथम (सत्त्व, रजस, तमस्) (१३) विशेषता; खासियत; सहज स्वभाव (१४) लिंग शरीर (१५) पुं०, न० प्राणी (१६) पिशाचः; भूत सत्त्वयोग पुं० जीव मूकवो--जोडवो ते सरवलक्षण न० सगर्भा होवानुं चिह्न सत्त्ववत् वि० जीवतुं; चेतन (२)सार के तत्त्ववाळुं (३)सत्त्वगुणी; सदाचारी (४) पराक्रमी ; बहादुर (५) पुं० देह सत्त्ववती स्त्री० सगर्भा **सत्त्ववि**प्लव पुं० वेहोशी सत्त्वसंश्रुद्धि स्त्री० अंतःकरणनी शुद्धि सत्त्वात्मन् पु॰ जीव; लिगदेह **सत्त्वानुरूप** वि० पोताना सहज स्वभाव के प्रकृतिने अनुरूप (२)पोतानां साधन के संपत्ति अनुसारनुं सत्पात्र न० योग्य के सद्गुणी माणस सत्पुत्र वि० जेने पुत्र छे तेवुं (२) पुं० सदाचारी पुत्र (३) श्राद्धितया करनारो पुत्र सत्प्रतिपक्ष पुं ० हेरवाभासनो एक प्रकार; बीजो समान हेतु विरुद्ध पक्षमां होय तेवो हेतु (न्याय०) सत्फलद पुं० बीलीनुं झाड सत्य वि०साचुं; वास्तविक; सर्र(२) वफादार; प्रमाणिक (३) पूर्ण – सिद्ध थयेलुं (४) सद्गुणी; सदाचारी(५) अमोध (६) पुं ० पृथ्वीनी उपर आवेला सात लोकमांनो प्रथम (७) न० खरा-

पणुं; तथ्य; साची वात (८) सद्गुण; पवित्रता (९) वचन; प्रतिज्ञा (१०) चार युगोमांनो प्रथम; कृतयुग (११) परमतत्त्व; परमात्मा सत्यवादी सत्यवन वि० सत्यरूपी धनवाळुं;पूरेपूरुं सत्यपूत वि० सत्यथी पवित्र करेलुं; साच् सत्यभामा स्त्री० सत्राजितनी पुत्री अने श्रीकृष्णनी पत्नी सत्यम् अ० साचे ज; खरे ज सत्ययुग न० कृतयुग;चार युगमांनो प्रथम सत्यवती स्त्री० मत्स्यगंधा;व्यासनी माता **सत्यवद्य** वि० सत्यवादी सत्यसंगर, सत्यसंघ वि० सत्यवादी; सत्य प्रतिज्ञावाळूं **सत्यंकार** पुं० बानुं;करार पेटे अगाउ-थी जेरकम अपाय छेते सत्या स्त्री० सत्यभामा (श्रीकृष्णनी पत्नी)(२) सत्यवती (व्यासनी माता) **सत्यानृत** वि० साचुं अने जुठुं(२) देखीती रीते साचुं पण खरेखर खोटूं (३) न० वेपार; वाणिज्य सत्याभिसंध वि० प्रतिज्ञा पाळनारुं **सत्याश्रम** पुं० संन्यास सत्र न० यज्ञ चाले तेटलो गाळो (१३थी १०० दिवसनो) (२)यज्ञ (३)आहुति (४) वन; जंगल (५) वेश; सोंग **सत्रप** वि० शरमाळ; लज्जाळु सत्रम् अ०साथे; सहित सत्राजित् पुं० सत्यभामाना पिता **सत्वर** वि० झडपवाळुं; वेगीलुं सत्वरम् अ० उतावळे; झट; त्वराधी सत्समागम पुं सारा माणसनी सोबत सत्संग पुं०, सत्संगति स्त्री०, सत्संनिषान न० सज्जननी सोबत सब् १प० [सीदति] बेसवुं (२) आडा पडवुं; विश्रांति करवी (३) डूबवुं; ड्बी जवुं (४) रहेवुं; वसवुं (५) खिन्न-हतास धवु (६) क्षीण धवुं;

नाश पामवुं (७) आफतमां होवुं (८) विघ्न आववुं (९) थाकीने भागी पडवुं –प्रेरक० [सादयति] बेसाडवुं (१०) नाखवुं; मूकवुं (११) थकववुं (१२) नाश करवो; बरबाद करवुं **सदधन्** वि॰ दहीं मेळवेलुं सदन न० घर; भवन (२) नाश पामवुं ते;क्षीण थवुं ते (३)थाकीने के हताश थईने भागी पडवुं ते सदय वि० दयाळु हळवेथी सदयम् अ० दयापूर्वक (२) धीमेथी; सदर्थ पुं० प्रस्तुत वात के मुद्दो सदस् न० घर; रहेठाण (२) सभा (২) आकाश (४) ন০ (দ্ভি০ ব০) स्वर्ग अने पृथ्वी सदसत् वि० सत् अने असत्; अस्ति-त्वमां होय तेवुं अने अस्तित्वमां न होय तेवुं (२) साचुं अने खोटुं (३) समजवो ते सारुं अने खराब सदसद्विवेक पुं० सारासारनो भेद सदसद्व्यक्तिहेतु पु० सारा अने खराबनो भेद समजवानु कारण सदसस्पति पुं असभाष्यक्ष सदस्य पुं० सभामां बेठेली माणस; सभासद (२) मददनीय के निरीक्षक ऋत्विज (यज्ञमां) सदा अ० हमेशां सदागति पुं० पवन सदाचार पुं० सद्वर्तेन(२)सारा माणसो वडे आचरातो के परंपरागत आचार सदादान वि० हंमेश दान आपनारुं(२) हंमेश (दानवारि) मद झरतुं (३) पुं० इंद्रनो हाथी; ऐरावत (४) मद झरतो हायी (५) गणेश सदाशिव पुं० शंकर सदृक्ष, सदृश् (--श्च) वि० सरखुं; समान (२) उचितः, अनुकूळः; लायकः सदेश वि० देशवाळु(२)एक ज स्थान के देशनुं (३) पड़ोशनुं

सबोगत वि० सभामां बेठेलुं सदोगृह न० सभागृह सदोत्यायिन् वि० हमेश उद्यमी रहेतुं सद्गति स्त्री० मुखी स्थिति (२) सत्पुरुषोनी गति सारो गुण **सद्गुण** वि० सारा गुणवाळुं; सद्गुणी(२) **सद्धमं** पुं॰ साची न्याय सद्भाव पु० थवापणुं; होवापणुं; अस्तित्व (२) मळतावडापणुं (३) सारो भाव (४) प्राप्ति सम्प्रन् न० घर; रहेठाण सद्यस् अ० आजे ज (२) तरत ज (३) जलदीथी (४) ताजेतरनुं (करातुं सद्यस्कार वि० ते ज दिवसे करवानुं के सद्यस्कालिन वि० ताजेतरनुं सद्यःपातिन् वि० क्षणभंगुर **सद्यःप्राणकर**ंवि० तरतंबळ आपनारं सद्यः प्राणहर वि० तरत ज प्राण हरना हं सद्रत्न न० हीरो सद्वचस् न० प्रिय – अनुकूळ वाणी सदृसथ पुं० गाम; गामडुं सद्वस्तु न० सारी चोज-वस्तु (२)नाटक के कथानो सारो विषय ('फॉट'); सारी वस्तुग्रथणी सद्वादिता स्त्री० हितकर सलाह **सद्वृत्त** वि० सदाचारी; सद्गुणी (२) पूरेपूर्र गोळ (वर्तुळ आकारन्)(३) न० सद्वर्तन (४) मळतावडो स्वभाव **सधर्मन्** वि० सरला गुणधर्मवाळुं (२) सरलां कर्तव्यवाळुं (३) एक ज पंथ के संप्रदायनुं (४) समान; सदृश **सधीची** स्त्री० साथी स्त्री (२) पत्नी सध्यंच् वि० साथे जनारुं; संगाथी (२) पूं० साथी (पति) सनत् अ० हमेशां **सना, सनात्** अ० हमेशां सनातन वि० कायमी; शाश्वत (२) स्थिर; दृढ(३)पुरातन; पुराणुं (४) पुं० एक प्राचीन ऋषि

सनाथ वि० रक्षक, मालिक के स्वामी-बाळुं (२) सहित; युक्त (३) भरपूर; पूर्ण ; भीडवाळुं (जेम के, सभा) **सनाथीकु** प० स्वामी – मालिकवाळुं करवुं (२) रक्षण अग्पवुं सनाभि वि० एक योनिनुं(२)संबंधी; ज्ञातिनुं (२) समानः; सदृशः (३) पुं० सगो भाई(४) (सात पेढी सुधीनो) सगो सनामक, सनामनु वि० एकसरखा नामवाळुं;एक ज नामवाळुं सनिकार वि० अपमान युक्त **सर्निविशेष** वि० उपेक्षा युक्त; भेदभाव विनानुं; परवा विनानुं सनिर्वेदम् अ० हताशपणे; खिन्नताथी सनित वि० आपेलुं (२) मेळवेलुं सनीड(–ल) वि० एक ज माळामां (साथे) रहेतुं (२) नजीक-पासे होय तेवुं सन्न('सद्' नुं भू० कृ०) वि० बेठेलुं; आडु पडेलु (२) खिन्न;हताश (३)क्षीण (४) नीचुं नमी गयेलुं (५) नजीकनुं (६) धीम ; ऊंडु (अवाज) **सन्मान** (सत्+मान) पुं० सज्जनोनुं मान के आदर सन्मित्र न० सारो मित्र **सपक्ष** वि० संबंधी (२) पक्षवाळुं (३) एक ज पक्षनुं(४)समान; सदृश(५) पुं० अनुयायी (६) सगु; संबंधी सपत्न वि० विरोधी; वेरी (२) पुं० दुश्मन; हरीफ सपत्नी स्त्री० शोक; पतिनी बीजी पत्नी सपत्नीक वि॰ पत्नी साथे होय तेत् सपत्राकृ ८ उ० अत्यंत घायल करवुं (आखुं बाण पीछां साथे अंदर ऐसे तेटलुं) सपत्राकृत वि० (आखुं वाण पीछां साथे अंदर घूसे ते रीते) सखत घायल करेलुं सपदि अ०क्षण वारमां (२) जलदीथी सपरिहारम् अ० संकोच साथे **सपर्या** स्त्री० पूजा (२) सेवा

सपाद वि० पगवाळु(२)चोथो भाग (पाद) वधु होय तेवुं; सवायुं सपिड पु० (पिडदान जेने मळे ए संबंध-वाळो – सात पेढी सुधीनो) सगो सप्तच्छद पुं० एक वृक्ष **सप्तजिह्व, सप्तज्वाल** पुं० अग्नि (काली कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुभ्रूम्न-वर्णा, उग्रा अने प्रदीप्ता –ए सात ज्वाळाओवाळो) सप्ततंत्र पुं० यज्ञ सप्तति स्त्री० सित्तेर **सप्तदीधिति** पु० अग्नि सप्तद्वीपा स्त्री० पृथ्वी (जंबू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, कौंच, शाक, पूष्कर ए सात द्वीपोवाळी) **सप्तन्** वि० सात (हंमेशां **ब०व०**) **सप्तनाडोचक** न० वरसाद जाणवा माटे दोरातुं एक चक **सप्तपत्र पुं**० एक वृक्ष **सप्तपदी** स्त्री० लग्न वखते वरकन्याने पवित्र अग्निनी आसपास सात पगलां भरवानी विधि सप्तपर्ण पृं० एक वृक्ष सप्तपर्णी स्त्रीट रिसामणीनो छोड **सप्तपाताल** न० अतल, वितल, सुतल, महातल, रसातल, तलातल अने पाताल -ए सातेनो समृह सप्तप्रकृति स्त्री० (ब० व०) राजा, प्रधान, मित्र, कोश, राष्ट्र. दुर्ग अने सॅन्य –ए राज्यनां सात घटको सप्तमातृ स्त्री० ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, बैष्णवी, बाराही, इंद्राणी अने चामुंडा – आ सात माताओनो समूह **सप्तरुचि पुं०** अग्नि; जुओ 'सप्तजिह्न' सप्तिषि पुं० (ब० व०) मरीचि, अत्रि, अंगिरस्, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु अने

वसिष्ठ – आ सात ऋषिओ (२)

ध्रुवतारानी पासेना आ नामना सात ताराओ

सप्तलोकाः पुं०ब०व०भूर्,भुवर्,स्वर् महर्, जनस्, तपस् अने सत्य के ब्रह्म-ए सात लोक

सप्तविध वि० सात प्रकारनुं सप्तशती स्त्री० सातसो श्लोकनो संग्रह सूर्य (सात घोडाना सप्तसप्ति पुं० रथवाळो)

सप्तसमुद्राः पुं० व० व० क्षार, क्षीर, दिध, घृत, इक्षुरस, मद्य अने स्वादूदक (भीठुं पाणी) ए सात सागर (सात द्वीपनी आसपास आवेला)

सप्ताश्व पुं० सूर्ये सप्ताश्ववाहन पुं० सूर्य सप्ताह पुं० (सात दिवस)अठवाडियुं सप्तांग वि० सात अंगवाळुं राज्य (जुओ 'सप्तप्रकृति')

सप्ति पुं० धूंसरी (२) घोडो सप्रतीक्षम् अ० प्रतीक्षापूर्वक सप्रतीक्ष वि० आदरयुक्त सप्रत्यय वि० विश्वास युक्त (२) सातरी-सप्रत्याश्चम् अ० आशा साथे सप्रभ वि० सदृश; समान देखावनुं सप्रमाद वि० बेदरकार; लक्ष विनानुं सप्रश्रयम् अ० खूब विनयपूर्वक सप्रसव वि० सहोदर एवं (२) गर्भयुक्त सफल वि० फल-परिणाम युक्त; सफळ (२) जेनो हेतु पार पडियो छे तेवुं; सिद्ध; सार्थक (३) खसीन करेलुं सफलोदफं वि॰ सफळ नीवडवानी

खातरीवाळुं सबल वि० सेनायुक्त सर्बंघु वि० निकट संबंधवाळुं (२) एक ज कुटुंबन् (३) सगांसंबंधीवाळुं (४) मित्रवाळुं (५) पुं० सगो; स्वजन

सबीजयोग पुं० एक समाधि; संप्रज्ञात समाधि (योग०)

समहाचारिन् पुं० सहाध्यायी; एक ज गुरुनो शिष्य (२) साथे ज दुःख सहन करनारो ते (३) एक ज जातनो ते

सभा स्त्री० मेळावडो; परिषद (२) समाज; मंडळी (३) सभागृह (४) अदालत(५)धर्मशाळा (६)जुगारस्नानुं (७) वीशी; भोजनगृह

सभाकार पुं० सभागृह बांधनारो सभाज् १० उ० आदर करवो; अभि-नंदन आपवुं; (२) मान-पूजा-सत्कार करवां (३) प्रसन्न करवुं; खुश करवुं

(४) शणगारवुं; शोभाववुं सभाजन न० सत्कार; अभिनंदन(२) विनय; आदर (३) सेवा सभाजित वि० सत्कार करायेलुं; प्रसन्न करायेलुं (२)विख्यात; प्रशंसा करेलुं सभातल न० सभानी बेठक सभासद् पुं० सभानो सभ्यः 'मेम्बर' (२) सभा बखतनो मददनीश सभिक, सभीक पुं० जुगारनो अड्डो

सभ्य वि० सभा संबंधी (२)सभाने योग्य (३)विनयी ; संस्कारी (४) विश्वासु; वफादार (५) पुं० सभानो मददनीश् (६) कुळवान (७) जुगारनो अड्डो चलावनारो (८) तेनो नोकर

चलावनारो

सम् अ० धातुओं के धातुसाधित शब्दो साथे: सहित, साथे, खूब, अति, परि-पूर्णता के सुंदरतानो अर्थ दशिव (२) नामो साथे: समान, सरखुं, नजीक, सामे -एवा अर्थ बतावे

सम वि॰ समान; सरखं (२) सरखी सपाटीवाळुं; खाडा टेकरा विनानुं (३) बेकी (संख्या) (४) पक्षपात विनानं (५) न्यायी; प्रमाणिक (६) सीघुं; सरळ(७)अनुक्ळ; सरळ(८) तमाम; कुल (९) न० सपाट प्रदेश 🗕 भूमि (१०) सारा – अनुकूळ संजोगो

समक्ष वि॰ प्रत्यक्ष; नजर सामेनुं समक्षम् अ० --नी नजर सामे; --नी हाजरीमां समगति पुं० पवन समग्र वि० बधुं; आखुं; पूरेपूरुं (२) जेनी पासे बधुंज छे तेवुं; कशी ऊणप विनानुं समचतुरस्र वि० चोरस समज पुं० पशुपंखीनो समुदाय के टोळुं समता स्त्री० एकाग्रता; अभेद (२) सरखापणुं; समानता (३) निष्पक्षता **समतिकम् १** उ० ओळंगी जवुं;उल्लं-घन करवुं (२) चडियाता थवुं (३) व्यतीत करवं(समय) समतो [सम्+अति+इ]२ प० पार करी जवुं (२) चडियाता थवुं (३) बाजुए राखवुं ; त्यागवुं (४) पसार करवुं समतीत वि० पसार थयेलुं; व्यतीत थयेलुं (समय) समस्य न० जुओ 'समता' **समद** वि० उन्मत्त; झनून के आवेशवाळुं (२) मद झरवाने कारणे मत्त बनेलुं समदर्शन, समद्शिन् वि० समान नजर राखनारुं; निष्पक्ष समदुःख वि० बीजाना दुःखे दुःखी थनारुं; दु:खमां भागी बननारुं समदुःखसुख वि० सुख अने दुःखमां समानपणे भागीदार बननारुं समधिक वि॰ अत्यंत; पुष्कळ (२) सामान्य करता वधी जतु;असाधारण समधिगम् १ प० [समधिगच्छति]पासे जवुं (२) अम्यास करवो (३) प्राप्त करवुं (४) चडियाता थवुं; वधी जवुं समध्य वि० साथे मुसाफरी करतुं समनीक त० युद्ध **समनुज्ञा ९ उ०** मंजूर राखवुं; कबूल राखवुं(२)जवा देवुं; विदाय करेवुं (३)क्षमाकरवी [गुस्से थयेलु समन्यू वि० दिलगीर; गमगीन (२)

समरेख समन्वय पुं० अनुक्रम (२) अरसपरस संबंध (३) तात्पर्य समन्वि २ ५० अनुसरवुं; पाछळ के साथे जवुं (२) परिणाम तरीके पाछळ आववुं; परिणाम कल्पवुं **समन्वित** वि०युक्त(२)पाछळ आवतुं; कममां पाछळ जोडायेलुं होतुं समभिधा ३ प० संबोधवुं; कहेवुं(२) जाहेर करव् समभिहार पुं० पुनरावर्तन (२) एक साथे - भेगुं छेवुं ते (३) वधारो; आधिक्य समम् अ० साथे; सोबतमां(२)सरखी रीते (३) समान भावे (४) एक साथे (५) तमाम (६) प्रमाणिकपणे समय पुं वखत; काळ (२) प्रसंग; तक (३) उचित समय; योग्य काळ (४)करार; संकेत(५)रूढि;चालतो आवेलो आचार(६)शरत(७)नियम; कायदो (८) प्रतिज्ञा (९) निशानी; इशारो (१०) आज्ञा; सूचना (११) सोगंद; कसम (१२) मर्यादा; हद; सीमा (१३) सिद्धांत (१४) अंत; निर्णेय (१५) सफळता; आबादी; उन्नति; समृद्धि (१६) मुक्केलीओनो अंत (१७) भाषण **समयक्रिया** स्त्री० करार करवो ते समयच्युति स्त्री० उचित समय चूकवो ते समयपरिरक्षण न० संधि के करारन् पालन करवुं ते **समयविद्या** स्त्री० ज्योतिषशास्त्र समया अ० योग्य समये (२) नियत समये (३) -नी वच्चे; दरम्यान (४) नजीक; पासे | आचार समयाचार पुं० रूढि; चालतो आवेली समर पुं०, न० युद्ध; लडाई समरभूमि स्त्री० रणभूमि; समरांगण समरिशरस् न० लडाईनो मोखरो समरेख वि० सीघ्

समरोहेश पुं० रणभूमि; समरांगण समर्चन न० पूजन समर्थ् १० उ० मानवुं; विचारवुं(२) समर्थन करवुं; साबित करवुं समर्थं वि॰ बळवान; शक्तिशाळी (२) अधिकारी; लायकातवाळुं (३) योग्य; उचित (४) अर्थनी बादतमा संबंधवाळुं (५)अर्थयुक्त (६)महत्त्ववाळुं समर्थन न०, समर्थना स्त्री० पुरदार करवुं ते (२) टेको आपवो ते (३) ताकात; शक्ति (४) मतभेदनुं समा-्धान (५) थयेला. अपराध माटे वळतर आपवुं ते (६) विरोध **सम्या**त विवयुरवार करेलुं(२)विचा-रेलुं; मानेलुं(३)नक्की करेलुं **समर्पण** न० अर्पणकरवुंते **समर्पित** वि० अर्पण करेलुं समर्यादम् अ० चोकसपणे; निश्चितपणे समवतार पुं० नीचे उतरवुं ते (२) नदी के तीर्थमां ऊतरवानो घाट समर्वातन् वि० निष्पक्षः; सौ साथे समान-पणे वर्तनारुं(२)पुं० यमराजा समबस्था १ आ० [समवतिष्ठते | स्थिर के अचळ रहेवुं(२)तैयार ऊभा रहेवुं -प्रेरक० दृढ के स्थिर करवुं (२) अटकाववु समबस्था स्त्री० स्थिर अवस्था (२) समान दशा(३)स्थिति; अवस्था समबहार पुं० मिश्रण (२) संग्रह **समवाय** पुं• समुदाय ; संग्रह (२) ह्रगलो ; जय्थो (३) एवो नित्य संबंध के जेमां एक संबंधीनो नाश थतां बीजो संबंधी नाश पामे(जेम के, दूध अने तेना सफेद रंगनो) (४) आकाशी ग्रह-नक्षत्रनु एकठा थवुं ते – पासे आववुं ते समवायिन् वि० नित्य निकट संबंधथी जोडायेलुं (२)एकत्र – जूथमां होय तेवुं समवे (सम् + अव + इ)२ प० मेगा यबुं;

एकठा थवं (२) समवाय संबंधथी जोडायेला होवुं समवेक्षण न० निरीक्षण; तपास **समवे**त वि० एकठुं थयेऌुं; भेगुं थयेऌुं (२) समवाय संबंधधी जोडायेलुं समश् ५ उ० पूर्णपणे व्यापवं(२)पामवं; पहोंचवुं(३)९ प० खाबुं; भोगववुं समब्दि स्त्री० समग्रता, समान घटको मळीने बनतो एक समुदाय ('ब्यष्टि' थी ऊलटुं) समन् ४ उ० जोडवुं; साथे लाववुं (२) जोडीने समास करवो **समस्त**िवञ्जोडेलुं; साथे आणेलुं(२) जोडीने समास करेलुं (३) समग्र समस्या स्त्री० कोयडो; उखाणुं (२) अधूरं होय तेने पूरं करवं ते समंजस वि० योग्य; उचित (२) साचुं; खर्छ (३) स्पष्ट; समजाय तेवुं (४) सद्गुणी; न्यायी(५)अनुभवी; अभ्यासी (६) नीरोगी (७) न० योग्यता; उचितता (८) खरापणुं (९) समानता समेत वि० दरेक बाजुहोतु; सार्वत्रिक (२)पूर्वः; आखुं(३)पुं० हदः; सीमा समंततः अ० बधी बाजुएथी, चौतरफथी समंतपंचक न० कुरुक्षेत्रनो प्रदेश के तेनी नजीकनुं स्थळ समतभद्र पु॰ बुद्ध **समंतात् अ०** जुओ 'समंततः' समा स्त्री० (ब०व०; पाणिनी ए०व० मां पण वापरे छे} वर्ष समा अ० साथे; सहित समाकरण न० बोलाववुंते समाकर्ष् १० प० --ने सांभळवुं समाकुल वि० भीडवाळुं; भरपूर(२) क्षुव्धः गूंचबायेलुः, अटवायेलुं समाकृष् १ प० खेंची काढवुं (२)आक-र्षेयु (३) निदवुं समाकम् १ उ०[समाकामतिः समाकमते]

कबजो लेवो (२)भरी काढवुं; व्यापवुं (३) हुमलो करवो ; ताबे करवुं (४) उपर पग मूकवो – चालवुं;वारवार जवुं आवबुं समाकांत वि० उपर पग मुकायो होय के चालवामां आव्युं होय तेवुं (२) हुमलो करायेलुं (३) पाळेलुं (वचन) समास्या २ प० गणवुं; गणतरी करवी (२) कहेवुं; वर्णववुं(३)जाहेर करवुं समागत वि० भेगुं मळेलूं (२) युक्त; सहित (३) आवी पहोंचेलुं (४) पासे पहोंचेलुं (५) न० समागम; मेळाप समागति स्त्री० आगमन (२) संयोग; संगम (३) सहवास समागम् १ प०[समागच्छति] भेगा मळवुं (२)सोबत करवी (३)संभोग करवो **समागम** पुं० मिलन; मेलाप; एकठा मळवं ते (२) सोबत **समाचर् १** प० आचरवुं; वर्तवुं (२) खसेडवुं; दूर करवुं समाचार पुं० वर्तणूक; वर्तन(२)सद्-वर्तन; सारी चालचलगत (३) खबर समाचेष्टिस न० वर्तणूकः; वर्तनः; रीत समाज पुं॰ मंडळी; मेळो; समुदाय (२) उजाणी के उत्सव माटेनी मंडळी (३) मेळाप; मळवं ते समाजिक पुं० कोई मंडळीनो सम्य (२) समाजा ९ उ० बराबर जाणवुं के समजवुं (२) ओळखवुं –प्रेरक० आज्ञा करवी समाज्ञा स्त्री० कीति (२) नाम (केटलाक उपासना एवो अर्थ आपे छे) समादा ३ उ० लेवुं; स्वीकारवुं (२) पकडवुं (३) बक्षिस करवुं (४) पार्छु वाळवुं (५) समजवुं (६) भेगुं करवुं समाविश ६ प० बताववुं; दर्शाववुं(२) जणाववुं ; कहेवुं (३)जाहेर करवुं (४) भविष्य भाखवु (५)आज्ञा करवी (६) निमणूक करवी; सोंपवुं

समादिष्ट वि० दर्शावायेलुं; फरमावेलुं समादेश पुं० आज्ञा; हुकम, सूचना समाधा ३ उ० एकठुं मूक्बुं; साथे मूक्बुं (२) –उपर मूकवुं(३)गादीए बेसा-डवुं (४) शांत करवुं ; स्वस्थ करवुं (५) एकाग्र करवुं (६) समाधान क**रवुं** (शंकानुं) (७) दुरस्त करवुं(८)विचारवुं समाधान न० साथे मूकवु के जोडवुं ते (२) – मां स्थिर के एकाग्र करवुं ते (३)स्थिरता; स्वस्थता;शांति(४) शंका दूर करवी ते **समाधि** पुं० स्थिर के एकाग्र करवुं ते(२) ऊंडुं घ्यान (ध्यान-ध्येय-ध्यातानुं **भेद-**ज्ञान न रहे तेवुं)(३) ए**काग्रता**; लवलीनता (४) घ्यान-समाधि युक्त तपस्या (५) संबंध;जोडाण (६) गळानो सांधो के गळानी अमुक स्थिति समाधित वि० समाधान पामेलुं; शांत थयेलुं; मनायेलुं समाधिन् वि० जुओ 'समाधिमत् ' समाधिभृत् वि० ध्यानमां लवलीन एवं समाधिमत् वि० समाधियुक्त (२) पवित्र; धार्मिक समाधूत वि० वीखरायेलुं समान वि०सरखुं; सदृश; तादृश(२) पुं० पांच प्राणोमांनो एक (अन्त पचव-नार नाभिस्थ वायु) समानधर्मन् वि० सरखा गुण धरावना हं (२) सहानुभूतिवाळुं; कदरदान समानप्रतिपत्ति वि० समान बुद्धि के डहापणवाळु समानम् अ० एक सरखुं होय तेम समानशील वि० सरखा स्वभावनुः सरखी प्रकृतिकाळ् समानी १ प० भेगुं करवुं; जोडवुं(२) लाववुं (३) एकत्र करवुं समाप् ५ प० मेळववुं; सिद्ध करवुं(२) समाप्त करवु; पूरुं करवुं –प्रेरक० पूरुं करदुं – मारी नाखयुं

समापक वि० पूर्ण - सिद्ध करनारं समापत्ति स्त्री० मळवूं-भेगा धवुं ते (२)अकस्मात (३)समाप्ति समापद् ४ आ० मेळवर्वु; पामवुं(२) बनवुं; थवुं(३)पूरुं थवुं समापन न० समाप्त करवुं ते; अंत लाववो ते (२) प्राप्त करवुं ते (३) नाश करवो ते (४) ऊंडुं ध्यान समापना स्त्री० पराकाष्ठा; पूर्णता समापस ('समापद्' नु० भू० ऋ०) वि॰ पामेलु; मेळवेलु (२) बनेलु; थयेलुं (३)आवी पहोंचेलुं(४)पीडित समापादन न० संपूर्ण सिद्ध करवुं ते समापित वि० समाप्त - पूरुं करेलुं समाप्त वि० पूर्व थयेलुं; अंत आव्यो होय तेवुं (२) पूर्णं ; भरपूर समाप्ति स्त्री० अंत (२)पूर्णता; सिद्धि (३) विकास; परिपूर्णता समाप्लव, समाप्लाव पुं० स्नान समाभाषण न० वातचीत; संभाषण समाम्ता १ प० [समामनति] पाठ करवो;बोली जवु(२)विधान करवुं (३) परंपरा स्थापित करवी समाम्नाय पुं० परंपरायी चात्युं आववुं ते(२)परंपराथी चाल्यो आवेलो संग्रह (शब्दोनो) (३)परंपरा (४)वेद वगेरे धर्मग्रंथ (५) कुल संग्रह समायस्त वि॰ पीडित; दुःखित समायुक्त वि० संकळायेलुं; जोडायेलुं (२) -मां लागेलुं; मंडेलुं (३) सज्ज करेलुं; तैयार करेलुं (४) जोगवेलुं; पूरुं पाडचुं होय तेवुं समायोग पुं० जोडाण; योजवुं ते (२) तैयारी (३) संचय; समूह (४) हेतु समारभ् १ आ० आरंभवुं; माथे लेवुं (२)प्रसन्न करवुं; मेळवी लेवुं समारंभ पुं॰ प्रारंभ(२)माथे लीधेलुं कोई पण कार्य के प्रवृत्ति

समाराधन न० मनोरंजन के प्रसन्न साधन (२) तहेनात; करवान् सेवामां रहेवुं ते (३) प्रसन्नता समारुह् १ प० उपर चडवुं(२)सवारी करवी (३) मंडवुं; लागवुं –प्रेरक० उपर चडाववुं (२) पणछ चडावबी समारूढ वि० सवारी करी होय तेवुं (२) उपर चडेलुं के पडेलुं (३) कबूल कर्युं होय तेबुं (४) वृद्धिगत (५) रुझायेलुं समारोपण न० - उपर के - मां मुकवुं ते (२) आपी देवुंते (३) पणछ चडाववी ते समारोपित वि० चडावेलुं (२) पणछ चडावी होय तेवुं(३)मूकेलुं(४)आपी के सोपी दीघेलुं समारोहण न० उपर चडवुं ते समार्षं वि० एक अप्रवर(गोत्र)नुं समालभ् १ आ० ग्रहण करवुं; पकडवुं (२) लेप करवो; खरडवुं **समालभन** न० लेप; खरड **समालंब् १** आ० पकडवुं (२) —ने अवलंबवुं (३) --ने वगळवुं **समालंभ** पुं०, **समालंभन** न० पकडवुं ते(२)बल्दान माटे पकडवुंते(३) (शरीर-संस्कार माटे) लेप करवां ते समालाप पुं० संभाषण; वातचीत **समावस् १** प० रहेवुं; वसवुं(२)पडाव नाखवो; रोकावुं **समावाय** पुं० संयोग (२) निकट संबंध; समवाय (३) समुदाय; समूह **समावास** पुं० मुकाम; रहेठाण; पडाव समावासित वि० पडाव नाखेल समाविद्ध वि० हलावेलुं; बींझेलुं समाविश् ६ प० प्रवेशवुं (२)पासे जवुं; पहोंचवुं (३) व्यापवुं (४) तत्परताथी

सेववुं; बळगवुं (५) बेसवुं; स्थिर थवुं

समाविष्ट वि० पूरेपूरुं पेठेलुं; ब्यापेलुं (२) पकडायेळु; ग्रस्त (३) भूतप्रेतना वळगाडवाळु (४) —थी पूर्ण समाव् ६ उ० बधी बाजुथी ढांकर्वु (२) घेरबुं; बीटबुं (३) संताडबुं (४)बंध करवुं(६)रोकवुं;अवरोघवुं समावृत् १ आ० पासे जवुं (२) पाछा फरवुं (ब्रह्मचारीए अभ्यास बाद) भेगा मळवुं(३)सफळ थवुं(४) अंत आववो; पूरुं थवुं **समावृत** वि० घेरायेलुं;वींटायेलुं;ढंकायेलुं (२) छुपावेलुं (३)रक्षित(४)रोकेलु (५) बंध करेलुं समावृत्त वि० पूरुं थयेलुं के करेलुं(२) पाछुं फरेलुं (३) एकटुं थयेलुं समावेश पुं० प्रवेश (२) अंतर्भाव (३) भूतपिशाचनो वळगाड (४) आवेश; जुस्सो; मनोविकार समाश्रय पु॰ आश्रय; आधार; रक्षण (२) आश्रयस्थान; रहेठाण समाश्रि १ उ० आकरा माटे जवुं-दोडवुं (२) अनुभववुं; भोगववुं (३) आचरवुं;पालन करवुं(४)-नो आधार लेवो (५) विश्वास मूकवो (६) पामवुं समाश्रित वि० एकठुं-भेगुं थयेलुं(२) आशरो-अवलंबन हेतुं (३)-ने लगतुं समाइलेष पुं० गाढ आलिगन समादवस् २ प० आश्वासन पामवुं; स्वस्थ थवुं (२) -मां मानवुं **समाश्वस्त** वि० आश्वासन पामेलुं(२) ⊸मां विश्वास मूकतुं **समात्र्वास** पु**० छूटका रानी श्वास लेवो** ते (२) आश्वासन ; सांत्वन (३) विश्वास समाञ्वासन न० आश्वासन आपव्ं ते (२) सांत्वना समास पुं एकीकरण; संयोग(२) बे के वधारे शब्दोना संयोगयी थयेलो शब्द (ब्या०) (३) समुदाय (४) कुल -समग्र एवं ते (५) संक्षेप; सारांश

समासक्त वि० जोडायेलुं; संकळायेलुं (२) आसक्त; लागेलुं (३) अटका-वायेलुं (जेम के झेरने, व्यापतां) समासतः अ० टूंकमाः; संक्षेपमाः समासद् १० उ० मेळववुं; प्राप्त करवुं (२) एकडी पाडवुं (३) हल्लो करवा समासन न० साथे बेसवुं ते समासन्न वि० नजीकन्; पासेन् समासंज् १ प० [समासजित] जोडबुं; वळगाडवुं समासेन अ० टूंकमां; संक्षेपथी समास्या स्त्री० मुळाकात (२) साथे बेसव ते (३) बेठक समाहर वि० संहार करनार् समाहर्तु पु० कर वसूल करनारो समाहार पुं • जथ्थो; समुदाय (२)संक्षेप; टुंकाण (३) एक समास (व्या०) समाहित वि० भेगुं करेलु (२) समाधान करेलु;शांत पाडेलु (३) एकाग्र;समाधि-युक्त (४) कबूलेलुं (५)गोठवेलुं(६) पूरुं करेलुं (७) मूकेलुं; सोंपेलुं (८) समगीतोष्ण (९) मोकलेलुं समाह १ प० लाववुं; लई आववुं(२) भेगुं करवुं (३)आकर्षेबुं; खेंचवुं (४) संहार करवो (५) पूरुं करवुं समाहृत वि० भेगु करेलुं; एकठुं करेलुं (२) पुष्कळ; अतिशय (३) लीघेलुं; स्वीकारेलुं (४)टूंकावेलुं; संक्षिप्त (५) खेंचेलुं (पणछ) समाहृत्य अ० एकी साथे; कुल सरवाळे समाह्वय पुं० आह्वान; पडकार (२) युद्ध (३) साठमारी (ऋडा के जुगार माटे) (४) **ना**म समाह्वा स्त्री० नाम समाह्वान न० आह्वान; पडकार(२) बोलावीने भेग करवे ते समाह्वे १प० आमंत्रवुं; बोलाववुं(२) पडकार करवो (युद्धमा) (३)कहेर्युः

नामधी ओळखवुं (४) १ आ० आह्वान करवुं; गडकार देवो; युद्ध माटे उक्के रव् समाधिक वि० चारे पगं समानपणे ऊभु रहेतुं (जेम के सिंह) समि २ प० भेगा मळवुं (२) जबुं; पहों-चर्बु; पामवुं(३)सामा थर्बु; अथडा-मणमां आवव् समित् स्त्री० युद्ध, लडाई समित वि० भेगुं मळेलुं (२) एकठुं थयेलुं (३) जोडायेलुं समिति स्त्री० मिलन; संयोग (२) सभा (3)युद्ध(8)टोळुं; समूह(9)सदा-चारनो नियम (जैन) समितिजय वि० युद्धमां विजयी एवुं सिमद्भ वि० सळगेलुं; प्रज्वलित करायेलुं (२) उक्केरायेलुं (३) पूर्ण; पूर्ह समिद्धत् वि० खूब इंधनवाळुं (अग्नि) समिष् स्त्री० इंधन; बळतण; काष्ठ (स्नास करीने यज्ञ माटे) समिष् ७ आ० सळगाववुं; प्रज्वलित करवुं(२)उश्केरवुं;वधारवुं (क्रोध इ०) समिधन न० सळगाववुं ते (२) बळतण (३) उश्केरबानुं साधन समोक न० युद्ध समीकृ ८ उ० समान – सरखुकरव् समीक् १ आ० जोवुं (२) लेखामां – गणनामां लेवं (३) बारीकाईथी तपासवुं (४) शोधवुं; तपासवुं समोक्षा स्त्री० शोध; बारीक तपास (२) समजण; बुद्धि (३) जोवानी इच्छा (४) आत्मविद्या (५) मीमांसादर्शन (६) सांख्य सिद्धांत समीक्षत वि० विचारेलुं; तपासेलुं समीक्ष्यकारिन् वि० विचारीने वर्तनार्ध समी चीन वि० योग्य; खरुं; साचुं **समीप** वि० नजीकनुं; पासेनुं (२) न० सामीप्यः; निकटता

समीपतस्, समीपम्, अ० नजीकमां; हाजरीमां; पासे समीयते आ० (समान-सरखुं मानवुं) समीर् --प्रेरक० हलाववुं;खळभळाववुं (२)काढवुं;फेंकवुं (३) उच्चारवुं (४) ऊंचुं करवुं(५)अर्पबुं(६)अने तेम करवुं समीर पुं० पवन; हवा **समीरण** पुं• हवा; पवन (२) श्वास (३) न० फेंकबुंते समीरलक्ष्मन् न० धूळ; रज **समीरित** वि०हलावेलुं(२)फेंकेलुं(३) उच्चारेलुं प्रयत्न करवो समीह् १ आ० इच्छवुं (२) करवा समीहा स्त्री० उत्कंठा; इच्छा समीहित वि० इच्छेलुं (२) उपाडेलुं; माथे लीधेलुं(३)न० इच्छा; उत्कंठा समुक्षण न० छांटवुं ते; सिंचन (२) काढवुं – फेंकवुं ते टवायेलु **समुचित** वि०्योग्य; छाजतुं(२)-ने समुच्चय पुं० ढगलो; जथ्थो; समुदाय **समु**च्चि ५ उ० भेगुं करवुं; ढगलो करवो (२) कमसर गोठवर्षु **समुच्छित्ति** स्त्री० समूळ नाश समुच्छिद् ७ प० जडमूळथी नाश करवी समुच्छेद पुं० समूळ नाश समुच्छ्य पुं० ऊंचाई(२)सामनो; शत्रुता (३)ढगलो;समूह(४)युद्ध(५) पर्वत; टेकरी (६) जन्म (बौद्ध) **समु**च्छिर १ उ० ऊर्चुकरवुं समुच्छ्वसित न०, समुच्छ्वास पुं० ऊंडो निःश्वास; भारे निसासी **समुज्जॄंभ् १** आ० बगासुं खादुं (२) फेलावुं; पथरावुं (३) देखावुं (४) प्रयत्न करवो [(३)–थी छूटेलुं समुज्ज्ञित वि० त्यजेलुं(२) जवा दीघेलुं समुत्क वि० उत्सुक; इंतेजार **समुत्कट** वि० ऊंचुं (२) अति; पुष्कळ समुत्क्रम पुं० ऊंचे चडवुं ते (२) उचित मर्यादाओनुं उल्लंघन

समुत्क्षेप पुं० उमेरवुं–उल्लेखवुं ते(शब्द) समृत्य वि॰ ऊभुं यतुं ; ऊठतुं (२) -माथी उत्पन्न थतुं के थयेलुं **समुत्था १** प० [समुत्तिष्टति] ऊभा थवुँ; ऊठवुं (२) फरीथी सजीवन थवुं के भानमां आवव् समुत्यान न० ऊठवं – ऊभा थवं ते (२) फरीथी सजीवन थवुं ते (३) पूरेपूरा साजा थवुं ते (४) धंधो; व्यवसाय (५) ऊँचे चडाववुंते(ध्वज) **समुत्पट् १०** उ०पूरेपूरुं उपाडी नाखवुं; जडमूळथी उखेडी नाखवु (२) जुदुं पाडवुं (३) हांकी काढवुं समुत्पत् १ प० कूदवुं; ऊछळवुं; ऊँचे चडवुं (२) उद्भववुं, पेदा थवुं (३) वहार धसी आवर्षु (४) हुमलो करवो (५) लुप्त थवुं; विदाय थवुं समुत्पत्ति स्त्री० जन्म; उत्पत्ति; मूळ (२) बनवुं-श्रवुं ते समुत्पद् ४ आ० थवुं; बनवुं(२) उत्पन्न थवुं; नीकळवुं (३) हाजर थवुं समृत्यिज, समृत्यिजलक पुं० भारे अव्य-वस्थामां पडेलुं सैन्य(२)भारे अव्यवस्था समुत्सारण न०, समुत्सारणा स्त्री० खसेडी मूकवुंते; हांकी काढवुं ते समुत्सुक वि० –ने माटे अधीर के आतुर बनेलुं (२) दिलगीर; खिन्न समुत्सेष पु० ऊंचाई(२)जाडाई समृदय पुं० उदय; ऊगवुं ते (२) चडती; उत्कर्ष (३) समूह; ढगलो (४) आखुं समग्र एवं ते(५)महेसूल(६)उद्यम (७) युद्ध (८) हिसाबकिताब; नाणां-तंत्र (९) उत्पत्ति कारण **समुदाचार** पुं० शिष्टाचार(२)संबो-धननी योग्य रीत (३) हेतु; प्रयोजन समुदानय पुं० भेगुं करवुं ते समुदाय पुं० समूह; टोळुं समुदि २ प० ऊंचे जवुं; ऊगवुं(२)युद्ध माटे तैयारी करवी (३) एकठा थवुं

समुदित वि० ऊंचे गयेलुं; ऊगेलुं(२) उन्नत; समृद्ध(३)बनेलु; थयेलुं(४) एकठुं थयेलुं (५)युक्तः सहित **समुदोर्** – प्रेरक ० उच्चारवुं ; कहे**वुं** (२) उक्केरवु; प्रेरवु समुदीर्ण वि० खूब उश्केरायेलुं (२) उज्ज्वल; प्रकाशित (३) वृद्धिगत समुद्ग पुं० ढांकणवाळी पेटी समुद्गक पुं० ढांकणवाळी पेटी (२)एक प्रकारनी कृतिम काव्यरचना-जेनां ब अडिधयां उच्चारणमां समान होय पण अर्थमां जुदां होय [(३)बोलेलुं समुद्गीर्ण वि० ओकेलुं (२) ऊंचकेलुं समुद्दंड वि० उगामेलुं (२) भयंकर **समुद्देश** पुं॰ सविस्तर वर्णन (२) **पूर्ण** सूचन (३) गणतरी (४) सिद्धांत समुद्धत वि० अंचुं करेलुं; उगामेलुं(२) उद्धत; गविष्ठ; असभ्य (३) तीव्र समुद्धरण न० ऊंचकवंते (२) उद्घार (३)बहार काढवुं ते (४)मुक्ति; मोक्ष; छुटकारो (५) निर्मूळ करवुं ते (६) ओकी काढेली खोराक (७) -मांथी काढी छैवं ते (हिस्सो) समुद्धकृं पुं० उद्घारकः; मुक्तिदाता समुद्ध १ उ० उचकवुं, ऊचुं करवुं(२) उद्घारवु; बचाववुं (३) जडमूळयी नाश करवो(४)-माथी उपाडी लेवुं (हिस्सी) समुद्भव पुं० उत्पत्ति समुद्भेद पु० देखाव (२) विकास समुद्धत वि० ऊंचकेलुं;ऊंचुं करेलुं(२) रजू करेलुं; अर्पेलुं(३)सज्ज;तत्पर; तैयार(४)सिद्ध थयेलुं; पूर्व थयेलुं समुद्यम पुं० ऊंचकवुं ते (२) महा प्रयत्न समुद्योग पुं० उद्यम; प्रयत्न (२) उप-योगमां छेवं ते समुद्र वि० छापवाळुं; महोरवाळुं (२) पु॰ दरियो; सागर (३) एक खूब मोटी संख्या (एक लाख खर्व) समुद्रकांची स्त्री० पृथ्वी

समुद्रकुक्षि पुं० समुद्रनो किनारो समुद्रगा स्त्री० नदी [खंडनारं समुद्रगामिन् वि० नौकाजीवी; वहाणवट्रं समुद्रपृह न० (ग्रीष्म ऋतु माटे) पाणी वच्चे बांधेलुं घर (२) स्नानागार समुद्रनेमि (-मी) स्त्री० पृथ्वी समुद्रपत्नी स्त्री० नदी समुद्रपर्यंत वि० दरियाथी वींटायेलुं **समुद्रफल** न० एक औषधि **समुद्रफेन** पु॰ समदर फीण; समुद्रफीण समुद्रमहिषी स्त्री० गंगानदी समुद्रयायिन् वि० जुओ 'समुद्रगामिन्' समुद्रयोषित् स्त्री० नदी समुद्ररसना स्त्री० पृथ्वी समुद्रलवण न० दरियाई मीठुं समुद्रवेला स्त्री० समुद्रनी भरती (२) समुद्रनुं मोजुं (३) समुद्र-किनारो समुद्रा स्त्री० खीजडो; शमी वृक्ष समुद्रांता स्त्री० पृथ्वी **समुद्रह**् १ प० ऊंचुं उपाडवुं; वहत करवुं (२) परणवुं **समुद्वाह** पुं॰ ऊंचकवुं ते (२) लग्न **समुद्वाहित** वि० ऊंचकतुः; वहन करतुं **समुञ** वि० भींजायेलुं; भीनुं (२) मलिन; मेलुं समुभत वि॰ ऊंचुं; उन्नत(२)मगरूर (३) प्रमाणिक; न्यायी समुद्गति स्त्री० ऊंचकवुंते (२) ऊंचाई (३) महत्ता (४) ऊंचो होहो (५) समृद्धिः; चडती (६) गर्व समुखद वि॰ उंचुं; उन्नत (२) अत्यंत तीव (३) उद्भत (४) पोतानी जातने विद्वान माननारं (५) सूजेलु; फूलेलु समुच्चम् १५० चडवुं; ऊँचे जवुं समुन्नी १ उ० पूरेपूरुं ऊंचुं करवुं (२) तारववुं(३)चूकवी देवुं(ऋण) समुप्रीत वि० ऊंचु करेलु; वधेलुं संमुपित वि० भू० कु०) वि० वृद्धिगतः भेगुं थयेलुं

समुपविश् ६ प० बेसवुं (२) उपर आडा पडवुं (३) पडाव नाखवो **समुपष्टंभ, समुपस्तंभ** पुं० आधार; टेको समुपस्था १ उ० [समुपतिष्ठति-ते] पासे आववं (२) हुमलो करवो (३) थवुं; बनवुं(४)अति निकट ऊभुं रहेवुं (५) पामवुं; पहोंचवुं जगा समुपह्वर पुं० ढंकायेली के संतावानी समुपागत वि० पासे आवी पहोंचेलुं **समुपादाय** अ० –ना उपायथी **समुपे २** प० मेळववुं(२)भेगा यवुं; मळवुं (३) हुमलो करवो (४) पाँस जवुं; पहोंचवुं (५) -ने भाग आवी पडवुं (६) सहन करवुं समुपोढ वि॰ ऊंचुं चडेलुं; ऊगेलुं(२) वधेलुं(३)नजीक लावेलु के आवेलुं समुल्लस् १ प० चळकवुं (२)नजरे पडवुं; देखावुं (३) क्रीडा करवी समूढ वि० भेगुं करेलुं; एकठुं करेलुं(२) परणेलुं(३)संबंधमां आणेलुं समूल वि॰ मूळ सहित समुलम् अ० जडमूळथी समूह् १ उ० भेगुं करवुं; एकठुं करवुं समूह पुं० टोळु; समुदाय समूहन न० भेगुंकरबुंते (२) संचय समृ १ आ० [समृच्छते] मळवुं; भेगा थर्व (२) संघर्षमा आववु (३) भेगू करवुं; रचवुं – प्रेरक० [समर्पयति] आपी देवुं; समर्पण करवुं (२) - उपर के -मां मूकवं (३)पाछं वाळवं समृद्ध वि॰ समृद्धिवाळुं; आबाद(२) सुखी; नसीबदार (३) पुष्कळ होय तेव् (४) सफळ (५) खूब विकसेलुं (६) आखु; समग्र(७)वृद्धिगत थयेलु समृद्धि स्त्री० आबादी; ऐश्वयं; संपत्ति (२∕)अति वृद्धि; विपुलता समृष् ४,५ ५० आबाद थवुं ; समृद्ध थवुं

--कर्मणि० सफळ थवुं; सिद्ध थवुं (२)खूब प्राप्त थयेलुं होवुं समे २ प० भेगा थवुं; मळवुं समेत वि॰ भेगुं मळेलुं; एकठुं थयेलुं (२) पासे आवेलुं (३) युक्त; सहित समेष् १ आ० आबाद थवुं; समृद्ध थवुं –प्रेरक० सुखी करवु (२) पूर्व पाडवुं; पूर्ण बनाववुं समेषित वि० खूब ज वघेलुं (२) मज-बूत (३) संयुक्त सम्यक् अ० साथे (२) खरुं होय तेम; योग्य होय तेम (३) पूरेपूरुं होय तेम सम्यग्ज्ञान न० साचुं ज्ञान सम्यादर्शन न०, सम्यादृष्टि स्त्री० साची श्रद्धा(जैन)(२)ऊंडी मजर सम्यच्, सम्यंच् वि० साथे जतुं (२) योग्य; उचित (३) साचु; सरुं (४) आनंदप्रद; अनुकूळ (६) एकसरखुं; एकघारुं (६) आखुं;समग्र सम्राज् पुं० सम्राट; राजाधिराज (राजसूय यज्ञ कर्यो होय तेवा) सयावक वि० लाखथी रंगेलुं **सयुज्** वि० साथी; सोबती सयूष्य पुं० एक ज टोळानो एदो ते सरं वि० जतुं; खसतुं (२) रेचक (३) पुं० मति (४) बाण (५) दूध के दहींनी तरी (६) माळा, हार सरक पुं०, न० रस्तानी चालु रेखा (२) मद्य; दारू (३) मद्यपान (४) मद्यपात्र (५) दारू पीरसवी ते सरघा स्त्री० मधमाखी सरट पुं० पवन (२) काकीडो; काचंडो सरण वि० जतुं; वहेतुं (२) न० झडपी गति सरणि (-णी)स्त्री० मार्गः; रस्तो (२) पद्धति ; रीत (३) सीधी चालु लीटी सरभस वि० झडपी; वेगीलुं (२) जुस्सादार; आवेशयुक्त

सरभसम् अ० शीघ्रताथी सरमा स्त्री० कृतरी (२) देवोनी कृतरी सरयु (-यू) स्त्री० अयोध्या जेने किनारे आक्युं छे ते नदी **सरल** विश्सरळ;सीधुं(२)प्रमाणिक; निष्कपट (३) भोळुं (४) पुं० एक जातनुं देवदार वृक्ष सरस् न० सरोवर; मोटुं जळाशय(२) पाणी (३) वाणी (सरस्वती देवी) सरस वि॰ रसयुक्त; रसाळ (२) स्वादिष्ट (३) भीनुं (४) पसीना-थी भींजायेलुं (५) प्रमपूर्ण; कामी (६) मनोरम (७) ताजु; नवुं(८) गाढुं; नक्कर (९) न० तळाव सरसिज, सरसिष्ह न० कमळ सरसी स्त्री० सरोवर; तळाव. सरस्वत् वि॰ पाणीवाळुं (२) रसाळ (३)पुं० सागर(४)सरोवर(५) नद सरस्वती स्त्री० वाणीनी देवता (२) वाणी; शब्द; अवाज (३) एक नदी (जे रणमां हवे लुप्त थयेली छे) (४) उत्तम स्त्री सरहस्य वि० रहस्ययुक्त; चमत्कारिक (२)गृढ मंत्र के उपनिषद सहित एवं **सराग** वि० रंगीन (२) लाखथी रंगेलुं (३) राग-प्रेम युक्त सरित् स्त्री० नदी **सरित्पति पुं**० समुद्र सरिद्वरा स्त्री० गंगानदी सरीसृप पुं० साप; पेटे चालतुं कोई पण सरूप वि० समान रूपवाळुं (२) समान सरूपता स्त्री०, सरूपत्य न० चार प्रकारनी मुक्तिमांनी एक; देव साथे एकरूप थई जवुं ते सरोज, सरोजन्म न० कमळ सरोजिनी स्त्री० कमळनो छोड़; कम-लिनी (२) कमळथी भरपूर तळाव (३) कमळनो समूह (४) कमळ

सरोरुह्, सरोरुह न० कमळ सरोरुहिफो स्त्री० जुओ 'सरोजिनी' सरोबर पुं० मोटुं तळाव सर्ग पुं० त्याग (२) सर्जन; सृष्टिनी रचना–उत्पत्ति (३) सृष्टि (४) स्वाभाविक लक्षण; स्वभाव (५) निर्णय; निश्चय (६) मळत्याग (७) शस्त्रसामग्रीनुं उत्पादन सर्गबंघ पुं० विविध प्रकरण के सर्ग-वाळुं मोटुं काव्य; महाकाव्य **सर्ज पु**० साल वृक्ष (२) साल वृक्षनो गुंदर; राळ **सर्जन** न० त्याग करवो ते (२) छूटुं करवुं ते (३) उत्पत्ति; रचना (४) मळत्याग (५) ऊंचकवुं – ऊंचुं करवुं ते **सर्प पुं०** सापनी पेठे वाकुंचृंक् सरकवुं ते (२) साप सर्पच्छत्र न० बिलाडीनो टोप सर्पण न० पेटे सरकवुं ते (२) बाणनी जमीनने समांतर एवी गति **सर्पराज** पुं० वासुकि नायः सर्पाराति, सर्पारि पुंच नोळियो (२) मोर(३)गरुड [(२)जतुं;खसतुं सर्पिन् वि० पेटे सरकतुं; वांकुंच्कुं जतुं सर्पिस् न० घी **सर्पेत्रवर** पुं० वासुकिनागः सर्व स० ना०, वि० बधुं; हरेक(२) तमाम; पूरुं(३)पुं० विष्णु(४) शिव सर्वकालीन वि० हंमेश माटेनुं; कायमी सर्वग वि० बधे फेलायेलुं; व्यापेलुं **सर्वगति पुं**० बधांनुं शरण एवो ते सर्वजनीन वि० प्रस्थात (२) बघाने हितकर एवं (३) बघाने लगत् सर्वज्ञ वि० बधुं जाणनारुं (२) पुं० शंकर(३)बुद्ध(४)परमात्मा सर्वतस् अ० दरेक बाजुएथी (२) बधी बाजुए; सर्वत्र (३) पूरेपूरुं होय तेम सर्वतंत्र पुं० बधा तंत्रो-दर्शनोनो अस्यासी

सर्वतंत्रसिद्धांत पुं० बधां दर्शनोए मान्य करेलो सिद्धांत सर्वतःशुभा स्त्री० प्रियंगुनी छोड़ सर्वतोगामिन् वि० बधे जई शकतु(२) सर्वव्यापी सर्वतोभद्र पुं० विष्णुनो रथ (२) वांस (३) बधी बाजुएथी वांचवा छता सरखो ज अर्थ आपतो इलोक् (४) चारे बाजुए बारणांवाळूं मंदिर के महेल (५)लीमडो (६) एक व्यूहरचना **सर्वतोमुख** वि० दरेक जातनुं;पूरेपुरुं; अमर्यादित (२) पुं ० शिव (३) ब्राह्मण (४)न० पाणी [होय तेवुं सर्वतोवृत्त विश् सर्वव्यापी; सर्वत्र मोजूद सर्वत्र अ० बधे (२) सर्व काळे **सर्वत्रग** पुं० हवा; पवन सर्वत्रगत दि० सार्वतिकः; बधाने लागु **सर्वथा** अ० बधी रीते;दरेक रीते(२) बिलकुल (नकार साथे)(३)तद्दन; संपूर्णपणे (४) बधे समये(५) खूब ज वधारे(६)कोई पण प्रकारे **सर्वदमन** त्रि० सर्वनु दमन करनारु; सामनो न करी शकाय तेवुं (२) पुं० दुष्यंत-शकुंतलानो पुत्र;राजा भरत सर्वदा अ० बधे समये; हमेशां **सर्वनामन्** न० सर्वनाम (व्या०) **सर्वभाव** पुं० पोतानुं समग्र अंतर - हृदय सर्वभावकर, सर्वभावन पु० शिव **सर्वभावेन** अ० पूरेपूरा अंतरथी;अंत:-करणपूर्वेक **सर्वमंगला** स्त्री० पार्वती सर्वमेघ पुं० एक यज्ञ सर्वयोनि स्त्री० सर्वनुं उत्पत्तिस्थान के सर्ववर्णिन् वि० विविध जातनुं सर्ववेद पुं० बधा वेदोनो जाणकार एवो ते **सर्ववेदस्** पुं० पोताना सर्वस्व वडे यज्ञ करनारो सर्ववेदस न० पोतानी बधी मिलकत सर्वेय्यापिन् वि० सर्वेव्यापी; बधे व्यापेलुं सर्वेज्ञस् अ० पूर्णपणे (२) बधे (३) बधी बाजुए िधीरजवाळु सर्वसह वि० बधु सहन करनार्ह; सर्वसहा स्त्री० पृथ्वी नाश करनारुं सर्वसंस्थ वि॰ सर्वव्यापी (२) सर्वनो सर्वसाक्षिन् वि० बधाना साक्षीरूप (२) पुं० परमेश्वर (३) अग्नि (४) पवन सर्वस्य न० पोतानुं बधुं ते; पोतानी बधी मिलकत (२) सार; तत्त्व सर्वहर वि० बधुं हरना हं (२) कोईनी तमाम मिलकतनुं वारसदार (३) सर्वनो नाश करनार्ष (मृत्यु) सर्वेकष वि० सर्वनो नाश करनारुं; सर्वशक्तिमान (२) पुं० ठग सर्वसहा स्त्री० पृथ्वी |पूरेपूर्र सर्वाकार अ० (समासमां) संपूर्णेयणे; सर्वात्मना अ० संपूर्ण रीते; पूरेपूरु सर्वायंसाधिका स्त्री० दुर्गा सर्वार्थसिद्ध पुं गौतम बुद्ध सर्वांगीण वि० आखा शरीरमां व्यापतुं **सर्वोत्तम** वि० सौमां उत्तम;श्रेष्ठ सर्वप पुं॰ सरसव; राई (२) वजननुं एक नानुं माप **सलज्ज** वि० शरमाळ; लज्जायुक्त सिलल न॰ पाणी सलिलचर पुं० मगर वगेरे जळचर सलिलचरकेतन पुं ० कामदेव (मकरकेतु) **सलिलज** न० कमळ सिललघर पुं० मेघ; वादळ (२) देव सलिलेंद्र पुं० वरुण सलिलोद्भव पुं० शंख सलिंग वि० —ने अनुरूप एवं **सलोल वि० लीला —** कीडायुक्त ; कीडा-प्रिमपूर्वक; हेतथी सलीलम् अ० रमतमां; लीलाथी (२) सलेकम् अ० पूरेपूरुं सलोकता स्त्री० इष्ट देवनी साथे एक

ज लोकमा रहेवुते (मुक्तिना चार प्रकारमांनो एक). सव पुं० सोमरस निचीववो ते (२) आहुति (३) यज्ञ सबन न० सोमरस निचोदवो के पीवो ते (२) यज्ञ (३) आहुति (४) स्नान सवनकर्मन् न० आहुति अर्पवारूपी क्रिया सक्पुष वि॰ मूर्तिमंत सबयस् वि० सरखी उंमरनुं (२) पुं० समकालीन व्यक्ति (३) स्त्री० स्त्रीनी विश्वासु सखी सवर्णवि० एक जरंगनुं (२) एक ज देखावनुं; सदृश (२) एक ज वर्ण के [विस्तृत जातिन् सविकाश (–स) वि० पूरेपूर् खीलेलुं (२) सवितर्कम् अ० विचारपूर्वकः सवितु वि० उत्पन्न करनारुं; आपनारुं (२) पुं० सूर्ये सवित्री स्त्री० माता (२) गाय सविध वि० एक ज जातनुं; एक ज प्रकारनुं (२) नजीकनुं (३) न० सानिच्य; पडोश **सविभ्रम** वि० विलासी: स्वच्छंदी सनिमर्श वि० विचारवंत सविलक्षम् अ० शरम के मूझवण साथै सविशेष वि० विशिष्ट लक्षणीवाळु (२) विशिष्ट;खास एवुं (३) उत्तम;श्रेष्ठ सविशेषतस्, सविशेषम् अ० खास करीने (२)अतिशय होय तेम [साधेनुं सविस्तर वि० विस्तार युक्त; विगतो सविस्तरम् अ० विस्तारथी; विगतथी सविस्मय वि० आश्चर्य पामेलुं (२) संदेह युक्त एवं सविस्मयम् वि० विस्मयपूर्वक सवेष्टन वि० पाघडी - फेंटावाळूं सर्वेलक्ष्य वि० कृत्रिम; यत्नपूर्वेक करेलुं (२) गभरायेलुं; गूंचवायेलुं सब्ध वि० डाबुं (२) दक्षिण दिशानुं (३) ऊलटुं; विपरीत

सञ्यपेक वि० - नी अपेक्षा राखतुं; --ने आधारे रहेतुं सन्न्यम् अ० डाबे खभेथी (जनोई पहेरवानी स्वाभाविक रीत) सञ्यसाचिन् पु० अर्जुन (डाबे हार्ये पण घनुष्य वापरी शकतो तेथी) **सब्याज** वि० दंभ युक्त; ढोंगी; लुच्चुं सब्याजम् अ० --ना बहानाथी सब्यापसब्य वि० जमणु अने डाबुं (२) खरुं अने खोट् सब्येतर वि० जमणुं सब्येष्ट्र पुं० सारिय सवीड वि० शरमाळ (२) शर्रामदुं सज्ञब्द वि० अवाज करतुं (२) मोटा अवाजे जाहेर करेलुं सराब्दम् अ० मोटा अवाज साथे सशल्य वि० कांटावाळुं (२) बाण के कांटाथी वींघायेलुं (३) पीडाकारक; मुक्केल [सुंदर; मनोहर सश्रीक वि० समृद्ध; भाग्यशाळी (२) **ससत्त्व** वि० शक्तिशाळी(२)गर्भयुक्त (३) प्राणीओवाळुं ससत्त्वा स्त्री० सगर्भा स्त्री ससंध्य वि० सांजनुं; सांघ्य ससंभ्रम वि० व्याकुळ; गाभरं ससंभ्रमम् अ० उतावळे; जलदीथी (२) गभराटमां; गूंचवाईने ससंवितक वि० चेतना युक्त ससाध्यस वि० बीकण; डरी गयेलुं **सस्पृह** वि० स्पृहावाळुं; आतुर सस्पृहम् अ० आतुरतापूर्वक सिस्मत वि० स्मितयुक्त सस्य न० धान्य; अनाज सस्यप्रद वि० फळद्रुप सस्यमालिन् वि० धान्यथी भरपूर **सस्वेद** वि० पसीनाथी भींजायेलुं सह् ४ प० सहन करवुं (२) खुश यवुं (३)संतोष आपवो (४)१ आ० सहन

करवुं; देठवुं (५) माफ करवुं (६) धीरज धरवी (७) आधार आपवो (८) सामनो करवा के हराववा शक्तिमान करी शकाय तेवुं करवुं –प्रेरक० सहन कराववुं (२) सहन सह वि० सहन करनारुं(२) धीरजवाळुं (३) शक्तिमान (४) हरावनारुं(५) सामनो करी शके तेवुं (६) उद्यमी सह अ० साथे (२) एकी साथे सहकार वि० 'ह' उच्चारवाळुं **सहकार** पुं० परस्पर मदद (२) आंबो सहकृत्वन् वि० साथे – सहकारमां काम करनारुं एवं (२) पुं• साथी सहगमन न० साथे जवुं ते (२) स्त्रीनुं पोताना पतिना शब साथे बळ्वुं – सती थवुंते सहचर वि० साथे जतुं के रहेतुं (२) पुं० सोबती; साथी; मित्र (३) अनुचर; नोकर (४) पति सहचरी स्त्री० सखी (२) पत्नी सहचारिन् पुं० सहचर; सोबती **सहज** वि० कुदरती; साथे जन्मेलुं(२) आनुवंशिक (३) पुं० सगो भाई (४) साहजिक स्थिति सहजारि पुं० कुदरती दुश्मन सहजित् वि० एकदम विजयी नीवडनार्ह सहदेव पुं० माद्रीनो नानो पुत्र; पांच पांडवोमां सौथी नानो सहधर्म पुं० एक ज जातनुं कर्तव्य सहधर्मचारिणी स्त्री० विधि प्रमाणे परणेली पत्नी सहधर्मचारिन् पुं० पति सहधर्मणी जुओं 'सहधर्मचारिणी' सहन वि० सहन करनारुं(२)न० सहन करवुं ते [लंगोटियो मित्र सहपांशुक्रीडिन् पुं वाळपणनो मित्र; सहभू वि० कुदरती; सहज सहर्षम् अ० खुशी थईने; आनंदपूर्वक

सहवसति स्त्री०, सहवास पु० साथे रहेवुं - बसवुं ते सहस् वि० बळवान (२) पुं० मागशर महिनो (३)शियाळो(४)न०सन्ति; बळ; तेज (५) पाणी सहसा अ० बळपूर्वेक (२) अविचारी-पणे (३) एकाएक; तरत ज सहस्य पुं सोबती सहस्य पुं पोष महिनो सहस्र न ं हजार (२) मोटी संस्था सहस्रकर, सहस्रकिरण पुं० सूर्य सहस्रकृत्वस् अ० हजार वखत सहस्रदीधिति पुं० सूर्ये सहस्रधा अ० हजार रीते; हजार भागमां सहस्रधामन् पुं० सूर्य सहस्रनेत्र पुं० इंद्र (२) विष्णु सहस्रपत्र न० कमळ (२) सारस पंखी **सहस्रबाहु** पुं० सहस्रार्जुन; कार्तवीर्य (२) बाणासुर सहस्रमरीचि, सहस्ररिक्म पुं० सूर्य सहस्रक्षास् अ० हजारोनी संख्यामां सहस्राक्ष वि० हजार आंखवाळुं (२) सावध; होशियार (३) पुं॰ इंद्र सहस्रार पुं०, न० माथानी टोचे आवेल पोलाण (ऊंघा कमळ जेवुं, ज्यां आत्मा रहे छे) सहस्राचिस् पुं० सूर्य **सहस्रांशु** पुं० सूर्य सहस्निन् वि० हजारनो स्वामी -- मालिक (२)हजारनुं बनेलुं(३)हजार जेटलुं (४) पुं० हजार माणसोनो समूह (५)हजारनो सेनापति सहाध्ययन न० साथे भणवुं ते सहाध्यायिन् पुं साथे भणनारो सहाय पुं० मित्र; सोबती (२) अनुयायी (३) सहायक सहायक पुं० मददगार सहायता स्त्री० मदद; सहाय

सहायन न० सोबत [तेवुं सहायवत् वि० —नी सहाय मळी होय सहासिका स्त्री० सोबत; साथे बेसवुं ते सहित वि० साथे; युक्त (२) सहन करायेलु सहितम् अ०साये सहिष्णु वि० सहनशील ; धीर सहृदय वि॰ मायाळु; प्रेमाळ (२) पुं० विद्वान (३) कदरदान; रसज्ञ सहेल वि० रमतियाळ; कीडाशील सहोत्यायिन् वि० साथे बंड करनार्ह; साथे षड्यंत्र चलावनारं सहोदर पुं० सगो भाई सह्या वि० सहन करी शकाय तेत्रुं(२) सहन करवा योग्य (३) सहन करी शके तेवुं (४) बराबरनुं; पूरतुं(५) अनुकूळ, मधुर (६) पुरु भारतनी सात पर्वतमाळाओमांनी एक संकट वि० सांकडुं (२) भीडवाळुं (३) कृश करेलुं (४) न० सांकडों रस्तो (५) मुश्केली; जोखम; भय संकथ् १० उ० वातचीत करवी(२) वर्णन करवुं (३) समजाववुं **संकथन** न० वर्णन संकथा स्त्री० संभाषण; वातचीत **संकर** पुं० मिश्रण;भेळसेळ(२)वर्णोनी भेळसेळ संकर्षण न० खेंचवुं ते; खेंचीने भेगुं करवुं ते (२) आकर्षवुं ते (३) खसेडेंबुं ते (४) पुं० बळराम (५) शैषनाग (६) जगतनो नाश करनारो (७) अहंकार संकल १० उ० सरवाळो करवो (२) एकठुं करबुं; ढगलो करवो (३) मानवुं; गणवुं (४) पकडवुं संकलन न० भेगुं करवुं ते संकलित वि० भेगुं करेलुं (२) पकडेलुं (३) फरी हाथमां लीधेलुं

संकल्प पुं० निश्चय; मनसूबो (२) तरंग; इरादो; इच्छा (३) कल्पना; विचार (४) मन; हृदय (५) क्या व्रत-तपनी दृढ प्रतिज्ञा (६) (धर्म-कृत्यमांथी)लाभनी – फळनी अपेक्षा संकल्पज, संकल्पजन्मन् पुं० कामदेव (२) इच्छा; कामना संकल्पप्रभव वि० संकल्प के वारंवार चितवनथी उत्पन्न थतुं (२)पुं ० कामदेव संकल्पयोनि पुं कामदेव संकल्पित वि० कल्पेलु; धारेलु; इरादो राखेलुं (२) नक्की करेलुं संकालन न० शबने अग्निदाह देवो ते संकाश वि० (समासने अंते) समान; सदृश (२) नजीकनुं संकीणं वि० मिश्रित; भेळसेळ थयेलुं (२) वीखरायेलुं; फेलायेलुं (३) अस्पष्ट (४) मदमां आवेलु वर्णसंकर होय तेवुं (६) अशुद्ध (७) | कीर्तेन; स्तुति सांकड् संकीर्तन न० प्रशंसा; वखाण (२) **संकुच**् १,६प० संकोचावुं (२) बिडावुं **संकुचित** ('संकुच्'नुंभू० कृ०) वि० संकोचायेलुं ; टूकुं – अल्प थयेलुं (२) बिडायेलुं; बंघ थयेलुं संकुल वि॰ मूंझायेलुं; गूंचायेलुं (२) भीडवाळुं; भरेलुं (३) गाढ; तीव (४) न० गिरदी; भीड; टोळुं (५) कोण कोनी साथे लडे छे ते पण खबर न पड़े तेवी हायोहाथनी लडाई (६) असंबद्ध के विरोधी वात (७) नाश संकृ ८ उ० करवुं; आचरवुं (२) बना-| खेंची बांधवुं वव् संकृष् १ प० खेंची जवुं;ताणी जवुं(२) संकृ ६ प० सिंकिरति भेळववु; भेळ-सेळ करवुं (२) विखेरवुं --कर्मणि० [संकीर्यते] भेळसेळ थवुं; ग्रंचवाई जवु

संकृत् १० उ० [संकीतंयति-ते] वसा-णवुं; स्तुति करवी (२) कहेबुं(३) जाहेर करवुं संक्लुप् १ आ० (संकल्पते) संकल्प करवो; इच्छवु –प्रेरकः निष्चय करवो; नक्की करवुं (२) इरादो राखवो गोठववुं (४) अर्पण करवुं (५) विचारवुं; चितववुं (६) कल्पवुं (७) उत्तरिकया करवी संकेत पुं० उल्लेख (२) निशानी; सूचन (३) करार (४) प्रेमीजनने मळवा आववा करेलुं सूचन के दर्शा-वेल समय अने स्थान संकेतक पुं० प्रेमीजनने मळवा बोला-ववा करेल सूचन; तेनो समय के स्थान (२) तेवी मुलाकात गोठवनार प्रेमिका के प्रेमी संकेतन न० (प्रेमीजनो वच्चे नक्की थयेल) मळवानुं स्थान के समय संकोच पु० संकोचावुं ते (२) टूंकुं करवुं ते (३) बीडवुं - बिडावुं ते (४) दीनता (५) न० केसर **संक्रम् १** उ० साथे आववुं के मळवुं (२) जवुं; ओळगीने जवुं; –मा थईने जवुं (३) पासे जवुं (४) –मां -तरफ लई जब् --प्रेरक० --ने सोंपवुं ; --ने आपवुं (२) **संकम** पुं॰ साथे जवुं ते(२)स्थळांतर; संक्रमण (३) पु०, न० सांकडो के दुर्गेम मार्ग (४) पुल (५) कोई वस्तु प्राप्त करवानुं साधन (६) निसरणी संक्रमण न० एक जगा के स्थितिमांथी बीजी जगा के स्थितिमां जबुं ते; संचार (२) ओळंगवुं ते (३) प्रवेश करवो ते (४) एक राशिमांथी बीजी राशिमां जबुंते (सूर्यनुं); संक्रांति

(५) मृत्यु

संकंद पुं० युद्ध (२) कोलाहल (३) आकंद (४) सोम रस काढवानुं साधन **संभंदन** पुं० इंद्र (२) न० युद्ध **संकात** वि० —मां थईने गयेलुं; —मां प्रवेशेलुं (२) सोंपेलुं के आपेलुं(३) प्रतिबिबित थयेलुं संकांति स्त्री० साथे अवुं के मळवुं ते (२) एक स्थिति के स्थळमांथी बीजी स्थिति के स्थळमां गमन (३) एक राशिमांथी बीजी राशिमा जब ते (सूर्यनुं)(४) बीजाने आपी देवुं ते (५) (पोतानुं ज्ञान) बीजाने आपवानी शक्ति के आवडत (६) प्रतिबिंब संक्रीड १ आ० साथे रमवुं ते (२) **गड**गडाट करवो (पेंडांए) **संकीडित** न० रथनो गडगडाट **संक्लिब्ट** वि० घसरको थयेलुं; छोला-येलुं (२) मेलुं थयेलुं (दर्पण) संक्लिष्टकर्मन् बि० दरेक काम मुश्के-लीयी करी शके तेव् **संक्षय** पुं० विनाश (२) प्रलय (३) हानि; नुकसान (४) अंत; समाप्ति (५) आश्रयस्थान (६) मृत्यु संक्रि १,५,६ प० क्षीण थवुं (२) पूरेपूरो नाश करवो संक्षिप् ६ प० भेगुं करवुं; ढगलो करवो (२) पाछुं खेंचवुं; नाश करवो (३) टूंकुं करवुं; संक्षेप करवो (४) ओछुं करवुं (५) दबाववुं; अटकाववुं **संक्षिप्त** वि० एकसाथे ढगलो करेलुं (२) टूकुं करेलुं;संकोचेलुं;दबावेलुं; ओछुं करेलुं(३)फेंकेलुं(४)पकडेलुं **संक्षेप** पुं० साथे नाखवुं ते (२) टूकु करवुं -- संकोचवुं ते (३) टूंकाण; टूंकावेलुं ते (४) फेंकवुं ते (५) संहार (६) कुल सरवाळो संसोभ पुं० क्षोभ; खळभळाट (२) र्घाधळ; घमाल

संस्थ न० युद्धः; लडाई संख्या २ प० गणतरी करवी **संख्या** स्त्री० गणना; गणतरी (२) रकम; आंकडो (३) बुद्धि; समज-शक्ति(४)विचारणा; विवरण (५) युद्ध (६) नाम संख्याता स्त्री० एक जातनी समस्या--कोयडो (गणतरी के आंकडाने लगतो) संस्यातिग, संस्यातीत वि० असंस्य **संख्यातृ** वि० परीक्षक संख्यान न० गणतरी; गणना (२) प्रागटघ; प्रादुर्भाव संख्यापक पुं० गणतरी करनार;मोजणी-संख्यापरित्यक्त वि० असंख्य संख्यावत् वि० संख्यावाळुं (२) बुद्धि-युक्त (३) पुं० विद्वान संख्यासमापन पुं० शिव संख्येय वि० गणतरी करवा योग्य; गणतरी करी शकाय तेवं संग पुं० संयोग; संबंध (२) सोबत; सहवास (३) आसक्ति (४) युद्ध (५) रुकावट ; विष्त किया के उपदेश संगणिका स्त्री० उत्तम के अप्रतिम एवी **संगत** वि० जोडायेलुं; मळेलुं (२) एकठुं थयेलुं (३) लग्नथी जोडायेलुं (४) न० संबंध; जोडस्ण (५) मित्रता; परिचय; सोबत (६) संकोचेलुं; संकोचायेलुं संगति स्त्री ० संयोग; संबंध (२) सोबत सहवास; मेळ (३) उचितता; बंध-वेसता होवापणुं (४)पूर्वापर संबंध संगम् १ आ० [संगच्छते] भेगा थवुं; मळवुं; जोडावुं (२) संभोग करवो (३) सोबत करवी (४) पामवुं; पहोंचवुं (५) संकोचावुं संगम पुं भेळाप; संबंध (२) सोबत; सहवास (३) स्पर्श (४) संभोग (५) नदीओनुं भेगा मळवुं ते; ते स्थान

संगमन न० संगम; मेळाप संगर पुं० वचन;कबूलात (२)स्वीकारवृं ते; माथे लेवुं ते (३) युद्ध संगिन् वि॰ संबद्ध (२) आसक्त (३) इच्छुक (४) कामासक्त (५) एक-धार्ष; चालु संगीत वि० साथे गायेलु(२)न० भेगा मळीने गायेलुं ते (३) गायन बादन अने नृत्यनो मेळ (४) तेनी कळा संगीतक न० गायन, वादन अने नृत्यनो जलसो (जाहेर मनोरंजन माटेनो) **संगीतार्थ** पुं॰ संगीतना जलसा माटे जरूरी साधनसामग्रीनी जोगवाई संगुप्त वि० सारी रीते रक्षायेलुं (२) सारी रीते गुप्त राखेलुं **संगृहीत** वि० संग्रह करेलूं(२)पकडेलूं (३) निग्रह करेलुं (४) स्वीकारेलुं (५) संक्षिप्त संगृ ९ उ० [संगृणाति, संगृणीते], ६ आ० [संगिरते | वचन आपवुं (२) गळी जबुं; खाई जबुं संगै १ प० भेगा मळीने गावुं **संग्रह् ९** उ० संघरवुं; एकठुं करवुं (२) निग्रह करवो (३) पकडवुं; **लेवुं** (४) संकोचवुं (५) स्वीकारवुं (६) पणछ उतारी नाखवी संग्रह पुं॰ पकडवुं – लेवुं ते (२) संरक्षण (३) अनुग्रह (४) संघरो (५) निग्रह (६) संक्षेप; टूंकाण (७) सरवाळो; कुल जे होय ते (८) यादी (९)संरक्षक;शासक;व्यवस्थापक संग्रहण न० एकत्र करवंते (२) जडवं ते; बेसाडवुं ते (२) मिश्र करवुं ते; मिश्रण (४) संभोग; मैथुन (५) व्यभिचार (६) आशा (७) स्वीकृति संग्रहणी स्त्री० संघरणीनो रोग संग्राम पुं० लडाई; युद्ध **संग्राह** पुं० पकडवुं ते(२)मुठ्ठी (३)

घोडानुं आगला बे पग ऊरंचा करी ठेकवुं ते **संप्राहरू** पुँ० एकठुं करनारो (२)सारवि संघ पु० समूह; समुदाय; जूथ (२) घणा लोकोनुं एकसाथे रहेवुं ते **संघचारिन्** वि० टोळामां फरतु संघट् १ आ० मळवुं; एकठा थवुं –प्रेरक० एकठुं जोडवुं के बांधवुं (२)वगाडवुं (वाजित्र) संघटना स्त्री० जोडाण; एकठुं करवुं ते **संघट्ट् १** आ० वगाडवुं (वाजित्र) (२) भेगुं करवुं (३) जोडवुं; एकठुं करवुं (४) घसवुं ; घसावुं (५) दबावदुं **संघट्ट** पुं० एकबीजा साथे घसावुं ते (२) अथडावुं ते; अथडामण (३) हरीफाई (४) भेटवुं ते संघट्टन न०, संघटना स्त्री० एकबीजा साथे घसावुं – अफळावुं ते (२) गाढ संबंध (३) सामसामी आवी जबुं ते (४) आलिंगन (प्रेमीओनुं) संघर्ष पुं० घर्षण (२) अथडामण ; टक्कर (३) स्पर्धा;हरीफाई (४) अदेखाई (५)वेर; दुश्मनावट संघाट पुं ० सुथारीकाम ; लाकडांने घडीने बंसाइवां ते संघाटिका स्त्री० जोड; जोडी **संघात** पुं० मंडळ; संघ (२)समुदाय; समूह (३) वध; कतल (४) प्रवाह (५) कठण अंश संघातकठिन वि० धन पदार्थ जेब् कठण — नक्कर संघातमृत्यु पुं० एक सामटुं मोत संघातिशाला स्त्री० घन के नक्कर शिला संघाराम पुं० बौद्धमठ; विहार संघुष्ट वि० पडघो पाडतुं; गाजतुं; रणकतुं (२) जाहेर करेलुं (३) वेचाण भाटे नियत करेलुं (४) पुं० अवाज; करवी;स्पर्धा **करवी संघृष् १** प० साथे घसवुं(२)हरीफाई

संचक पुं० बीबुं (ढाळवा माटेनुं) **संचय** पुं० ढगलो करवो – भेगुं करवुं ते (२)संग्रह;मोटो ढगलो(३)सांघो संचर् १ प० (बाहननी तृतीया साथे आ० पण) जबुं; चालबुं (२) आच-रवुं; वर्तवुं (३) मळवुं; जोडावुं --प्रेरक'० फेरववुं; दोरवुं (२) पथ-राय के व्यापे तेम करवुं **संचर** पुं० मार्ग; रस्तो (२) सांकडो रस्तो; केडी (३) दरवाजो **संचल् १** प० आम तेम हालवुं; डोला-यमान थवुं (२) कंपवुं; ध्रूजवुं (३) चोंकवुं (४) विदाय थवुं संचलन न० खळभळाट;कंप;ध्रुजारो **संचष्कारियषु** वि० संस्कार-शुद्धि करे **एम** इच्छत् संचार पुं० चालवुं -- फरवुं ते (२) मांथी पसार थवुं ते (३) रस्तो; मार्ग (४) मुश्केलीभर्यो मार्ग (५) मुश्केली (६) (श्रवण-दर्शनथी) मोहित करवुं ते (७) चेप लागवो ते संचारक पुं नेता; भोमियो **संचारिन्** वि० चल; जंगम(२)फरतुं; भटकतुं (३) अस्थिर; चंचळ (४) असर करी शके तेवुं (५) वारसामां **ऊतरे** तेवुं; चेपी **संचि ५ उ० ए**कठुं करवुं;संग्रह करवो (२)कमसर गोठववुं;सींचवुं **संचित** ('संचि'नुं भू० कृ०) वि० एकठुं करेलुं; ढगलो करेलुं (२) संघरो करेलुं (३) –थी भरेलुं; --युक्त (४) गाढुं (जंगल) संचित् १० उ० चितवन करवं (२) विचारणा करवी; तोलन करवुं **संचुर्ण् १० उ० चूरे**चूरो करी नाखबुं **संछद् १०** उ० ढांकवु; संताडवुं (२) आच्छादन करवुं (३) पहेरवुं; धारण-करवं (कपडां)

संख्या वि० ढांकेलुं; संताडेलुं पहेरेलुं (३) घेरायेलुं संख्रिद् ७ उ० कापबुं; कापी नाखवुं (२) भेदवुं (३) दूर करवुं (शंका इ०) (४) निकाल लाववो (प्रश्ननो) **संज् १** ५० [सजित] वळगवुं; वळगी रहेवुं (२) बांधवुं संजन् ४ आ० (संजायते) जन्मबुं; पेदा थवुं (२) ऊगवुं; वधवुं (३) बनवुं; थवुं (४) व्यतीत थवुं(समय) संजन न० बांधवुं – वळगाडवुं ते (२) (हाथ) जोडवा ते संजनन वि० उत्पन्न करनारुं (२) न० उत्पत्ति; पेदाश (३) विकास **संजय** पुं० धृतराष्ट्रनो सारथि (तेणे महाभारतना युद्धनुं वर्णन, दिव्यदृष्टि-थी जोईने, धृतराष्ट्रने संभळाव्यं हतुं) **संजल्प् १** प० वातचीत करवी संजल्प पुं० वातचीत (२) घांटाघांट (३) बुमराण **संजात ('**संजन्'नुं भू० कृ०) वि० उत्पन्न थयेलुं (समासमां ' -- जेमां पेदा थयुं होय तेवुं;' '-युक्त बनेलुं' एवा अर्थमां आवे छे; उदा० 'संनातकोप') (२)ब्यतीत थयेलुं(समय) **संजिहान** वि० तजतुं; छोडतुं **संजीव** १ प० साथे रहेवुं (२) (--नो धंधो करीने)जीववुं(३)सजीवन करावुं संजीवन न० साथे रहेवुं ते (२) सजी-वन करवुं ते (३) चार घरनी खडकी संजीवनी स्त्री० मरेलाने सजीवन कर-नारी कहेवाती औषिध (२) सजीवन करवुंते (३) अञ्च संजीवनौषधि स्त्री० मरेलाने सजीवन करी शकाय तेवी वनस्पति संज्ञ वि० चेतना के भानवाळुं (२) नामवाळु संज्ञक वि० नाशक; कापनारुं

संज्ञा ९ आ० [संजानीते] जाणवुं; समजवं (२) ओळखवं (३) पहेरो भरवो; सावचेत रहेवुं (४) याद करवुं (५) संमत थवुं -प्रेरक० वधेरवुं; कापवुं संज्ञा स्त्री० भान; चेतना (२) ज्ञान; समजण (३) बुद्धि; मन (४)सूचना; निशानी (५) नाम(६)सूर्यनी पत्नी; यम - यमीनी माता **संज्ञापन** न० दघ; नाश संज्ञाविपर्यय पु० बेहोशी संज्ञित वि० नामनुं – नामथी ओळखातुं **संज्वर** पुं० भारे ताव (२) गरमी (३) गुस्सो करवु संतक्ष् १ प० छोली नाखवुं (२) घायल **संतक्षण** न० कटाक्षयुक्त कठोर वाणी संतत वि॰ विस्तृत; पथरायेलुं (२) चालु; निरंतर; सतत (३) कायमनुं (४) घणुं; अनेक संतलम् अ० हंमेशां; निरंतर संतित स्त्री० फेलावो; विस्तार (२) चालुपंक्ति, ऋम के प्रवाह (३) कायम चालु रहेवुं ते (४) वंश (५) संतान (६) ढगलो **संतन् ८ उ० ढां**की देवुं; छाई देवुं(२) साथे जोडवुं (३) सिद्ध करवुं (४) देखाडवुं ; बताववुं **संतप् १** प० तपाववुं ; गरम करवुं(२) शोषी - सूकवी नाखवं (३)संतापवं; पीडव् | करवो –कर्मणि० दुःखी थवं(२)पस्तावो **संतप्त** वि० तपावेलुं;लालचोळ करेलुं (२) पीडित; त्रास पमाडेलुं (३) बाळेलुं(४)सुकायेलुं; करमायेलुं(५) न ० दःख; शोक **संतप्तायस् न० लालचोळ तपावेलुं लोढुं** संतम् ४ प० [संताम्यति] थाकी जर्बु संतमस् (-स) न० सर्वव्यापी अधकार; घोर अधारुं (२) महामोह संतर्पण वि० ताजगी – स्फूर्ति आपनारं (२) न० संतोष, तृष्ति के आनंद आपवो ते **संतर्पयाण** वि० तृष्ति आपनारुं संतान पु०, न० विस्तार; फेलावो (२) चालु प्रवाह के परंपरा (३) वंश (४) संतति (५) स्वर्गनाः पांच वृक्षो-मान् एक अथवा तेनुं फूल संतानक पुं स्वर्गनां पाच वृक्षोमानुं एक (२) एक लोक (गति) **संतानसंधि** पुं० (दीकरी परणावीने) सगपणथी संधि दृढ करवी ते **संताप** पुं० गरमी; दाह (२) दुःख; पीडा; परिताप (३) गुस्सो (४) पश्चात्ताप (५) तपस्या संसार पुं० ओळंगी जवुं ते; पार करबुं ते (२) ज्यांथी (नदी) पार करी शकाय ते स्थळ; उतरण संतारनी स्त्री० (नदी) पार करवानी संतुष् ४ प० राजी थवुं; संतोष पामवो (२) –मां खूब रुचि होवी संतुष्ट वि० संतोष पामेलु;खुश थयेलुं संतृ १ प० ओळंगवुं (२) तरवुं (३) पार पामवुं (४) पहोंचवुं; पामवुं (५) -मांथी बची जवुं;भागी छूटबुं संतोष पुं ० तृष्ति; समाधान; सुख (२) होय तेटलाथी राजी रहेवुं ते संस्थज् १ प० त्याग करवो (२) दूरथी तजवुं (३) बाकात राखवु -प्रेरक० लूंटी लेवुं; पडावी लेवुं संत्रस् १, ४ ५० बीवुं; डरवुं संत्रास पुं० भय; त्रास संदर्भ पुं० गृंथवुं ते; पहेरवुं ते (२) एकीकरण; मिश्रण (३) सुसंगतता; पूर्वापर संबंध (४)ग्रंथ; साहित्यकृति संदर्शन न० जोवं -- निहाळवं ते (२)

(२) झूरवुं

दृश्य; देखाव; नजर (३) प्रयोग; उपयोग (४) देखाडवुं ते **संरष्ट** वि० दंशायेलुं; करडायेलुं (२) छूदायेलुं; कचरायेलुं संदह् १ प० बाळवु **संदंश् १** प० [संदशति] डसवुं; कर-डवुं (२) वळगी रहेवुं; चीपकी रहेवुं (३) दाववुं; कचरवुं संदंश पुं॰ साणशी; चीपियो - चीमटो संबंशक पु०, संबंशिका स्त्री० साणशी; चीपियो; पकड **संदंशित** वि० ब**रू**तर पहेरेलुं **संदान** पुं० घूंटण नीचेनो हाथीनो ते भाग ज्यां सांकळ बंधाय छे (२) न० दोरडुं (३) सांकळ (४) ज्यांथी मद झरे छे ते लमणा आगळनुं स्थळ संदानक न० कबूतरनी माळी **संदानित वि० बांधेलु;** जकडेलुं संदिग्ध ('संदिह्' नुं भू० कृ०) वि० लेपायेलुं;खरडायेलुं(२) अनिश्चित; शंकाशील (३) –तरीके भूलथी मानी लीघेलुं (४) जोखम भरेलुं (५) न० अनिश्चतता (६) लेपवु ते संदिग्धफल वि० झेर पायेला बाणवाळ संदिग्धीकृत वि० - 'ए हरों के शुं' एवो संदेह पडे एवा देखाववाळुं करेलुं **संदित** वि० बांधेलुं; जकडेलुं संदिश् ६ प० आपवुं (२)सूचना आप-वी ; सलाह आपवी ; संदेशो मोकलवो (३) दूत तरीके संदेशो लई मोकलवुं (४) नियुक्त करवुं संदिह् २ उ० चोपडवुं; खरडवुं(२) ढगलो करवो (३) शंकाशील होवुं (४) भूलथी (बीजा तरीके) मानव् संदिहान वि० संशययुक्त **संदीप् ४** आ० सळगर्बुः प्रकाशबुं – प्रेरक० सळगाववु (२) उरकेरवुं संबीपन वि० सळगावनारुं; उद्दीपित

करनारुं; उश्केरनारुं (२) न० सळ-गाववं -- उद्दीप्त करवं ते संदुष् ४ प० दूषित – कलंकित यदुं — प्रेरक० दूषित — कलंकित — भ्रष्ट करवुं (२) आक्षेप-आरोप मूकवो संदुब्ध वि॰ गूंथायेलुं;परोवायेलुं संवृभ् ६ प० गूंथवुं; बांधवुं; परीववुं संदृश् १ प० जोवुं; निहाळवुं (२) विचारवुं; तपासबुं - प्रेरक० देखाडवु; बतावबु संदेश पु० कहेण; सभाचार; खबर (२) संदेशो (३) आज्ञा सर्देशक न० समाचार; खबर संदेशहर, संदेशहारक पुं० दूत; संदेश-वाहक (२) एलची संदेशार्थ पु० संदेशा तरीके कहेवराव-वानु ते; संदेशो संदेह पुं० शंका; बहेम (२) जोखम संदेहपद वि० शंकायुक्त **संबोह** पुं० दोहवुं ते (२) समूह; समुदाय; कोई पण वस्तुनुं समूचुं ते संद्राव पुं० पलायन; पीछेहठ (२) झडप; वेग संघा ३ उ० जोडवुं; भेगुं करवुं; मिश्रण करवं (२)सधि-मैत्री-सुलेह करवी (३)सांधवुं; ताकवुं(४)उत्पन्न करवुं (५) पूरा पडवुं; बरोबरिया नीवडवुं (६) आचरवुं; करवुं संघा स्त्री० जोडाण;संबंध(२)संघि; करार (३) सीमा; हद **संघान** न० संबंध; जोडाण (२) मिश्रण (३) ताकवुं ते; सांधवुं ते (४) मैंत्री; सुलेह; संघि संधि स्त्री० जोडाण; संबंध (२) करार; समाघान (३) सुलेह; मैंत्री (४) सांधो (शरीरनो) (५) गडी (कपडानी) (६) बाकुं; स्नातर (भींतमां चोरे पाडेलुं) (७) बे मोटा

विभागो वच्चेनो वचगाळो (८) नाटकमां अंतराल - अंतरो योजना; आयोजन **संधिण्छेर** पुं० दीवालमां बाकुं पाडवुं ते संविष्केदन न० (भीतमा)सातर पाडवुं ते (चोरी करवा माटे) **संघित** वि० जोडायेलुं (२)बंघायेलुं (३) संधि करी होय तेवुं संधित्सु वि० संधि करवा इच्छनारुं सं**धिदूषण** न० सुलेह के संधिनो भंग के उल्लंघन संधिबंध पुं० सांघानी स्नायु **संबुक्ष् १** आ० सळगवुं (२) उक्केरावुं प्रेरक० सळगाववुं; उश्केरवुं **संघुक्षण** न० सळगाववुं ते(२) उश्केरवुं ते; संकोरवुं ते संधृ १० उ० पकडवुं; टेकवबुं(२) काबू राखवो (३) याद राखवुं(४) राखवुं; मालिक होवुं संधेय वि० जोडवा – जोडावा योग्य संभ्या स्त्री० जोडाण (२) सांघो (३) सवार के सांजनो संधिकाळ (बे समय-ने जोडनारो)(४) सांज (५) सवार बपोर अने सांजे करातुं नित्य कर्म (६) बे युग वच्चेनो संधिकाळ संध्यापयोद पुं० समीसांजनुं वादळ **संध्याबलि पुं**० समीसांजे अपातो बलि **संघ्याभ्र** न० संघ्या समयनु वादळ संध्यामंगलदीपिका स्त्री० समीसांजे प्रगटावातो संगल-दीप संनत वि॰ वांकुं बळेलुं; ढळतुं (२) हताश (३) संकोचावेलुं(४)परिपूर्ण संनतांग वि० ढळता–गोळ अवयवोदाळं **संनति** स्त्री० नमी पडवुं ते; वंदन करवुं ते; आदर करवो ते (२) दीनता; ताबंदारपणु सनत् ('सनह ्'नुं भू० कृ०) वि० बांधेलुं; जकडेलुं (२) वींटेलुं; वींटळायेलुं(३)

पहेरेलुं;बांघेलुं (बस्तर) (४)तैयार; सुसज्ज (५) व्यापेलुं **संनद्वयोध** वि० सुसज्ज सैनिकोदाळु **संनम् १** प० ढळवुं; वांकुं वळवुं (२) ताबे थवुं (३) नमवुं (४) तैयार थवुं संनय पुं० समूह; जथ्थो; संख्या संनह् ४ उ० बांधवुं; जकडवुं (२) पहेरवुं (३) (बस्तर) बाँधवुं (४) तैयार यवुं; सज्ज यवुं संनहन न० सुसज्ज थवुं ते (२) तैयारी (३) जकडीने बांधवुं ते (४) उद्यम संनाह पुं० युद्ध माटे सुसज्ज थवुं ते (२) बस्तर (३) साघनसामग्री **संनिकर्षे** पुं० नजीकपणुं; पडोश (२) पासे लाववुं ते (३) संबंध **संनिकृष्ट** वि० नजीकनुं; पासेनुं सॅनिघा ३ उ० नजीक मूकवुं (२) भेगुं राखवुं(३) –तरफ स्थिर करवुं; -तरफ प्रेरवं (४) पासे आववं -पहोंचवुं (५) एकठुं करवुं; ढगलो <mark>कर</mark>बो **संनिघातृ** वि० पासे होनारुं; नजीकनुं (२) पुं० लोकोने कचेरीमां खु करनार कर्मचारी संनिधान न०, संनिधि पुं० नजीक → पासे मूकवुं ते (२) नजीकपणुं; पडोश; हाजरी (३) समूह; समुदाय (४) थापण तरीके मूकवुं ते संनिधेय वि० पासे राखवा योग्य **संनिपत् १** प० नीचे ऊतरवुं (२) भेगा मळवुं (३) हुमलो करवो (४) आवी पहोंचवुं; देखा देवी (५) नाश पामवुं संनिपात पुं॰ नीचे ऊतरवुं ते (२) भेगा - एकत्रित थवुं ते (३)सामसामा अथडावुं ते (४) संबंध; संयोग(५) समुदाय; मेळो; मिलन (६) युद्ध (७) सनेपात (ज्बर) **संनिपातनिद्रा** स्त्री० बेहोशी **संनिपात्य** वि० उपर नाखवा योग्य

संनिबद्ध वि॰ जोडायेलुं; वळगेलुं (२) गोठवेलुं; —ने माटे तैयार करेलुं संनिभ वि० सदृश; समान (समासने अंते) **संनिमृत** वि० ढंकायेलुं; छूपुं **संनियुज् ७ आ०** जुओ 'नियुज्' **संनिरुद्ध** वि० रोकवामा आवेलुं (२) भरी काढेलुं; व्याप्त **संनिरुष् ७** उ० जुओ 'निरुष्' संनिविश् ६ आ० प्रवेश करवो; ऊंडे पेसवुं (२) पडाव नाखवो (३) गा**ढ** संबंध करवो; संभोग करवो –प्रेरक० नीमवुं; मूकवुं **संनिविष्ट** वि० प्रवेशेलुं (२) भेगुं थयेलुं(३) -मां ओतप्रोत थयेलुं(४) नजीकनुं (५) पडाव नाख्यो होय तेवुं **संनिवृत् १** आ० पाछा फरवुं (२) विरमवूं; अटकवुं | रागमन संनिवृत्ति स्त्री० पाछुं फरवुं ते; पुन-संनिवेश पुं॰ ऊंडा ऊतरवुं ते; लगनी (२) समुदाय; मंडळ (३) गोठ-वणी; जोडाण (४) स्थळ; स्थान; स्थिति (५) सामीप्य (६) आकृति; बांघो; घडतर (७) झूंपडी; रहे-ठाण (८) योग्य जगाए बेसाडवुं ते (९) पडाव; छावणी **संनिवेशन** न० निवास; पडाव **संनिसर्ग** पुं० मलापण् संनिष्टित वि० पासे पडेलुं नजीक मूकेलुं (२) नजीकनुं (३) हाजर; मोजूद (४) तैयार (५) थापण तरीके [नजीकमां ज होय तेवु मूकेलुं संनिहितापाय वि० नाशवंत (२) नाश संनी १ उ० भेगुं लाववुं (२) शासन करवुं; दोरवुं (३) पाछुं आपवूं – बाळवुं (४) —तरफ लई जवुं (५) जोडवुं – भेगु करवुं; (६) गोठववुं (७) मेळववुं (८) परिपूर्ण करवुं संन्यस् ४ उ० मूकवुं; थापण तरीके

मूकवुं (२) बाजुए मूकवुं; तजी देवुं (३) सोंपव (४) संन्यास लेबो संन्यसन न० छोडी देवुं -- तजी देवुं ते (२)संन्यास (३)--ने सौंपबुं ते संन्यस्त वि॰ नीचे मूकी दीघेलुं(२) सोंपेलुं (३) तजी दीघेलुं संन्यास पु० त्याग करवो ते (२) संसार-व्यवहारनी त्याग (३) संन्यासाश्रम (४)थापण; सोंपणी **संन्यासिन् पुं**० तजी देनारो (२)संन्यास लेनारो (३) थापण मुकनारो (४) आहारनो त्य्राग करनारो **संपत् १प०भेगा मळवं—थवं (२)हुम**लो करवो (३) बनवुं; थवुं –प्रेरक० नजीक लाववुं; भेगुं करवुं (२)नीचे फेंकबुं संपत्ति स्त्री० समृद्धि (२) सफळता; सिद्धि (३) पूर्णता; श्रेष्ठता (४) विपुलता (५) अनुकूळ स्थिति संपर् आ० सफळ थवुं; आबाद थवुं (२) पूरी संख्या धवी (३) धवुं; बनवुं(४) उत्पन्न थवुं(५) भेगा मळवुं – थवुं(६)युक्त थवुं; –वाळा बनवुं –प्रेरक० थाय तेम करवुं;निपजाववुं; सिद्ध करवुं (२) मेळववूं (३) अर्पवुं; --बाळुं करवुं संपद् स्त्री० धन; संपत्ति (२)समृद्धि; आबादी (३)सद्भाग्य; सुख (४)सफ-ळता; सिद्धि (५) पूर्णता; उत्तमता (६)विपुलता; पुष्कळ होवापणुं संपद्वर पुं० राजा [एकनुंनाम **संपद्वसु** पुं० सूर्यनां मुख्य किरणमाना संपद्विनिमय पुं० एकबीजाना लाभ के सेवानो अदलोबदलो संपन्न वि० समृद्ध; आबाद(२)सुखी; नसीबदार (३) वैभवशाळी (४) पूर्ण; सिद्ध (५) युक्त; सहित (६) बनेलुं; थयेलुं(७)पुं० शिव(८)न० समृद्धि; दोलत (९) सारी वानी

संपराय पुं० युद्ध; लडाई (२) आफत (३) मृत्यु (४) मृत्यु बादनी स्थिति संपरे (स+परा+इ) २ आ० भेगा मळवुं;सामा मळवुं(२)पार चाल्या जवुं (परलोकमां) **संपर्क** पुं० मिश्रण(२)संयोग; स्पर्श; संबंध (३)सोबत; सहवास संपात पुं ० टोळुं; भीड (२) भेगा मळवुं ते (३)अथडावुं ते (४) नीचे पडवुं ते;नीचे उतरबुं ते (५) (बाणनुं) ऊडबुं ते (६) जवुं-खसवुं ते (७) खसेडवुं - दूर करवुं ते(८)पक्षीओनी ऊडवानी एक रोत (९) मोकलवु ते (१०) सूर्य विषुद-वृत्तने ओळंगे छे अने दिवस-रात सरखां थाय छेते समय (वसंत अने शरद) संप्राति, संपातिक पुं० गरुडनो पुत्र अने जटायुनो मोटो भाई पडत् संपातिन् वि॰ साथे ऊडतुं (२) नीचे **संपादक** वि० संपादन करनारुं संपादन न० सिद्ध करवुं ते;पूर्ण करवुं ते(२) मेळववं ते(३) तैयार - शुद्ध - साफ करवुं ते (जेमके जमीनने) संपिडित वि॰ एक पिडो बनावेलुं(२) 🛾 पीडवुं; त्रास आपवो संकोचेल् संपीइ १० उ० दबाववुं; मसळवुं(२) संपीड पुं० खूब दबाववुं – कचरवुं ते (२)पीडा; त्रास(३)क्षुब्ध करवुं ते (४) तरफ धकेलवुं - प्रेरवुं ते **संपुट** पुं० बखोल; खाली जगा(२) ढांकणवाळी पेटी िवाळी पेटी **संपुटका, संपुटिका** स्त्री० पेटी; ढांकण-**संपूज् १० उ**० पूजवुं(२)भेट धरवी **संपूर्ण** वि० पूर्व; भरेलु (२) आखुं; बधुं;पूरेपुरुं (३) सिद्ध थयेलुं; पूरुं थयेलुं संपूर्ति स्त्री० पूर्णता; संपूर्णता **संपृक्त** वि॰ मिश्रित (२) जोडायेलुं; संबद्ध (३)स्पर्शेतु (४)मित्र बनावेलुं संपृच् ७ प०, २ आ० जोडवुं; संबंधमां लाववुं(२)जोडावुं; संबंधमां आववुं

संप्रज्ञात पुं० सर्विकल्प समाधि; मन लीन थवा छतां ध्येय वस्तुनुं स्पष्ट भान रहे एवी समाधि (असंप्रज्ञातमा ज्ञान अने जेयनो भेद लुप्त थई जाय छे) संप्रति अ० हमणां; आ समये; तरत ज संप्रतिपत्ति स्त्री० आवी पहोंचवुं ते (२) हाजरी (३) मेळववुं ते (४) कबूलात ; संप्रतिपद् ४ आ० पासे जवुं; पहोंचवुं (२) मानवुं; गणावुं (३) कबूल थर्वुं (४)कबूल करवुं (५)पामवुं; मेळववुं संप्रती २ प० विश्वास राखवो; मानवुं (२) नक्की करवुं; निर्णय करवो **संप्रतीत** वि०पाछुं फरेलुं (२) विश्वास ∽ खातरीवाळुं (३) कबूलेलुं; पुरवार थयेलुं (४) प्रस्यात संप्रतीति स्त्री० पूरेपूरी खातरी (२) प्रस्थाति स्थाल **संप्रत्यय** पुं ० दृढ खातरी(२)कबूलात(३) संप्रदा ३ उ० आपर्वु; बक्षवुं (२) परं-परा चालुकरवी; परंपराधी आपवुं (३)सोंपी देवुं(४)परणाववुं संप्रदान न० आपी देवुं ते (२) बक्षिस; दान (३) परणाववु ते (४) बक्षिस के दाननुं पात्र संप्रदाय पुं॰ परंपरा; परंपरागत सिद्धांत (२)एक ज देवनी पूजानो धर्मसिद्धांत (३)रूढि; रिवाज (४)दान;बक्षिस संप्रदायविगम पुं० परंपरानो लोप थवो ते संप्रधारण न०, संप्रघारणा स्त्री० विचा-रणा (२)युक्तायुक्त-विवेक **संप्रघृ १०** उ० जाणवुं; नक्की करवुं (२) विचारवुं; चिंतववुं(३)-उपर स्थिर करवुं (४) अर्पण करवुं संप्रपद् ४ आ० जवा नीकळवु (२) पहोंचवुं (३) मंडवुं; आरंभवुं (४) थवुं; बनवुं संप्रयुक्त वि० साथे जोडेलुं; झूंसरीमां

जोडेलुं(२)—मां आसक्त;—मां लागेलुं (३)संभोग करतुं **संप्रयोग** पुं० संयोग;संबंध; मिलन (२) सांधो ; जोडाण ; गांठ (३)संभोग (४) अरसपरस संबंध (५) सहकार संप्रवद् १ उ० मोटेथी बोलवुं (२) ब्म पाडवी; घोंघाट करवी (३) एक साथै बोलवुं करवो संप्रविक् ६ प० साथे प्रवेशवं (२)संभोग संप्रवृत् १ आ० थवुं; बनवुं (२) शरू करवुं (३) प्रवर्तमान थवुं; चालु **थवुं** (४)हुमलो करवो --प्रेरक० शरू करवुं; माथे लेवुं (२) गतिमान करवुं संप्रसाद पुंज्यसम्रता (२) कृपा (३) स्वस्थता (४) (गाढ निद्रानी स्थितिमां) जीवात्मा (५) विश्वांति; सुषुप्ति संप्रसारण न० य्, र्, ल् अने व् बदले इ, ऋ, लृ अने उथवां ते (व्या०) संप्रस्या १ आ० [संप्रतिष्ठते] जवुं; ऊपडवुं; विदाय थवुं(२)आगळ वधवुं **संप्रहार** पुं० परस्पर प्रहार करवो ते (२) लडाई; सामनो; युद्ध संप्राप् ५ प० पहोंचवुं (२) पामवुं **संत्राप्ति** स्त्री० प्राप्ति संप्रिय न० संतोष; तृप्ति **संप्रोति** स्त्री० आसक्ति (२) आनंद; | करवी खुर्शी संप्रेक् १ आ० निहाळवुं (२) तपास संप्रेष् -प्रेरक० मोकलवुं; मोकली देवुं (२) —ने संदेश मोकलवो संप्लव पुं० डूबवुं ते (२) रेल (३) नाश; लोप(४)समूह (५) वरसवुं – तूटी पडवुं ते (६) धांधळ; धमाल (७) अंत; समाप्ति संप्सु १ आ० तणाई जवुं (२) —साये मळवुं; एकठुं थवुं (जेम के पाणी) –प्रेरक० डुबाडी देवुं; ताणी जवुं

संफेट पुं० वे गुस्से थयेलाओ वच्चेनी तकरारना प्रसंगनुं वर्णन संबद्घ वि० साथे बांधेलुं(२)आसक्त (३) -नी साथे संबंघवाळुं; -नुं संबंधी संबद्धम् अ० साथे साथे ज; भेगुं ज(२) नि० पाणी उपरांतमां संबल पुं०, न० मुसाफरीनुं भाषुं(२) संबंध् ९ प० साथे बांधदुं;जोडवुं(२) बनाववं; रचवं संबंध वि० शक्तिशाळी, समर्थ (२) योग्य; खहं; उचित(३)पु० मिलन; संयोग (४) संसर्ग; नातो (५) लग्नसंबंध (६) मैंत्री; स्तेह (७) योग्यता; स्रायकात (८) सफळता; समृद्धि (९) संबंधी; सगो **संबंधक** वि० संबंध धरावतुं;संबंधी (२) योग्य; लायक (३) पुं० मित्र (४) जन्म के लग्नथी संबंधी एवी ते (५) न० संबंध; सगपण संबंधिन् वि० संबंध धरावतुं; संबंधी (२) -नी साथे जोडायेलुं (३) पुं० लग्नथी बनेलो सगो (४) स्वजन **संबाष् १** आ० पीडवुं; त्रास आपवो (२)ईजा करवी (३)भीड करवी (४) दबाववुं; संकोचवुं संबाध वि॰ --थी भीडवाळुं बनेलुं(२) पूं० भीड (३) दबाववुं-मारवुं-ईजा करवी ते(४)डखल; स्कावट; विघन **संबुद्ध** वि० सारी रीते समजेलुं (२) डाहर्युः; विद्वान(३)पूरेपूरुं जागेलुं संबुद्धि स्त्री ० पूर्ण ज्ञान के समज (२) संपूर्ण जागृति (३) संबोधन; नाम **संबुध् १** उ०,४ आ० जाणवुं; समजवुं (२) जोवुं; निहाळवुं (३) जागवुं; ऊंघमांथी ऊठवुं संबोधन न० समजाववुं ते (२) संबोधवुं ते (३) नाम (जेनाथी संबोधाय) संभव पु॰ जन्म; उत्पत्ति; पेदा थवु ते

(२) उत्पत्ति अने उछेर (३) कारण (४)शक्यता (५)घन; समृद्धि संभार पुं० भेगुं करवुं ते; एकठुं करवुं ते (२) साधनसामग्री (कोई पर्ण काम माटेनी)(३)घटक वस्तु(४) समूह;ढगलो (५)पोषण; पालन (६) अतिशयता; पुष्कळता संभालपति प० (सांभळवुं) संभावन न०, संभावना स्त्री० गणवुं--मानवुं – विचारबुं ते (२) कल्पना; बट्टो (३) मान ; आदर (४) शक्यता ; संभव (५) उचितता (६) सामर्थ्य; शक्ति (७) शका (८) प्राप्ति संभावित वि० कल्पेलुं; मानेलुं;विचा-रेलुं (२) संमान्य; संमानित (३) उचित; लायक (५) मेळवेलुं; उत्पन्न करेलुं (५) आकांक्षा राखी होय तेवुं (६)न० कल्पना; मान्यता संभाष्य वि० शक्य; संभवित (२) शक्य मानी शकाय के अपेक्षा राखी शकाय तेवुं (३) शक्तिमान; लायक संभाष् १ आ० संभाषण करवुं; वात-चीत करवी (२) बोलवुं (३) संबोधवुं (४)अभिनंदन करवुं संभाष पुं०, संभाषण न०. संभाषा स्त्री० वातचीत; संवाद संभिद् ७ उ० भांगवुं; तोडवुं;फाडवुं; टुकडे टुकडा करवा (२) भेगुं करवुं; जोडवुं (३) संकोचवुं; दबाववुं संभिन्न वि० छेक ज तूटेलुं(२)क्षुब्ध; भांगी पढेलुं (३) संयुक्त; जोडायेलुं (४) पूरेपूर्ध खीलेलुं (५) घन; घट्ट (६)बेवफा; बळवाखोर संभू १ प० जन्मवुं; उत्पन्न थवुं (२) थवुं; होवुं (३) बनवुं (४) शक्य होवुं (५)पूरतुं होवुं(६)मळवुं; जोडावुं (७) —नी साथे संभोग करवो –प्रेरक० धारवुं; कल्पवुं (२) गणवुं; भानवुं (३) आदर करवो;

संमानवुं (४) अर्पण करीने ঝুহা करवुं (५) आरोप मूकबो (६) –मां भाग लेवो; माणवुं — प्रेरक० नुंकर्मणि० झक्य होदुं; संभवित होवुं संभूत वि० जन्मेलुं; बनेलुं; उत्पन्न थयेलुं (२) –साथे जोडायेलुं (३) लायक ; पूरतुं (४) युक्त ; सहित **संभूति** स्त्री० जन्म (२)संयोग; मिला**प** (३) उचितता; योग्यता(४) विभित संभूय अ० एकठा मळीने; एक साथे संभूयसमृत्यान न० सहियारो घंधो **संभृ ३** उ० एकठुं करवुं; संग्रह करवो (२) उत्पन्न करवुं (३) पोषवुं (४) संज्ज – तैयार करवुं (५) अर्पवुं (६) ऊंचुं करवुं |सज्ज करेलु संभृत वि० एकठुं करेलुं (२) तैयार --संभुति स्त्री०समूह; संग्रह (२)तैयारी (३) पूर्णता (४) पालन; पोषण **संभेद** पुं० भागी पडवुं — छुटुं पडी **जबुं** ते (२) जोडाण; संबंध (३) मिलने (नजरन्) (४) संगम(नदीनो)(५) खीलवुं – ऊघडवुं ते (६) वाळबुं – बांघवुं ते (मूठी) (७) बळवो; दगो **संभोग पुं॰** उपभोग; भोग (२)भोगवटो; मालकी (३) रतिक्रीडा; मैथुन संभोजनी स्त्री० सहभोजन (२) तेने अंते अपाती दक्षिणा **संभ्रम् १,४प०**[संभ्रमति,संभ्रम्यति, संभ्राम्यति । भटकवुं; रखडवुं (२) भ्रममां के भूलमां होवुं (३) मूझावुं **संभ्रम** वि० क्षुब्ध (२)गोळ घूमतुं(३) पुं॰ गोळ घूमवुं ते (४) उतावळ (५) चिंती; मुंझवण (६) भय; डर (७) भूल; भ्रम;भास(८)उत्साह; प्रवृत्ति (९) आदर; संमान गाभर **संभ्रांत** वि० गोळ घूमतु (२)मूंझायेलुं; संबत वि० संमति आपेलुं (२) प्रियः;

बहोलुं; मानीतुं (३) समान; सदृश (४) खूब सत्कारेलुं (५) युक्त; सहित संमति स्त्री • कबूलात ; मंजूरी ;परवानगी (२) इच्छा (३)आत्मज्ञान; तत्त्वज्ञान (४) आदर; संमान (५) प्रेम संमत्त वि० (मद्य वगेरे पीने) पूरेपूरुं मत्त थयेलुं (२) हर्षोन्मत्त संमद वि० खूब हर्षित (२) पुं० अति आनंद; हर्षे **संमन् ४ आ० सं**मत थवुं (२) कबूल राखवुं (३) मानवुं; धारवुं; गणवुं (४)परवानगी आपवी; सत्ता आपवी (५)मान आपवुं; अति आदर करवो संमर्व पुं० एकबीजा साथे घसावुं के घसवुं ते (२) टोळुं; भीड (३) उपर पग मूकी चालवं-छूंदवं-कचरवं-रगदोळवं ते(४)युद्ध(५)अथडामण संमंत्र् १० आ० —नी सलाह लेवी —नी साथे मंत्रणा करवी (२) वंदन करवुं; अभिवादन करवुं (३) सलाह आपवी ; अभिप्राय आपवो संभा ३ आ०, २ प० मापवुं(२)सरखुं करवुं (३)सरखाववुं (४)समावुं; मावुं संमान पुं० सत्कार; आदर(२)न० माप (३) सरखामणी **संभार्जन** न० वाळवुं – साफ करवुं ते (२) लूछवुं ते (३) लेप करवो ते (४) एठवाडों काढवो ते संमार्जनी स्त्री० सावरणी संभित वि॰ मापेलुं (२)सरखा मापनुः सरखा मूल्यनुं (३) --जेटलुं मोटुं; ─सुधी पहोंचतुं(४) नियत करेलुं संमील् १ प० मींचवुं (आंख) (२) बिडावुं (फूल वगेरेए) -प्रेरक० वासवुं; बंध करवुं (२) झांखुं पाडवुं -संमुख वि० सामुं; मोढामोढ होय तेवुं (२)मळेलुं (३) अनुकूळ होय तेवुं (४)

*−*नी **तरफ** फेरवेलूं के वाळेलूं संमुखम् अ० -नी समक्षः; -नी सामे; -नी हाजरीमां संमुखीन वि० जुओ 'रांमुख ' संगुले अ० जुओं 'संमुखम्' संदर **संमु**ग्च वि०मूढं बनेलु(२)मुझायेलु(३) संमुख्यम् अ० मोहित करे ते रीते संगुर्क् १ आ० [संगुर्क्कते] मृष्टित थवुं;बेभान थवुं(२)बळशाळी बनवुं; तीव्र के गाहध्य वुं िमोह पामवो संगृह ४ प० मूंझावुं (२) मूर्ख बनवुं; संमूढ वि॰ बेभान (२) मूखें; मोहित (३)मूझायेलुं (४) अस्तब्यस्त (५) भेगुं – एकठुं करेलुं संमुर्क्कन न० बेहोशी (२) गावुं यई जवुं ते (३) वधवुं ते; जरमवुं ते (४) मिश्रित थवुं ते **संमृ**ज् २५०, **१०** उ० साफ करवृं; वाळी नाखवुं(२)लूङी नाखवुं(३) हाथ फेरववो; दाबवुं(४)गाळवुं संमृत वि० पूरेपूरुं मरेलु संमेलन न० भेगाँ मळवुं ते(२) सिश्रण (३) भेगुंकरवुंते संमोह वि॰ मोहित करनारुं (२) मूढ बनावनारं (३) पुं० मूंझवण; भ्रम (४) मोह; आकर्षण (५) मूर्छा (६) अज्ञान; मूर्खता(७)युद्ध संमोहन पुं कामदेवना पांच बाणोमानुं एक (२) न० मोह; आकर्षण संयज् १ उ० पूजवुं; यज्ञ वडे यजन करबुं (२)अर्पेण करवु; चडाववु **संयत् १** आ० झघडवुं ; लडवुं संयत् स्त्री० लडाई; युद्ध संयत ('संयम्'नुं भू० कृ०) वि🏻 नियंत्रित ; ताबे करेलुं (२)बांधेलुं (३) केद करेलुं(४)तैयार(५)गोठवेलुं संयतमुख वि० वाणी उपर काबू रास-नारुं; चूप; मौन रहेतुं

संयतवस्त्र वि० वस्त्रो एकठा बांधी दीघां होय के जकडी दीघां होय तेवुं **संयताहार** वि० खावामां संयम राखनारुं; मिताहारी [राखनारु संयतेंद्रिय वि॰ इंद्रियोने संयममा **संयत्त** ('संयत्'नं भू० कृ०) सज्जः; तैयार (२) सावचेत **संयम् १** प० [संयच्छति] नियंत्रित करवुं; निग्रह करवो; ताबे करवुं(२) बंधनमां नाखवुं; केद पूरवुं(३) १ आ० [संयच्छते] एकत्रित करवुं (४) वासवुं; बंध करवुं (५) भेगुं करवुं; भेगुं करी गांठ वाळवी (वाळनी) संयम पुं० निग्रह; काबू (२) धारणा-घ्यान-समाधि ए त्रणनो समुदाय(३) तपश्चर्या (४) नाशः; प्रलयः (५) ब्रत; तप (६) मानवता संयमन न० निग्रह करवो ते; संयम (२) बांघवुं ते (३) केंद संयमनी स्त्री० यमराजानी नगरी संयमित वि॰ निग्रहमां लीधेलुं(२) बांधेलुं(३)अटकावेलुं(४)भेगुं करेलुं संयमिन् वि० निग्रह के संयममा राख-नार्ह(२)पुं० जेणे पोतानी इंद्रियो उपर काबु मेळच्यो छे ते; त्पस्वी **संयंत्रित** वि० बंधनमा नाखेलु ; अटकावेलु **संया** २ प० साथे जवुं(२)चाल्या जवुं; विदाय थवुं(३)प्रवेशवुं; पामवुं(४) भेगा यवुं(५)युद्ध करवुं संयान न॰ साथे जवुं ते (२) मुसाफरी (३) शबने लई जवुं ते (४) वाहन; गाडुं (५) हांकवु ते संयुक्त वि० जोडायेलुं; जोडेलुं; सबद्ध (२)मिश्रित (३)युक्त; सहित; –वाळुं (४) —मां लागेलुं (५) संबंधी (६) —नी साथे परणेलुं संयुग पुं०संयोग जोडाण; मिश्रग(२) नजीकपणुं; संबंध (३)युद्ध

संयुगगोष्पद न० (गायना पगलामांनी) नजीवी तकरार संयुगमूर्धन् पुं० लडाईनो मोखरो संयुज् ७ उ० भेगा थवुं; जोडावुं(२) चोटाडवुं(३)सजबुं(४)आ० जोडावुं –कर्मणि०-नी साथे जोडावुं(२)-नी साथे परणवुं –प्रेरक० जोडवुं(२)झूंसरे जोडवुं (३)सजवुं; सज्ज करवुं संयुज् वि॰ जोडायेलु; संबद्ध (२)सारा गुणोधी युक्त संयुत वि॰ जोडायेलुं; संबद्ध संयोग पुं० जोडाण; संबंध(२)वासे होवं ते; प्राप्त थयेलुं होवं ते (३)सट (घरेणां इ० नो)(४)सरदाळो(५) समान हेतु माटे बे राजाओ वच्चे सुरेह **संरक्त** वि० रंगीन; रातुं(२)आसक्त (३)गुस्से थयेलुं(४)मनोहर **संरक्ष् १** प० रक्षण करवुं(२)रोकवुं; दूर राखवुं िते माटे सोंपण **संरक्षण** न ० रक्षण; सूरक्षित राखवुं ते(२) **संरक्षा** स्त्री० रक्षा; संभाळ संरब्ध ('संरभ् नुं भू० कृ०) दि० उश्केरायेलुं; क्षुब्य (२) गुस्से थयेलुं; वकरेलुं (३) गाउपणे जोडायेलुं **संरब्धमा**न वि० जेन् अभिमान घवायु छे – उश्केरायुं छे तेबुं **संरभ् १** आ० क्षुब्ध थवुं(२)वकरवुः; उश्केरावुं (३) बीवुं संरम् १ अ० राजी थवुं सरंभ पु० आरभ (२) तोफान (३) उश्केराट (४) आवेश; जुस्सो;आवेग (५) अभिमान; गर्व (६) विरोध; वेर (७) तीव्रता संरंभरूक्ष वि० अतिशय कठोर एवं संरंभिन् वि० उश्केरायेलुं (२) गुस्से थयेलुं; वकरेलुं (३) गविष्ठ (४) लगनी-वाळु; उद्यमी [गुस्सो संराग पुं० रंगवुं ते (२) राग ; प्रीति (३)

संराष् ४ प० सिद्ध थवुं; पूर्ण थवुं –प्रेरक० आराधवुं; खुझ करयुं संराव पु॰ घोंघाट; अवाज सरिहाण न० प्रेमपूर्वक चाटवुं ते संख्य वि० अटकावेलुं; रोकेलुं (२) घेरो घालेलुं (३) केद पूरेलुं संरुष् ७ उ० अटकाववुं (२) रोकवुं (३) बांधवु; जकडवुं (४) घेरो घालवो **संरुह् १** प० वधवुं (२) रुझावुं **संरूढ** वि० साथे ऊगेलुं (२) रुझायेलुं (३) ऊगेलुं; फणयो फूटघो होय तेवुं (४) हिमतवाळु; विश्वासवाळुं (५) भीडवाळुं(६)ऊंडे पेठेलुं;जड घालेलुं संरोध पु॰ अटकाववुं–रोकवु ते (२) घेरो (३) बंधन(४)केद(५)घटवुं ते **संरोधन** न० अटकाववं ते(२)जकडवुं ते; केद पूरवृं ते संरोहण न० वाववं-रोपवं ते (२) रुझावं **संलक्ष्** १० उ० जोवुं; निहाळवुं(२) तपासवु; परीक्षा करवी **संलक्ष्य** न० चिह्न करवुंते **संरुक्षित** वि० चिह्नथी अंकित थयेलुं – जुदु तारव्युं होय तेवुं (२) देखा-येलु; ओळखायेलु; जणायेलु **संलग्न** वि० लागेलुं; वळगेलुं (२) हाथोहाथनी मारामारी उपर आवेलुं **संलप् १** प० वातचीत करवी **संलिख् ६** प० खोतरवुं; खणवुं (२) लखबुं (३) (वाजित्र)वगाडवुं संली ४ आ० चोंटवुं; वळगवुं(२)उपर ऊतरवुं; उपर सूबुं (३) छुपाबुं (४) ओगळी जवुं (५) –मां प्रवेशवुं संलीन वि० वळगेलु; चोटेलु(२)साथे जोडायेलुं (३) छुपायेलुं; संतातुं (४) संकोचायेलु **संलुड् १** प० हलाववुं; डखोळवुं **संनुन्ति** वि० क्षुब्ध; मूंझायेलुं संवत् अ० विक्रम संवतनुं वर्ष (श्चिस्ती संवतथी ५६ वर्ष पहेला शरू थाय)

संबक्सर पुं० वर्ष संवद् १ प० वातचीत करवी (२) भेगा मळी चर्चा करवी (३) मळता आववुं; सदृश होवुं संवनन न० मंत्र वगेरेथी वश करवं ते (२)(देवने) दश करवानुं साम्रन; तावीज इ० (३)मेळववुं ते (४)प्रेम; | छुपाववुं ते (३) बहानुं संवरण न० आच्छादन; ढांकण (२) संवर्गण न० आकर्षवुं-जीतवुं ते (मित्रो) **संब**र्ते पुं० प्रलय; नाश (२) प्रलय वखते जे सात मेघ वरसे छे तेमांनो एक (३) संकोचाबुं ते संवर्तक पुं० प्रलय वखतनो अग्नि (२) वडवाग्नि (३) संवर्ते मेध संदर्तिका स्त्री० कमळनी वेलनुं कुमळुं पान(२)दीवानी ज्योत **संवर्तित** वि० प्रलयकाळ जेवुं (२)वींटाई के घेराई गयेल **संबर्धन** न० उछेरवुं ते (२)खूब वधवुं ते **संवधित** वि० उछेरेलुं संवर्मय (ढाल घरवी; कवचनी पेठे संवलन न० मिश्रण (२) जोडाण **संवलि**त वि० मिश्रित (२) छाटेलुं; छंटायेलुं (३) जोडायेलुं (४) **भागे**लुं **संबल्गित** न० अवाज; घ्वनि संवस् १ प० रहेवुं; वसवुं; साथे रहेवुं (२) व्यतीत करवुं (समय) संवह् १ प० लई जवुं; खेंची जवुं(२) मसळबुं; दबाववुं (३) परणवुं संवाद पुं० वातचीत; संभाषण (२) चर्चा (३) समाचार; खबर (४) हा पाडवी ते (५) सादृश्य; समानता; भुमेळ होवो ते (६) मुलाकात थवी ते; मळवुं ते संवादित वि० ठरावेलुं (२) खातरी करेलुं **संबादिन्** वि० वातचीत करतुं(२) — ने मळतुं आवतुं; –मां बंधबेसतुं यतुं

संवार पुं० संकोचावुं ते (२) गोठवणी (३) विष्न (४)ढांकवुं – बंध करवुं ते संवाचतुक वि॰ अत्यंत मळतुं आवतुं; अतिशय समान संवास पुं० साथे रहेवुं ते (२) सोबत (३) घर; रहेठाण(४)भेदान (भेगा थवा के रमतगमत माटे) ∫नार नोकर संवाहक पुं० शरीर मसळनार के दबाब-संवाहन न०, संवाहना स्त्री० भार वहन करवो ते(२)हळवे हळवे दबाववुं ते संवाहित वि० ससेडायेलुं; हलावायेलुं संविष्म ('संविज्'नुं भू० कृ०) क्षुब्ध; चितित (२) बीनेलुं (३) आम तेम हालतुं के ऊछळतुं संविज् ७ प०, ६ आ० भयसी कंपर्वु **संविज्ञान** न० ज्ञान; पूरेपूरी समज संवित्ति स्त्री० अनुभव; ज्ञान; समज संविद् २ आ० जाणवुं (२) ओळखवुं (३) अनुभववुं (४) तपासवुं (५) ६ उ० प्राप्त करवुं -प्रेरक० जाणे तेम करवुं **संविब्**स्त्री० ज्ञान; बुद्धि(२)अनुभव; समज (३)करार; संकेत (४)आचार; रूढि(५) खुश करवुं ते(६)वातचीत (७) मित्रता; ओळखाण (८) एकमती संविदात वि० जाणकार; बुद्धिशाळी (२) सुसंगत संविष् स्त्री० गोठवण; तैयारी संविधा ३ उ० करवुं; आचरवुं (२) गोठववुं (३) मूकवुं (४)नीमवुं (५) हुकम करवो (६) उपयोगमां लेवुं संविधा स्त्री० व्यवस्था; गोठवण; तैयारी (२) जीवनव्यवस्था; जीवन-पद्धति [आयोजन संविधान न० व्यवस्था; गोठवण(२) संविधानक न० नाटकना वस्तुनी के तेना प्रसंगोनी गोठवणी संविधि पुं० गोठवणी; तैयारी

संविभक्त वि० जुदुं पाडेलुं; भाग पाडेलुं **संविभज् १** उ० जुदुं पाडवुं (२) भाग पाडवो; वहेंचवुं संविभा २ प० चितवबुं **संविभाग** पुं० भाग; हिस्सो (२) वर्हेचवुं ते; आपवुं ते **संविभागिन् पुं०** भागीदार; हिस्सेदार संविञ् ६ प० प्रवेशवुं (२) सूई जवुं; ऊंघवुं (३) संभोग करवो संविद्ध ('संविक्' नु भू०कृ०) वि०सूतेसु; कंबेलु (२) साथे बेठेलुं (३) कपडां पहेरेलुं िवींटेलुं; घेरायेलुं **संबीत** वि० पहेरेलुं (२) ढांकेलुं (३) संबू १, ५, ९ उ० छुपाववुं; ढांकर्बुं (२) सामनो करवो; दबावव् **संवृत् १** आ ० तरफ वळवुं के जवुं(२) हुमलो करवो (३) बनवुं ; थवुं (४) पूर्ण करवुं; सिद्ध करवुं संवृत वि० ढांकेलुं; आच्छादित (२) छुपावेलुं (३) बंध करेलुं (४) न० एकांत – गुप्त स्थान (रा**खनारं** संवृतमंत्र वि० पोतानी योजनाओ गुप्त संवृति स्त्री० ढांकवुं ते; छुपाववुं ते **संदुत्त** वि० थयेलुं; बनेलुं **संवृद्ध वि० व**घेलुं; विकसेलुं संबुद्धि स्त्री० पूरेपूरो विकास - वृद्धि (२) बळ; ताकात संयुष् १ आ० वघदुं(२)परिपूर्णे करदुं –प्रेरक० उछेरवु संवेग पु॰ खळभळाट; उश्केराट (२) अति वेग; झडप (३) तीव्र वेदना संवेदन न०, संवेदना स्त्री० ज्ञान (२) अनुभव; वेदना संवेल्लित वि० संवर्धित संवेश पुं० सूई जवुं ते(२)स्वप्न(३) संभोग (४) सूवानो ओरडो(५)बेस-वानुं स्थान संवेशन न० सुई जवुं ते (२) संभोग (३)

संबेध्द् १ आ० वींटवुं; वींटळावुं संब्यसहार पुं० वेपारधंघो संब्यस् ४ प० गोठववुं; रचवुं संब्यान न० ढांकण (२) वस्त्र;पोशाक (३) उत्तरीय संश्राप्तक पं० यद्धमांथी पराष्ट्रमख न

संशक्तक पुं० युद्धमांथी पराङमुख न थवानी प्रतिज्ञा लीधेलो योद्धो (बीजा-ओने भागता रोकवामां कामे लेवाय छे) संश्चम् ४ प० [संशाम्यति] शांत थवुं (२)बुझावुं; लुप्त यवुं -प्रेरक० नक्की करवुं

संज्ञय पुं० संदेह; शंका (२) जोलम; साहस (३) अनिश्चितता

संज्ञपगत वि० जोखममां आवी पडेलुं संज्ञपच्छेदिन् वि० शंका दूर करनारं संज्ञपात्मन् वि० संशय कर्या करतुं; शंकाशील; अनिश्चयी

संशयालु वि० अनिश्चयी; शंकाशील संशयित वि० शंकायुक्त; अनिश्चित (२) जोखम भरेलु (३) न० शंका; अनिश्चितता

संशरण न० युद्धनी शक्त्यात (२)शरणुं संकित वि० धारदार; तीक्ष्ण (२) निश्चित;नक्की (३)पूर्ण करेलुं;बरा-बर पार पडेलुं (४) दृढताथी वळगी रहेलुं (ब्रतने)

संशी २ आ० संशयमां होवुं; अनिश्चित होवुं (२) आराम करवी; सूई जवुं संशीति स्त्री० शंका; संशय

<mark>संशीलन</mark> न० नियमित अम्यास (२) वारंवार परिचय करवो ते

संबुद्ध वि॰ पूरेपूर्ष शुद्ध करेलुं – थयेलुं (२) साफ-स्वच्छ करेलुं (३) दोष के करजमांथी मुक्त थयेलुं (४) तपासेलुं; अजमांवेलुं

संजुद्धि स्त्री० पूरेपूरी शुद्धि (२)साफ करवुं ते (३)सुधारवुं ते (दोष-भूल) (४) चूकते करवुं – सुक्त थवुं ते **संशुध् ४** ए० पूरेपूरुं शुद्ध थवुं –प्रेरक० पूरेपुरुं शुद्ध करवुं (२) भरपाई करवुं; चूकते करवुं (ऋण) (३) तपासवु **संज्ञून** वि० मेद – चरबीवाळुं; (२) फूली गयेलुं; सोजावाळुं संश्रव पुं॰ आश्रयस्थान; रहेठाण(२) वसर्वु ते (३)-ने लगतुं होबुं ते(४) आश्ररो लेवो – शोधवो ते (५) आधार; अवलंबन (६) आसक्ति संश्रव पु॰ लक्षपूर्वक सामळवु ते (२) वचन; कबूलात **संक्षि १** उ० —ने आशरे जबुं;— नो आशरो लेवो (२) –ने अवलंबवुं (३)पामवुं; प्राप्त करवुं (४) जोडावुं; मळवुं संधित वि० आक्षरा माटे गयेलुं (२) आश्रित; रक्षित (३) संबंध पामेलु; अवलंबेलुं; आलिंगेलुं(४) –मां रहेलुं; स्वाभाविक | वचन आपवुं **संभु ५ उ०** लक्षपूर्वेक सांभळवुं (२) **संश्रुत** वि० वचन आपेलुं; कड्केलुं (२)बराबर सांभळेलुं **संश्लिष् ४** प० वळगवं; जोडावं; संशिलष्ट वि० वळगेलुं; चोटेलुं; भेटेलुं (२) –मां रहेलुं; –मां होतुं (३) जोडायें छुं; संबद्ध (४) न० दगली; जथो; समुदाय

संब्रुष्टेष पुं० आलिंगन (२) संबंध संब्रुष्टेषण न०, संब्रुष्टेषणा स्त्री० वळगवुं ते (२) साथे बांधवानुं साधन (३) बंधन; संबंध; गांठ

संसक्त वि० चोटेलुं; वळगेलुं; जोडा-येलुं(२)नजीक आवेलुं; संबद्ध(२) मिश्रित(४)युक्त(५)आसक्त

संसक्ति स्त्री० गाढ संबंध (२) अति नजीकपणुं (३) गाढ परिचय (४) आसक्ति (थोथवातुं(शोकथी) संसज्जमान वि० वळगतुं; चोटतुं(२)

संसद् १,६ प० [संसीदति] साथे बेसवुं (२)दुःसी थवुः पीडावु **संसद्** स्त्री० समा;मंडळ(२)न्यायालय (३)टोळुं; समुदाय संसरण न० जवु ते (२) गोळ फरवुं ते (३)संसार(४)जन्म अने पुनर्जन्म संसर्ग पु० संबंध; सहवास; जोडाण (२)निकटता; परिचय(३)संभोग **संसर्पण** न० सरकर्वु ते (२) अचानक हुमलो करवो ते **संसर्पिन्** वि० नजीक सरत् संसह वि० बरोबरियुं संसंज् -कर्मणि० [संसज्यते] साथे ओडावुं के बळगेला होवुं संसाष् --प्रेरक० सफळ नीवडवुं; पूरुं करवुं;सिद्ध करवुं(२)प्राप्त करवुं; पाछुं मेळववुं (३)चूकते कराववुं (४) निश्चित कराववु (५) माश करवो संसाधन न० सफळता; सिद्धि संसार पुं० गति; मार्ग (२) ऐहिक जीवन; घरसंसार (३) जन्ममरणनी घटमाळ(४)मायानी प्रपंच संसारिन् वि० जन्ममरणनी घटमाळमां भटकतु (२) पुं प्राणी (३) जीवात्मा संसिद्ध वि॰ पूर्ण धयेलुं; सिद्ध धयेलुं (२)रांधेलु; तैयार ययेलु(भोजन) (३)मुक्त (४)कुशळ संसिद्धि स्त्री० पूर्णता; सफळता; सिद्धि (२)मोक्ष(३)परिणाम संसिघ् ४ प० पूर्ण करावुं; पूर्ण थवुं; सिद्ध थवुं (२) मोक्ष मेळववो **संसूच् १**० उ० सूचववुं संसूचन न० स्पष्ट बताववं – साबित करवुं. ते (२) सूचववुं ते (३) ठपको आपवा ते [(३)फेलावुं(४)मेळववुं **संसृ १** प० पासे जवुं(२)गोळ घूमबुं संसृज् ६ प० संसर्गमां आववुं; मळवुं (२)जोडावु (३)भेटवुं

(२)न० परिचय; मित्रता; गाढ संबंध **संसृष्टता** स्त्री०, संसृष्टस्य न० जोडाण ; संबंध (२) ऐच्छिक रीते जोडावुंते (खास करीने भाग पाडचा पछी) संसेव् १ आ० सेववुं(२)सेवा करवी (३)आसक्त थवुं(४)पंखो नाखवो (५)पंपाळवु संस्कर्तृ पुं० रसोइयो; रांधनारो (२) संस्कार करनारो;दीक्षा आपनारो **संस्कार** पुं० शुद्ध करवुं--सुधारवुं--शण-गारवुं ते (२) तालीम; केळवणी (३) तैयार करवुं ते (४) राधवुं ते (५) प्राय-श्चित्तादिथी पवित्र करवुं ते (६)छाप; असर(७)वासना के कर्मनी मन उपर पडती छाप (८) द्विजोने जन्मथी मरण सुधी करवा पडता आवश्यक १२ विधिमांनो दरेक(गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोस्नयन, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उप-नयन, केशान्त, समावर्तन, विवाह; केटलाक १६ पण गणावे छे)(९) मरण पाछळ करवानी क्रिया **संस्कारभूषण** न० संस्कारी–शुद्ध–वाणी संस्कारवत्त्व न० व्यवहार – वर्तननी संस्कारिता संस्कृ ८ उ० शणगारवं (२) साफ करवं

(३)मंत्र के प्रायश्चित्तादि विधियी

पवित्र करवुं (४) केळववुं; तालीम

आपवी (५) तैयार–सज्ज करवुं (६)

रांधवुं; तैयार करवुं (रसोई)(७)

संस्कृत वि० संस्कारवाळुं-शुद्ध करेलुं

(२)कृत्रिमपणे जेमां सुधारो करवामां

साफ करवुं(८)एकठुं करवुं

संसृति स्त्री० प्रवाह; गति(२)संसार

संसृप् १ प० खसर्चु; सरकर्वु(२)पासे

संसृष्ट वि० जोडायेलुं; संबद्ध; युक्त

वहेवुं(३) तरफ जवुं के पहोंचवुं

(३)जन्ममरणना दाराफेरा

आव्यो छे तेवुं (३) पवित्र करेलुं (४) न० संस्कृत भाषा **संस्कृतोक्ति** स्त्री० संस्कारेल – गुद्ध – पड-बिछान् भाषा के शब्द संस्तर पु॰ पथारी (२) पांदडां वगेरेनुं संस्तव पु॰ स्तुति; प्रसंशा (२)परिचय; निकट संबंध (३) एकमती संस्तवप्रीति स्त्री० परिचयथी थती प्रीति संस्तंभ् ५,९ प० थोभाववुं; रोकवुं; निग्रह करवो (२) जड-अक्कड करी देवुं(३)हिंमत धारण करवी;स्थिर⊸ शांत थवुं (४) दृढ करवुं; निश्चळ करवुं (५) टेको आपवो **संस्तीर्ण** वि० पथरायेलुं; बिछावेलुं(२) वेरेलु,विखेरेलुं [परिचित होवुं सस्तु २ प० वखाणवं(२)स्तुति करवी(३) **संस्तुत** वि० वखाणेलुं; प्रशंसेलुं (२) साथे स्तुति करेलुं(३)परिचित(४) ताकेलु; इरादो राख्यो होय तेवुं(५) समान; तुल्य संस्तुति स्त्री० प्रशंसा संस्तृ (-तू) ५,९ उ० पाथरवुं; वेरवुं संस्त्याय पु० ढगलो;समूह(२)विस्तार (३) पडांश;सांनिध्य (४) रहेठाण; घर(५)परिचय ्विसेलुं; रहेलुं **संस्थ** वि ० रहेतुं ; कायम रहेतुं (२) वसतुं ; संस्था १ आ० [संतिष्ठते] साथे ऊभा रहेवुं के वसवुं(२)उपर ऊभा रहेवुं (३)होवुं;जीववुं(४)मानवुं;-प्रभाणे वर्तवुं (५) पूरुं थवुं; सिद्ध थवुं (६) अंतराय आववो; अंतरायथी आवबो (७) १ प० अटकी पडवुं –प्रेरक० स्वस्थ करवुं (जातने) (२) स्थिर करवुं(३)निग्रह करवो संस्था स्त्री० मंडळ; सभा(२)स्थिति; हालत (३)स्वरूप ; प्रकृति (४)धंधो ; रोजगार (५) अंत (६) मृत्यु (७) प्रलय (८) करार ; कबूलात

संस्थान वि०स्थावर(२)न० समूह(३) स्थिति (४) आकृति; आकार (५) रचना(६)सांनिघ्य (७) चार रस्ता भेगा थता होय ते स्थळ(८)विभाग संस्थापन न० भेगुं राखवुं के मूकवुं ते (२)नियम; ब्यवस्था (३)स्थापवु ते; प्रमाणित करवुं ते(४)निग्रह संस्थापना स्त्री० निग्रह (२)शांत पाड-वानो उपाय संस्थित वि॰ साथे रहेलुं के ऊभेलुं(२) रहेलुं; ऊभेलुं(३)नजीकनुं(४)सदृज्ञ (५) एकत्रित (६) निश्चित; स्थिर (७)अटकेलुं; पूरुं थयेलुं (८) सारा घडतर के रचनावाळुं;सारा आकारनुं (९) बारंवार अवरजवरवाळुं (१०) न० स्थिति (११) आकृति संस्थिति स्त्री० साथे होवुं के रहेवुं ते (२) सांनिध्य (३) रहेठाण;आश्रय-स्थान (४) समूह (५) टकी रहेबूं

संस्थिति स्त्री० साथे होवुं के रहेवुं ते
(२) सांनिध्य (३) रहेठाण; आश्रयस्थान (४) समूह (५) टकी रहेवुं
के चालु रहेवुं ते (६) स्थिति; दशा
(७) निग्रह (८) मृत्यु (९) प्रलय
संस्पर्श पुं० संबंध (जेम के विषय अने
इंद्रियोनो)
संस्परा ६ प० स्पर्श करवो (२) पाणी

संस्पृञ् ६ प० स्पर्श करवो (२) पाणी छाटवुं (३) कोगळा करवा

संस्पृष्ट वि० स्पर्शियेलुं; संबंधमां आवेलुं संस्मरण न० याद करवुं ते संस्मृ १ प० याद करवुं; चिंतववुं संस्मृति स्त्री० याद करवुं ते संस्नृत पु० बहेवुं ते; प्रवाह संहत वि० प्रहार करायेलुं; धवायेलुं

(२) जोडायेलुं; जोडेलुं; संबद्ध (३) घट्ट; दृढ (४) संपवाळुं; एक साथे होय तेवुं (५) एकत्रित

संहतभू वि० भवां चडाव्यां होय तेवुं संहति स्त्री० गाढ संबंध (२) एक-संप (३) जथ्थो; समूह (४) ढगलो (५) बळ; ताकात

संहन् २ प० जोडवुं;भेगुंकरवुं (२) ढगलो करवो; संग्रह करवो संहतन न० गाढपणुं; दृढता (२) घडतर;बांधो; शरीर (३)बळ(४) हणवु ते (५) घसवु – मसळवुं ते संहननीय वि० दृढ; घट्ट संहरण न० भेगुं करवुं ते (२) लेवुं ते; पकडवुं ते (३)संकोचवुं ते (४)निग्रह (५) विष्वंस (६) पाछुं खेंची लेवुं ते संहर्ष पु० आनंद के भयथी रोमांच थवां ते (२) हरीफाई संहार पुं भेग करवुं ते; एकठुं करवुं ते (२) संकोचवुंते; संक्षेप (३) पाछुं खेंची लेवुं ते (४) निग्रह (५) विध्वंस; प्रलय (६) अंत; समाप्ति (७) समूह; समुदाय संहित वि० युक्त; साथेनुं(२)संबंधी; मांथी नीकळेलुं (३) गोठबेलुं; म्केलुं (४) नजीकनुं संहिता स्त्री० संयोग (२) समुच्चय (३) पद के लखाणनो व्यवस्थित संग्रह (उदा० मनुसंहिता) वेदोना मंत्र भागनो सळंग संग्रह संह् १ उ० एकठुं करवुं; भेगुं करवुं(२) खेंचवुं; चूसवुं (३) संक्षेप करवो; संकोचवुं (४) संहार करवो (५) पाछु खेंची लेवुं (६) निग्रह करवी; दबाववुं (७) समेटी लेवुं (८) अवळे मार्गे दोरव **संहत** वि० एकटुं करेलुं (२) संको-चेलुं; संक्षिप्त (३) पाछुं खेंचेलुं (४) पकडेलुं(५)निग्रह करेलुं(६)नाश करेलुं संहृति स्त्री० संक्षेप (२) नियमन (३) विध्वंस; नाश (४) संग्रह संहुष् ४ प० हर्ष पामवुं; हर्षित थवुं (२) खडुं – ऊभुं थई जवुं (रोमांच) संहुष्ट वि॰ रोमांचित थयेलुं

साकम् अ० साथे; सहित (२) एकी साथे; एक ज वखते साकल्य न० समग्रता; आखुं एवुं ते साकल्यक वि० बीमार; मांदुं साकल्येन अ० संपूर्ण रीते; समग्रपणे साकार वि० आकार – आकृतिवाळुं (२) सुंदर आकारवाळ् साकांक्ष वि० अभिलाषायुक्त (२) अर्थयुक्त (३) अपेक्षावाळुं साकुल वि० व्याकुळ; मूंझायेलुं साकृत वि० अर्थके अभिप्रायवाळुं(२) सहेतुक; इरादावाळुं (३)विलासयुक्त साकूतम् अ० अर्थं के अभिप्राय साथे (२) विलासयुक्त होय तेम(३) घ्यानपूर्वक साकेत न० अयोध्या शहेर साक्षर वि० वक्तृत्वशक्तिवाळुं साक्षात् अ० नजर सामे; –नी हाजरीमां; खुल्ळंखुल्ला; सीघेसीधुं (२) जाते; स्वयं (३) (समासमां) मूर्तिमंत – देहधारी होय तेम (उदा० 'साक्षाद्यम') साक्षात्कार पुं॰ प्रत्यक्ष ज्ञान; अनुभव साक्षात्कु ८ उ० नजरे जोवं (२) जाते अंतरमां अनुभववुं (३) परिणाम के फळ भोगववुं साक्षिन् वि॰ नजरे जोनारुं; साक्षी होय तेवुं (२) साक्षी (३) परमात्मा (४) जीवात्मा साक्षिप्तम् वि० अविचारीपणे **साक्षेप** वि० कटाक्षपूर्ण (२) पक्षपाती साक्ष्य न० पुरावो; साक्षीपणुं सागर पुं० समुद्र (२) भगीरथ सागरगमा स्त्री० नदी सागरसुता स्त्री० लक्ष्मी सागरसूनु पुं० चंद्र सागरावतं पुं सागरद्वीप सागरात वि० सागरथी वीटळायेलुं; सागर सुधीन् सागरांबरा स्त्री० पृथ्वी

संह्रार पुं० अवाज; घोंघाट

साग्ति वि० अग्तिवाळुं; होम माटे अग्नि राखनाइं साग्निक पुं० गृहस्थ; अग्निहोत्री साम्र वि० संपूर्ण; आखु; पूर्व (२) अधिक; --थी बधु एवं समय सुधी साप्रम् अ० आसी जिंदगी सुधी; खूब साचि अ० वांकुं; त्रांसु; तीरछुं साचिव्य न० प्रधानपदुं (२) मदद; सहाय ; मैत्रीः [बाळब् **साचीकृ** ८ उ० बाजुए वाळवुं; वांकु साजात्य न० एक जाति के वर्गनुं होवुं ते साटोप वि० गविष्ठ; उद्धत (२) भव्य (३)भरेलुं; फूलेलुं(४)गडगडाटवाळुं साटोपम् अ० अभिमानयी; रुआबभेर (२) उद्धतपणे (३) गुस्सायी सात् अ० जे शब्द साथे वपराय तेना रूप पूरेपुरुं बदलाईने थयुं छे – एवो अर्थ बतावे (उदा० भस्मसात्) (२) अथवा तेना काबुमां सोंपी देवायुं होय तेवो अर्थ बतावे (उदा० बाह्मणसात्) सातत्य न० कायमपणुं; चालु रहेवापणुं सातिशय वि० उत्तम; अधिक सातिसार वि० दस्त थई गया होय तेवुं सातीर्थ्य न० एक ज गुरु पासे शीखवुं ते सात्त्विक वि० सर्ह; तात्त्विक (२) साचुं ; खरुं ; स्वाभाविक (३) सद्गुणी ; प्रमाणिक (४) शक्तिमान (५)सत्त्व-गुणी (६)प्रेम वर्गेरे आंतरिक भावथी नीपजेलुं (७) पुं० आंतरिक भावनो बाह्य आविष्कार (काव्य०) सात्त्विकी स्त्री० दुर्गा सारम्य न० सरूपता **सात्यकि** पुं० एक यादव योद्धो सात्वत् पुं० (श्रीकृष्णनो) उपासकः अनुयायी; भक्त(२)यादव सात्वत वि० वैष्णव (२)भक्त (३)पांच-रात्र सिद्धांतने लगतुं (४) पुं० विष्णु (५)बळराम

सास्वताः पुंच्यच्यच एक जातिना लोको सारवतांपति पुं० विष्णु (२) कृष्ण सात्वती स्त्री० नाटकनी चार शैलीओ-मांनी एक (२) शिशुपालनी माता साद पुं ॰ डूबवुं ते; नीचे बेसवुं ते (२) थाक (३) कृशता (४) नाश; अंत (५) दुःख; पीडा सादन न० थकववुं ते (२)नाश करवी ते (३) थाक (४) घर; रहेठाण सादित वि० बेसाडेलुं(२)थाकेलुं(३) खिन्न; हताश (४) विनष्ट (५) **क्षीण** सादिन् वि० नीचे बेसत्(२)थकवनारुं; नाश करनारुं (३) बेसनारुं; सवारी करनारुं (४) पुं० घोडेसवार (५) हाथीसवार (६) रथसवार (७) सारिथ सावृत्य न ० सरखापणुं; समानता (२) प्रतिकृति ; चित्र **साद्य** वि० नवं साद्यस्क वि० झडपी; तरत ज थत् (२) तरत ज परिणमतुं (३) नवुं; ताजुं(४) पुं० एक यज्ञ साद्यंत वि० आखुं; पूर्ण साध् ५ प० पूर्व करवुं ; सिद्ध करवुं (२) जीतवु(४)४ प० सिद्ध थवुं; पूरुं धर् –प्रेरक० साधवुं; पूर्व करवुं (२) सिद्ध करवुं; प्राप्त करवुं (३) पुरवार करवुं (४) ताबे करवुं; बद करवुं (५) नाश करवो (६) जबुं; विदाय थवु साधक वि० सिद्ध करनारुं; पूरुं करनाः (२) असरकारक; कार्यक्षम (३) कुशळ; प्रवीण (४) चमत्कारी; जादुः (५) उपकारक; मददगार(६) पुंर चमत्कारिक सिद्धिओवाळो (७) जादुगर साधन वि० सिद्ध करनारुं; परिणाः उपजावनारुं (२) मेळवनारुं (३) सूचवनारुं (४) न० सिद्ध करबुं-

मेळववं --उपजाववं ते (५) सिद्धिः; परिपूर्णता; प्राप्ति (६) कशुं सिद्ध करवा माटेनो उपाय; उपकरण (७) कारण; निमित्त; सामग्री; ओजार (८) सैन्य के तेनो विभाग (९) साबिती (१०) ताबे करवुं ते; काबूमां **लाववुं ते; वश करवुं ते (११) नाश** साधनता स्त्री० साधनोबाळा होबापणुं **साधना** स्त्री० संपादन करवुं ते; पूर्ण करवुं ते (२) पूजा; उपासना (३) प्रसन्नाकरवुंते कि सेनापति **साधनाध्यक्ष** पुं० लश्करनो निरीक्षक साधनीय वि० कोई कार्य सिद्ध करवामां उपयोगी एवं (२) सिद्ध करवानुं के मेळववानुं एवं सार्थानक वि०एक जधर्मके पंथनुं **साधर्म्य** न० समान धर्म के पदवाळा होवुं ते (२) स्वभाव के गुणधर्मनी समानता **साधारण** वि० बे अथवा वधारेनुं सहि-यार्च (२) सामान्य (३) सार्वत्रिक (४) मिश्रित (५) समान साधारणस्त्री स्त्री० वेश्या **साधारणीकृ ८ उ०** सहियारं करवुं; वहेंची लेब् साधित वि० साबित करेलुं (२) प्राप्त करेलुं (३) पूर्ल करेलुं; सिद्ध करेलुं साथिमन् पुं॰ साधुता ;श्रेष्ठता ; उत्तमता साधिष्ठ वि० सौथी साहं; उत्तम ('साधु' नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) साधीयस् वि० अधिक सारुं ('साधु' नुं त्लनात्मक रूप) साबु वि० सार्ह(२) उचित; योग्य(३) सद्गुणी; धार्मिक(४)मायाळु; सारो भाव राखनारुं (५) अनुकूळ; रुचतुं (६) कुलीन (७) पुं० सारो-सद्गुणी माणस (८) ऋषि; संत; मुनि (९) **वेपारी** ; झवेरी (१०) घीरधार करनारो

साधु अ० 'बाहवाह ! ; 'शाबाश ! ' (२) 'बस करो!' **साधुजात दि**० मुंदर **साधुफल** वि० सारां परिणामवाळुं **साधुमत्** वि० सार्षः; भलुं (२) सुखी साधुवाद पुं० 'शाबाश', 'सार्घ कर्युं' एवी धन्यवाद साध्यृत वि॰ सदाचारी; सद्गुणी; नीतिमान (२) बराबर गोळ आका-रनुं (३) न० सदाचार साधुशील वि० सद्गुणी; सदाचारी साध्य वि० सिद्ध करवा - मेळववा योग्य (२) शक्य; बनी शके - मळी शके तेवुं (३) साबित करवानुं; पुरवार करवानु (४) जीतवानुं; ताबे कर-वानुं (५) मटाडी शकाय तेवुं (६) पुं० एक जातनो देव (७) देव (८) न० सिद्धि; पूर्णता (९) सिद्ध कर-वानी - पुरवार करवानी वाबत साध्वस न० डर; भय (२)व्यग्रता; क्षोभ पितिवता स्त्री (३)सुस्ती साध्वी स्त्री० सदाचारी -पवित्र स्त्री(२) सानंद वि० सुखी; खुश सानंदम् अ० खुशीथी सानाभ्य न० मदद; सहाय **सानु** पुं०, न० क्षिखर; टोच (२) पर्वतनी टोचे आवेलो सपाट भाग(३) जंगल (४) फणगो सानुकंप वि० कृपावंत सानुकोश वि०दयाळु; दयाद्रे सानुतर्षम् अ० तरसथी सानुनय वि० दिनयी; नम्र **सानुबंघ** वि० एकभार्ह; अखंड (२) परिणामवाळुं [नीचेनो) **सानुमत्** पुं• पर्वेत सानूकर्ष वि० धरीवाळो पाटडो (रथ सान्वय वि० आनुवंशिक (२)कटंड के वंशजो सहित एवं (३) संबंधी (४) अथेयक्त

सापत्न वि० हरीफाई - अदेखाईथी करेलुं(२)हरीफनुं; शत्रुनुं(३)पोताना पतिनी बीजी स्त्रीनु, शोकनुं सापत्नाः पुं० इ००० एक ज पतिनी जुदी जुदी पत्नीनां बाळको सापत्न्य न० कोईनी सपत्नी - शोक होवुं ते(२)अदेखाई;दुश्मनावट(३) पु॰ शोकनो दीकरो (४) शत्रु (५) सावको भाई सापदेशम् अ० बहान् काढीने सापवार वि० अपवाद – आळ फेलावतुं (२) आळ लाग्युं होय तेवुं सापबादम् अ ् ठपको आपीने ; निदापूर्वक सापेक विं० (सामान्य रीते समासमां) —नी अपेक्षा होय तेवु; —ना संबंधमां होय तेवुं (२) पक्षपातवाळुं साप्ततंतव पुं० (ब०व०) एक पंथ साप्तपर, साप्तपरीन विकसात पगला साथे चालवाथी थतुं (२) न० वर-कन्याए अग्निनी आसपास सात प्रद-क्षिणा करवी ते (३) गाढ मित्रता साफल्य न० सफळता (२) उपयोगी-पण्ं (३) लाभ साबाघ वि० अव्यवस्थित साम्यसूय वि० अदेखुं; ईर्षाळु सामग पुं० सामवेद गानारो साभग्री स्त्री० कोई कार्यमां उपयोगी एवो के साधन तरीके कामनो सामान सामग्रच न० समग्रपणुं; पूर्णता; कुल – आखुं ते (२) परिवार (३) साधन-सामग्री (४) मोक्ष सामज, सामजात पुं० हाथी सामन् न० सांत्वन; प्रसन्न करवुं ते; शांत पाडवुं ते (२) राजनीतिना चार उपायोमांनो एक -- मीठी वातोधी समजावीने मेळवी लेवुं ते (साम, दाम, दंड, भेद) (३) स्तुतिवाळूं के गाई शकाय तेवुं स्तोत्र (४) साम-

वेदनो मंत्र के पाठ (५) सामवेद(६) अवाज; स्वर सामन्य पुं० सामवेद जाणनारो द्राह्मण; ते वेद गावामा कुशळ एवो **बाह्मण** सामयिक वि० रूढि - परंपराथी चालतु आवेलु (२) करार करेलुं; कबूलेलुं (३) करार मुजबनुं (४) नियमित (५) समयसर होवुं ते (६) नियत समये थतुं के आवर्तु (७) तत्पूरतुं; थोडा बखत माटेनुं **सामयोनि** पुं० हायी (२) ब्रह्मा सामर्थ्य न० बळ; शक्ति (२) समान प्रयोजन के हेतुवाळा होवापणुं (३) एक ज अर्थवाळा होवुं ते सामर्थ्यात् अ० –ना बळे; –ना कारणे सामर्ष वि० गुस्साभर्युं [मधुर वाणी सामवाद पुं॰ शांत पाडे तेवी मीठी-सामवायिक वि० कोई पण मंडळी संबंधी (२) समवाय-संबंध संबंधी (३) पुं० मंत्री (४) कोई मंडळनी **ज्द्गाता** आगंवान सामविद् पुं० सामवेद जाणनारो (२) सामबेद पुं० चारमांनो त्रीजो देद सामंजस्य न० औचित्य (२) खरा-पणुं; साचापणुं सामंत वि० पासे ⊸सरहदे आवेलुं(२) सार्वत्रिक (३) पुं० पडोशी (४) पडोशी राजा (५) खंडियो राजा सामाजिक वि० सभा के समाजनुं(२) पुं० प्रेक्षकः; सम्य सामाध्यायनिक पुं० सामवेदी ब्राह्मण सामानाधिकरण्य न० एक ज - समान परिस्थितिमां होवुं ते (२) एक ज कार्य बजाववुं ते (३) एक ज पदार्थने लागु पडवापणु सामान्य वि० सर्वसाधारण (२)समान; सरखुं (३) मध्यम कक्षानुं (४) तुच्छ (५) आखुं; समग्र (६) न० सर्वत्र होवं ते (७) समान लक्षण

सामान्यतः अ० सामान्यपणे सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम् अ० समान धिषानी करारपत्र भादरयी सामायिक न० समभाव (२) सहियारा सामासिक न० समासोनो आखो समूह सामि अ० अर्धुं; अधूरुं होय तेम (२) घृणापात्र होय तेम (३) बहु वहेलुं; समय पहेलां सामिषेनी स्त्री० यज्ञाग्नि प्रगटावती वस्रते बोलवानी ऋचा (२) समिध सामिष वि० मांसयुक्त; मांस सायेनुं सामीप्य न० समीपता; पासे होवापणुं सामुदायिक वि० समुदायनुं सामुद्र वि० समुद्रन्; समुद्रमाथी नीप-जेलुं (२) पुं० वहाणवटी; दरियाई वेपारी (३) न० शरीर उपरनुं सामुद्रिक चिह्न के लक्षण सामुद्रिक वि० समुद्रथी नीपजेलुं (२) समुद्रनी मुसाफरी करतुं; समुद्र मार्गे वेपार करतुं (३) शरीर उपरना रुक्षणो संबंधी (जे उपरथी सार्ह के खराब नसीब भाखवामां आवे छे) साम्ना अ० खुशीथी **साम्य** न०, साम्यता स्त्री० सरखापणुं सादृश्य (२) समानभाव (३) मेळ; मुसंगतता (४) निष्पक्षता; तटस्यवृत्ति साम्यतालविद्यारद वि० संगीतना ताल अने संगतमां कुशळ भौम राज्य **सरभ्राज्य** न० सार्वभौमत्व (२) सार्व-**साय** पुं ० संघ्याकाळ;सांज(२)अंत(३)बाण सायक पुं० बाण (२) तलवार सायकपुंख पुं० बाणनो पींछांवाळी भाग सायण पुं वेदना सुप्रसिद्ध भाष्यकार (ई० स० १३७०) सायधूर्त पुं॰ सांज रूपी ठग (२) चंद्र सायम् अ० सांजे; संध्याकाळे **सार्यकाल पुं**० सांजनो समय

सायंत्रातर् अ० सांजे अने सवारे साबाह्य पुं० सांज सायुज्य न० भळी जवुं – एकरूप यई जवुं ते (चार प्रकारनी मुक्तिमांथी एक) (२) सरखापणुं सायुध्य वि० शस्त्रसञ्ज एवं सार वि० अगत्यनुं;तत्त्वरूप (२)उत्तमः; श्रेष्ठ(३)साचुं; खरुं (४)समर्थ; दृढ (५) बरोबर पुरवार थयेलुं (६) (समा-सने अंते)सौथी सारुं; श्रेष्ठ (७)न्यायी (८)हांको काढनार्घ;दूर करनार्ह(९) पुं०, न० अर्क; कस; सत्त्व (१०) मज्जा (११) वृक्षनो रस (१२) संक्षेप; तात्पर्यं (१३) बळ; शक्ति (१४) दृढता (१५)धन ; मिलकत (१६)न० पाणी (१७)पोलाद सारक वि० रेचक सारगात्र वि० मजबूत अवयवीबाळुं सारगुरु वि० वजनने कारणे भारे एवं सारघ न० मध सारज न० ताजुं माखण सारणि स्त्री० नहेर; नीक (२) नानी सारणिक वि० मुसाफरी करतुं(२)पु० प्रवासी; वटेमार्गु (३) प्रवासी वेपारी सारणी स्त्री० जुओ 'सारणि ' सारतर पुं० केळ सारतस् अ० धन प्रमाणे (२) बळपूर्वक (३) जात प्रमाणे सारिय पुं० रथ हांकनार (२) मददनीक साथी (३) मार्गदर्शक (४)महासायर सारध्य न० सारधिपणु सारफल्गु वि० उत्तम अने हलकु सारभांड न० वेपार माटेनो माल **सारमेथ पुं**० कूतरो सारमेयी स्त्री० कूतरी सारव वि० सरयु नदीनुं सारक्षत न० जुओ 'सारसन' सारस वि० बूम पाडतुं; बोलावतुं(२)

सायंतन वि० संघ्या समयनुं

सरोवरनुं (३)पुं० ते नामनूं एक पक्षी (४) हस पक्षी (५) पक्षी (६) चंद्र (७) न०कमळ (८) स्त्रीनो कमरबंघ; कंदोरा **सारसक** पुं० चक्रवाक सारसन न० स्त्रीनो कंदोरो (२) योद्धानो कमरपट्टो (३) छाती उपरनुं बखतर सारसाक्ष न० एक रत्न सारसाक्षी स्त्री० कमळ जेवां नेत्रवाळी **चित्रवाकी** सारसिका स्त्री० सारस पक्षीनी मादा(२) सारसी स्त्री० सारस पक्षीनी मादा सारस्य न० बूम; पोकार (२) पुष्कळ पाणी होवं ते सारस्वत वि० सरस्वती देवी संबंधी (२)सरस्वती नदी संबंधी(३)वक्तृत्व-शक्तिवाळुं (४) पुं ० सरस्वती नदीनी आसपासनो प्रदेश (५) ब्राह्मणनो एक वर्ग (६) वाणी; वक्तृता **सारंग** वि० काबरचीतह(२)पुं० काबर-चीतरो वर्ण (३) काबरचीतरो मृग (४) मृग (५) हाथी (६) मघमास्ती (७) काळो भमरो (८) सिंह (९) कोयल (१०)मोर (११) शंख (१२) कामदेव (१३) चंदन (१४) भक्त (१५) एक राग सारंगी स्त्री० एक तंतुवाद्य (२) काबर-चीतरा वर्णनी मृगली सारासार वि० कीमती अने किंमत विनानुं; कामनुं अने नकामुं (२) मजबूत अने नबळुं ∤एक पक्षी सारि स्त्री० सोगठुं; शेतरंजनुं महोशं(२) सारिका स्त्री० मेना जेवुं एक पंखी (२) तंतुवाद्यना तार जेना उपरथी पसार थाय छे ते पुल वाळ सारिन् वि० जतुं;सरतुं(२)-ना सार-सारिष्ठ वि० सौथी सार्र सारी स्त्री० जुओ 'सारि'

सारूप्य न० समान रूप के आकृति होवी ते (२) सरूपताः; सदृशता (३) (चार मुक्तिओमांनी एक) देव साथे एकरूप थई जवुं – भळी जवुं ते **सार्येल** वि० रोकायेलुं; अटकावायेलुं सार्थे वि० अर्थवाळुं (२) हेतुबाळुं(३) समान अर्थवाळ (४) उपयोगी (५) पैसादार (६) पुं० धनी; पैसादार (७) वेपारीओनी वणजार (८) माणसोनो काफलो – संघ (९) प्राणीओनुं टोळुं (१०) टोळुं; समुदाय सार्यंक वि॰ उपयोगी (२) अर्थवाळुं सार्यवाह पुं०, सार्थवाहन पु० वणजा-रनो मुखियो; मुख्य वेपारी सार्यहीन वि० वणजारमांथी पाछळ रही गर्येलुं; वणजारे पाछळ छोडी दीधेलुं सायिक वि० -साथे मुसाफरी करतुं (२) पुं० वेपारी (३) मुसःफरीनो साथी साद्रे वि० भीन् सार्थ वि० अर्था जेटलुं वघारे होय तेवुं (उदा० 'सार्धशतम् '-१५०) **सार्धम् अ० साथे**; सोबतमां सार्प पुं० आश्लेषा नक्षत्र सार्व वि० सामान्य; सार्वत्रिक (२) बघाने माफक आदे तेवु(३)पु० बौद्ध के जैन भिक्षु सार्वक।सिक वि० बधी इच्छाओ पूरी सार्वजनिक, सार्वजनीन वि० सर्वे माटेनुं; सर्वने उपयोगन् पडे तेव **सार्वत्रिक** वि० दरेक स्थळनुं; बधे लागु सार्वभौतिक वि० वधा भूतो के भूत प्राणीओ संबंधी सार्वभौम वि० आखी पृथ्वीने लगतुं (२) मननी बघी भूमिकाओने लगतु (३)चक्रवर्ती राजा(४)कुबेरनी उत्तर दिशानी दिग्गज सार्वे**लीकिक** वि० बधा लोको जाणता होय तेवुं; बधे प्रवर्ततुं; सार्वत्रिक

सार्ववेबस् पुं० यज्ञमां बधी वस्तुओनुं दान करनारो (२)न० माणसनी बधी शिक्तिबाळ् सार्ष्ट वि॰ समान पद - स्थिति - के **साष्टिता** स्त्री० (चार प्रकारनी मुक्ति-ओमांनी एक) शक्ति अने गुणोमां परमात्मानी समानता सालः पुं० एक वृक्ष (२) वृक्ष सालस वि० थाकेलुं(२)आळसु; सुस्त सालंकार वि० आभूषणयुक्त **स(लावृक** पुं० कूतरो ('शालावृक') **सालोक्य** न० देवना ज लोकमां साथे रहेवुं ते (चार मुक्तिओमांनी एक) सावकाशम् अ० फुरसदे सावज्ञ वि० अवज्ञा करतुं; तुच्छकारतु सावद्य वि॰ निदापात्र; ठपकापात्र सावषान वि० लक्ष आपतुं; काळजी-वाळुं (२) सावघ (३) उद्योगी सावधानम् अ० काळजीयी ; लक्ष आपीने सावधारण वि० मर्यादित साविध वि॰ मर्यादावाळुं; सीमित सावन पुं० यज्ञ करावनार(२)यज्ञनी पूर्णाहुति सावयव वि० अवयवीनुं बनेलुं सावरण वि॰ छुपावेलुं; गुप्त (२) ढांकेलुं; वासेलुं सावलेप वि॰ पविष्ठ; उद्धत सावलेपम् अ० उद्धताईयी सावशेष वि० अवशेष बाकी रहेलुं होय तेवुं(२)अधूर्य सावष्टंभ वि० भव्य; उदात्त; गौरव-युक्त (२) बहादुर; पराऋमी (३) द्ढ; मक्कम सावष्टंभम् अ० मक्कमपणे; दृढ़ताथी साबहेलम् अ० अवहेलायी; तुच्छकार-पूर्वक साबित्र वि० सूर्य संबंधी(२)सूर्यवंशी (३)गायत्री साथेनुं(४)पुं० सूर्ये(५)

कर्ण (६)न० यज्ञोपवीत; जनोई(७) यज्ञोपवीत संस्कार(८)हस्त नक्षत्र सावित्री स्त्री० प्रकाशनुं किरण(२) गायत्री (३) यज्ञोपवीत संस्कार (४) ब्रह्मानी एक पत्नी (५) पार्वती (६) शल्य देशना राजा सत्यवाननी पत्नी (जे यमराज पासेथी पतिने छोडावी लावी हती) साविनी स्त्री० नदी सावेगम् अ० आवेशपूर्वक साशंक वि॰ भयभीत; गाभरुं साशंस वि० आशाभर्युं; इतेजार **साशंसम् अ० आ**शा साथे सारचर्य वि० नवाई पमाडे तेवा वर्तनबाळुं **साम्य** वि० रडतुं; आंसु पाडतुं साश्र वि० आंसुभयुँ **साध्टांगम् अ० आठे अंग नमा**वीने (बे हाथ, छाती, कपाळ, बे ढींचण अने बे पग –ए आठे अंग जमीनने अडे तेम नमस्कार करवा) सास वि० धनुष्यवाळ् विजयवंत **सासहि** वि० सहन करी शके तेवुं(२) **सासि** वि० असि – तलवारवाळुं सासुसू वि० बाणीवाळुं सासूय वि० अदेखु; ईष्यांळु; तुच्छकारतु सासूयम् अ० अदेखाईथी (२) गुस्से थईने ; तुच्छकारपूर्वक सास्ना स्त्री० बळदने गळे लटकती चामडी - गोदडी सास्रम् अ० आंखोमां पाणी लाबीने साहचर्यं न० साथीपणुं; सोबत (२) साथे रहेवुं ते; साथे होवुं ते साहस न० बळजवरी; अत्याचार(२) चोरी-बळात्कार वगेरे कोई पण गुनो (३)धृष्टताः हिमत (४) साहसभर्युं कृत्य (५) परिणामना विचार विना करेलुं अविचारी कृत्य साहसकारिन् वि० साहसी (२) अवि-

साहसिक वि० अत्याचारी; जुलमी; कूर(२)बहादुर; साहसवाळूं; अवि-चारी (३) पुं० साहस करनारो --अविचारी → मरिणयो माणस (४) लूटारः; बदमाश (५)व्यभिचारी (६) न० साहसभर्युं कृत्य | जबरी साहसिक्य न० साहसिकपणुं (२) बळ-साहस्र वि० हजार संबंधी(२)हजारनुं बनेलुं(३)हजारनुं खरीदेलुं(४)हजार-गणु(५)पु० हजार माण्सनी लक्करी टुकडी(६)न० हजारनो समूह **साहायक** न० मदद;सहाय (२) मैत्री (३) सहायक सैन्य साहाय्य न० मदद(२)मैत्री(३)मुश्के-लोमां मदद करवी ते साहित्य न० समुदाय; मंडळ (२) काव्य-रचना के तेत्री बीजी साक्षरी रचना (३)काव्यशास्त्र (४)साधनसामग्री **साह्य** न० मंडळ; समाज(२)मदद साह्य वि० नामनुं; नामे ओळखातुं साह्यय पुं० जानवरोनी साठमारी; ते उपर खेळातो जुगार सांकर्य न० संकरता; भेळसेळ सांक्जित त० घणां पंखीओना क्जननो मिश्र, मोटो अवाज सांकेतिक वि० सूचक; प्रतीक रूप(२) मंकेतथी ठरावेलुं; रूढिथी ऊभुं थयेलुं सांख्य वि० संख्या संबंधी (२) गणतरी करनार्छ (३) तर्कप्रवीण (४) विवेक करनार्छ (५) पुं०, न० छ बैदिक दर्शनो-मानुं कपिले प्रवतिविलुं दर्शन (६) पुं० सांख्य दर्शननी अनुयायी **सांग** वि०अंग – अवयववाळुं (२)द**रेक** अंगमां पूर्व (३) छ अंगो सहित (४) पूर्ण - पूरुं थयेलु सांगतिक पुं भूलाकाती; महेमान सांगत्य न० संगति; मिलन **सांगोपांग वि**० अंग अने उपांग सहित (वेदोनो पूरो अभ्यास करवो)

सांग्रामिक वि०युद्ध संबंधी; लक्करी (२) न० युद्धनी सामग्री सांतर वि० वच्चे खाली जगा होय तेयुं (२) आछा वणाटवाळुं (३) स्थिर के दृढ नहि तेवुं [आपवुं सांत्व १० उ० सांत्वन करवुं; आश्वासन सांत्व पु०, न०, सांत्वन न०, सांत्वना, सांत्वा स्त्री० आश्वासन; शांत पाडवुं [सुदामाना गुरु) सांबीपनि पुं० एक ऋषि (श्रीकृष्ण अने सांद्र वि० निबिड; गाढ़ (२) विपुल; जाडुं; घणुं (३) एक साथे – जूथमां होय तेवुं (४) मजबूत; स्थूल (५) पूष्कळ; घणुं (६) तीत्र (७) चीकणुं (८) लीसुं; सुंवाळुं(९)झाडी; जंगल **सांद्रीकृत** वि० गाढ्ं – जाडुं बनावेलुं (२) वधारेलुं सांघ वि० संघि – सांघा आगळ आवेलुं सांधिविप्रहिक पुं० संधि अने युद्ध माटेनी प्रधान ; परदेश मंत्री प्रातःकाळन् सांध्य वि० संध्या समयनुं; सांजनुं(२) सांनहनिक वि० कवचधारी (२) **युद्ध** माटे तैयार थवा प्रेरनारुं सानाव्य पुं० घी साथे मेळवेलुं अने अग्निने बलि तरीके आपवानुं होम द्रव्य सांनाहिक वि० जुओ 'सांनहनिक ' **सांनिध्य** न० पडोश; नजीकपणुं (२) हाजरी; मोजूदगी स्रांनिपातिक वि० परचूरण (२) गूंचवणी भरेलुं (३) शरीरनी त्रण धातुओनी गुंचवणिया विकृति थवाशी थयेलुं सांपराथ वि० युद्ध संबंधी (२) पर-लोक संबंधी (३) पुं०, न० झघडो; तकरार (४) परलोक; परलोकनुं जीवन (५) परलोक प्राप्त करवानो मार्ग - साधन (६) मददनीश (७) विपत्ति; आफत सांपराधिक वि० युद्ध संबंधी (२) लश्करी

दृष्टिए उपयोगी (३)आफतभर्युं(४) परलोकने लगतुं (५) उत्तरिक्या संबंधी (७)न० युद्ध; लडाई (८) पुं० युद्धनो रथ ्रिस्तुत ; बंधबेसतुं सांप्रत वि० योग्य; उचित; अनुकूळ (२) साप्रतम् अ० हमणां; आ समये (२) तरत ज (३) वखतसर; उचितपणे सांप्रतिक वि॰ चालु समयने लगतुं(२) बराबर; खरुं; उचित **सांब** पुं० शिव **सांमुख्य** न० हाजरी (२) सामे मोंए होवुं ते (३) अनुग्रह; महेरबानी सांयात्रिक पुं० दरियाई मार्गे वेपार करनारो;वहाणवटी [महान योद्धो सांयुगीन न० वि० युद्धकुशळ (२)पुं० **साराविण** न० कोलाहल; घोंघाट **सांवत्सरिक** वि० वार्षिक (२)पुं० जोषी (३)पंचांग बनावनारो 💹 प्रलयाग्नि **सांवर्तक** वि० प्रलयकाळनुं (२) पुं० सांशियक वि० अनिश्चित; संशययुक्त (२) त० जोखमभरेलुं कृत्य सांसारिक वि० संसार-व्यवहार संबंधी: दुन्यवी; आ लोकनुं सरिसिद्धिक वि० स्वभावसिद्धः; सहजः; नैसर्गिक (२) सिद्धिबळथी उपजावेलुं सि ५,९ उ० बांधवुं; गांठवुं(२)फांदवुं सिकता स्त्री॰ रेताळ भूमि(२)रेती (मोटे भागे ब० व०) सिकतिल वि० रेताळ सिक्त ('सिच्'नुं भू० कृ०) सींचेलुं; छांटेलुं; रेडेलुं सिक्य पुं॰ (रांघेलो) भात (२)भातनो गोळो (३)न० मीण (४)गळी सिच्६ ७० [सिचिति-ते] छांटवुं(२) पाणी पावुं; सींचवुं(३)अंदर रेडवुं (४)अर्पण करवुं (जलांजलि इ०)(५) िजीर्णवस्त्र पलाळव **सिचय पुं०** वस्त्र; कपडूं(२)फाटेलुं–

सित ('सो 'नुं भू० कृ०) वि० सफेद (२)बंधायेलुं; गठायेलुं (३)जोडायेलुं; सहित एवुं (४) घेरायेलुं (५) पुं० सफेद रंग(६)शुक्लपक्ष (७) खांड;साकर सितकर पुं० चंद्र जाळ सितछत्र न० राजछत्र (२)करोळियानुं सिततुरग पुं० अर्जुन (सफेद अश्ववाळो) सितरिश्म पुं० चंद्र सितवाजिन् पुं० अर्जुन(सफेद घोडावाळो) सितवारण पुं० ऐरावत सितसौम्यौ पुं० द्वि० व० शुक्र अने बुध सिता स्त्री० खडी साकर(२)चांदनी (३)सुंदर स्त्री(४)मद्य, दारू(५) सफंद दरा सितापांग पुं० मोर (तेना आंखना खूणा दूध जेवा सफेद होय छे तेथी) सितासितगुण वि० ताणावाणामां काळो अने भोळो दोरो वाराफरती होय तेवुं सितांश पु० चंद्र सिति वि० सफेद(२)काळु सितेतर वि० काळुं सिद्ध ('सिध्'नुभू० कृ०) वि० पूर्व थयेलु; सफळ थयेलु; प्राप्त थयेलु(२) पुरवार थयेलुं; निश्चित थयेलुं(३) रंघायेलुं (४) परिपक्व थयेलुं (५) प्रस्थात ; प्रसिद्ध (६) पुं ० आठ सिद्धिओ के चमत्कारी शक्तिओवाळो देव के मनुष्य (७) दिव्य दृष्टि के शक्तिवाळो मुनि (८) ऋषि (९) जादुगर सिद्धयात्रिक पुं० सिद्धिओ मेळवदा भटकनारो **सिद्धरस** पुं• पारी (२) कीमियागर **सिद्धव्यंजन** पुं० तपस्वी वेशघारी जासूस

सिद्धादेश पुं० कोई मुनिए भाखेलुं भविष्य (२)भविष्य भाखनार पेगंबर

सिद्धार्थ वि० इच्छित वस्तु प्राप्त के पूर्ण

सिद्धान्न न० रांधेलुं अनाज

सिद्धापगा स्त्री० गंगानदी

करी होय तेवुं(२)पुं० थोळा सरसव (३)गौतम बुढनुं नाम सिद्धार्यक पुं० थोळा सरसव सिद्धासन न० एक प्रकारनुं आसन सिद्धांगना स्त्री० सिद्ध जातिनी देवी— स्त्री (अंजन सिद्धांजन न० चमत्कारी शक्तिवाळुं सिद्धांत पुं० साचो साबित ययेलो एवो निश्चित मत के निर्णय सिद्धां स्त्री० सफळता; पूर्णता; प्राप्ति

सिक्धि स्त्री० सफळता; पूर्णता; प्राप्ति
(२)समृद्धि(३)पुरवार थवुंते(४)
फॅसलो (फरियादनो)(५) रांधवुं ते
(६)चमत्कारी शक्ति (आठ गणाय छे
अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य,
महिमा, ईशित्व, वशित्व, कामा-वसायिता)

सिद्धिव वि० सफळता आपनार्ह; सुख आपनार्ह(२)आठ सिद्धिओ आपनार्ह सिष् ४ प० सिद्ध थवुं; सफळ थवुं; पार पडवुं (२) बराबर लक्ष उपर तकावुं (३)साबित के पुरवार थवुं(४)जिताबुं (५) १ प० जवुं (६) निवारवुं (७) आज्ञा करवी; सासन करवुं

सिध्य पुं० पुष्य नक्षत्र सिनीवाली स्त्री० चौदशयुक्त अमावा-स्या (ज्यारे चंद्ररेला भाग्ये देलाय तेम अगे छे)

सिन्य १ प० भीनुं करवुं सिप्रा स्त्री०स्त्रीनी कटिमेखळा-कंदोरो (२) उज्जयिनी पामेनी नदी सिमिसिमायते आ० (टाढ चडवी; धूजवुं)

सिरा स्त्री० शिरा; नस [जोडवुं सिब् ४ प० [सीव्यति] सीववुं (२) सिष्णासु वि० नाह्वानी इच्छावाळुं सिसिक्षा ('सिच्' उपरथी) स्त्री० सींचवानी-छांटवानी इच्छा सिसुक्षा स्त्री० उत्पन्न करवानी इच्छा सिंघाणक न० लोखंडनो काट (२) नाकनी लींट

सिंचन न० सींचवुं-रेडवुं ते सिंजा स्त्री० धातुनां घरेणांनो रणकार सिंजित न० (झांझर इ०नो) झमकार सिंजिनी स्त्री० धनुष्यनी दोरी सिंडुक, सिंडुवार, सिंडुवारक पुं० एक वृक्ष (निगुंडी?)

सिंदूर पुं० एक वृक्ष (२) न० सिंदूर; पारो सीसुं तथा गंधकनी मेळवणीनो लाल भूको

तिषु पुं० समुद्र; सागर (२) सिंधु नदी
(२) सिंधु नदीनो प्रदेश (४) माळवानी
एक नदी (५) मोटी नदी
सिंधुपिब पुं० अगस्त्य मुनि
सिंधुपिब पुं० हाथी
सिंधुर पुं० हाथी
सिंधुराब पुं० जयद्रथराजा (ईराननो)

सिषुराज पुरुजयद्रथराजा (इरानना) सिषुवार पुरुजातवंत घोडो (सिष्ठ के सिषुसौवीरा: पुरुबर्ग्य सिष्ठु नदीनी आसपास रहेता एक जातना लोक

सिह पुँ० एक रानी हिसक प्राणी (पश्-ओनो राजा मनाय छे) (२) (समा-सने अंते) ते ते वर्गनो उत्तम-श्रेष्ठ ते (उदा० 'पुरुषसिंह') सिहकर्ण पुं० सिंहनी मूर्तिवाळो खूणो

सिहदार न० (महेल वगरेनो) मु**हय** दरवाजो

सिहध्वनि पुं० सिहनी गर्जना सिहनर्दिन् वि० सिहनी जेम गर्जेतुं सिहनाद पुं० सिहनी गर्जना (२) तेवी योद्धाओनी गर्जना

सिंहल न० सिलोन बेट सिंहसहनन वि० सिंह जेवा मजबूत बांघावाळुं (२) सुंदर [सीट सिंहाणक न० लोढानो कोट (२) नाकनी सिंहाबलोकन न० सिंहनी पेठे पाछळ नजर करवी ते (आगळ जतां जतां)

सिहासन न० सिहनी आकृतिवाळुं ऊंचुं आसन (राजा, देव के आचार्यमुं) सिहिका स्त्री० राहुनी माता सिहिकासुत, सिहिकासूनु पुं० राहु सिही स्त्री० सिहण (२) राहुनी माता **सीकर** पुं० फरफर; छांटा **सीता** स्त्री०हळ वडे पाडेला चास (२) खेडेली जमीन (३)खेती (४)जनकनी पुत्री; रामनां पत्नी (५) दारू; मद्य **सीताद्रव्य** न० खेतीनुं ओजार सीताफल न० सीताफळ सीत्कार पुं०, सीत्कृति स्त्री० सिसकारी (स्वास अंदर खेंचवाथी यतो); टाढथी कंपवानो,निसासानो के वेदनानो अवाज सीघु पुं०, न० मद्य सीमन् स्त्री० हद; सीमा; मर्यादा सीमंत पुं० सरहदनी रेखा;सीमाचिह्न (२) वाळ बे भागमां ओळी वच्चे पाडे छे ते सेंथी (३) जुओ 'सीमंतोश्चयन' सीमंतयति प० (बाळना सेंथी काढी भाग पाडवा; रेखा वडे अंकित करवुं के जुदुं पाडवुं) जुद् पाडेल सीमंतित वि० सेंथी पाडेलुं(२)लीटीथी सीमंतिनी स्त्री० स्त्री **सीमंतोन्नयन** न० सगर्भा स्त्रीनो एक संस्कार (चोथे, छठ्ठे के आठमे महिने करातो) सीमा स्त्री० हद; मर्यादा (२) हदनुं निशान (३) पराकाष्ठा; छेल्ली हद (४) वृषण **सीमांत** पुं० सरहद (२) छेवटनी हद **सीमोल्लंघन** न० हद ओळंगवी ते **सीर** पुं० हळ **सीरध्वज पुं**० जनक राजा सीरपाणि पुं०बळराम; हलायुघ सीरिन् पुं० बळराम सीरोत्कषण न० हळ वडे सेडवुंते **सीव् ४प० जुओ** 'सिव्'

सुख **सीवनी** स्त्री० सीय सीस, सीसक, सीसपत्र, सीसपत्रक न० सु १ उ० जवुं; खसवुं(२)१, २ प० सार्वेभौमत्व होवुं; सत्ता होवी(३) ५ उ० रस काढवो; रस निचोववो(४) अर्क गाळवो (५) रेडवुं; छांटवुं(६) होमवुं; यज्ञ करवो (खास करीने सोमयज्ञ) सु अ० नाम साथे कर्मधारय अने बहु-श्रीहि समासामां जोड़ातो तेम ज विशे-पणो अने अवयवो साथे नीचेना अर्थमां वपरातो उपसर्गः (१) सार्वः उत्तम (२)सुंदर; मनोहर(३)सारी रीते; पूरेपूरुं (४) सहेलाईथी(५)घणुं ; अत्यंत (६)आदरणीय (७) मंजूरी, समृद्धि के दुःख एअर्थपण बतावे **सुकन्या स्त्री०** शर्याति राजानी पुत्री अने च्यवन ऋषिनी पत्नी **सुकर** वि० सहेलुं; शक्य **सुकल्पित** वि० सुसज्ज **सुकुमार** वि० नाजुक; कोमळ (२) सुंदर यौवनवाळुं **सुकृत्** वि० पुष्यशाळी; सद्वर्तनवाळ् (२)विद्वान (३)नसीबदार (४)सारा यज्ञ करनारुं **सुकृत वि**० योग्य रीते क**रे**लुं(२)पूरे_ंहं करेळुं (३) न० कृतकृत्य (४) पुण्य (५) तपश्चर्याः **मुक्तिन्** वि० सत्कृत्यकरनारुं; धार्मिक; पुण्यनाळी (२) न्यायी (३) विद्वान (४)नसीबदार(५) उदार **सुकृत्य** न० सत्कार्यः; सार्वे काम **सुख** वि० सुखी (२)सुखकर(३)स**द्**गृणी (४)-मां आनंद लेतुं; सहेलुं; सरळ (६)योग्य; उचित(७)न० (आराम -चेन-शांति-संतोष-तृष्ति- उपभोग -एवो)तनमनने गमे तेवो अनुभव (८) समृद्धि (९) आरोग्य (१०) हित;

कल्याण (११) आराम; सगवड

मुखजात वि० सुखी **सुखतंत्र** वि० सुख भोगवतुं **सुखद** वि० सुख आपनारुं **मुखप्रक्न** पुं० कुशळसमाचार पूछवाते **मुलम् अ**० सुखेथी (२) खुशीथी (३) सहेलाईथी **मुखयति** प० (खुश करवुं;आनंद आपवो) **मुखरूप** वि० सारा देखावनुं **मुखश्रव, सुखश्रुति** वि० कानने गमे तेवुं; मधुर अवाजवाळुं **सुखसंगिन्** वि० सुखमां आसक्त एवं **सुखसाध्य** वि० सहेलाईथी मेळवी शकाय तेवुं(२)सहेलाईथी मटाडी शकाय तेवुं मुलस्पर्श वि० मुखकर स्पर्शवाळुं (२) मुखप्रद; आनंद आपनार्ह मुखाकृत वि० सुखप्रद; आनंददायक सुखागत न० स्वागत; अभिवादन **सुस्तात्मन्** पुं० परमात्मा; ब्रह्म **सुखाप्लव** वि० स्नान माटे योग्य एवुं **सुक्षायते** आ० (सुखी थवुं; सुख आपवुं; अनुकूळ थवुं) **मुखालोक** वि० देखावडुं; सुंदर **मुखावह** वि० सुखद; सुख आपनारुं सुसास्वाद वि० स्वादिष्ठ(२)सुखप्रद (३)पुं० सारो स्वाद (४) आनंद; उपभोग (सुखनी) सुखित वि० सुखी; आनंदित (२)न० सिधु; तपस्वी सुख ; आनंद **सुखिन्** वि० सुखी; खुशी (२) पुं० **सुस्रोचित** वि० सुस्त-सगवडयी टेवायेलुं **मुखोदर्क** वि० सुखमां परिणमतुं सुख्याति स्त्री० अत्यंत प्रख्याति सुग वि॰ सुंदर रीते चालनारुं (२) सहेलाईथी पासे जई शकाय तेवुं (३) सहेलाईथी समजी शकाय तेवुं (४)पुं० गंधर्व (५) न० विष्ठा (६) सुख सुगत पुं० गौतमबुद्ध सुगम वि० सहेलाईथी जई शकाय तेवुं (२)सहेलुं(३)समजी शकाय तेवुं

सुगंघ पुं० सुवास (२) न० चंदन सुगंधि वि० सुवासित; खुशबोदार सुगृह वि० सारा घरवाळुं;सारा रहे<mark>ठाण-</mark> [बोलवुं शुभ गणाय तेवुं सुगृहीत वि० सारी रीते पकडेलुं(२) सुगृहीतनामधेय, सुगृहीतनामन् वि० जेनु नाम लेवाथी पुण्य थाय तेवुं **सुग्रीव** वि० सुंदर डोकवाळुं (२) पुं० वालीनो भाई; वानरोनो राजा **सुग्रीवेश** पुं० राम सुघोष वि० सारा अवाजवाळुं (२) पुं० नकुळनो शंख सुचरित, सुचरित्र वि० सारा वर्तनवाळुं; सुशील(२)न० पुण्य (३)सत्कर्म सुचिर वि० घणुं लांबुं (समय) मुचिरम् अ० लांबा समय सुधी **मुचेतस्** वि० सारा अंतःकरणवाळुं(२) सारा भाववाळु **सुचेतीकृत** वि० संतुष्ट हृदयवाळुं(२) सुजन पुं० सद्गुणी माणस;सज्जन(२) इंद्रनो सारिथ [बहादुरी मुजनता स्त्री० सज्जनता; भराई (२) सुजन्मन् वि० खानदानः ऊंचा कुळमां जन्मेलुं(२)विधिसर लग्नथी *जन्मे*लुं **सुजल्प** पुं० सारी रीते करेली वातचीत <mark>सुजात</mark> वि० बराबर वधेलुं;ऊंचुं(२) सारी रीते घडायेलुं; घाटीलुं (३) कुलीन (४) सुंदर (५) को मळ **सुजूष** (हणवुं; मारवुं) सुर्टक वि० तीत्र;तीर्षु;तीखुं(अवाज) **सुत** ('सु'नुंभू० कृ०) वि० रेडेलुं (२) निचोवीने काढेलुं (३) उत्पन्न करेलुं; जन्म आपेलुं(४)पुं०पुत्र(५) संतान(६)सोमरस(७)सोमयज्ञ सुतर्निवशेषम् अ० पुत्रनी पेठे **मुतनु** वि० सुंदर(२)नाजुक(३)क्रुश सुतनु(-नू) स्त्री० सुदर स्त्री मुतपस् वि॰ कठोर तपश्चर्या करनारं

(२)खूब गरमीवाळुं(३)पुं० तपस्वी (४) सूर्य (५) न० तीव तप सुतमाम् अ० उत्तम-श्रेष्ठ होय तेम **मुतराम्** अ० वधु सारुं होय तेम;घणुं वधारे होय तेम (२)परिणामे **मुतस्य न० सात पाताळोगांनुं एक मुतंगम** पुं० पुत्रनो पिता मुतंत्री वि० सारी रीते तार खेंच्या होय तेवुं (२) सारा अवाजवाळुं (वाद्य) सुता स्त्री० पुत्री **सुतार** वि० घणा ऊंचा अवाजवाळूं (२)तेजस्वी(३)सुंदर कीकीओवाळूं मुर्तिन् वि० पुत्र के संततिबाळुं(२) पुं० पिता **सुतिनी** स्त्री० माता **सुतीक्ष्ण** वि० तीक्ष्ण भारवाळुं (२) घणुं तीणुं (३) खूब धीडा करे तेवुं (४) पुं० एक ऋषि समय **युत्याकाल** पुं० सोमरस निचोददानो सुत्रामन् पुं० इंद्र **मुदक्षिण** वि० न्यायी;प्रमाणिकः (२) घणी दक्षिणाओ अपाती होय तेवुं (३) कुशळ; प्रवीण (४) विनयी **सुदक्षिणा** स्वी० दिलीप राजानी राणी **मुदत्** वि० सुंदर दांतवाळुं सुदर्श वि० सुंदर देखावनुं **मुदर्शन** वि० सुंदर; देखावडुं (२) सहेलाईथी जोई शकाय तेवुं(३)पुं० विष्णुनु चक (४) शिव (५) मेर पर्वत (६)न० जंबुद्वीप(७)इंद्रनी नगरी **मुदर्शना** स्त्री० सुंदर स्त्री (२) स्त्री (३) आज्ञा; हुकम राजधानीः मुदर्शनी स्त्री० अमरावती; इंद्रनी **मुदामन्** वि० उदार; दानी (२) पुं० श्रीकृष्णनो मित्र ब्राह्मण **सुदि** अ० शुक्लपक्षमां मुदुरासद वि० पासे न जई शकाय तेवुं सुदुर्लभ वि॰ महा मुश्केलीए मळी शके तेवु

सुदूर वि० खूब दूर एवं **सुदूरम्** अ० अत्यंत दूर (२) अतिशय प्रमाणमां ; अत्यंत **सुबृढ** वि० खूब मक्कम (२) मजबूत **सुदृश्** वि० सुंदर आंखोबाळुं (२) स्त्री० सुंदर स्त्री मुधन्वन् वि॰ उत्तम धनुर्धारी एवं मुधर्मन् वि० पोतानां कर्तव्य बराबर बजावनारं (२) पुं० इंद्रनो सभाखंड के महेल सुधर्मा स्त्री० देवसभा (२) द्वारका सुषा स्त्री० अमृत(२)फूलनुं मव(३) रस (४) चूनो (घोळवानो) सुधाकर पुं० चंद्र सुधाकार पुं० धोळनारो सुधासालित वि० घोळेलुं सुघाभूविब न० चंद्रविब **मुषासित** वि० चूनाजेबुंसफेद (२) अमृत जेवुं तेजस्वी (३) अमृतयी छवायेलुं; अमृतवाळुं सुभास्यंदिन् वि० अमृत झरतु सुधांशु पुं० चंद्र सुषी वि॰ बुद्धिशाळी; चतुर (२) पुं० विद्वान ; पंडित ; ज्ञानी (३) स्त्री • सुंदर बुद्धि; ऊंडी समजण के ज्ञान सुधुन्नवर्णा स्त्री० अग्निनी जीभमांनी एक मुनय पुं० सद्वर्तन (२) सारी राज-नीति के व्यवहारनीति सुनयना स्त्री ०सुंदर आंखोवाळी स्त्री (२) | बळरामनुं मुशळ मुनंद पुं॰ एक जातनो राजमहेल (२) मुनिभृत वि० खूब ज एकांत होय तेवं (२) अत्यंत खानगी एवं मुनिभृतम् अ० ख़ूव खानगी रीते; अत्यंत एकांतमां **सुनी**ति स्त्री०सद्वर्तन; सदाचार(२) सारी राजनीति के व्यवहारनीति (३) ध्रुवनी माता

सुनीय वि० सारा स्वभाववाळुं; सद्-गुणी (२) पुं० ब्राह्मण (३) शिशुपाल मुनुन० पाणी [(३)सन्मार्ग सुपय पुं॰ सारो रस्तो(२)साइं वर्तन **मुपर्ण** वि० सुंदर पांखीवाळूं (२) सुंदर पांदडांवाळुं (३) पुं० सूर्यनुं किरण (४) देवताओनी एक जाति (५) गरुड (६) पक्षी **सुपर्णकेतु** ५० विष्ण् सुपर्णा (-णी) स्त्री० गरुडनी माता **सुपर्याप्त** वि० विशाळ (२) सजावेलुं (३) बरोबरी करे तेवुं सुपर्वन् वि० सुंदर सांघावाळुं (२) पुं॰ वांस (३) बाण (४) देव सुपात्र न० सारुं के योग्य वासण (२) लायक व्यक्ति; लायक माणस **सुपुष्पित** वि० सारां फूलवाळुं; खूब खीलेलुं (२) रोमांचित थयेलुं **मुपूर** वि० सहेलाईथी भरी शकाय तेवुं (२) सारी रीते भरी शके तेवुं सुप्त ('स्वप्' नुं कर्तरि भू० कृ०) बि॰ सूतेलुं; ऊंघतुं (२) निष्क्रिय (३) न० गाढ निद्रा; ऊंध सुप्ति स्त्री० निद्रा सुप्रतिष्ठित वि० सारी रीते स्थपायेलुं (२) जेनी सारी रीते प्रतिष्ठा करी-होय तेवुं (२) विख्यात सुप्रभात न० मंगल प्रभात; सुंदर सवार (२) वहेली सवार सुप्रभाव पुं सर्वशक्तिमत्ता **सुबाहु** वि० सुंदर हाथवाळुं (२) मज-बूत हाथबाळुं (३) पुं० एक राक्षस मारीचनो भाई सुबोष वि० सहेलाईथी समजी शकाय तेवुं (२) पुं० सारी सलाह सुबहाच्य पुं० कार्तिकेय (२) यज्ञना १६ ऋत्विजोमांनो एक **सुभग वि॰ नसीबदार; सु**खी (२)

सुंदर (३) मधुर (४) प्रिय (५) प्रस्थात (६) न० सद्भाग्य सुमगा स्त्री० पतिनी प्रिय स्त्री; मानीती पत्नी (२) सौभाग्यवंती स्त्री सुभट पुं० वीर योद्धो सुभद्र वि० अत्यंत सुखी; नसीबदार सुभन्ना स्त्री० श्रीकृष्णनी बहेन; अर्जुननी पत्नी; अभिमन्युनी माता सुभाषित वि० सारी रीते कहेलुं (२) न० सुंदर वाक्य; सूक्ति सुभिक्ष न० सुकाळ (२) खूब भिक्षा मळवी ते [सुंदर स्त्री सुभ्रू वि० सुंदर भमरवाळुं (२) स्त्री० सुम पुंज्चंद्र (२) न० फूल सुमध्य, सुमध्यम वि० पातळी केडवाळुं सुमध्यमा, सुमध्या स्त्री० सुंदर स्त्री **सुमन** वि० अत्यंत सुंदर; मनोहर **सुमनस्** वि० सारा स्वभावनुं (२) संतुष्ट (३) पुं० देव (४) स्त्री०, न० (केटलाक ब०व० गणे छे) फूल सुमना स्त्री० जूई लिप इ० सामग्री **सुमनोवर्णक** न० शृंगार माटेनां फूल, **सुमर्षण** वि० सहन करी शकाय तेवुं **सुमंत्र** पुं० दशरथनो सारिथ सुमित्रा स्त्री० दशरथनी एक राणी; लक्ष्मण अने शत्रुष्ननां माता **मुम्स** वि० सुंदर मुखवाळूं; सुंदर (२) उत्सुक (३) अणी -- धारवाळं (४) पुं० गणेश (५) गरुड **सुमृ**त वि० तद्दन मरी गयेलुं सुमेषस् वि० बुद्धिशाळी; डाह्युं **सुमेर** पुं० मेर पर्वत मुयंत्रित वि० सारी रीते शासित वयेलुं (२) स्वनियंत्रित सुयोधन पुं० दुर्योधन (कटाक्षमां) **सुर** पुं० देव (२) सूर्य **सुरकार्मुक** न० मेघधनुष्य **मुरक्त** वि० सारी रीते रंगायेलुं (२)

राग-प्रेमवाळुं (३) घणुं सुंदर(४) मधुर अवाजवाळूं सुरगुर पुं० बृहस्पति (२) विष्णु **सुरत** वि॰ रमतियाळ (२) विलासी (३) दयाळु; कोमळ (४) न० अति आनंद (५) मैथुन **सुरतप्रसंग** पुं० कामभोगमां लवलीनता सुरति स्त्री० अति भोग; अति तृप्ति सुरद्विप पुं० ऐरावत हाथी **सुरिहष्** पुँ० राक्षसः; दानव (२) राहु **सुरषनुस्** न० मेघधनुष्य **सुरधुनी** स्त्री० गंगानदी **मुरपय** न० आकाश (२) स्वर्ग **सुरभि** वि० सुगंधी; सुवासित (२) उज्ज्वळ; सुदर (३) प्रिय (४) डाह्युं (५) विख्यात (६)पुं० सुगंध; सुवास (७) वसंतऋतु (८) चैत्र महिनो (९) स्त्री० पृथ्वी (१०) गाय (११) कामघेनु गाय **सुरभित** वि० सुगंघीदार (२) मनोहर सुरभिमुख न० वसंतनो प्रारंभ सुरभियल्कल न० तज; दालचीनी सुरभुय न० इष्ट देव साथे भळी जवुं-एकरूप यई जवुं ते सुरमंदिर न० मंदिर सुरयुवति स्त्री० अप्सरा **मुरबोचि** स्त्री० नक्षत्रमार्ग **मुरस** वि॰ स्वादिष्ट(२)रसवाळ् सुरसरित् स्त्री० गंगानदी **मुरसाल** पुं० कल्पवृक्ष **मुरसुंदरी, सुरस्त्री** स्त्री० अप्सरा **सुरस्थान** न० मंदिर मुरंग पुं० सुंदर रंग (२) धरतीमा पडेलुं बाकुं (३) जमीनमां खोदेलो मार्ग -- भोंयरं **सुरंगा** स्त्री० घरनी दिवालमां पाडेलुं बाकोरं (२) जमीनमां करेलो मार्ग-[मद्यपात्र सुरा स्त्री • दारू; मद्य (२)पाणी (३)

सुराजन् वि० सारा राजावाळुं सुराधिप पुं० इंद्र **सुरापगा** स्त्री० गंगानदी सुरापीत वि० पीघेलुं; मत्त सुरारि पुं० असुर; राक्षस(देवोना शत्रु) **सुराचवित्रमन् न० देवोनी मूर्तिओ** वाळो ओरडो (घरनो) **मुराष्ट्र** पुं० सौराष्ट्र देश **मुरांगना** स्त्री० अप्सरा सुरंगा स्त्री० सूरंग; भोंयहं मुक्लप वि० सुंदर; देखावडुं(२)विद्वान् **सुरेतस्** न० मानसिक शक्ति; चिच्छक्ति **सुरेश** पुं० इंद्र **मुरेक्षर** पुं० इंद्र **सुरेंद्र** पुं॰ इंद्र (२) विष्णु **मुलक्षण** वि० शुभ चिह्नवाळुं; मांग-ळिक चिह्नवाळुं(२)नसीबदार(३)न० काळजीथी तपासवुं ते (४) शुभ लक्षण **मुलग्न** पुं०, न० शुभ **घडी** –मुहर्त **युरुभ** वि० सहेलाईथी मळे तेवुं (२) –ने योग्य (३) स्वाभाविक सुलभकोप वि० सहेलाईथी गुस्से थई जाय तेवुं [हरण; मृग **सुलोचन** वि० सुंदर नेत्रवाळुं (२) पुं० **मुलोचना** स्त्री० सुंदर स्त्री (२) इंद्रजितनी पत्नी सुवर्चला स्त्री० सूर्यनी पत्नी **सुवर्ण** वि० सुंदर रंगवाळुं; सोनेरी रंगनुं (२) सारी जातिनुं (३) प्रस्थात (४) पुं० सारो रंग (५) सारी जाति (६) न० सोनुं (७) सोनानो सिक्को (८) धन; दोलत सुवर्णकार पुंच सोनी सुवर्णसौरिका स्त्री० सोनानी चोरी **मुवर्णपुष्पित** वि० सोनाथी भरपूर सुवर्णभांडक न० जर-सुवर्णभांड, झवेरातनी पेटी **सुवर्णरोमन्** पुं० घेटो

सुवर्णसिद्ध पुं० कीमियाथी के जादुशी सोनुं प्राप्त करनारो पुरुष **मुर्वितत** वि० सार्घ गोळाकार (२) सारी रीते गोठवेलं **मुबसंतक** पुं॰ (चैत्र मासमां आवतो) मदनोत्सव (२) चैत्री पूनम **सुवासिनी** स्त्री० पिताने घेर रहेती तरुण परिणीता स्त्री (२) सौभाग्य-वंती स्त्री मुविकांत वि० बहादुर; शूरवीर **सुविग्रह** वि० सुंदर आकृतिवाळुं **सुबिद् पु**० विद्वान ; चतुर माणस (२) स्त्री० चतुर स्त्री **सुविद** पु॰ अंत:पुरनो हजूरियो(२)राजा **सुविदग्घ** वि० चालाकः; चतुर **सुविषम्** अ० सहेलाईयी **सुविनीत** वि० सारी रीते केळवायेलुं के तालीम पामेलुं (२) नम्रः; विनयी मुबिरूढ वि० सारी रीते विकसेलुं(२) मारी रीते सवारी करेलुं सुविविक्त वि० एकांत - निर्जन एवं **मुविहित** वि० सारी रीते मुकेलुं; मारी रीते सोंपेलुं (२) सारी रीते गोठवेलुं; सारी रीते सज्ज करेलुं (३) सारी रीते करेलुं (४) संतुष्ट के तृष्त थयेलुं (आतिष्ययी) सुवीरक न० एक जातनुं अंजन; सुरमो (२) कांजी **सुवृत्त** वि० सद्वर्तनवाळूं; सदाचारी (२) सार्घ गोळाकार (३) न० सारी वर्तणूक ; सद्वर्तन सुवता स्त्री० पतिवता स्त्री **सुशिक्षित** वि० सारी रीते केळवायेलुं **सुशोल** वि० सारा स्वभावनुं; मळतावडुं **मुश्रुत** वि० सारी रीते सांभळेलुं (२) वेदमां पारंगत (३) पुं० वैदक ग्रंथना रचनार एक प्रसिद्ध ऋषि **सुदिसष्ट** वि० सुंदर रीते गोठवेलुं के जडेल् (२) बंधबेसत् यत्

सुक्लोक्य वि० यशस्वी ; प्रसिद्ध **मुष**मः वि० अत्यंत सुंदर **सुषमा** स्त्री० परम सौंदर्य सुर्षिस्त्री० छिद्र (२) नळी सुषिर वि० छिद्राळु (२) न० छिद्र; कार्षु (३) फूंकीने बगाडवानुं **बाद्य** सुषुप्त न०, सुषुप्ति स्त्री० गाढ निद्रा सुषुप्सा स्त्री० ऊंघवानी इच्छा (२) आवेली एक नाडी सुषुम्णा स्त्री० इडा अने पिंगला वच्चे **सुष्ट्** अ० सारी रीते; सुंदर रीते (२) अत्यंत होय तेम (३) साच् -खरुं होय तेम मुसत्या स्त्री० जनक राजानी पत्नी **मुसमाहित** वि० सारी रीते गोठवेलुं; सारी रीते शणगारेलुं (२) अत्यंत ध्यान के लक्षवाळ् मुसमीहित वि० खुब इच्छेल् **सुसंबीत** वि० सारी रीते केड ताणी बांघ्युं होय तेवुं (२)सारी रीते पोशाक पहेर्यों होय तेबुं **सुसंवृ**ति वि० सारी रीते छुपायेलुं **युसंस्कृत** वि० सारी रीते **रां**घेलुं (२) सारीरीते गोठवेल् सुसाधित वि० सारी रीते केळवेलुं(२) सारी रीते राधेलुं **सुस्थ** वि० योग्य – सारा स्थानमां होय तेवुं (२) नीरोगी (३) सुखी; समृद्ध; भाग्यशाळी (४) न० सुखी स्थिति; सारी स्थिति **सुस्थित** वि० जुओ 'सुस्थ'(२)न० चारे बाजु ओसरीवाळुं घर सुहित वि॰ योग्य; उचित (२) हित-कर (३) प्रेमाळ; मित्रताभर्युं (४) तृप्त; संतुष्ट िमित्र सुहृद् वि॰ ममताळु; हेताळ (२) पुं० सुहृद पु० मित्र

सुद्धाः पुं०ब०व० ए नामना लोको

सुंद पुं॰ एक राक्षस; उपसुंदनो भाई सुंदर वि० देखावडु; मनोहर (२) खर्रः; साचुं सुंदरी स्त्री० सुंदर स्त्री सू २, ४ अ० जन्म आपवो; उत्पन्न करवुं; बहार लाववुं(२) ६ प० उश्के-रवुं; प्रेरवुं(३) चूकते करवुं (ऋष) सू वि० (समासने अंते) जन्म आपतुं; उत्पन्न करतुं इ० सूकर पु॰ डुक्कर; भूड सूकरी स्त्री० भूंडण; भूंडणी **सूक्त** वि० सार्ष कहेलुं; ठीक कहेलुं (२) न० सुभाषित; डहापणभरी वात (३)वेदनुं स्तोत्र – मंत्रसमूह सुक्ति स्त्री० सारी मित्रताभरी वात (२) सुभाषित

सूक्स वि० झीणुं; बारीक; अणु जेवुं (२) नानुं (३) पातळुं; नाजुक(४) सुंदर (५) अणीदार; तीक्ष्ण (६) चोकस;सर्ह(७)चालाक;कुशळ

सूक्ष्मविशन, सूक्ष्मदृष्टि वि० तीक्ष्म दृष्टिवाळ् (२) बारीक विवेकशक्ति-वाळुं (३) तीक्ष्ण बुद्धिवाळुं सूक्ष्मदेह पुं० लिंगदेह **सूक्ष्मशरीर** न० लिंगदेह **सूच् १**० उ० वींचवु (२) दर्शाववुं (३) प्रगट करी देवुं; खुल्लुं पाडी देवुं (४) सूचववुं (५)अभिनय करवो सूचक वि० दर्शावतुं; बतावतुं (२) खुल्लुं पाडी देतुं सूचन न०, सूचना स्त्री० वींधवुं ते (२) दर्शाववुं ते (३) प्रगट करी देवुं ते (४) अभिनय **सूचि** स्त्री • वींधवुं ते (२) सोय(३) अणी; अणीदार छेडो (४) एक व्यूह-रचना (५) अनुक्रमणिका; विषयोनी यादी; सांकळियुं

सूचित ('सूच्' नुं भू० कृ०) वि०

वींधेलुं (२) दशविलुं; सूचवेल्; जिलावेलुं (३) अभिनय ६० थी प्रगट करेलुं – जणावेलुं सूचिभिन्न वि० (कळीनी) अणी आगळशी खीलेलुं – ऊघडेलुं सुविभेच वि० सोयथी वींधवा योग (२) खुब गाढुं; निबिड सुचिशिसा स्त्री० सोयनी अणी सूची स्त्री० जुओ 'सूचि' सुच्यप्र न० सोयनी अणी सूत् अ० एवो अवाज थाय तेम (घोरवा वगेरेनो नाकथी थतो) सूत ('स'नुं०भ०इट) वि० जन्म आपेलुं; पेदा करेलुं (२) **पुं**० सार्थ (३) क्षत्रियनो **बाह्मण** स्त्रीयी थयेलो पुत्र (सार्थिनुं काम करे छे) (४) वैश्यनो क्षत्रिय पत्नीथी थयेली पुत्र (चारणन् काम करे छे) (५) चारण (६) त्यासनो एक शिष्य (७) संजय सूतक न० जन्म (२) जन्म वगेरेबी लागती अशुद्धि **सूतपुत्र** पुं० कर्ण (२) संजय सूति स्त्री० जन्म; सुवावड; प्रसव; जनन (२) संतति; संतान (३) मूळ; उत्पत्तिस्थान (४) फळ आपव् ते; पाक उत्पन्न थवो ते **सूतिका** स्त्री० जेणे बाळकने तरतमां जन्म आप्यो होय तेवी स्त्री; स्वावडी सूतिकागृह न० सुवावडीनी ओरडी **सूती** स्त्री० जुओ 'सूति' सूत्र १० ज० गूथवुं (२) वींटवुं (३) बांधवुं (४) सूत्र रूपे टूंकमां रचव् (५) गोठवबु; योजना करवी सूत्र न॰ दोरो (२) तंतु (३) तार(४) पूतळीना संचालन माटेनी तार के दोरो (५) जनोई(६)प्राचीनशास्त्र-कारोएं रचेल मूळ संक्षिप्त बाक्य के तेनो ग्रंथ (७) नियम; व्यवस्था (८) कंदोरो (९) सूचन; चिह्न

सूत्रकर्मन् न० सुतारीकाम **सूत्रकार** पुं०सूत्रवाक्यनो रचनार (२) जिर्जरित सुत्रदरिद्र वि० ओछा दोरावाळुं; **सूत्रधार** पुं० नाटकनो प्रधान नट जे नांदी तेम ज प्रस्तावना भजवे छे(२)सुतार सूत्रपटक पुं० बौद्ध ग्रंथोना त्रण मुख्य संग्रहो - विभागोमानो एक सूत्रयंत्र न० साळनो कांठलो (२) वणवानी साळ [पुं० जीवात्मा सूत्रात्मन् वि० सूत्र-दोरा जेवं (२) सूद् १ आ०, १० उ० मारवुं; ईजा करवी मारी नाखव ्पाप; दोष **सूद** पुं० कतलः; नाश (२) रसोइयो (३) सूदम वि० नाश करनारुं; हणनारुं (२) न० नाश; दध सूदशाला स्त्री० रसोडुं **सून** वि० जन्मेलुं; उत्पन्न थयेलुं (२) बीलेलुं (३) खाली; शून्य (४) न० प्रसव; प्रसुति (५) फूल **सूननायक** पुं०कामदेव **सूना** स्त्री० वधस्थान; कसाईखानुं (२) मारी नाखवुं ते; वध सूनु पुं० पुत्र; दीकरो (२) बाळक; संतान (३) पौत्र (४) नानो भाई सुनुत वि० साचु अने प्रिय (२) मायाळु; ममतावाळुं (३) शुभ; मांगळिक (४) प्रिय; वहालुं (५) न० साची अने प्रिय लागे तेवी वाणी (६) मधुर--प्रिय-विनयी वाणी सूप पु॰ राब; सेरवो (२) तेजानो; मसालो (३) रसोइयो **सूपकार** पुं० रसोइयो **सूय** न०सोमरस काढवो ते(२)होम; आहुति; यज्ञ प्राज्ञ **सूर** पुं० सूर्य (२) सोम् (३) विद्वान; सूरि पुं सूर्य (२) विद्वान; प्राज्ञ; विद्वान; पंडित सूरिन् वि० डाह्युं; विद्वान (२) पुं० **सूर्प**े पुं०, न० सूपडुं सूर्यणखा स्त्री० रावणनी बहेन सूर्मि (-मी) स्त्री० लोखंडनी के धातुनी मूर्ति (२)घरनो यंभ(३)तेज;ज्वाळा सूर्य पुं० सूरज सूर्यकांत पु० एक मणि (जेना उपर सूर्यना किरण पडता अग्नि उत्पन्न थाय छे एम मनाय छे) सूर्यतनया स्त्री० यमुना नदी सूर्यपाद पुं० सूर्यनु किरण सूर्यपुत्र पुं० जुओ 'सूर्यसुत' सूर्यपुत्री स्त्री० वीजळी (२) यमुना नदी सूर्यप्रभव वि० सूर्यमांथी ऊतरी आवेलुं (जेमके, सूर्यवंश) **सूर्यमणि** पुं० सूर्यकांतमणि सूर्यवार पुं० रविवार सूर्यसारिथ पुं० अरुण **सूर्यसुत** पुं० सुग्रीव (२) कर्ण(३) शनिग्रह (४) यम सूर्या स्त्री० सूर्यनी पत्नी (२) सूर्यनी सूर्यांतप पुं० तडको सूर्यापाय पुं० सूर्यास्त सूर्याय् आ० सूर्यनी पेठे तेजवाळा थवुं सूर्याक्मन् पुं० सूर्यकात मणि सूर्यास्त न० सूर्यनु आयमवु ते **सूर्यदुसंगम** पुं० अमास सूर्योढ पुं० सांजने वखते आवेलो अतिथि (२) सूर्यास्तनो समय सूर्योदय पुं० सूर्यनुं ऊगवुं ते **सूर्योपस्थान** न० सूर्यनी पूजा सु १,३ प० [सरति, ससर्ति, धावति] जवुं; सरवुं (२) पासे जवुं; पहोंचवुं (३) धसवुं;हुमलो करवो (४) दोडी जवुं; सरकी जवुं (५) वहेबुं -प्रेरक० धीमेथी हाथ फेरववो (बीणा इ० वगाडवामाटे) (२) धकेली काढवुं; दूर सरकाववुं सुकाल पुं० शियाळ

सृक्क न०, सृक्कणी, सृक्क्क्णी स्त्री० सुक्किन् न० ओठनो खुणो **सृगाल** पुं० शियाळ सृज् ६ प० उत्पन्न करवुं;सर्जवुं (२) संतानोत्पत्ति करवी (३) मूकवुं; लगाइवुं (४) बहार फेंकवुं; रेलवुं (५) उच्चारवुं; –मोंगांथी काढवुं (६) तजवुं; छोडी देवुं(७)लटकवुः; वळगवुं (८) ४ आ ० छोडवुं ; मोकलवुं सृष्णि (--णी) स्त्री० अंकुश (हाथीनो) **सृत** न० पलायन; नासी जबुं ते सृति स्त्री० जबुंते; सरकवुंते (२) रस्तो;मार्ग (३) वर्तन (४) जन्म-जन्मांतरमां रखडवं ते(५)सृष्टि सृष् १ प० सरकवुं; घीमेथी खसवुं(२) फलाव | जातनुं हरण सूमर वि० जवुं ते; गमन(२)पुं० एक **सृष्ट** ('सृज्' नुं भू०कृ०) वि० सजयिलुं; उत्पन्न थयेलुं (२) काढेलुं; फेंकेलुं (३) छूटु मूकेलु; तजेलु (४) दूर करेलुं; विदाय करेलुं सृष्टि स्त्री० सरजेलुं ते; सर्जन (२) जगतनी उत्पत्ति - रचना (३) प्रकृति ; सहजधर्म (४) छोडवु ते (५) आपी देव ते (६) संतान | हार सुंका स्त्री॰ मार्ग; रस्तो (२) माळा; सेक पु॰ छांटवुं ते ; पाणी पावुं ते(वृक्षने) (२)वीयं सींचवं ते सेगव पु० करचलीनुं बच्चुं **सेचन** न० जुओ 'सेक' **सेचनघट पुं**० पाणी पादानी घडो **सेतु** पुं० बंध ; माटीनो आडो बांध (२) पुल (३) सीमाचिह्न (४) पर्वतनो सांकडो घाट (५) सीमा; हद (६) रकावट; विघ्न (७) मर्यादा स्थापनार नियम (८) प्रणव; ॐ **सेतुबंध** पुं० वंध के पुल बांधवो ते(२) लंका जवा रामे बंधावेलो पुल (अत्यारे टेकरीओ रूपे देखाडाय छे) (३) पुल

सेदिवस् वि० बेसतुं; बेठेलुं सेना स्त्री० सैन्य; लश्कर (२) नानी टुकडी (३ हाथी, ३ रथ, ९ घोडा अने १५ पायदळनी) सेनानिवेश पु० लश्करनो पडाव:छावणी सेनानी, सेनापति पुं० सेनापति (२) कार्तिकेय (देवसेनाना सेनापति) सेनापरिच्छद् वि० सैन्यथी वींटळायेलुं सेनामुख न० त्रण हाथी, त्रण रथ, नव घोडा अने पंदर पगपाळाओनो बनेलो सैन्यनी विभाग सेनांग न० सेनानो घटक भाग(हाथी-अञ्ब-रथ-पदाति ए चारमांनो दरेक) **सेर्घ्य** वि० ईर्षायुक्त; अदेखुं सेव् १ आ० सेवा करवी(२)पूजवुं; मान आपवं (३) अनुसरवं; पाछळ जवुं (४) भोगववुं; माणवुं (५) संभोग करवो (६) आचरवुं; निष्ठा-पूर्वक अमल करवो (७) वारंबार जबुं: आशरो लेबो **सेवक** दि० सेवा करनारुं;पूजा करनारुं (२) अमल करतुं; अनुसरतुं (३) पुं० दास ; अनुचर (४) पूजक ; भक्त सेबन न०, सेबना स्त्री० चाकरी; सेवा (२) पूजा; उपासना (३) आचरवुं ते (४) उपभोग (५) संभोग (६) वारंबार जबुं ते सेवा न्त्री० चाकरी; नोकरी; दासत्व (२) भक्ति; पूजा (३) उपयोग; उपभोग (४) खुशामत सेवाकाकु स्त्री० नोकरी करती बखते अवाज बदलवो ते (धीमो करवो ते) सेवाकार वि० सेवारूप-सेवाना आकारनुं सेवाधर्म पुंच्नोकरनुं कर्तव्य सेवित ('सेव्'नुंभू०कृ०)वि०सेवा-चाकरी करायेलु (२) अनुसरायेलुं; आचरायेलुं (३) वारंवार जवायेलुं; रहेवायेलुं

सेवित् पुं० सेवकः; नोकर सेविन् वि० सेवा करनारं (२) अनु-सरनारुं (३) उपयोग करतुं (४) वसतु; रहेतुं (५) संभोग करतुं(६) –मां आसक्त; –मां रुचिवाळुं **सेव्य** वि० सेवा – दाकरी – पूजा करवा योग्य (२) वाषरवा लायक (३) भोगववा योग्य (४) वसवा योग्य (५) पुं० स्वामी ; मालिक सेव्यसेवकौ पुं० द्वि० व० स्वामी अने [ईश्वरमां मानतु सेवक सेक्बर वि० ईश्वरने स्वीकारतुः; **सैक** वि० एक वधु होय तेवुं संकत वि॰ रेतीनुं; रेताळ (२) रेताळ जमीनवाळुं (३) न० रेतीवाळो किनारो (४) रेताळ किनारावाळो टापू (५) किनारो (६)रेतीनो ढगलो **सैंकतिन् वि० रे**ती भरेलुं; सैत्य न० घोळापणुं; घोळाध सैनान्य, सैनापत्य न० सेनापतिपण्ं; सेनापति पद सैनिक वि॰ सेनाने लगतुं (२) पुं० योद्धो; लडबैयो (३) पहेरेगीर; चोकीदार (४) ब्यूहरचनामां गोठ-वायेलुं स्रश्कर सन्य पुंज्योद्धो(२) पहेरेगीर; श्रोकी-दार (३) न० लक्कर (४) छादणी सर्ध्य पुं० चाकर (२)एक मिश्र जातिनो माणस (दस्यु अने अयोगव स्त्रीनो) **संरंध्रो स्त्री०** अंतःपुरनी दासी (२) परघेर काम करनारी स्वतंत्र स्त्री (३) द्वौपदी (ज्यारे विराट राजानी राणीनी दासी हती त्यारे) सैरिभ पुं० पाडो सैरिध्न पुं० जुओ 'सैरध्र' सीरधी स्त्री० जुओ 'सैरधी' **सेंदूर** वि० सिंदूरथी रंगेळू सेंघव वि० सिंध देशमा जन्मेलं (२)

सिंधु नदी संबंधी (३) नदीमां जन्मेलुं (४) समुद्रनुं (५) पुं० सिंधु देशनो घोडो (६) जयद्रथ (सिंधनो राजा) (७) पु०, न० सिधालूण सेंह वि० सिंहनुं; सिंहने लगतुं सैंहिक, सेंहिकेय पुं० राहु सो ४ प० [स्यति] कापी नाखवुं; मारी नाखवं (२) पूरुं करवं ; अंत आणवो सोच्छ्वास वि० राजी; खुशी **सोढ** ('सह्'नुंभू०कृ०) वि०सहन करेल] शक्तिमान सोबृ वि० सहन करनार्ह (२) समर्थ; सोत्क, सोत्कंठ वि० उत्सुक; आतुर (२) खिन्न (३) शोक करतुं सोत्कंठम् अ० उत्कंठापूर्वेकः; आतुरता-थी (२) खिन्नपणे सोतप्रास वि० अतिशय (२) पुं० अट्टहास्य (३) पुं०, न० कटाक्षयुक्त अतिशयोक्ति सोत्प्रासहासिन् वि० कटाक्षथी सोत्प्रेक्षम् अ० बेदरकारीयी स्रोत्साह वि० उत्साहबाळुं; सतील सोत्साहम् अ० उत्साहपूर्वकः; खंतथी सोत्सुक वि० खिन्न; दिलगीर; चिता-तुर (२) उत्सुक; इंतेजार **सोरलेक** वि० उद्धत सोत्सेभ वि० उन्नतः कंच् सोदर वि० सहोदर एवं; एक ज माने षेटे जन्मेलुं (२) पुं० सहोदर भाई सीवरा स्त्री० सहोदर बहेन सोवरीय वि० सरखं (२) पुं० सगो-भाई; सहोदर सिहोदर माई सोदर्य वि० जुओ 'सोदर' (२) पुं० **सोदर्यस्नेह** पुं० सहोदर जेवो प्रेम सोधोग वि० उद्यमी; खंतील **सीहेग** वि० उद्देग के बीकवाळ सोपग्रहम् अ० मित्रताभरी रीते; शांत पाडवानी रीते

सोपचय वि० नफाकारक सोपचार वि० विनयी **सोपद्रव** वि० आपत्ति के आफतोथी भरेलू सोपम वि० कपटी सोपघान वि० (उत्तम)गुणो युक्त (२) ओशिकावाळुं [छेतरीने सोपिघ वि० कपटी (२) अ० कपटथी; सोपपत्तिक वि० प्रमाण – पुरावाबाळुं सोपप्लव वि० आफतयी घेरायेलुं (२) शत्रुओयी आऋांत (३) ग्रस्त; ग्रहण थयुं होय तेवुं (सूर्य के चंद्र) सोपरोध वि० डबल करायेलुं (२) कृपा करायेलुं (३) कृपावंत **सोपरोषम्** अ० महेरबानीथी सोपसर्ग वि० विध्नोधी पीडित (२) भूत वगेरेना आवेशयुक्त सोपस्नेहता स्त्री० भेज; भीनाश सोपहासम् अ० मक्करीमां; मजाकमां सोपान न० दादर; सीडी(२)पगथियुं सोपानपंक्ति,सोपानपद्धति,सोपानपरंपरा स्त्री ०, **सोपानमार्ग** पुं० पगथियांनी पंक्तिः सीडी **सोम** पुं० सोमवल्ली (जेनो सोमरस यज्ञमां वपराय छे) (२) सोमरस (३) अमृत (४) चंद्र (५) (समा-सने अंते) मुख्य; उत्तम ('नुसोम') (६) इडानाडी [पितामह सोमक पुं॰ पांचाल देशनो राजा ; द्रुपदनो **सोमकांत** पुं० चंद्रकांत मणि सोमसय पुरु अमावास्यानी (ज्यारे चंद्र अदृश्य होय छे) सोमवंबत न० मृगशीर्थ नक्षत्र सोमनाथ पुं० शिवनुं प्रसिद्ध लिंग (प्रभासन्) सोमयाग करनारो सोमप, सोमपा पुं ० सोमरस पीनारो (२) **सोमपीय, सोमपीथिन्** पुं० सोमरस पीनारो सोमबंखु पुं० सूर्य (२) सफेद कमळ;

सोमलतिका स्त्री० गळो(२)सोमलता **सोमवं**श पुं० चंद्रवंश (राजाओनो) सोमवृक्ष पुं जुओ 'सोमसार' सोमसब् पुं० एक प्रकारना पितुओ सोनसार पुं॰ सफेद खेर सोमसिद्धांत पुं० कापालिकोनो सिद्धांत सोमसुत पुं० वुधग्रह {निचोबनारं सोमसुत्वत् वि० रस माटे सोमवल्लीने सोमोद्भवा स्त्री० नर्मदा नदी **सोर्णभ्रू** वि० भमरो वच्चे वाळना कृंडा-[भश्करी ळावाळ **सोल्लुंठ** पु०, **सोल्लुंठन** न० कटाक्ष; सोल्लुंठनम्, सोल्लुंठम् अ० कटाक्षमां; मजाकमां ; ठठ्ठो करीने **सोध्मन्** वि० गरमः, ऊन् **सौकर** वि० सूकर – डुक्करने लगतु सौकर्य न० सहेलापणुं; सरळता (२) अमल करी शकाय तेवुं होवुं ते (३) ज़वान वय होवी ते सौकुमार्य न० नाजुकपणुं; कोमळता(२) सीसप्रमुप्तिक पुंर्े ठीक ऊध्या ?' एवं पूछनारो (२) राजाने स्तुति, संगीत इ० थी जगाडनारो चारण सौक्षशायनिक पुं० 'ठीक अंघ्या ?' एवी खबर पूछनारो सौखसुप्तिक पुं० जुओ 'सौखप्रसुप्तिक' **सौ**ख्य न० सुख; आनंद सौस्यशायनिक, सौस्यशायिकपुं० जुओ 'सौलशायनिक' अनुयायी सौगत पुं० बौद्धधर्मी ; 'सुगत' – बुद्धनो सौगंधिक वि० खुझबोदार; सुवासवाळूं (२) पुं० अत्तर वेचनारो (३) न० सफोद कमळ (४) नील कमळ सौगंध्य न० सुगंघ; सुवास सौचि, सौचिक पुं० दरजी सौजन्य न० सज्जनता; भलाई (२) उदारता (३) मायाळुता सौति पुं० कर्ण (२) एक प्रसिद्ध ऋषि (पूराणी)

सौत्य न० सारयीपणुं सौत्रामणी स्त्री० पूर्वं दिशा (२) एक यज्ञ (जेमां दारू वपराय छे) **सौदर्य** न० भ्रातृभाव सौदामनी, सौदामिनी, सौदाम्नी स्त्री० बीजळी (२) एक जातनी सर्पाकार वीजळी (३) इंद्रना हाथीनी मादा सौष वि० अमृत संबंधी (२)चूनो लगा-**बेलुं;धोळेलुं(३)न० घोळेलुं मकान**; छोयेलुं मोटु मकान; महेल (४) रूपुं सौषकार पुं० घोळनारो (२) कडियो **सौघोत्संग** पुं० महेलनी अगासी **सौन पुं**० कसाई; खाटकी **सौनंद न**० बळरामनुं मुशळ **सौनंदिन्** पुं० बळराम **सौनिक** पुं० खाटकी; कसाई **सौपर्ण** वि० गरुडने लगतुं; गरुडनुं सौपाक पुं० एक मिश्र जाति (चंडाळयी यती अने चंडाळ समान धंघो करती) सौष्तिक न० ऊंघ (२) रात्रिनो – राते करेलो हुमलो; अंधता भाणसो उपर करेलो हुमलो (युद्धमां) सौष्तिकवय पुं० सूतेला माणसनो संहार सौबल पुं ० शकुनि [धृतराष्ट्रनी पत्नी सौबली, सौबलेयी स्त्री० गांधारी; सौभ न० हरिश्चंद्रनुं शहेर (आकाशमां गमन करतुं) (२) शाल्वीनुं शहेर सौभद्र, सौभद्रेय पुं अभिमन्यु सौभागिनेय पुं मानीती स्त्रीनो पुत्र सौभाग्य न० सद्भाग्य; भाग्यशाळी-पणुं (स्त्रास करीने स्त्री-पुरुषने एक बीजा प्रत्येनो प्रेम अने वफादारी होवां ते) (२) मांगळिकता; क्ल्याण-कारी होवापणुं (३) सौंदर्यः भव्यता (४) सधवापणुं (५) अभिनंदन; शुभेच्छा दर्शाववी ते **सौभाग्यवती** स्त्री० सधवा स्त्री सौभाग्यविलोपिन् वि० सींदर्यने बगाड-सौभिक्ष न० स्काळ

सौभ्रात्र न० बंधुप्रेम; भ्रातुभाव सौमकि पुं० द्रुपद राजा सौमदित पुं भूरिश्रवा (सोमदत्तनो सौमनस वि० मनने प्रसन्न करे तेवुं(२) फूल संबंधी (३) न० खुशी; संतोष (४) भलाई **सौमनस्य** न० खुशी; प्रसन्नता (२)फूल सौमित्र, सौमित्रि पुं० लक्ष्मण (सुमित्रा-नो पुत्र) सौमुख्य न० प्रसन्नता; मधुर देखाव **सौमेरव, सौमेरक** न० सोन् **सौम्य** वि० चंद्रने लगतुं (२) सोम-रसना गुणधर्मवाळुं (३) सुंदर; मोहक (४)कोमळ; मृदु(५)शुभ; मांगलिक (६)पुं० बुधगृह [पुं० सूर्यपूजक सौर वि॰ सूर्यने लगतुः सूर्य संबंधी (२) सौरभ वि० सुगंधीदार (२) न० सुगंधी **सौरभेय** वि० सुगंधीदार **सौरभेयो** स्त्री० सुरभि गायनी पुत्री **सौरम्य** न० सुगंधी सौरसेंघव वि० गंगानदीन् सौराज्य न० सार् राज्य; सारो राज्य-सौरि पुं० शनिनो ग्रह सौर्य वि० सूर्य संबंधी होबापणु सौलक्षण्य न० शुभ लक्षणो-चिह्नोवाळा सौवर्ण वि० सोनानुं (२) न० सोनुं सौवर्णहर्म्य न० रूपानी महेल [सोनी सौर्वाणक वि० सोनानुं बनेलुं(२)पुं० सौविव, सौविवल्ल पुं० अंतःपुरनो रक्षक सौबीर पुं० ते नामनो एक देश सीवीरक पुं अस्वीर देशनो बतनी (२) जयद्रथ सौदीरांजन न० काळो सुरमो सौबेल वि० त्रिकूट पर्वत संबंधी सौशाम्य न० समाधान; सुलेह सौशील्य न० सुशीलपण् **सौष्ठव** न० उत्तमपणुं; घाटीलापणुं; सोंदर्थ (२) कुशळता; प्रवीणता (३) वधारे होवापणुं (४) चपळता सौस्थ्येन अ० सुखेथी; खुशीथी सौस्नातिक पुं० 'स्नानादि ठीक थय ने?' एम पूछनारो प्रिमभाव सौहार्व पुं • मित्रनो पुत्र (२)न • मैत्री; सौहार्ख न० मैत्री; प्रेमभाव सौहित्य न० तृष्ति; पूरतुं होवानो संतोष (२) पूर्णता; समाप्ति (३) मित्रता ; मायाळुता िंसौहार्चें सौहृद, सौहृदय, सौहृद्य व० जुओ सौंदर्य न० सुंदरता स्कब्ध ('स्कंभ्'नुंभू० कृ०) वि० आधार आपेलुं; टेको आपेलुं (२) रोकेलुं; अटकावेल् स्कद् १ प० कूदवु (२) ऊरंचे कूदवु-चडवुं(३) नीचे पडवुं(४) नाश पामवुं –प्रेरक० रेडवुं; ढोळवुं(२)बाकात राखवुं; उपेक्षा करवी स्कंट पुं० कूदवुंते (२) कार्तिकेय (३) नदीनो किनारो **स्कंदपुत्र** पुं० घरफाडु; चोर स्कंघ पुं० लभो (२) शरीर (३) थड (४) मोटी डाळी (५) ज्ञाननी शाखा (६) प्रकरण (७) सैन्यनो विभाग (८) समूह; टूकडी स्कंधचाप पुं० कावड स्कंबदेश पुं• खभो (२) हाथी उपर ज्यां महावत बेसे छे ते भाग (३) झाडनुं थड बळद स्कंबवाह पु० भार वहन करवा केळवेली स्कंधावार पुं० सैन्य; टुकडी (२) राज-धानी; राजमहेल (३) छावणी स्कंभ् १ आ०, ५,९ प० रोकवुं; निग्रह करवो (२) टेको आपवो स्कंभ पु॰ आधार; टेको स्कु ५,९ उ० कूदवुं;ठेकडो भरवो(२) र्जनकवुं (३) छाई देवुं; ढांकी देवुं **स्कुंभ्** ५, ९ प० रोकवुं; अटकाववुं स्वल् १ प० ठोकर खावी; लपसवुं

(२) लघडियुं खावुं; आमतेम डोलवुं (३) भंग करवो (आज्ञानो) (४) स्खलन पामबुं; भ्रष्ट थवुं (५) भूल करवी (६)तोतडावुं (७) निष्फळ जबुं; असर न करवी (८) झमवुं; झरवुं स्खलन न० ठोकर खावी ते; लपसवुं ते; गबडवुं ते (२) लथडियुं खावुं ते (३) भ्रष्ट थवु ते (सन्मार्गेथी) भूल; चूक (५) निष्फळता (६) तोतडावुंते (७) झमवुं—झरवुंते (८) अथडावुं ते; भटकवुं ते (९) वीर्यं स्वलित थवुं ते स्वस्ति('स्खल्'नु भू० कृ०)वि० ठोकर खाधेलुं; लथडेलुं(२)गबडी पडेलुं(३) अस्थिर; कंपतुं; डोलतुं(४)तोतडातुं (4)भूल करतुं(5)न० भूल(9)लथ-डियुं(८)दोष; पाप स्वलितसुभगम् अ० मनोहर रीते ऊछ-ळतुं के अफळातुं वहे तेम स्तन् १प०,१० उ० अदाज करवो; रणकार करवो (२) निसासो नाखवो (३) मोटेथी गर्जव् स्तन पुं० थान; धाई (२) स्तननी दींटीं (३)आउः; अडण (पशुनी मादानुं) स्तनकुड्मल न० (कळी जेवो) स्तन **स्तनपान पुं**० धाववुंते **स्तनभर** पुं० स्तननो भार स्तनियत्नु पुं० गर्जना; मेघगर्जना (२) वादळुं (३) वीजळी स्तनवेपथु पुं ० स्तनन् ऊछळवुं ते स्तनंषय वि० घावतुं; धावणुं (२) पुं० धावणुं बाळक जगा स्तनांतर न० हृदय (२) बेस्तन वच्चेनी स्तनित वि० अवाज करतुः; घ्वनियुक्त (२) गर्जना करतुं (३)न० मेघगर्जना; कडाको (४) धनुष्यनी पणछनो टंकारव स्तनितसुभगम् अ० घेरो रव करत् होवाशी मधुर लागतुं होय तेम

स्तन्य न० मातानुं दूध; दूध स्तन्यत्याग पुं० दूध धावता बंध थवुं ते स्तबक पु॰ झूमखो; गुच्छो (फूलनो) (२) मोरनुं पींछुं (३) पुस्तकनो अध्याय के विभाग स्तब्ध ('स्तंभ्' नुं भू० कृ०) वि० अटकावेलुं; रुकावट करेलुं (२) अक्कड; स्थिर (३) गति के हलन-चलन विनानुं (४)हठीलुं; जनकी (५) कठोर (६) निष्क्रिय स्तब्धरोमन् पुं० डुक्तरः, वराह स्तब्धलोचन वि॰ अनिमेप आंखवाळुं (जेम के देव) स्तम् १ आ० [स्तंभते] जुओ 'स्तंभ्' स्तर वि० फेलातुं; बिछातुं; ढांकतुं (२)पुं० थर; पड (३) पथारी **स्तव पुं० व**खाण; स्तृति स्तवक वि० प्रशंसा–स्तुति करनारुं (२) पु॰ भाटः चारण(३)प्रशंसाः; स्तुति (४)स्तबक ; गुच्छो (५) ग्रंथनुं प्रकरण के खंड (६) समुदाय स्तवन न० स्तुति; प्रसंसा स्तंब पुं० भारी (घास इ० नी) (२) पूळो (कडब इ०नो) (३) झाडवुं (४) कटण थड़ न होय तेवो छोड़ के झाडवुं (५) हायी बंबाय छे ते यांभलो स्तंबकरिता स्त्री० खूब थवुं - नीपजवुं ते (पूळा के भारीओ बांधवी पड़े तेटलुं) स्तंबपुर न० एक शहेर (ताम्रलिप्त) स्तंबरम पुं० हाथी स्तंभ् १ आ ०, ५, ९ ५० रोकवुं; दबा-वर्बुं (२) अक्कड करी देवुं; जूठुं पाडी देवुं (३) टेको आपवो (४) अक्कड थई जबुं(५)गविष्ठ-उद्धत थवुं(६)व्या-पर्वु; पथराबु स्तंभ पुं० अक्कडपणुं; स्थिरता (२) जडता; जूठा पडी जबुं ते (३) रुकाबट; डलल (४) दबाववु-कचरवुं-निग्रह

करवो ते (५)टेको (६) थांभलो (७) जडता; मूर्खता स्तंभकरण न० अवरोधनुं कारण स्तंभन न० रुकावट; प्रतिबंध; निप्रह (२)अकडाई जवुं–जूठुंपडी जवुंते (३) शांत-स्थिर करवुं ते (४) दृढ करवुं ते (५) टेकववुंते स्तंभित वि०रोकायेलुं; विघ्न करायेलुं (२) जड बनावायेलुं; जूठुं पडायेलुं (३)शांत-स्वस्थ करायेलु स्तंभितवाष्पवृत्ति वि० आंसु आदता रोक्यां होय तेवुं स्ताब पुं० स्तुति; वस्राण स्तांबेरम वि० हाथीनुं स्तिम् ४ प० भींजावुँ (२) स्थिर थई जबु; हलनचलन विनाना थई जबुं स्तिमित वि० भीनुं;भेजवाळुं(२)शांत; खळभळाट वगरनुं (३) स्थिर; गति विनानं (४) बंध; वासेलुं (५) जड -अक्कड थई गयेलुं के करायेलुं स्तीम् ४ प० जुओ 'स्तिम्' स्तु २ उ० वखाणवुं(२)स्तुति करवी; सुक्तथी पूजा करवी स्तुत ('स्तु'नुं भू० कृ०) वि० वसा-**पेलुं; स्तुति करेलुं** स्तुति स्त्री • वखाण ; प्रशंसा (२)स्तोत्र ; सूक्त (३) खुशामत; खोटी प्रशंसा स्तुतिपा**ठक** पुं० वखाण करनारी; स्तुति गानारो; भाट; चारण स्तुत्य वि० वखाणवा लायक;स्तुतिपात्र स्तूप पुं० ढगलो; टेकरो (२) बुद्धना अवशेषो उपर करेलुं धूमट जेवुं बांध-काम(३)चिता(४)बळ; सामर्थ्य स्तृ ५ उ० पाथरवुं(२)विस्तारवुं(३) वीखरावुं(४)पहेरवुं; ढांकवुं स्तूह् ६ ५० मारवुं; ईजा करवी स्तृ ९ उ० जुओं 'स्तृ' स्तूह् ६ प० जुओ 'स्तृह्'

स्तेन पुं० चोर(२)न० चोरी करवी ते स्तेय नं बोरी; लूंट (२) चोरायेली वस्तु(३)गुप्त वात; खानगी वात **स्ते १** प० पहेरवुं; शणगारवुं **स्तमित्य** न० (अंगोनी) जडता; अक-डाई जवुंते; जूठा पड़ी जवुंते स्तोक वि० थोडुं; अल्प(२)टुंकुं(३) तुच्छ ; हलकुं (४) पुं० टीपु ; बहु थोडुं ते **स्तोकक** पुं० चातक स्तोकनम्न वि० थोडुंक नमेलुं; जरा स्तोकम् अ० थोडुं -- अल्प होय तेम स्तोतच्य वि० वस्ताणवा लायक; स्तुति करवा लायक स्तोतृ पुं० वखाण करनारो; स्तुति करनारो(२)चारण; बंदीजन स्तोत्र न० वखाण (२) स्तुतिनुं सूक्त **स्तोभ पुं० प्रतिबंध;** अवरोध (२) थोभवुं ते (३)अनादर(४)सूक्त;स्तोत्र स्तोम पुं० स्तुति;स्तोत्र (२)यज्ञ;होम (३)सोमनोहोम (४)समूह; समुदाय (५)ढगलो; जथो स्त्यान वि० ढगलो करेलुं; एकठुं करेलुं (२) स्यूछ;भारे; जाडुं (३) लीसुं; चीकणु(४)न० कद के जथामां वधेयुं ते; भारे – जाडुं एवं ते (५) आळस; सुस्ती (६) पडघो; अवाज· स्त्ये १ उ० एकठुं थवुं;ढगलो थवो (२) पथरावुं; फेलावुं स्त्री स्त्री० नारी (२) कोई पण प्राणीनी मादा (३)पत्नी(४)नारी जाति(व्या०) **स्त्रीजित** पुं० स्त्रीनो ताबेदार – तेना हुकम प्रमाणे वर्तनारो पति स्त्रीथमिणी स्त्री० रजस्वला स्त्रीपर वि० कामुक; व्यभिचारी **स्त्रीपुंसौ** पुं• द्वि० व० पति अने पत्नी (२)नर अने मादा स्त्रीपूर्व पुं० जुओ 'स्त्रीजित' स्त्रीबुद्धि स्त्री० स्त्रीनी बुद्धि के सलाह (२) स्त्रीनी सलाह

स्त्रीयंत्र न० स्त्री रूपी यंत्र **स्त्रीरत्न** न० श्रेष्ठस्त्री(२)लक्ष्मी **स्त्रीलिंग** न० नारी जाति (व्या०) (२) स्त्रीपणानुं कोई पण चिह्न (स्तन इ०) (३) स्त्रीनुं गृह्यांग – योनि **स्त्रीविधेय** पुं० स्त्रीना उपर सत्ता चलावतो होय तेवो पुरुष स्त्रीसंग पु॰ स्त्रीमा आसक्ति(२)मैथुन स्त्रीसंस्थान वि० स्त्रीनी आकृतिवाळुं; स्त्रीना स्वरूपवाळ् स्त्रीसेवा स्त्री० स्त्रीमां आसवित स्त्रैण वि० स्त्री संबंधी; स्त्रीनुं; स्त्रीने लगतुं(२)स्त्रीने उचित (३) स्त्रीमां आसक्त एतुं(४) न० स्त्रीपणुं(५) स्त्री जाति(६)स्त्रीओनो समुदाय स्थ वि० (समासने अंते) रहेतुं; होतुं (जेमके, 'तटस्थ ') (२)स्थावर स्थग् १प० ढांकवुं; छुपाववुं (२) व्यापवुं; ढांकवुं; भरी काढवुं स्थगर पुं० 'पुत्रजीवक'नामनी छोड स्थागिका स्त्री० वेश्या;गणिका (२) तांबुळवाहकनुं पद (३) पाननो डबो स्यगित वि० ढांकेलुं; छुपावेलुं(२)बंब करेलुं; वासेलुं(३) रोकेलुं; अटकावेलुं स्थगु पुं० खुंघ स्थपति वि० मुख्य (२) पुं० अधिपति ; राजा (३) शिल्पी (४) सुतार (५) सारथि(६)अंतःपुरनो रक्षक स्थपत्य पु० अंतःपुरनो कंचुकी **स्थप्ट** वि० आपद्ग्रस्त(२)ऊंचुं नीचुं; { सांकडा भागमां आवेलुं स्थपुटमत वि० विषम भागमां आवेलुं; **स्थल** न० सूकी जमीन (२) किनारो (३)जमीन (४) स्थळ; स्थान (५) ऊंची जमीन; टेकरो (६) विवाद के चर्चानो विषय के प्रसंग (७)पुस्तकनो भाग (८) तंबू स्थलकमल न०, स्थलकमलिनी स्त्री०

जमीन उपर ऊगतुं कमळ (दिवसना प्रकाशमां कघडे छे) **स्थलचर वि० भू**मि उपर चालनार्ह स्थलपदा न० जुओ 'स्थलकमल' स्यलवर्त्मन् न० जमीनना मागं (जळ-मार्गथी ऊलटुं) लडाई स्थलविग्रह पु० सरखी जमीन उपरनी **स्थलस्थ** वि० सूकी जमीन उपर कभेलुं स्थली स्त्री० सूकी जमीत; कठण जमीत (२) जमीननो कुदरती भाग (जेम के वननो) (३) जुओ 'स्थलीदेवता ' स्थलीदेवता स्त्री • ते स्थळनी अधिष्ठाता देवता | सूनारु स्थलीशायिन् वि० खुल्ली जमीन उपर स्थलेशय वि० सूकी जमीन उपरसूना हं स्यविर वि० निश्चल; स्थिर(२)वृद्ध; प्राचीन (३) पुं ० वृद्ध पुरुष ; डोसो (४) भिखारी भिष्यता-गंभीरतावाळ<u>ुं</u> **स्यविरद्यति** वि० वृद्ध के वडीलनी **स्थविरा** स्त्री० डोसी स्यविष्ठ वि० अत्यंत स्थूल; ('स्यूल'नं श्रेष्ठतादर्शक रूप) **स्यवीयस्** वि० वधारे स्थूल ('स्थूल 'नुं तुलनात्मक रूप) स्यंडिल न० जमीननो टुकडो (यज्ञ माटे सरस्रो करेलो); यज माटेनी भूमि (२) उज्जड खेतर (३) ढेफांनो ढगलो(४)हद; सरहद (५) स्थळ; जगा (जेम के, घर आगळनी) स्यं**डिलेशय** पुं० यज्ञनी भूमि उपर खुल्लामां सूनार तपस्वी स्था १प० [तिष्ठति] ऊभुं रहेवुं(२) रहेवुं; वसवुं (३) बाकी रहेवुं (४) राह जोवी (५)अटकवुं; थोभवुं (६) बाजुए रहेवुं;मनमां राखवुं(७)होवुं (८)अनुसरवुं;आज्ञामां रहेवुं (९) रोकावुं; निग्रह थवो (१०) जीववुं (११) आधार राखवो (१२)

आचरवुं; अमल करवो (१४) १ आ० –नी सलाह मानवी (१५) जात समर्पवी (संभोग माटे) –प्रेरक० परणाववुं (२) दीक्षा आपवी; उपदेश आपवी (३)टकी रहे तेम करवु स्थाणु वि० निश्चल; स्थिर; स्थावर (२) पुं० शंकर (३) थांभलो (४) खींटी (५) थूणकुं; ठूंठुं; थडियुं स्थाणुभूत वि० स्थिर बनेलुं; गतिहीन बनेलुं (झाडना थ्णका पेठे) स्थातृ वि० ऊभुं रहेलुं; चालतुं नहि तेवुं स्थान न० ऊभा रहेवुं ते; चालु रहेवुं ते; वसवुं ते(२)चालवुं–खसवुं नहि ते (३)स्थिति; दशा(४)स्थळ(५) पद; होद्दो (६) मोभो; दरज्जो(७) रहेठाण; घर (८) प्रवेश (९) शहेर (१०) विषय; हेतु (११) प्रसंग; कारण(१२)योग्य स्थळ(१३)वर्णी-च्चारनुं स्थान (उर, कंठ, शिर, जिह्वा-मूल, दांत, नासिका, होठ, तालु - ए आठ) (१४) तीर्थस्थान (१५) स्थिर दशा; बचली दशा (१६) आश्रम (जीवननो) (१७) भूमि (१८) पोषण स्थानक न० स्थिति; प्रसंग; विशिष्ट प्रसंग (२) शहेर (३) पद; हो द्दो स्यानकुटिकासन न० गृहत्याग स्थानचितक पुं० सिपाईओता मुकाम अने खावापीवा वगेरेनो बंदोबस्त राखनारो अमलदार स्यानभ्रष्ट वि० नोकरी के होहामांथी बरतरफकरेलुं(२) उचित स्थानमांथी खसेडायेलुं **स्यानिक** वि० ते स्थानने लगतुं

स्यानिवद्भाव पुं० मुळ स्वरूप जेवी

स्थाने अ० उचित होय तेम; योग्य रीते

मददमां-पडखे ऊभा रहेवुं (१३)

(२)--ने बदले (३) --ने कारणे (४) —नीजेम निरं; नियममा राखतुं स्थापक वि० स्थापनारुं; स्थापित कर-स्थापत्य पुं० अंतःपुरनो रक्षक (२) न० मकान बांघवां ते; शिल्प स्थापन न० स्थापवुं ते; स्थिर करवुं ते; **ऊभुंकरवुं** ते सिंचालन करवुं ते स्यापना स्त्री • स्थापवुं ते(२)गोठववुं ते; स्थापित वि० स्थिर करेलुं; मूकेलुं(२) क्रभुं करेलुं; पायो नाखेलुं(३)चालु करेलूं; नियत करेलूं(४)नीमेलूं(५) परणावेल् स्थाप्य वि० मूकवानुं; सोंपवानुं (२) स्थापना करवानुं (३) नियुक्त करवानुं (४)बंध करवानुं ; पूरवानुं (५)पुं ० देवनी मूर्ति (६) न० थापण | हणहणाट **स्थामन्** न० बळ;पराक्रम(२)घोडानो स्थायिन् वि० रहेतुं; वसेलुं; ऊभेलुं (समासने अंते) (२)कायम रहेनाहं; टकाउ(३)निवास करतुं; रहेतुं(४) पुं० जुओ 'स्थायिभाव स्वायिभाव पुं० चित्तनी स्थिर-कायमी लागणी (आठ छे: रति, हास, शोक, ऋोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय) स्थायीभू १ प० स्थिर थवुं; कायमी थवुं स्थायुक वि० टकी रहे तेवु; कायमी (२)स्थिर; स्थावर(३)रहेलुं;वसेलुं स्थाल न० थाळी ; रकाबी (२) रांधवानुं वासण; तपेली स्याली स्त्री० रांधवानुं वासण; तपेली; स्थालीपुलाक पुं० तपेलीमांनो भात स्यादर वि० एक जगाए स्थिर रहेनार्ह; खसे नहीं तेवुं ('जंगम 'थी ऊलटुं) (२) जड; निष्किय; धीमुं (३)स्थापित थयेलुं (४)पुं० पर्वत (५)न० कोई पण जड बस्तु(६)स्यूल शरीर;भौतिक शरीर स्थावरजंगम न० खसे तेवी अने न खसे तेवी मिलकत (२)सजीव अने निर्जीव वस्तुओ

स्यावरात्मन् वि० स्थावर स्वरूपवाळुं स्थाविर न० वृद्धावस्था स्थासक पुं सुगंधी पदार्थथी शरीरने लेप करवो ते (२) पाणी के प्रवाहीनो [स्वभाववाळुं(२)कायमी स्थास्नु वि० स्थिर-निश्चळ रहे तेवा स्थित ('स्था 'नुं भू० कृ०) वि० अभेलुं; रहेलुं(२)ऊभुं रहेतुं (३) ऊभुं थयेलुं (४) होतुं; रहेतुं (५) थयेलुं; **ब**नेलुं (६)स्थाने नियुक्त थयेलुं (७) अनु-सरतुं; अनुकूळ रहेतुं (८) स्थिर थयेलुं; आसक्त (९) दृढ; स्थिर (१०) निश्चय-वाळुं (११) प्रमाणिक; नीतिमान (१२) न० ऊभा रहेवानी रीत; (१३)योग्य मार्गे उद्यम स्थितवी, स्थितप्रज्ञ वि० स्थिर बुद्धिवाळ् स्थितसंकेत, स्थितसंविद् वि० करार के

वचननुं पालन करनारं
स्थिति स्त्री॰ रहेवुं – ऊभा रहेवुं – वसवुं
ते (२)एक स्थितिमां स्थिर रहेवुं ते
(३) दृढ – कायन रहेवुं ते (४)
दशा; अवस्था (५) स्वभाव; प्रकृति
(६) हंमेश चालु रहेवुं ते (७)नीतिमर्यादानुं पालन; सद्वर्तनना मार्गने
अनुसर्वु ते (८) शासन; शिस्त(९)
पद; मोभो (१०)पोषण; निर्वाह(११)
मर्यादा; नियम (१२)विचार; गणना
स्थितिज्ञ वि० नीतिमर्यादा जाणनारं
स्थितिभद् वि० नीतिमर्यादानुं उल्लंघन करनारं

स्थितिमत् वि॰ दृढ; स्थिर(२)कायमी
(३) मर्यादामां रहेतुं (४) नीतिमर्यादाने पाळतुं [मार्ग
स्थितिमार्ग पुं॰ (मनने) स्थिर करवानो
स्थितिस्थापक वि॰ पूर्व स्थितिमां पाछुं
आवी शके तेवुं
स्थिर वि॰ टकी रहे तेवुं; कायमी (२)

अचळ; स्थावर; खसे नहीं तेवुं (३) कठोर; निर्देय | उद्यमी स्थिरकार्यं वि० कर्मने वळगी रहेतुं; स्थिरता स्त्री० दृढता; मननी मजबूताई स्थिरषी वि० दृढ मननुं; निश्चयी स्थिरप्रतिज्ञ वि० हठीलुं; जक्की (२) वचन पाळनारुं | मक्कम ; हठीलुं स्थिरप्रतिबंध वि० विरोध करवामां स्थिरसंगर वि० सत्यवचनी; साचुं स्थिरात्मन् वि० दृढ मनवाळुं; निश्चयी स्थिरापाय वि० सतत क्षीण यतुं एवं **स्थिरीक्ट** ८ उ० दृढ करवुं (२) आश्वासन आपवुं(३)समर्थन करवुं स्यूषा स्त्री० घरनो थांभलो (२)स्तंभ; थांभलो (३) एरण स्यूणाकर्ण पुं० रुद्रनुं एक स्वरूप **स्थूरीपृष्ठ** पुं० जेने हजी नाथ्यो के केळव्यो नथी एवो घोडो स्यूल वि०मोटुं; मोटा कदनुं (२) जाडुं (३) जोरवाळुं (४) जड बुद्धिनुं;मूर्ख (५)खरबचडुं; कर्केश(६)न० तंबू स्यूलता स्त्री० मोटापणुं; जाडापणुं (२)जडता; मूर्खपणुं **स्यूलनासिक पुं० भूंड; डु**क्कर **स्थूललक्ष, स्थूललक्ष्य वि०** दानवीर; उदार (२) डाह्युं; विद्वान स्यूलशरीर नं० पंचभूतात्मक देह (लिंग– सूक्ष्म देहथी ऊलटुं) स्यूलहस्त पुं । हाथीनी सूंढ **स्युलेच्छ** वि० अमर्याद कामनाओवाळुं **स्यूलोच्यय** पुं० पर्वतनी गवडी पडेली मोटी शिला (२)हाथीनी मध्यम गति स्येमन् पुं० स्थिरता;दृढता;मक्कमता स्येथ वि० मूकवानुं (२)नक्की करवानुं (३)पुं० बेनी तकरारनो निवेडो लाववा चूंटेलो मध्यस्थी स्योयस् वि० वधारे मक्कम ('स्थिर'नं तुलनात्मक रूप)

स्थेष्ठ वि० खूब मक्कम ('स्थिर'नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) स्थेर्य न० स्थिरता; दृढपणुं(२)मननी दृढता; निश्चयीपणुं (३)धीरज(४) कठोरपणुं; घनता (५) जितेंद्रियत्व **स्थेर्यज** वि० स्थावर **स्तपन** न० स्तान करवुं ते स्ना२प० नाहवुं;स्नानकरवुं(२) गुरुने त्यांथी पाछा फरती वखते स्नाननो विधि करवो स्नात ('स्ना 'नुं भू० कृ०) वि० नाहेलुं (२)भणेलुं; विद्वान (३) पुं० जेनों विद्याभ्यास पूरो थयो छे ते स्नातक पुं० ब्रह्यचर्यव्रत परिपूर्ण करेलो ब्राह्मण (२) गुरुने घेरथी आवी गृह-स्थाश्रममां प्रवेशेली ब्राह्मण (३) व्रतने कारणे भिक्षुपणुं करतो ब्राह्मण (४)कोई पण गृहस्याश्रमी स्नान न० नाहवुं ते; डूबकुं मारवुं ते (२)म्तिने नवराववानो विधि(३) नाहवामां वपरायें लुं जे कांई ते(४) धोई काढवुं ते; साफ करवुं ते स्नानगृह न० नाहवानो ओरडो स्नानतृष न० दर्भ स्नानवस्त्र न० जे वस्त्र पहेरीने नाह्या होईए ते वस्त्र स्नानशाटी स्त्री० नाहती वखते वींटवानुं स्नानीय वि० स्नान माटेनुं; स्नान वस्रते पहेरवानुं (२)न० स्तानोपयोगी पाणी के चंदन - चूर्ण वगेरे सामग्री **स्नापक** पुं० स्नान करावनार के स्नान माटे पाणी लावनार नोकर **स्नापित** वि० नवरावेलु **स्नायु** पुं० मांसनी पेशी(२)धनुषनी **स्निग्ष** ('स्निह्' नुं भू० क्रु०)वि**० स्**नेह-वाळुं; प्रेमाळ (२) तेलवाळुं; चीकणुं (३) चोटी जाय तेवुं (४) चळकतुं (५) माया-ममताभर्युं (६) सुंदर; मनोहर (७)गाढुं(८)पुं०मित्र (९) न० तेल

स्निग्घजन पुं० स्नेही माणस स्निह् ४ प० स्तेह करवो; ममता होवी (२)चीकणु होबु;चीकाशबाळा होबुं –प्रेरक ० तेल चोपडवु; तेल ऊजवुं स्नु २ प० टपकवुं; झमवुं(२)बहेवुं स्नु पुं०, न० उच्च प्रदेश (२) शिखर; टोच (प्रथम पांच रूप नथी अने दितीया बहुवचनथी 'सानु'ने बदले विकल्पे आनां रूप मुकाय छे) **स्नुषा** स्त्री० पुत्रवधू स्नेह पुं० प्रेम;ममता(२)चीकणापणुं (३)भेज; भीनाश(४)चरबी, तेल वर्गरे स्निग्ध पदार्थ स्नेहप्रवृत्ति स्त्री० स्नेह करवो ते स्नेहप्रसर, स्नेहप्रस्नाव पुं*० स्ने*ह प्रगट थवो – रेलवो ते स्नेहव्यक्ति स्त्री० स्नेह प्रगट थवो ते **स्नेहांकन** न० स्नेहनुं चिह्न-लक्षण **स्पर्घ् १** आ० हरीफाई करवी ; सरसाई करवी(२)पडकार करवी **स्पर्धा** स्त्री० चडसाचडसी; सरसाई (२)अदेखाई(३)पडकार **स्पधित वि० सर**साई करतु होय तेवुं (२)पडकार कर्यो होय तेवुं स्पर्धिन् वि० हरीफाई करतुं;सरसाई करतु(२)अदेखु(३)अभिमानी स्पर्ध्य वि० इच्छा करवा योग्य(२) कीमती भंटव स्पर्भ १० आ०अडकवुं (२) जोडावुं (३) स्पर्श पुँ० अकडवं ते (२)संपर्क; सयोग (३) लागणी;वेदना (४) त्वच् इंद्रियनो गुण(५) 'क् 'थी 'म् ' सुधीनो कोई पण व्यंजन (६) संभोग स्पर्शमणि पुं० पारसमणि स्पर्शयज्ञ ५० होमवानी वस्तुनो भात्र स्पर्श करीने करातो यज्ञ स्पर्शरसिक वि० विषयी; कामुक स्पर्शवत् वि० मृदु; कोमळ (२)स्पर्शयी जेनुं ज्ञान थई शके तेवुं

स्पर्शानुकुल वि० स्पर्श करता आनंद आपे तेवुं **स्परित** वि० अर्पण करेलुं **स्पश** पुं० जासूस;चर(२)युद्ध;लडाई **स्पष्ट** वि० चोरूखुं देखी शकाय तेवुं; प्रगट (२) साचुं; खर्ष (३)प्रफुल्लित; बीरेलुं **स्पष्टाक्षर** वि० शब्दो स्पष्ट संभळा**य** स्पंद् १ आ० फरकवुं; धबकवुं (२) ध्रूजवुं ; कंपवुं (३) जवुं ; फरवुं स्पंद पुं० धबकवुं ते; फरकवुं ते (२) हलनचलन; गति **स्पंदन** न० फरकवुं ते; कंपवुं ते (२) कंप; घूजारो (३) झडपी गति स्पंदित ('स्पंद्' नुं भू० कृ०) वि० फरकेलुं; कंपेलुं (२) गयेलुं (३) न० फरकर्वु ते(४)किया; गति (मननी) स्पृज्ञ वि० (समासने अंते) स्पर्श करतुं; अडकतुं; वींधतुं; असर करतुं (उदा० 'मर्मस्पञ्') **स्पृञ्**६ ५० अडकवुं;स्पर्शे करवो(२) हाथ फेरववा (३) चोटवुं; बळगबुं (४) पाणी छांटवुं; पाणीथी धोबुं (५) पहोंचबुं (६) पामबुं (७) स्थिति-दशा पामवी (८) असर करवी (९) उल्लेखवुं —कर्मेणि० अपवित्र थवुं;दूषित थवुं -प्रेरक० अर्पवु; बक्षवु **स्पृश्य** वि० स्पर्शेद्रियथो जणाय तेवुं (२) कबजामां लेवा योग्य स्पृष्ट ('स्पृश्नुं भू० कृ०)वि० स्पर्श करा-येलुं (२) स्पर्शेतुं;संबद्ध(३)पहोंचतुं (४) असर पामेलुं; –थी ग्रस्त (५) अपवित्र ययेलुं; दूषित ययेलुं स्पृष्टक न० एक प्रकारनुं हळवुं आर्लि-गन (पासे थईने जतां जतां करेलुं) स्पृष्टि, स्पृष्टिका स्त्री० स्पर्श ; अडकवुं ते **स्पृह १०** उ० इच्छवुं; स्पृहा करवी; झंखवं (२) अदेखाई करवी

स्पृहणीय वि० स्पृहा – कामना करवा योग्य (२) अदेखाई थाय तेवुं **स्पृहयालु** वि० उत्सुक; आतुर स्पृहा स्त्री० इच्छा; आतुरता; झंखना स्प्रध्टब्य वि० स्पर्श करवा योग्य (२) न० स्पर्श; लागणी स्फटिक पुं० एक जातनो सफेद कीमती पध्थर के रत्न स्फटिका स्त्री० फटकडी **स्फटिकाचल** पुं० मेरु पर्वत **स्फटिकाद्रि पुंच कैलास** पर्वत **स्फटित वि० फा**टेलुं; फाडेलुं **स्फर् ६**प० 'स्फुर्' जुओ स्फल् १ प० ध्रूजवुं; फरकवुं (२) १० उ० हलाववुं | प्रकाशित स्फाटिक वि० स्फटिक जेवुं उज्ज्वळ-स्फाय् १ आ० जाडा थवुं; मोटा थवुं (२) अंचुं थवुं; वधवुं –प्रेरक० दधे तेम करवुं; वधारवुं स्फार वि० विस्तीर्ण; मोटु (२) पुष्कळ; विपुल (३) मोटु (अवाज) **स्फारित** वि० पहोळुं थयेलुके करेलुं स्फारीभू १ प० वधवुं; विस्तरवुं **स्फालन** न० कंपवुं ते (२) हलाववुं ते (३) घसवुं ते; घर्षण (४) थाबडवुं ते स्फिन् स्त्री० नितंब; कुलो स्फिर वि० पुष्कळ; अत्यंत; विशाल स्फीत ('स्फाय्' नुं भू० कृ०)वि० वधेलुं; मोटुं थयेलुं (२) जाडुं; मोटुं (३) घणुं; पुष्कळ (४) समृद्ध; सफळ (५) पहोळुं थयेलुं स्फोति स्त्री० वृद्धिः; विपुलता स्फुट् ६ प०, १ उ० फाटवुं; चिरावुं; तूटवुं (२) ऊघडवुं; खीलवुं (३) भागी जवुं; वीखराई जवुं (४) प्रगट थवु; नजरे पडवु (५) १० उ० फाडवु; चीरवुं(६)प्रगट करवुं;खुल्लुं करवुं **स्फुट** वि० फूटेलुं; फाटेलुं (२) विक-

सित (३) स्पष्ट; प्रगट (४) प्रख्यात (५) उज्ज्वळ ; स्वच्छ (कमळ) **स्फुटपूंडरीक** न० खीलेलुं हृदय (रूपी **स्फुटम्** अ० स्पष्टपणे; प्रगट रीते स्फुटार्थ वि० समजाय तेवुं; स्पष्ट(२) अथंयुक्त खंड **स्फुटिका** स्त्री० भागेलो नानो टुकडो; **स्फुटित** ('स्फुट्'नुं भू० कृ०) वि० फाटेलुं; तूटेलुं (२) खीलेलुं; विक-सेलुं (३) प्रगट करायेलुं; बतावायेलुं स्फुर् ६ प० ध्रूजवुं; फरकवुं (२) अमळावुं (३) आगळ धसवुं, कूदको मारवो (४) पाछुं ऊछळवुं (५) बहार नीकळवुं; फूटवुं(६)प्रगट थयुं; नजरे पडवुं (७) चमकवुं; झगमगवुं (८) आगळ आववुं; विस्यात थवुं स्फुर् वि० (समासने अंते) घूजतुः फरकर्तुं, धबकर्तु **स्फुर** पुं० ध्रूजवं-फरकवं ते स्फुरण न० ध्रूजवं ते; फरकवं ते (२) फूटवुं ते ; प्रगट थवुं ते (३) चमकवुं ते स्फुरद्गंध पु॰ फेलायेली गंध स्फुरित ('स्फुर्' नुं भू० क्ट०) वि० फरकेलुं; कंपेलुं (२) हालेलुं (३) चमकेलुं (४) अस्थिर (५) प्रगट थयेलुं(६)न० स्फुरण (७) चमकारो स्फुर्ज़् १ प० [स्फूर्जिति] गर्जेवुं; कडाको थवो; फूटवुं(२)चमकवुं(३)फुटी के फाटी नीकळवुं नो तणखो स्फुलिंग पुं०, न०, स्फुलिंगा स्त्री ० अग्नि-स्फूर्ज पु० कडाको ; गर्जना(२)इंद्रनुं बज्र **स्फूर्जथु** पु० वीजळीनो कडाको स्फूर्जास्त्री० कडाको; गडगडाट **स्फूर्ति** स्त्री**०** कंपवुं –ध्रूजवुं ते (२) कूदको (३) खीलवुं – ऊघडवुं (४) प्रगट थवु – नजरे पडवुं (५) मनमां चमकारो स्फेयस् वि० वधारे मोटुं ('स्फिर' नुं तुलनात्मक रूप)

स्फेष्ठ वि० सौथी मोटुं ('स्फिर' नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) स्फोट पुं० फोडवुं-फूटवुं-फाटी नीक-ळवुं ते (२) खुल्लुं –प्रगट थवुं के करवुं ते (३) फोल्लो स्फोटन न० अचानक फोडवुं –फाडवुं ते(२)अनाजने फडाकायी कपणवुं ते (३) आंगळीनो टचाको बोलावदो ते **रुफ्च** न० यज्ञमां वपरातुं खड्गना आका-रनुं एक साधन (२) एक जातनुं हलेसुं स्म अ० धातुना दर्तमान काळ साये आवी भूतकाळनो अर्थ दर्शावे (२) पादपूरक प्रत्यय (नकारवाचक मा' नी साथे सामान्य रीते वपराय छे) स्मय पुं० आक्चर्य (२) गर्व **स्मयदान** न० देखाडपूर्वक करेलुं दान स्मयमान वि० नवाई पामतुं स्मर पुं० स्मरण; याद(२) प्रेम(३) मदन; कामदेव स्मरण न० स्मृति; याद (२) चितन; चितवन (३)परंपराधी चाल्यु आवव् ते ('श्रुति' श्री कलटुं) स्मरणपदवी स्त्री० मृत्यू स्मरणानुप्रह पु० अनुप्रहपूर्वक करेली याद (२) याद करवा रूपी कृपा स्मरणी स्त्री० जपमाळा स्मरबज्ञा स्त्री० कामज्वरथी थती शरीरनी दशा (दश प्रकारनी गणावाय छे);प्रेममा पड्या होवानी स्थिति स्मरप्रिया स्त्री० रति; कामदेवनी पत्नी स्मरमय वि॰ काममूलक; प्रेमने कारणे उत्पन्न षयेलुं स्मरकासम पुं० शंकर स्मरसद्भ पुं० चंद्र (२) वसंत ऋतु स्मरहर पुं व्यंकर **नामा**ते स्मराष्ट्रस, स्मरार्ख वि० कामानुर; स्मरोन्नाद पुं० कामवासनाथी उत्पन्न थयेली उन्मत्तता के मूर्खता **स्मतंत्र्य** वि० याद करवा लायक

स्मर्तृ पुं० शिक्षक; अध्यापक स्मार वि० कामदेवने लगतुं; काम-देवनुं (२) न० स्मरण ; याद **स्मारण** न० याद कराववुं ते (२) गण-तरी करवी ते; हिसाब मेळववो ते स्मार्त वि० याददास्त संबंधी; करायेलुं (२) याददास्तमां होय तेवुं (३) स्मृतिशास्त्रना आधारवाळुं; स्मृतिशास्त्रमां कहेलुं (४) पु० स्मृति-शास्त्रमां पारंगत ब्राह्मण (५) स्मृतिशास्त्रने अनुसरनारो स्मि १ आ० स्मित करवुं; धीमेथी हसवुं (२) खीलवुं; ऊघडवुं स्मित वि० स्मित करतुं (२) प्रफुल्लित; स्रीलेलुं (३) न० मंद हास्य स्मितपूर्वम् अ० स्मित करीने स्मृ १प० याद करवुं (२) देवनुं घ्यान करवुं; देवना नामनो जप करवो (३)स्मृतिशास्त्रे आज्ञा करवी;विधान करवुं (४) उत्सुकतापूर्वक याद करवुं स्मृत ('स्मृ'नुंभू० कृ०) वि० याद करेलुं (२) नोंघायेलुं; उल्लेखायेलुं; गणेलुं ; मानेलुं (३)स्मृतिशास्त्रे आदेश कर्यो होय तेबुं(४)न० स्मृति;याद स्मृति स्त्री : स्मरण; याद (२)स्मरण-शक्ति (३) धर्मशास्त्र; मानवरचित कायदाओनो ग्रंथ ('श्रुति' अपौरुषेय गणाय छे) (४) सारासारविवेक स्मृतितंत्र न्० कायदापोथी; धर्मशास्त्र स्मृतिपय पुं याददास्तनो विषय स्मृतिपर्यतम् १ प० मरण पामवु (याद-दास्तनो विषय बनी जवु) स्मृतिपाठक पुं० कायदाशास्त्री स्मृतिअंश पुं० यादवास्त नाश पामवी ते **स्मृतिमत् वि०पूरे**पूरा भानवाळूं(२) पूर्वजन्म याद होय तेवुं(३)डाह्युं; शाणुं(४)स्मृतिशास्त्रमां प्रवीण एवं स्मृतिरोध पुं० याददास्त लुप्त थवी ते

स्मृतिविभ्रम पुं॰ जुओ 'स्मृतिभ्रंश' स्मृतिविषय पुं० जुओ 'स्मृतिपथ' **स्मृतिशेष** वि० मृत; मरेलुं स्मृतिहीन वि० भुलकणु **स्मेर** वि० स्मित करतुं; हसतुं (२) प्रफुल्लित; खीलेलुं(३)गविष्ठ स्यद पुं० वेग; गति **स्यन्न** ('स्यंद्' नुं भू० कृ०) वि० झरेलुं; गळेलुं; टपकेलुं स्यम् १ प०, १० उ० अवाज करवो; मोटेथी बूम पाडवी स्यमंतक पुं० एक कीमती मणि (रोज आठ भार सोनुं आपतो) स्यंद् १ आ० झरवुं; झमवुं; टपकवुं; वहेर्वु (२) दोडवुं; नासी जवुं (३) देखावुं; यवुं (४) वरसवुं स्यंद पुं॰ झमवुं-टपकवुं ते (२) देगे जवुं – ससवुं ते (३) रथ स्यंदन वि॰ झडपी; वेगीलुं(२)वहेतुं; झडपथी जतुं(३) पुं० युद्धरथ; रथ (४) न० टपकवुं ते; झमवुं ते स्यंदनिका स्त्री० लाळनुंटपकुं(२) झरो;झरणुं [जत्(३)वेगे धसत् स्यंदिन् वि० झमतुं; झरतुं; वहेतुं(२) **स्यात् अ०** कदाच एम पण होय स्याद्वाव पु० अमुक दृष्टिए एम पण होई शके' एवो निराग्रहीपणानी जैन वाद - दार्शनिक सिद्धांत स्यूत ('सिव्'नुभू० कृ०)वि० सोयधी सीवेलुं (२) वींघायेलुं; परोवायेलुं (३) साथे वणायेलुं-जोडायेलुं (४) पुं० कोथळो ; गुण [माटेनो छेडो स्नग्दामन् न० हारनी गांठ वाळवा **स्रग्बर वि०** हार पहेरेलुं ितेवुं स्राचिन् वि० माळा के हार पहेर्यो होय **स्रज् स्त्री॰ फूलनी माळा** (२) हार स्रवं पुं० झरवुं के झमबुं ते; बहेवुं ते (२) टीपांनी घार (३) झरो

स्रवद्रंग पुं० बजार; मेळो **स्रवंती स्**त्री० नदी; झरणुं स्नब्दू पुं० स्नब्टा; सर्जक (२) विधाता; ब्रह्मा (३) शिव स्तर् ('स्नंस्' नुभू० क०) वि० पडी गयेलुं; छूटी गयेलुं (२) शिथिल थयेलुं; नीचे नमी गयेलुं(३)लटकतुं; | आसन; पथारी लबडत् स्रस्तर पुं० अढेलाय—आडा पडाय तेवुं **स्रंस् १** आ० सरी पडवुं; नीचे पडी जवुं (२) भागी पडवुं; छूटुंपडी जवुं(३) जवुं(४)टींगावुं; लटकबुं *−*प्रेरक० ढीलुं करवुं;धीमुं पाडवुं स्रंसन न० नीचे पडवुं के पाडवुं ते (२) गर्भस्राव (३) जुलाब स्रंसिन् वि० सरकी जतु; ढीलुं पडतुं; छूटुं पडतुं (२) ढीलुं लटकतुं स्नाक् अ० जलदीथी; झडपथी स्नाव पुं० झरवुं ते; झमवुं ते; वहेवुं ते स्तु १ ५० झरवुं; झमवुं; टपकवुं(२) वहेवरावबुं; वहेवा देवूं (३) जबुं; खसवुं (४) टपकी जवुं; सरी जवुं; क्षीण थवुं;नाश थवो (५)सरकी जब् स्रुष्टन पुं० एक प्रदेश के जिल्लानुं नाम (पाटलिपुत्रथी एकाद दिवसनी मजले) सुच् स्त्री० घी होमवानु लाकडानु कड़छी जेवुं साधन [टपकावतु **स्रुत्** वि० (समासने छेडे)वहेवरावतुं; स्रुत ('स्रु'न भू० कु०)वि० झरेलुँ; टपकेलुं (२) गयेलुं स्तृति स्त्री० सरवुंते; टपकवुंते (२) प्रवाह; झरणुं **किड़**छी **सुव** पुं०, सुवा स्त्री० यज्ञमां वपराती स्त्र स्त्री० यज्ञनी कडछी स्रोतस् न० प्रवाह; वहेळो (२) वेगथी वहेतो प्रवाह (३) नदी (४) मोजुं (५) पाणी (६) इंद्रिय (७) हाथी-नी सूढ(८)शरीरनुं रंध्र(९)जवं ते

स्रोतस्वती, स्त्रोतस्विनी स्त्री० नदी स्रोतोरंध्र न० हाथीनी सूंढनु छिद्र स्रोतोवह (-हा) स्त्री० नदी स्व स० ना०, वि० पोतानुं (२) कूद-रती;सहज; स्वाभाविक(३)पोतानी ज्ञाति के जातिनुं (४) पुं० पोतानी जात (५) समो (६) विष्णु (७) पुं०, न० धन; मिलकत (८) स्वभाव स्बक वि० पोतानुं (२) पुं० मित्रः; बंधु; सगुं (३) न० पोतानी मिलकत स्वकर्मन् न० स्वधर्मः; पोतानुं कर्तव्य स्वकीय वि॰ पोतानुं (२) पोतानुं सगुं स्वगतम् अ० एक बाजुए; पोताने ज कहेतो होय तेम (नाट्च०) स्वगोचर वि॰ पोतानी शक्तिनी मर्था-द्रामां होय तेवुं स्वच्छ (सु + अच्छ) वि० घणुं चोरुखुं; निर्मळ; तेजस्वी (२) सफैद (३) सुंदर (४) नीरोगी स्वच्छंद वि० निरंकुश;पोतानी **मर**जी मुजब वर्तनारं (२) जंगली (३) प्ं० पोतानी मरजी के वृत्ति स्वच्छंदम् अ० पोतानी मरजी मुजब **स्वच्छा** स्त्री० सफेद दरो स्वज वि॰ पोतामांथी के पोता यकी जन्मेलुं (२) स्वाभाविक (३) पुं० पुत्र के संतान (४) परसेवो स्वजन पुं० सगो; संबंधी (२) पोतानी जातनो के घरनो माणस **स्वजनगंधिन्** वि० दूरनी सगाईवाळ् स्वजनायते आ० (सगो मनाय छे-गणाय छे) | पोतानामांथी स्वतस् अ० आपोआप; पोतानी मेळे (२) स्वतंत्र वि० स्वाधीन;कोईना ताबासां नहीं तेवुं(२)मनस्वी;पोतानी मरजी मुजब चालनारुं (३) उमरलायक; पुरूत स्वतःसिद्ध वि० जाते ज प्रमाणरूप-आपोआप सिद्ध होय तेवुं (जेने बीजा प्रमाणनी जरूर नथी)

स्वता स्त्री० पोतापणुं; पोतानुं भानवुं ते (२) मालकीपणुं **स्थत्व** न० मालकी-हक; मालकीपणुं स्वद् १ आ० गमवुं; मधुर लागवुं; स्वादिष्ट लागवुं (२) चाखवुं; खावुं स्वदन पुं० भक्षण; आस्वाद स्वदित ('स्वद्' नुं भू० कृ०) वि० खाधेलुं; चाखेलुं (२) न० श्राद्धमां पिंड आप्या पछी 'तमने भावो-गमो' ए जातनो उ**च्चार** स्वदेश पुं० पोतानो देश; वतन स्वधर्म पु॰ पोतानो धर्म-पंथ (२) पोतानुं कर्तव्यः; पोताना वर्णनुं कर्तव्य स्वधा स्त्री० पितृओने अपातो पिड (२) श्रद्ध (३) अ० पितृओने पिंड आपतां करातो उच्चार स्वधाप्रिय पुं० अग्नि [कुहाडी स्वधिति पुं०, स्त्री०, स्वधिती स्त्री० **स्वधीति** वि० (वेदनो) सारी रीते पाठ करनारो; ब्रह्मचारी स्वन् १ प० अवाज करवो (२) गुंजा-रव करवो (३) गावुं स्वन पु० अवाज; ध्वनि स्वनिक वि० अवाज करतुं स्वनित न० गर्जनाः; मेघगर्जना (२) अवाज; ध्वनि **स्वप् २** प० ऊंधवुं; ऊंघी जवुं (२) आडा पडवुं; सूई जवुं(३)लीन धवं स्वपक्ष पुं॰ पोतानी पक्ष-बाजु (२) मित्र (३) पोतानो अभिप्राय स्वपन न० सूर्वुते; निद्रा (२) स्वप्न आववं ते किंघमां भासतो देखाव स्वप्न पुँ० ऊंघ; निद्रा (२) समणुं; स्वप्नज् वि० ऊंघतुं; ऊंघमां आवेर्ल् स्वप्नज वि० स्वप्नमां उत्पन्न थयेलुं-देखात् स्वप्नदोष पुं० स्वप्नमां वीर्यपतन स्वप्नधीगम्य वि० स्वप्न जेवी समाधि अवस्थामां बुद्धि वडे जोवात्

स्वप्ननिकेतन न० शयनखंड - - भ्रम स्वप्नप्रपंच पुं वस्वप्नमां देखाती दुनिया स्वप्नशील वि० ऊंघणशी स्वप्रकाश वि० पोताना ज प्रकाशथी प्रकाशित (२)पोतानी मेळे समजाय तेवं स्वप्रयोगात् अ० जातमहेनतथी स्वभाव पु० प्रकृति; मूळ गुण; सहजधर्म (२)स्वाभाविक वलण स्वाभाविक **स्वभावसिद्ध** वि० कुदरती; साथे जन्मेलु; स्वभावात्मक वि० साहजिक; कुदरती **स्थ्यम्** अ० जाते; पोतानी जाते (२) आपमेळे; महेनत वगर **स्वयंग्रह** पुं**० पोतानी मेळे** रुई ठेवुं ते (रजा विना) **स्वयंग्राह** वि० स्वैच्छिक;ऐच्छिक(२) बळजबरीथी लेनाहं (३) पुं० पोतानी पसदगी

स्वयंभु पुं० ब्रह्मा स्वयंभुव पुं० प्रथम मनुनुं नाम (२) ब्रह्मा (३) शंकर स्वयंभू वि० पोतानी मेळे उत्पन्न थयेलुं; जेनुं बीजुं कोई कारण नथी तेवुं(२) पुं० ब्रह्मा; विष्णु; शिव; कामदेव स्वयंवर पुं० जाते पति पसंद करवो ते स्वयंवरा स्वी० जाते पति पसंद कर-नारी कन्या

स्वय्थ्य पुं० सगो
स्वयोनि वि० पोताना मातृपधन संबंधी
(२) स्त्री० बहेन के नजीकनी सगी
स्वर् अ० स्वर्गः पुण्यशाळीओनं मृत्यु
पछीनं तात्कालिक स्थान (२) त्रण
व्याहृतिओमांनी एक (प्रथमा, द्वितीया, पष्ठी अने सप्तमीना अर्थमां
वपराय छे)

स्वर पुं० अवाज; घ्वितः; सूर (२) संगीतना सात सूरमानो दरेक (३) जेनो पूर्ण उच्चार कोईनी मदद विना थई शके तेवो वर्ण (ब्या०) स्वरब्रह्मन् न० नाद रूपे प्रगटेलुं ब्रह्म स्वरमंडल न० स्वरोनी गोठवण ; स्वरोनी रचना [अवरोह स्वरसंक्रम पुं० स्वरोनो आरोह-स्वरसंदेहविचाद पु० एक रमत स्वरसंयोग पुं० स्वरोनुं जोडाण (२) अवाज; सूर **स्वराज्** वि० स्वयंप्रकाश स्वरापगा स्त्री ० स्वर्गगंगा (२) आकाश-स्वरित वि० अत्राज करेलुं; ध्वनित (२) सुरोलुं (३) पुं० स्वरना त्रण विभागमानो एक, जेमां उदात्त अने अनुदात्त बनेना लक्षण होय स्वरितल्व न० अर्थ नीकळवो ते; अर्थवाळा होवुं ते स्वरु पुं० सडको (२) यज्ञ (३) बज्य (४) स्वरुचि स्त्री० पोतानी खुशी स्वरूप वि॰ तुल्य; सरखुं (२) सुंदर (३) विद्वान; डाहघुं (४) न० कुदरती आकार (५) कुदरती स्थिति; कुदरती स्वभाव (६) स्वभाव; प्रकृति (७) विशिष्ट लक्ष्य (८) प्रकार; जात **स्वर्ग** पुं० देवोना लोक **स्वर्गत** वि० मृत स्वर्गतरंगिणी स्त्री० गंगानदी स्वर्गति स्त्री० मृत्यु (२)स्वर्गमां जवुं ते स्वर्गद्वार न० स्वर्गनु बारणु;स्वर्गमां प्रवेश स्वर्गपति पुं० इंद्र स्वर्गपथ पुं० आकाशगंगा स्वर्गरोदःकुहर पुं० स्वर्ग अने पृथ्वी वच्चेनुं पोलाण **स्वर्गवधू** स्त्री० अप्सरा स्वर्गसद् पुं० देव स्वर्गस्त्री स्त्री० अप्सरा **स्वर्गगा** स्त्री० जुओ 'स्वरापगा' स्वर्गिन् वि० स्वर्गनुं;स्वर्गसंबंधी(२) पुं॰ देव (३) मरी गयेलो माणस

स्वर्गीय वि० दैवी; स्वर्गने लगतुं(२) स्वर्गे लई जनारुं स्वर्गोकस् पुं० देव **स्वर्ग्ध** वि० जुओ 'स्वर्गीय' स्वर्ण न० सोनुं (२) सोनानो सिक्को स्वर्णकाय पुं० गरुड स्वर्णकार पुरु सोनी **स्वर्णनाभ** पुं० शालग्राम स्वर्दृश् पुं० इंद्र (२) अग्नि(२)सोम **स्वर्धनी** स्त्री० स्वर्गगंगा **स्वर्भानु** पुं० राहु स्वर्भानुसूदन पुं० सूर्य स्वर्योषित् स्त्री० अप्सरा स्वलीक पुं० स्वर्ग स्ववंषु स्त्री० अप्सरा स्वर्वेद्य पुं० अश्विनीकुमारोनुं नाम स्वल्प वि० अति अल्प--थोडुं स्वल्पक वि० घणुं थोडुं (माप के संख्यामां); घणुं नानुं स्वल्पबल वि० घणुं दुर्वळ स्ववज्ञ वि॰ पोताने वश के पोताना काबूमां होय तेवुं (२) स्वतंत्र स्वविषय पुं० पोतानो देश;पोतानुं घर स्ववृत्ति वि० स्वप्रयत्ने ज आजीविका चलावतुं होय तेवुं स्वसा, स्वस् स्त्री० बहेन स्वस्ति स्त्री० हित; कल्याण(२) अ० 'सारुं थाओ', 'मलु थाओ' ए अर्थनो उद्गार (पत्रनी शरूआतमां वपराय छे) स्वस्तिक पुं० साथियो; एक सद्-भाग्य-सूचक आकृति (२) जेनाथी सद्भाग्य प्राप्त थवा मांडे एवी वस्तु (३) चार रस्ता भेगा मळे ते स्थान (४) चोकडी पड़ें तेम हाथ ऊभो अने आडो एम गोठववा ते (५) एक जातनो चारण; बंदीजन (६) पुं० न॰ एक आसन (योग॰) (७) बेठक ; पीठ (देव माटे तैयार करेल)(८) खास आकारत मकान के मंदिर

स्वस्तिकपाणि वि० स्वस्तिक आकारे हाथ करनारुं (२) हाथमां मांगळिक वस्तुओवाळुं स्वस्तिमत् वि० मुखी; सुरक्षित स्वस्तिबाचन, स्वस्तिबाचनक, स्वस्ति-वाचनिक न० यज्ञादि धार्मिक किया-ओनी शरूआतमां करातो प्रारंभिक विधि (२)शुभेच्छाओ अने आशीर्वादो सहित फुल बगेरे अर्पवां ते स्बस्त्ययन वि०शुभ; मांगलिक (२) न० समृद्धि मेळववानो उपाय-मार्ग (३) मंत्र वगेरे विधिथी अनिष्ट दूर करवुं ते (४) ब्राह्मणने दक्षिणा आप्या पछी ते जे आशीर्वाद आपे ते स्वस्थ वि० स्वाश्रयी; पोताना ज प्रयत्न उपर आधार राखतुं (२) दृढ; स्थिर; निश्चयी (३) स्वतंत्र (४)तंदुरस्त ; सुखी (५)संतुष्ट स्वस्थान न० पोतानुं घर के स्थान स्वस्रीय पुंच्याणेज स्वस्रीया स्त्री० भाषी; भाषेजी **स्वस्रेय** पुं० भाणेज **स्वस्त्रेयी** स्त्री० जुओं 'स्वस्त्रीया' स्वहस्त पु॰ पोताना हस्ताक्षर स्वहस्तिका स्त्री० कुहाडी स्वहित वि० पोताने लाभदायक एवं (२) न० पोतानुं हित, लाभ के स्वार्थ स्वंज् १ आ० [स्वजते] भेटवुं; आलि-गन करवुं (२) वींटळावुं स्वंत वि० सुस्ती अंत के छेवटवाळूं स्वाकृति वि०सुडोळ; घाटीलुं स्वागत न० 'भले पधार्या' एवं अभिनंदन स्थातंत्र्य न० स्वतंत्रता तलवार स्वाति (-ती)स्त्री० पंदरम् नक्षत्र (२) स्वाद पुं० रसर्नेद्रियथी थतो अनुभव (२)रस; आनंद(३)चाखवुं ते **स्वादिष्ठ** वि० घणुं ज स्वादु('स्वादु'नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप)

स्वादीयस् वि० वधारे स्वादु ('स्वादु' नुं तुलनात्मक रूप) स्वादु वि॰ स्वादवाळुं; मीठुं (२) लहेजतदार; रुचे तेवुं; मधुर (३) पुं० मधुर रस (४) न० स्वाद; रस (५) मधुरता; सुंदरता स्वाद्य न० रस स्वाधिकार पुं० पोतानी फरज;पोतानो होद्दो (२) पोतानो अमल ज्यां चालतो होय ते भाग [मांनुं एक (योग०) स्वाधिष्ठात न० शरीरमाना छ चक्री-स्वाधीन वि॰ पोताने ताबे होय तेवुं; पोताना काबूमां होय तेवुं (२) स्वतंत्र स्वाधीनकुशल वि० पोतानुं योगक्षेम पोताना हाथमां होय तेवुं स्वाचीनपतिका, स्वाचीनभर्तुका स्त्री० जेनो पति पोताना बशमां छे तेवी स्त्री **स्वाध्याय** पुं० पोतानी जाते–एकला पाठ करी जवो ते (२) वेदोनो पाठ -अम्यास (३) वेद स्वाध्यायाथिन् पुं० अध्ययन अञ्चवस्त्र मागनारो स्वान पु०ध्वनि; अवाज **स्वानुभव** पुं० धन-मिलकत माटेनो प्रेम स्वानुभूति स्त्री० जात-अनुभव (२) आत्मज्ञान ; आत्मसाक्षात्कार स्वानुरूप वि० स्त्राभाविक (२) पोताने उचित होय तेर्यु [आळस;घेन स्वाप पुं० ऊषंष (२) स्वप्न (३) स्वापतेय न० द्रव्य; धन स्वभावसिद्ध; स्वाभाविक वि० नैसर्गिक; कुदरती स्वाभास वि० भव्य; यशस्वी स्वामिन् पु॰ मालिक; शेठ (२) अधिपति; राजा (३) पति (४) परमहंस; यति (घणुंखरं विशेषनामने लगाडाय छे) स्वामिनी स्त्री० मालिक स्त्री; शेठाणी स्वास्य न० स्वामीपणुं; मालकीपणुं(२) (शरीर मननी)स्वस्थताः; स्वास्थ्य स्वायत्त वि० पोताना हाथमां होय तेवुं ; पोतानी उपर अवलंबतुं स्वायंभुव वि० ब्रह्मा संबंधी (२) ब्रह्मा-मांथी ऊतरी आवेलुं (३)पुं० प्रथम मनु स्वारसिक वि० रसाळ (काव्य०) (२) (बीजाना दबाण विना) आपमेळे करेलुं स्वाराज् पुं० इंद्र स्वाराज्य न० इंद्रपद; स्वर्गेनुं राज्य (२) ब्रह्मत्वः; ब्रह्म साथे एकता स्वार्थ पुं० पोतानुं हित; पोतानो लाभ (२)पोतानो – मूळ अर्थ (३) पुरुषार्थ स्वार्थतृष् वि० स्वार्थी स्वार्थपर, स्वार्थपरायण वि० स्वार्थी; पोतानुं ज हित साधवामां तत्पर एवं स्वार्थपंडित वि० पोतानी बाबतोमां कुशळ (२) स्वार्थ साधवामां कुशळ स्वालक्षण वि० सहेलाईथी जोई शकातुं स्वालक्षण्य न० मूळ स्वभाव; विशिष्ट [धरवेलुं लक्षण स्वाशित वि० सारी पेठे खवरावेलुं- स्वाहिलम् ४ प० गाढ आलिंगन करवुं **स्वास्तर** पुं० पद्मारी माटे सारुंघास स्वास्थ्य न० स्वाश्रय (२) दृढता; निश्चयीपणुं (३) खारोग्य (४) सुख-समृद्धि (५) संतोष स्वाहा स्त्री० अग्निनी पत्नी (२) बधा देवीने आपेली आहुति (३)अ० देवोने आहुति आपती वखते करातो उच्चार स्वांत न० मन; अंतःकरण (२) गुफा (३)पोतानुं मोत |अर्थ बतावे छे स्विद् अ० प्रश्न, वितर्क अने पादपूरणनो स्विद् ४ प० पसीनो थवो (२)१ आ० तेलवाळुं थवुं; चीकणुं थवुं (३) लेपथी सरडावुं स्विद् (समासमां) परसेवो थतो होय **स्विन्न** ('स्विद्' नुं० भू० कृ०) वि० परसेवाबाळ् थयेलुं(२)राधेलुं; उकाळेलुं स्विष्ट वि० अति इष्टः;. अतिप्रियः स्वीकरण न०, स्वीकार पुं० स्वीकारवुं ते ; लेवुं ते (२)कबूल राखवुं ते(३)लम्ब स्वीकृ ८ उ० स्वीकार करवो (२) कबूल राखवुं (३) मंजूर करवुं **स्वीकृति** स्त्री० जुओ 'स्वीकरण' स्वीय वि॰ पोतानु स्वेच्छा स्त्री० पोतानी मरजी स्वेच्छाचार पुं० पोतानी मरजी मुजब वर्तवुं ते वराळ स्वेद पुं० परसेवो (२) गरमी (३) **स्वेदज** वि० पसीनो के बाफथी उत्पन्न थयेलुं (जीवडुं) ∫छावदो ते स्वेदन न० पसीनो थवो ते (२) पसीनो स्वेदित वि० बाफ आपेलुं; नरम करेलुं

स्वर वि० स्वेच्छाचारी; स्वच्छंदी; मनस्वी (२) संकोच विनानुं; खानगी-मा संकोच विना करेलुं (३) धीमु; सौम्य (४) सुस्त; आळसु स्वेरकम् अ० स्वतंत्रपणे; संकोच विना स्वैरचारिन् वि० स्वतंत्र स्वरम् अ० मरजी मुजब; स्वेच्छा प्रमाणे (२) आपमेळे (३) धीमेथी; हळवेथी (४) धीमा अवाजे स्वैरवृत्ति वि० मनस्वी प्रमाणे वर्तनाहं **स्वैरालाप** पुं० खानगी वातचीत स्वैरिणी स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री (२) मुनिश्रेणी स्वेरिन् वि० स्वच्छंदी; मनस्वी स्वोत्थ वि० सहज; कुदरती

ह

468

११ अ॰ पादपूरणार्थे वपराय छे (२) भार दर्शाववा 'खरेखर', 'चोक्कस' ए अर्थ बतावे (३) तुच्छकार के मजाक दर्शाववा वपराय √बोलाववुं ते **हक्कार** पुं० होकारो करवो तै; हक्काहक्क पुं० बोलाववुं – पडकारवुं ते [बेसनारी) हट्ट पुं० बजार; हाट **हट्टविलासिनी** स्त्री० वेश्यां (बजारमां **हरु १** प० ठेकडो भरको (२) दुष्टता करवी (३) त्रास गुजारवो (४) थांभले बांधवुं (५) बळजबरीयी लेबुं **हठ** पुं० बळजबरी (२) दुराग्रह; जक (३) अणधार्यो लाभ **हठपर्णी** न० शेवाळ **हठबुद्धि स्त्री० अणधार्यो लाभ थवानी** श्रद्धा (महेनत विना)

हटयोग पुं० एक प्रकारनो योग ('राज-योग'थी जुदो } हठवादिक पुं० चार्वाक जेवा मतनी-

पुरुषार्थमां न माननारो अने अणधार्याः लाभमां श्रद्धावाळी माणस हठात् अ० बळात्कारे (२) अचानक हठायात वि० छेक ज आवश्यक; अनिवार्य हठिका स्त्री० मोटो अवाज; घांघळ हठेन अ० बळात्कारे (२) अचानक हडि पुं० हेडबेडी; लाकडानी हेड हडू न० हाडकु हत ('हर्नुं भू०कृ०)वि० हणायेलुं; मरायेलु(२∃ईजा करेलुं; घा करेल (३) खोबायेलुं (४) विनानुं थयेलुं के करायेलुं (५) हताश (६) बरबाद: िनष्ट (३) गुणेलुं (८) कमनसीब; कंगाळ, नुहुए हतक वि० नीच; दुष्ट; असंस्कारी (मुख्यत्वे समासने अंते) (२) प्० नीच-होन-कायर माणस **हतकंटक** वि० कोटा के शत्रु विनान् बनेल् **हतचेतस्** वि० मुझायेलुं; अकळायेलुः;

हतच्छाय वि॰ कांति नाश पामी होय वातचीत हतजिल्पतानि न० ब० व० नकामी **हतत्रप** वि० बेशरम **हतत्विष्** वि० तेज झांखुं पडी गयुं होय **हतदै**व वि० कमनसीब; दुर्भागी **हतप्रभाव** दि० सत्ताके शक्ति विनानुं हतप्रमाद वि० प्रमाद के बेदरकारी विनानुं बनेलुं के करायेलुं **हतबुद्धि वि०** बुद्धि बहेर मारी गई होय हतभाग्य वि० कमनसीब **हतविनय** वि० दुष्ट; शिष्टताना स्याल **हतवीर्य** वि० जुओ 'हतप्रभाव ' **हतश्री** वि० कंगाल; दरिद्र **हतसाध्वस** वि० भयमुक्त हताक्ष वि० निराभ (२) निर्बळ; अशक्त (३) ऋर; निर्देय (४) वंध्य हति स्त्री० वधः; नाशः(२)धाः; प्रहारः (३) खोट; हानि (४) दोष; अपूर्णता (५)गुणाकार **हतेक्षण** वि० अंध शकत् हतोत्तर वि० जवाब न आपतुं के आपी **हतोद्यम** वि० जेनो प्रयत्न दबावी देवामां आव्यो छे तेवुं **हत्या** स्त्री० वधः; कतल **हत्वन्** वि० वध करनारुं हद् १ आ० मलोत्सर्ग करवो; अघवुं **हन् २** प० हणवुं; मारबुं; बध करवो (२)प्रहार करवो;घा करवो (३)पीडवुं; त्रास आपवो (४)तजवुं; निग्रह करवो (५) दूर करवुं;नाश करवो (६)जीतवुं; हराववुं (७) विघ्न करवुं; अवरोधवुं (८) उछाळवुं; उराडवुं (९) जवुं हुन् वि० मारनार्षः, घातक (समासने अंते; उदा० वृत्रहन्, पितृहन्) **हन** पुं० वध; नाश **हनन** न० बघ (२) ईजा (३) गुणाकार हुनु पुं०, स्त्री० हुडपची (२) स्त्री० शस्त्र (३) रोग (४) मृत्यु (५) वेश्या

हनुमत् पु० हनुमातः; मारुति **हन् पुं**०, स्त्री० जुंओ 'हनु ' **हनूमत्** जुओ 'हनुमत् ' हम् अ० कोष, विनय, आदर – ए अर्थ बतावतो उद्गार **हय** पुं० घोडो एक दैत्य **हयग्रीव** पुं० विष्णुनी एक अवतार(२) हयन न० बंध गाडी; ढांकेली गाडी हयमुख ५० जुओ 'हयग्रीव' हयबाहन पुं कुबेर **हयसंयान** न० घोडाने काबूमां राखवा —केळववा के हांकत्रा ते सारिथ ह्यंकष पु०सारथि(२)मातलि; इंदनो ह्या, हयी स्त्री० घोडी हर वि० लई जनारुं; दूर करनारुं; रहित करनारुं(२)लावनारुं; बहुन करनारुं (३) पकंडनारं (४) आकर्षनारं (५) दावो करनारुं; हकदार (६)व्यापनारु; रोकनार्ह(७)पुं० शिव हरगौरी स्त्री० शंकर अने पार्वेतीनुं एकत्रित स्वरूप **हरबुडामणि** पुं० चंद्र हरण न० लेवुंते; पकडवुंते(२)लई जबुते; चोरी जबुते (३) दूर करबुते; नष्ट करवुं ते (४) लग्ननी भेट हरनेत्र न० शिवनी आंख (त्रीजी) **हरवल्लभ** पुं० धंतूरो **हरवाहन पुं**० नंदी; आखलो **हरसख** पुं० कुबेर **हरसूनु पुं**० कार्तिकेय; स्कंद हराद्रि पुं० कैलास पर्वत **हरि** वि० पोपटी रंगनुं; लीलाश पडतुं पीळूं(२)बदामी; कपिल रंगनुं(३) पीळुं (४) पुं० विष्णु (५) इंद्र (६) शिव (७) पवन (८) घोडो (९) इंदनो घोडो (१०)वानर (११)इंद्रिय हरिकेश पुं० शिव **हरिचंदन** पुं०, न० एक प्रकारनुं पीळुं

चंदन (वृक्ष के लाकडु)(२) पांच देववृक्षोमांनुं एक हरिण वि॰ फीकुं; धोळाश पडतुं पीळुं (२)पीळारा पडतुं भोळुं(३)किरणी-वाळुं (४) पुं० मृग; हरण (५) सूर्यं (६)विष्णु(७)शिव(८)धोळो रंग **हरिणक पुं**० हरण; मृग [बाळो) **हरिगलांछन** पु० चंद्र (हरणना चिह्न-**हरिणाक्ष** वि० हरण जेवी आंखवाळुं (२) पुं० शिव वाळी स्त्री हरिणाक्षी स्त्री० हरण जेवी सुंदर आंखो-**हरिणांक** पुं० चंद्र हरिणी स्त्री० हरणनी मादा; मृगली (२)स्त्रीओना चार वर्गमानो एक-चित्रिणी हरिणीवृश् वि० हरण जेवी आंखोवाळुं (२)स्त्री० हरण जेवी आंखोवाळी स्त्री **हरित्** वि० लीलुं; लीलाश पडतुं (२) पीळुं; पीळाश पडतुं (३)लीलाश पडतुं पीळु(४)पु० लीलो के पीळो रंग(५) सूर्यनो घोडो (६) झडपी घोडो (७) पुं०, न० घास (८) दिशा; प्रदेश (९) खुणो; दिशा हरित वि॰ लीलुं; लीला रंगनुं (२) घेर्ह भूर्ह; नील रंगनुं (३) पिंगळा रंगनुं (४) पुं० लीलो रंग (५) सिंह (६) एक जातन घास हरितक न० लीलुं घास **हरितच्छद** वि० लीलां पानवाळुं **हरितहरि** पुं० सूर्य **हरिताल** न० हरताल; एक उपधातु हरित्यति पु० दिक्पाल हरिदश्व पुं सूर्य हरिबंत पुं दिगंत; दिशानी छेडी हरिवंतराणि (हरित् + अंतराणि) न० ब०व० जुदी जुदी दिशाओ; जुदा जुदा प्रदेशो **हरिद्रा** स्त्री० हळदर **हरिन्मणि** पुं॰ लीलम मणि

हरिप्रिय पुं० कदंब वृक्ष (२) शंख (३) [पृथ्वी हरिप्रिया स्त्री० लक्ष्मी (२) तुलसी (३) **हरिरोमन्** वि० अति युदान(कोमळ वाळबाळु) हरिबल्लभा स्त्री० लक्ष्मी (२) तुलसी **हरिवाहन पुं**० गरुड(२)इंद्र(३)सूर्य हरिवाहनदिश् स्त्री० पूर्व दिशा हरिशर पुं० शंकर (त्रिपुर बाळवा शंकरना बाण तरीके विष्णु थया हता) **हरिक्चंद्र** पुं० एक सूर्यवंशी राजा (**स**त्य-वादी तरीके प्रसिद्ध छे) हरिसख पुं० गंधर्व हरिसुत, हरिसून पु० अर्जुन (इंद्रनो पुत्र) **हरिहय** पुं० इंद्र(२)सूर्य(३)गणेश हरिहेति स्त्री० सुदर्शन चक्र(२)मेघ-घनुष्य हरिहेतिहति पु० चक्रवाक पक्षी हरीतकी स्त्री० हरडे; हीमज हतृं वि० हरण करना हं; लूटी जना हं (२)पुं० चोर; डाकु हम्यं न० महेल; हवेली िओरडो हर्म्यतल, हर्म्यपृष्ठ न० महेलनो उपरनो हर्म्यस्थल न० महेलनो ओरडो हर्यक्ष पुं० सिंह (२) कुबेर (३) शिव (४) हिरण्याक्ष **हर्यक्र्य** पुं० इंद्र(२)शंकर हर्ष पुं० हरख; आनंद (२) रोमांच (३) तीव्र इच्छा हर्षगर्भ वि० आनंददायक हर्षजड वि० अति आनंदयी स्तब्ध पई **हर्षण** वि० हर्ष उपजावनार्ष (२) रोमांच खडां करे तेवुं(३)पुं ० कामदेवनां पांच बाणमानु एक (४) न० आनंद; हर्ष (५) हर्ष उपजाववो ते (६) लक्करनो जुस्सो प्रेरवो ते हर्षदोहल पुं०, न० कामवासना हर्षवर्धन पु॰ उत्तर हिंदनो एक महान

राजा ; शक-प्रवर्तक गणाय छे. (ई०स० ६०५ के ६०६) हर्षित वि० हर्ष पामेलुं; आनंदित थयेलुं (२) न० आनंद; हर्ष हर्षुल वि० मजाकी;परिहासशील(२) |माटे अयोग्य) कामुक हर्षुला स्त्री० दाढीवाळी कन्या (लग्न हल न० हळ (२) कदरूपापणुं; विरूपता (३) विघ्न (४) तकरार हलगोलक पुं० एक कीडो हलदी स्त्री० हळदर **हलधर, हलभृत्** पुं०बळराम हला स्त्री० सखी; बहेनपणी (२)पृथ्वी हला अ० सखीने बोळाववा वपरातुं संबोधन **हलायुष** पुं० बळराम हलाहल पुं०, न० समुद्रमंथन वखते नीकळेलुं अति तीव्र झेर (२) तीव्र झेर **हलिन् पु० खेडू**त ; खेडनारो(२)बळराम हलिप्रिय पुं० कदंब वृक्ष हिलिप्रिया स्त्री० मद्य हत्य वि० खेडवालायक; खेडवानुं (२) कुरूप; विरूप (३) न० खेडेलुं खेतर (४) कुरूपता; विरूपता हल्लीक्षा न० १८ उपरूपकोमानु एक; एक अंकन्ं नाटक (एक पुरुष अने ७ थी १० स्त्री नटोनुं मुख्यत्वे गावा-नाचवा ह्मी)(२)क्ंडाळे वळी करातुं एक नृत्य हल्लीशक पुं० कूंडाळे वळी करातुं नृत्य हल्लोष न० जुओ 'हल्लीश' **हल्लीसक** जुओं 'हल्लीशक '

हव पुं० होम (२) यज्ञ (३)आह् वान हवन न० आहुति होमवीते(२)होम;

हवनीय वि० होमने लगतुं (२) न०

यज्ञ (३) पुं० अग्नि

होमवानुं ते (३)घी

हविष्मती स्त्री० कामधेनु गाय

हविभुंज पुं० अग्नि

हविष्य न० होमवानुं ते; होमवानुं द्रव्य (२) घी (३) घी अने चोखा हविष्याञ्च न० व्रत के उपवासना दिवसोमां सावा लायक सोराक हविष्याशिन् पुं० अग्नि हिंदस् न ० हो मवानुं द्रव्य (२) घी (३) पाणी (४) शिवं (५) यज्ञ (६) अन्न हव्य वि० होमबानुंते (२) न० घी (३)देबोने अपाती आहुति (पितृओने अपाती ते 'कव्य') (४) आहुति हव्यकव्य न० देव अने पितुओने अपाती आहुति हव्यवाह्, हव्यवाह, हव्यवाहन पुं० अग्ति (आहुतिने लई जनार) हस् १ प० हसवुं; घीमेथी हसवुं (२) मजाक करवी ; मश्करीमां हसवुं (३) चडियाता थवुं; पाछळ पाडी देवुं(४) –ना जेवा देखावुं (५) खीलवुं; ऊषडवूं (६) हर्षमां आवी जब् **हसत्** वि० हसतुं (२) मजाक करतुं (३) पाछळ पाडी देतुं हसन न० हसवुं ते; हास्य हसनी, हसंतिका, हसंती स्त्री० सगडी हसित ('हस्'नं भू० कृ०) हसेलुं; हसतुं (२) खीलेलुं; ऊघडेलुं (३)न० हास्य (४) मजाक (५) कामदेवनुं धनुष्य हस्त पुं० हाथ (२) हाथीनी सूंढ(३) १३ मु नक्षत्र (४) २४ आंगळ (१८ इंच) जेटलुं माप(५)हस्ताक्षर; सही (६) (६) साबिती; पुरावो (ला०)(७) मदद;टेको (८) जूथ; समूह (समासमां, केश इ० साथे) (९) न० चामडानी क्षमण (१०) कुशळ्ता (हायनी) हस्तक पुं हाथ (२) हाथनी स्थिति (३) हाय जेटली लंबाई-भाप हस्तकमल न० कमळ जेवो हाथ (२) हाथमांनुं कमळ

हस्तगत, हस्तगामिन् वि० हाथमां रहेलुं; हाथमां आवेलुं हस्ततस्त्र न० हथेळी (२) सूंढनो अग्रभाग हस्ततुला स्त्री० हाथमा लईने ज वजन जाणवुं ते [ते हस्तषारण न० (हाथ वडे) प्रहार खाळको हस्तपाद न० हाथ तेम जपग हस्तप्राप्य वि० हाथयी पहोंची शकाय िनासी छूटेलुं हस्तभष्ट वि० हाथमांथी छूटी गयेलुं-**हस्तरोधम्** अ० हाथमां पकडीने **हस्तलाधव न०** हाथचालाकी; चपळता **हस्तलेख** पुं० कळाकृति रचता पहेलां हाथ वडे आकृति दोरवी ते हस्तवत् वि०कुशळ; हाथचालाकीवाळ् **हस्तर्वातन्** वि० हाथमां पकडेलुं; हाथमां रहेलुं (२) मेळवेलुं; मळेलुं **हस्तवाप** पुं॰ हाथ वडे बाण छोडवां ते **हस्तसंवाहन** न० हाथथी दबाववुं ते ; चंपी करवी ते **हस्तसूत्र** न० कडुं अथवा हाथे बांधेलो हस्तस्वस्तिक पु० हाथनो स्वस्तिक रचवो ते (आडा हाथ धरवा ते) हस्तंगत वि० हाथमां गयेलुं; -ने कबजे **हस्ताक्षर** न० पोताना हाथनुं लखाण; हस्ताप न० आंगळी (हाथनी छेडो) **हस्तामलक** न० हाथमां रहेलुं आमळुं (तेवी रीते स्पष्ट देखाती के समजाती वस्तु ला०) [टेको; मदद **हस्तावलंब** पुं०, हस्तावलंबन न० हाथनो हस्तावाप पुं० आंगळीओने धनुष्यनी पण्छ न वागे ते माटे वपरातुं रक्षण माटेनुं मोजुं (२) हाथनी बेडी हस्ताहस्ति अ० हाथोहाथनुः; हाथोहाथ आवी जवाय तेम हस्तिक न० हाथीओनो समूह **हस्तिजागरिक** पुं० महावत; हाथीनी सभाळ राखनारी

हस्तिबंत पुं० हाथीनो दंतूशळ (२) दीवालमां खोसेली स्तींटी (३) न० पुं० हाथी हाथीदांत **हस्तिन्** वि० हायवाळुं(२)सूंढवाळुं(३) **हस्तिनस्र न**० किल्लाना दरवाजाना रक्षण माटेनो एक ब्रज हस्तिनपुर, हस्तिनापुर न० हस्तिन् राजाए वसावेलुं शहेर; पांडव--कौरवो-नी राजधानी (अत्यारना दिल्हीयी ५० माईल उत्तरपूर्वमां) हस्तिनी स्त्री० हाथणी (२)स्त्रीओना चार वर्गोमां यी एक हस्तिय, हस्तियक पुंच जुओ 'हस्त्यारोह' हस्तिमद पुं० हाथीना लमणामांथी नीकळतो एक प्रकारनो रस **ह**स्तिमल्ल प्० ऐरावत **हस्तियूथ** पुं०, न० हाथीओनुं टोळुं हस्तिवक्त्र एं० गणपति **हस्तिदाह** पु० अंकुश (२) महावत **हस्तिञाला** स्त्री० हाथीला रूं हस्तिस्नान न० हाथीनुं स्नान (ते नाहः पछी सुंदथी धूळ शरीर उपर नाल छे, तेना जेवी निरर्थंक किया) हस्तिहस्त पुं० हाथीनी सूंढ **हस्तेकृ ८ उ०** हाथमां लेवुं; करजे लेवुं हस्त्याजीव पुं महावत हस्त्यारोह ५० हाथी उपर सवारी करनारों के हाथीने हांकनारों हस्र वि० हसतुं; स्मित करतुं(२) मूर्ख हंजा स्त्री० दासी; नोकरडी हंजा अ० दासीने संबोधन **हंजिका** स्त्री० दासी हंजे अ० दासीने संबोधन **हंडा** अ० हलकी कक्षानी स्त्रीओ माटेन् संबोधन (२) हलकी वर्णनी स्वीओन् अरसपरम संबोधन (३) स्त्री० मोटो माटीनो हांडो (४) दासी **होडका, हंडी** स्त्री० हांडी ; माटीतुं वासण

हंत अ० आनंद, आश्चर्य, दया, खेद -ए अर्थो बतावे (२) कंई करवानी आग्रह दर्शाववा के ध्यान खेंचवा वपरातो उद्गार

हंतृ वि० मारनार्ह; यथ करनार्ह(२) द्वर करनार्ह; नाश करनार्ह(३)पुं० खूनी(४)चोर; डाकु

<mark>हंतोक्ति स्</mark>त्री० अरेरे ! 'एम बोली दया ंचताववी ते

हंबा स्त्री० ढोरनुं भांभरवुं ते हंबारव पुं० गयनुं भांभरवुं ते हंभा स्त्री० जुओ 'हंबा' हंभारव पुं० जुओ 'हंबारव' हंस पुं० एक पंत्ती (तेनुं काव्यमय वर्णन घणुं मळे छे : ब्रह्मानुं ने वाहन छे; घर्षाकाळे मानम सरोवर तरफ चाल्यो जाय छे; दूच अने पाणी जुदां पाडवानी शक्ति धरावे छे ६०) (२) परब्रह्म; परभात्मा (३) जीवात्मा (४) सूर्य (५) एक प्राणवायु (३) एक खास वर्गनो परिव्राजक (७) हपु; चांदी

हंसक पुं० हंस(२)नूपुर हंसकाता स्त्री० हंसी; हंसनी मादा हंसगति वि० हंस जेवी चाल के गतिवाळुं हंसगामिनी स्त्री० हंसनी माफक सुंदर गतिवाळी स्त्री

हंसतूल पुं०, न० हंसना कोमळ पीछां हंसमाला स्त्री० ऊडता हंसोनी पंक्ति हंसरथ, हंसवाहन पुं० ब्रह्मा हंहों अ० 'अहां'; 'हे' एवो उदगार(२)

हों अं० अहा ; है एवा उद्गरि(२) आश्चर्य, तुच्छकार, प्रश्न एवो अर्थ बतावे छे

हा अ० खेद, हताशा, दुःख, आश्चर्य, जोध --ए अर्थो बतावतो उद्गार

हा ३ आ० जवुं (२) पहोंचवुं (३) ३ प० तजबु; छोडी देवुं

(४) जतुं करवुं (५) पडवा देवुं

(६) दुर्लक्ष करवुं

-कर्मणि [हीयते] तजी देवायुं;भुलावुं (२)-धी बाकात रखावुं; न्धी तजावुं (३) न्धी रहित होवुं; विनाना होवुं (४)क्षीण थवुं (५)हारवुं (दावमां) -प्रेरक ० तजे के छोडे तेम करवुं (२) हांकी काढवुं (३) खोवुं (४) दुर्लक्ष करवुं; बेदरकार रहेवुं; ढील करवी हाटक वि० सोनेरी; सोनानुं (२) न० सोनुं (३) एक चमत्कारी पेय -पीणुं हान न० तजवुं ते(२)हानि(३)नासी छूटवुं ते(४)अपूर्णता; अभाव हान स्त्री० तजवुं ते; छोडी देवुं ते(२)

हानि स्त्री० तजवुं ते; छोडी देवुं ते(२) अभाव; निष्फळता(३) नुकसान(४) अपूर्णता; क्षीणता(५) उल्लंघन; भंग (६) व्यतीत करवुं ते; नकामुं जवा देवुं ते(७) गति ('हा' ३ आ० उपरथी)

हानिकर वि० नुकसान करनारं हायक वि० त्यागनारुं; तजनारुं हायन पुं०, न० वर्ष

मोती के मणको

हार पुं० रूई जवुंते; दूर करवुं ते(२) हमाल; मजूर(३)मोती वगेरेनी गळे पहेरवानी माळा [माळा हारक पुं० चोर (२)ठग(३)मोतीनी हारगुटिका,हारगुलिका स्त्री० माळामांनुं

हारयष्टि स्त्री० मोतीनी माळा हारावलि(-ली) स्त्री० मोतीनी माळा हारि स्त्री० पराजय (२)संघ ; वणजार हारित वि०लई जाय के पकड़े तेम करे-लुं(२)बक्षिस करेलुं-धरेलुं(३)खेंचा-येलुं(४)लूंटायेलुं(५) खोवायेलुं(६)

येलुं(४)लूटायेलुं(५) खोबायेलुं(६) हराबायेलुं(७)पुं० लीलो रंग(८)एक जातनुं पारेबुं

हारिद्र पुं० पीळो रंग(२)न० सोनुं हारिन् वि० लई जनारुं; वहन करनारुं (२) चोरनारुं; पडावी लेनारुं (३) आकर्षे तेवुं; मुग्ध करे तेवुं(४)चडि-यातुं; हरावे तेवुं (५) हारवाळुं

हारीत पुं० एक जातनुंपारेबुं (२) ठग हार्द वि० हृदयनुं; हृदय संबंधी (२) न० स्नेह; प्रेम (३) मायाळुता (४) अभिप्रायः; इच्छा हार्दिक्य पुं० कृतवर्मा (२) मित्रता **हार्य** वि०लई जवायोग्य (२) वहन करवा योग्य (३) पडावी लेवा योग्य (४) खसेडवा के उपाडी जवा योग्य (५)चलित करवा योग्य; चलित थई शके तेवुं (निश्चय इ०) (६) आकर्षी जनाय तेवुं; जीती शकाय तेवुं; मेळवी शकाय तेवुं (७) नाश करवा योग्य (८) निवारवा योग्य (प्रहार इ०) (९) सुंदर; आकर्षक हाल पुं० हळ (२) बळराम **हालभृत्** पुं० बलराम **हालहरू न० भ**यंकर झेर; हळाहळ **हालहली** स्त्री० मद्य; दारू हाला स्त्री० मद्य; दारू **हालाहरू न०** अत्यंत उम्र झेर; हळाहळ (२) मद्य; दारू **हालाहली** स्त्री० मद्य; दारू हालिक पुं० खेडूत (२) हळ खेंचनार पशु(बळद इ०) (३)हळ वडे लडनारुं हाली स्त्री० साळी; पत्नीनी नानी बहेन हाब पुं० आमंत्रण; बोलाबवुंते (२) स्त्रीओनी शृंगारिक चेष्टा हावु [हा३वु] अ० आनंदनो उद्गार हास पुं॰ हसर्वु ते; हास्य(२)आनंद; मजा (३) विनोद; उपहास; मश्करी (४) गर्वः; अभिमान (५) खीलवुं — अध्य बबुंते (कमळ इ० नुं) **हासक** पुंर्०भांड; मश्करो हासन वि० हसावे तेवुं; मश्कर्र हासस् पुं० चंद्र **हास्तिक पुं**० महावत (२) हाथी **उ**पर सवारी करनारो (३) न० हाथीओनो [(२) न० हस्तिनापुर हास्तिन वि॰ हायी जेटलुं ऊंडुं (पाणी)

हास्य वि० हसवा योग्य; हांसीपात्र (२) न० हसबुते (३) आनंद मोज (४) मजाकः; मश्करोः (५) पुं० आठः (के नव) रसोमांनो एक (काञ्य०) हास्यकार पुं० मश्करो हास्यपदवी स्त्री० हांसी: मश्करी हास्यरस पुं०आठ रसमानो एक (काञ्य०) हास्यज्ञील वि० मश्करीखोर; मश्कर **हास्यास्पद** न० हांसीने पात्र एवं ते हाहा पुं० एक गंधर्व उद्गार हाहा अ० दुःख, शोक के आश्चर्यको हाहाकार पुं० शोक; विलाप (२) युद्धनो कोलाहरू हाहारव पु० 'हाहा ' एवो अवाज हि अ० (वाक्यनी शरूआतमां न वपराध) कारण के जरेखर, चोकस, दाखडा तरीके, जार्णातुं छे तेम, मात्र, फक्त. प् एक लुंज - ए अर्थ बनावे (२) मन्द भादपुरक तरीके पण वयसाय छे हि ५ प० मोकलवू (२) फेंकवुं (३) उक्केरवुं ;श्रेरवुं (४) प्रसन्न करवुं (५) जबुं (६) तजबुं; भूलबुं **हिक्क् १** उ० हेडकी जेवो अस्पष्ट अवाज करवो (२) १० आ० हिंसा करवी; ईजा करवी हिक्का, हिक्किका स्त्री०, **हिक्कित** न० हेडकी (२) अस्पष्ट **अवा**ज हिडिंब पुं० भीमे हणेलो एक राक्षस हिडिंबा स्त्री० हिडिंब राक्षसनी बहेत; भीमनी पत्नी हित ('धा'नुंभु० कृ०) वि० मुकेल्ं (२)कीबेलु(३)योग्य; हितकर (४) लाभदायक; पथ्य (५) —नी तरफ माया-ममता-प्रेमवाळूं (६) मोकलेलुं; भकेलेलु (३) आगळ गयेलुं (८) वु ऽ मित्र; सलाहकार (९) न०भलुं; कल्याण हितकर वि० हित करनार्ष (२) लाभ-दायक; उपयोगी (३) पुं० मित्र; उपकार करनारो

हितकर्तृ वि० हितकर ि हितेच्छु **हितकाम** वि० हित करवानी इच्छावाळुं; **हितकाम्या** स्त्री० बीजाना हितनी इच्छा **हितकारक, हितकृत्** वि० हितकर (२) पुं० हित करनारो **हितबुद्धि वि०** हितेच्छु हितवचन न० हितकर सलाह **हितानुबंधिन्** वि० हित करना हं **हितान्वेषिन्** वि० हितेच्छु **हिताशंसा** स्त्री० हित इच्छवु ते **हितेच्छु वि०** हित – भलुं इच्छनार्र हितैषिन् वि० हितचितकः; हितेच्छु **हितोपदेश पुं०** मित्रताभरी सलाह; हितकर उपदेश हिम वि० ठंडुं(२)झाकळभयुं(३) पृ० हेमंत ऋतु; शियाळो (४) चंद्र (५) हिमालय पर्वत (६) न० बरफ (७) घणो सखत ठार (८) अतिशय ठंडी हिमकर पुं० चंद्र हिमगिरि पुं॰ हिमालय पर्वत हिमगु पुं० चंद्र (शीतळ किरणवाळो) हिमगृह न० ठंडक थाय तेवां साधनो-वाळो ओरडो हिमदीधिति, हिमद्युति पुं० चंद्र **हिमदुम** पु॰ लीमडो हि**मद्रुह**् पु० सूर्य [बरसवो ते हिमपात पुं० ठंडो वरसाद (२) बरफ हि**मरश्मि** पुं० चंद्र **हिमवत्** वि० बरफवाळुं; झाकळवाळुं (२) पुं० हिमालय पर्वत हिमबत्पुर न० हिमालयनी राजधानी (औषधिप्रस्य) हिमबत्सुता स्त्री० पार्वती (२) गंगा हिमबालुक पुं०, हिमबालुका स्त्री० कपूर हिमश्रथ पुं० चंद्र [सरोवर हिमसरस् न० ठंडुं पाणी (२) बरफन् **हिमस्रुत्** पुं० चंद्र हिमस्त्रुति स्त्री० वरफनो वरसाद हिमागम पुं० हेमंत ऋतु; शियाळो

हिमाचल पुं० हिमालय हिमाचलजा, हिमाचलतनया स्त्री० पार्वती (२) गंगा नदी **हिमाद्रि** पुं० हिमालय पर्वत हिमाब्रिजा, हिमाब्रितनया स्त्री० पार्वती (२) गंगा नदी हिमानी स्त्री० बरफनो जथ्थो-ढगलो हिमापह पुं० अग्नि (ठंडी दूर करनारो) हिमाराति पुं० सूर्य (२) अग्नि हिमारि पुं० अग्नि हिमारिश्चन्नु पु० पाणी हिमार्त वि० ठंडीथी पीडायेलुं **हिमालय** पुं० हिमालय पर्वत **हिमालपसुता** स्त्री० पार्वती झाकळ **हिमांबु, हिमां मस्** न० ठंडुं पाणी (२) **हिमांशु** पुंच चंद्र हिमांव्यभिष्य न० रूप् हिमित वि० बरफ थई गयेलुं हि**मोस्र** पुं० चंद्र हिरण्मय वि० सोनानुं (२) पुं० ब्रह्मा **हिरण्य** न०सोनुं(२)सोनानुं पात्र(३) रूपुं(४) कोई पण कीमती धातु (५) समृद्धि; धन; दोलत हिरण्यकर्तृ पं० सोनी पिता हिरण्यकशिषु पुं० एक दानवः प्रह्लादती हिरण्यगर्भ पुं० ब्रह्मा (२) विष्णु (३) सूक्ष्म शरीरयुक्त आत्मा **हिरण्यद** पुं समुद्र **हिरण्यदा** स्त्री० पृथ्वी **हिरण्यनाभ** पुं० सैनाक पर्वत (२) विष्णु हिरण्यय वि० सोनानुं; सुवर्णमय हिरण्यरेतस् पु० अग्नि (२) सूर्य (३) शिव हिरण्यव पुं॰ देवनुं द्रव्य (२) सोनान् भाई हिरण्याक्ष पुं० हिरण्यकशिपुनो जोडियो हिल् ६ प० हळवुं; रमवुं(२)कामभाव प्रकट करवो हिल्लोल पुं० मोजुं; तरंग हिंगु पुं०, न० हिंगनुं वृक्ष (२) हिंग

हिंगुल, हिंगुलु पुं०, न० हिंगळोक हिजीर पु० हाथीने पगे बांधवानुं दोरडुं हिंड्१ आ ० जवुं; भटकवूं **हिंताल** पुं० एक जातनो ताड **हिदोल** पु० हिडोळो; झूलो हिंदोलक पु०, हिंदोला स्त्री० हिंडोळो (२) पारण् **हिंस् १,**७ प०, **१०** उ० हणवुं; मारवुं (२) ईजा करवी (३) त्रास आपवो; पीडवु (४) वध करवो; कतल करवी (५) नाबूद करवुं |कूर **हिंसक** वि०ईजाकरे तेवुं(२) जंगली; **हिंसन** न० मारी नांखबुते हिसनीय वि० हिंसा करवा योग्य **हिंसा** स्त्री० ईजा; त्रास; पी**डा** (२) हणवुं ते; वध करवाते; कतल करवी ते (३) लूट हिसारुचि वि० हिंसा के तोफानमां प्रीतिबाळु; ते करवाने तत्पर एवं हिंसालु वि० हिंसक; घातक **हिंसित** वि० ईजा करायेलुं(२) न० ईजा: पोडा हिस्य वि० हिंसा करवा योग्य हिस्र वि० घातकः; कूरः; भयंकरः; जंगली (२) पुं० हिमक पशु (३) हिसा करनारो(४)शिव(५)भीम(६) न० क्रता हो अ० आश्चर्य, थाक, खेद के सोक दर्शाववा वपरातो उद्गार **हीन** ('हा'नुं मू० कृ०) वि० त्यजेलुं (२) रहित; विनानुं (३) बाकात राखेलुं(४)क्षीण(५) हलकुं; ऊतरतुं (६) नीच; दुष्ट **होनप्रतिज्ञ** वि० बेवफा **हीनवर्ण** वि० हलका वर्णनु होनवादिन् वि॰ मृगुं (२) खोटी साक्षी आपनार् **हीनसेवा** स्त्री० हलका लोकोनी सेवा **हीनांग** वि०अपंग; शारीरिक खोडवाळुं **हीर** पुं॰, न॰ इंद्रनुं वज्र (२) हीरौ **हीरक** पुं० हीरो हीही अ० आश्चर्य के आनंद दर्शावतो 👸 ३ प० होमवुं (२) यज्ञ करवो (३) खावुं हुड पुं॰ घेटा (२) लोढानो सोटो -दंड हुडु पु० घेटो हुडुक्क पुं० डमरू (२) आगळियो हुत ('हु'न भू० कृ०) वि० होमेलुं (२) आहुति अपाई होय तेवुं(३)पुं० शिव (४) न० आहुति हुतभुज्, हुतवह पुं० अग्नि हुताग्नि वि० आहुति अर्थी होय तेवं (२) पुं० यज्ञनो अग्नि हुताञ्च, हुताञ्चन पुंच अग्नि (२) शिव हुलाञ्चनी स्त्री० फागणनी पूनम हुम् अ० प्रश्न, संमति, संशय, कोध, बाद, मंत्रोक्त उच्चार, निवारण – आ अर्थी सूचवती उद्गार हुच्छंन न० कपट; कुटिलपणुं हुरू १ प० जवुं (२) संताडवुं हुल पुं० एक जातनुं ओजार के छरी हुलहुली स्त्री० स्त्रीओनो आनंददर्शक उद्गार हुसिद्वुलि स्त्री० लग्न वखतन् संगीत (२) घूरकवुते; गरजबुते हुहु, हुहू पुं० एक गंधर्व हुके ('हुम्' एम गर्जना करवी) हु अ० आमंत्रण, तिरस्कार, शोक अने गर्व – ए अर्थ बतावतो उद्गार हूण पुं० जंगली माणस; परदेशी(२) ए छोकोना देशमां प्रचलित सोनानो एक सिक्को दिशना लोको हुणाः पुंज्ब व्व एक देश अथवा ते हूत (' ह्वें ' नुं भू० कृ०) वि० बोलावेलुं; अामंत्रेलुं [ते (३) नाम िते (३) नाम हृति स्त्री० बोलाववुं ते(२)पडकारवुं हृत पुं० जुओं हुण (उद्गार) हूम् अ० जुओ 'हुम् '(गुस्सो दर्शावती हुहु, हुहू पुं० एक गंधर्व ह १ उ० लई जबुं(२)दूर उपार्डी जबुं (३)लूटवुं; चोरवुं (४) दूर करवुं; मटाडवु; नाश करवो(५)आकर्षवु; जीती लेबुं; दश करवुं (६) मेळववुं; प्राप्त करवु (७) पाछळ पाडी देवुं; चडियातुं थवुं (८) परणवुं हुच्छय पु० कामदेव(२)प्रेम(३)अंतर्यामी हणिया स्त्री० ठपको (२) शरम हुणीयते आ० (गुस्से थवुं; शरमावुं; शरमिंदुं बनवुं) हणीया स्त्री ० जुओ 'हणिया' हृत् वि० (समासने अंते ज) लई जत्रुं, आकर्षत्, दूर करत्ं इ० हृत ('ह्'नुंभू०कृ०) वि० लई जवा-येलु (२) पकडायेलु (३) आकर्षायेलुं (४) स्वीकारायेलुं इ० हृतसर्वस्य वि॰ जेनुं सर्वस्य हरी लेवायुं [लेबायो होय तेवुं छे तेव **हतसार** वि० सार के उत्तम अंश हरी हतोत्तर वि० निरुत्तर करायेलुं **हत्यिङ** पुं०, न० हृदय हृत्सार पु० धैयै; धीरज हुद् न० (प्रथम पांच रूप नथी; द्वितीया ब ०व ० थी 'हृदय'ने बदले विकल्पे मुकाय छे) मन; हृदय(२)छाती(३)आत्मा (४) कोई पण वस्तुनुं हार्दे हृदय न० ज्यांथी लोही शरीरमां धकेलाय छे ते अवयव (२) हैयुं; दिल; अंत:करण(३)छाती (४) प्रेम; स्तेह (५) कोई पण वस्तुनो अंतर भाग के सार भाग(६)गुप्त विद्या;साचु के दिव्य ज्ञान(७)वेद(८)इरादो(९)अहंकार हृदयग्रंथि पुं ० जेना वडे आत्मा बंधाय ते (अविद्या)(२)जेथी हृदयने पीडा थाय ते हृदयग्राहिन् वि० हृदयने आकर्षे तेवुं हृदयज्ञ वि० हृदयनी गुप्त वात जाणनारं हृदयदौर्बस्य म० हृदयनी दुर्बळता

५९३ हृदयप्रमायिन् वि० हृदयने मथी नाखे –फाडी नाखे तेवुं हृदयप्रस्तर वि० कूर; कूर हृदयन ह्वयवेषिन् वि० हृदय वींधी नाखे तेवुं हुदयशस्य न० हुदयनो घा; हुदयमां वागेलो कांटो (२) तेना जेवी पीडा करतो हृदयनो रोग **हृदयसंमित** वि० छाती जेटलुं ऊंचुं हृदयस्य वि० हृदयमां रहेलुं; हृदयमां संघरेलुं हृदयंगम वि० हृदयने स्पर्शे-कंपावे तेवृं (२)सुंदर (३) आकर्षक; मधुर (४) उचित (५) प्रिय ्र हृदयवाळुं हृदयालु वि० कोमळ हृदयनुं; मायाळु ह्वयेश, ह्वयेश्वर पुं० पति हृबय्य वि० हृदयने प्रिय भिमरो हृदावर्त पुं० घोडानी छाती पर बाळनो हृद्गत वि० हृदयमां – मनमा रहेलुं; चितवेलुं(२)न० इरादो हृदेश पुं० हृदयस्थान; हृदयनो भाग हुद्रोग पुं० हृदयनो रोग (२) शोक; चिंता (३) प्रेम हुछ वि • हृदयपूर्वक होय तेवुं (२) प्रिय (३) आहलादक; रम्य (४) मायाळ् (५)भावे तेवुं; रुचिकर द्रःखावो हुल्लेख पुं० ज्ञान (२) तर्क (३) हृदयनो हल्लेखा स्त्री० चिता; अफसोस हुष् १, ४ प० हर्ष पामवो (२) रोमांच खडां थवां हृषित ('हृष्'नुंभू० कृ०) वि०प्रसन्न --खुश–हर्षित थयेलुं(२)रोमां**च खडां** थयां होय तेवुं ह्रवीक न० इंद्रिय [स्वामी) ह्वीकेश पुं० ऋष्ण; विष्णु (इंद्रियोनी हुष्ट ('हृष्'नं भू० कृ०) वि० आनं-दित; हर्षित (२) रोमांचित हृष्टचित्त, हृष्टमनस्, हृष्टमानस वि० प्रसन्न; खुश थयेला अंतरवाळ्

हुष्टरूप वि० खुशीमां आवी गयेलुं; खुशमिजाज हुष्टि स्त्री० आनंद; सुख; प्रसन्नता है अ० संवोधन, आह्वान, मत्सर, असं-मित –ए अर्थ दर्शावतो उद्गार **हेक्का** स्त्री० हेडकी **हेड्** १ आ० अवगणवुं ; तिरस्कारवुं (२) १ प० बींटवुं; घेरवुं (३) पहेरवुं हेति पुं०, स्त्री० शस्त्र; आयुध (२) प्रहार (३) सूर्यकिरण (४) प्रकाश ; तेज (५) ज्वाळा (६) साधन; ओजार हेतु पु॰ कारण;प्रयोजन;निमित्त(२) मूळ; उत्पत्तिस्थान(३)अनुमान कर-वानुं तार्किक कारण (४) तर्कशास्त्र (५) संसार; प्रपंच (जीवात्माना बधनुं कारण) (६) किमतः मूल्य हेतुक वि० उत्पन्न करतुं (समासने अंते) (२) पुं० कारण (३) साधन (४) तर्कशास्त्री <mark>हेतुगर्भ</mark> वि० सकारण; सहेतुक **हेतुदुष्ट** वि० तर्कसंगत नहि एवुं हेतुना अ० –ने कारणे; –ना हेतुथी हेसुबाद पुं० बादविवाद; चर्चा (२)कपट (३) शंकाशीलता के नास्तिकताथी सर्क उठाववो ते हेतोः अ० –ना कारणथी **हेत्वाभास** पुं० भ्रामक हेर्तु (न्याय०) **हेम, हेमक** न० सोनुं **हेमफुँन** पुं० सोनानो घडो हेमकट पु० एक पर्वत **हेमकेश** पुं० शंकर हेमगिरि पु० सुमेरु पर्वत **हेमन्** न० सोनुं (२) धंतूरो हेममालिन् पु० सूर्य हेमल पुं० सोनी (२)कसोटीनो पथ्थर **हेमसूत्र, हेमसूत्रक** न० गळानुं एक घरेणुं हेमंत पु०, न० छ ऋतुओमानी एक; ठंडीनी ऋतु (मार्गशीर्ष अने पोष ए बे महिना)

हेमाद्रि पु० सुमेह पर्वत **हेमाह्य पुं॰** जंगली चंपो (२) धंतूरो **हेमांक** वि० सोनाथी सुशोभित **हेमां**ग वि० सोनानुं हेमांभोज, हेमांभोरह न० सोनेरी कमळ **हेय** वि० त्याज्य **हेर** न० एक जातनो मुगट (२) हळदर (३) आसुरी माया **हेरक** पुं० जासूस; गुप्तचर **हेरंब** पुं० गणेश **हेरंबजननी** स्त्री० पार्वती **हेरिक** पु० जासूस; गुप्तचर **हेरक** पुं० रुद्रनों एक गण (२) गणेश **हेल्** १ आ० अवज्ञाकरवी **हेलन** न०, **हेलना** स्त्री० अवहेलना; तिरस्कार **हेला** स्त्री० अवृज्ञा; तिरस्कार (२) र्श्यगरचेष्टा; विलास (३) आनंद; लीला (४) उत्कट कामवासना (५) अनायास; सरळता; सहेलाई (६) चांदनी हैलि पुं० सूर्य (२)स्त्री० श्रृंगारचेष्टा; विलास (३) आलिंगन (४) वरघोडी **हेवाक** पुं० इंतेजारी; आतुरता **हेवाकिन्** वि० आतुर; इंतेजार **हेष् १** आ० हणहणवुं; गर्जवुं **हेष** पुं०, **हेषा** स्त्री०, हे**षित** न० घोडानुं हणहणवुं ते; हणहणाट हेिषन् पुं० घोडो अने भीमनो पुत्र **हैडिब, हैडिबि पुं**० घटोत्कच; हिडिबा **हैनुक** पुं० तर्क करनारो; बुद्धिदादी (२) नास्तिक

हैम वि० ठंडीने लगतुं; ठंडुं(२)हिमथी

थयेलुं (३) सोनानुं बनेलुं (४)सोनेरी

रंगनुं (५) पुं० शिव (६) न० हिम;

हैमन वि० ठंडुं; ठंडीने लगतुं(२)हेमंत

ऋतु संबंधी (लांबुं; जेम के रात्रि)

झाकळ

(३) शियाळामां यतु ; शियाळाने लमतुं (४) सोनानुं; सोनानुं बनेलुं(५) पुं० हेमंत ऋतु हैममुद्रा, हैममुद्रिका स्त्री० सोनामहोर **हैमबत** वि० बरफवाळुं (२) हिमालय पर्वतमांथी नीकळतुं (३) हिमालयमां रहेतुं; हिमालय संबंधी (४) न० भारत **हैमवतिक** त्रि० हिमालयमां रहेतुं **हैमदती** स्त्री ० पार्वती (२) गंगा **हैमंत, हैमंतिक** वि० शियाळानुं; ठंडुं (२) हेमंत ऋतुमां थतुं; हेमंत ऋतु संबंधी (३) न० एक प्रकारना चोखा हैयंगव, हैयंगवीन न० आगला दिवसना दूधनुं भी (२) ताजुं माखण **हैरण्य** वि० सोनानुं; सोनानुं बनेऌुं **हैरण्यवासस्** वि० सोनानां पींछांवाळुं (जेम के बाण) **हैरिक** पुं० चोर **हैहय** पुं• यदुराजानो प्रपौत्र; सहस्रार्जुन **हैहयाः** पुंज्बञ्बञ्च एक देशनुनामः; ते देशना लोकोनुं नाम हो अ० आह्वान, संबोधन, के आश्चर्य -ए अथेमां वपरातो उद्गार **होड़ १** आ० अनादर करवो होड पुं० तरापो; होडी **होढ** न० चोरायेलो माल होत् वि० होम करना हं(२)पुं० यज्ञ वखते ऋग्वेदनी ऋचाओ गानारो पुरोहित (३)होम-यज्ञ करनारो(४)अग्नि होत्र न० आहुति (२) यज्ञ होत्रास्त्री०स्तुति (२)ऋत्विज होत्रिन् पुं० होम करनारो ऋत्विज होत्री स्त्री ० होम करनार (शिवनां आठ स्वरूपोमांनुं एक) होम पुं० अग्निमां होम करीने देवोने आहुति अर्पवी ते (२) आहुति (३) यज्ञ होमतुरंग पुं० यज्ञनो घोडो **होमधेनु** स्त्री० आहुति माटे दूध आप-नारी गाय

होम्य न० घी (२) होम द्रव्य होरा स्त्री० राशिनो उदय (२) राशि के लग्ननो अर्थो भाग (३) अढी घडी; कलाक (४) जन्मकुंडळी के ते परथी भविष्य भाखवानी विद्या होलक पुं० ओळा; चणाना पोपटानो **होलाका, होलिका, होली** स्त्री० होलीनो उत्सव (२) फागण सुद पूनम ह्नु २ आ० लई लेवु; लूटी लेवु(२) छुपाववुं; संताडवुं (३) संताई जवुं ह्यस् अ० गई काले; काले ह्यस्तन वि० गई कालनु ह्रद पुं० धरो; ऊंडुं सरोवर (२) ऊंडो ह्रदिनो स्त्री० नदी (२) वीजळी ह्नस् १ प० अवाज करवो (२) क्षीण थवुं; अदृश्य थवुं ह्रसित ('ह्रस्'नुं भू० कृ०) वि० अवाज करेलुं (२) टूंकुं करेलुं **ह्रसिष्ठ** वि० सौधी अल्प ('ह्रस्व'नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप) ह्रस्रोयस् वि॰ (बेमां) वधारे अल्प ('ह्रस्व'नृं तुलनात्मक रूप) ह्रस्व वि० अल्प; थोडुं (२) वामगुं; नीचुं (३) टुकुं करवी ह्राद् १ आ० अवाज करवो; गर्जना **ह्राद** पुं० घोंघाट; अवाज; गर्जना **ह्रादिनी** स्त्री० इंद्रनुं वज्र (२)नदी (३) वोजळी **ह्रास** पुं॰ अवाज;धोघाट(२)घटवुं ते; क्षीणता (३) नानी संख्या (४) अंछत **हिणीयते** आ० जुओ 'हृणीयते ' हिणीया स्त्री० निदा; ठपको (२) शरम; लज्जा ह्री ३ प० शरमावुं; विनय देखाडवो

-प्रेरक० शर्रामद् करव्

ह्रीण, ह्रीत ('ह्री 'नुं भू० कृ०)वि०

ह्री स्त्री० शरम; लज्जा

शरमावेलु

होति स्त्री० शरम; लज्जा
होनिषेद वि० शरमाळ
होपद न० शरमनुं कारण
होपद वि० शरमणे विह्वळ बनी गयेलुं
होपत्रणा स्त्री० शरमनो संकोच
होवेर, होबेल न० एक प्रकारनी
सुगंधी, (वीरणनो बाळो)
हेपण न० शर्रामदुं करवुं तै(२)
मूंझवण [पाडी दीधेलुं
होपत वि० शर्रामदुं करेलुं(२)पाछळ
हेप् १ आ० हणहणवुं [हणाट
होषा स्त्री०, होषत न० घोडानो हणह्वाद् १ आ० आनंद पामवुं (२)अवाज
करवो (३) आनंदवायक नीवडवुं

ह्नाद, ह्लादक पुं० आह्नाद; आनंद ह्लादन न० आनंद पामवुं ते (२) आनंद आपवो ते ह्लादित नि० आनंद पामेलुं ह्लादिन नि० आनंद आपतुं (२) मोटा अवाजवालुं ह्लाद् १ प० जवुं (२) हालवुं; ध्रूजवुं (३) ठोकर खावी; गवडवुं —प्रेरक० ध्रुजाववुं; हलाववुं ह्वान न० बोलाववुं ते (२) अवाज; बूम (३) पडकार (युद्ध माटे) ह्वे १ उ० बोलाववुं; नाम दईने बोला-ववुं (२) पडकारवुं (३) हरीफाई करवी (४) याचवुं

परिशिष्ट १ : विशेषनाम-सूची [स्वक्तिओ तथा स्थळो वगेरेनां विशेषनाम]

अकंपत पुं० एक राक्षस; रावणनो दूत.
अगस्ति, अगस्त्य पुं० एक प्रस्यात ऋषि;
मित्रावरुणना पुत्र ऊंचा विध्य पर्वतने
आडो पाडी, ओळंगीने दक्षिण तरफ
गया. दक्षिण तरफ आर्य संस्कृति लई
जनार ते प्रथम पुष्ष गणाय. तेमनी
पत्नीनुं नाम लोपामुद्रा. समुद्रमां रहेनारा कालकेय राक्षसनो समुद्र पी
जईने तेमणे नाश करेलो.

अर्घ पुं० कंसनापक्षनो असुर; श्रीकृष्णे तेनो वध कर्यो हतो.

अज पुं० सूर्यवंशी राजा; रघुनो पुत्र अने दशरथनो पिता. तेनी राणीतुं नाम इंदुमती; जेना अणधार्या मृत्युथी अजे करेलो विलाप कालिबांसे 'रघुवंश' महाकाव्यमां वर्णव्यो छे.

अजामिल पुं० कान्यकुब्जनो एक बाह्मण पछी एक शूद्र स्त्रीनी लते चडी गयो हतो. मरती वखते तेना पुत्र नारायणने बोलाववा जतां तेने भगवाननुं नाम याद आव्या जेवुं थयुं अने ते सुधरी गयो.

अत्रि पुं० एक प्रजापति; सप्तर्षिमांना एक; अनसूया तेमनां पत्नी; दत्तात्रेय तेमना पुत्र.

अदिति स्त्री० दक्षनां पुत्री; कश्यपनां पत्नी; विष्णु-इंद्र वगेरे देवोनां माताः बार आदित्यो तेमना पुत्र.

अनसूया स्त्री० अत्रिऋषिनां पत्नी; दत्तात्रेय-दुर्वासानां माता; महा पति-वता तथा तपस्विनी गणाय छे. ब्रह्मा-विष्णु-महेश पोतानी पत्नीओना कहे-वाथी तेमना पतिव्रतापणानी परीक्षा लेवा आव्या; त्यारे तेमणे तेमने बाळक बनावी दीधा हता.

अनंतशयम न० त्रावणकोर; श्रीरंग-पट्टन. (अनंत - शेषनाग उपर सूतेला विष्णुनां मंदिरोनुं धाम)

अनिरुद्ध पुं० श्रीकृष्णना पुत्र प्रद्युम्ननो पुत्र; बाणनी पुत्री उषा (ओखा) नी साथे गुप्त रीते लग्न करेलुं.

अनुराधपुर न० सिलोननी प्राचीन राजधानी. बुद्धगयाथी बोधिवृक्षनी डाळी लाबीने अशोकना पुत्र महिंदे अहीं रोपेली.

अन्पदेश पुं० नर्मदा नदी उपर आवेलो प्रदेश; दक्षिण माळवा, हैहय, महिष, अने माहिषक नामे पण ओळखाय छे. राजधानी माहिष्मती. सहस्रार्जुन तेनो राजा हतो.

अपरांत पुं० उत्तर कोंकण. शूप्पारक तेनी राजधानी. अशोकनो एक शिला-लेख आ भागमां ताजेतरमां मळी आव्यो छे.

अप्पस्य दीक्षित पुं० अलंकार विषेना ग्रंथ 'कुवलयानंद 'ना कर्ता. दक्षिण हिंदमां जन्मेला; १७ मा सैकाना पूर्वार्धमां थई गया.

अभिमन्यु पुं० अर्जुन अने सुभद्रानो पुत्र विराट राजानी पुत्री उत्तराने परणेलो. परीक्षित तेनो पुत्र महाभारतना युद्ध वखते कौरवोनो चक्रव्यूह तेणे एकलाए भेद्यो खरो; पण पछी कौरवपक्षी छ बळियाओए भेगा थई तेने हण्यो.

अमरकंटक पुं० एक पर्वतः नर्मदा नदी

तेमाथी नीकळे छ. गोंडवननी मेकल पर्वतमाळानो भाग छे. 'मेघदूत'ना १७ मा इलोकमां वर्णवेल आस्रकूट आ हरो.

अमर्रीसह पुं० प्रसिद्ध कोशकार. विक्रमादित्यना दरबारना नव रत्नो-मानी एक गणाय छे. ते जैन हतो. पाचमा सैकामां थई गयो. तेना प्रसिद्ध 'अमरकोश'मां आशरे १५९२ अमुष्टुप छंदना क्लोको छे अने संस्कृत भाषाना २५००० शब्दोनो अर्थ ते आपे छे.

अमरु, अमरुक, अमरू पुं० 'अमरुशतक'नो कर्ता. आठमा सँकानो
आनंदवर्धन तेनो उल्लेख करे छे.
शंकराचार्य कामशास्त्र शीखवा ते
राजाना मृत शरीरमां पेठा हता एम
कहेवाय छे.

अरट्ट पुं० जुओ 'आरट्ट'

अरुण पुँ० करवप-विनतानी पुत्र. सूर्यनी सारथि. गरुडनो मोटो भाई. संपाति अने जटायुनी पिता. प्रसवकाळ पहेलां जन्म्यो होवाथी तेने चरण नहोता. अरुंधती स्त्री० विसप्टनी पत्नी. कर्दमनी पुत्री. पतिव्रतापणाना आदर्शरूप गणाय छे. लग्नविधि वस्तते सप्तिष्टिमांना विसप्टना तारा पासे आवेला अरुंधतीना तारानुं दर्शन तेथी वरवहने कराववामां आवे छे.

अर्जुन पुं० (१) कार्तवीर्य, सहस्रार्जुन.
परशुरामे तेने हणेलो. (२) पांच
पांडव पैकी कुंतीना त्रण पुत्रोशांनो
त्रीजो. कुंतीने इंद्रथी प्राप्त थयेलो.
गांडीवधारी. श्रीकृष्णे तेना सारिथ
थईने महाभारतना युद्ध वसते
गीता उपदेशेली.

अलकनंदा स्त्री० (१) हिमालयमां आवेल वसुधारामां आ नदीनुं मूळ छे. गंगाने मळे छे.(२)गंगा नदीनुं नाम. अलिंद पुं० पूर्व तरफतो देशविशेष अवंति (—ती) स्त्री० आजनुं उज्जियनीः हिंदुओनां सात पवित्र नगरोमानुं एक त्यां मरवाथी मोक्ष प्राप्त थतो मनाय छे. (अयोध्या - मथुरा - माया-काशी - कांचि - अवंतिका - द्वारावतीः) मालवदेश (माळवा)नी राजधानीः

मालवदश (माळवा)ना राजधानाः अदमक पुं० आ प्राचीन दश क्यां आव्यो हशे ते चोक्कस कही शकातुं नथीः अशोकना वखतमां ते महाराष्ट्रनो भाग हतो. बौद्धो जेने अस्सक कहे छे ते गोदावरी अने माहिष्मतीनी वच्चे नर्मदा नदी उपर आव्यो; तेनी राजधानी प्रतिष्ठान

ते त्रावणकोरनुं प्राचीन नाम पण छे. अश्वघोष पुं० बौद्ध लेखक. ईमवी सन-ना प्रथम सैकामां थयो हशे. 'बुद्ध-चरित' तेनो जाणीतो ग्रंथ.

अश्वत्थामन् पुं० द्रोणाचार्यनो पुत्र. चिरंजीवी गणाय छे. पांडवोना सूतेला पांच पुत्रोने तेणे मारी नाख्या हता. तेथी थयेला युद्ध वखते तेणे ब्रह्मास्त्र छोडचुं हतुं.

अञ्चयति पुं० (१) सावित्रीनो बाप;
मद्रदेशनो राजा. (२)कैकेयीनो पिता.
अञ्चिनोकुमार पुं० सूर्यने संज्ञाथी थयेला
जोडका पुत्रो. देबोना वैद्य तरीके
प्रसिद्ध छे.

अध्टाबक पुं० कहोड ऋषिनो पुत्र. पिताए गुस्से थई शाप आपवाथी आठ अंगे वांको जन्म्यो हतो.

असिवनी स्त्री० पंजाबनी एक नदी-चिनावः

अहल्या स्त्री० गौतम ऋषिनी पत्ती. इन्द्रे छेतरी तेनुं पातित्रत्य नष्ट कर्य होवाथी शाप पामी ते शल्या बनी गई हती. रामे तेनो पाछो उद्घार कर्यो अहिच्छत्रा स्त्री० दुपद राजानी नगरी उत्तर पंचाल (रोहिल्खंड) -नी राजधानी.

अंगद पुं० (१) वालिनो पुत्र. रामे तेने रावणने त्यां विष्टि करवा मोकल्यो हतो. (२) दशरथ-पुत्र लक्ष्मणनो पुत्र.

अंगिरस् पुं० ब्रह्माना १० मानस पुत्री-माना एक; सप्तिषिमांना एक; बृह-स्पितना पिताः

अंजना स्त्री० केसरी वानरनी पत्नी; हनुमाननी माता. मस्त् देव (पवन) तेने देखी मोहवश थई गया हता; पण ते तेमने वश न थई. पछी मात्र मस्त् देवनी कामेच्छाथी ज तेने पवनना जेवो बळवान पुत्र थयो. हनुमान तेथी मास्ति पण कहेवाय छे. अंतर्षिट (-दी) स्त्री० गंगा-यमुना बच्चेनो, प्रयागथी हरद्वार मुधीनो पवित्र प्रदेश.

अंघक पुं० (१) एक असुर तेने हजार माथां हतां. स्वर्गमांथी पारिजात वृक्ष हरी जवा गयो त्यारे शिवे तेने मार्यो हतो. (२) यदुनो वंशज अने श्रीकृष्णनो पूर्वज. तेना भाई वृष्णि साथे ते अंधक-वृष्णिओना प्रसिद्ध कुळनो पूर्वज गणाय.

अंध्र पुं॰ आजनो तेलंगण प्रदेशः पश्चिमे घाट, उत्तरे गोदावरी, दक्षिणे कृष्णाः

अंबरीष पुं० मनुवैवस्वतनो पौत्र अने नाभागनो पुत्र. मोटो विष्णुभक्त गणाय छे. (२) सगरनो वंशज अने दशरथनो पूर्वज; त्रिशंकुनो पुत्र.

अंबष्ठ पुं० तक्षशिलानी पूर्वे आवेलो प्रदेश तथा तेना वतनी आजनो लाहोर तरफनो प्रदेश.

अंबा स्त्री० काशीराजानी पुत्री तेनी बेबहेनो साथे भीष्म तेने विचित्रवीर्य साथे परणाववा हरी ठावेठा; पण तेनी सगाई शाल्वराज साथे थयेठी होवायी भीष्मे तेने पाछी मोकली; पण ते राजाए बीजाने घर गयेठी तेने स्वीकारवा ना पाडी; भीष्मे पण पोताना ब्रह्मचर्यव्रतने कारणे तेनी साथे परणवा ना पाडी आधी भीष्मनुं वेर वाळवा तेणे शिवने आराध्या. बीजे जन्मे ते शिखंडी तरीके भीष्मना मृत्युनुं कारण घई. अंबािलका स्त्री० (जुओ अंबा) काशी राजानी त्रीजी कन्या; पांडुनी माता. अंबिका स्त्री० (जुओ अंबा) काशी राजानी बीजी कन्या; धृतराष्ट्रनी माता.

आनर्त पुं॰ (१)वैदस्वत मनुनो पौत्र; शर्यातिनो पुत्र; एक सूर्यवंशी राजा. (२)हालनुं सौराष्ट्र; द्वारका (आनर्त नगरी) तेनी राजधानी; पछी वलभी तेनी राजधानी बन्युं प्रभास-तीर्थ तेमां आव्युं.

आनतंपुर, आनंबपुर न० उत्तर गुज-रातनुं आजनुं वडनगर. ह्युएनत्सांगे तेनी मुलाकात लीधी हती.

आपगा स्त्री० मद्र देशनी एक नदी; आजनी अयक; तेने कांठे शाकल नगर आर्व्यूहतुं.

आभीर पुं० भारतना परिचम किनारा उपरनो देश (तापीथी देवगढ सुधीनो); गुजरातनो दक्षिण-पूर्व प्रदेश आ प्रदेश चीक्कस क्यां आव्यो ते कहेवातुं नथी. महाभारतमां (२.३१) जणाच्या प्रमाणे आभीरो दिया किनारा नजीक अने सरस्वती (सोमनाथ-गुजरात नजीकनी)नदीने किनारे रहेता हता एक श्लोकमां जणाव्युं छे के कोंकणनी दक्षिणे, तापीना परिचमी किनारे विध्य पर्वतमां आभीर देश छे.

भारट्ट पुं० पंजाबनी उत्तर-पूर्वमां आवेलो देश; तेना घोडाओ माटे जाणीतो. (रावळपिडीमां गुजरातना लोको हजु पोताना देशने हैरत के ऐरत देश कहें छे.)

आरण्य, आरण्यक पु० उज्जैन अने विदर्भनी दक्षिणे आवेलो देश; तगर तेनी राजधानी

आर्जीकीया स्त्री० विपाशा नदी (पंजाबनी वियास)

आर्यभट्ट पुं प्रसिद्ध ज्योतिषी. जन्म ई० स० ४७६. तेमनी प्रसिद्ध ग्रंथ 'आर्यसिद्धांत' उच्च गणितने आघारे रचायो छे.

आर्यावर्त पुं० पूर्व अने परिचम समुद्र बच्चेनो, तथा उत्तरे हिमालय अने दक्षिणे विध्य पर्वतनी वच्चेनो प्रदेश; आर्योनुं रहेठाण. आर्यावर्तं अने दक्षिणा-पथनी वच्चे नर्मदा नदी सरहद रूप.

इभुमती स्त्री० कालिदी नदी रोहिल-खंडना कुमाऊंमां थईने अने कनोज प्रदेशमां थईने वहेती.

इक्ष्याकु पुं० सूर्यवंशनो प्रथम राजा; वैवस्वत मनुनो पुत्र

इरावती स्त्री० पंजाबनी रात्री नदी. इंदुमती स्त्री० अजराजानी पत्नी. दशरथनी माता.

इंद्रजित् पुं० रावणनो पुत्र; महा-पराक्रमो योद्धीः छवटे लक्ष्मणने हाथे मरायोः

इंद्रप्रस्थ न० यमुनाने डाबे कांठे आवेलुं प्राचीन नगर; युधिष्ठिरनी राजधानी अत्यारनुं जूनुं दिल्ही (जोके जमणे किनारे छे) ए नगरना स्थान तरीके गणावाय छे.

उग्रसेन पु० मथुरानो राजा; कसनो पिताः

उज्जयंत पुं० रैवतक पर्वत; आजनो गिरनार. उक्कियनी सूत्री भाळवामां आवेल आजनुं उज्जैन; विक्रमादित्यनी राज-धानी. हिन्दुओनी सात पवित्र नगरी-ओमांनी एक ('अवंति'); हिंदुओनुं प्रथम याम्योत्तर वृत्त त्यांथी पसार थाय छे.

उत्कल पुं० आजनुं ओरिसा. (ताम्र-लिप्तनी दक्षिणे अने किपशा नदी सुधी विस्तरेली प्रदेश.) कटक अने पुरी तेनां मुख्य शहेर छे. किलगनो उत्तरनो भाग पण ते कहेबातुं ('उत्कलिङ्ग'); वैतरणी नदी तेनी उत्तरनी हद.

उत्तर पुं० विराट राजानो पुत्र.

उत्तरकुरं पुं० जगतना नव विभा-गोमांनो एक. हिमालयनी पेली बाजुए आवेलो मनाय छे तथा त्यां नित्यसुख प्रवर्ते छे एम कहेवाय छे.

उत्तरकोसल पुं० अयोध्याप्रांतः उत्तरपंचाल पुं० रोहिलखंडः

उत्तरा स्त्री० विराट राजानी पुत्री; अभिमन्युनी पत्नी.

उत्तानपाद पुं० ध्रुवनी पिता.

उदयन पुं० वत्सदेशनी राजा. उज्जिय-नीनो राजा चंडमहासेन तेने पोताना नगरमां ठगीने छई आव्यो, पण उदयन पोताना प्रधाननी मददथी चंडमहासेननी पुत्री वासवदता साथे नासी छूटचो. पछी राजकीय कारणोथी मगधना राजा प्रद्योतनी पुत्री पद्मावती साथे पण तेनुं छग्न गोठववामां आव्यं. तेनी राजधानी कौशांबी.

उर्बंशी स्त्री० बदिरकाश्रममां तप करता नर-नारायणने लोभाववा इंद्रे अप्सराओ मोकली; त्यारे नारायणे पोताना उरुमांथी उर्वशीने पेदा करी, जेने जोईने पेली अप्सराओ शरमाई गई. एक वार शाप पामी उर्वशी पृथ्वी उपर आवी त्यारे पुरूरवाना प्रेममां पड़ी. अने तेनी पत्नी तरीके रही. उल्पी स्त्री० नागकन्या; अर्जुन गंगामां स्नान करतो हतो त्यारे तेने जोई मोहित थई ने तेने पाताळमां खेंची गई. अर्जुनथी तेने एक पुत्र थयो-इरावान्.

उज्ञतस् पुं० दैत्योना आचार्यः; तेमने काव्य के शुक्राचार्य पण कहे छे.

उज्ञीनर पुं॰ (१) कंदहार देशः (२) भोज देशनो राजा; शिविनो पिताः

उषा स्त्री॰ बाणासुरनी पुत्री; अनि-रुद्धनी पत्नी. (जुओ अनिरुद्ध) ऊमिला स्त्री॰ जनकनी औरस पुत्री;

दशरथपुत्र लक्ष्मणनी पत्नी.

ऋभवत् पुं० जुओ 'ऋष्यवत् ' ऋतुपर्ण पुं० इक्ष्वाकु वंशनो एक राजाः नळराजा बाहुक रूपे तेने त्यां रहेलाः नळ तेमनी पासेथी पोतानी अञ्च-विद्याना बदलामां अक्षविद्या - जूगटुं रमवानी विद्या शीखेलो.

ऋषिक पुं० कांबोजनी उत्तरे आवेलो एक देश.

ऋष्यमूक पुं० पंपा सरोवर पासे मतंग पर्वतनुं शिखर वालिथी छूपातो सुग्रीव त्यां रहेतो हतो. तुगभद्राने काठे अणगुंदीथी आठ माईल दूर छे.

ऋष्यवत् पुं० सात कुलाचल पर्वतोमांनो एक. नर्मदा किनारे (रेवा प्रांत) आवेलो

श्रुच्यश्रृंग पुं० विभांडक मुनिना पुत्र; जंगलमां ज ऊछर्या होई तेमणे कदी स्त्री जोई न हती. अंगदेशना लोमपाद राजाए पोताने त्यांथी अनावृष्टि दूर करवा तेमने एक वेश्या द्वारा लोभावी पोताना राज्यमां आण्या. दशरथ राजाने तेमणे संतान माटे यज्ञ करावेलो.

एकलब्ध पुं० निवाद राजानी पुत्र; क्षत्रिय सिवाय बीजाने घनुर्विद्या न शीखवता द्रोणाचार्यनी मूर्तिनी स्थापना करी तेणे धनुर्वेद साध्यो. पछी क्षत्रियोने कनडे निह ते माटे गुरुदक्षिणा तरीके द्रोणाचार्ये तेनो अंगूठो मागी लीघो. ओघवती स्त्री० सरस्वतीना सात प्रवाहोमांनो बीजो; तेनी पासे ज महाभारतनुं युद्ध थयेलुं.

ककुत्स्थ पुं० सूर्यवंशी राजा; इक्ष्याकु नो पौत्रः असुरो सामेनी लडाईमां इंद्रे तेने मददे बोलावेलो. पछी इंद्रे सांढनुं रूप लई तेने पोतानी खूंध उपर सवारी कराबी, अने तेणे असुरोने हराज्या. तेथी ते (ककुद्) खूंध उपर सवारी करनार (स्थ) कहेवाय छे. तेनी पछी बधा सूर्यवंशी राजाओ 'काकुत्स्थ' नामे पण ओळ-खाय छे.

कच पुं० देवोना गुरु बृहस्पतिनो पुत्र;
असुरोना आचार्य शुक्राचार्य पासे
संजीवनी विद्या शीखवा रहेलो.
शुक्राचार्यनी पुत्री देवयानी तेना
प्रेममां पडेली; तेणे अनेक वार कचने
असुरोना रोषमांथी बचावरावेलो.

कणाद पुं० वैशेषिक दर्शनना प्रवर्तक एक ऋषि. (तेमना दर्शनने कण-अणुनो वाद कही शकाय.)

कण्य पु॰ कश्यपना कुळमां उत्पन्न थयेल एक ऋषि. मालिनी नदी तीरे तेमनो आश्रम; शकुंतलाने तेमणे उछेरेली.

कब्रू स्त्री० कश्यपनी पत्नी; सर्पोनी माता; शेष, वासुकि, कर्कोटक तक्षक, अनंत इ० तेना पुत्री.

कनसल न० एक तीर्य; हरद्वारथी है माईल दूर आवेलुं छे.

किपल पुं० सांस्य शास्त्रना प्रवर्तेव मुनि. कर्दम-देवहुतिना पुत्र. सगरन अरवमेघना अरवने शोघवा नीकळेल ६० हजार पुत्रोने तेमणे बाळी नाखेला

- कपिलवस्तु न० बुद्धनुं जन्मस्थान; उत्तर प्रदेशना बस्ति जिल्लाना उत्तर-पश्चिम भागमां आवेल भुइल ते छे एम गणाय छे.
- किपशा स्त्री० (१) काबुल नदीनी उत्तरनो प्रदेश. पाणिनी जेने कापिशी कहे छे ते; उत्तर अफघानिस्तान. (२) ओरिसानी सुवर्णरेखा नदी. (३) बंगाळना मिदनापुर जिल्लामांथी वहेती कासाई नदी. (जुओ 'सुद्यं').
- **कयाधु** स्त्री० हिरण्यकशिपुती स्त्री; प्रह्*लादती* माता.
- करतोया स्त्री० 'सदानीरा' पण कहे-वाय छे. रंगपुर, दिनाजपुर अने बोगरा जिल्लाओ वच्चे थईने वहेती पवित्र नदी. बंगाळ अने कामरूप ए बे राज्यो वच्चेनी सरहद.
- **करूष** पुं० अयोध्या अने मिथिला ए बेनी बच्चेनो देश.
- कर्ण पुं० कुंतीने लग्न पहेलां सूर्यथी थयेली पुत्र, घृतराष्ट्रना अधिरय नामना सारिथए तथा तेनी पत्नी राभाए उछेरेली. तेथी ते 'सूतपुत्र' के 'राधेय' नामे पण ओळखाय छे.
- कांलग पुं० ओरिसानी दक्षिणे गोदा-वरीना मुख सुधी विस्तरतो प्रदेश. ब्रिटिश अमल हेठळना उत्तर सरकार. कांलगनगर तेनी राजधानी—— दरियाकिनाराथी थोड़ी दूर आवी हती. कदाच आजनी राजमहेन्द्री होय.
- कल्हण पुं० 'राजतरंगिणी' नो कर्ता. काश्मीरना जर्यासह राजा (११२९— ११५०) नो समकालीन ए प्रथमां काश्मीरना घणा राजाओनी माहिती मते छे.
- कश्यप पुं० कर्दमपुत्री कळाथी मरीचिने थयेल पुत्र. दक्षनी १३ पुत्रीओ — अदिति, दिति, दन्, सिहिका, विनता,

- कद्रु इ० ने परण्या. देव, दैत्य, दानव, सर्प इ० पुत्रो तेमनाथी थया.
- कंबोज पुं० जुओ 'कांबोज'.
- कंस पुं० यादववंशीय उग्रसेन राजानो पुत्र; मथुरानो राजाः तेनी बहेन (काकानी दीकरी) देवकी श्रीकृष्णना पिता वसुदेवने परणावेलीः जरासंधनी कन्या वेरे ते परणेलोः
- कान्यकुब्ज पुं० कतोज. काली नदीने किनारे. गाधिराजानी राजधानी अने विश्वामित्रनुं जन्मस्थान. पछी घणां राज्योनी राजधानी बनेलुं.
- काम पुं० कामदेव; तेनी पत्नी रिति शिवने पार्वती तरफ मोहित करवा प्रयत्न करवा जतां शिवे तेने त्रीजुं लोचन उघाडी भस्मीभूत करेलो. पछी ते श्रीकृष्णना पुत्र प्रद्युम्न तरीके जन्म्यो. वसंत ऋतु तेनो मित्र गणाय छे; अने ते पांच फूलरूप बाणोवाळो 'पंचशर' गणाय छे.
- कामधेनु स्त्री० समुद्रमंथन वस्ते नीकळेलां चौद रत्नोमांनु एक. ते विसष्ठने त्यां रहेती. इच्छित वस्तु ते आपती.
- कामरूप पुं० आसाम. करतोया नदीथी आजना आसामना छेडा सुधी विस्तरेलुं राज्य. उत्तरे हिमालय अने पूर्वमां चीननी सरहद सुधी ते विस्तर्यों हशे. तेनो राजा दुर्योधननी मददे किरातो अने चीन लोकोनुं सैन्य लईने आवेलो. तेनी प्राचीन राजधानी 'प्राग्ज्योतिष'. ('लौहित्य' अथवा ब्रह्मपुत्रानी बीजी बाजुए.)
- कामाख्या स्त्री० आसामनुं गौहत्ति. तेने प्राग्ज्योतिषपुर गणवामां आवे छे.
- काम्यक वन न० इंद्रप्रस्थनी पश्चिमे सरस्वती नदींने किनारे आवेलुं वन. पांडवो वनवास दरम्यान त्यां घणा

दिवस रहेला. आ वन कुरुजांगल देशमां आवेलुं गणातुं.

कार्तवीयं पु० एक यदुवंशी राजा. तेने हजार हाथ दत्ताश्रेयनी कृपाथी मळेला. माहिष्मती तेनी राजधानी. परशुरामे तेने पोताना पितानी गाय हरवा बदल मारेलो. तेनु 'अर्जुन' के 'सहस्रार्जुन' नाम पण जाणीतुं छे. ते न्याय अने धर्मथी राज्य करतो एम प्रसिद्ध छे.

कार्तिकेय पुं० शिवना पुत्र. शिवनुं वीयं अग्निमां नाखेलुं ते झीली न शक्यो तथी तेणे तेने गंगामां नाख्युं (शर-बरुना झंडमां ते पडचुं होवाथी कार्तिकेयनुं नाम 'शरजन्मन्' पण छे.) स्याथी ते वीर्य ६ कृत्तिकाओ गळी गई; तेमणे दरेके एक एक पुत्रने जन्म आप्यो; पण पछी ते बधानी एक आकृति थतां छ माथां अने बार हाथवाळी आकृति थई. तेथी कार्तिकेय षण्मुख कहेवाय छे. ते वेवोना सेनानी छे, अने तारकासुरनो तेमणे नाश करेलो. तेमनुं वाहन मोर.

कालकवन न० बिहारनी राजमहल टेकरीओ. आर्यावर्तनी पूर्वेनी हद आनाथी बंधाती.

कालकेय पुं० एक असुर. वृत्रासुरने इंद्रे मार्यो त्यारे ते समुद्रमां छुपाई गयो. रात्रे बहार नीकळी सौने त्रास आपतो. अगस्त्ये समुद्र शोषीने तेनो नाश करेलो.

कालयवन पुं० एक यवन राजा. श्रीकृष्णनो अने पांडवोनो शत्रु.

कालिदास पुं० 'अभिज्ञानसाकुंतल', 'विकमोर्वशीय', 'मालविकाग्निमित्र', 'रघुवंश', 'कुमारसंभव', 'मेथदूत' अते 'ऋतुसंहार'ना विक्यात कर्ताः तेमना समय विषे निश्चितता नथीः लोकपरंपरा तेमने विकमादित्य राजाना दरबारमां मुक्ते छे, जेमनो विकम संवत (ई० स० पू० ५६) गणाय छे. पण केटलाक विद्वानो विक्रमादित्यना संवत्ने ई० स० ५४४ मां मूके छे. छता, चोथा सैकाना गुप्त राजाओना अमलमां कालिदास थयेला एम घणा विद्वानो माने छे. तेमना निवासस्थान बाबत पण मतभेद छे.

काश्यपपुर न० मुलतान; रावी नदीना जूना वहेण आगळः

कांचीपुरी स्त्री० कांजीवरम् मोक्षदायक मनाती सात पुरीओमांनी एक. चील राजाओनी राजधानी.

कांपिल्य न० द्रुपदराजनी दक्षिण पंचालमां आवेली नगरी आजनुं कांपिल, बुदाऊं अने फरुकाबादनी वच्चे गंगानदीना जूना वहेण आगळ छे.

कांबोज पुं० आजनो उत्तर अफधा-निस्तान प्रदेश घोडा अने शाल माटे प्रसिद्धः

किरात पुं॰ सिलहट अने आसाम मळीने थतो देश. ऋग्वेदमां पण आ प्राचीन प्रदेशना लोकोना नामनो उल्लेख आये छे.

किष्किधा स्त्री० वालि अने सुग्रीवनो देश; तथा तेनी राजधानीनुं नामः मैसूर अने हैदराबादनी वच्चे ते प्रदेश आव्यो कहेवायः तुंगभद्राने कांठे हंपी-विजयनगर पासे किष्किधा नगरीनुं स्थळ बतावाय छे.

किनर, किंपुरुष पुं० जंबुद्वीपनो एक विभाग - वर्ष; हिमालयनी उत्तरे.

कीकट पुं० मगध देश; आजनुं बिहार कुबेर पुं० धननो देवता; यक्षो अने किन्नरोनो राजा. रावणनो ओरमान भाई. कैलास तेनो वास; त्रण पग, आठ दांत अने आंखने बदले पीळुं चाठुं एवो कदरूपो आकार.

कुब्जास्त्री० कंसनी खूंधी जुवान

दासी. कंस माटेनुं चंदन रुई जती हती त्यारे कृष्णे तेनी पासे ते चंदन माग्युं. तेणे खुशीथी आप्युं. कृष्णे तेने पछी सीघी बनावी दीधी.

कुर पुं० (१) चंद्रवंशीय कौरव-पांडवीनी मूळ पुरुष. तेणे कुरुक्षेत्र वसाव्युं. (२) दिल्हीनी आसपासनो एक देश. तेनी राजधानी हस्तिनापुर.

कुरक्षेत्र न० (१) ब्रह्मावर्तनी पश्चिमे आवेला देशनुं नाम. (२) कुरुदेशनुं प्रतिद्ध स्थान; त्यां महाभारतनुं युद्ध थयेलुं; कुरुराजाए त्यां तप करेलुं; सरस्वती अने दृषद्वती नदीओनी वच्चे आवेलुं छे.

कुरजांगल नु० कुरु प्रदेशनी वायव्ये आवेलो एक देश; हस्तिनापुर तेमां आवेलुं.

कुर्पंचाल पुं० कुरुप्रदेशनी पूर्वे आवेलो ' एक देश.

कुल्बि पुं• गढवाल (सहरानपुर जिल्ला समेत); दिल्हीनी उत्तरे.

कुलूत पुं० जालंघर दोआदनी उत्तर-पूर्वे आवेलो शतद्रुना जमणा कांठानो प्रदेशः नगरकोट तेनी राजधानीः

कुशस्यकी, कुशावती स्त्री० दक्षिण-कोशल देशनी राजधानी; नर्मेदानी उत्तरे, पण विच्यनी दक्षिणे; बुंदेल-खंडनुं रामनगर ते हशे.

कुसुमपुर न० पाटलिपुत्र.

कुँडिनपुर न० विदर्भेनी राजधानी; वर्घा नदीथी अमरावती सुधी पथरा-येली होवानुं कहेवाय छे.

कुंतल पुं० चोल देशनी उत्तरे आवेलो देश. तेने कर्णाट पण कहेता; कल्याणी तेनी राजधानी; हैदराबादनो दक्षिण-पश्चिम भाग.

कुंतिभोज पुं॰ एक राजा; कुंतीनो पिताः शूर राजानो मित्रः पोताने संतति न हती तेथी शूरराजानी कन्या कुंतीने तेणे दत्तक लीधेली.

कुंती स्त्री॰ यदुवंशी शूर राजानी कन्या; कुंतिभोजे दत्तक लीघेली. पांडु राजानी पत्नी. कर्ण, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुननी माता.

कुंभकर्ण पुं^ठ रावणनो नानो भाई. वर्षमां छ महिना ऊंघ्या करतो.

कृतवर्मन् पुं० यदुवंशी योद्धो; कौरव पक्षे महाभारतना युद्धमां कृपाचार्य, अश्वत्थामा अने कृतवर्मा एटला ज बच्या हता. यादवास्थळी वखते सात्यिकिए पछी तेने हणेलो.

क्रुपाचार्य पुं० अश्वत्यामानो मामो; कौरवोने पक्षे छडेलो; सात चिरंजीवी-ओमानो एक.

कृशादव पुं०(१)एक ऋषि अने प्रजापति.

(२) नाट्यशास्त्रना एक आचार्यः

(३) अस्त्रविद्याना एक आचार्यः

कृष्ण पुं० वसुदेव-देवकीना पुत्र; विष्णुना आठमा अवतार; कंसना भाणेज; कुंतीनी सगाईथी पांडवोना मामात भाई थाय.

कृष्णद्वैपायन पुं० व्यासजी; पराशरना पुत्र; काळा होवाशी कृष्ण;सत्यवतीती कुंवारी अवस्थामां जन्मेला तेमने द्वीप उपर छोडो दीघेला तेथी द्वैपायन; वेदोनी व्यवस्था करनार तेथी 'व्यास'

कृष्णा स्त्री० द्रौपदी.

केकय पुं० वियास अने सतलज वच्चेनो देश. केकेयीनो पिता आ देशनो राजा.

केक्सी स्त्री० कैकेसी

फंकसी स्त्री० रावणनी माता.

कैकेयो स्त्रो० दशरथनी पत्नी (त्रण-मांनी एक); भरतनी माताः

कैटभ पुं० एक बळवान असुर; तेने विष्णुए मारेलो तेथी तेमनुं नाम 'कैटभारि' पण छे. कोशल, कोसल पुं० एक देश; उत्तर अने दक्षिण एवा तेना वे विभाग हता. उत्तर कोशलनी राजधानी श्रावस्ती अने दक्षिण कोशलनी अयोध्या.

कौशल्या, कौसल्या स्त्री० दशरथनी पत्नी; रामनी माताः

कौशांबी स्त्री० वत्स देशनी राजधानी. अत्यारना कोसम नजीक (अलाहा-बादनी उपर ३० माईल) आवेली; यमुनाने डावे किनारे.

कौशिको स्त्री० बिहारनी एक नदी ('पारा'); दरभंगानी पूर्वे. तेने कांठे ऋष्यश्ंगनी आश्रम हतो.

श्रेमेंद्र पुं० ११ मा सैकानो एक काश्मीरी लेखक; 'भारतमंजरी', 'बृहत्कथामंजरी' वगेरेनो कर्ता.

सर पुं० एक राक्षस; रावणनो संबंधी; जनस्थानमां रहेतो हतो. रामे तेने वनवास वखते हण्यो हतो.

खरोष्ट्र आजनुं काशगरः

सांडवं (-वन, -प्रस्य) न० कुरुक्षेत्र प्रदेशनुं एक वन; अर्जुने तेने बाळचुं हतुं; त्यां पछी पांडवोए इंद्रप्रस्थ राजधानी वसावेली.

गणेश पुं० शिव अने पार्वतीना पुत्र;
मस्तक हाथीनुं; सर्व मांगलिक कार्योंनी शरूआतमां तेमनी स्तुति थाय छे.
परशुराम साथेनी लड़ाईमां एक
दंत्शळ तूटी गयेलो तेथी 'एकदंत'
पण कहेवाय छे. उंदर तेमनुं वाहन.
व्यासजी पासे बेसी 'महाभारत'नी
हस्तप्रत तेमणे लखेली.

गहड पुं० कश्यप अने विनतानो पुत्र, अरुणनो नानो भाई. पक्षीओनो राजा अने सर्पोनो दुश्मन सफेद मुख, लाल पांखो, अने सोनेरी शरीर. विष्णुनुं वाहन.

गर्ग पुं० यादवोना उपाध्याय. कृष्ण

बळरामना जातसंस्कार तेमणे करेला. मोटा ज्योतिषी.

गंगा स्त्री० भारतनी पवित्र नदी तथा तेनी अधिष्ठाता देवता. ते देवता ब्रह्माना शापथी पृथ्वी उपर आवी अने शंतनु राजानी प्रथम पत्नी बनी. तेने आठ पुत्रो थया, तेमांनो सौथी नानो भीष्म. ('भगीरथ' तथा 'जह्नु ' पण जुओ)

गाधि पुं० विश्वामित्रना पिता. इंद्रनो अवतार.

गरिधपुर न० कनोज.

गांधार पुं० (कंदहार) भारत अने ईरान बच्चेनो देश. काबुल नदीने किनारे तथा खोसपस (कुनार) अने सिंघु नदीनी वच्चे आवेलो. तेनी राजधानीओ पुरुषपुर (पेशावर) अने तक्षशिला.

गांधारी स्त्री० गांधार देशना राजा सुबळना पुत्री अने घृतराष्ट्रनां पत्नी; कौरवोनां जननी. पति अंध होवायी पोते पण लग्न बाद आंखे पाटा बांधी राखतां.

गिरित्रजपुर न० बिहारनुं राजगिर. मगघनी प्राचीन राजधानी, बौद्ध **प्रंथोमां** तेनुं 'राजगृह' नाम आवे छे. गुणाढच पुं० भारतनो वार्ता-लेखक तेनी मूळ बृहत्कथा 'पैशाची प्राकृत'मां लखायेल. तेना उपरथी सोमदेवे 'कथासरित्सागर' रच्युं. ई. स. ना प्रथम सैकामां गोदावरी तीरे प्रतिष्ठानमां थई गयो. **गुर्जर** पुं• गुजरात. पहेलां तेमां खान-देश अने माळवाना मोटा भागनो समावेश थतो. ह्युएनत्सांगना समयमा सौराष्ट्रनो समावेश तेमां नहोतो करातो आजनुं मारवाड ते वखते 'गुर्जर' नामयी ओळखातुं.

<mark>गुह</mark> पुं० शृंगवेरनो किरात राजाः - रामनो भक्तः

गोकर्ण न० दक्षिण भारतनुं शंकरनुं पवित्र तीर्थं.

मोकुल न० नंदनुं गाम. कृष्ण अने बलराम नानपणमां त्यां ऊछरेला.

गोनर्द पुं०(१)पंजाब. काश्मीरना गोनर्द राजाए तेने जीतेलो,तेना नाम उपरथी. (२) अयोध्यानुं गोंड. पतंजिल (महाभाष्यकार)नुं जन्मस्थान.

गोपराष्ट्र पुं० नासिक जिल्लानो इगतपुरी विभाग. केटलाक तेने दक्षिण कोंकण माने छे.

गोमती स्त्री० काशी पासे एक नदी. गोमंत पुं० एक पर्वत; जरासंधना त्रासे कृष्ण अने बळराम त्यां थोडो वस्तत रहेला.

गोमंतक पुं॰ गोवा प्रांत.

गोवराष्ट्र पुं० जुओ 'गोपराष्ट्र'

गोवर्षन पुं०(१) वृदावन नजीक, मथुरा जिल्लानो एक पर्वत. कृष्णे तेने उद्धरेलो तेथी श्रीकृष्ण 'गोवर्षनगिरिधारी' कहेवाय छे. (२) नासिक जिल्लो. नासिक पासे गोवर्धन नामे गाम पण छे. गोवर्धनाचार्य पुं० 'आर्यासप्तशती'नो कर्ता. बंगाळना लक्ष्मणसेननो राजकवि. 'गीतगोविद'ना कर्ता जयदेवनो समकालीन.

गौड, पुण्डू आखा बंगाळने पूर्व गौड अने उत्तर कोशलने उत्तर गौड कहेता. गोंडवन ते पश्चिम गौड. कावेरीनो किनारो ते दक्षिण गौड.

घटकर्पर पुं॰ 'घटकपंरकाव्य' नो कर्ता. घणा तेने काळिदासनो समकालीन गणे छे. पण बीजा तेने काळिदासनी पूर्वे यई गयेलो माने छे. 'नीतिसार' नामे बीजुं काव्य पण तेणे लख्युं छे.

घटोत्कच पुं ० हिडिंबा राक्षसीने भीमयी

थयेलो पुत्र. घडा जेवुं माथुं अने बाळ निह, तेथी आबुं नाम पडेलुं. कर्णे अर्जुनना वध माटे राखेली 'शक्ति' छेवटे आना पर वापरवी पडेली.

चर्मण्यती स्त्री० रजपुतानानी चंबल नदी. रतिदेव राजाए करेल अनेक यज्ञोमां, तेनो किनारो वधेरेली गायोनां चामडांथी छवाई गयेलो, एटले तेलुं आ नाम पडेलुं.

चंद्रकेतु पुं॰ देशरथपुत्र लक्ष्मणनो बीजो पुत्र. (बोजुं नाम चित्रकेतु.)

चंद्रप्रभ न० (१) मेर्प्पर्वत उपरनुं एक सरोवर. त्यांथी जंबू नदी नीकळती कहेवाय छे. (२) कैलासनी ईशानमां हिमालयनुं एक शिखर.

चंद्रभागा स्त्री० (१) चिनाब नदी. (अथवा झेलम अने चिनाबनुं भेगुं नामः) लडाखनी दक्षिणे लोहित्य सरोवरमांथी तेनो उगमः(२)पंढरपुर आगळनी भीमा नदी.

चंद्रवती स्त्री० मध्यप्रदेशना लक्षितपुर जिल्लानुं चंदेरोः चेदि देशना राजा शिशुपालनी राजधानी.

चंद्रहास पुं० केरळ देशना राजा सुधार्मिकनो पुत्र. तेनी वार्ता बहु प्रसिद्ध छे. अश्वमेधना अश्व साथे आवेला कृष्ण-अर्जुन साथे तेने स्नेह थयेलो.

चंपा स्त्री ० (१) अंग देशनी राजधानी.

भागलपुरथी चार माईल पहिचमे.

(२) सियाम. (३) टोन्किन अने
कंबोडिया. (४) अंग अने मगध देश
वच्चे बहेती एक नदी. (५) चंबा
प्रदेश.

चाणक्य पुं० बीजुं नाम 'कौटिल्य.' 'कौटिलीय अर्थशास्त्र' नो कर्ता. बीजुं नाम विष्णुगुप्त के विष्णुशर्मा. नंद वंशने उखेडीने चंद्रगुप्त मौर्यने मगधना सिहासने बेसाडचो (ई० स० पूर्वे ३२१).

चाणूर पुं० कंसनो एक मल्ल. श्रीकृष्णे तेने मारेलो.

चार्बोक पुं० एक राक्षस; दुर्योघननो मित्र. पांडवोनो शत्रु. (२) एक नास्तिक मतप्रवर्तेक जडवादी.

चित्रक्ट पुं० प्रयागनी दक्षिणे १० माईले आवेलो डुंगर. तेनी उत्तरे मंदाकिनी नदी. वनवास दरम्यान रामचंद्रजी अहीं थोडुंक रहेला; भरतनी भेट अहीं थयेली.

चित्रस्य पुं० गंधवींनो राजा.

चित्रांगद पुं० शंतनु अने सत्यवतीनो पुत्र. नानपणमां ज गंघर्वीए वनमां मारी नाखेलो. विचित्रवीर्यनो मोटो भाई.

चित्रांगदा स्त्री० अर्जुननी पत्नी; बभुवाहननी माता.

चेिंद पुं० (१) यदुवंशीय राजा. तेना उपरथी देश तेम ज वंशनु ते नाम पडेलुं. (२) एक देश; विदर्भनी ईशानमां. हालनुं बुंदेलखंड. पांडवोना समये त्यांनी राजा शिशुपाल हतो.

चेर पुं० मैसूर, कोइंबतूर, सालेम, दक्षिण मलबार, त्रावणकोर अने कोचीन एटला प्रदेशोनो तेमां समावेश थतो. चेर नाम केरळमुं भ्रष्टरूप कहेवाय ई० स० त्रीजाथी ७ मा सैशा मुधी आ राज्य आगळ आव्युं हतुं.

चोल पुं० (१) कोरोमंडळ किनारो तेनी
एक राजधानी कांचिपुर पछीथी आ
राज्य दहेज तरीके पांडच राज्यमां
गयुं (२) कावेरीना किनारा उपर
आवेलुं राज्य;मैसूरनो दक्षिण भाग.
पछीथी ते कर्णाटक नामे ओळखायो.

जगन्नाय पंडित पुं० एक अर्वाचीन लेखक. 'रसगंगाधर', 'भामिनीविलास' इ० ना कर्ता. दिल्हीना शाहजहान बादशाहना वखतमां थई गया. १६२० थी १६६० सुधीमां तेमनो मुख्य प्रवृत्तिकाळ कहेवाय.

जटायु, जटायुम् पुं० एक पक्षीराजः अरुणनो नानो पुत्र; दशरथनो मित्र, रावण सीताने छई जतो हतो त्यारे तेणे सामनो कर्यो हतो.

जनक पुं॰ (१) विदेहवंशीय राजाओनुं सामान्य नामः (२) सीताना पालक पिताः

जनमेजय पुं० अर्जुनपुत्र अभिमन्युनो पौत्र. तेना पिता परीक्षित सर्पदंशयी मृत्यु पाम्या हता तेथी तेणे सर्पसत्र कारंभेलो. पछी आस्तिक मुनिए ते बंध करावेलो.

जनस्थान न० दंडकारण्यनो भाग. पंच-वटी त्यां आवेली. केटलाक पंचवटीने नासिक पासे माने छे; केटलाक वेनगंगा साथे गोदावरी मळे छे त्यां आवेली माने छे. वनवास वस्तते राम त्यां रहेला.

जमदग्नि पुं० एक ऋषि; परशुरामना पिताः

जयदेव पुं० (१) 'गीतगोविंद' नो कर्ता. बंगाळना वीरभूम जिल्लानो दतनी. १२ मा सैकामां थई गयो हशे. (२) (पीयूषवर्ष) 'चंद्रालोक' अने 'प्रसन्न-राघव' नो कर्ता. १२ मा सैकाथी वधु प्राचीन नथी.

जयद्वय पुं० सिंधुदेशनो राजा. धृतराष्ट्र-नी कन्या दुःशलानो पति. द्रौपदीनुं काम्यकवनमांथी हरण करी गयेलो. अभिमन्युनो कोठायुद्धमां तेणे वध करेलो. पछी अर्जुनने हाथे हणायो.

जरासंघ पुं० पुरुकुलना बृहद्रथ राजानो पुत्र. वे माताथी वे टुकडा रूपे जन्मेलो ; जरा नामनी राक्षसीए ते सांधीने एक बनावेलो. मगघ देशनो राजा. कंसनो ससरो. जह्नु पुं० एक चंद्रवंशी राजा. यज्ञ करतो हतो त्यारे गंगानदीनुं पाणी फरी वळ्युं. तेथी ते आखी गंगा पी गयो. पछी देवो अने ऋषिओए स्तुति करतां तेणे कानमांथी तेनो प्रवाह नीकळवा दीघो. तेथी गंगानुं नाम 'जाह्नवी' पडचुं.

जंबुद्दीप पुं०, न० पृथ्वीना सात महा-द्वीपोमांनी प्रथम. मेरु पर्वतनी आसपास गोळ थाळी जेनो ते आनेलो छे. तेनी आसपास लवण समुद्र वींटळायेलो छे. जालंघर पुं० बियास अने सतलज बच्चेनो देश.

जांबयत् पुं० एक बानर लंकानी चढाई बखते रामनी सेनानो एक सेनापति. (२) रींछोनो राजा तेनी पासे स्यमंतक मणि आवेलो कृष्णे तेने युद्धमां हराव्यो एटले तेणे मणि साथे पोतानी पुत्री जांबवती पण श्रीकृष्णने अर्पी दीधी.

जांबवती स्त्री० श्रीकृष्णनी पत्नी; सांबनी भाताः

जीमूतवाहन पुं० विद्याधरोनो राजा. 'नागानंद' नाटकनो नायक. मोटो परोपकारी अने उदार अंत:करण-वाळो हतो.

जैमिनि पुं० व्यासना एक शिष्य; पूर्वेमीमांसादर्शनना कर्ताः

ज्योतिर्मठ पुं० शंकराचार्ये स्थापेला चारमठोमांनी एक (बदरीनाथ पासे).

शारखंड पुं० छोटानागपुर प्रदेश. बीर-भूम अने बनारस वच्चेनो आखो हुंग-राळ प्रदेश. (संताल परगणा सहित.) तक्षा पुं० दशरथपुत्र भरतनो पुत्र. तेणे तक्षशिला नगर स्थाप्युं हतुं.

तक्षक पुं० एक सर्पं. परीक्षित राजाने दंश करेलो. जनमेजयना सर्पसत्रमांथी जीवतो रहेलो. तक्षशिला स्त्री० पंजाबना रावळिपडी जिल्लामां आवेलुं. एक वखत गंधार देशनी राजधानी; त्यां ई० स० ना पहेला सैका सुधी उत्तर हिंदतुं प्रसिद्ध विश्वविद्यालय हतुं.

तमसा स्त्री० (१) कोसल देशनी एक नदी. सरयूथी ऊगमणी बाजु १०-१५ माईल दूर आवेली. दशरथ राजाए तेने तीरे श्रवणकुमारने मारेलो. (२) रेवा प्रांतमांथी ईशान बाजुए वहीने मागीरथीने मळनारी नदी. तेने कांठे वाल्मीकिनो आश्रम हतो.

ताम्रपर्णी स्त्री० (१) बौद्धप्रंथोमां सिली-ननुं प्रसिद्ध नाम. (२) पांडच देशनी एक नदी. (तिनेवेलीमां आवेली तंबरवरी.) तेना मुखमां मोती मळतां.

ताम्रिक्त न ॰ 'सुह्म' (पश्चिम बंगाल)नी राजधानी. आजनुं तामलूक; कल-कत्ताथी नैऋंत्यमां ४२ माईल दूर.

तारक पुं० एक राक्षसः ब्रह्मानुं वरदान हतुं के सात दिवसना बाळक सिवाय कोईथी न मरे पछी कार्तिकेये जन्म बाद सात दिवसे तेने मार्यो तेना त्रण पुत्रोए वसाबेलां त्रण नगरो ते 'त्रिपुर' कहेवाय छे.

तारा स्त्री॰ (१) वालिनी स्त्रीनुं नाम; अंगदनी माता (२)हरिश्चंद्रनी राणीनुं नाम; तारामती (३) बृहस्पतिनी एक स्त्री

तारामती स्त्री० हरिश्चंद्रनी राणी; तारा रोहितकुमारनी माता

तिमध्यज पुं० इंद्रे मारेलो असुर (शंबरासुर);दशरथ राजा ते युद्धमां इंद्रनी मददे गयेला; त्यां कैंकेयीए तेमनुं जीवन बचावीने वे वरदान मेळवेलां.

तिलोत्तमा स्त्री० एक अप्सरा. विश्वा-मित्रे सुंद अने उपसुंद वे राक्षस भाईओना विनाश माटे सर्जेली. तेनाथी मोहित थई ते बंने आपसमां लडीने नाश पाम्या.

त्रिक्ट पुं० (१) पूना जिल्लानुं जुन्नरः टॉलेमी तेनुं नाम 'तगर' जणावे छेः (२) सिलोनना दक्षिण-पूर्व खूणे आवेलो एक पर्वतः

त्रिगर्त पुं० जालंधर प्रदेश प्राचीन काळमां ते सूका निर्जळ प्रदेश तरीके ओळखातो. लुधियाणा-पतियाला वगेरे भाग.

त्रिपुर त०, त्रिपुरी स्त्री० नर्मदा किनारे आवेलुं आजनुं 'तेवुर' – जबलपुरथी ६ माईल दूर, शिवे त्रिपुरामुरने मारी तेनां त्रण पुरोनो नाश करेलो.

त्रिवेणी स्त्री० गंगा-यमुना-सरस्वती ए त्रण नदीनो संगम - प्रयाग

त्रिशंकु पुं० इक्ष्वाकु कुळनो सूर्यवंशी राजा; हरिश्चंद्रनो पिता. सदेहे स्वर्गे जबा विश्वामित्र पासे यज्ञ कराक्यो; पण इंद्रे तेने पेसवा न दीधो अने पाछो नीचे गबडाच्यो. विश्वामित्रे तेने नीचे आवतो रोक्यो; अने अधवच नवुं स्वर्ग वगेरे रचवा मांडचुं. आथी अंतरियाळ स्थिति माटे त्रिशंकुनो दाखलो अपाय छे.

त्वष्ट्र पुं० एक प्रजापति; विश्वकर्मा; देवोनो शिल्पी. इंद्रे तेना पुत्रने मार्यो तेथी इंद्रनुं वेर लेवा तेणे वृत्रासुरने उत्पन्न कर्यो हतो.

दक्ष पुं० ब्रह्माना दश मानसपुत्रीमां प्रथम. तेनी एक पुत्री सती, शंकर बेरे परणावेली. शंकर साथे वेर थतां तेणे यज्ञमां सतीने तथा शंकरने न बोलाव्यां. छतां सती त्यां गई अने अपमान थतां यज्ञमां बळी मरी. शंकरे पछी तेना यज्ञनो ध्वंस कर्यों. सती बीजा जन्ममां पार्वती धईने शंकरने फरी पाम्यां.

दक्षिणापय पुं० भारतनो दक्षिण भाग; नर्मदाथी दक्षिणे आवेलो.

दत्त, दत्तात्रेय पुं० अति अने अनसूयाना त्रण पुत्रोमांना एक. ज्यांथी कंई बोध मळ्यो तेवी जडवेतन अनेक वस्तुओने तेमणे गुरुस्थाने स्थापेली.

दशीच पुं एक ऋषि; अयर्वण ऋषि-ना पुत्र. वृत्रासुरना वध माटे पोतानां अस्थि इंद्रने आप्यां; इंद्रे ते अस्थिनुं वज्र बनावरावी वृत्रने मार्यो.

दनु स्त्री • कश्यपनी एक स्त्री; दानवोनी माता

वमयंती स्त्री० विदर्भ देशना राजा भीमनी पुत्री; नळराजानी राणी

दिमल पुं० केरळ; मलबार किनारो अथवा दक्षिण मलबार. सिलोन (नागद्वीप)नी नजीक आवेलो.

दरद काश्मीरनी उत्तरे आवेलो एक देश. दिस्तान

दर्भवती स्त्री० गुजरातनुं डभोई.

दशपुर न० एक प्राचीन नगर; रंति-देवनी राजधानी आजनुं धोळपुर अवंतिथी उत्तरे. केटलाक तेने माळवानुं मंदसोर गणे छे.

दश्तरथ पुं० इक्ष्वाकु कुळना एक सूर्य-वंशी राजा; रामना पिताः कौशस्या, सुमित्रा, कैकेसी ए त्रण राणीओ. कौशल्याथी रास, सुमित्राथी लक्ष्मण अने शत्रुष्त तथा कैंकेसीथी भरत एवा चार पुत्र.

दशार्ण पुं० माळवानो पूर्व भागः तेनी राजधानी विदिशा (आजनुं मिलसा) – वेत्रवती नदीने किनारेः

दशार्णा स्त्री० माळवानी एक नदी**.** हालनी दशान.

दशाई पुं० यदुवंशीय राजा. तेना उपरथी 'दाशाहें' नामनुं कुळ.

दंडकारण्य न० (१) विध्य अने शैवाल

पर्वतोनी वच्चेनी प्रदेश. तेनो एक भाग 'जनस्थान' नामे ओळखातो. (२) बुंदेलखंडथी कृष्णा नदी सुधीनो जंगलनो प्रदेश.

दंढिन् पुं० 'दशकुमारचरित' अने 'काव्यादर्श'नो कर्ता. सातमा सैकामां थयेलो गणायः

वंतपुर न० कलिंगनी प्राचीन राजधानीः ओरिसानुं पुरीः सिलोन लई जवा पहेलां बुढनो दांत त्यां राखवामां आवेलोः

बाक्षिणात्य पुं० दक्षिण भारत; विध्य-पर्वतथी दक्षिणनो भागः

बारक पुं० श्रीकृष्णनो सारिथः

हारकावन, दारवन न० नागेश नामना ज्योतिलिंगवाळुं जंगल. मराठवाडामां.

बाजाही पुं यदुवंशीयकुळ

दाशेरक पुं० मोळवा देश.

विति स्त्री० दैत्योनी माता; कश्यपनी एक पत्नी; दक्षनी पुत्रीः

विलीप पुं० (१) सूर्यवंशीय राजा; भगीरथनो पिता (२) रघुनो पिता; पत्नी सहित तेणे नंदिनी गायनी सेवा करीने रघु पुत्र मेळव्यो.

बुर्योधन पु॰ धृतराष्ट्र - गांधारीनो पुत्र, सो कौरवोमां मोटो

बुर्बासस् पुं० अत्रि-अनसूयाना पुत्र; क्रोघनी मूर्ति सम गणाय छे. शकुंतलाने तेमणे शाप आपेलो.

बुष्यंत पुरु चंद्रवंशी, पुरुकुळमां जन्मेली राजाः सर्वदमन - भरतनो पिता; शकुतलानो पतिः

दुःशला स्त्री० दुर्योघननी बहे**न;** जयद्रथनी पत्नीः

द्वःशासन पुं० धृतराष्ट्रना सो पुत्रोमांनो एक. द्यूत पछी द्रौपदीने सभामां खेंची लावी तेनां चीर तेणे खेंचेलां भीमे तेना साथळ भागवानी तथा तेनुं लोही पीवानी प्रतिज्ञा लीघेलीः **दूषण** पुं० खर राक्षसनो जनस्थान-वासी एक सेनापतिः

वृषद्वती स्त्री० अंबाला अने सर्राहद-मां थईने वहेती नदी, हवे रजपूताना-ना रणमां लुप्त थाय छे. कुरुक्षेत्रनी दक्षिण सरहद; आर्यावर्तनी पूर्व सरहद; सरस्वती नदीने पहेलां मळती हती.

देवको स्त्री० उग्रसेनना भाई देवकनी पुत्री. वसुदेवनी पत्नी; श्रीकृष्णनी माता.

देविगिरि पुं० (१) चर्मण्वती नदी नजीकमो एक पर्वतः (२)दौलताबादः

देवयानी स्त्री० दैत्योना गुरु शुक्राचार्यनी एकनी एक लाडली दीकरी. (जुड़ो कच); ययाति राजाने परणेली. पोतानी दासी तरीके साथे आणेली शिमण्डा साथे राजाने गुप्त प्रेम करतो जोई, तेने अकाळ वृद्धावस्थानो शाप अपावेलो. शिमण्डाना पुत्र पुरुए पछी पोतानी जुवानीना बदलामां ययातिनी वृद्धावस्था लई लीधेली.

देसहित स्त्री॰ कर्दम ऋषिनां पत्नी; सांख्याचार्य कपिलनां माता. कपिले तेमने आत्मज्ञान उपदेश्युं हतुं.

द्रमिल पुं० जुओ 'दिमल'

इविड पु० दक्षिणनो देश; कुष्णा अने पोळर नदी वच्चेनो. गोदावरीनी दक्षिणनो आखो कोरोमंडळ किनारो तेमां आवी जाय. पण सामान्य रीते कावेरीनी पारनो देश गणाय. कांची तेनी राजधानी.

द्रुपद पुं० पांचाल देशनो राजा;
धृष्टद्युम्न, शिखंडी इ० छ पुत्रो अने
द्रौपदीनो पिता द्रोणाचार्यनो सहपाठी.
पण पछी द्रोणाचार्य ज्यारे ते मित्रता
याद करी धन मागवा आवेला, त्यारे
तेणे तेमनुं अपमान करेलुं; द्रोणे अर्जुन

मारफत तेने पकडी मंगावेलो. दक्षिण-पंचाल देश तेनो रहेवा दई, तेने जीवतो जवा दीधेलो. यज्ञ मारफते द्रोणनो वध करनार धृष्टद्युम्न पुत्र पछी तेणे मेळव्यो. मांकदी, छत्रवतो, कांपिल्य, अहिच्छत्रा आदि नगरो तेणे वसावेलां.

द्रोण पुं० पांडव कौरवोना प्रसिद्ध **शस्त्रा**चार्यः अश्वत्थामा तेमनो पुत्रः **द्रोपवी** स्त्री० पंचाल देशना द्रुपद

राजानी पुत्री (तेथी 'पांचाली'); पांचे पांडवोनी पटराणी.

पाच पाडवाना पटराणाः

द्वारवती स्त्री० गुजरातनुं द्वारकाः मथुराथी भागी आव्या बाद श्रीकृष्णनी राजधानीः

द्वैतवन न० सरस्वती नदीने किनारे मरुधन्वा देश नजीक आवेलुं; पांडवी बनवास वखते थोड़ो वखत त्यां रहेला. मीमांसक जैमिनिनुं वतन.

घनकटक अत्यारनु आंध्र प्रदेशनु बेझवाडा ई० स० पू० २०० थी

जाणीतुं हतुः

षनंजय पुं० 'दशरूप' नो कर्ता. अलंकार अने नाटचशास्त्रनो प्रमाण-भूत लेखक. धारना मुंज राजानो दरबारी; ई० स० १० मा सैकाना पूर्वार्धमां थई गयो.

घन्वंतरि पुं॰ समुद्रमंथन वसते उत्पन्न थयेलां १४ रत्नोमांनुं एक. आयुर्वेदना प्रवर्तक; देववैद्य. हाथमां अमृतकुंभ

लईने प्रगट थयेला.

घरणीकोट जुओ 'धनकटक'.

धर्म, धर्मराज पुं व्युधिष्ठिर. पांडवोमां मोटा. कृतीना त्रण पुत्रोमांना एक.

वर्मारण्य न० गया जिल्लानुं बौद्ध तीर्थ. घवलगिर पुं० ओरिसानी घौली टेकरी. त्यां अशोकनो शिलालेख छे.

षृतराष्ट्र पुं० कौरवोनो पिता. जन्मामः गांघारी पत्नीः बीजी एक वैश्य स्त्रीथी ययुत्स् नामनो पुत्रः **नकुरू** पुं० मादीनो पुत्र; पांडवोमानो चोषो. अश्विनीकुमारनो अंश अति सुंदर गणातो.

निविकेतस् पुं० गौतम गोत्रना अरुणिः ऋषिनो पुत्रः यमराजा पासेथी वर-दानमां आत्मविद्या मेळवी लाव्यो हतो.

नमुचि पुं० इंद्रनो मित्र एवो एक असुर. छूपी रीते इंद्रनुं बळ पी जतो. इंद्रे तेनो पछी वष करेलो.

नरक पुं० भूमिपुत्र एक असुर. तेन। अत्याचारीथी जगत पीडित धत श्रीकृष्णे तेनो नाश कर्यों. तेना अंत:-पुरमांथी १६१०० केदी स्त्रीओने श्रीकृष्णे छोडावी. ते बधी तेमने पति तरीके पछी वरीं हती.

नरनारायण पुं० बदिरकाश्रममां तप करता बे प्राचीन ऋषिओ. इंद्रे तेमने मोहित करवा अप्सराओ मोकली, त्यारे नारायणे जांघमांथी उर्वशीने उत्पन्न करो अने ते बधीने शरमावी. नर ए अर्जुन अने नारायण ए श्रीकृष्ण एम पण कहेवाय छे.

नल पुं० (१) निषध देशनो राजा; दमयंतीनो पति. (२) एक वानर, जेणे राम माटे सेतु बांधेलो.

नलक्बर पुं० कुबेरनो पुत्र. तेना भाई मणिग्रीव साथे ते नारदना शापयी अर्जुनवृक्ष रूपे गोकुळमां अवतरेलो. बंनेनो श्रीकृष्णे खांडिंगयो भरावीने उद्धार कर्यों.

नहुष पुं० पुरूरवानो पौत्र. एक राजा. ययातिनो पिता. थोड़ो वस्तत इंद्रपद मळेलुं. ते वस्तते इंद्रपत्नी सचीनी कामना करवा जतां सप्तिषिना शापथी साप रूपे अवतरेलो.

नंद पुं०(१)गोकुळनो अधिपतिः वसुदेवनो मित्रः; बळराम—ऋष्णनो पालक पिताः यशोदा तेनी स्त्रीः (२) पाटिकः पुत्रनो राजा; नंदवंशनो मूळ पुरुष. तेने चंद्रगुप्ते चाणक्यनी मददयी मारी मौर्यवंश स्थाप्यो.

नंदनवन न० इंद्रनुं उपवन -- बगीची. नंदिग्राम पुं० अयोध्यानी पासेनुं एक गाम. राम वनवासमांथी पाछा न फर्या त्यां सुधी भरत त्यां रहेलो. नंदिनी स्त्री० वसिष्ठ पासेनी काम-धेनुनी पुत्री -- गाय. एनी सेवाथी दिलीपने पुत्र थयो.

नारद पुं० (१) प्रख्यात देवर्षि. वीणा-वादक. हरिकोर्तन करनार. कलहप्रिय. देव-मनुष्य वच्चे आवजा करनार. (२) एक स्मृतिकार.

नारायण पुं० (१) जुओ 'नरनारायण'. (२) 'हितोपदेश' नो कर्ता; १४ मा सैकामां थयो होय.

निमि पुं॰ इक्ष्वाकुनो एक पुत्र. जनक नो पूर्वज तेणे मिथिलानो वैदेह वंश स्थाप्यो हतो.

निषध पुं० (१) नळराजाना देशनुं नाम.
तेनी राजधानी अलका, अलकनन्दा
नदी उपर आवेली. उत्तर हिंदना
कुमाऊँनो भाग हशे. (२) जंबुद्दीपनो
एक वर्षधर पर्वत.

नील पुं० (१) वानर सेनापति (रामनो).
(२) दक्षिण हिंदनो एक पर्वतः

नैमिषारण्य न० प्राचीन ऋषिओनुं निवासस्थान एवं एक वन अहीं सौतिए महाभारत संभळावेळुं. उत्तर प्रदेशमां गोमती नदीने डाबे किनारे आवेळुं.

नैषच पुं० निषध देशनो राजा – नळ. पतंजिल पुं० पाणिनिनां सूत्रो अने कात्यायनना वार्तिक उपरना महा-भाष्यनो कर्ता. चोगसूत्र पण तेमनां लखेलां कहेवाय छे. ई० स० पू० बीजा सैकामां थयेल मनाय छे. पचपुर न० भवभूति कविनुं जन्मस्थानः अभरावतीयी थोडे दूर चंडपुर (चांदा) नजीकः

पद्मावती स्त्री० माळवाना 'नरवार' (नलपुर)तरीके ओळखावाय छे. सिंधु नदीने कांठे. भवभूतिना 'मालती-माधव' नाटकनी भूमि.

पयोष्णी स्त्रो० विध्याद्विमांथी नीकळती एक नदी. नळ राजाए तेने कांठे यज्ञ करेलो. आजनी पूर्णा.

परशुराम पुं० भृगुवंशीय जमदिन ऋषिना पुत्र. विष्णुना अवतार. कार्तवीयें राजाना पुत्रीए तेमना पितानी वध करेलो, तेथी तेमणे २१ वार पृथ्वी नि:क्षत्रिय करेली. रामचेंद्रे तेमनुं तेज हरेलुं. पितानी आज्ञाथी माता रेणुकानो शिरच्छेद करेलो.

पराशर पुं विसिष्ठना पुत्र. तेमने सत्य-वतीयी व्यास पुत्र जन्मेला.

परोक्षित् पुं० अभिमन्युनो पुत्र; अर्जुननो पौत्रः गर्भावस्थामां हतो त्यारे श्रीकृष्णे तेने अश्वत्थामाना ब्रह्मास्त्रथी बचा-वेलो. तेनो पुत्र जनमेजय. तेना राज्यकाळथी कळियुग बेठेलो कहे-वाय छे. तक्षकनागना दंशथी मरण पामेलो. तेणे ते वखते 'भागवत'नी कथा सांभळेली.

परुष्णी (पुरुष्णी)स्त्री० पंजाबनी रावी नदी. वेदकालीन दाशराज्ञ युद्ध त्यां थयेलुं.

पंचजन पुं॰ एक असुर. शंखरूपधारी एवा तेने श्रीकृष्णे मारेलो.

पंचनद पुं॰ पंजाबदेश शतद्दु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा अने वितस्ता --ए पांच नदीओनो देश.

पंचवटी स्त्री० नाशिक पासे गोदावरीना उत्तर किनारे आवेलुं तीर्थस्थळ. त्यां वडनां मोटां पांच झाड हतां. पंचाल पुं० यमुना अने गंगानी वच्चेनो प्रदेश. उत्तरपंचाल (रोहिलखंड)नी राजधानी अहिच्छत्रा ते प्रदेश द्रोणा-चार्ये द्रुपद पासेथी लई लीधो हतो. दक्षिणपंचाल (अंतर्वेदी)नी राजधानी कांपिल्य. ए भाग द्रुपद पासे बाकी रह्यो.

पंपा स्त्री० बेलारी जिल्लामां आवेल एक प्रसिद्ध सरोवर तथा तुंगभद्राने मळती नदीतुं नाम. पंपा नदी ऋष्यमूक पर्वतमांथी नीकळे छे.

पाटलिपुत्र न० गंगा अने शोण नदीना संगम उपर आवेलुं मगधनुं राजधानीनुं शहेर. तेने कुमुमपुर पण कहेता. ई. स. पूर्वे ४८० मां ते वैशालिना बज्जीओ-नो सामनो करवा बंधायेलुं. मौर्यो अने गुप्तोनी समृद्ध राजधानी. छठ्ठा संकाथी तेनी पडती थवा लागी अने हचुएनत्सांगे तेने जोयुं त्यारे ते एक सामान्य गामडुं बनी गयुं हतुं.

पाणिनि पुं० व्याकरणना सूत्रो लखनार प्रसिद्ध मृनि.

पारसीक पु॰ ईरान देश, तथा तेनो वतनी. वायव्य सरहदनी पारना देशोना वतनी माटे पण ते शब्द वपराय छे.

पारिपात्र, पारियात्र पुं०(१) विष्य पर्वत-नो पश्चिम भाग भारतना पश्चिम किनारानो मोटो भाग रामायणमा तेने पश्चिम समुद्र उपर आवेल कह्यो छे. (२) सात कुलाचल पर्वतो-मानो एक

पार्वती स्त्री० हिमालय-मेनानी पुत्री रूपे जन्मेलां सती. कालिदासना 'कुमारसंभव'मां तेमना शिव साथेना लग्नी वात छे.

पांडु पुं० एक राजा; पांडवोनो पिता; धृतराष्ट्रनो नानो भाई. कुंती अने माद्री बे राणीओ. पांडच पु० भारतनी दक्षिणनी अणीए आवेलो देश. चोल्डेशनी दक्षिण पश्चिमे. मलय पर्वत अने ताम्रपणी नदी. अत्यारतुं तिन्नेवेल्ली. रामेश्वर-नो पवित्र टापु आ राज्यमां आवे.

पुरु पुं० चंद्रवंशनो छठ्ठो राजा.
ययातिनो नानो पुत्र,श्रमिष्ठाथी थयेलो.
कौरवो अने पांडवोनो पूर्वज. ययातिनो
वृद्धावस्थानो अदलोबदलो तेणे पोतानी
जुवानी साथे करेलो.

पुरुषपुर न० पेशावर. गांघारनी राजधानी. कनिष्क राजाए तेने राजधानी बनावेली.

पुरूरवस् पुं० बुधनो इलाथी थयेलो पुत्र. चंद्रवंशी राजाओनो मूळ पुरुष. तेना उर्वशी साथेना प्रेमनी कथा 'विक्रमो-वंशीय' नाटकमां छे.

पुरोचन पुं० दुर्योधननो म्लेच्छ मंत्री. तेणे पांडवोने बाळी नाखवा लाक्षागृह बांधेलुं. पांडवो ते गृहन सळगावी चाल्या गया त्यारे तेमा ते बळी मूऔर पुलस्त्य पुं० बह्यदेवना मानसपुत्र. तेमना पुत्र अगस्त्य.

पुल्टिंदेश पु० बुंदेलखंडनो पश्चिम प्रदेश अने सागर जिल्लो मळीने बनतो देश

पुंड्रदेश (पींड्र) पुं० एक देश: पूर्वे करतोया, पश्चिमे कौशिकी, उत्तरे हेमक्ट पर्वत अने दक्षिणे गंगा नदी. पृथु पुं० वेन राजानो प्रसिद्ध पुत्र. तेणे पृथ्वीने सपाट बनावी. पृथ्वीने गाय कल्पीने अनेक रत्न अने औषिओ दोही. तेना उपरथी 'पृथ्वी' ए नाम पड्यूं.

प्रतिष्ठान न० (१) पुरूरवानी राजधानी. प्रयागनी सामे. गंगायमुनाना संगम उपर. (२)औरंगाबाद – मराठवाडा-मां आवेलुं पैठण. गोदावरीने किनारे. शक संवत (ई. स. ७८) प्रवर्तावनार शालिवाहन त्यां जन्मेलो.

प्रयुक्त पुं० श्रीकृष्ण-रुविभणीनो पुत्र. शंकरे भदनने बाळी नाख्यो त्यार पछी ते प्रयुक्त तरीके जन्म्यो हतो. अनिरुद्धनो पिता.

प्रद्योत पुं० उज्जयिनीनो राजा तेनी पुत्रीने वत्सराज परण्यो.

प्रमीला स्त्री० स्त्रीराज्यनी स्वामिनी. अश्वमेध यज्ञ वखते अश्व पाछळ अर्जुन गयेलो त्यारे तेनी साथे लडेली. हार्या बाद अर्जुननी पत्नी थई.

प्रयोग न० गंगाँ यमुनाना संगम उपर-नुं प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र.

प्रस्नवण पुं० 'जनस्थान'मा आवेलो एक पर्वतः

प्रह्लाद पुं० हिरण्यकशिपु-कथाधुनो मोटो पुत्र. मोटो विष्णु भक्त. नरसिह अवतार तेने बचाववा थयेलो.

प्राज्योतिष न० नरकासुरना पुत्र भग-दत्तनुं नगर. कामरूपनुं प्राचीन नाम. प्लक्ष पुं० पृथ्वीना सात हीपोमांना एक. फल्गु स्त्री० एक नदी. तेना कांठे गया क्षेत्र आवेलुं छे.

बक पुं० एक असुर. जटासुरनो पुत्र. एकचका नगरी पासेना वनमां रहेनारो. तेनो भीमे वध कर्यो हतो.

बदरिकाश्रम, बदरी हिमालयनी पर्वत माळामां एक शिखर त्यां नर-नारा-यणनुं मंदिर छे – अलकनंदाना पश्चिम किमारे.

बभुवाहन पुं० अर्जुन अने चित्रांगदानो पुत्र. मणिपुरनो राजा. अश्वमेघ वखते अर्जुन अश्व पाछळ त्यां गयेलो; त्यारे बभ्रुवाहन वंदन करवा आब्यो. तेने अर्जुने टाणो मार्यो. पछी लडाई धई; तेमां अर्जुन ठार थयो. अर्जुनपत्नी उलुपी पछी शेषनाग पासेयी संजी- वनमणि रुई आवी अने अर्जुनने सजीवन कर्यो.

बस्त, बरुभद्ध, बरुराम पुं० वसुदेवना
पुत्र बळराम. रोहिणीना पुत्र श्रीकृष्णना मोटा भाई. शेषना अवतार मनाय
छे. गदायुद्धमां निष्णात. भीम अने
दुर्योधन तेमनी पासे गदायुद्ध शीखेला.
हळ-मुसळ तेमनुं शस्त्र गणाय छे.

बिल पुं० प्रहलादना पुत्र विरोचननो पुत्रः बाणासुरनो पिताः विष्णुए वामन अवतार धारण करी तेने पाताळमां दबाव्योः चिरंजीवी गणाय छे.

बाण पुं० (१) 'बाणासुर'. बिलराजानो पुत्र. तेनो कन्या उषा (ओखा). अनिरुद्ध तेने परणेलो. (२) बाणभट्ट; 'हर्षचरित', 'कादंबरी' इ. नो कर्ता. कान्यकुब्जनो हर्षवर्धन राजा तेनो मित्र - आश्रयदाता. ह्युएतत्सांगे (ई. स. ६२९—६४५) तेना राज्यकाळनुं वर्णन कर्युं छे; एटले बाण कवि ७ मा सैकाना उत्तरार्थमां थयो होय.

बाल्होक, बाहोक पुं० जुओ 'वाह्लिक'
बाहुक पुं० (१) सगर राजानो पिता.
(२) नळराजा ऋतुपणंनो सारिश थयो ते वलते तेणे धारण करेलुं नाम.
बिल्हण पुं० महाकाव्य 'विकमाकदेव-चरित', 'चौरपंचाशिका' 'विल्हणचरित' अने 'कर्णसुंदरी' नो कर्ता. काश्मीरी बाह्मण 'कर्णसुंदरी' ए अणहिलवाडना राजा कर्णदेव (ई. स. १०६४-७४) ना विद्याधर-कुमारी कर्णसुंदरी साथेना प्रेमलगनी नाटिका छे. ते ११ मा सैकाना उत्तरार्थमां थई गयो.

बुद्ध पुं० बौद्ध मतना प्रवर्तक. शाक्यसिंह नामे पण क्षोळखाय छे. 'सिद्धार्थ कुमार गृहस्थाश्वमनुं नाम. कपिक- वस्तुमां जन्म. विष्णुनो नवमो अवतार पण गणाय छे.

बुध पुं० पुरूरवानो पिता; चंद्रनो पुत्र. बृहस्पति पुं० देवोना आचार्य. तेमनी पत्नी तारानुं सोम (चंद्र) हरण करी गयो. ब्रह्माए पाछी अपावी; पछी तेने पुत्र बुध जन्म्यो जेने तेणे चंद्रनो पुत्र कह्यो. ते बुध पछी चंद्रवंशी राजाओना वंशनी स्थापक बन्यो.

बोपदेव पुं० 'मुग्धबोध', 'कविकल्पद्रम' आदिना कर्ताः हेमाद्रिनो समकालीनः देवगिरिना यादव राजाओना दर-बारमा जता आवता हताः १३ मा सैकाना उत्तरार्धमां थई गयाः

बह्मन् पुं० हिंदु त्रिमूर्तिना प्रथम; स्रष्टा— विधाता कहेवाय छे. विष्णुना नाभि-कमळमांथी प्रगट थयेला. पुत्री सरस्वती. स्वयंभू प्रथम मरीचिने उत्पन्न कर्या. तेमनी पछी कश्यप — विवस्वत् — मनु ए कमे मानव सृष्टि उत्पन्न थई.

बहापुरी स्त्री० काशीक्षेत्र.

बह्मावर्त पु० (१) सरस्वती अने दृषद्वती नदी वच्चेनो देश. (२) कानपुर नजीक गंगा किनारे आवेलुं बिथुर (तीर्थं). भगदत्त पु० प्राग्ज्योतिष देशनो राजा. नरकासुरनो पुत्र. कौरवपक्षीय. गज-युद्धमां कुशळ.

भगोरय पुं० सगरनो प्रपौत्र. तेणे तप करी गंगाने स्वर्गमांथी पृथ्वी उपर आणी, जेथी कपिल मुनिना शापयी भस्मीभूत थयेला सगरपुत्रोनो उद्घार थाय.

भट्टनारायण पुं० 'वेणीसंहारनो 'कर्ता. ७ मा सैकाना पूर्वार्धमा थई गयो. भट्टि पुं० 'भट्टिकाव्य' नो कर्ता. ई. स. ५०० थी ६०० वच्चे थई गयो. भट्टोजीदीक्षित पुं० 'सिद्धांतकौमदी' (पाणिनिनां व्याकरण सूत्रोनी उपर) लखनार. १७ मा सैकामां थई गया.

भरत पुं० ऋषभदेवनो मोटो पुत्र.
तेना उपरथी अजनाभवर्षनुं भरतवर्ष नाम पड्युं. ते ज पछी जडभरत नामे ओळखायो. (२) दशरथ-कैंकेयीनो पुत्र. रामनो भक्त. (३) पुरुवंशीय दुष्यंत अने शकुंतलानो पुत्र. ते चक्रवर्ती थयो हतो. (४) नाट्य अने संगीत शास्त्रना प्रवर्तक.

भरतवर्ष (भारतवर्ष) पुं० हिंदुस्तान दुष्यंत-शकुंतलाना पुत्र भरत चक्रवर्ती उपरथी. पहेलां तेनुं नाम हिमाह्मवर्ष हतुं.

भरद्वाज पुं० एक ऋषि. द्रोणाचार्यना पिताः

भरुकच्छ पुं० भरूच. यज्ञ दखते बलि-राजाने वामने आ स्थाने पाताळमां दबावेलो.

भतृंहरि पुं० (१) शृंगार-नीति-वैराग्य शतकोनो कर्ता. एमनुं नाम दंतकथा-ओमां अटवायेलु छे. केटलाक तेमने ई० स० ना पहेला के बीजा सैकामां मूके छे; केटलाक छठ्ठा के सातमामां. (२) व्याकरणशास्त्री; 'वाक्यपदीय'-नौ कर्ता. बौद्ध हतो; ई० स० ६५१ मां गुजरी गयो.

भवभूति पुं० 'महावीर चरित', 'मालती-माधव' अने 'उत्तररामचरित 'नो कर्ताः विदर्भनो वतनीः कान्यकुब्जना यशोवर्माना [जेने काश्मीरना ललिता-वित्ये (ई. स. ६९३—७२९)हरावेलो] राजदरबारमां अवरजवरः तेथी ई० स० ७ मा सैकाना अतमां थयेलो मनायः

भागीरथी स्त्री० गंगा नदी; भगीरथ राजा स्वर्गमांथी लावेला तेथी.

भारवि पुं० 'किरातार्जुनीय' महाकाव्य-

नो कर्ता. अर्थगौरववाळी शैली माटे जाणीतो. ७मा सैकाना प्रारंभमां थई गयो.

भास पुं० 'स्वज्जवासवदत्त', 'प्रतिज्ञायौगधरायण' वगेरे नाटकोनो कर्ता.
ई. स. १९१२ पहेलां मात्र कालिदास अने बाण किव मारफते करायेली
प्रशंसा ज जाणीती हती; १९१२-१५
वच्चे तेनां १३ नाटको केरलमांथी
जडी आव्यां. ई० स० पूर्वे ५ मा
सैकामां थई गयेलो मनाय छे.

भास्कराचार्य पु० 'सिद्धांतशिरोमणि' नामे ज्योतिष तथा गणित विषेना ग्रंथनो कर्ता. (तेना ४ विभाग ते — लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित अने गोलाध्याय.) १२ मा सैकानो.

भीम पुं० (१) विदर्भ देशनो राजा; दमयंतीनो पिता. (२) पांडव भीमसेन.
भीमसेन पुं० पांडवो पैकी बीजो.
कुंतीना त्रण पुत्रोमां वचलो होवाथी
'मध्यम' पण कहेवाय छे. गदायुद्धमां
कुशळ. दुःशासने द्रौपदीनुं अपमान कर्य
हतुं तेथीं तेना लोहीथी द्रौपदीनी
छूटी वेणी बांधवानी प्रतिज्ञा लीधेली.
'वेणीसंहार' नाटकमां ते वस्तु छे.
हिडिंबा राक्षसीथी घटोतकुच पुत्र.

भीष्म पुं० शंतनु राजाना गंगाथी थयेला पुत्रः शंतनुने पछी सत्यवती (मत्स्यगंधा) साथे परणवुं हतुं तेथी सत्यवतीना पालक पितानी मागणीथी, सत्यवतीना पुत्रने गादी मळे ते सार, आजन्म ब्रह्मचारी रहेवानी प्रतिज्ञा तेमणे लीधी हती. पाडव-कौरवोना 'पिता-मह' होवाथी भीष्मपितामह नामे ओळखाय छे.

भीष्मक पुं० विदर्भ देशनो राजा; रुक्मिणीनो पिता.

भृगु पुं० एक ब्रह्मघि. ब्रह्माना मानस-पुत्रोमांना एक जमदन्नि –

परशुराम इ० एमना वंशमां थया. ब्रह्मा-शंकर-विष्णु ए त्रणमांथी कोण श्रेष्ठ एनी परीक्षा करवा गया. अह्माए तेमनो बरोबर सत्कार न कर्यो, तेथी तेमने शाप आप्यो के, तमारुं पूजन नहि थाय;शंकर पत्नी साथे होई तेमनो सत्कार करवा न आव्या एटले तेमने शाप आप्यो के तमे लिंग-रूपे पूजाशो. विष्णु सूतेला हता तेमने छातीमां लात मारी जगाड्या, तो ते ऊलटा 'तमने वाग्युं तो नथी?' –कहीने तेमनी सारवार करवा लाग्याः तेथी देवो-मनुष्योमां तमारु पूजन थशे, एवो आशीर्वाद तेमने आप्यो. भृगुकच्छ, भृगुक्षेत्र जुओ 'भरकच्छ' भोज पुं० (१) विदर्भ देशनो राजा अज राजानो ससरो (२)कुंतिभोज राजा; यादव; कुंतीने दत्तक लेनारो (३) माळवानो (धारा नगरीनो) एक राजाः संस्कृत विद्यानो पुरस्कर्ताः ११ मा सैकाना प्रारंभमां थयोः 'सरस्वतीकंठाभरण' इ० नो *क*र्ताः भोजकट न० विदर्भनी बीजी राजधानी. रुक्मिणीना भाई रुनिमए स्थापी. तेने 'भोजपुर ' पण कहेछे. भोज राजाओ

ं विदर्भ उपर पण राज्य करता हताः **भोजपति** पुं० कंसः

भोजपाल भोपाल. धारना भोजराजे बंधाबेला बंध उपरथी.

भोजपुर न० (१) जुओ 'भोजकट'. (२) मथुरा;भोजराजाओनी प्राचीन राजधानीः

मगध पुं० दक्षिण बिहार. तेनी प्राचीन राजधानी. 'गिरिव्रज' (राजगृह) -पांच टेकरीओनी अंदर वसेटी (विपुलगिरि, रत्नागिरि, उदयगिरि, शोणगिरि अने वैभार). तेनी बीजी राजधानी ते पाटलिपुत्र. मगधनुं बीजुंनाम 'कीकट' पण छे. मगध एक वस्त गंगानी दक्षिणे पण विस्तरेलो हतो. सिंगभूम सुधी.

मणिपुर न० बश्चवाहनना राज्य कलिंग-नी राजधानी. सरोवरना मुख आगळ बंदर.

मत्स्यदेश पुं० विराट राजानो देश. घोल-पुरनी पश्चिमे. पांडवो तेमां रोहितक अने श्रसेनोना देशमां थईने यमुनाना किनारेथी दाखल थया हता. वैराट तेनी राजधानी (आजनं बैरात. जैपुरथी ४० माईल उत्तरे).

मद्र पु० पंजाबनो एक देश, रावी अने चिनाबनी वच्चे, तेनी राजधानी शाकल,

मधु पुं० (१) एक राक्षस.तेने विष्णुए मारेलो तेथी तेमनुं नाम 'मधुसूदन'. (२) यदुवंशीय एक प्रसिद्ध कुळ. तेथी श्रीकृष्णनुं नाम 'मधुपति'.

मध्पुर न० मथुरा.

मधुवन न० यमुनाना तीरे आवेलुं एक वन तेमां मधु नामनो राक्षस रहेतो हतो. आ वननो ज पछी शूरसेन देश थयो. शत्रुघ्ने त्यां मथुरा स्थापी.

मध्यदेश पुं० कुरुक्षेत्रमां सरस्वती, अल्हाबाद, हिमालय अने विष्य बच्चेनो प्रदेश पंचाल, कुरु, मस्स्य, यौद्धेय, पटच्छर, कुन्ति अने श्रूसेन —आ देशोनो समावेश मध्यदेशमां थतो.

मध्य पुं० एक वैष्णव पंथना प्रवर्तक आचार्य. ब्रह्मसूत्र उपर भाष्य रच्युं छे. मनु पुं० प्रजापित. स्वायंभुव. मनुष्यो- भानवोनो पिता. दरेक कल्पमां १४ मनु थाय. प्रथम मनु ते स्वायंभुव मनु. सातमा मनु वैवस्वत मनु (सूर्यंथी जन्मेला) कहेवाय छे. ते अत्यारनां प्राणीओना उत्पादक कहेवाय छे. विष्णुए मत्स्यावतार लईने तेमने

पूरमाथी बचावेला. ते अयोध्याना सूर्यवंशी राजाओना स्थापक छे. दरेक मनुनो समय 'मन्वंतर' कहेवाय छे. तेवा १४ मन्वंतर होय छे. दरेक मन्वंतरनो समय ४,३२०,००० मानव-वर्षनो गणाय अर्थात् ब्रह्माना दिवसनो १४ भो माग.

मम्मट पुं० 'काव्यप्रकाश'नो कर्ताः काश्मीरनो दतनी पण दनारसमां शिक्षण लीवेलुं ११मा सैकामां थयेलोः

मय, मयामुर पुं० असुरोनो शिल्पी. खांडववन बाळती बखते तेने अर्जुने बचावी लीधेलो; तेथी तेणे पांडवोने राजसभा बांधी आपेली.

मयूर पुं० 'सूर्यकातक' नो कर्ता. आणमो निकटनो संबंधी अने बंने हर्षनाः दरबारमां साथे.

मरीचि पुं० कश्यपना पिता; दश प्रजापति पैकी एक.

मरु पुं०, मरुस्थली स्त्री० मारवाड. सिंधनी पूर्वतुं महारण आखा रज-पूताना माटे पण ए नाम वपराय छे. मलज, मलद पुं० अयोध्या अने मिथिला ए बेनी वच्चेनो देश शहाबाद जिल्ला-नो पूर्व भाग ताटका राक्षसी त्यां

रहेती हती.

मलय पुं० भारतनी सात मुख्य पर्वत-माळाओमांनी एक. घणुंबर तेने मैसूरथी दक्षिणे लंबाती अने त्रावण-कोरनी पूर्व सरहद बांधती घाटनी पर्वतमाळा गणवामां आवे छे. त्यां चंदननां झाड खूब थाय छे. भवभूति एम कहे छे के, तेनी आसपास कावेरी नदी वींटळाती. ('कावेरीवलियतम्'.) कालिदास मलय अने दर्दुर ए बे पर्वतोने दक्षिण भूमिना बे स्तनो कहे छे.

मल्लदेश पुं० मुळतान जिल्लो, तेनी राजधानी मुळतान मिल्लिनाथ पुं० कालिदास, माघ, भारिव वगेरेना ग्रंथोनी जाणीती टीका लखनार, आधना कोलावल कुळनो तेलुगु बाह्मण, १४ मा सैकामा थयानो अंदाज छे.

महाकाल पुं० उज्जयिनीमां आवेलुं शंकरनुं स्थान; बार ज्योतिर्हिंगमांनुं एक.

महाकोसल पुं० उत्तरे अमरकंटक आग-ळना नर्मदाना मूळ-स्थानथी मांडीने दक्षिणे महानदी सुधीनो, अने पश्चिमे वैनगंगाथी मांडीने पूर्वे हरडा अने जोंक नदीओ सुधीनो प्रदेश.

भहानदी स्त्री० बंगाळना उपसागरने मळती एक नदी.

महेंद्र पुं० भारतनी सात मुख्य पर्वत-माळाओमांनी एक; महानदी अने गोदावरी वच्चेमी पूर्व तरफनी आखी घाटमाळा. गंजमने महानदीनी खीणथी जुदी पाडनार 'महेंद्रमाल'. रामे तेजोहरण कर्या पछी परशुराम त्यां चाल्या गया हता.

महोदय न० कनोज (कान्यकुब्ज) . ७ मा सैकामां ते घणुं प्रसिद्ध स्थान हतुं. रामायणमां तेनो उल्लेख छे.

मंदाकिनी स्त्री० चित्रकूट नजीकनी एक नदी.

माकंदी स्त्री० द्रुपदे पांचाल देशमां गंगाना किनारे स्थापेली नगरी.

साघ पुं० 'शिशुपालवध' नो कर्ता.
उपमा, अर्थगौरव अने पदलालित्यनो
स्वामी गणाय छे. ७ मा सैकाना
पूर्वार्धमां थयो गणाय छे.

मातंग पुं० आसामना कामरूपनी दक्षिण-पूर्वे आवेलो प्रदेश हीरानी खाणो माटे प्रसिद्ध.

माही स्त्री ० शल्य राजानी बहेन; पांडु-नी बीजी पत्नी; नकुल-सहदेवनी माता. भाषव पुं० (१) मघु यादवनो वशज (सात्यिक तथा श्रीकृष्ण माटे वपराय छे). (२) माधवाचार्य; प्रस्थात ऋग्वेद भाष्यकार सायणाचार्यना भाई तेमनुं 'विद्यारण्य' नाम पण प्रसिद्ध छे. विजयानगरना हिंदु राज्यनी स्थापना तेमणे करेली.

भानस न० हाटक (लडाख) प्रदेशमां आवेल सरोवर तेनी उत्तरे उत्तरकुर्-नो हरिवर्ष आवेलो गणाय छे. किन्नरोना धाम तरीके प्राचीन काळ-मां जाणीतुं; वर्षा ऋतु आवता हंसो त्यां चाल्या जता कहेवाय छे.

भाया स्त्री० गौतमबुद्धनी माता.

माया, मायापुरी स्त्री० हरद्वार अने कनखल. अहीं दक्षयज्ञ थयेलो, जेमां सतीए पोतानी जातने होमी दीधी हती. मायावती स्त्री० प्रद्युम्ननी पत्नी. पूर्वजन्मनी रति.

मारीच पुं० एक राक्षसः सुंद अने ताटकानो पुत्रः सुवर्णमृगनुं रूप धारण करी, सीताहरणमां तेणे रावणने मदद करेली.

मारुति पुं० हनुमान; अंजना वानरीने वायु (मरुत्) थी थयेल पुत्र. रामना परम भक्त. आजन्म ब्रह्मचारी.

मालव पु० (१) ७ मा — ८मा सैका पहेलां आ प्रदेश अवंती नामे ओळखातो; तेनी राजधानी उज्जियनी. १० मा सैकामां तेनी राजधानी धारानगर. (२) मल्लोनो देश; तेनी राजधानी मुलतान.

मालिनी स्त्री० (१) चंपानगरी.(२) पश्चिम रोहिलखंडनी एक नानी नदी. आने कांठे कण्वनो आश्रम हतो.

माल्यवत् पुं० एक पर्वतः. (मध्य एशि-यामां?)(२) किर्ष्किधा नजीक एक नानो पर्वतः वालिना वध पछी राम- लक्ष्मण त्यां वर्षाकाळ पूरी थता सुधी रहेला.

माहिषक पुं० नर्मदा किनारानो एक देश तेनी राजधानी माहिष्मती.

माहिष्मती स्त्री० नर्मदा किनारे आवेलुं एक शहेर; आजनुं मंडला; कार्त-वीर्यनी नगरी. (२) किष्किधानी दक्षिणे आवेलुं एक शहेर.

मिथिला स्त्री० विदेह देशनी राजधानी. (जुओ 'विदेह'.) दरभंगा जिल्लानुं जनकपुर.

मुर पुं० नरकासुरना पक्षनो एक राक्षस. तेने श्रीकृष्णे मारेलो तेथी तेमनुं नाम 'मुरारि' प्रसिद्ध छे.

मुरारि पुं॰ रामायणनी वार्ता उपरयी
७ अंकना नाटक 'अनर्घराघव'नो कर्ता.
८ मा सैकाना अंतमां के ९ मानी शरू-आतमां थई गयो.

मेकल पुं० अमरकंटक पर्वतः नर्मदा त्यांथी नीकळती होवाथी तेनुं नाम 'मेकलकन्यका' छे. विध्य पर्वतमाळानी एक भागः

मेघनाद पुं० रावणपुत्र इंद्रजित्. मेनका स्त्री० एक अप्सरा तेणे विश्वा-मित्रना तपनो भंग कर्यों; ते बंनेनी पुत्री ते शक्तला.

मेना स्त्री० हिमालयनी पत्नी.

मेर पुं० सुवर्ण पर्वत मनाय छे. सात-द्वीपोनी मध्यमां. सूर्य तेनी प्रदक्षिणा करतो मनाय छे.

मैनाक पुं० एक पर्वत. हिमालय-मेनानी पुत्र. इंद्रे बीजा पर्वतोनी पांखो तोडी नाखी त्यारे ते दक्षिण समुद्रमां छुपाई गयो एटले तेनी पांखो रही गई छे.

मोहिनो स्त्री० समुद्रमंथन वखते नीक-ळेला अमृतने असुरोना कबजामांथी काढी लावना विष्णुए धरेलो स्त्री-रूप अवतार. यज्ञपुर न० ओरिसानुं जैपुर. वैतरणी नदीने कांठे. छठ्ठा सैकामां स्थपायेलुं. यहु पुं० ययाति अने देवयानीनो मोटो पुत्र. यादवोनो पूर्वज.

यमात पुं० नहुषनो पुत्र. शुक्राचार्यनी
पुत्री देवयानी तथा असुरराजनी पुत्री
शिमष्ठा ए बे राणीओ. देवयानीने
यदु अने तुर्वसु ए बे पुत्र; शिमष्ठाने
दुह्यु, अनु अने पुरु शिमष्ठा देवयानीनी दासी तरीके आवेली पण
ययातिए गृप्त रीते तेने पत्नी बनावी
तेथी शुक्राचार्ये तेने वृद्धावस्था प्राप्त
थवानो शाप आप्यो. पुरुए ए वृद्धावस्था
स्वीकारीने पिताने फरी जुवानी प्राप्त
करावी.

यवद्वीप पुं० जावा. तेने 'पूर्वकलिंग' पण कहेता.

याज्ञयत्वय पुं० एक ब्रह्मीय; वैशंपा-यनना शिष्यः तेमने मैत्रेयी अने कात्यायनी बे स्त्रीओ हती. वाजसनी शाखाना प्रवर्तकः मोटा ब्रह्मनिष्ठः देवरात – जनकने ब्रह्मविद्या आपेलीः

यामुनगिरि पुं० (१) हिमालयनुं शिखरं. त्यां पांडवो थोडो समय रहेला. अजगररूप धारी नहुष त्यां भीमने गळी गयेलो, त्यारे धर्म तेने छोडावेलो. (२)गंगा तथा यमुना वच्चेनो एक पर्वत.

यास्क पुं० जोथा वेदांग 'निघंटु' जपरनी टीका 'निहक्त'नो कर्ता. वैदिक शब्दो अने मंत्रोना अर्थ सम-जावे छे. भारतनो अग्रणी भाषाशास्त्री कहेवाय. ई. स. पूर्वे ८मा के ७मा सैकामां थई गयो.

युगंघर पुं० कुरक्षेत्र नजीक आवेलो यमुनाना पश्चिम किनारा उपरनो प्रदेश.

युधाजित् पुं० केकय देशना अश्वपति

राजानो पुत्र; कैंकेयीनो भाई. भरतनो मामो.

युधिष्ठिर पुं० 'धर्मराज 'नाम पण छे. पांच पांडवोसां मोटा.

युगुस्तु पुं० धृतराष्ट्रने वंश्य दासीथी थयेलो पुत्र. महाभारतना युद्ध वखते पांडवोना पक्षमां हतो.

युयुधान पुं० सात्यिकः; यादव योद्धोः; पांडवोना पक्षनोः

यौषेय पुं० वितस्ता (झेलम) अने सिंधु वच्चेनो देश.

रघु पुँ० सूर्यवंशीय दिलींपराजानो पुत्र. अजनो पिता; दशरथनो दादो. ते एटलो बघो प्रख्यात थयो के, तेना उपरथी रघुवंश नाम ऊभुं थयुं.

रघुनंदन, रघुनाथ पुं० रघुवंशमां उत्पन्न थयेल श्रीरामचंद्र; रघुना कुलमां सौथी श्रेष्ठ होवाथी.

रसातल न० सोत पातालमांनुं एक. पश्चिम तार्तरी – हूणोना देश तरीके ओळखाय छे.

रंतिदेव पुं० पुरुवंशीय राजा. तेगे गोसव नामनो यज्ञ करेलो. तेमां एटलां बधां पशु वधेरायेलां के तेमनां चामडा-मांथी चर्मण्वती नदी उत्पन्न थई एम कहेवाय छे.

राजगृह न० (१) राजगिर. मगधनी प्राचीन राजधानी. (२) पंजाबमां बियास नदीना उत्तर किनारे आवेल राजगिरि. केकय राजाओनी राजधानी.

राजशेखर पुं० 'बालरामायण', 'बाल-भारत', 'काव्यमीमांसा' आदिनो कर्ता १०मा सैकाना पूर्वीर्धमां यई गयेलो.

राढ जुओ 'सृह्य'.

राधा स्त्री० कर्णनी पालक माता. अधिरथ सारथिनी पत्नी. तेना उपरथी कर्णनुं नाम 'राधेय'पण छे. कर्णनुं नाम 'सूतपुत्र'पण तेथी ज पड्युं छे. राम पुं० (१) परशुराम. (२) दशरथ-कौशल्याना पुत्र रामचंद्र. (३) श्री-कृष्णना मोटाभाई वखराम.

रामगिरि पुं० नागपुरती २४ माईल उत्तरे आवेल रामटक (२) अथवा छोटानागपुरना सिरगुजामा आवेल रामगढ कालिदास मिघदूत में बातने रामगिरिथी शरू करे छे तेने शैवल गिरि पण कहे छे.

रावण पुं० पुलस्त्यना पुत्र विश्रवा अने कैकसीनो पुत्र; लंकानो राजाः मयासुरनी पुत्री मंदोदरी तेनी स्त्री-कुबेर पासेथी पुष्पक विमान पडावेलुं तेणे करेलुं सीताहरण वगेरे कथा 'रामायण'नुं वस्तु छे.

राहु पुं० विप्रचित्ति अने सिहिंकानो पुत्र. दानव. अमृत देवोने वहेंचातुं हतुं त्यारे गुप्त वेशे देवोमां पेसी अमृत पीवा लागेलो. पण सूर्य-चंद्र तेने जोई गया. तेथी विष्णुए तेनुं गळुं कापी नांख्युं. गळा सुधी अमृत गयेलुं, तेथी तेनो तेटलो भाग अमर थयो. ते सूर्यचंद्रने वेर राखीने ग्रसे छे.

रिक्मणी स्त्री० विदर्भ देशना राजा भीष्मकनी पुत्री श्रीकृष्णनी पत्नी. तेनो विवाह प्रथम शिशुपाळ वेरे ठरावेलो. तेथी श्रीकृष्ण साथे शिशु-पाळने वेर थयेलुं.

रुद्वट पुं० 'काव्यालंकार', 'शृंगार-तिलक 'आदिनो कर्ताः ९मा सैकामा थई गयेलोः

रेणुका स्त्री० परशुरामनी माता; जमदिग्निनी पत्नी चित्ररथ गंधर्व प्रत्ये आसक्त थवाथी जमदिग्निए तेनो वध करवा पुत्रोने हुकम कर्यो परशु-रामे पितानी आज्ञानुं पालन करी तेनो वध कर्यो हतो.

रेवती स्त्री० बळरामनी पत्नी.

रेवा स्त्री० नर्मदा नदी.

रैवत, रैवतक पुं० गिरनार पर्वत.

रोहिणी स्त्री० वसुदेवनी पत्नी; बळ-रामनी माता.

रोहित पुं० हरिश्चंद्र-तारामतीनो पुत्र. लक्ष्मण पुं० (१) दशरथ-मुमित्रानो पुत्र. राम साथे वनवास गयेलो. रावणना पुत्र इंद्रजितनो वध करेलो. (२) दुर्योधननो पुत्र, अभिमन्युए तेने महाभारतना युद्ध वखते हणेलो.

रुक्ष्मणा स्त्री० दुर्योघननी कन्या. कृष्ण≁ पुत्र सांब तेने हरी गयेलो.

रुक्मणावती स्त्री० (१) गौड देशनी राजधानी, गंगप्ते डाबे किनारे, (२) अयोध्या प्रांतनुं लखनौ,

स्व पु॰ राम-सीतानी पुत्र कुशनी भाई तेनी राजधानी श्रावस्ती

लंका स्त्री० रावणनी राजधानी, कुबेर पासेथी रावणे जीती लीधेली.

लाह पुं० मही अने तापी नदीनो वच्चेनो दक्षिण-गुजरात. खानदेशनो समावेश तेमां थतोः सुरत, भरूच, खेडा अने वडोदरानो केटलोक भाग तेमां आवे.

स्रोपामुद्रा स्त्री० अगस्त्य मुनिनी पत्नी. विदर्भराजनी कन्या

लोमपाद पुं० चंद्रवंशीय बृहद्रथनी पुत्र. तेना राज्यमा बार वर्ष अनावृष्टि थतां ऋष्यशृंग मुनिने पोताना राज्यमां लाबी बृष्टि करावेली. अंग देशनो राजा; दशरथनो मित्र.

लोमश पुं० एक ऋषि. वनवास दर-म्यान पांडवो साथे तीर्थयात्रा करेली अने तेमने अनेक इतिहास संभळावेला. लीहित्य पुं० ब्रह्मपुत्रा नदी.

अज्य पुं० श्रीकृष्णेना पौत्र अनिरुद्धनो पुत्र. सर्व यादवोनो संहार थता ए ज बाकी रह्यो हतो. तेने अर्जुन इंद्रप्रस्थ सर्व गयो.

वड्या स्त्री० विश्वकर्मानी पुत्री संज्ञा; सूर्यनी पत्नीः वडवा –घोडीरूपे फरती हती तेवसते अश्वरूपधारी सूर्यथी तेने अश्विनीकुमारो रूपी वे पुत्रो जन्म्या हता.

बत्स पुं० प्रयागनी पश्चिमे आवेली एक देश. कौशांबी तेनी राजधानी. उदयन तेनो राजा.

वत्सला स्त्री० बळरामनी पुत्री, अभिमन्युनी पत्नी.

वररुचि पुँ० किय अने वैयाकरणी. विक्रम राजानां नव रत्नोमां एक गणाय छे. केटलाक तेने पाणिनिनां सूत्रो उपर वार्तिक लखनार कात्यायन गणे छे.

वराहिमहिर पुं० प्रसिद्ध ज्योतिषशस्त्री; 'बृहत्संहिता'—नो कर्ताः परंपरा तेने विकमादित्य राजानां नव रत्नोमा एक गणावे छें. ते ई. स. ना छट्टाः सैकामां थई गयो होय तेम लागे हेः वर्षमान पुं० (१) बंगाळनुं अत्यारनुं बर्दवानः (२) सौराष्ट्रनुं अत्यारनुं बर्दवामः (३) 'कथासरित्सागर'मां जणाव्या प्रमाणे अल्हाबाद अने बनारस बच्चे आवेलुं.

वलभी स्त्री० सीराष्ट्र-गुजरातनुं बंदर अने राजधानीनुं शहेर. ७मा संकामां पश्चिम भारतमां ते बौद्ध विद्यापीठनुं मथक हतुं.

बिसष्ठ पुं॰ एक प्रख्यात ब्रह्मर्थिः मित्रा-वरुणना पुत्रः तेमने त्यां कामधेन् हतीः ते अंगे विश्वामित्र साथे वेर थयेलुं. सूर्यंवंशी राजाओना कुलगुरुः बसुदेव पुं॰ यदुवंशीय शूर राजाना

पुत्र, श्रीकृष्ण अने बळरामना पिताः वंग पुं० पूर्वबंगाळ. ('गौड' नाम उत्तर बंगाळनुं छे.) तेने 'समतत 'पण कहे छे. एक वखत त्रिपुरा अने गारो टेकरीओनो पण तेमां समावेश थतो वाकाटक पुं० बंगाळना असात अने श्रीशैंत्य पर्वत (दक्षिण हैदराबाद) वच्चेनो देश. आना राजाओ २५०-५२५ दरम्यान विदर्भ उपर राज्य करता हता.

बास्स्यायन पुं० 'कामसूत्र'नो कर्ताः ई. स. पूर्वे २ जा सैकामां थई गयेलो केटलाक माने छे, तो केटलाक तेनो समय ई. स.ना ४था सैकामां मुके छे.

वामन पुं० विष्णुनो पांचमो अवतार. बिलराजानो निग्रह करवा माटे ठींगणुं रूप घरेलुं. त्रण पगलांमा त्रिलोक व्यापी लई, बिलने पाताळमां दबावेलो.

वामनभट्ट बाण पुं० 'पार्वतीपरिणय', 'नलाम्युदय' वगेरेना कर्ताः बाण कवि जेवी कैली होवाथी 'अभिनव बाण' तरीके ओळखाय छे. त्रिलिंग देशना वेन भूपालना दरबारनो कवि. १५मा सैकाना पूर्वार्वमां थई गयो. बारणावत न० हस्तिनापुर नजीक एक स्थळ.

वाराणसी स्त्री० बनारसः वारणा अने असि नदीना संगम उपर छे. पण पहेलां गंगा अने गोमतीना संगम उपर हतु. काशी देशनी राजधानी.

बालि पुं॰ मोटो वानर राजा. सुग्रीवनो मोटो भाई. रामे तेनो वध करी, तेनी पत्नी ताराने सुग्रीव साथे परणावी.

वाल्मीकि पुं॰ आदि कवि. रामायणना कर्ता. नारदे तेमने भिनतने मार्गे वाळेला. सीतानो परित्याग कर्यो त्यारे ते आ ऋषिना आश्रमे रहेलां अने तेमणे तेमना वे पुत्रो लवकुशने उछेरेला अने तेमने पछी रामायण शीखवेलुं.

वासवदत्ताः स्त्री० अनेक लोककथाओ तेनी आसपास गूंथाई छे. 'रत्नावली' मां तेने प्रद्योतनी पुत्री कही छ; 'कथासरित्सागर'मां तेने उज्जिप-नीना चडमहासेननी पुत्री कही छे. वत्सराज उदयन तेनुं हरण करी गयेलो. भवभूति एम जणावे छे के तेनो संजय राजा साथे विवाह थयेलो पण ते पोते उदयनने वरेली. सुबंधनी वासवदत्ता वळी जुदी ज कथानी नायिका छे.

वासुकि पुं० प्रसिद्ध सर्पराज – नागः कश्यपनो पुत्र.

बाह्लिक, बाह्लीक अंत्यारनुं बल्ख-रामायणमां जेणाव्या प्रमाणे आ देश अयोध्या अने केंकयनी बच्चे आवेली. तेनुं बीजुं नाम 'बाल्हीक' पण छे. 'त्रिकांडशेष' ना जेणाव्या प्रमाणे बाह्लिक अने त्रिगर्त एक ज देशनां नाम छे.

विचित्रवीयं पुं० भीष्मनो ओरमान भाई; धृतराष्ट्र-पांडुनो पिताः तेना मृत्यु पछी तेनी पत्नी अंविका अने अंबालिकाथी व्यासजीए ए बे पुत्रो उत्पन्न करेलाः

वितस्ता स्त्री० जेलम नदी.

विदर्भ पुं० अत्यारनुं वराड. प्राचीन समयनुं महान राज्य. कृष्णाना किना-राथी मांडीने नर्मदाना किनारा सुधीनुं कुंडिनपुर प्राचीन राजधानी. वरदा नदी तेना बे भाग पाडती. उत्तरना भागनी राजधानी अमरावती; अने दक्षिणनी प्रतिष्ठान. पुराणीमां आवता भोज राजाओ विदर्भना हता. प्राचीन समयमां भोपाल तथा नर्मदानी उत्तरे भिलसानो समावेश विदर्भमां थती.

विविशा स्त्री० माळवानुं भिलसा. प्राचीन दशार्ण देशनी राजधानी. भोपाळनी ईशानमां ३० माईल उपर. विदुर पुं० विचित्रवीर्यनी पत्नी अंबिकाए पोताने बदले व्यासजी पासे मोकलेली दासीना पुत्र. नीतिज्ञ तथा व्यवहारकुशळ. धृतराष्ट्र तथा कौरवोने तेमणे पांडवो साथे विरोध न करवा खूब समजावेला.

विदेह पुं० मगधनी उत्तर-पूर्वमा आवेलो देश. तेनी राजधानी मिथिला (अत्यारनुं दरभंगा जिल्लानुं जनकपुर). प्राचीनकाळमां नेपाळनो भाग, तिरहूट जिल्लानो उत्तरनो भाग तथा चंपारणनो उत्तर-पश्चिम भाग पण तेमां गणातो. बुद्धना वलतमां ते बज्जीओनो देश गणातो. तेना राजा जनकनी पुत्री होवाथी सीता वैदेही गणाती.

विद्यानगर न० तुंगभद्रा नदी उपरनुं हंपी - विजयनगर.

विनता स्त्री० कश्यपनी पत्नी; दक्ष प्रजापतिनी पुत्री; तेने अरुण अने गरुड ए वे पुत्र थयेला.

विनशन न० एक तीर्थ. सर्राहंद जिल्लानुं रेतीनुं रण. सरस्वती नदी अहीं आगळ रेतीमां लुप्त थई गई.

विनाशिनो स्त्री० गुजरातनी बनास नदी.

विपाश्, विपाशा पंजाबनी वियास नदी.
महाभारत (१.१७९)मां तेना नामनी
उत्पत्ति जणावी छे: विसष्ठजी पुत्रशोकथी पाश बांधी आ नदीमां
आत्महत्या करवा पडेला; पण नदीए
तेमने पाश तोडी किनारे पहोंचाडेला.

विभांडक पुं० ऋष्यशृंगना पिता.

विराट पुं० (१) मत्स्य देशनो राजा. पांडवो गुप्तवास तेने त्यां रहेला. तेनी कन्या उत्तरा अभिमन्यु वेरे परणावी. (२) विराट देश घोलपुरनी पश्चिमे आवेलो. पांडवो तेमां यमुनाना कांठेथी रोहितको अने शूरसेनोना देशमां थईने पेठेला. (दशार्णनी उत्तरे.)
तेनी राजधानी वैराट ते आजनुं
बैरात जैपुरशी उत्तरे ४० माईल.
(तेने मत्स्यदेश पण कहे छे.)

विरोचन पुं० प्रह्लादनो पुत्र; बलि-राजानो पिताः

विशासदत्त पुं॰ भुद्राराक्षसं नाटकनी कर्ता. तेनो समय ५ माथी नवमः सैकानी वच्चे अनिश्चित छे.

विशाला स्त्री० बौद्ध काळमां अयो-ध्यानुं नाम. ते आजनुं लखनौ छे एम पण कहेवामां आवे छे.

विशासापत्तन न० आजेनुं विशागा-पद्रमः

विशाला स्त्री० (१) उज्जियिनी (२) बिहारना मुझफ्फरपुरमां आवेलुं वेसाड. बौद्धकाळनुं वेशाली.

विश्वनाथ पुं० 'साहित्यदर्पण 'ना कर्ता. 'काव्यप्रकाश 'ना टीकाकार, ई. स. १३८४मां तेमनो साहित्यदर्पण ग्रंथ रुखायेलो.

विश्वामित्र पुं० चंद्रवंशी गाधिराजान।
पुत्र; क्षत्रिय होई तपोबळथी ब्रह्मींष्या; विसष्ठ साथे वेर चालेलुं;
तेमना तपनो मंग करवा इंद्रे मेनका
मोकलेली; तेथी शकुंतला नामे कन्या
जन्मेली. त्रिशंकुने स्वदेहे स्वर्गमां अबुं
हतुं; विश्वामित्रे तेने यज्ञ कराच्यो;
देवोए तेने न पेसवा दीधो त्यारे तेमणे
अंतरियाळ बीजुं स्वर्ग रच्युं हतुं,
ताटका राक्षसी तेमना यज्ञनो भंग
करती तेथी रामनी मदद लीघेली;
तेने मारी पछी जनकने त्यां जतां
सीता साथे रामनुं लग्न थयुं.

विध्याचल पुं० विध्य पर्वतः

विध्याटवी स्त्री० विध्य पर्वतमाळानी
पश्चिम बाजु दक्षिण तरफ आवेलुं
मोटुं वन. खानदेश अने औरंगाबादनो
घणो भाग तेमां आवे.

वृत्र पुं । त्वष्ट् प्रजापतिना पुत्र विश्व-रूपने इंद्रे मार्यो. तेथी इंद्रने मारवा अग्नि पासेथी तेमणे मेळवेलो पुत्र. पछी तेने इंद्रे वज्रथी मार्यो हतो. वृषकेतु पुं । कर्णना पुत्रन् नाम.

वृष्यवंन् पुं० असुरोनो राजा; शर्मि-ष्ठानो पिता. शुकाचार्यनी मददथी तेणे देवो साथे युद्ध करेलुं.

बृधिण पुं० यदुवंशीय एकं राजा

श्रीकृष्णना पूर्वज.

वेणा, वेणी, वेण्या, वेण्या स्त्री० (१) कृष्णाने मळती एक नदी.(२)नागपुर जिल्लानी वैनगंगा नदी; गोदावरीनी शाखा.

वेत्रवती स्त्री० विध्याद्रिमांथी नीकळती नदी. हालनी बेटवा (माळवामां).

वेन पुं० सूर्यवंशी राजा; पृथुनो पिता. यज्ञनी बंधी फरमावतां ऋषिओए तेनो वध करेलो.

वेस्सनगर न० (भोपाल) सांचि नजीकनुं आजनुं बेसनगर भिलसाथी त्रण माईल दूर बेस अने बेटवाना संगम उपर दशार्णनी प्राचीन राजधानी.

वंजयंत न० निमिराजानी नगरी. मिथिलानुं जुनुं नाम.

वैजयंती स्त्री० उत्तर कानडानुं बन-वासी. कदंबोनी राजधानी. केटलाक तेने दक्षिणना विजयदुर्ग तरीके ओळखावे छे.

वैतरणी स्त्री० आ नामनी घणी नदीओ छे. महाभारतमां कॉलंग देशमां आवेली एक वैतरणीनो उल्लेख छे. बीजी दंतुरानो ऊगम नासिक पासे छे.

वैद्यनाथ पुं० अत्यारना पंजाबनो कांगरा जिल्लो. तेने कीरग्राम पण गणवामां आवे छे.

वैवस्वत पुं० सातमा मनु. इक्ष्वाकुना पिता हालमां तेमनो मन्वंतर चाले छे. वंशंपायन पुं० एक ऋषि. याज्ञवल्कयना मामा तथा गुरु. व्यासजीना एक प्रस्यात शिष्य. पुराणो संभळाववामां निपुण. जनमेजयने महाभारत संभ-ळावेलुं.

वैशाली स्त्री० (तिर्हुत) मुझफ्फरपुर जिल्लाना दक्षिण भागमां आवेलो प्राचीन प्रदेश. तेनी उत्तरे विदेह अने दक्षिणे मगध वैशाली तेनी राजधानी.

व्यास पुं० पराशरथी सत्यवतीने (कुंवारी अवस्थामां) थयेल पुत्र. वेदोनो विभाग करनार. महाभारतना कर्ता. तेमणे विचित्रवीर्यनी स्त्रीओमां धृतराष्ट्र अने पांडु ए पुत्रो उत्पन्न कर्या. तेमने जन्मती वखते माताए नदीनो वच्चेना द्वीपमां तजी दीधेला तेथी ते 'द्वैपायन' अने काळा होवाथी 'कुष्ण द्वपायन' नामे पण ओळखाय छे.

विज पुं० मथुरा नजीक आवेलुं गोकुल. त्यां बचपणमां श्रीकृष्ण नंदने घेर ऊछरेला.

शकस्थान न० सिस्तन, ज्यां शको पहेलबहेला आवीने वस्था.

शकुित पुं॰ गांधार देशना सुबल राजानो पुत्र. गांधारीनो भाई. दुर्योधननो मामो. एणे दुर्योधनने द्यूत रसवा प्रेयों हतो. कपटद्यूत रमवामां कुशळ. सहदेवने हाथे मार्यो गयो.

शकुंतला स्त्री० विश्वामित्र – मेनकानी कन्या मेनका जन्म पछी तेने छोडी गई; तेथी कण्व ऋषिए तेने उछेरी. दुष्यंत साथे गांधर्वविवाह कर्या. सर्वदमन – भरत तेनो पुत्र.

क्षक्ति पुं० वसिष्ठ-अरुंधतीनो पुत्र; पराशरनो पिता

शतद्रु पुं० पंजाबनी सतलज नदी. वसिष्ठ त्यां डूबी मरदा गयेला त्यारे ते नदी सेंकडो प्रवाहोमां छिन्नभिन्न थई गई अने तेमने डूबवा न दीधा.
तेथी ते नाम. पहेलांनु नाम हैमवती.
शत्रुघ्न पुं० दशरथ-सुमित्रानो पुत्र.
तेणे लवणासुरने मारेलो. शूरसेन
देश स्थाप्यो. मथुरा तेनी राजधानी.
शरयू स्त्री० सरयू नदी.

शरवण न० हिमालयमां शिव-पार्वतीनुं कीडास्थान. कोई पुरुष त्यां जाय तो स्त्री थई जाय एवी पार्वतीए मर्यादा बांघेली. इल राजा त्यां जई इला बनी गयो हतो.

शरावती स्त्री० (१) साबरमती नदी. (२) सरस्वतीनुं बीजुं नाम.

र्शाम्ब्हा स्त्री० असुरराज वृषपर्वाती कन्या. तेणे देवयानीने बचपणनी तकरारमां कूवामां धकेलेली. ययातिए देवयानीने बचावी. पछी देवयानीए पोताना पिता शुकाचार्य द्वारा असुर-राजाने धमकावी शर्मिष्ठाने दासी तरीके मेळवी. पछी ययातिए तेनी साथे छुपुं लग्न करेलुं.

शल्य पुं० मद्र देशनी राजा. मादीनो भाई. कौरवोना पक्षमां तेने जबूं पडेलुं. कर्णनो सारिथ बन्यो. महाभारतना युद्धमां १८ मे दिवसे कौरवोनो सेनापित थयेलो. युधिष्ठिरे तेनो वध कर्यो हतो.

शंकराचार्य पु० वेदांतमतना प्रसिद्ध आचार्य ब्रह्मसूत्र उपरना 'शारीर-भाष्य 'ना कर्ता. ई. स. ७८८-८२०. ३२ वर्षनी उमरे देहांत. केटलाक तेमने छठ्ठा के सातमा सैकामा पण मके छे.

शंख पुं० (१) एक स्मृतिकार. लिखितनो भाई. (२) शंखासुर. तेने मत्स्यावतारमां विष्णुए मारेलो.

शंतनु पुं० चंद्रवंशी राजा. गंगाथी भीष्म अने सत्यवतीथी चित्रांगद तथा विचित्रवीर्य पुत्रो. **शंबर** पुं० एक असुर. तेने कृष्णपुत्र प्रद्युम्ने मारेलो.

शाकटायन पु० यास्क अने पाणिति पहेलांनी एक वैयाकरणी.

शाकद्वीप पु०, न० शक जातिनो देश मध्य एशियाना तुर्कस्तान सहितनो तार्तरी देश शक छोकोने स्काइथियन छोको गणवामा आवे छे.

शाकल पुं० मद्र देशनी राजधानी. लाहोर विभागनुं सियालकोट ते होय एम कहेवाय छे.

शाक्य पुं० गौतमबुद्धः

क्षालिबाहुन पुं० शक प्रवर्तावनार राजा. ई. स. ७८ ना वर्षथी तेनो संवत चालु थयो हतो.

शालिहोत्र पु० अश्वशास्त्रनो रचनार. कपिलनो पुत्र.

शाल्मलिद्वीप पुं०, न० चाल्डिया, मेसो-पोटेमिया के आसीरिया पृथ्वीना सात द्वीपो (विभागो) मांनो एक.

शाहव पुं० (१) जोधपुर-जयपुर अने अलवरना अंशो मळीने थतो प्रदेश. तेने 'मृत्तिकावती' पण कहेता. तेनी राजधानी शाल्वपुर ए आजनु अलवर. (२) शाहव देशनो एक राजा. काशी-राजनी कन्या अंबा तेने मनधी बरेली तेथी भीष्मे तेने पाछी मोकलेली. पण बीजाथी जितायेली तेने तेणे न स्वीकारी. (३) शाल्व देशनो एक राजा. रुक्सिणीना लग्न वखते कृष्णे तेने हराव्यो.

शिखंडिन् पुं० द्रुपदनो पुत्र. भीष्म प्रत्येतुं वेर लेवा अंबा ज (जुओ 'शाल्व') बीजे जन्मे शिखंडी थई. तेने आगळ राखीने अर्जुने भीष्मनो वध करेलो. अश्वत्थामाने हाथे मरायो. शिबि पुं० (१) एक चंद्रवंशी राजा. ययातिनो दौहित्र. तेनी दानशीलतानी परीक्षा करवा इंद्र अने अग्नि बाज अने होलानुं रूप धारण करीने आवेला. (२) जयद्रथना ताबानो देश. सिंधुनी पश्चिमे.

शिशुपाल पुं० दमघोषनो पुत्र. चेदि देशनो राजा पुराणो प्रमाणे हिरण्य- किश्य अने रावण रूपे पण ए ज अवतरेलो. पांडवोना राजसूय यज्ञ वखते अत्यंत निंदा करवा बदल श्रीकृष्णे तेनो वध कर्यो.

शुक पुं० व्यासना पुत्र. जन्मथी ज तत्त्वज्ञानी अने ब्रह्मचारी. रंभाए तेमने मोहित करवा निष्फळ प्रयत्न करेलो. व्यासे तेमने भागवत शीखब्युं; पछी तेमणे परीक्षितने संभळाव्युं.

शुक्र पुं० भृगु ऋषिना पुत्र; च्यवनना भाई. दैत्योना गुरु. इंद्रकन्या जयंती तेमनी पत्नी. देवयानी तेमनी पुत्री. शूक्रक पुं० 'मृच्छकटिक' नाटकनो कर्ता. ई. स. ना पहेला सैकामा थयो हशे. शूर पुं० (१) मगध देशनो राजा; सुमित्रानो पिता. (२) वसुदेव, कुंती, श्रुतश्रवा (शिशुपालनी माता)नो पिता. शिशुपालनो मातामह.

शूरसेन पुं० एक देश. शत्रुघने तेनी राजधानी मथुरा स्थापेली.

शूर्पणखा स्त्री० रावणनी बहेन. दंडका-रण्यमां रहेती हती. राम उपर मोहित ययेली. लक्ष्मणे तेनुं नाक कापी नाखेलुं. पछी तेणे सीतानुं हरण कराव्युं.

शूर्पारक पुं० थाणा जिल्लानु सोपारा. अपरांत (उत्तर कोंकण) देशनी प्राचीन राजधानी. परशुरामे समुद्र हटाबी पोताने रहेवा माटे करेलुं स्थान.

शृंगबेर पुं० गंगाना उत्तर किनारे मिरझापुर नजीकनुं एक नगर. निषादोनो राजा गृह त्यां रहेतो. कैंब्य पुं० (१) विष्णुना रथना चार धोडा पैकी एक. (२) पांडवपक्षीय एक राजा. शैंबल पुं० विध्याचळनी दक्षिणे अडो-अड आवेलो एक पर्वत.

शोण पुं० एक महानद. गौडवनमांथी नीकळी पटणा आगळ गंगाने मळे छे. शोणा स्त्री० अयोध्या अने मिथिला वच्चेनी एक नदी.

शोषितपुर नं० बाषासुरनी नगरीनुं नामः

शौनक पुं० नैमिषारण्यवासी कुलपित ऋषि तेमणे सूतने भारतादि इतिहास संभळावेलो.

श्रावण पुं० पोतानां वृद्ध मातापिताने तीर्थयात्रा कराववा नीकळेलो एक जुवान वैश्य. दशरथे भूलथी तेने मारतां, पुत्रवियोगनो शाप मळेलो.

श्रावस्ती स्त्री० उत्तर कोशलनी राज-धानी. त्यां छव राज्य करतो हतो. तेने शरावती पण कहे छे. अयोध्यानी उत्तरे आवेल सहेतमहेतने तेना अवशेष रूपे झोळखावाय छे.

श्रीक्षेत्र न० ओरिसानुं पूरी.

श्रीपर्वत, श्रीदौल पुं० दक्षिणनो एक पर्वत. कृष्णा जिल्लामां कृष्णा नदीने किनारे आवेलो छे.

सगर पुं० सूर्यंवंशी राजा, रामनो पूर्वंज.
तेना अश्वमेध यज्ञना अश्वनी पाछळ
नीकळेला तेना ६०,००० पुत्रो कपिल
मुनिना शापथी भस्मीभूत थयेला,
त्यारे तेमना उद्धार माटे तेनो वंशज
भगीरथ गंगाने तप करी पृथ्वी उपर
लावेलो.

सगरना अश्वनी शोध वखते तेना पुत्रोए पाताळमां जवा खाडो खोदेलो, तेथी समुद्रनी हद वधी गई अने ते 'सागर' कहेवायो.

सती स्त्री० दक्ष प्रजापतिनी कन्या;

शिवनां पत्नी. पिताने घेर यज्ञ वस्तते पितनुं अपमान थयेलुं जोई, अग्निमां देहत्याग कर्यो. बीजे जन्मे ते ज पार्वती बन्यां.

सत्यभामा स्त्री० सत्राजित्नां पुत्री; श्रीकृष्णनां पत्नीः तेमने माटे पारिजात वृक्ष स्वर्गमांथी लाववा श्रीकृष्णे इंद्र साथे युद्ध करेलुं.

सत्यवत् पुं० शाल्वदेशना द्युमत्सेननो पुत्र; सावित्रीनो पति. मृत्यु बाद सावित्री तेने यमराज पासेथी छोडावी लावेली.

सत्यवती स्त्री०(१) गाघिराजानी कन्या; विश्वामित्रनी बहेन; जमदिग्निनी माताः (२) त्रिशंकुनी पत्नी; हिर-श्चंद्रनी माताः (३) उपरिचर वसुने मत्स्य स्त्रीथी थयेल कन्याः ते मत्स्य-गंधा,योजनगंधा ६० नामे पण जाणीती छे. कुंवारी अवस्थामां पराशर ऋषिथी तेने व्यास पुत्र थयेलाः शंतनु राजा साथे लग्न बाद तेने चित्रांगद अन विचित्रवीर्य वे पुत्र थयाः

सन्नाजित् पुं० सत्यभाभानो पिता; सूर्य पासेथी तेने स्यमंतक मणि मळघो हतो. तेमांथी रोज आठ भार सुवर्ण नीकळतुं. ते मणि मेळववा घणां युद्धो ययेलां.

सत्यव्रत पुं॰ 'त्रिशंकु'.

सदानीरा स्त्री० 'करतीया' नदी.

सन, सनक, सनत्कुमार, सनंदन पुं० ब्रह्मदेवना चार मानस पुत्रो.

समतट पुं० भागीरथीनी पूर्वमां अने पुंड़नी दक्षिणे आवेलो प्रदेश तेनी राज-धानी कर्मान्त (कोमिल्ला नजीक).

समंतपंचक न० कुरुक्षेत्र नजीकनुं स्थळ. त्यां परशुरामे क्षत्रियोनो संहार करी छोहीना पांच धरा भरेला.

सरयू स्त्री अयोध्या नजीक वहेती नदी. तेने गोग्रा पण कहे छे. सरस्वती स्त्री० एक नदी. ते गंगा-जमुनाने प्रयाग पासे गुप्त रीते मळी त्रिवेणी-संगम बने छे एम कहेवाय छे. कुरुक्षेत्र आ नदीने किनारे आवेलुं. सहदेव पुं० पांच पांडवोमांथी पांचमो; माद्रीनो पुत्र. खड्गयुद्धमां निष्णात. ज्योतिषमां निषुण.

सह्य पुं० सह्याद्रि.

संजय पुं० धृतराष्ट्रनो सारिथ अन मंत्री. तेणे महाभारतनुं युद्ध दिव्य-दृष्टिथी नजरे जोई धृतराष्ट्रने वर्णवी बतावेलुं.

संज्ञा स्त्री० विश्वकर्मानी पुत्री; सूर्यनी पत्नी; यम, यमुना, वैवस्वत अने अश्विनीकुमारो – ए तेनां संतान.

संपातिन् पुं० अरुणनो पुत्र; जटायुनो भाई. सीताने रावण लंका लई गयो छे ए खबर सुग्रीवने तेणे आपेली.

संरोचन पुं० गोमती नदी नजीकनो एक पर्वतः

सात्यकि पुं० यदुवंशी योद्धोः पांडवोना पक्षमां रहेलोः

सायण पुं० वेदोनो सुप्रसिद्ध भाष्यकार. ई. स. १३७० ना अरसामां थई गयो. सारस्वत पुं० एक प्रदेश; इंद्रप्रस्थनी पश्चिमे. पश्चिम – मत्स्य अने मरु भूमिनी वच्चे, सरस्वतीने कांठे.

साल्व पुं० एक देश - शाल्ब.

सावित्रों स्त्री० मद्र देशना अश्वपति-राजानी कन्या; सत्यवाननी पत्नी, महापतित्रता पति मरण पामतां ते यमनी पाछळ गयेली अने अनेक प्रकारे प्रयत्न करी पतिना जीवने पाछो लावेली.

सांबीपनि पुं० बळराम-कृष्णना अघ्यापक. गुरुदक्षिणा तरीके तेमणे पंचजन असुर वडे हरायेलो पोतानो पुत्र मागेलो. श्रीकृष्ण समुद्रमां जई, असुरने मारी तेने छोडावी लावेला. सांब पुं० कृष्ण-जांबवतीनो पुत्र;
दुर्योधननी कन्या लक्ष्मणानो पति.
सिंधु पुं० सिंधु नदी. (२) सिंध प्रांतः
सिंधु-सौबीर पुं० जुओ 'सौबीर'
सीता स्त्री० सीरध्वज जनक राजानां
पालित पुत्री; श्रीरामनां पत्नी;
जमीन खेडती यखते जनकने मळेलां.

सीरध्वज पुं० विदेहवंशीय जनक राजा-ओमांना एक. मिथिला राजधानी. सीतानो पालक पिता. तेनी पोतानी कन्या ऊर्मिला, लक्ष्मण वेरे परणावेली.

मुग्नीव पुं० वानरोनो राजा; वालिनो भाई. सीतानी शोधमां तथा रावणने हराववामां रामने मदद करेली.

सुकामन् पुं० एक अत्यंत दिरदी ब्राह्मण. श्रीकृष्णनो गुरुभाई.

सुनीय पुं० शिशुपाल.

मुंबल पुं० गांधार देशनो राजा; शकुनि अने गांधारीनो पिता.

सुबंधु पुं० 'वासवदत्ता' नो कर्ता. वाणनो समकालीन.

सुभद्रा स्त्री० कृष्ण-बळरामनी बहेन.
अर्जुननी पत्नी, अभिमन्युनी माता.
दुर्योधन वेरे परणाववानी बळरामनी
इच्छा हती. पण अर्जुने श्रीकृष्णनी
संमतिथी यतिवेश धारण करी तेनु
हरण करेलुं.

सुमित्रा स्त्री० मगध देशना शूर नामना राजानी कन्या; दशरथनी बीजी पत्नी. लक्ष्मण अने शत्रुष्न ए बे पुत्र.

सुमेर पुं० गढवालनो रुद्र-हिमालय
पर्वतः त्यां गंगा नदीनो ऊगम छेः
वदिरकाश्रमनी नजीकः परंपरा प्रमाणे
केदारनाथ पर्वत मूळ सुमेरु गणाय छेः
सुवेल पुं० लंकानो त्रिक्ट नामनो पर्वतः
सुद्धा पुं० बंग देशनी पश्चिमे आवेल
एक देशः तेनी राजधानी ताम्रलिप्त,
जे प्राचीनकाळमां मोटुं बंदरी मथक

हतुं. सुद्धाना लोकोने राद पण कहेवामां आवे छे.

सेक पुं० चंबलनी दक्षिणे अने अवंतीनी उत्तरे आवेलो एक देश.

ं कथासरित्<u>सागर</u> 'नो सोमदेव पुं० संपादकः (गुणाढचनी पैशाची 'वृहत् कथा ' उपरथी.) काश्मीरना 'अनंत ' राजानो (१०२९–१०६४) दरवारो. सौराष्ट्र पुं० 'आनर्त 'पण कहेबाय छे. ढ़ारकाने पण 'आनर्त नगरी 'कहे छे. प्राचीन द्वारका मधुपुर नजीक अर्थात् (ढ़ारकाथी) ९५ माईल दक्षिण-पूर्व अने रैवतक पर्वत (गिरनार)नी नजीक आवेली. सौराष्ट्रती बीजी राजधानी वलभी प्रख्यात प्रभास सरोवर पण दरिया किनारे ए ज प्रदेशमां आवेलुं. **सौबीर** प्०आजनो सिंध प्रांत. केटलाक लेखको तेने सिंधु अने झेलम बच्चे आवेलो गणे छे.

स्यमंतक पुं० सत्राजिते सूर्य पासेथी मेळवेलो एक मणि. रोज आठ भार सुवर्ण आपतो. तेने कारणे वणी खटपट जागेली. श्रीकृष्णने पण संडोवावुं पडेलं.

स्यंदिनी स्त्री० गोमतीने मळनारी एक नदी; आजनी साई.

<mark>स्रुध्न</mark> पुं० स्थानेश्वर (क्रुरुक्षेत्र)नी ईशाने ३०–४० माईल उपर आवेलो एक प्रदेश.

हनुमत्, हनूमत् पुं० जुओ 'मारुति'. (२) 'हनूमन्नाटक'ना कर्ता. आ नाटक हनुमाने पोते लखेलु कहेत्राय छे. हरिद्वार न० गंगा हिमालय छोडी सपाट प्रदेशमां प्रवेशे छे त्यां आवेलुं प्रसिद्ध तीर्थस्थळ.

हरिश्चंद्र पु॰ इक्ष्वाकुवंशीय राजा. त्रिशंकुनो मोटो पुत्र. विश्वामित्रे तेना सत्यवादीपणानी परीक्षा करेली. ताराम्ती राणी. रोहित पुत्र. हर्ष पुं० 'नागानंद', 'रत्नावली', अने 'प्रियर्दाशका'ए त्रण नाटकोनो कर्ता. माळवाना हर्ष राजाए पोते आ नाटको लख्यां कहेवाय छे. पण धावक अने बाण जेवा तेना दरबारी कविओए लख्यां हरो एम मनाय छे.

हलायुध पुं० 'कविरहस्य' (धानुओनो कोष)नो कर्ता. साथे साथे तेमां राष्ट्रकूट राजा कृष्णराज त्रीजा (ई. स. ९४०-- ९५६)नां गुणगान चाले छे. तेनो बीजो ग्रंथ 'अभिधान-रत्नमाला' (कोष). ते दशमा सैकामां थई गयो.

हस्तिन् पुं० चंद्रवंशी पुरुकुलोत्पन्न एक राजा. तेणे हस्तिनापुर स्थापेलुं.

हिस्तिनापुर न० 'हस्ती' राजाए स्थापेछुं नगर; कौरवोनी राजधानी. मीरतथी अग्निखूणे २२ मार्डल दूर, तथा विजनोरथी नैक्ट्रिय खूणे गंगाना दक्षिण किनारे आव्युं हतुं. अत्यारे गंगाना प्रवाहमां नामशेष थई गयुं छे. हिडिब पुं० एक राक्षस. भीमे तेने मारेलो. हिडिंबा स्त्री० हिडिंब राक्षसनी बहेन. भीमनुं रूप देखी मोहित धई तेने परणी. घटोत्कच तेनो पुत्र.

हिरण्यकशिषु पुं० प्रह्लादनो पिता राक्षस राजा. कश्यप-दितिनो पुत्र. नृसिहरूप धरी विष्णुए तेनो वध कर्यो.

हिरण्यबाहु पुं० शोणनदः हिरण्याक्ष पुं० हिरण्यकशिपुनो भाईः तेने वराहअवतार लई विष्णुए मार्योः हूण पुं० हिन्दुस्ताननी वायव्ये आवेलो एक देश अने तेना लोकः

हेमकूट पुं० हिमालयनी उत्तरे आवेलो एक पर्वतः कालिदास तेने पूर्व अने पश्चिम सागरने स्पर्यतो कहे छे. कैलास पर्वतनुं बीजुं नामः

हैह्य पुं० खानदेश, औरंगाबाद अने दक्षिण माळवानो भाग मळीने बनतो प्रदेश. तेने 'अनुष देश' पण कहे छे. तेनी राजधानी माहिष्मती.

हादिनी, ह्लादिनी स्त्री० परिचमे केंकय अने पूर्वमां शतद्रु (सतलज)नदी वच्चे आवेली नदी. केंकयथी अयोध्या जतां भरतने ते ओळंगवी पडली.

परिशिष्ट २: न्यायसंग्रह

- अजाक्रपाणीयन्यायः बकरीनुं आवर्वुं अने तरवारनुं पडवुं जुओ 'काक-तालीयन्याय'.
- २. अजागलस्तनन्यायः बकरीना गळा आगळ स्तमनी दींटडी जेवुं जे होय छे ते. ते आंचळ नथी; खाली मांसनी के चामडीनी गांठ जेवुं होय छे. कशा उपयोगनी नहि एवी बस्तु माटे आ दाखलो अपाय छे.
- अजातपुत्रनामोत्कीर्तनन्यायः पुत्र जन्म्यो नथी, रे पहेलां नाम पाडवानी धमाल. तेना जेवी हास्यास्पद प्रवृत्ति
- ४. अयमपरो गण्डस्योपिर स्फोटः पहेलेथी ज गूमडुं होय, तेना उपर वळी बीजा गूमडानो सोजो थाय! एक मुक्केली होय अने तेने माथे बीजी उमेराय तेने माटे.
- ५. अरण्यचित्र्द्रकान्यायः गाढ जंगलमां चांदनी रेलाती होय, तेने जोनार-भोगवनार कोण? एम कदरदान भोक्ता विनानी वस्तु नकामी ज.
- ६. अरण्यरोदनन्यायः अरण्यमां गमे तेटलुं रुदन करे, तो ते सांभळे कोण अने मददे आवे कोण? ए प्रमाणे निरर्थक प्रवृत्ति माटे.
- ७. अर्ह्थातीप्रदर्शनन्यायः सप्तिषमां विसिष्ठना तारा साथे बहु झांखो एवी अर्ह्भातीनो तारो छे. एने बताववी होय, तो प्रथम तो पासेनो मोटो (विसिष्ठनो) तारो बताववी पडे अने पछी तेनी साथेनो नानो तारो ए अर्ह्भाती एम कहेवुं पडे छे. तेम कोई पण सूक्ष्म वस्तु समजाववा प्रथम तो बिनअगत्यनी स्थूल वस्तु

- ग्रहण कराववी पडे, अने पर्छा, ते निह पण तेनी पासेनी सूक्ष्म वस्तु ते खरी वस्तु छे, एम समजाववुं ते.
- ८. अर्धकुक्कुटीन्यायः अर्धी मरघडी खावी छे पण खरी अने बाकीनी अर्धी ईंडां माटे राखी मूकवी छे ए ते बने? 'हसवुं ने लोट फाकवो' ए बंने साथे केवी रीते संभवे?
- ९. अर्थं जरतीयन्यायः जो कोई वस्तु स्वीकारवी होय तो आखी स्वीकारवी जोईए; अने त्यागवी होय तो आखी ज त्यागवी पड़े अर्थी स्वीकारवी अने अर्थी त्यागवी एम केम बने? कोई अर्थ-वृद्ध प्रौढ स्त्री होय, तेनुं मुख हजुं पूरेपूरुं वृद्ध न थयुं होय तेथी स्वीकारवुं होय, अने तेनां बाकीनां अंगो न गमे तेवां थयां होय तेथी त्यागवां होय, एम केम बने? कां तो आखी त्यागो अथवा आखी स्वीकारो.
- १०. अर्धवैशसन्यायः अर्धु (अंग) कापवुं (अने अर्धु जीवतुं रहे एम इच्छवुं) – एवी व्यर्थ प्रवृत्तिः 'अर्धकुक्कुटीन्यायः' तथा 'अर्धजरतीयन्यायः' जेवुं.
- ११. अशोकविनकान्यायः रावण सीताने लंकामां लई गयो, त्यारे तेनी पासे घणां उपवनो हतां छतां अशोकविनकामां ज तेमने शा माटे राख्यां, एनुं कशुं कारण आपी शकातुं नथी. तेम अनेक मार्गो सामे होय तेमांथी कोई अमुक ज मार्गे शाथी लीधो, एनुं कशुं कारण न आपी शकाय.
- **१२. अक्सलोष्टन्यायः** रू करतां माटीतुं ढेर्फु कटण कहेवाय; पण माटीनुं ढेर्फु पथरा करतां पोचुं कहेवाय.

तेम बन्ने वस्तुओ खराब होय, छतां एकनी अपेक्षाए बीजी कोई सारी कही शकाय – एवो अर्थ. 'पाधाणेष्टक-न्यायः' अर्थात् पथ्थर करतां ईंट पोची.

१३. अस्नेहदीपन्यायः तेल वगरनो दीवो एनी मेळे बुझाई जाय. तेम पाछळथी प्रेरनार बळ न रहे, एटले बागळनी प्रवृत्ति आपोआप थंभे.

१४. अहिकुंडलन्यायः साप अने तेनां गूंचळां एक ज वस्तु छे. एक ज सापने फणा तथा तेनां एक-बे-त्रण एम गूंचळांनी रीते भले गणावी, पण 'घाट घडचा पछी नामरूप जूजवां, अंत तो हेमनुं हेम होय.'

१५. अंतर्वोपिकान्यायः वॅच्चेना ऊमरा उपर मूकेलो दीवो वंने बाजु प्रकाश आपे. जुओ 'देहलीदीपन्यायः'

१६. अंघकवर्तकीयन्यायः आंघळानो पग अकस्मात् बटेर पक्षी उपर पडे ते. जुओ 'काकतालीयन्थायः'

१७. अंधगजन्यायः आंधळाओ हाथीना एक एक अंगने अडकीने ते ते अंग जेवो हाथीने गणे ते: कान पकडनारो हाथीने सूपडा जेवो कहे; सूंढ पकडनारो साप जेवो कहे; पग पकडनारो थांभला जेवो कहे इ०. हाथीनुं साचुं स्वरूप वर्णववा समग्र हाथीनुं ज्ञान होवुं जोईए. ईश्वरनी बाबतमां पण ए जरीते जुदा जुदा वाद होय छे.

१८. अंघगोलांगूलन्यायः आंघळो माणस मार्ग जाण्या वगर भटकतो होय, तेने गायनुं पूछडुं पकडावी देवुं, 'आने पकडीने चाल्यो जा; तारे जवानुं छे त्यां जशे '. पछी जे अनर्थपरंपरा सरजाय ते. खोटा वादोनुं पूछडुं अंघश्रद्धाथी पकडनारानी पण एवी वले थाय. १९. अंधदर्पणन्यायः आंख वगरनाने दर्पण ! —ित्रर्थक प्रवृत्ति. जुओ 'अरण्यरोदनन्यायः', 'जलताडनन्यायः'. २०. अंघपरंपरान्यायः एक आंधळाने बीजो आंघळो दोरे, तेने त्रीजो आंघळो दोरतो होय – एना जेवी बले, अंध-श्रद्धाथी वगर विचार्ये बीजाने अनु-सरनारनी थाय.

२१. आकाशमुष्टिहननन्यायः आकाशने मुक्का मारवा जेवो मिथ्या प्रयत्नः

२२. आ**म्रसेकपितृतर्पणन्यायः** आंबाने पाणी मळे अने पितृओने अंजलि पण: 'एक कांकरे बे पक्षी मारवां'.

२३. आशामोदकतृष्तन्यायः (कल्पनाना लाडवा, लाडवानी वातोथी तृष्त थवुं) 'आकाशी घोडा दोडाववा', 'शेखचल्लीनी कल्पनाओ' – 'वातोनां वडां'.

२४. इतो व्याघ्न इतस्तटीः आ बाजु वाघ ेने बीजी वाजु कराड. बंने बाजु मोत.

२५. उष्ट्रकंटकंभक्षणन्यायः ऊँट कांटा खाय त्यारे पोताना मोंमांथी लोही नीकळे, एनो स्वाद कांटानो ज माने अने कांटाने वधु स्वादथी खावा जाय. २६. उष्ट्रलगुडन्यायः ऊंट जे लाकडीनो भार ऊंचकतुं होय, ते लाकडीथी ज तेने मार पडतो होय. सामो प्रतिपक्षी एवी दलीलो करे के जे तेने ज चुप करवामां काममां आवे.

२७. **ऊषरवृष्टिन्यायः** ऊखर जमीनमां वरसाद शा कामनो?

२८. कदलीफलन्यायः केळनं फळ बेसे एटले तेनो नाश थाय; खन्चरी गर्भ धारण करे एटले तेनुं मोत थाय. २९. कदंबकोरकन्यायः, कदंबमुकुल-न्यायः कदंब वृक्षने बची डाळीए एक सामटां फूल फूटी नीकळे छे. (एकसाये बनती किथाने जणाववा वपराय छे.) ३०. कफोणिगुडन्यायः कोणीए गोळ! बाळकने गोळ आपे पण कोणी उपर लगाडें; पेलाने हाथवेंतमां लागे पण

चाटेज शीरीते!

- **३१. करविन्यस्तबित्वन्यायः** हाथमा बीला जेवुं (स्पष्ट)
- ३२. कंठवामीकरन्यायः गळामां ज हांसडी, अने आखुं गाम खोळी वळे. बगलमां छोकरुं अने गाममां खोळे. ३३. कंबलनिर्णजनन्यायः कामळाने
- ३३. कंबलिन्फॅंजनन्यायः कामळाने पग उपर पछाडे, तेथी कामळानी घूळ पण ऊडी जाय अने पोताना पग पण साफ थाय. एक कांकरे बे पक्षी.
- ३४. काकतालीयत्यायः कागनुं वेसवुं अने ताडनुं पडवुं. वे कियाओ अचानक साथे बने, तेथी एकने बीजीनुं कारण न कही शकाय.
- ३५. काकदंतगबेखण(–परीक्षा)न्यायः कागडाना दांत गणवा जेवी मिथ्या प्रवृत्ति.
- **३६. काकपिकन्यायः कागडो ने** कोयल रूप-रंगे सरखां; पण गावानुं आवे त्यारे फेर जणाय.
- ३७. काकाक्षिगोलक्रन्यायः कागडाने एक ज डोळो होय छे (एकाक्ष); परंतु जरूर प्रमाणे ते एक आंखमांथी बीजी आंखमां सरकावी लावे छे एवी मान्यता छे. (एक कांकरे बे पक्षी जेवी बात माटे वपराय छे.)
- **३८. काचमणिन्यायः** देखावमां सरखा, पण गुणमां फेर.
- **३९. कूपमंडूकन्यायः** कूवामानो देडको. संकुचित दृष्टियाळाने बहारनी विशाळतानी शी खबर **होय**े?
- ४०. कूपयंत्रघटिकान्यायः रेंटना घडानी पेठे चडती-पडतीना वाराफेरा थया ज करे
- ४१. कृतक्षीरस्य नक्षत्रपरीक्षा हजामत करी लीधा पछी, नक्षत्र पूछवा जबुं परण्या पछी वरनी परीक्षा करवी. ४२. क्षते क्षारम् घा उपर मीठुं भभराववुं, 'दाझ्या उपर डाम.'

- ४<mark>३.क्षीरदग्धजिह्वान्यायः</mark> दूधनो दाझयो - छात्रा फंकोने पीए.
- ४४. क्षीरनीरन्यायः वे वस्तुओ एकवीजी साथे एटली बधी भळी जाय के जेम दूध अने पाणीः तळ अने तांदळानो संबंध एथी ऊलटो होय छें: झट जुदो पाडी शकाय तेवो.
- ४५. खलेकपोतन्यायः खळा उपर
 कवूतरनुं टोळुं ऊतरे अने दाणा साफ
 करी जाय, तेमां नानां मोटां कोणे
 नुकसान कर्युं ए न कही शकाय.
 तेम एक कार्य अनेक कारणोथी थयुं
 होय, त्यां अमुक कारणथी थयुं एम
 जुदुं न बतावी शकाय.
- ४६. गगनारविदन्यायः 'आकाशमां कमळनुं फूलं '—क्षेना जेवी असंभवित वात.
- ४७. गहुरिकाप्रवाहन्यापः गाडरनुं टोळुं अंधपणे एकनी पाछळ बीजुं एम सोडचुं ज जाय.
- ४८. गुँडिजिङ्किकान्यायः ताळवे गोळ लगावनो दवानो कडनो बूंटडी पिब-रावना, बाळकने मोंमां गोळ लगावे.
- **४९. घटीयंत्रन्यायः** जुओ 'क्ष्पयंत्र-घटिकान्यायः'
- ५०. घट्टकुटीप्रभातन्यायः नाकं न भरवं पडे माटे गाडावाळी रातने वखते दूर फरीने जवा जाय, अने सवार थाय त्यारे जुए तो चकरावामां फरी बराबर टोल-नाकानी ओरडी पासे ज आवीने ऊभो होय!
- ५१. घुणाक्षरन्यायः कीडाए कोरेला लाकडामां के पुस्तकना पानामां कोई अक्षरनी आकृति अकस्मात् थई होय तेना जेवुं.
- ५२. चौरापराधानमांडव्यनियहन्यायः पाडाने वांके पखालीने डाम. मांडव्य मुनि मौनव्रती हता. राजाना सेवको चोर शोधता त्यां आव्या अने मुनिने

पूछवा लाग्याः मुनि बोल्या निह, पण चोर एमना ज आश्रममां संताई रहेला पकडाया एटले मुनिने पण झूळी उपर चडावी दीघा.

- ५३. जलताडनन्यायः पाणी वलोववा जेवी मिथ्या प्रवृत्ति.
- ५४. तककौं िक्यन्यायः बधा भ्राह्मणोने दहीं आपवानुं होय, पण एकला कौडिन्यने छाश आपवा जेवो अपवाद करवो ते.
- ५५. तिलतंडुलन्यायः डांगर अने तल भेगां न मळे; अने भेळवीए तो पण झट जुदां पाडी शकायः 'क्षीरनीर न्यायः' थी ऊलटुं
- **५६. तुषकंडनन्यायः ढू**णसां खांडवा जेवो मिथ्या प्रयत्न.
- ५७. तुष्यतुदुर्जनन्यायः दुर्जनन् मों चूप करवा एक वखत तेनी वात स्वीकारी लेवी, अने पछी योग्य रीते तेनो जवाब बाळबो. दुर्जन साथे कोई बातनी बाबतमां जके चड़वाथी ते वधु जक्की थाय; तेनां करतां तेनी बात स्वीकार्यो जेवं करी तेने ठंडो पड़वा देवो, अने पछी तेने योग्य जवाब वाळवो.
- ५८. दम्<mark>यबोजन्यायः भ</mark>ूजेलुं की पछी असे नहि कारणनो नाश यतां कार्यनी आशा नहि
- **५९. दंडापूपिकान्यायः** लाकडी पडी, तो तेनी साथै बांधेला रोटला पण पडचा ज गणवा जोईए.
- ६०. देहलीदीपन्यायः वे ओरडानी वचला ऊमरा उपर मूकेलो दीवो वने बाजुनाओरडाने प्रकास आपे.(एक कियाथी वे परिणाम नीपजे ते माटे.)
- ६१. धान्यपलालन्यायः धान्य साथे फोतरां होय ज. पण धान्य लईने फोतरां फेंकी देवाय. तेम जे वे वस्तुओ साथे ज मळे तेम होय, तेमांथी कामनी

- लई लेवी अने बीजीने वेठी लेवी के पडती मुकवी.
- ६२. नटांगनान्यायः रंगभूमि उपर नटी जेनी पत्नीनो स्वांग भजवती होय तेनी बहु कहेवाय; सीता बनी होय तो राम बननारा नटनी, अने मंदोदरी बनी होय तो रावण बननारा नटनी.
- ६३. नष्टाश्वदम्धरथन्यायः बे जणा वे रथमां वेसी दूरनी मुसाफरीए नीकळ्या होय; तेवामां मार्गमां एकना घोडा भरी जाय अने बीजानो रथ भागी जाय, तो एकना बाकी रहेला घोडा अने वीजाना बाकी रहेला रथयी बंने मळी मुसाफरी पूरी करी शके. जेम, आंधळो अने पांगळो, एकनी आंख अने बीजाना पगथी बंने मळी पोतानं काम चलावी शके.
- ६४. न हि विवाहान्सरं वरपरीक्षा परण्या पछी वरनी जात न पृछाय.
- ६५. न हि सहस्रेणाप्यन्यैः पाटच्चरेभ्यो गृहं रक्ष्यते आंधळा हजार भेगा थाय, पण तेओ चोरथी धरने शी रीते बचावे?
- ६६. न ह्येष स्थाणोरपराधो यदेन-मन्धो न पश्यति आंधळो ठूंठुं न जुए अने तेनी साथे अथडाय, एमां ठूंठानो शो वांक?
- ६७. निर्धनमनोरथन्यायः निर्धन माणस कल्पनाना घोडा दोडावे, तेना जेवुं. शेखचल्लीना तरंग जेवुं.
- ६८. नीरक्षीरन्यायः हंस जेम दूध-पाणी भेगां होय तेमांथी दूध जुद्धं पाडीने पी जाय छे तेम सारासारनो विवेक करवो.
- ६९. नृपनािपतन्यायः राजाए हजामने राज्यमांथी सुंदरमां सुंदर छोकरो शोधी लाववा कह्युं;हजाम बधे फरी वळघो, पण कोई छोकरो तेने नजरमां न आच्यो. छेवटे, पोतानो छोकरो (जे कदरूपो ज हतो) ते सौ

करतां सुंदर लाग्यो, एटले तेने ज ते लई आब्यो. वरने कोण वखाणे ? वरनी मा.

७०. न्य**प्रोधको**जन्यायः वडनुं बीज देखवामां नानुं होय छे, पण तेमांथी केवुं मोटुं वृक्ष थाय छे?

७१. पदातिन्यायः शेतरंजनी रमतमां प्यादानुं सोगठुं सीधुं चाले छे, पण आगळना सोगठाने मारवानुं होय त्यारे वांकुं पण जई शके छे, तेम दुर्जन सीधो जतो होय तो पण क्यारे वांको थई घा करशे, ते कही न शकाय.

७२. पकप्रकालनन्यायः कादवमा खरडाईने पछी घोवा जवुं, तेना करतां पहेलेथी ज न खरडावुं सारुं.

७३. **पंग्वंघन्यायः** आंधळो अने पांगळो परस्पर सहायथी मजल पूरी करी शके.आने 'अंधपंगुन्याय: 'पण कहे छे.

७४. पंजरचालनन्यायः एक पांजरामां पुरायेलां अगियार पंत्नी जो परस्पर मळीने प्रयत्न करे, तो पांजराने खसेडी जई शके; पण छूटो छूटो —विरोधी प्रयत्न करे, तो कशुंन थाय.

७५ पाटच्चरलुंठिते वेश्मिन याभिक-जागरणम् चोर चोरी करी जाय त्यार पछी पहेरेगीर जागती चोकी करवा बेसे.

७६. पिपीलिकागितिन्यायः कीडीनी गिति धीमी होय छे, छतां ते सतत चालती रहे तो झाडनी टोच उपरना फळनो स्वाद पण चाखे.

७७. **पिष्टपेषणन्यायः** दळेलाने फरी दळवुं – मिथ्या प्रवृत्तिः

७८. पुष्टलगुडन्यायः आगळना भसता कृतरा उपर लाठी नाखीए, तो आस-पासनां बीजां कृतरां पण चूप थई जाय के भागी जाय.

७९. प्रधानमल्लिनबर्हणन्यायः मुख्य मल्लने हरावीए एटले पछी बाकीना तो हारी गया ज समजवा. ८**०. बधिरकर्णजपन्यायः** बहेराना कोनमां गुसपुस*–* अरण्यरुदन जेवी नकामी प्रवृत्तिः

८१. बीजवृक्षन्यायः, बीजांकुरन्यायः बीजमांथी वृक्ष पेदा थाय छे, अने वृक्षमांथी बीज थाय छे. कयुं पहेलुं ए शी रीते नक्की थाय ? ईंडुं पहेलुं के पंखी पहेलुं ?

८२. बाह्मणप्रामन्यायः ब्राह्मणो वधारे वसता होय तेथी आखुं गाम 'ब्राह्मण- ग्राम 'कहेवाय; परंतु तैथी तेमां वीजा वर्णो छे ज नहि एवं नथी होतं. मुख्य वस्ती ब्राह्मणनी छे एटलुं ज समजवं.

८३. भिक्षतेऽपि छशुने न शांतो व्याधिः लसण अभक्ष्य छे छता ते पण खाधुं; परंतु रोग तो छतांय मटचो नहि.

८४. भस्मिन आज्याहृतिः राखमां घी होमबुं. व्यर्थे प्रवृत्तिः

८५. भिक्षुपादप्रसारणन्यायः भिक्षा मागवा आवीने आखो पगपेसारो करे – आंगळी आपता पंजो पकडे. आरबना ऊंटनी वात.

८६. भिल्लीचंदनन्यायः भीलडी चंदनमां लाकडां बाळीने रोटला घडे. भीलडी चंदनना वनमां ज रहेती होय तेने ए लाकडानी शी किमत ?

८७. भूलिंगशकुनिन्यायः हिमालय पासे भूलिंग पंखी श्राय छे; आखो वखत 'मा साहसम्' (साहस न करो !) एवो उच्चार काढ्या ज करे छे. छतां जाते तो सिंह शिकार करी मांस खातो होय त्यारे तेना क्तमां भरायेल मांसना टुकड़ा काढी खावा तराप मारे छे. बीजाने उपदेश आपवो, पण पोते तो तेम न करवं — पोथीमांना रींगणां जेवं.

८८. मधु पश्यिस दुर्वुद्धे प्रपातं नानु-पश्यिस मध लेवा झाडनी पातळी डाळी सुधी जनारो मध सामे ज नजर

- राखे छे पण नीचे पडी जान जको ते जोतो नथी.
- ८९. मर्कटमिदरापानादिन्यायः मूळे मांकडुं, तेमां दारू पीधो, (अने पछी वींछी करडचो) – हवे कूदाकूदमां शी मणा रहे?
- ९०. मंडूकप्लुतिन्यायः देडकातो कूदको. वच्चेनो कम छोड़ी झट आगळनी वात उपर ठेकडो मारवो ते. (सारुं न गणाय).
- ९१. मास्त्यन्यायः मोटुं माछलुं नानाने गळे – ए न्याय. बळियाना बे भाग. ९२. यः कुरुते स एव खुंक्ते करे ते भोगवे
- ९३. यत् करभस्य पृष्ठे न माति, तत् कंठे निबध्यते ऊंटनी पीठ उपर न माय तेने तेनी डोके बांधे दुःसमा दुःख उमेराया ज करे.
- **९४. याचितकमंड**नन्यायः मागेलां **घरे**णांथी सारा देखावुं.
- ९५. यादृशो यक्ष स्तार्वृशो बिलः जेवो यक्ष तेवा तेने बाकळा छाणना देवने कपासियानी आंखो.
- ९६. वटे यक्षन्यायः वडना झाडमां भूति रहे छे – एवी लोकवायका ज चाल्या करे छे; कोईए नजरे जोयुं होतुं नथी.
- ९७. बदतोब्याधातः पोतानी ज वातनुं खंडन पोते ज करे तेना जेवं – जेम के, मारी मा वांझणी छे, मारो बाप ब्रह्मचारी छे इ०.
- ९८. वध्यधातकन्यायः उंदर ए बिलाडी माटे भक्ष्यरूप छे;तेथी ते वे प्राणीओ साथे न रही शके. ते प्रमाणे जे वे वस्तुओ एक साथे न रही शके ते बताववा आ न्याय वपराय.
- ९९. वर्नासह-व्याघ्र-व्यायः वन सिहने आधार आपे छे अने सिहथी वनने रक्षण मळे छे,तेम एकबीजाने टेका-रूप बनती बे वस्तुओ बताववा.

- १००. दरमद्य कपोतः झ्यो मयूरात् आजनुं (ध्रुव) कबूतर कालना (अध्रुव)मोर करतां वधुसारुं
- १०१. वराटकान्वेषणे प्रवृत्तिः चन्ता-मणि लब्धवान् खोवायेली कोडी शोधवा जतां चिंतामणि जडवो.
- १०२. विक्रोते करिणि किमंकुशे विवादः हाथी वेची दीधा बाद अंकुश माटे तकरार शा माटे?
- १०३. विषक्किमन्यायः विष बीजाओने धातक नीवडे,पण तेमां ज जन्मता अने वधता जंतु माटे तो आधाररूप ज थाय छे; एक जणनुं झेर ते बीजाने अमृत.
- १०४. विषवृक्षन्यायः झेरी झाड पोते वावीने ऊळेर्युं होय, तो पछी पोताने हाथे शी रीते कापी नंखाय?
- १०५. विहंगमन्यायः कीडी धीमी चाले; तेना करतां वांदरुं एक झाडथी बीजा झाड उपर कूदी जलदी रस्तो कापे. पण पंखी तो सीधी लीटीमां ऊडी सौथी वहेलुं पहोंचे. उत्तम अधिकारीनुं दृष्टांत.
- १०६. बीचितर्रगन्यायः समुद्रमां एक मोजुं बीजा मोजाने आगळ धकेले छे, अने एम छेवटे सौ किनारे पहोंचे छे.
- १०७. वृक्षप्रकंपनन्यायः झाड उपर चडेलाने नीचे उभेलाओमांथी एक जण एक डाळी हलाववानुं कहे, बीजो बीजीने, अने त्रीजो त्रीजीने इ०; पछी पेलो आखुं झाड ज हलावे, तो सौने पोते मागेली डाळी हलाबी एम लागे. एक ज प्रयत्ने अनेकने संतुष्ट कराय-
- १०८. वृद्धकुमारी-वाक्य (-वर)न्यायः
 परण्या वगर रही गयेली कोई प्रौढाने
 देव वरदान मागवानुं कहे अने ते एम
 मागे के, 'मारा पुत्रो सोनानी थाळीमां
 कढेला दूधनी खीर खाय ';तो तेमां
 पति, पुत्र, ढोरढांख, सोनुं-रूपुं बधुं
 एकसाथ एक वाक्यमां मागी लीधुं तेम.

- १०९. वृद्धिमिष्टवतो मूलमपि ते नष्टम् व्याज खावा गयो ने मूडी पण ख़ोई आव्यो. लेने गई पूत और खो आई खसम.
- ११०. व्यालनकुलन्यायः साप अने नोळिया बच्चे जातिगत बेरनो ज संबंध छे तेम; बे बाबतो वच्चे स्वभावगत विरोध होय ते बताववाः
- १११. शरपुरुषीयन्यायः बाण छोडचुं ते बखते ज दीवाल उपरथी माणसे मों ऊंचुं कर्यं अने तेने वाग्युं – एम 'कागनुं बेसवुं अने ताडनुं पडवुं' जेवी अणधारी बनती वातः
- ११२. घलभन्यायः पतंगियुं दीवानी ज्योतना प्रकाशनी अदेखाई करी तेने ओलववा पोतानी पांख तेना उपर फफडाववा जाय छे अने नास पामे छे. तेम मूर्खताथी मोत तरफ धसी जनार माटे.
- **११३. शक्तविषाणन्यायः** ससलानुं श्रीगडुं — जेबी असंभव वात. 'आकाश-कुसुम'
- ११४. ज्ञाखाचंद्रन्यायः जो पेली डाळ उपर चंद्र देखाय – एम कही स्थूल के नजरे देखाती वस्तुने आधारे दूरनी सूक्ष्म वस्तु बताबाय छे ते. 'अर्धतीप्रदर्शनन्यायः'.
- ११५. बान्ते कर्मणि वेतालोदयः कोई अनिष्ट दूर करवा होम-विधि करी रहीए ने वेताल डोकियुं काढे; तेम प्रयत्न करी एक अनिष्ट दूर करी रहीए ने बीजुं मोटुं अनिष्ट आवीने ऊम् रहे, ते माटे.
- **११६. शीर्षे सपों देशान्तरे वैद्यः** साप तो माथे आवीने ऊभो छे अने वैद्य परदेशमां छे.
- ११७. इवश्रमिनं च्छोक्तिन्यायः भिखारी भीख मागवा आव्यो होय, तेने वहु एम कहीने पाछो काढे के, 'जा,

- घरमां कशुं नथी.' पण सासु ते जोई पोतानी वडाई स्थापना पेला भिखारीने पाद्यो बोलावे छे अने ते आवे त्यारे कहे के, 'जा, घरमां कशुं नथी.' तेना जेवुं.
- ११८. सिकताकूपवत् रेतीमा कूदो स्रोदता जाओ तेम पुरातो ज जाय. ११९. सिकतातैलन्यायः रेती पीलीने तेलं काढवा जेवं – असंभवित.
- १२०. सिहाबलोकनन्यायः सिंह आगळ वधता पहेलां डोकुं पाछुं फेरवी नजर करतो रहे छे तेम – पुनराबलोकन माटे.
- **१२१. सुभगाभिक्षुक**न्यायः सुभगा एटले घरमा वडी सत्तावाळी सासु. जुओ 'श्वश्रुनिर्गच्छोवितन्यायः'.
- १२२. सूचिकटाहन्यायः लृहारने कोई सोय बनाववानुं कहे, अने वीजो कढाई बनाववानुं कहे. तो ते पहेलां नानुं – जलदी थनारुं (सोयनुं) काम ज हाथमां ले, तेम.
- १२३. स्थालीपुलाकन्यायः तपेलीमां चोखा रंधाता होय तो तेमानो कोई एक दाणो पण दवावी जोईने आखी तपेलीना चोखा रंधाया छे के नहि ते जाणी शकाय छे तेम.
- १२४. स्थूणानिखननन्यायः थाभलो के खीलो रोपवी होय, तो हलाबी हलाबीने अंदर धकेलवामां आवे छे, के बराबर स्थिर थयों के नहि तेनी खातरी करवामां आवे छे, तेम पोतानी वातनुं वारवार बीजां पूरक दृष्टांतोथी समर्थन करवुं ते.
- १२५. हस्तामलकन्यायः हाथमां रहेलुं आमळुं जेम स्पष्ट जोई शकाय छे, तेम जे परिणाम स्पष्ट देखी शकातुं होय, तेने माटे वधु समर्थननी जरूर नथी रहेती.

परिशिष्ट ३ : संख्यावाचक शब्द

एक वि० एक द्विवि० बे त्रिबि० त्रण चतुर् वि० चार **पंचन** वि० पाच षष् वि० छ **सप्तन्** वि०. सात **अष्टन** वि० आठ नवन् वि० नव **दशन्** वि० दश (--स) एकादशन् वि० अगियार द्वादशन् वि० बार त्रयोदशन् वि० तेर चतुर्दशन् वि० चौद पंचदशन् वि० पदर षोडशन् वि० सोळ सप्तदशन् वि० सत्तर अष्टादशन् वि० अढार नवदशन् वि०, एकोनविशति स्त्री०, **ऊनविशति** स्त्री ०, **एकान्नविशति** स्त्री ० ओगणीस विश्वति स्त्री० वीस एकविशति स्त्री० एकवीस **द्वाविशति** स्त्री० वाबीस त्रयोविशति स्त्री ० तेवीस चतुर्विशति स्त्री० चोवीस पंचविशति स्त्री० पचीस षडींबराति स्त्री० छव्वीस सप्तिविश्वति स्त्री० सत्तावीस अष्टाविशति स्त्री० अठ्ठावीस नवविश्वति स्त्री०, एकोनिज्ञिञ्चत् स्त्री० अनिविशत् स्त्री०, एकाम्मविशत् स्त्री० ओगणत्रीस विश्वात् स्त्री० त्रीस एकत्रिशत् स्त्री० एकत्रीस

द्वात्रिशत् स्त्री० वत्रीस त्रयस्त्रिशत् स्त्री० तेत्रीस चतुस्त्रिशत् स्त्री० चोत्रीस पंचत्रिशत् पात्रीश षट्त्रिशत् स्त्री० छत्रीस सप्तित्रिशत् स्त्री० साडत्रीस अष्टाचिशत् स्त्री० आडत्रीस नवित्रशत् स्त्री०, एकोनचत्वारिशत स्त्री ०, कनचरवारिशत्, स्त्री ०, एकाञ्च-चरवारिशत् स्त्री० ओगणचाळीस चत्वारिशत् स्त्री० चाळीस एकचत्वारिशत् स्त्री० एकताळीस हाचत्वारिशत् स्त्री०, द्विचत्वारिशत् स्त्री० वेताळीस त्रयश्चत्वारिशत् स्त्री०, त्रिचत्वारिशत् स्त्री० तेताळीस चतुरचत्वारिशत् स्त्री० चुंमाळीस पंचचत्वारिशत् स्त्री० पिस्ताळीस षट्चत्वारिशत् स्त्री० छेताळीस सप्तचत्वारिशत् स्त्री० सुडताळीस अष्टाचत्वारिशत् स्त्री०, अष्टचत्वा-रिशत् स्त्री० अडताळीस नवचत्वारिशत् स्त्री०, एकोनपंचाशत् स्त्री०, अनपंचाशत् स्त्री०, एकान्न-पंचाशत् स्त्री० ओगणपचास पंचाशत् स्त्री० पचास एकपंचाशत् स्त्री० एकावन द्वापंचाशत् स्त्री०, द्विपंचाशत् स्त्री० वावन त्रयःपंचाशत् त्रिपंचाशत् स्त्री० त्रेपन चतुःपंचाशत् स्त्री० चोपन पंचपंचाशत् स्त्री० पंचावन षट्पंचाशत् स्त्री० छप्पन सप्तपंचाशत् स्त्री० सत्तावन अष्टापंचाशत्,अष्टपंचाशत् स्त्री ० अट्टावन नवपंचाशत्, एकोनषष्टि, ऊनषष्टि, एकान्नषध्ट स्त्री० ओगणसाठ षष्टि स्त्री० साठ **एकषष्टि** स्त्री० एकसठ द्वाषिट, द्विषिट स्त्री० बासठ त्रयःषष्टि, त्रिषष्टि स्त्री० त्रेसट **चतुष्विद्ध** स्त्री० चोसठ पंचषष्टि स्त्री० पांसठ षटषष्टि स्त्री० छासठ सप्तबंदि स्त्री० सडसट अष्टाष्ठिट, अष्टष्ठिट स्त्री० अडसठ नवषष्टि, एकोनसप्तति, ऊनसप्तति, **एकाञ्चसप्तति** स्त्री० अगणोसित्तेर सप्तति स्त्री० सित्तेर एकसप्तिति स्त्री० इकोतेर द्वासप्तति, द्विसप्तिति स्त्री० बोतेर **त्रयस्सप्तति, त्रिसप्तति स्त्री० तो**तेर चतुस्सप्तति स्त्री० चुंमोतेर पंचसप्तति स्त्रो० पंचोतेर षट्सप्तति स्त्री० छोतेर सप्तसप्तिति स्त्री० सित्तोतेर अष्टासप्तति, अष्टसप्तति स्त्री० इठ्ठोतेर नवसप्तति, एकोनाशीति, अनाशीति, एकाश्राशीति स्त्री० अगण्याएंशी अशोति स्त्री० एंशो एकाशीति स्त्री० एकचाशी द्वयशीति स्त्री० ब्याशी **त्र्यशी**ति स्त्री० त्याशी **चतुरशीति स्त्री० चोर्याशी पंचाशीत** स्त्री० पंचाशी षडशीति स्त्री० छचाजी सप्ताशीति स्त्री० सित्याञ्ची अष्टाशीति स्त्री० इट्ट्याशी

नवाद्योति, एकोननवति, ऊननवति, एकाश्चनवितः स्त्री० नेव्याशी नवति स्त्री० नेवुं **एकनव**ि स्त्री० एकाणुं द्वानवति, द्विनवति स्त्री० बाणुं त्रयोनवति, त्रिनवति स्त्री० ताणुं **चतुर्नवति** स्त्री० चोराणु **पंचनवति** स्त्री० पंचाण् षण्णवति स्त्री० छन्न **सप्तनवति** स्त्री० सत्ताणुं अष्टानवति, अष्टनवति स्त्री० अट्टाणुं नवनवति स्त्री०, एकोनशत न०, **ऊनैशत न०, एकाञ्चशत न० न**व्याणुं **शत** न० सो सहस्र, दशञ्चल न० १००० अयुत न० १०,००० लक्षान०, लक्षास्त्री० १००,००० प्रयत ने० १,०००,००० कोटि स्त्री० १०,०००,००० अर्खेद न० १००,०००,००० अब्जान० १,०००,०००,००० स्तर्च पुंठ, न० १०,०००,०००,००० निखर्व पुँ०, न० १००,०००,०००,००० महापद्म पुं० १,०००,०००,०००,००० बोक् पुंठ १०,०००,०००,०००,००० जरुधि पुंच १००,०००,०००,०००, 000 अस्य नं ६ १, ०००, ०००, ०००,०००, 000 मध्य न०१०,०००,०००,०००,०००, परार्ध न० १००, ०००, ०००,

000,000

पूर्ति

[चालु वपराशना वधु शब्दो]

अ

अक्रमन पुं० जुओ पृ० ५९७ अकालकुसुम न० असमये खीलेलुं फूल (अनिष्टसूचक) [शके तेवुं **अकालक्षम** वि० विलंब सहन करी न अकालजलदोदय पुं० असमये वादळनुं घेरावुं ते (२) धूमस अकालज्ञ वि० समय के असमयनो विचार न करत्ं | पामत् अकांडपातजात वि० जन्मीने तरत नारा अकीर्ति स्त्री० अपकीर्ति अपाधिव अकुलीन वि० हलका कुळनुं (२) दैवी; अक्ज वि० अवाज विनानुं; चूप अकृशलक्ष्मी वि० पूर्ण समृद्धिवाळुं (२) स्त्री० पूर्ण आबादी अक्रुष्टपच्य वि० खेडचा विना ऊगतुं **अक्क** पुं० घरनो खूणो **अक्लिब्टबर्ण वि० स्पष्ट संभळाय** के समजाय तेवा शब्दोवाळुं अक्षय्यभुज् पुं० अग्नि **अक्षरभूमिका** स्त्री० लखवा माटेनुं फलक – पाटियुं इ० अक्षरिशक्षा स्त्री० गृह्य मंत्राक्षरोनुं शास्त्र (२) ब्रह्मतत्त्वनो सिद्धांत अक्षरार्थ पुं० ज्ञब्दोनो अर्थ - मर्म अक्षसूत्र न० मणकानी माळा **अक्षिस्पंदन** न० आंख फरकदी ते अक्षोभ्य पुं० क्षोभ न पामे तेर्चु **अखंडम् अ० अखं**डपणे; सतत

होय तेवुं (२) थाक न लागे तेवुं अगज वि० पर्वत के वृक्षमां उत्पन्न थयेलुं के थतुं(२)पर्वतोमां रखडतुं अगजा स्त्री० पार्वती अगजाजानि पुं० शिव (पार्वेतीना पति) अगम वि० चाली न शके तेवुं **अगम्यरूप** वि० जेनुं स्वरूप अनुपम के अज्ञेय छे तेवुं अगस्ति, अगत्स्य पुं० जुओ पृ० ५९७ अगस्त्योदय पुं० भादरवा महिनाना अंत भागमां अगस्त्य-मंडळनो उदय थवो ते (त्यारथी पाणी स्वच्छ बनवा लागे छे) **अगंड** पुं० हाथ-पग विनानुं घड अ**गाधसस्व** वि० अगाध बळवाळुं अगुढ वि० स्पष्ट; खुल्लुं अयोचर वि० इंद्रियातीत; अगम्य (२) न० इंद्रिय गोचर नहीं एवी वस्तु (३) माहिती के ज्ञाननो अभाव (४) ब्रह्म अग्निकार्य न० अग्निमां होम करवो ते अग्निचित् पुं० नियमित होम करनारो अग्निदायक वि० आग लगाडनारुं (२) भूख लगाडनार्ह अग्निधारण न० अग्निमां विधिपूर्वक नियमित होम करवो ते अग्निप्रस्कंदन न० अग्निमां करवाना कर्तव्यनुं उल्लंघन

अखिन्न वि० थाकेलुं के कंटाळेलुं न

अग्निमुख पुं० देव (२) ब्राह्मण (३) अग्निहोत्री (४) माकण अधिनयोग पुं० चार बाजु अग्नि अने उपर सूर्यनो ताप - एम पांच अग्नि तपदारूपी तपस्या अग्निबिहरण न०, अग्निविहार पुं० अग्निमां आहति अर्पवी ते **अग्निशरण, अग्निशास्त्र** न ० अग्निहोत्रनुं अग्निशिख वि० टोचे अग्नित्राळ् अग्निष्ठ न० रसोड् | धुमाडो अस्निसल, अस्निसहाय पुं० पवन (२) अग्निसाक्षिकम् अ० अग्निने साक्षी तरीके राखीने (करेलुं लग्न) अग्निसास्कृ ८ उ० वाळी नाखवुं; भस्मी-भूत करवुं अग्निसुत, अग्निसूनु पुं० कार्तिकेय अग्न्यगार, अग्न्यागार पुं०, न० होमनो अग्नि राखवान् स्थान **अग्रकेश** पुं० आगळना बाळ अषद्तिका स्त्री० आगळथी संदेश लावनारी दूती अग्रपातिन् वि० पहेलां थतु के बनतुं अग्रपाद पुं० पगना पहोचानो आगळनो --टोचनो भाग अग्रप्रदायिन् वि० अगाउथी आपत्ं अग्रभागिन् वि० (शेष रहेलानो) प्रथम भाग लेनारुं के तेनो दावो करनारुं अग्रभाव पुं० आगळ - प्रथम होवुं ते अग्ररंध्र न० छिद्र के बाकोरानो शरू-आतनो के टोचनो भाग अप्रशोभा स्त्री० शिखरोनी शोभा (२) श्रंष्ठ शोभा **अग्रसंख्या** स्त्री० प्रथम स्थान के पद **अग्रसंध्या** स्त्री० वहेली सवार; मळसक् अग्राक्षि न० तीक्ष्ण नजर; नजरे जोवं ते अग्रेसरिक पुं० (मालिकनी आगळ चालनारो) सेवक (२) नेता

अद्य पुं० जुओ पृ० ५९७ अचलकन्यका, अचलमुता स्त्री० पार्वती अचिरांश स्त्री० वीजळी अर्चितितोपनत वि० अणवार्यं के अग-चितव्युं थतुं के वनतुं अक्र पुं० जुओ। पृ० ५९७ अजनिस स्त्री० उत्पत्ति ज न थवी ते (अस्तित्व न होवुं ते) अज्ञप पुं० नियमित के विश्विसर जप न करनारा ब्राह्मण अजाक्रुयाणीयत्यायः जुओ पृ० ६३० **अजागलस्तनन्यायः** जुओ पृ० ६३० अजाजि (–जी) स्त्री० जीरुं अजातपुत्रनामोत्कीतंनन्यायः जुओ पृ० अजामिल पुं० जुओ पृ० ५९७ अजाविक न० घेटांयकरां वगेरे जानवर **अजिह्मगामिन** वि० सरळ; सीधुं; प्रमाणिक (बांकुं न चालनार्ं) अजीवनि स्त्री० मरण; मृत्यू **अतऊर्ध्वम्** अ० जुओ 'अतःपरम्' अतटप्रपात पुं० ऊभी भेखड के कराड उपरथी पडवुं ते अनुकितागत, अर्ताकतोपनत বিত ओचित् आवी पडेल् अतःपरम् अ० आनाथी आगळ; आयी वघु; आनाथी पछी अतिकोप वि० कोधरहित; शांत अस्तिगृहक न० ऊचं घर (२) अगाशी अतिचिरम् अ० घणुं मोडुं होय तेम (२) लांबा समय सुधी अतिच्छेद प्० अतिशय अंतर अतिजित वि० पूरेपूर् हरावेलुं अतिसध्या स्त्री० वधारे पडतो लोग **अतिथिधर्म** पुं० आतिथ्यनो हक के अधिकार (२) अतिथि प्रत्ये बजाव-वानु कर्तव्य असिदिश् ६ प० सोंपी देवुं; आपी देवुं (२) अन्यने लागु करव्

अतिधर्म पुं० ऊंचामां ऊंची धर्मे; मोटामां मोटो धर्म अतिपात्य वि० विलंब करवा योग्य; मुलतवी राखवा योग्य अतिप्रसक्ति स्त्री० अति आसक्ति (२) मर्यादानुं उल्लंघन करवुं ते (३) भळते ठेकाणे नियम खेंचीने लगाइवो ते (४) अतिन्याप्ति (५) जन्दाळुना; लांबुं लांबुं – कंटाळो आवे तेवुं बोलवुं ते :६) निकट संबंध अतिबला स्त्री ० एक बनस्पति (औषधि) (२) विश्वाभित्रे रामने शीखवेल मिनितमाळी विद्या के मंत्र अति 🔫 २ उ० अपमान करवुं; नाळ भाडवी (२) चर्चा करवी अक्षिभर, अक्षिभार पं० भारे बोजो अतिभारिक वि० भारे वोजारूप एव् अतिमान वि० अमाप; अति विस्तृत (२) पुं० उद्धताई; अति गर्व (३) विस्तार, हद अतिराग पुंच उत्साह; उमंग **अक्तिलंधन** न० अति उपवास करवा ते (२) उल्लंघन अतिलंखिन् वि० भूलचुक करनार (अभिनय आदिमां) अतिलोल वि० अति नाजुक अतिबद्गृ वि० वातोडिय् अतिवर्धन न० विनजरूरी उमेरो करवो ते अतिविस्तर पुं० अति विस्तार अतिशक्ति स्त्री० शक्ति बहारनुं ते अतिशस्त्र वि० शस्त्र करतां पण वध् ईजा करनारु अतिशायन न० पाछळ पाडी देवुं ते; श्रेष्ठताः चडियातापण् अतिसक्ति स्त्री० निकट सर्वध के सानिध्य (२) भारे आसक्ति अतिसर्ग पुं० दान (२) परवानगी;

रका (३) काढी मुकवूं ते; विदाय (४) कृपा; महेरबानी अतिसर्पण न० जोरथी हळवूं-खसवूं ते अतिसर्व वि० सर्व करता चडियातु (२) सर्वथी पर अत्यच्छ वि० सदाचारी; शीलवान **अत्यंतीन** वि० अत्यंत चालनारं के अति वेगकी चालनारुं(२)लांबो समय टकी रहेनारुं पिडी देतुं अत्यादित्य वि० सूर्यना तेजने पाछळ अरधारूढ वि० अतिशय वधी गयेलुं (२) न० अति ऊंचुं स्थान; अति उन्नति अस्थारूढि स्त्री० अति उन्नति अजि पुं० जुओ पृ० ५९७ अथर्वविद पु० अथर्ववेदनी जाणकार अदसपूर्वा वि० स्त्री० पहेलां जेनो विवाह नथी थयो तेवी अदर्शन न० जोवुं नहि ते (२) दर्शननो अभाव के लोप(३)डल्टेखनो अभाव (४) अज्ञान **अदान** वि० कंजूस; दान न करे तेवुं (२) मद न झरतो होय तेवुं अदिति स्त्री० जुओ पु० ५९७ **अदूर** वि० दूर नहि तेवुं; नजीक (२) न० नजीकपणुं; सानिध्य **अदृष्टकर्मन्** वि० बिनअनुभर्वा अदृष्टपुरुष पु०वच्चे मध्यस्थी राख्या विना वंने पक्षे जाते ज करेळी मुळेह अदेवसातुक वि० नहेरो वगेरेथी पाणी-नी सींचाई थती होय तेवुं (देव अर्थात् दरसादथी ज नहि) अदेशकाल पु० अनुचित स्थळ अने समय अदोष वि० निर्दोष (२) लेखनना दोषनो अभाव (३) पुं० दोष न होवो ते अदोह पुं० जे समये दोहवुं नक्य नथी ते समय (२) दूध न देवुं ते अद्यतनीय वि० आजन्; अद्यतन **अद्यक्वीन** वि० आजकालमां वने तेवं अद्रब्ध न० नकामी के त्च्छ (२) अपात्र शिष्य अद्रिक्षक्षि पुं० पर्वतनी गुफा के खीण अद्रिसार वि० पर्वत जेवुं कठण (२) अति कठण पुं० लोहूं अद्विसारमय वि० लोखंडनुं बनावेलुं (२) अद्वंद्व वि० भेदबुद्धि के वेर विनानुं अधिकरणभोजक पुं० अदालतनो अधि-कारी; न्यायाधीश **अधिकरणमंडप** पु० अदालतनो ओरडो अधिकरणिक पुं न्यायाधीश (२) सरकारी कर्मचारी अधिज्यता स्त्री० पणछ चडावेली होवी अधित्वत् अ० तारा उपर **अधिदोधिति** वि० अति तेजस्वी **अधिमर्म** अ० मर्मस्थाने अधिया २ प० भागवुं; नासी छूटवुं अधियोध पुं० उत्तम योद्धो के वीर अधिरुह वि० (समासने अंते) --नी **उपर**ेऊगतुं अधिरूषित वि० चंदन वगेरेनी लेप करेल [करनारो अधिरोह पुं० हाथी उपर सवारी अधिवास् १० पुं० सुवासित करवुं अधिश्व १ ७० व्यापवुं; पथरावुं(२) चडवुं (३) उपर मूकवुं अधिश्री वि० ऐश्वर्यवान; श्रेष्ठ **अध्यग्नि अ०** अग्तिनी साक्षीए; अग्नि समक्ष अध्यर्घ वि० अर्धुं वधारे होय तेवुं; दोढुं अध्यवसित वि० निर्णय करेलुं अध्यवसिन् वि० व्रतधारी अध्यंच् वि० श्रेष्ठ; उत्तम अध्यारोपण न० ऊंचुं करवुं ते; ऊभुं करवुं ते (२) चडाववुं के आरोपवुं ते अध्याद्यय पुं० बीजकोश; कर्णिका अध्वनीन,अध्वन्य वि० मुसाफरी करवाने शक्तिभान; वेगे मजल कापत्

अध्वर वि० अकुटिल; शास्त्रीवत (२) भंग के उल्लंघन न थयेलुं; अखंड (३) ईजा के हिंसान करतुं; अहिंस्न (४) पुं० यज्ञ अध्वान वि० चूप; मूंगुं अन् २ प० इवास लेवो (२) जीववुं; हालवुं-चालवुं अनक्षरम् अ० एके शब्द बोल्या विना; [नथी तेवुं म्गा म्गा अनन्यगुरु वि० जेनाथी मोटुं बीजुं कांई अनन्यज, अनन्यजन्मन् पुं० कामदेव अनन्यद्धि वि० स्थिरताथी-एकाग्रपणे अनन्यपरता स्त्री० एकांतिक भिवत के आसन्ति **्रिआसक्त नहिं तेवुं** अनन्यपरायण वि० अन्य (स्त्री)मां अनन्यशासन वि० (पोता सिवाय) बीजो कोई जेनो राजा नथी तेवुं अनन्यसदृश वि० अनुपम; जेनी समान बीज कोई नथी तेवुं अनन्यसाधारण, अनन्यसामान्य वि० असाधारण; बीजा कोईने लागुन पडतुं होय तेवुं (२) एकनिष्ठ अनपत्यता स्त्री० निःसंतानपण् **अन्पार्थ** वि० सकारण एवं अनप्सरस्, अनप्सरा स्त्री० अप्सरा जेवुं नहीं ते; अप्सराने उचित नहि ते अनभिवादक वि० विरोधी; असंमत अनभ्यंतर वि० अणजाण; अज्ञ अनभ्यावृत्ति स्त्री० पूनरावर्तन न करवुं ते; फरीथी न करवुं ते **अनभ्र** वि० वादळ विनानं अनम्र वि० उद्धत; गविष्ठ अनराल वि० वांकुं नहि तेवुं; सीधुं अनुरुषेय वि० अमूरुय अनर्थसंशय पुं० जोखमभरेलुं काम; महान अनिष्ट (२) पैसानु जोखम न होवुं ते रहेवानुं तप अनवकाशिका स्त्री० एक पर्गे ऊभा

अनवधान वि० लक्ष विनानुं; बेच्यान; काळजी विनानुं (२) न० दुर्लक्ष **अनवन** वि० रक्षण न आपतुं अनवम वि० हीन नहि तेवुं; उच्च अनवरतम् अ० सतत **अनवसर** वि० अवकाश के फुरसद वगरनुं (२) उचित काळ विनानुं (३) न०,पुं० फुरसद न होवी ते (४) उचित समय न होबो ते | दुराचारीपणुं अनवस्थान न० संदिग्धता;अनिश्चय(२) अनदस्थित वि० अस्थिर; चंचळ(२) बदलायेलुं; पलटायेलुं(३)व्यभिचारी (४) रहेवा माटे असमर्थ एवं अनवस्थितम् अ० कममां नहि तेम; अव्यवस्थितपणे रसोड अनस् न० गाडुं (२) राधिलुं अन्न (३) **अनस्या** स्त्री० जुओ पृ० ५९७ अनसूष् वि० असूषा के अदेखाई विनानुं अनहंबादिन् वि० गर्वरहित; नम्र अनंगद वि० प्रेम अथवा काम उत्पन्न करनारुं (२) कडुं के बलय त्रिनानुं अनंतक वि० अंत विनानुं; नित्य अनंतगुण वि० अनंत गुणोवाळुं (२) [के छेडा विनानुं असंख्य अनंतपार वि० अनंत विस्तारवाळुं;पार अनंतर वि० पछीनुं (२) नजीकनुं(३) अंतर वगरनुं ; अखंड (४) न० नजीक-पण्; सानिध्य अनंतरज पुं० पोतानी तरत पहेलां के पछी जन्मेलो (औरस) भाई अनंतदिजय पुं० युधिष्ठिरनो शंख अनंतक्षयन न० जुओ पृ० ५९७ अनाकाञ्च वि० पारदर्शक नहि तेवुं(२) पारदर्शक आकाश विनानुं अनाकुरु वि० स्वस्थ; आकळुं नहिं तेवुं (२) ऋमसर एवुं अनाऋंद वि० वेदनाथी मूढ बनेलुं अनागत वि॰ नहि आवेलुं (२) नहि

मळेलुं (३) भावि; भविष्य काळनुं (४) न० भावि समय; भविष्य अनागतविधातृ पुं० भविष्यने माटे तैयारी राखनारुं के संघरों करनारुं अनातुर वि० आतुर के उत्सुक नहि तेवुं (२) थाकचा विनानुं (३) नीरोगी; आरोग्यवान अनात्मज्ञ, अनात्मदेदिन् वि० आत्म-ज्ञान विनानुं (२) पोतानी जावने न जाणनारुं के समजनारुं; मूर्ख; अज्ञान अतात्मसंपन्न वि० मूर्खं – अज्ञ (२) आत्मवान के निग्रही नहि तेबुं अनादर वि० आदर विनानुं (२) पुं० तिरस्कार; अपमान (३) सहेलाई; मुक्केली के महेनत न पडवी ते अनाद्त वि० अनादर करायेलुं;अनादर पामेलुं (२) परवा न करतुं अनार्यसमाचार पुं० दुराचार; दूर्वर्तन अनालोक वि० बीजा वडे प्रकाशित नहि तेवुं; स्वयंप्रकाश अनावाप वि० नवु कशुंन मेळवनारु अनाशिन वि० अविनाशी; अव्यय अनास्वादित वि० चारूयुं के भोगव्युं न होय तेवुं अनाहार पुं० उपवास;भूख्या रहेवुंते अनियंत्रण वि० नियंत्रण के अंकुश विनानुं; स्वतंत्र अनिरिण वि० खाडा-टेकरा विनान् **अनिरुद्ध पुंठ** जुओ पृठं ५९७ अनिर्लोकित वि० बराबर विचार्य के तपास्युं न होय तेवुं अनिर्वाण वि० नवरावेलुं नहि तेवुं अनिबिद वि० थाकेलुं नहि तेवुं अनिर्वेद पुं० खिन्नता के हताशानो अभाव; आत्मविश्वास; हिमत अ*नि*विष्ट वि० न परणेलुं अनीर्ष वि० ईर्ष्या न करतुं अनील वि० श्वेत अनीलवाजिन् पुं० अर्जुन (सफेद अश्वो-

अनोहा स्त्री० उपेक्षा; बेदरकारी अनुकाम वि० स्वेच्छा मुजबनुं(२) कामनायुक्त (३) पुं० योग्य इच्छा अनुकामम् अ० स्वेच्छा मुजब अनुकामीन वि० स्वेच्छा मुजव जनारुं के वर्तनार् अनुकूलयति प० (मनाववुं; रीझववुं) अनुकूलित वि० आदरातिथ्य करेलुं; सत्कारेल्

अनुकंद् १ प० -ना अवाजनो जवाब आपवो;-नो पाछळ अवाज करवो अनुक्षणम् अ० दरेक क्षणे;सतत अनुक्षपम् अ० दरेक राते अनुगीत न० –ना जवाबमां गावुं ते अनुगुणयति प० (अनुकूळ बनाववुं; मनाववु)

अनुघटन न० -नी साथे जोडवुं ते **अनुचरित** वि० अनुसरायेलुं; सेवायेलुं **अनुजन** पुं० परिजन ; परिवार **अनुजन्मन्** पुं० नानो भाई अनुज्ञात वि० परवानगी के संमति आपेलुं (२)शीखवेलुं; भणावेलुं अनुज्ञान न० परवानगी; समिति अनुतर्ष पु० तरस; पीवानी इच्छा (२) तृष्णा (३) मद्य; दारू अनुत्तरंग वि० मोजांथी कंपतुं नहि तेवुं; स्थिर; अक्षुब्ध अनुत्सूत्र वि० सूत्र के नियम बहारनुं नींह तेवुं; अनियमित नहि तेवुं अनुदार विर पत्नीने वळगी रहेतुं के पत्नी वडे अनुसरातुं (२) अनुकूळ के लायक पत्नीवाळुं

अनुदित वि० न कहेलुं के उच्चारेलुं (२) उदय न पामेलुं; न देखातुं अनुद्धत वि० उद्धत नहि तेवुं;विनयी अनुद्रष्ट् वि० हितेच्छु; हित करनारुं अनुध्येय वि० शुभेच्छा दर्शाववा योग्य; कृषा करवा योग्य

अनुनादिन् वि० पडघो पाडत् अनुनायिक वि० मनावनार् अनुनिशीयम् अ० मधराते **अनुनी**ति स्त्री० अनुनय अनुनेय वि० अनुकूळ एवं;सांत्वन पमाडे तेवु(२)जेनो अनुनय करवो जोईए तेवु अनुपदिन् वि० अनुसरत् (२) –ने शोधत् अनुपपन्न वि० अयोग्य; अघटित अनुपस्कार वि० अध्याहार न करवो पडे तेचु

अनुपस्कृत वि० असल; अकृत्रिम(२) रांधेलुं नहि तेवुं (३) संशयरहित (४)स्वार्थ के प्रयोजन विनानुं अनुपातिन् वि० परिणामरूपे आवतुं के प्राप्त थतुं (२) पूं० अनुयायी अनुप्रकीर्ण वि० पूरेपृरुं छवाई गयेलुं अनुप्रवण वि० अनुकूळ; आनंददायक अनुप्रवाद पुं० अफवा; लोकवायका अनुप्रसद् –प्रेरक० खुश करवुं – मनावर्बु अनुप्रहित वि० पाछळ मोकलेलुं अ**नुप्लु १ आ० –**नी पाछळ दोडबुं; अनुसरवुं

अनुभाषितृ वि० जवाबमां वोलतुं के कहेतुं अनुमंतृ वि० अनुमति आपनारुं; थवा देनार्

अनुमंत्र् १० आ० मंत्र वगेरे बोली विदाय करवुं; आशीर्वाद आपी विदाय करवुं अनुमात्रा स्त्री० निर्णय; निरचय अनुमार्गम् अ० मार्गे; रस्ते अनुयात्र न०, अनुयात्रा स्त्री० अनुयायी वर्ग (२) पाछळ जवं - अनुसरवं ते अनुयात्रिक पुं० अनुयायी; हजुरियो **अनुयुक्त** वि० पगारदार शिक्षक पासे भणत्

अनुयुंजक वि० अदेखुं; ईर्घ्याळु **अनुयोव**तृ पुं० पगारदार शिक्षक अनुरागवत् वि० प्रेममां पडेलुं; आसक्त अनुराधपुर न० जुओ पृ० ५९७

अनुरूप वि० –ना जेवुं (२) तुल्य (३) योग्य (४) न० सादृश्य; सरखापणुं (५) उचितपणुं अनुरोधन न० संमति (२) आग्रह अनुसालित वि० खुश के प्रसन्न करायेलुं अनुलीन वि० छुपायेलुं (२) चोटेलुं अनुलोमग वि० सीधी लीटीमां जनारुं अनुलोमार्थ वि० अनुकूळ बोलनारुं अनुवंश पुं० पेढीनामुं; वंशवृक्ष अनुवाक्या स्त्री० देवताना आह्वान माटे होता वडे बोलाती ऋचा अनुविषय पुं अस्वाद **अनुवृत्त** वि० अनुसरतुं(२)सतत चालु रहेतुं (३) कमशः वर्तुलाकार एवुं **अनुवेज्ञन** न० मोटा भाईना लग्न पहेलां नाना भाईनां लग्न थाय ते अनुशासनपर वि० आझांकित;आज्ञाधीन **अनुष्ण** वि० ठंडुं; शीतळ **अनुसरण** न० पूठ पकडवी ते **अनुसंहित** वि० बारीक तपास करेलुं (२)जोडायेलुं;संबद्ध(३) –अनुसार होय तेव् अनुसारक, अनुसारिन् वि० अनुसरतुं (२) पीछो पकडतुं (३) -ने पाले पडतुं (४) बारीक तपास करतुं अनुसृत वि० –ने अनुसरत् (२)वहेतु; सरतुं (३) –नो आशरो लेतुं अनुपदेश पुरु जुओ पुरु ५९७ अनृच् (-च) वि० ऋग्वेदनो अभ्यास नहि करनारुं; जनोई धारण न करवाथी वेदोना अध्ययन माटे लायक नहि एवुं अनृतवादिन् वि० अनृतदाच्, बोलनार् | होवाथी) अनेकप पुं० हाथी(सूंढ अने मोंथी पीतो **अनेकमुख** वि० वीखरायेलुं; जुदी जुदी दिशाओमां जत् अनेकाग्र वि० अनेक कामोमां व्यग्र एवं (२) मूझायेलुं

अनेडमूक वि० बहेरुं अने मूंगुं अनेहस् पुं० समय; काळ अनितिह्य न० परंपराथी नहि स्वीका-अ**नौद्धत्य** न० उद्धतपणानो अभाव (२) समता; शांति ढळल **अन्यसंक्रांत** वि० बीजा तरफ वळेलुं के **अन्यान्य** वि० अन्योन्य; परस्पर अन्योन्यकार्य न० संभोग; मैथुन **अन्वक्षम् अ०** पछीथी; त्यार पछी **अन्वयवत्** वि० कुलोन(२)संबंधवाळुं; परिणामे आवतुं **अन्दबाय** पुं० वंश; जाति; कुळ अन्ववेक्षा स्त्री० विचार; गणतरी **अन्दारभ् १** आ० आरंभ करवो (२) स्पर्शकरवो अन्बारह् १ प० -नी पाछळ चडवुं (चिता उपर) (२) आरोहण करवुं **अन्विष्ट** वि० अन्वेषण करेलुं; शोधेलुं अन्वीक्षिक वि० भलुं इच्छनारुं; हिता-हितनी दरकार करनारु अन्वेषिन्, अन्वेष्ट् वि० तपास करतुं; शोधतुं; खोळतुं **अपघन** पुं० अवयव; अंग अपत्रपिष्णु वि० शरमाळ; लज्जाळु अपथप्रपन्न वि० आडे मार्गे चडेलुं (२) खोटे मार्गे वापरेलुं अपथ्यकारिन् वि० अपराधी (२) शत्रु-वट दाखत्रनार् अपधूमत्व न० धुमाडा विनानुं होवुं ते अपध्वंसज पुं०, अपध्वंसजा स्त्री० मिश्र **–हलका वर्णनी व्यक्ति (मानो वर्ण** पिताना वर्ण करतां ऊंची होय तेवुं) अपनस वि० नाक विनानं अपनिधि वि० गरीव अपपयस् वि० साणी विनानुं अपभय वि० भयरहित; निर्भय अयमन्यु वि० शोकमुक्त अपमार्ग पुं० आडरस्तो (२) पंपाळवुं ते; हाथ फरववी ते

अपमृष्ट वि० जेणे छोडी के तजी दीधुं

अपम्षित वि० असह्य; अणगमत् अपयान न० नासी छूटवुं ते (२) उपेक्षा; बंदरकारी [(हाथ, पग इ०) अपरगात्र न० गौण अवयव के अंग अपरथा अ० बीजी रीते अपरापरम् अ० उत्तरोत्तर; आगळ ने अपरांत पुंच जुओ पुंच ५९७ अपरिकम वि० आसपास फरवाने अशक्तिमान एवं कियुँ होय तेबु अपरिनिष्ठित वि० बराबर स्थापित न अपरिसंस्थित वि० कोई जगाए स्थिर न रहेत् एव् अपरोप पुं० गादीएथी उठाडी मूकवुं ते अपर्याप्तवत् वि० असमर्थ अपर्वन् वि० पर्वनो दिवस न होय तेवुं (२) योग्य समय के मोसम विनानुं अपलापिन् वि० छुपावतुः; ढांकी देतुं अपलाषुक वि० तरस अथवा तृष्णायी मुक्त एवं (२) तरस्यं अपवत्सय बहुलाड नहीं तेम बहुबेदर-कारी नहीं एम सावचेतीथी वर्तवुं अयबस्मित वि० टींगावेलुं; लटकावेलुं अपबाद पु॰ निंदा; गाळ (२) आळ; कलंक (३) सामान्य नियममां बाध (४) हुकम; आज्ञा (५) हरणोने लोभाववा वगाडातुं वाद्य अपवादिन् वि० अपकीर्ति करतुं; निंदतुं (२) विरोध करत् अपवारक पुं० पडदो; आड अपवाहित वि० हांकी काढेलुं;दूर करेलुं अपविष्न वि० विष्न के अंतराय विनान् अपविद्याः स्त्री० अज्ञानः; मायाः; अविद्या अपबोढ़ वि० लई जनारुं; दूर करनारुं अपश्री वि० सौंदर्य के शोभा विनानुं अपष्ठु अ० खोटी रीते; असत्य रीते अपसार पुं॰ बहार नीकळवुं ते; नासी जबुं ते (२)बहार नीकळवानो मार्ग अपसृत वि० नीचे पडेल के गरेल (२) फेलावेल (३) छोडेल; फेंकेल

छे तेवुं | कोई पण भाग अपस्कर पुं०,न०पैडां सिवायनो गाडीनो अपस्नात वि० स्वजनना मृत्यु पछी स्नान कर्युं होय तेवं (बीजी उत्तरिक्या करवा माटे) अपस्पद्म वि० जासूस विनानुं अपस्मारिन् वि० फेफरं -- वाईना व्याधि-अपहार पुं० लाववुं ते; लई आववुं ते अपहारिन् वि० लई जनारुं; उपाडी जनारुं (२) चोरी जनारुं अ**पाकरिष्णु** वि० दूर करनारुं (२) पाछळ पाडी देनारुं; चडियात् अपाकृत वि० दूर करेलुं (२) विनानुं; [नीपजती लागणी अपाकृति स्त्री० कोध, भय वगेरेथी अपात्रभृत् वि० नालायकने पोषत् अपान्त वि० साचुं;खरु अपांसुला स्त्री० सती; अव्यभिचारिणी अपिपरिक्लिष्ट वि० खूब हेरान थयेलु अपुष्कल वि० पुष्कळ नहितेवु (२) होन; अधम अपुंस्का स्त्री० पति विनानी स्त्री अपूर्विन् वि० पत्नी साथे पहेलां परिणीत जीवन न भोगव्युं होय तेवुं **अपृथक्त्वन्** वि० (पुरुष अने प्रकृतिनो) भेद न करी शके तेवुं अपेक्षिन् वि० –नी राह जोतुं;अपेक्षा राखतुं; दरकार करतुं अपोहित वि० दूर करेलुं (२) खंडन करेलुं अ**प्रका**श वि० प्रकाशित नहि एवं **अप्रकाशम्, अप्रकाशे अ०** छूपी रीते; छानी रीते अप्रस्थता स्त्री० अपकीर्ति अप्रतिभट वि० बिनहरीफ एवं अ**प्रतिम** वि० अनुचित अप्रतिमान वि० बिनहरीफ; अनुपम अप्रतिमानुष वि० असाधारण

अप्रतिशासन वि० हरीफ राजा विनानुं ; एकचकी एवं अप्रदक्षिणम् अ० डाबामांथी जमणुं होय तेम (२) प्रतिकुळ होय तेम अप्रधान वि० मुख्य नहि तेवुं; गौण **अप्रवृत्त** वि० कामे नहि लागेलुं(२) नहि प्रेरेलुं (३) अनुचित अप्रसक्त वि० निर्विष्त ; रुकावट विनानुं अप्रसहिष्णु वि० (--ने माटे) असमर्थ अप्रसिद्ध वि० अजाण्युं; अगत्य विनानुं (२) असामान्य अप्रस्ताविक वि० अप्रस्तुत अप्रहत वि० हणायेलुं – धवायेलुं नहीं तेवुं (२) खेडाया विनानुं; पडतर (३) नवुं-कोरुं (वस्त्र) अप्राप्तयौवन वि० यौवनने प्राप्त नहि थयेलु; पुल्त दयनुं नहीं तेवुं अफलप्रेप्स् वि० फळेच्छारहित अफल्गु वि० लाभकारक; उत्पादक **अवंधुकृत** वि० सगां संबंधीओथी नहि करायेलुं; स्वाभाविक रीते ज विकसेलुं अबाह्य वि० बाह्य नहि तेवुं; अंदरनुं (२) परिचित; प्रवीण िअग्नि अबिधन पुं० वडवाग्नि; समुद्रमां रहेलो अबुद्धम् अ० अजाग्ये; बुद्धिपूर्वक नहि मागव् ते अभययाचना स्त्री० अभयदान के रक्षण अभाविन वि० न बनवानुं के न थवानुं एवं अभिकर्षण न० खेतीनुं ओजार अभिकाम वि० प्रेमासक्त; कामातूर अभिक्रमण न० हुमलो; चडाई(२) पासे प्रिसिद्ध करवुं अभिल्या २ प० - प्रेरक० जाहेर करवुं; अभिगुप् १० प० बचावबुं; रक्षण करवुं अभिगुप्ति स्त्री० संरक्षण (२) निग्रह **अभिगृध्न** वि० लोभी अभिगे १ प० -ने गाई संभळाववं (२) गीतोथी गाजतुं करवुं

अभिघार पुं० घी (२) यज्ञमा आहुति उपर घी रेडवुं ते अभिचारक, अभिचारिन् वि० मेली विद्यानो प्रयोग करनार् अ**भिजनन** वि० पोताना खानदानने छाजे तेवुं अभिजनवत् वि० ऊंचा कुळनुं; लानदान अभिजुष् ६ आ० सेववुं; वारंवार जवुं अभिज्ञता स्त्री० ज्ञान; समज अभिज्ञात वि० जाणतुं; समजतुं अभिज्ञानाभरण न० ओळखाण –याद-दास्त तरीके आपेलुं घरेणुं (वींटी) **अभिडीन** न० –नी तरफ अडवुं ते अभितड् १० प० मारवु; ठोकवुं **अभितप् १** प० तपाववुं; गरम करवुं (२) सतापव् अभिताप पं० संताप अभिताम्म वि० खूव रातुं एवं अभिद्रुह ४ प० द्रोह करवो; धिक्कारवुं; इेजा करवा इच्छवं अभिद्रोह पुं० द्रोह; कावतरुं (२) कूरता; जुलम (३) निंदा; गाळ (४) दुःख; त्रास अभिघायिन् वि० व्यक्त करतुं; अर्थं बतावतुं (२) कहेतुं; जणावतुं अभिधाब १ प० –नी तरफ दोडवुं; हुमलो करवो अभिनभः अ० आकाश तरफ;आकाशमां अभिनम्र वि० खूब नीचुं झूकेलुं–वळेलुं अभिनिर्मुक्त वि॰ सूर्योस्त समये ऊंघतुं अने कर्तव्यकर्मीन बजावतुं अभिनिवृत्ति स्त्री० सिद्धि; पूर्णता अभिनिविष्ट वि० तत्पर; परायण (२)दृढ़;स्थिर (३)युक्त;संपन्न (४) जक्की; दुराग्रही (५) प्रवीण अभिनिवेशिन् वि० आसक्त; परायण (२) आसक्ति करादतुं अभिनिष्पत् १ ५० बहार नीकळवं

अभिनिष्यन्द पुं० टपकवुं ते; झरवुं ते अभिनीति स्त्री० चेष्टा; हाबभाव (२) मैत्री; स्तेह अभिनुम्न वि० व्यथित; क्षुब्ध अभिनेय वि० भजववा लायक एवं अभिपत्ति स्त्री० पासे जवुं ते (२) समाप्ति (३) रक्षण (४) उपपत्ति; समर्थन अभिषद्म वि० अति सुंदर अभिपरिष्लुत वि०ड्बी गयेलुं;परिपूर्णं; व्याप्त (२) आक्रमण पामेलुं; –थी व्याकुळ बनेल् | नाश अभिपात पुं०संचार; गति(२)मृत्यु; **अभिपांडु** वि० करमायेलु; निस्तेज अभियूज् १० य० पूजा करवी (२) संमानवुं; मान्य राखवुं अभिपु ३,९ प० पूरवुं; भरी काढवुं अभिष्रणी १ प० मंत्रो वडे पवित्र करवुं अभिप्रवृत् १ आ० –नीपासे जबुंके पहोंचवुं (२)-मां पडवुं; -ने मळवुं अभिप्रवृत्त वि० –मां प्रवृत्त थयेलुं; मंडेलुं; मचेलुं अभिष्लु ४ आ० -नी तरफ कूदवुं(२) अभराववुं; तरबोळ करवुं; डुबाडवुं अभिबल न व्युक्तिथी तपास के परीक्षा करवी ते (काव्य०) अभिभरिसत वि० तिरस्कृत अभिभा २ प० चळकर्बु; प्रकाशर्बु अभिभाषिन् वि० –नी साथे वात करतु; -ने संबोधत अभिभू पुं० अहंकार अभिभूषु १० उ० शोभा अर्पवी अभिमनस् वि० इच्छावाळु; आतुर अभिमनायते आ० (खुश थवुं; प्रसन्न थवुं; उत्सुक थवुं) अभिमन्यु पुं० जुओ पृ०५९७ अभिमर्शक, अभिमर्शिन्, अभिमर्थक, अभिमर्षिन् वि० स्पर्शे करतुं(२)हुमलो

करतुं; बळात्कार करतुं; संभोग करतुं अभिमान न० प्रमाण अभिमुखता स्त्री० हाजरी; सांनिध्य (२) अनुकुळ होवायणुं अभिमुखयति प० (खुश करवुं; प्रसन्न करवुं; वश करवुं) अभिरक्ष् १ प० रक्षण करवुं; मदद करवी (२) शासन करवुं अभिरक्षा स्त्री० बधी बाजुएथी रक्षण अभिराध् --प्रेरक० प्रसन्न करवुं अभिराधन न० मनाववुं ते; खुश करवुं ते अभिरुचित पुं० प्रेमीजन अभिलक्षित वि० चिह्नोबाळुं (२)पसंद अभिलक्ष्य वि० लक्षमां लेवा लायक (२) ताकवानुं होय एवं (३) चिह्नथी अंकित करवा लायक अभिलंघ १,१० प० ओळंगी जबुं; कूदी जबुं (२) उपर धसी जबुं (३) उल्लंधन करवु अभिलाव पुं० लणगी; कापणी अभिलाषक, अभिलाषिन्, अभिलाष्क वि० उत्कट अभिलाषावाळ् अभिली ४ आ० –मां प्रवेशवुं; –मां छुपाववु अभिलीन वि० वळगेलुं (२) आलिंगतुं अभिवक्त वि० तोछडाईशी योलनारुं अभिविकम वि० पराक्रमी; शूरवीर अभिवीज् -प्रेरक० पंक्षी नाखवी अभिवृष् १ प० वरसवुं ; छंटकाव करबो अभिवृष्ट वि॰ वरसाद के छंटकाव थयो होय तेवुं अभिक्षप् १ उ० शाप आपवी अभिज्ञस्त वि० खोटो आक्षेप - आरोप मुकायो होय तेवुं; अपमानित (२) हुमलो करायेलुं; ईजा करायेलुं अभिक्षंक् १ आर० शंका करवी (२) –थी डरवुं अभिशंकित वि० वहेमीलुं; शंकाशील (२) डरत्

अभिषक्त वि० (भूतना) बळगाडवाळुं .(२) पराजित; अपमानित (३) निदित; शापित अ**भिषदण** न० स्नान अभिषु ५ प० जळसिंचन करवुं; छंट-काव करवो; भीजवव् अभिषेचन न० जळसिंचन (२) राज्या-भिषेक (३) राज्याभिषेकनी सामग्री अभिष्टुत वि० स्तवन के स्तुति करेलुं अभिसर पुं० अनुयायी; हजूरियो (२) साथी: सोबती अभिसरि (-रो) स्त्री० अनुसरवुं ते (२) मददे चडवुं ते अभिसंबंध पुं० संबंध; संपर्क अभिसायम्, अभिसायाकंम् अ० सूर्यास्त समये: सांज टाणे अभिसारण न० प्रियतमने संकेत प्रमाणे मळवा जवुं ते ्हिमलो करतुं अभिसारिन् वि० मळवा जतुं; घसी जतुं; अ**भिसांत्व् १०** प० आश्वासन आपवुं अभिस्नेह पुं० आसक्ति; स्नेह अभिस्नवंत वि० रेलावतुं; बक्षतुं अभिहार पुं० उपाडी अवुं ते;लूंटी जवुं ते; चौरी जवुंते (२) हुमलो(३) शस्त्रसज्ज थवं ते (४) नजोक लाववं ते अभीष्मिन् वि० अभीष्सा-इच्छा राखतुं अभुयःसंनिवृत्ति स्त्री० फरीथी संसारमां पाछा न आववुं ते; मोक्ष अभृत वि० भाडे के रोजीए नहीं राखेलुं (२) नहि पोषेलुं अभ्यक्त वि० लेप करेलुं; खरडेलुं अभ्यनुज्ञात वि० संमति आपेलुं; मंजूर राखेलुं (२) क्रपा करेलुं अभ्यमित्रम् अ० दुश्मन सामे के तरफ अभ्यमित्रीण, अभ्यभित्रय पुं० दुरमननो वीरतापूर्वक सामनी करनारी अभ्यर्थता स्त्री० सांनिध्य; समीपता अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थ्य वि० विनंती के

आजीजी करवा लायक; जेने विनंती करवी पडे तेवुं **अभ्यवहारमंड**प पुं० भोजनखंड अभ्यवहित वि० दबायेलुं; बेसाडी दीधेलुं (धूळ इ०) अभ्यसूयित प० (द्वेष करवो; ईध्या करवी) वारवार अभ्यस्तम् अ० आथमवा तरफ (२) अभ्यंतरीकरण त० प्रवेश के परिचय करावदो ते(२)गुप्त वात कहेवी ते (३) निकटनुं मित्र बनावदुं ते (४) अंदर (पेटमां) नाखवुं ते अभ्याकर्षपु० पडकार करवा छाती ठोकवी ते आच्छादन विना अभ्याकाशम् अ० खुल्लुं होय तेम; अभ्यागमन न० आगमन; मुलाकात अभ्यासयोग पुं० चित्तने एक स्वरूपमां परोवतुं ते होय तेवुं अभ्युपस्थित वि० मददमां के सीवतमां अभ्युपाश्रय पुं० शरण; आशरो अ**भघन** पुं० वादळांनी समूह अभ्रविलायम् अ० जेम वादळां वेराई जाय तेवी रीते अभवंद न० वादळांनी हारमाळा के अभ्रावकात्र वि० वरसाद वखते पण खुल्लामां रहेनारु राक्षस इ० अमनुष्य पुं० माणस नहिते - पिशाच, **अमर**कंटक पुं० जुओ पृ० ५९७ अमर्त्य वि० दिव्य; अमर (२) पुं० देव अमलपतत्रिन् पुं० हंस; जंगली हंस अमलयति ५० (निर्मळ-शुद्ध करवुं; उज्ज्वळ करव्) अमलिन वि० निर्मळ; पवित्र **अमंत्रतंत्र** वि० मंत्रतंत्रना प्रयोग विनानं **अमंद** वि० जड नहि तेवुं; चपळ; चालाक (२) अति ; पुष्कळ ; उग्र अमात् वि० अपरिमित; अमर्यादित अमात्, अमातृक वि० मा विनानुं

अमानित्व न० नम्रता; आत्मस्तुति न करवी ते **अभितविकम** वि० अपार पराक्रमवाळुं अभित्रक न० शत्रुनुंकार्यः; अपकार **अभित्र**ता स्त्री० दुश्मनावट; वेर अमित्रायते आ० (दूश्मननी जेम वर्तवुं; धिक्कारबं) अमृज वि० शोभा-शणगार विनानुं अमृतरस पुं० अमृतरूपी के अमृत जेवो रस (२) ब्रह्म अमृता स्त्री० शरीरमां रहेली पांच नाडीओमांनी एकनुं नाम **अमृतायते** आ० (अमृत जेवुं थवुं नीवडवुं) अ**मुषोद्य** न० सत्य वाणी **अमृष्टभोजिन्** वि० स्वादिष्ट भोजन नहि जमनारुं [न शकाय तेवुं अमोच्या वि० छुटीन शके तेवुं; छोडीं **अयत्** वि० प्रयत्न न करतुं अयत्नलभ्य वि० सहेलाईथी प्राप्त थाय असामान्य अयथापूर्व वि० अपूर्व; अप्रतिम; अयथार्थ वि० अर्थ विनानुं; निरर्थक (२) असंबद्ध; अनुचित (३) खोटुं अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः जुओ पु० ६३० अयवत् वि० भाग्यशाळी; सद्भागी अयःकणप न० लोखंडना गोळा फेंकतुं एक प्रकारनु अस्त्र | मळल अयाचितोपस्थित वि० माग्या विना अयान्वित वि॰ भाग्यशाळी; सद्भागी **अयुगसप्ति** पुं० (सात घोडावाळो) सूर्य अयुग्मच्छद पुं० सप्तपर्ण वृक्ष अयोगुड पुं० लोखंडनो गोळो (२) लोखंडना गोळावाळुं एक हथियार अयोदंड पुं० लोखंडनी गदा अरघटी स्त्री० रेंट उपरनो घडो

अरण्यचंद्रिकान्यायः जुओ पृ० ६३० अरण्यधर्म पुं० जंगली अवस्था के दशा (२) वानप्रस्थ धर्म **अरण्यरोदनन्यायः** जुओ पृ०६३० अरण्यसद् वि० वनमां रहेतुं; वनवासी अरविंदनाभ पुं० विष्णु (जेनी नाभि के दृटीमांथी नीकळेला कमळमांथी ब्रह्मा प्रगट थया हता) [कदर विनानुं अरस वि॰ नीरस; स्वाद विनानुं(२) **अराग** वि० राग के आसक्ति विनानुं अराम वि० अळखामणुं; अप्रिय अरालपक्ष्मन् वि० चक्रना आरा पेठे फेलाती पांपणीवाळुं शाळी शत्रु अरिभद्र पुं० मुख्य के सौथी वधु बळ-अरिष्टताति स्त्री० कल्याणपरंपरा अरिष्टशस्या स्त्री० सुवावडीनो खाटलो अरिहन् पुं० शत्रुनुं निकंदन करनारी अरुण पुं० जुओ पृ० ५९८ अरुणिमन् पुं० लालाशः; लाल रंग **अरुंभती** स्त्री० जुओ पृ० ५९८ अरुंधतीप्रदर्शनन्यायः जुओ पु० ६३० अरूपहार्य वि० रूपथी आकर्षी के जीती न शकाय तेवुं **अरूपिन्** वि० आकृति रहित (२) अरोगत्व न० तंदुरस्ती; आरोग्य **अर्कप्रकाश** वि० सूर्य समान प्रकाशित **अर्कमू**ल पुं० आकडानुं मूळ अर्गलित वि० आगळाथी बंध करेलुं अर्चनीय, **अर्चेयितव्य** वि० पूजवा लायक; आदरणीय प्रकाश अर्चि स्त्री० प्रकाशनुं किरण (२) तेज; **अचित** वि० पूजेलुं; सत्कारेलुं अर्च्य वि० जुओ 'अर्चनीय' अ**र्जुन** पुं०जुओ पृ० ५९८ अणंस् न० पाणी; मोजुं; प्रवाह अर्णोक्हन० कमळ अर्थकार्ध्यं न० दरिद्रता अथंकृत्य न० धंधोरोजगार; कामकाज

अरट्ट पुं० जुओ 'आरट्ट'

अर्थकोविद वि० निपुण; अनुभवी अर्थगृह न० खजानो अर्थदर्शन न० पदार्थीने जोवा ते अर्थपद त० पाणिनि-सूत्रोनुं वार्तिक अर्थवत्ता स्त्री० संपत्ति; धन;मिलकत अर्थविद्या स्त्री० व्यवहारज्ञान अर्थविभावक वि० धन आपनारुं अर्थसंग्रह, अर्थसंचय पुंच धन, भिलकत के खजानो मेळववो के संघरवो है अर्थहारिन् वि० धन चोरनारुं अयधिकार पुं असपत्तिनी सोंपणी **अर्थानुयायिन्** वि० शास्त्रने अनुसरतुं अर्थापत्ति स्त्री० जेने न स्वीकारीए तो वस्तुस्थितिनो खुलासो न ज मळी शके एवं अनुमान (न्याय०) (२) एक अलंकार, जेमां एक वात कहेबाथी बीजी वातनी सिद्धि नि:शंक छे, एम बताववामां आवे छे (काव्य०) अथिभाव पुं० याचकपणुं (२) याचना अथिसात् अ० याचकोने आपी दीधुं के वहेंची दीधूं होय तेम अर्धकुक्कुटोन्यायः जुओ पृ० ६३० अर्धजरतीयन्यायः जुओ पु० ६३० अर्थपाद पुं० पाद (बार आंगळ) नो अर्धो भाग अर्धपुलायित पुं० अर्घो ठेकडो भरातो होय तेवी (घोडानी) गति अर्थरथ पुं० रथमां बेसीने लडतो पण पूरो कुशळ नहि तेवो योद्धो **अर्थरात्र** पुं० मध्यरात्रि (२) बार कलाकनी रात्रि **अर्धवैशस** न० अधूरुं खून; अर्थी हत्या अर्धवैदासन्यायः जुओ पुं० ६३० **अर्धहार** पुं० ६४ सेरनी हार **अर्थहारिन** वि० अर्थों भाग रोकत् **अथिकः** न० तीरछी नजर – कटाक्ष अर्थाति पुं० एक बाजु धारवाळी नानी तरवार

अलकनंदा स्त्री० जुओ पु० ५९८ अलकसंहति स्त्री० वाळनी लटो अलकांत पुं० वाळनी लटनो छेडो अलक्ष्मन् वि० अशुभ चिह्नोवाळुं अलक्ष्यजन्मता स्त्री० जन्मस्थान अज्ञात होवुं ते अलभ्य वि० प्राप्त न करी शकाय तेवुं अलय वि० भटकतु; घरबार विनानुं (२) अविनाशी अलवण वि० मीठा विनानुं अलंघनीयता स्त्री० ओळंगी न शकाय के पासे जई न शकाय तेवा होवुं ते अलंतराम् अ० अत्यंत **अलंबुष** पुं॰ तुंबडुं (२) घटोत्कचे मारेलो एक राक्षस (३) रावणनो प्रधान (४) आंगळीओ फेलावेली पंजी अलाघद न० क्षुद्रतानो अभाव; उदारता अलास्य वि० नृत्यरहित अलिकलेखा स्त्री० कपाळ उपरनुं चिह्न अस्तिदाः पुं० ब० व० जुओ पु० ५९८ अलीकसुप्त, अलोकसुप्तक न० ऊंघवानो ढोंग करवो ते अलुप्त वि० कापी नहि नाखेलुं; ओछुं नहि करेलुं (२) सुरक्षित अलोलुप वि० तृष्णा दिनानुं अल्पच्छद वि० ओछा वस्त्रवाळ अरुपता स्त्री०, अरुपत्व न० नानापणुं; मूक्ष्मता (२) बालिशता; तुच्छता अल्पविषय वि० मर्यादित क्षेत्रवाळं; मर्यादित शक्तिवाळ **अवकर्णन** न्० सांभळवुं ते; श्रवण अवखंड १० प० कापवुं; टुकड़ा करवा (२) क्षीण थवुं; व्यतीत थवुं **अवगल १** प० सरको पडवुं; नीकळी पडवुं **अवगुंठ् १०** प० ढांकवु; छुपाववुं; वींटाळवु अ**वगुंठनवत्** वि० बुरखावाळ् अवचर पुं० परिचारक

अवचाय पुं० चूंटवुं के वीणवुं ते अवचूर्णित वि० चूरो करेलुं अवच्छद पु० ढांकण; आच्छादन अवजय पुं० पराजय; —नी उपर विजय **अवज्ञा**त वि० अनादर-अपमान करेलुं अवतित स्त्री० व्यापवं ते अवतप् १ प० -नीचे तेज फेंकवुं ते –प्रेरक० तपाववुं;प्रकाशित करवुं अवतमस न० झांखो अंधकार;अंधारुं अवतस् अ० नीचे; पाताळमां अवतंसक पुं० काननुं घरेणुं (२) कोई पण घरेणु [वापरवुं) अवतंसयति ५० (कानना घरेणा तरोके अवताडन न० कचरी नाखवुं ते; रोळी नाखवुं ते अवतारण न० नीचे ऊतरे तेम करवुं ते (२) वळगाड (भूतप्रेतादिनो) (३) (ग्रंथनी) प्रस्तावना; उपोद्धात् (४) अवतरण: प्रागटच अवधूपित वि० धूपथी सुवासित एवं अयनतांग वि० नीचे झूकता अवयवो-वाळुं (सुंदरतानी निशानी) **अवनम्र** वि० नमेलुं; झूकेलुं **अवनाम** पुं• पगे पडवुं ते (२) नीचे नमाववुं ते **अवनामिन्** वि० नीचे नमतुं अवनिज् ३ उ० धोवुं; साफ करवुं −प्रेरक० धोई कढाववुं (२)व्यापवुं; भरी काढवं अवनियति, अवनिषाल पुं० राजा अवनीध्र पुं० पर्वत जिवा योग्य अवनेय वि० लई जवा योग्य; दोरी अवपत् १ प० नीचे पडवुं ; नीचे ऊतरबुं; उपर धसी जवु अवपतित वि० नीचे पडेलुं; गरी पडेलुं अवपाशित वि० जाळमां पकडेलं के पाशमां जकडेलुं अवप्लुत वि० कूदी पडेलुं(२) नाठेलुं **अवबंध् ९** प० बांधवुं; जकडवुं **अवबुद्ध** वि० जाणेलुं; शीखेलुं **अवबोधित** वि० जगाडेलुं **अवभंग** वि० हरावतुः, नमावृतुं (२) खंडित करेलु; ईजा पमाडेलुं **अवभंज् ७** प० भागी नाखवुं; तोडी [अंकुशने न गांठे) **अवमताकुरा** पुंच मदमा आवेलो हाथी (जे अवमर्दन वि० कचरी नांखतुं; पीसी नाखतुं (२) न० दबाववुं-चंपी करवी ते(३) दमन; कचरी नाखवुं ते अवमदिन् वि० ठार मारनारुं अवमर्ष पुँ० हमलो (२) आलोचनाः; **अवमानिन्** वि० अवगणना करतुं; तिरस्कार करतुं ; किमत ओछी आंकतुं **अवमूर्च्छ्** शांत पडवुं (तकरारनुं) अचमृद् ९ प० कचरी नाखबुं; पीसी नाखवू अवया २ उ० जाणवुं; समजवुं (२) टाळबुं; दूर करबु **अवरक्षणी** स्त्री० घोडाओने बांधवानुं दोरड् अवरजा स्त्री० नानी बहेन **अवरुग्ण** वि० तूटेलुं; भागेलुं (२)रोगिष्ठ अवरुदित वि० जेना उपर आंसु पड्यां होय तेवुं अवरुद्धिका स्त्री० अंतःपुरमां अळगी राखेली स्त्री [घालतु अवरोधक वि० विघ्न करतुं (२) घेरो अवरोधन न० घेरो (२) विघ्न; डखल (३) अंतःपुर (राजमहेलन्ं) (४) पत्नी; राणी अवरोधिका स्त्री० अंतःपूरनी स्त्री **अवरोपित** वि० उखेडी नाखेलुं (२) नीचे उतारी पाडेलं अवलग्न वि० वळगेलुं; संबद्ध; लटकतुं अवलंबिन् वि० लटकर्त् (२) अवलंबन **छेतुं (३) आधार आ**पतुं

अवली ४ आ० चोटवुं; लटकवुं (२) वळवुं; नमबुं (३) –मां छुपाबुं अवलुप ६ उ० अवलुपति-ते । उपर धसी जवुं (जेमके, शिकार उपर) (२) स्नाई जवुं; गळी जवुं (३) कचरी नाखवुं; दबावी देवुं अवलोकक वि० –नी तरफ जोतुं; –ने जोबा इच्छतुं अवलोकिन् वि० जोतुं; निहाळतुं **अवश**प्त वि० शापित अवशिका स्त्री० स्वतंत्र एवी स्त्री अवष्टंभमय वि० सोतानुं;सोनेरी(२) एटवाळुं; बहादुरीवाळुं **अवसादक** वि० खेद-थाक-मूर्छा करतुं **अवसा**दिन् वि० हताश थतुं; बेसी पडतुं; मूछित थतुं **अवसुप्त वि०** ऊंघेलुं **अवस**् १ प० व्यापवुं; फेलावुं **अवस्कन्न** वि० हुमलो करायेलुं; बळा-त्कार करायेलुं अवस्कंदिन् वि० हुमलो करतुं; बळात्कार **अवस्नात** वि० नाहेलुं पाणी **अवस्फूर्ज**्अवाजथी भरी काढवुं **अवस्फ्जित** न० गर्जना | काढवू अवहस् १ प० हांसी करवी; हसी **अवहसन** न० हांसी; ठेकडी अवहास्य वि० हांसी करवा लायक **अवहीन** वि० त्यजायेलुं; छोडी दीघेलुं; पाछळ मुकेलुं **अवं**ति (--ती) स्त्री० जुओ पृ० ५९८ अवाष्त्रस्य वि० मेळववा योग्य अवार्य वि० दूर करी न शकाय तेवुं; वारी न शकाय तेर्बु अविकारिन् वि० बदलाय नहि तेवुं; अफर (२) बफादार **जविक्षत** वि० अखंडित; ईजान पामेलुं अविक्षित वि० ईजा न पामेलुं; ओछुं न थयेलुं अविक्षोभ्य वि० अजेय; क्षोभ न पामे

अविगान, अविगीत वि० विसंवाद रहित **अविचारणीय** वि० विचार्या के प्रश्त पुछचा विना पालन करवा योग्य **अविच्छिन्न** वि० सळग होय तेवुं; अखंडित (२) सामान्य अविज्ञेय वि० जाणी के ओळखी न शकाय तेवुं **अवितर्कित** वि० नहि कल्पेलुं अवितु वि० रक्षणहार अविद अ० ओ रे! ओ रे! अविदित वि० जाण्या विनानुं; अजाणमां ज गयुं होय तेवुं **अबिदूर वि० नजी**क होय तेवुं अविधवा स्त्री० जेनो पति जीवतो होय तेवी स्त्री अविधा अ० 'घाजो!' 'घाजो!' (एवो मदद माटेनो पोकार) अविधि वि० विधि के नियम प्रमाणे न होय तेवुं (२) पुं० ब्रह्म (जेनो निर्देश न करी शकाय) अविधेष वि० काबुमां न रखाय तेवुं अविनाश पुं० अमृतत्व; सोक्ष; निर्वाण **अविनिर्णय** पुं० अनिश्चय अविप्रहत वि० अवर-जवर विनानुं **अ**वियुक्त वि० संयुक्त; अविभक्त **अविरलित** वि० खुब नजीक होय तेवुं; वच्चे अंतर विनानुं अविरुद्ध वि० विरुद्ध के विसंगत नहि तेबुं (२) योग्य; उचित अविरोध पुं० सुसंगतता; विरोधी न होवुं ते (२) डखल के रुकावटनो अभाव विनान् अविलुप्त वि० अक्षत; ईजा पाम्या अविश्वस्त वि० विश्वासुन होय तेवुं; विश्वास न करवा लायक अवीक्षिन् वि० न जोतुं; जोवा न पाम्युं होय तेवुं अवृक्ष वि अझाड विनान्

अभाव (२) जेठ अने अषाढ महिना

(चालता होवा ते)

अवृथार्थ वि० सफळ; निरर्थक नहि [योग्य अवेक्षणीय वि० आदरणीय; विचारवा अवेक्षमाण वि० जोतुं; निहाळतुं अवेक्षा स्त्री० जोवु ते; निहाळवु ते (२) लक्ष; काळजी अवेदनाज्ञ वि० पीडा नहि जाणनारुं अव्यक्तम्ति वि० जेनुं स्वरूप प्रगट के स्पष्ट नथी तेवुं अन्यक्तादि वि० जेनो आरंभ अप्रगट छे एवं; जेनी पूर्वनी स्थिति जोई शकाती नथी एवं अच्यक्तिक वि० अव्यक्त; अप्रगट अञ्यधिन् वि० वेदना के पीडाधी रहित (२) पीडा न करतुं (३) भयरहित; निर्भय अव्यपेक्षा स्त्री०असावधानता; बेकाळजी अव्ययात्मन् वि० अविनाशी; नित्य स्वरूपवाळुं (२) पुं० आत्मा अव्याक्षेप पुं० विलंब के मूझवणनो अभाव अध्याहुत न० मौन अविच्छिन्न अव्युच्छिन्न वि० सतत-चालु एवुं; अव्यत वि० धार्मिक विधि के विधान न पाळतुं होय एवं अञ्चल्तन पुं०, न० अपशुकन अञ्चकुनीभू अपशुकन बनी रहेवुं अज्ञम् अ० कल्याणकर न होय तेम अञ्चल्य न० जे शस्त्र नथी ते (रणमां शस्त्रथी थयेलुं मरण यशस्वी गणाय) अञ्चात वि० शांति विनानुं; जंप विनानुं अशिथिल वि० ढीलुं नहि तेवुं; दृढ (२) असरकारक; खातरीवाळुं अशिरस्क वि० मस्तक विनान् अशिशिररिम पुं० सुर्ये **अशीतल** वि० गरम; उष्ण अशोतिभाग प्० एंशीमो भाग अशुचिता स्त्री० गंदकी; स्वच्छतानी

अञ्चल्य न० खाली न होवुंते (२) एकलुं न रहे माटे साथे मोकलवानुं ते अञ्चेषयति प० संपूर्ण रीते पूरुं करवं अञ्चोकवनिका स्त्री० अञ्चोकवृक्षोनी वाटिका के उपदन अशोकवनिकान्यायः जुओ पृ० ६३० अक्नीतपिबता स्त्री० खानपान माटे (उजाणीमां) आमंत्रण अक्सक पुं० जुओ पुं० ५९८ अक्सकाः पुरुबरुवरुते देशना लोको अञ्मकुट्ट, अञ्मकुट्टक पुं० वानप्रस्थ **अञ्चलोद्धन्यायः** जुओ पृ० ६३० अश्रुति वि० कान विनानुं (२) पुं० साप (३) स्त्री० न सांभळवुं ते; विस्मृति अश्रुपूर्ण वि० आंसु भरेलुं अश्रमुख वि० आसु रेलावतुं अञ्चकर्णक पुं० एक वृक्षः; साग अश्वचर्या स्त्री० घोडाओनी संभाळ अञ्चलीर्थं न० गंगा नदीने किनारे कान्यकुब्ज नजीक आवेलुं एक तीर्थ अक्ष्वत्थामन् पुं जुओ पृ ५९८ अञ्चपति पुं० जुओ पृ० ५९८ अइवमेधिक वि० अश्वमेध माटे योग्य; अरुवमेध संबंधी अञ्चवाजिन् वि० घोडानी शक्तिवाळुं अश्ववार पुं० अश्वपाल; घोडानी देखरेख राखनारो अक्ष्यिनीकुमार जुओ पृ० ५९८ अक्रवीय वि० अक्व संबंधी (२) न० घोडाओनो समूह अष्टपादिका स्त्री० एक फूल-वेल **अष्टादशन्** वि० अढार अष्टावऋ पुं० जुओ पृ० ५९८ अष्टाशीत स्त्री इठ्ठयाशी अच्छीला स्त्री० गोळ पथ्यर

असकौ वि॰ आ के ते(२)आ दुष्ट; [सिद्धांत के आचार असत्पथ पुं• खराब मार्ग (२) खराब असत्यसंघ वि० वचन नहि पाळनारुं; फिंक वृते देगाबाज असन पुं० एक वृक्ष (२) न० नाखबुं-असपत्न वि० हरीफ पत्नी - शोक विनानुं (२) हरीफ के दुश्मन नहि तेवुं; मित्रताभर्युं (३) शत्रुरहित; निष्कंटक असमग्रम् अ० पूरेपूरु नहीं तेम;अधूरुं असमय पुं० मोसम के ऋतुन होवी ते (२) योग्य नहि तेवो समय असमान वि० अजोड; अनुपम असमाप्त वि० अपूर्ण; अधूरुं **असमायुक्त** वि० बराबर नाथेलुं के पलोटेलुं नहीं तेवुं असवर्ण वि० जुदी जाति के वर्णनुं असहापीड वि० सहन न थई शक्तिवी पीडावाळुं असंकल्पित वि० नहि कल्पेलुं असंगचारिन् वि० रुकावट विना फरत् असंपूर्ण वि० अपूर्ण; आंशिक असंबोध पुं० अज्ञान असंभेद्य वि० संबंधमा न लाववा जेवूं असंमुख वि० विमुख असरोध पुं० ईजान करवी ते असंविदान वि० अज्ञानी; मुर्ख **असंवृत** वि० उघाडुं; खुल्लु असंशब्द्य वि० बोलवा के उल्लेख करवाने अयोग्य असंसक्त वि० असंबद्ध (२) अनासक्त असंहार्य वि० रोकी न शकाय तेवुं(२) बीजे के अवळे मार्गे न दोराय तेवुं असाद वि० नहि थाकेलुं; अश्रांत असारता स्त्री० रस के सार विनाना होवापणुं; तुच्छता (२) तात्त्विकता न होवी ते असाहसिक वि० साहस न करतुं; अविचारीपणे न वर्ततुं

असांनिध्य न० नजीक नहि होवापणुं; गेरहाजरी [नहीं तेवुं **असांप्रदायिक वि**० परंपरा प्रमाणेनुं असि अ० 'तुं' के '-तें'(एवा अर्थमां) **असिक्नी** स्त्री० जुओ पृ०५९८ असिचर्या स्त्री० शस्त्रोनो अम्यास असितनयन वि० काळी आंखोवाळ् असितयवन पुं० कालयवन (यादवोनो-कृष्णनो एक प्रबळ शत्रु) असिताश्मन् पुं० नीलम असिद्धार्थ वि० कृतकृत्य नहि बनेलुं; पोतानुं लक्ष्य सिद्ध न थयुं होय तेवुं असिधारा स्त्री० तलवारनी धार **असिहस्त** पुं• जमणा हाथमां राखेली तलवारथी मारवुं ते असुतर वि० दुस्तर;पार न कराय तेवुं **असुभंग** पुं० प्राणनो नाशः; मृत्यु **असुमत्** वि० जीवतुं (२) पुं० जीवतुं प्राणी नाशवंत असुरक्ष वि० रक्षण करवुं मुक्केल; असुरद्रुह् पुं० देव (असुरनो शत्रु) असुलभ वि० मुश्केलीथी प्राप्त थाय तेवुं असुसू पुं० बाण; शर अनुचित **असुंदर** वि० सुंदर नहि तेवुं (२) असूय वि० नाख्य असूयति प० (ईर्ष्या करवी; नाखुश थवुं; गुस्से थवुं) असूर्त वि० अप्रेरित (२) अंभारियुं (३) अवरजवर विनानुं; अजाण्युं असृष्टान्न वि० अन्नदान विनानुं असेवितेश्वरद्वार वि० धनवानोनां आंगणां न सेवतुं – न याचतुं असौम्यकृत् वि० त्रास आपनारुं अस्तकरुण वि० निर्देय अस्तगिरि पुं अस्ताचळ अस्तनिमग्न वि० आधमेलुं; अस्त पामेलुं अस्तब्ध वि० दृढ नहि तेवुं (२) चालाक ; चपळ ; थाकेलुं नहि तेवुं (३) हठीलूं के दुराग्रही नहि तेवुं;नम्र

अस्तम् अ० घेर (२) अस्ताचळ उपर (३)दूर थाय के अंत आवे तेम अस्तमित वि० आथमी गयेलुं; अंत आव्यो होय तेवुं;दूर थयुं होय तेवुं अस्तरुष् वि० जेनो कोघ शांत थयो [बीखरायेलुं छे तेव् अस्तब्यस्त वि० वेरणछेरण; आमतेम अस्तशिखर पुं० अस्ताचळनी टोच अस्तसमय पुं० आथमवानी वेळा(२) आखरी घडी अस्तसंख्य वि० असंख्य अस्त्रग्राम पुं० हथियारीनो ढगलो-समृह अस्त्रभृत् पुं० अस्त्र फेंकनारो; अस्त्रधारी अस्त्रयंत्र न० एक प्रकारनु अस्त्र अस्त्रवेद पुं० अस्त्र फेंकवानी विद्या अस्त्रिन् वि० अस्त्र वडे लडतुं;अस्त्रधारी अस्थायिन् वि० कायमी नहीं तेवुं; नाशवंत अस्थास्तु वि० अधीरु ्अत्यंत कठोर **अस्थिबंधन** न० स्नायु अस्थिभेदिन् वि० हाडकाने मेदे तेवुं -अस्थिस्नेह पुं० मज्जा अस्नेहदीपन्यायः जुओ पृ० ६३१ अस्पट्ट वि० स्पर्श कर्या विनानुं (२) (शब्दथी) उल्लेखित नहि तेवुं अस्त्र पुं० खूणो अस्बर वि० खराब अवाजवाळु(२) अस्पष्ट के धीमा अवाजवाळुं अस्वाधीन वि० अस्वतंत्र; पराधीन अहरादि पुं० परोढ; सवार अहर्दिवम् अ० दररोज; दिवसे दिवसे अहल्या स्त्री० जुओ पृ० ५९८

अहंजुष् वि० पोतानो ज विचार करनारुं

अहंदूर्व वि० प्रथम होवानी इच्छावाळ्

अहार्यस्य न० कोई हरी जई न शके

[तेवुं होबापणुं

अहंयु वि० अहंकारी; स्वार्थी अहंबादिन वि० पोताने विषे ज कहेतुं; अहिकुंडलन्यायः पुं० जुओ पृ० ६३१ अहिच्छचा स्त्री० जुओ पृ० ५९८ अहितहित न० सारुं नरसुं अहिमदीधिति, अहिममयूल, अहिम-रोचिस् पुं० सूर्य शिन्यमनस्क **अहृदय** वि० हृदय विनानुं (२) बेध्यान; **अहेतु** वि० निष्कारण; कृत्रिम नहि तेबुं; स्वाभाविक अह्न पुं० दिवस ('अहन् 'नुं समासमां थतुं एक रूप; जेमके, 'मध्याह्न') अही वि॰ निर्लज्ज(२)स्त्री ॰ निर्लज्जता अंकुशग्रह पुं० (हाथीनो) महावत अंगद पुं० जुओ पृ०५९९ अंगसंहति स्त्री० शरीरनो बांधो; शरीरनी सुरेखता [राजा-कर्ण अंगाधिप, अंगाधील पुं० अंगदेशनी अंगद्धकारिन् वि० वेचवा माटे कोलसा तैयार करनार् अंगिरस पुं० जुओ पृ० ५९९ अंगुलित्र, अंगुलित्राण न० बाणावळीओ पणछथी आंगळीने बचाववा पहेरे छे ते खोळी अंगुष्ठमात्र वि० अंगूठा जेटलु; तेटला अंघो अ० गुस्सो के दिलगीरी बतावनार उद्गार वाळी स्त्री अंचितभ्रं स्त्री० वांकी के सुंदर भमरो-**अंजना** स्त्री० जुओ पृ०५९९ **अंजलिक पुं**० अर्जुनना एक बाणनुंनाम (२) उंदरना मुखना आकारनुं बाण अंजलिकर्मन् न० हाथ जोडवा ते; नम्रताथी नमस्कार करवा ते अंजलिका स्त्री० नानी उंदरडी अंजलिकावेध पुं० युद्धनो एक व्यूह अंडक न० नानुं ईंडुं (२) घूमट अंतरज्ञ वि० रहस्य के तत्त्व जाणनार्; डाह्ये; शाणुं (२) अगमचेतीबाळुं **अंतरतस्** अ० अंदर; वचमां **अंतरय** पुं० अंतराय

अहंकारी

अंतरयति प० (अंतराय करवो; विरोध करवो; दूर खसेडी काढवु;धकेलवुं; वच्चे आवे तेम करवुं; बदली काढवुं) अंतरस्थ वि० अंदर रहेलुं (२) वच्चे आवतुं होय तेवुं (३) अंतरमां बेठेलुं (जीव) जितुं के फरत् अंतरिक्षगत वि० आकाशमां – हवामां अंतरिरम्, अंतरिरि अ० पर्वतमा **अंतर्जानुदाय** पुं० ढींचण बच्चे हाथ राखीने ऊंधनारो अंतर्दीपिकान्यायः जुओ पृ० ६३१ अंतिधि स्त्री० देखाता बंध थवुं ते अंतर्भू १ प० –मां समावेश थवो **अंतर्मदावस्थ** वि० मद झरवानी दशा अंदर छुपाई रही होय तेवुं; मदमत्त थवानी तैयारीमां होय तेवुं विस्त्र अंतर्वस्त्र, अंतर्वासस् न० अदर पहेरवान् अंतर्वेदि (-दी) स्त्री० जुओ पृ० ५९९ **अंतइचर** वि० अंदर व्यापेलुं – फरतुं **अंतसंदलेष** पुं० साधी; जोडाण अंतःकोप पुं० आंतरिक क्षीम (२) आंतरिक गुस्सो अंतःपातित, अंतःपातिन् वि० अंदर दाखल करेलुं के आवेलु (२)-मा समावेश थतो होय तेवुं अंतःप्रकृतिप्रकोपज वि० आंतरिक विखवादथी जन्मेलूं अंतःसरल वि० अंदरसाने सरळ एवं

(२) सरल (नामनां) वृक्षो अंदर आवेलां होय तेवुं अंतेबासित्व न० शिष्य होवापणुं **अंतोष्ठ** पुं० अधरोष्ठ; नीचलो होठ **अंत्यावसायिन्** पुं० हलकामां हलकी वर्णनो माणस (चांडाल ने निषादी स्त्रीथी थयेलो) अधिक पुं० जुओ पृ०५९९ अंधकवर्तकीयन्यायः जुओ पृ०६३१ **अंधगजन्यायः** जुओ पृ० ६३१ **अंधगोलांगूलन्यायः** जुओ पृ० ६३१ अंधदर्पणन्यायः जुओ पृ० ६३१ अंधपरंपरान्यायः जुओ पु० ६३१ **अंध्राः** पुं० ब० व० जुओ पु० ५९९ अंबरलेखिन् वि० गगनचुंबी;खूव ऊंचुं **अंबरीष** पुरु जुओ पुरु ५९९ अंबरीषक पुंच गुप्त अग्नि **अंबच्ठाः** पुं०ब०व० जुओ पृ० ५९९ **अंबा** स्त्री० जुओ पृ० ५९९ अंबालिका स्त्री० जुओ पु०५९९ अंबिका स्त्री० जुओ ए० ५९९ अंबुकिया स्त्री० पितुओने जलांजिल **अंबुवेग** पुं० पाणीनो मोटो प्रवाह अंबुकृत न० रींछनो हणहणाट अंभोजयोनि पुं० ब्रह्मा (विष्णुना

आ

आकंप १ आ० ध्रूजवुं, कंपवुं आकंप पुं० ध्रूजवुं — कंपवुं ते आकंपित वि० ध्रूजेलुं; कंपतुं आकांशजननी स्त्री० किल्लानी दीवा-लमां राखेलुं बाकुं आकाशबद्धलक्ष वि० नजरे न देखाती चीज'तरफ नजर ताकी होय तेवुं (पागल) [६३१ आकाशमुख्टिहननन्यायः पुं० जुओ पृ० आकुलत्व न० भीड (२) व्याकुळता आकुलीकु ८ उ० भीड करवी; भरी काढवुं (२) व्याकुळ करवुं आकुंचन न० वांका वाळवुं ते; संकोचवुं के संकोचाबुं ते (२) ढगलो करबो ते; भेगुं करवुं ते (३) एक लक्करी हिलचाल आकृष्टि स्त्री० आकर्षण (२) खेंचीने वाळवुं ते (धनुष्य) [मंत्र आकृष्टिमंत्र पुं० आकर्षण करवा माटेनो

नाभिकमळमां जन्मेला)

अंमय वि० जलमय; पाणीनुं बनेलुं

आकेकर वि० अर्धु बंध तथा अर्धु खुल्लुं एवं (आंख) आकोप पुं० हळवो गुस्सो आकौशल न० कुशळतानो अभाव आक्रांतितः अ० बळजबरीथी **आक्रीडपर्वत** पुं० क्रीडा के विहार माटेनो (नानो के कृत्रिम) पर्वत आखंडलसूनु पुं० इंद्रनो पुत्र (अर्जुन) आस्यात न० प्रयाण करवा माटे शुभ महर्त कहेवुं ते (मंत्रेला दुंदुभिना ध्वनि उपरथी) **आस्यायक** वि० कहेतुं; समाचार आपतुं (२) पुं० संदेशवाहक; दूत (३) छडी पोकारनारो आपतुं **आस्थायिन्** दि० कहेतुं; आगत न० आगमन; आवी पहोंचवुं ते आगस्कृत् वि० अपराधी आगस्त्यायन वि० अगस्ति संबंधी आग्रव वि० अगर संबंधी [ऋत्विज आग्नीध्र पुं ० यज्ञनी अग्नि सळगावनार-आग्नेय वि० अग्नि संबंधी; अग्निन् (२) अग्नि जेवुं(३)अग्नि प्रज्वलित करे तेवुं (घी इ०) (४) जठराग्नि वधारनारुं (५) न० कृत्तिका नक्षत्र (६) भस्म लगावीने स्नान करवुं ते आचमनधारिन्, आचमनवाहिन् पुं० पाणी भरनारी आचारधमग्रहण न० विधि अनुसार धुमाडो स्वासमां लेवो ते आचारलाज पुं॰ (ब॰व॰) वधाववा माटे फेंकाती धाणी (राजा इ०ने) **आधार्योपासना न०** गुरुसेवा **आचांति** स्त्री० मों घोवा कोगळो करवो **आचेष्टित न० मा**थे लीघेलुं; करेलुं आच्छादनवस्त्र न० नीचेना भाग उपर पहेरातुं वस्त्र (उत्तरीयथी ऊलटुं) आच्छादिन् वि० ढांकतुं; छुपावतुं आच्छ्रित वि० मिश्रित (२) नखना उझरडावाळु

आज्यपाः पुं० ब० व० पितृओनो एक वर्ग (वैश्यलोकोना) आज्ञाकरत्थ न० दासपणुं; पराधीनता आज्ञाभंग पुं० हकम उथापवी ते आटरूष पुं० एक वृक्ष (अरड्सी) आढधंकरण वि० श्रीमंत बनावनारुं आहर्चभविष्णु वि० श्रीमत बनतुः अग्रणी बनत्ं आतपलंघन न० लू लागवी ते आतपवत् वि० सूर्यनो प्रकाश पडतो होय तेवुं **आतपवारण** न० छत्र; छत्री आतिथेयी स्त्री० परोणागत आतिशयिक वि० पुष्कळ; अतिशय आतिष्ठद्गु अ० गायो दोहवाय त्यां मुधी (सांज पछी कलाक के दोढ़ कलाक सुधी) **आत्मकर्मन्** न० स्वकर्तव्य **आत्मकृत** वि० पोते करेलुं **आत्मघातिन्** वि० आत्महत्या करनारुं आत्मन्नाण न० आत्मरक्षण (२) सिपाई; संरक्षक | होय ते **आत्मना सप्तम** पुं० पोते जेमां सातमो आत्मलाभ पुं० जन्म; उत्पत्ति; मूळ **आत्मवत्ता** स्त्री० आत्मसंयम (२) शाणपण आत्मवर्ग्य वि० पोताना पक्षन् - वर्गन् आत्मशक्ति स्त्री० पोतानुं बळ के तेज आत्मसम वि० बरोबरियुं; पोताना सरखुं आत्मसंस्थ वि० आत्मामां स्थिर एवं आत्मंभरि वि० पेटभरुं; आपमतलबी आत्मानुगमन न० सेवामा जाते हाजर रहेवुं ते आत्मोदय पुं० पोतानी उन्नति आत्रेयी स्त्री० अत्रिकुळमां जन्मेली स्त्री (२) अत्रिनी पत्नी (३) सगर्भा स्त्री (४) रजस्वला स्त्री

जादाय अ० लईने ('साथे' एवा अर्थमां

पण वपराय छे)

आदाल्म्य न० निर्भयता आदितः अ० शरूआतमाः; प्रारंभथी आदित्सु वि० लेवानी इच्छावाळुं आदिदेव पुं० मुख्य-प्रथम देव(नारायण, विष्णु, शिव, ब्रह्मा) **आदिपूरुष पुं॰** सृष्टिनो अधिष्ठाता (२) विष्णु (३) श्रीकृष्ण आदिभव वि० सौथी प्रथम उत्पन्न थयेलुं (२) पुं ० ब्रह्मा (३)विष्णु (४)मोटो भाई आदिष्टिन् वि० हुकमं करनारुं (२) पुं० शिष्य; ब्रह्मचारी (ब्राह्मण-वर्णनो) (३) प्रायश्चित्त करनारो आदृश् १ प० जोवुं; निहाळवुं –प्रेरक० दर्शाववुं **आवृष्टिप्रसरम्** अ० दृष्टि पहोंचे त्यां आदेशकृत् पुं० गामनी मुखी आदौ अ० प्रथम ज; प्रथमथो आद्यकालिक वि० मात्र वर्तमान जोनारुं आर्धामक वि० धर्म विरुद्धनुं; अन्यायी **आधाराधेयभाव** पुं० आधार के पात्रनो आपेली के मूकेली वस्तु साथेनो संबंध के तेना उपर थती असर आधिरथि पुं० कर्णनुं नाम **आध् १**०प० योभाववुं; अध्धर राखवुं आधेय न० आधान; मूकवुं ते **आनर्तपुर** न० जुओ पृ० ५९९ आनर्ताः पुं० ब० व० जुओ पृ० ५९९ **आनंदपुर** जुओ पू० ५९९ **आनंदि** पुं० आनंद; सुख आनाह पुं० बांधवुं ते (२) मळ के मूत्रनो अवरोध ित्रमाणे आनुपूर्व्येण अ० एक पछी एक; ऋम **आनुबात्र** न० अनुचर; परिवार **आनुसूय** वि० अनुसूयाए आपेलूं **आपगा** स्त्री० जुओ पु० ५९९ आपगेय पुं नदीनो पुत्र; भीष्म आपणवीथिका स्त्री० दुकानोनी पंक्ति; बजार **सापव** पुं० वसिष्ठ

आपातबुष्प्रसह वि० जेनो हुमलो अस**ह्य** असह्य एवु आपातदुःसह वि० पहेला हुमला वसते आपूर्णवि० पूर्ण आप्यान वि० जाडुं; मजबूत; स्थूल (२) खुश ; संतुष्ट (३) न० विकास ; युद्धि (४) प्रेम **आबाल्य** न० बाळपण सुघ्धां (एवी) **आबह्य अ० ब्रह्मा**पर्यंत; ब्रह्मा सुघ्धां आभंग न० थोडीक वांकी वळेली आकृति आभीराः पुं०ब०व० जुओ पृ०५९९ आमकुंभ पुं० काची माटीनो घडो आ**मज्वर** पुं० एक प्रकारनो ताव (जेमां बाफ-परसेवो लाववो जोईए) आमलक न० आंबळ् आमंत्रित न० वातचीत (२) संबोधन आमिक्षा स्त्री० गरम दूध अने दहींनुं मिश्रण आमित्र वि० शत्रुपक्षीय आमीलन वि० आंखो मींचवी ते आमोदन न० आनंदित करवुं ते (२) सुगंधित करवुं ते आम्नातिन् वि० वेदविद्; वेदाभ्यासी अम्नायवत् वि० परंपरागत शास्त्र-ज्ञानयुक्त आस्रतेकपितृतर्पणन्यायः पु० जुओ पृ० **आम्रेड्** –प्रेरक० पुनरावृत्ति करवी आयतलेख वि० लांबी रेखावाळूं आयतायति स्त्री० लांबो वखत टकी रहेवुं ते िते समये आयतीगवम् अ० गायो घेर पाछी फरे आयथातथ्य न० यथायोग्य – यथोचित न होवुं ते आयल्लक पुं० अधीराई; उत्कंठा आयस्त वि॰ पीडा के त्रास पामेलुं(२) ईजा पामेलुं (३) न० मोटो प्रयास आयान न० आगमन (२) स्वभाव (३) घोडानो एक शणगार **आयामवत्** वि० लांबुं; विस्तृत

आयामिन् वि० निग्रह करतुं (२) लांबुं; दोर्घ (स्थळ के समयको दृष्टिए) आयासक वि० थकवे तेवु; कटाळा [करतुं; मथतुं आयासिन् वि० थाकेलुं (२) प्रयास **आयुध्** ४ आ० लडवुं; हुमलो करवो आयुथपाल पुं० शस्त्रागारनी रक्षक-अधिष्ठाता आयुधिपशाचिका स्त्री० हथियार वाप-रवानी चळ; लडाईनो आवेश **आग्रुधानार** न० शस्त्रो राखवानो ओरडो **आयुधीय** पुं० योद्धो आयु:शेषजीवित वि० जे हजु लांबुं जीववानुं छे तेवुं आय:शेवता स्त्री० हजु जीववानुं वाकी होय तेवी स्थिति आरक्ट पुं०, न० पित्तळ आरट्ट पुं० जुओ पृ० ६०० आरण्य, आरण्यक पुं० जुओ पृ० ६०० आरम्य अ० --थी मांडीने के शरू करीने आरब पुं० बुमाबूम (२) अवाज **आरबडिंडिम** पुं• एक जातनुं ढोल आरालिक पुं० रसोइयो (२) मदमत्त हाथीओने अंकुशमां राखनारो आरीण वि० पूरेपूरुं सुकाई गयेलुं आहच -प्रेरक० पसंद पडवुं; गमवुं आरोपियत् वि० (शरीर उपर) धारण करनार्; पहेरनार् आरोपित वि० चडावेलुं (२) मूकेलुं (३) पणछ चडावेलुं आर्जीकिया स्त्री० जुओ पृ० ६०० आर्जनि पुं० अर्जुननो पुत्र (अभिमन्यु) आत्विजीन वि० ऋत्विजना स्थान माटे योग्य एवु [उतारवा) आर्द्रपुष्ठ वि० पाणी छांटेलुं (भाक आद्वेभाव पुं० भीनाश (२) पीगळी जबुं ते (हृदयन्) आर्द्रयति प० (भीनुं करवूं)

आर्यभट्ट पुं० जुओ पृ० ६०० आ**र्याव**र्ते पुं० जुओ पु० ६०० आल पुं० विष (झेरी प्राणीए काढेलुं) (२) छळकपट आलानिक वि० हाथी बांधवाना थांभला तरीके काम देतुं आलीहा स्त्री० रजस्वला स्त्री आलू ९ उ० (हळवेथी) चूटवुं आलेख्यसर्मापत वि० चीतरेलुं आलोकनीयता स्त्री० (चित्रनी पेठे) जोवा-निहाळवानी दशा, स्थिति के योग्यता आवप् १ उ० वेरवुं; विखेरवुं (२) वाववुं(३)आहुति आपवी(४)विधि के अनुःठान करवुं (जेम के श्राद्धनुं) –प्रेरक० कापी नाखवुं; मूंडवुं(२) ओळवुं; व्यवस्थित करवुं **आवरीत्** वि० ढांकनार् **आवरीवस्** वि० ढांकी देनारुं **आर्बा**तन् वि० पाछुं फरनारुं आवस्थिक वि० परिस्थितिने अनुरूप एवं आवारित वि० चारे बाजुए व्याप्त आविमंडल वि० (पूरा) वर्त्ळनो आकार प्रगट करतुं (जलदी बाण छोडवाथी, धनुष्य) आविल्यति ५० (दूषित-मलिन करवुं) **आवीरजा** स्त्री० रजस्वला स्त्री आबृत वि० ढांकेलुं; छुपावेलुं (२) घेरायेलुं (३) ढंकायेलुं; व्याप्त (४) पूर्ण आव्यक्त वि० स्पष्ट; समजी शकाय आव्यम् ४ ५० वींधवुं; घायल करवुं (२) पहेरवुं (३) ताकीने फेंकवुं (४) फेंकी देवुं (५) घुमाववुं (६) हांकी काढवुं आशक न० खावुंते

आशंकित वि० जेनी डर राख्यो होय

तेवुं (२) शंका राखी होय तेवुं

आशंकिन् वि० डर राखतुं; शंका करतुं (२) शंका के भयवाळूं आशंसितृ, आशंसिन् वि० इच्छतुं; आशा राखतुं (२) जाहेर करतुं आज्ञाजनन वि० आशा प्रेरतुं ६३१ आशामोदकतृष्तन्यायः पुं० जुओ पृ० आशितंभव वि० तृप्त करे – धरवे तेवुं (२) न० तेवुं अन्नः (३) न०, पुं० संतोष ; तृष्ति आक्तिजित वि० खणखण अवाज करतुं (जेम के, हाथपगनां घरेणां) आशी स्त्री० सापनी दाढ आश्चर्यभूत वि० अद्भुत | छटकाव आइचोतन, आइच्योतन न० सिंचन; **आक्ष्यै १ आ०** सुकावुं; जामी जबुं **आश्रमगुरु** पुं० संप्रदायनो मुखियो आश्रयणीय वि० आशरी लेवा योग्य (२) आचरवा --अनुसरवा योग्य आश्रयिन् वि० – ने आशरे रहेलुं(२) -ने लगतुं; -ना संबंधी(३)आशरो लेतु; भजत् आश्रु५ प० ध्यानधी सांभळवुं(२) वचन आपर्वु (३) स्वीकारवुं –प्रेरक० अश्वर्षवुं; वशकरवुं आक्ष्वासिक वि० विश्वासपात्र; भरोसा-पात्र करतु आषादिन् वि० खाखरानो दंड घारण आषादी स्त्री० अषाढ महिनानी पूनम आसनबंधधीर वि० बेसवाना निश्चय-वाळुं; स्थिरपणे बेसत् आसनमच्डक न० वीर्य **आसन्नचर** पुं० आसपास पासे फरतुं आसन्नपरिचारक पुं० हजूरियो; अंग-आसन्नशरीरपात वि० जेनुं मृत्यु नजीक

आसमुद्रांतम् अ० दरिया किनारा सुधी आसंजन न० शरीर उपर पहेरवुं ते (२) वळगवुं - गूंचवावुं ते आसंदी स्त्री० आरामखुरशी (२)सभा-गृहनु ऊंचु आसन आसंबाध वि० रूंधायेलुं; व्याप्त आसंसार, आसंसृति अ० सांसारिक जीवनना अंत सुधी; संसारना अंत सुधी (२)आखा सांसारिक जीवनमां; संसारमां बधे आसिजित वि० खणखणाट करत् (जेम के, हाथपगनां घरेणां) आसुरी स्त्री० राक्षसी आस्कंदन न० हमली; बळात्कार(२) उपर चडवुं ते; उपर पग मुकवो ते (३) तिरस्कार आस्कंदिन् वि० हुर्मलो करतुं आस्थाननिकेतन न० सभागृह आस्फोरित न० ताळी पाडवी ते (२) हाथ थावडवा ते आस्माक वि० आपणुं; अमारुं आस्त्राव पुं० घा (२) वहेवुं ते **आहवन** न० यज्ञ आहितुंडिक पुं० मदारी; गारुडी आहिंड् १ आ० भटकवुं; रखडवुं आहुतीकु होमवु आहुतीभ् वलिदान बनव् **आंगारिक** पुं० कोलसा पाडनारो (झाड कापी – सळगावीने) आंजलिक पुं० अर्धचंद्राकार बाण आंजलिक्य, आंजल्यक न० याचना माटे हाथ जोडवा ते [ध्रुजाववु आंदोलय प० हलाववुं; आध्यान० अधापो

7

इभुमती स्त्री० जुओ पृ० ६०० **इक्याकु** पुं० जुओ पृ० ६०० इच्छारत न० इच्छा मुजबनी कीडा इच्छु वि० इच्छुक; इच्छा राखतुं इतरेतरयोग पुं० एकवीजा साथे संबंध इतिहासनिबंधन न० दंतकथामूलक रचना इतिहासबाद पुं० दंतकथा इतो व्याघ्न इतस्तटी जुओ पृ० ६३१ इत्यंगते अ० आ परिस्थितिमां इरावती स्त्री० जुओ पृ० ६०० इरिण पुं० बरु (२) न० ऊखर जमीन इणुप्रयोग पु० बाण फेंकवुं ते इष्टजन पु० स्नेहीजन; प्रेमीजन (स्त्री के पुरुष)

इंबुमती स्त्री० जुओ पृ० ६००
इंबुमती स्त्री० जुओ पृ० ६००
इंब्रगीप, इंब्रगीपक पुं० गोकळगाय
(एक जीवडुं)
इंब्रजित् पुं० जुओ पृ० ६००
इंब्रमस्य न० जुओ पृ० ६००
इंब्रमस्य पुं० इंद्रमी पत्नी
इंब्रमस्य पुं० इंद्रियोनो समूह
इंघन न० बळतण (२) वासना

ई

इंसणध्यस् पुं० साप; सर्प (आंख ए जेने कानरूप छे) ईंजिकाः पुं०ब०व० एक जातिना लोक ईंप्सु वि० प्राप्त करवानी इन्छावाळुं (बीजी विभक्ति साथे, अथवा समासमां) **ईषत्कार्य** वि० सहेलाईथी-योडा प्रयत्ने थई शके तेवुं **ईषावंड** पु० हळनो हाथो **ईषावंत** पु० हळनो हाथो (२) दंतुशळ

उ

उक्थ्य वि० उत्पादक (२) स्तुत्य (३)
स्तुति सहित एवं
उक्षतर पुं० गोधो; बळद
उक्षा स्त्रो० तपेली; हांडी
उक्ष्य वि० तपेलीमां रांधेलुं
उप्रवंड वि० कठोर; क्रूर (२) पुं०
कडक शासन
उप्रपृति वि० उत्कट गंधवाळुं
उप्रसेन पुं० जुओ पृ० ६००
उच्च पुं० ऊंचुं स्थान
उच्चभुम् वि० आंखो ऊंची करी होय
तेवुं; ऊंचे जोतुं
उच्चिंगर् वि० मोटा अवाजवाळुं

उच्चसंश्रम वि० उच्च स्थान बाळुं (ग्रह माटे) उच्चंड वि० भयंकर; उग्र (२) झडपी (३) मोटा अवाजवाळुं (४) क्रोधी उच्चारणज्ञ पुं० भाषाशास्त्री उच्चंक्य व० रुपं करीने चुंबन करीने उच्चंभुंजतर वि० हाथ पहोळा कर्या होय तेवा आकारनां वृक्षवाळुं उच्चंस्तमाम् अ० अतिशय ऊचुं होय तेम (२) घणे मोटेथी उच्चंस्तराम् अ० वधु ऊचुं होय तेम उच्छंकत् वि० रुछळतुं; कूदतुं;

(२) प्रकाशतुं; हालतुं (३) देखातुं; नजरे पडतूं **उच्छित्ति** स्त्री० उच्छेद; नाश **उच्छृंगित** वि० ऊंचा शिगडांवाळूं **उच्छेषण** न० शेष वघेलुं-रहेलुं ते उच्छायिन् वि० अंच् **उच्छि** –प्रेरक० वधारवुं(२) ऊंचुं करवुं उच्छ्वसन न० ऊंडो श्वास लेवी ते (२) ऊंचुं थवुं – ऊपसर्वुते (३) ढीलुं यवुं ते; छूटी जबुं ते उच्छ्वासिन् वि० श्वास छेतुं (२) **ऊछ**ळतुं; ऊंचुं-नीचुं थतुं (३)तिसासा नाखतुं (४) झांखुं पडतुं; ऊडी जतुं उज्जयंत पुंठ जुओ पृठ ६०० उज्जयिनी स्त्री० जुओ पृ० ६०० उजिजहाना स्त्री० एक नगरी उतथ्यानुज पुं० बृहस्पति (देवोना आचार्य) **उत्लाः** पुं०ब०व० एक जातिना लोको **उत्कवित प०** (उत्कंठित करवुं; उद्विग्न करवं) उत्कल पुंठ जुओ पृठ ६०० **उत्कंठते** आ० (आतुर थवुं; झंखवुं) **उत्कंप** वि० कंपतुं (२) पुं० कंप; घ्रुजारी; क्षोभ उत्कार पुं० धान्य ऊपणवुं ते (२) धान्यनो ढगलो करवो ते उत्कूर्चक वि॰ हाथमां कूचडो होय तेव् उत्कृलित वि० किनारे धकेलायेलुं उत्कोचिन् वि० रुखतलोर; लांचियुं उत्कृष्ट न० बूम; पोकार उत्क्रोशपात पुं० एक प्रकारनुं नृत्य उल्कलेख पुरु भीनुं थवुं ते उत्कवय् --कर्मणि० काढानी उकाळावुं — ऊकळवुं उत्कोपण न० ऊंचकवं - ऊंचं करवं ते उत्खचित वि० गूंथेलुं - वणेलुं - जडेलुं **उत्तमगुण** वि० उत्तम गुणवाळुं; श्रेष्ठ

उत्तमदता स्त्री० पतित्रता स्त्री उत्तमाधममध्यम वि० उत्तम कोटीन्, हीन कोटीन अने मध्यम कोटिन **उत्तर पुं**० जुओ पृ० ६०० **उत्तरकुरवः** पु०ब०व०जुओपृ०६०० उत्तरकोसलाः पुंबबवबव् कोसल देशनो उत्तरनो भाग आच्छादन **उत्तरच्छद** पुं ० पथारी उपरनी चादर(२) **उत्तरण** न० औळंगवुं – पसार करवुं ते उत्तरदायक वि० उद्धत; सामो जवाब आपत् उत्तरपंचालाः पु० जुओ पृ० ६०० **उत्तरवस्त्र न० उ**पर पहेरवानी झम्भो उत्तरंग पुं० ऊंचुं चडेलुं मोजुं उत्तरा स्त्री० जुओ पू० ६०० उत्तराधरौ पुं०द्वि०व० उपरनो अने नोचेनो ओठ उत्तरारणि स्त्री० अग्नि प्रगटाववा वपरातां अरणिनां बे लाकडांमांथी रवैयानी पेठे फेरववानुं उपरनुं लाकडुं उत्तंस वि० जीभने उत्तेजक एवं; चटाकेदार (२) पुं० जुओ पृ० ९२ उत्तंसयति प० (वाळने बांधवा; कलगी तरीके वापरवु; शोभाववुं) उत्तानपाद पुं० जुओ पृ० ६०० 🕝 **उत्तानशय**ावि० चर्सु सूतेलुं **उत्तानित** वि०ऊंचुंकरेलुं (२)उघाडेलुं (३) फेलावेलुं उत्तेजना स्त्री० उक्केरवुं ते (२) धार काढवी ते उ**त्थातृ वि०** उत्पन्न थतुं; ऊठतुं उत्थानशीलिन् वि० उद्यमी उत्थायिन् वि० ऊठतुं; बहार नीकळतुं; देखात् **उत्पतित** वि० ध्वस्त; नष्ट उत्पतिष्णु वि० अंचे जतुः; अछळतुः; उत्पाटिन् वि० (समासने अंते) उखेडी नाखतुं; खेंची काढतुं

उत्पातपवन, उत्पातवात पुं० आंधी उत्पादित वि० उत्पन्न करेलुं **उ**त्पीडम न० दाबवुं; दबाववुं उत्सवसंकेताः पुंठबठवठ हिमालयमां वसती एक जंगली जातिना लोको **उत्संकल्पित** वि० परवानगी आपेलु उत्संगित वि० संबंध-संसर्गमां आवेलं; सहित; ब्याप्त (२) खोळामां लीघेलुं उस्सादित वि० नास करेलुं (२) तेल वगरेथी मालिश करेलुं के सुगंधित । माटेनी योजना **उत्साहबूत्तांत** पुं० उत्साहित करवा **उत्साहहेतुक** वि० उद्यम करवा उत्सा-हित करनार् **उत्सुकयति** प० (उत्सुक के आतुर करवुं) **उत्सूर्यशायिन्** वि० सूर्योदय समये पण कंघतुं - सूई रहेत् उत्सेकिन् वि० ऊभरातुं; अतिशय एवुं (२) मिंबष्ठ; उद्धत उत्स्वरनायते आ० (ऊथमा वात करवी; अमूझणने कारणे स्वप्नुं आववुं) उदक्किया स्त्री० पितृतर्पण; पितृओने जलांजलि अर्पवी ते उदक्रमहण न० पाणी पीवुं ते जदरुप्रदेश पुं० जळसमाधि लेवी ते उदक्षाल वि० स्नान करनारं उदगावृत्ति स्त्री० उत्तरमांथी पाछा फरवुते उरप्रमञ्ज पुं० हाथ जोडवा ते;अंजलि उदग्रदति प० (स्पप्ट देखाई आवे तेम प्रगट करवुं) उदन्यति प० (पाणी सींचवुं; तरस्या थवुं) उदमंथ पुं० जवनुं पाणी - एक मिश्रण उदयकम पुं० कमे कमे वधारवुं ते उदयगिरि पुं० जुओ 'उदयादि उदयन पुं० जुओ पु० ६०० उदयादि पुं ० उदयाचळ (सूर्य-चंद्र ज्यांबी ऊनता मनाय छे ते पूर्व तरफनो पर्वतः तेथी ऊलटो अस्ताचल)

उदयिन् वि० ऊंचे चडतुं (२) नीकळतुं; वहेत् **उदयेंद्र** पुं० इंद्रप्रस्थ नगर **उदयञ्च** पुं० पाणीना घोध के झापटा रूपी वज्र उदवसित न० घर; निवासस्थान उदवास पुं० पाणीमां कमा रहेवुं के वसवुं त **उदवासिन्** वि० पाणीमां अभुरहेतुं उदिश्वित् न० दहीं जेटलुं ज पाणी मेळवीन करेली जाडी छाश **उदानी** आ० उन्नत – ऊंच् करव् उदारचरित वि० उत्तम चरित्रवाळुं **उदारदर्शन** वि० सारा देखाववाळ् (विशाळ आंखोबाळुं) **उदारघी** वि० असाघारण बुद्धिशाळी (२) उदारचरित | अलौकिक **उदाररमणीय** वि० भव्य अने रम्य; **उदारवृत्तार्थंपद** वि० उत्तम शब्द, अर्थ अनं छंदवाळ् उदारसस्वाभिजन वि० उत्तम चारित्र अने कुळवाळ् उदासिन वि० निरपेक्ष; उदासीन **उदीर्णवेग** वि० अतिशय वेगवाळ् **उद्दढ** वि० परणेलुं (२) मेळवेलुं; प्राप्त करेलुं (३) ऊंचुं; ऊपसेलुं(४) पुष्ट; जाडुं (५) अतिशय उदेजय वि० कंपावनारुं; ध्रुजावनारुं उदेजया स्त्री० मुंझवण; क्षोभ **उदेष्यत्** वि॰ वधतुं; उदय पामतुं उद्गद्गदिका स्त्री० निसासा नाखवाते **उद्गाढ** वि० ऊंडुं; गाढ; पुष्कळ उद्गुर् ६ आ० धमकाववा माटे अवाज के शस्त्र ऊंचां करवां – उगामवां उद्गृर्ण वि० उगामेलुं उद्घ पुं• उत्तमता; श्रेष्ठता (समासने अंते; उदा० 'ब्राह्मणोद्घ' उत्तम के श्रेष्ठ काह्मण) (२) सुख (३) अग्नि

उद्घट्टित वि० उघाडी नाखेलुं (ताळुं इ॰ खोलीने) (२) जुदुं –छूटुं पाडेलुं **उद्घन** पुं० सुतार लाकर्डु घडती वेळा नीचे राखवा वापरे छे ते डीमचुं उद्घर्षण न० घसवुं ते (२) कठण पदार्थथी चामडी घसवी ते उद्दंडित वि० ऊंचुं करेलुं (दंड इ०) **उद्**दान न०पकडवुं ते; बांधवुं ते (२) वंश करवुं ते कलंक चडावीने उददूष्य अ० जाहेरमा आळ मूकीने --**उब्देशतः** अ० दृष्टांतरूपे; सारांशमां (२) स्पष्टताथी; उद्देशीने उद्घारकविधि पुं० परत करवानी रीत (करजने) उद्धृति स्त्री० उद्घार (पापमांथी) उद्ध्य पुं० एक नदोनुं नाम **उद्बंधनी** स्त्री० गळे फांसो खादानुं | काढवुं **उद्बृह् १,** ६ प० ऊंचुं करवुं; बहार उद्भावियत् वि० ऊंचे चडावनारुं; उन्नतिकर उद्भ्रम् १,४ प० भटकवुं; भमवुं उद्यति स्त्री० उद्यम **उद्यमन** न० ऊर्चु करवुं ते (२) उद्यम (३) प्रयोग; उदाहरण **उद्यम**भृत् वि० उद्यम करनारुं उद्यम्ति वि० उद्यम करवा प्रेरायेलुं उद्यानपाल पु०माळी ; बगीचानो रक्षक **उद्योजित** वि० चडी आवेलु; एकठु थयेलुं (वादळ) **उद्रिक्तचेतस्** वि० उच्च के चित्तवाळुं (२) गविष्ठ उद्यम् १ प० वमन करवुं; ऊलटी करवी (२) उच्चारवुं (वरदान); पाडवुं (आंसु) उद्दह्मि वि० तणला फेंकतुं उद्बाश् रडतां रडतां पोकारवुं **उद्दांत** वि० वमन करेलुं (२) च्युत थयेलुं; नीकळी पडेलुं

उद्वेगकर वि० उद्वेग करावनारुं; चिंता के क्षोभ उपजावनारुं उद्वेजयित वि० उद्वेग करावे तेवुं **उन्नतत्व न०** उन्नतपणु; भव्यता **उन्नतिमत्** वि० ऊपसी आवेलुं; भराव-दार (२) ऊंचुं; भव्य उन्नब् १ प० मोटेथी गर्जब् उन्नम्न वि० ऊंचुं (२) टटार **उन्नस** वि० ऊंचा नाकवाळू **उन्ना**य पुं• ढगलो (२) ऊंचाई उन्नाल वि० दांडो ऊंचो देखातो होय तेवुं उन्नेय वि० अनुमान करवा योग्य उन्मज्जक पुं० गळा सुधी पाणीमा रही तप करनारो उन्मनीकृ ८ उ० क्षुब्ध, खिन्न के अस्वस्थ उन्मनीभू १ प० क्षुब्ध, खिन्न के अस्वस्थ थवुं | फांदो **उन्माथ** पुं० तीत्र देदना (२) जाळ; **उन्मादयितृक** वि० उन्मत्त – मोहित करे तेव् उन्मार्गम् अ० ऊंधे रस्ते; अवळे मार्गे उन्मार्जन न० लूछी काढवुं – भूसी काढवु – दूर करवुं ते उन्मीलित वि० उघाडेलुं(२)स्रीलेलुं; विकसेलुं(३) चीतरेलुं उन्मुखता स्त्री० इंतेजारी; उत्कंठा उन्मूल वि० मूळमांथी उखेडी नाखेलुं **उन्मेषिन्** वि० चमकत् उपकर्ण १० उ० सांभळव् उपकर्मन् न० जनोई देती वखते बटुक-नुं माथुं सुंघवामां आवे छे ते विधि **उपकारक** वि० उपकार करनारुं; मददगार उपक्रम्य वि० हाथमां लेवा – प्रारंभ करवा योग्य (२) मटाडी शकाय तेवुं (रोग) उपक्षय पुं० शिव (२) खर्च; व्यय उपक्षेपण न० उपेक्षा; बेदरकारी (२) निदा (३) फेंकवुं – नीचे नाखवुं ते

उपगति स्त्री० नजीक जवु ते; पासे आववुं ते उपगामिन् वि० नजीक आवतुं उपग्रस् १ प० प्रसी - गळी जवुं **उपग्राह्य** वि० अनुग्रह करवा के नोकरोमां चालु राखवा योग्य (२) पुं० नजराण् उपन्ना प० सूंघवुं; मों वडे स्पर्शवुं उपचक्र पुं० एक प्रकारनुं चक्रवाक पंखी **उपचर्य** वि० सेवाचाकरी के आदर करवा लायक **उपचारपद** न० केवळ खुश करवा बाप-रेल – औपचारिक – शब्द उपच्छंद पुं० आवश्यक साधनसामग्री (२) समजावट; आजोजी उपजप १ प० कानमा खानगी रीते समजावीने पोताना पक्षमा लई लेवं (२) दगो, कावतरुं के बळवो करवा माटे उश्केरवुं उपजिगमिषु वि० नजीक जवा इच्छतुं उपजीव्य वि० निर्वाहर्नु साधन पूरु पाडनारुं (२) पुं० जेमांथी पोताने लखाण माटेनुं वस्तु के सामग्री मळी रहे ते (३) न० निर्वाहनुं साधन उपतट पुं० धार; किनारी; सरहद **उपतप**न वि० संतापनारुं; पीडनारुं **उपदातृ** वि० आपनारुं; बक्षनारुं उपदीकृ ८ उ० बक्षिस तरीके आपवं उपवृज्ञ् १ प० जोवुं; निहाळवुं -प्रेरक० दर्शाववुं; बताववुं (२) रजू करवुं; जाण करवुं; –सामे मुकवुं उपदेशता स्त्री० नियम; सिद्धांत (२) शिक्षण; उपदेश उपधानीय न० उशीकू उपधायिन् वि० उशीका तरीके वापरतुं उपधृ १, १० प० धारण करवुं; टेको आपवो; वहन करवुं (२) भानवुं; धारवुं; गणवुं (३) समजवुं; अनु-

भववु; साक्षात् करवुं **उपनम्न** वि० पासे आवतुं; हाजर थर् **उपनिधि** पुं**० थापण तरीके सोंपे**ळी वस्तु (२) कपट; छळ **उपनिर्गम**न न० बहार जवानो मार्च उपनिवेशित वि० वसावेलुं; स्थापेलुं; राखंलु **उपनिषेत्** भा० –मां लीन थवुं; –म **उपनेतव्य** वि० पासे लाववा योग्य(२) नोकरीए राखवा योग्य **उपन्यस्त** न० छाती आगळ हाध राखवा ते (लडकानो एक दाव)ः **उपप्रलोभन** न० ललकाववुं ते (२) लांच; बक्षिस उपप्लविन् वि० संकटप्रस्त; पीडित (२) जुलम सहन करत् उपप्लब्ध न० मत्स्यदेशनी राजधानी उपभृ ३ उ० वहन करवृं; ऊंचकवृं उपमाद्रव्य न ० उपमा आपवा वपराती उपमृद् ९ उ० मर्दन करवुं; कचरी नाखवुं; टुकडा करवा; नाश करवी **उपमेखलम् अ०** ढोळाव के बाजु उपर उपयाच् १ उ० याचना करवी;मागवुं उपयाचित वि० याचेलुं; मागेलुं(२) न० याचना; आजीजी (३) देवनी बाधा तरीके मानेली वस्तु (बलिदान तरीके आपवानी) (४)बाधा; मानता उपयाचितक न० जुओ 'उपयाचित' न० **उपयाज** पुं० यज्ञोना पुरवणी मंत्र उपरथ्या स्त्री० नानो रस्तो (घोरी मार्गयी ऊलटो) उपरितल न० उपरनो भाग उपरद्ध वि० इखल-स्कावट-अटकायत करायेलुं (२) ढंकायेलुं; आच्छादित; छुपायेलुं (३) पुं० केदी; बंदीवान उपरोधक वि० अटकायत--इकावट करनारुं (२) घेरतुं; बींटळातुं

उपरोधिन् वि० रुकावट–अटकायत करनार् उपलक्ष्य वि० मेळववा योग्य; प्राप्त करी शकाय तेवं (२) प्रशंसनीय; भलामण करवा योग्य उपली ४ आ० नजीक पडवुं; वळगवुं **उपवद् १** आ० मनाववुं; समजाववुं; खुशामत करवी | करव् उपवर्ण १० प० विगतवार वर्णन उपवस् १ प० निवास करवो (२) उपवास करवो रागनुं मंडाण **उपवहन न० गा**वानुं शरू करता पहेलां उपवंचित वि० छेतरायेलुं; निराश करायेलु उपवीज् १ प० पंखी नाखवी उपवीणयति प० (देव समक्ष वीणा वगाइदी) उपवीणित न० वीणा साथे गावुं ते उपशम् ४ प० शांत पडवुं; शांत थवुं (२)बंध पडवुं (अग्नि, अवाज,कोप) उपज्ञत्य पुं० भालो; खीलो (बारणानों) **उपशाय पुं**० वाराफरती सूबुं ते (पहेरो भरतां) उपशायिन् वि० नजीक सूतेलुं (२) ऊंघतुः; सूतु (३) शांत पाडतुं (४) वाराफरती जागीने पहेरो भरतुं **उपश्**र वि० शूर करतां हीन कोटीनुं उपशोभा स्त्री० शोभाशणगार उपशोष पुं० सूकवी नाखवुं ते; करमावी नाखवुं ते उपसर पुं० सळंग पंक्ति (२) गर्भाधान माटे पासे जबु (सांढनु) उपसर्या स्त्री० गर्भाधान माटे तैयार थयेली गाय उपसंग्रह् ९ प० अनुभववुं; वेठवुं(२) स्वीकारवं (३) पकडवं (४) कबजे

लेवुं (५) जीती लेवुं; मनावी लेवुं

उपसंध्यम् अ० लगभग संघ्याकाळ

उपसंभाष पुं० वार्तालाप; वातचीत (२) सांत्वन [शोभीतुं; पूर्ण उपसंस्कृत वि० राघेलुं; तैयार करेलुं (२) **उपसंहित** वि० युक्त; सहित (२) संबंधी **उपसांत्व**् १० प० शांत पाडबुं उपस्कार पुं० पूर्ति; पुरवणी (२) अध्याहार (३) शणगारवं ते (४) शणगार (५) स्वाद इ० माटेनी मसालानी वस्तु [छोडतुं उपस्नुत वि० दूझतुं; दूधनी धारा उपस्तेह पु० भीनुं थवुं ते **उपस्नेहयति** प० (स्नेह करतुं थाय तेम करवं) **उपस्पृश् ६**५० स्पर्शे करवो (पाणीने) ; नाहवुं (२)कोगळा करवा (३)छाटवुं **उपस्मृति** स्त्री० स्मृतिशास्त्रनो गौण ग्रंथ (१८ मनाय छे) उष्णता उपस्वेद पुं॰ परसेवो (२) गरमी; उपहतदृश् वि० झंखवाई गयेलुं; आंधळं थई गयेलुं **उपहन्** २ प० मारवु; ठोकवु (२) व्यय करवो; नाश करवो (३) --मां खोसवुं (४) पाठ करी जवामां भूल उपहव पुं० आमंत्रण; बोलाववुं ते उपहस्तिका स्त्री ॰ पानसोपारीनो बाटवो **उपहारिन्** वि० आपतुं; वक्षतुं; लावतुं (२) होमतुं; वधेरतुं; बिलदान वानो बलि आपत् **उपहार्य न० देव-**पितृ आदिने आप-उपहास्यता स्त्री० उपहास के हांसीने पात्र थवा के होवापणुं **उपह्वर पुं०** एकांत स्थान (२) सांनिध्य उपह्वे १ आ० आह्वान करवुं (२) बोलावव् उपाकृत वि० मंत्रथी पवित्र करेलुं (२) अशुभ (३) उपयोगमां लीधेलुं (४) पीड़ित; व्याकुळ पत्नी **उपाग्निका** स्त्री० विधिसर परणेली

(६) भेटवुं

होय तेम

उपाद्रा प० सूंघवुं(२)होठ लगाववा; [मशहूर थयेलुं **उपात्तवर्ध** गीतमां भायेलुं; गीतमां वपाधि पुं० अवेजी; बदलीमां मूकेलो माणस । आलिगंल् खपादिलष्ट वि० पकडेलुं; जकडेलुं; **उपासंग** पुं० सांनिध्य (२) ढगलो (३) हाथी, घोडा उपर मुकातो भाषो **जपासीन** वि० –नी नजीक वेठेलुं(२) सरभरा करत् उपास्तमन न० सूर्यास्त जपास्ति स्त्री० उपासना; सेवा;पूजा उपास्थित त्रि० चडेलुं; ऊभेलुं (२) तहेनात-सरभरा-पूजा करतुं (३) तृप्त थयेलुं के करेलुं **उपांतिक न० नजीक**न्; पासेन् **उपेयिवस**्वि० पासे गयेलुं के पहोंचेलुं उपोढ वि० वृद्धिगत; संचित (२) नजीकनुं ; नजीक लावेलुं (३)आरंभेलुं (४) परणेलुं उपोद्धा स्त्री० बीजी - मानीती स्त्री उभयविभ्रष्ट वि० बंनेमांथी भ्रष्ट थयेलुं; बंने गुमावी बेठेलुं उभयवेतन वि० विश्वासधाती; पक्ष पासेथी पैसा लेतुं उमाकांत पुं० शिव **उरच्छद** पु० छातीन् बस्तर उरकीर्ति वि० प्रस्यात; जाणीत् उरुपाह पुं० मोटो निप्रह

उरजन्मन् वि० खानदान कुटुंबमां जनमेलुं उरसस्य वि० महा बळवान उवंशी स्त्री० जुओ पृ० ६०० उल्पी स्त्री० जुओ पृ० ६०१ उल्लुख्वनि पुं० लग्नादि उत्सव वखतनो, खास करीने स्त्रीओना गीतनो ध्वनि

उल्बणरस पुं० वीर रस उल्लक पुं० एक प्रकारनो दारू उल्ललपति प० (अद्यळवुं; कूदवुं) **उल्लंब्** (उद्+लंब्) टटार ऊभा रहेवुं उल्लापिक वि० दर्शावतुं; सूचवर्तुं (२) पुं० लेप; थर उल्लेखिन् वि० खणतुं; खोतरतुं उञ्जनस् पुं० जुओ पृ० ६०१ **उशीनर** पुं० जुओ पृ० ६०१ उषा स्त्री० जुओ पृ० ६०१ ६३१ उष्ट्रकंटकभक्षणन्यायः पुं० जुओ पृ० **उद्दलगुडन्यायः** पुं० जुओ पु० ६३१ **उष्णवारण** पुं०, न० छत्री; छत्र उष्णा स्त्री० गरमी (२) पित्त उष्णालु वि० गरमी सहन न करी शकतुं; गरमीथी त्रासेलुं उष्णोषिन् वि० मुगदधारी उष्णोदक पुं० गरम पाणी (२) अंगमर्दकः उष्णोष्ण वि० अत्यंत गरम उस्ता स्त्री० उषा;परोढ(२)गाय उंछ पुं० (स्रेतरमां पडेला) दाणाः वीणवाते

30

कर्नावर्शत स्त्री० ओगणीस कनाशीत स्त्री० अगण्याएंशी करी अ० संमति के स्वीकार बतावे (जुओ 'उररी') करूक्मव वि० साथळमांथी जन्मेलुं ऊर्जमेश वि० अति बुद्धिशाळी
ऊर्थ्वकर्ण वि० अभा करेला कानवाळुं
ऊर्थ्वणार न० एक प्रकारनुं नृत्य
ऊर्थ्वण्ड वि० उंचे मूळवाळुं
ऊर्थ्वव्यक्त न० चमरीपुच्छ

कथ्बंशोषम् अ० उपरतुं सूकवी नाखे तेम क्रिमका स्त्री० मोजुं (२) आंगळीए पहेरवानी एक जातनी वीटी (पाणीना तरंगनी जेम चमकती) क्रिमला स्त्री० जुओ पृ० ६०१ क्रबरबृष्टिस्यायः पुं० जुओ पृ० ६३१ ज्ञषरायते आ० (ज्ञखर जमीन जेवा थवुं — जेथी वासनाओं जभी न थई शके)
ज्ञष्मप वि० गरमागरम अन्ननी वराळ पीतुं (२) पुं० पितृओनो एक वर्ग क्रष्मण न० वराळ

宱

ऋक्षवत् जुओ पृ० ६०१
ऋक्षहरीश्वर पृं० सुग्रीव (रींछो अने वानरोनो राजा)
ऋज्वायत वि० सीधुं -- टटार एवं
ऋजिनमंक्ष पृं० ऋणमांथी मुक्त थवं
ते (पूर्वजो इ०ना)
ऋजुष् स्त्री० ऋतुकाळे समागम
करती स्त्री (जेथी संतान याय)
ऋजुपणं पृं० जुओ पृ० ६०१
ऋदित वि० समृद्ध करेलं

ऋहिमत् बि० समृद्ध
ऋसु पुं० देव (२) देवो जेने पूजे
छे ते देव (३) देवोना अनुचरोनो
एक वर्ग (४) रथकार
ऋहश्य पुं० घोळा पगवाळु हरण
ऋहश्य पुं० घोळा पगवाळु हरण
ऋहश्यक्त पुं० जुओ पृ० ६०१
ऋह्य्यक्त पुं० जुओ पृ० ६०१
ऋह्य्यक्त पुं० जुओ पृ० ६०१
ऋह्य्यक्त पुं० जुओ पृ० ६०१

ए

एक न० मन (२) एकम
एककुंडलिन् पृ० कुबेर
एकचिस्त न० एक विषय उपर चित्तनुं
एकाग्र थवं ते (२) एकमती
एकज वि० एकलुं जन्मेलुं (२) एकलुं
ऊगेलुं (वृक्ष)
एकताल वि० एक ज ताडवृक्षवाळुं
एकपक्ष पृ० एक पक्ष (२) एक दृष्टिबिदु
एकपदे अ० अणधार्युं; ओचितुं
एकपिंग, एकपिंगल पृ० कुबेर (एक
आंखने बदले पीळुं चाठुं, पार्वती उपर
कुदृष्टि करवाने लीधे शापथी थयेलुं)
एकपुरुष पृ० परमात्मा; परमपुरुष

एकपुष्कर पुं० एक वाजित्रनुं नाम
एकप्रहारिक वि० एक ज प्रहारथी मृत्यु
पामेलुं
एकरथ पुं० प्रक्षर योद्धो
एकरिम वि० प्रकाशमान
एकरूपता स्त्री० समानता
एकल्प्य पुं० जुओ पृ० ६०१
एकवेणीधरा स्त्री० पतिना वियोगमां
केशने सेथा पाडचा विना एक ज
जूडामां बांधी राख्या होय तेवी स्त्री
एकस्य पुं० एक प्रकारनी माछली
एकस्य वि० एक स्थळे केंद्रित थयेलुं;
एक ज व्यवितमां रहेलुं
एकसंस्थ वि० एक स्थळे रहेतुं

एकस्थान न० ए ज स्थान (२) नजीक नजीक आवेलुं — ऊमेलुं होवुं ते एकादशन् वि० अगियार एकाफ्रांवशति स्त्री० ओगणीस एकाफ्राशीति स्त्री० अगण्याएशी एकावली स्त्री० मोती के मणकानी एक ज सेर एकाहायं वि० एक ज आहारवाळु; मध्याभध्यनो भेद न करतुं एकांश पु० जुदो विभाग — खंड एकंकम् अ० एक पछी एक एकोनांबशित स्त्री० अगण्याएंशी एतद्योनिन् वि० ए ज जेनुं समान उत्पत्तिस्थान छे तेवुं एता स्त्री० हरणी एतावन्मात्र वि० एटला कदनुं; एटलुं एखित वि० वधेलुं; विकसेलुं (२) उछेरवामां आव्युं होय तेवुं; उछेरेलुं एवमादि वि० एवा गुणधर्मवाळुं; एवा प्रकारनुं एवंगुण वि० एवा गुणवाळुं एवंगुण वि० एवा गुणवाळुं एवंपाय वि० ए प्रकारनुं; ए जातनुं एवंवादिन् वि० एम बोलतुं एष् १ उ० पासे जवुं (२) सरकवुं (३) जाणवं

ऐ

ऐकगुण्य न० सादा एकमरूप होबुं ते (बेगणुं – त्रण गणुं नहीं) **ऐकमुख्य न० पूरेपूरुं** मालकीपणुं(२) ताबेदारी **ऐकांतिके** एकांतमां; खानगीमां **ऐक्याक** पुं० इक्ष्वाकुनो वंशज (२) इक्ष्वाकुना वंशजोनो देश

एषीक वि० बरु के नेतरनुं बनावेलुं एगुंद वि० इंगुदी वृक्षनुं (२) न० इंगुदीनुं फळ एँद्रशिर पुं० एक जातनो हाथी एँद्राग्न वि० इंद्र अने अग्नि संबंधी एँद्राग्न वि० बळतणथी उत्पन्न थयेलुं (अग्नि)

ओ

ओघसती स्त्री० जुओ पृ० ६०१ ओजायते आ० (पराक्रम दाखबबुं) ओत वि० वाणानी रीते वणायेलुं ओतप्रोत वि० ताणा-वाणानी पेठे वणाईने एक थयेलुं ओरंफ पुं० मोटो वलूरो –घसरको ओषिक पुं० अग्नि ओषिप्रस्थ पुं० हिमालयनी राजधानी ओष्ठावलोप्य वि० होठ वडे खवाय तेवुं ओंकार पुं० ॐ; प्रणव (२) तेनो उच्चार (३) प्रारंभ; शरूआत (ला०)

औ

औक्षक न० बळदोनो समूह औचथ्य वि० उतथ्यना वंशनुं – गोत्रनुं औडव वि० ताराओनुं **औत्तंक** वि० उत्तंक मृनिनुं **औत्पातिक न० भा**वि उत्पात के अनिष्ट सूचवनारुं औदक वि० जळचर; जळवासी औदका स्त्री० पाणीथी वींटळायेली नगरी औदिक वि० जेनुं पेट फूली गयुं छे तेवुं औदर्य वि० गर्भाशयनुं (२)गर्भाशयमां पडेलुं (३) पुं० पुत्र औदंबर वि० उबराना वृक्षनुं (२) तांवानुं (३)न० उबरानुं फळ⊸उमरखुं (४) तांबानुं पात्र औपनीविक वि० नीवि — पेट उपर पहेरेला वस्त्रनी गांठ नजीकनुं; त्यां राखेलुं औपयिक पुं०, न० उपाय औपनास्य न० उपवास औपसंध्य वि० प्रातःकाळ संबंधी
औपस्थितिक पुं० अनुचर; सेवक
औपहारिक न० बिल; आहुितः; दान
औपेंद्र वि० उपेंद्र संबंधी (जुओ पृ०
१०८) कामळो
औरभ्र न० घेटानु मास (२) ऊननो
और्जिय न० मोटाई; महानता
और्वर वि० पृथ्वीनु; धरतीनुं
और्शार न० पंखो के चामरनो हाथो
(२) पथारी (३) बेसवानुं आसन
(४) उशीर – वीरणवाळानो लेप (५) वीरणवाळो (६) वि० वीरण-वाळानुं बनावेलुं कि प्रकाश

औषसातप पुं० वहेली सवारनो तडको

क

ककुत्स्थापुं० जुओ पृ० ६०१ ककुभ पुं० अर्जुन वृक्ष (२) न० कुटज-वृक्षनु पुष्प कक्कोली स्त्री० कंकोलनो छोड कच पुं० जुओ पृ० ६०१ कच्छांत पुं० सरोवर के नदीनी किनार उपरनी भेजवाळी जगा कज्जलित वि० काजळवाळु - काळु करेलुं के थयेलुं कटपूतना स्त्री० पिशाचीओनो एक प्रकार; एक पिशाच योनि कटभू स्त्री० हाथीनुं गंडस्थल कटांत पुं० गंडस्थलनो छेडानो भाग **कटिका** स्त्री० केड; कमर **कटोरक** न० कुलो; ढगरो कटुक न० कडवी वाणी (२) कडवाश (समासने अंते 'खराब' अर्थमां. उदा० दिधकटुकम् – खराब दहीं) कठकालापाः पुं० ब०व० (यजुर्वेदती) कठ अने कालाप शाखाना अनुयायीओ

कठिन न० कोदाळी (२) माटीनी हांडी कठिनता स्त्री० कठोरता; क्रूरता कठोरगर्भ वि० पुस्त गर्भावस्थावाळुं कठोरयति प० (मंजरीओ के कळीओथी भरी काढवुं; खिलाववुं) कठोरित वि० व्यायाम-परिश्रमथी दृढ के मजबूत बनावेलुं कडंकर, कडंगर पुं० जुदां जुदां कठोळनी कडब (२) एक जातनी गदा कणाद पुं० जुओ पृ० ६०१ कण्ब पुं० जुओ पृ० ६०१ **कथनिक** पुं० कथाकार; वार्ताकार **कथंदीर्य** वि० कया सामर्थ्यंदाळु कथानायक, कथापुरुष पुं० वार्तानुं विक भाग मुख्य पात्र कथामुख न० वार्ता के कथानी प्रास्ता-कथोव्घात पुं० वार्ता के कथानी शरू-आत – प्रारभ तिरस्कारवं) **कदर्शयति** प० (कनडवुं; क्लेश आपवी: **कदर्थोकुत** वि० तिरस्कृत

कदलीफलन्यायः जुओ पृ० ६३१ कदंबकोरकन्यायः, **कदंबमुकुलन्यायः** जुओ पृ० ६३१ कदंबानिल पुं० वर्षा ऋतु(२) कदंबनां पुष्पोथी सुवासित एवो पवन कदंबी स्त्री० एक छोड (देवडांगर) कद्रथः पुं० खराब रथ के बाहन कद्र स्त्री० जुओ पृ०६०१ [नीच **कद्यद** वि० खराब के खोटुं बोलतु (२) **कनककदली** स्त्री० केळनो एक प्रकार कनकदंडिका स्त्री० सोनानुं म्यान कनस्त्रलान न जुओ पृ०६०१ कनप पुं० एक अस्त्र – शक्ति **कतयति** प० (नानुं करवुं; घटाडवुं) कनीयस् पुं० नानी भाई कन्यकाजन पुं० युवान कन्या कन्यागर्भ पुं० कुंबारी कन्यानी दीकरी **कन्याभेक्ष्य** न**०** कन्यानी याचना करवी ते **कन्यामय** वि० कन्यारूपी **कन्यारत्न न०** अत्यंत सुंदर कन्या **कन्याव्रतस्था** स्त्री० ऋतुधर्ममां आवेली – रजस्वला स्त्री **कर्न्यातःपुर**्न० अंतःपुर कप पुं० राक्षसोनो एक वर्ग **कपटपटु** वि० छळकपट के हाथचालाकी-मा कुशळ एवं वाळी मुलेह कपालसंधि पुंच बने पक्षे समान शरतो कपित्य न० छाश्च; तक कपिल पुं० जुओ पृ० ६०१ कपिलवस्तु न० जुओ पृ० ६०२ **कपिज्ञा** स्त्री० जुओ पृ० ६०२ कपिशिक्ष वि० रह्माडुं बनी गयेलुं (तपदाथी) **क्रपोलपत्र न०** गाल उपर चीतरेलुं चित्र कफोणिगुडन्यायः जुओ पृ० ६३१ कबंध पुं०, न० पाणी **कमितृ** पुं० पुरुष; नर; पति **कयाधु** स्त्री० जुओ पृ० ६०२

करकृतात्मन् वि० दरिद्र; रंक (मांड हाथमां आवे तेनाथी निर्वाह करतुं) करटमुख न० हाथीनुं गंडस्थळ ज्यांथी फाटे छे ते जगा **करतोया** स्त्री० जुओ पृ० ६०२ **करविन्यस्तबिल्वन्यायः** जुओ पृ०६३२ करंबित वि० मिश्रित **करिवर, करीश्वर** पुं० गजराज, श्रेष्ठ **करुणम्** अ० दयाजनक रीते **करूष** पुं० कलुषितता; गंदकी (२) जुओ पृ० ६०२ कर्का स्त्री० सफेद घोडी **कर्ण** पुं०एक वृक्ष (२) जुओ पृ०६०२ **कर्णक** पुं० सफेद वाळ; पळियुं **कर्णचूलिका** स्त्री० एरिंग **कर्णजाह** न० काननुं मूळ **कर्णज्यर** पुं० काननी पोडा **कर्णमागम्** काने पहोंचवुं; आण थवी कर्णमूल म० काननुं मूळ **कर्णलता** स्त्री० काननो पुट कर्णस्रोतस् न० काननो मेल -- मळ कर्णंदा ध्यानथी सांभळवुं कर्णीरय पुं० स्त्री माटेनी बंध पालखी कर्णीसुत पु० कर्णीनो पुत्र - मूलदेव (चोरविद्यानो प्रवर्तक) **कर्दयित** वि० कादववाळुं (२) कादव जेवुं घट्ट अयेलुं – जामेलुं कर्पर पुं० काचबानुं पीठ उपरनुं हाडकुं कर्मगति स्त्री० भाग्य के दैवनी गति कर्मचंडाल, कर्मचांडाल पुं० अत्यंत हीन कर्म करनारुं **कर्मचोदना** स्त्री० अमुक कर्म करवा माटेनो विधि के नियम (२) धर्मकृत्य करवा माटेनो प्रेरक हेतु कर्मज वि० कर्म करवाथी परिणमतुं - प्राप्त थतुं (२) पुं० स्वर्ग (३) नरक (४) कळियुग कलमगोपवध् स्त्री० डांगरना क्यारडा-नी रखवाळण

कलविशुद्ध वि० मधुर अने स्पष्ट कलविक पुंच एक जातनी चकली (२) [घटवुं ते कलाक्षय पुं० चंद्रनी कळानुं क्षीण यवुं – कलाभृत् पुं० चंद्र कलिंगाः पुंज्यब्दं एक प्रदेशनुं नाम अने तेना लोको ; जुओ पृ० ६०२ कलिंदजा स्त्री० यमुना नदी **कलुषमानस** वि० दुष्ट मनवाळुं; अनिष्ट **∮क**रवु करवानी इच्छावाळुं कलुषीकृ ८ उ० मेलुं, झांखुं के कलुपित कल्प पुं० बळ; सामर्थ्य कल्पसूत्र न० सूत्रोना रूपमां जुदा जुदा विधिओनो संग्रह कल्याणी स्त्री० पवित्र गाय कवरीभर पुं० सुंदर मोटो अंबोडो **कदलयति** प० (खावुं;कोळियो करी जबुं) कशात्रय न० घोडाने चाबुक मारवानी त्रण रीत **कत्रयप पुं**० जुओ पृ० ६०२ कष्टतपस् वि० कठोर तपस्या करतुं कस्थ्लिका स्त्री० ओस; झाकळ कंकबदन न०पकड; सांडशी; चीपियो **कंकेलि** पुं० एक जातनुं वृक्ष (शरदमां फूल बेसे छे) कंटक पुं० वांस (के तेवुं बीजुं झाड) (२) दोष (३) कारखानुं(४)मकर (कामदेवनुं ध्वजाचिहन) कटकद्रुम पु० कांटान् झाड **कंठचामोकरन्यायः** जुओ पृ० ६३२ कं**ठत्र पुं**्रहार; कंठी (समान) कंडनाल न० गळु; कंड (कमळनी नाळ कंठवर्तिन् वि० कंठे आवेलुं (बहार नीकळवानी तैयारीमां होय तेवुं) **कंठसूत्र** न० एक प्रकारनुं गाढ आल्छियन **कंड्यति(-ते)** (वलूरवुं; खंजनाळवुं) **कंड्यनक** पुं० कान खोतरवानी सळी **कंड्रियत्** वि० वलूरनारुं; खंजवाळनारुं कंदल न० ए नामनुं फूल कंबलनिर्णेजनन्यायः जुओ पृ० ६३२ **कंबोजाः** पुं०ब०व० जुओ 'कांबोज' पृ० ६०३ कंस पुं० जुओ पृ० ६०२ कंसकृष् पुं० श्रीकृष्ण (कंसने हणनार) काकतालीयन्यायः जुओ पृ० ६३२ काकवंतगवेषणन्यायः जुओ पृ० ६३२ काकपिकन्यायः जुओ पृ० ६३२ काकमद्गु पु० एक जातनी जळक्कडी काकयद पुं० अंदर दाणो न होय तेवो वांक्षियो यव (पोपटुं) काकाक्षिगोलकन्यायः जुओ पृ० ६३२ **काक्ष** न० गुस्साभरी तीरछी नजर काचमणित्यायः जुओ पृ० ६३२ काज न० लाकडानी मोगरी (हथोडी) कात्यायन पुं पाणिनिनां सूत्रो उपर वार्तिक लखनार विख्यात वैयाकरणी कादल वि० 'कदली' जातना हरणनुं काद्रवेय पुं० एक प्रकारनो साप कानिष्ठिका स्त्री० नानी आंगळी कानिष्ठिनेय पुं० सौथी नाना संताननुं संतान (२) सौथी नानी पत्नीनुं संतान कान्यकुब्ज पुं० जुओ पृ० ६०२ कापालिकत्व न० कूरता; बर्बरता कापालिन् पुं० शिव कापाली स्त्री० खोपरीओनी माळा; मुंडमाळा (२) चालाक स्त्री कापिल वि० कपिलनुं; कपिले प्रवर्तावेलुं कापिशायन न० मद्य; दारू काम पुं० जुओ पृ० ६०२ कामचारिन् वि० यथेच्छ विहरतुं(२) स्वच्छंदी (३) मनस्वी कामज पुं० कोध कामजित् वि० कामविकारने जीतनारुं (२) पुं० स्कंद (३) शिव कामदुष वि० दरेक इच्छा पूरी पाडनारुं कामधेनुस्त्री० जुओ पृ० ६०२

कामरसिक वि० कामी [पृ० ६०२ कामरूपाः पुं० ब०व० जुओ 'कामरूप', कामा स्त्री० कामना; इच्छा कामाख्या स्त्री० जुओ पृ० ६०२ कामाध्रम पुं० कामदेवनो आध्रम **कामेश** पुं• बधा धननो मालिक; सर्वधनसंपन्न (२) कुबेर काम्यक पुं० एक वन के सरोवरनुं नाम; जुओ पृ० ६०२ **काम्यगिर्** वि० मधुर अवाजवाळुं कायक्लेश पु० शरीरनी तकलीफ; शरीरने पीडा **कारणता** स्त्री० कारण होवुं ते **कारणबलबत्** वि० हेतुने कारणे दृढ एवं **कारणात्** अ० –ने कारणे **कारणिक** वि० न्यायाधीश; परीक्षक(२) कारणरूप; कारणभूत (३) उपदेशक; शीखवनारु करावदान् कारियतच्य वि० कराववानुं; अमल कारावर पुं जामडियो; मोची(निषाद बाप अने वैदेही स्त्रीथी जन्मेलो मिश्र जातिनो मनुष्य) **कारीर वि० वांस के बरुना फणगावा**ळुं **कारुक** पुं० कारीगर (सुतार-वणकर-हजाम-धोबी-मोची) कारूण न० क्षुधा; भूख (२) पुं० बात्यवैश्य पिता अने वैश्य मातानी वचली वर्णनो माणस **कार्तयुग**्वि० कृतयुग -- सत्ययुग संबंधी कार्तवीर्य पुं० जुओ पृ० ६०३ कार्तिकेय पुं० जुओ पु० ६०३ कार्पटिक पुं० विश्वासु अनुचर (२) यात्राळु (३) पवित्र नदीओनुं पाणी वहन करीने निर्वाह करनारो माणस (४) यात्रीओनो संघ (५) अनुभवी माणस (६) चालाक के कपटी भाणस **कार्मणत्व** न० वशीकरण कार्यपिक्षिन् वि० कोई कार्य सिद्ध

करवाना ध्येयवाळुं कार्शानव वि० अग्नि संबंधी(२)अति **काल** न० लोखंड (२) एक सुगंघ **कालकटंकट** पुं० शंकर **कालकदम न० जुओ** पृ० ६०३ कालकेय पुंठ जुओ पृठ ६०३ कार्यक्षम वि० विलंब सहन करी शके करवो ते कालक्षेप पुं० विलंब (२) समय पसार **का**लखंड न० काळजुं **कारुज्येष्ठ** वि० उंमरमां मोटुं कालत्रय न० त्रण काळ (भूत, वर्तमान, अने भविष्य) कालबष्ट वि० मृत्युग्रस्त; मरवानी तैयारीमां होय तेवुं कालपर्यायः पुं० काळनी गति; काळनुं कालबंधन वि० काळने अधीन कालमुख पुं० वांदरानी एक जात **कालयबन** पुंठ जुओ पृठ ६०३ कालयोगतः अ० काळनी गति के मर्यादा अनुसार कालसर्प पुं० काळो अने भयंकर झेरी **कालसंकिषम्** वि० काळ - समयने टूंकुं करनारुं (जैम के तेवो मंत्र के विद्या) कालसंग पु० विलंब **कालसार** वि० काळी कीकीवाळुं कालंजर पुं० बुंदेलखंडनो एक पवित्र पर्वेत (तपस्या माटे जाणीतो) कालापक न० 'कातंत्र' व्याकरण कालाम्च पुं० एक जातनी केरी कालांग वि० काळा-भूरा रंगन् (जेम के तरवार) **कालांजन** न० एक जातनुं काजळ कालिदास पुंज जुओ पृठ ६०३ कालिय पुं॰ यमुनानी एक मोटो नाग (श्रीकृष्णे तेने नाथ्यो हतो) कालिंग पुं० कलिंग देशनो राजा(२) ते देशनो एक साप (३) हाथी

कालीयक प्ं,न० कृष्णागुरु (२)पीळुं चंदन (३) एक जातनी हळदर कावेरी स्त्री० दक्षिण भारतनी एक नदी (२) वेश्या (३) हळदर काक्षेय वि० काकी संबंधी; काक्षीमां जनमेख् [एक छोड काइमरी स्त्री० गांभारी नामे ओळखाती काइमत्य न० मानसिक विषाद; हताशा **काइशीरक** वि० काश्मीरमा जन्मेलुं के उत्पन्न थयेलु **काश्मीरपंक** पुं कस्तूरी **काश्यपपुर** न० जुओ पु० ६०३ काश्यपेय पुं० दारुक (कृष्णनो सारिथ) (२) सूर्य (३) बार आदित्योनुं नाम (४) गर्ड (५) देवो अने दानवो काष्ठभर पुं० लाकडान् अमुक वजन काष्ठभंगिन् पुं० लाकडानी कीडो काष्ठभारिक पुं० लाकडां ऊंचकनारो कांचनसंधि पुं० समान शरतोए कराती उत्तम सुलेह [चहेरावाळी स्त्री कांचनांगी स्त्री० सुवर्ण समान रंगना **कांचीगुणस्यान न०** कंदोरो ज्यां पहेराय छे ते कमरनो के नितंबनो भाग **कांचीपुरी** स्त्री० जुओ पृ० ६०३ कांदिग्भूत वि० दिग्मुढ; गाभर्; नासभाग करतुं कोदिश् वि० नासभाग करत् कांपिल्य न० जुओ पृ० ६०३ कांपिल्ल, कांपिल्लक पुं० एक जातनुं वृक्ष (२) एक सुगंध (शुंडारोचनी) कांबोज पुं० कांबोजदेश (२) ते देशनो वतनी (३) ते देशना घोडानी जात कांबोजास्तरण न० धाबळो; कामळो कांस्य पुं०,न० पित्तळनो के कांसानी प्यालो कांस्यदोह, कांस्योपदोह वि० कांसानो हांडो भरीने दूध आपत् (एक टंके) **कियच्चिरम्** अ० केटला समय सुधी

कियदेतद्शा उपयोगन्? कियद्द्रम् अ० केटले दूर? कियन्मात्र पु॰ नजीवी - तुच्छ वस्तू **किराताः** पुं० जुओ पृ० ६०३ किराती स्त्री० किरात जातिनी स्त्री (२) चामर ढोळनारी दासी (३) पार्वेती (४) कुटुणी **किर्मीर** वि० काबरचीतरा वर्णनुं(२) पुं० भीमे मारेलो एक राक्षस (३) नारंगीनुं झाड किर्मीरित वि० रंगबेरंगी; चीतर् (२) बच्चे बच्चे भळगुं होय तेवुं – मिश्रित किलकिलायति (–ते) (दांत ककडाववा; दांत घसीने अवाज करवो) **किर्लाकचित न**० प्रेमावेशमां रडवुं-रिसावुं ते (प्रेमी साथे) **किर्धिकधा** स्त्री० जुओ पृ० ६०३ **किष्कु** पुं० स्त्री० एक हाथ जेटलुं – २४ आंगळनुं माप(२)मापवानो गज किकार्यता स्त्री० 'शुं करवुं' एनी समज न पडे तेवो प्रसंग **किंकृते** अ० शामाटे **किचन्य** न० मिलकत **किनर** पुं० जुओ पृ० ६०३ किनरी स्त्री० किनर स्त्री **किंपुरुष** पुं० जुओ पृ० ६०३ किविवक्षा स्त्री० बदनामी; जूठी निंदा कीकटाः पुंज्यवयः जुओ पृज्द्वः **कोकस** पुं०, न० हाडकुं कीटावपन्न वि० कोडा पडेलुं; जीवडांए कोरी खाधेलुं कि तुच्छ जतु कीटिका स्त्री० नानो कीडो (२) अल्प कीर्णवर्त्मन् वि० रस्ता उपर बीखरातुं पडे तेम करत् कु २ ५० गणगणवुं; गुंजारव करवो (२) ९ उ० [कुनाति, कुनाति,

कुनीते, कूनीते | चीस पाडवी

कुक् १ आ० लेबुं; स्वीकारवुं;पक**ड**बुं कुकुराः पुंबबब्बब् दशाई देशनुं नाम (जुओ पृ० ६०९) (२) यादवोनी एक जातिना लोक कुक्लाग्नि पुं० ढूणसानी अग्नि कुक्षिगत वि० पेटमां – कूखमां होय तेवुं [दुराचारी कुक्षिज पुं० पुत्र कुचर वि॰ प्रवास करतुं (२) चोर; कुटकारिका, कुटहारिका स्त्री० दासी-बुद्धिवाळुं नोकरडी कुटिलमति, कुटिलाशय वि० दुष्ट कुटीचक पुं० एक जातनो भिक्षु (अजाण्या गाममा घेरघेर भिक्षा मागीने जीववाना वतवाळी) कुटुंबकलह पुं॰, न॰ कुटुंब साथे थयेली झघडो (२) कुटुंबनो आंतरिक झघडो कुटुंबभर पुं० कुटुंबनी भार; कुटुंबनी संभाळ राखवानो बोजो कुट्टिम पुं०, न० नाना पथ्थर जडेली -फरसबंधी जमीन **कुड्मल** न० बाणना फळानी अणी कृतप पुं० दिवसन् आठम् मुहुर्त सिद्धांत (पंदरमांथी) **कुतकं** पुं॰ खोटी दलील (२) नास्तिक कुतूहिलन् वि० कुतूहल, उत्कठा के **हितुवा**ळ् उत्स्कतावाळ् क्तोनिमित्त वि० कया कारण अथवा **कुथ** पुं० कुश; दर्भ कुनल न० नखनो रोग **कुबेर** पुं० जुओ पृ० ६०३ **कुब्ज** पु॰ वांकी (कटार जेवी) तरवार (२) पीठ उपरनी खूंध(३) एक जातनुं माछलुं | जतु कुरुजगामिन् वि० वांकुंचूकुं जतुं; विमार्गे **कुञ्जलीला** स्त्री० खूंधा माणसनी चाल के रीतभात कुब्जा जुओ पृ० ६०३ कुमारी स्त्री० कुंबारी कन्या (१० थी १२ वर्षनी) (२) छोकरी; पुत्री

कुमारीपुर न० कुंवारी कत्याओ माटेने ओरडो के अंतःपुर कुमुदानन्द वि० (राते खीलतां)कमळोने आनंद आपनारुं – विकसावनारुं **कुरंट** पुं० एक पीळुं फूल **कुरु** पुं• जुओ पृ० ६०४ **कुरुक्षेत्र** न० जुओ पृ०६०४ **कुरु**जांगल न० जुओ पृ० ६०४ **कुरुनंदन** पुं० अर्जुन **कुरुपंचाला:** पुं० ब०व० जुओ पृ० ६०४ **कुरुराज** पुं० दुर्योघन **कुरुविद** पुं०,न०माणेक; रत्न 💹 नार् **कुलकलंकित** वि० कुळने कलंक लगाइ-**कुलक्षय** पुं० कुळ के वंशनो नाश **कुलगृह** न० सारुं घर; खानदान **घर** कुलघ्न वि० कुळघातक; वंशनो नाश करनार् कठोळ **कुल्त्य** पुं० कळथी; एक जातनुं हलकुं **कुलदूषण** वि० कुळने कलंक लगाडनार् **कुलधर्म** पुं० कोई पण कुळनो पोतानो आगवो धारो, रूढि के आचार कुलनाशन न० कुळनो नाश करनारुं ते **कुलश्रत** पुं०, न० कुळमां चालतुं आवेलुं व्रत के नियम कुलस्त्री स्त्री० ऊंचा कुळनी – खानदान **कुलाभिमानिन्** वि० कुळ के वंशनुं बेसवुं ते अभिमान राखनारुं कुलायनिलाय पुं० माळामां ईंडांने सेवबा **कुलांकुर** पुं० कुळनो वंशज कुलिशकर पुं० इंद्र (हाथमा वज्र धारण करनार) **कुलिंदाः** पुं० ब० व० जुओ पृ० ६०४ कुल्ताः पुंज्बब्द एक देश के तेना राजाओ (जुओ पृ० ६०४) **कुवम** पुं० सूर्य **कुवलयित** वि० नीलकमळथी शणगारे<mark>ल</mark>ुं **कुवलियन्** वि० नीलकमळवाळुं **कुविकम** पुं० खोटी जगाए दशवितुं पराक्रम

कुवेधस् पुं० दुर्देवः; कमनसीब **क्रुशचीर न० दाभनुं** बनावेळुं वस्त्र **कुज्ञध्वज** पुं० जनक राजानो नानो भाई **कुशमुख्टि** स्त्री० दाभनी झूडी कुश्रास्त्रम् वि० सुखी; समृद्ध (२) एक हलकी कारीगर वर्णनुं **कुशस्थली** स्त्री० जुओ पृ० ६०४ कुतापीय वि० दर्भना अग्रभाग जेवुं; सूक्ष्म -- तीक्ष्ण [पृ०६०४) **कुशावती** स्त्री० कुशनी राजधानी (जुओ **कुशील** वि० खराब स्वभाववाळुं; खराब चारित्र्यवाळुं ∫जमीन **कुष्ठल न०** खराब स्थळ(२)धरती; **कुसुमचित** वि० पुष्पोनी ढगली जेना उपर करवामां आवेलो होय तेवुं; पुष्पोथी व्याप्त वृक्ष **कुसुमद्रुम** पुं० पुष्पोथी भरपूर छवायेलुं **कुसुमपुर** न० पाटलिपुत्र (जुओ पृ० करवां **कुसुमय ५०** पुष्पित करवुं; फूल उत्पन्न **कुसुमज्ञयन** न० फूलोनी पथारी - जय्या **कुसुमञ्जर** पुं० कामदेव **कुह**िल पुं० नागरवेलनुं पान **कुहकाल** पुं० महिनानो छेल्लो दिवस ; अमावास्या (ज्यारे चंद्र न देखाय) **कुंजरग्रह** पुं० हाथीने पकडनारो क्रुंजरारोह पु० महावत **कुंडधार** पुं० एक मेघ (२) एक नाग **कुंडपाब्य** पुं० यज्ञ **कुंडलना** स्त्री० (शब्दनी) आसपास कूंडाळुं करवुं ते (तेने छोडी देवानो छे के विचारवानी नथी एम दर्शाववा) कुंडलीकरण न० धनुष्यने अति जोरथी खेंचवुं ते (जेथी ते वर्तुळ जेवुं देखाय) **कुंडिनपुर** न० जुओ पृ० ६०४ कुंडोध्नी स्त्री० मोटा अडणवाळी गाय (२) पुष्ट स्तनवाळी स्त्री **कुंतलाः** पुं० व० व० जुओ पृ० ६०४

कुंतिभोज पुं० जुओ पृ० ६०४ **कुंती** स्त्री० जुओ पृ० ६०४ **कुंभकर्ण** पु० जुओ पृ० ६०४ **कुंभीनसी** स्त्री० रावणनी बहेननुंनाम कुंभोदर पुं० शिवना एक पार्षदनुं नाम **कुंभोलूक** पुं० एक जातनुं घुवड कू १ आ० [कवते], ६ आ० [कुवते] ब्म पाडवी; चीस पाडवी **कृदलेख** पुं० बनावटी के खोटो दस्तावेज **कूपमंडूकन्यायः** जुओ पृ० ६३२ कूपयंत्रघटिकान्यायः जुओ पृ० ६३२ **कृकल** पुं० एक जातनुं पंखी (२) पाचनिकयामां मदद करतो प्राण-वायु (३) काचिडो; सरडो कृतकम् अ० ढोंग करीने ; देखाव करीने **कृतिकिय** वि० कृतकृत्य **कृतक्षौरस्य नक्षत्रपरीक्षा** जुओ पृ०६३२ कृतजन्मन् वि० जन्म आपेलुं; पेदा करेलुं; बीज वावेलुं कृततीर्थ वि० सुगमताथी जई शकाय तेवुं करेलुं (२) तीर्थयात्रा करेलुं(३) गुरु पासे अभ्यास करतुं होय तेवुं (४) उपायो शोधवामां पावरधुं कुतनिश्चय वि० जेणे निश्चय कर्यो होय तेवुं [हुमलो अने सामनो कृतप्रतिकृत न० आघात अने प्रत्याघात; **कृतप्रयोजन** वि० जेणे पोतानो धारेलो हेतु प्राप्त कर्यों छे तेबुं **कृ**तवर्मन ए० जुओ पृठ ६०४ कृतव्यावृत्ति वि० पदच्युत करेलु; उतारी मुकेल् **कृतशौच** त्रि० पवित्र थयेलुं कृतसंकेत वि० संकेत के वायदो कर्यो होय तेव् होय तेवुं **कृतसंस्कार** वि० संस्कारविधि कर्यो कृतहस्तता स्त्री० कुशळता (२) शस्त्र वापरवामां कुशळता; बाणावळीपणुं **कृताकृत** वि० थोडुं करेलुं अने थोडुं नहि करेलुं (अधूरुं) (२) पुं० परमात्मा

कृतोदक वि० नाहेलुं ्होय तेवुं कृतोपकार वि० मदद के अनुग्रह कर्यो **कृत्य** न० सुतार वगेरे कारीवरनु ओजार **कृत्रिमपुत्रक** पुं० ढींगली **कृत्रिमपुत्रिका** स्त्री० दत्तक लीघेली पुत्री कृप पुं० कृपाचार्य; जुओ प्० ६०४ कृपाणिका स्त्री० कटार; जमैयो **क्टशगब** वि० दूबळी गायोवाळुं **कृशर** पुं० तल चोखानी दूधमा रांधेली खीचडी न आपनार् कृशातिथि वि० अतिथिने पूरतुं भोजन क्रुशास्त्रव पुं० जुओ पृ०६०४ [नफो **ष्ट्रियफल** न० खेतीनी ऊपज; खेतीनो **कृष्ण** पुं० जुओ पृ० ६०४ फुष्णगति पुं० अग्नि **कृष्णच्छवि** स्त्री० काळुं वादळ (२) काळियार मृगनुं चामडुं **कृष्णद्वैपायन** पुं० जुओ पृ० ६०४ **कृष्णमृ**ग पुं० काळो मृग; काळियार **कृष्णा** स्त्री० मण्छलिपट्टण आगळ समुद्रने मळती दक्षिणनी नदी कृष्णायते आ० (श्याम-काळुं करवुं) **कृष्णायस** न० लोढुं; लोखंड **कृसर** पुं० जुओ 'कृशर'; तल-कोखानी दूधमा राधेली खीचडी **केक्याः** पुं०ब०व० एक देश (जुओ पृ० ६०४) के तेना छोको केकसी स्त्री० कैकेसी **केतबति प० (द**र्शाववुं; बोलाववुं; सलाह आपवी; सभय नक्की करवो) केदारखंड न० पाणीने रोकवा करेलो नानो बंध के पाळी केन अ० शेनाथी; केवी रीते केरलाः पुं०व०व० दक्षिण हिंदनो एक देश (आजनुं मलबार) के तेना वतनीओ **केलिकला** स्त्री० कीडाकुशळता;काम-कीडाना हाबभाव (२) सरस्वतीनी | थयेलु वीणा **केलिकुपित** वि० कामक्रीडामां गुस्से कैलिपल्लब न० कीडा माटेनुंतळाव **केलियन** न० कीडा माटेनुं उपवन **केलिशयन** न० कीडा के आराम माटेनो पछंग के सोफा **केलिसदन** न० कीडास्थान;कीडा माटेनी लानगी ओरडो केवलता स्त्री० मोक्ष; अद्वैतभाव केवलात्मन् वि० केवळ अद्वैत स्वरूपवाळुं केशकारिन् वि० केश ओळवा-गृंथवानुं काम करनार् केशग्रह पुं० भाषाना केशशी पकडवुं ते (रतिकीडामां के युद्धमां) केशबंध पुं० केशनो बंध; केश बंधाय ते माटेनुं मुकुट इ० साधन (२) नृत्य वखते हाथनी एक मुद्रा केशशूल न० वाळनो एक रोग केशशूला स्थी० वेश्या केशसंबाहन न० वाळ ओळवा ते **केसर न**० बकुल वृक्षनुं पुष्प **केसरि** पुं० हनुमानना पितानुं ना**म केसरिणी** स्त्री० सिंहण कैकसी स्त्री० रावणनी मातानुं नाम क्रैकेसी स्त्री० जुओ पृ०६०४ केंटभ पुं० जुओ पु० ६०४ **कैतक** वि० कैतकीनुं फूल **कंतवक** न० जूगटुं; जुगार कैतववाद पु० जूठ; जूठाणु कँदारिका स्त्री० खेतरनो समूह क्रातक वि० किरातोनुं; किरात संबंधी **कैलातक** न० एक प्रकारनो दारू कैशिको स्त्री० नाटकनी चार शैली-ओ मानी एक (कौशिकी) **केंकिरात** पुं० विलासी – कामी पुरुष कोकनदिनी स्त्री० रातुं पोयणुं कोकाम् खन० एक पवित्र तीर्थ कोककाण वि० कोंकणनुं कोपजन्मन् वि० कोधधी उत्पन्न थयेलुं कोपनास्त्री० कोधीस्त्री **कोपयिष्णु** वि० गुस्से करवानो इरादो

कोयष्टिक पुं० एक पंची (२) नार्नु (धोळुं) बगला जेवुं पंखी कोशलाः पुं० ब० व० कोशल देश के तेना वतनीओ (जुओ पृ० ६०५) **कोशवारि** न० देवमूर्ति नवरावेलुं पाणी (पोतानी सच्चाईनी परक्ष कराववा आरोपी त्रण वार पीए छे) कोशातकी स्त्री० पटोलि (परवळ-काकडी-डोडो)नो वेलो कोष्ठी हुँ घेरी लेबुं; वींटी वळवुं कोसलनक्षत्र न० एक नक्षत्र कोसला: पुं०ब०व० कोशल देश के तेना लोको (जुओ पृ० ६०५) कोंकणाः पुं०ब०व० सह्यादि अने समुद्र वच्चेनी पट्टीबाळो प्रदेश के तेना लोक **कौक्कुट** वि० कूकडानुं **कौतुकमंगल न**० लग्नविधि **कौतुकवत् अ०** कुतूहलयी **कौतुकागार पुं**० विलासकीडानुं स्थान कौनुकिता स्त्री० कुतूहल; उत्कंठा कौतुकिन् वि० आनंदोत्सव माणतुं कौत्स पुं० वरतंतुनो एक शिष्य कौमारचारिन् वि० संयमी; अहाचारी कौमारबंधकी स्त्री० वेश्या कौमारिक वि० पुत्री उपर प्रेम राखतुं (२) पुं० कन्याओनो बाप कौमुदीमुख न० चांदनीनुं दर्शन कौरव पुं० कुरुनो वंशज कौलटेय न० जारकर्म **कौलाल** पुं० कुंभार [पृ०६०४) कौलूत पुं० कुलूत देशनो राजा (जुओ कौशल्या स्त्री० जुओ पु० ६०५ कौशांबी स्त्री० जुओ पृ० ६०५ कौशिकी स्त्री० जुओ पृ०६०५ (२) नाट्यलेखननी चार शैलीमांनी एक कौसल्य वि० कोसल देशना लोकोनुं कौसल्या स्त्री० जुओ पृ० ६०५ **कौसुम** न० फूलनो पराग (२)कांसाजळ **कौसुंभ** पुं० कसूबानुं फूल

कौंकाः, कौंकणाः पुं०ब०व० एक देश, तेना लोको के तेना **राजाओ** कौंजर न० योगीओनु एक आसन ऋतुद्विष् पुं० राक्षस (२) रावण ऋथकैशिकाः पुंब्बव्यव् एक देश (विदर्भ) ऋमयोगेन अ० ऋमपूर्वक; योग्य ऋमे ऋमिक वि० आनुवंशिक; वंशपरंपरागत क्रमुक पुं० सोपारीनु झाड ऋब्याद पुं ० शिकारी प्राणी(जेम के वाघ) ऋशयति प० (दुर्बळ -- कुश बनाववुं) ऋंदित वि॰ जेनी समक्ष घा नाखी होय -- पोकार कर्यो होय तेवुं क्रियापवर्ग पुं० कार्यनी समाप्ति (२) मोक्ष; कर्ममांथी मुक्ति क्रियायज्ञ पुं० धार्मिक विधि – संस्कार (जेम के गर्भाधान संस्कार) क्रियार्थ वि० कोई प्रयोजन माटे जरूरी [करवुंते –उपयोगी एवं कियासमभिहार पुं० कोई कार्य वारंवार कियासंकांति स्त्री० पोतान् ज्ञान बीजाने शीखववुं ते उपवन क्रीडाकानन त० कीडा-विहार माटेनु क्रीडाकोप पुं० कृत्रिम गुस्सो क्रीडाकौतुक न०नकाम् कृतूहरु (२) क्रीडा; विलास (३) मैथुन कीडामयूर पुं० कीडा – आनंद माटे पाळेलो मोर क्रीडाशैल पुं० कीडा - विहार माटे बनावेलो कृत्रिम पर्वत **ऋंच्** पुं० हंस जेवुं एक पक्षी ऋरकर्मन् वि० घातकी ऋत्य करनारुं ऋरदृज्ञ् वि० अनिष्ट नजरवाळुं; जेनी नजर पडतां अनिष्ट थाय तेवुं (२) पुं० शनि के मंगळ ग्रह **क्रुरम् अ० भयंकर** रीते क्रोडी स्त्री० भूंडण; डुक्करी कोडीकृ आलिंगनमां लेवुं; भेटवुं

कोधमृष्टिछत वि० गुस्साथी गांडा जेवुं बना गयेलुं होय एवं **कौंचवर्ण** पुं० एक जातनो घोडो **क्लिश्नत्** वि० दूर करतुं **क्लेशित** वि० व्यथित क्लेशिन् वि० व्यथा के ईजा पमाडतुं **क्लोम न०** मुत्राशय (२) फेफसुं **क्वत्य** वि० कयानुं **क्वथन** २० उकाळवुं ते **क्वथित** वि० उष्ण; ऊकळतुं **क्षत्रवेद** पुं० धनुविद्या क्षत्रियका स्त्री० क्षत्रिय स्त्री **क्षत्रियहण** (-न) पुं० परशुराम क्षत्रिया, क्षत्रियिका स्त्री० क्षत्रिय स्त्री **क्षपण** न० उपवास (२) शरीरनुं दमन (३)अशौच; सूतक (४) नाश करवो ते **क्षपाट** पुं० निशाचर; राक्षस **क्षयपुक्ति** स्त्री० विनाश करवानी तक **क्षवयु** पुं० उधरसः; छींक(२) गळामाः सरखरी बाझवी ते **भार** न० खार **क्षारक** पुं० पक्षी पकडवानी जाळ **क्षारक्षत वि० सू**रोखारथी नुकसान पामेल् क्षितिधेनु स्त्री० पृथ्वी रूपी गाय क्षितिवर्धन पुं० शब; मडदुं क्षितिसुत पुंच्यक्ष (२) विष्णूए मारेलो नरकासुर (३) कीडो (४) मंगळग्रह **क्षितीश्वर** पुंच राजा **क्षिप्नु** वि० –फेंकतुं (२)मारतुं; हणनारुं **क्षोणबस्त** वि० जेनुं जोरकेबळ क्षय पाम्युं छे तेवुं (जेम के रोग)

क्षीरकुंड न० दूघ दोहवानुं वासण क्षीरदम्धजिह्वान्यायः जुओ पृ० ६३२ क्षीरनोरस्थायः जुओ ए० ६३२ **क्षीरस्तिग्ध** वि० दूध जेवा रसथी चीकणुं -भीनुंबनेल् **क्षीरोमि** पुं० क्षीरसागरनुं मोजुं **शुद्रक** पु० एक जातनु बाण **भुद्रता** स्त्री० नानापणुं; तुच्छता(२) सूक्ष्मता क्षुषाञ्चांति स्त्री० भूखनी तृष्ति थवी 🖚 धराई जवुं ते **क्षुब्ध** पुं० वलोबवानो रबैयो **क्षुरप्रमा**ला स्त्री० चंद्रकळाना आकारना मणकाओनो हार **क्षुरभांड** न० हजामनी कोथळी क्षेत्रिय वि० खेतर संबंधी (२) बीजा जन्ममां मटे तेवुं; आ जन्ममां न मटे तेवुं (३) पुं० याचक क्षेपणीय न० गोफण जेव पथ्थर वगेरे फेंकवानु हथियार क्षेप्तृ वि० फेंकनारुं; मोकलनारुं क्षेप्य वि० –मां मुकवा लायक (२) फेंकवा -- नाखवा लायक **क्षेमाश्रम** पुं० गृहस्थाश्रम **क्षेमेंद्र** पुं० जुओ पृ०६०५ क्षोदक्षम वि० तपास के कसोटीमां टकी शके तेवुं (२) नक्कर; दृढ क्ष्माय १ आ० कंपाववुं; ध्रुजाववुं **क्ष्वेडन** न० अस्पब्ट उच्चार करवो ते (२) गणगणवुंते; सुसवाट करवो के सिसोटी जेवो अवाज करवो ते

ख

खग वि० आकाशमां गतिवाळुं खट्वपति प० (खाटलानी जेम उप-योग करवो) खड्गधारा स्त्री० तलवारनी धार खबूप पुं० दारूगोळाथी फेंकातुं बाण खनित्रक न०, खनित्रिका स्त्री० नानी कोदाळी [स्थानमां रहेतो हतो) खर पुं० रावणनो ओरमान भाई (जन- खरशंड्यन न० (घाने खण्या करे तेनी पेटे) प्रगडेलाने वधु बगाडवुं ते खरायित न० गधेडानुं वर्तन खरी स्त्री० गधेडी (२) खच्चरी खरीबात्सत्य न० खच्चरीनुं बच्चा प्रत्येनुं यात्सत्य (बच्चुं जन्मतां मा मरी जती होवाथी नकामुं गणाय) खर्जूरी स्त्री० खजूरनुं झाड खलीकृत वि० अपमानित करेलुं; बद-माशनी जेम वर्तवामां आव्युं होय तेवुं खलेकपोतन्यायः जुओ पृ० ६३२ खंडशकरा स्त्री० खडी साकर खंडतियम् वि० जेनुं अंग खंडित थयुं छे तेवुं खांडव त० जुओ पृ० ६०५ खांडवराग पुं० एक प्रकारनी मीठाई खेलगमन, खेलगामिन् वि० विलास-पूर्ण के राजवी चालवाळुं खेशरीर न० छायापुरुषनुं शरीर खोरक पुं० जानवरना पगनी एक रोग

ग्

मगनारविदन्यायः जुओ पृ० ६३२ गज् १ प० गर्जवुं; बराडवुं (२) मदमत्त थवुं गजन्छाया स्त्री० सूर्यग्रहण समये श्राद्ध माटे योग्य एवं। अमुक समय गजनासा स्त्री० हाथीनी सूंढ गजपित पुं० ऊंचो उत्तम हाथी (२) हाथीनो मालिक के महावत गजपुष्यो स्त्री० एक फूल; नागपुष्पी **गजमुख, गजवक्त्र,** पुं० गणेश **गजवत्** वि० हाथीओ युक्त **गजब**दन पुं० गणपति गजसाह्वय न० हस्तिनापुर गडुरिकाप्रवाहत्यायः जुओ पृ० ६३२ गणपूर्व पुं० मुखियो (टोळी के वर्गनो) गणभर्तृ पुं० शंकर (२) गणेश (३) टोळी के वर्गनी मुखियो गणवल्लभ पुं० सेनानायक गणित न० गणवुंते; तेर्नुशास्त्र गणेय वि० गणी शकाय तेवुं गणेश पुं० जुओ पृ० ६०५ **गतिमत्** वि० गति करी शके तेवुं; गतिमान (२) साधनसंपन्न (मिलकत, पुस्तको इ०) गभस्तिनेमि पुं० विष्णु

गमक पुं० स्वरना उत्थाननो प्रकार (सात छे; संगीत०) गम्य पुं० (कामभोग माटे स्त्री जेने मेळवी शके तेवो) लंपट-कामी पुरुष गरल्लि पुं० (गळानो) घरघर अवाज **गरुड** पुं० जुओ पृ० ६०५ **गर्धन** न० इच्छा; लालच गर्भग्राहिका स्त्री० दाई; दायण **गर्भभर्मन्** पुंठ गर्भनुं पोषण गर्भसंभूति स्त्री० गर्भ रहेवो ते गर्व १ प०, १० आ० गर्व करदो ('गर्वित' एवं भू०कृ० ज वपराय छे) र्गीवत वि० गर्विष्ठ (२) न० गर्व गलप्रह पुं०, गलग्रहण न० गळुं दाबवुं ते (२) एक रोग (गळानो) (३) कृष्णपक्षनी ४ थी, ७ मी, ८ मी, ९ मी अने १३ मी तिथि गलवार्त वि० गळाना काममां (खूब खाईने पचाववामां) समर्थ एवं **गलहस्तित** वि० गळेथी पकडेलुं **गलितक** पुं० नृत्यनो एक प्रकार गलितनखदंत वि० नख अने दांत पडी गया होय तेवुं (वृद्ध) गलितयौवन वि० युवानी चाली गई होय गलुपुं० एक मणि (चंद्रकांत)

गल्यकं पुं० बिलोरी काच (२) मणि ্ [হাগ**ভু** (३) दारू पीवानुं पात्र **गवल** न० जंगली पाड़ो (२) पाडानुं **गवानृत** न० गायना जूठा सोगन खावा ते गवामय पुं० एक यज्ञ (एक वर्ष सुधी चालतो) [(ते आपवानुं एक व्रत) गवाह्निक न० गायनुं एक दिवसनुं खाण **गवेधुका** स्त्री० एक जातनुं वास **गंगा** स्त्री० जुओ पू० ६०५ **गंडफलक न**० पहोळो गाल **गंडस्थली** स्त्री० गाल गंड्रष न० एक जातनो दारू **गंभीरवेदिन्** वि० मदमत्त (हाथी); अंकुशनेन गणकारतुं गंभीरा स्त्री० ते नामनी एक नदी गाढालिंगन न० गाढ आलिंगन गाढांगद वि० चपसीने वेसतुं कडुं के कंकण पहेर्युं होय तेवुं गाडोहेग वि० अत्यंत उद्धिग्न के पीडित **गात्** पुं० गवैयो गात्रयष्टि स्त्री० पातळुं - नाजुक शरीर **मात्रावरण न०** ढाल गांचि पुं० जुओ पृ० ६०५ **गाधिपुर न**०कनोज; जुओ पृ० ६०५ **गामुक वि० ग**ति करतुं; जतुं गार्ध्न वि० गीध पक्षीनुं गार्ध्रवासस् पुं ० गीधनां पींछावाळुं बाण गांडीयय वि० गेंडानुं बनावेलुं (अर्जुननुं धनुष्य) गांधर्वशाला स्त्री० संगीतशाळा गांधर्वशिक्षा स्त्री० संगीत गांधार पुं० जुओ पृ० ६०५ गांधारी स्त्री० जुओ पृ० ६०५ गिरिचर वि० पर्वतमां फरतु – विचरतुं गिरिजाधव, गिरिजापति पुं० शंकर गिरिधात पुं० गेरु गिरिव्रजपुर न० जुओ पृ० ६०५ गिरिस्रवा स्त्री० पर्वतमांथी नीकळती नदी के झरण्ं

गुडक पुं० गोळो; गोळ आकारनुं जे कांई होय ते गुडिजिह्मिकान्यायः जुओ पृ० ६३२ गुडश्रंगिका स्त्री० गोळा फेंकवानुं यंत्र **गुणज्ञ** वि० गुणनी कदर करनारु गुणभोक्त वि० पदार्थोना गुणोने जाणनारं के भोगवनारुं **गुणवत्** वि० गुणवानः; गुणीः; उत्तम मुणाढच पुं० जुओ पृ० ६०५ **गुणानुराग पुं० बीजाना गुणो तरफ** प्रेम के तेमनी कदर **गुण्ध** वि० गुणोवाळुं (२) गणवा के गुणाकार करवा योग्य **गुरुतल्प** पुं० आचार्यनी पथारी (पत्नी) (२)आ चार्यनी पत्नी साथे व्यभिचार गुरुतल्पम, गुरुतल्पिन् पुर आचार्यनी पत्नी साथे व्यभिचार करनारो **गुरुत्व** न० जुओ 'गुरुता' (पृ० १५८) **गुरुश्रुति** स्त्री० (गायत्री) मंत्र **गुर्जर** पुं० जुओ पृ० ६०५ **गुलुच्छ पुं०** गुच्छ; झूमखु; झुड गुल्फदण्न वि० घूंटी सुधी पहोंचतुं गुल्मिन् वि० जूथ के झुंडमां अगतु गुह पुं ज जुओ पृ ०६०६ | गुप्तता गूडत्व न० (अर्थनी) गहनता (२) गृहम् अ० गुप्त रीते **मृंध् ४ प० (–**प्रेरक०) लालसावाळुं के लोलुप करवुं(२)आ० छेतरवुं गुध्य वि० लुब्धपणे इच्छेलुं **गृहकपोत पुं० घरमां** पाळेलुं कबूतर **गृहकर्मदास** पुं० घरकामनो नोकर गृहकर्मन् पुं॰ घरना व्यवहारनी वाबत (२) घरमां प्रदेश वखते करवानो विधि **गृहजन** पुं० कुटुंब; कुटुंबनुं भाषस; (खास करीने) पत्नी **गृहदेवता** स्त्री० धरनी देवता (२) (ब० व०) घरना देवोनो एक वर्ग गृहदेहली स्त्री० घरनो उंबरो **गृहपोषण** न० घरनुं भरणपोषण

गृहबलिभुज् यु० कागडो (२) चकलो गृहयज्ञ पु० गृहस्थ (२) घरमा कर-वानो एक यज **गृहशुक** पुं० घरमां पाळेली पोपट **गृहाचार** पुं० घरनो व्यवहार गृहीतनामन् वि० नाम दईने बोलावेलुं गृहोतार्थ वि० अर्थ जाणतं **गृहोभू** घरनी गरज सारवी गुंजन पुं० गाजर (२) लाल मूळो (२) गांजो (४) न० झेरी बाणधी मारेला प्राणीनुं मांस गोकुल न० जुओ पृ० ६०६ गोप्रह पुं० गायो घेरवी ते - पकडवी ते गोजीव वि० ढोर पाळीने आजीविका करनारुं (गवळी) गोतम पुं० एक ऋषि (अहल्याना पति) (२) न्यायदर्शनना प्रवर्तक आचार्य गोबर्म पुं० खुल्लामां मैथुन आचरवा रूपी पशुओनी रीत गोनर्व पुं० जुओ पृ० ६०६ गोनराष्ट्र पुं० जुओ पृ० ६०६ गोपालिका स्त्री० गोवाळण गोपित न० गाय-बळवनुं पित्त (जेमां-थी गोरोचन बने छे) गोप्रतर पुं० ढोर नदी पार करी शके तेवं स्थान (२) सरय् नदी उपरन् एक तीर्थ गोमती स्त्री० सिंघु नदीने मळती एक नदी; जुओ पृ० ६०६ (२) गोहत्याना प्रायश्चित्त माटे जपवानी वैदिक मंत्र गोर्मत पुं० जुओ पृ० ६०६ **गोमंतक** पुं० गोवा प्रांत ; जुओ पृ० ६०६ **गोमिन्** पुं० चारण (वैदय) ढोरनी मालिक गोमूत्रक वि० वांकुंचूकुं जतुं (२) पुं वैदूर्य मणि (३) न० गदायुद्धनो एक पेतरो के मंडळ

ग्लास्नु गोमेध पुं० गाय होमीने करातो एक यज्ञ गोरथ पुं० बळदगाडी **गोलांगूल** पुं० काळा शरीरनो, लाल मों अने गायना जेवी पृछडीवाळो एक वानर **गोवर्धन** पुं० जुओ पृ० ६०६ **गोदिक**र्त् पुं० गायने मारनारो (२) खेंड्त (धरती खेडनारो) गोविषाणिक पुं० एक बार्जित्र गोन्नत वि० ए नामनुं त्रत पाळनारो (गमे त्यां सूबं, गमे ते खबडावे ते खावुं इ०) गोशोर्ष पुं०, न० एक प्रकारने पीळुं चंदन (२) एक प्रकारनुं अस्त्र (बाण?) गोसव पुं० गाय होमीने करातो एक यज्ञ (कळियुगमां नथी करातो) **गौड** पुं० जुओ पृ०६०६ (२) (ब०व०) ते देशना लोक गौडी स्त्री० काव्यरचनानी एक रीति-वृत्ति-शैली गौल्मिक पुं० वन-जंगलनो निरीक्षक **गौष्ठीन** न० पहेलां गायोनो वाडो होय ते स्थान **ग्रहपति** पुं० चंद्र (२) सूर्य ग्रहपीडा स्त्री० ग्रहण (२) ग्रह द्वारा थती पीडा ग्रामधान्य न० खेडेलुं अनाज; भात; डांगर **ग्रामविशेष पुं०** (षड्ज आदि संगीतना) स्वर (संगीत०) पामवृद्ध पुं० गामनी घरडी माणस ग्रामाक्षपटलिक पुं० गामनी पटेलियो ग्रामाधिप पुं० गामनो मुखियो **ग्राम्यमृ**ग पुं० क्तरी पासीक गळी जवुं; कोळियो करी जवुं ग्लास्नु वि० थाकेल्

घ

घटीयंत्रन्यायः जुओ पृ०६३२
घटोत्कच गुं० जुओ पृ०६०६
घटुकुटी स्त्रो० जकातनुं नाकुं
घटुकुटीअभातन्यायः जुओ पृ०६३२
घनीभू १ प० गाढुं बनवुं; ऊंडुं बनवुं
घनोरू स्त्री० घन साथळवाळी स्त्री
घंटाकर्ण पुं० शिव, स्कंद के कुबेरनो
गण (चैत्र महिनामां पूजन थाय छे)
(२) एक राक्षस
घंटाल पुं० हाथी

धातस्थान न० वधस्थान (ज्यां कतल कराय) घाटिक पुं० घंट वगाडनारो घुणक्षत वि० कीडाए कोरी खाघेलुं घुणाक्षरन्यायः जुओ पृ० ६३२ घूरकार पुं० 'घू' 'घू' एवो अवाज घूताची वि० घी भरेलुं (२) पाणीवाळुं (३) चमकतुं (४) स्त्री० रात्री(५) सरस्वती (६) स्वर्गनी एक अप्सरा घृताचिस् पुं० भभूकतो अग्नि

뒥

चकोरवत न० चंद्रनां किरणोनुं पान करवानी चकोर पक्षीनी टेव चकोराय आ० चकोर पक्षीनी जेम वर्तवुं चकतुंड पु० एक जातनी माछली चक्रभ्रांति स्त्री० पैडानु गोळाकार फरवृते चकाश्मन् न० पथ्थरोने दूर नाखवानुं चक्रीकृ ८ उ० वर्तुल वनाववुं; धनुष्यनी जेम गोळ वाळवुं चक्रीवत् पुं० गधेडो [करनारुं **चक्षुहंन्** वि० मात्र दृष्टिपातथी ज नाश चटकामुख पुं० चकलीना मुख जेवा अग्रभागवाळु एक प्रकारनु बाण **चटुलय** ५० आम तेम हलाबबं चटुलाय आ० मनोहर गति के चाल-बाळु होवुं चतुरशीति स्त्री० चोर्याशी चतुर्दशन् वि० चौद चतुर्मुख वि० चार मुखवाळुं (२) पुं० ब्रह्मा (३) न० चार मों (४) चार द्वारवाळुं घर [जोडचा होय तेवु चतुर्युज् वि० जेने चार (घोडा वगेरे)

चतुरचत्वारिशत् स्त्री० चुंमालीस चतुरिचत्य पुं० चोतरो – ओटलो चतुष्पध्टि स्त्री० चोसठ चतुस्त्रिशत् स्त्री० चोत्रीश चतुस्सप्तिति स्त्री० चुमोतेर चतुःपंचाशत् स्त्री० चोपन चपलाजन पुं० चंचळ स्त्री चरणपतित वि० पगे पडेलुं **धर्चुर** न० दांतनो कचकचाटभयों अवाज; दांत पीसवानो अवाज चर्मण्वती स्त्री० जुओ पृ० ६०६ चर्मावकर्तृ पुं० मोचो करेली चांच चंचुपुट चंचूपुट पु०, न० पक्षीनी बंध चंडि स्त्री० दुर्गा; पार्वती [स्त्री चंडी स्त्री० कोधी स्त्री; उग्र कोपवाळी **चंडीश** पुं० शंकर चंडीशमंडन न० कालकूट विष (ए झेर शंकरे कंठे धारण कर्युं होवाथी) **चंडो**झ्वर पुं० शंकर **चंदनपंक** पुंच चंदननो लेप **चंद्रकेतु** पु० जुओ पृ० ६०६ **चंद्रप्रभ** न० जुओ पु० ६०६

चंद्रभागा स्त्री० जुओ पू० ६०६ **चंद्रवती** स्त्री० जुओ पृ०६०६ चंद्रशिला स्त्री० चंद्रकांत मणि चंद्रहास पुं० जुओ पृ० ६०६ **चंपा** स्त्री० जुओ पृ० ६०६ चाटुशत न० सेंकडो प्रिय वाक्य;घणी ज खुशामद चाणक्य पुं० जुओ पृ० ६०६ चाणूर पुं० जुओ पृ०६०७ चातुर्होत्र न० चार पुरोहितोनो समुदाय चामरग्राहिणी स्त्री० राजाना मस्तक उपर चामर ढोळनार स्त्री चारित्रदेवता स्त्री० पवित्रतानी देवी चारी स्त्री० भ्रमण चार्बाक पुं० जुओ पृ० ६०७ चांदनिक वि० चंदनथी करेल शोभा-वाळुं; चंदनरसथी महेकतुं चित्तनाथ पुं० हृदयनो देव; स्वामी चित्तयोनि पुं० कामदेव चित्तरक्षिन् वि० बीजानुं मन राखवा तेनी इच्छा प्रमाणे वर्तनार् चित्रकूट पुं० जुओ पृ० ६०७ चित्रकृत्य न० चित्रकाम चित्रभाष्य न० कूटनीतिपूर्ण वाणी चित्रयोधिन् वि० आश्चर्यकारक युद्ध करनारुं (२) पुं• अर्जुन

चित्ररथ पुं० जुओ पृ० ६०७ चित्रलेख वि० रम्य रेखाओवाळं; अंची कमानोवाळु चित्रक्षिखंडिन् पुं० सात्त ऋषिओनुं उपनाम (मरीचि, अंगिरस, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु अने वसिष्ठ) चित्रारंभ पु० चित्रनी रूपरेखा **चित्रापितारंभ** वि० चित्रमां चीतरेलुं **चित्रांगद** पुं० जुओ पृ० ६०७ चित्रांगदा स्त्री० जुओ पृ० ६०७ चित्रीयते आ० (आश्चर्य पमाडवुं; आश्चर्येनो विषय बनवुं-थवुं) चिपिटब्राण, चिपिटनासिक वि० चपटा नाकवाळु करवी **चिरायति** प० विलंब करवो; ढील चीनवासस् न० रेशमी वस्त्र चीरक पु०एक मोटुंपक्षी तिमर् चौरि स्त्री० नेत्र ढांकबानुंबस्त्र (२) चूचुक वि० बोलवामां तोतहातुं **चूतयष्टि** पुं**०** आंबानी डाळ **चेदयः** पुं**० ब**०व० जुओ पृ०६०७ चेर पुं० जुओ पृ० ६०७ चोलाः पुं० ब०व० जुओ पृ० ६०७ चौरापराश्वान्मांडव्यनिग्रहन्यायः जुओ पृ० ६३२ चौयंरत न० गुप्त मैथुन

छ

छत्रीक -नो छत्रीनी जेम उपयोग करदो छनच्छन् अ० (पाणीनां टीपां पडवानो) छमछम अवाज थाय तेम

छलयति प॰ (छेतरवुं; ठगवुं) छंबंकारम् अ॰ निष्फळ थाय तेम

অ

जगत्स्वामित्व न० आखा जगत उपर चक्रवर्तीपणुं जज पुं० सैनिक; योद्धो जटायु, जटायुस् पुं० जुओ पृ० ६०७ जटिलय जटा गूंथवी; कलगीवाळुं करवुं; भरी काढवुं जटरज्वलन न० क्षुधा; भूख जडयित प० (जड बनावी देवुं)

जनक पुं० जुओ पृ० ६०७ जनमेजय पुं० जुओ पृ० ६०७ जनस्थान न० जुओ पृ० ६०७ जन्मप्रतिष्ठा स्त्री० माता (२) जन्मभूमि **जनवन्ति पुं०** जुओ पृ० ६०७ **जयदेव** पुं० जुओ पृ० ६०७ जयद्रथ पुं० जुओ पृ० ६०७ जया स्त्री० (विश्वामित्रे रामने शीख-वेली) मंत्रविद्या **जयाजयौ** पुं० द्वि० व० जय-पराजय जरासंघ पुरु जुओ पृरु ६०७ **जलज** न० कमळ जलजासन पुं ० ब्रह्मा (कमळना आसन-वाळा) जलताडमन्यायः जुओ पृष्ठ ६३३ जलपथ पुं॰ दरियानी मुसाफरी जलशय्या स्त्री० पाणीमां सूई रहेवुं ते (एक व्रत) जलस्थाय पुं० तळाव; सरोवर जल्पाक वि० वातोडियुं जह्नुपुं० जुओ पृ०्६०८ **जंबुद्वीप** पुं०, न० जुओ पृ० ६०८ **जंबूप्रस्य** पुं० एक गामनुं नाम जंभक पुं० औषधोपचार(२)दगाबाज माणस (३) बिजोरुं जंभसाधक वि० वैद्यकना ज्ञानवाळ् जाटासुरि पुं० अलंबुष नामनो राक्षस

जातिगृद्धि स्त्री० जन्म धारण करवो ते जातुष वि० लाखन् बनेलुं के बनावेलुं जापक पुं० जप करनारो **जालंघर पुं०** जुओ पृ० ६०८ **जांबवत् पुं**० जुओ पृ० ६०८ **जांबवती** स्त्री० जुओ पृ० ६०८ जिल्लिकाः पु०ब०व० ए जातना लोक जिह्मेतर वि० मंद के जड़ नहि तेबुं **जीमूतबाहन** पुं० जुओ पृ० ६०८ जीवपाहम् अ० जीवत् होय तेम **जीवंती** स्त्री० एक मिष्टान्न **जूति** स्त्री० गति; त्वरा जूर् ४ आ० -नी उपर क्रोध करवो **जुंभक** पुं० एक जातनो राक्षस (२) तेने दूर करवानो मंत्र जैमिनि पुं० जुओ पृ० ६०८ ज्ञातिचेल न० नीच कुळमां जन्मेलो **ज्ञातेय** न० बंधुकृत्य; सगाने छाजे तेवं काम **ज्ञानयज्ञ** पुं॰ तत्त्ववेत्ता; ज्ञानी ज्ञानाग्नि पुं० ज्ञानरूपी अग्नि ज्येष्ठामूल पुं० जेठ महिनो ज्येष्ठिनेय वि० मोटी के मानीती पत्नीथी जन्मेलुं **ज्वरगंड** पुं० एक रोग **ज्वल** पुं० अग्निनी ज्वाळा; झाळ **ज्यालालिंग** न० शंकरनुं ए नामनुं धाम

झ

झणझणायमान, झणझणायित वि० झणकार करतुं **झलंझल** पुं० आंजी नाखे तेवो चळकाट

(घरेणानो) **झषध्यज** पुं० कामदेव; मकरकेतु **झिल्छिक** पुं० तमरुं

ट

टंकित वि० बांधेलुं; जकडेलुं

ਠ

ठ पुं० ठणठणाट (गागर गवडतां थाय ते)

ड

डिका स्त्री० पोखोवाळुं नानुं जीवडुं

ਫ

ढौिकत वि० नजीक आणेसुं

त

तककौंडिन्यन्यायः जुओ पृ० ६३३ तक्ष पुरु जुओ पुरु ६०८ तक्षक पुं० जुओ पृ० ६०८ तक्षन् पुं० सुधार तक्षशिला स्त्री० जुओ पृ० ६०८ तटभू स्त्री० किनारो तटच पु० शंकर तदात्व न० वर्तमान समय **तदानींतन** वि० त्यारनुं; ते वखतनुं तद्गुण पुं ० कोई पण वस्तुनो गुण के धर्म तपस्यति प० (तपस्या करवी) तयोयज्ञ पुं० तपरूपी यज्ञ करनारो तपोर्थीय वि०तप कर्या करवा निर्मायेलुं तप्तवालुका स्त्री०व०व० गरम रेती तमसा स्त्री० जुओ पूर्व ६०८ तरलयति ५० (कंपाववुं; डोलायमान करवं) तरिलत वि० हालतुं; कंपतुं तरंगवली स्त्री० नदी तरणयति ५० (वधारवुं; फेलाववुं) तरणायते आ० (जुवान रहेवुं;ताजुं रहेवुं) तरबल्ली स्त्री० वेल [गाडी तलक पुं० सळगता अंगारावाळी नानी तलबद्ध वि० हाथ उपर चामडानुं मोजुं पहेर्युं होय तेवुं (धनुर्घारी)

तलबारण न० धनुर्घारीए पहेरवानुं चामडानुं मोजुं **ताम्रधा**तुपुं० तांबुं **ताम्रपर्णो** स्त्री० पृ० ६०८ ताम्रलिप्त न० जुओ पु० ६०८ ताम्रोष्ठ, ताम्रोष्ठ पुं ने लाल परवाळा जेवो होठ तारक पुं० जुओ ६०८ तारकसूदन पुं० कार्तिकेय (तारक राक्षसने हणनार) तारणेय पुं० सूर्यनो उपासक सारस्वर वि० तीणा अवाजवाळुं तारा स्त्री० जुओ पृ० ६०८ तारामती स्त्री० जुओ पृ० ६०८ साकिकस्य न० तर्कवाद; फिलसूफी तार्ण वि॰ तृण संबंधी; तृणनुं बनावेलुं तांबुलाधिकार पुं० तांबुलनी पेटी उपाडवानुं काम तिक्तायते आ० (कडवो स्वाद लागवो) **तिमिध्वज** पुं० जुओ ६०८ तिरयति प० (खलेल करवी, रुकावट करवी; छुपाववुं) तिलतं**डुलन्यायः** जुओ पृ० ६३३ तिलघेनु स्त्री० तलनी गाय बने तेटला के गाय ढंकाई रहे तेटला वस्त्रमां

समाय तेटला तल (गोदान तरीके ब्राह्मणने आपवा ते) तिलोत्तमा स्त्री० जुओ पृ० ६०८ तीक्ष्णरस पुं० विष; झेरी प्रदाही (२) सूरोखार तीवद्यति पुं० सूर्य **तुच्छयति** प० (खाली के कंगाळ करवुं) तुत्थ् १० उ० छाई देवुं; ढांकी देवुं तुभ् ४,९ प० हणवुं, प्रहार करवो **तुरंगम** पुं० घोडो तुरंगमेध पुं० अश्वमेध यज्ञ तुरीयजाति पुं० शूद्र (चतुर्थ वर्ण) **तुलागुड** पु० (शस्त्र तरीके वपरातो) एक जातनो गोळो तुल्यनिदास्तुति वि० निदा अने प्रशंसामां समान बुद्धिवाळुं तुषकंडनन्यायः जुओ पृ० ६३३ **तुषारकण पुं०** हिमकण; झाकळबिंदु **तुष्यतुदुर्जनन्यायः** जुओ पृ० ६३३ तुहिनय प० बरफथी आच्छादित करवुं **तुहिनरुचि** पुं० चंद्र(शीतळ किरणवाळो) **सुंदिलोकरण** न० जाडुं–फूलेलुं करवुं ते **तुंबी** स्त्री० तुंबडीनो वेलो तूर्यमय वि० वादित्रन् **तृणज्योतिस् न०** रात्रे चळकती एक वनस्पति (ज्योतिष्मती) **तृणता** स्त्री० धनुष्य (२) तुच्छता तृणपीडम् अ० दोरडु आमळती वसते तांतणा अमळाय तेम (कुस्तीनो दाव) **तृणभुज्** वि० तृणभक्षी तृणभूत वि० तणखला जेवुं; बधी प्रकारनी ताकात छीनवी लीघेलु **तृषय** प० तणखलानी जेम तुच्छ गणवुं सृष्तियोग पुं० संतोष **तेलक्षौम**ान ० एक जातनुं तेलिया कपडुं (जेनी राख घा उपर लगाडाय छे) तैलपायिन् पुं० एक जातनो वंदो (२) तलवार

तेलपूर वि० तेल पूरवाथी सळगतुं रहेतुं (दीपक) (रत्नो दीवा तरीके काम दे ते 'अतैलपूर दीपक' कहेवाय) **तैलप्रदी**य पुं० (तेलनो) दोवो **तोयाग्नि** पुं० वडवानल **तोयाधार** पुं० सरोवर; जळाशय तोयोत्सर्ग पुं० वरसाद तौर्यत्रिक न० नृत्य गीत अने वार्तित्रनो त्रयस्त्रिशत् स्त्री० तेत्रीस **त्रयःपंचाक्षत्** स्त्री० त्रेपन **त्रयःषष्टि** स्त्री० त्रेसठ **त्रधोसंबरण न०** गुप्त राखवानी त्रण कियाओ (पोतानां छिद्र, शत्रुना छिद्रनी तपास, मसलत) त्रस न० जंगम प्राणीओनो (२) वन (३) पशु-प्राणी **त्रिक्ट** पुं० जुओ पृ० ६०९ त्रिगर्त पुं० जुओ पृ० ६०९ त्रिजटा स्त्री० एक राक्षसी (रावणे अशोकवाटिकामां सीता उपर पहेरो भरवा राखी हती, पण सीता प्रत्ये भाव राखती हती) त्रिणाचिकेत पुं ० यजुर्वेदना अध्वर्यु-यज्ञनो एक भाग(२)तेने लगता वृतन् अनुष्ठान करनारो (३) नाचिकेत अग्निन् अनुष्ठान त्रण वखत कर्युं होय तेवो **त्रिदशीभृत** वि०देव बनेलु **त्रिपंचाशत्** स्त्री० त्रेपन **त्रिपुर न**० जुओ ए० ६०९ त्रिपुरदाह पुं० त्रण नगरोनुं दहन (शंकरे करेलुं) **त्रिपुरद्विष्, त्रिपुरहर** पुं०शंकर (त्रिपुरनो नाश करनार) **त्रिपुरी** स्त्री० जुओ पृ० ६०९ **त्रिभाग** पुं० क्रीजो भाग त्रिमुर्घन् पुं० एक राक्षस **त्रिवृत्** पुं० त्रण दोरानो कंदोरो (२) त्रण सेरतुं ताविज

त्रियंणी स्त्री० जुओ पृ० ६०९
त्रिशंकु पृं० जुओ पृ० ६०९
त्रिशाख वि० त्रण करचलीवाळुं;
त्रण बांक पडचा होय तेवुं
त्रिषध्ट स्त्री० त्रेसठ
त्रिसंध्यम् अ० सवार, बपोर अने
सांजनी संघ्याओ वखते
त्रिसाधन वि० त्रण प्रकारनी कारणतावाळुं

त्रिसामन् वि० त्रण साम (वेदमंत्र)
गानारुं
त्रुटि पुं०, त्रुटी स्त्री० एक अति सूक्ष्म
समयनुं भाप (क्षणनो चोथो भाग)
स्वक्षत्र न० तज; दालचीनी
स्वक्सार पुं० वांस (२) तज; दालचीनी
स्वरम् अ० त्वराथी
स्वरम् अ० त्वराथी
स्वरम् पुं० जुओ पृ० ६०९
स्सरुमार्ग पुं० तलवारना आटापाटा

₹

दक्ष पुं० जुओ पृ० ६०९ दक्षविध्वंस पुं० शंकर दक्षिणापथ पुं० जुओ पृ० ६०९ दग्नसीजन्यायः जुओ पृ० ६३३ दत्त पुं० दत्तात्रेय (जुओ पृ० ६०९) दत्तनृत्योपहार वि० नृत्यनी भेट आपेलुं बसात्रेय पुं० जुओ पृ० ६०९ **दक्ष्त्रिम** वि० दाननुं; दानमां मळेलुं दिषकुल्या स्त्री० दहींनो प्रवाह **वधीच** पुं० जुओ पृ० ६०९ दमयंती स्त्री० जुओ पृ० ६०९ **दिमल पुं० जुओ** पृ० ६०९ दरद पुं० जुओ पृ० ६०९ दरीभृत् पुं० पर्वत दरीमुख न० गुफारूपी मों (२) जुओ 'दरिमुख' (पृ० २०४) दर्भवती स्त्री० जुओ पृ० ६०९ दशकंठारि पुं० राम (रावणना शत्रु) दशपुणित वि० दशनी संख्याथी गुणेलुँ; दशगणु दशधर्म पुं० व्यथा बशपुर न० जुओ पृ० ६०९ दशमुखरिषु पुं॰ राम(रावणना शत्रु) दशयोजन न० दश योजन जेटलुं अंतर दशरथ पुं० जुओ पृ० ६०९ वशरश्मिशत पुं० सूर्य (हजार किरणवाळो)

दशवर्ग पुं० (पोताना तेम ज शत्रुना) अमात्य, राष्ट्र, दुगं, कोश अने दंड – ए पांच पांच वर्ग दशभताक्ष पुं॰ इंद्र(हजार आंखवाळो) वशाश्विपति पु०दशभाणसोनो जमादार दशार्णा स्त्री० जुओ पृ० ६०९ दशार्णाः पुं० ब० व० जुओ पृ० ६०९ दशार्ह पुं जुओ पृ० ६०९ दल्ली पुं० द्वि० व० देवोना वैद्य-बे अश्विनीक्रमारो दहन न० दाह; बाळव्ंते वंडकारण्य त० जुओ पृ० ६०९ **वंडकाष्ठ** न० लाकडानो दंडो दंडनिधान न० क्षमा; माफी **दंडापूपिकान्यायः** जुओ पृ० ६३३ **बंडिन्**पुं० जुओ **ए**० ६१० **बंतपुर** न० जुओ ए० ६१० वंतप्रवेष्ट न० दंत्राळनी खोळी दंतवेष्ट पुं० दंतूशळ उपरनुं कडुं(२) अवाळु; पेढुं दंतादंति अ० एकवीजाने दांत वडे बचकां भरीने (लडवूं) दंध्वन पुं० जेमांथी सिसोटी वाग्या करे छे तेवुं नेतर-बरु वंभोलि पुं० इंद्रन् वज्र बाक्षायण्य पुं० सूर्य

वाक्षिणात्य पुं० जुओ पु० ६१० दासक्या पुं ० वैश्यवर्णम् उपनाम दाहक पुं० जुओ पृ० ६१० दारकावन न० जुओ पृ० ६१० दारुण न० (मृग,पुष्य, ज्येष्ठा अने मूल ए) प्रतिकृळ नक्षत्रोनो वर्ग दारुवन न० दारुकायन (जुओ पृ०६१०) दार्दुर वि० दर्दुर पर्वतन् दाशाहीः पुं० व० व० दशार्ह राजाना वंशजो; यादवो **दाशेरक** पुं**०** जुओ पृ० ६१० **दासजन** पुं० दास; नोकर दासता स्त्री० दासपणुं; गुलामी दासमीयाः पुं० ब०व० एक देश अने तेना लोको (२) उच्च वर्णनी स्त्रीने शूद्रथी थयेलां संतान विग्देश पुं० दूरनो प्रदेश (२) प्रदेश दिग्बंध पुं० दिशा-यंत्रथी दिशाओ नक्की करी लेबी ते दिति स्त्री० जुओ पृ० ६१० (इच्छा दिधीर्था स्त्री० टेको के आधार आपवानी दिलिञ्चिद्ध न० राशि के नक्षत्र (२) अर्घा दिवसने प्रारंभे के अंते चंद्रन् स्थळांतर थवुं ते दिननाथ पुं० सूर्य दिवस दिनस्पृञ् न० त्रण दिवसने स्पर्शतो चांद्र दिलीप पुंठ जुओ पृठ ६१० दिवसीकृ रात्रिने दिवसमां पलटी नाखवी दिवाकीति पुं॰ वाळंद; हजाम (२) घुवड (३) हलका वर्णनो माणस; चांडाल दिवानिशम् अ० दिवसे अने राते दिव्य पुं० दैवी सत्त्व; देव (२) जव (३) यम **विष्यमानुष पुं० उ**पदेवता **दिव्यरस** पुं० पारो (२) प्रेम दिव्यौषधि स्त्री० सापनुं झेर उतारी नाखे तेवी अ**लौकिक शक्तिवाळी**

दिश्य वि० दिशाने लगत्ं; आवेलुं (२) परदेशनुं; बहारनुं **दिष्टभाज्** पुं० देव दीक्षित पुं० यैज्ञनी प्रारंभविधि करती ऋत्विज के पुरोहित (२)शिष्य (३) जेणे के जेना पूर्वजोए ज्योतिष्टोम जेवा यज्ञविधि कर्या होय ते दीपिकाधारिणी स्त्री० दीवो ऊचकनारी **दीप्त**िक**रण** पुं० सूर्य दीप्तनिर्णय पुं० निश्चित परिणाम बीर्घतपस् पुं० गौतम (अहल्याना पति) दीर्घेतमस् पुं० उतथ्य ऋषिनो पुत्र(ते गुरुना शापथी आंबळो थयो हतो) **दीर्घयज्ञ वि**० लांबा समय सुधी यज्ञ करतुं **दीर्घोक्ट ८** उ० लॉर्बु करवुं; लंबावर्ब् **दुक्लपट्ट** पुं० सुंदर रेशमी वस्त्रनो फेंटो दुरारोप वि० जेनी पणछ चडावबी मुक्केल होय तेवुं (धनुष्य) **दुरावर्त** वि० प्रतीति कराववुं मुक्केल होय तेव **दुर्गतता स्**त्री० दुर्दशा दुर्गतरणी स्त्री० सावित्री **दुर्गसंस्कार** पुं**०** जूना किल्लानुं समारकाम दुर्जनायते आ० (दुष्ट बनवुं; वेरी वनवुं) दुर्जनीक्ट निदापात्र के दोषित बनाववुं दुर्जातजायिन् वि० फोगट जन्म धारण करनारुं; व्यर्थ जीवनवाळुं दुर्जातबंब पुं० आपत्तिने वखते साथे रहेनारो **दुर्बाध** वि० निवारी न शकाय तेवुं **दुर्मनायते** आ० (खिन्न के दुःखी थवुं, मूझावु) दुर्मीषत वि० उश्केरेलं; चडावेलं **दुर्योधन** पुं• जुओ पृ० ६१० दुर्लक्ष्य न० खराब लक्ष्य **दुर्वा**सना स्त्री० दुष्ट भावना के इच्छा दुर्वासस् पुं० जुओ पृ० ६१० वृतिव चि० अज्ञेय; अगस्य

वनस्पति

बुरुज्यवन पुं० इंद्र दुष्ठु वि० दुःखी; कंगाळ; पीडित(२) बीमार(३) अ० खोटी रीते; खोटुंज **दुव्यंत** पुं० जुओ पृ० ६१० दु:खलच्य वि० भेदवुं के कापवूं मुस्केल होय तेवुं **दुःखोय**ति प० (पीडावुं; दुःखी थवुं) दुःखोच्छेद्य वि० जितावु के उखेडी नाखबुं भुक्केल एब् द्वःशला स्त्री० जुओ पृ० ६१० **दुःशासन** पुं० जुओ पृ० ६१० **दूतमुख** वि० प्रतिनिधि द्वारा बोळत्ं दूतयति प॰ (दूत तरीके मोकलवुं) **दूरय न० दू**त तरीकेनुं काम दूरपातन न० दूर रहेला निशानने वींधवुं ते **दूरी**भू दुर्थवुं; अळगा थवुं **दूरे कृ**दूर करवुं; तजवुं दूरे तिष्ठतु(भले थाय; कांई परवा नहि) दूर्वांकुर पुं० दरोनी कुमळी कूंपळ के कुमळुं पान **दूषण** पुं० जुओ पृ० ६१० दुगृष (दृश् + रुध) वि० दृष्टिने रोकत्ं **दृढग्राहिन्** वि० मक्कम; आग्रही **वृढधन्विन्** पुं० बाणावळी दृहमुख्टि वि० कंजूस (२) पुं० तरवार (३) सखत मूठी **वृढीकार** पुं० समर्थन; पुष्टि दृश्यस्थापित वि० झट नजरे चडे ते रीते मूकेलुं **बृषद्वती** स्त्री० जुओ पृ० ६१० **देवकी** स्त्री० जुओ गृ० ६१० **देवगिरि पुं**० जुओ पृ० ६१० देवताप्रतिमा स्त्री० देवनी मूर्ति देवयात्रा स्त्री० देवनी मूर्तिनो वरघोडो **देवयानी** स्त्री० जुओ पृ० ६१० देवव्रतत्व न० ब्रह्मचर्यं व्रत **वेवशत्रु** पुं० असुर; राक्षस

देवसात् अ० देव स्वरूपे देवसात् भू देव बनी जवुं **देवसेना** स्त्री० देवोन् सैन्य (२) स्कंद - कार्तिकेयनी पत्नी **देवहृति** स्त्री० जुओ पृ० ६१० **देवातिरेव** पुं० श्रेष्ठ देव (२) विष्णु (३) शिव (४) बुद्ध देवानुचर पु० देवनो हजूरियो देवार्पण न० देवने चडावेली वस्तु (२) **देशकालम्** अ० समय अने स्थळ मुजब देशकाली पु० द्वि० व० समय अने स्थळ देहलीदीपन्यायः जुओ पृ० ६३३ **देहांतर**प्राप्ति स्त्री० अन्य शरीर के बीजो जन्म प्राप्त थवो ते दंप वि० दीवान् देवी स्त्री० दैव विवाहनी रीते परणेली स्त्री (२) वि० स्त्री० देव संबंधी दैष्टिक वि० दैव के नियतिथी नक्की थयेलुं (२) पुं० नियतिवादी; बधुं नसीवथी नियत थयेलुं छे एवं माननारो दोहददु:खशीलता स्त्री० गर्भावस्था **दोहदधूप** पुंठ खातर तरीके वपरातुं एक सुगंधी द्रव्य **दौस्थ्य न० द**्रखी स्थिति द्युनिवास, द्युसद् पुं० देव **द्यूतकरमंडली** स्त्री०, **द्यूतमंडल** न० जुगारीओनी मंडळी (२) जुगारीनी आसपास दोरेलुं वर्तुल (देवुं न चूकवी दे त्यां सुधी तेनी बहार न जई शके) धूतलेखक पुं०, न० जुगारनी होड [बांधनारो नोंधनारो **द्योकार** पुं० शिल्पी (ऊंचा महेलो ब्रह्मयति ५० (सखत बांधवुं; समर्थन करवुं; टेको आपवो) द्रिमिल पुं० जुओ पृ० ६१० **द्रविडाः** पुं० ब० व० जुओ पृ०६१० ब्राघयति ५० (लांबु करवु, विस्तारवु; विलंब करवो }

हुपद पुं० जुओ पृ० ६१०
होण पुं० जुओ पृ० ६११
होपदी स्त्री० जुओ पृ० ६११
हंहमोह पुं० सुखदु:खादि इंद्रोथी थतो
मोह (२) द्विधा-संशयथी उत्पन्न थती
मूंझवण विरस चाले तेवुं
हादशवाधिक वि० बार वरसनुं; बार
हारवती स्त्री० जुओ पृ० ६११
हिचरण वि० बे-पगाळुं; वे पगवाळुं
हिचंहमति पुं० (तिभिर नामना आंखना
रोगथी) वे चंद्र देखावानो भ्रम
हिवाहु पुं० मनुष्य

हिबक्त पुं० एक जातनो राक्षस (२) बे मोंवाळो साप

डेतक्त न० जुओ पृ० ६११
डेघीभाव पुं० वे भाग पडवा-पाडवा ते
(२) बे भाग होवापणुं (३) शंका;
अनिश्चय(४) आ के ते एम बेमांथी
शुं स्वीकारवुं ते न समजावुं ते (५)
बहारथी जुदुं अने अंतरथी जुदुं एम
'बेवडी रमत' (६) सैन्यना वे भाग
पाडीने शत्रुनी पजवणी करवी ते
देपक्ष न० बेपक्ष पडी ज्वाते
दिधक्ष वि० वे आंखवाळुं

ध

धनायति प० (धननी इच्छा करवी) धनाशा स्त्री० धननी आशा-इच्छा धन्वन पुं०एक झाड (धमासो) **धन्वंतरि पुं**० जुओ पृ० ६११ **धर्म, धर्मराज** पुं० जुओ पृ० ६११ **धर्मारण्**य न० जुओ पृ० ६११ (२) तपोवन धर्षणा स्त्री० धर्षण; अपमान (२) अत्याचार;बळात्कार (३) पराभव; पराजय **धवलगिरि** पुं० जुओ पृ० ६११ **घातुमय** वि० लाल धातुओथी भरेलूं **थातुरस पुं**० धातुनु बनावेळुं प्रवाही (लखवा माटे) **धान्यपलालन्यायः** जुओ पृ० ६३३ धान्वंतर्य न० धन्वंतरि देवतावाळो होम घासकेशिन्, धामनिधि पुं० सूर्य धाय्या स्त्री० ईंधण; बळतण (२) यज्ञनो अग्नि सळगाववानो होय त्यारे गवाती ऋचा **घारय** पुं० देवादार **धाराश्रु न**० आंसुओनुं पूर

धुर्यता स्त्री० आगेवानी; नेतृत्व **धूपग्रह** पुं० धूपदानी **धूपर्वात** पुं० एक प्रकारनी सिगरेट-| जथो धूमलता स्त्री० गूंचळां वळतो धुमाडानी **धूलिहस्तयति** (धूळवाळा हाथ करवा) **धृतगर्भ** वि० गर्भ घारण कर्यो होय तेवुं धृतराष्ट्र पुं० जुओ पृ० ६११ धृतिगृहोत वि० धृतियुक्त; अडग भृति क्रु अडग रहेवुं; स्थिर रहेवुं;तृप्ति के संतोष मेळववा धृति अध्य धीरज दाखववी; मक्कमता बताववी; मन स्थिर करवुं) **घैयंकलित** वि० दृढ; स्थिर धोरणि, घोरणी स्त्री० सत्ततपणुं; परंपरा **घौतम्**ल वि० जेनां मूळ घोवायां होय ध्यानयोग पुं० एकच्यान थवारूपी योग **छ, १,६** प० स्थिर थवुं (२) जवुं; खसवुं (३) निश्चितपणे जाणवुं (४) हणवुं ध्या १ प० दॉकुंबाळवुं(२) हणवुं

न

निकचन वि० अति दरिद्र - गरीब नकूल पु० जुओ पु० ६११ नक्तमारू पुं० एक वृक्ष (करंज) **नदात्रुध** पुं० बाघ नगराध्यक्ष पुं० मुख्य पोलीस अधि-कारी; कोटबाळ नग्नाचार्य प्०बंदीजन; चारण निचिक्रेसम् पुं० जुओ पृ० ६११ निचर वि० लांबो समय निह तेवुं नटांगनान्यायः जुओ पृ० ६३३ नड्बल न० पुष्कळ बरुवाळो प्रदेश नमनीय वि० आदरणीय **नमुचि** पुं० जुओ पृ० ६११ नयनत्व न० आंखोनी दशा-स्थिति नरक पुं० जुओ पृ० ६११ [६११ नरनारायणौ पु० द्वि० व० जुओ पृ० निद्ध (न + ऋद्धि) पुं० आपत्ति; तंगी नल पुं० जुओ पृ० ६११ नलक्बर पुं० जुओ पृ० ६११ नष्टाश्वदग्धरथण्यायः जुओ पृ० ६३३ नस्य न० छींक छावे तेवी वस्तु न हि विवाहान्तरं वरपरीक्षा जुओ पु० ६३३ न हि सहस्रेणान्यत्थः पाटच्यरेभ्यो गृहं **रक्ष्यते** जुओ पृ० ६३३ **नहुष** पुं० जुओ पृ०६११ नह्योब स्थाणोरपरायो यदेनमन्धी न पञ्जति जुओ पृ० ६३३ नंद पुं० जुओ पृ० ६११ **नंदनवन** जुओ पृ०६१२ मंदिग्राम पुं० जुओ पृ० ६१२ नंदिनी स्त्री० जुओ पृ० ६१२ नंधावर्त पुं॰ एक आकृति (२) ते आकृतिमां बांधेलुं मकान (पश्चिममां द्वार न होय तेवुं) (३) ते आकारनुं पात्र-थाळी

नाकनायक पुं० इंद्र नाकिन् पुं० देव नागकेनु पुं० कर्ण नागराज पुं० मोटो हाथी (२) शेषनाग नाडोचक न० शरीरमां (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर इ०)नाडीओनां १६ चकोनो समूह नापितोच्छिष्टता स्त्री० हजामत पछी स्नान न करवुं ते नामत्याग पु० नाम छोडी देवुं ते नायकायते आ० (हारना मिणनो भाग भजववो ते; आगे-वाननो भाग भजववो ते) नारक पुं० नरक (२) नरकनो जीव नारद पुं० जुओ पृ० ६१२ नारायण पुं० जुओ पु० ६१२ नार्पयति (राजाने सोंपी देवूं–मिलकत) नाबिधिक वि० नवम् नासत्ययुग न० सत्ययुग (२)वे अश्विनी-कुमारम् जोडक् नास्तिक्य न० नास्तिकपण् निकुलीनका, निकुलीनिका स्त्री० वंश-परंपरामां आवेली कोई पण कळा; विशिष्ट कोच के जातिनी कळा (२) ऊडवानी एक **री**त निक्षेपविषक् पुं ० जेने त्यां मालसामान थापण तरीके मूकवामां आवे तेवी वेपारी [बांबबुं) निगडधित प० (सांकळथी जकडवुं--**निगुप् सं**ताडवुं; छुपाववुं **निगृ६** प० मळी जवुं; खाई जवुं निग्रंथि पुं० पुस्तकनुं पूठुं भिज्ञबोध पुं० आत्मज्ञान ; अध्यात्म ज्ञान गि**तांतकठिन** वि० तीव्र नित्ययुक्त वि० निरंतर लवलीन रहेतुं नित्यवैरिन् वि० सनातन शत्रु

नित्यसन्दस्थ वि० हंमेशां सात्त्विक वृत्तिदाळुं ; नित्य सत्य वस्तु विषे स्थित नित्याभियुक्त वि० निरंतर समाधि-युक्त चित्तवाळुं वर्षाऋतुन् निदाघवाषिक वि० उनाळान् निबंद्ध पुं० लेखक (२) टीकाकार निमय पु० अदलोबदलो; विनिमय निमा ३ आ० मापवुं; तुलना करवी (किंमतनी) निमि पुं० जुओ पृ०६१२ | कारण निमित्तनेभितिक न० (द्वि०व०) कार्थ-**निमित्तभात्र न० नात्र निमित्तरूप नियमस्थ** वि० नियम पाळतुं; तपस्या **निराकृति** पुं० अंगोपांग सहित वेदा-म्यास न कर्यो होय तेवो ब्रह्मचारी (२)यथोचित स्वाध्याय न करनारो ज्राह्मण(३)पंच महायज्ञ न करनारो निरादान वि० कशुंज न छेर्नु– स्वीकारतं(बुद्धनं विशेषण) निराधार वि० अनाथ निराधतस्य न० ट्रेक्ट्रं-सांकड्-नात् होव् निराधक पुं० हताश िराहार वि० आहार वयरतुं; उपवासी निष्कत्रज पुंच नियोग विधियो यदेलो – जेशव पुत्र निङ्ढ वि० रूढ; प्रचलित निर्मल् १ प० गळी-टपकी-झरी जब् निर्मुष्ट वि० वर विनान् निर्फर पुं० पूरेपूरो विजय **निर्णिक्ति** स्त्री० प्रायश्चित्त निर्देरअक्षिन् वि० पर्वतनी गुकामां रहेनार् निर्धनपनीरथन्यायः जुओ पृ० ६३३ निर्वेक्ष्मि वि० आग्रही; जक्की निर्मी निष्म अ० मांखीओ वगरर्नु होय तेम; निर्जन होय तेम निर्नेत्सर वि० अदेखाई विनानुं

निर्मन्यु, निर्मन्युक वि० कोधरहित निर्मंत्र वि० वेद-मंत्र न भणेलुं(२) मंत्र बोल्या विनानुं (विधि) निर्मानमोह वि० मान अने मोहरहित निर्मास वि० मांसरहित निर्मिति स्त्री० रचना; सर्जन; कृति निर्भुषुक्षु वि० मोक्षने झंखतुं **निर्वत्सल** वि० (संतान प्रत्ये) वात्सस्य विनानं निर्वात पुं० पवन दिनानुं स्थळ **निर्वारित** वि० निवारेल् निर्विचेष्ट वि० उद्यम रहित; हाल्या चाल्या विनालुं निविनोद वि० आनंद-प्रमोद विनान् निक्षिय वि० घर के रहेठाणमांथी काढो मुकायेलुं (२) क्षेत्र न होय तेवुं (३) विषयभोगमां अनासक्त **निःखिषयी**क्षत वि० घरबार विसानुं करायेलु निर्वीर वि० वीरो-बहादुरो वगरन् (२) नि**र्योरा** स्त्री० पति-पुत्र गरी गया ह्रीय तेवी स्त्री **निर्म्पाभम् अ० नि**खालसताथी निर्देशिय वि० दूर सुधी फेलावुं(२) सुगंधो (३) पं० बीजी गंधने दहावी दे तेवी गंध निकिए पुं० देव निश्चिपाध्यिय पुं० इंद्र **निवातरचना** स्त्री० इमारत निविड वि० निविड;गाट् िकरनार् **निवृत्तसांस वि०** निरामिष आहार निशानिशम् वि० दरेक राते; दररोज नियद् स्वी० यज्ञदीक्षां (२) यज्ञकर्मेनी देवता वगेरेनुं निरूपण करनार कृति निषध पुं० जुओ पृ० ६१२ निषंगिन् वि० आसक्त; वळगेलुं (२) ्माथावाळुं (३) तरवारवाळुं निष्प्रचार वि० एक जगाए स्थिर रहेनारुं; हालचाल न करनार्

निध्वतार वि० तेल के प्रभाव विनानुं निहार पुंठ अवाज; ध्वनि
जीकाश पिठ सद्य पूळ पित्रोक्षण पिठ सद्य पूळ जीतिश्री पिठ सद्य पुळ जीतिश्री वि० सद्य पुळ क्षित्रीरण्यारः जुलो पृठ ६३३ गीराजिश वि० प्रकाशतुं नील पुठ जुओ पृठ ६१२ न् भ्रम स्व अ० संभवतः पुलापित स्वयः जुलो गृठ ६३३ ने अधिष वि० जेनी अखिमां वाहक जोर छे तेवुं (बाह्यण) नै विश्वारण्य न० जुओ पृठ ६१२ में क्षित्र न० वरव तरीनुं कोई पण सायन के वासण

नेषध पुं० जुओ पृ० ६१२
नोबध्ति वि० प्रेरमारुं; धफेलनारुं
प्याचेश्लीजन्याः जुओ पृ० ६३४
न्यंकु पुं० एक जातमुं हरण (२)
ऋष्यशृंग मुनि
न्यंग पुं० निशान (२) प्रकार (३)
कलंक
न्यंच १ प० नीचे जबुं; नळी जबुं
(२) व्यतीत थबुं; घटबुं
न्यंच जि० गीचे वळेलुं (२) मीच;
हरुकुं; कृद (३) आखुं (४) ऊबडुं
ग्यंत पुं० पश्चिमनी दाजु (२) मजीकपणुं
न्यायनिबंधण पुं० शंकर (न्याययुक्त
दालयाळा)

प

पञ्चहत वि० पक्षाघात थयेलुं; एक बार्ए लक्ष्वो ध्येल् पक्षश्चार पुं० पद्मवाडिये एक ज वार भोजन लेलारी घड**ी स्त्री**० समृह पद्धंदा स्ती० तीव अवाजवाळी घंट **पगस्त्री स्**त्रीक देश्या | घोडो पतिश्रम् पुं॰ पंजी (२) बाण (३) पतित्रवर पुं ० गरुड (पंखीओमां श्रेण्ड) **पतं**ः कि पुं• जुओ पृ• ६१२ **पत्र**रहें**द्र**केंटु पुं० विष्युं (पत्ररथ –पंखी, तेवना राजा गरुड जेनी ध्वजानां छे) पथोरदेशक पुंच भोभियो पदातिल्घायः जुओ ५० ६३४ **रद्या**दती स्त्री० जुओ पृ० ६१२ पयस्यति, पयायते (दूधनी जेम बहेवूं-प्राप्त थवुं) पयोष्णी स्त्री० जुओ पू० ६१२ परकलत्राभिगमन न० ५ रस्त्री साधे व्यभिचार

परगुण पुं० दीजानी गुण परधा अ० अन्यथा; बीजी रीते परदुःख न० पारकानुं दुःख परिपेडनक्षक वि० पारकं अन्न खाईने जीवनारुं (दास) (२) बोजानुं खाई जनार् िजनारु परपिंडरत वि० बीजानुं अत्र खाई परलोकविधि पुं० अम्निसंस्कार परश्चाल पुंच जुओ पुच ६१२ षराभाव पुं० पराभव पराशर पुं० जुओ पृ० ६१२ परिकॉमत वि० सुशोभित; शणगारेलुं परिकल्पित् वि० वींटळातुं **परिक्षे**य पु० थाक; परिश्रय परिग्राहक वि० कृपा दाखवतुं परिद्रा १ प० खूब जोरथी के बारंबार चुववु | धोग्य परिचार्य वि० सेववा के परिचर्जा करवा परिचीर्ण वि० पूजित; सेवित परिचुंबन न० प्रेमपूर्वक चुंबन करवा ते

परिशेष पुं० बाको एडे्बुं ते(२) अंत;

परिडीन न० गोळ कूंडाळुं ऊडवु ते (पक्षीनी ऊडवानी एक रीत) परितर्कण न० विचारणा; विमर्श **परित्यागिन् वि०** परित्याग करनारुं (संन्यासी) [सूकवी नाखवुं परिवह् १ प० पूरेपूरुं बाळी नाखवुं; **परिदिव्, परिदेव् १,** १० प० विलाप करवो; शोक करवो परिपठ् -प्रेरक० भणाववुं; शीखवर्षु परिपणित वि० सोगन लीधेलुं; वचन आपेलु [करवुंते परिपूरण न० भरी काढवुं ते; परिपूर्ण परिपृच्छिक, परिपृष्टिक वि० आग्रह करीने आपे त्यारे ज लेनार् **परिबर्हण** न० परिवार (२) मालपता; सामग्री (३) वृद्धि (४) आराधना **परिबाध् १ आ०** कनडवुं; पीडवुं परिभविन् वि० पराभव-अपमान कर-नारुं (२) अपमान बेठनारुं (३) जीतनारुं; हरावनारुं परिमर्दे पुं० दबाववं-कचरवं-छूदवं ते (२) विनाश (३) ईजा करवी ते (४) आलिंगवुं ते (५) वापरी नाखवं – भोगवी नाखवं ते **परिमंडल न०** गोळ कूंडाळुं (२) दडो (३) पैडानी नेमि परिरक्षण न० संरक्षण; जाळवणी (२) वळर्गा रहेवुं – उल्लंघन न करवुं ते **परिवर्तक** वि० गोळ फरे तेम करतुं (२) बदलो करतुं (३) गोळ फरतुं ि शास फरतुं (४) अंत लावतुं **परियर्त्य** वि० वारंबार आवतुः, आस-**परिवाद** पुं० मुंडन (२) वावणी (३) जलाशय (४) साधनसामग्री (५) परिदार (६) भागी; पौंदा (७) थोभवानुं स्थळ **परिवीज् १ आ० पं**खो नाखनो परिवेष्ट् पुंज पीरसनारो (२) आहुति आपनारो

विवाश (३) समाप्ति (४) पुरवणी परिसंख्या स्त्री० गणतरी (२) सर-वाळो; कुल संस्या **प**रि_ंद न० आंतरों के बाद क**रे**ली **परि**स्थंद पु० धत्रकारो; हलनचलन (२) जुओ पृ० २७२ **परिस्फुर ६** प० धदकबुं; कंपबुं **परीक्षित्** पुं० जुङो पृ० ६१२ **परुणी** स्त्री० जुओ पृ० ६१२ पर्यवस्थातृ पुं० विरोधी;सामावाळियो **पर्यश्रुनयन** वि० आंसु दद*ड*ती आंखोवाळुं **पर्याकुलत्व** न० अस्तव्यस्त होवापण् **पर्यागल्** १ प० चोसेर गळवुं – टपकवुं पर्वकार पुं० वेषांतरधारो; बहरूपो पर्वसंधि पुरु पूनम अने पडवानी संधि पर्वद्वल पुं परिषदनो सभ्य पठडौही स्त्री० जुवान गाय; वाल-गरिंग्सी गाथ पस्त्य न० निवासस्थान; रहेठाग;घर पस्पश पु० पतंजिलना महाभाष्यना प्रथम अध्यायनुं प्रथम अस्त्निक (२) उपोद्घात ('अ-पस्पशाः' एटले प्रथम आह्निक वगरनी शब्दविद्या; तेम ज 'अप-स्पशा' एटले जासूस विनानी राजविद्या) पंकत्रक्षास्त्रनन्यायः जुओ ५० ६३४ **पंक्र**वति प० (कादवबाळ् करवुं; डहोळ् करवुं) **पंक्तिदू**ष पुं• जेनी साथे एक पंगते जनवा वेसी न शकाय तेबी; पंगतने अभडावनारो **पं**क्तिज्ञः ७० पंक्तिसर **पंग्वंबन्यायः** जुओ पृ० ६३४ **पंचलन** पुं० जुओ पृ० ६१२ पंचतंत्र न० विष्णुशर्मा रचित पांच प्रकरणवास्त्रः नीतिशास्त्र पंचत्वभाष्, पंजत्वं गम् मरी जब् (पांच महाभूत छुटां पड़ी जवां)

पंचत्वं नी मारी नांखवु; नाश करवी **पंचनद** पु०जुओ पृ०६१२ चाल **पंचविद्रप्रसृत** न० नृत्यमां एक प्रकारनी पंचवटी स्त्री० जुओ पृ० ६१२ पंचष वि० (ब०व०) पाच अथवा छ पंचसट पु॰ बच्चे बच्चे बाळनी पांच लट राखीने मूंडी नाखेली पंचापतस्त् न० मंडकणि ऋषिए बनावेलुं एक सरीवर पंचाल पुं० जुओ पृ० ६१३ पंजागिबनिर्णय पु० राजनीतिना पांच अंग (जुओ पु० २७७) बराबर छे के नहि तेनो निश्चय पंचरपारुनन्यायः जुओ पृ० ६३४ **पंपा** स्त्रो० जुओ पृ० ६१३ पाकयज्ञ पुं० घरमां करातो सादो यज्ञ पाकशासन पुं० इंद्र (पाक नामना राक्षसने हणनार) पाउच्यरलुंठिते वेश्मनि यानिकजाग-रणम् जुओ पृ० ६३४ पाटलिपुत्र जुओ ए० ६१३ **पाणिति** पुं० जुओ पृ० ६१३ पातालसुख न० पाताळना मीं जेवो मोटी खाडी पातित्व न० जातिभ्रष्टता पात्रवात प० (पाणी पीवाना बासण तरीके जापरवं) पात्रसंदार पुं० भोजन-समारंभ वखते व।सणो मूकवां ते पादयः पुं० शूद्र पादरक्षाः पुंच्यव्यव रणांगणनां हाथीना पगनुं रक्षण करता सशस्त्र सैनिको पादाष्ठील पुं० पगनी गूडी - नळी पानप वि० दारूडियु पाएक पुं॰ पापी माणस (२) अनिष्ट असर करनार ग्रह [जन्मेलुं पापवंश दि० भ्रष्ट - पापी कुळमाँ पारवर्ग्य वि० शत्रुपक्षन्

पारशवी स्त्री० शूद्र स्त्रीथी थयेली ब्राह्मणनी पुत्री **पारक्षधिकरा**न पुं० परशुराम पारसब पुं ० शूद्र स्त्रीधी थयेली ब्राह्मणनी **पारसी**क पुं० जुओ पृ० ६१३ **पारिपात्र** पुं० जुओ पु० ६१३ पारिभद्र पुं॰ देवदारनुं वृक्ष (२)मंदार वृक्ष (३) कडवो लीमडो पारिमाण्य न० वेरावो; परिघ पारिधात्र पुं० जुओ पृ० ६१३ पाश्विवपुत्रफीत्र पुं व्युधिष्ठिर राजा (पाथिवपुत्र-सूर्य, तेनो पुत्र यम-धर्म-राज, तेनो पुत्र) पार्वतो स्त्री० जुओ पृ० ६१३ **पार्षत** पुं० द्रुपद (२) धृष्टद्युम्न पार्वती स्त्री० द्रौपदी (पार्षत-द्रुपदनी पालिका स्त्री० पाळी-छरी(२)पळी(३) पावकीय वि० सळनतुः अग्निमय **पावन** न० पावन – पवित्र करवुं ते **पाक्ति** वि० पादन – शुद्ध करेलुं **पा**शक्**पीठ** न० जुगार खेलवानुं घर के मेज **पाशुपाल्य** न० परा पाळवां-उछेरवां ते पांक्तेथ वि० भोजन वखते एक ज पंक्तिमां बेसवा योग्य पांचालेय पुंच्हीपदीनो पुत्र पंचाल्य पुं० द्रुपद (पांचालोनो राजा) पांडु पुं० जुओ पू० ६१३ पांडुसोपाक पु० ते नामे एक मिश्र जाति **पांडच** पुं० जुओ पृ० ६१३ **पांथदुर्गा** स्त्री० रस्ता उपरनी देवता **गांसुविकर्षण** न० जमीन उपर थतुं मुष्टियुद्धः; ऋस्ती-दंगल (२) रेतीमां रमवुं ते **पिचंड** पुं०, न० उदर; पेट **पितृमेघ** पुं० पितृओने उद्देशीने करवामां आवतो यज्ञ ; पितृतर्पण [पित्तक्षोभ पित्तभेद पुं० पित्त घातुनी विकृति;

पिपीलिकागतिन्यायः जुओ पृ० ६३४ **पिशंग** वि॰ पींगळो रंग पिशुन पुं० चाडियो; निदाखोर (२) नारद (३) कागडो पिष्टपेषणन्यायः जुओ पृ० ६३४ पिष्टातक पुं० अवील; सुगंधी चूर्ण पीठमर्दिका स्त्री० नायिकाने तेना प्रेमीनो संग प्राप्त करवामां मदद करनार सखी पीलु पुं० परमाणु (२) द्वाण (३) हाथी (४) ताडन थड (५) ताडनुं झुंड (६) पीलुनुं झाड पुटोकृ पडियानो आकार बनाववो; संपुटनो आकार बनाववो पुण्यक न० स्त्री पतिनो प्रेम जाळवी राखवा तथा पुत्र मेळववा जे द्रत [प्रकारनी रीत पुनर्डीन न० पक्षीनी ऊडवानी एक पुरभार्ग पुं० नगरनो रस्तो - मार्ग **पुरंदरक्ष्माधर** पुं० महेंद्र पर्वेत (जुओ पृ० ६१८) पुरु पुं० जुओ पृ० ६१३ पुरुषपुर न० जुओ पृ० ६१३ पुरुषद्वीर्षक पुं० चोरनुं एक साधन (भींतमां पाडेला वाकामां खोसवानुं बनावटी माथुं) पुरूरतस् पुं० जुओ पृ० ६१३ **पुरोचन** पुं० जुओ पृ० ६१३ **पुलस्त्य** पुं० जुओ पृ० ६१३ **पुलिबदेश** पुं० जुओ पृ० ६१३ **पुष्टलगुडन्यायः** जुओ पृ० ६३४ पुष्पदंत पुं० शिवनो एक गण (२) महिम्नस्तोत्रनो कर्ता (३) वायव्य ख्णानी दिगाज वींटण पुस्तकास्तरण न० हस्तलिखित पुस्तकनुं पुस्तिकापूलिक पुं० हस्तप्रतोनो संग्रह **पुंगवकेतु** पुं० शंकर (ध्वजमां वृषभवाळा) पुंड्रदेश पुं० जुओ ए० ६१३

पुनाग पु० मनुष्योमां हाथी - श्रेष्ठ एको ते (२) सफोद हाथी (३) सफोद कमळ (४) नागकेशर वृक्ष (५) एक वृक्ष (६) जायफळ पूर्व िपतामह पु० पूर्वज [(२५मुं) पूर्वप्रोष्ठपदा स्त्री० पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र पूर्वसंध्या स्त्री० प्रभात; परोढ **पृथम्धीमन्** वि० द्वैतवादी **पेषोक्ट** दळवं; कचरवं **पौनर्भव** पुं० पुनर्लग्न करेली विधवानो पुत्र (२) स्त्रीनो बीजो पति प्रकांडक पुं० थड (२) कोई वर्गनुं श्रेष्ठ प्रक्षित् गुंजवुं; गाजवुं; सुसवाट करवो **प्रघाण** पुं० घरना दरदाजा आगळन् कमानदार ओरडा जेवुं बांधकाम प्रचषाल न० यज्ञस्तंभ उपरनो चक्र जेवो शणगार [पडी जवुं ते प्रच्युति स्त्री ० च्यववं-गबडवं ते; -मांधी प्रणयवत् वि० प्रेमपूर्ण (२) झंखतुं प्रतर्क् १० उ० अनुमान करवुं (२) धारवुं; मानवुं प्रतिकामिनी स्त्री० प्रेममां हरीफ स्त्री; प्रतिकारविधान न० दवा वगेरे उपचार प्रतियक्षकामिनी, प्रतिपक्षलक्ष्मी स्त्री • सपत्नी; शोक प्रतियत्तिपरा**ङ्मुख** वि० हठीलुं; जक्की **प्रतिपत्तिविकारद** वि० चतुर;होशियार प्रतिपल्छव पुं० सामे आवेली – वध् लंबाती डाळी प्रतिपाण पुं० होड; सामी होड **प्रतिपात्रम्** अ० दरेक पात्रना संबंधमां प्रतिप्रास्थानिक वि० अध्वर्युना मददनीशनुं प्रतिबंद्धृता स्त्री० खंडन; विरोध प्रतिबंधु पुं० समान दरज्जानो माणस प्रतिवृरिउ० जवाब आपवी प्रतिमाचंद्र पुं० चंद्रनु प्रतिबिंब प्रतिमात्रा स्त्री० माया-प्रयोगनी सामेनी (तेना निवारण माटेनो) माया-प्रयोग

प्रतिवप् १ प० वादवुं (२) रोपवुं (३) जडवुं; सखत चोटाडवुं प्रतिविधातव्यम् 'सावचेती राखवी जोइए'; 'सामां पगलां लेवां जोईए' प्रतिशाखा स्त्री० डाळीमांथी फूटेली डाळी; उपशाला प्रतिष्ठात न० जुओ पृ० ६१३ प्रतीप पुं० दुश्मन; विरोधी (२) शंतन राजाना पिता; भीष्मना दादा प्रत्यधिदेवता स्त्री० सामे के नजीक रहेती कुळदेवी प्रत्यरि पुं० बरोबरियो शशु(२)जन्म-नक्षत्रथी ९ मुं, १४ मुं के २३ मुं नक्षत्र (३) स्वनक्षत्रथी दिननक्षत्र सुधीनी संख्याने नवे भागतां पांचमी तारा प्रत्याम्नाय पुं० प्रतिनिधिः; अवेजी प्रत्यादवास पुं ० ६वास लेवो ते ; विश्वांति **प्रद्यु**म्म पुं० जुओ पृ**०** ६१४ प्रद्योत पुं० जुओ पृ० ६१४ **प्रधानमल्लनिबर्हण**न्यायः जुओ पृ० ६३४ प्र**पंचन** न० निरूपण; विस्तार प्रपंचयति प० (विस्तारथी समजादवुं) प्रदूर उ० जाहेर करवुं (२) पोकारवुं (३) कहेबुं (४) शीखबबुं (५) प्रशंसा करवी प्रभाववत् वि० शक्तिशाळी (२)भव्य प्रमहस् वि० सहा तेजस्वी के प्रभाववाळुं **प्रमिला** स्त्री० जुओ पृष्ठ ६१४ प्रमृष्टि स्त्री० लूछवुं-माजवुं-साफ करवं ते प्रयाग न० जुओ पृ० ६१४

प्रलंबबाहु वि० नीचेनी दाजु लटकता हाथवाळुं **प्रवण** न० सीघो ढोळाव (२)कराड (३) प्रक्रमपूर्वकेन अ० परीक्षा पछी प्रसुद्धा स्त्री० आगळ लंबावेलो आंगळी (२) रुडाईमां एक दाव (आसा शरीरने सकंजामां छेवं) प्रस्फुरिताघर वि० नीचलो होठ कंपतो होय तेबुं **प्रस्रवण पुं**० जुओ पृ० ६१४ प्रहतमुरज वि० ढोल-मृदग वागता होय प्रह्लादं पुं० जुओ पृ० ६१४ प्रह्वल् १ प० कंपवुं; ध्रूजवुं प्राग्ज्योतिष न० जुओ पृ० ६१४ प्राची स्त्री० पूर्व दिशा प्राजितृ पुं० सारिथ माननारुं प्राज्ञमानिन् वि० पोताने पंडित-डाहघुं प्रातिकृलिक वि॰ प्रतिकूळ के विरोधी [मुख्यत्वे प्राधान्यतः अ० मुख्य मुख्य होय एम; प्रायम्बेतन न० प्रायश्चित्त **प्रार्च् १** प० प्रशंसा करवी −प्नेरक० संमानवुं; पूजवुं प्रार्थनासिद्धि स्त्री० इच्छा पूर्ण थवी ते प्रियदत्ता स्त्री० पृथ्त्री (मांत्रिक नाम) प्रीतिच्छेद पु० आनंदनी नाश प्रैंष्य न० नोकरी; चाकरी; दासत्व प्रोड्डी (प्र+ उद्+ डी) ऊर्चे ऊडव् प्रोद्दीप्त वि॰ सळगतुं; वळतुं प्रोप्तत वि० शक्तिशाळी; मजबूत प्लक्ष पुं० जुओ पृ० ६१४ [बाळो) प्लावितृ वि० पार करावनारुं (होडी-

ब्

बक पुं० जुओ पृ० ६१४ बदरिकाश्राम पुं० जुओ पृ० ६१४ बदरीतपोवन न० बदरिकाश्रम पासेनुं तपोवन बिधिरकर्णजपन्यायः जुओ पृ० ६३४ बभुवाहत पुं० जुओ पृ० ६१४ बल, बलभव्न, बलराम पुं० जुओ पृ० ६१४ बलहुंतू पुं ० इंद्र (बल राक्षमने हणवार) बिलि पुंठ जुओ पृठ ६१४ बलिपुष्ट पुं० कागडो बहिर्वृत्ति स्त्री० वहारनी बाजु;बहारनी देखाव बाण पुं० जुओ पृ० ६१४ **काणासनयंत्र न०** एक प्रकारनुं चनुष्य (यात्रिक करामतयी बाण छोडतुं) बाल्वज वि० वाल्व घासनु बनावेलुं (वैश्यनो कंदोरो) बाल्हीक, बाहीक पुं० जुओ पृ० ६१४ बाहुक पुं० जुओ पृ० ६१४ **बाहुः ंटक न०** लडाईनो एक प्रकार (बच्चेथी चीरी नाखवुं ते) विसकंठिका स्त्री ० वगली बीजवृक्षन्यायः, बीजांकुरन्यायः जुओ पु० ६३४

बुक्क् १ प०, **१०** उ० भसवुं **बुद्ध** पुं० जुओ पृ० ६१४ **बुद्धिग्राह्य** वि० बुद्धिथी अनुभवाय एवं; बुद्धिथी प्रहण करवा योग्य बुध पुं० जुओ पृ० ६१५ **बृहस्पति** पुं० जुओ पृ० ६१५ **बैल्व** वि० बीलाना झाडनुं व्रह्मदूषक वि० वेदने जूठा पाडनारुं **ब्रह्म**न् पुं० जुओ गृ० ६१५ वहाराक्षस पुं० एक प्रकारने भूत (जे ब्राह्मण परस्त्रीनुं तथा ब्राह्मणनी मिलकतनुं हरण करे ते मरीने अरण्य के निर्जेळ देशमां एवं भूत थाय) **बह्मावर्त** पु० जुओ पृ० ६१५ **बह्मांजलि** पु० वेदपाठनी शरूआतमा तेम ज अंते गुरुने हाथ जोडवा ते बाह्मणग्रामन्यायः जुओ पृ० ६३४

भ

भक्षितेऽपि लशुने न शांतो ध्याधिः जुओ पु० ६३४ भगेटन पुं० शंकर (भग-आदित्यनी आंखो फोडनार) भट्टार वि० संमाननीय; आदरणीय भरत पुं० जुओ पु० ६१५ भरतवर्ष पुं० जुओ पृ० ६१५ भरद्वाज जुओ पृ० ६१५ भरु पुं० सुवर्ण; सोनुं (२) पति(३) शिवं (४) विष्णु भरकच्छ पुं० जुओ पृ० ६१५ भस्मनि आज्याहुतिः जुओ पृ० ६३४ भागीरथी स्त्री० जुओ पृ० ६१५ भार्योड वि० परणेलुं (पुरुष) भिक्षुपादप्रसारणन्यायः जुओ पृ०६३४ **भिल्लीचंदनन्यायः** जुओ पृ० ६३४

भीम पुं० जुओ पृ० ६१६ भीमसेन पुं० जुओ पृ० ६१६ भीष्म पुं० जुओ पू० ६१६ भीष्मक पुरु जुओ पुरु ६१६ भूमिपित पुं॰ राजा; सम्राट भूं लिग्शकुन पुं० पंखीनी एक जात (पर्वतमां थती) भूलिंगञ्जुनिन्यायः जुओ पृ० ६३२ भूषा स्त्री० आभूषण (२) रत्न **મૃગુ** પું૦ जુઓ પૃ૦ ६१६ **भेक्षाश्रम** पुं० संन्यासाश्रम (२) ब्रह्मचर्याश्रम भोज पुं० जुओ पृ० ६१६ **भोजपति** पुं० जुऔ पृ० ६१६ भ्रांतिमत् वि० गोळ फरेतुं (२) भ्रममां पडेलु

म

मगध पुं० जुओ पृ० ६१७ मणिपुर न० जुओ गृ० ६१७ मस वि० मानेलुं; धारेलुं; गणेलुं (२) संमान करेलुं (३) ध्यान करेलुं (४) इच्छेलुं (५) संमति आपेलुं मस्यवेश पुं० जुओ पृ० ६१७ मदनकलह पुं० मैथुन; संभोग मवावस्था स्त्री० मद झरवानी स्थिति (२) पीधेली दशा (३) कामोन्मा-दनी दशा मद्र पुं० जुओ पृ० ६१७ मधु पुँ० जुओ पृ० ६१७ मधुर्पाकक पुं० संमानित अतिथिना संस्कार-विधि वखते स्तुतिगान के मंगळगान करनारो मघु पश्यसि बुर्बुद्धे प्रपातं नानुपश्यसि जुओ पृ० ६३४ मधुपुर न० मथुरा मधुयन न० जुओ पृ० ६१७ मध्यदेश पुं० जुओ पृ० ६१७ **मन्** पुं० जुओ पृ० ६१७ मनोवहा स्त्री० हृदयनी मध्यमां रहेली एक नाडी मय, मयासुर पुं० जुओ पृ० ६१७ **भरीचि** पुं० जुओ पृ० ६१७ मर्कटमदिरापानादिन्यायः जुओ पृ०६३५ **मलज, मलद** पुं० जुओ पृ० ६१७ **मलय** पुं० जुओ पृ० ६१७ मल्लदेश पुंठ जुओ पृठ ६१७ महाकाल पुं० जुओ पृ० ६१८ **महाकोसल** पुं० जुओ पु० ६१८ महाडीन न० पक्षीनी अडवानी एक रीत [पृ० ६१८ महानदी स्त्री० मोटी नदी (२) जुओ महापिक वि० राजमार्ग के घोरीमार्ग

उपर जकात उघरावनारु (२) मोटी मुसाफरीओ करतुं [ग्रंथोनो समूह महास्मृति स्त्री० षडंगो अने स्मृति-**महेंद्र** पुं० जुओ पृ० ६१८ **महोदय** न० जुओ पु० ६१८ **मंडूकप्लुतिन्यायः** जुओ पृ० ६३५ मंदाकिनी स्त्री० जुओ पृ० ६१८ **माकंदी** स्त्री० जुओ पृ० ६१८ माघ पुं० जुओ पू० ६१८ माठर पुं० व्यास (२) एक ब्राह्मण (३) दारू गाळनारो (४) सूर्यनो एक अनुचर -- परिपार्रिवक (५) एक गोत्र मात्स्यन्यायः जुओ पृ० ६३५ **माद्री** स्त्री० जुओ पृ० ६१८ माधव पुं० जुओ पृ० ६१८ मानस न० जुओ पृ० ६१८ माया स्त्री० जुओ पृ० ६१८ **माया, मायापुरी** स्त्री० जुओ पृ० ६१८ मायावती स्त्री० जुओ पृ० ६१८ **मारीच** पुं० जुओ पृ० ६१८ मारुति पुं० जुओ पृ० ६१८ **मालव** पुं० जुओ पृ० ६१८ मालिनी स्त्री० जुओ पृ० ६१८ **माल्यवत्** पुं० जुओ पृ० ६१८ माहिषक पुं० जुओ पृ० ६१९ माहिष्मती स्त्री० जुओ पृ०६१९ मिथिला स्त्री० जुओ पृब्द्श्र मीद्वस्. वि० उदार; दानेशरी (२) वीर्यस्नाव करतुं (३) शिव **मृट् १** प०, **१०** उ० कचरी-छूंदी नाखवुं (२) मारी नांखवुं मुनिता स्त्री० वानप्रस्थपण् **मुर** पुं० जुओ पृ० ६१९ मुरारि पुं० जुओ पृ० ६१९ मृगराज् पुं० सिंह

मेकल पुं० जुओ पृ० ६१९
मेघनाद पुं० जुओ पृ० ६१९
मेनका स्त्री० जुओ पृ० ६१९
मेना स्त्री० जुओ पृ० ६१९
मेक पुं० जुओ पृ० ६१९
मेघशूंग पुं० एक जातनुं वृक्ष
मेहन न० मूतरवुं ते (२) मूतर (३)
पुरुषनी इद्रिय

मैत्रायण न० सर्व प्रत्ये मित्रभाव मैत्री स्त्री० मित्रता; निकट संबंध मैताक पुं० जुओ पृ० ६१९ मोक्षिन् वि० मुमुक्षु मोहपरायण वि० मोहमां पडेलुं; मूढ बनेलुं मोहिनी स्त्री० जुओ पृ० ६१९ म्लानमुख वि० हतास; खिन्न

य

यिक्मन् वि० क्षयरोगी [शिष्य यजमानशिष्य पुं० यज्ञ करनार ब्राह्मणनो यज्ञपुर न० जुओ पृ० ६१९ यज्ञसंस्तर पुं० यज्ञनी इँटो गोठववी ते यत् करभस्य पृष्ठे न माति तत् कंठे निबध्यते जुओ पृ० ६३५ यथास्व वि० पोतपोतानुं यदु पुं० जुओ पृ० ६१९ ययाति पुं० जुओ पृ० ६१९ यः कुरुते स एव भुंक्ते जुओ पृ० ६३५ याचितकमंडनन्यामः जुओ पृ० ६३५

याज्ञवल्य पुं० जुओ पु० ६१९
यावृशो यक्षस्तावृशो बिलः जुओ
पृ० ६३५
यामुनिगिरि पुं० जुओ पृ० ६१९
युगंधर पुं० जुओ पृ० ६१९
युधाजित् पुं० जुओ पृ० ६१९
युधाजित् पुं० जुओ पृ० ६१०
युपुत्तु पुं० जुओ पृ० ६२०
युपुत्तु पुं० जुओ पृ० ६२०
योगयुक्त वि० योगमां जीन
योधेय पुं० जुओ पृ० ६२०

₹

रक्ताशोक पुं० लाल रंगनुं अशोक पुष्प रक्षाकरंडक न० जुओ 'रक्षाकरंड' (पृ० ४०३) रघु पुं० जुओ पृ० ६२० रघुनंदन, रघुनाथ पुं० जुओ पृ० ६२० रघुनंदन, रघुनाथ पुं० जुओ पृ० ६२० रघुनंश पुं० रघुराजाओनो वंश (२) न०ए नामनुं कालिदासकृत महाकाव्य रघंतर न० साम मंत्र; सामगान(२) 'अहं ब्रह्मास्मि' ए महावाक्य रसातल न० जुओ पृ० ६२० रंशिये पुं० जुओ पृ० ६२० रंशागत न० घोडाना गळानो एक रोग रागलांडव पुं० चोलानी गोळपापडी राजगृह न जुओ पृ० ६२० [जिवाई राजिएड पुं० राजा तरफथी मळती राजपेरिक पुं० राजसेवक राजी स्त्री० पंक्ति; रेखा राज्यतंत्र न० राजवहीवट; तेनुं शास्त्र राह पुं० सुद्धा (जुओ पृ० ६२० राम पुं० जुओ पृ० ६२० रामिपिर पुं० जुओ पृ० ६२० राशिवधन वि० संख्यामां उमेरो करनारुं (२) निरुपयोगी; व्यर्थ (ला०) राह पुं० जुओ पृ० ६२०

रीति स्त्री० स्त्री० रसोत्पत्तिमां उपकारक एवी पदरचना वगरेनी चार
शैलीमांनी दरेक (वैदर्भी, गौडी,
पांचाली, लाटिका)
रिक्मणी स्त्री० जुओ पृ० ६२०
रचक पुं० बिजोरुं (२) कबूतर
रूपत वि० दृश्य पदार्थी जोई
शकनारुं
रूपोपजीवन न० सुंदर रूप वडे
आजीविका मेळववी ते (२) पातळा

बस्त्रमी पडदा पाछळ बामडानी आकृतिओथी नाटक देखाडवुं ते रेणुका स्त्री० जुओ पृ० ६२० रेतज न० संतान रेवती स्त्री० जुओ पृ० ६२० रेवा स्त्री० जुओ पृ० ६२१ रेवत, रेवतक पुं० जुओ पृ० ६२१ रोहिणी स्त्रो० जुओ पृ० ६२१ रोहिल पुं० जुओ पृ० ६२१ रोहिल पुं० जुओ पृ० ६२१ रोहिल पुं० जुओ पृ० ६२१

ल

लक्ष्मण पुं० जुओ पृ० ६२१
लक्ष्मणा स्त्री० जुओ पृ० ६२१
लघुमन् ४ आ० तुच्छ मानवुं
लद्वाका स्त्री० एक जातनुं पक्षी
लख पुं० जुओ पृ० ६२१
लक्षा स्त्री० जुओ पृ० ६२१
लाह पुं० जुओ पृ० ६२१
लास्य वि० मेळववा योग्य एवुं
लावण वि० लवणवाळुं

लोकोक्ति स्त्री० कहेवत; उखाणुं लोपामुद्रा स्त्री० जुओ पृ० ६२१ लोमपाद पु० जुओ पृ० ६२१ लोमपाद पु० जुओ पृ० ६२१ लोहजुंभि स्त्री० लोखंडनां पतरांथी महेलुं-हांकेलुं लोहित्य पु० जुओ पृ० ६२१

व

वचा स्त्रीं वज (मूळ)
वज्र पुंठ जुओ पृठ ६२१
वटे यसन्यायः जुओ पृष्ठ ६३५
वडवा स्त्रीं जुओ पृठ ६२१
वत्स पुंठ जुओ पृठ ६२१
वत्स पुंठ जुओ पृठ ६२१
वत्सला स्त्रीं जुओ पृठ ६२१
वध्यघातकन्यायः जुओ पृठ ६३५
वन्तिह-च्याझ-न्यायः जुओ पृठ ६३५
वरमद्य क्ष्पोतः इवो मयूरात् जुओ पृठ ६३५
वराटकान्वेषणे प्रवृत्तिःचतामणि लब्धवान् जुओ पृठ ६३५ [बटेर पक्षी
वर्तका, वर्तकी स्त्रीं एक प्रकारनुं

वर्षरात्र पुं० वर्षाऋतु
वसिष्ठ पुं० जुओ पृ० ६२१
वसुदेव पुं० जुओ पृ० ६२१
वट पुं० घोडो (२) बळदनी खूंध
(३) वाहन(४) जुओ पृ० ४२५
वंग पुं० जुओ पृ० ६२१
वाङ्निमित्त न० भविष्यकथन (खास
करीने रोग अंगे)
वाद्य पुं० जवनी घाणी
वामदेव्य न० एक साममंत्र अने तेनी
विद्या (तेमां परस्त्रीसंग इ० होय छे)
वामन पुं० जुओ पृ० ६२२
वाराणसी स्त्री० जुओ पृ० ६२२

वार्तिका स्त्री० समाचार (२) धंधो-रोजगार बालि पुं० जुओ पृ० ६२२ बाल्मीकि पुंठ जुओ पृ० ६२२ वासवदत्ता स्त्री० जुओ पृ० ६२२ वासुकि पुं० जुओ पृ० ६२२ वाह्निक, वाह्नीक जुओ पृ० ६२२ विकीते करिणि किमंकुशे विवादः जुओ पृ० ६३५ विचित्रवीर्य प० जुओ पृ० ६२२ वितस्ता स्त्री० झेलम नदी सर्जवं विताय् १ आ० फेलाववुं;विस्तारवुं; विदर्भ पुं० जुओ पृ० ६२२ विविद्या पुंठ जुओ पृठ ६२२ विदुर पुं० जुओ पृ० ६२२ विदेहाः पुंजबन्बन् जुओ पृज् ६२३ विद्राण विज्जागतुं रहेलुं; न कंधेलुं (२) जगाडेलुं (४) हताश; उदास विर्धामन् वि० अनृत; असत्य (२) जुदा प्रकारनुं विनता स्त्री० जुओ पृ० ६२३ विनशन न० जुओ पृ० ६२३ विपाश्, विषाशा स्त्री० जुओ पृ० ६२३ विप्रलू चूटवु; तोडवुं विमृश् ६ प० स्पर्शवु; हाथ फेरववो (२) विचारवुं (३) परीक्षा करवी विराज पुं० मंदिरनो एक आकार विराटपुं जुओप ०६२३ [लीधेलुं विरिक्त वि० मलत्याग करेलुं; जुलाब विरोचन पुं० जुओ पृ० ६२३ विलिंगस्थ वि० नहि समजवानुं एवं; न समजाय तेवुं विशाला स्त्री० जुओ पृ० ६२३

विशाला स्त्री० जुओ पृ० ६२३ विश्वामित्र पुंठ जुओ पृठ ६२३ विष्कृमिन्यायः जुओ पृ० ६३५ विषमस्य वि० आपद्ग्रस्त (२) पहोंची न शकाय तेवुं विषवृक्षन्यायः जुओ पृ० ६३५ विहंगमन्यायः जुओ पृ० ६३५ **विष्याटवी** स्त्री० जुओ पृ**०** ६२३ वीचितरंगन्यायः जुओ पृ० ६३५ **क्षीणादंड** पु० वीणानी दांडी **वृक्षप्रकंपनन्यायः** जुओ पृ० ६३५ वृक्षाधिरूढ़ पुं० वेली वृक्षने वीटळाय ते रीते स्त्रीए करेलुं आलिंगन **वृत्र** पुं० जुओ पृ०६२४ **वृद्धकुमारी-वाक्य (-वर)न्यायः** जुओ पृ० वृद्धभाव पु० वृद्धावस्था पृ०६३६ बृद्धिमिष्टवंतो मूलमपि ते नष्टम् जुओ वृषकेतु पुं० जुओ पृ० ६२४ **बृषपर्वन्** पुं० जुओ पृ० ६२४ **बृंदिण** पुंर्जुओं पृर्व ६२४ बेणा, बेणी, बेण्या, धेण्या स्त्री० जुओ पृ० ६२४ वैदवाद पुं० कर्मकांड (२) वेदनी चर्चा **देन पुं**० जुओ पृ० ६२४ **येजयंत** न० जुओ पृ० ६२४ **वैतरणी** स्त्री० जुओ पृ० ६२४ **दैवस्वत पु**० जुओ पृ० ६२४ **वेशंपायन** पुं० जुओ पृ० ६२४। बैशाली स्त्री० जुओ पृ० ६२४ व्यतियु २ प० भेळववुं;मिश्रित करवुं ब्याल-नकुल-न्यायः जुओ पृ० ६३६ व्यास पुं० जुओ पृ० ६२४ वज पुंठ जुओ पुठ ६२४

হা

शकटोबीं स्त्री० सपाट जमीन शकस्थान न० जुओ पृ० ६२४ शकुनि पुं० जुओ पृ० ६२४ शकुर वि० पाळेलुं; पलोटेलुं शकुंतला स्त्री० जुओ पृ० ६२४ शतगुणित वि० सो गणुं थई गयेलुं

शतद्र पुंठ जुओ। पृठ ६२४ शतरुद्रिय न० रुद्राध्याय; महाभारतनुं एक शिवस्तोत्र **शत्रुघ्न पुं**० जुओ पृ० ६२५ **शफरक** पुं० पेटी; पात्र शबरबल न० पहाडी लोकोनुं सैन्य शब्दादि वि० शब्द जेमां प्रथम छे तेवुं (इंद्रयोना पांच विषय) **शरपुरुषीयन्यायः** जुओ पृ० ६३६ शरयू स्त्री० सरयू नदी **झरवण** न० जुओ पृ०६२५ शराग्नि पुं० पात्रीसनी संख्या शरावती स्त्री० जुओ पृ० ६२५ **श्रमिष्ठा** स्त्री० जुओ पृ० ६२५ **शलभन्यायः** जुओ पृ० ६३६ श्चल्य पुं० जुओ पृ० ६२५ **ञ्चञाविषाणन्यायः** जुओ पृ० ६३६ शंकराचार्य पुंठ जुओ पृठ ६२५ शंकुकर्णवि० अणीदार कानवाळुं(२) पु० गधेडो शंख पुं० जुओ पृ०ं ६२५ **शंतनु** पुं० जुओ पृ० ६२५ शंबर पुं० जुओ पृ० ६२५ शाकद्वीय पुं०, न० जुओ पृ० ६२५ शाकल पुं० जुओ पृ० ६२५ शाक्य पुं० जुओ पृ० ६२५ शास्त्राचंद्रन्यायः जुओ पु० ६३६ शातोदरो स्त्री० पातळी कमरवाळी स्त्री **भारद्वती** स्त्री**० कृपा**चार्यनी पत्नी (कृपी) शार्द्लिबकीडित न० वाघनी रमत; वाघनुं वर्तन (२) एक छंद शालिबाहन पुं० जुओ पृ० ६२५ शासिहोत्र पुं० जुओ प्० ६२५

ञाल्मलिद्वीप पुं०, न० जुओ पृ० ६२५ श्चास्त्र पुं० जुओ पृ०६२५ [६३६ शांते कर्मणि वेतालोदयः जुओ पृ० शिखंडखंडिका स्त्री० चूडाकरण संस्कार शिखंडिन् पुं० जुओ पृ० ६२५ शिथिलायते आ० (ढीलू-शिथिल थई जवुं) शिबि पुं० जुओ पृ० ६२५ **शिशुपाल** पुरुजुओ पृरु ६२६ **जीर्षे सर्पो देशांतरे वंद्यः** जुओ पृ०६३६ श्कापुं० जुओ पृ० ६२६ **शुक्र** पुं० जुओ पृ० ६२६ **शूर** पुं० जुओ पृ०६२६ **शूरसेनाः** पुं० व० व० जुओ पृ०६२६ **जूर्पणसा** स्त्री० जुओ पृ० ६२६ **शूंगबेर** जुओ पृ० ६२६ **भैब्य** पुंठ जुओ पृठ ६२६ **शैबल** पुं० जुओ पृ० ६२६ **शोण** पुं० जुओ पृ० ६२६ **झोणा** स्त्री० जुओ पृ० ६२६ **झोणितपुर** न० जुओ पृ० ६२६ शोधनक पुं० फोजदारी अदालतनो अधिकारी **शौनक** पुं० जुओ पृ० ६२६ दमशानबाट पुं ० स्मशानमी बाडो श्रावण पुं० जुओ पृ० ६२६ श्वावस्ती स्त्री० जुओ पृ० ६२६ **श्रीपर्वत, श्रीज्ञेल पुं**० जुओ पृ० ६२६ **श्रुतिमंड**ल न० काननो पुट (२) संगीतना नादोनुं आखुं चक्र **रवश्रुनिर्गच्छोक्तिन्यायः** जुओ पृ०६३६ **दिवन्निन्** वि० पतियुं

स

सकलवर्ण वि० क अने ल (+ह == कलह) -वालुं; कजियो करतुं सगर पु० जुओ पृ० ६२६ सती स्त्रीं० जुओ पृ० ६२६ सस्वस्य पुं० योगी सलाभामा स्त्री० जुओ पृ० ६२७ सत्यवत् पुं • जुओ पृ • ६२७ सत्यवती स्त्री ० जुओ पृ० ६२७ **सस्यवत पुं० जुओ** पृ०६२७ **सत्राजित्** पुं**० जुओ पृ० ६२७** सदानीरा स्त्री० जुओ पृ० ६२७ सन, सनक पुं० जुओ पृ० ६२७ सनत् पुं० ब्रह्मा सनत्कुमार पुं० ब्रह्माना चार पुत्रोमांना सनत्सुजात पुं० ब्रह्माना सात मानस पुत्रोमांना एक भिवत्'पृ०१८८ सभवत् स॰ ना॰, वि॰ पुं॰ जुओ 'तत्र-समजा स्त्री० कीर्ति समतट पुं० जुओ पृ० ६२७ **समव् (स**म्+अद्) खाई जवुं; मक्षण समस्य वि० सुखी संजोगोमां होय तेवुं **समंतपंचक** न० जुओ पृ० ६२७ सरम् स्त्री० जुओ पृ० ६२७ सरस्वती स्त्री० जुओ पृ० ६२७ सर्वस्वार पु० एक यज्ञ (जेमा असाध्य रोगथी कटाळेलो यजमान आत्महत्या करेछ) सहदेव पुं० जुओ पृ० ६२७ सह्य पुं० जुओ पृ० ६२७ संज्ञा स्त्री० जुओ पृ० ६२७ संडीन न० पक्षीनी ऊडवानी एक रीत संधि ६ प० संधि करवी संपातिन् पुं० जुओ पृ० ६२७ संपूजन वि० प्रशंसा करतुं; स्तुति करतुं संयोगविधि पुं० जीव अने ब्रह्मनुं ऐक्य प्रतिपादन करतु वेदांतदर्शन संवांछ् अभिलाषा राखवी; बांछवुं संशब्द् १० उ० —ने बोलाववुं — संबोधवुं संसुप्त वि० सूतेलुं; ऊंघेलुं संस्वृ १ आ० दुःख आपवृं (मात्र 'संस्वरिषीष्ठाः' बीजो पुरुष एक-वचननुं रूप जाणमां छे) -प्रेरक० पीडवु; कनडवु

साधुता स्त्री०, साधुत्व न० सारापणुः पवित्रता साधुमन् ४ आ० सारुं के उत्तम मानवुं **सायण** पुं० जुओ पृ० ६२७ सारस्वत पुं० जुओ पृ० ६२७ साल्ब पुं० जुओ पृ० ६२७ साबित्रो स्त्री० जुओ पृ० ६२७ सांदीपनि पुं० जुओ पृ० ६२७ सांब पुं० जुओ पृ० ६२८ सिकताकूपवत् जुओ पृ० ६३६ सिकतातेलन्यायः जुओ पृ० ६३६ सिध्मा स्त्री० कोढनो डाघ; रक्त-पित्तनो डाध (२) दम-श्वासनो रोग सिधु पुं० जुओ पृ० ६२८ सिधुसौवीराः पुं० ब०व० जुओ पृ० ६२८ सिहाबलोकनन्यायः जुओ पृ० ६३६ सीता स्त्री० जुओ पृ० ६२८ सीरध्वज पुं० जुओ पृ० ६२८ **सुग्रीव** पुं० जुओ पृ० ६२८ सुडीनक न० पक्षीनी ऊडवानी एक रीत **सुदामन्** पुं० जुओ पृ० ६२८ **મુનીય** પું૦ जુઓ પૃ૦ ૬૨૮ **मुबल** पुं० जुओ पृ० ६२८ सुभगंमन्य वि० पोतानी जातने भाग्य-शाळी मानतुं सुभगाभिक्षुन्यायः जुओ पृ० ६३६ सुभद्रा स्त्री० जुओ पृ० ६२८ **सुमनीभू** सुखी -- निर्दिचत थवुं **सुमित्रा** स्त्री० जुओ पृ० ६२८ **सुमेरु** पुं० जुओ पृ० ६२८ **सुरेभ** वि० मधुर अवाजवाळुं **सुवेल** पुं० जुओ पु० ६२८ **मुद्धाः** पुं० ब० व० जुओ पृ० ६२८ सूचिकटाहन्यायः जुओ पृ० ६३६ सूचिन् पुं० जासुस (२) एक प्रकारन् बाण सूत्रकर्मविशेषज्ञ पुं० वणकर सेक पुं० जुओ पृ० ६२८

सारयिक पुं जुओ पृ० ६२७

सौभांजन पुं० सरगवानुं झाड सौराष्ट्र पुं० जुओ पृ० ६२८ सौवीर पुं० जुओ पृ० ६२८ स्थाणव वि० वृक्षोना थडनुं बनतुं; वृक्षोना थडमांथी मळतुं स्थालोपुलाकन्यायः जुओ पृ० ६३६ स्थिरकर्मन् वि० उद्यमी; कर्ममां मच्युं रहेतुं स्थूणानिसननन्यायः जुओ पृ० ६३६
स्नाता स्त्री० रजस्वला थईने नाहेली
स्त्री
स्पर्शन न० स्पर्शेद्रिय
स्यमंतक पुं० जुओ पृ० ६२८
स्यांदिनी स्त्री० जुओ पृ० ६२८
स्वांदिनी स्त्री० जुओ पृ० ६२८
स्वांदिनामम् स्त्री० अप्तरा

₹

हतुमत्, हतूमत् पुं० जुओ पृ० ६२८ हरिद्वार न० जुओ पृ० ६२८ हरिश्चंद्व पुं० जुओ पृ० ६२८ हस्तामलकन्यायः जुओ पृ० ६३६ हुकार पुं०, हुंकृति स्त्री० 'हं', 'हं' एवो जद्गार (२) घमकी - पडकारनो जद्-गार (३) गर्जना (४) धनुष्यनो टंकारव हुंभा स्त्री० ढोरनुं भांभरदुं ते हृदयाविष् वि० हृदय वींधी नास्ने तेवुं

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠનાં કેટલાંક પ્રકાશનો

માંડૂકચોપનિષદ	9.94
મેકોલે કે ગાંધીજી ?	9.40
મહાવીર સ્વામીનો આચાર ધર્મ	20.00
મહાવીર સ્વામીનો સંયમ ધર્મ	30,00
દોઢ સદીનો આર્થિક ઇતિહાસ	8.00
પ્રાચીન અર્થવિચાર	२,२५
ગુજરાતીમાં ખાળસાહિત્ય	40.00
ગુજરાતી-બીલી વાતચીત	2.00
ભાષા વિવેચન	3,40
અખંડ ભારતમાં સંસ્કૃતિનો ઉપ:કાળ	96.00
ઇતિહાસ સંશોધન	34.00
ઇતિહાસની વિભાવના	22.00
કવિજીવન	2,40
કાવ્ય પરિચય ભા. ૧	9.40
કાંતણવિદ્યા	99.00
ગુજરાતનો સાંસ્કૃતિક વારસો	७५.००
દસ્તાવેજો : વાચન અને મુશ્કેલીઓ	39.00
ધમ્મપદ (નવનીત)	20.00
પાશ્ચાત્ય નાટચસાહિત્યનાં સ્વરૂપો	6.00
મધર ટેરીઝા	४.५०
વસતિશિક્ષણ	90.00
શીખ ધર્મદર્શન	2.00
સમૃહુજીવન	4.00
कन्नड भाषा साहित्य संस्कृति	20,00
गांधीजी और कर्णाटक	3,00
गुजरातकी हिन्दुस्तानी काव्यधारा	94.00

ખિસ્સાકોશ

આ લઘુકોશમાં, જેમની જોડણી જોવી પડે એવા તેરથી ચૌદ હજાર શબ્દોની વ્યાકરણ સાથે માત્ર જોડણી આપવામાં આવી છે. લેખકો, વિદ્યાર્થીઓ, શિક્ષકો વગેરેને એ ખૂબ ઉપયોગી થશે.

(3. 2.00)

ગુજરાતી-હિંદી કોશ

સંપાદક : મગનભાઈ દેસાઈ

લોકોપયોગિતાને ધ્યાનમાં લઈને, હિંદી શિક્ષણ અને પ્રચારની ગુજરાતની માગને પહોંચી વળે એટલી શબ્દસામગ્રી એટલે લગભગ ૨૫ હજાર જેટલા શબ્દો આ કોશમાં સંઘરાયા છે. હિંદી-હિંદુસ્તાની ભાષાનો સવિશેષ ઉપયોગ, શબ્દપ્રયોગ, શબ્દોની વ્યાખ્યા, તેના પર્યાય વગેરેથી સભર રાષ્ટ્રભાષાના અભ્યાસીઓને આ કોશ ઘણો ઉપયોગી છે.

(છપાય છે.)

હિન્દી-ગુજરાતી કોશ

સંપાદક : મગનભાઈ પ્રભુભાઈ દેસાઈ

હિન્દીનો ગુજરાતમાં વ્યાપક પ્રચાર થઈ રહ્યો છે અને હજારો પરીક્ષાર્થીઓ એની પરીક્ષાઓમાં સામેલ થાય છે, ત્યારે આ કોશ ખૂબ ઉપયોગી થઈ પડશે. સુધારેલી – વધારેલી આની ચોથી આવૃત્તિમાં નવા ઉમેરવામાં આવેલા શબ્દો પુરવણીમાં આપવામાં આવ્યા છે. લેખકો, વિદ્યાર્થીઓ, શિક્ષકો વગેરેને આ કોશ ખૂબ ઉપયોગી થશે.

पुष्ठ ८१६